कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सृष्टिसम्वत् १९७ ९४९०८६]
वष २१ अङ्क १]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
मा ग ११ स० २०४२ रविवार २ दिसम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पसे

महर्षि ने कहा था—

परमेश्वर के बीच में सब जगत्

जैसे गुलर के फल मे कृमि उत्पन्न होके उसी मे रहने और नष्ट होते जाते हैं वैसे परमेश्वर के बीच में सब जगत की अवस्था है।

(सत्यार्थप्रकाश)

न्याय व्यवस्था

न न क मन स ध्यान क न हमक ब ल त मे बालत उमका म स क न मी क न न द सय मिद्ध हुआ ि ज जीव अस क व न ग न है। जब दुष्ट कर्म करते तभी जीव ईश्वर व्यवस्था से दुःख रूप फल पाते तब व न हैं

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद नहीं रहे !

वेदामृतम्

परिवार में सौमनस्य हो !

येषामध्येति प्रवसन्,
येषु सौमनसो बहुः ।
गृहानुप ह्वयामहे,
ते नो जानन्त्वायत' ॥

अथर्व० ७ ६०।१
यजु० ३।४२॥

हिन्दी अर्थ—प्रवास को जाता हुआ व्यक्ति जिन परिवार वालो को स्मरण करता है जिन (परिवार वालो) मे हार्दिक एकता है ऐसे परिवार वालो को हम आमन्त्रित करते हैं। वे लौटकर आने पर हम लोगो को पहचानें।

चण्डीगढ १० दिसम्बर पजाब के भूतपूर्व मन्त्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद का खरड मे निधन हो गया। खरड चण्डीगढ से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर है। पजाब सरकार ने दिवगत नेता के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए आज अपने कार्यालय बन्द कर दिए।

राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिंह ने स्वतन्त्रता सेनानी व पजाब के भूतपूर्व मन्त्री पृथ्वीसिंह आजाद की मृत्यु पर दुख व्यक्त किया है।

श्रीमती कृष्णा आजाद के नाम एक सवेदना सन्देश मे राष्ट्रपति ने बाबा आजाद को एक प्रमुख साहित्यकार व महान समाज सुधारक बताया। उन्होने कहा कि पजाब के लिए उनकी सेवाओ को विशेषत पिछड वर्गो के लिए किए गए कार्यों को लम्बे समय तक याद किया जाएगा। उनकी मृत्यु से अपूरणीय क्षति हुई है।

पजाब और हरियाणा के मुख्य मन्त्रियो और अनेक नेताओ ने भी बाबा आजाद को अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा श्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद स्वतन्त्रता सग्राम के प्रबल योद्धा महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी महात्मा गाधी के दिशा निर्देशन मे अनेक आदोलनों मे बढ चढकर काय करने वाले राष्ट्र सेवक थे। कागडा मे ५० हजार हरिजनो को धर्मपरिवर्तन से बचाने के लिए उन्हे महात्मा गाधी ने वहा भिजवाया उन्होने हरिजनो के बीच रहकर उनकी शिक्षा सहयोग कर सही रास्ता दिखाया और उन्हे धर्म परिवर्तन से बचाया। प० मदनमोहन मालवीय ने उन्हे काशी बुलाकर सम्मानित किया और आचार्य शब्द से सम्बोधित किया। श्री आचार्य जी सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कागडी के कुलाधिपति और पजाब प्रतिनिधि सभा के भी प्रधान रहे हैं। जीवन के अन्तिम काल मे उनकी इच्छा सत्यार्थप्रकाश का गुरुमुखी मे अनुवाद करने की थी जो पूरी नही हो पाई। उनके जाने से आर्य जगत को गहरी क्षति पहुची है।

सर शिवसागर रामगुलाम का निधन

पोर्ट लुइस, ११ दिसम्बर। एक सरकारी घोषणा मे बताया गया कि मारीशस के गवर्नर जनरल और आजादी के बाद वर्षों तक देश के प्रधानमन्त्री पद पर रहने वाले सर शिवसागर रामगुलाम का आज निधन हो गया।

उनकी आयु ८५ वर्ष थी।

उनके निधन के कारण तीन दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया गया है।

लन्दन मे डाक्टरी की शिक्षा लेने वाले सर शिवसागर ने अपना अधिकाश जीवन राजनीति मे बिताया। ब्रिटिश शासन के अन्तगत वह १९६१ से मारीशस के मुख्यमन्त्री थे। उसके बाद १९६ में जब मारीशस आजाद हुआ तो वह अपने देश के प्रथम प्रधानमन्त्री बने। सन १९८२ के आम चुनाव मे अपनी लेबर पार्टी के हार जाने के बाद तक वह सत्ता मे रहे। उसके बाद वहा वामपन्थी सरकार बनी। मारीशस को गणतन्त्र घोषित करने के असफल प्रयास के बाद उन्हे वहा गवर्नर जनरल बनाया गया। सर शिवसागर रामगुलाम १९७६ ७७ मे अफ्रीकन एकता सगठन के भी अध्यक्ष रहे। मानव अधिकारो के क्षेत्र मे असाधारण उपलब्धिया हासिल करने के लिए उन्हे १९७३ मे सयुक्त राष्ट्र सघ का भी पुरस्कार दिया गया। शेष पृष्ठ २ पर)

[illegible]—ओमप्रकाश [illegible]

प्रकाशक-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अध्यात्म सुधा

आत्मिक बल की उन्नति कैसे ?

— सच्चिदानन्द शास्त्री

आत्मिक बल टानिक पीने से या किसी भी कृत्रिम उपाय से नहीं बढ़ता आत्मविश्वास और सकल्प से उसकी वृद्धि होती है। मनुष्य का प्रधान बल क्या है ? शारीरिक बल उसका बल नही है क्योंकि मनुष्य स्वयं अपने शरीर से बड़ा है शरीर से कोई कितना ही बड़ा क्यों न हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के मत से उसकी शारीरिक क्रिया-शक्ति के १/१० हार्सपावर के बराबर है। शरीर से वह कोन-से पुरुषार्थ की सिद्धि कर लेगा, अधिक से अधिक पुत्र उत्पन्न कर लेगा।

बाहुबल की अपेक्षा बुद्धिबल की श्रेष्ठता सर्वस्वीकृत है। बाहुबल की अपेक्षा विचार बल अधिक प्रभावशाली होता है। स्वाभाविक शक्तियों के विकास के सम्बन्ध में कुछ अन्य उपयोगी बातों पर भी ध्यान देना होगा। जिन उपायों से मनुष्य जीवन शक्ति का उपार्जन सही स्वास्थ्य लाभ कर सकता है। उन्हें हम विचारें।

अन्तर्ज्ञान-या आत्मज्ञान का सही तात्पर्य है अपने को पहचानना, अपनी मनुष्यता, विलक्षणता, पूर्णता-अपूर्णता को जानना। संक्षेपतः यह देखना हे कि आत्मज्ञान से क्यों और कैसे आत्म-बल बढ़ता है।

१—प्रथम बात तो यह है जब तक कोई यथार्थ स्वरूप को नहीं पहचानता, तब तक वह उसके लाभ से तो वंचित रहता ही है उससे शंकित भी रहता है अपनी सद्वृत्तियों को जानने का अर्थ है उन्हें जगा लेना। इससे आत्मि शान्ति का अनुभव और जीवन के लक्ष्य का ज्ञान होता है। वास्तविकता का ज्ञान होने से आत्म तृप्ति के साथ आत्म-स्फूर्ति का अनुभव होता है। बुद्धि सत्य की ओर स्वभाव से ही आकर्षित होती है।

तत्व पक्षपातो हि धियां स्वभावः॥

भ्रम-सन्देह आशका से असन्तोष के परिणाम स्वरूप आत्म बल क्षीण हो जाता है। अत यह स्पष्ट है तत्वज्ञान आत्मिक स्वस्थता के लिये आवश्यक है

आत्म ज्ञान की उपयोगिता पर एक दृष्टि से और विचार करें। मनुष्य के अन्तःकरण में आत्मा के कई जन्मों का ज्ञान और विशेष गुण-संचित रहते हैं। आत्म ज्ञान से वे सुलभ हो जाते हैं जिसे हम प्रतिभा कहते हैं वह वास्तव में पूर्वजन्मों का अनुभव प्रकाश की है। यह अनुभव सिद्ध है कि—पूर्व प्रज्ञा का उदाहरण।—महा भारत में इस प्रकार दिया है कि जिस समय भीष्म को घायल दशा में आठ विप्रों ने प्रस्वाप अस्त्र देकर कहा —इसका प्रयोग करना कोई नहीं जानता। तुम इसका प्रयोग रण में स्वयं जान लोगे। क्योंकि तुम्हें पूर्व जन्म में इसके प्रयोग का ज्ञान था।

इदमस्यं सुदयितं प्रत्यभिज्ञास्यते भवान्।
विदिनं हि तवाप्येतऽपूर्वस्मिन्देह धारणे॥ उद्योग-पर्व

बुद्धि और मन को आत्मा की ओर ले आने से अपनी विशेषताओं का पता सहज में लग जाता है। मानव हृदय स्वयं कर्त्तव्यकर्म को बातें बता देता है। अत मनुष्यमात्र के लिए आत्म-ज्ञानी होना आवश्यक है।

२ आत्म-संस्कार—आत्मिक बल बढ़ाने का दूसरा उपाय है आत्मसंस्कार विकारग्रस्त चित्त उसी तरह बलवान नहीं हो सकता जैसे व्याधिग्रस्त शरीर-आत्मोत्कर्ष के लिये आत्मनाशक मनोव्याधियों से मुक्त होना जरूरी है। आत्मा का पोषण सद्भावनाओं से ही होता है। श्रद्धा, विश्वास, सत्य, न्याय, प्रेम, उदारता, धैर्य, आशा, उत्साह, दया करुणा, त्याग और निर्भीकता आदि हृदय की सहज सद्वृत्तियां हैं। सुसंस्कृत चित्त के ये स्वाभाविक सद्गुण हैं। गुणों से गुणित होने पर ही आत्मा का प्रभाव पड़ता है।

सात्विक गुणों की सम्पन्नता ही महापुरुषों के महान् होने का प्रमाण है। भगवान कृष्ण ने कहा है कि ऐसे महापुरुष ही देव और बान्धव हैं तथा ऐसे पुरुष ही आत्मा व मेरे रूप हैं।

देवता-बन्धवाः सन्तः सन्त-आत्माहमेव च॥

सात्विक गुणों के सम्बन्ध में यहां विशेष रूप से लिखना नहीं है वह आगे स्पष्ट किया जायेगा। इससे स्पष्ट विदित हो जायगा कि किस प्रकार इनके विकास से जीवन प्रभावशाली बन जाता है।

आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर कानपुर के नवनिर्मित विशाल भवन का उद्घाटन करते हुए श्री ओम्प्रकाश त्यागी (सभा-मन्त्री) साथ में समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य (दोनों फूल मालायें पहने हुये)

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका कार्य कारिणी की महिला सदस्याएं।

शिवसागर रामगुलाम का निधन

(पृष्ठ १ का शेष)

१८ सितम्बर १९०० को मारीशस में जन्मे सर शिवसागर रामगुलाम कुछ महीनों से बीमार थे और लन्दन में उनका इलाज हुआ।

११वां आर्य महासम्मेलन अलवर राजस्थान में मारीशस के प्रधानमन्त्री सर शिवसागर रामगुलाम जी की अध्यक्षता में १९, २०, २१ मई, १९७२ में सम्पन्न हुआ। यह पहला आर्य महासम्मेलन था जिसमें एक प्रवासी भारतीय ने भारत से बाहर के प्रधानमन्त्री को अध्यक्ष बनाया।

सम्पादकीय

आर्य महासम्मेलन दक्षिण-अफ्रीका में

महर्षि का स्वप्न साकार हो—इसकी पूर्ति-ऋषि के भक्त अनुयायी करके दिखा रहे हैं। आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृवर्ग धन्यवाद का पात्र है। जिन्हें यह गौरव प्राप्त है कि भारत भूमि के बाहर भी ऋषि की आवाज को गुंजा रहा है। अन्तरराष्ट्रीय आर्य सम्मेलनों की धूम-धाम के बाहर भी मची है।

प्रथम आर्य महासम्मेलन सभा ने मारीशस में किया गया था विदेशों से भारी संख्या में आर्य-नर-नारी उसमें सम्मिलित हुए थे हमारा पं० विष्णुदयाल श्री शिवसागर-रामगुलाम-मोहनलाल मोहित ने अपने भाइयों का स्वागत किया था। समुद्री जहाज से कारवां मारीशस में अपने भाइयों से मिलने उतरा था।

द्वितीय महासम्मेलन पूर्वी अफ्रीका नैरोबी (कीनिया मे) सम्पन्न हुआ था तब हवाई जहाजों से काफिला गया था समारोह वहां के ऋषि भक्तों ने श्रद्धा से पूर्ण किया था।

तृतीय आर्य महासम्मेलन अंग्रेजों की भूमि इंगलैण्ड (लन्दन) मे हैरो हाल में सत्यदेव भारद्वाज और सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज तथा उनके साथियों ने बुलाकर अंग्रेजो को चकित किया था। यह वही भारतीय वीर है जिनके पूर्वज-इण्डिया हाउस में बैठकर श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि ने भारतीय स्वतन्त्रता का जयघोष किया था। स्वामी दयानन्द के अनुयायी भारी संख्या में लन्दन गये थे और विदेशों में बसे भाइयों से मिलकर ऋषि के वैदिक धर्म का कार्य आगे बढ़ाने में परस्पर-विचारों का आदान-प्रदान किया था।

चतुर्थ आर्य महा सम्मेलन-दक्षिण-अफ्रीका (डर्बन) मे १३ दिसम्बर से २३ दिसम्बर तक वहांके भारतीय बड़े उत्साह से मना रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री पं. नरदेव वेदालंकार तथा श्री शिशुपाल श्री रामभरोस प्रधान सभा और उनके साथी नर-नारी मिलकर-ऋषि के गुणों की चर्चा करेंगे।

आज वह स्वप्न साकार होता दीख रहा है जब हम गीत गाते थे—(आर्यों के अरब से—जिनमें लिखा यह होगा—

गुरुकुल का ब्रह्मचारी—हलचल मचा रहा है। पं० नरदेव वेदालकार ने उन भारतीयों में असख बनाई है। जो सैकड़ों वर्षों से अपनी संस्कृति व सभ्यता से अति दूर थे।

जब नैरोबी गये थे तब सुना था वहां के राष्ट्रपति केन्या भी एक गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक से अधिक प्रभावित हुए थे शायद उनका नाम पं० जयदेव विद्यालंकार ही था—अगर इसमे भूल हो तो पाठक गण सुधार कर लें। इस प्रकार हमारा एक-एक साथी हजारो मे कार्य कर रहा है।

आज जब दक्षिण अफ्रीकामें यह आर्यों का सम्मेलन हो रहा होगा, तब यह सम्पादकीय टिप्पणी-पाठकगण पढ़ रहे होंगे। हमें भी अपने २ क्षेत्रो मे ऋषि के मिशन का निरन्तर-उद्घोष करते रहना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवालों की यह प्रबल इच्छा थी कि पूर्व किये गए विदेशों में आर्य महासम्मेलनों की भांति इस सम्मेलन में भी भारी सख्या में आर्य नर-नारी भाग लें। परन्तु भारत सरकार तथा दक्षिण अफीकी सरकार के सम्बन्ध मधुर न होने के कारण अधिक व्यक्तियों के जाने की सुविधा उपलब्ध न हो सकी।

अतः संन्यासी विद्वान डा० स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती जो पारिवारिक परम्परा से भी आर्य व ऋषि-भक्त है स्व० पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के सुयोग्य सुपुत्र हैं वैदिक सन्देश देने सभा की ओर से डरबन गये हैं। वह समय २ पर विदेशो में जाते रहते हैं। डरबन में भारतीय मिशन का सन्देश प्रदान करेंगे।

सार्वदेशिक सभा में सभा के महामन्त्री श्री पं० ओम्प्रकाश जी त्यागी, पू० लोकसभा सदस्य पं० ब्रह्मदत्त जी स्नातक को लेकर सभा की ओर से तथा सम्पूर्ण आर्य जगत का शुभ सन्देश अपने भाई बहनों को प्रदान करेंगे।

पिछले दिनों जर्मनी में जब एक लघु आर्य सम्मेलन आर्य समाज के विद्वान स्व० पं० बनजीत जी शास्त्री स्नातक महाविद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य सुपुत्र ने किया था—तब—

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने प्रधान पद से आर्य समाज का सन्देश वहा के भाइयो को दिया था यह विदेश प्रचार परम्परा सार्वदेशिक सभा की प्रचार परम्परा का नवयुग की कहा जायेगा। वैसे फुटकर व्यक्तिगत वैदिक रिसर्च स्कालर स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक पं० सत्याचरण शास्त्री स्वामी दिव्यानन्द जी आदि के नाम बहुत से विद्वान प्रचारार्थ बाहर जाते रहे हैं। महता जैमिनी भवानीलाल सन्यासी स्वामी अभेदानन्द स्वामी ध्रुवानन्द जी पं० अयोध्या प्रसाद

शताब्दियों की धून

"जंगल में मोर नाचा किसने देखा" वाली कहावत ठीक है विदेशो में होने वाले सम्मेलनो में थोड़े ही भारतीय गये थे किन्तु भारत मे भी हम पीछे नहीं रहे। आर्य समाज की स्थापना शताब्दी डेढ़ मास के अन्त-राल मे सभा-प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने मनाकर १५ लाख भारतीयों को को एकत्रित कर भारत भूमि पर देश-विदेश के भाई-बहनों का सम्मेलन कराया था विधर्मियों तथा सरकारी स्तर पर खलबली मची थी। आज सारे भारत मे आर्य समाज की स्थापना शताब्दी अपने २ रूप मे मनाने की परम्परा चली हुई है। महान उत्साह एवं प्रेरणा दायक स्वरूप लेकर आर्य समाज अपने अतीत से कहीं आगे चलकर कार्य कर रहा है।

लाखो रुपये का सा० सभा द्वारा साहित्य प्रकाशन एक नवीन उपलब्धि है वेद-भाष्य हिन्दी अंग्रेजी तथा अन्य साहित्य का जनता के हाथो में देना विशेष महत्व रखता है।

अमेरिका कनाडा में भी आर्य समाज की धूम प० उषर्बुध वैदिक रिसर्च स्कालर तथा प० धर्मजित जिज्ञासु अपने मिशन में सफलता पूर्व लगे हुए हैं। इस प्रकार आर्य समाज निराशा के वातावरण को हटाकर आशा का संचार कर रहा है।

हमारी इच्छा है कि विदेश डर्बन मे यह महासम्मेलन आर्यों में ऋषि के प्रति श्रद्धा, विश्वास और प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्य ला० रामगोपाल शालवालो की शुभ कामनाओं के साथ

—सम्पादक
सच्चिदानन्द शास्त्री
विद्याभास्कर

रजनीश हिमाचल को छोड़े

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले को स्वामी सुमेधानन्द जी का पत्र स्वामी जी कई वर्षों से हिमाचल में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं स्वामी जी ने कई गुरुकुलों की स्थापना की स्वामी जी का सारा जीवन त्याग भाव से समाज सेवा में समर्पित है। —सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वामी सुमेधानन्द ने एक लिखित वक्तव्य में सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले से निवेदन किया कि आप हि० प्र० के मुख्य मन्त्री श्री वीरभद्रसिंह जी से आग्रह कीजिए कि वह भोगवाद के प्रतीक आचार्य रजनीश को हिमाचल में न बसने दें। उन्होंने बताया कि हिमाचल की धर्मपरायण जनता रजनीश के मनाली में बसने की खबर से अत्यधिक चिन्तित है। सर्वविदित है कि इस तथाकथित आचार्य एवं भगवान को अमरीका से इसीलिए निष्कासित किया गया क्योंकि अमरीकी निवासी इस आचार्य के भोगवाद एवं स्वेच्छा चारिता से तंग आ गए थे। इसके अतिरिक्त इसके खिलाफ हत्या के एवं अन्य कई घृणित आरोप लगे थे जिसके कारण इसे हथकड़ियां लगाकर जब अदालत में प्रस्तुत किया गया तो इसकी असलियत दुनिया के सामने आ गई। इसने विदेशों में जाकर अपने देश के नाम को कलंकित किया जबकि हमारे सन्यासी एवं प्रचारक विदेशों में जाकर देश के नाम को गौरवान्वित करते रहे हैं, स्वामी विवेकानन्द एवं स्वामी रामतीर्थ इसके प्रमाण हैं।

स्वामी सुमेधानन्द ने बताया कि हिमाचल की जनता इस तथाकथित भगवान से दूर रहना चाहती है और वह अपने २ ढंग से इसका विरोध कर रही है। उन्होंने माननीय श्री रामगोपाल जी से निवेदन किया कि वह समस्त आर्य जगत की ओर से हिमाचल के मुख्यमन्त्री को आग्रह करें कि वे इस आचार्य को हिमाचल की देवभूमि से तुरन्त जाने को कहें।

ब्रिटेन से सिखों का भागना शुरू

कनाडा पौने तीन हजार सिखों को निकालेगा

उग्रवादी तत्वों पर कड़ा अंकुश

यहां प्राप्त समाचारों के अनुसार कैनाडा से कोई २८०० सिखों को निकाला जायेगा।

बताया जाता है कि इन सभी सिखों को कैनाडा सरकार भारत वापस भेजेगी।

वर्ड सिख आरगनाइजेशन के कैनाडा मे डायरेक्टर गोपालसिंह के अनुसार यह सभी सिख कैनाडा मे शरण पाने की इन्तजार में हैं। अगर अब कनाडा सरकार ने अपनी नीतियो मे परिवर्तन कर दिया है जिसके कारण प्रतीक्षा कर रहे सभी सिखों को कनाडा से से अब निकाला जा सकता है।

श्री गोपालसिंह ने बताया है कि पिछले दिनों एक सौ से ज्यादा सिखों ने कैनाडा सरकार के फैसले के विरुद्ध प्रदर्शन भी किया।

गोपालसिंह ने मांग की है कि कैनाडा सरकार को एक संसदीय दल भारत भेज कर वास्तविक स्थिति का पता लगाने के बाद ही कोई अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

दूसरी ओर लन्दन से मिले समाचारों मे कहा गया है कि वहां सैकड़ों सिख उग्रवादी ब्रिटेन छोड़ कर इक्वेडोर में बसने के लिए जा रहे हैं।

खालिस्तान के स्वयंभू नेता का डा० जगजीतसिंह चौहान ने भी दावा किया है कि ब्रिटेन से पिछले दो माह में सैकड़ों सिख जा चुके हैं।

बताया जाता है कि ब्रिटेन मे आजकल सिख उग्रवादी तत्वों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। (वीर अर्जुन २-१२-८५ से साभार)

आगामी १५ फरवरी १९८६ को दिल्ली में डी० ए० वी० शताब्दी समारोह पर विशाल शोभा यात्रा कार्यक्रम

सभी आर्यसमाजों व आर्यजनों से इसमें भाग लेने की अपील

दिल्ली ४ दिसम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आगामी १५ फरवरी १९८६ को डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर निकलने वाली विशाल शोभायात्रा में सम्मिलित होने के लिए सभी आर्य समाजों व कार्यकर्ताओं से विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग अन्य कार्यक्रमों को छोड़कर इस शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में भाग लें।

यह शोभा यात्रा प्रातः ११ बजे लालकिला मैदान से प्रारम्भ होगी और चांदनी चौक, घण्टाघर, नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौजकाजी, अजमेरीगेट मिण्टोरोड, कनाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेण्ट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई सायं ५ बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में समाप्त होगी।

इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

शाहबानो की तरह अब अमीना भी कोर्ट में जीती

बम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति कन्यारिया ने एक एतिहासिक निर्णय में आदेश दिये हैं कि यदि कोई पति अपनी पत्नी से दाम्पत्य सम्बन्ध समाप्त करने के आदेश प्राप्त कर लेता है तो पत्नी अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा १२५ के अन्तर्गत गुजारा भत्ते की अधिकारी होगी।

न्यायमूर्ति कन्यारिया ने याचिकादाता श्रीमती अमीना मोहम्मद-बाली खोजा की प्रार्थना पर अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के निर्णय को रद्द करते हुए आदेश दिये कि पति द्वारा सिविल कोर्ट से इस सम्बन्ध में डिग्री प्राप्त कर लिये जाने के बावजूद वह गुजारे भत्ते की अधिकारी है।

उच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में दिया गया यह निर्णय इस्माईल खोजा जाति के सन्दर्भ में जो मुस्लिम पर्सनल कानून के अन्तर्गत आती है। तथा अपनी ही 'पंचायत' में इस प्रकार के मामलों का निपटारा करती है, को कानूनी क्षेत्रों में काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

ईसाईजगतको चुनौती

—श्री रामजीदास जी

सयाल कोट भवन, देवबन्द जिला-सहारनपुर(उ०प्र०)

मुझे ईसाई बना लो। मरकुस रसूल की अंजिल के अध्याय १० की धारा २५ मे लिखा है कि "परमेश्वर के राज्य मे धनवान के प्रवेश करने से ऊट का सूई के नाके मे से निकल जाना सम्भव है।" अमेरिका इस समय विश्व मे सबसे धनी देश है। अब बाईबिल के इस आदेश के अनुसार ये स्वर्ग मे नही जा सकता। इस देश से और दूसरे ईसाई देशो से करोडो रुपया भारत मे ईसाइयत के प्रचार के लिये आ रहा है जिससे भोले-भाले आदमियो का धर्म परिवर्तन प्रचारकों द्वारा किया जा रहा है और कहा जाता है कि ये देश गरीबो की सहायता कर रहे हैं।

असलियत तो यह है कि इस धर्म से भारत मे गद्दार पैदा किये जा रहे है। उद्देश्य पोलिटिक्स यानि सियासी है। ना कि असहायो को सहायता। मत्ती रसूल की अंजिल अध्याय १८ की धारा २० मे लिखा है कि मैं तुमसे सच कहता हु, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो इस पहाड से कह सकोगे कि, यहा से सरक-कर वहा चला जा और वह चला जायेगा और कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी आगे फिर मत्ती रसूल को अंजिल अध्याय २१ धारा २१ मे लिखा है कि यीशु ने उनका उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता हू यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड से किया गया है। पर यदि इस पहाड से भी कहोगे कि उखड जा और समुद्र मे जा पडे, तो यह हो जायेगा। और जो कुछ तुम प्रार्थना मे विश्वास करके मागोगे, सो पाओगे।" सवाल उठता है कि भारत मे करोडो रुपये खर्च करके ईसाई देश बडे-बडे हास्पिटल्स, (औषधालय) खोलते हैं। मरीजो का इलाज दवाईयो से होता है। ये लोग वहा प्रार्थना भी करते हैं जो मरीज ठीक हो जाते है, तो ये लोग कहते हैं कि हमने प्रार्थना की और हजरत मसीह ने तुम्हे चगा कर दिया। यह सरासर धोखा है। असल मे मरीज दवाईयो से ठीक होता है न कि प्रार्थनाओ से क्यों नही एक विश्वासी को मेज और कुर्सी लेकर बिठा दिया जाता है और वह रोगियो के सर पर हाथ रख कर चगा कर दिया करे। लूका रसूल की अंजिल के अध्याय १ को धारा १६ मे वर्णित हैं, जो कि विश्वास कर और विपत्ति सम्भाले उसका उद्धार होगा। पर जो विश्वास न करें वह दोषी ठहराया जायेगा। विश्वास करने वाले के यह चिन्ह होगे—वे मेरे नाम से दुष्टात्माओ को निकालेगे, नई २ भाषा बोलेंगे, सापो को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु पिये तो उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारो पर हाथ रखगे और वे चगे हो जायेंगे।

मत्ती रसूल की अंजिल अध्याय ५ की धारा ३८ इस प्रकार है "तुम सुन चुके हो कि आख के बदले आख दात के बदले दात। पर मैं तुमसे कहता हू कि बुरे का सामना न करना। पर कोई जो कोई दाहिने गाल पर थप्पड मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दें जो तुझ पर नालिश करें, तेरा कुर्ता लेना चाहे, उसे दोहर भी लेने दें जो कोई तुझे कोस भर बेगार ले, उसके साथ दो कोस चला जाए। जो कोई तुझसे कुछ मागे, उसे दें और जो तुझसे कर्जा लेना चाहे उससे मुह न मोड। तुम सुन चुके हो कि कहा गया था पडोसी से प्रेम रखना, बैरी से बैर। पर मुझे इनका आपरेशन करना पडा।

अलबत्ता पोप महाराज ने अपने देवता होने का सबूत दिया। उसने हत्यारे को कोसा नही, कोई श्राप नहीं दिया, बल्कि ये कहा, "मुझे क्यों मारा है। इन बातो से यह अनुभव होता है कि मोजजों की बातें केवल धोखा है और कुछ नही। मेरी दाहिनी आख वाले मोतिये बेकार हो गई है। बायी आख का आपरेशन काले मोतिये का हुआ था, मगर उसमे रोशनी बहुत कम आई। बारीक पढ-लिख नही सकता। मैं गिर गया और मेरे बाये हाथ का पहुचा टूट गया। अब वे बेकार ही हैं। मैं पुराने दमे का रोगी हू और मुझे टी० बी० हो गयी थी, उस फफडे के हिस्से को कैलिमायिजड कर दिया है। अगर ससार का कोई ईसाई मेरे सर पर हाथ रखकर मुझे चगा करदें तो मैं ईसाई हो जाऊगा नहीं तो ईसाई लोग सनातन वैदिक धर्म की शरण मे आ जायें।

देव दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश की प्रशंसा

प्रभु विनती

प्रशसा मैं क्या करू, शब्द नही मेरे पास।
दीनबन्धु मुझे ज्ञान दो यही मेरी अरदास ॥१॥
प्रशसा कैसे करू नही बुद्धि नही ज्ञान।
तुझसे तुझको मागना, कृपा करो भगवान ॥२॥
प्रशसा लिखन लगा, पढ सत्यार्थ प्रकाश।
मुझ को मिलता है नही, थोडा अवकाश ॥३॥
फिर भी समय निकाल कर, महिमा लिखना आज।
आख खोल कर ध्यान से, पढें सभी कविराज ॥४॥

प्रशसा

सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा सत्य का सार।
जो सज्जन पढत इसे, पावे आनन्द अपार ॥१॥
आनन्द कन्द लगोट बन्ध, दयानन्द ऋषि राज।
सत्यार्थ प्रकाश जिन्हाने रचा, सब ग्रन्थन का ताज ॥२॥
जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी था, था पूर्ण विद्वान।
अपनी प्रतिभा बुद्धि से किया वेद व्याख्यान ॥३॥
धर्म, कर्म बन्ध मोक्ष का, वर्णन किया अपार।
ईश जीव प्रकृत का खूब किया विस्तार ॥४॥
सब ग्रन्थन मन्थन किये, खेंच निकला सार।
मगल सत्य शोध कर दिया ग्रन्थ मे डार ॥५॥
सत्यार्थ ही विचारिये, उठ के प्रात काल।
आत्म शुद्धि होय तब, कटे भ्रम के जाल ॥६॥
दयानन्द महान था महान किया जिस काम।
मगल अमृत ज्ञान का, पिला गया हमे जाम ॥७॥
चौदह गोली का यही, एक बना पिस्तौल।
सत्य कसौटी है यही, सब की खोले पोल ॥८॥
अमर ग्रन्थ सत्यार्थ है सब रत्नो की खान।
अमर ऋषि भी है मेरा, सुन लो सन्त सुजान ॥९॥
'भाग" सतगुरु हैं तेरे, दयानन्द महाजन।
जिन की दया अपार से सुधरे सारे काज ॥१०॥

रचियता, भागेराम आर्य, प्रधान
आर्य समाज अहमद नगर

ईसा मसीह १२० वर्ष जिए, कश्मीर में रहे वहीं दफनाए गए

श्रीनगर। ऐसा समझा जाता है कि हजरत बल म हजरत ईसा मसीह को दफनाया गया था। इस स्थान को एक अन्तर्राष्ट्रीय अनुसन्धान केन्द्र के रूप मे विकसित करने की एक विदेशी मिशन की कोशिशो को इसके मुजावरों ने असफल बना दिया है। यह प्रस्ताव एक आठ सदस्यीय जमन शिष्टमण्डल ने इस दरबार की यात्राओ तथा श्री अब्दुल अजीज कश्मीरी से बातचीत के बाद रखा था। श्री कश्मीरी ने इस विषय पर काफी शोध काय किया है कि हजरत ईसा मसीह शूली पर नही मरे बल्कि कश्मीर आ गये थे तथा १२० वष की आयु तक जीवित रहे थे।

६५ वर्षीय श्री कश्मीरी जो कि एक उर्दू दैनिक रौशनी का सम्पादन भी करते हैं तथा जिन्होने अपनी पुस्तक क्राईस्ट इन कश्मीर (हजरत ईसा मसीह कश्मीर मे) का तीसरा सस्करण गत वष प्रकाशित किया था अगस्त १९८३ मे कैनाडा मे होने वाली अहमदिया कान्फ्रेंस मे भाग लेने वालो मे एक प्रमुख स्थान रखते थे। उन्होंने मुझे बताया कि गत वष जब यह जमन से २१ मई को चार दिनो के लिए कश्मीर आया तो मैंने शिष्ट मण्डल के नेता श्री काउ ट एडलमैन को बताया कि वह अपना प्रस्ताव केन्द्र सरकार के माध्यम से भेजें कि रोजाबल को एक अन्तर्राष्ट्रीय अनुसधान केन्द्र के रूप मे विकसित किया जाए। उन्होंने दावा किया कि ३६ वर्षीय एडलमैन और उनके साथी इस बात के कायल हो गये थे कि हजरत ईसा मसीह के कश्मीर मे दफनाए जाने के सकारात्मक प्रमाण मौजूद हैं।

यहा केन्द्रीय गुप्तचर एजेंसीके सूत्रोंने मुझे बताया कि उनकी ड्यूटी लगाई गई थी कि यह पता किया जाए कि यहा के मुजावरो तथा अन्य लोगो की इस प्रस्ताव के सम्बन्ध मे प्रतिक्रिया क्या है तो यह इस बात को गलत करार देने की सीमा तक चले गए कि श्रीनगर के खन्यार क्षत्र मे स्थित इस दरगाह मे हजरत मसीह को दफन किया गया था।

तथापि श्री कश्मीरी के अनुसार दरगाह के मुजावरो न श्री एडलमैन के सामने स्वीकार किया था कि यूस आसिफ नाम का एक एक पैगम्बर यह दफन है। जब यह पूछा गया कि क्या यह हजरत ईसा मसीह ही तो नही क्योंकि मुसलमानो की मान्यता है कि हजरत मोहम्मद साहब के बाद कोई पैगम्बर मानव वश के नेतृत्व के लिए नही आया है तो उसका इन मुजावरो के पास कोई उत्तर नही था।

इस वास्तविकता से कि यूस आसिफ को पारम्परिक रूप स और इतिहास मे भी नही अर्थात् पैगम्बर कहा जाता है इस बात का फैसला हो जाता है।

यूस आसिफ किस समय मे हुए थे क्योंकि मुसलमान तो हजरत मोहम्मद साहब के बाद किसी को पैगम्बर मानते ही नही और फिर यूस और यीसू (ईसा के नामो म कितनी समानता है।) इसके अतिरिक्त एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि यूस आफिस ने अपनी शिक्षाओ को बुशरा का नाम दिया जो कि अरबी मे खुशखबरी देने वाले को कहते है। यह दावा सत्य सिद्ध करने के लिए श्री कश्मीरी ने अनेक पुस्तको के उद्धरण दिए।

उन्होंने प्रसिद्ध विद्वान मौलाना मोहम्मद अली का हवाला भी दिया जिन्होने पवित्र कुरान का अनुवाद किया है तथा कई पुस्तक भी लिखी है। उन्होने बताया है कि हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है कि हजरत यीसू मसीह १२० वर्ष की आयु तक जीवित रहे।

पवित्र पुस्तक से सम्बद्ध 'हदीस' म बताया गया है कि उनको शत्रुओं के हाथो से मुक्ति दिलाने के बाद किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर रखा गया। यहा उस स्थान का उल्लेख भी है जो कश्मीर हो सकता है। इसके अतिरिक्त कश्मीर मे एक मकबरा भी है जो समस्त उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार स्वय हजरत ईसा मसीह का ही है। इन सब बातों से हम इसी निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि इस हदीस में जिस स्थान का उल्लेख है वह कश्मीर ही है। श्री कश्मीरी अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए कि 'यूस आसिफ और कोई नहीं बल्कि यीसु मसीह' ही थे बीसियों पुस्तको तथा धमग्रन्थो मे हवाले देते हैं जिसमे सस्कृत मे व्यास ऋषि द्वारा ११५ म लिखित भविष्य महापुराण भी शामिल है।

वह १७७६ ईस्वी मे मुगल दरबार के पाच मुफ्ती अजीमो के एक फतवे से भी हवाला देते हैं। इसमे कहा गया है कि शहादत लिपिबद्ध करने के बाद यह सिद्ध हो गया है कि राजा गोपादास क शासनकाल मे जिन्होने सुलेमान पर्वत पर बहुत से मन्दिर बनवाए तथा उनकी मुरम्मत कराई। यहा एक आदमी आया जिसका नाम यूस आसिफ था। वह खानदानी तौर पर राज कुमार था। उसने सारी दुनियादारी छोड दी थी तथा वह कानून बनाने वाला था।

फतवे मे आगे कहा गया है कि पैगम्बर यूस आसिफ को शहर के लोगो मे उपदेश देने के लिए भजा गया था। वह खुदा की खिदमत की शिक्षा का उपदेश देता तथा मरते दम तक देता रहा। उनको झील के किनारे मोहल्ला खन्यार मे रोजाबल मे दफन किया गया। ८३ हिजरी (१४५१ ईस्वी) में इमाम मूसा की वशावली मे से एक सइद नसीरुद्दीन को यूस आफिस के निकट दफनाया गया। —आ एन कौल

(पजाब केशरी ६ २ ८५)

लौट के बुद्धू घर को आए

स्वामी दिव्यानन्द, सन्त कृपाल नगर संडीला (हरदोई)

आचार्य रजनीश पांच वर्ष अमेरिका में रहकर और अपने कार्यों का कर्मोत्कर्ष देख कर वापस भारत आ गए हैं। यह तथ्य है कि रजनीश किसी भी शर्त पर भारत वापस आना नहीं चाहते थे। पाश्चात्य जगत में उभरे सेक्स और सेक्स के नाम पर खुली उच्छृ-खलता को प्रोत्साहन देकर रजनीश ने ओरेगांव मे रजनीश साम्राज्य की स्थापना कर ली थी और जोलाई ८५ मे प्रेस वालो को दिए गए इन्टरव्यू मे उनका यह कहना "मैं सृष्टी के अब तक के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ नायक हू" यह सिद्ध करता है कि वह अपनी इस सेक्स भड़काने वाली बातों की सफलता से बहुत प्रसन्न थे।

रजनीश ने अपने मनोभवों को खोलकर प्रगट किया, शीला को अपनी प्रेमिका (जिसका आनन्द शीला ने अक्तूबर ८५ मे जर्मनी मे भागकर आने पर पत्रकारों के सामने खुले रूप मे स्वीकार किया है) तथा अन्य सेक्स पूर्ण भद्दे प्रदर्शनों, छूट और व्यवहार ने सिद्ध कर दिया है, रजनीश स्वम भी सेक्स गुरु कहलवाने में मौन सहमति रखते हैं क्योंकि इससे उनका धन्धा चमका और उन्होने अपने चारो ओर विभ्रमित पाश्चात्य जगत के युवको को इकट्ठा कर लिया। यह एक ऐसी शृंखला रजनीश का हाथ लग गई है कि वह इसे छोड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

अमेरिका के शासन ने रजनीश को देश से बाहर निकाल फेंकने का निश्चय कर लिया था क्योंकि रजनीश पुरम के आस-पास में रहने वाले लोग रजनीशियों से तग आ गए थे। उन्हे लगता था कि रजनीशी उनके बाल बच्चों में आने वाली पीढियों में सेक्स और उच्छृखलता का जहर भर देंगे। रजनीशपुरम के शिष्य यह दरसाते रहे कि उनके पडोसी उन्हें बम और हथियारों से रजनीशपुरम से निकाल फेंकना चाहते हैं जबकि सच्चाई यह है कि वे इस बहाने अपने को अस्त्रों से सुसज्जित कर अमेरिकी शासन को इस भ्रम मे में डालना चाहते थे कि यदि उनके खिलाफ कार्यवाही की गई तो खून खराबा हो जाएगा। इस तरह यह रजनोश की एक समझी बूझी चाल थी कि उन्हें अमेरिका से निकाल फेंका न जाए। अन्तत वह न चल पायी और अमरीकी सरकार ने बडी चतुरता से रजनीश को गिरफ्तार किया, जेल में रखा और कुछ यातनाए देकर उसका यह भ्रम तोड दिया कि वह अजेय है, उसके नाम पर उसके शिष्य खूनी क्रांति कर डालेंगे और उसे अन्त मे देश से बाहर निकाल फेंका। रजनीश के काले कारनामे अब जग विख्यात हो गए हैं और कोई भी देश उन्हें अपने यहा जगह देने को तैयार नहीं है। अन्तत्योगत्वा उन्हें भारत मे ही शरण लेनी पडी। भारत शासन की यह मजबूरी है कि रजनीश जन्म से भारतीय है अत रजनीश को भारतीय शासन भारत में रहने को मना नहीं कर सकता। इसलिए मैंने कहा 'लोट के बुद्धू घर को आए।"

सारे ससार को धर्म का पाठ पढ़ाने वाले खुद को भगवान घोषित करने वाले रजनीश की पोल अब खुल गई है और वह बुद्धू बन भारत लौट आए हैं वरना रजनीश कभी भारत आने को सोच नहीं सकते थे।

रजनीश ने जो कुछ धर्म के नाम पर ससार को सिखाया वह अपने आप में एक काला कारनामा है। सेक्स यद्यपि मानव के लिए एक आवश्यकता है परन्तु उसे भड़का कर कोई धर्म या समाज अपने को सुरक्षित नहीं सकता। उसे मर्यादित करने पर ही समाज अनु-शासित रह सकेगा। कुछ लोगों की यह धारणा कि यदि रजनीश-पुरम में खुला सेक्स का खेल होता तो रजनीशियो को बच्चे होते जबकि वहा पर एक को भी बच्चा नहीं हुआ, भी सही नही है। विज्ञान ने अब इतनी उन्नति कर ली है कि कुछ हारमोन गोलीयों का प्रयोग करके मनुष्य भोग में लिप्त रहते हुए भी गर्भाधान की समस्या से बच सकता है। पाश्चात्य देशो मे १२ १३साल की अवस्था के बाद लडके लडकिया खुले रूप से सभोग मे लिप्त हो जाते हैं और उनको गर्भाधान नहीं होता, यह कोई चमत्कार नही। कोई सबूत नही कि वे सम्भोग नही करते बल्कि केवल उन गोलियों का प्रभाव है जो वह निरन्तर सावधानीपूर्वक पयोग करते हैं और जिनका प्रयोग उन्हे उनकी शिक्षा के अग और उनके मा बाप की देख रेख मे बतलाया जाता है। यह सच है कि रजनीश ने रजनीशियों को१९८१ से ८५ मे उच्छृखल सेक्स के खुले रूप पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न किया लेकिन इसका कारण कोई सिद्धान्त नही था बल्कि रजनीशियो को १२ से १८ घण्टे तक काम मे लगाकर रजनीश साम्राज्य का निर्माण कराना था। रजनीश की मौन साधना भी आनन्द शीला के रहस्योदघाटन के अनुसार लोगो को रजनीश भगवान के दर्शन और सत्सग में समय बरबाद न कर इसे निर्माण मे लगाने की एक समझी बूझी चाल थी।

यह कहना भी गलत है कि आनन्द शीला शिष्यो मे फूट के कारण रजनीश से अलग हो गई। आनन्द शीला जैसी औरत जिसने पति को कपडो की तरह बदला किसी, आदर्श के लिए नहीं जी सकती। आनन्द शीला ने स्वय पत्रकारो को इटरव्यू मे बतलाया कि वह रजनीश से प्यार करती थी और वह प्यार कोई गुरु शिष्य का प्यार नही था। शेष कहानी उसके व्यवहार से स्पष्ट है। आनन्द शीला ने जब ये जान लिया कि अमेरिकी शासन रजनीश को शीघ्र ही अमेरिका से निकाल फेंकना तो वह ५५ करोड रुपए की विशाल धनराशि जो रजनीश की स्वीस बेंक मे गुप्त धन के रूप मे जमा थी और जिस पर आनन्द शीला का रजनीश के मौन और साधना अवधि मे पहुच थी, लेकर समय रहते चमपत हो गई।

बाद मे रजनीश की गिरफ्तारी के बाद अमेरिकी सरकार ने आनन्द शीला के विरुद्ध कुछ चार्ज बनाकर उसे भी गिरफ्तार कर लिया यह सोचना गलत है कि आनन्द शीला अमेरिकी सरकार से मिल गई है। क्योंकि वह जो भी भेद खोलेगी उसके अपने काले कारनामे सामने होगे। दिमाग रजनीश का था, हाथ आनन्द शीला के। अत किसी भी दुष्कर्म मे शीला अपने को बचा नही पायेगी, यह बात अलग है, अभयदान का आश्वासन देकर अमेरीकी सरकार शीला से रजनीश के विरुद्ध कुछ उगलवा ले जिसका उद्देश्य ओरे-गाव के रजनीशपुरम की सम्पत्ति जब्त करना हो सकता है।

शीला रजनीश की बहन थी, उससे उसने अनुचित सम्बन्ध रखे, यह रजनीश के लिए कोई अनोखी बात नही है वैसे भी आनन्द शीला को मा आनन्द शीला के नाम से रजनीश ने सम्बोधित किया था, मा जैसे परम पवित्र नाम के साथ रजनीश ने जो खिलवाड किया है वह उसके सेक्स गुरु धर्म में ही स्वीकार हो सकता है।

यह कहना कि "*रजनीश जब किसी को सन्यास देते हैं तो आदमी* को स्वामी और औरत को मा का नाम देते हैं। क्या मा के साथ कोई सेक्स का ख्याल कर सकता है।" यह भी नितान्त भ्रमक है। है। आनन्द शीला ने पत्रकारों को दिए गए इटरव्यू मे स्वय इस बात को स्वीकारा है कि रजनीश और उसके कुछ नजदीकी लोग कुछ दवाइयों का प्रयोग कर धनो सन्यासिनियो से ४५ घण्टे भोग करके उन्हे धन पाने के लिए दुरुपयोग किया जाता था। रजनीश जैसे व्यक्ति से धन और ऐश्वर्य भोगो के प्राप्त करने के लिए किसी भी दुष्कर्म करने की कल्पना कम ही है। जो कुछ धर्म के नाम पर रजनीश करते हैं वह आघातपूर्ण है और शर्मनाक है और भारत की छवि को सारे ससार मे धूमिल करने के समान है।

यह ख्याल कि रजनीश अब अपने चलाए धर्म से तग आ गए हैं अत उसने अपने शिष्यों को अपने उपदेश व्याख्यान फूकने को

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हैदराबाद में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, १३, सुदामा नगर इन्दौर

आर्य समाज एक आन्दोलन है। यह आन्दोलन इस पृथ्वी पर तब तक चलता रहेगा, जब तक मानव समाज मे तीन शत्रु विद्यमान रहेंगे। ये तीन शत्रु हैं—अज्ञान, अभाव, अन्याय। सतही स्तर पर चाहे उपरोक्त तीनों तत्व अलग-अलग दिखाई पडते हैं। परन्तु तीनों का एक-दूसरे से पारस्परिक अभिन्न सम्बन्ध है। आर्य समाज अपने जन्म काल से ही इनके विरुद्ध बगावत का झण्डा लेकर खडा हुआ है।

इतिहासकार भलीभांति जानते हैं कि बक्सर का युद्ध (१७६४ ई०) परतन्त्रता की बेडियो को काटने हेतु पहला प्रहार था। सन १८५७ में द्वितीय प्रहार हुआ, फिर भी देश स्वतन्त्र न हो सका। परन्तु सन १८७५ मे जैसे ही आर्य समाज की स्थापना हुई और भारतीय पुर्नजागरण बल पकडने लगा, तब इस पर आर्य समाज के धार्मिक आन्दोलन का बडा भारी प्रभाव पडा। कोई चाहे माने या न माने, सन १८८५ मे स्थापित कांग्रेस को यदि आर्य समाज द्वारा उत्पन्न की गई जागृति का सहयोग न मिलता तो सन १९४७ मे तीसरे प्रहार द्वारा लोह-शृ खला न टूट पाती। परन्तु इसके उपरान्त आर्य समाज ने कोई प्रतिदान की अपेक्षा नहीं की।

१९४७ मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के ठीक आठ वर्ष पूर्व आर्य समाज ने देशी रियासत निजाम हैदराबाद" को धार्मिक रूप से जीतकर अपनी आर्य संस्कृति

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी को किस प्रकार परिभाषित किया जावे? क्या संसार के किसी अन्य देश मे स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो को देश की सेवा के बदले मे कोई प्रतिदान दिया जाता है? —सम्पादक

के अनुसार भारतमाता के चरणों मे निस्पृह भाव से भेंट कर दिया। हमारे पूर्वज मर्यादा पुरुष राम ने बालि के राज्य को जीतकर उसके पुत्र सुग्रीव को सौंप दिया। लंका नरेश रावण को मारकर सम्पन्न लंका का राज्य उसके अनुज विभीषण को सौंप दिया। योगिराज कृष्ण ने अपनी किशोर अवस्था में अपने अन्यायी मामा कंस को मारकर उसके पुत्र को राज्य सौंप दिया। इन उदाहरणों के तदनुरूप ही आर्य समाज ने भी उसी उच्च कोटि की त्याग-परम्परा का परिचय दिया। इतिहास इस बात का प्रबल साक्षी है कि निजाम हैदराबाद की रियासत भारतमाता के पेट मे 'नासूर' के समान पीडा दे रहा था। तत्कालीन कांग्रेस के समस्त आन्दोलन पूर्णरूपेण असफल हो चुके थे। परन्तु जब आर्य समाज ने ईश्वर पर विश्वास रख, सत्य-निष्ठा के आधार पर धार्मिक एवं सामाजिक अधिकारो की रक्षा के लिए शुद्ध अहिंसात्मक सत्याग्रह प्रारम्भ किया, तब आठ मास के पश्चात निजाम हैदराबाद को झुकना पडा और आर्य समाज की सभी शर्तों को स्वीकार करना पडा। इस हैदराबाद का निजाम भारतीय स्वतन्त्रता का कितना विरोधी था तथा वह अंग्रेजो का कितना पिट्ठू था, इसका एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उदाहरण देना उपयुक्त होगा।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी वासुदेव बलवन्त फडके को कौन नहीं जानता? श्री वा० ब० फडके पेशवा (ब्राह्मण) पूना के निवासी थे। १६ मई, १८७९ मे सरकारी कार्यालय मे आग लग जाने के कारण अंग्रेज बहुत घबरा गये। इस भयंकर अग्निकांड के मूल नायक वासुदेव बलवन्त फडके को पकडने के लिए अंग्रेज बडे बेचैन हो उठे। उन्होने वा० ब० फडके का सिर काटकर लाने वाले को बडी मोटी राशि इनाम देने की घोषणा की। निजाम हैदराबाद ने अपने राज्य के कोष से फडके के सिर काटने वाले को इनाम देने का जिम्मा लिया था। इस प्रकार निजाम भारतीय स्वतन्त्रता का घोर विरोधी था।

आर्य समाज ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात अपना निर्धारित कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। उसने कोई प्रतिदान की अपेक्षा नहीं की। ठीक इसके विपरीत अन्य लोगो ने भारतीय सरकार की उदारता का अनुचित लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया। कुछ लोगो को स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी की पेंशन प्राप्त करना प्रारम्भ कर दी। सन १९३८ ३९ मे निजाम रियासत मे आर्य सत्याग्रह मे भाग लेने वाले वर्तमान आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र और कर्नाटक निवासियो की राज्य सरकारो द्वारा पेंशन एवं अन्य सुविधायें वर्षों से दी जा रही हैं परन्तु उन्हीं व्यक्तियो में दंडित पंजाब, हरियाणा, सिंध (सम्प्रति पाकिस्तान), उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश बिहार आदि राज्यों की स्वीकृति ने उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी मान लिया है। खिलाफत आन्दोलन अकाली आन्दोलन मोपला विद्रोही आदि तनजसुबी एवं हिंसक आन्दोलनो को तो केन्द्रीय सरकार पहले ही स्वाधीनता संग्राम का अंग मान चुकी है। अब केन्द्रीय सरकार के सम्मुख आर्य सत्याग्रहियों को भी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी मानकर उन्हें सम्मान निधि देने की ओर आकृष्ट किया है।

लौट के बुद्धू घर को आए

(पृष्ठ ७ का शेष)

कहा है। यह भी सही नही है, आनन्द शीला के रजनीशपुरम से फरार हो जाने के बाद प्रेस वालो को दिए गए इंटरव्यू मे रजनीश ने स्वय कहा था कि 'वह अब क्या करेगा, इसे अभी नही बतला सकता। शीला जैसी विश्वसनीया शिष्याके भाग जाने पर रजनीश को एक धक्का लगा। क्योंकि वह भगवान बन बैठा था, अब भगवान को धोखे का कोई तर्कसंगत उत्तर इसके पास न था। अत इन सब घटनाओ की जिम्मेदारी से बचने के लिए उसने अपने को भगवान न कहलवाने और पुराने रवैयों को छोडने का आह्वान किया है।

सच्चाई यह है कि रजनीश के मुह साम्राज्य और भोगवाद का खून लग गया है। इसका उसे चस्का पड गया है। वह इसे छोड नही सकता। मार खाए सैनानी की तरह सम्भलकर दोबारा इस लूटपाट मे जुट जाना चाहता है। कठिनाई यह है कि अब उसे भारत मे रहना पडेगा। जहा उसके इन गन्दे कारनामों को समझने की स्वीकारने की दुष्प्रवृत्ति इतनी प्रबल नही है जितनी पाश्चात्य जगत के विभ्रमित नवयुवको मे थी।

अब रजनीश भारत में आ ही गया है। अपना गन्दा खेल वह पूरी चालाकी से खेलेगा क्योंकि जिस भोगवाद के चरम उत्कर्ष को उसने देखा है उससे आगे बढने की इच्छा वह मन मे संजोए है। इस पर्वतीय आंचल को वह अपनी कर्मभूमि बनाना चाहता है। क्योंकि सम्पर्क साधन के अभाव में वहा के ठण्डे, मनोहर, प्राकृतिक छटा युक्त वातावरण अभी भी विदेशियों को आमन्त्रित करेगा जो उसके दुधारु गाए हैं। जो लोग समझते हैं रजनीशवाद का अन्त हो गया है वह भूल मे हैं। चोट ग्रस्त बाघ अधिक क्रोधित हो भारतीय, धर्म, संस्कृति एवं दर्शन को विनाश करने को खडा है। धर्म प्रेमी सज्जनों एवं भारतीय संस्कृति के दम भरने वालों के लिए यह एक चुनौती है। यदि वह इस चुनौती को स्वीकार न कर पाए तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय संस्कृति और धर्म की जडे इतनी गहरी हैं कि वह नमक की खान की तरह रजनीशवाद को भस्म कर नमक ही बना डालेंगे। रजनीशवाद जब तक है, भारतीयता के नाम पर कलंक है। अब बुद्धू लौट कर वापस आ ही गए हैं, देखना है कब तक भारतीयो को इस कलंक के कलंकित हो दुनिया से अपने मुह को कब तक छिपना पडेगा।

विदेशों में आर्य समाज की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका कीनिया-नैरोबी की गतिविधियां एवं निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका अपने स्थापना काल से ही पूर्वी अफ्रीका ही नहीं अपितु भारत से दूर सभी पार देशीय क्षेत्रों में वैदिक मन्तव्यों और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में लीन रहा है। आज भी यह सभा पूर्व मर्यादाओं को सुरक्षित रखता हुआ आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है।

इस वर्ष सभा का निर्वाचन २८ नवम्बर १९ ४ ई०को सर्वसम्मति से दो वर्ष के लिए अर्थात् १९८६ ई तक अतीव प्रसन्नता एव सद्भावनाओं से परिपूर्ण वातावरण मे हुआ। निर्वाचन के पश्चात सभा प्रधान श्री हरवंश राय जी साही ने अपने साथियों को साथ लेकर युगाण्डा, तञ्जानिया और कीनिया सभी प्रदेशों की आर्यसमाजों का दौरा किया और आर्य बन्धुओं को मिलकर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का बड़ा ही सफल प्रभाव रहा।

इस वर्ष की गतिविधियों मे उल्लेखनीय कार्य कीनिया राष्ट्र में ईसाई और इस्लाम धर्म के साथ-२ हिन्दू धर्म की शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू कराने का भरसक प्रयत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्म शिक्षा सभी शिक्षण संस्थाओं मे इसी सत्र से पाठ्यक्रम मे निर्देशित कर अनिवार्य कर दी थी। किन्तु इसमे केवल इस्लाम और ईसाई धर्म को ही लिखा गया था। हिन्दू धर्म का कही भी नाम नहीं था। सभा के अधिकारियों और डा० वेदीराम जी शर्मा के अथक प्रयत्नो से इस सरकार ने हिन्दू धर्म को भी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया। किन्तु हिन्दू धर्म का मार्ग अन्य धर्मों के समान सरल नहीं था। फिर भी डा० शर्मा जी ने हिन्दू धर्म का पाठ्यक्रम तैयार किया और सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हमारे ही कई अन्य विचारों वाले सज्जनों ने अपने आपको हिन्दू धर्म के शीर्षक से युक्त पाठ्यक्रम को स्वीकार करने मे कुछ बाधाए उपस्थित की। इन सभी बाधाओं को भी डा० वेदीराम जी ने बड़ी सूझ बूझ से राज्य सरकार को पूरी तरह सन्तुष्ट करके और दूसरे भाइयो को भी समझा कर शान्त किया और परमात्मा की कृपा से हिन्दू धर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पढ़ने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा० साहिब सरकार की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप मे मनोनीत है। और इससे आर्यसमाज का मान और आन को सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। डा० साहिब आजकल धर्मशिक्षा के अध्यापकों को तैयार कर रहे हैं और स्वय सभी मुस्लिम, जैन, सिख, ईसाई विद्यालयो मे जाकर हिन्दू धर्म पर अपने भाषण देते हैं। इस प्रकार सभा वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्तचित है।

नीचे आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित सदस्यो की सूची

निर्वाचन सूची—१९८५ व ८६ के दो वर्षों के लिए—

श्री हरवंश राय जी साही—सभा प्रधान

श्री महेन्द्र जी मल्ला—वरिष्ठ उप प्रधान

श्री नीलकान्त जी वर्मा—उपप्रधान, मम्बासा (समुद्र तटीय क्षेत्रार्थ)

,, राजेन्द्र पाल जी चड्ढा— ,, किसुमू (पश्चिमी क्षेत्रार्थ)

,, बलबीर जी डांडा—महामन्त्री

,, मधु कुमार जी मल्ला—उपमन्त्री, एलडोरेट

श्री वीरेन्द्र कुमार जी वर्मा— ,,

,, गिरधारी लाल जी मैठी—कोषाध्यक्ष

, धर्मेन्द्र जी कपिला—सह कोषाध्यक्ष

, अमरनाथ जी फक्के—वेद-प्रचाराधिष्ठाता

श्रीमती निर्मला वशिष्ठ—पुस्तकाध्यक्ष

१ -इन्ही के साथ चौदह सदस्य अन्तरग सभा के लिए निर्वाचित हुए।

२—श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल के लिए।

क—श्री नवल कुमार मल्ला, निर्देशक और

ख—श्रीमती पुष्पा मदन, मैनेजर निर्वाचित हुए।

— सभा प्रधान

पूर्वी अफ्रीका नैरोबी में श्री स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा यज्ञ एव वेद प्रचार नैरोबी के मन्त्री की रिपोर्ट

सितम्बर मास मे श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्द जी जब भारत से नैरोबी मे पधारे तो हमारा ८२वा वार्षिकोत्सव अति निकट था, यह हमारा सौभाग्य ही था कि स्वामी जी ने इस ऐतिहासिक समारोह मे यजुर्वेद परायण यज्ञ के ब्रह्मापद स्वीकार किया व साथ-२ उस सप्ताह उनके पावन प्रवचनों से नैरोबी वासी आर्य जनता ही नहीं समस्त हिन्दु समाज ने बहुत लाभ उठाया, यहा स्थित आर्य परिवार को एक बार फिर वर्षो पूर्व यहा उनके द्वारा आयोजित विश्वमृत यज्ञ की स्मृति ताजा हो आई।

वार्षिकोत्व के पश्चात पूज्यनीय स्वामी जी के प्रवचन नियमित रूप से जारी रहे हैं। सप्ताह में चार प्रवचनो का कार्यक्रम लगातार चल रहा है। जिनसे आर्य जनता अत्याधिक लाभान्वित हो हो रही रही है। अक्तूबर मास मे हिन्दू कौंसिल और केन्या के तत्वावधान मे विजयी दशमी के उपलक्ष्य पर दीन दयाल भवन, नैरोबी मे उन का विशेष प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमे उन्होने 'हिन्दू संस्कृति मे प्रख्यात पुरुषोत्तम राम' पर बहुत ही ओजपूर्ण व शिक्षाप्रद विचार प्रकट किये। बड़ा ही सफल कार्यक्रम रहा जिसका श्रवण हिन्दु धर्म के प्राय सभी वर्गों ने किया।

गत सप्ताह ही पूज्यनीय स्वामी जी ने मोम्बासा आर्य समाज का भ्रमण किया और उनके वार्षिकोत्सव मे भाग लिया, यह समाज इस देश की काफी पुरानी आर्य समाजों मे से है। आर्य जनता ने वहा उनके प्रवचनो से अत्यन्त लाभ उठाया है।

आजकल आर्य प्रतिनिधि सभा (पूर्वी अफ्रीका) विशेष कार्यक्रम स्वामी जी की सेवाए प्राप्त करने हेतु सलग्न है जिसमे उनकी योग्य गाईडेंस मे कुछ पुस्तको का प्रकाशन व संस्कृत की क्लास का उल्लेख विशेषनीय है।

प्रभु श्री स्वामी जी को चिरायु व दीर्घायु करे। व ऐसे ही समुद्र पार व स्थित आर्य समाजो का मार्ग दर्शन चिरकाल तक करते रहे।

—देवेन्द्र कुमार मल्ला
मन्त्री

आर्यसमाजों की गतिविधियां

दो मुस्लिम युवक हिन्दू धर्म में दीक्षित

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे विख्यात आर्य समाजी नेता तक केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने मुस्लिम युवकों को उनकी प्रार्थना पर हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया। उनके नाम मोहम्मद इस्लाम से महेन्द्र आर्य व लालमियां से लालसिंह यादव रखा गया।

शुद्धि समारोह पर आयोजित सभा मे ३० वर्षीय इन युवको ने बताया कि वह सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन के पश्चात हिन्दू धर्म से प्रभावित हुये हैं। वह जीवन भर आर्य समाज का प्रचार करेंगे।

श्री देवीदास आर्य ने इन युवको को हिन्दू धर्म की दीक्षा देते यज्ञोपवीत धारण कराकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराया। —मन्त्री आर्य समाज

आर्य कन्या इण्टर कालेज व आर्य समाज की शोभा यात्रा
विदेशी मिशनरियों व पेट्रो डालर पर प्रतिबन्ध की मांग

कानपुर —आज आर्य कन्या इण्टर कालेज, गोविन्द नगर, आर्य समाज और स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर की संयुक्त शोभायात्रा आर्य समाज मन्दिर से निकाली गयी शोभायात्रा का नेतृत्व आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य कर रहे थे। कालेज की तीन हजार छात्रायें हाथो मे ओ३म पताकायें उठाये वेद मन्त्रों व भजनो का उच्चारण करती चल रही थी। महानगर की विभिन्न आर्य समाजो व अन्य संस्थाओ व भारी संख्या म स्त्री पुरुष महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे, जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय, छुआ छूत और दहेज बन्द करो, विदेशी ईसाई मिशनरियो पर प्रतिबन्ध लगाओ, पेट्रो डालर पर रोक लगाओ, गोहत्या बन्द करो, के जय घोष लगा रहे थे। शोभायात्रा कालेज प्रांगण मे समाप्त हो गयी।

शोभा यात्रा के साथ रजत जयन्ती के तीन दिन का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। —मन्त्री, आर्य समाज

आर्य वीरों के लिए अधिसूचना

मान्यवर,

मैंने आर्य वीरो के लिए आर्य वीर दल के सम्बन्ध मे संक्षिप्त इतिहास की पृष्ठभूमि में कुछ जानकारी हेतु एक पुस्तक आर्य वीर दल एक परिचय। प्रकाशित की है। भाग दौड़ करने तथा ज्योतिषादि मे तथा आवरण छपाई कार्य के कारण पुस्तक कुछ महंगी पड़ गई है। किन्तु माननीय प्रधान संचालक जी श्री बाल दिवाकर हंस सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली के परामर्श से आर्य वीरो के हित मे इस पुस्तक की कीमत आधी कर दी गई है ताकि सभी आर्य वीर इससे लाभ उठा सके। अत आर्य वीर इसे अब केवल ५) मे प्राप्त कर सकेंगे। —रामाज्ञा वैरागी, संचालक

सार्व० आर्य वीर दल बिहार-नेपाल

आर्य वीरांगना दल प्रशिक्षण शिविर
कन्या गुरुकुल नरेला का समापन
कन्याओं में देशभक्ति सम्पन्न आनन्द की लहर

नरेला। आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्ता होगी कि आर्य कन्या गुरुकुल नरेला मे लगातार बीस दिवसीय आर्य वीरांगना दल प्रशिक्षण शिविर प्रभु कृपा से सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर मे सुश्री सुमित्रा आचार्य के संरक्षण मे अनेक देशी-विदेशी व्यायामो के साथ २ शस्त्र संचालन प्रशिक्षण भी दिया गया। राष्ट्रभक्ति समाज सेवा, आत्मानुशासनादि योग्यताओं को प्राप्त कर वीरांगनाओ ने गौरवानुभूति प्राप्त की।

शाखा संचालिका-ब्रह्मचारिणी किरणमयी स्नातिका, सहसंचालिका ब्र० अम्बू स्नातिका, मन्त्री ब्र० कृष्णा शास्त्री, ब्र० सरस्वती, स्नातिका प्रचारमन्त्री ब्र० कमला शास्त्री, कोषाध्यक्ष ब्र० तूफानजित से नियुक्ति पाकर निष्ठा पूर्वक अपना २ कार्य सम्हाल लिया। समस्त बालिकाओ ने इसका स्वागत किया।

ब्र० किरणमयी शास्त्री संचालिका
आर्य वीरांगना दल कन्यागुरुकुल नरेला

किनारो जागते रहना

न समझो सो गई लहरें किनारो, जागते रहना।

न जाने किस तरफ से कब नया तूफान उठ आये,
परत वह गर्द की गहरी न फिर ईमान पर छाये,

सहा जो क्लेश बरसो तक नही आगे पड़े सहना।

क्षितिज के पार से बादल घृणा के झांकते अब भी,
तुम्हारी उच्चता वृढ़ता निरन्तर आंकते अब भी,

इरादा है तबाही का मुखौटा मित्र का पहना।

छिपी है आज पानी मे धुआं जब तब नजर आता,
भयंकर चिन्ह वह कल का किसी भी पल उभर आता,

हवा के वही तेवर इशारो मे वही कहरा।

बिकरने की बिखरने की सदा की है इन्हें आदत,
बहेंगी पर वहा से ही जहां की भूमि है अवनत,

बनो धुर्धर्ष तो भूप ये तुम्हें भी अन्यथा ढहना।

—धर्मवीर शास्त्री
BI/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली ६३

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका कार्य कारिणी समिति डरबन प्रदेश निवासी पुरुष सदस्य।
बैठे हुए (बायें से) पदाधिकारीगण श्री भारत गगादयाल (सयुक्त कोषाध्यक्ष) श्री मनोहर सुमेरा (सयुक्त मन्त्री) श्री सानन्द सत्यदेव (उपप्रधान) श्री शिशुपाल रामभरोस (प्रधान) स्वामी सजीवनी सरस्वती (दिल्ली) प० नरदेव वेदालकार अध्यक्ष वेद निकेतन और वैदिक पुरोहित मण्डल श्री रवि जीवन (स०कोषाध्यक्ष) श्री सत्यानन्द शिवप्रसाद (स० मन्त्री) श्री बिसराम रामविलास (स० मन्त्री)।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका वैदिक पुरोहित गण
बैठे हुए (बाय मे) श्रीमती चन्द्रावती पदारथ श्रीमती प्रभावती मानकचन्द मन्त्री वैदिक पुरोहित मण्डल प नरदेव वेदालकार प्रधान वै० पु० मण्डल श्री रामदत्त नगेसर उपप्रधान वै पु० म० श्रीमती द्रोपदी शिवपाल, श्रीमती सरोज रामापना श्रीमती शिवकुमारी हनुमान खड़े हुए दूसरी पंक्ति मे देवीप्रसाद पदारथ श्री आत्मदेव ईश्वरसिंह श्री जगेसर गगा विसून श्री खेमराज भगवानदीन श्री एम एम नायडू खड़े हुए पहली पंक्ति मे श्री सुमाई दुर्गा श्री आर० कोमल श्री रामचन्द महादेवसिंह श्री रामरतन छेदा।

आर्य समाज लन्दन के प्रति आभार

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान और सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री छोटूसिंह जी अपने आपरेशन के लिए गत दिनो जब लन्दन गए तो आर्य समाज लन्दन ने हर प्रकार से उन्हे उनकी पत्नी और सुपुत्र को आराम दिया और ५ सप्ताह तक वे आर्यसमाज भवन मे रहे। ईश्वर कृपा से अब स्वस्थ होकर भारत लौटे हैं। सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर आर्य समाज लन्दन और श्री एस० एन० भारद्वाज जी व समाज के अन्य सभी अधिकारियो ने श्री छोटूसिंह जी के परिवार को जो सहयोग दिया उसके लिए सार्वदेशिक सभा आर्य समाज लन्दन और उसके अधिकारियो के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती है। रामगोपाल शालवाले
सभा-प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका कार्य कारिणी समिति के नाटल प्रान्त के सदस्य (डरबन नगर को छोड़कर)

दक्षिण अफ्रीका में स्वामी भवानी दयाल स्मारक

डरबन १५ दिसम्बर ८५

आज यहा स्वामी भवानी दयाल सन्यासी की स्मृति को अक्षुण बनाये रखने के लिये एक स्मारक का उदघाटन किया गया। गत मगलवार को ही उनका ९०वा जन्म दिवस था।

दक्षिण अफ्रीका मे स्वामी भवानी दयाल का नाम एक कर्मठ भारतीय नेता के रूप मे सदा याद किया जायेगा। महात्मा गाधी के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दिनो मे स्वामी जी उनके निकटतम सहयोगी थे। उन्होने न केवल दक्षिण अफ्रीका मे अपितु ससार के अन्य भागो मे भी रहने वाले प्रवासी भारतीयो के उत्थान के लिये कठिन परिश्रम किया। विशेषत उन भारतीयो के लिये जो गत शताब्दी मे अग्रेजो द्वारा गिरमिटिया मजदूरो के रूप मे बाहर भेजे गये थे।

स्वामी भवानी दयाल का जन्म दक्षिण अफ्रीका म हुआ था किन्तु उनकी मृत्यु अपनी मातृभूमि भारत मे ही हुई। उन्होने दक्षिण अफ्रीका और भारत की राजनीति मे सक्रिय भाग लिया। किन्तु उनका आदोलन सदा ही एक गाधीवादी सत्याग्रही के रूपमे ही रहा।

स्वामी जी की स्मृति मे आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका ने डरबन मे एक विशाल सभागार का निर्माण कराया है। स्वामी जी सन १९२५ मे इस सभा के सस्थापक प्रधान मनोनीत किये गये थे। जिसकी हीरक जयन्ती इस वर्ष मनाई जा रही है। इस सभागृह म एक पुस्तकालय खोला जा रहा है जिसमे भारतीय तथा धार्मिक विषयो की पुस्तक होगी। साथ ही हिन्दी शिक्षा का भी प्रबन्ध होगा। — सुरेश चन्द्र, पाठक
प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

अमृतसर में आर्य समाज के प्रचार के प्रभाव से शुद्धि

अनेकों मुसलमान वैदिक धर्म मे प्रवेश कर रहे हैं अमृतसर मे आर्य धर्म प्रचार समिति के प्रधान आचार्य देव प्रकाश जी तथा महामन्त्री श्री भोलानाथ जी दिलावरी सूचित करते हैं कि १३ ११ ८५ को गाव कुहाली के दस मुसलमान परिवारो ने जिनकी सख्या ६७ थी अपना मजहब छोड़ कर वैदिक धर्म मे स्वेच्छा से प्रवेश किया तथा २० ११ ८५ को गाव मोकमपुरा मे ३१ परिवारो ने जिनकी सख्या १६२ थी, अपना धर्म परिवर्तित कर वैदिक धर्म अपनाया— दोनो स्थानो पर बड़े उत्साह से विशेष यज्ञ तथा सहभोज का आयोजन किया गया तथा स्थानीय और अमृतसर के समीप के अन्य गावो से भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया तथा इस शुद्धि कार्य मे यथाशक्ति योग दान किया। —मन्त्री, आर्य समाज

पंजि० सं० डी० (डी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-१२-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, Licence No. 93 Post in D.P.S.O. on 19-12-85

आर्यसमाज दक्षिणी कैलीफोर्निया

आर्य समाज दक्षिणी कैलोफोर्निया लासएन्जलेस अमरीका द्वारा श्रीमद्दयानन्दोत्सव, बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मैं प्रात: काल हवन-यज्ञ हुआ तथा सुन्दर भजनो द्वारा महर्षि की महिमा का गुणगान गाया गया। आर्य विद्वान पंडित दीप चन्द जी व्यास (सन्यास आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार) ने अपने ओजस्वी भाषण द्वारा जनता को कृतार्थ किया। मदन लाल गुप्ता मन्त्री ने आर्य जनता के प्रति महर्षि के उपकारों का वर्णन किया तथा आज के दिन उनके पवित्र चरित्र से शिक्षा ग्रहण करने की प्रार्थना की। इस अवसर पर दानवीरो ने दिल खोलकर दान दिया तथा ऋषि लगर के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई।

सायकाल रगारग कार्यक्रम धर्मप्रेमियो की सेवा मे प्रस्तुत किया गया। भारी सजावट के कारण आयसमाज का हाल चाद की तरह चमक रहा था। भिन्न-२ कलाकारो ने अपनी कला का प्रदर्शन किया इसी बीच लेखा निरीक्षक डा० विनोद भाटिया ने घोषणा की कि आर्यसमाज एक बहुत बडी बिल्डिग खरीदना चाहती है जिसके लिये दानवीरो की आवश्यकता है। उपप्रधान कृष्ण भल्ला तथा हर्ष नय्यर जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओ ने इस उत्सव को सफल बनाने मे कठिन परिश्रम किया। सभी कलाकारो को प्रमाण पत्र दिये गये। अन्त मे प्रधान श्री बाल कृष्ण शर्मा ने सभी उपस्थित सज्जनो का धन्यवाद किया तथा एक बार फिर स्वादिष्ट व्यञ्जनों सहित धर्मप्रेमी जनता ने भोजन का आनन्द लिया। —मदन लाल गुप्ता, मन्त्री

शोक-सभा

उन्नाव—आर्यसमाज,उन्नाव के प्रधान व नगर के प्रसिद्ध वकील श्री रघुबीरसिंह के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज,मन्दिर मे दिनांक ८-१२-८५ को शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया व एक शोक सभा हुई जिसमे परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति एव दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। —मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ...

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १ १ दूरभाष /७७१

वष २१ अङ्क २] पोष क्र० २ स० २०४२ रविवार २९ दिसम्बर १९ ५ वार्षिक म य एक प्रति ५० पसे

रजनीश के हिमाचल में बसने से भारत को खतरा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की चेतावनी

वेदामृतम्

परिवार में समन्वय हो !

वयमु त्वा गृहपते जनानाम्,
अग्न अकर्म समिधा बृ न्तम्।
अस्थूरि नो गार्हपत्य नि सन्तु,
तिग्मेन नस्तेजसा स शिशाधि ।

ऋग ६ १५ १९

तत्ति० ब्रा० ५ १ १

हिन्दी अर्थ हे गृहपति यज्ञिय अग्नि ! सामान्य जनो मे से केवल हमने ही तुझको समिधाओ से प्रदीप्त किया है । हमारे पारिवारिक सम्बन्ध समन्वय से युक्त हो। हमे तीक्ष्ण तेज से तेजस्वी कीजिए।

दिनाक २० दिसम्बर । सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने एक प्रेस वक्तव्य मे कहा कि आचार्य रजनीश हिमाचल प्रदेश के मनाली क्षेत्र मे अपना आश्रम बनाने की तैयारी कर रहे हैं। अमरीका मे उन पर अनेक मुकदमे चलाये गये थे और हथकडिया पहनाकर जेल मे बन्द कर लिया था। यदि रजनीश पर अमरीका मे मुकदमे चलते तो उनको १३५ वर्ष की सजा होती। आचार्य रजनीश को बडी मजबूरी मे अमरीका छोडना पडा और अमरीका सरकार ने उनसे एक बडी रकम जुर्माने के रूप मे वसूल की।

ये नकली भगवान वहा जाली शादिया करवाते रहे और कई लोगो को मरवाने के लिये भी वहा षडयन्त्र रचाये। रजनीश ने फ्री लव का प्रचार करके अनेक युवक युवतियो को अपने फदे मे फसाया। अमरीका से निकाले जाने के पश्चात रजनीश को ससार के किसी भी देश ने अपनी भूमि पर पर रखने की अनुमति नही दी।

वह अपने साथ भारी मात्रा मे हीरे जवाहरात लाये हैं। धन की उनको कमी नही है। अपनी अपार सम्पत्ति और धन के बल पर हिमाचल प्रदेश की गरीब और भोली जनता को पथभ्रष्ट करने का वह षडयन्त्र कर सकता है।

रजनीश का कई विदेशियो के साथ गुप्त सम्बन्ध है, जो हमारे देश के लिये खतरा बन सकता है अत भारत सरकार और हिमाचल प्रदेश सरकार से अपील की है कि वे रजनीश को हिमाचल प्रदेश मे बसने की अनुमति नही दे यदि ऐसा नही किया गया तो वहा की भोली जनता पर इसका अच्छा प्रभाव नही पडगा।

श्री शालवाले ने हिमाचल प्रदेश के मुख्य मन्त्री और भारत के प्रधानमन्त्री को भी इस सम्बन्ध मे पत्र लिखे है।
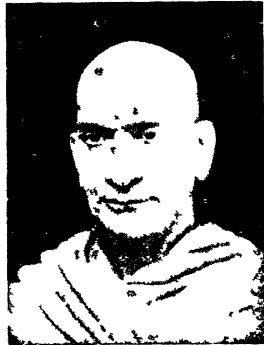
गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

श्रद्धानन्द-बलिदान हीरक-जयन्ती सप्ताह

२३ दिसम्बर १९८५ से २९ दिसम्बर १९८५ तक

आपको जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय २३ दिसम्बर १९८५ से २९ दिसम्बर १९ ५ तक श्रद्धानन्द बलिदान हीरक जयन्ती सप्ताह सोल्लास मना रहा है जिसमे अखिल भारतीय हाकी टूर्नामेंट, अखिल भारतीय त्रिभाषा-भाषण प्रतियोगिता कवि-सम्मेलन एव सगीत-सम्मेलन आदि प्रमुख कार्यक्रम होगे।

—डा० सत्यकाम वर्मा कुलपति

सम्पादक—ओम्प्रकाश त्यागी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आध्यात्मिक सुधा

बिना चढ़े कमान के कैसे लागे तीर

देवताओं ने विष के बाद ही समुद्र से अमृत प्राप्त किया था भारतवासियों में कठोर-तपस्या और साधना से ही स्वराज्य पाया है। अपनी अत्यन्तप्रिय एवं निकटस्थ वस्तु भी यों हीं नहीं मिल जाती।

ईश्वर जो हृदय में ही रहता है मानव को सहज नहीं मिलता। योगाभ्यास के बिना उसकी अनुभूति भी नहीं होती। तपोबल से ही मनुष्य कृतार्थ होता है। अभ्यास उसी का व्यवहारिक रूप है महर्षि वशिष्ठ उसी को पुरुषार्थ मानते हैं—

पौनः पुन्येन करणमभ्यास इति कथ्यते।

पुरुषार्थः स एव तेनास्ति न बिना गतिः।। योगवासिष्ठ—

अर्थात् किसी काम को बारम्बार करने का नाम अभ्यास है उसी को पुरुषार्थ भी कहते हैं। उसके बिना किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं होती।

तपस्या और अभ्यास

आत्मशक्ति का पूर्ण विकास तपस्या से होता है। मनु ने कहा है कि देवता और मनुष्य के समस्त सुख तपोमूलक हैं।

तपो मूलमिदं सर्वं दैव मानुषकं सुखम्।।
यद् दुष्करं यद् दुरापं, यद् दुर्गं यच्च दुस्तरम्।
सर्वं तत् तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमः।। मनु०—

तप से कोई सुख, कोई सिद्धि, कोई पद, भव-वैभव दुर्लभ नहीं है ऋषि-मुनियों ने जो अलौकिक सिद्धियां प्राप्त की हैं उनके पीछे उन की तपस्या थी। प्राचीन-तत्वज्ञों का कथन है कि ईश्वर ने पहले तपस्या की, उसने तपस्या करके समस्त सृष्टि की रचना की।

स तपोऽतप्यत स तपस्तप्त्वा।
इद सर्वममृजत।। तैत्तरीय उप०

तपस्या जीवन के मूल में है। जीवन की वृद्धि, मनोरथों की सिद्धि और सर्वसमृद्धि की उपलब्धि उसी के द्वारा सम्भव है। तपस्या मानवमात्र का धर्म है, परलोक के लिये नहीं, इसी लोक के लिये उसकी आवश्यकता होती है। वह नित्य के उपयोग की वस्तु है। पतझड़ के बाद बसन्त, बसन्त की भांति तप के बाद ही सिद्धि मिलती है।

तपस्या क्या है? तपस्या का अर्थ है संयम के साथ कष्ट भोगना, सदुद्देश्य की सिद्धि के लिये सात्विक श्रम, साधना अभ्यास, योग-मनोयोग व्यायाम। उसका उद्देश्य आंख मूंदकर बैठना, राम का नाम जपना अथवा हठयोग के चमत्कार दिखाना नहीं है। वह किस प्रकार शक्तिदायिनी होती है इस पर विचार कीजिये।

शारीरिक व्यायाम या श्रम से शरीर को कष्ट अवश्य होता है परन्तु उसी के द्वारा शरीर सुगठित एवं पुष्ट होता है। अंग २ की शक्तियों का उद्दीपन उसी से होता है। सम्पूर्ण जीवन की भी यही दशा, सात्विक परिश्रम से कष्ट भोग कर आत्मा की सद्वृत्तियां पुष्ट और प्रबल हो जाती हैं। कष्ट भोगे बिना कोई कर्म नहीं बनता है। उसके बिना जीवन में प्रौढ़ता-परिपक्वता नहीं आती, तपस्या एक प्रकार का अभ्यास है।

अभ्यास से मनुष्य की कोई भी शक्ति क्षीण नहीं होती, उलटे बढ़ जाती है। यह जीवन का स्वाभाविक नियम है। हंसने से हृदय का हर्ष कम नहीं होता। दया करने से हृदय शुष्क नहीं होता, पठन-पाठन से बुद्धि घिसकर कुंठित नहीं होती। प्रत्येक गुण-अभ्यास से बढ़ ही जाता है। मनुष्य अभ्यास से ही कुशल व गुनी बनता है आरम्भ में वह दुष्कर होता है। पर उसके द्वारा बाद में कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। जड़मति भी सुजान बन जाता है। योग का प्रयोग उसी से ज्ञात होता है, उसी से मनुष्य किसी कार्य में दक्ष और सिद्धहस्त बनता है। लौकिक जीवन में मनुष्य कर्माभ्यास द्वारा ही काम का आदमी बनता है।

सन्त तुकाराम ने ठीक ही कहा है कि असाध्य को साध्य करने का बस एक ही उपाय है—अभ्यास। एक मूर्तिकार से किसी ने पूछा— कि अमुक मूर्ति के बनाने में आपका कितना समय लगा है? उसने कहा - कि इसे दस दिन में बनाने के लिये मैंने ३० वर्ष परिश्रम किया है, अर्थात् इसके पीछे तीस वर्ष का अभ्यास है तब यह १० दिन में बनी है। अभ्यास से आत्मयोग्यता की वृद्धि इसी प्रकार होती है। बिना कष्ट भोगे न विद्या आती है और न शक्ति बढ़ती है।

मानवीय शक्तियों का समुच्चय

संयम-सदाचार—नियन्त्रण और सदुपयोग संयम और सदाचार से ही सम्भव है सदाचार का उद्देश्य केवल संयम है, संयम में शक्ति है, और शक्ति ही आनन्द की बुनियाद है। जो स्वयं संयम-हीन है वह शक्तिहीन भी होगा और शक्तिहीन व्यक्ति न आनन्द का अनुभव करता है और न उसकी कल्पना ही कर सकता है।

संयम क्या है? संयम का सीधा अर्थ है—आत्म निग्रह। प्रकृति में सब कुछ नियम-बद्ध है। अतः मानव-जीवन को भी नियमित-मर्यादित होना चाहिये। तभी वह स्वस्थ, चैतन्य रह सकता है। अनियन्त्रित जीवन में स्वाभाविक शक्तियों की स्थापना नहीं हो सकती है।

मनुष्य जब अपनी इन्द्रियों को अपने अधिकार में रखता है। अर्थात् जब उसका भौतिक जीवन उसके आध्यात्मिक जीवन के नियन्त्रण में रहता है तभी वह स्वाधीन और शक्तिमान होता है।

संयम से ही आत्मबल, मनोबल, शारीरिक बल, सुदृढ़ होते हैं, अन्तर्द्वन्द मिटता है मनोवेग और वासनाओं का दमन होता है साथ ही चित्त की एकाग्रता बढ़ती है। एकाग्र चित्तता में अद्भुत शक्ति होती है।

संयम और सदाचार ब्रह्मचर्य से सिद्ध होते हैं। ब्रह्मचर्य की महिमा से जो परिचित हैं वे संयम और सदाचार के महत्व को समझ सकते हैं। ब्रह्मचर्य का अर्थ तो बहुत व्यापक है, परन्तु जिस अर्थ में वह व्यवहृत होता है उसी पर ध्यान दीजिये। जीवन शक्ति को शरीर में धारण करने की क्षमता ही ब्रह्मचर्य है।

दूसरे शब्दों में वीर्य संरक्षण कहा जाता है। उसी को शरीर में पचाना, अपव्यय से बचाना ब्रह्मचर्य है, वीर्य ही जीवन का सार है उसकी उत्पत्ति का कारण है, ओज-तेज, प्रभाव का उत्पादक है। वीर्य से ही शौर्य-पराक्रम सिद्ध होते हैं। अतएव उनका संरक्षण और संबर्धन आवश्यक है, यही तो जीवन का बीज है, ब्रह्मचर्य ही जीवन वृक्ष का पुष्प है और प्रतिभा-पवित्रता, वीरता आदि उसके फल हैं। व्यास जी ने ब्रह्मचर्य को अमृत कहा है—अमृत ब्रह्मचर्यम्, महामनुष्य ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मतेज, आध्यात्मिक तेजस्विता प्राप्त करता है।

ब्रह्मचर्य की क्या आवश्यकता है इसे हम महापुरुषों के जीवन से जान सकते हैं जिसे हम स्वास्थ्य कहते हैं, वह संयम-सदाचार ब्रह्मचर्य से प्राप्त है संयम से स्वास्थ्य बनता है स्वास्थ्य से जीवन। शारीरिक-मानसिक व अध्यात्मिक स्वास्थ्य इन्हीं उपायों से सुलभ है। इनके द्वारा आत्म-शक्ति के अतिरिक्त मनुष्य को नैतिक शक्ति भी मिलती है हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि आत्मपूर्णता के लिए, नैतिक बल का बहुत बड़ा बल है। उससे मनुष्य का प्रभाव शत गुणित हो जाता है।

— सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना नाम मुन्शीराम से श्रद्धानन्द रखा था यह नाम सहसा नहीं रख लिया। इस नाम के रखने के लिये बड़ी तैयारी करनी पड़ी। पहले मुंशीराम थे मुंशीराम जिज्ञासु बने। सुना कि एक पण्डित व्याख्यान दिया करते हैं। इच्छा प्रकट की, कि उस आत्मा के दर्शन करू और व्याख्यान भी सुनू। माता ने कोठरी में बन्द कर दिया, कहीं जादूगर के जादू मे न फस जाय, पर वह फस गया महान् आत्मा के उपदेशों के चक्कर में।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने मे कटिबद्ध हो गया। आर्य समाज के प्रधान बनाये गये। उस समय वकालत करते थे। सोचा! क्या वकालत करते हुए भी आर्यसमाज प्रधान बन सकता हू। यह श्रद्धा थी—

आर्यसमाज का मन्तव्य है—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है सत्य ग्रहण और असत्य के परित्याग मे सदा उद्यत रहें। सत्य में उनकी कितनी निष्ठा थी। मुख्यारी पास करके आये। प्रैक्टिस करने लगे, उनके एजेन्ट ने बोर्ड लगा दिया—"ला० मुन्शीराम वकील" देखा बोर्ड पर वकील लिखा है कहा कि नही—मैं तो मुख्त्यार हू। एजेन्ट बोला नहीं वकील व मुख्त्यार मे कोई भेद नही है। बोले यह धोखा है। एजेन्ट ने कहा कि वकील लिखने से काम चलेगा। बोले मैंने अपना नाम जिज्ञासु रखा है। अत बोर्ड ठीक कराओ।

एक सेठ का मुकदमा वापस कर दिया कहा मुवक्किल झूठा है वादी पर टिकट नही था मैं पैरवी नही करता। अदालत ने समझाया इस प्रकार तुम्हारा काम बन्द हो जायेगा। बोले चिन्ता नहीं, ४०। मुवक्किल के वापस कर दिये। पाच सौ रुपये मासिक की आय थी उच्च स्तर के वकील थे, अदालत ने समझाया। मुंशीराम बोले मेरे गुरु दयानन्द की यही शिक्षा है सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करो? केस नही लिया, यह सब सर्वत्र फैल गई, वकालत ठप हो गई। इसका नाम है श्रद्धा—सत्य को धारण करना जहा सत्य की छाया देखी वहा टूट पड़े और असत्य को देखते ही भाग खड़े हुए। वेद ने कहा—'श्रद्धया सत्य माप्यते" यजु० १०.१९ तो श्रद्धा आत्मा का प्राण है इसी प्रकार जिस आत्मा मे श्रद्धा है उसका मूल्य है और जिसके अन्दर श्रद्धा नही वह फूटी कौडी की कीमत का नहीं। ससार मे चाहे और किसी की कीमत नहीं परन्तु अपने घर मे सन्तान की माता-पिता के सामने और पति की पत्नि के सामने बडी कीमत है। निर्धन स्त्री भी लाख रुपया मिलने पर पति को न बेचेगी और न माता पुत्र को, परन्तु जब प्राण निकल जायें तो उस शरीर की उन प्यारों के समक्ष भी कौडी कीमत नही रहती। इसलिये आत्मा सबसे बड़ा बन्धु परमात्मा है। यदि आत्मा के अन्दर श्रद्धा रूपी प्राण है तो आत्मा का मूल्य है अन्यथा परमात्मा की दृष्टि में भी आत्मा की कोई कीमत नहीं है।

श्रद्धा बिना त्याग के नहीं मिलती, त्याग और श्रद्धा का मेल है हथेली का सीधा भाग श्रद्धा और पृष्ठ भाग त्याग में करुणा और श्रद्धा मे प्राप्ति रहती है। सीधा हाथ करने वाला भिखारी है भगवान के सामने हाथ पसारने वाला भिक्षुक है।

श्रद्धानन्द का फल

श्रद्धा वाला दीन नही, जो लोगों के द्वार पर सिर झुकाता फिरे। दीन केवल प्रवीन का, प्रवीन परमेश्वर है, प्रवीन के सामने दीन होना शोभता है दीनों का दीन होना कायरता है। यह विलक्षण शोभता है। पुत्र, पिता-माता की दीन है परन्तु उसे कोई दीन नहीं कहता। इस प्रकार भक्त जब प्रवीन का दीन हो जाता है तो वह उसका सखा बन जाता है दीन नहीं रहता है।

एक राजा किसी साधु के पास गया साधु ने पूछा तुम कौन हो। राजा बोला मैं महाराजा हू, स्वामी हू, साधु ने कहा—तुम तो मेरे सेवक के भी सेवक हो स्वामी कैसे हो? तुम तो विषयों के दास हो और यह विषय मेरे दास हैं अत जब तक विषयो पर विजय न पाओगे, प्रवीन के दीन नहीं बन सकते।

श्रद्धानन्द के अन्दर श्रद्धा विद्यमान है उन्होंने सोचा जब अहकार आयेगा तो श्रद्धा टूट जायेगी। परमात्मा का आशीर्वाद अनवरत रूप से प्रवाहित है तभी नमी वहीं रहेगी, जो उसके समीप है। भगवान के भक्त सदा उसके समीप रहते हैं उसका आशीष सदा ही उसे मिलता है श्रद्धा होंने से भक्ति भक्त मे सदा रहती है।

भगवान करे कि श्रद्धानन्द की जीवनी से ,हम श्रद्धा रूपी गुण ग्रहण करके परमात्मा के श्रद्धालु भक्त बनकर अपने जीवन को सफल उज्ज्वल कर सकें।

शिक्षा संस्थान गुरुकुल-स्वामी श्रद्धानन्द

शिक्षा क्षेत्र मे स्वामी जी नये युग के विधाता थे स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे शिक्षा के स्वरूप बीज का स्वरूप ही प्रदर्शित किया था। परन्तु उस बीज के लिये भूमि तैयार की फिर उसे बोकर अकुरित वृक्ष के रूप में प्रकट करने का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को है गुरुकुल कागड़ी उस बीज का महान् वट वृक्ष है, जो आज हरिद्वार के समीप अपने विशाल रूप मे विद्यमान है।

एक समय था जब गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनरुज्जीवित करने के लोग स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक पागल गिना करते थे। सभी युग विधाता नायक व्यक्ति अपने उस काल के उद्देश्यों और प्रेरणाओं के लिये पागल ही समझे जाते रहे हैं। परन्तु समय आता है कि वही व्यक्ति फिर देश और समाज के पूज्य देवता माने जाते हैं स्वामी जी भी इसी कोटि के नायक थे। स्वामी जी के स्वरूप को लोगो ने अभी तक समझा नही।

आरम्भ मे स्वामी जी ने कागड़ी ग्राम में जिस शिक्षा का बीज बोया था वह विशुद्ध भारतीय था उस गुरुकुल में विशुद्ध सस्कृत ही शिक्षा का स्वरूप था परन्तु उन्होंने शीघ्र ही अनुभव किया कि काशी के समान कूप मण्डूक पण्डितो द्वारा न हो सकेगा। अत उस का परित्याग कर सस्कृत विद्या के पौधे पर पाश्चात्य विद्या कलम लगाई। इस कलम के लगाने मे माली का काम आचार्य रामदेव जी ने बड़ी लगन और तत्परता से किया। दुःख इस बात का है कि स्वामी जी तथा आचार्य रामदेव ने सत्य मार्ग का प्रदर्शन तो करा दिया। परन्तु सत्य मार्ग पर जिस प्रकार चलना चाहिए। उस पर दोनों के अनुयायी चल नहीं पाये।

आज भी गुरुकुल मे एक ओर न्याय सस्कृत का पढ़ाया जाता है दूसरी ओर पाश्चात्य लौजिक भी पढाया जाता है विद्यार्थी न्याय और लौजिक पढ़कर भी यह जान पाते कि इन दोनों पद्धतियों में कहा २ समन्वय है और कहा २ विरोध।

सस्कृत के छन्द-शास्त्र तथा काव्य शास्त्र और अग्रेजी के छन्द व काव्य शास्त्र मे भी परस्पर क्या सम्बन्ध है। इस प्रकार गुरुकुल आगे पग बढ़ाता तो इसका नाम देश विदेश मे कुछ और रूप मे होता।

शिक्षा क्षेत्र में जिस दूसरे सिद्धान्त को अपनाया, वह था माध्यम हिन्दी भाषा और लिपि। शिक्षा शास्त्री आकर रसायन शास्त्र भौतिकी, पाश्चात्य दर्शन इतिहास, राजनीति अर्थशास्त्र की पढाई कैसे हिन्दी भाषा के द्वारा की जाती है। तीसरा उद्देश्य था ब्रह्मचर्य तथा तपश्चर्या, पूर्वक विद्या ग्रहण करना। भोगी और आराम पसन्द जीवन मे ब्रह्मचर्य का पालन दुष्कर कार्य है।

चौथी बात थी शिक्षा के साथ समानता का व्यवहार। साम्यवाद गुरुकुल मे क्रियात्मक रूप मे विद्यमान था शिक्षा पद्धति में साम्प्रदायिकता का भी कोई स्थान न था खान-पान, रहन-सहन, सब समान

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मुस्लिम पर्सनल-ला

मुस्लिम पर्सनल ला के सम्बन्ध मे आजकल समाचार पत्र प्रमुखता से विचार प्रकाशित कर रहे हैं। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात भाषा व जनसख्या के आधार पर पाकिस्तान बटा किन्तु जवाहर लाल नेहरू की तुष्टिकरण की नीति ने चेंज आफ पापुलेशन के प्रस्ताव को नहीं माना। १९४७के बाद १९७१ तक भारतीय मुसलमान अपने आपको भारत में अल्पसख्यक एव मेहमान समझता था किन्तु १९७१ के बाद मुसलमानों को यह बताया गया कि हम ने लिया है पाकिस्तान लडके लें गे हिन्दुस्तान। इस नीति को सफल करना है अरब देश एव पाकिस्तान की शह पर भारत में धर्म परिवर्तन की साजिश शुरु हुई उसके तहत अनेक हरिजनों को धन व विदेश मे नौकरी का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया गया किन्तु वह सफल नहीं हो, इसका कारण आर्यसमाज ने जागृत होकर दयानन्द के सुप्त शुद्धि आन्दोलन को जीवित कर दिया परिणाम अच्छे निकले अब एक नई समस्या ने जन्म लिया उच्चतम न्यायालय ने शाहबानो काड में मुस्लिम महिलाओ को गुजर बसर के लिए तलाक के बाद अपना हक लेने का अधिकार दिया कुछ सिर फिरे एव देशद्रोही तत्वों ने इस फैसले को लेकर देश भर मे एक आन्दोलन चलाया शरीयत बचाओ। किन्तु सवाल यह है कि घर की चार दीवारी मे बन्द मुस्लिम बहनें अभी भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र नहीं हैं मन से तो वह न्यायालय की शुक्र गुजार हैं किन्तु अपने शोहर व समाज के सामने आने की हिम्मत उनमें नही है मुस्लिम महिलाओं की दशा कुरान के नियमों मे बडी दयनीय है भले ही मुस्लिम भाई इससे मुकरते हो आज लोग यह दावा करते हैं कि कुरानें इसलामी व आसमानी किताब है लेकिन इसको प्रमाणित करने की बौद्धिक क्षमता सम्भवत मुस्लिम विद्वानों मे नहीं है पिछली शताब्दी मे अनेक शास्त्रार्थ हुए किन्तु हर बार मुस्लिम भाइयो ने आर्य प्रचारको को अपने वहशी पन का शिकार बनाया।

राजनैतिक स्तर पर एक बात सोचनी होगी कि भारत को एक सविधान व एक नियम मे चलाया जाय जो लोग भारत मे रहते हुए भी भारत को अपना राष्ट्र मानने को तैयार नहीं, जो लोग विदेशों के पैसे के लोभ मे अपनी मातृभूमि को बेच देना चाहते हैं उनको देश का वफादार कैसे मान लिया जाय हर ओर से एक ही बात देखने को मिलती है कि मुस्लिम भाई साम्प्रदायिक भावनाओ को भडका रहे हैं हम केवल एक निवेदन करना चाहते हैं कि जो लोग इस देश के नागरिक हैं उन्हे देश के प्रति वफादारी दिखानी चाहिए सबकी भलाई इसी मे है कि सब मिलजुलकर रहे स्त्रियो को पूरा अधिकार है कि वह अपने लिए सघर्ष करें मुस्लिम बहनो के सम्बन्ध में हमारा विचार है कि कितने भी विशेष नियम व कानून मत मतान्तरों एव राजनैतिक तुष्टिकरण के आधार पर हैं उनके लिए आम राय तैयार की जाय एक खुला विचार मागा जाय देश के सभी बुद्धि जीवी अपने विचार दें ३८ सालो मे हमने सब कुछ खोया यदि कुछ बचाना है तो देश की नीतियों में आमूल परिवर्तन करना होगा समझौतावाद ने हमें मानसिक स्तर पर शून्य कर दिया यदि अब भी हमने अपने विचारो मे नियमो में परिवर्तन नही किया तब परिणाम अच्छा नहीं होगा। विदेशी खूखार आखें हमारी उन्नति से ईर्ष्या करती हैं आंखों मे चुभता है मेरा भारत आप सबका भारत है।

हम ऐसे किसी भी निया वर्ग या व्यक्ति का विरोध करे जो इस देश की मिट्टी को माथे से नही लगा सकते जो वन्दे मातरम् नहीं कह सकते। अत हमारा सभी राजनैतिक सामाजिक एव धार्मिक नेताओं से आग्रह है कि वह मानवता की रक्षा के लिये समुचित पग उठाये।

— डा० आनन्द सुमन
तपोवन आश्रम
देहरादून २४-८-८

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का दिल्ली के उपराज्यपाल को पत्र

सेवा मे,

माननीय उपराज्यपाल जी
राज निवास, दिल्ली-५४

सादर नमस्ते !

मान्यवर,

आप सम्भवत यह जानते ही होंगे कि आजकल दिल्ली में स्कूटरों, मोटर कारो तथा अन्य वाहनों के अक पट्ट (नम्बर प्लेट) हिन्दी में होने के कारण पुलिस द्वारा उनका चालान किया जा रहा है।

हिन्दी न केवल हमारी मातृभाषा है, किन्तु उसे भारतीय सविधान के द्वारा राजभाषा का भी दर्जा प्राप्त है। अतः हिन्दी के अक-पट्ट को मान्यता न मिलना अत्यन्त आश्चर्य और आपत्ति का विषय है। एक प्रकार से यह देश के सविधान की अवहेलना है।

मेरा आप से निवेदन है कि यदि किसी कानून के अन्तर्गत हिन्दी मे लिखे अक-पट्ट अमान्य हैं तो उस कानून को तुरन्त बदला जावे और हिन्दी के अक पट्टों को मान्यता दिलाई जाय। हिन्दी के प्रति इस प्रकार के भेद भाव पूर्ण व्यवहार के कारण आम जनता में काफी रोष फैल रहा है और हो सकता है कि यह एक आन्दोलन का रूप धारण कर ले। सन् १९६१ मे भी सरकार द्वारा हिन्दी अक पट्टों के खिलाफ इसी प्रकार की कार्यवाही की गई थी जिसके विरोध में जनता को आन्दोलन करना पडा और हिन्दी अक पट्टों को पुन मान्यता प्राप्त हुई।

मुझे विश्वास है कि आप जनता की भावना का आदर करते हुए और अपने राष्ट्र प्रेम का परिचय देते हुए प्रशासनिक आदेश में यथोचित परिवर्तन करवाने की कृपा कर हिन्दी अक पट्टों पर चालान तुरन्त बन्द कराकर अनुगृहीत करेंगे।

शुभ कामनाओ सहित,

भवदीय
(रामगोपाल शालवाले)
सभा-प्रधान

शरीयत की आड़ में विद्रोह की भावना

हमीरपुर में श्री देवीदास आर्य का स्वागत

हमीरपुर। आर्य समाज हमीरपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रख्यात महिला उद्धारक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य का विभिन्न सस्थाओं की ओर से भव्य स्वागत किया गया। श्री आर्य की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशसा की गई।

इस अवसर पर आयोजित विशाल आम सभा में राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित श्री देवीदास आर्य ने कहा कि जिस प्रकार सन् १९४७ से पूर्व देश मे मुसलमानो ने देश के विभाजन के लिये विद्रोह किया था उसी प्रकार अब पुन शाहबानू के निर्णय के विरुद्ध व शरीयत की आड में देश में विद्रोह की भावना उभारी जा रही है। इससे देश में पुन सकट उत्पन्न हो सकता है। श्री आर्य ने कहा कि सरकार को चाहिये कि वह तुष्टीकरण की नीति छोड़कर देश मे सबके लिये समान कानून लागू करें। सभा की अध्यक्षता राजकीय डिग्री कालेज के आचार्य ने की तथा सचालन प्रो० लक्ष्मीशकर द्विवेदी ने किया। उत्सव में सर्वश्री उत्तमचन्द्र शरर, लक्ष्मीसिंह शास्त्री, प्रो० सत्यकाम आदि विद्वानों के भाषण हुए।

—लक्ष्मीशंकर द्विवेदी, मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को श्रद्धाञ्जलियां

वीर सैनिक !

स्वामी श्रद्धानन्द एक सुधारक थे। कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उनका जीवित जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए थे। वे सकट आने पर भी घबराए नहीं थे। वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग-शय्या पर नहीं किन्तु रणागन मे मरना पसन्द करता है।

ईश्वर उनके लिए धर्मवीर हुतात्मा की मृत्यु चाहते थे और इसलिए यद्यपि वे उस समय भी रोगशय्या पर थे एक घातक के हाथों से उनके देह का अन्त हुआ। गीता के शब्दो मे 'सुखिन क्षत्रिया पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम' धन्य और सौभाग्यशाली हैं वे वीर जिनको ऐसी मृत्यु प्राप्त होती है।

मृत्यु किसी भी समय सुखदायक होती है। किन्तु वह उस वीर के लिए दुगुनी सुखदायक होती है जो अपने ध्येय या सत्य के लिए मरता है। इसलिए मैं उनकी मृत्यु पर शोक नही मना सकता। उनसे तथा उनके अनुयायियो से मुझे एक प्रकार की ईर्ष्या होती है। क्योकि यद्यपि स्वामी जी मर गए हैं तथापि वे जीवित हैं जब कि वे अपने विशाल देह के साथ हमारे मध्य विचरण करते थे। जिस कुल मे उनका जन्म हुआ और जिसके साथ उनका सम्बन्ध था वे उनकी इस प्रकार की शानदार मृत्यु पर बधाई के पात्र हैं। वे वीर के समान जिए और वीर के समान मरे। —महात्मा गान्धी

नवभारत के पथप्रदर्शक

स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रथम परिचय का सौभाग्य मुझे भागलपुर मे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के समय प्राप्त हुआ। उस समय तक स्वामी जी ने सन्यास नही लिया था और महात्मा मुन्शीराम जी के नाम से ही प्रसिद्ध थे। गुरुकुल की स्थापना करके राष्ट्रीयपद्धति से शिक्षा देना उन्होंने बहुत पहले ही प्रारम्भ कर दिया था और गुरुकुल का काम शान से चल रहा था। आपके हिन्दी प्रेम और हिन्दीसेवा को देखकर ही सम्मेलन ने सभापति के पद पर आपका निर्वाचन किया था। सम्मेलन को जिस उत्तमता के साथ आपने निभाया वह हमे आज भी अच्छी तरह याद है। पर स्वामी जी के गुणो को मै ठीक तरह ईस्वी सन १९१९ और उसके बाद ही पूरी तरह से जान सका। स्पष्टवादिता और निर्भीकता के वे मूर्तिमान स्वरूप थे। उनकी निर्भीकता, साहस वा स्पष्टवादिता के गुणो को अग्रेजी सरकार अच्छी प्रकार जानती थी। परन्तु इन गुणो का उनके स्वदेशवासी सहयोगी कार्यकर्ता भी तीव्रता से अनुभव करते थे। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली चांदनी चौक में मौजूद न भी थे, उनके हृदय पट पर भी स्वामी जी की वह निर्भीक मूर्ति अमिट रूपसे चित्रित है। उस समय स्वामीजी ने अग्रेजों की गोलियों और सगीनों के सामने अपना सीना खोलकर हृदय की निर्भीकता तथा उच्चता का प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित किया। उनकी उस शुद्ध तथा उच्च भावना ने जामामस्जिद के मिम्बर पर से उनसे उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता सत्यनिष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता के कारण आततायी के हाथ से शहादत प्राप्त की। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान प्रथम सास्कृतिक पथप्रदर्शक का है। जिसको स्वामी जी के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उसके लिए स्वामी जी के जीवन वृतान्त को पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नही किया, प्रत्युत उनका सारा जीवन ही देश के लिए एक महान् गुरुकुल का काम कर रहा है और करता रहेगा। —डा० राजेन्द्र प्रसाद

निर्भीकता और समाज का पुञ्ज

१९२६ के अन्त मे यह वर्ष एक भारी दुखद दुर्घटना से सर्वत्र अन्धकारमय हो गया। इस दुर्घटना से सम्पूर्ण भारतवर्ष रोष व घृणा से कांप उठा। इस घटना से पता चलता है कि साम्प्रदायिक जोश हम लोगो को कितना नीचे गिरा सकता है। रोगशय्या पर पड़े हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक धर्मान्ध युवक द्वारा हत्या कर दी गई। जिस वीर पुरुष ने गोरखो की सगीनो के सामने अपनी छाती अड़ा दी थी और जो उनकी गोलियों का मुकाबिला करने के लिए आगे बढ़कर खड़ा हो गया था उस वीर पुरुष की ऐसी मृत्यु ? लगभग आठ वर्ष पूर्व आर्य समाज के इस प्रमुख नेता ने देहली की शानदार जामामस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दुओं तथा मुसलमानों के सम्मिलित विशाल जनसमुदाय का 'हिन्दू मुस्लिम एकता' तथा भारतवर्ष को स्वतन्त्रता का सन्देश दिया था और उस विशाल समुदाय ने भी 'हिन्दू-मुसलमानों की जय' के नारों से उनका स्वागत किया था तथा मस्जिद से बाहर देहली की गलियो मे हिन्दू व मुसलमान, दोनो ने उसको अपने खून से अधिक सम्पुष्ट किया था। आज उनकी अपने देश भाई द्वारा हत्या कर दी गई। वह धर्मान्ध व्यक्ति निःसन्देह यह समझता था कि वह एक ऐसा पुण्य कार्य कर रहा है जो उसे स्वर्ग मे पहुंचा देगा।

विशुद्ध शारीरिक साहस का अथवा किसी भी शुभ कार्य के लिए शारीरिक कष्ट सहन करने एवं उस कार्य के लिए मृत्यु तक की परवाह न करने वाले गुणो का मैं सदा से प्रशसक रहा हू। मैं समझता हू कि हम सभी व्यक्ति ऐसे अदभुत साहस की प्रशसा करते ही हैं। स्वामी श्रद्धानन्द मे इस प्रकार का निर्भीकता पूर्ण साहस आश्चर्यजनक मात्रा मे विद्यमान था। वृद्धावस्था मे भी उनकी उन्नत सीधी आकृति तथा सन्यासी वेश मे उच्च भव्यमूर्ति लम्बा कद, शाहाना शकल, चमकती हुई अन्तर्भेदिनी आखें और कभी-कभी दूसरो की निर्बलताओ पर मुख पर आ जाने वाली झुझलाहट की झलक—इस सजीव मूर्ति को मैं कैसे भूल सकता हू ? प्राय यह तस्वीर मेरी आखो के सामने आ जाती है। —जवाहरलाल नेहरू

वीरता और बलिदान की मूर्ति

स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी मे है। स्वामी जी छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते हैं—'लो चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नही हो जाता ? मैं चाहता हू कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।

—सरदार वल्लभ भाई पटेल

श्रद्धामय जीवन

श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्य प्रति श्रद्धावान थे और उसी मे आनन्द मनाते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नो के अमर चित्रो को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है। —कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सच्ची श्रद्धाञ्जलि

आज के कठिन समय में महान शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि हो सकती है कि हम देश, धर्म और सस्कृति की रक्षा में पूरे बल से लगें। डरें नही और विजय प्राप्त करें।

रामगोपाल शालवाले प्रधान
सार्वदेशिक आ० प्र० सभा, नई दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द-एक प्रेरक व्यक्तित्व

(ले०—श्री आर्येन्द्र शर्मा एम.ए. वेद शिरोमणि)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पजाब प्रात के जालन्धर जिले के अन्तर्गत तल्वन ग्राम में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी (स०१९११) के दिन ला० नानक चन्द के घर हुआ। आपका बचपन का नाम मु शीराम था। पुलिस के विभाग में एक उच्च अधिकारी होते हुए भी ला० नानक चन्द बहुत ईश्वर भक्त एव धार्मिक प्रवृत्ति के थे। मु शीराम जी सबसे छोटी सन्तान थे, इस कारण पिता का उन पर परम दुलार था।

मु शीराम का प्रारम्भिक जीवन कई धार्मिक सस्थाओं मे बीता। अपने पिता जी के कारण मन्दिरो मे उनका जाना होता रहा परन्तु एक बार रीवा नरेश की महारानी के कारण उनको विश्वनाथ मन्दिर में प्रवेश करने से रोका गया। उनके मन मे इस कारण मूर्ति पूजा के विरुद्ध भाव जागृत हुए कि क्या भगवान् भी धनिको के होते हैं।

एक रोमन कैथोलिक पादरी के ससर्ग से गिरजे में भी गए परन्तु वहा उसके घर नन और नादिरों के अनुचित सम्बन्धों को देखकर गिरजे के प्रति भी विरोधी भावना उत्पन्न हो गई। मन्दिर और गिरजा घर के व्यवहारों ने उनके हृदय मे ईश्वर पूजा का द्वार बन्द कर दिया।

एक बार बरेली में उनके पिता जी ने महर्षि दयानन्द का भाषण सुना और मु शीराम को भी सुनने की प्रेरणा दी। स्वामी जी के व्यक्तित्व और उनके युक्तिपूर्ण व्याख्यान ने मु शीराम जी की धारा ही बदल दी। उनके सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से उनके विचारों मे भी क्रान्ति आई और ये पक्के वेदानुयायी आस्तिक बन गए। कुछ साथियो के ससर्ग से उनमे दुर्गुण आ गए थे वे भी विनष्ट हो गए और उन्होने आर्ष सस्कृति के उद्धार का दृढ सकल्प किया। इसी प्ररणा ने उन्हें गुरुकुल कागडी खोलने के लिए विवश किया और अपने दोनो पुत्रो हरिश्चन्द्र और इन्द्र को सर्वप्रथम गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। इसी के साथ अपनी सब सम्पत्ति भी गुरुकुल के लिए अर्पण कर दी। इसी का शुभ परिणाम यह हुआ कि अनेकों व्यक्तियों ने किया अनुसरण कर अपने पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया।

गुरुकुल में सुचारु रूप से कार्य चलाने पर मु शीराम ने सन्यास आश्रम मे प्रवेश करना उचित समझा श्रद्धानन्द के रूप में गुरुकुल के एक महोत्सव पर विधिवत् सन्यास ग्रहण कर लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस आन्दोलन को भी अपना पूर्ण सहयोग दिया। १९१९ के अमृतसर कांग्रेस में स्वागताध्यक्ष पद से राष्ट्र भाषा से राष्ट्र का आह्वान करते हुए। देशवासियों को विदेशी शासन से मुक्त होने की प्रेरणा दी। १९१९ में रोलर एक्ट का विरोध करते हुए महात्मा गाधी ने जब असहयोग और सत्याग्रह का शखनाद किया, तब दिल्ली की असख्य जनता का नेतृत्व करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने गोरे शासन को चुनोती दी।

महात्मा गाधी ने सविनय अवज्ञा भग आन्दोलन में सहस्रों आर्य समाजी कृष्ण मन्दिर गए। उन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द पजाब और दिल्ली के निर्विवाद सार्वजनिक नेता थे। हिन्दू और मुसलमानों ने समान रूप से उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया। दिल्ली की जामामस्जिद और फतहपुरी मस्जिद की व्याख्यान वेदियों से उन्होने मुस्लिम समाज को सम्बोधित कर उन्हें मातृभूमि के लिए सर्वस्व त्याग करने का उद्बोधन दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी से कांग्रेस का विरोध शुद्धि आन्दोलन के कारण हुआ। उनका कथन था कि जो व्यक्ति वैदिक धर्म छोडकर अज्ञानतावश दूसरे धर्म में प्रवेश कर गए। उनको सत्य मार्ग दिखाना हमारा कर्त्तव्य है। इस प्रकार उन्होंने शुद्धि आन्दोलन का पर्याप्त प्रचार किया। इसी से क्षुब्ध होकर एक मदान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने २१ दिसम्बर १९२५ को स्वामी जी के ऊपर गोली चलाकर उनकी हत्या कर दी।

उनकी हत्या तो अवश्य हो गई परन्तु उनका कार्य शिथिल नहीं पडा। जनता ने उनके बलिदान को सराहा। इसका प्रमाण उनकी दिल्ली चादनी चोक) मे लगी उनकी आदम कद प्रस्तर मूर्ति है। मूर्ति तो एक प्रतीक है। उनका जीवित जागृत मूर्त स्वरूप गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी है जहा आर्य भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। वैदिक सस्कृति के प्रबल प्रचारक स्नातक निकलते हैं। उनके सुपुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपनी लेखमाला से वैदिक सस्कृति की रक्षा की। इसी कारण उनको पार्लियामेंट का सदस्य भी चुना गया।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन हमारे लिए उद्बोधक है कि हम भी देश के कल्याण के लिए अपना तन मन धन समर्पित कर देश को उन्नति के शिखर पर स्थापित कर दें।

अमर हुतात्मा वीर श्रद्धानन्द

—श्री सत्यकाम आर्य (हिसार)

ऐतिहासिक ग्रन्थों मे हमारी सस्कृति और सम्यता के अभ्युदान के लिए अनेक महापुरुषों के योगदान की मधुर चर्चा है। उनमे भारत के भाग्य विधाता, आर्य संस्कृति के सफल उद्धारक, शिक्षा भानु अमर हुतात्मा स्वतन्त्रता सेनानी अद्वय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का नाम सर्वोपरि है।

स्वामी जी की जीवन झाकी जहा हृदयो मे सनसनी जागृत कर देने वाली है वहा प्रेरणा एव स्फूर्ति की अजस्र मन्दाकिनी भी है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षत्र मे अपनी जीवन सम्बन्धी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति वाणी के माध्यम से की।

स्वामी जी का प्रारम्भिक गृहनाम श्री मु शीराम था। शिक्षा की दृष्टि से आप एक सफल विधिवक्ता थे। आपके पिता प्रशासन मे उच्च अधिकारी थे। उनका जीवन धर्म एव कर्मनिष्ठ था। तब भी पुत्र सभी दुर्गुण एव दुर्व्यसनों से ओतप्रोत था। युवावस्था के भारी थपेडे मुन्शीराम के जीवन को अस्तव्यस्त कर रहे तथा वह भौतिकता के गर्त मे स्वाभाविक ही हवा के साथ सूखे पत्ते के समान उडा जा रहा था। दुनिया भर के दोषों ने मुन्शीराम के जीवन को ऐसा धूमिल बना दिया था कि जीवन के घुप्पमेघ अन्धकार मे सन्मार्ग की दिशाए सर्वथा ओझल हो चुकी थी। ऐसी विकट स्थिति में मुन्शीराम के लिए आर्य समाज के संस्थापक भारतीय सभ्यता एव सस्कृति मे अमृत के रूप मे प्राण सचारित करने वाले जगद्गुरु महर्षि दयानन्द का प्रवचन अमृत का काम कर गया तथा मुन्शीराम के जीवन ऐ श्रद्धा हुई वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप मे आर्य जगत के सामने प्रकट हुए।

वैदिक सभ्यता के अनुरागी, निर्भीक सन्यासी ने योग्य उपदेशकों द्वारा वैदिक प्रचार करवाया। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली सुरक्षा हेतु गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना की। जो अब भी दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। स्वामी जी मुस्लिम शुद्धि के प्रबल समर्थक थे। मुसलमानों ने जामामस्जिद के गुम्बज पर खडे होकर उनसे उपदेश देने की प्रार्थना की। ईस्लाम के इतिहास मे यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार सम्मान प्रदान किया गया हो। इतना ही नहीं स्वामी जी ने सिद्धान्तवाद को दर्शाते हुए जामामस्जिद के गुम्बज पर खडे होकर भी अपना उपदेश वेद मन्त्रो के उच्चारण से प्रारम्भ किया।

स्वामी जी ने गाधी जी की मुस्लिम पोषक नीति के कारण ही काग्रेस से त्याग पत्र दिया तथा खुले रूप से शुद्धिकरण का कार्य अपने हाथों मे ले लिया।

स्वामी जी का जीवन विशाल कर्म क्षेत्र रहा है। गुरुकुलीय मण्डली के आप सबसे बडे नेता थे। सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के आप वर्षों प्रधान रहे,प्रादेशिक आय प्रतिनिधि सभा पजाब के आप वर्षों प्रधान रहे। सचमुच देश और जाति को जागृत करने में आपका गहरा हाथ था।

पजाब मे फौजी कानून की घटना विशेष स्मरणीय है। जिसके कारण सारे पजाब मे आतक छाया हुआ था। अब तक बहुत से निरीह प्राणियो को अण्डमान जेल म ठूस दिया गया था। रोलट एक्ट भारतीयो पर थोपा गया। दिल्ली मे इस आन्दोलन के अग्रिम नेता वीर सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। वीर सयासी निडर होकर जलूस का नेतृत्व करते हुए घण्टाघर के पास पहुचे तो गोरों के सैनिक अपनी सगीने तानें खडे थे स्वामी जी ने गरज कर कहा "निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती मे सगीन घोंप दो।"

२३ दिसम्बर सन् १९२६ को एक अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति ने कुछ लीगी नेताओ के बहकावे मे आकर स्वामीजी पर तीन गोलिया चला दी। तथा वह वैदिक सभ्यता का अनुरागी ओ३म् की तीन अक्षरों की ध्वनि के साथ शहीद हो गया।

आज हम सबको यह सकल्प लेना चाहिए कि हम स्वामी जी की भाति आर्य समाज के निर्भीक एव त्यागी तपस्वी बनकर महर्षि दयानन्द के अनुपम सन्देश को घर घर फैलाने की इन शब्दों के साथ शपथ लें—

आर्य वीर उठो और जागो।
कसम तुम्हे देश व कौम की।
आर्य वीरो वतन को सम्भालो।
कसम तुम्हें देश कौम की॥

गीत

श्रद्धा का श्रद्धानन्द भडार तुमको भूल गया है।
जाति का सच्चा खिदमतगार, तुमको भूल गया है॥
गर्दन मे झोली डाली दर दर का बना भिखारी।
गगा का गुरुकुल करे पुकार॥ तुमको
अपना सर्वस्व लुटाया, बिछुडो को गले लगाया।
पतितो का कर गया बेडा पार॥ तुमको
गोरे के होश उड गये, तोपो के मुह भी मुड गए।
देहली का चादनी चौक बाजार॥ तुमको

जामा मस्जिद के अन्दर, स्वामी जी बैठे डटकर।
वेदों का करते हैं प्रचार॥ तुमको
कातिल सरहद से आया अन्दर पिस्तोल छुपाया।
स्वामी जी कई दिन से बीमार॥ तुमको
खूनी की प्यास बुझाई हमके गोली खाई।
ओ३म् की बाजन लागी तार॥ तुमको
कर्जा है उनका चुकावे, प्राणो की भेंट चढावे।
आशानन्द होगा तब प्रचार॥ तुमको

—आशानन्द भजनीक
शाहदरा देहली ३२

क्या ब्राह्मण ग्रन्थ वेद हो सकते हैं ?

--प्रो० ओम् प्रकाश ब्रह्मचारी एम० ए० (द्वय) विद्यावाचस्पति उपप्रधान, आर्यसमाज (मुजफ्फरपुर)।

पिछले तीन हजार वर्षों में किसी विद्वान् को इस बात का सन्देह नही हुआ कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है। इतने काल से आर्यों के हृदय में ब्राह्मण की श्रुतियों का उतना ही मान रहा, जितना संहिताओं के मन्त्रों का रहता था। आर्यों के श्रौत कार्य इन दोनों को तुल्य मान कर ही होते रहे हैं। इन सबके बावजूद, १९वीं सदी में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मान्यता के विरुद्ध इस बात की घोषणा की कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के 'वेद संज्ञा विचार' विषयमें लिखा—"मन्त्राणामेव वेद संज्ञा न ब्राह्मण ग्रन्थानाम् इति।" ऋषि की इस घोषणा के विरुद्ध परम्परागत पंडित मण्डली में क्षोभ पैदा हुआ और अपनी पुरानी मान्यता को प्रमाणित करने के लिए वे, ऋषि भक्तों से शास्त्रार्थ करने लगे। वैसे तो 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद हैं अथवा नहीं' इस विषय अनेक शास्त्रार्थ हुए, जिनमें बूंदी शास्त्रार्थ एवं कानपुर शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं और इनके अभिलेख प्रकाशित हैं, और पक्ष-विपक्ष में बहुत कुछ लिखे गये। परन्तु हाल में स्वामी करपात्री जी की पुस्तक 'वेदार्थ परिजात' में इस प्रश्न को पुनः उठाया जाना हलचल का करण बना है। इस लघु निबन्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यता कि 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नही है' को तको एवं प्रमाणों से पुष्ट किया जाएगा।

वेद की परिभाषा देते हुए ऋषि ने आर्योद्देश्य-रत्नमाला (९५ में लिखा है—"जो ईश्वरोक्त सत्यविद्याओं से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं।" स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश (२) में भी लगभग ऐसे ही विचार ऋषि ने प्रकट किये हैं—"चारों वेदों (विद्या धर्मयुक्त ईश्वर प्रणीत संहिता मन्त्र भाग) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूं। ये स्वयं प्रमाण स्वरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य का प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं वैसे चारों वेद हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संहिता भाग को ही वेद मानने में निम्नांकित हेतु दिये हैं: -

१—वेद ईश्वरोक्त हैं।

२—वेद का ज्ञान निर्भ्रान्त एवं सत्य हैं।

३—वेद स्वतः प्रमाण हैं।

प्रश्न—क्या आप ब्राह्मण पुस्तकों को वेद नहीं मानते ?

उत्तर—नहीं, क्योंकि जो ईश्वरोक्त है, वही वेद होता है, जीवोक्त को वेद नहीं कहते। जितने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं वे सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत है। जैसा ईश्वर के सर्वज्ञ होने से तदुक्त निर्भ्रान्त सत्य एवं मत के साथ स्वीकार करने योग्य होता है वैसा जीवोक्त नहीं हो सकता क्योंकि वे सर्वज्ञ नहीं हैं। परन्तु जो वेदानुकूल ब्राह्मण ग्रन्थ हैं उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता हू। वेद स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं। इससे जैसे वेद विरुद्ध ब्राह्मण ग्रन्थों का त्याग होता है वैसे ब्राह्मण ग्रन्थों से विरुद्धार्थ होने पर भी वेदों का परित्याग नहीं हो सकता क्योंकि वेद सबको सर्वथा माननीय हैं।

संहिता भाग के ही वेद होने में चौथा हेतु ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में दिया है—"वेद में इतिहास नहीं है।" वे लिखते है—"ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हो सकते क्योंकि उन्हीं का नाम इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी भी है। वे ईश्वरोक्त नहीं हैं किन्तु महर्षि लोगों के किये वेदों के व्याख्यान हैं। तैत्तिरीय संहिता भाष्य १।६।१ में भट्ट भास्कर मिश्र ने लिखा है—"ब्राह्मणं इतिहासाः पुराकल्पश्च ब्राह्मणन्येव······सर्वाण्येतानि ब्राह्मणान्युच्यन्ते।"

पांचवां हेतु ब्राह्मण ग्रन्थों का वेदों का व्याख्यान करना है। ऋषि लिखते हैं—"ब्राह्मण ग्रन्थों की वेदों में गणना नहीं हो सकती क्योंकि "इषेत्वोर्जेत्विति" इस प्रकार से उनमें मन्त्रों के प्रतीक धर-२ वेदों का व्याख्यान किया है। मन्त्र भाग में (संहिताओं में) ब्राह्मण ग्रन्थों की एक भी प्रतीक कहीं देखने में नहीं आती। इससे जो ईश्वरोक्त मूल मन्त्र अर्थात् चार संहिता है वे ही वेद हैं, ब्राह्मण ग्रन्थ नही।"

छठा हेतु व्याकरण—महाभाष्य का प्रमाण भी है। महामुनि पाणिनि भी वेद और ब्राह्मण में अन्तर मानते हैं। द्वितीया ब्राह्मणे (२-१-६)• चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि (२-३-६२) इन सूत्रों से भी वेद-ब्राह्मण का भेद स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार महर्षि पतञ्जलि भी शब्दों के दो भेद मानते हैं—वैदिक और लौकिक। वैदिक शब्दों के जो-जो उदाहरण दिये गये हैं उनमें एक भी ब्राह्मणों का नहीं है। अतः पतञ्जलि भी ब्राह्मण को वेद नहीं मानते।

सातवां हेतु स्वयं ब्राह्मण शब्द ही है। "ब्रह्मभिः चतुर्वेदविद्भिः ब्राह्मणैः महर्षिभिः प्रोक्तानि ब्राह्मणानि" इस व्याकरण प्रक्रिया के अनुसार भी ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नही हो सकते। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने "भ्रमोच्छेदन" में भी लिखा है—"ब्राह्मणं वेदानामिमानि व्याख्यानानि ब्राह्मणानि"—ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ हैं। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे भी ऐसा ही मत व्यक्त किया है—"उन का नाम ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्म जो वेद उसका व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण नाम हुआ।"

वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में उपर्युक्त अकाट्य एवं माननीय तर्कों तथा प्रमाणों से सिद्ध किया है कि 'ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हैं।" परम्परागत पंडित मण्डली और आधुनिक विद्वान् 'सायण' की भ्रान्ति से ग्रस्त हैं और सच्चाई को स्वीकार करने से कतराते हैं। सायणाचार्य ने "मन्त्रब्राह्मणयोः वेद नामधेयमिति" इस कात्यायन मुनि के वचन को उद्धृत करते हुए लिखा है—"मन्त्र ब्राह्मणात्मकत्व तावददुष्ट लक्षणम्"—'मन्त्र ब्राह्मणात्मको हि वेद."—"मन्त्र ब्राह्मणात्मकः शब्दराशि वेद." अर्थात् मन्त्र और ब्राह्मणों का नाम वेद है। आइए सायणाचार्य के मत की परीक्षा करें।

कात्यायन मुनि ने उक्त वचन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'भ्रमोच्छेदन' में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है—

'मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्' यह वचन कात्यायन ऋषि का नही है किन्तु किसी धूर्तराट् ने कात्यायन ऋषि के नाम से बनाकर प्रसिद्ध कर दिया है। जो कात्यायन ऋषि का कहा हुआ होता तो सब ऋषियों की प्रतिज्ञा के विरुद्ध न होता। क्या आप जैसा कात्यायन को आप्त मानते हैं। वैसा पाणिनि आदि को आप्त नही मानते ? जो कभी आप्त मानते हो तो पाणिनि आदि आप्तों की प्रतिज्ञा के विरुद्ध कात्यायन ऋषि को क्यों लिखा है ?"

पंडित युधिष्ठिर मीमांसक ने उपर्युक्त कात्यायन वचन पर टिप्पणी करते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'वेद संज्ञा मीमांसा' में पाद टिप्पणी में लिखा है कि उपर्युक्त प्रमाण कात्यायन के नाम से प्रसिद्ध प्रतिज्ञा परिशिष्ट में है। इस नाम के भी दो परिशिष्ट मिलते हैं—एक का सम्बन्ध श्रोत सूत्र से है, दूसरे का प्रातिशाख्य से। परिशिष्ट में होने से ही स्पष्ट है कि यह कात्यायन ऋषि का वचन नहीं है।"

(क्रमशः)

स्वामी श्रद्धानन्द जीवन गाथा

श्री रणबीर भाटिया (लुधियाना)

सुनो सुनो ऐ आर्य बन्धुओ सुनाता हूं, तुमको अमर कहानी।
अमर कहानी है महा पुरुष की,पाया न हमने जिसका सानी।
नानक चन्द था बहादुर अफसर-कन्हैया लाल का था बेटा।
मशहूर डाकू संग्राम सिंह ने, जिसके आगे था माथा टेका।
उसकी बहादुरी के कारनामे, सुने हमने लोगों की जबानी।
सुनो सुनो·········

उसके वहां हुआ चांद सा बेटा, मुन्शीराम रखा जिसका नाम।
बचपन बीता लाड़ प्यार मे, रहीसीपन ने बिगाड़ी जवानी।
शराब मीट के थे वह आदी, पढ़ाई में भी न था लगता दिल।
ऐसी हालत देख उनकी, बढ़ गई पिता की बेहद परेशानी।
सुनो सुनो·········

१८७७ में शादी हो गई, बनी धर्म प्राणाय पत्नी शिव देवी।
उसके भाई देव राज थे, कन्या महाविद्यालय के थे बानी।
विवाह के बाद कुछ मोड़ आया, छोड़ा मीट और शराब।
पढ़ाई में लगाया मन पूरा – १८८८ में बने वकील दिवानी।
सुनो सुनो·········

मुन्शीराम थे मूर्ति पूजक, रामायण की कथा के थे वह प्रेमी।
एक दिन मन्दिर जाने न दिया,दर्शन कर रहीथी रीवा की रानी
भगवान के घर भेद-भाव देखे, नास्तिक बन गये मुन्शीराम।
रुचि हो गई अंग्रेजी सभ्यता की ओर ईसाई बनने की ठानी।
सुनो सुनो·········

महर्षि दयानन्द अपने मिशन पर आये हुये थे बरेली में।
मुन्शी राम गये दर्शन करने, बदली फिर मानस पटल की कहानी
मान गया हूं प्रभु सत्ता को, फिर भी होता नहीं विश्वास।
धीरज रखो मन में तुम, मानोगे जब होगी कृपा रोहानी।
सुनो सुनो·········

फिर आर्य समाज में प्रवेश किया, किये बड़े अद्भुत काम।
बने प्रधान एम० पी० सभा के समाज सेवा में बीती जिन्दगानी।
१९०१ खोला आर्य गुरुकुल वेद मर्यादा के अनुसार।
एक ओर गंगा बहती झर-२, दूसरी तरफ नील गिरि रानी।
सुनो सुनो·········

शीघ्र हो गया मशहूर कांगड़ी, बना फिर विश्वविद्यालय।
हिन्दी संस्कृत का बना केन्द्र वेद मन्त्र बोले वहां जनानी।
पन्द्रह वर्ष तक की निष्काम सेवा, लिया सन्यास १९१७ में।
श्रद्धानन्द रखा नाम श्रद्धा से तप और त्याग की बने निशानी।
सुनो सुनो·········

देहरादून में कन्या गुरुकुल, दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा में।
उनके परिश्रम का ही फल है, होता है मन को देख हैरानी।
पहुंची खबर योरुप में, गुरुकुल है अड्डा,क्रान्तिकारियों का।
भेजा कमीशन वहां जांच के लिये करने गुरुकुल की निगरानी।
सुनो सुनो·········

भेजी रिपोर्ट कमीशन ने, श्रद्धानन्द को महापुरुष बतलाया।
दर्शन करना चाहते हो ईसा के, करलो दर्शन श्रद्धानन्द जहानी।
१९१९ में पहुंचे दिल्ली में, मचा हुआ था जहां हाहाकार।
था आर्डर गोली मारो, करे जो जुलूस निकालने की नादानी।
सुनो सुनो·········

वह डरा न गिदड़ भेड़ियों से, चलाओ गोली मैंने छाती तानी।
हुआ न साहस कमाण्डर को, न रोक सके जुलूस की रवानी।
गुरु के बाग सत्याग्रह में, सिखों की की उन्होंने रहनुमाही।
पहले ही जत्थे में जेल चले गये, ऐसे थे श्रद्धानन्द सेनानी।
सुनो सुनो·········

हिन्दू मुसलमान एकता में, रखते थे श्रद्धानन्द अटल विश्वास।
जामा मस्जिद में पहले हिन्दू थे, उचारि जिन्होंने वेद बाणी।
हिन्दू धर्म के थे सोहार्द, हिन्दुत्व पर चोट स्वीकार नहीं।
हजारों की शुद्धि की उन्होंने, हिन्दू धर्म में वापस लानी।
सुनो सुनो·········

अब्दुल रशीद था जनूनी मुसलमान, उसे यह सब कुछ न भाया।
धोखा देकर मारी गोली, समाप्त कर दी पवित्र कहानी।
शहीदों की नहीं होती मौत, मर कर भी वह अमर होते हैं।
अर्थी उठाई लाखों सिरों ने, भाटिया भूलेगी नहीं कुर्बानी।
सुनो सुनो·········

—:०—

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धानन्द स्वामी अमर शहीद, जगाया तुमने हिन्दुस्तान।
कार्य जग कल्याण किये, धन्य धन है तुमरा बलिदान॥
बीत गया शैशव लाडों में, युवा थे तब था अल्हड़पन।
कदम जब रखा जवानी में सुन लिया दयानन्द प्रवचन॥
बदल गया रात-रात में ही, ज्ञान की ओर दे दिया ध्यान॥१॥
संस्कृत उर्दू अरबी आंग्ल, फारसी पर भी था अधिकार।
वेद पढ़ षट्दर्शन भी समझ, चल दिया मोक्षा हित संसार॥
त्याग की तीव्र तप्त में तपा, सदा सोचा सबका कल्यान॥२॥
खुदा है एक बड़ा आदिल, जन्मता है न मरता है।
मतलबी मुल्ला और पण्डा, सत्य पथ से भटकाता है॥
दिल्ली जामामस्जिद से दिया, ऋचा आयत का एक व्याख्यान॥३
हीनता मे थे हिन्दू हेय, विधर्मी बढ़ा रहे थे दीन।
चला श्रद्धा का शुद्धि चक्र, भटकते पुन: कर लिये लीन॥
यवन ने भी दे दी थी दाद, शुद्ध जब किये सहस्र मस्कान॥४॥
अनाथों और विधवाओं को बनाया था गम से बेगम।
पढाया धर्म कर्म दीक्षा, खोल विधवा अनाथ आश्रम॥
पुनर्विवाह को दे के गति, बचाई महिलाओं की शान॥५॥
कांगड़ी गुरुकुल चालू किया, जगा दी भारत की जवानी।
छेड़ दिया जंग आजादी का, हार कब श्रद्धा ने मानी॥
तोप के अड़ा-अड़ा सीना ब्रिटिश के भुला दिये अवसान॥६॥
धर्म, न्यानत रशीद तुममो, कुटिल, शंका का करके नाम।
रुग्ण स्वामी को किया शूट खूब, जग मे हो गया बदनाम॥
तवारिख गाती रहेगी सदा स्वामी का अमर हुआ बलिदान॥७॥
मौत सबको खा जाती है, अमर रह जाते हैं शुभ काम।
प्रेरणा ले लो तुम भी आज करेगे जन हिताय कुछ काम॥
समर्पित कर दो श्रद्धाञ्जलि तुम्हारा भी होगा कल्यान॥८॥

—कन्हैया कल्याण बी०ए०, प्रभाकर
कल्याण आश्रम तिजारा, जिला अलवर

सभा-प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का सर शिवसागर रामगुलाम के निधन पर सम्वेदना पत्र

श्री प्रधान एवं मन्त्री जी
आर्य सभा मोरिशस
पोर्टलुइस

सादर नमस्ते !

हमे यह जानकर बडा दुःख हुआ कि मारीशस के गवर्नर जनरल और भू०पू० प्रधानमन्त्री डा० सर शिवसागर रामगुलाम का निधन हो गया है। डा० सर शिवसागर जहा ख्याति प्राप्त अन्तर्राष्ट्रीय नेता और मारीशस राज्य के प्रणेता थे, वहा आर्य समाज के साथ उनका गहरा सम्बन्ध भी था।

१९७२ मे अलवर आर्य महासम्मेलन उनके ही आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ था। वह इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। १९७३ मे मारीशस का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन पोर्टलुइस मे शानदार ढग से उन्हीं के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ था। आर्य जगत् उन्हे हमेशा आदर और सम्मान की दृष्टि से देखता रहा है। मारीशस राज्य मे आर्य समाज को प्रगति मे उनका बहुत बडा योगदान रहा है।

आर्य जगत् को इस महान् राजनयिक, स्वतन्त्रता सेनानी प्रबुद्ध विद्वान् और आर्य समाज के प्रबल समर्थक और हितैषी के निधन पर गहरा दुःख हुआ है। उनके निधन से अन्तर्राष्ट्रीय जगत् मे आर्य समाज का प्रमुख मित्र और हितैषी हमसे सदा सदा के लिए चला गया है और इस रिक्त स्थान की पूर्ति होना असम्भव है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अपनी ओर से उनके निधन पर हार्दिक सम्वेदना दिवगत के परिजनों तक भी पहुचाने की कृपा करें। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति और शान्ति दे और उनके मित्र, प्रशसक, परिजन व सहयोगी तथा श्रद्धालु उनके बताये हुए मार्ग का अनुसरण करते आगे बढ़ते रहें यही हमारी कामना है।

भवदीय
(रामगोपाल शालवाले)
सभा-प्रधान

आर्य वीर दल महाराष्ट्र का मासिक शिविर

दिनाक १-१२-८५ रविवार आर्य वीर दल महाराष्ट्र का एक दिवसीय मासिक शिविर दल के सचालक श्री गुलजारीलाल की देखरेख मे आर्य समाज माटुगा बम्बई मे लगाया गया।

आर्य वीरों को शारीरिक शिक्षण के अन्तर्गत सैनिक शिक्षा, व्यायाम और योगासन की शिक्षा दी गई तथा बौद्धिक शिक्षण में चरित्र निर्माण के साथ-साथ आर्य समाज की विचार धाराओं से अवगत कराया गया।

श्री त्रिभुवनसिंह आर्य, प्रो० वेंकटराव, श्री ओम्प्रकाश आर्य तथा श्री रामसिंह वर्मा ने शिक्षण का दायित्व सम्भाला। श्री दीनानाथ जी शर्मा ने व्यवस्था की देखरेख को तथा श्री अम्बालाल पटेल ने आभार प्रदर्शन किया।

—ओम्प्रकाश आर्य मन्त्री

आडम्बर रहित आदर्श विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान मे विगत दिवस श्री प्रो० देव शर्मा वेदालकार के पौरोहित्य मे दयानन्द कालेज अजमेर के प्राध्यापक नरेन्द्रकुमार पजाबी कोटा निवासी का शुभ विवाह उदयपुर निवासनी सुश्री चन्द्रकला अमोतरा के साथ सामाजिक कुरीतियों एव सब प्रकार के वाह्याडम्बरो तथा दहेज आदि से रहित दोनों की पारस्परिक सहमति से वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारियों ने वर वधू के सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करते हुए आशीर्वाद दिया। —रासासिंह मन्त्री

धर्म प्रचार

—आर्य समाज बेतूल (म० प्र०) के मन्त्री श्री विजयकुमार स्नेही ने सूचित किया है कि विशेष धर्म प्रचार का आयोजन किया गया। इसमें अनेकों विद्वानों ने भाग लिया इस अवसर पर श्री सियाराम जी निर्भय बिहार वालों ने राष्ट्र की अखण्डता एवम् एकता पर वैदिक विचारधारा द्वारा बड़े अच्छे ढग से विवेचन किया।

—स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु के प्रयत्नों से एक नई आर्य समाज रजपुरा जनपद बदायू मे २८ तारीख को स्थापित की गई जिसमे आगामी वर्ष के लिए श्री सोनपाल जी प्रधान, श्री शिवकुमार जी मन्त्री तथा दयाशकर जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान हीरक जयन्ती सप्ताह

कार्य-क्रम

२३ दिसम्बर १९८५—प्रात ७ बजे शोभा यात्रा स्थान श्रद्धानन्दद्वार
उदघाटन—हाकी टूनामट मध्याह्न १ बजे
अध्यक्ष—श्री रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली
संयोजक—डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार
हाकी टूनामट अध्यक्ष—मेजर वीरेन्द्र अ ा
संयोजक—प्रो० ओमप्रकाश मिश्र
मन्त्री—डा० राजकुमार रावत
रात्रि ७ बजे से ९ बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धांजलि सभा
अध्यक्ष—डा० सत्यकाम वर्मा (कुलपति)
संयोजक—डा० निरूपण विद्यालंकार (आचार्य)
२४ दिसम्बर १९८५—प्रात ७ बजे से ९ बजे तक
अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता
अध्यक्ष—डा० सुरेशचन्द्र शर्मा
प्राचार्य नानकचन्द्र महाविद्यालय मेरठ
संयोजक—प्रा० वेदप्रकाश शास्त्री
२५ दिसम्बर १९८५—रात्रि ७ बजे से ९ बजे तक
अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता
अध्यक्ष ...० शेरसिंह
प्रधान आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी
संयोजक प्रा० वेदप्रकाश शास्त्री
२६ दिसम्बर १९८५ रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक
योग—सम्मेलन
अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द जी महाराज
संयोजक ईश्वर भारद्वाज
२७ दिसम्बर १९८५ रात्रि ७ बजे से ९ बजे तक
कवि सम्मेलन
अध्यक्ष पद्मश्री रघुवीर शरण मिश्र जी
संयोजक—डा० विष्णुदत्त जी राकेश
२८ दिसम्बर १९७५—रात्रि ७ से ९ बजे तक
संगीत सम्मेलन—सुगम संगीत
गजल गीत कलाकार—श्री महेन्द्रजीतसिंह (बम्बई)
अध्यक्ष—श्री गणेश प्रसाद शर्मा (अम्बाला कैंट)
संयोजक—डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार
सहसंयोजक—संजय पारीक (जयपुर)
२९—दिसम्बर १९८५—श्रद्धानन्द हाकी टूनामट फाईनल १ बजे
पुरस्कार वितरण—सायं ४ बजे द्वारा श्री अरुण कुमार मिश्र जी
कुम्भ मेला अधिकारी)
कलाकार—श्री प्रदीप चटर्जी (बम्बई) (शास्त्रीय गायन)
श्री रहीम फईमुद्दीन डागर ध्रुपद गायन)
(कलकत्ता/जयपुर)
अध्यक्ष—श्री ए० के० सिंह जी (परगनाधीश)
संयोजक—डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार
सहसंयोजक—संजय पारीक (जयपुर)
समापन धन्यवाद शान्तिपाठ—आचार्य निरूपण विद्यालंकार
नोट —(१) प्रतिदिन हाकी टूर्नामेंट ९। बजे से होगा।
(२३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक)
(२) रात्रि के सभी कार्य क्रम विश्वविद्यालय भवन में होंगे।
(३) सभी अभ्यागतों के लिये स्वागत सत्कार भोजन व्यवस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से होगी।
(४) कार्य क्रमों में किसी प्रकार के परिवर्तन का अधिकार आयोजकों को होगा।

आर्यसमाज विषयक अनुसन्धान पर पी० एच० डी०

—श्री जयपाल आर्य

श्री जयपाल आर्य (३१ वर्ष) सम्प्रति भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा कार्यालय १२० नई दिल्ली में कार्यरत को गत मार्च में रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली द्वारा उनके शोध-प्रबन्ध, The Structural Functional Analysis of the Arya Samaj—A Study in Sociology of Religion विषय पर डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है यह शोध प्रबन्ध हरियाणा राज्य के पांच सौ आर्य समाजियों के अध्ययन पर आधारित है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध द्वारा सफल प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन अन्य अध्यापनों की अपेक्षा कई दृष्टि से भिन्न प्रकार का है, यथा—

(क) प्रस्तुत अनुसन्धान कार्य में आर्यसमाज के संरचनात्मक प्रकार्यात्मक आयमन सेट अप) की विचक्षण तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

(ख) यह अध्ययन आर्यसमाज में सातत्य कान्टिन्यूइटि) एवं परिवर्तन के प्रवृत्ति से सम्बन्धित है।

(ग) आर्य समाजी समुदाय के संरचनात्मक प्रकार्यात्मक पहलू की व्याख्या करने के अतिरिक्त यह शोध कार्य आर्यसमाजियों के वास्तविक जीवन का चित्रण प्रस्तुत करता है, अर्थात् आधुनिक समय में उनकी निवास-प्रक्रिया, कार्य-प्रणाली, तथा सोचने का ढंग किस प्रकार का है।

(घ) प्रस्तुत अध्ययन की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि इसमें आर्यसमाज का भविष्य ? के प्रश्न पर गहराई से विचार करके इसकी सम्भव प्रकृति एवं आकार का विवेचन किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध का लेखन कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व अनुसंधित्सु ने अपने पूज्य गुरुद्वय डा० श्यामधरसिंह काशी विद्यापीठ, वाराणसी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले, धर्माधिकारी, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आदि विषय के प्रति अपनी समझ सत्यानुसधायक निगूढ़ दृष्टि जटिल प्रश्नों के सुस्पष्ट विश्लेषण का प्रतिभा तथा मार्मिक समीक्षा की योग्यता का विकास किया जिनके प्रति गवेषक ने शोध प्रबन्ध के आभार प्रकटन स्थल पर अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

था। इस प्रकार गुरुकुल प्रणाली मे जो अच्छी भावनायें उसके भी उसके गौरव और गरिमा को आजकल के शिक्षा शास्त्री अभी तक नही समझ सके हैं।

गुरुकुल की जयन्ती

इस वर्ष कुछ नये तत्व गुरुकुल भूमि मे पहुचे हैं उन्होने वही पुरातन सभ्यता सस्कृति की अमर बेल को पुन फैलाने का शिवसकल्प लिया है। देख कितना सफल होते है। सफलता हेतु पग २ पर फैले काटो को हटाना होगा, कीचड हटाकर मार्ग प्रशस्त करना पडगा। निष्कन्टक स्थान बनाकर फिर पुराने सपने सजोने का व्रत पूर्ण कर।

इस जयन्ती समारोह के अवसर पर शिक्षा-पटल पर जहा वाद-विवाद सास्कृतिक-कार्यक्रम सगीत प्रतियोगिताय, कवि सम्मेलन का ओजस्वी प्रसारण होगा।

वहा पर क्रीडा प्रतियोगिता मे हाकी के मैच भी पुन किये जा रहे हैं। हाकी गुरुकुल मे प्रसिद्ध रहा है, इस प्रकार एक सप्ताह २३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक गुरुकुल कागडी अपने एक नव यौवन का सचार सा करता दीखेगा।

साथियों सम्हल कर चलना, स्वामी श्रद्धानन्द के सपनो का गुरुकुल कुछ काटे अगल-बगल मे पडे हैं जो करवट लेने पर चुभेंगे। यदि उन्हे हजम न किया तो निरन्तर दर्द पैदा करते रहेगे।

यह अमर शहीद की अमर बेल फले फूले, इस कामना के साथ अपने साथियों को साभार साधुवाद है कि इस विषमता के काल मे भी बीते युग को लाने मे सक्षम हो रहे हैं।

यदि सफल हुए तो स्वर्ग से स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मा तुम्हे सराहेगी और देगी आशीर्वाद।

तुम बढ़ो सफलता के मार्ग पर।
तुम जियो हजारो साल॥

—सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री सु... दिवंगत

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री साहित्याचार्य एम० ए० का अल्पकाल की बीमारी के बाद देहावसान हो गया। आप सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपने अपनी प्रतिभा के बल पर आर्यसमाज मे प्रसिद्धि प्राप्त की।

सरल स्वभाव सीधा सादा जीवन के व्यक्ति थे। उनकी विद्वत्ता का परिचय तब स्पष्ट हुआ—जब सार्वदेशिक सभा ने श्री करपात्री जी द्वारा लिखित पुस्तक वेदार्थ पारिजात का उत्तर दिया आचार्य विशुद्धानन्द जी ने उसके प्रकाशन व मुद्रण तथा प्रूफ रीडिंग मे आपने अथक परिश्रम किया पुस्तक के शुद्धिकरण सिद्धान्त सम्बन्धी विवेचन मे आपने पुस्तक का स्वरूप निखार दिया।

दो वर्ष हुए विद्यालय मे मुक्ति पाई थी और आर्य समाज के कार्य मे निरन्तर लगे रहते थे। उनके इस असामयिक निधन से आर्य समाज को भारी आघात लगा है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से दिवगत आत्मा के प्रति सद्गति की प्रार्थना की गई और उनके परिजनो व परिवार के प्रति इस महान वियोग पर गहरी सवेदना प्रकट की गई।

—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली से मुद्रित तथा ओ३मप्रकाश पुरुषार्थी मुद्रक और प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष अङ्क] सं० २४ जनवरी

महर्षि ने कहा था—

ईश्वर दयालु

जो अन्याय का नाश सत्यासत्य सब विद्याओं का जानने ... रक्षा करने और दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने ... इससे परमात्मा का नाम ... है

परमेश्वर न्यायकारी

... न्याय अर्थात् पक्षपात रहित धर्म करने ही का ... है इस उस ईश्वर का नाम न्यायकारी है

ईश्वर धर्मराज

... प्रकाशमान और ... का ...

डरबन आर्य महासम्मेलन में दक्षिण अफ्रीकी सरकार की रंगभेद नीति की कड़ी आलोचना

वेदामृतम्

परिवार में मिलकर रहें !

इहैव स्त माप याताध्यस्मत् पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु। वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु॥

अथर्व० ६।७३।३॥

हिन्दी अर्थ—हे समान कुल मे उत्पन्न हुए बन्धुओ ! तुम लोग यहीं रहो हमसे दूर न जाओ। पूषा देव तुम्हारे आगे के मार्ग को दुर्गम करदे। गृहपति यज्ञिय अग्नि तुम्हें अनुकूलता से हमारे पास बुलावे। मुझमें तुम्हारा विश्वास हो।

भारत में कुछ लोगों द्वारा आर्यसमाज को बदनाम करने की कुचेष्टा : शालवाल

दिल्ली ८ जनवरी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने गत दिसम्बर १९८५ में डरबन में हुए आर्य सम्मेलन के सम्बन्ध में राज्य सभा में उठाए गए श्री जसवन्तसिंह के ध्यानाकर्षण प्रस्ताव और स्वामी अग्निवेश आदि के वक्तव्यों पर कड़ी आपत्ति करते हुए कहा कि लोगों ने राजनीति से प्रेरित होकर आर्यसमाज को बदनाम और उसके बारे में भ्रान्तियां पैदा करने की कोशिश की है।

श्री शालवाले ने कहा—डरबन आर्य महासम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पारित हुए थे जिसमें शारीरिक बौद्धिक एवं आत्मिक उत्थान के लिये व्यक्ति तथा समाज की आवश्यकताओं पर विचार किये गये। सम्मेलन ने जो १५वां प्रस्ताव पारित किया वह निम्न प्रकार है

"आर्यसमाज सब काल में और सब स्थान पर आर्य प्रेम और सत्य का समर्थक रहा है और आगे भी रहेगा। इस सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए यह अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन दक्षिण अफ्रीकी सरकार की रंगभेद नीति और नस्लवाद की नीति की भर्त्सना करते हुए इसका घोर विरोध करता है। इसका दृढ़ विश्वास है कि सबको बिना रंग एवं जाति भेदभाव के समुचित न्याय मिलना चाहिये। यह सम्मेलन सभी विचारशील व्यक्तियों से अनुरोध करता है कि वे सबको न्यायोचित अधिकार दिलवाने के लिये समुचित प्रयत्न करें।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

नई दिल्ली स्वतन्त्रता सेनानी तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जन्मदाता स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक शोभा यात्रा नया बाजार के उस भवन से शुरु हुई जहां पर उनकी हत्या कर दी गई थी। शोभा यात्रा खारी बावली नया बांस चावड़ी बाजार नई सड़क चांदनी चौक दरीबा होती हुई परेड मैदान में सभा के रूप में परिवर्तित हो गई सुसज्जित यज्ञवेदियों पर वेद मन्त्र बोलती महिलाएं भजन मंडलियां तथा हाथी और घोड़े इस शोभा यात्रा को दर्शनीय बना रहे थे।

निरञ्जनी अखाड़ा के महामण्डलेश्वर स्वामी वेद व्यासानन्द और जैन मुनि सुशील कुमार ने स्वामी श्रद्धानन्द को याद करते हुए कहा कि यम-नियमों का प्रचार हम सभी का समान उद्देश्य है और इससे

(शेष पृष्ठ २ पर)

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली २ के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर मंच पर दिखाई दे रहे श्रीयुत लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, मुनि सुशीलकुमार जी, महाशय धर्मपाल प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के जलूस का दृश्य, दिखाई दे रहे हैं ला०रामगोपाल शालवाले, महाशय धर्मपाल, डा० धर्मपाल, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री पृथ्वीराज शास्त्री आदि आर्य नेता।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
आर्य समाजों के लिए वर्ष १९८६ के
आर्य पर्वों की सूची

कार्यालय —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-११०००२

आर्य पर्व सूची वर्ष १९८६

स०	पर्व	सौरतिथि	चन्द्रतिथि	अंग्रेजी तिथि	दिन
१	मकर सक्रान्ति	१ माघ २०४२	पौष सुदि ४ २०४२	१४-१-१९८६	मगलवार
२	वसन्त पचमी	२ फाल्गुन २०४२	माघ सुदि ५, २०४२	१३-२-१९८६	बृहस्पतिवार
३	सीताष्टमी	२० फाल्गुन २०४२	फाल्गुन वदि ७, २०४२	३-३-१९८६	सोमवार
४	दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	२६ फाल्गुन २०४२	फाल्गुन वदि १४, २०४२	९-३-१९८६	रविवार
५	वीरलेखराम तृतीय	३० फाल्गुन २०४२	फाल्गुन सुदि ३, २०४२	१३-३-१९८६	बृहस्पतिवार
६	नवसस्येष्टि (होली)	१२ चैत्र २०४२	फाल्गुन सुदि १४, २०४२	२५-३-१९८६	मंगलवार
७	नवसवत्सरोत्सव (आर्य समाज स्थापना दिवस)	२९ चैत्र २०४३	चैत्र सुदि १, २०४३	१०-४-१९८६	बृहस्पतिवार
८	रामनवमी	८ वैशाख २०४३	चैत्र सुदि ९, २०४३	१८-४-१९८६	शुक्रवार
९	हरि तृतीया	१४ श्रावण २०४३	श्रावण वदि ३, २०४३	२४-७-१९८६	शुक्रवार
१०	श्रावणी उपाक्रम	८ भाद्रपद २०४३	श्रावण सुदि १५, २०४३	१९-८-१९८६	मगलवार
११	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	१६ भाद्रपद २०४५	भाद्रपद वदि ८, २०४३	२७-८-१९८६	बुधवार
१२	गुरु विरजानन्द दिवस	१७ आश्विन २०४३	आश्विन वदि १०, २०४३	२८-९-१९८६	रविवार
१३	विजय दशमी	१ कार्तिक २०४३	आश्विन सुदि १०, २०४३	१२-१०-१९८६	रविवार
१४	महर्षि निर्वाण दिवस दीपावलि	२२ कार्तिक २०४३	कार्तिक वदि ३०, २०४३	२-११-१९८६	रविवार
१५	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	१३ पौष २०४३	पौष वदि ७, २०४३	२३-१२-१९८६	मगलवार

(प्रस्तुतकर्त्ता पं० राजपाल शास्त्री)

ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री-सभा

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

(पृष्ठ १ का शेष)

हमारे देश में धर्म की रक्षा होगी। इस सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष लाला रामगोपाल शालवाले ने की।

केन्द्रीय वाणिज्यमन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने इस अवसर पर देश की एकता अखण्डता तथा धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा किए गये कार्यों को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी ने तथाकथित अछूतों को हिन्दू जाति में मिलाये रखने के लिये जो काम किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

महात्मा गांधी ला० लाजपतराय, श्री राजगुरु, श्री सुखदेव सिंह, श्री ऊधमसिंह और श्रीमती इन्दिरा गांधी जस नेताओं ने ही इस देश और यहां की संस्कृति की रक्षा के लिये अपने जीवन उत्सर्ग के लिये स्वामी श्रद्धानन्द इस लड़ाई में शिरोमणि थे।

ला० रामगोपाल शालवाले ने अतिथियों का स्वागत करते हुये कहा कि आर्य समाज के समक्ष इस समय एक ही उद्देश्य है कि इस देश अखण्डता में विश्वास रखने वाली शक्तियों को मजबूत किया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हमें इसके लिये सब कुछ करने की प्रेरणा देता रहा है।

आर्य केन्द्रीय सभा के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल और मंत्री अशोक सहगल ने इस समारोह में भाग लेने आई जनता तथा नेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

पोप-पाल का भारत आगमन क्यों ?

भारत सरकार के निमन्त्रण पर रोमन कैथोलिक ईसाइयो के गुरु महात्मा पोप का ७ फरवरी को दस दिन के लिये भारत के दौरे पर आगमन हो रहा है। कई क्षेत्रों मे भारत सरकार के इस निर्णय पर आलोचना हो रही हैं। कहा जाता है कि भारत सरकार एक धर्मनिरपेक्ष सरकार है। किस प्रकार इसने एक धार्मिक नेता का एक सरकारी स्वागत करने का निर्णय किया है। सच्चाई यह है कि देश के अन्य अल्पसंख्यको की तरह ईसाइयो को भी भारत सरकार यह बताना चाहती है कि इन्हें प्रसन्न करने के लिये वह अपने सम्पूर्ण सिद्धान्तो को भूलने को तैयार है। वह यह भी कह सकती है कि अगर इसने केरल में मुस्लिम लीग से समझौता कर रखा है, पजाब मे अकालियो को शीशे से उतारने को तैयार है तो ईसाईयो को प्रसन्न करने के लिये इसने अपने धर्मनिरपेक्ष सिद्धान्तो को पैरो तले रोद डाला तो क्या हो गया। वरना अपने पापों को छिपाने के लिये वह यह कह रही है कि वह पोप को एक धार्मिक नेता के रूप मे निमन्त्रित नहीं कर रही बल्कि इस ने तो उन्हें एक सरकार के प्रधान होने के नाते से बुलाया है। इस सरकारी नाते की खूब रही। जिस राज्य के श्रीमान पोप प्रधान हैं इसकी सीमाए इटली की राजधानी रोम के एक भाग में हमारे राष्ट्रपति भवन के आधे से भी कम क्षेत्र तक से अधिक नही है। इटली की सरकार ने ससार भर के रोमन कैथोलिक ईसाइयो को अपना साथी बनाने के लिये पोप को यह राजनैतिक पद दे रखा है। इसका कहना है कि ससार भर के ईसाई धार्मिक रूप मे तो रोम मे स्थापित वेटेकिन की प्रमुखता को स्वीकार करते ही हैं अगर इनके दिमाग मे यह राजनैतिक पद भी बैठ जाये तो निश्चित रूप मे इससे अतालवी सरकार को लाभ ही होना है। इस लिये इसने अपने यहा एक और "सरकार" को अपनी राजधानी स्थापित करने की आज्ञा दे रखी है वरना आपने यह न सुना होगा कि ससार के किसी देश की राजधानी मे किसी और देश की राजधानी स्थापित हो बहरहाल इस सन्दर्भ मे एक और बात भी ध्यान देने योग्य है। ससार की अन्य कई सरकारें अपने आपको कहती सैक्यूलर हैं किन्तु जहा तक इनके धर्म का सम्बन्ध है ये इसकी रक्षा और इसका प्रचार अपना इतना ही धर्म समझती हैं जितना वेटेकिन की ईसाई सरकार समझती है। ब्रिटेन और अमेरिका कहने को अपने आप को धर्म निरपेक्ष कहते हैं किन्तु जहा तक ईसाइयत का सम्बन्ध है यह कहा जा सकता है कि दोनो सरकारें ईसाइयत की रक्षा और इसका प्रचार अपना कर्त्तव्य समझती है। ब्रिटेन का सम्राट तो सरकारी रूप से धर्म का रक्षक है। ब्रिटेन मे सरकारी कोई बड़ा कार्य ईसाई आर्क विशप आफ केन्टबरी के इजील के पाठ और इसके आशीर्वाद से प्रारम्भ होता है। अमेरिका मे ऐसा नही। वहा सरकारी उत्सवों मे कोई पादरी आपको नजर नही आयेगा किन्तु यह भी इतना ही ठीक है कि प्रत्येक उत्सव मे आपको ये धार्मिक नेता दिखाई देंगे। उनका भी इतना ही सम्मान होता दिखाया जाता है जितना राजनैतिक नेताओ का। इस लिये किसी को भूल मे न रहना चाहिए कि अमेरिका और योरोप के देश धर्म निरपेक्ष हैं और धर्म मे विश्वास नही करते। यह भारत ही है जहा की ८५ प्रतिशत से अधिक भाग हिन्दू है किन्तु किसी हिन्दू धार्मिक नेता को कोई नेता पास तक फटकने नही देता। न केवल यह, बल्कि वे उनके साथ खड़ा होना भी पाप समझते हैं। कही ऐसा न हो कि कोई गैर हिन्दू इन पर आरोप लगा दे कि वे हिन्दू धर्म को किसी प्रकार प्रोत्साहन दे रहे हैं। मजा यह है कि जो लोग किसी हिन्दू से किसी राजनैतिक नेता के सम्बन्ध पर ऐतराज करते हैं वे स्वय अपने आपको अपने सम्प्रदाय के नेताओ से सम्बन्धित करना सम्मान कारण समझते हैं।

इस पृष्ठभूमि मे जब हम अपनी सरकार को श्रीमान पोप को निमन्त्रण देते हुए देखते हैं तो स्वाभाविक रूप से प्रश्न खड़ा हो जाता है कि क्या हमारी सरकार पोप की सम्पूर्ण सरगर्मियो से परिचित है क्यो वे आ रहे हैं और क्या वह करना चाहते हैं। एक बात प्रत्येक को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि पोप महाराज ईसाइयो के प्रधान है और इनका काम ही ईसाइयत को बढाना है। अगर वह ऐसा करते हैं तो जहा यह करे वहा के लोग इन पर कोई ऐतराज नही कर सकते क्योंकि इनका कोई राजनैतिक दृष्टिकोण नहीं सिवाय ईसाई शक्तियो के सवर्धन के। ऐसी स्थिति मे अगर वह भारत आकर ईसाइयत का प्रचार करें और भारत के लोगो को ईसाई बनाने का प्रयास करें तो किसी को इन पर ऐतराज करने का हक न होगा। गो आप इस सरकार के व्यवहार पर ऐतराज कर सकते हैं जिसने इन्हे यह जानते हुए बुलाया है कि वह क्या है और इनका काम क्या है। आज से कुछ वर्ष पहले तामिलनाडू के मीनाक्षीपुरम मे कुछ हरिजनो को मुसलमान बना लिया गया था। जिस ढग मे यह सब कुछ हुआ इसने सारे देश मे हलचल उत्पन्न कर दी थी।

यहा तक कि भारत सरकार को भी तामिलनाडू सरकार को कहना पड़ा कि वह सावधान रहे, कही अधिक साम्प्रदायिक कटुता उत्पन्न न हो जाए। प्रश्न किया जा रहा है कि यदि पोप साहब की किसी बात से लोगो की शिकायत उत्पन्न हो गई और किसी ने इस पर ऐतराज कर दिया तो क्या होगा। एक ओर पोप की शान मे गुस्ताखी होगी और दूसरी ओर भारत की बदनामी होगी क्योंकि पोप साहब भारत सरकार के मेहमान हैं।

—नरेन्द्र

आर्यसमाज कलकत्ता शताब्दी के अवसर पर

केन्द्रीय संसदीय राज्यमन्त्री (राज्य सभा) श्री सीताराम केसरी का भाषण

विद्वत्जन, भाइयो और देवियों !

आज आर्य समाज कलकत्ता के शताब्दी समारोह पर मैं आप सब लोगों को धन्यवाद और बधाई देता हूँ कि आप सब का एक ऐसी संस्था से सम्बद्ध हैं जिसकी गतिविधियों का इतिहास भारतीय इतिहास का पूरक है और जिसके संस्थापक के जीवन की घटनाओं की जंजीर बड़ी लम्बी है।

भारतीय धार्मिक विचारधारा ने आज से ११० वर्ष पूर्व विशुद्ध भारतीय समाज ने आर्यसमाज को जन्म दिया। १८७५ में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना से पूर्व स्वामी जी १८७२ में कलकत्ता पधारे थे। कलकत्ता में श्री देवेन्द्रनाथ और केशवचन्द्र सेन की प्रार्थना पर स्वामी जी महाराज के भाषण की व्यवस्था ब्रह्मसमाज में की गई थी। स्वामी जी महाराज उस समय केवल संस्कृत भाषा में ही व्याख्यान देते थे।

उनके भाषण के उपरान्त श्री केशवचन्द्र जी ने स्वामी जी से आग्रह किया था—महाराज ! आप लोक भाषा हिन्दी मे बोले तो अच्छा रहेगा। उसे सब आसानी से समझ सकेंगे। उसी दिन से स्वामी जी महाराज ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया और हिन्दी में ही अपने व्याख्यान और लेखन कार्य किए। उनके सारे ग्रन्थ हिन्दी मे ही लिखे गए।

यह संयोग की ही बात है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजराती भाषी थे और केशवचन्द्र जी बंगाली। किन्तु दोनों ने अहिन्दी भाषी होते हुए भी राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी की स्थापना के लिए पूरा प्रयत्न जीवन पर्यन्त किया। महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को आर्य भाषा कहकर गौरव प्रदान किया। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम—

१—हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने का नारा लगाया।

२—देश को आजाद कराने के लिए देशवासियों को प्रेरणा की।

३—५ हजार वर्ष बाद दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मानव-मात्र को वेदों की ओर मुडने का उपदेश दिया था।

विज्ञान और शिल्पकला की चर्चा १९ वीं सदी में ही कर दी थी। संयोग की बात है कि आज भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी विज्ञान और टेक्नोलाजी के सहारे देश को २१ वीं सदी की ओर ले जाने की प्रेरणा कर रहे हैं।

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि आज से १०० साल पहले आर्य समाज कलकत्ता की स्थापना की गई थी। १०० साल के लम्बे इतिहास के उतार-चढ़ाव की कड़ियों को पार करके आज आर्य समाज कलकत्ता अपना शताब्दी समारोह बड़ी शान के साथ मना रहा है।

महर्षि दयानन्द उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके छूत-छात, जात-पात, ऊंच-नीच के भेद-भाव पर प्रहार किया। आर्य समाज कलकत्ता का अपना विशाल विद्यालय, बंगाल से आए शरणार्थियों की सहायता, तूफान और बाढ़ पीड़ितों की सहायता तथा अकाल आदि में दिए गए सेवा सहायता कार्य इसके इतिहास की गौरवपूर्ण कड़ियां और उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक हैं।

आर्य समाज ने एक ईश्वर की उपासना का उद्घोष किया है। वर्ण-व्यवस्था को गुण, कर्म और स्वभाव से स्वीकार किया है, जन्म से नहीं।

आर्य समाज ने आजादी की लड़ाई और महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन मे बढ चढ कर भाग लिया। स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास मे आर्य समाज के सेवकों की सख्या सबसे अधिक है ? हैदराबाद के निजाम के अत्याचारो का सही जवाब आर्य समाज ने ही १९३८-३९ में दिया था। इसके अहिंसात्मक आन्दोलन ने निजाम को झुका दिया।

साम्प्रदायिकता आज हमारे देश में घुन की तरह खा रही है। किन्तु स्वामी जी ने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध बहुमुखी लड़ाई लड़ी। उन्होंने जात-पात और छूत-छात विहीन आर्य समाज की स्थापना की। वेद और वैदिक वाङ्मय का प्रकाश किया जिसमें केवल मानवमात्र के कल्याण का उपदेश है जिसमे जाति-सम्प्रदाय के लिए कोई स्थान नहीं है। स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार का कार्य-क्रम आर्य समाज के कार्य-क्रम का प्रधान अंग है।

आज हमे २१ वी सदी मे प्रवेश के लिए जिन चीजों की आवश्यकता है, स्वामी जी महाराज ने आज से १०० साल पहले ही वह कह दी थी। उस युगद्रष्टा महापुरुष के सन्देश को जन जन तक पहुंचाने और आर्य समाज की विचारधारा का जोरदार प्रचार के लिए प्रयत्न किया जाना चाहिए। नवयुवक वर्ग को साथ लेकर ही यह कार्य किया जा सकता है।

मैं जब नौजवान था, उस समय आर्य कुमार सभा और आर्य वीर दल के माध्यम से नौजवानो को आर्य समाज में आने की प्रेरणा की जाती थी। हिन्दू जाति में रूढ़िवाद, जात-पात, गुरूडम आदि के कारण आज अनेक साधुवेशधारी अपने आपको भगवान कहकर परमात्मा की सच्ची पूजा पर प्रहार कर रहे हैं। आर्य समाज इनके विरुद्ध जोरदार संघर्ष करे। आज देश को अन्दर-बाहर चारों ओर से खतरा है। हमारे बहादुर फौजी जवान देश की सीमाओं की रक्षा करने के सभी प्रकार शस्त्रों से सुसज्जित हैं। बाहर के खतरे का मुकाबला सरकार करेगी। किन्तु आंतरिक सुरक्षा का काम आर्य समाज के सेवादारों को करना चाहिए।

अन्त मे, मैं उस महामानव की उस उद्घोषणा को उद्धृत करता हूँ जो मानवता की रक्षा के लिए उन्होंने निम्न प्रकार कहे थे—

"मनुष्य उसी को कहने हैं जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं चाहे वे महा-अनाथ, निर्बल और गुण रहित ही क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान, गुणवान भी क्यो न हो, तथापि उसका नाश अवनति और अप्रिया चरण सदा किया करे। अर्थात् वहां तक हो सके। वहां तक अन्याय-कारियो के बल की हानि और न्यायकारी के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम से चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण ही, चाहे प्राण भी चले जायं, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न होवें।

मैं पुनः सम्मेलन के आयोजको और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले का धन्यवाद करता हूँ और आशा करता हूँ कि आर्य समाज एक नए विकल्प के साथ देशवासियो का मार्ग दर्शन करेगा।

आर्यसमाज कलकत्ता शताब्दी समारोह पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले का उद्घाटन-भाषण

आज से लगभग ११० वर्ष पूर्व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इसके पीछे उनके त्याग और तपस्या की लम्बी कहानी है। महर्षि ने पहले स्वयं गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन और चिन्तन किया। जब वे स्वयं इन सिद्धान्तों की मौलिकता और चिरन्तन सत्यता से आश्वस्त हुए उसके बाद ही वे उन सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार के कार्यक्षेत्र में उतरे।

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में जब महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, हमारा देश विनाश की दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ था ! भारत का हिन्दू समाज धीरे-धीरे राजनैतिक और मानसिक रूप से अंग्रेजों का गुलाम होता जा रहा था। एक ओर राजनैतिक दासता, और दूसरी ओर धार्मिक भ्रष्टाचार ने उसे पंगु बना दिया था। अबलायें अशिक्षा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदि की चक्की में पिसकर करुण विलाप कर रही थी। युवावर्ग सत्य से भटक कर मतमतान्तरो से दिग्भ्रमित हो किंकर्तव्यविमूढ होते जा रहे थे। हिन्दू जाति में छुआछूत का विष फैलकर उसे विनाश की ओर ढकेल रहा था। स्वार्थी अर्थ-लोलुप और मदान्ध मठाधीशों ने वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को लेकर अर्थ का अनर्थ मचा रखा था। देश की ऐसी दुरावस्था के समय ही परमात्मा ने हिन्दू जाति को 'अन्धकार से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर' ले जाने के लिये ऋषि दयानन्द को इस भारत भूमि पर भेजा। उन्होंने अनुभव किया कि हिन्दू जाति को इस दुरावस्था से निकालने के लिये यह परमावश्यक है कि उसे सर्वप्रथम वैदिक सिद्धान्तों की सत्यता से परिचित कराया जाय। जब तक असत्य पर सत्य की विजय नहीं होगी। इसका उद्धार होना असम्भव है। इस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने बड़े परिश्रम से ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेदभाष्य, संस्कारविधि और अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा। इस ग्रन्थ में जैसा कि इसके नाम से ही परिलक्षित है, स्वामीजी ने वैदिक सिद्धान्तों के सार-तत्व को भारत की जनता के समक्ष उपस्थित किया। उन सिद्धान्तों की मूल सत्य भावनाओं को प्रकाशित किया। मानव जीवन का शायद ही कोई पक्ष बचा होगा जिस पर स्वामीजी ने इस ग्रन्थ में प्रकाश न डाला हो। सत्यार्थ प्रकाश को यदि हम न केवल हिन्दू जाति, बल्कि समस्त मानव जाति का पथ प्रदर्शक कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

वैदिक सिद्धान्तों के विस्तृत और गहन अध्ययन, मनन और चिन्तन के पश्चात् स्वामी जी उनके प्रचार एवं प्रसार के लिये घर से बाहर निकल पडे। देश में घूम-घूमकर आपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और प्रवचनों के द्वारा जनता का सही मार्ग-दर्शन किया। इस कार्य में उन्हें अनेक कठिनाइयों और समाज में घुसे स्वार्थी तत्वों की दुरभिसंधियों का सामना करना पडा। लेकिन वे कभी डरे नहीं। उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी। सत्य के प्रचार और असत्य के खण्डन से वे कभी पीछे नहीं हटे। गुरु विरजानन्द को दक्षिणा में दिये हुए अपने वचन को पूरा करने में वे प्राण-प्रण से लगे रहे। अन्ततः ऋषि का श्रम सफल हुआ। जनता ने वेदों के सत्य अर्थ को पहचाना। अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिए महर्षि ने एक संगठित समाज की आवश्यकता का अनुभव किया और अन्ततः सन १८७५ ई० में बम्बई में, इस प्रकार के समाज की, जिसका नाम उन्होंने "आर्य समाज" रखा, स्थापना की। महर्षि के प्रयास और उनके समर्थकों के सतत प्रयत्न से धीरे-धीरे देश के सभी भागो में आर्य समाज की स्थापना होने लगी जिसने एक आन्दोलन का रूप ले लिया।

अपने भारत-भ्रमण के दौरान ऋषिवर पौष सम्वत् १९२९ (सन १८७२ ई०) के लगभग आपकी कलकत्ता नगरी मे भी पधारे जो उस समय "ब्रह्मो समाज" का केन्द्र था। स्वामी जी को कलकत्ता बुलाने का उद्यम श्रीयुत चन्द्रशेखर सेन, बैरिस्टर ने किया था। स्वामी जी यहां लगभग साढ़े तीन मास तक रहे। उनके कलकत्ता पधारने का समाचार सारे नगर में फैल गया। अनेक जिज्ञासु सत्संग में आने लगे। यहां ही उनकी भेंट उस समय के कलकत्ता के सुप्रसिद्ध नागरिकों, श्री केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, पण्डित हेमचन्द्र चक्रवर्ती इत्यादि, से हुई। स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी, लेकिन उन्होंने व्यवहार में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया। कलकत्ता आने से पूर्व स्वामीजी अपने भाषण संस्कृत में ही दिया करते थे। श्री केशवचन्द्र सेन ने उनसे आग्रह किया कि अपनी बात जनता तक पहुंचाने के लिये वे हिन्दी मे बोला करें। स्वामीजी ने उनका सुझाव मानकर भविष्य में अपने भाषण हिन्दी में ही देना आरम्भ कर दिया। श्री सेन के ही परामर्श से स्वामीजी ने जन सभाओ में सम्पूर्ण वस्त्र धारण करना भी शुरू किया। स्वामीजी और श्री केशवचन्द्र सेन दोनो ही अहिन्दी भाषी थे, किन्तु दोनों का ही हिन्दी प्रेम अटूट था जिसे वे राष्ट्रभाषा के रूप मे मानते और प्रतिष्ठित करना चाहते थे। अपने कलकत्ता निवास में स्वामी जी ने अनेक भाषण दिये, शास्त्रार्थों मे भाग लिया, जिसमे उन्होने सदा वेद-सम्मत सिद्धान्तों का ही प्रतिपादन किया। वैदिक सिद्धान्तो के प्रति फैली हुई तथा कुछ फैलाई गई, भ्रान्तियो का निराकरण किया। हर्ष की बात है कि कलकत्ता के निवासियो ने उनकी बात को सुना और समझा और स्वामी जी के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सन १८८५ ई० मे अपनी कलकत्ता नगरी में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की जिसकी आप लोग आज शताब्दी मना रहे हैं। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि आप लोग आर्य समाज के कार्यों को दिन-प्रतिदिन और आगे बढ़ाते जायेंगे।

आज का यह दिन बड़ा महत्वपूर्ण है। इसका उतना ही महत्व है जितना कि एक व्यक्ति के जीवन में अपने जन्म दिवस का होता है। इस अवसर पर वह अपने कर्मों का लेखा-जोखा अपने मन में तैयार करता है। विगत जीवन में उसने क्या किया, क्या खोया, क्या पाया, अब क्या कर रहा है और आगे क्या करना है ? आज हमें भी आर्यसमाज के बारे में यही सोचना है। विगत सौ वर्षों से अधिक समय में आर्यसमाज ने मानव समाज हिन्दू जाति और देश के पुनरुत्थान के लिए बहुत कुछ कार्य किया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती युगद्रष्टा थे। उन्होंने देख लिया था कि समाज और देश को अज्ञान के अन्धकार से बाहर निकालना है, तो समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करना आवश्यक है। इसी कारण उन्होंने स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया। स्त्री जाति मनुष्य जाति का आधा भाग है। वे जानते थे कि यदि हमारे समाज का यह अर्द्धांग अविद्या और अज्ञान के अन्धकार में डूबा रहा तो इस समाज का उद्धार होना असम्भव है। उनके प्रयत्नों से जगह-जगह कन्या पाठशालाओं और स्कूलों की स्थापना हुई। युवाओं के लिए वैदिक प्रणाली के आधार पर गुरुकुल तथा डी०ए०वी० स्कूल और कालेज खोले गए जहां अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति और परम्परा के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था की गई। स्वामी जी उस समय देश में अंग्रेजों के द्वारा निर्धारित शिक्षा पद्धति के विरुद्ध थे। लार्ड मैकाले ने भारतीयों के लिये जो शिक्षा-नीति बनाई थी उसकी जड़ में छिपी हुई अंग्रेजों की कूटनीतिक भावना को वे पहचान गये थे। अंग्रेज जानते थे कि यदि भारत को गुलाम रखना है तो भारत की जनता को उसके साहित्य, संस्कृति और धर्म से काटना होगा। इसलिये उन्होंने स्कूल और कालेजों के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली की योजना बनाई जो इस देश के युवावर्ग को पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति के प्रति आकर्षित और प्रभावित करे। भारत का बुद्धिजीवी एक बार यदि मानसिक रूप से

गुलाम हो गया तो देश को राजनैतिक गुलामी में जकड़े रहना कठिन नहीं होगा। खेद की बात है कि अंग्रेज अपनी इस कूटनीतिक चाल में काफी हद तक सफल हुये। महर्षि दयानन्द उनकी इस चाल को समझ गये थे, अतः उन्होंने हिन्दू जाति को पुनः वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। और अंग्रेजों की बनाई हुई शिक्षा प्रणाली का खुला विरोध किया। देश को स्व-भाषा, स्व-राज्य और स्वधर्म के प्रति प्रेरित करने का सतत प्रयत्न किया। आर्य समाज और आर्य से सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं ने महर्षि के इस कार्य को पूरा करने में एक पुष्ट भूमिका निभाई।

आर्य समाज के द्वारा अछूतोद्धार और शुद्धि के क्षेत्र में भी बहुत अच्छा काम हुआ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। स्वामी जी ने जन्मजात वर्ण-व्यवस्था का घोर विरोध किया। उन्होंने सिद्ध किया कि ऐसी वर्ण व्यवस्था वेद सम्मत नहीं है। स्वार्थी पण्डितों और मठाधीशों ने वेद मन्त्रों की व्याख्या करने में अर्थ का अनर्थ किया है। वे सब अमान्य है। ईश्वर ने मनुष्य मनुष्य में कोई भेद नहीं किया। उसकी दृष्टि में सब एक हैं। इसलिये आर्य समाज ने तथाकथित हरिजनों को सदा ही सवर्ण-हिन्दुओं के समकक्ष माना और उनको समाज में सम्मानित स्थान और मर्यादा प्रदान करने के लिये कठिन प्रयत्न किया। महर्षि के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हिन्दूजाति से बिछुड़े और पिछड़े लोगों को पुनः हिन्दू समाज की पावन-धारा में लाने का जो प्रयत्न आजीवन किया, वे आप सब जानते ही हैं। अपने इसी प्रयत्न में वे शहीद हो गये। आर्य समाज के इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा।

पिछले सौ वर्षों के कार्यकाल में आर्य समाज की उपलब्धियां कम नहीं कही जा सकती। उन पर हमें गर्व है। लेकिन कार्य क्षेत्र की विशालता को देखते हुए वे अल्प ही हैं। जितना कार्य आर्य समाज को करना चाहिये था उतना नहीं हुआ। इसके लिये हम स्वयं, जो अपने आपको महर्षि दयानन्द का वीर सैनिक कहलाने का दावा करते हैं, जिम्मेदार हैं। इस समय की अवस्था तो और भी खराब है। यह दुःख की बात है कि जिस वट-वृक्ष को महर्षि दयानन्द ने आज से सौ वर्षों से अधिक समय पहले इस भारत-भूमि पर आरोपित कर आजीवन अपने स्वेद-कणों से सींचा, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय, पण्डित लेखराम, आदि ने अपना खून देकर परिपुष्ट किया, आज उसमें पतझड़ लगा हुआ है। सौ वर्षों में तो इस वट-वृक्ष को फैलकर इस देश ही नहीं विदेश के भी एक बड़े भू-भाग को ढक लेना चाहिये था। लेकिन आज जो कुछ हो रहा है, वह इसके विपरीत है। इसका कारण क्या है?

कारण यह है कि आज हम स्वयं ही अपने मार्ग से भटक गए हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक और जाति-गत स्वार्थों ने हमें अन्धा बना दिया है। हम अपने लक्ष्य को ही भूल गए हैं, तो जाएं कहां? आज हम सब, जो अपने आपको आर्य समाजी कहते हैं, आपस में एक-दूसरे से लड़ रहे हैं, कहीं कुर्सी के लिये अधिकारलिप्सा का साधन जुटाने के लिये। एक-दूसरे की टांग खींच कर उसे गिराने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय शायद ही कोई ऐसा सौभाग्यशाली आर्यसमाज या आर्य संस्था होगी जहां इस प्रकार के अखाड़े न खुले हुये हों। हमारी संस्थाएं समाजिक और धार्मिक कार्य-क्रम भूलकर राजनैतिक उठा-पटक का क्षेत्र बन गयीं है। यह बड़ी शोचनीय स्थिति है। हम सबको मिलकर इस दुर्व्यवस्था का हल ढूंढना होगा। हमें निश्चित कार्यक्रम निर्धारित करके उस पर पूर्ण निष्ठा से चलना होगा।

महर्षि दयानन्द ने हमें "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा दिया था। "समस्त विश्व को आर्य बनाओ" उनकी केवल मात्र परिकल्पना ही नहीं, एक ध्येय था। आज वही ध्येय, वही लक्ष्य हमारा है। लेकिन विश्व को आर्य बनाने से पहले हमें स्वयं "आर्य बनना होगा। इसके लिये शुरुआत हमें अपने घर से ही करनी होगी। पहले तो हम यही समझें कि हम क्या हैं? हमारा धर्म क्या है? इसके लिए हम सबको वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान होना परमावश्यक है, और यह ज्ञान प्राप्त होगा वैदिक वाङ्मय के निरन्तर अध्ययन, मनन और चिन्तन से। तभी हम वैदिक धर्म की मूल भावना को समझ सकेंगे। हमारे जीवन में अध्ययन और चिन्तन के साथ-साथ वैदिक कर्मकाण्ड का भी बड़ा महत्व है। यह हमें अच्छी तरह समझना चाहिये। प्रत्येक आर्य परिवार में नित्य संध्या, हवन यज्ञादि की व्यवस्था होनी चाहिये जिसमें परिवार के सभी सदस्य, आबाल, वृद्ध और नारी सम्मिलित हों। इससे परिवार में, विशेषकर बच्चों और युवाओं में, अपने धर्म के प्रति श्रद्धा और जिज्ञासा बढ़ेगी और आगे चलकर वे स्वयं आर्य पथ के पथिक बनेंगे। एक बात और हमें धर्म के विषय में कट्टर होना चाहिये। कट्टरता से मेरा तात्पर्य मुसलमानों की धार्मिक मतान्धता से नहीं है। हम दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु रहें यह ठीक है लेकिन अपने धार्मिक विश्वासों और सामाजिक मान्यताओं पर अडिग रहें। आज हममें से कितने हैं जो वास्तविक रूप से वैदिक सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से मानकर उन पर आचरण करते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हमें अपनी शिक्षण संस्थाओं को और आगे बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। डी० ए० वी० स्कूल और कालेजों में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जहां बच्चों और युवाओं का चरित्र निर्माण भी हो सके। क्योंकि आगे चलकर यह युवा ही देश के कर्णधार बनेंगे। हमारी सरकार एक नई शिक्षा योजना बना रही है। हमें इसे ध्यानपूर्वक देखना होगा और इसमें जो अवांछित विषय हों उनका विरोध करना होगा। अभी पिछले महीने दिल्ली में एक "अन्तर्राष्ट्रीय यौन-शिक्षा सम्मेलन" हुआ था जिसमें भारत के स्कूल और कालेजों में यौन शिक्षा को भी सम्मिलित करने पर जोर दिया गया था। हमने इसका कड़ा विरोध किया क्योंकि हम समझते हैं कि इस प्रकार की शिक्षा पहले से ही दिग्भ्रमित युवावर्ग को और भी पतन की ओर ले जायेगी। फिर तो देश के सर्वनाश होने में रही सही कसर भी पूरी हो जायेगी।

हमारी सरकार आजकल पर्यावरण के प्रदूषण से बहुत चिन्तित है। उससे बचने के लिए सरकारी वातानुकूलित कार्यालयों में उपाय सोचे जा रहे हैं। मैं मानता हूं कि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण का प्रदूषण हानिकारक होता है लेकिन उससे भी हानिकारक होता है। समाज में फैला चारित्रिक प्रदूषण। सरकार का ध्यान इस की तरफ क्यों नहीं जाता? देश भर में आज आर्थिक, नैतिक और सामाजिक भ्रष्टाचार महामारी की तरह फैला हुआ है। सरकार को इस प्रदूषण के निराकरण का भी उपाय सोचना चाहिए। बात लौट कर फिर वही शिक्षा पर आती है। जब तक हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित नहीं होगी, तब तक देश में भ्रष्टाचार का रोग पनपता रहेगा। यह निश्चित है। मानव जीवन का कोई भी ऐसा अंग नहीं है जो वैदिक शिक्षा से अछूता रहा हो। साहित्य, कला, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, संगीत, गणित, भूगोल, खगोल, कौन सा ऐसा विषय है जिसका वेदों में उल्लेख और आदेश नहीं है। यहां तक कि राज शास्त्र का भी वेदों में विस्तृत वर्णन है। राजा कैसा हो, प्रजा कैसी हो, राजा-प्रजा के सम्बन्ध कैसे हों, एक देश के दूसरे राजाओं से कैसे सम्बन्ध हों यह सब "ज्ञान के भण्डार" वेदों में उल्लिखित हैं। फिर क्यों हमारी सरकार का ध्यान इसकी तरफ नहीं जाता? यदि नहीं जाता, तो हमें सरकार का ध्यान इस तरफ खींचना होगा। वेद सार्वभौम हैं, सर्वकालिक हैं, उनमें दी गई शिक्षायें मानव मात्र के लिए हैं। किसी जाति या वर्ग विशेष के लिए नहीं। यह हमारे शिक्षा शास्त्रियों के लिए समझने और सोचने की बात है।

महर्षि दयानन्द को हम अधिकांश में एक समाज सुधारक के रूप में ही जानते हैं। लेकिन वे एक राजनीतिज्ञ भी थे, यह शायद बहुत

(शेष पृष्ठ ९ पर)

देवताओं का सदन पीपल वृक्ष

शतीसचन्द्र गुप्त एडवोकेट, प्रधान आर्यसमाज मंडी बांस, मुरादाबाद

सब उपलब्ध वृक्षों में वैज्ञानिकों ने, धार्मिक गुरुओं व मनीषियों ने यह मत बड़ी खोजबीन के पश्चात् प्रकट किया है कि पीपल का वृक्ष एक ऐसा वृक्ष है जो दिन रात यानि पूरे चौबीस घण्टे (प्राण वायु) (आक्सीजन) देता है।

कैसी अद्‌भुत माया है कि पीपल के वृक्ष में, उसकी छाल में, दूध में, रोगों को दूर करने की क्षमता है।

श्री कृष्ण ने वृक्षों में सबसे श्रेष्ठ पीपल को बताया है। पौराणिक विवेचना के अनुसार पीपल वृक्ष को लगाना ऐसा ही है जैसे कि अपनी सन्तान का पालना और श्रेष्ठ नागरिक बनाना। मुनि गौतम बुद्ध ने विदुर अंचल के गया जनपद में एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर ही प्रभु का ध्यान किया। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ब्रह्ममुहूर्त में पीपल वृक्ष के नीचे समाधि लगाकर ईश ध्यान में अनेकों बार देखे गये। यह है पीपल वृक्ष की ऐतिहासिक मान्यता। परन्तु सत्य यह है कि पीपल में देवता निवास करते हैं। सभी आर्यों का मत है कि वेद ईश्वर की वाणी है कि पीपल वृक्ष में देवताओं का निवास है।

वैदिक परिपाटी के अनुसार देवता से अभिप्राय विद्वान जन से क्योंकि बुद्धिमान लोग ही पीपल की वैज्ञानिकता से, उसमें उपलब्ध प्राणवायु से लाभ उठाकर जन-जीवन को उच्च शिखर पर ले जा सकते हैं। साधारण लोग पीपल को पानी चढ़ाकर माथा नवाकर या पीपल के पेड़ के चारों ओर सूत लपेटकर यह समझ बैठते हैं कि पीपल देवता को प्रसन्न कर लिया। हालांकि पेड़ नश्वर है और सत्य यह है कि परमात्मा अनश्वर, अजन्मा अजर तथा सर्वज्ञ है और पीपल का वृक्ष जड़ प्रकृति का एक रूप मात्र है। यह तो एक अवसर होता कि लोग पूजा के आडम्बर में फसकर उसकी प्राण वायु से उन क्षणों में लाभ उठा लेते हैं।

पीपल वृक्ष को पानी की भी आवश्यकता नहीं होती। दीवार हो या पत्थर, कुआं हो या कंकड़ पीपल बिना पानी की सहायता के उगता देखा जा सकता है। उसकी परिक्रमा के बहाने से साधारण जन को प्राण वायु मिल जाती है। वास्तव में हमें पीपल का पूजन नहीं, सेवन करना चाहिये। अथर्ववेद में लिखा है—"यत्रा सत्या··· प्रति सुश्रमुतन"······जिसका स्पष्ट अर्थ है—जहां अश्वत्थ अर्थात् पीपल वृक्ष होते हैं वहीं ज्ञानी विद्वान् जन निवास करते हैं। हमको यह भी ज्ञात होना चाहिये कि पीपल तले आते ही विद्वता कोई आसमान से नहीं टपकेगी। वेद मन्त्र का आशय है कि पीपल के गुणों से लाभ उठाकर विद्वान् एवं जागरुक लोग ज्ञान-विज्ञान और ध्यान की क्रिया में पारंगत हो जाते हैं।

कैसा अजीब आश्चर्य है कि पीपल वृक्ष पर फल तो आते देखे जाते हैं परन्तु फल आने से पूर्व फूल उगते नहीं देखे। सुखों के फूलों के घमण्ड में चूर होना नादानी है। यह शिक्षा पीपल से प्राप्त होती है। पीपल घनी छांव देता है, स्वस्थ रखता है, औ रोगों को दूर भगाता है मगर पूरे वृक्ष पर कोई भी कांटा नहीं। सब इसके नीचे आकर सुख की सांस लेते हैं। पीपल की छांव व इसके पत्तों से छनी हुवा प्राण वायु दिमाग की ताजगी को बढ़ाती है और चेतनता का प्रकाश करती है।

पीपल का बड़ा महत्व वायु प्रदूषण रोकना है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी के मध्यम फैली अनेकों प्रकार की विषैली गैसों को शुद्ध करके यह अपने नीचे धरातल पर और आस-पास के क्षेत्रों पर प्राण वायु छोड़ता है। और यही कारण है कि दमा, तपेदिक आदि भयंकर रोगों में पीपल तले रहने से प्राचीनतम वैदिक अनुसंधान आज प्रत्यक्ष में बताते जा रहे हैं। तथा प्रयोग किये जा रहे हैं: यह एक आश्चर्यजनक सत्य हैं कि पीपल तले दिन में कभी अन्धेरा नहीं होता और यह भी सत्य है कि पीपल चाहे कितना ही सघन क्यों न हो जावे सूर्य की किरणों को ठंडा करके ही धरती तक आने देता है।

वेदों में लिखा है 'तत्र अमृतस्य चक्षणाय' अर्थात् पीपल को विधिवत् नियमानुसार सेवन प्रयोग करने से अमृत की प्राप्ति होती है। इस प्रकार से वेद वाक्य से प्रमाणित है कि वेद में पीपल को अमृतमय माना गया है।

इन सब तथ्यों को लिखने की मेरी मूल भावना यह रही है कि पीपल में रचनात्मक कार्य कराने की विशेष क्षमता है। यह वास्तव में कर्मयोग का ज्ञान देता है। निरन्तर जीवन पर्यन्त कर्मठ रहना पीपल के स्वभाव की महान विशेषता है। इसके पत्ते तब भी हिलते डुलते रहते हैं जब वायु रुकने या भारी हो जाने पर अन्य वृक्षों के पत्ते हिल ही नहीं पाते हैं। इसका रस, कोमल पत्ते और नर्म शाखायें सेवन करने से अनेकों व्यक्ति अनेकों रोगों से मुक्त होते देखे गये हैं। इसकी विशेषता यह है कि वायु के समान तरंगित होने से पाचन में हल्के होते हैं और प्रत्येक मौसम में लाभदायक। वैद्यक के अनुसार छोटे बच्चे से लेकर वृद्ध तक के लिये पीपल हितकारी है। पीपल के पत्ते निरन्तर हिलते हुए मूक वाणी से भारतीय जनमानस की ओर यह संकेत करते हैं कि नस-नस में तरुणता का आभास भरा हो और सदा कर्मठ होकर शुभ कार्यों में लगे रहे तभी तो श्री कृष्ण ने जो वेदों के परम ज्ञानी थे यह कहा था कि "पेड़ों में मैं पीपल हूं।"

जिन्होंने वेदों का स्वाध्याय किया है वह सब जानते होंगे कि पीपल तो आक्सीजन (प्राण वायु) का सिलेन्डर है। सांस, दमा, ब्राकाईट्स, डिप्थीरिया और कैन्सर के रोगियों के लिये पीपल भगवान का दिया हुआ वरदान है। रात्री को सब पेड़ घातक वायु छोड़ते हैं, परन्तु पीपल दिन रात जीवन वायु (प्राण वायु) छोड़ता है।

क्या ब्राह्मण ग्रन्थ वेद हो सकते हैं ?

—प्रो० ओम् प्रकाश ब्रह्मचारी एम० ए० (द्वय) विद्यावाचस्पति उपप्रधान, आर्यसमाज (मुजफ्फरपुर)

(गतांक से आगे)

'मन्त्र ब्राह्मणायो: वेद नामधेयम्' यह सूत्र केवल कृष्ण यजुः शाखा के आपस्तम्ब, सत्याषाढ, बोधयनादि श्रौत सूत्रों में ही उपलब्ध होता है ऋग्वेद के शङ्खायन और आश्वलायन, शुक्ल यजुर्वेद के कात्यायन और सामवेद के द्राह्यायण और लाट्यायन और श्रौत सूत्रों में उक्त सूत्र या इस अर्थ का वचनान्तर नहीं मिलता। १३ कृष्ण यजुः शाखा के श्रौत सूत्रों के अलावे अन्यत्र नहीं मिलना सन्देह उत्पन्न करता है। सन्देह की पुष्टि आपस्तम्ब सूत्र के व्याख्याकार हरदत्त की व्याख्या से होती है। वे लिखते हैं—'कैश्चिन मन्त्राणामेव वेदत्व-माख्यानम्' अर्थात् किन्हीं आचार्यों ने केवल मन्त्र को ही वेद माना है। यही बात हरदत्त के पूर्ववर्ती धूर्तस्वामी ने भी इस सूत्र की व्याख्या में लिखी है। अतः सिद्ध होता है कि प्राचीन आचार्य मन्त्र को वेद मानते थे ब्राह्मण को नहीं। १८

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात उक्त सूत्र का परिभाषा प्रकरण में पढ़ा जाना है।" पारिभाषिक संज्ञाए तभी रखी जाती है जब वे लोक प्रसिद्ध न हों अथवा शास्त्रान्तरों में अन्यार्थ प्रसिद्ध हों।" इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है कि "परिभाषिक संज्ञाए अपने-अपने शास्त्र में ही स्वीकार की जाती है, अन्यत्र नहीं, यह भी लोक प्रसिद्ध है।" १९ ये दोनों उद्धरण सायणाचार्य की भ्रांति के बादल को साफ करने में सक्षम है। एक उदाहरण से इसे और भी स्पष्ट कर सकते हैं। पाणिनि ने 'वृद्धिरादैच्' इस सूत्र से ऐ और औ की वृद्धि संज्ञा की है। यह पारिभाषिक संज्ञा है। सभी जानते हैं कि ऐ और औ की वृद्धि संज्ञा केवल पाणिनि की अष्टाध्यायी में ही सार्थक है। अन्यत्र वृद्धि का इस अर्थ में प्रयोग अनर्थकारी एवं मूर्खता का सूचक होगा। यदि कहा जाए कि किसी कर्मचारी के वेतन में वृद्धि हुई तो पाणिनि का आश्रय लेकर कोई ऐसा अर्थ करेगा क्या कि कर्मचारी के वेतन में ऐ और औ लग गये? चिकित्साशास्त्र में यदि कहा जाए कि राकेश के कफ में वृद्धि हुई है तो पाणिनि का हवाला देकर ऐसा अर्थ हो सकता है क्या कि राकेश के कफ में ऐ और औ चिपक गये? ऐसा अर्थ करने वालों को पागल ही कहा जायेगा। इसी प्रकार 'मन्त्र ब्राह्मणयो: वेद नामधेयम्' सूत्र भी पारिभाषिक है जो यज्ञ प्रक्रिया और विशेषपरक ग्रन्थों तक ही सीमित है। इस अन्तर को न समझनेके कारण ही सायणाचार्य एवं उनके अनुयायियों से उपर्युक्त सूत्र के अर्थ समझने में गलती हुई है।

आइए, इसी प्रसंग में कुछ नवीन युक्तियों पर भी विचार करें।

१—वेद मन्त्रों की पहचान उन पर लगे स्वरांकण उदात्त अनुदात्तादि के चिह्न हैं। वेद को छोड़कर ये अन्यत्र लगते। यदि ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐसे चिह्न दिख पड़े तो उन्हें 'वेद' माना जा सकता है। किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों में संहिता भाग के उधृत मन्त्रों को छोड़कर अन्यत्र स्वरांकण नहीं दीखते। अतः ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हो सकते।

२ वेदों की रक्षा के लिये बहुविध पाठ हैं। आठ प्रकार के पाठ—जटा, माला, शिखा, लेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ और घन प्रचलित हैं। इन पाठों को काशी, मिथिला, नदिया, बम्बई एवं मद्रास के वेदपाठी ब्राह्मण आज तक चलाते आये हैं। यही कारण है कि वेदों में मिलावट सम्भव न हो सका। वेदों की रक्षा के लिए जिन आठ पाठों का प्रचलन है क्या ब्राह्मणों के लिए भी ये प्रयुक्त हैं? स्पष्टतः नहीं। इससे भी प्रमाणित होता है कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है।

३—वेदों की रक्षा के लिये मन्त्रों की गिनती निर्धारित है। इसके लिए अनुक्रमणी उपलब्ध है। चरणव्यूह परिशिष्ट में ऋग्वेद के अक्षरों की संख्या ४३२००० तथा यजुर्वेद की २५३८६८ बतायी गई है। शतपथ ब्राह्मण में भी ऋचाओं का परिमाण उद्धृत है। इसे जाति छन्द में व्यक्त किया गया है जो १६ अक्षरों का होता है। यदि ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद माना जायेगा तो वेदों का अक्षर परिमाण कई गुणा बढ़ जाएगा। अक्षरों की गिनती निश्चित होने के कारण ही ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हो सकते। मैक्समूलर ने लिखा है—"ऋग्वेद की अनुक्रमणी से हम उसके सूत्रों एवं पदों की पड़ताल करके निर्भीकता से कह सकते हैं कि अब भी ऋग्वेद के मन्त्रों एवं पदों की वही संख्या है जो कात्यायन के समय में थी।

४—चारों वेदों के अलग अलग ब्राह्मण ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं जैसे अथर्व वेद का गोपथ सामवेद का तांड्य आदि दस ब्राह्मण, यजुर्वेद का शतपथ और तैत्तिरीय तथा ऋग्वेद का ऐतरेय और कौषीतिकी। यदि ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेद ही होते तो प्राचीन काल से 'वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ' कहने की परिपाटी क्यों चली आती। इससे भी स्पष्ट है कि ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं हो सकते।

५—सायणाचार्य ने अपने ऋग्वेद भाष्य भूमिका में ब्राह्मण का लक्षण इस प्रकार दिया है—"जो परम्परा से मन्त्र नहीं वह ब्राह्मण है है और जो ब्राह्मण है और जो ब्राह्मण नहीं वह मन्त्र है।"

उपर्युक्त अकाट्य तर्कों एवं प्रमाणों के होते हुए भी क्या कारण है कि ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद मानने की जिद चल रही है।

हमारी समझ में इसके तीन कारण हैं मृतक श्राद्ध, मूर्ति पूजा और मांस भक्षण। ये तीनों संहिता भाग से सिद्ध नहीं किये जा सकते। अतः इन बातों को मानने वाले अपनी बात ऊंची रखने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मनाना चाहते हैं। यदि तटस्थ भाव से देखा जाए तो प्राणिमात्र का हितकारी वेद संहिता (मन्त्र) भाग ही वेद कहलाने योग्य है।

श्री शालवाले का उद्घाटन भाषण

(पृष्ठ ६ का शेष)

कम लोग जानते होंगे। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सन् १८५७ ई० में भारत में स्वतन्त्रता की प्रथम लड़ाई लड़ी गई। उसमें स्वामी जी ने जो योगदान दिया उसका विस्तृत वर्णन "आर्यसमाज के इतिहास" में उल्लिखित है। इसके बाद भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो स्वतन्त्रता आन्दोलन अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आरम्भ किया था, उसमें भी आर्य नेताओं तथा आर्य जनता ने सक्रिय रूप से भाग लिया, और बहुत से आर्य वीरों ने तो उसमें अपने प्राणों की आहुति दी। आज भी हम इस सन्दर्भ में सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, श्याम जी वर्मा, मदनलाल ढींगरा, रोशनसिंह आर्य, गेंदालाल दीक्षित तथा अनेकों आर्य वीरों का नाम बड़े गर्व से लेते हैं। उन्होंने क्रान्तिकारियों की वेषभूषा में "ओ३म् वन्देमातरम्" पार्टी बनाकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद को जड़ से उखाड़ने में अपने जीवन उत्सर्ग कर दिए।

महर्षि दयानन्द ही पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजों के इस प्रचार का पर्दाफाश किया कि आर्य लोग मध्य एशिया से भारत आए। इसलिए आर्य जाति भी विदेशी है। स्वामी ने इस झूठे प्रचार को चुनौती देकर घोषणा की कि आर्यों ने ही सर्व प्रथम आर्य भूमि भारत को बसाया। सृष्टि का आदि स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) है और उसी भूमि पर चारों वेदों का आविर्भाव हुआ।

दूसरा महत्वपूर्ण कार्य, जो भारत के इतिहास में हमेशा अमर रहेगा, वह है महर्षि द्वारा वेद के शुद्ध स्वरूप का दिग्दर्शन और 'ईश्वरीय ज्ञान' के गौरवमय इतिहास का प्रकाशन। स्वामी जी ने कतिपय भारतीय और विदेशी विद्वानों द्वारा किए गए अनर्गल वेद-भाष्य को खुले रूप में अस्वीकार करके घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद में सभी प्रकार के प्राचीन और आधुनिक विज्ञान का वर्णन है, जो ईश्वरीय ज्ञान में होना आवश्यक है। उन्होंने सायण, महिधर, उव्वट, तथा विदेशी विद्वान मैक्समूलर द्वारा बनाए गए वेद-भाष्यों को अमान्य करके कहाकि वेद का विज्ञान मूलक भाष्य ही ईश्वरीय ज्ञान की पहचान है। उन्होंने इसी आधार पर ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका तथा वेद भाष्य लिखने का कार्य आरम्भ किया। योगी अरविन्द तथा अन्य विद्वानों ने महर्षि द्वारा रचित वेद भाष्य को ही वेद द्वार में प्रवेश करने की कुंजी की संज्ञा देकर स्वामी जी के वेद भाष्य की सराहना की है।

स्वामी जी राजनीति को धर्म से अलग नहीं मानते थे। किसी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए राजनीति का धर्म पर आधारित होना आवश्यक है? अधर्म पर टिकी हुई राजनीति राष्ट्र को पतन की ओर ही ले जाती है, जैसा कि आजकल हमारे देश में हो रहा है। एक सुखी समाज और सशक्त राष्ट्र का स्वरूप क्या हो यह यजुर्वेद में बड़ी सुन्दर राष्ट्रीय प्रार्थना में दिया गया है।

> ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
> आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधि महारथो जायताम्।
> दोग्ध्रीः धेनुर्वोढ़ा अनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
> सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे
> निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः
> पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥
>
> यजु० अ० २२। २१॥

"हे ईश्वर, हमारे राष्ट्र के ब्राह्मण ब्रह्म तेज से युक्त, महा ज्ञानी हों। क्षत्रिय योद्धा, वीर महारथी और शत्रु दल का संहार करने में समर्थ हों। देश में दुधारू गऊयें हों, अश्व आदि पशु बलिष्ठ भार-वाही हों। सौभाग्यवती नारियां देश का आधार हों। यजमान-पुत्र सभी सभ्य बलवान् और वीर हों। देश में ऋतु अनुकूल वर्षा हो, जिससे फल-फूल और धन धान्य से हमारी भूमि सदा हरी-भरी रहे। अच्छी ओषधियां हमें प्राप्त हों। हम स्वतन्त्र हों और हमारी स्वाधीनता योग-क्षेमकारी हो।" इससे बढ़कर एक आदर्श राष्ट्र की ओर क्या कल्पना हो सकती है। इस प्रार्थना के अन्तिम चरण में जो कामना या प्रार्थना ईश्वर से की गई है, वह ध्यान देने योग्य है। सर्व प्रथम तो यह कि हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र हो और दूसरे हमारी स्वाधीनता योग-क्षेमकारी हो। जिस राष्ट्र की जनता भूखी हो, पीड़ित हो, अभावों से त्रस्त हो, उस राष्ट्र की स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं है। और यह तभी हो सकता है जब कि हमारे देश के राजनेता स्वयं सुसंस्कृत, धार्मिक प्रवृत्ति वाले, गुणी और परोकारी हों। आर्य समाज को इस दिशा में भी कार्य करना है। हमें अधिक से अधिक संख्या में अपने प्रतिनिधि देश की राजनैतिक तथा प्रशासानिक संस्थाओं में भेजने चाहियें, जो राजतन्त्र को वैदिक आदर्शों के अनु-रूप चला सकें।

इस समय देश में विदेशी शक्तियों द्वारा एक और कुचक्र बड़ी तेजी से चल रहा है। पश्चिमी देशों से आए हुए ईसाई मिशनरी और पाकिस्तान समर्थक मुसलमान मुल्ला-मौलवी, जिन्हें अन्य मुस्लिम देशों का भी आर्थिक सहयोग प्राप्त है, हिन्दू जाति के एक बड़े अंश, हरिजनों और आदिवासियों का धर्म परिवर्तन करने में जी-जान से लगे हुए हैं। मीनाक्षीपुरम् की घटनाएं अभी बहुत पुरानी नहीं हुई हैं। आर्य समाज ने इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन का खुला विरोध किया जिसके परिणामस्वरूप दक्षिण भारत में हरिजनों का धर्मान्तिरण प्रायः बन्द हो गया है। लेकिन हमें इस विषय में आगे भी सतर्क रहना होगा। फरवरी (१९८६) में भारत सर-कार के निमन्त्रण पर पोपपाल यहां आ रहे हैं। इस अवसर पर ईसाई मिशनरियों द्वारा बिहार के आदिवासी क्षेत्र में १ लाख से अधिक आदिवासी हिन्दुओं को ईसाई बनाने की योजना है। हमें इसके विरोध में आवाज उठानी होगी। यदि धर्म परिवर्तन का यह कुचक्र चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब अपने ही देश में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेंगे। उस समय हिन्दू जाति की क्या दशा होगी। वह कल्पनातीत है। आर्यसमाज को इस दिशा में और अधिक सक्रिय बनना पड़ेगा। हम इस समय भी निष्क्रिय नहीं हैं। देश में जगह-जगह विशेषकर ऐसे क्षेत्रों में जहां हरिजनों तथा आदिवासियों के धर्म परिवर्तन की आशंका अधिक है, आर्यसमाज ने आर्यवीर दल के शिविर लगाने की योजना बनाई है। जिससे वहां रहने वाले हिन्दुओं में धर्मपरिवर्तन के प्रति कोई लगाव पैदा न हो। विदेशी शक्तियों द्वारा देश के नैतिक विभाजन की यह चाल बहुत गहरी है। हमें उनकी हर चाल को नाकाम करना होगा। इसके लिये हमें संगठित होकर अपने आपको तैयार करना होगा।

यह कार्य बहुत कठिन नहीं है। केवल लगन और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है। हम अपने समस्त स्वार्थों और दुष्ट प्रवृत्तियों को छोड़कर महर्षि के बताये मार्ग पर चलते रहें। तभी हम अपना, अपने समाज और अपने देश का कल्याण और महर्षि का "कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्" का स्वप्न साकार कर सकेंगे। यदि हम इस समय भी सचेत नहीं हुए और इसी प्रकार व्यक्तिगत और दलगत स्वार्थों के लिये आपस में ही अपना समय, शक्ति और साधन बर्बाद करते रहे तो याद रखिये, हमारी इस अकर्मण्यता और विवेक हीनता को ऋषि दयानन्द की आत्मा कभी क्षमा नहीं करेगी।

॥ ओ३म् शान्ति ॥

आर्यसमाजों की गतिविधियां

आर्यसमाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर का ७२वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर का ७२वां वार्षिकोत्सव दिनांक ७ मार्च ८६ से १० मार्च ८६ तक मनाया जायेगा।

इस उत्सव में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे।

२—आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी गोरखपुर के तत्वावधान में आर्य वीर दल शाखा रेलवे कालोनी का गठन दिनांक ८-१२-८५ को किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के सहायक संचालक श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी विशेष रूप से उपस्थित थे।

—विप्र श्रीवास्तव, मन्त्री
आर्यसमाज असुरन रेलवे कालोनी
वेद मन्दिर, गोरखपुर

अनूप शहर मेले में वेद प्रचार

दिनांक २६, २७ नवम्बर को आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला बुलन्द शहर के तत्वावधान में वेद-प्रचार बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। शुभारम्भ यज्ञ के द्वारा हुआ, जिसके यजमान अनूपशहर के एस० डी० एम० श्रीयुत चौ० दिलबागसिंह जी बने और आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट की।

उद्घाटन श्री पी० के० शर्मा पूर्व राज्य मन्त्री उत्तर प्रदेश द्वारा हुआ। इस अवसर पर प्रान्तीय युवक मंडल के उपाध्यक्ष श्री शम्भूसिंह प्रेमी, श्री वीरपालसिंह, श्री कर्मवीरसिंह चौहान, श्री रामस्वरूप आजाद, कवि प्रह्लादसिंह बेकल, श्री भजनसिंह, श्री छोटे लाल तथा कुमारी चन्द्रकान्ता आर्या आदि उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों ने अपने-२ कार्यक्रम प्रस्तुत किये। जनता पर भारी प्रभाव हुआ जिसमें जिले भर से आये आर्य एवं बुद्धिजीवी प्रबुद्ध जन भारी सख्या में सम्मिलित थे।

—धर्मेन्द्र शास्त्री, मन्त्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा
जिला बुलन्दशहर

'सार्वदेशिक' का आकर्षक विशेषांक

इस वर्ष सार्वदेशिक का यह विशेषांक अति उत्तम प्रकाशित हुआ है। मुख पृष्ठ पर मुद्रित ब्लाक अति सुन्दर व आकर्षक है जिसे देखते ही विशेषांक की विषय सामग्री पढ़ने की उत्सुकता जागृत होती है। विशेषांक के लेख आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों के अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण, सिद्धान्तपरक और पढ़ने योग्य लेख हैं। इस दृष्टि से यह विशेषांक संग्रहणीय हैं।

विशेषांक का कागज, छपाई एवं साज-सज्जा भी उत्तम है।

ऐसे उत्तम विशेषांक के लिये 'सार्वदेशिक' के सम्पादक महोदय साधुवाद के पात्र हैं।

—काशीनाथ शास्त्री
आर्य निवास, राजेन्द्र व.डं
गोंदिया (महाराष्ट्र)

पुरोहित की आवश्यकता

"आर्यसमाज बल्लभगढ़ को एक योग्य व अनुभवी पुरोहित की आवश्यकता है। पुरोहित की आवास एवं भोजन व्यवस्था समाज की तरफ से होगी।

—सुरेश कुमार मन्त्री,
आर्य समाज बल्लभगढ़
जि० फरीदाबाद (हरि०)

टिप्पणी

शान्ति देवी आर्या मान्य बन्धु श्री पं० बालदिवाकर जी हंस, प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की धर्म पत्नी हैं इन्होंने आर्य महासम्मेलन अलवर के अवसर पर श्री महामहिम श्री शिवसागर रामगुलाम जी के स्वागत में रचना पढ़ी थी जो उस समय में प्रकाशित स्मारिका में छपी हुई है। महाप्रयाण के अवसर पर उनकी भावोपेत रचना पाठक पढ़ें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

हे शिवसागर रामगुलाम

शिव संकल्प वीर धन श्याम,
जीवन तेरा ललित ललाम।
सागर गति अतुलित अविराम,
आर्य रत्न पुण्योदक धाम।
रामानुगमन मारीशस धाम,
गुहा दृष्टि वेदोक्त विराम।
लाभ-हानि निस्पृह निष्काम,
महा शक्ति प्रणयी अभिराम।
महा प्रणाय के पथिक सुनाम,
'शान्ति' सुमन शत् शत् प्रणाम।
हे शिव सागर राम गुलाम!

—शान्ति देवी आर्या

पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री वैद्य दिवंगत

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के सुयोग्य स्नातक श्री पं० प्रकाशचन्द्र जी वैद्य २१-१२-८५ की रात्रि में इहलोक से परलोक सिधार गये। आप आर्य समाज के कार्यों में अति रुचि ले रहे थे। व्यावसायिक दृष्टि से भी विद्वान होकर अर्थ के संग्रह में भी रुचि रखते थे। आपने जहां आर्यसमाज के कार्यों में सम्मान पाया था। वहां व्यवसाय में भी वैभवपूर्ण साधन जुटाये थे। आपका भरा-पूरा परिवार है।

आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कई वर्षों तक सभा के मन्त्री पद पर रहकर गुरुकुल का सफलता पूर्वक संचालन भी करते रहे थे।

आपके देहावसान से जहां आर्य समाज को हानि हुई और परिवार की भी क्षति हुई।

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान ला० रामगोपाल जी शालवाले ने दिवंगत आत्मा की सद्गति और पारिवारिक जनों को शान्ति प्रदान करें, ऐसी प्रभु से प्रार्थना की।

—सम्पादक

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर चादनी चौक दिल्ली के जलूस का दृश्य अपार जन समूह दिखाई दे रहा है।

मुना म द्रूणा पर १११ करोड़ खर्च

नई दिल्ली। पर्यावरण और वन राज्यमन्त्री श्री जेड आर अन्सारी ने राज्य सभा में एच पी शर्मा के एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि दिल्ली प्रशासन द्वारा नियुक्त एक समिति ने यमुना नदी में और दिल्ली के आस पास के इलाकों में प्रदूषण रोकने के लिए एक दीर्घकालीन योजना तैयार की है। अभी तक यह योजना केन्द्र सरकार को पेश नहीं की गई है।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के जलूस का दृश्य टाऊन हाल के सामने आर्यसमाज नया बांस द्वारा स्वागत व्यवस्था।

पृथ्वीसिंह आजाद की क्रिया सम्पन्न

खरड दिसम्बर पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री तथा स्वतन्त्रता सग्रामी आर्य पृथ्वीसिंह आजाद की रस्म क्रिया आर्य कन्या विद्यालय में सम्पन्न हुई। बड़ी संख्या में उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी।

इस अवसर पर हरियाणा के श्री चान्दराम पंजाब विधान सभा में विपक्ष की नेता श्रीमती गुरबिन्दर कौर बराड प्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री वीरेन्द्र जी तथा पण्डित मोहनलाल भी उपस्थित थे।

दैनिक ट्रिब्यून (२३ दिसम्बर १९८५)

सरकार की दोहरी नीति मद्यपान'

राष्ट्र के स्वतन्त्र होने के पश्चात राष्ट्रीय सरकार ने समस्त प्रयास इस दिशा में लगाये कि राष्ट्र का आर्थिक सामाजिक विकास हो। व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करे। इसी लक्ष्यानुसार राष्ट्रीय सरकार ने मद्यपान का प्रथम अप्रत्यक्ष किन्तु पश्चात प्रत्यक्ष विरोध किया

एक ओर देखा जाता है कि शराब पीना जहर है इत्यादि नारों से जनता को आह्वान किया जाता है। किन्तु राष्ट्रीय सरकार दूसरी ओर आबकारी ठेका देकर मद्यपान को प्रेरित करती है। इसी कारण भारत वसुन्धरा पर रहने वाले व्यक्तियों पर इसका नशा अधिकाश हावी हो रहा है। इससे कौन अछूता है क्या साधारण मजदूर से लेकर सरकारी कर्मचारी नेता वर्ग ? सभी इससे प्रभावित है। किसान युवा वर्ग विद्यार्थी वर्ग तथा सामाजिक वर्ग सभी मद्यपान द्वारा अधिकाशत ठगित तथा नैतिक मानसिक चरित्र से पतित हो रहे हैं।

मेरा राष्ट्रीय सरकार तथा मानव कल्याण को चाहने वाले महानुभावों से अति नम्र निवेदन है कि आबकारी ठेका देना तुरन्त खत्म करें। तभी राष्ट्र नागरिक कुरीतियों से बचकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। राष्ट्रोन्नति के लिये ठेका बन्द करना सरकार का परम कर्तव्य है। —यशपाल आर्य मन्त्री

वधू चाहिए

आर्य जाट परिवार से सम्बन्धित नवयुवक जो कि पूर्ण स्वस्थ रंग गेहुआ ऊँचाई ५ फुट ७ इंच उम्र ४ वर्ष फौज में गनर पद पर सेवा रत मेरठ जनपद में स्थाय निवास के लिए आर्य विचारों वाली गृह कार्य में दक्ष वधू की आवश्यकता है

विवाह शीघ्र एवं दहेज और जाति बन्धन से रहित निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ब्रजपाल सिंह आर्य
आदर्श जनता इण्टर कालेज
मु० पो० जसराना जिला मैनपुरी

शोक समाचार

—श्री वीरेन्द्र आर्य सूचना करते हैं कि भीलवाड़ा से प्राप्त सूचनानुसार श्री अमरसिंह आर्य प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सैनानी का ६५ वर्ष की आयु में निधन हो गया है।

—वीरेन्द्र आर्य
आर्यसमाज सम्पत्ति रक्षा समिति
एफ० आई, एफ/१६ डिग्गी बाजार
अजमेर (राज०)

महर्षि ने कहा था—

परमेश्वर का नाम मङ्गल
जो आप मङ्गलस्वरूप और सब जीवों के मङ्गल का कारण है इसलिये उस परमेश्वर का नाम मङ्गल है।

परमेश्वर का नाम बुध
जो स्वयं बोधस्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण है इसलिये उस परमेश्वर का नाम बुध है।

परमेश्वर का नाम बृहस्पति
जो बड़ों से भी बड़ा और आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है इससे उस परमेश्वर का नाम बृहस्पति है।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] वर्ष २१ अङ्क ५]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
पौष शु० ६ स० २०४२ रविवार १९ जनवरी १९८६
दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

२२ जनवरी १९८६ को विराटनगर (नेपाल) में प्रथम आर्य महासम्मेलन

वेदामृतम्

परिवार में योगक्षेम हो !

उपोहश्च समूहश्च,
क्षत्तारौ ते प्रजापते।
ताविहा हर्तां वस्तानिं,
बहुं भूमानमक्षितम् ॥
अथर्व० ।३।२४।७॥

हिन्दी अर्थ—हे प्रजा के पालक परमात्मन्! धन का सग्रह और सवर्धन ये दोनो तेरे अग्रदूत हैं। ये दोनो यहा समृद्धि को लाव। ये बहुत अधिक अक्षय परिपूर्णता को भी दें।

नेपाल के भू.पू. प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला अध्यक्षता करेंगे।

कोशी अंचलाधीश द्वारा उद्घाटन
श्री रामगोपाल शालवाले मुख्यअतिथि

दिल्ली ११ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया गया है कि आगामी २२ जनवरी १९८६ को नेपाल के विराटनगर मे एक विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह का उद्घाटन कोशी अचलाधीश और अध्यक्षता नेपाल के भू०पू० प्रधानमन्त्री श्री मातृकाप्रसाद कोयराला करगे। नेपाल के भू०पू० प्रधानमन्त्री श्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल सरक्षक और भारत से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले मुख्य अतिथि के रूप मे भाग लगे।

नेपाल मे यह पहला अवसर है जबकि वहा इस प्रकार के विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज विराटनगर के कार्यकर्ता तथा पदाधिकारी विगत दो महीनो से इस समारोह के शानदार आयोजन के लिए दिन रात काम पर लगे हुए हैं। इस महासम्मेलन मे लाखो लोगो के पहुचने की सम्भावना है। देश के अनेक लब्ध प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् भी इस अवसर पर वहा पहुच रहे हैं।

यह भी पता चला है कि श्री शालवाले नेपाल की सीमाओ पर हो रहे धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे भी नेपाल नरेश से भेंट करगे।

—मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पं० बिहारीलाल शास्त्री का निधन
आर्यसमाज की बड़ी भारी क्षति

दिल्ली। आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान तथा अनेक भाषाओ के ज्ञाता ९६ वर्षीय पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री के निधन पर एक शोक सभा मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले ने दिवगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री शास्त्री आर्य समाज के पारखी विद्वान् और शास्त्रार्थ महारथी थे। उन्होने मुसलमानों और ईसाइयो के विरुद्ध उनके धर्म-ग्रन्थों के आधार पर कई बार तर्क सगत शास्त्रार्थ किये थे। सस्कृत के इस उदभट विद्वान ने हमेशा सार्वदेशिक सभा के आदेशो और निर्णयो को पूरा आदर और सम्मान दिया।

पौराणिक विद्वान् आचार्य करपात्री कृत वेदार्थ परिजात का उत्तर सार्वदेशिक सभा के अनुरोध पर आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री ने वेदार्थ कल्पद्रुम नाम से संस्कृत में ग्रन्थ लिखकर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य जगत् के गौरव शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारीलाल शास्त्री दिवंगत

आदर्श शव यात्रा

पवित्र भागीरथी तट पर अन्त्येष्टि संस्कार

ता० ३-१-८६ मध्याह्न २ बजे लम्बी बीमारी के पश्चात् ९६ वर्ष की आयु में पं० जी का स्वर्गवास अपने निवास स्थान रामपुर गार्डन, बरेली में हो गया। यह समाचार नगर में फैलते ही उनके अन्तिम दर्शनार्थ नर-नारियों का ताता बन्ध गया।

ता० ४-१-८६ मध्याह्न उनकी शव यात्रा की व्यवस्था की गई। समस्त आर्य समाजों के व्यक्ति सम्मिलित हुए। प्राचीन भारतीय शैली पर जैसा प्राचीन इतिहास में दशरथ की शव यात्रा का वर्णन है:—

"जगुः सामानिः सांमगाः।" (बाल्मीकि रामायण)

दशरथ की शव यात्रा के साथ सामगान करने वाले वेदपाठी साथ-साथ चल रहे थे। तदनुसार पं० जी की अर्थी जो फूलों, ओ३म् के झण्डों से सजी हुई थी। उनके आदर्श पुत्र प० अरविन्दलाल तथा परिजनों द्वारा उठाते ही वेद-पाठियों ने एक साथ सामगान की ध्वनि प्रारम्भ की। उस समय यहां जो विद्वान मण्डली उपस्थित थी उनके नाम इस प्रकार उल्लेखनीय हैं:—

१—सामगाचार्य पं० विद्याशंकर अनलेश।
२—वेदाचार्य आचार्य विश्वश्रवाः व्यास
३—वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा
४—वेदाचार्या श्रीमती देवी शास्त्री धर्मपत्नि आचार्य विश्वश्रवा. व्यास
५—प्राप्य नवीन व्याकरणाचार्य पं० रमेशचन्द्र शास्त्री
६—साहित्याचार्य प० ज्ञानेन्द्र जी
७—साहित्याचार्य पं० सतीशचन्द्र शास्त्री
८—आर्य समाज के पुरोहित पं० अशर्फीलाल एम०ए०
९—प० रामप्रसाद त्रिपाठी आदि

सबके हाथों में सामवेद थे। आगे-आगे विद्वान मण्डली सामगान करती हुई शव के साथ चल रही थी। एक मील पैदल शव यात्रा चली। पं० जी की इच्छा थी कि मेरा अन्त्येष्टि संस्कार भागीरथी गंगा तट पर हो। बरेली नगर रामगंगा के किनारे बसा है। पर भागरथी यहां से ८० किलोमीटर दूर कछला पर है अतः शवयात्रियों के लिये कारों, बस, ट्रकों की पर्याप्त व्यवस्था की गई थी। उनके द्वारा शव यात्रा भागीरथी पहुंची। एक ट्रक पर सजाकर प० जी का शव रखा गया और चारों ओर वेदपाठी बैठे सामगान रास्ते भर करते रहे। लाउडस्पीकर लगा हुआ था। वेदपाठियों की व्यवस्था आचार्य विश्वश्रवा. व्यास कर रहे थे। बदायूं, उझियानी से गुजरते हुए शव यात्रा ४ बजे कछला पहुंची।

पण्डित जी के पुत्र पं० अरविन्द जी ने अन्त्येष्टि संस्कार के लिए पर्याप्त सामान की व्यवस्था की थी। एक बड़ा पीपा शुद्ध देशी घी, एक मन सामग्री, आधा मन चन्दन और एक बड़ा थैला भर कपूर। पण्डितजी के शव को नख से शिख तक चन्दन से पूर्ण ढका गया फिर सामग्री की तह ऊपर की गई। सब वेद-पाठियों ने सामवेद रखकर संस्कार विधियां अपने हाथों में लीं और उच्च मधुर ध्वनि के साथ अन्त्येष्टि मन्त्रों से घी की आहुतियां प्रारम्भ हुई।

संस्कार की समाप्ति पर आचार्य रमेशचन्द्र जी का प्रवचन हुआ। अब नगर के सब वर्ग आर्य समाजों की सम्मिलित सभा होने जा रही है जिसमें प० जी के नाम स्थायी स्मारक बनाने पर विचार होगा।

—आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र,
रामपुर गार्डन, बरेली (उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द गो संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र पर आयोजित यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए महाशय धर्मपाल जी।

दिवंगत पं० बिहारीलाल शास्त्री को श्रद्धाञ्जलि

वैदिक धर्म पुजारी तुमको भूल न हम पायेंगे।
अन्तिम श्वांस रही जब तक,
तुम वेद मार्ग के प्रेरक।
मानवता के लिये जिये,
और रहे अन्त तक सेवक।
साथ तुम्हारे ही युगान्त, हम कैसे बिसरायेंगे?

मन्त्र जागरण का जीवन भर,
तन्मय होकर गाया।
संस्कृति के साधक! हितचिन्तक,
करुणा पूरित छाया।
हृदय पटल पर अंकित हैं जो स्वर,
पथ दर्शायेंगे।

वैदिक संस्कृति के प्रसार को,
शास्त्रार्थों में दीक्षित।
मर्यादाप्रिय! निर्भयतामय,
विजयी होकर विकसित।
मिल कर हम सब स्वस्ति पन्थ पर,
प्रतिपल बढ़ पायेंगे।

यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि,
पथ प्रशस्त कर पायें।
स्वर्णिम हैं जो स्वप्न सुसंचित,
आकृति में मुस्कायें।
सेवा स्नेह संगठन से वैदिक रवि
विकसायेंगे।

- डा० श्रीमती, महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज,
बरेली-२४३००३

सम्पादकीय

भारत की शिक्षा-नीति दोष पूर्ण हैं ?

संसार भर के इतिहासकार तथा अन्य विचारक विद्वान इस बात को मानते हैं कि विश्व में हिमालय पहाड़ ही ऐसे हैं जो पृथ्वी बनने से पहिले भूमि पर बने, और यहीं पर सृष्टि की रचना हुई। यहीं से लोग चीन, मध्य ऐशिया तथा भारत आदि देश में आये।

इस तथ्य को भुला देना एक भयंकर भूल है। इसे वही देश, भुला सकता है जो गुलाम रहा हो, और अपनी संस्कृति, धर्म, सभ्यता तथा इतिहास से अपरिचित हो। भारत में कितने विद्यार्थी ऐसे हैं जो यह जानते हैं कि प्राचीन काल में आर्य जाति उच्चकोटि पर थी, और राष्ट्र का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं था जिसमें आर्य जाति के लोगों ने साइंस की दृष्टि से रिसर्च न की है। धर्म का नाम यहीं से लोगों ने लिया, और समाज के अन्य बातों को इनसे लिया। परन्तु शोक कि उस इतिहास को विद्यार्थियों के सन्मुख किसी ने नहीं रखा। कारण एक ही था कि भारत में मुसलमान आदि लोग ऐसे हैं जिनसे सरकार डरती हैं।

भारत में मुसलमान आये जिन्होंने यहां के रहने वालों को तंग किया, मुसलमान बनाया और यहां के धर्म आदि की बातों को नहीं चलने दिया। मुसलमानों के पश्चात् भारत में अंग्रेज आये, और लन्दन में लोगों ने यह कहा कि आर्य (हिन्दू) लोग किसी भी देश का शासन पसन्द करेंगे, परन्तु धर्म के मामले में कभी सिर नहीं झुकायेंगे। अंग्रेज सरकार ने भारत में अपने शासन को स्थाई रूप देने के लिये यहां धार्मिक दृष्टि से परिवर्तन करने का प्रयत्न किया।

अंग्रेजों ने भारत की शिक्षा नीति के स्थान पर लार्ड मैकाले की नीति लागू की, जर्मनी के संस्कृत विद्वान्···को अपने यहां लगाया, जिसने वेदों को गड़रियों के गाने कहा, और इतिहासकारों ने राम-कृष्ण को बनावटी बनाया, और आर्य जाति को भारत में विदेशी साबित किया। बड़े-२ ग्रन्थ लिखे गये, और भारत के विद्वान उनके चक्कर में आ गये। उसी के आधार पर भारत की सरकार बनी और यहां का शासन चल रहा है।

प्रत्येक देश की सरकार अपने २ राष्ट्र की जनता को कहती है कि वह वहां की नागरिक हैं, परन्तु समूचे भारत की शिक्षा-संस्थाओं में एक ही बात पढ़ाई जा रही है कि आर्य जाति विदेशों से भारत में आई, और यहां के लोगों को मारकर भगाया। उनमें से तमिल भाषी, वनवासी आदि आज अपने को मूल निवासी बोलते हैं, और आर्यों को विदेशी नागरिक बोल रहे हैं। यही अंग्रेज सरकार चाहती थी कि लोग विदेशी बन जाय। फिर आर्य, अंग्रेज मुसलमान सभी विदेशी हैं। आर्यों को अभी देश की आजादी मांगने का अधिकार नहीं रहेगा।

विदेशी विद्वानों में पार्मिटर ने बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ लिखा कि आर्य लोग भारत के निवासी है। उसने अनेकों कारण दिये उसके पश्चात् श्री बाल गंगाधर तिलक ने पुस्तक लिखी, और उनके कहने का तात्पर्य भी यही था कि हिमालय के सृष्टि उत्पन्न हुई वहीं से आर्य भारत में आये। उनके पश्चात् आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती आये और उन्होंने वेदों का प्रमाण देकर कहा कि तिब्बत से आर्य जाति के लोग भारत में आये, और यहां बसे। 'वेद' संसार की प्राचीनतम पुस्तक है। इसकी बात का खण्डन कैसे किया जा सकता है।

सरकार के सन्मुख संसार भर में दो प्रकार विद्वान हैं—उनमें से एक आर्य जाति को भारत में बाहर से आया मानती है, और दूसरे विद्वान आर्य जाति को तिब्बत में उत्पन्न मानते हैं। सरकार का कर्तव्य था कि विद्यार्थियों के सन्मुख दोनों विद्वानों की बातें रख देती। परन्तु सरकार ने अंग्रेजों से प्रभावित विद्वानों की राय मानी और आर्यों को भारत में विदेशी बना दिया और दूसरे विद्वानों की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि दूसरे विद्वान की राय क्यों नहीं मानी गई। क्या वे कम विद्वान थे।

सरकार की अदूरदर्शिता का कुपरिणाम यह हुआ कि अपने ही देश में आर्य लोग विदेशी बन गये, और देश के शत्रु अपने को स्वदेशी कह रहे हैं। उन्होंने बड़े-२ ग्रन्थ इसी विषय पर लिखे हैं। इसका कुपरिणाम एक ही होगा कि भारत में शीघ्र ही इस्लामिक जैसा राष्ट्र बन जायगा, और वर्तमान सरकार की याद भर रह जायगी। मिडिल ईसट का कानून यहां का कानून होगा।

सरकार को अपनी शिक्षा-नीति बनाने से पूर्व कम से कम इन बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता थी:—

१—आर्य लोगों के भारत में आने से पूर्व इस देश, पहाड़, नदी, शहरों के नाम क्या थे।

२—आर्य लोग विदेशों से भारत में आये तो इनकी विजय का वर्णन इनकी पुस्तक में होता या तमिल लोगों की पुस्तकों में होता। परन्तु वह कहीं नहीं हैं।

३—भाषा की दृष्टि से संस्कृत भाषा संसार की अधिकांश भाषाओं की जननी है। यह सभी विद्वान स्वीकार कर रहे हैं।

४—आर्य जाति का धर्म, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास कहीं किसी देश का है।

५—भोजन की दृष्टि से भारत को छोड़ कौन-सा देश ऐसा है जहाँ का इन्हें माना जा सकता है।

६—इतिहास की दृष्टि से पश्चिम के धर्म, भूगोल, भावना आदि भारत से मिलते हैं, इत्यादि।

इन सब बातों से सरकार इसी परिणाम पर पहुंचेगी कि आर्य भारत के निवासी हैं, और यहां से बाहर गये। यदि सरकार इसे न पढ़ा सके तो सरकार को दो विद्वानों की राय पढ़ाने से क्या दिक्कत हैं।

सरकार के लिये यह विषय बड़ा गम्भीर है। इसके बारे में भूल से भारत का विनाश हो जायेगा। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि वह इस विषय पर ध्यान देकर अनुग्रहीत करें। —ओम्प्रकाश त्यागी

मुस्लिम मनोवृत्ति

—काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)

जब से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तलाकशुदा मुस्लिम महिला को निर्वाह भत्ता दिये जाने सम्बन्धी फैसला सुनाया गया है तब से सम्प्रदायिकतावादी मुसलमानों में खलबली मच गई है और वे बुरी तरह बौखला गये हैं। जिधर देखो उधर 'शरीयत बचाओ' के नारे लगाये जा रहे हैं और सर्वोच्च न्यायालय के उक्त फैसले पर विरोध प्रकट किया जा रहा है। कुछ दिनों पूर्व बम्बई में होने वाले 'शरीयत बचाओ' सप्ताह का उद्घाटन करते हुये महाराष्ट्र मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मौलाना जियाउद्दीन बुखारी ने यह दावा किया कि भारत में इस्लाम के प्रवेश के कारण ही सती प्रथा की रूढ़ि समाप्त हुई। मौलाना ने इस सन्दर्भ में एक प्रश्न प्रस्तुत कर उत्तर भी स्वयं दे दिया कि "अगर भारत में इस्लाम का प्रवेश नहीं हुआ होता तो अपने पति के निधन के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी का क्या हुआ होता ? उन्हें भी सती हो जाना पड़ता।"

मौलाना का यह प्रमत्त प्रलाप ही है क्योंकि असलियत इसके बिल्कुल विपरीत है। असलियत यह है कि सती-प्रथा की मजबूरन अनिवार्यता मुसलमानों के इस भारत भूमि पर पैर पड़ते ही शुरु हुई। अगर मुसलमान न आते और अपना राज्य स्थापित करने तथा हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाने के लिये हिन्दुओं का भीषण संहार न करते तो सामूहिक रूप से जौहर या सती की प्रथा कभी न प्रचलित होती। चित्तौड़ की महारानी पद्मावती का सहस्रों राजपूतानियों के साथ सती हो जाना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जब पतिव्रता महारानी और क्षत्राणियों को अपनी इज्जत व जान बचाने की कोई आशा न रही तो उन्होंने विधर्मियों के हाथों में पड़ने के बजाय सती हो जाना ही उत्तम समझा।

प्राचीन काल में सती होना अनिवार्य न था।

उदाहरणार्थ:—महाराज दशरथ की मृत्यु पर कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी सती नहीं हुईं। इसी प्रकार महाभारत का इतना भीषण युद्ध हुआ कि उसमें १८ अक्षौहिणी सेनाओं का संहार हुआ, किन्तु उस समय भी विधवाओं ने जौहर नहीं किया या सती नहीं हुईं। अपवादस्वरूप परिस्थितिवश या भावावेश में स्वेच्छा से कुछ स्त्रियां (मुसलमानों के आगमन से पूर्व) यदा-कदा सती हुई हों तो बात दूसरी है।

मौलाना ने भू० पू० प्रधान मन्त्री आदरणीया स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी पर भी बहुत ही अशोभनीय आक्षेप किया है।

शायद मौलाना बुखारी साहब यह बताना चाहते हैं कि जिस तरह इस्लाम ने अगर हिन्दू स्त्रियों को सती होने से बचाया उसी तरह उसने श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी बचाया अन्यथा उन्हें अपने पति फिरोज गांधी के निधन पर सती हो जाना पड़ता। लेकिन जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है असलियत इसके बिल्कुल विपरीत है। अगर मुसलमानी कानून और मुसलमान स्त्रियों के प्रति इतने उदार व सहिष्णु होते तो एक मुस्लिम महिला शाहबानो को उसके पति ने उसे बुढ़ापे में तलाक देकर उसके पांच बच्चों सहित घर से बाहर न निकाल दिया होता और न सर्वोच्च न्यायालय द्वारा उस तलाकशुदा महिला को निर्वाह भत्ता दिये जाने सम्बन्धी फैसले पर मुसलमान इतना भड़क उठते हैं। इसी तरह अभी कुछ ही दिनों पहले केरल की एक मुस्लिम धार्मिक संस्था ने वहीं की एक जुनेजाबाजी नामक मुस्लिम महिला को जब कोड़े मारने की सजा सुनायी थी तो महिलाओं के प्रति हमदर्दी बताने वाला कोई भी मुसलमान उसे बचाने नहीं आया।

अतः जिनके यहां पत्नियां पतियों की खेती समझी जाती हों और मात्र भोग-विलास का साधन हों वे अगर हिन्दू महिलाओं के प्रति उदारता बताने का दावा करें तो यह केवल सफेद झूठ है। पुन: अगर मुसलमानों के आगमन से हिन्दू स्त्रियों को सती होने से बचा लिया होता तो राजाराम मोहन राय जैसे सुधारवादी हिन्दू नेताओं के सहयोग से लार्ड विलियम बेंटिक को सन् १८२९ में सती प्रथा को बन्द करने के लिये कानून न बनाना पड़ता।

आशा है कि मुसलमान भाई इसे अन्यथा न समझेंगे और इस देश व हिन्दुओं के प्रति अपना अलगाववादी दृष्टिकोण बदलेंगे क्योंकि हिन्दू और मुसलमान दोनों को मिल-जुलकर अब इसी देश में रहना है।

विदेशों में आर्यसमाज

दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त सूचना के अनुसार चौथा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक (आर्य) महासम्मेलन डरबन में २२ दिसम्बर को १९८५ को सकुशल सम्पन्न हो गया और अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल रहा। सम्मेलन की समाप्ति पर श्री ओम्प्रकाश त्यागी, महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अध्यक्षता में अफ्रीका तथा मौरिशस से आए हुए प्रतिनिधियों की एक विशेष बैठक हुई जिसमें एक कमेटी का गठन किया गया। इसका उद्देश्य विदेशों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार के लिये उपयुक्त प्रचारक तैयार करना होगा। अफ्रीका महाद्वीप की राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए इस कमेटी का मुख्यालय मौरीशस में रहेगा। सुविधा और समय की अनुकूलता होने पर इसका उपकार्यालय नैरोबी (केन्या) में भी खोल दिया जायेगा।

नव गठित कमेटी में मौरीशस के तीन तथा अन्य दो प्रतिनिधि रखे गये हैं। इसकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मारीशस ने २॥ लाख रुपया तथा केनिया और दक्षिण अफ्रीका ने १-१ लाख रुपये की राशि संयुक्त कोष में देना स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार ४॥ लाख रुपये की जमा राशि से कमेटी का कार्य प्रारम्भ होगा। यदि यह प्रयोग सफल रहा तो फिजी, गायना, डचगायना आदि देशों की सभी आर्य समाजों एवं संस्थाओं को इससे लाभ पहुंचेगा। आशा है कालान्तर में वहां की आर्य संस्थाओं को इससे लाभ पहुंचेगा। इस कमेटी के कार्य में अपना योगदान देंगी।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

नई शिक्षा नीति गुरुकुल प्रणाली पर आधारित हो।

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान में आयोजित श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर केन्द्र सरकार से मांग की गई कि नई शिक्षा नीति प्राचीन गुरुकुल प्रणाली पर आधारित हो, जिसके अन्तर्गत धनी निर्धन विद्यार्थी एक साथ विद्याध्ययन करें। गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि भारत गुरुकुल प्रणाली को अपना कर ही वास्तविक प्रगति कर सकता है। सभा की अध्यक्षता प्रख्यात आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने की।

श्री आर्य ने सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि आर्य समाज शहीदों की संस्था है, जिसने देश के स्वतन्त्रता संग्राम एवं धर्म रक्षा हेतु अनेक बलिदान शहीद दिये। सरदार भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, पं० लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक शहीद आर्य समाज की ही देन हैं।

—सुशकुमार बोहरा

विश्व शान्ति एवं राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

—पं० दीनानाथ सिंह
मन्त्री—आर्यकुमार सभा उ० प्र०, स्वामी सत्यप्रकाश प्रतिष्ठान
पता—ए-६३ विमानपुरी, एच०ए०एल० कोरवा, अमेठी (उ०प्र०)

भारत (आर्यावर्त्त) देश का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। ससार शिरोमणि यह देश जगद्गुरु तथा सोने की चिड़िया कहा जाता था। महर्षि मनु ने तो यहां तक कह डाला—"एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन.। स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥" अर्थात् ससार के लोग इस देश में उत्पन्न अग्रजन्या ब्राह्मणो (विद्वानों) से अपने अपने चरित्र की शिक्षा प्राप्त करें।

भारत का अर्थ ही है 'सूर्य की प्रभा' इस देश ने "यथा नामं तथा गुणः" की उक्ति को चरितार्थ करते हुए सारे ससार को ज्ञान का प्रकाश दिया है। जिसकी प्रशंसा महाभारत तथा पुराणों आदि में एवं संसार के सुप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा की गयी है।

कालान्तर में एक ऐसा भी समय आया जबकि ऋषि-मुनियों का यह देश महाभारत का (ईसा से लगभग ५००० वर्ष पूर्व) के बाद पतन के भयंकर गर्त में जा पड़ा। महाभारत में ही जुआ (लाटरी) खेला गया। पत्नी दाव पर लगी। भाई-भाई लडे। बड़े-२ वीर यौद्धा, विद्वान, ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे मारे गये। 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः।" देश का पतन हुआ। जो छोटे विद्वान आदि बचे, उन्होंने जन्मना जातियां, अनेक अन्धविश्वासों, बहु देवी देवताओं और अन्य सामाजिक विभेदों को जन्म दिया। फिर क्या था धीरे-२ इन कुरीतियों ने अपना विकराल रूप धारण किया। इन्सान इन्सान न रहा। गो, विधवा, अनाथ, दुखिया सभी प्रताड़ित होने लगे। "चक्रवर्ती राज्य" खण्ड-खण्ड हो गया।

मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों तथा धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर विभाजन हुए। यहां तक कि वेदों के नाम पर भी बटवारा हुआ। आर्य जगत् के शिरमौर, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक संन्यासी पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने बताया कि उनके इलाहबाद विश्वविद्यालय के एक सहयोगी प्रोफेसर यमुनादत्त त्रिवेदी (गुजरात निवासी) थे। जिन्होंने बताया कि ऋग्वेद वाला ऋग्वेदी यजुर्वेद वाला द्विवेदी,सामवेद वाला त्रिवेदी और अथर्ववेद वाला चतुर्वेदी कहा जाता है। महर्षि दयानन्द के पिता जी भी तिवाड़ी थे इसलिये उन्हें सामवेदीय ब्राह्मण कहा जाता है। वेद की शाखाओं के नाम पर भी पृथक-२ जातियां बनी जैसे—शुक्ल, वाजपेयी आदि। छ. शास्त्रों के नाम पर अलग जैसे मीमांसक, नैयायिक, वेदान्तीआदि बने। शनै: २ समय बीतता गया आर्यों की सन्तानों मे और बंटवारे हुए। जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव, शाक्त, वाममार्ग आदि हिन्दू, ईसाई, मुसलमान तथा सिख, पारसी आदि बने।

क्षेत्र तथा भाषा के नाम पर प्रान्त बने। जैसे—उत्तर, मध्य, हिमांचल, पंजाब, तमिलनाडू, आसाम आदि। तथा धर्म और विज्ञान के नाम पर विभेद हुए। गुरुडमवाद तथा बाबावाद फैले। इस प्रकार एकता कोसों दूर हटती गयी और अनेकता आती गयी। ईश्वर के विभिन्न नामों पर भी विभाजन हुए। परस्पर विद्वेष ने जन्म लिया। देश गुलाम हुआ। भारतीय सभ्यता पर अनेक प्रहार हुए। सैकड़ों वर्षों तक मुगलों आदि ने तथा शताधिक वर्षों तक अंग्रेजों ने शासन किया।

भारतीय सभ्यता ने पाश्चात्य सभ्यता के चकाचौंध से तब और भयंकर थपेड़े खाये जब लार्ड टी० बी० मैकाले ने सन १८३६ में अपनी शिक्षा पद्धति (अंग्रेजी भाषा का विस्तार तथा भारत के इतिहास को विकृत करने एवं फूट डालो तथा राज्य करो) की पूर्ण योजना का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया। (आज भी अंग्रेज चले गए लेकिन उनकी देन अंग्रेजी और हमारा विकृत इतिहास ज्यों का त्यों पड़ा है।)

ऐसी संक्रान्तिकालीन वेला में युग पुरुष महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपने अमरग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में गुजराती भाषी प्रान्त के होकर भी "हिन्दी" (आर्यभाषा) को देवनागरी लिपि में देश की एकता के लिए राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया। साथ ही स्वराज्य का बीज मन्त्र बोया। उन्होंने यहां तक कहा—विदेशी राज्य कितना भी अच्छा हो बदले में विदेशी राज्य कितना ही बुरा हो फिर भी स्वदेशी राज्य सर्वोपरि है।

धार्मिक क्षेत्र में भी अद्भुत क्रान्ति की सभी सम्प्रदायों को एक सूत्र में लाने का प्रशंसनीय, प्रयास किया। सभी को इस बात के लिए प्रेरित किया कि मानव मात्र का धर्म एक है। धर्म के दशों लक्षण—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय, निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध है। यह समान रूप से संसार के सभी मनुष्यो के लिये सर्वथा धारण करने योग्य है। सच्चा मुसलमान, ईसाई, हिन्दू, सिख या सच्चा मानव बनने के लिए ये लक्षण परमावश्यक है।

धर्मग्रन्थों के नाम पर उन्होंने विश्व के पुस्तकालय के आदिम ग्रन्थ "चारों वेद" को परमात्मा की कल्याणी वाणी कहा। किसी एक वेद के मानने वाले को ऊंचा या नीचा नहीं कहा। उनके द्वारा सन १८७५ ई० में बनाये गये संघठन "आर्य समाज" के दस नियमों में "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढ़ाना सब आर्यों का परमधर्म है" ऐसी उत्तमवाणी लिखी। इसमें वेद शब्द से चारो वेद अभिप्रेत है। इतना ही नहीं "संस्कार विधि" के अनन्तर "सामान्य प्रकरण" के अन्तर्गत "स्वस्तिवाचन" के ३१ मन्त्रों मे तथा "शान्तिप्रकरण" के २८ मन्त्रों में चारों वेदो से मन्त्र दिये है।

छ. शास्त्रों के नाम पर बने पृथक्-पृथक् सम्प्रदायों को भी एक सूत्र में लाने के लिये उन्होंने कहा कि छ. शास्त्रों में कही भी मतभेद नहीं है। छः शास्त्र छः विभिन्न विषयों का वर्णन करते हैं और यही छ. विषय ईश्वर, जीव ओर प्रकृति के सम्बन्ध में मूलरूप से बताते हैं। ऐसा नही है कि कोई शास्त्र प्रकृति का वर्णन कर रहा है या ईश्वर का तो उसका ही मात्र अनुसरण करके केवल एक को ही सत्य बाकी को असत्य मान लें। जैसा कि शास्त्रों के अनुयायियों ने किया। उदाहरण के लिए हम बाजार में जावें-आलू को तोलते समय एक तुला (तराजू), रसायन को तोलते समय दूसरी तुला (तराजू) और सोना के लिए अलग-तुला प्रयोग में लायी जाती हैं। तुला तीनों हैं और तीनों सत्य है, किन्तु आलू वाले से कहें कि तेरी तुला गलत है रसायन की तुला से तोलो या स्वर्णकार से कहें कि आलू की तुला से तोलो तो निश्चित है कि आप सामान नहीं ले सकते। वैसे ही छ. शास्त्रों के विषय हैं। जिस शास्त्र को लें उसका विषयवस्तु उसके ऋषि के अनुसार ही देखें तो निश्चित आपको छः शास्त्रों अथवा चारों वेदों में कोई भेद नहीं मिलेगा।

विज्ञान के नाम पर भी भेद को दूर किया। महर्षि दयानन्द के पूर्व विज्ञान की कक्षा में पढ़ना पड़ता था कि पृथ्वी गोल है तथा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। लेकिन धर्म शास्त्र की कक्षा में पढ़ना पड़ता था कि पृथ्वी चपटी है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है आदि आदि विभिन्नतायें धर्म और विज्ञान को अलग किये हुये थी। जिस वैज्ञानिक ने सबसे पूर्व यह घोषणा की कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के चारों ओर एक निश्चित कक्षा (आर्बिट) में घूमती है तो उसे धर्म शास्त्र के अनुयायियों ने नास्तिक कहकर पेड़ पर उल्टे लटका कर पत्थरों से मार डाला।

लेकिन ऋषि दयानन्द ने कहा कि धर्म शास्त्र के मूल चारों वेदो के चार पृथक-२ प्रधान विषय हैं। जिसमे ऋग्वेद का प्रधान विषय "विज्ञान" बताया और इस प्रकार विज्ञान को धर्म का एक सच्चा अंग बताया। उन्होंने आस्तिक ही उसे माना जो सृष्टि के कलाकार परमात्मा और उसकी कला सृष्टि को जितना ही अधिक जाने अर्थात् विज्ञान के निकट आये। इसीलिये उन्होंने "ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका" में विभिन्न वैज्ञानिक पहलुओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है जैसे तार विद्या, विद्युत विद्या, मंत्र विद्या आदि।

युग द्रष्टा ऋषिवर ने मनुष्यमात्र को एक जाति माना जन्म से नहीं वरन् गुण, कर्म, स्वभाव से पृथक्-२ चार वर्ण शास्त्रों के अनुसार माने। आज भी इनका अनुसरण होता ही है। यथा-शिक्षक, इन्जीनियर, डाक्टर आदि लोक व्यवहार के लिए आवश्यक है ऐसे ही चार वर्णों में विद्वान को ब्राह्मण, बहादुर को क्षत्रिय, कृषक तथा व्यापारी को वैश्य ओर सेवा करने वाले को शूद्र संज्ञा दी गयी है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति

भारतीय शैक्षणिक मूल्यों का चयन

लेखक—विश्वनाथ शास्त्री
२-बी, ११/८ भिलाई (म० प्र०)

भारत सरकार अगले सत्र से नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने जा रही है। इस सम्बन्ध में सरकार ने एक प्रश्नावली प्रकाकाशित करके जनता से सुझाव आमन्त्रित किए हैं। भारत की शिक्षा में आर्य समाज का प्रमुख योगदान रहा है और अब भी है। अतः आर्यसमाज का ध्यान इस ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक है। हम आर्य समाज के दृष्टिकोण से इस प्रश्नावली के निम्नलिखित एक प्रश्न पर कुछ विचार प्रस्तुत करते हैं।

"शैक्षणिक मूल्य, शिक्षा के गुणात्मक सुधार के अन्तर्गत किन भारतीय मूल्यों को सम्मानित किया जाना चाहिए।

१. ब्रह्मचर्य—भारतीय शैक्षणिक मूल्यों में ब्रह्मचर्य का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत अनुशासन, गुरुभक्ति, संयम, सहशिक्षा की मनाही, शारीरिक श्रम, गो-पालन, कृषि आदि आ जाते हैं।

(क) ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः (योग दर्शन २।३८)

अर्थ—ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होने पर, वीर्य रक्षा करने पर, वीर्य का लाभ-बल और शक्ति की प्राप्ति होती है।

(ख) जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अर्थात् वेद विद्या के लिए तथा आचार्य कुल (गुरुकुल) में जाकर विद्या ग्रहण करने के लिए प्रयत्न करे। वह ब्रह्मचारी कहाता है।

(महर्षि दयानन्द कृत व्यवहार भानु)

(ग) ब्रह्मचर्येण सद्विद्या शिक्षा च ग्राह्या।

अर्थ—ब्रह्मचर्य का अर्थ सद्विद्या और शिक्षा है।

(महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

(घ) वर्जयेन् मधु मांसं च गन्ध माल्यं रसान् स्त्रियः।
शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्॥

(मनुस्मृति २।१७७)

अर्थ—ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य, मांस, गन्ध, माला, रस, स्त्री और पुरुष का संग, सब प्रकार की खटाई, प्राणियों को हिंसा छोड़ दें

(ङ) विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की शिक्षा पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। (महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश)

२: नैतिक शिक्षा—नैतिकता का अर्थ कर्तव्य और अकर्तव्य के सम्बन्ध में निर्णय करना है। मनुष्य की श्रेष्ठता सद् व्यवहार के कारण है। मानव की साख ही उसका बड़ा गुण है। आजकल देश में व्याप्त भ्रष्टाचार तो देश की नींव को ही हिला रहा है। भविष्य के उज्ज्वल निर्माण के लिए हमें शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा को भी स्थान देना होगा।

संक्षेप में साहस, उत्साह, निर्भीकता, ईमानदारी आदि गुणों के ग्रहण करने, कंचन कामिनी के प्रलोभनों से बचने, मद्य, भांग, चरस आदि नशीले पदार्थों के त्याग का नाम नैतिकता है।

३. आध्यात्मिकता—व्यक्तिगत और समष्टिगत साधना का नाम आध्यात्मिकता है। इसके अन्तर्गत दीनदुःखियों पर दया, अनाथ, असहायों की रक्षा आदि कोमल और मानवीय भावनाएं आती हैं। संकीर्णता में ग्रस्त सम्प्रदायकारी, भाषाकारी, क्षेत्रीयता नारी लोगों का यह मार्ग नहीं है।

हमारे यहां अध्यात्मवादी को समदर्शी कहा गया है, समदर्शी सबको समान दृष्टि से देखता है और सबके कल्याण के लिए कामना करता है। विश्व शान्ति और विश्व प्रेम तो भारतीय संस्कृति का प्रमुख ध्येय रहा है। आजकल वैज्ञानिक उन्नति के मद में चूर होकर संसार के महान् राष्ट्र धरातल पर तो क्या आकाश में भी परमाणु युद्ध की योजनाएं बना रहे हैं। भारतीय आध्यात्मवादी विज्ञान को मानवता का अधिष्ठाता और सर्वेसर्वा नहीं मान सकता। इस विनाशकारी वैज्ञानिकता को अध्यात्मवाद से ही ठीक किया जा सकता है, हमारी शिक्षा नीति में भौतिक विद्याओं के साथ अध्यात्मवाद की शिक्षा की भी व्यवस्था करनी होगी।

४. राष्ट्रीय भावना—शिक्षा नीति में राष्ट्रीय भावना को भी जागृत करने की व्यवस्था करनी होगी, सांसारिक अभ्युदय के लिए राजधर्म से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है।

(क) माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। (अथर्व वेद १२।१।१२)

अर्थ—भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं।

(ख) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थ—जन्म देने वाली माता और जन्म भूमि दोनों स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।

५. शारीरिक शिक्षण—इसमें भारतीय व्यायामों और खेलों का भी समावेश होना चाहिए। योगासनों को तो विशिष्ट स्थान मिलना चाहिए।

सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे भवन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्॥

अर्थ—सब लोग सुखी हों, सब नीरोग हों, सब कल्याण को देखें, कोई दुःखी न हो।

अभागा-हिन्दू

हिन्दू जाति भारत माता की वास्तविक और सिकूलर जाति हैं, क्योंकि इसमें भगवान को मानने या न मानने या उनकी विशेष पूजा की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर कोई चीज अनिवार्य है तो यह कि वह भारत माता को अपनी मातृ-भूमि, पितृभूमि और पुण्य-भूमि (पाकसार जमीन) मानें। यहां पैदा ऋषियों, मुनियों, अवतारों आदि को अपना पुरखा माने और उनका सम्मान करें। भारत के स्वातन्त्रता आन्दोलन मे दुर्भाग्य से हिन्दू जाति कांग्रेसी लीडरों बतौर हिन्दू के साथ न लगी। कांग्रेस मुसलमानो आदि से देश की स्वतन्त्रता के सौदे बाजी में संलग्न रही। आखिर कार इन्होने कुर्सी प्राप्ति की हवस में देश का बंटवारा हिन्दू-मुस्लिम आधार पर मान लिया। मुसलमान को पाकिस्तान मिल गया और वहा इस्लामी राज कायम हो गया बाकी जो हिस्सा बचा, वो उसका हिन्दू राज घोषित होना न्यायसंगत था, मगर इसकी बागडोर गोरे अंग्रेजों के हाथ से निकलकर काले अंग्रेजों के हाथ लगी जो इस्लाम से प्रभावित थे। इस प्रकार हिन्दू जाति की हालत उस उक्ति के समान हो गई "आसमान से गिरा और खजूर पर अटका"। भारत के इतिहास में जयचन्द का नाम बड़े अपराधी के रूप में लिया जाता है। उसने गद्दी की हवस में एक विदेशी मोहम्मद गौरी का सहार लिया। पृथ्वीराज चौहान को इससे पराजित होना पड़ा। जयचन्द ने मौहम्मद गौरी के ऊपर अपने को गद्दी सौंपने के लिए यहा तक जोर दिया कि इतने(मोहम्मद गौरी) उसकी भी गर्दन काट डाली। इस प्रकार उसने अपनी बलि देकर देश से गद्दारों के पाप को कुछ हल्का कर लिया, मगर इन काले अंग्रेजो को जिन्होंने मिला मिलाया हिन्दू राज खो दिया, उन्हें भावी पीढिया कभी क्षमा नहीं करेगी। मुसलमान और ईसाई दोनों ही भारत माता को अपने लिए पितृ-भूमि नहीं मानते, मगर फिर भी उन्हें बराबर का हिस्सेदार रखा गया, अगर भारत को हिन्दू-राष्ट्र घोषित कर दिया जाता तो मुसलमान देशों के चरण चुम्बन न करने पड़ते। इस अन्धकारमय काल मे भारत माता के सच्चे सुपुत्र लोह पुरुष सरदार पटेल ही आशा की एक किरण थे, किन्तु गुजराती होने के कारण महात्मा गांधी को स्वय ख्याल हुआ या उनके कानों में डाला गया कि गुजराती होने के नाते वे सरदार पटेल को सत्ता मे लायेंगे। इसलिए इसे एक कलक अपने माथे पर समझा और उन्हें आशा थी कि भारत की सेना और भारतवासी सरदार पटेल के साथ है और पहले ही चुनाव मे सरदार पटेल सत्ता मे आयेंगे। जब हमारे समुद्री जहाजो ने अग्रेजो के खिलाफ बगावत कर दी और उन पर भारतीय हवाई फौज ने गोला-बारी करने से इन्कार कर लिया तो अग्रेज ने किसी काले अंग्रेज को नहीं कहा कि वे हथियार डाल दें, बल्कि सरदार पटेल को ही कहा। सरदार पटेल के आदेश पर जहाजों ने हथियार डाल दिये। सरदार पटेल और उनकी पार्टी के रौब और दाब देने के कारण दो चीजें राष्ट्र हित की पास हो गईं। एक ही राष्ट्र की भाषा हिन्दी और दूसरी भारत का अपना कलैण्डर। उस समय भारत में दो भारतीय कैलण्डर प्रचलित थे। एक बिक्रमी जो ईसा से ५७ वर्ष पुराना है और दूसरा शक सम्वत् जो ई० कलैण्डर से कम पुराना है, बिक्रमी सम्वत् चन्द्रमा पर आधारित है और उसमे संशोधन किया जा सकता था, मगर ये काले अग्रेजो को क्यों मन्जूर होता। हिन्दुओं का ये बड़ा दुर्भाग्य रहा कि पहले चुनाव से पहले ही सरकार पटेल का स्वर्गवास हो गया। किन कारणो से हुआ ये तो भगवान ही जानें, लेकिन हिन्दू जाति अपाहिज होकर रह गई, काले अंग्रेजों ने भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी और भारतीय कलैण्डर को बड़ी चतुराई से तारपीडो कर दिया। सूबो का बंटवारा भाषा के आधार पर कर दिया, जिससे सूबावाद और भाषावाद पनपा दक्षिण में तो हिन्दी को सैट करने में बड़ी कठिनाई आ रही है। नया ई० कलैण्डर अभी तक प्रचलित है इन कलैण्डरों मे ई० तारीख के कही-कही अंकों में बिक्रमी ता० भी दी जाती हैं। वे राष्ट्रीय कलैण्डर का घोर अपमान है। शक सम्वत् का कोई कलैण्डर दृष्टिगोचर नही हो रहा। ई० वर्ष की शुभ कामनाओं अभी तक दी जा रही हैं और अपने नववर्ष का कोई प्रचार नहीं किया जा रहा। सरकारी पत्र व्यवहार में कहीं-कहीं अवश्य ई० तारीख के साथ शक सम्वत ता० भी दी जाती है। मगर बीच में हवाला ई० ता० का ही दिया जाता है। उर्दू को दूसरी भाषा बनाई जाने की प्रबल आवाजें उठ रही हैं, ये केवल इसलिए कि इसकी लिपि फारसी है, जिससे ये यादगार कायम रहे कि हम ईरानियों के भी दास रहे हैं। इन सब हालात मे अभी भी समय है कि काले अंग्रेज भारतीय बन जायें, जिसके लिए नीचे नियमों को अपनाया जायें :—

१—सेना में भारत का विभाजन ५ डिविजनो मे हैं। अतः सिविल में भी भारत के पांच हिस्से कर दिये जायें। इस प्रकार कई-कई भाषायें एक डिविजन मे आ जायेंगी और भाषावाद एव प्रान्तवाद समाप्त हो जायेगा।

२—कम से कम १० वर्ष तक कोई ई० कलैण्डर भारत मे न छपे और न ही बाहर से मगवा कर बाजारो में लगाया जायें। जो कलैण्डर छपे वे सब सम्वत् के छपें। अंग्रेजी दासता से प्रभावित व्यक्ति के लिए शक सम्वत के नीचे छोटे अक्षरो मे ई० की तारीखें दे दी जावें।

३—इस शक सम्वत् का नव वर्ष बड़े धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया जाये, जिससे यहां की जनता इससे प्रभावित हो जावें और अपने कारोबार मे इसका प्रयोग करने लगे।

४—भगवान की जन्म भूमि अयोध्या जी मे जिस पर मन्दिर जलाकर मस्जिद मुसलमान शासकों के राज में बना दी गई थी, हिन्दुओं को दे दिया जावें। वे इस पर फिर से अपना मन्दिर बना लेवें।

५—मथुरा में भगवान् कृष्ण की जन्म भूमि पर ईदगाह बनी हुई है, ये भी हिन्दुओं को दे दी जायें, जिससे कि वे अपना मन्दिर बनवा लें। बनारस में विश्वनाथ जी के मन्दिर को तोड़कर मुसलमानी राज में मस्जिद बना दी गई थी, उसे भी हिन्दुओ को सौंप दिया जायें कि अपना मन्दिर बना लें।

—रामजीदास आर्य, स्यालकोट भवन,
हनुमान चौक, देवबन्द पिन २४७५५४

रजनीश अर्थात् रात का राजा

कुंडलियां

(१)

देखो भारत देश में, घूरत है भगवान।
कामी ठगते काम वश,बुरी मन्द मति वान ।।
बुरी मन्द मति वान, भोग में योग बतावे।
भोले-भावुक लोग, ऐसी ठगी में आवे ।।
कहते कवि 'घनसार' अभी तो जरा विचारो ।
बन आये भगवान्, दूर से इन्हें धिकारो ।।१।।

रजनी कहते रात को, उल्लू इनका ईश।
राजा है वह रात का, पड़ा नाम रजनीश ।।
पड़ा नाम रजनीश वहि है उल्लू कहावे।
देखो चाले पोल-पोल में ढोल बजावे ।।
कहते कवि 'घनसार' उल्लू रात को चाहे।
दिनकर भागे आय, गहन तिमिर घुस जाते ।।२।।

अमीरन में जायके, विशद किया नहिं काम।
भारत की ख्याति घटी, किये नाम बदनाम ।।
किये नाम बदनाम, अभी ऐसा फल पावे।
भोगा कारावास, वही भगवान् कहाये ।।
कहते कवि 'घनसार' हार-कर सारी माया।
वापस आता देश, दशा बिगाड़ी काया ।।३।।

सत्यार्थ प्रकाश को, उल्लू बतावे रात।
इसमें रात न हो सके, आर्यावर्त्त विख्यात ।।
आर्यावर्त्त विख्यात, उल्लू अभी नहीं जानो।
पाया नहीं प्रकाश, विषय भोगी अभिमानी ।।
कहते कवि 'घनसार' वेदार्थ नहीं पाया।
जब से हुई फजीत, नाम बदनाम जनाया ।।४।।

ब्रह्मचारी योगी बड़े, वेद-ज्ञान भरपूर।
मेधावी तप-तेजयुत, बर्षे मुख पर नूर ।।
बर्षे मुख पर नूर, तीव्र विवेक वैरागी।
पढ़े वेद सद् ज्ञान, सोई ईश्वर अनुरागी ।।
कहते कवि 'घनसार' वही भगवान हमारे।
ऋषि दयानन्द देव, किये विशद उपकारे ।।५।।

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
आर्य कवि कुटीर पीपाड़ शहर

राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत

(पृष्ठ ५ का शेष)

ईश्वर के नामो पर हरि (वैष्णव) और हर (शैव) में लड़ाई होती रही। "हरि" मानने वाला "हरि ओ३म्" हरिद्वार" तथा "हर" मानने वाला 'हर-हर महादेव" और 'हरद्वार' आज भी कहता है। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने "रामचरितमानस" में हरि के अवतार "राम" से हर का पूजन 'रामेश्वरम्' में कराकर वैष्णवों और शैवों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। महर्षि ने कहा श्रुति वाक्य है—"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" ईश्वर एक है उसके गौणनाम अनेकों हैं। ईश्वर सर्वव्यापक सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, अजन्मा है। वह सबके भले बुरे कर्मों को जानता है इसलिए उसके पास किसी सिफारिशकर्ता की आवश्यकता नहीं है और न ही किसी के माध्यम या मिनीस्टर की आवश्यकता है। वह तो स्वयं ही सबका गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है। किसी गुरुडमवाद की आवश्यकता नहीं है साथ ही उसकी सृष्टि सप्रयोजन और क्रमबद्ध या एक निश्चित नियम में आबद्ध है, यही उसका असली चमत्कार है। सृष्टि विद्या के विपरीत चमत्कार दिखाने वाले ठगी बाबाओं से सबको सचेष्ट किया।

दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम के भी भेद को दूर करने का स्तुत्य प्रयास किया। उन्होंने भारत के प्राचीन इतिहास से बताया कि चक्रवर्ती राज्य का कितना विस्तार था। देश-देशान्तरों में लोग सम्बन्ध रखते थे। आज हमारा देश जो क्षेत्र के नाम पर बटा है। यह उचित नहीं है। देश के सभी वासी ईश्वर पुत्र अर्थात् आर्यों की सन्तान है।

शिक्षा तथा राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने कहा मानवमात्र को पढ़ने का अधिकार है चाहे शूद्र हो या नारी यजुर्वेद का आदेश है—"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय।। यजु० २६। २।।" जैसे पुरुषों में ऋषि हुए हैं वैसे ही नारियों में ऋषिकायें—लोपामुद्रा, घोषा, यमी, सूर्या, अपाला आदि हुई हैं। राजा तथा राजनीति कैसी होनी चाहिए सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठम् समुल्लास में सुन्दर वर्णन किया। राजाओं की तरह नारियो को भी रानी बनकर शासन व्यवस्था चलाने का पूर्ण अधिकार है।

आज देश का ही नहीं संसार का सौभाग्य है कि भारत के साथ-२ कई विदेशों में भी नारी शासिका हुई हैं और वर्तमान में भी कई देशों में है जैसे—ब्रिटेन आदि। भारत वह पुण्य भूमि है, जिसके अतीत में नारियों की पूजा होती रही है, किन्तु महर्षि दयानन्द के पूर्व देश में ऐसा दुर्दिन आया कि नारी के लिये कहा जाता था "अधम ते अधम अति नारी"। "जातन की छाईं पड़त अन्धोहोत भुजंग।" इतना ही नहीं यदि वेद पढ़ लें तो जिह्वा काट लेनी चाहिए और सुनले तो कांच के टुकड़े पीस कर कान में डाल दिया जाये। ऐसा पुराणों में वर्णित है। ऋषि की महान देन है कि नारी की पुनः प्रतिष्ठा हुई। देश की वर्षों तक बागडोर सम्भालने वाली तथा देश की एकता और अखण्डता के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाली अमर शहीद श्रीमती इन्दिरागांधी के जन्म की पुण्य तिथि १९ नवम्बर से देश "कौमी एकता सप्ताह" के रूप में तथा आगामी वर्ष १९८६ ई० को संयुक्त राष्ट्र विश्वशांति वर्ष के रूप में मनाने जा रहा है। ईश्वर हमें राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के साथ-साथ विश्व-बन्धुत्व तथा शान्ति लाने के लिये सम्बल प्रदान करें।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४–८५)

नई स्थिर निधियां

(१) रायपूर्ण बाली स्थिर निधि १ हजार) (अन्तरंग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

(संस्थापक—श्री रायपूर्ण बाली एम० आई० जी नं० १८ बोदा बाग, कालोनी (रीवा) इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे खर्च किया जायगा। वर्ष के अन्त में ब्याज के ६०) रु० जमा थे।

(२) श्री हनुमान प्रसाद स्थिर निधि २६ हजार), (अन्तरंग ३ जून, १९८४ द्वारा स्वीकृत)

(संस्थापक—स्व० हनुमान प्रसाद जी गाजीपुर) : श्री हनुमान प्रसाद जी ने सभा को १३ हजार रुपए दिये थे। बाद में उनका देहान्त हो गया। आर्य समाज गाजीपुर के मन्त्री श्री नारायण प्रसाद जी ने सभा को सूचित किया कि इस राशि को सभा ६ वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट में रख दे। उसके बाद यह राशि जब २६ हजार हो जायेगी तो इसकी निधि स्व० हनुमान प्रसाद स्थिर निधि के नाम से सभा बना दे और इस निधि के ब्याज को सभा धर्म प्रचार आदि जिसमें भी उचित समझे व्यय करे। स्व० हनुमान प्रसाद जी की यही इच्छा थी।

(३) स्व० श्री सुरेशचन्द्र एवं श्रीमती शकुन्तला नरूला वनवासी उपकार स्थिर निधि ५ हजार)

(संस्थापक—श्रीमती शकुन्तला नरूला) अन्तरग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत। इस निधि का ब्याज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा वनवासी क्षेत्रों में नवयुवक और नवयुवतियो में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा उन्हें आर्य वीर और वीरागना बनाने में शिक्षार्थ व्यय किया जावे। यह धन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के खाते मे जमा रहेगा। प्रतिवर्ष १४ मार्च को स्व० सुरेशचन्द्र के जन्म दिवस पर पति पत्नी का फोटो सार्वदेशिक में प्रकाशित करना अनिवार्य होगा। वर्ष के अन्त में ३००) रुपए ब्याज के जमा थे।

(४) श्री भोलाराम कृष्ण कुमारी ग्रोवर स्थिर निधि ५० हजार रुपए (अन्तरंग ३ जून ८४ द्वारा स्वीकृत)

(संस्थापक—श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर) यह निधि ५० हजार रुपये के मूलधन से सैन्ट्रल बेंक में जमा की जा रही है। इस निधि का ब्याज तिमाही लेकर आर्यवीर, आर्य वीरागना दल, वनवासी क्षेत्रों में वनवासी विद्यार्थियों, धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन अथवा शुद्धि (पुर्नमिलन) कार्यो पर व्यय किया जावे। ८ नवम्बर को प्रतिवर्ष दोनो (पति-पत्नी) के चित्र सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित किए जावें। यह पत्र श्रीमती कृष्णा कुमारी ग्रोवर २३२ गली मस्जिदवाली, छोटी बजरिया, रेलवे रोड गाजियाबाद तथा क्रमशः चन्द्रभान ग्रोवर, गाजियाबाद, आनन्द स्वरूप मलिक नई दिल्ली तथा श्री सुमन राजकुमार बत्रा नई दिल्ली को उनके पतो पर भेजा जावे। वर्ष के अन्त में ब्याज के २७५०) रुपये जमा थे।

(५) श्री कृष्णदत्त शर्मा तथा आनन्दीबाई स्मृति स्थिर निधि ३ हजार) (अन्तरंग १५।१२।८४)

निधिकर्त्ता—श्री शरदचन्द औरूषि परफूमरी वक्स धार (म० प्रदेश) शर्ते—निधि का ब्याज अनाथ बच्चों के विद्याध्ययन, धार्मिक ट्रैक्टों के निःशुल्क वितरण, अथवा वेद प्रचारार्थ ट्रैक्टादि के प्रकाशन पर सभा व्यय करेगी।

(६) श्री जे० नारायणराव स्थिर निधि १० हजार

(संस्थापक—श्री जे० नारायणराव, २५ वेद मन्दिर के० आर० रोड़ बसवान गुड़ी (बंगलौर)। यह निधि कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश के लिए है। इसके ब्याज से कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने वालो को एक प्रति पर ५) पांच रुपये की छूट सभा दे। यदि ब्याज बच जावे तो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका यदि कन्नड में हो तो उसके पढ़ने वालों को भी पाच रुपया प्रति छूट दी जावे। (अन्तरंग १५।१२।८४ द्वारा स्वीकृत)

(७) श्री माखन सिंह पटेल स्थिर निधि १ हजार

(निधिकर्त्ता—माखन सिंह पटेल-खाटसूर जि० साजापुर (म० प्र०) यह राशि छः वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट में रखी जावे तदुपरान्त इस निधि का ब्याज वानप्रस्थाश्रम में सहायता के पात्र व्यक्तियो को सभा देवे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)

(८) श्री ओमप्रकाश परमार स्थिर निधि २००१)

(संस्थापक—श्री प्रहलादसिंह परमार पो० खाटसूर जि० साजापुर (म. प्रदेश). शर्ते—यह राशि पहले छ. वर्ष के लिए फिक्सड डिपाजिट मे रखी जावे। तदुपरान्त स्थिर निधि बनाकर इसका ब्याज सन्यासियो व वानप्रस्थियो की सहायतार्थ सभा व्यय करे। (अन्तरंग १५।१२।८४)

(९) मास्टर मेहरचन्द मेहन होशियारपुर स्मृति स्थिर निधि २०,४००)

(संस्थापक—श्री शान्ति स्वरूप मेहन) शर्ते—प्रत्येक ५१००) के निधि के हिसाब से इसका ब्याज टकारा मे किसी विद्यार्थी की विद्या पर (ख) मोहन आश्रम मे दवाई हेतु (ग) किसी गुरुकुल के योग्य और निर्धन विद्यार्थी की सहायता पर (घ) किसी कन्या गुरुकुल की योग्य एव समाज प्रचार मे लगनशील कन्या के अध्ययन पर सभा इन चार कामो मे हिसाब से खर्च करे। (अन्तरग १५।१२।८४ द्वारा स्वीकृत)

नोट—पहले इनका धन ५१००) ही प्राप्त हुआ था। शेष धन भी १५,३००) प्राप्त हो गया है।

(१०) श्रीमती सुशीला देवी स्थिर निधि ६०००)

(संस्थापक—श्री राजकृष्ण नैय्यर १।३५१ सविंग आफीसर फलैट सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली। शर्ते—इस निधि का ब्याज सभा द्वारा वेद प्रचार तथा शुद्धि कार्य पर व्यय किया जावे। (अन्तरग १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत)।

पुरानी स्थिर निधियां

(११) श्रीमती चनन देवी ज्वालापुर स्थिर निधि ७ हजार

यह निधि प्रारम्भ में ४०००) रु से स्थापित की गई थी तथा आगे बढ़ाने की स्वीकृति भी दी गई थी। (स्वीकृति अन्तरग १६-१०-८२) शर्ते—इस निधि के ब्याज से वृद्ध संन्यासी, बूढ़े उपदेशक एव असहाय विद्यार्थियो की सहायता की जावे। वर्ष के अन्त मे ब्याज के ८१३)३५ जमा थे।

(१२) श्रीमती छाया अरोड़ा स्थिर निधि ६१००)

यह निधि प्रारम्भ में ५०००) रुपए से स्थापित की गई थी। बाद ११००) की वृद्धि की गई। (अन्तरंग २३।५।८२ द्वारा स्वीकृत) शर्ते—इस निधि के ब्याज की राशि आर्य अनाथालय बरेली को भेजी जाय।

(१३) श्री मेजर विश्वम्भरदयाल दमयन्ती देवी स्थिर निधि ५ हजार

[अन्तरग दिनाक १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत] शर्ते ब्याज राशि सभा वेद प्रचारार्थ व्यय करेगी। वर्ष के अन्त में ब्याज के १२००) रुपए जमा-थे।

(क्रमश)

विविध-समाचार

शुद्धि एवं विवाह

दिनांक ९-१-८६ को प्रातः ९ बजे एक ईसाई युवती कु० मेम्व-बीना जैसलर को आर्यसमाज मन्दिर मेरठ शहर में श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ने शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित कर उसका नाम कु० नीलम रखा।

तत्पश्चात् इसका विवाह संस्कार डा० सुमाषचन्द्र जी के साथ वैदिक रीति से स्वयं सभा प्रधानजी ने सम्पन्न करवाया। श्री मास्टर सुन्दरलाल जी एवं श्रीमती शकुन्तला जी गोयल प्रधान स्त्री आर्य समाज मेरठ शहर ने नवयुगल को आशीर्वाद दिया।

मन्त्री

प्रमुख आर्य बन्धुओं व आर्य युवकों की बैठक

आर्य समाजों के अधिकारियों व युवा कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक बैठक रविवार १९जनवरी १९८६ को अपराह्न ३ बजे से श्री दरबारी-लाल जी (कार्यकर्ता प्रधान, आर्य प्रादेशिक सभा) की अध्यक्षता में आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में होगी। आर्य समाज में युवा शक्ति को लाने तथा डी०ए०वी० शताब्दी शोभायात्रा की तैयारी पर विचार किया जायेगा श्री रामनाथ सहगल व श्री क्षितीश वेदालंकार भी सम्बोधन करेंगे। समस्त आर्य बन्धुओं की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

—अनिल आर्य संयोजक

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

वैदिक धर्म का प्रचार कार्यक्रम एल ब्लाक गली नं० ७ जयप्रकाश नगर (घोण्डा) दिल्ली में सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य सत्यप्रिय जी श्री भूदेव जी चौहान पं० रामचन्द्र जी शर्मा जी पं० आशानन्द जी आदि विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। शाहदरा दिल्ली क्षेत्र सभा की प्रधाना श्रीमती ईश्वरी देवी जी धवन ने आशीर्वाद दिया।

—दिवेश शर्मा संयोजक

शोक प्रस्ताव

पूजनीय श्री बिहारीलाल जी को ३-१-८६ का मध्याह्न स्वर्गवास हो जाने से आर्य जगत् में अपूर्ण क्षति की पूर्ति होना कठिन है। श्री शास्त्री जी शास्त्रार्थ महारथी, महान् प्रचारक योद्धा एवं वेद विद्वान् एव आर्य समाज के अग्रणी नेता थे।

हम आर्य वीर बरेली कमिश्नरी के भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं एवं भगवान उनके परिवार को शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—हरिओम

शुद्धि सम्पन्न

दिनांक ३१-१२-८५ को स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती द्वारा जिला उप आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर के अधिवेशन में शुद्धिकार्य प्रातः कालीन यज्ञ में सम्पन्न हुआ। इसमें श्री भूषशंकर आर्य, पूर्व नाम मांमे खा, निवासी सिसौली स्वेच्छा पूर्वक अपनी दोनों सन्तानों सहित शुद्ध हुए। इनकी आयु २५ वर्ष पुत्र आयु ६ वर्ष, वेद प्रकाश तथा पुत्री आयु ८ वर्ष कु० सावित्री पूर्वनाम : शमशाद, एवं शमसिदा थे। इस कार्य में विशेष योगदान सर्वश्री सत्यवीरसिंह जी अध्यक्ष वैदिक सत्संग मंडल सिसौली, अरविन्द कुमार प्रधान बुढ़ाना व मन्त्री मंगलदत्त और उ० प्र० प्रतिनिधि सभा के उप-मन्त्री देवपाल सिंह आर्य कैराना आर्य समाज के प्रधान प्रभुलाल जी मन्त्री जगदीश प्रसाद, डा० मोहरसिंह कार्यकारिणी सदस्य सभा के कर्मठ कार्यकर्ता सेवाराम जी शामली संयोजक वेद प्रकाश जी तथा सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं श्री योगेश्वर चन्द जी मन्त्री आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली व संरक्षक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली का रहा।

—देवपाल आर्य, उपमन्त्री आ.प्र.नि.स. उ. प्र. लखनऊ

आर्य जगत के प्रसिद्ध जनसेवी एवं स्वतन्त्रता सेनानी सम्मानित

दिल्ली के जाने माने स्वतन्त्रता सेनानी व आर्य जगत के वरिष्ठ जनसेवी परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के संरक्षक लाला देसराज गुप्ता (आर. आर. गुप्ता प्रेस के संस्थापक) को शहर जिला कांग्रेस आई कमेटी द्वारा दिल्ली नगर निगम रंगशाला के सुसज्जित मंच पर भारी जन समूह के मध्य एवं आर्यपुरा सोहन गंज ब्लाक युवक कांग्रेस आई द्वारा मार्किट में पिछले दिनों सम्मानित किया गया। श्री गुप्ता जी बाल्यकाल से ही समाज सेवा में सलग्न हैं। आप सन् १९३६ से १९३९ तक दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मन्त्री के रूप में राष्ट्र सेवा करते रहे, आपने आजीवन शुद्ध खादी धारण करने का व्रत रखा है। लाला जी ने "आंधी की आंधी" नामक पुस्तक व अनेकों देशभक्ति की प्रेरणाप्रद पुस्तकों की रचना की है। श्री गुप्ता जी वर्तमान समय में आर्य समाज दीवानहाल एवं आर्य बालगृह पटौदी हाउस की प्रबन्धक कमेटी के सदस्य हैं। आप सदैव राष्ट्र समाज व धर्म के कार्यों में अग्रसर रहते हैं। हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि लाला जी चिरायु हों और भावी पीढ़ी का मार्ग दर्शन करते रहें।

—कमल किशोर आर्य
महामन्त्री-परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली

श्री मोतीलाल आर्य एवं स्वरूपी देवी सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले को १०००१) दस हजार एक रुपये का चैक भेंट करती हुई।

श्री मोतीलाल आर्य एवं स्वरुपी देवी द्वारा सार्वदेशिक सभा में अनाथों के लिए स्थिर निधि स्थापित

श्री मोतीलाल जी का जीवन परिचय

कई पीढी पुराने, संकल्प के धनी, एक सफल व्यवसायी, ९० वर्षीय, ज्ञानी-ध्यानी, तप पूत, ऋषि-सदृश, बरला (अलीगढ) निवासी श्रीमोतीलाल आर्यसमाज के क्षेत्रसे बाहर भी काफी जाने-पहचानेजाते हैं। लगभग ८४ वर्ष पूर्व आपके आर्यसमाज से सम्बन्ध हुएथे। तब से आज तक वे महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त व आर्यसमाज के सेवक बने रहे। आर्यसमाज के बड़े-बड़े यज्ञों, समारोहों, यात्राओं व सम्मेलनों में आप सदा सेवाभाव से पधारते रहे, तथा धर्म व ज्ञान का संचय करते रहे।

विद्यालयी शिक्षा से वञ्चित, एक ग्रामीण होते हुए भी स्वयं अपने तप से आपने महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों का, अन्य आर्ष एवं सत्साहित्य का गहरा अध्ययन-मनन किया, तथा गृहस्थी होते हुए भी सदा वानप्रस्थी रहे और सोते-जागते प्रभु में ही लीन रहे।

उस पुराने युग में भी आपने अपनी कन्याओं को गुरुकुल (हाथरस) में पढ़ाया। वे धार्मिक आडम्बरों व सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सदा आवाज उठाते रहे। लगभग ६० वर्ष पूर्व आपने मनुष्य की मृत्यु के बाद होने वाले तेरहवीं-भोज आदि की निरर्थकता समझते हुए उसके बहिष्कार का जो प्रण लिया था उसे स्वयं अपने जीवन में वे आज तक निभाते आ रहे हैं।

महर्षि दयानन्द के) कर्णवास आदि पावन स्थानों से आपने सदा अनुराग रखा और उनकी स्मृति में यथासम्भव कुछ निर्माण आदि भी आपने कराया। अनाथ एवं अति निर्धन बच्चों की सहायता के लिये उनसे प्राप्त १०,००१ रु० से सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'श्री मोतीलाल आर्य स्वरूपी देवी सहायता स्थिर निधि' नाम से एक कोष का भी शुभारम्भ किया है, जिसमें अन्य दानी महानुभाव भी अपना अंश-दान करके पुण्य के भागी बन सकते हैं।

हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें आरोग्य व सुख-समृद्धि पूर्ण शतोत्तर दीर्घ आयु, सच्चा ज्ञान व आत्मिक आनन्द प्रदान करें ताकि चिरकाल तक वे युवा पीढ़ियों का मार्ग-दर्शन करते रह सकें।

महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र की भूमि पर यज्ञ करते हुए महाशय धर्मपाल जी एव प० राजगुरु शर्मा, पं० हरपाल जी श्री दानसिंह आदि दिखाई दे रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के नये नक्षत्र हजारीबाग (बिहार) के शाखा संचालक

श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य पहलवान
इन्होंने हजारीबाग के शिविर को सफल बनाने में भारी सहयोग किया और नियमित शाखा (प्रधानाचार्य महोदय के संरक्षण में) चलाने का वचन दिया।

रजि० सं० डी० (सी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-१-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. U. 93 Post in D.P.S.O. on : 17-1-86.

उर्दू के ये कसे

[illegible] डा० जगन्नाथ मिश्र ने उत्तर प्रदेश में कुछ [illegible] उर्दू भाषा के [illegible] को फिर उकसाया है। उन्होंने पिछले [illegible] उत्तर प्रदेश उर्दू [illegible] कमेटी एक आ[illegible] इकबालिया मीर अकादमी के [illegible] आयोजन में "मीर-ए-उर्दू" का अलंकरण ग्रहण करते हुए, प्रधानमन्त्री से [illegible] की है कि वे उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश जारी करें कि वह उर्दू [illegible] द्वितीय राजभाषा का दर्जा देने के लिए अपने कानून में परिवर्तन करे। डा० मिश्र ने उक्त आयोजन में इस बात का बारम्बार दोहराया कि उन्होंने बिहार राज्य में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देकर उसका मौलिक अधिकार दिलाया श्रीमती इन्दिरा गांधी के निर्णय को लागू किया। यह दोनों ही बातें आधारहीन है। उर्दू का द्वितीय राजभाषा बनने का मौलिक अधिकार किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं किया जा सकता और न ही इन्दिरा गांधी ने कोई ऐसा निर्देश दिया था। जनसंख्या प्रशासनिक अथवा किसी भी अन्य दृष्टि से उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान नहीं दिया जा सकता। हां उर्दू भाषा के विकास और उत्थान के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना, अलग बात है—जिसे हमारा कोई मतभेद नहीं है।

डा० मिश्रा ने उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की जो हिमायत की है, उससे शह पाकर उपरोक्त संस्थाओं तथा उत्तर प्रदेश उर्दू समन्वय समिति ने आन्दोलन चलाने की भी घोषणा कर दी है, जिसके अन्तर्गत १५ जनवरी को उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में मौन जलूस निकाले जायेंगे और जिलाधिकारियों को ज्ञापन दिये जायेंगे। इस आन्दोलन के अगले चरण में लखनऊ में मुख्य मन्त्री के समक्ष एक लाख व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शन की योजना बनी है जिससे कानून व्यवस्था को खतरा उत्पन्न हो सकता है। पिछले कुछ मास से उत्तर भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिकता की लहर पनप रही है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शाहबानो के पक्ष में किये गये अत्यन्त मानवीय एवं उचित फैसले को आधार बनाकर और विदेशी घुसपैठियों की नागरिकता स्थगित करने तथा उनकी घुसपैठ रोकने जैसे राष्ट्रीय हितों को सर्वथा ताक में रखकर बेबुनियाद आन्दोलन चलाये जा रहे हैं। ऐसे विषाक्त वातावरण में "मुस्लिम साम्प्रदा[illegible] मिश्रा जैसे प्रबुद्ध [illegible] का घृणित कार्य किय[illegible] भी अन्य प्रान्त में उर्दू को द्वि[illegible]

उर्दू के हिमायतियों से मैं एक प्र[illegible] की जनसंख्या ४८ प्रतिशत है और उन्होंने हिन्[illegible] मांग की है जो आज तक पूरी नहीं हुयी, जब कि हिन्दी [illegible] उत्तर प्रदेश में मुसलमानों की जनसंख्या लगभग १५ प्रतिशत है, पर उनके लिए सब ओर से आवाज उठ रही है। क्या पंजाब में हिन्दी के पक्ष में भी डा० मिश्रा जैसे राजनेता अपनी आवाज उठा पायेंगे? इसी से सम्बन्धित पहलु यह है कि मुस्लिम धर्मान्धता के सामने राष्ट्रीय हितों का बलिदान किया जा रहा है और राजनैतिक दलों के जाने माने नेता भी मुस्लिम स्वार्थों की राजनीति कर रहे हैं लोकसभा उपचुनाव में करीमगंज से सैयद शहाबुद्दीन की जीत का इसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। —आनन्दप्रकाश उपमन्त्री सभा

पं० बिहारीलाल जी शास्त्री का निधन

(पृष्ठ १ का शेष)

पौराणिक पण्डितों को करारा जवाब दिया है। इस महान कार्य में सबसे पहले अपना आशीर्वाद देने वाले पं० बिहारीलाल जी शास्त्री ही थे। वेदार्थ कल्पद्रुप जैसे महान् ग्रन्थ के निर्माण में उनका पूरा सहयोग रहा।

श्री शास्त्री जी के निधन से आर्यसमाज को गहरा धक्का लगा है। यह क्षति कभी भी पूरी होने वाली नहीं है।

शोक सभा में प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति और शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

पृथ्वीराज शास्त्री
सभा उपमन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस, [illegible] दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] माघ कृ० १ सं० २०४२ रविवार २६ जनवरी १९८६
वर्ष २१ अङ्क ८]
वार्षिक मूल्य २० एक प्रति ५० पैसे

महर्षि दयानन्द गोसम्वर्द्धन केन्द्र के बढ़ते चरण
दानी महानुभावों से सभा-प्रधान श्री शालवाले की अपील

वेदामृतम्
परिवार में धर्म और ऐश्वर्य हो !

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च,
वाक् चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च।
अथर्व० १२।५।७॥

हिन्दी अर्थ—परिवार में ओज, तेज, शक्ति, बल, भाषण शक्ति, हृष्ट-पुष्ट इन्द्रियां और धर्म का निवास हो।

—कपिलदेव द्विवेदी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द के संकल्पों को पूरा करने हेतु गोसम्वर्द्धन केन्द्र की योजना के प्रथम चरण को पूरा किया है। सरकार द्वारा प्राप्त भूमि दिल्ली गाजियाबाद की सीमा पर गाजीपुर दिल्ली में गोसम्वर्द्धन केन्द्र की स्थापना की है।

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन केन्द्र से आते हुए सभा प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा श्री पृथ्वीराज शास्त्री, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री आदि नेतागण दिखाई दे रहे हैं।

सभा की योजनायें

गोशाला भूमि मे १ हजार गौओं के रखने की योजना और पंचगव्य अनुसन्धान विभाग खोलने का प्राविधान है। देश-विदेश के आर्य सज्जनों एवं प्रवासी भारतीय भाइयों के निवास हेतु प्रवासी भारतीय भवन भी बनाया जाएगा।

आदर्श, यज्ञशाला, संस्कृत, महाविद्यालय की स्थापना का भी कार्यक्रम है।

महर्षि दयानन्द से लेकर वर्तमान काल तक आर्यसमाज तथा भारतीय जनमानस ने गो-संरक्षण के लिये अपनी आवाज उठाई है। गोरक्षा सत्याग्रह कटारपुर काण्ड, कूका विद्रोह महर्षि द्वारा लाखो व्यक्तियों के हस्ताक्षर कराकर ब्रिटिश हुकूमत के सामने पहुंचाने की योजना और १८५७ के विद्रोह की प्रबल पृष्ठभूमि कारतूसो में लगी गो की चरबी ने कितना जनमानस को उद्वेलित किया था।

उसी की प्रेरणा पर आज भी आर्य नेता श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने पुरातन सकल्प को दोहराया है। ६५ हजार वर्ग गज भूमि प्राप्त कर चार दीवारी बन चुकी है। इस कार्य की देख-रेख श्री वसुदेव जी तथा श्री रामभूल जी शर्मा द्वारा हो रही है। इस परियोजना पर लगभग ५ करोड़ रुपये व्यय किया जायेगा। गऊओ के चारे के लिये भारत सरकार द्वारा ५२ एकड़ भूमि वजीराबाद यमुना पुल के पास मिलने का आश्वासन मिला है। जो शीघ्र प्राप्त की जायेगी।

महर्षि दयानन्द गो सम्वर्द्धन केन्द्र पर आयोजित यज्ञ का दृश्य

मार्मिक अपील

माननीय श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने दानी महानुभावों

(शेष पृष्ठ २ पर)

डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर विशाल शोभा यात्रा

सभी आर्य संस्थायें व आर्य समाजें इसमें भाग लें।

दिल्ली २० दिसम्बर १९८६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने आगामी १५ फरवरी ८६ को डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर निकलने वाली विशाल शोभा यात्रा में सम्मिलित होने के लिये सभी आर्य समाजों व कार्य कर्त्ताओं से विशेष कर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी आर्य जन अन्य कार्यक्रमों को छोड़कर इस शोभायात्रा में बड़ी संख्या में भाग लें।

यह शोभा यात्रा प्रातः ११ बजे लालकिला मैदान से प्रारम्भ होगी और चांदनी चौक, घण्टा घर, नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टो रोड, कनाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई सायं ५ बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में समाप्त होगी।

इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। — प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के पिता श्री रामस्वरूप जी त्यागी दिवंगत

सार्वदेशिक सभा में शोक (१३ जनवरी को)

श्री रामस्वरूप जी त्यागी अपनी आयु के ९४ वर्ष पूर्ण कर २-३ दिन की अल्पकालिक बीमारी के बाद जीवन-मुक्त हो गये। भरे-पूरे परिवार के व्यक्ति श्री त्यागी अपने पीछे ४ पुत्र छोड़ गये हैं। जिनमें श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी सबसे बड़े हैं। एक लन्दन में डाक्टर है। दो यहीं कृषि और अन्य कार्यरत हैं। तीन लड़कियां हैं।

श्री त्यागी जी इतनी आयु प्राप्त करने के बाद चलते-फिरते सादा जीवन स्वस्थ विचारों वाले व्यक्ति थे। आप अपने जीवन में कभी अशक्त, असमर्थ और निराश न होकर प्रसन्न स्वभाव के स्वाभिमानी व्यक्ति थे।

अपने पिताजी की मृत्यु के समय श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी दक्षिण-अफ्रीका से लौटते हुए, मारीशस में थे। बम्बई आने पर उन्हें उनकी मृत्यु की सूचना मिली, और तुरन्त घर आकर उनके शान्ति-यज्ञ मे सम्मिलित होने के लिये गांव चले गये। सार्वदेशिक सभा में एक शोक सभा हुई।

शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्‌गति और परिवार के इस वियोग को सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी प्रभु से प्रार्थना की।

—सच्चिदानन्द शास्त्री सभा उपमन्त्री

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—देवशर्मा व्यवस्थापक
सार्वदेशिक साप्ताहिक

गोसम्वर्द्धन केन्द्र के बढ़ते चरण

(पृष्ठ १ का शेष)

तथा आर्य समाजों आर्य संस्थाओं के समस्त आर्य बन्धुओं से अपील की है। कि इस पुनीत संकल्प को पूरा करने के लिये अपनी ओर से एक सौ या पांच हजार रुपये प्रदान करें। साथ ही—

भवन निर्माण योजना में भी सहयोग देकर अपना पत्थर अंकित करायें।

गौशाला भूमि पर अधिकारीगण

२६ दिसम्बर १९८५ को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक के उपरान्त सभा के अधिकारी एवं सदस्यगण गोशाला भूमि को देखने गये और इस योजना के बढ़ते चरण पर प्रसन्नता प्रकट की।

प्रारम्भ में उस भूमि पर विशेष यज्ञ किया गया। इसके बाद जलपान भी कराया गया। यज्ञ के यजमान महाशय धर्मपाल जी अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य सभा ने ५१००) इक्यावन सौ रुपये देने की घोषणा की।

शुद्धि अभियान

४ मुस्लिम परिवारों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

हाथरस १५ जनवरी (नि०स०) तहसील के ग्रामीण अंचल गांव सजान में चार मुस्लिम परिवारों के २४ सदस्यों को वैदिक रीति से शुद्धि करा कर हिन्दू धर्म ग्रहण कराया।

कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज ने किया सभा की अध्यक्षता ब्लाक प्रमुख ठाकुर विक्रमसिंह ने की। शुद्धि कार्यक्रम में सर्वश्री प्रेम नारायण वैद्य रमेशचन्द आर्य पं० हरिदत्त शर्मा शिवचरण लाल गौतम ने विचार प्रकट किये।

सम्पादकीय

हमारा--गणतन्त्र दिवस

२६ जनवरी

स्वतंन्त्रता के स्वर्ण विहान में भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान तैयार किया, और जिस दिन वह लागू किया गया। २६ जनवरी, गणतन्त्र दिवस के नाम से जाना जाता है। गणतन्त्र दिवस, राष्ट्रीय आनन्द का दिवस है इस दिन हम जितनी खुशी मनायें, वह अपर्याप्त है। आज प्रश्न यह है कि क्या गणतन्त्र दिवस पर आनन्दोत्सव का नृत्य, गायन और सौन्दर्य, प्रदर्शन का कार्यक्रम हमारे जातीय गौरव, गम्भीरता, सादगी और सौष्ठव के अनुरूप है ?

इन कार्यक्रमों को अमीरी महफिलों और तमाशों का रूप दिया जा रहा है। वस्तुत: निर्धन भारत इस प्रकार के महंगे तमाशों का आयोजन सहन नहीं कर सकता। ये तमाशे उस विलासिता की मनोवृत्ति के द्योतक हैं, जो दुर्भाग्य से हमारे शासकों में व्याप्त हो रही है। ऐसी राष्ट्रीय परम्परा कदापि न पड़नी चाहिये। जो हमारी गणतन्त्रीय विलासिता की आदत के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जाय। गणतन्त्र राज्यों का विनाश-विलासिता के कारण ही हुआ है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी सफलताओं और असफलताओं पर गम्भीरतापूर्वक दृष्टिपात कर विचार करें, अपने हृदयों को टटोलें और अपनी पुरातन त्यागमयी वृत्ति से देश सेवा के लिये अर्पण करें।

आज हमारी गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर विदेशी मिशनरी जो अराष्ट्रीयता का वातावरण उत्पन्न कर रही हैं, उसमें हम आर्थिक, शैक्षणिक व सामाजिक स्थिति के सुधार में भगीरथ प्रयत्न करें।

१—राष्ट्रीय धारा बहाने में आर्थिक पहलू काफी सुदृढ़ किया है फिर भी हमारी मजबूरियों का नाजायज फायदा अराजक तत्व उठा कर, विषमता पैदा कर रहे हैं।

अत: हम आत्मनिर्भरता में अग्रसर होकर विजातीय तत्वों को आगे न बढ़ने दें।

२—संसार के तनाव में कमी लानें और संसार की विकृत राजनीति की धारा को (शान्ति का सन्देश) देकर, अद्भुत योगदान किया है इससे हमारे बढ़ते कदमों में रुकावट नहीं आ पायेगी। इसका श्रेय हमारी राजनैतिक सूझ-बूझ का परिणाम है।

यह बात हमें स्वीकार करनी है कि नागरिकता, देशभक्ति राज्य और राजनीतिज्ञता के आदर्शों को सही अर्थों में हम हृदयंगम नहीं कर सके हैं। राज्यस्तर पर या अखिल भारतीय स्तर पर हमारा जो स्तर ऊंचा होना चाहिये था उसमें गिरावट आई है। राजनीतिक पार्टियां हों, या विभागीय कर्मचारी, आफिसर हों, व्यवसायी और कृषक समाज हों अथवा धर्म के धुरन्धर ठेकेदार, विद्वान हों। जिधर भी दृष्टिपात करें, नैतिकता का स्तर इतना गिरा है जिसे कोई ठीक नहीं कर सकता जब आवा का आवा ही खराब है, भाई कुएं में भंग पड़ी, किसे-२ समझाया जाय।

लोग कहते हैं कि हमें प्रशिक्षण मिलना चाहिये। जहां भी कहीं चर्चा होती है, वहां परस्पर में एक-दूसरे को दोषी ठहराते हैं। स्वतन्त्रता का अर्थ ही गलत लगाया जाता है। हमारी नागरिकता का और शिष्टता की भावना का दुःखद परिचय मिलता है। गणतन्त्र दिवस पर संविधान की धज्जियां उड़ते हुए जब देखते हैं और राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर हम साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता और संकुचित जात-पांत, छुआ-छूत, ऊंच-नीच के भेद-भाव पूर्ण दृष्टिकोण से सोचते व करते हैं। जिसके फलस्वरूप राष्ट्र की उन्नति कुण्ठित होती एवं एकता और संगठन का पहिया पीछे की तरफ घूमता है।

देश-भक्ति का स्वस्थ दर्शन, मानसिक-दासता, आत्म-सवर्धन, भ्रष्टाचार, अराजकता और निकृष्ट कोटि के अनुकरण की शक्तियों तथा प्रवृत्तियों से आच्छादित हैं। हम सादे जीवन और उच्च विचार के आदर्श से गिरकर विलासमय जीवन और अधर्म विचार के स्तर पर आ गये हैं। यदि तप, संयम, आत्म-त्याग और सादगी वही वातावरण, जिसे पूज्य महात्मा गांधी ने संजोकर, अपने सपनों का भारत बनाने की कल्पना की थी यदि व्याप्त रहता, जिसके दर्शन ब्रिटिश राज्य के साथ संघर्षकाल में भी होते थे, तो गिरावट का मामला इतने निम्न स्तर तक न पहुंचता। इसके लिये सत्ता पक्ष-कांग्रेस की अधिक जिम्मेदारी हैं। इसमें स्वतन्त्रता का भय न होकर, सद्प्रेरणा का अभाव ही कहा जायेगा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति तथा गणराज्य घोषित होने के उपरान्त हम इन विविध राजनैतिक दलों और राजनीतिज्ञों को राजपद तथा राज्याधिकार के लिये निरन्तर संघर्ष करते हुए पाते हैं साथ ही संविधान की धज्जियां उड़ाने में अपने-२ विधिविधान की रचना करते हैं। जो संरचना भावी-पीढ़ी को आदर्श देने के स्थान पर और अपने देश समाज की उन्नति व सफलता के स्थान पर अपनी निजी व अपनी पार्टी, अपनी जाति-बिरादरी, व्यक्तिवाद को सफलता की बात करते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व नेताओं ने स्वस्थ राजनैतिक विचार धारा का जो श्रेय प्राप्त किया था वह तेजी के साथ लुप्त होता जा रहा है।

इस गणतन्त्र दिवस पर आओ ! हम अपनी प्राप्त स्वतन्त्रता का इस प्रकार विकास और संगठन करें। जिससे स्वार्थियों और दुष्टों की चाल में न फंस कर, हम आगे बढ़े। हमारा राज्य नैतिकता पर आश्रित रहे जो उसकी शक्ति की प्रबलतम आधारशिला, उसकी स्थिरता और नैतिक तथा ऐहिक समृद्धि की सुनिश्चित परिपक्वता होती है। हमारे देश में ऐसे राजनीतिज्ञों का अधिकाधिक प्रादुर्भाव हो जो लोभ, स्वार्थपरता या पार्टी से अनुप्राणित न हों, जो सत्यनिष्ठ, सत्कर्मी, सत्यव्रती एव सम्मानित हों, जो आत्म-सम्वर्धन एवं अधिकार से उपराम होकर समाज सेवी बनें। और अपनी आत्मा व परमात्मा की दृष्टि में ऊंचे उठे हुए हों, जिनके मर जाने पर प्रजा रोये, यह जीवन की कसौटी बनें।

हम देश-प्रेम से ओत-प्रोत हों, परमात्मा और सत्य हमारे साथ में रहें, परमात्मा करे हमारा देश फिर स्वर्ण युग की शानदार स्मृति चिह्न बनें।

अत्याचार निर्धनता और चरित्रहीनता का नहीं, अपितु बुद्धिमत्ता शान्ति और प्रकाश और स्वतन्त्रता का जिसे संसार आदर की दृष्टि से देखें।

बातों के रफूगर पं० बिहारीलाल शास्त्री शास्त्रार्थ-महारथी

आर्य जगत के प्रसिद्ध वक्ता, तर्क शिरोमणि शास्त्रार्थ-महारथी पंडित बिहारीलाल शास्त्री, आज हमारे मध्य नहीं रहे। वह अपने जीवन में सौ वर्ष के समीप थे।

जीवन की अवसान वेला में उन्हें अतिकष्ट भोगना पड़ा उनकी जांघ की की हड्डी गिर पड़ने से टूट गई थी. उसी के उपचार मे अति शिथिल हो गये थे अवसान के पूर्व तक आंखों में मोतियाबिन्द पड़ जाने से कम दीखने लगा था, दांतों की बत्तीसी सुदृढ़ थी, इससे वह भोजन चबाकर खा लेते थे मन-मस्तिष्क-हृदय-बाहु-ऊरु-पैर-सभी अन्त समय तक सुचारु रूप से कार्य करते रहे। वाणी में वही दहाड़, पर कानो ने कुछ असहयोग करना शुरु किया था।

जीवन मे वैसा ही हास्य विनोदप्रियता और मस्ती सदा बनी रही। जिसके लिए पंडित जी हमेशा प्रसिद्ध रहे हैं। वही चुटकुले वही तर्क, वही उमंग उत्सव ? आर्य समाज के प्रचार की वही दीवानगी ? वृद्धावस्था में भी युवकों जैसा स्वभाव निश्चय ही आने वाली पीढी को प्रेरणास्पद रहेगा।

श्री शास्त्री जी का जन्म एक पौराणिक परिवार में हुआ था ? शिक्षा-दीक्षा भी उसी वातावरण मे पूर्ण हुई थी। अध्यापन हेतु एक आर्य विद्यालय में नियुक्ति हुई। घर-परिवार से दूर विद्यालय में पढ़ना और आर्य समाज मन्दिर में रहना यह उनकी दिनचर्या रहती थी।

आर्य समाज में विद्यालय भी था अवकाश के समय वही उनकी पुस्तकें साथी थी। ऐसे एक दिन पुस्तकालय में बैठे कोई पुस्तक खोल रहे थे वीतराग सन्यासी स्वामी दर्शनानन्द द्वारा मूर्त्ति-पूजा पर लिखित ट्रैक्ट निकाल कर पढ़ने बैठ गये। बस फिर क्या था आंखें चमक उठीं।

माथा ठनका ज्यो २ वह उस पुस्तिका को पढ़ते जाते व दिल-दिमाग के कपाट खुलते जा रहे थे। लेखक के नाम को पढ़ा और ट्रैक्ट यथास्थान रख दिया। उसके बाद मूर्तिपूजा पर जितना भी साहित्य मिला उसका गहन चिन्तन किया। सभी कुछ सामान्य था पर उनके मस्तिष्क मे था एक भयंकर तूफान। अपने गुरु जी से इसका समाधान मांगा किन्तु गुरु जी असन्तुष्ट थे तूने यह पुस्तक नास्तिको की पढी ही क्यो ?

कैसी बुद्धि बिगड़ गई है बोले आर्य तो ईसाई होते हैं वे न वेदो को मानें न शास्त्रो को ही। पर शास्त्री जी ने गुरु जी को बताया कि आर्यों का तो धर्म ग्रन्थ ही वेद है पर 'गुरु जी न माने' पं० जी गुरु जी के चरण स्पर्श करके आर्यसमाज मे आ गये और अपने परिवर्त्तन पा रहे थे सत्यार्थ प्रकाश को पढते ही उन्हें एक मार्ग मिला और वे चल पड़े उसी मार्ग पर।

अन्तिम प्रमाण पर उसी दयानन्द की छाप ने मुहर लगा दी जब उनकी प्रयाण वेला पर साम गान हो रहा था दुनिया उस विचित्र व्यक्तित्व की विदाई समारोह उत्साह दे रही थी।

उपदेशकों के प्रेरणास्रोत

सैकड़ों भाषण दिये और सैकड़ों शास्त्रार्थ अन्यमतावलम्बियो से किये। जब पं० जी अपने उपदेशकों, प्रचारको से कहा करते थे देखो हमने भी स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के तर्क पूर्ण भाषणो को सुनकर ही पडित बना आप सब भी पढ़ने के साथ २ सुना भी करो।

मैं लेखक स्वयं भी उसी पथ का पथिक हूँ गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से स्नातक होकर आर्य समाज की वेदी पर कार्यरत हुआ तो पूज्य पंडित जी का साक्षात्कार सर्वप्रथम मेरठ मे हुआ। प० जी ने बा० रघुनन्दन स्वरूप जी को लिखा कि उस उपदेशक को जो आपके पास है उसे मेरे कार्यक्रम के होने पर कही बाहर न जाने देना, मैं हतप्रभ था जब प० जी से मिला तो कितना प्यार दिया। मैं १० दिन तक उनके पास रहा। निरन्तर-प्रेरणा देते रहे जो आज तक हृदय में स्थित है।

चौबीसों घन्टे आर्य समाज की चिन्ता, देश-धर्म की चिन्ता शुद्धि प्रचार की कमी न थमने वाली रठ निरन्तर बनी रही।

महर्षि दयानन्द का प्रभाव जो पडा बस पड़ गया। यह रग कुछ ऐसा चढ़ा जो उतरा ही नहीं।

आज पूज्य पडित जी के अवसान पर हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी है जिससे वह स्वयं बनें और सैकड़ो हजारो के जीवन का निर्माण किया। उनकी अलौकिक शक्ति से अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाये यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पंडित बिहारीलाल शास्त्री का जीवन परिचय

जन्म—विक्रम सम्वत् १९४७ (फाल्गुन शुक्ला तीज)
पिता का नाम—श्री प० अयोध्या प्रसाद जी (माता) श्रीमती मुन्नीदेवीजी
जन्म स्थान—ग्राम फफवाड़ा, जिला मुरादाबाद (उ० प्र०)
गृहकार्य—कृषि एवं लेन-देन
पितामह—श्री पं० बेनी प्रसाद जी (प्रपितामह पं० भजनलाल जी)
शिक्षा—जवाहरलाल संस्कृत पाठशाला मुरादाबाद उ० प्र०

कार्य १—सन् १९१६ में डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत द्वारा संचालित कल्याणी पाठशालाओं के निरीक्षक बने।

२—सन् १९१८ मे मुसाफिर विद्यालय आगरा के प्रधानाचार्य बने और सन् १९२० तक इस पद पर कार्य करते रहे।

३—सन् १९२० से १९२४ तक जिला बिजनौर में आर्यसमाज का कार्य किया और अनेक शुद्धियां की तथा, अछूतोद्धार का काम बड़ी तेजी से किया गया।

४—सन् १९२४ मे सरस्वती विद्यालय (बरेली) मे अध्यापक बनें। आठ वर्ष तक इस पद कार्य किया।

५—सन् १९३२ से ऊझियानी जि० बदायूं मे अध्यापन कार्य २४ वर्ष करके यही से अवकाश ग्रहण किया।

६—सन् १९६७ से बरेली में रहकर वैदिक-धर्म का प्रचार ओजस्वी वाणी व लेखनी द्वारा करते रहे।

साहित्यक-सेवा

श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री ने सैकड़ों दार्शनिक महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक-धर्म पर लेख व दर्जनों छोटी बड़ी पुस्तकें लिखी उनमें प्रमुख निम्न हैं .—

१—वेदान्त दर्शन—(स्व० स्वामी दर्शनानन्द के अपूर्ण भाष्य की पूर्त्ति)
४—चाणक्य नीति
३—वेदवाणी—(वेद विषयक लेखों का संग्रह)
४—पशु बलि और वेद—(पौराणिक पशुबलि-विधान का खण्डन वेदों के आधार पर
५—दृष्टान्त सागर ६—दम्भ दमन ७—मूर्तिपूजा पर प्रामाणिक शास्त्रार्थ
८—सत्यार्थ प्रकाश का महत्व
९—ऋग्वेद के दशम मण्डल का रहस्य
१०—अथर्ववेद का रहस्य ११—चोटी और लगोटी १२—चार शास्त्रार्थ
१३—वैदिक पताका १४—सुमन सग्रह १५—धर्म तुला
१६—शिव का यथार्थ स्वरूप १७—शास्त्रार्थ बरहीपुरा १८—अंगद चरण
१९—साकार निराकार निर्णय २०—इस्लाम का स्वरूप
२१—क्या मुर्त्तिपूजा वेदोक्त है २२—उपनयन का महत्त्व और आर्यसमाज
२३—योगीराज कृष्ण २४—गोस्वामी तुलसीदास २५—यजुर्वेद का रहस्य

—सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री-सभा

स्वातन्त्र्यशिल्पी श्याम जी कृष्ण वर्मा और उनका युग

—डा० गणेशीलाल वर्मा, पी० एच० डी०

४ अक्तूबर १८५७ ई० को माण्डवी (गुजरात) में जन्मे श्याम जी कृष्ण वर्मा क्रान्तिपुत्र थे। उन दिनों भारत में अंग्रेजी राज को समूल नष्ट करने के लिए प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध लड़ा जा रहा था।

व्युत्पन्नमति होने के कारण श्याम जी को मुम्बई के श्रेष्ठतम संस्थानों में शिक्षा मिली। उच्च आधुनिक शिक्षा एवं संस्कृत पर असाधारण अधिकार के कारण युवक श्याम जी मुम्बई के समाज-सुधारकों के आशा-केन्द्र बने। ठीक उसी समय १८७५ में मुम्बई के समाज सुधारकों के बुलावे पर विश्व-वन्द्य महर्षि दयानन्द सरस्वती मुम्बई पधारे। धारा प्रवाह संस्कृत में सम्भाषण करने वाले श्यामजी सहज ही यतिराज दयानन्द के प्रीतिपात्र बन गये। १८७६-७८ में महर्षि की प्रेरणा से युवक श्याम जी ने नासिक, पूणे, इन्दौर, लखनऊ, वाराणसी, लाहौर आदि नगरों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्यसमाज में श्याम जी की स्थिति का अनुमान मैडम ब्लैवटस्की के ७ अगस्त १८७७ ई० के पत्र से लगाया जा सकता है। मैडम ने लिखा था "You are one of the most pominent and promising members on acpount of your relations to the revered Swami."

अर्थात् 'श्रद्धेय स्वामी जी के साथ विशेष सम्बन्धों के कारण आप आर्यसमाज के सबसे प्रमुख और होनहार सदस्यों में से हैं।'

महर्षि से अनुमति प्राप्त कर १८७९ ई० में श्याम जी कृष्ण वर्मा इंग्लैण्ड पहुंचे। वहां संस्कृत एवं अन्य प्राच्य भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित के रूप में श्यामजी ने प्रसिद्धि प्राप्त की। आक्सफोर्ड के प्रोफेसरों एवं अन्य बुद्धिजीवियों के अतिरिक्त उनका परिचय ग्लैडस्टोन और बिस्मार्क सदृश राजनीतिज्ञों से भी हुआ। उन दिनों यूरोप का वातावरण राष्ट्रवाद से ओतप्रोत था। यूनान से लेकर आयर देश तक राष्ट्रीय आन्दोलनों की लहर थी। राष्ट्रवाद के सिंह-नाद के समक्ष बड़े-बड़े साम्राज्य थर-थर कांप रहे थे। जर्मनी और इटली एक लम्बे समय तक भारत के समान विभाजित रहे थे और उन पर आस्ट्रिया तथा फ्रांस का दबदबा गालिब था। १८७१ ई० में ही यह देश विदेशी प्रभाव को समाप्त कर सबल राष्ट्रों के रूप में उदित हुए थे।

लेटिन, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं के ज्ञाता और पैनी राजनैतिक दृष्टि होने के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को यूरोप के राजनीतिक वातावरण का ज्ञान होते देर न लगी। यूरोप की स्थिति से अवगत होकर भारत के सम्बन्ध में जो निष्कर्ष श्याम जी ने निकाले, वे थे—

१—स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजी साम्राज्यवाद से संघर्ष अनिवार्य है।

२—भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में रजवाड़ों की उपयोगिता है।

३—सांस्कृतिक पुनरुत्थान के द्वारा राष्ट्रवाद का पोषण आवश्यक है।

४—स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए विदेशी सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।

महर्षि दयानन्द के प्रयासों की इयत्ता, यूरोपीय वातावरण के परिप्रेक्ष्य में श्याम जी कृष्ण वर्मा को स्पष्टतर दिखाई देने लगी। जर्मनी और इटलीमें सशस्त्र क्रान्ति के विफल हो जाने पर सांस्कृतिक जागरण सम्बन्धी आन्दोलन हुए थे। इटली में मैजिनी ने सांस्कृतिक सभाएं (कार्बोनेरी) स्थापित की थीं। इन सांस्कृतिक आन्दोलनों से प्रेरित होकर इटली के पाइमो और जर्मनी के होहन जोलर्न रजवाड़ों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी। भारत में भी सन् सत्तावन की सशस्त्र क्रान्ति फेल हो चुकी थी। आर्यसमाजों की स्थापना कर सांस्कृतिक पुनरुत्थान का कार्य स्वामी दयानन्द जी ने किया था। बड़ौदा, कोल्हापुर, इन्दौर व राजस्थान के रजवाड़ों में भी स्वामी दयानन्द सुधार कार्य कर रहे थे, जिसका राजनीतिक महत्व स्पष्ट था। सही बात यह है कि छः वर्ष के इस महत्वपूर्ण प्रवास (१८७९-८५) ई० में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने देशहितार्थ अपने आपको पूर्णरूपेण तैयार किया। कानून की भी पढ़ाई पूरी कर बैरिस्टर बने।

१८८५ में श्याम जी कृष्ण वर्मा भारत लौटे। उन दिनों भारतीय राजनीति अजीब और पेचीदा मोड़ ले रही थी। महर्षि दयानन्द अस्त हो चुके थे क्रिश्चियन्स, थियोसोफिस्ट, एंग्लो-इण्डियन्स आदि वे शक्तियां, जिनसे महर्षि का घमासान रहा था, संगठित होने लगी थीं। वस्तुत: उच्च अफसरों की सहायता एवं प्रेरणा से एंग्लोइण्डियन्स, थियोसोफिस्टों और भारतीय ईसाइयों ने पाश्चात्य रंग में रंगे हिन्दुओं को साथ लेकर इण्डियन नेशनल कांग्रेस बना ली थी। महर्षि दयानन्द जब तक थे, सुधारवादी आन्दोलन राष्ट्रवाद का प्रहरी, उसकी पीठ थपथपाने वाला था।

महर्षि दयानन्द के दिग्गज व्यक्तित्व के अभाव में सुधारवादी आन्दोलन राष्ट्रवादी शक्तियों से बिछड़ गया और शनैः-शनैः विदेशी राज का साथ देने लगा। १८९१ ई० में अल्पायु निषेध विधेयक (Age of Congent Bill) पर सुधारकों और राष्ट्रवादियों में अलगाव की प्रक्रिया पूरी हो गई। राष्ट्रवादियों ने विदेशी राज को चुनौती दी। समाज सुधारकों ने अंग्रेजी सरकार का साथ दिया। केसरबाग अजमेर की एक सार्वजनिक सभा में अंग्रेज सरकार को ललकारते हुए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने कहा था—विवाह एक सामाजिक प्रश्न है, हिन्दुओं का अपना मामला है। एक गैर हिन्दू और विदेशी सरकार का इसमें दखल सहन नहीं किया जा सकता।

इस घटना से भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में नया समीकरण प्रस्तुत हुआ। श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे आर्यसमाजी और बाल गंगाधर तिलक सदृश सनातनी ब्राह्मण ने पारस्परिक सहयोग के द्वारा हिन्दू एकता के युग का सूत्रपात किया।

१८८५ से ९७ ई० के मध्य श्याम जी कृष्ण वर्मा भारत में रहे। वे रतलाम (मध्यप्रदेश), मेवाड़ (राजस्थान), जूनागढ़ (गुजरात) में दीवान बने। अजमेर नगरपालिका के गैरसरकारी अध्यक्ष भी वे बने। राजस्थान, काटन मिल, प्रताप काटन मिल आदि कारखाने भी श्याम जी ने स्थापित किये। दीवान के रूप में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने राष्ट्रवादी समाचार पत्रों और प्रचारकों को भारी अनुदान दिये। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भारतीय रजवाड़ों की व्यथा को समझते हुए राष्ट्रवाद के लिए भावी रणनीति भी तैयार की। इन्हीं कार्यकलापों के कारण एंग्लोइण्डियन प्रेस में अंग्रेज अफसरों की शह पर श्याम जी के विरुद्ध 'जिहाद' छेड़ा। परन्तु केसरी जैसे राष्ट्रवादी पत्रों ने निःसंकोच श्याम जी का समर्थन किया। (क्रमशः)

डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम की याद में

—पं० धर्मवीर शास्त्री, आर्य सभा मौरीशस

आप एक महान राजनीतिज्ञ थे। आप में धार्मिकता साधुता भी पाई जाती थी। शायद इसी लिए आप को लोग मारीशस की सभी दिशाओं में प्यारे 'चाचा' कह कर पुकारते थे। दिल की गहराई से ऐसी पुकार आप के प्रति होती थी। आप राजनीतिज्ञों के लिए आचार्य माने जाते थे। आप शान्ति प्रिय थे।

सन १९२० से १९३४ के बीच लन्दन में डाक्टरी विद्या का अध्ययन किया करते थे तभी आप पं० जवाहरलाल नेहरू जी, महात्मा गांधी जी आदि नेताओं से मिल चुके थे। उनसे भी आप को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए मन्त्रणा प्राप्त हुई थी, क्योंकि वे भी भारत माता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए प्रयत्न कर रहे थे।

मारीशस की स्वतन्त्रता १२ मार्च सन १९६२ को मिली थी। उसी रोज की बात है आर्य सभा मारीशस में प्रातःकाल ८:३० यज्ञ किया गया था। आप भी उस मौके पर शामिल हुए थे, आहुतियां डाली थी। आप का एक बहुत ही सुन्दर और रोचक भाषण हुआ था जिसके दौरान मारीशस में आर्य समाजी भाइयों और बहनों के प्रति आपने आभार प्रकट किया था, क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के मैदान में आर्य समाजियो ने रात-दिन आप के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया था। कितनों ने इस संघर्ष में अपनी मान मर्यादा की भी परवाह नहीं की थी, कितनों ने अपनी रोजी खो दी, क्योंकि जहा पर वे लोग नौकरी करते थे उन्हें मालिक लोग उंगलियों पर नचाने लग गये थे।

डाक्टर जी जब सन १९३५ में लन्दन से पढ़कर स्वदेश लौटे थे तो आर्य समाज ने उनका शानदार स्वागत किया था तभी से आर्य सभा के सभी आर्य समाजों मे आप हमेशा जाते थे। हमारे जितने भी संन्यासी आते थे आप उन्हें बहुत आदर किया करते थे। इतना तक कि सन १९१४ मे स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी यहा पर भारत से आए थे। कठिन परिस्थितियो में काम करके भारत लौटे थे। उनको काफी दूर दूर तक पैदल जाकरके कार्य करना पड़ता था। उन्होंने मन लगाकर कार्य किया था। उनमे पहले सन १९०७ मे महात्मा गांधी जी की मन्त्रणा से डाक्टर मणिलाल जी आये थे आपने भी यहा पर गरीब मजदूरो के लिए खूब काम किया था। सन १९१० में आपके सहयोग से आर्य समाज की नीव डाली गई थी। आपने एक प्रेस चलाया था और लौटते समय वह प्रेस आर्य समाज संस्था को दान दे दिया था, जो आज भी आर्य सभा के पास है। इन दो विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करने के के लिये डाक्टर जी ने १९५० में पुन. मौरीशस आने के लिये उन्हें निमन्त्रण दिया था वे विराजे थे तो हवाई अड्डे पर ६० हजार नर नारी उनके स्वागत के लिए पहुंचे थे। डाक्टर जी ने उनके स्वागत में झुककर नमस्ते किया, हाथ जोड़े हुए फिर फूल मालाए उन्हें अर्पित की थी।

डाक्टर मणिलाल जी का १९१० के वर्ष मे वही हाल हुआ था जो हाल महात्मा गांधी जी का अफ्रीका में गरीबों का साथ देने के कारण हुआ था। उन दोनों महान नेताओं ने प्रवासी भारतीयो की दुर्दशा यहा पर देखी थी। दूसरे आगमन पर मारीशस की जनता को खुशहाल में देखने के बाद वे मन्त्र मुग्ध हो गए थे। उन दिनों भारत के प्रथम राजदूत श्री धर्म यशदेव जी मोरीशस में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उनके निवास स्थान वाक्वा में एक महायज्ञ का आयोजन किया गया था, मौके पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने और डाक्टर मणिलाल जी ने सुन्दर विचार प्रदान किये थे। डाक्टर शिवसागर जी भी इस धार्मिक कार्य की शोभा बढ़ा रहे थे।

डाक्टर जी का मान सर्वत्र रहा, क्या मौरीशस मे, क्या भारत मे, क्या अमरीका या लन्दन में। मुझे स्मरण है सन १९७२ में इनका परिवार भारत में देहली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर आर्य महासम्मेलन में शामिल होने के लिए गया हुआ था। हम कुछ मौरिशस वासी दो सप्ताह बाद कलकत्ता गए थे। कार्नवालिस गली के आर्य समाज मन्दिर में हम लोग ठहरे हुए थे। वहां पर अनेक वृद्ध जन हमसे आकर मिलते थे और हमारे टापू के नेता डाक्टर रामगुलाम जी के बारे मे अनेक प्रश्न किया करते थे। एक रोज हम लोग कलकत्ता शहर मे भ्रमण कर रहे थे और आवारा आदमी के समान फोटो खींचा करते थे। सौभाग्य या दुर्भाग्य से हमारी भेंट पुलिस के एक सिपाही से हो गई और उन्होंने हमें पुलिस स्टेशन चलने को कहा। हमने पूछा—

आप हमें पुलिस स्टेशन क्यों ले जाना चाहते हैं?

पु०—तुम लोग कहां से आये हो? फोटो निकालते हो।

हम०—मौरिशस से आये हैं।

पु०—मैं नहीं जानता, मोरिशस। चलो मेरे साथ।

हम—मौरिशस एक टापू है।

पु०—मैं कुछ नहीं जानता चलो।

हम—मौरिशस हिन्द महासागर में है। एक छोटा सा टापू।

पु०—मुझे कुछ नहीं मालूम, सीधे चलते हो या नहीं।

हम—आपने कभी डाक्टर शिवसागर रामगुलाम जी का नाम सुना है? वे ही हमारे टापू के प्रधान मन्त्री हैं।

पु०—सच

हम—हां।

पुलिस के सिपाही ने अपने दांए हाथ की दो उंगलियां ललाट पर रखते हुए हमें सलामी दी और कहा—मुझे माफ कीजिए बाबू जी। मैंने सोचा था कि शायद आप लोग बंगला देश से आए हैं और यह महिला भी आप लोगों के साथ है। आप लोग जा सकते हैं।"

इस छोटी सी घटना से पाठकों को मौरिशस के हमारे प्यारे नेता जी की ख्याति के बारे में कुछ मालूम हो जायगा।

वे एक महा पुरुष थे, बातो से और कर्मों से भी। एक बार की बात है उन दिनों आनन्द स्वामी जी मौरीशस पधारे थे। उनके स्वागत समारोह में डाक्टर जी ने प्रधान आसन को ग्रहण किया था। मौके पर डाक्टर जी ने कहा था कि "मैं कोई साधु सन्यासी नहीं हूं। मैं तो राजनीतिज्ञ हूं।"

आप आर्य समाज के कार्यों में भी सक्रिय रहते थे।

सन १९७२ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक १९, २०, २१ मई को राजस्थान अलवर में आर्य महासम्मेलन किया था। इस कार्य के लिए आर्य सभा के शिरोमणि नेता श्री मोहनलाल मोहित जी को डाक्टर जी से बात चीत करने के लिए देहली से पत्र आया था। फोन करने पर प्रधान मन्त्री आफिस से श्री मोहित जी को प्रधान मन्त्री जी से बात चीत करने के लिए बुलाया गया था। डाक्टर जी ने अपना सब काम छोड़कर दरवाजे के पास आकर उनका स्वागत किया था। बातचीत के दौरान उन्होंने राजस्थान जाने के लिए सहर्ष स्वीकार किया।

जब डाक्टर रामगुलाम जी उत्सव में भाग लेने गए थे तो बहुत लोग उनसे मिलना चाहते थे पर उतने लोगों से एक एक करके कैसे भेंट की जा सकती थी। मौके पर डाक्टर जी ने अपने भाषण के दौरान कहा था कि—

आर्य समाज वह आन्दोलन है जिसका सूत्रपात महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिये किया था। वैदिक धर्म ईश्वरीय ज्ञान है। वेद पर आश्रित आध्यात्मिक ज्ञान है।" वापसी पर उन्होंने हवाई अड्डे पर ऐलान किया था पत्रकारो के साथ—"उस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन शानदार रहा।"

एक रोज बात-बात में आप कह रहे थे कि उन दिनों वहां पर बहुत गर्मी थी जिससे अधिक थकान मालूम हो रही थी।

मौरिशस मे सन १९७३ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्य महा सम्मेलन किया गया था। डाक्टर जी की कृपा से सरकार द्वारा और हमारे प्रसारण केन्द्र (रेडियो एण्ड टी०वी०) द्वारा बहुत सहयोग प्राप्त हुआ था।

उनके आमन्त्रण पर भारत की भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी तीन बार मौरिशस पधारी थी। सन १९७० में अपनी प्रथम यात्रा के दौरान श्रीमती गांधी जी ने महात्मा गांधी संस्थान की आधार शिला रखी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य युवकों के नाम संदेश

—डा० प्रशांत वेदालंकार, ५/२ रूपनगर, दिल्ली-७

आर्य युवको !

हमारे देश में भी ११ जनवरी १९८५ को स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर हमारे युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने युवा वर्ष का उद्घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह आशा बंधी थी कि हमारी सरकार युवा-वर्ग को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर मुझे यह कहते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि युवा-वर्ष समाप्त हो गया पर अभी तक देश में न युवकों को कोई रचनात्मक दिशा दी जा सकी है, न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनके लिए किसी कार्य की कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभान्वित हों।

युवा वर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को मे आयोजित युवा-समारोह में भाग लेने के लिए गये थे, पर वहा पर इन युवकों ने अपनी जिस विलासी वृत्ति का परिचय दिया उससे मेरे देश की प्रतिष्ठा पर आंच आई। नवम्बर मास में दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से निर्गुट देशों के युवकों का एक सम्मेलन बुलाया गया। पर यह सम्मेलन भी युवकों के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नहीं कर सका।

मैंने बचपन में एक कविता पढ़ी थी जिसकी पहली पंक्ति थी—"बताए तुम्हें जवान जवानी किसको कहते हैं, दे जग को जीवन दान जवानी उसको कहते हैं।" इस पंक्ति में यौवन को किसी आयु विशेष के साथ नहीं बांधा गया, वरन उसे एक पवित्र और ऊंची भावना के साथ सम्बद्ध किया गया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलांजलि देकर निःस्वार्थ और परोपकार की भावना से राष्ट्र, नहीं विश्व के कल्याण के लिए आत्म समर्पण की भावना रखता हो जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके आर्य समाज का लक्ष्य ऋग्वेद का यह वाक्य कि—'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' स्थापित किया था, उस समय वे भी आर्य जन में यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड़ दें और प्रतिदिन यह करते हुए विश्व के कल्याण के लिए अपनी आहुति, आत्म बलिदान की भावना से भर उठें।

याद रखो, हमें विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ गुणो से युक्त बनाना है और संसार में जितना अशिव है, जो अकल्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं उन सबको नष्ट करना है। ऋग्वेद ने संसार को श्रेष्ठ बनाने की जहा प्रेरणा दी वहां संसार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो, संसार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हमे स्वय श्रेष्ठ बनना होगा साधु और मानवीय दृष्टि से ऊंचा व्यक्ति ही दूसरे को सत्कर्म पर प्रेरित कर सकता है। जो स्वयं दुष्ट है वह दूसरों की दुष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है?

जब मैं तुम्हें कहता हूं कि तुम अच्छे बनो तो मेरा अर्थ होता है कि तुम्हारा सारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पुष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ और दुर्बल हो तो तुम जीने योग्य भी नहीं हो। तुमने पढ़ा और सुना होगा—वीर-भोग्या वसुन्धरा-यह पृथ्वी वीरों के भोग के लिए अपनी मांस पेशियों को पुष्ट करना होगा। उनके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करने का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने कहा था—शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्। शरीर धर्म का—अपने कर्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है। यदि तुमने ससार को श्रेष्ठ बनाने का अपना कर्तव्यपूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। मुझे तुम्हे यह भी बताना है कि वीरता व पुष्ट शरीर से तुम्हें निर्बलों व अनाथों को दुष्ट स्वभाव से रक्षा करनी है। वीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को अनावश्यक रूप से दबाना या प्रताड़ित करना नहीं है।

जब मैं तुम्हें श्रेष्ठ बनने के लिए कहता हूं तब तुम्हें अच्छा और तीक्ष्ण मस्तिष्क वाला बनने की भी प्रेरणा देता हूं ताकि तुम अपनी प्रखर बुद्धि से अपने प्राप्त शरीर का ठीक उपयोग कर सको। तुम्हारा मस्तिष्क ऐसा हो जिसमें नीर क्षीर विवेक की क्षमता हो। सत्य को पहचानने और असत्य को त्यागने की समझ हो। मस्तिष्क इतना पुष्ट हो कि वह ठीक समय पर ठीक निर्णय करे और इतना विकसित हो कि सदा नए-नए ज्ञान को ग्रहण करने में वह सक्षम हो। तभी तुम समझ सकोगे कि विश्व में क्या हेय है और क्या ग्राह्य। जब तुम्हें संसार के दुष्टों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया है तो बिना विवेक व ज्ञान के तुम यह काम नहीं कर पाओगे। संसार में कौन दुष्ट है और कौन साधु? यह बात तुम बिना अच्छे मस्तिष्क के नही जान सकते। अपना अच्छा मस्तिष्क करने के लिए तुम्हें सदा अपने माता-पिता, किसी अच्छे गुरु व पथ-प्रदर्शक के सम्पर्क में रहना होगा? उनके प्रति तुम्हें आस्था रखनी होगी। गीता में कहा है श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। श्रद्धा व विश्वास से ही मस्तिष्क में नित नया ज्ञान आता है और विवेक शक्ति बढ़ती है जो विचार-धारा अनास्था का प्रचार करती है वह हेय है और आज ससार में ऐसी भौतिकता पर आधारित अनेक विचारधाराएं हैं जो व्यक्ति को अनास्था का पाठ पढ़ाकर उनके मस्तिष्क को विकृत कर देती है। तुम्हें उन सबसे बचना है। मैं तुम्हें कहना चाहता हूं कि तुम महर्षि दयानन्द के शिष्य हो, उन्हीं के ग्रन्थों का मनन करो और उन्हीं से अपनी दिशा निर्धारित करो।

पर याद रखो, पुष्ट शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क वाले व्यक्ति ही भ्रष्ट आचरण के दोषी देखे गये हैं। मैं तुम्हें अच्छे चरित्र का भी उपदेश देना चाहता हूं। कोई भी ऐसा काम मत करो जिसे करने पर तुम्हें गर्व न हो। अच्छे चरित्र की निशानी यही है कि व्यक्ति अपने किये हुए काम का एक जगह वर्णन कर सकता हो। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को बता ही नहीं सकते तो वह निषिद्ध कर्म है, उससे बचो। तभी चरित्र पुष्ट होता है।

यह सच है कि आज के युग में सत्याचरण करने व ईमानदारी से रहने में अनेक कठिनाइया आती हैं। पर तुम जिस ऊंची और महान संस्था से सम्बद्ध हो और जिस देव पुरुष महर्षि दयानन्द की तुम सन्तान हो उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

स्मरण रखो तुमने वही काम करने हैं जो दूसरो के कल्याण के लिए हों। यदि तुम्हारे किसी काम से किसी को हानि होती हो, उसे कभी मत करो। महाभारत मे धर्म की परिभाषा—"आत्मन. प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्" के रूप में की गई है। दूसरे के प्रति वही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी काम से किसी का दिल न दुखे। वरन तुम्हारे कामो से दूसरो का कल्याण होना चाहिए। महात्मा तुलसी दास ने 'परहित सरिस धरम न हिं कोई' कहकर मनुष्य को यही प्रेरणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने ग्रन्थों में बारम्बार यही कहा है कि समार का उपकार करना सबका परमधर्म है।

मैं यह सब तुम्हें इसलिए कह रहा हूं कि देश का युवा वर्ग आज किंकर्तव्य विमूढ है, वह कुछ करना चाहता है, पर उसे कुछ सूझता नहीं है। उसके सामने आज कोई आदर्श नही है। मुझे विश्वास है कि दयानन्द के शिष्य उनके लिए आदर्श सिद्ध होंगे।

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतन्त्र कराने के लिए इस देश के हजारों युवकों ने प्राणो की आहुति दी थी। आर्य समाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता मे महान योगदान दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विदेशों मे भी किया, जिससे देश का स्वाभिमान जागा। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीतसिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, ठा० रोशन सिंह जी, सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यार सिंह, श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता-प्रेमियों ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने को बलिदान किया मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बंगाल के अकाल, बिहार के भूकम्प, देश-विभाजन और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन १९५७ में पजाब में हिन्दी रक्षा-आन्दोलन आदि द्वारा आर्य समाज ने सदा अन्याय के विरुद्ध सघर्ष किया।

देश को स्वतन्त्रता दिलाने में, देश की कुरीतियों व अन्ध विश्वासों को विनष्ट करने मे, देश की शिक्षा-प्रणाली में भारतीयता का स्वर भरने में स्त्री जाति के उद्धार मे, दलित एवं अछूत कही जाने वाली जातियों के उत्थान में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रकट करने में तथा अपने देश के गौरवपूर्ण ऐतिहा-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शास्त्रार्थ महारथी पंडित बिहारीलाल शास्त्री

श्री भवानीलाल भारतीय

अद्भुत शास्त्रार्थी, तार्किक, प्रबल वक्ता तथा उपदेशक बिहारीलाल शास्त्री का जन्म फाल्गुन शुक्ला तृतीया सं. १९४७ वि. मुरादाबाद जिले के पामबड़ा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं० अयोध्या प्रसाद था जो भारद्वाज गोत्रीय गौड़ ब्राह्मण थे। परिवार में खेती तथा लेन देन का काम होता था। बिहारीलाल जी का संस्कृत अध्ययन पं० लोकनारायण तथा उनके पुत्र पं० केदारलाल से हुआ। इनके निकट रहकर उन्होंने अमर कोश, लघु कौमुदी आदि ग्रन्थ पढ़ प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्हें सम्भल की संस्कृत पाठशाला में अध्यापक का कार्य मिल गया। पं० बंशीधर पाठक तथा पं० शिव शर्मा के सान्निध्य से वे आर्य समाजी बने। कुछ समय तक मुरादाबाद के इस्लामियां स्कूल में शिक्षण कार्य किया, पुनः रतनपुर की जैन पाठशाला में भी शिक्षक रहे। जब पं० भोजदत्त शर्मा ने आगरा में आर्य मुसाफिर विद्यालय की स्थापना की तो बिहारीलाल जी वहां उपदेशक कक्षा को पढ़ाते रहे। १९२० से १९२४ तक आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर के अन्तर्गत प्रचार कार्य किया।

कालान्तर में बरेली के सरस्वती विद्यालय में अध्यापन कार्य किया। अन्ततः जिला बदायूं के ऊंझानी कस्बे में म्यूनीसिपल इण्टर कालेज में संस्कृत के प्रवक्ता पद पर कार्य करते हुए १९५६ में अवकाश ग्रहण किया। यद्यपि आप विभिन्न स्थानों पर रहते हुए भी धर्म प्रचारार्थ जाते थे, किन्तु अवकाश ग्रहण कर लेने के पश्चात् तो आपने सर्वात्मा प्रचार कार्य को ही अंगीकार कर लिया। पं० बिहारीलाल शास्त्री ने अपने जीवन काल में विभिन्न मतानुयायी विद्वानों से अनेक बार शास्त्रार्थ किये। जिनमें आपको सदाविजय श्री प्राप्त होती रही। आप एक ओजस्वी वक्ता तथा उत्कृष्ट लेखक भी है। आपके द्वारा लिखित साहित्य का विवरण इस प्रकार है :—

वेद वाणी—वेद विषयक निबन्धों का संग्रह प्रथम संस्करण।

वेद वाणी—द्वितीय संस्करण जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर द्वारा २०२५ वि० में प्रकाशित।

पशुबलि और वेद।
योगराज श्री कृष्ण।
इसलाम का स्वरूप।
धर्म तुला।
चार शास्त्रार्थ।
वैदिक पताका।

दम्भ दमन प्रथम संस्करण २०११ में श्री चन्द्रनारायण एडवोकेट तथा द्वितीय संस्करण १९७३ ई० में भद्रगुप्त वैद्य प्रधान आर्य समाज बिहारीपुर बरेली द्वारा प्रकाशित।

प्रमद चरण।

मूर्तिपूजा पर प्रामाणिक शास्त्रार्थ।

क्या मूर्तिपूजा वेदोक्त है? प्रेम पुस्तक भण्डार बरेली से २०२१ वि० में प्रकाशित उपर्युक्त मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त शास्त्री जी ने स्वामी दर्शनानन्द कृत वेदान्त दर्शन के उर्दू भाष्य (अपूर्ण) का हिन्दी अनुवाद किया। यह अनुवाद प्रेम पुस्तक भण्डार बरेली द्वारा १९५१ ई० तथा १९७३ ई० मे प्रकाशित हो चुका है। उनका चाणक्य नीति का भाषानुवाद तथा दृष्टान्त सागर भी प्रकाशित हुए हैं। चाणक्य नीति का यह अनुवाद धर्मसिंह सत्यदेव आर्य बरेली द्वारा १९३४ ई० में सर्व प्रथम प्रकाशित हुआ था।

डा० शिवसागर रामगुलाम

(पृष्ठ ६ का शेष)

थी। इस संस्थान के लिए भारत सरकार द्वारा बहुत सहायता मिली थी और अब भी मिलती है। शिलान्यास विधि और उद्घाटन विधि के मौकों पर टापू के प्रधान मन्त्री की हैसियत से डाक्टर रामगुलाम जी ने भारत सरकार को बहुत धन्यवाद किया था और आभार भी प्रगट किया था।

गत वर्ष की बात है भारत से राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी मौरिशस में विराजे थे। उन्होंने टापू के दक्षिण भाग में एक बड़ा अस्पताल बनाने की आधार शिला रखी। उनकी वापसी से पूर्व गवरनर जनरल की हैसियत से डाक्टर रामगुलाम जी ने एक खास जलपान का आयोजन किया था। जिसके दौरान श्री जैलसिंह जी से हमें भी बात करने का शुभावसर प्राप्त हुआ था।

डा० रामगुलाम जी के पिताजी भारत से कुली प्रथा के अन्तर्गत सन १८९२ में विराजे थे और बेलिल कोठी में निवास करते थे। सन १९०० में शिवसागर जी का जन्म हुआ था। भारतीय मजदूरों की दुर्दशाओं को शिवसागर जी ने बहुत पास से देखा था, पास की पढ़ाई प्राथमिक पाठशाला में हुई थी। उसके बाद आप रोयल कालेज में माध्यमिक शिक्षण के लिए भर्ती हुए थे। डाक्टरी का अध्ययन करने के लिये लन्दन गये थे। वहां पर आप पत्रकारिता का भी अध्ययन करने लगे थे और मौरिशस लौटने पर आप ने गरीबों, असहाय जनों के लिए अपनी कलम चलाई और 'आड्वान्स' नाम से एक पत्र का श्रीगणेश किया था, कालान्तर में आपकी कृपा से हिन्दी में भी एक अर्ध साप्ताहिक पत्र 'जनता' नाम से प्रकाशित होने लगा था इन पत्रों के लिए आपने बहुत काम किया।

१५ दिसम्बर को सायंकाल ४.४५ को आप का शरीरांत हुआ तो रेडियो द्वारा यह दुःखद समाचार प्रसारित होने पर सारा टापू शोक सागर में डूब गया, गरीबों ने, वृद्धों ने इनकी याद में बहुत आंसू बहाए। बहुत लोग अन्तिम विदाई के लिए पधारे थे। अन्तिम संस्कार के लिये शव १७ मील दूर पाम्प्लेमूस बाग की ओर ले जाया जा रहा था तो रास्तों के दोनों तरफ नर-नारी कड़ी धूप में खड़े होकर उन्हें अन्तिम विदाई दे रहे थे।

प० तुलसी जी ने अन्तिम संस्कार किया था। स्वामी दिव्यानन्द जी ने वेद मन्त्र पढ़े थे।

भारत के उप राष्ट्रपति श्री वेन्कटारमन जी एक प्रतिनिधि के साथ पधारे थे और आपने भावभीनी शब्दों में सम्वेदना प्रगट की थी। हमारे टापू के प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी, स्थानापन्न गवरनर जरनल श्री कसाम मोलान जी और डा० शिवसागर जी के सुपुत्र डा० नवीन रामगुलाम जी के प्रति सम्वेदना प्रकट की थी। संसार की सभी दिशाओं से सम्वेदना के सन्देश आये थे। राष्ट्र संघ द्वारा उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई थी।

आर्य युवकों के नाम संदेश

(पृष्ठ ७ का शेष)

सिक पृष्ठों को उजागर करने मे आर्ययुवकों का कार्य अविस्मरणीय है।

क्या तुम आर्य समाज के उस गरिमापूर्ण इतिहास को स्मरण करके उसी प्रकार का आदर्श प्रस्तुत नहीं कर सकते? निश्चित कर सकते हो। यदि मन में ऊंची भावना हो। हृदय में यौवन हिलोरें ले रहा हो और मस्तिष्क में उथल-पुथल हो तो सब कुछ हो सकता है।

आज का युवक अपने महापुरुषों से देश के गौरवपूर्ण इतिहास से, अपने प्रेरक पर्वों से कट चुका है। आर्य समाज उन्हें उसी जड़ से फिर से जोड़ना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशों से होने वाला नहीं है। उसके लिए उदाहरण चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम उनके लिए उदाहरण बनोगे और उनका मार्ग दर्शन करोगे।

युवा वर्ग में यदि तुमने यौवन के वास्तविक आदर्शों को अपने जीवन में धारण कर लिया तो उससे जहां तुम्हारा अपना कल्याण होगा, आर्य समाज का नाम ऊंचा होगा वह राष्ट्र भी समुन्नत होगा। विश्व को एक नई दिशा प्राप्त होगी। आओ! मेरे वीरो, कमर कस लो। एक बार संकल्प करने की आवश्यकता है फिर मंजिल तुम्हारे कदम चूमेगी।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४–८५)

(गतांक से आगे)

(१४) श्री शम्भूसिंह सूबेदार स्थिर निधि ५ हजार रुपए

इस निधि का ब्याज वेद प्रचारार्थ सभा व्यय करेगी। (अन्तरग दिनाक १६-१०-८२ द्वारा स्वीकृत) वर्ष के अन्त मे ब्याज के १०००) रुपए जमा थे।

(१५) स्व. श्रीमती चन्द्रवती नई दिल्ली स्थिर निधि तीन लाख पच्चीस हजार रुपये मात्र

की यह निधि स्थापित की गई। अन्तरग दिनाक १५-१२-८४ द्वारा स्वीकृत हुई। जिसका ब्याज आर्य कन्याओं की शिक्षादि की व्यवस्था आदि पर व्यय किया जायेगा।

१–वीर विद्यासागर शुद्धि एवं दलितोद्धार स्थिरनिधि १ हजार

यह निधि श्री विद्यासागर जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री देवेन्द्रनाथ शास्त्री १५ आर्य कुटीर नरेला ने अपने कनिष्ठ भ्राता की स्मृति में स्थापित की १-९-८३ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृति दी गई। वर्ष के अन्त मे १६०) रुपये ब्याज के जमा थे।

२–श्री चौ. टोपनदास व श्रीमती रामदेवी सहायता स्थिर निधि

इस निधि की ब्याज, भूकम्प, बाढ़ अकाल, सूखा आदि से पीड़ितों की सेवा, सहायता एव रक्षा कार्य पर व्यय किया जायगा।

९-४-८३ की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत हुई। इस समय तक २०००) प्राप्त हुआ है आगे धन बढ़ाने की स्वीकृति दी गई।

३–श्री कल्याणमल मांगीलाल तापड़िया साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें

(१) इस निधि का ब्याज ही वैदिक साहित्य के प्रकाशनार्थ खर्च होना। मूल राशि नही।

(२) इस राशि को कभी भी निधि कर्त्ता अथवा उसके किसी सम्बन्धी को को वापस लेने का अधिकार न होगा।

४–श्रीमती रामजीबाई श्री मूलचन्द भूटानी धमार्थ औषधालय स्थिर निधि एक लाख रुपए

(संस्थापक श्री गोविन्दराम भूटानी)

शर्तें

(१) इसका ब्याज ही व्यय होगा। मूल राशि नही।

(२) इस निधि मे वृद्धि करने का भी दानी को अधिकार होगा।

(३) औषधालय ग्रेटर कैलाश मे खोला जायगा।

(४) ब्याज श्री गोविन्दराम जी या मन्त्री आर्य समाज ग्रेटर कैलाश द्वारा प्रमाणित औषधियो के बिलो के भुगतान मे खर्च होता रहेगा। यह निधि १५-१२-८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत हुई।

५–श्रीमती यशोदा देवी सहायता स्थिर निधि ४ हजार रुपए

इस निधि का ब्याज अनाथ बच्चो की पढ़ाई पर खर्च होगा और सभा को खर्च करने का अधिकार होगा। निधि कर्ताओ या उसके किसी सम्बन्धी को मूल राशि वापस लेने का अधिकार न होगा। (१५-१२-१९८३ की अन्तरग द्वारा स्वीकृत।) वर्ष के अन्त मे ब्याज के ३७३)३४ जमा थे। (क्रमश)

21वीं सदी की ओर
विज्ञान की नई मंजिलें
कम्प्यूटर युग की हलचल
सागर की गहराइयों में हमारे कीर्तिमान
अंतरिक्ष में उड़ते यान, अंटार्कटिका के सफल अभियान।
एक महापरिवर्तन, हरेक मोड़ पर
हमारी प्रतीक्षा करता हुआ
एक नई क्रान्ति दरवाजे पर दस्तक देती हुई
हमें तत्पर रहना है इसके स्वागत के लिए।
अवश्य ही विज्ञान और उद्योग से
हम दूर करेंगे—गरीबी और अन्य समस्याएं
और बढ़ते चलेंगे
हम सब मिल कर आगे ही आगे ....
davp 85/419

आर्यसमाजों की गतिविधियां

शुद्धि अभियान

मौलाना अमीरुद्दीन निराला अमरेश सिंह बने

मौलवी की उपाधि के साथ कालेज से एम०ए० की उपाधि प्राप्त की है। मनिहारी कठियार २४ दिसम्बर श्री जयप्रकाश आर्य ने सभा-कार्यालय में बताया कि श्री लाला रामगोपाल जी द्वारा चलाये गये शुद्धि अभियान के अन्तर्गत २४ दिसम्बर को श्री पं० गंगाधर महोपदेशक बिहार आर्य प्रतिनिधि के द्वारा श्री मौलाना अमीरुद्दीन जी का शुद्धि संस्कार सम्पन्न हुआ ये शुद्धि संस्कार श्री जयप्रकाश जी के सहयोग द्वारा सम्पन्न हुआ इस अवसर पर मौलाना ने रात्रि के भाषण में बताया कि एक साल तक सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय एवं पण्डित जयप्रकाश जी से पत्र व्यवहार के बाद मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं। वास्तविक धर्म वैदिक धर्म ही है। कुरान जो दुनिया की दूसरी कोमों को खत्म करने का आदेश देता है वो वैदिक धर्म की तुलना में मानव धर्म नहीं हो सकता उन्होंने आचार्य गंगाधर जी के सामने यह प्रण लिया कि वे पूरे जीवन वैदिक की सेवा करेगे उन्होंने पूज्य लाला रामगोपाल जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि लाला जी द्वारा चलाये जा रहे शुद्धि आन्दोलन के द्वारा हम अन्धकार से निकल कर प्रकाश के वातावरण में आ गये हैं। शुद्धि में श्री अमरेशसिंह एवं उनकी धर्मपत्नी नजमुन निशा का नाम नीलम रखा एव उनके पुत्र रहनान का शुद्ध नाम उदय प्रताप एव बच्चो का कुसुम आर्य रखा गया। शुद्धि के अवसर पर निम्न महानुभाव श्री जनकप्रसाद जी आर्य मन्त्री आर्य समाज श्री रामनारायण जी एव अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

१८ परिवारों की शुद्धि

आचार्य देवप्रकाश धर्म प्रचार समिति अमृतसर द्वारा २५-१२-८५ को गोइन्दवाल तहसील तरनतारन में बरड मुसलमानों के १८ परिवारों के १२२ सदस्यों की शुद्धि करके वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इसके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री ज्ञानी रामसिंह जी, श्री नन्दकिशोर आर्य, मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, श्री सोहनसिंह जी थे।

—भोलानाथ दिलावरी, महामन्त्री

शोक सन्देश

भारत की अनेक आर्य समाजों की ओर से आर्यसमाज के दिवंगत नेता श्री पृथ्वीसिंह जी आजाद के प्रति शोक प्रस्ताव सभा कार्यालय में प्राप्त हो रहे हैं। इस सप्ताह में आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार, लुधियाना, संगरूर, अजमेर (राजस्थान) रजौली, नवादा (बिहार) बड़ा बाजार कलकत्ता, आर्य सभा पटना, सिरायु इलाहाबाद दिल्ली तथा नई दिल्ली की आठ आर्यसमाजों में शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

—आर्यसमाज हनुमानगढ़ के प्रधान जी की धर्मपत्नी के देहान्त पर आर्यसमाज की ओर से शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

— मन्त्री

—आर्य समाज मैनपुरी की ओर से स्थानीय समाज के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र एडवोकेट की मृत्यु पर शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया। —मन्त्री

—गत मास आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव अति उत्साह से सम्पन्न हुये आर्य समाज बीसलपुर, पीलीभीत, कटरा प्रयाग इलाहाबाद, ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर बुलघाट, गाजियाबाद, लहेरियासराय (बिहार), बादेपुर, गोड़ बिजनौर, पूर्णिया, बांदा इन सभी स्थानीय समारोहों में जनता ने काफी योग दान दिया तथा अनेक युवक आर्य समाज के सदस्य बने।

विदेशों में आर्यसमाज की स्थापना

समय-समय पर विदेशो में भिन्न-भिन्न स्थानो पर आर्यसमाज की स्थापना के समाचार प्राप्त होने पर "सार्वदेशिक" द्वारा आर्य जनता को जानकारी दी जाती है अब श्री चन्द्रप्रकाश जी (Mississauga) (Canada) से सूचित करते हैं कि मिसियागा में पं० सत्यपाल जी वेद शिरोमणी की अध्यक्षता में आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर लगभग पांच सौ व्यक्तियों ने यज्ञ में भाग लिया और ऋषि लंगर के उपरान्त समाज को तीस हजार रुपये दान में मिले इस शुभ अवसर पर आर्य समाज के कार्य को नियमानुसार चलाने के लिए निम्नलिखित बन्धु पदाधिकारी सर्व समिति से निर्वाचित हुए—प्रधान डा० श्री रवि श्रीवास्तव, उपप्रधान श्री चन्द्रप्रकाश गुप्त, मन्त्री श्री जे०एन० धवन, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र कश्यप, अन्तरग सदस्य सर्वश्री प० सत्यदेव शर्मा, श्रीमती उषाकुमार और पूनम सरवाना।

—ओम्प्रकाश त्यागी, सभामन्त्री

नेपाल में आर्य समाज के बढ़ते कदम

नेपाल में रामपुर आर्यसमाज की स्थापना हुई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

श्री सुखराम जी दास प्रधान, श्री तपसी साह उपप्रधान, भादोलाल साह मन्त्री, चुनहाई साह कोषाध्यक्ष, संयोजक जादोलाल साह रामपुर परवानिपुर, जिला बारा नारायणी (नेपाल)।

जयमूर्ति नगर (नवकटना) नेपाल में आर्य समाज की स्थापना हुई जिसमे निम्न पदाधिकारी मनोनीत हुये।

श्री रामरेखा प्रसाद यादव प्रधान, श्री राम एकबाल साह उपप्रधान रामनारायण साह मन्त्री श्री अभन प्रसाद यादव कोषाध्यक्ष अन्य १३ व्यक्तियों की अन्तरग सभा का गठन हुआ।

नेपाल में (वगाहग) में वेद पारायण यज्ञ

श्री प्रेमनारायण प्रसाद उपाध्याय शास्त्री के आचार्यत्व तथा वगाहग गुरुकुल के व्यवस्थापक के प्रबाचकत्व में ता० १४-१२-८५ से १६-१२-८५ तक गायत्री यज्ञ तथा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर नेपाल के क्रान्तिकारी श्री रामचन्द्र तथा सुवन्त के प्रवचन हुए यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन एक सभा का आयोजन श्री प्रेमनारायण जी उपाध्याय सभापतित्व में हुआ जिसमें नेपाल वारा तथा पर्सा के हजारों लोगो ने भाग लिया।

डा० द्विवेदी सम्मानित

ज्वालापुर हरिद्वार) गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी को आर्यसमाज शताब्दी समारोह कलकत्ता द्वारा वैदिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये ५०० रुपये नगद तथा शाल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर डा० द्विवेदी के अतिरिक्त डा० सत्यकेतु विद्यालंकार एव महात्मा आर्य भिक्षु को भी पुरस्कृत किया गया।

— आर्येन्द्र आर्य

सभा का आयोजन

आर्यसमाज मदुरै (तामिल नाडु) ने दिनांक २६ दिसम्बर १९८५ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक सभा का आयोजन किया जिसमें स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता, कोठारी उद्योग के चेयरमैन श्री नन्दकिशोर राठी ने की। इस अवसर पर भूतपूर्व महापौर श्री एस०के० बालकृष्णन्, भूतपूर्व संसद सदस्य श्री एस० टी० के० जक्कियन् भूतपूर्व उपमहापौर श्री के० सन्यानम्, श्री जयदेव प्रसाद बसल आदि अनेक वक्ताओं ने अपने भाषणों में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा आर्यसमाज के द्वारा देश-सेवा के क्षेत्र में किये गये कार्यों की सराहना की।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

परिवार में संगठन से श्रीवृद्धि

इहैव हवमा यात म इह संस्रावभागा उतेमं वर्धयता गिरः ।
इहैतु सर्वो यः पशुः अस्मिन् तिष्ठतु या रयिः ॥
अथर्व० १।१५।२॥

हिन्दी अर्थ—हे देवो ! मेरे आह्वान पर यहां ही आइए। संगठन की वाणियां इस (परिवार) को बढ़ावें। जो कुछ भी पशु समृद्धि है, वह सारी यहां आवे। जो भी सम्पत्ति है, वह सब इस (परिवार) में रहे। —डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क ४७] माघ कृ० ८ सं० २०४२ रविवार २ फरवरी १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले का पोपपाल के आगमन पर केन्द्रीय गृहमंत्री को पत्र

माननीय श्री एस०बी० चह्वाण जी
गृहमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सेवा में सादर नमस्ते !

विषय—फरवरी १९८६ में पोपपाल के भारत आगमन के अवसर पर रांची जिले में आदिवासियों के सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए ईसाई मिशनरियों द्वारा बनाई गई योजना

मान्यवर,

उपरोक्त विषय में आपका ध्यान आकर्षित करते हुए निवेदनहै कि—

१—इस समस्या के मूल में ब्रिटिश शासकों द्वारा अपनाई गई "फूट डालो और राज्य करो" की नीति अभी तक कार्य कर रही है। उन्होंने बड़ी चालाकी से भारतीय जनता को विभिन्न धार्मिक, क्षेत्रीय और जातीय वर्गों में बांटने का काम किया जिससे भारत की सांस्कृतिक एकता खण्डित हो जाय। दक्षिण बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र के अन्तर्गत चार जिलों में अनुसूचित जन-जाति के लोगों की संख्या बहुत अधिक है। यह क्षेत्र लगभग १०० वर्षों से ईसाई मिशनरियों का कार्य क्षेत्र बना हुआ है। यहां पर इन्होंने काफी संख्या में जनता को ईसाई बना लिया है। धर्म परिवर्तन की यह प्रक्रिया सन् १९४७ में भारत की स्वतन्त्रता के बाद तो और भी तेज हो गई है। सन् १९७१ और १९८१ में की गई जन-गणना से इस बात की पुष्टि हो जाती है। रांची जिले में सन् १९७१ में ईसाई मतावलम्बियों की संख्या ९ प्रतिशत थी और १९८१ में बढ़कर १३ प्रतिशत हो गई है।

२—खूंटी और टोरपा (जिला रांची) के ईसाई चर्च द्वारा घोषणा की गई है कि फरवरी ८६ में जब पोपपाल भारत आयेंगे, तब उनके रांची पधारने पर एक लाख आदिवासियों को ईसाई बनाकर उनके सामने भेंट स्वरूप प्रस्तुत किया जायेगा। इस घोषणा से रांची क्षेत्र में काफी तनाव बढ़ गया है। यहां के प्रत्येक चर्च को १००० से १५०० तक आदिवासियों को ईसाई बनाने का कोटा दिया गया है। इस कार्य के लिये ईसाई मिशनरियों ने अपने सारे साधन जुटा लिये हैं। यातायात के लिये सैकड़ों जीप-कार और मोटर साइकिलें तैयार हैं। बांटने के लिये विभिन्न वस्तुएं प्रचुर मात्रा में एकत्रित की जा चुकी हैं। गांवों में जगह-जगह सभायें की जा रही हैं, जहां धर्म परिवर्तन के लिये भोली-भाली जनता को तरह-तरह के प्रलोभन दिये जाते हैं। इसके लिये पुराने धर्म परिवर्तित व्यक्तियों की सहायता ली जा रही है। जो अन्य लोगों को लालच देकर कभी डरा-धमका कर और कभी जाल साजी से धर्म परिवर्तन करने के लिये बाध्य करते हैं और इस प्रकार उनकी गरीबी, अशिक्षा और असहाय परिस्थितियों का अनुचित लाभ उठाते हैं। ऐसे लोगों के मन में बार-बार के प्रचार से यह भावना भर दी जाती है कि उनके उत्थान के लिये ईसाई धर्म को अपनाने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं है। हमे डर है कि आने वाले समय में इस प्रकार के धर्म परिवर्तन के अवसर पर साम्प्रदायिक दंगे न भड़क उठे।

३—वित्तीय साधनः—इस कार्य के लिये ईसाई मिशनरियों के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य महासम्मेलन नेपाल के अवसर पर सारगर्भित भाषण देते हुये लाला रामगोपाल शालवाले

सम्पादक—ओमप्रकाश त्यागी
प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

नेपाल में विशाल आर्य महासम्मेलन संपन्न

वीरेन्द्र सभा गृह विराट नगर में

२२ जनवरी १९८९,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला रामगोपाल शालवाले ने नेपाल अधिराज्य के प्रथम आर्य महासम्मेलन में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए विराट नगर के खचाखच भरे वीरेन्द्र सभागृह में कहा कि संसार के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल पर हमें गर्व है। इस आर्य भूमि पर पैर रखने के पश्चात हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। उन्होने नेपाल सरकार से शिकायत करते हुए कहा कि जब यहां के संविधान में हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध है फिर भी यहा के गरीब नागरिकों को नेपाल की सीमा से बाहर ले जाकर मुसलमान और ईसाई बनाकर नेपाल के नागरिक के रूप मे बसाया जा रहा है। उन्होंने विधर्मियों की इन गतिविधियो को नेपाल के लिए खतरे की घटी की संज्ञा देते हुए कहा कि नेपाल सरकार को इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम वह दिन देखना चाहते हैं जब हिन्दू राष्ट्र नेपाल के महाराजाधिराज अश्वमेधयज्ञ करके विश्व मे वैदिक साम्राज्य की स्थापना हेतु विजय यात्रा की तैयारी करेंगे।

उन्होने आगे कहा कि हर संकट के समय आर्य समाज हिन्दू जाति की रक्षा के लिए ढाल बनकर हर विपत्ति को अपने सीने पर झेलता रहा है। भाषण को समाप्त करते हुए उन्होने कहा कि आर्य समाज कोई मजहब, धर्म, सम्प्रदाय, मत या पन्थ नही बल्कि स्वामी दयानन्द द्वारा सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की थी। कोशी अंचलाधीश श्री सूर्य बहादुर सैन ओली ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मातृका प्रसाद कोईराला ने की तथा भूतपूर्व प्रधान मन्त्री एव विश्व हिन्दू संघ नेपाल के अध्यक्ष श्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल सरक्षक सभापति थे।

अंचलाधीश श्री सैनओली ने अपने भाषण मे लाला जी की बातो पर सहमति व्यक्त करते हुए उनसे बार बार नेपाल आकर नेपाल की जनता का मार्ग दर्शन करने का आग्रह किया और कहा श्री शालवाले ने नेपाल राष्ट्र को अश्वमेध यज्ञ की चर्चा करके जो गौरव प्रदान किया है उसके हम आभारी हैं।

श्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल ने कहा कि हिन्दुओं की सहज स्वाभाविक आकांक्षा है।

नेपाल हिन्दू धर्म समन्वय समिति एवं सनातन धर्म सेवा समिति के अध्यक्ष प्रो० केशव शरण ने अधिराज्य में फैलते हुए इगलिश बाडिंग स्कूलों की जाल पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम से ईसाई मिशनरिया नेपाल की संस्कृति पर अघोषित आक्रमण कर रहे। इसका सामना करने के लिए उन्हें सभी हिन्दू संगठनों के समन्वित प्रयास पर बल दिया।

इस अवसर पर प० जगन्नाथ शर्मा शास्त्री स्वामी कैलाशानन्द, पं० कमलाकान्त अत्रे (असम) नेपाल के वैदिक प्रचारक प० प्रेम नारायण गौतम, पं० पुण्य प्रसाद उपाध्याय, श्री विष्णु शिवाकोटी (काठमाडू) प० छविलाल पोखरेल (धरान) एव मोरग के जिलाधिकारी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

सम्मेलन की कार्यवाही का संचालन युवा महासचिव श्री प्रकाश चन्द्र सुवेदी ने बड़े ही रोचक एवं ओजस्वी ढंग से किया। सुश्री पवित्रा उप्रेती एवं सुश्री राधिका उप्रेती का युगल संस्कृत स्वागत गान एवं सिलीगुड़ी की सुश्री नम्रता वर्मा के वैदिक गीत से समागृह में धार्मिक समां बांध दिया।

आर्य समाज विराट नगर के अध्यक्ष श्री सीता राम अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

—नित्यानन्द, आर्य समाज विराटनगर, नेपाल

वीरेन्द्र सभागृह में सम्पन्न नेपाल आर्य महासम्मेलन की झलकियां

विराट नगर २२ जनवरी को खचाखच भरे वीरेन्द्र सभागृह मे वैदिक धर्म के गगनभेदी नारों के साथ सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। मातृप्रसाद कोयराला की अध्यक्षता में कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री लाला रामगोपाल शालवाले थे। नेपाल के अंचलाधीश श्री सैन ओली ने नेपाल की जनता की ओर से सभा प्रधान को नेपाली टोपी पहनाई। इस महासम्मेलन में नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल ने महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के बारे मे अपने विचार प्रकट किये।

आर्य महा सम्मेलन नेपाल के अवसर पर दाये से प्रमुख जिला अधिकारी, भू.पू प्रधानमन्त्री मातृकाप्रसाद कोयराला, सार्व० सभा प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले, भू.पू प्रधान मन्त्री न.गेन्द्र प्रसाद रिजाल कोशी अन्चलाधीश, स्वामी कैलाशानन्द, खेमराज, केशव शरण, भूपनारायण शास्त्री, डी. आई जी प० जगन्नाथ शास्त्री आदि वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना के लिए नेपाल के उच्च नेताओं के साथ।

आचार्य गणेश शंकर शास्त्री गुरुकुल बमेटा साईकिल-टैम्पो टक्कर दुर्घटना में दिवंगत

गाजियाबाद। गुरुकुल बमेटा (गाजियाबाद) के आचार्य श्री गणेश शंकर शास्त्री गत ६ जनवरी को टैम्पो-साईकिल मे टक्कर के कारण सफदरजंग हास्पिटल में चिकित्सा सहायता के पश्चात् दिवंगत गये। शास्त्री जी के धातु-पाठ पद्धति से अष्टाध्यायी अध्ययन कराने की अनुपम पद्धति की प्रशंसा स्वयं पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु मुक्त-कण्ठ से किया करते थे।

गत चार वर्ष से शास्त्री गणेश-शंकर जी बमेटा ग्राम मे गुरुकुल स्थापनार्थ कृत सकल्प थे। लम्बी तपस्या के पश्चात ग्राम पंचायत ने दो तीन बीघा जमीन गुरुकुल के निमित्त प्रदान कर दी थी, उसमे आपने अथक परिश्रम करके एक कमरा बनवाया, दूसरे की दीवारें खड़ी करदी, छत पडनी थी। ऐसे असमय मे यह दुर्घटना घटी।

गुरुकुल बमेटा के ब्रह्मचारियो के सदमे से उपस्थित जन समुदाय भाव विह्वल हो उठा। २ फरवरी को गुरु-कुल बमेटा में समस्त क्षेत्र की संस्थाएं और ग्राम सरदार इकट्ठे होकर गुरु-कुल के सचालन आदि पर निर्णय लेकर शास्त्री जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

—ताना जी आचार्य

सभाप्रधान श्री शालवाले का पोपपाल के आगमन पर भारत के राष्ट्रपति को पत्र

सेवा में

महामहिम राष्ट्रपति जी,

सादर नमस्ते !

समाचार पत्रों की सूचना के अनुसार आपके निमन्त्रण पर पोपपाल १ फरवरी १९८६ को अपनी दस दिवसीय भारत यात्रा पर नई दिल्ली पधार रहे हैं। सरकारी सूत्रों के अनुसार उनकी यह यात्रा एक राष्ट्र अध्यक्ष के रूप मे होगी। ऐसा कि आप जानते ही हैं (वैटिकन) का क्षेत्रफल हमारे देश के राष्ट्रपति भवन क्षेत्र से भी कही अधिक कम है। उसे एक राष्ट्र की संज्ञा देना कहा तक उचित एवं तर्क संगत है यह मेरी समझ मे नही आ रहा है। वास्तविकता यह है कि पोपपाल की स्थिति ईसाई धर्म के प्रमुख मठाधीश से अधिक कुछ नही है। इस सम्बन्ध मे यह भी सूचना मिली है कि पोप की इस यात्रा का सम्पूर्ण व्यय जो लगभग दस करोड रुपया होगा, भारत सरकार वहन करेगी। इस देश की गरीब जनता पर इतना बोझ डालना हमारी सरकार के लिए कहा तक उचित है ? क्या सरकार इसका उत्तर देगी ?

जब पोप भारत आ ही रहे हैं। अतिथि सत्कार भारतीय संस्कृति की विशेषता सदा से रही है। यहा विडम्बना की बात यह है कि गाधी जी जब स्वयं १९३२ मे वैटिकन गये थे तो तत्कालीन पोप ने उनसे यह कहकर मिलने से इन्कार कर दिया था कि गाधी जी की पोशाक भेंट के अनुकूल नहीं है। पर भारत महान व उदार देश है। आज वही पोप का राजकीय स्वागत कर रहा है। किन्तु भारत की जनता आपसे यह देखने की अपेक्षा रखती है कि पोप हमारी इस सद्भावना का अनुचित लाभ न उठायें। वे ऐसा कुछ न कहें और न करें जो हमारी संस्कृति और संविधान के अनुरूप न हो। सन् १९६१ मे ईसाईयो का एक सम्मेलन दिल्ली मे हुआ था जिसमें माग की गयी थी कि ईसाई मिशनरियो को भारत मे धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक रूप से कार्य करने की अनुमति दी जाय। आज हमारे संविधान में उन्हें धर्म प्रचार की छूट तो है किन्तु सुप्रीम कोर्ट के अनुसार उन्हें आर्थिक एवं राजनैतिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नही है।

हमारी यह आशंका है कि पोपपाल की यह यात्रा एक मात्र सद्भावना यात्रा नहीं है। इसके पीछे ईसाई धर्म प्रचार की प्रच्छन्न योजना निहित है। इसके स्पष्ट संकेत तथा समाचार हमे मिल रहे हैं। दक्षिण बिहार के आदिवासी क्षेत्र और सुदूर दक्षिण के केरल राज्य मे स्थानीय ईसाई मिशनरी पोपपाल के आगमन के अवसर पर हिन्दुओं के सामूहिक धर्म परिवर्तन की योजना बना रहे हैं और इसके लिए साम, दाम, दण्ड भेद की सभी नीतिया अपनाई जा रही हैं। यह एक खतरनाक खेल है। हो सकता है भारत सरकार से एक बार फिर आर्थिक और राजनैतिक मामलो में हस्तक्षेप करने की अनुमति मागी जाएगी। यदि ऐसा हुआ तो स्थिति और गम्भीर हो जायगी।

यदि पोपपाल की यात्रा के पीछे धर्म प्रचार की भावना नहीं है तो वे इसका प्रमाण दें और भारतीय (हिन्दू) संस्कृति के मूलमन्त्र 'सर्वधर्म समभाव' में अपनी आस्था व्यक्त करें यही हमारी धर्म निरपेक्ष नीति का आधार है। इसके अन्तगत हिन्दू धर्म भी उतना ही सत्य और सार्वभौम है जितना कि वे ईसाई मत को मानते हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने मे पोपपाल को कोई आपत्ति नही होनी चाहिये और उनको किसी भी प्रकार के धर्म परिवर्तन से सम्बन्धित समारोह मे भाग नही लेना चाहिये। किसी भी विशिष्ट नस्ल अथवा जाति से सम्बन्धित धर्म मे परिवर्तन एक प्रकार से राष्ट्रीयता के परिवर्तन का रूप धारण कर लेता है। १९४७ मे हमे इसका अनुभव हो चुका है ? पोप की यात्रा से इस प्रकार के विघटन की बीज फिर न बोये जाय। हमारी यही चिन्ता है।

मैं आशा करता हूं कि आप हमारी इन भावनाओ को पोपपाल तक उनके भारत आगमन से पूर्व ही पहुंचाने की कृपा करेंगे।

समादर एवं शुभकामनाओ सहित—

महामहिम श्री जैलसिह जी
राष्ट्रपति भारत सरकार
नई दिल्ली

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
सभा प्रधान

दयानन्द गाली पुराण एवं गीता स्वरूप निर्णय पुस्तक जब्त तथा लेखक व प्रकाशक के खिलाफ मुकदमा दायर

गृहमन्त्री का सभा-प्रधान को पत्र

अ०स० पत्र स० II-१५०११/२/८६-आई.एस डी भो (डी-V)

प्रिय श्री शालवाले जी,

कृपया अपना तारीख ३-१ १९८६ का पत्र स० ४४२१ देखें जो "दयानन्द गाली पुराण" और "गीता स्वरूप निर्णय" नामक दो पुस्तकों के बारे मे है।

२—उत्तर प्रदेश सरकार ने सूचित किया है कि उन्होंने "दयानन्द गाली पुराण" नामक पुस्तक को पहले अवैध करार दे दिया है और दूसरी पुस्तक के बारे मे भी आदेश जारी किये जा रहे हैं। भारतीय दण्ड संहिता के संगत उपबन्धों के अधीन पुस्तक के लेखक और प्रकाशक के खिलाफ एक मामला भी दर्ज किया गया है। हमने राज्य के मुख्यमन्त्री से अनुरोध किया है कि वे इस बारे मे कारंवाई शीघ्र करवाए।

आपका
(शंकरराव चव्हाण)

पुस्तकें जब्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने सूचना दी है कि सभा की मांग को स्वीकार करते हुए उत्तरप्रदेश की राज्य सरकार ने मेरठ कालेज, के दर्शन विभाग के प्रोफेसर डा० राजेन्द्र कुमार वर्मा द्वारा लिखित "दयानन्द गाली पुराण" तथा "गीता स्वरूप निर्णय" को जब्त कर लिया है। साथ ही साथ लेखक और प्रकाशक के विरुद्ध मुकदमा भी दायर कर दिया है।

—मनमोहन तिवारी

अपना भारत देश महान्

—राधेश्याम आर्य

नव आशा अभिलाषाओं का, मिले धरित्री को वरदान।
प्रगति पथों पर बढता जाये, अपना भारत देश महान् ॥
सौम्य सुसंस्कृत शुचितापूरित-
सतत दिव्य हो भारतवर्ष।
हों कर्तव्यनिष्ठ सारे जन, लाभ मिले निर्माणों का।
भेद-भाव हो दूर धरा से, युग हो नवल विहानों का ॥
मानवता के तत्वों का हो—
पुनः भूमि पर नव उत्कर्ष।
प्रेम दया के, समरसता के, जन गण मन मे भाव जगे।
वसुधा के प्रांगण से सारी, दनुज वृत्तिया दूर भगें ॥
ज्योतिर्मय बने यह धरती—
बहुविधि फैले अतुलित हर्ष।
सत्य धर्म की ज्योति पुन. मानव-मन में हो जाग्रत।
पर-उपकार करें नारी-नर, सबमें आए भाव विनत ॥
स्वार्थ रहित हों कर्म हमारे—
बनित क्षोभ हो हम दुर्धर्ष ॥

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

श्री शालवाले का गृहमन्त्री को पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

पास काफी धन उपलब्ध है। जो स्पष्टत उन विदेशी शक्तियों द्वारा दिया जाता है जो भारत को कमजोर और खण्डित करना चाहते हैं। दान और पुण्य के नाम पर प्रत्येक गाव में इन मिशनरियों द्वारा इतना धन व्यय किया जा रहा है कि जितना सरकारी तन्त्र द्वारा अपने विभिन्न जन-कल्याण के कार्यक्रमों मे भी नहीं किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों मे लगभग एक करोड से भी अधिक रुपया भवन निर्माण पर व्यय किया गया है। इसके द्वारा स्कूलों के नये भवन, छात्रावास, कार्यकर्ताओं के निवास स्थान और चर्चों की एक शृंखला का निर्माण इस क्षेत्र में किया गया है। यहा के मिशनरी स्कूलों में एक आदिवासी कन्या को केवल बीस रुपया मासिक देना पडता है। शेष भोजन, आवास, पुस्तकें, यूनीफार्म आदि पर होने वाला व्यय चर्च द्वारा वहन किया जाता है।

४—अन्य प्रकार के लोभ।—प्रत्येक छोटे और बडे गाव मे एक एक आंशकालिक अथवा पूर्ण कालिक कार्यकर्ता नियुक्त किया जाता है जो परिवार नियोजन प्रचारक की तरह अपना शिकार ढूंढता रहता है। इस कार्यकर्ता का काम यह है कि वह अपने चर्च को उन व्यक्तियों की सूचना भेजें जो—

(क) कर्जदार हो और अपने महाजन के द्वारा सताये जाते हों।

(ख) किसी मुकदमे में फसे हों और जिन्हे विधि सम्मत सहायता की आवश्यकता हो।

(ग) जिनका परिवार अपने घर के मुखिया की मृत्यु के कारण आर्थिक सकट मे हो।

(घ) जमीन खरीदना अथवा अपनी जमीन में कुए खुदवाना चाहते हों लेकिन धनाभाव के कारण ऐसा करने में असमर्थ हों। इस प्रकार परिवारों को खुले हाथ से सहायता दी जाती है। उनके लिए बैंक की अपेक्षा चर्च से ऋण लेना आसान होता है। बाद मे यह ऋण सहायता के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। बशर्ते कि वह परिवार धर्म परिवर्तन को राजी हो जाय। यदि ऋण प्राप्त कर्त्ता चर्च की बात नही मानता तो पैसा वापिस करने के लिए डराया धमकाया जाता है और मानसिक रूप से परेशान किया जाता है।

यह कार्यकर्त्ता बिचौलियों का काम करते हैं और जिनकी सख्या मे ये दूसरे लोगो को धर्मपरिवर्तन के लिए तैयार कर लेते हैं, उसी अनुपात से चर्च द्वारा उन्हे पारिश्रमिक दिया जाता है। ये लोग अपने कार्य मे बहुत निपुण होते हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए—साम, दाम, दण्ड और भेद सब प्रकार की नीति अपनाते हैं।

(५) जालसाजी —कुछ इस प्रकार के भी मामले सामने आये हैं हैं जिनमे इन कार्यकर्त्ताओं ने अपने शिकार को किसी न किसी जाल में फासकर उसे धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया। एक मामले मे एक लडकी के माता पिता को बाध्य किया गया कि वे अपनी लडकी को ईसाई बनने दें। उस लडकी की एक ईसाई नवयुवक से जान-पहचान थी। उसके पिता को कहा गया कि उसकी लडकी उस युवक से गर्भवती हो गई है, अब यदि लडकी ने ईसाई बनकर उस नवयुवक युवक से शादी नही की तो उस पर युवक को फुसलाने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया जायगा। इस प्रकार के मामले काफी सख्या मे वहां प्रकाश में आए हैं।

(६) शिक्षित नवयुवतियों से विवाह लोभ —एक सबसे बड़ा लोभ जो आदिवासी युवकों को धर्म परिवर्तन के लिए दिया जाता है वह है शिक्षित आदिवासी युवतियो से विवाह करने का। यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि इस क्षेत्र मे आदिवासी लडकियों को शिक्षा के लिए न तो सरकार ने और न समाज ने कोई उचित व्यवस्था की है। जो कुछ शिक्षा दी जाती है, वह केवल ईसाई मिशनरी स्कूलों द्वारा ही दी जाती है।

इस प्रकार एक शिक्षित पत्नी को प्राप्त करना भी आदिवासी नवयुवकों के लिए बडे आकर्षण कारण बने गया है। सरकार को चाहिए कि इस क्षेत्र में आदिवासी लडके-लडकियों की शिक्षा के लिए अपने स्कूल और कालेज खोलने की व्यवस्था करे। साथ ही प्रतिभा-शाली विद्यार्थियों को देश के अन्य प्रदेशों में भेज कर उनकी उच्च शिक्षा की व्यवस्था करे, जिससे वे देश की एकता और सस्कृति का अनुभव कर सकें। उन्हे केवल आदिवासियों के लिए ही खोले गए स्कूलो तक सीमित न रखा जाय।

(७) सबसे महत्वपूर्ण विषय —भारत के उच्चतम न्यायालय के एक फैसले के अनुसार धर्म परिवर्तन के पश्चात् अनुसूचित जाति एव अनुसूचित जनजाति के सदस्यों को वे सब विशेषाधिकार और सुविधाए नहीं मिलेंगी जो वे धर्म परिवर्तन से पूर्व सरकार की ओर से प्राप्त करते हैं। आश्चर्य की बात है कि यह फैसला उन लोगों पर तो लागू किया जाता है जिन्होंने दूसरे धर्मों को अगीकार किया है किन्तु ईसाई धर्म मे दीक्षित होने वाले व्यक्तियों पर यह फैसला लागू नहीं किया जाता। यह भेद भाव क्यों? "ऐसा मालूम होता है कि सरकार ने कुछ विदेशी शक्तियो के राजनैतिक दबाव में आकर यह भेदभावपूर्ण नीति अपनाई है। यही कारण है कि छोटा नागपुर क्षेत्र के आदिवासी ईसाई बनने के पश्चात् भी सरकारी तन्त्र की ओर से सब सुविधाए प्राप्त करते रहते हैं जो धर्म परिवर्तन से पहले लेते रहे थे। इस प्रकार की दुहरी नीति से क्या सरकार स्वय ही धर्म परिवर्तन को बढावा नही दे रही है? यह गम्भीर तथा विचारणीय प्रश्न है। जो लोग धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहते, वे अपने आपको सरकार द्वारा ठगा गया समझते हैं।"

अत आपसे प्रार्थना है कि आप उपरोक्त मामले की गम्भीरता से जाच कराने की कृपा कर अनुगृहीत करें।

भवदीय
—रामगोपाल शालवाले
सभा प्रधान

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४–८५)

(गतांक से आगे)

६—श्री हरिकिशन लाल स्मृति (गाजियाबाद) स्थिर निधि १ लाख रुपए

(संस्थापक श्रीमती इन्द्रावती आर्या)

५००००) बैंक में फिक्सड डिपाजिट में जमा है जो सात वर्ष मे ब्याज दूना होकर १ लाख हो जायगा तभी निधि की शर्तों के अनुसार ब्याज खर्च किया जायेगा।

इस निधि का ब्याज निम्न प्रकार खर्च होगा।

१०००) वार्षिक अनुदान उपदेशक विद्यालय टंकारा।

५००) वार्षिक आर्य अनाथालय पाटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली। विकलांगो की सहायतार्थ।

५००) आर्य अनाथालय फिरोजपुर की लडकियों की शादियो के लिए।

१००००) वेद प्रचार आर्य वीर दल दयानन्द सेवाश्रम संघ मुख्यतः बांसवाड़ा, नागालैंड, आसाम पर्वतीय क्षेत्रों के पिछड़े वर्गों के उत्थान, धर्म रक्षा महाभियान, मीनाक्षीपुरम आदि के सेवा कार्यार्थ, अथवा यदि कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन में इस निधि के ब्याज का उपयोग आवश्यक हो तो पुस्तक में मेरे पतिदेव के साथ मेरा चित्र भी निधि के ब्याज से प्रकाशित करने के विवरण के साथ निधि का उल्लेख किया जाय।

प्रति वर्ष १७ सितम्बर को मेरे पूज्य पतिदेव हरिकिशनलाल जी की स्मृति में चित्र सहित संक्षिप्त जीवन परिचय भी निधि के उद्देश्य के उल्लेख सहित सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाय।

इस निधि के संचालन आदि पर सार्वदेशिक सभा का पूर्ण स्वत्व होगा।

जिस पत्र में इस निधि के विवरण का उल्लेख हो उसकी ३ प्रतियां निम्न पते पर भेजी जाती रहें :—

१—श्री दयाराम गोयल एडवोकेट (नोटरी) रमतेराम रोड गाजियाबाद

२—श्री जय किशन गुप्त ११/४६ पंजाबी बाग नई दिल्ली

३—श्रीमती जयश्री दीवान द्वारा श्री. के दीवान गुजरात रोड लश्कर ग्वालियर।

९—यशोवर्धन स्थिर निधि ५ हजार रुपए

(संस्थापित द्वारा श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद)

(पुत्र की पुण्य स्मृति में)।

शर्तें इस प्रकार हैं :

(१) कम से कम सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियो को नि:शुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

(२) इस निधि के ब्याज से मुख्यत स्व पं० रामचन्द्र जी देहलवी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि मे जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढ़ाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ मे यह राशि ३१००) थी। इस निधि की स्वीकृति १०-५-८१ की अन्तरंग बैठक ने दी यह निधि अब ६०००) रु० की हो गई है।

१०—श्री बनवारी लाल आर्य मध्यर स्थिर निधि ५ हजार रुपए

शर्तें

(१) इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा। मूल राशी।

(२) इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप मे व्यय किया जायगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेदपाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की पूरी राशि दूसरे विद्यार्थियो को देकर उक्त निधि से सहायता कर दें। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों को ही दे दी जाय।

(३) इस निधि के ब्याज से सभा प्रति वर्ष २ प्रतिशत का व्ययांश ले सकेगी।

(४) इस निधि की मूल राशि दानी को या उनके किसी उत्तराधिकारी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

(५) दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि मे राशि को बढ़ा सकेंगे।

(क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में विचार संगोष्ठियों का आयोजन

आपको जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय, अपने प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में दिनांक ३१ जनवरी १९८६ से १ फरवरी १९८६ तक (युगों युगों से शिक्षा इतिहास प्ररिप्रेक्ष्य में तथा १ फरवरी से ४ फरवरी १९८६ तक) आर्यों के मूल्य स्थान एवं प्राचीन नागर सभ्यतायें विषय पर राष्ट्रीय सगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। आप इन गोष्ठियों मे पधार कर लाभ उठायें। —प्रो० ठाकुरप्रसाद वर्मा

श्री गुप्ता जागरुक नेता थे

दिल्ली ११ जनवरी,

नेपाल से लौटने पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आज श्री कुंवर लाल गुप्ता के निधन के समाचार पर गहरा दु:ख प्रकट किया। उन्होने एक शोक सन्देश में दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री गुप्ता जी हमारे मित्र ही नही थे, अपितु वह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति भी थे। राष्ट्रीय समस्याओं पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने में वह सदैव आगे रहते थे। उनके निधन से राष्ट्रवादी जनता को गहरा आघात पहुंचा है। श्री गुप्ता जी जहां भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख कार्यकर्त्ता भूतपूर्व सांसद-निगम पार्षद तथा कार्य समिति के सदस्य रहे, वहीं अनेक सामाजिक सगठनो से भी सम्बद्ध रहे हैं। दिल्ली का यह जागरुक नेता हमसे सदा के लिए अलग हो गया है जिसकी पूर्ति होना कठिन है। —सच्चिदानन्द शास्त्री

उपमन्त्री सभा

आर्य समाज सरोजनी नगर नई दिल्ली में धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस बसन्त मेला

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति और आर्य समाज सरोजनीनगर नई दिल्ली की ओर से धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस बसन्त मेला रविवार १६ फरवरी १९८६ को प्रातः ८॥ बजे से दोपहर १॥ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर, वाई ब्लाक सरोजनी नगर नई दिल्ली में बड़े-समारोह पूर्वक मनाया जायेगा प्रातः ८॥ से १० बजे तक यज्ञ व भजन होंगे। १० बजे से १२ बजे तक बच्चों द्वारा कविता, भाषण व ड्रामा आदि धर्मवीर हकीकतराय के जीवन पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा। १२ बजे से १॥ बजे तक श्रद्धाञ्जलि सभा होगी जिसमें ला० रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अन्य आर्य विद्वान व आर्य नेता पधारेंगे।

—रोशनलाल गुप्त, मन्त्री

अब दहेज लेना व देना आसान नहीं

क्यों ?

संशोधित दहेज प्रतिषेध अधिनियम, १९६१ को २ अक्तूबर, १९८५ से लागू कर दिया है। इसके प्रावधान अधिक कठोर बना दिये गये हैं तथा यह सभी नागरिकों पर लागू होगा। अब,

१—यदि, कोई व्यक्ति विवाह के सम्बन्ध में वर या वधू के माता पिता या अन्य सम्बन्धियों से या संरक्षक से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दहेज मांगेगा या कोई व्यक्ति दहेज देगा या लेगा, उसे कम से कम छः मास की सजा हो सकती और यह सजा दो वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है और दस हजार रुपये या दहेज के बराबर जुर्माना, जो भी अधिक हो, भी किया जा सकता है।

२—विवाह के सम्बन्ध में वर या वधू या किसी अन्य व्यक्ति को दी गयी या दिये जाने के लिए करार की गयी सम्पत्ति या अन्य मूल्यवान प्रतिभूति दहेज होगी।

(क) यदि विवाह के अवसर पर वर-वधू को दिये जाने वाले उपहारों की लिखित सूची नहीं रखी जाती है, और

(ख) सूची में उपहार देने वाले व्यक्ति का नाम व उसके सम्बन्ध का भी उल्लेख होना चाहिए। उपहार का मूल्य, देने वाले व्यक्ति की वित्तीय स्थिति से अधिक न हो। और

(ग) यदि सूची नहीं बनायी जाती या कोई वस्तु इसमें दर्ज नहीं की जाती है तो उपहार देने व लेने वाला व्यक्ति दहेज लेने व देने के अपराध के लिए दण्डनीय होगा।

३—यह सिद्ध करना आवश्यक नहीं है कि उपहार शादी के उपलक्ष्य में दिये गये हैं।

४—कोई भी न्यायालय दहेज प्रतिषेध अधिनियम के अधीन किये गये अपराध के बारे में निम्नलिखित रूप से जानकारी प्राप्त होने पर कार्यवाही कर सकता है।

(क) अपनी जानकारी पर या ऐसी पुलिस रिपोर्ट पर, जिसके तथ्यों से यह अपराध सिद्ध होता हो।

(ख) अपराध के कारण पीड़ित व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति के माता-पिता या अन्य सम्बन्धी अथवा किसी मान्यता प्राप्त कल्याण संस्था या संगठन द्वारा की गयी शिकायत पर।

५—विस्तृत जानकारी के लिए प्रभारी अधिकारी, दहेज उन्मूलन प्रभाग, समाज-कल्याण निदेशालय, ७, कारेंस रोड, तिमारपुर, दिल्ली-११०००७ से सम्पर्क करें।

निदेशक,

समाज कल्याण निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

सूप्रनि-२६/८६

विशाल ग्रार्य महासम्मेलन विराटनगर नेपाल में सम्पन्न
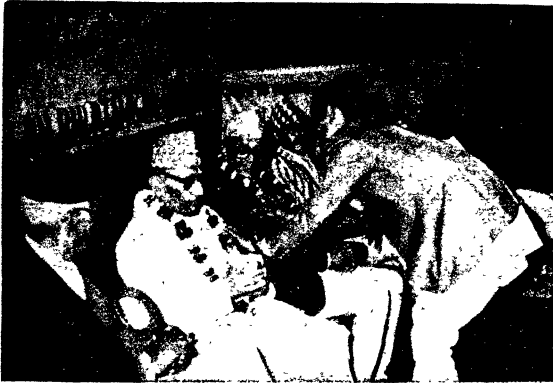
ग्राय महासम्मेलन नेपाल के ग्रवसर पर श्री भूतपूर्व प्रधानमन्त्री मातृका कोइराला एवं श्री नागेन्द्रप्रसाद रिजाल एवं कोशी ग्रञ्चलाधीश के मध्य श्री ला० रामगोपाल शालवाले सार्वदेशिक सभा प्रधान जी को नेपाली टोपी पहनाते हुए।

विदेशों में ग्रार्यसमाज की गतिविधि

ग्रार्यसमाज साऊदन कैलेफोर-निया के मन्त्री श्री मदनलाल गुप्ता तथा श्री द्वारिका प्रसाद जन सम्पर्क ग्रधिकारी सूचित करते हैं कि मोरिशस के गवर्नर जनरल श्री शिवसागर रामगुलाम "ग्रार्य रत्न" की मृत्यु पर ग्रार्य समाज की ग्रोर से विशाल शोक सभा का ग्रायोजन किया गया जिसमें यज्ञ के उपरान्त शान्ति प्रार्थना कीगई ग्रौर ग्रनेक विद्वानों ने उन्हे श्रद्धांजलि दी।

—ग्रार्यसमाज के प्रचार को जन-जन तक पहुंचाने के लिये "हवाई" ग्रमरीका में नवीन ग्रार्य समाज की स्थापना की गई। डा० श्रीमति सावित्री लाल जी को मन्त्री नियुक्त किया गया ताकि इस द्वीप की जनता धर्म-लाभ उठा सके।

नेपाल ग्रार्य महासम्मेलन के ग्रवसर पर कोशी ग्रञ्चलाधीश का स्वागत करते हुये ग्रार्यसमाज विराटनगर के प्रधान श्री सीताराम जी

प्रमुख जिला ग्रधिकारी का स्वागत करते हुये महासचिव प्रकाशचन्द्र सुवेदी

ग्रार्य समाज जोगवनी पूर्णीया बिहार के पदाधिकारियों के साथ सार्वदेशिक सभा-प्रधान श्री शालवाले

दयानन्द देव सुदर्शन बालवाडी ग्राम ग्रनुपुरा थांदला झाबुग्रा (म०प्र) दिनांक १-८-८१ से ग्रारम्भ की गई जो ग्रखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (दिल्ली) के ग्रन्तर्गत चल रही है।

पंजि० सं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-२-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment License No. U. 93 Post in D.P.S.O. on 31-2-86

१५ फरवरी १९८६ का महत्वपूर्ण दिन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी तथा डा० धर्मपाल जी ने दिल्ली की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं से विशेष प्रार्थना की है कि वह डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में शनिवार १५-२-८६ को डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में जो विशाल शोभायात्रा का कार्यक्रम बनाया है उसे दिल्ली निवासी आर्य समाज की शान के मुताबिक बढ़-चढ़कर भाग लें। अपनी-अपनी आर्य संस्थाओं के माटो ट्रकों, बसों, टैम्पों पर लाऊडस्पीकर पर ऋषि गीत गाते हुए ठीक १० बजे तक लालकिले के मैदान में पहुंचे। अपनी-अपनी समाजों तथा संस्थाओं के जो बन्धु मोटर साईकल तथा स्कूटर रखते हों उनसे विशेष प्रार्थना है कि वह अपनी इन सवारियो (मोटर साईकल, स्कूटर) पर समय पर पहुचे ताकि उनको माटो, झंडे उपलब्ध कराए जा सके।

—देवशर्मा प्रबन्धक 'सार्वदेशिक साप्ताहिक'

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली और आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफीका के तत्वावधान में आयोजित चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन गत मास २२ दिसम्बर १९८५ को डरबन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। इस सम्मेलन में आये हुए प्रतिनिधियों ने विदेशों में वैदिक धर्म और संस्कृति के और अधिक प्रचार एवं प्रसार के लिये विभिन्न कार्यक्रमों पर विचार विमर्श किया तथा साथ ही प्रवासी भारतीय वैदिक धर्मियों के सामने आने वाली सम-समस्याओं की भी चर्चा की।

सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री तथा श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने इस सम्मेलन में भाग लिया और उसके क्रियान्वयन में अपना सहयोग दिया।

खैर, युवा अभ्युत्थान के लिये तथा युवकों में राष्ट्रीयता, एवं धार्मिक विचारों के प्रचार प्रसार हेतु आर्य वीर दल जनपद, अलीगढ द्वारा तहसील खैर में सघन प्रचार कार्य आरम्भ किया गया है जिसमें ग्रामीण अञ्चल में योग प्रशिक्षण, यज्ञ, धर्मोपदेश आयोजित किये गये हैं। अब तक पुरानी सोयी पड़ी आर्य समाजों को जाग्रत किया गया। खण्डेहा में दिनांक ६-१-८६ को नवीन आर्यसमाज स्थापित की गई जिसके प्रधान श्री भुवेन्द्रप्रसाद जी शर्मा व मन्त्री श्री ब्रह्मसिंह जी आर्य चयन किये गये। यह कार्यक्रम १-१-१९८६ से प्रारम्भ हुआ है और अब तक हमीदपुर, उसरह, रसूलपुर, हर्जी-गढ़ी, खण्डेहा; खेडा दयालनगर, बालमपुर, एवं गनेशपुर में ४८-४८ घण्टे, रहकर शारीरिक एवं बौद्धिक एवं यज्ञानुष्ठान कराये गये। सामान्य जनता इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुई। युवकों ने बुराइयों से दूर रहने एवं भारतीय संस्कृति के रक्षण का व्रत लिया। यह कार्यक्रम निरन्तर ३१ जनवरी तक चलेगा तथा ३१ जनवरी को खैर में समापन समारोह सम्पन्न होगा।

—भूदेव आर्य मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ मे प्रकाशित।

वेदामृतम्

परिवार में सुख-सम्पन्न हो

रेवती रमध्वमस्मिन् योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिन्
लोकेऽस्मिन् क्षये । इहैव स्त मापगात ॥

अथर्व० ३।२१।।

हिन्दी अर्थ—हे समृद्धि की देवियो ! तुम इस मूल स्थान में, इस गोशाला में, इस परिवार में, इस घर में आनन्दपूर्वक रहो। तुम यहीं रहो, कभी यहां से न हटो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क ८] माघ शु० १ स० २०४२ रविवार ९ फरवरी १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

पोपपाल के आने पर धर्मान्तरण की छूट नहीं

श्री अरुण नेहरू आंतरिक सुरक्षा राज्यमंत्री और गृहमंत्री का आर्यसमाज के शिष्टमण्डल को आश्वासन

पोपपाल के भारत आगमन पर बड़े पैमाने पर आदिवासियों के धर्मान्तरण के समाचार से भारतीय जनता में व्याप्त असन्तोष को देखते हुए श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीवगांधी गृहमन्त्री श्री चह्वाण और आंतरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुण नेहरू से मिला और उन्हे एक ज्ञापन दिया जिसके उत्तर में उन सबने यह आश्वासन दिया कि पोपपाल के आगमन पर ऐसे किसी धर्मान्तरण की छूट नहीं दी जायेगी। सरकार इस विषय में पूरी तरह सावधान है। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को भी ज्ञापन दिया गया।

गृहमन्त्री ने वायरलैस से बिहार राज्य सरकार को इस विषय में पूरी सावधानी बरतने का आदेश दिया। श्री अरुण नेहरू ने दृढ़ता पूर्वक कहा कि ऐसा कोई तमाशा नही होने दिया जायेगा। प्रधानमन्त्री ने कहा कि मैं गृहमन्त्री और आंतरिक सुरक्षा मन्त्री के आश्वासन का पूरी तरह समर्थन करता हू।

शिष्टमण्डल मे हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा० धर्मपाल आदि सम्मिलित थे।

भारत के आदिवासी क्षेत्र ईसाइयों के चरागाह नहीं बनेंगे

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले का प्रैस सम्मेलन में वक्तव्य

पोपपाल द्वितीय के भारत आगमन पर आदिवासियों के सामूहिक धर्मान्तरण की योजना के सम्बन्ध में श्री शालवाले ने योजना की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अंग्रेजों ने फूट डालो और राज्य करो की नीति के अनुसार भारत की सांस्कृतिक एकता को खण्डित करने के लिये अनुसूचित जन-जाति के लोगों की ओर विशेष ध्यान दिया। इसीलिये पिछले सौ वर्षों में आदिवासी क्षेत्र ईसाई मिशनरियों का चरागाह बना हुआ है। जिसका स्पष्ट परिणाम नागालैण्ड, मिजोरम और मेघालय मे देखा जा सकता है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद से इस कार्य में और तेजी आई है। तभी तो रांची जिले में सन् १९७१ में ईसाइयों की संख्या जहां ३ प्रतिशत थी, वह सन् १९८१ की जनगणना मे बढ़कर १३ प्रतिशत हो गई।

श्री शालवाले ने एक लाख आदिवासियों का धर्मान्तरण करके पोपपाल को भेंट करने की योजना का प्रारूप बताते हुए कहा कि प्रत्येक चर्च को एक हजार से डेढ़ हजार तक आदिवासियों का कोटा दिया गया है और उसके लिये मिशनरियों को सब साधन मुहैया किये गये हैं। यातायात के लिये सैकड़ों जीपों और मोटर साइकिलों के अलावा वस्त्रादि भी प्रभूत मात्रा मे दिये गये हैं। रेडक्रास का भी इसमें पूरा सहयोग है। जहां तक वित्तीय साधनों का प्रश्न है, मिशनरियों के पास उनकी कभी कमी नहीं रही है। स्कूलों के भवन, कार्यकर्त्ताओं के लिये निवास स्थान और अधिक से अधिक स्थानों पर छोटे या बड़े गिरजाघर बनाने का प्रयत्न तो किया ही गया है। आदिवासी छात्र-छात्राओं को पुस्तकें, यूनिफार्म और स्कूल की फीस माफ करने की सुविधाएं भी दी गई है।

श्री शालवाले ने अन्य वित्तीय प्रलोभनों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रत्येक गांव में कार्यकर्त्ताओं को नियुक्त करके उनसे कहा गया है कि ऐसे व्यक्तियों की सूची तैयार करें जो किसी महाजन के कर्जदार हों, किसी मुकदमे में फसे हों, और जिन्हें कानूनी सहायता की जरूरत हो, घर के मुखिया की मृत्यु के कारण जिनका परिवार आर्थिक संकट में हो, जो अपने यहां कुआं खुदवाना चाहते हों पर धनाभाव से वैसा करने में असमर्थ हों। इस प्रकार के सब व्यक्तियों को चर्च की ओर से ऋण दिया जाता है। यदि ऋण लेने वाला व्यक्ति सपरिवार ईसाई बन जाता है तो इस ऋण को आर्थिक सहायता में सम्मिलित कर लिया जाता है। अन्यथा ऋण वापस करने के लिये उसे झूठे मुकदमों में फसा कर तथा अन्य प्रकार से डराया धमकाया जाता है। जो बिचौलिये जितनी अधिक मात्रा में ईसाई बनने वालों को तैयार करते हैं, उन्हें उसी अनुपात में पारिश्रमिक दिया जाता है। कभी-कभी आदिवासी युवकों को फंसाने के लिये ईसाई बनी आदिवासी युवतियो को भी काम में लाया जाता

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश त्यागी प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज मद्रास के अन्तर्गत डी० ए० वी० स्कूल का अनुकरणीय वेद प्रचार

मुझे १५ जनवरी ८६ को मद्रास आर्य समाज ने वेद प्रचारार्थ बुलाया था। वहां के अधिकारियों की वेद निष्ठा और वेद प्रचार की भावना तथा उसके अनुकूल वातावरण देखकर मन को सन्तोष हुआ।

मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ जब डी० ए० वी० स्कूल के लगभग २४०० छात्र मिलकर वेद मन्त्रों का नितान्त शुद्ध उच्चारण करने लगे। सन्ध्या-यज्ञ आदि दैनिक कर्म अनेक कुण्डों को रखकर विद्यालय के प्रांगण में किया गया। वहां के धर्म शिक्षक तथा प्रिंसिपल एवं विद्यालय की प्रबन्धक कमेटी के मन्त्री श्री जयदेव जी की उपरोक्त कार्य के लिए जितनी प्रशंसा की जाय, वे उसके पात्र हैं।

क्या ही अच्छा हो कि डी० ए० वी० स्कूल अथवा आर्य संस्थाएं इस प्रशंसनीय पद्धति का अनुकरण करें। बच्चों के माता-पिता तथा अन्य नागरिक इस कार्यक्रम से जहां प्रभावित हुए और उनके मनों को यह भी विश्वास मिला कि हमारी भावी पीढ़ी धार्मिक भावना से किसी प्रकार भी वंचित नहीं होगी और गलत लोगों के अर्थात् धर्म विरोधी तत्वों के पंजे में न फंसेगी।

पुनः डी० ए० वी० स्कूल मद्रास के बच्चों को तथा श्री कृष्णमूर्ति जी तथा अन्य नवयुवक धर्मशिक्षक को अत्यन्त धन्यवाद सार्वदेशिक सभा, उनके इस उत्कृष्ट कार्यक्रम के आयोजन के प्रति प्रसन्न होकर डी० ए० वी० मद्रास को प्रबन्धक कमेटी को भी साधुवाद देता हूं।

—पृथ्वीराज शास्त्री
उप-मन्त्री, सार्वदेशिक सभा,
नई दिल्ली

दिवंगत पंडित बिहारी लाल शास्त्री के प्रति एक श्रद्धाञ्जलि

शीर्षस्थ वैदिक विद्वान, शास्त्रार्थ महारथी, अद्भुत तार्किक, उद्भट भाषाशास्त्री धर्मवीर एवं अनेक उच्चकोटि की पुस्तकों के लेखक स्वनामधन्य आर्य प्रवर पंडित बिहारी लाल शास्त्री का निधन आर्यसमाज पर वज्रपात के समान हैं। पंडित जी के निधन के उपरान्त आर्यसमाज की शास्त्रार्थ परम्परा को जीवित रखने का प्रश्न गम्भीर रूप से सामने आ गया है। यह कहना न तो अतिशयोक्ति है और न ही मात्र औपचारिकता—कि यह क्षति अपूर्णीय है। उनकी पावन स्मृति के साथ ही अनेक संस्मरण स्मृति-पटल पर उभर आते हैं। उन्होंने सैकड़ों व्यक्तियों के जीवन को अपनी पावन अमूल वाणी से सम्भाला और न जाने कितने विद्वानों की सहायता दी। बरेली जाने पर मैं उनके दर्शन कभी २ किया करता था। बरेली नगर की आर्य जनता ने पंडित जी के नाम पर एक स्थायी स्मारक बनाने का विचार प्रारम्भ कर दिया है, जो बहुत स्तुत्य प्रयास है। इस प्रस्तावित स्मारक की सार्थकता के लिये यह आवश्यक है कि इसके द्वारा आर्यसमाज की लुप्त प्रायः शास्त्रार्थ परम्परा को जीवित रखने का ठोस प्रयास किया जाये। इस दृष्टि से ही सारा कार्य हो। सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक सभा का सहयोग इस कार्य में में निश्चित रूप से प्राप्त होगा। मैं समझता हूं कि दिवंगत महान् आत्मा के प्रति यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। उनकी आत्मा को सच्ची शान्ति तभी प्राप्त होगी जब हम उनके जीवन मिशन को जीवित रखेंगे।

—डा० आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री-सभा

शास्त्रार्थ युग का एक और महान् योद्धा चला गया

आर्य समाज के प्रबल योद्धा, शास्त्रार्थ महारथी, अनन्य ऋषि भक्त, प्रसिद्ध विद्वान् श्री बिहारी लाल शास्त्री का ३ जनवरी १९८६ को देहावसान हो गया। उनका जाना आकस्मिक नहीं था। उनकी आयु ९६ वर्ष की हो चुकी थी। शारीरिक रूप से वे कृश हो चुके थे परन्तु मन-मस्तिक से सबल थे। श्री शास्त्री जी को एक युग की कहानी कहा जा सकता है। उनका युग शास्त्रार्थों का युग था। आर्यसमाज ने उस काल में शास्त्रार्थों की दुन्दुभि बजाई थी। वनप्रान्तर जनावास दिक्दिगन्तरों तक उसकी आवाज पहुंची थी। जन-जन तक आर्य समाज के सन्देश को फैलाने का, बढ़ते-फैलते पाप पाखण्ड को उखाड़ने का श्रेय जिन महापुरुषों को रहा वे धीरे-धीरे हमारे बीच से कम होते जा रहे हैं। मत-मतांतरों की भीड़ अभी छंटी नहीं है बल्कि और उग्र रूप से बढ़ने लगी है। अन्धविश्वास, कुप्रथाएं, देशधर्म, जाति को खोखले कर देने वाले तत्व फिर सिर उठा रहे हैं। अन्धेरा और दूर-दूर तक अपना आधिपत्य जमा रहा है। अज्ञानता के झाड़-झंखाड़ ज्ञान के विटपों को ढांप लेने पर उतारू है। इस सबके सामने जगमगाते अज्ञान व अन्धकार के सीने को चीरते जो दीपक जलते रहे हैं उनमें से कुछ दीपक बुझ गए हैं। ऐसे ही एक तेजस्वी दीपक आदरणीय शास्त्री जी थे जिनका जीवन दीप बुझना हमारे लिए दुखद है।

सम्पन्न परिवार के होते हुए भी उन्होने सारा जीवन सादगी सरलता से बिताया। उनके गुणो मे एक गुण निर्लोभता का भी था। मान-अपमान पर ध्यान देकर वे अपने ध्येय को पूर्ण करने मे लगे रहने थे। रुपये पैसे का उन्हें रंचमात्र ध्यान नही था। किसी समाज से यदि समय पर कुछ नही मिला वे बिना इन्तजार किए अपनी गाड़ी पकडने चल देते थे। उनके देहावसान से आर्यजगत् को भारी हानि हुई है। आर्य समाज रूपी मां अपने वीर सपूत को सदा अश्रुपूरित नेत्रो से याद करेगी। उनकी दहाड सदियों तक दिशाओं में गूंजती रहेगी। उनके कार्य समय के प्रस्तर पर अंकित गहरी रेखाएं हैं जिन्हें कृतज्ञ समाज सदा पढ़ता, मधुरता से स्मरण करता रहेगा। आर्यसमाज के इतिहास के पृष्ठों पर वे अपना नाम गहराई से लिख गए हैं। युग बीतेंगे, समय का प्रवाह बहता रहेगा, अनेक आधी तूफानो में ऊंची से ऊंची चोटियां भी ढह जायेंगी परन्तु वह कर्मठता, शौर्य और साहस से भरा नाम मिट नहीं पायेगा व सदा आर्यजगत् में स्मरण किया जाता रहेगा।

—यशपाल सुधांशु सम्पादक आर्य सन्देश

भारत के आदिवासी क्षेत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

है। यदि वह युवक उस युवती से शादी करने को तयार न हो तो उस युवक से युवती के गर्भवती होने का आरोप लगाकर परेशान किया जाता है। ऐसे भी अनेक मामले सामने आये हैं, जब आदिवासी प्रतिभाशाली युवकों को विदेश भेजने का और शिक्षित लड़कियों से शादी करने का प्रलोभन किया जाता है।

अन्त में श्री बालवाले ने कहा कि सबसे बड़ी आपत्ति की बात यह है कि उच्चतम न्यायालय के निर्णयों के अनुसार धर्मान्तरण के पश्चात् अनुसूचित और जनजाति के लोगों को वे सुविधाएं नहीं मिल सकती है जो पिछड़े वर्ग के नाते उन्हें सरकार की ओर से धर्मान्तरण से पहले मिल रही थीं। आश्चर्य की बात यह है कि अन्य धर्म स्वीकार करने वालों पर तो यह फैसला लागू किया जाता है, परन्तु ईसाई बनने वाले लोगों पर नहीं। यह भेद-भाव क्यों है? यदि भारत सरकार कुछ विदेशी शक्तियों के राजनीतिक दबाव के कारण छोटा नागपुर आदि के धर्मान्तरित ईसाइयों को वही सुविधाएं देना जारी रखती है, तो यह हमारी स्वतन्त्रता पर भारी कलंक है। क्या सरकार इस तरह उन आदिवासियों को भी धर्मान्तरण के लिए प्रेरित नही कर रही जो अपने पूर्वजों के धर्म को तिलांजलि देने को तैयार नही है? सरकार को स्वयं इस पहलू पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए

सम्पादकीय

खतरे की घंटी सुनो !
पादरी पोप आ रहा है ?

भारतीय संस्कृति को बचाने में आर्यसमाज सदा आगे ही रहा है। अंग्रेजी शासन काल में हमारे ऊपर हमें मिटाने का जो चक्र चला था, उससे भी हम मिटे नहीं, परन्तु आज हमारे ऊपर जो षड्-यन्त्र हमें मिटाने के लिये चलाया जा रहा है उससे हम बेखबर तो नहीं हैं परन्तु चिन्ता इस बात की है कि—

"स्वतन्त्रता के स्वर्ण विहान में विदेशी शक्तियों का जो ताना-बाना बुना जा रहा है उसमें हम कितने समर्थ हैं, हमारी गरीबी का नाजायज लाभ उठाकर विदेशी पादरियों तथा पाकिस्तानियों द्वारा स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीयता पर जो करारी चोट की जा रही है, उसका हम किस प्रकार मुकाबला कर रहे हैं यह विचारणीय प्रश्न है।"

हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा न राजनीति से कोई सम्बन्ध है और न हमारा ईसाई मुसलमानों से कोई द्वेष है किन्तु यदि वे भारत के प्रति अराष्ट्रीय तत्वों को पनपाने में द्वेष बुद्धि रखते हैं।

हमारे धर्म पर, संस्कृति-स्वतन्त्रता पर वक्र दृष्टि रखता है तो उस देशद्रोही के लिये हम आर्यों को उन शक्तियों से जुझारू बनकर मुकाबला करना है।

पोप पाल द्वितीय हमारी सरकार के नियन्त्रण पर भारत आ गए हैं पर यह उनकी राजनीति पर यात्रा है या धर्म प्रचार हेतु आगमन। इस यात्रा पर उनके प्रधानमन्त्री तथा राष्ट्रपति से मिलने को दो कार्यक्रम हैं। इसके अतिरिक्त वह सारे भारत भ्रमण में कैथोलिक मिशन के पड़ावों पर जायेंगे। विचारणीय प्रश्न है कि क्या धर्म निरपेक्षता के यही माने हैं, कि—

"किसी भारतीय-हिन्दू मिशन पर यदि महाराजा नेपाल को आमन्त्रित किया जाता है, तो साम्प्रदायिकता की गन्ध से सारा वातावरण दूषित किया जाता है और उन्हें राजनैतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त किसी भी 'हिन्दु समुदाय', हिन्दू-तीर्थों पर, या सम्मेलनों में जाने के लिये सरकार अपने को सक्षम नहीं पाती है इससे विषाक्त वातावरण और क्या हो सकता है। कि मुसलमान, ईसाई मजहब के नाम पत्र पेट्रोडालर तथा पी० एल० ४८० की आमद हमें भयंकर खतरे में ले जा रही है। इसका विरोध समय-२ पर आर्य समाज द्वारा निरन्तर किया जाता रहा है। परन्तु धर्मनिरपेक्षता की आड़ में आज पुनः हम एक भयंकर देश के विभाजन रेखा पर खड़े हैं।"

हमें किसी व्यक्ति या धर्म विशेष से विरोध नहीं है पर राष्ट्र में राष्ट्रीयता की रक्षार्थ सबके लिये एक नियम होने आवश्यक है। सुख-सुविधाएं सभी को प्राप्त हों। अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक की बातों को उठाकर मजहब की आड़ में हिंसा का ताण्डव नृत्य आये दिन हम देख रहे हैं, आजादी के स्वच्छ वातावरण में हम सुख-चैन से जी सकें, ऐसा स्वप्न भारत में संजोया जाय। पर यह सब व्यर्थ ही दिखाई दे रहा है।

अहिंसा के पुजारी, दुःखद, ताण्डव नृत्य से आतंकित हैं। आतंकवाद की कुछ सीमा भी होती है। अब जागरण की बेला है, राष्ट्र में [illegible] इन तत्वों के विपरीत खड़े होना है। कुर्सी के चक्कर में हम [illegible] के शिकार बन रहे हैं, अब और न सहनकर, कुछ कदम शीघ्र उठाने हैं। सुरावक तत्वों को विदेशी मिशनरियों, पादरियों, पाकिस्तानी नागरिकों को तुरन्त पकड़ कर भारत से निकाला जाय।

पोप पाल के आगमन पर—

१—प्रधान मन्त्री भारत सरकार को अपने दिल की पीड़ा को अंकित कर उनसे यह मांग करें कि उन पर प्रतिबन्ध लगावें और देश में जो विषाक्त वातावरण बना रहेहैं उस पर अंकुश लगाया जाय।

२—जागरण के लिये भारी संख्या में वैदिक धर्म का साहित्य देकर मिशनरियों का पर्दाफाश किया जाय।

३—आपसी चर्चा में, देश में व्याप्त संकट से उन्हें जानकारी दी जाय।

४—आर्य समाज का प्रत्येक सिपाही, विदेशी तत्वों से निपटने तथा रक्षा का व्रत लें।

५—माना कि हम धन से दुर्बल हैं पर, तन-मन से यदि एकजुट होकर संघर्षरत होंगे, तो धन की भी कमी न होकर, पूर्ति अवश्य होगी।

६—पोप पाल को भारत भ्रमण पर, उनके क्रिया-कलापों पर नजर रखी जाय और उसका डटकर मुकाबला किया जाय।

अतः आर्यसमाज के सजग पहरेदारों से निवेदन है कि हम राष्ट्रीय हैं, राष्ट्रीयता पर आई आंच से हम, देश को नहीं जलने देंगे।

या तो वे भारत मां को, मां मानें, प्यार से रहना सीखें, अपने कर्त्तव्य और अधिकार को समझें। बीते युग की जहरीली कहानी छोड़ो। जिसने लाखों का खून बहाया और देश के विभिन्न अंचलों को जला रहे हैं।

आज के खतरे की घन्टी आपके कानों तक पहुंचाना नैतिक कर्त्तव्य है आप जागें, और संगठित हो, अपनी दुर्बलता को दूर कर भविष्य के लिये एक सूत्र में बंधने का व्रत ले और आगामी समय में भारी संकट पर विजय प्राप्त करें।

हमें अपनी आहुति देकर भारत मां की स्वतन्त्रता, एकता और अखण्डता की रक्षा करनी हैं।

बिना युद्ध न-केशव

महाभारत के युद्ध में कौरव-पाण्डव एक परिवार के स्वजन ही एक-दूसरे को मरने-मारने को उद्यत थे। यहां तक लाक्षागृह कांड हुआ, द्यूत क्रीड़ा करके राज्य का अपहरण हुआ, बनवास और अज्ञातवास का नाटक रचा गया। इस समय बड़े-२ योद्धा, विद्वान उपस्थित थे, अपनी आंखों से यह सब देख रहे थे, परन्तु किसी में समझौता कराने की क्षमता नही थी।

महाराज कृष्ण ने भी सुलह कराने के प्रयत्न किये, राजदूत बनकर भी धृतराष्ट्र के सामने गये, और अन्तिम बात भी कह दी कि चलो झगड़ा यहीं पर समाप्त हो जाय, वह बात थी ?

पांच गांव ही दे दो ?

महाराज कृष्ण ने पांडवों की ओर से दुर्योधन को कहा—कि यदि पांडवों को पांच गांव ही देदो, तो भी वह सन्तुष्ट हो जायेंगे। पर, कृष्ण की यह बात भी नहीं मानी गई, और कहा गया कि—

"सुई का अग्रभाग भी बिना युद्ध के नहीं दिया जायगा। अन्तिम परिणाम जो हुआ, वह महाभारत युद्ध के नाम से विश्वविख्यात है। १८ अक्षौहिणी से १८ दिन में रणक्षेत्र में काम आई। कौरव मारे गये, पाण्डवों को गांव ही क्या, सारा विश्व ही मिल गया।"

आज भारत में उसी रक्त पिपासु भूमि में एक नया महाभारत रचा जा रहा है। हरियाणा और पंजाब के नाम से दोनों भाइयों की सेनायें जुझारू हैं और रक्त क्षेत्र में युद्ध रत है, समझौता कराने वाले यहां तक संलग्न हैं कि कुछ गांव ही दे दो, रक्त की नदियां न बहने दो। परन्तु एक गांव क्या, सुई की नोक भी नहीं देंगे। कन्दूखेड़ा, कुरुक्षेत्र का मैदान बना हुआ है।

यह गांव किसे मिले, इसका समझौता भी कराया गया है, तो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वास्थ्य चर्चा

सर्दी-जुकाम से बचिए

—श्री नृसिंह अरोड़ा
चौक सौदागर मौहल्ला, अजमेर-३०५००१

मौसम बदल रहा है। जाड़े के दिनों में सर्दी से बचने के लिए लोग घरों में बन्द रहते हैं, इसलिए विटामिन 'डी' (जो धूप से हमें मिलता है) की कमी हो जाती है। यही कारण है कि जुकाम व फ्लू अधिकतर जाड़े की मौसम में होते हैं। शरीर में विजातीय द्रव्य का रहना ही रोग। कभी ऐसा भी होता है कि मानसिक तनाव की स्थिति में नाक के अन्दर की झिल्ली में सूजन आ जाती है। इस सूजन से वाइरस के आक्रमण को झेलने की नाक की क्षमता कम हो जाती है और तुरन्त सर्दी जुकाम हो जाता है। शरीर में, नाक और मुंह ऐसे दो मार्ग हैं जिनके द्वारा कोई विजातीय पदार्थ उसमें प्रवेश कर जाते हैं, तथा हमारे गलत खान-पान व रहन-सहन से भी खून में विकार पैदा हो जाते हैं। शरीर इनको बाहर निकालने का बराबर प्रयत्न किया करता है। यह प्रयास ही उभार की स्थिति है, जिससे सर्दी-जुकाम व खांसी आदि हो जाते हैं। लेकिन जब विजातीय द्रव्य की अधिकता के कारण, शरीर इसे बाहर निकालने में असमर्थ हो जाता है तो ऋतु परिवर्तन, भावावेश, कब्ज आदि कारणों से, परिस्थिति बनने पर शीघ्र ही उसका रूपान्तर हो जाता है कि उसमें खमीर पैदा हो सके। शरीर के अन्दर खमीर बनने की प्रक्रिया का का नाम ज्वर है। आजकल ढेरों प्रकार की सर्वसुलभ गोलियां एवं दवाएं चल पड़ी हैं, जिनके प्रयोग से विजातीय द्रव्य तो बाहर निकलते नहीं, परन्तु रोग के अन्दर दब जाने से, तात्कालिक आराम तो मिल जाता है। परन्तु इससे लाभ कम और हानि अधिक होती है। जुकाम एक ऐसा व्यापक रोग है जिससे संसार के अधिकतर व्यक्ति प्रभावित होते हैं। इससे बचने के लिए हमारा रहन-सहन ऐसा होना चाहिए कि हमें जुकाम होने ही नही पाये। जैसे:—

१—सर्दी हो चाहे बरसात, नित्य ताजे पाने से घर्षण स्नान करें। कमजोर और बूढ़े व्यक्ति धूप में रखे हुए गुनगुने जल से नहा लें। इस समय एक नया व सरल प्राकृतिक गुर याद रखिये और जुकाम को घर में घुसने ही मत दीजिए—"स्नान करते समय मुंह में जल भर लें और स्नान कर चुकने पर उसे कुल्ला करके बाहर निकाल दें।"

२ सर्दी में सबको धूप सुहाती है, अतः प्रकृति का कहना मानें और मनभावनी धूप का आनन्द लेकर स्वस्थ रहें। यदि धूप में सारे बदन पर तेल मालिश करके स्नान करें तो सोने में सुहागा है। इससे प्राकृतिक विटामिन 'डी' पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

३. कब्ज न होने दें। इस हेतु उषा पान करें तथा प्रातः भ्रमण, आसन आदि व्यायाम अवश्य करें। भोजन में अंकुरित अनाज, फल, हरी सब्जी, छाछ आदि लेते रहे तथा चाय व तली चीजों से यथासम्भव दूर रहें।

४. जल नेति:—भारतीय योग शास्त्र में इसको बड़ा महत्व दिया गया है। अब तो अमेरिका के नेशनल इन्स्टिट्यूट आफ एलर्जी एण्ड इन्फेक्शन ने भी जुकाम को रोकने के लिए नासिका-मार्जन की सिफारिश की है।

विधि:—एक टोंटीदार बर्तन में नमक मिलाकर कुछ-२ गरम जल ताजा-सा भर ले। टोंटी को नाक छिद्र में लगाकर सिर को थोड़ा-सा दूसरी ओर झुकाकर बर्तन को ऊपर उठावें ताकि पानी नाक में आ सके, उस समय श्वास मुंह में लें। पानी एक नासिका द्वार से जाकर दूसरे द्वार से बाहर निकलेगा। इसी प्रकार, नासिका के दूसरे भाग को ऊपर करके उसमें पानी डालकर पहले द्वार से निकालें। इसमें ध्यान रखें कि नाक से श्वास बिल्कुल नहीं लें। जल नेति करने से जुकाम के अतिरिक्त नेत्रों को भी लाभ पहुंचता है। जलनेति करके धौंकनी की तरह तेज श्वास द्वारा नाक का पानी अवश्य निकाल देना चाहिए।

५. घुटन-तनाव से बचें, ऐसी स्थिति में "जी खोलकर रोकर मन को हल्का कर ले," क्योंकि आंसू व्यर्थ ही नहीं बहते, वे शरीर से हानिकर पदार्थों को बाहर निकाल कर शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होते हैं। दूसरे, मानसिक या शारीरिक थकान, तनाव या सिरदर्द होने पर शवासन में लेटकर विश्राम कर लेना चाहिए।

६ लोग तो गर्म जल पीकर सर्दी निकाल देते हैं। उनको जुकाम नही होता। वे एक प्याला गर्म जल सुबह-शाम पी लेते हैं। फिर भी भूले भटके यदि जुकाम हो जावे तो निम्न सावधानियां बरतें:—

(क) जुकाम होने पर गर्म पानी से नहाइये। शरीर को जितना अधिक से अधिक गर्म पानी सह सके, पानी उतना ही गरम होना चाहिये। फिर गर्म बिस्तर में लेटकर आराम करें।

(ख) जुकाम होने पर दोनों नाक एक साथ साफ न करें। इससे जुकाम की छूत कानों तक पहुंच सकती है अतः नाक बारी-बारी से अलग-अलग साफ करें। सर्दी जुकाम के कारण यदि नाक नहीं खुल रही हो तो परेशान न हों। कपूर को एक पोटली में बांधकर सूंघे। तुरन्त लाभ होगा।

(ग) जुकाम में पेट तथा शरीर दोनो को विश्राम देकर जल्दी निरोग बनें। जुकाम का सर्वोत्तम इलाज उपवास ही है। जुकाम के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है 'भूखा, रूखा और सूखा, पहले भूखे रहो, यदि भूखा न रहा जाये तब तक रूखा सूखा ही खाया जाये। भुने चने खावें। तात्पर्य यह है कि जुकाम को दूर करने के लिए प्रकृति का सहारा लेवें।

(घ) स्थानीय भाप-स्नान—मुंह खोल कर भाप लेना सर्दी-जुकाम व खांसी में शीघ्र आराम देता है।

(ङ) नीबू की चाय ले सकते हैं। अदरक पताशे व काली मिर्च का काढ़ा पीकर सो जावें। इससे पसीना आकर त्वचा मार्ग से विजातीय द्रव्य निकल कर आराम मिलता है।

(च) जुकाम को रोकने के लिए विटामिन 'ए' एवं 'सी' भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनसे शरीर के अन्दर रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाती है और जुकाम दूर हो जाता है। अतः ज्यों ही जुकाम होता दिखाई दे, विशेषकर विटामिन 'सी' की मात्रा बढ़ा देना चाहिए। यह आंवला, आलू, मटर, नींबू, नारंगी, अमरूद, टमाटर, गाजर तथा पत्तीदार सब्जियों से प्राप्त होगा।

(छ) जिन्हे सर्दी जुकाम हो जाया करता है उन्हें शुद्ध तेल सरसों का १ माशा, एक नथने में और १ माशा दूसरे नथने में रात को सोते समय डालना चाहिए। एक महिना बराबर डालने से आराम पुराना सिर दर्द, जुकाम दूर हो जायेंगे।

(ज) डाक्टरों और दवाइयों के चक्कर में पड़कर सदा ही कुछ न कुछ औषध लेते रहने से शनैः शनैः यही एक रोग बन जाता है। इसलिए जहां तक हो प्रकृति के नियमों का पालन कर अपने आहार-विहार पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

पोप जी ! हम भूले नहीं हैं !

—क्षितीश वेदालंकार सम्पादक आर्य जगत्

निजामुलमुल्क वैटिकन सिटी जनाब पोप जॉन पाल साहब ! आप भारत में पदार्पण कर रहे हैं, आपका स्वागत है। हम भारत वासी बड़े आतिथ्य प्रेमी हैं, इस बात का इतिहास गवाह है। हमने कभी किसी विदेशी या विधर्मी का अतिथि के नाते स्वागत करने में संकोच नहीं किया है क्योंकि यह अतिथि धर्म के विरुद्ध है। हमारे शास्त्रों ने हमको माता पिता और आचार्य को देववत् पूज्य मानने के साथ ही 'अतिथि देवो भव" का भी आदेश दिया है। इसलिये हम घर आये मेहमान को देवता से कम आदर नहीं देते।

परन्तु मेहमान बनकर आने वाला अतिथि कभी कभी कितना अवांछनीय हो उठता है भारत का इतिहास इसका भी साक्षी है। परन्तु हमने तो इतिहास से कोई शिक्षा न लेने की कसम खा रखी है न। इसलिये जब कोई मेहमान शरण मांगने आया तो हमने उसको शरण तो दी ही परन्तु यदि उस मेहमान ने अरब और उसके ऊंट के किस्से की तरह धीरे धीरे तम्बू में से हमको बाहर निकालकर स्वयं उस पर कब्जा कर लिया, तब भी हम उसकी देव पूजा का अंग मानकर सन्तोष करते रहे पोप साहब ! क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत की सरकार अपने संविधान में धर्म निरपेक्षता की घोषणा करती है और आप जैसे एक धर्माध्यक्ष का राजकीय स्वागत करने के लिये अपने पलक पांवड़े बिछा रही है। इससे अधिक अतिथि पूजा का उदाहरण कहां मिलेगा कि एक धर्म निरपेक्ष सरकार एक धर्माध्यक्ष का स्वागत वैसे ही करे जैसे किसी राष्ट्राध्यक्ष का किया जाता है।

हां, भूल ही गयो ! आप केवल धर्माध्यक्ष ही नहीं राष्ट्राध्यक्ष भी हैं। रोम के मध्य में कुछ एकड़ में फैला आपका वेटिकन सिटी एक पूरा स्वायत्त राष्ट्र ही तो है। चाहे वह आकार में कितना ही छोटा क्यों न हो, पर उसके कारण आपके राष्ट्राध्यक्ष में होने में कोई बाधा नहीं आती। सुना है यह वेटिकन पहले कोई स्वतन्त्र नगर राज्य नहीं था, मुसोलिनी जैसे हिटलर के साथी तानाशाह के काल में वह एक सन्धि की मार्फत स्वतन्त्र राज्य माना गया। अब वह संसार भर के रोमन कैथोलिकों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान और एक स्वतन्त्र राज्य है जहां एक राजमहल में आप एक राजा की तरह निवास करते हैं।

यह भी सुना है कि उत्तराधिकारियों की शृंखला में आपका नम्बर २६४वां है और जो सबसे पहला पोप साईमन पीटर नामक व्यक्ति बना था, वह ईसाई नहीं था। ईसामसीह का सबसे अधिक आलोचक था। कुछ लोग उसे अपराध कर्मी भी बताते हैं। सेंट पीटर के नाम से पता नहीं वह कैसे पहला पोप बना और उसके नाम से संसार का सबसे बड़ा सेंट पीटर गिरजाघर बना ?

पहले पोप की राजधानी जैसी शानो शौकत नहीं थी और आधुनिक बादशाही वैभव भी नहीं था। सन १८६९ में पहली वैटिकन परिषद आयोजित की गयी और उसने पोप को धर्म सम्बन्धी सब मामलों में—जिनमें लोक परलोक दोनों शामिल हैं—सर्वोच्च अधिकारी घोषित कर दिया। उसके बाद के वर्षों में यह एक सुसंगठित संस्था बनती चली गयी और उसकी गद्दी के उत्तराधिकारी अन्य पोप, जिनमें भले और बुरे दोनों शामिल थे, बनते चले गये। ऐसा भी समय था जब चर्च की ओर से गैर कैथोलिक लोगों को जिन्दा जलाना बुरा नहीं समझा जाता था गुलामों की प्रथा का पूरी तरह समर्थन किया जाता था और चर्च की ओर से किसी भी प्रकार के सामाजिक सुधार और प्रगति का विरोध किया जाता था।

हम यूरोप का वह इतिहास नहीं भूले हैं, जब पादरियों ने ब्रूनो जैसे वैज्ञानिक और हाईपेशिया जैसी सुधारक महिला को जिन्दा जलाने का आदेश दिया था। हम मध्यकाल के यूरोप का वह इतिहास भी नहीं भूले हैं जब गैर ईसाइयों के लिये इनक्विजिशन कोर्ट के मार्फत अमानवीय अत्याचारों के आदेश दिये जाते थे और बाईबिल के विरोध में कुछ भी कहने वाले को भयंकर से भयंकर दण्ड भोगना पड़ता था। क्या ईसाईयत के इतिहास से उस कलंक को मिटाया जा सकता है जो उसने गैलिलियो को सजा देकर अपने माथे पर लगाया था ? सजा भी किसलिये ? केवल इसलिये कि गैलिलियो ने दूरबीन से अध्ययन करने के पश्चात यह घोषणा की थी कि सूरज पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता, बल्कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर घूमती है। आज हरेक स्कूल का छोटे से छोटा बच्चा भी इस तथ्य को जानता है और उससे परीक्षा में यदि पूछा जाय तो इस प्रश्न का वह ठीक वही उत्तर देता है जो गैलिलियो ने कहा था भले ही बाइबिल इस बारे में कुछ भी क्यों न कहती हो।

बाइबिल की ओर कितनी ही विज्ञान विरुद्ध बातों को छेड़ने का यहां प्रसंग नहीं है परन्तु विज्ञान और धर्म के नाम पर इतिहास में जो भीषण रक्तपात की घटनाएं मिलती हैं, उनका सबसे बड़ा दारोमदार यदि किसी पर है तो केवल तथाकथित रोमन कैथोलिकों के ऊपर है। यह ठीक है कि आज सारे संसार में लगभग ८२ करोड़ लोग कैथोलिक चर्च के अनुयायी हैं और वे संसार के सभी महाद्वीपों में फैले हुए हैं। और तो और सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप में भी उनकी संख्या साढ़े ६ करोड़ से कम नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या वे सब लोग भी पोप को उसी तरह आदर का दर्जा देते हैं जैसे कि पुराने जमाने में दिया जाता था ?

अब स्वयं कैथोलिक ईसाइयों में ही विद्रोह की भावना उभरनी प्रारम्भ हो गई है। यद्यपि यह तो नहीं कह सकते कि मार्टिन लूथर के जमाने की तरह कैथोलिक और विभाजित हो जायेंगे परन्तु जिस ढंग से अन्दर ही अन्दर पोप के प्रगति विरोधी रुख के कारण विद्रोह उभरना शुरु हुआ है वह पोपडम के भविष्य के लिये कोई बहुत शुभ शकुन नहीं है। फिलीपाइन्स में वैटिकन से बिना पूछे ही अनेक पादरी मार्कोस की कैथोलिक सरकार के विरुद्ध खड्ग हस्त होकर मार्क्सवादी जन-आन्दोलन के साथ हो गये हैं ब्राजील के अमरीका भी बड़ी तेजी से मुक्ति-युद्ध में सहयोग देने के लिये अनेक पादरी तैयार हो गये हैं। खासतौर से किसी भी पद पर महिलाओं को नियुक्त न करने और परिवार नियोजन के विरोध में घोषणा करने के कारण महिलाओं में भी पोप के विरुद्ध तीव्र असन्तोष उभरता जा रहा है। संसार भर के गरीब कैथोलिक अब यह मानने लगे हैं कि पोप पूंजीवादियों के समर्थक हैं और गरीबों को और अधिक गरीब बनाये रखने के षडयन्त्र में वे भी शामिल हैं।

हम दूर क्यों जायें, भारत की ही बात करें। केरल में, जहां पोप पाल का सबसे अधिक शानदार स्वागत करने की तैयारियां की जा रही हैं, वहां कई पादरियों ने उन गरीब मछुआरों का पक्ष लेना प्रारम्भ कर दिया है जो उनकी रोजी छीनने के लिये पूंजीपतियों द्वारा बड़े बड़े ट्रौलर प्रयुक्त करने के विरुद्ध आन्दोलन के रास्ते पर चल पड़े हैं।

भारत में ईसाइयत के अनेक रूप रहे हैं। जिनमें सबसे घिनौना रूप है गरीब आदिवासियों की सेवा के माध्यम से उन्हें ईसाई बनाने का षडयन्त्र। जिन ईसाई पादरियों ने मानवीय कारणों से प्रेरित होकर भारत के वनवासी और गिरि जनों की निष्काम भाव से सेवा की है उनके आगे श्रद्धा से मस्तक झुकाने को जी चाहता है परन्तु जब यह पता लगता है कि भेड़ के लबादे में छिपा हुआ भेड़िया उन गरीब अनपढ़ लोगों का पैतृक धर्म छीन कर उन्हें ईसा मसीह की भेड़ बनाने में लगा है तो जी खट्टा हो जाता है और तब ईसाइयत

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पोप जान पाल की भारत यात्रा

—श्री हरिदास 'उदास'

पोप जानपाल (द्वितीय) राष्ट्राध्यक्ष वेटिकन सिटी का १ फरवरी १९८६ को नई दिल्ली एयरपोर्ट पर स्वागत जोरदार तैयारियों के साथ कियाहै। यह सिलसिला १० फरवरी तक भारत में जारी रहेगा जब तक वे बम्बई से स्वदेश के लिए रवाना न हो जाते हैं। किसी राष्ट्राध्यक्ष या धर्माध्यक्ष का किसी देश में राजकीय यात्रा पर आने पर औपचारिक रूप में स्वागत तो अनिवार्य समझा जा सकता है। कैथोलिक या अन्य ईसाइयों को उनका स्वागत करना अपना कर्तव्य है। भारत सरकार भी अपना राजकीय नियम निबाह सकती है। परन्तु एक धर्माध्यक्ष का भारत में आकर अपनी धर्माध्यक्षता की गद्दी से यहा की राष्ट्रीयता का किसी प्रकार भी हनन करना उपयुक्त नही। ईसाइयों को प्रोत्साहित कर यहां के हिन्दुओं को धर्मान्तरण करने की प्रेरणा देना सर्वथा हेय है। पोप के भारत भ्रमण और स्वागत में सरकार की व्यवस्था और नियन्त्रण दोनों आवश्यक है। हमारी राष्ट्रीय नीति के विरोध में कोई कार्य नहीं होना चाहिये। साथ ही विशाल भारतीय नागरिकों के अहित में भी पोप द्वारा कोई भी किये जाने वाले कार्य पर प्रतिबन्ध होना चाहिए।

सम्प्रदायवाद से ऊपर है हमारी राष्ट्रीयता। इस पर भी हमारी सरकार रंगभेद नीति की विरोधी है। हमारी है वैदिक संस्कृति, मानवतावादी। वह मानवतावादी। वह मानव, मानव मे भेद नहीं मानती परन्तु आचरण, व्यवहार, सदाशयता, उदारता, विशालता और वसुधैव कुटुम्बकम् का हिमायती है। पोप भारत में ईसाई बाहुल्य प्रमुख नगरो जैसे—दिल्ली, रांची, बंगलूर त्रिवेन्द्रम कोचीन, कलकत्ता, शिलांग, गोवा, पुणे और बम्बई की यात्रा कर अपने धर्म प्रचार की प्रगति को बढावा देंगे। भारतीय ईसाई मिशनरी लोभ-लालच के हथकण्डे अपनाकर धर्मान्तरण को हर प्रकार से पहले ही बढ़ावा देते आ रहे हैं। पोप की यात्रा इस सन्दर्भ मे भी होने की सम्भावना है।

भारत मे पोप की यात्रा का विरोध भी हो रहा है। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के सचालक बाला साहब देवरस ने पोप को राजकीय अतिथि बनाने पर कड़ी आपत्ति प्रकट की है। चौधरी चरणसिंह जी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री ने भी विदेशी ईसाई मिशनरियों के सेवाकार्यों की आड़ में धर्मान्तरण करने की घोर निन्दा की है। उन्होंने विदेशी ईसाई मिशनरियों को भारत से निष्कासित करने की मांग कई बार की है। विदेशी मुद्रा का उपयोग कई जमायत के लोग भारतीयों के धर्मान्तरण में लगाते आ रहेहैं। पाकिस्तान और भारत विरोधी देशो का इस धर्मान्तरण मे प्रत्यक्ष हाथ रहा है। आर्यसमाज सदा से इन कार्यों का विरोधी रहा है। राष्ट्रीयता का हामी कोई भी भारतीय नागरिक विदेशी ईसाई मिशनरियों की हरकतों को अच्छा नहीं मानेगा। एक बात और है कि धर्म और ईसायत के मामले में राष्ट्रवादी ईसाई भी आपसी विरोध के बावजूद अपने विदेशी ईसाई बन्धुओं के साथ हैं और इस धर्मान्तरण के स्वागत में तहेदिल से साथ दे रहे हैं। कैथोलिक चर्च ने उपनिवेशवादी ताकतों का सदा से समर्थन देकर, भारत के विरोध ही में पूर्व से कार्य करते आ रहे हैं। उन्होंने भारत पर होने वाले अत्याचारों पर सहयोग ही दिया है। पोप इन समस्याओं पर मौन रहेंगे या अपनी कुछ आवाज भारत में आकर बुलन्द करेंगे—यह एक प्रश्न है। कैथोलिक चर्च सेवा कार्यों से अधिक दिलचस्पी अभी भी धर्मान्तरण में लेता आ रहा है।

कुछ उच्चकोटि के नैतिकता के हामी ईसाई फादर जोन लोब, लालच या दबाव में कराये गये धर्मान्तरण का विरोध करते हैं। यह अच्छी बात है। हमारा भी कहना है—बदलना है तो इन्सान के मन और मस्तिष्क को बदलो, हृदय बदल दो, बुरी भावनाओ को बदलो। अच्छा बनो, अच्छा बनाओ, अच्छा करो, अच्छा करवाओ, राष्ट्रीय धर्म को प्रमुखता दो।

एक समय मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महान् नेता ओ३म्प्रकाश त्यागी ने "धर्मान्तरण विरोधी" विधेयक तैयार कर पेश किया था। लेकिन अपने ही देश के जनता शासन में निजी बिल का कांग्रेसी सदस्यों ने राजनीतिक कारणों से विरोध किया और बिल पास न हो सका।

विश्व के प्रगतिशील ईसाई लोग पोप जानपाल की रूढ़िग्रस्त नीतियों से सहमत नही होते हैं। पोप को हालैण्ड की यात्रा के दौरान गतवर्ष विरोधी प्रदर्शन का सामना भी करना पड़ा था। वास्तव में पोप की भारत यात्रा के १० दिनो के दौरान, स्वागत में गरीब देश के लाखों रुपयों का दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, त्रिवेन्द्रम आदि नगरों में वारा-न्यारा कर दिया जावेगा। इस पर हमें और आपको दोनो को सोचना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने इन समस्याओं पर भारतीय प्रधानमन्त्री राजीवगांधी से वार्तालाप किया और उन्हें उचित परामर्श दिया।

हम भूले नहीं हैं

(पृष्ठ ५ का शेष)

का मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास आंखो के सामने नाचने लगता है।

गोवा मे और केरल में आकर गुरु के पादरियों ने क्या-क्या अत्याचार किये थे, यह हम भारतवासी भूले नहीं हैं और पोप साहब ! हमको विश्वास है कि आप भी भूले नही होंगे। आपके शुभागमन की इस बेला में उन अत्याचारों की याद दिलाना शायद आपको अच्छा न लगे। पर इतना निवेदन अवश्य है कि पोप के नाम को "पोप लीला" शब्द के माध्यम से जितना प्रचारित आर्य समाज ने किया है उतना और किसी संस्था ने नहीं किया। हमने धर्म के नाम पर ठगने वाले प्रत्येक पाखण्डी को 'पोप' की सज्ञा दी और एक तरह से 'पोप लीला' शब्द 'पाप-लीला' का पर्यायवादी बन गया। पोप साहब ! हम भारतीयों के मानसिक आक्रोश का कुछ आभास आपको 'पोप' शब्द के इस अर्थान्तरण से पता चल जायेगा। इसलिये निवेदन है कि आप हमारे मेहमान बनकर आयेहैं तो आपका स्वागत है, परन्तु यदि आपके आने से इस देश मे धर्मान्तरण की आंधी चल पडी—जिस प्रकार कि अनेक पादरी एक लाख आदि-वासियों को ईसाई बनाकर आपकी भेडों में शामिल करके आपके स्वागत की घोषणा करते-फिरते हैं, तो आपके अनुयाइयों की इस पापलीला को और कोई क्षमा करे तो करे, परन्तु भारतवर्ष की जागरूक नई पीढ़ी उसे क्षमा करने वाली नही है।

पोप की भारत यात्रा और धर्म साम्राज्य

श्री वेदप्रकाश अरोड़ा

पोप जोन पाल द्वितीय की भारत यात्रा को पूर्व और पश्चिम के आध्यात्मिक संगम की संज्ञा भले ही दी जाये लेकिन विश्व कैथोलिक धर्मगुरु अपने 'धार्मिक साम्राज्य' के साथियों पर अपनी प्रभुता, अपनी निरंकुश सत्ता से बेलाग तो रह नहीं सकते। क्या लोकतांत्रिक मूल्यों का तकाजा नहीं है कि देश के कैथोलिक धर्मावलम्बी अपने बिशप की नियुक्ति में कोई भूमिका अदा करें? वैटिकन साम्राज्य ने ऐसी छूट नहीं दी है। कैथोलिक ईसाइयो को न सही, क्या पोप भारत में बिशपों की की नियुक्तियां करने से पूर्व उनके लिए भारत सरकार की रजामन्दी के लिए तैयार होंगे? —सम्पादक

भारत के राष्ट्रपति के निमन्त्रण पर दुनिया भर के ८२ करोड़ ६० लाख कैथोलिक धर्मावलम्बियों के धर्म-पिता पोप जौनपाल द्वितीय आगामी पहली फरवरी को भारत पधार रहे हैं उनका यहा प्रवास १० दिन के लिए होगा। उनकी इस यात्रा को पूर्व और पश्चिम के आध्यात्म के संगम की संज्ञा दी जी गई है। उन्होंने वैटिकन राज्य के अध्यक्ष और कैथोलिक धर्माध्यक्ष के रूप में दो मुकुट पहन रखे हैं। चर्च और वैटिकन दोनों का यह मुखिया, भारत सरकार का एक परम सम्मानित अतिथि होगा। वैसे इनसे पहले भी पोप भारत आए थे लेकिन तब उनकी यात्रा गैर सरकारी थी। इस बार पोप का जिस भव्य रीति से आतिथ्य सत्कार किया जाएगा वह अनोखा होगा। शायद यह स्वागत-सत्कार अन्य समुदायो की आंखों मे खटकने लगेगा।

इसके विपरीत विश्व के एकमात्र हिन्दू राज्य नेपाल के महाराजाधिराज बीरेन्द्र को भारत में एक हिन्दू सम्मेलन में भाग लेने के लिए इसलिए निरुत्साहित किया गया कि इससे भारत की सैकुलर छवि पर धब्बा लगेगा। अब यह दोहरा मापदण्ड क्यों? विशेष रूप से इस बात की अनदेखी कैसे की जा सकती है कि राजकीय यात्रा पर आने के बावजूद पोप की राष्ट्रपति से मुलाकात और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि पर फूलमाला चढ़ाने को छोड़ उनके अन्य सभी समारोह धार्मिकता से जुड़े होंगे। वे मुख्य रूप से भारत में चर्च धर्मतन्त्र की स्थापना की १०० वी वर्षगाठ समारोहों में सम्मिलित होने के लिए केरल जाए गे। कैथोलिको के कुछ अन्य धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे और धार्मिक समारोहो मे शामिल होंगे। यदि वे वैटिकन राज्य के मुखिया के रूप मे राजकीय यात्रा पर आ रहे हैं और यहा भारत सरकार के प्रतिष्ठित अतिथि होगे, तो उनका ऐसे समारोहों में भाग लेना सैकुलर देश में कहां तक उचित ठहराया जा सकेगा। आज विश्व में अनेक मजहबी राज्य हैं। अब नेपाल नरेश यदि भारत की राजकीय यात्रा पर आने के बाद हिन्दू धार्मिक समारोहों में भाग लेना आरम्भ कर दें तो उन्हें भारत सरकार कैसे और किस मुंह से तथा किस तर्क से रोक सकेगी।

तथ्य यह है कि ईसाइयों के सबसे बड़े धर्म के प्रधान कार्यालय के और स्वयं धर्मगुरु के वैटिकन शहर में होने के बावजूद आज यूरोप सर्वाधिक भौतिकवाद का शिकार है। किसी ने ठीक ही कहा है: चर्च के पास, धर्म से दूर। वैटिकन शहर जिस देश इटली के अन्दर अवस्थित है, वहां की साम्यवादी पार्टी पश्चिमी यूरोप की सबसे बड़ी पार्टियों में गिनी जाती है। यह चिराग तले अन्धेरा कैसा? पोप जब अपने घर में, अपने पास पड़ौस में लोगों को आधुनिक भौतिकता एवं चकाचौंध से नहीं उबार सके, तो उनको विकासशील देशों की तरफ मुंह मोड़ना, तर्क की कसौटी पर कितना खरा माना जाएगा। यह गरीब भोली भाली, अनपढ़ जनता को मूर्ख बनाना नहीं तो और क्या है? सच तो यह है कि पश्चिमी देशों में पोप के वर्चस्व में, उनके कैथोलिक अनुयाइयों और स्वयं मसीही धर्म में कमी आती जा रही है। हालैंड में तो पोप को छुरा घोंप दिया गया था। जब वर्तमान पोप अन्य मसीही देश पुर्तगाल की यात्रा पर गए, तो वहां असंख्य व्यक्तियों ने काले झण्डे लेकर उनके विरुद्ध प्रदर्शन किया। इटली ने, जो कोई दो हजार वर्षों से कैथोलिक धर्म का केन्द्र माना जाता रहा है, रोमन कैथोलिक धर्म को राज्य के धर्मपद से एकदम हटा दिया है। आज कैथोलिक संस्थाओं और संस्थानों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। इसका मुख्य कारण चर्च संस्थाओं के लिए वैदेशिक विशाल विदेशी धन का अन्तर प्रवाह है और गिरजा घरों के मामलों का प्रबंध धर्म परिषद के हाथ में होने के बावजूद बिशपों का ईसाई-समुदाय के प्रति जवाबदेह न होना है।

आज १०८.७ एकड़ के नगरराज्य वैटिकन इकारपोरेट स्टाक एक्सचेंज का काम करता है। उसने कई ऐसी कम्पनियों के शेयर खरीद रखे हैं जिनका निर्माण और व्यापार रोमन कैथोलिक सिद्धान्तो के नियमों के विपरीत है। चर्च के मंच से बमो टैंकों, तोपों और संतति निरोध की निन्दा की जाती है, लेकिन वैटिकन इंकारपोरेट ने ऐसी कम्पनियो के शेयर खरीद रखे हैं, जो इन सब चीजो को बनाते हैं। वैटिकन-बैंक का कारोबार चर्च के कायदे कानून को ताक पर रख कर किया जाता है। वर्तमान पोप परिवार-परिसीमन, कैथोलिक विधवाओं के पुनर्विवाह और महिलाओं के लिए बराबर के दर्जे के विरोधी हैं।

इधर विकासशील देशों में ईसाइयत का प्रचार और प्रसार इसलिए तेजी से नहीं हो पाया है कि उनकी कथनी और करनी मे अन्तर रहा है। इनके धर्माधिकारी, सादगी, उदारता, विनम्रता और भाईचारे का उपदेश देते हैं, लेकिन इनमे अधिकतर का जीवन अय्याशी, आरामपसन्दी, दम्भ, अहम और भ्रष्ट आचरण वाला रहता है। वैसे कैथोलिक धर्म-परिवर्तन मे विश्वास नही करते लेकिन वे अपनी शिक्षण संस्थाओ में दूसरे धर्मों को हेय बताकर धन के प्रलोभन, नौकरी दिलाने के झांसे तथा जोर जबरदस्ती से न जाने कितने भारतीयों को ईसाई बना चुके हैं। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वैटिकन प्रायः पाश्चात्य देशों का साथ देता रहा है। इस कारण उसका प्रभाव तीसरी दुनिया में अधिक नही फैल पाया है। गोआ मुक्ति सघर्ष के दौरान, आर्चबिशप राउल गोनसल्वेस के भारत विरोधी कार्य किसी से छिपे नही हैं।

भारत में कैथोलिक चर्च पर वैटिकन का पूरा नियन्त्रण और दबदबा है। भारत में कार्यशील पादरियों में से बिशपो की नियुक्ति का पूरा अधिकार पोप को होता है। इन बिशपो के जरिए ग्यारह हजार से अधिक कैथोलिक पादरियों पर पूरा नियन्त्रण रहता है। यही कारण है भारत में परदेशीय निष्ठा कुछ क्षेत्रों मे पनपती जा रही है।

चर्च की एक अलग धार्मिक पहचान तो समझ मे आती है। लेकिन अगर वह एक अलग सांस्कृतिक पहचान का लबादा ओढ़ ले तो क्या अभारतीय नही होगा? इसी अभारतीय संस्कृति का ही दुष्परिणाम है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३९ वर्षों के बाद भी मिजोरम और नागालैंड मे अब भी काफी संख्या ऐसे लोगों की है, जो इन दोनों राज्यों को भारत से पृथक करने के लिए बेकरार और बेचैन से रहते हैं तथा हिन्दी के पढ़ने-पढ़ाने से चिढ़ते हैं। अंग्रेजी नागालैंड की राज्यभाषा है। वहां कथित बाहरी भारतीयो पर जमीन खरीद कर घर बनाने पर प्रतिबन्ध लगा है।

भारत एक प्रभुतासम्पन्न एव आत्मसम्मानी देश होने के नाते बिशपों की नियुक्ति, तबादले और पदोन्नति तथा विदेशो से प्राप्त बेशुमार राशि के सबध मे अपने को जोड़े जाने की बात पोप के सामने उठा सकता है। दूसरे शब्दो में वह पूर्व- अधिसूचना पर समझौते के लिए आग्रह कर सकता है। इस पूर्व सूचना के अन्तर्गत पोप को बिशपों की नियुक्ति से पहले भारत सरकार को अपने इरादे से अवगत करना और नियुक्ति के लिए स्वीकृति लेनी होगी। यह कोई नई बात नही और नया करार नहीं होगा। वैटिकन पूर्व-अधिसूचना सम्बन्धी समझौते २६ देशों से कर चुका है। इस आशय के करार उसने अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस आदि देशो से कर रखे हैं। ईसाई धर्म के सम्प्रदायो मे ये देश गैर कैथोलिक देश हैं। इन देशों का अनुभव है कि वैटिकन का धर्म-पिता कैथोलिक चर्च के माध्यम और मदद से राजनीति खेलता रहा है। धर्म के नाम पर राजनीति छेड़ने पर अंकुश रखने के लिए ही ये पश्चिमी देश वैटिकन द्वारा कैथोलिक बिशपों की नियुक्तियो मे अपनी 'हां' और 'ना' का अधिकार रखते हैं।

भारत सरकार यदि पोप से पूर्व-अधिसूचना के समझौते की बात करेगी तो यह कोई पहला अवसर नहीं होगा। १९७५ मे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बिशपो की नियुक्ति की पूर्व-सूचना के बारे मे पोप को प्रस्ताव भेजे थे। पोप ने तत्काल प्रतिक्रिया न करके मामला टाल दिया। फिर जनता पार्टी का शासन आ गया। जनता पार्टी की सरकार मनमानी धार्मिक स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाने के लिए विवादास्पद विधेयक पर सोच-विचार करती रही और उधर १९७७-७९ की अवधि में पोप ने भारत में डेढ़ दर्जन नए बिशप क्षेत्रों का निर्माण करके नए पादरी नियुक्त कर डाले।

(दैनिक हिन्दुस्तान २१-१-८६ से साभार)

एकता के लिए जरूरी

जाति तोड़ो मजहब छोड़ो मानवता से प्यार करो।
सुख सम्पत्ति और शान्ति बढ़े वह मार्यादा स्वीकार करो ॥
कितने जीवन नष्ट हुये हैं मजहब की शैतानी पर।
लाखों वीर शहीद हुये इस सम्प्रदाय की नादानी पर ॥
जाति

मानव जाति एक है धर्म कर्म सब एक है।
मजहब वाले कुछ भी कहें पर धर्म तो सबका एक है ॥
जो मानव का विघटन चाहे सब मिलकर प्रतिकार करो ॥
जाति

जाति-पाति की खाई को सब मिल-जुलकर पाट दो।
सम्प्रदाय के जहर को तर्क ज्ञान से छाट दो ॥
अन्धकार अज्ञान मिटाकर सत्य का प्रचार करो।
जाति

एक तरफ तो वह जन हैं जो ईश्वर को मानते।
जगती तल पर ऐसे भी हैं ईश्वर को नहीं जानते ॥
नास्तिक मति मन्द जरा ब्रह्म का साक्षात करो।
जाति

अहिंसा सत्य-अस्ते ब्रह्मचर्य का ज्ञान करो।
परिग्रह अन्धकार मिटाकर ब्रह्मा का भी ध्यान करो ॥
वैदिक परम्परा अपनाओ ओ३म् सदा उच्चार करो ॥
जाति

भौतिक वाद बढा है अब तो धमवाद का नाश हुआ।
दानवता बढ रही विश्व में मानवता का नाश हुआ ॥
धर्मधारी उठो अब दानवता पर वार करो।
जाति

वैदिक ज्ञान प्रकाश को पाखण्डियों में छिपा दिया।
धन्य धन्य गुरु देव दयानन्द तुमने ला फिर खडा किया था ॥
सीता राम अब करे वन्दना हैं ईश्वर उद्धार करो।
जाति

—सीताराम आर्य

बापू के सपनों का भारत

बापू के सपनों का भारत, राम राज्य कहलायेगा।
सोचा ये ही दयानन्द ने था, आर्यावर्त इसे बनायेंगे ॥
इसीलिये कुर्बानी दी थी, मां के वीर लालो ने।
देव दयानन्द अमर हो गये बापू भी यहीं समा गये ॥
दी कुर्बानी भगतसिंह ने, भारत राज्य बनाने को।
बापू के सपनों ...

पर नहीं बना ये सपनों का भारत जो राम राज्य कहलायेगा।
बड़े दुःखो से हृदय इनके जो तड़फ की जिगर में हुक है ॥
गोरा राज्य मिटायेंगे, स्वतन्त्र भारत बनायेंगे।
नौकरशाही उन्मूलन से, सच्चा स्वराज्य इसे बनायेंगे ॥
न होगा कोई गरीब भारत में सबके सब समान होंगे।
न होगा हिन्दू, मुस्लिम सिख, ईसाई सब ही सब हिन्दुस्तानी होंगे
बापू के सपनो......

बेडा उठाया नेहरू ने इसका, पाल पोष साकार किया इन्दिरा ने।
पर नही बना ये राम राज्य जो बापू के सपनों का भारत हो ॥
ना सुखी हुआ गरीब इस जग मे, ना मिटि गरीबी भारत से।
बढ़ गई जो भ्रष्टाचारी नौकरशाही भावे मे ॥
औरत बिकती सरे आम हैं इस स्वतन्त्र हिन्दुस्तान मे।
छोटे, बड़े सभी कहते हैं बन्द करो ये भ्रष्टाचारी का बाजार ॥
पर पनप रही हैं इनसे ही काले धन की चोर बजारी।
कैसे बनाये राम राज्य को बापू का स्वराज्य इसे तो ॥
बापू के सपनों का भारत

काम बड़ा है कन्धे पर अब इन्दिरा के सरताज पर।
युवात्मा को दे दिया अब सपनो के साकार का काम ॥
अब बन्द करो ये भ्रष्टाचारी, चैन करेगी जनता सारी।
लौटा दो युग सीता सावित्री का, तभी भारत महान बनेगा।
बापू का स्वराज्य वहां ना, दयानन्द का आर्यावर्त होगा ॥

—आर० गहलोत

नया प्रकाशन

१—वीर वैरागी भाई परमानन्द) ८)
२—माता (भगवती जागरण) (श्री अभयानन्द) ५० पै०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक) २)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली, २

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४–८५)

(गताक से आगे)

३–श्री चिरंजीलाल भल्ला गोसंवर्धन स्थिर निधि १ लाख रु०

(चिरजी लाल भल्ला चैरीटेबिल ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मुलकराज भल्ला द्वारा स्थापित ।

(१) सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा से इस राशि का विनिमय करेगी ।

(२) इस निधि से प्राप्त आय गोवश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित, पालन पोषण आदि मे व्यय तथा अन्य किसी ढग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिससे कि गोसवर्द्धन तथा दुग्ध उत्पादन मे वृद्धि हो और सर्वसामान्य जनता विशेषत पिछडी जातियो के स्वास्थ्य मे सुधार हो ।

(३) पशुओ की बीमारियो की रोकथाम के लिए अनुसधान कार्य मे व्यय करना ।

(४) इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आशिक धन राशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओ के रोगो पर अनुसधान नस्ल सुधारक शोध केन्द्रो की स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र । (चिकित्सालय) का नाम 'लाला चिरजी लाल भल्ला' रखना होगा ।

(५) इस निधि की राशि को 'चिरजी लाल भल्ला' चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा ।

इस निधि की स्वीकृति १२ ९ ८१ की अन्तरङ्ग सभा ने दी ।

४–स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्संग मंडल) डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली

स्थिर निधि १८ हजार नौ सौ अड़तीस रुपये चौसठ पैसे

स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्सग मडल) डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली ने १८,९३८)६४ की एक स्थिर निधि सभा मे कायम की है। इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यों में होगा ।

धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन, गरीब छात्र छात्राओ की छात्रवृत्ति । प्रकाशित पुस्तको पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किये जाने का उल्लेख हो । इस निधि के धन को कोई भी कभी वापिस लेने का अधिकारी नही होगा । २१-२-८२ की अन्तरग सभा ने इसकी स्वीकृति दी ।

श्री चननलाल शर्मा एवं श्रीमती पुरुषोत्तम देवी ५ हजार रुपये

श्री चननलाल शर्मा एव श्रीमती पुरुषोत्तम देवी वेद प्रचार हिन्दी भाषा प्रचार निधि, इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जा सकेगा । श्री चननलाल जी कलेरकला (गुरुदासपुर) के निवासी है ।

२६-१२-८० की अन्तरग बैठक ने यह निधि स्वीकार की । वर्ष के अन्त के इस निधि मे १०८१) ब्याज के जमा रहे ।

श्रीमती विद्यावती कौड़ा स्थिर निधि

५००० रुपए (पाच हजार रुपए) की स्थिर निधि श्रीमती विद्यावती कौडा धर्म पत्नी श्री निरजन देव जी विद्यालकार बी० ५/१५८ सफदरजग इ कलेव नई दिल्ली मे अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व फ्लाइट लेफ्टिनेंट श्री प्रियदेव कौडा की पुण्य स्मृति मे १-४-७८ को सभा मे स्थापित की थी । इस निधि के ब्याज का आधा भाग हवन आदि हेतु सम्भूदयाल वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद को श्री अभयदेव भिक्षु जी को जबतक उनका इस आश्रम से सम्बन्ध रहेगा दी जायेगी । शेष राशि सभा किसी विधवा को सहायतार्थ देगी । ब्याज की शेष राशि इस समय १०६०)८५ है । (क्रमश)

बिना युद्धेन-केशव

(पृष्ठ ३ का शेष)

भाषाई राज्यो की जनगणना के आधार पर इसमे भी जो नाटक रचा गया है, वह भी देख लिया । महाभारत मे विश्व की सेनायें आई थीं यहा पर सारे देश की पुलिस व सेना आई थी ।

अग्नि परीक्षा होनी है

भाषायी आधार पर गणना एक भयकर भूल है । आध्र के बनाने पर रोमुलू ने प्राण दिये थे पृथक आन्ध्र प्रदेश बना । उसके बाद कई राज्यो की की भाषायी आधार पर बटवारे की माग उपस्थित हुई । परन्तु प० नेहरू ने उसे स्वीकार नही किया । आज भी भाषायी समस्या खडी कर एक नई समस्या को जन्म दे रहे हैं ।

वस्तुस्थिति यह है कि पजाब और हरियाणा दोनो राज्यो के मुख्यमन्त्रियों पर विपक्षी नेताओ का भारी दबाव पड रहा है। पजाब मे उग्रवादियों ने अपनी गतिविधिया तेज करके बरनाला सरकार के लिये सिर दर्द पैदा कर दिया है । भाषायी जनगणना के परिणाम स्वरूप पजाब और हरियाणा के बीच जो कटुता पैदा हुई है वह वर्षो चलेगी । क्योंकि दोनों दल सक्षम हैं । पजाब समझौते के बाद सहयोग और सद्भावना का जो अच्छा माहौल बना था वह आज गायब हो गया है ।

पजाब के मुख्यमन्त्री ने यहा तक कह दिया है कि फाजिल्का का कुछ हिस्सा हरियाणा को चला गया, तो मैं शान्त नही बैठू गा । इसी प्रकार भजनलाल ने भी खम ठोक दी है कि यदि कन्दू खेडा के लोगो ने पजाब के पक्ष मे निर्णय दिया तो मैं मैथ्यू आयोग के निर्णय को नही मानू गा । एक साहब ने मैथ्यू आयोग को 'मि० जिन्ना" कहकर वातावरण दूषित करने का प्रयास किया है ।

१९८१ की जनगणना में वहा की जनता ने पजाब के पक्ष मे राय दी थी पर आज ही स्थिति भिन्न है वहा का हिन्दू पजाब के अकालियों के हाथो अपने को असुरक्षित अनुभव करता है सगीनो के साये मैं जनगणना की गई है तो वहा का हिन्दू किस प्रकार खुलकर अपनी राय दे सकेगा । आज सारे पजाब का हिन्दू अपने को असुरक्षित समझता है । रोजमर्रा की भाति हिन्दू का कत्लेआम हो रहा है । उस की सुरक्षा का ठेका कोई नही ले रहा है । उग्रवादी हत्या करके भाग जाते हैं और पकड मे नही आ रहे हैं । भूल कहा हुई है, जब बरनाला ने हत्या के हत्यारों को, सारे देश मे आग लगाने वालो को जेलो से मुक्त कर दिया । फौज के गद्दारो को क्षमा करके इनाम दिया गया तो बात वही हुई कि –

"खूटे से बन्धा बकरा वैसे ही बदमाश हैं फिर ऊपर से पीठ थपथपा दी जाय तो फिर और बदमाशी करेगा । यही दशा आज पंजाब की है । सारा सिख वातावरण का मानस-इन्दिरा जी की हत्या से पूर्व का बना हुआ है ।"

आगामी समय और वर्ष अग्नि परीक्षा के हैं, देश के पुनीत वातवरण को बनाने में हमारे नेता किस हद तक सफल होते हैं कनिष्क काण्ड घटा, सेकडों व्यक्ति मारे गये, सिद्धार्थ होटल जला, निर्दोष व्यक्तियो को क्या पता था । निद्रा का वातावरण 'चिर निद्रा में बदल जायगा । जनमानस की चीख पुकार वातावरणको हिलाकर दर्दनाक बना देगी । देश के पुनीत पर्व पर इतना तनाव कभी नहीं देखा गया ।

केन्द्र और राज्य सरकारों ने इस विस्फोटक स्थिति को ध्यान मे रखते हुए अनेक सुरक्षात्मक कदम उठाये हैं लेकिन चण्डीगढ और कन्दूखेडा हस्तान्तरण को लेकर जो राजनैतिक तनाव उत्पन्न हो गया है वह पुलिस बन्दोबस्त से दूर होने वाला नहीं है ।

कोई भगवान कृष्ण की तरह पाच गांवों पर ही समझौता कराने पर उद्यत हो सके, ऐसा भी वातावरण दीख नहीं रहा है ।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उ. प्र.
बिन्दकी फतेहपुर कार्य समिति
सन् १९८९

क्र०सं० नाम पता पद क्षेत्र

१—श्री बालकृष्ण आर्य, आर्य वीर निकेतन, बिन्दकी फतेहपुर, प्रान्तीय संचालक-७ उत्तर प्रदेश

२—श्री ज्ञान प्रकाश भारती, आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर, सहायक सहसंचालक उत्तर प्रदेश

३—श्री सुरेन्द्र कुमार जेमनी, ८० सब्जी बाजार मेरठ रोड, मुजफ्फर नगर मन्त्री उत्तर प्रदेश

४—श्री भगवती प्रसाद गुप्त, सब्जी मण्डी बिन्दकी फतेहपुर, कोषाध्यक्ष उत्तर प्रदेश

५—श्री आर्य प्रकाश आर्य, नवाही बाजार बिन्दकी फतेहपुर, उपमन्त्री उत्तर प्रदेश

६—श्री देवीदास आर्य, गोविन्द नगर कानपुर, संरक्षक उत्तर प्रदेश

७—श्री शेखर जी, हजरतगंज लखनऊ, संरक्षक उत्तर प्रदेश

८—श्री भूषण जी, सिविल लाइन मुरादाबाद, संरक्षक उत्तर प्रदेश

९—श्री पूरनचन्द्र आर्य, आर्यसमाज हींग की मण्डी आगरा, संरक्षक उ.प्र.

१०—श्री समरसिंह आर्य, आर्य समाज पलड़ी मेरठ, प्रान्तीय शिक्षक उ.प्र.

११—श्री विद्याशंकर अखिलेश, आर्य समाज गुड़ बरेली प्रान्तीय उ. प्र.

१२—श्री रामसिंह राणा आर्य समाज अमरोहा मुरादाबाद प्रान्तीय उ. प्र.

१३—श्री महात्मा आर्यभिक्षु, वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार बौधिकाध्यक्ष उ. प्र.

१४—श्री हरवंशलाल आर्य, ठाकुरगंज लखनऊ, आय-व्यय निरीक्षक

१५—श्री हरिओम गुप्ता, देवलाईटिंग फिटर उ० रेलवे बरेली, उपसंचालक

१६—श्री जयनारायण आर्य, ग्वाली सरायगंज अलीगढ़ उ. प्र.

१७—श्री वीरेन्द्र कुमार वाचस्पति, केस्प ट्रस्ट भवन थॉमसनगंज सीतापुर

१८—श्री बाबूराम आर्य, आर्य समाज सीपरी बाजार झांसी उ. प्र.

१९—श्री पं० फूलसिंह शास्त्री, आर्य समाज बनौरा टीकरी मेरठ उ. प्र.

२०—श्री रवीन्द्र आर्य, आर्यवीर निकेतन बिन्दकी फतेहपुर कार्यालय मन्त्री

२१—श्री बेचनसिंह आर्य, सादतपुरी वाराणसी, अधिष्ठाता उ. प्र.

२२—श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि लखनऊ, पदेन सदस्य उ.प्र.

२३—श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, आर्यसमाज अमरोहा मुरादाबाद सदस्य उ.प्र.

२४—श्री सन्तोष कण्व, ४० शाहबाई ठेरा बरेली, सदस्य उ. प्र.

२५—श्री कृष्णनाथ महता, ९ डी सिमार नगर लखनऊ, सदस्य उ. प्र.

२६—श्री हरिश्चन्द्र आर्य, जैन मन्दिर मार्ग रामपुर स्ट्रेट, सदस्य उ. प्र.

२७—श्री शिवशंकर सर्राफ, तिलहर शाहजहांपुर, सदस्य, उ. प्र.

नोट :—मण्डल पतियों की नियुक्ति इसमें नहीं है वह बाद में होगी।

सुरेन्द्र कुमार जमनी मुजफ्फरनगर — प्रान्तीय मन्त्री

डा० बालकृष्ण आर्य, प्रांतीय संचालक — सार्वदेशिक आर्य वीर दल उ. प्र.

आगामी होने वाले उत्सव

१—श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर (गुरुकुल संस्थान) नई दिल्ली के आचार्य हरिदेव जी सूचित करते हैं कि १५ फरवरी से २ मार्च ८९ तक गुरुकुल के प्रांगण में "यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" का आयोजन प्रतिदिन प्रातः ६ से ८॥ बजे तक और सायं ३ से ५॥ बजे तक होगा। कथा, उपदेश रात को ८ से ९॥ बजे तक।

२—आर्यसमाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव १४ से १६ फरवरी ८९ तक।

३—सभा मण्डल का अधिवेशन एक और दो फरवरी को गुरुकुल आमसेना कालाहाण्डी उड़ीसा में होगा।

श्री कंवरलाल गुप्त का निधन

नई दिल्ली, १९ जनवरी। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री कंवरलाल गुप्त का जयप्रकाश नारायण अस्पताल में निधन हो गया। वह ६२ वर्ष के थे और पिछले एक साल से बीमार चल रहे थे। श्री गुप्त को आज छाती में तेज दर्द होने पर जयप्रकाश नारायण अस्पताल में ले जाया गया, जहां १० मिनट के भीतर उन्होंने दम तोड़ दिया। श्री गुप्त के परिवार जनों के अनुसार उनकी मृत्यु सुबह ४-३० बजे हुई। उनके शोक सन्तप्त परिवार में पत्नी और चार बच्चे हैं।

श्री गुप्त भाजपा के गठन से पहले जनसंघ में भी सक्रिय नेता थे। जनसंघ के टिकट पर वह सदर बाजार क्षेत्र से लोकसभा के लिये चुने गये थे। १९७७ में वह दोबारा इसी संसदीय चुनाव क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए। वह लोकसभा की पब्लिक एकाउण्ट्स कमेटी के भी सदस्य रहे।

मृदुल स्वभाव के धनी श्री गुप्त अपनी पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में पिछले चालीस साल से दिल्ली में सक्रिय थे। उनका कार्य क्षेत्र शुरू से ही दिल्ली रहा। वह मानव अधिकारों के लिए सदैव संघर्षरत रहे। लोकसभा में उन्होंने सरकारी कर्मचारियों के हितों के लिए लगातार आवाज उठाई। १९८३ में उन्होंने सदर बाजार लोकसभा क्षेत्र को छोड़ कर नई दिल्ली से लोकसभा के लिए चुनाव लड़ा था। इस चुनाव में हुई हार के बाद से ही उनका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। पिछले चार महीने से उनकी हालत काफी गम्भीर थी। दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को मजबूत बनाने में उनका सक्रिय योगदान रहा।

श्री गुप्त दिल्ली की प्रमुख सामाजिक संस्था नागरिक परिषद से भी जुड़े रहे। इस संस्था के मंच से उन्होंने दिल्ली की जनता की समस्याओं को बखूबी से उठाया और बहुत से ठोस सुझाव भी दिए।

दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री मदनलाल खुराना ने श्री कंवरलाल गुप्त के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा है कि उनके उठ जाने से भारतीय जनता पार्टी अपना एक मजबूत स्तम्भ खो बैठी है।

दिल्ली प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता और महानगर पार्षद डा. रामलाल वर्मा ने कहा कि श्री गुप्त के निधन से दिल्ली प्रदेश भाजपा को एक जबरदस्त धक्का लगा है। यह रिक्तता अपूर्णीय है।

भारतीय जनता पार्टी के नेताओं सर्वश्री विजय कुमार मल्होत्रा और केदारनाथ साहनी ने भी उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है।

उत्सव

—आर्य वीर दल बम्बई महाराष्ट्र की ओर से शिविर का दीक्षांत समारोह श्री गुलजारी लाल जी की अध्यक्षता में ९-१-८९ को सम्पन्न। इसको सफल बनाने में प्रो० वेंकट राव, श्री ओमप्रकाश आर्य और पं० अर्जुन दास जी का विशेष सराहनीय सहयोग रहा। इसमें लगभग १५० युवकों ने भाग लिया।

— आर्य वीर दल रूपराय (महाराष्ट्र) का पाक्षिक शिविर ९-१-८९ को श्री पुण्डरीक जी (अकोला) राऊत की अध्यक्षता में सम्पन्न, इसमें ५० महाराष्ट्रीयन युवकों ने विशेष रुचि से कार्य किया। इसको सफल बनाने में श्री डा० विद्याभूषण खोपड़े ने पूरा-पूरा सहयोग किया।

आर्यसमाजों के उत्सव

—आर्य गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय [illegible] का वार्षिकोत्सव १४ मार्च से १६ मार्च ८९ तक।

—आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव २४ अप्रैल से २७ अप्रैल ८९ तक।

—आर्यसमाज बिठूर [illegible] का वार्षिकोत्सव १ मार्च से ५ मार्च ८९ तक।

बोर्ड क्लब में एक लाख से अधिक आर्य पहुंचें

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति के संयोजक माननीय श्री रामनाथ जी सहगल दिल्ली, दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से साग्रह प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी-अपनी समाजों से बस युवकों को लिखाकर बोट-क्लब पर आना है वह ठीक १० बजे लाल किले के मैदान में पहुंच जाएं।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल ४२ शंकर घोष लेन कलकत्ता के भवन का शिलान्यास करते हुए श्री रामगोपाल शालवाले सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के अधिकारियो के साथ सभा-प्रधान लाला रामगोपाल शालवाल श्री घनश्याम गोयल, श्री गजानन्द आर्य श्री सीत राम आर्य श्री हरिकृष्ण वमन श्री उमाकान्त उपाध्याय।

विशेष सूचना

डी० ए०वी० शताब्दी के उपलक्ष्य मे शनिवार १५ फरवरी १९८६ को निकलने वाली शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए जो आर्य समाजें, स्त्री आर्य समाज एवं आर्य सस्थाए बस बुक करना चाहे वे निम्न पते पर सम्पर्क करे।

—"हाईवे रोडवेज लाजपतराय मार्किट नई दिल्ली
फोन न० कार्यालय-२२५१०० एवं २२३७५१ तथा
निवास—६६०७११ एवं ६८७५१४

जो बस जलूस के स्थान तक ले जायगी तथा जलूस समाप्त होने पर अपने-२ स्थान पर छोड जायगे। उनका किराया २५०) रु० एवं जो बसें जलूस के साथ-२ चलगी उनका किराया ३००) रु० है।

—रामनाथ सहगल
सयोजक शोभा यात्रा

वेद प्रचार का संकल्प लें

हमारा प्रकाशन सस्ते साहित्य तथा प्रचार सामग्री द्वारा
आर्य जनता की सेवा कर रहा है।
लागत मूल्य पर
१ सामवेद मूल (२) यजुर्वेद मूल दे रहे हैं।
६ ५० प्रति पुस्तक का दाम होगा।
दोनो वेद शिवरात्रि तक मिल जायगे
अग्रिम आदेश वालो को ही मिलगे
अपना आदेश शीघ्र भेजें तथा वेदो का प्रचार करे।

आर्य प्रकाशन ८१४, कूण्डेवालान अजमेरी गेट दिल्ली

श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दि० २६-१२-८५ आर्यसमाज मदुरै विशेष में बाग मे श्री जगदीशप्रसाद बसल आर्यसमाज अन्तरंग सदस्य समाज के प्रधान श्री एम जो वामन मूर्ति जो एम ए एल एल बी अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर राठी श्री एम०के० बालकृष्णन भूतपूर्व मेयर श्री एम०के जक्कम्मन Ex M P श्री के० स तानम भूतपूर्व मेयर।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] वर्ष २१ अङ्क ६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

माघ शु० ७ स० २०४२ रविवार १६ फरवरी १९८६

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत २५०० ईसाई नर-नारियों का हिन्दू धर्म में प्रवेश

खरियार रोड कालाहांडी उड़ीसा में अभूतपूर्व शुद्धि सम्मेलन

कालाहाण्डो (उड़ीसा), २ फरवरी। उड़ीसा और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती खरियाररोड के निकट कालाहाण्डी के आदिवासी क्षेत्र में आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं के प्रयत्न से पोपपाल के भारत आगमन के अगले दिन दो फरवरी को ईसाई बने ढाई हजार आदिवासियों ने स्वेच्छा से अपने पूर्वजों के धर्म में पुन प्रवेश किया।

गुरुकुल आम सेना के प्रांगण में बीस यज्ञकुण्डों के चारों ओर बैठे इन आदिवासियों ने जब आर्य सन्यासियों द्वारा आम्र वृक्षों के पत्तों से जल प्रोक्षण के बाद गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ यज्ञोपवीत धारण किया तो इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर आसपास के इलाकों से आये हजारों लोगो ने तुमुल हर्ष ध्वनि से गद-गद होकर अपने इन वनवासी बन्धुओं का स्वागत किया। समारोह ने एक मेले का रूप धारण कर लिया था और प्रात काल से लेकर सायंकाल तक आने वाले लोगों का तांता लगा रहा।

अपने पूर्वजों के हिन्दू धर्म में पुनरावर्तन के पश्चात् सब आदिवासियों को कपडे वितरित किए गये और बाद में सब उपस्थित जनों ने अपने इन बन्धुओं के साथ प्रीति भोज मे भाग लिया।

इस अवसर पर अनेक आर्य संन्यासी, विद्वान, पण्डितों और उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश के आर्य नेता उपस्थित थे। कई वृद्धजनों की आंखें इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर हर्ष के आंसुओं से आप्लावित हो उठी। सन्यासियों ने सब पुनरागतों को आशीर्वाद दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले इस अवसर पर विशेष रूप से मुख्य अतिथि के रूप में निमन्त्रित थे। उन्होंने ईसाई मिशनरियों के धर्मान्तरण सम्बन्धी देश व्यापी षड्यन्त्र का पर्दाफाश करते हुए पोपपाल के आगमन पर एक लाख आदिवासियों के धर्मान्तरण के समाचार को समस्त हिन्दू जाति के लिये चुनौती बताते हुए कहा कि आर्य समाज इस षड्यन्त्र को कभी सफल नही होने देगा। आदिवासियों के इस पुनरावर्तन को धर्म परिवर्तन की संज्ञा नहीं दी जा सकती। उन्होंने महात्मा गांधी के कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि किसी भी लोभ और भय से जो हमारे भाई विधर्मियों के चगुल में [illegible]कर धर्म परिवर्तन कर लेते है, उन्हे वापिस अपने पूर्वजों के धर्म में लाना धर्म परिवर्तन नही, प्रत्युत एक अन्याय का परिमार्जन करना है।

आर्य समाज के इस कार्य की सब ओर प्रशंसा की जा रही है और उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश के आदिवासियों मे तथा हिन्दू जनता में नई चेतना जागृत हुई है।

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले, पूर्व सांसद, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा विदर्भ, मध्यप्रदेश और उड़ीसा का तूफानी दौरा धर्मरक्षा महाभियान का शंखनाद करते हुए लाला जी विदर्भ, मध्यप्रदेश और उड़ीसा का तूफानी दौरा करते हुए दुर्ग पहुचे। दिनांक ११ जनवरी को नई दिल्ली से प्रस्थान कर होशंगाबाद, नागपुर, भण्डारा गोंदिया, दुर्ग, रायपुर, टाटीबन्ध और भिलाई खरियार रोड (कालाहांडी) होते हुए आप दुर्ग पधारे। आपके साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री भी थे। प्रत्येक स्थान पर धर्म प्रेमी जनता ने बड़े उत्साह एवं उल्लास से आपका भावभीना स्वागत किया। आपने स्थान-स्थान पर कार्य कर्ताओं से वहां की सामाजिक और धार्मिक समस्याओं पर चर्चा की और धर्मान्तरण की समस्या का अध्ययन किया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेदामृतम्

परिवार निर्भय हो

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वम्
ऊर्ज बिभ्रत एमसि।
ऊर्जं बिभ्रद् वः सुमनाः सुमेधा
गृह नैमि मनसा मोदमानः॥
यजु० ३।४१॥

हिन्दी अर्थ –हे परिवार के लोगों ! (तुम किसी प्रकार के भय से) न भयभीत हो और न कांपो। शक्तिशाली तुम लोगों के सहायतार्थ हम आते हैं। मैं शक्तिशाली, प्रसन्नचित्त, बुद्धिमान्, मन से आनन्दित होता हुआ तुम्हारे घर आता हू।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक–ओ३म्प्रकाश त्यागी

प्रबन्ध-सम्पादक–सच्चिदानन्द शास्त्री

मुसलमान धार्मिक और राजनैतिक रूप से पाकिस्तान के निस्वत भारत में ज्यादा आजाद हैं ?

पाकिस्तान की केन्द्रीय जमीयत उल्माये इस्लाम के जनरल सेक्रेटरी मौ० फजलुल रहमान का वक्तव्य

भारत में होने वाले मुस्लिमकश फसादात में हुकूमत का कोई हाथ नहीं, ऐसे दंगे पाकिस्तान में भी होते रहते हैं।

डेरा इस्माइल खां पाकिस्तान २८ जनवरी; जमीयत उल्माये इस्लाम के जन सेक्रेटरी मौ० फजलुल रहमान ने कहा है कि भारत में शेखुल हिन्द सेमीनार के मौके पर अब्दुल वली खान ने कोई काबिले एतराज और खिलाफे हकीकत बात नहीं की थी। बल्कि उन्होंने उल्माये हक बिल खुसूस उल्माये देवबन्द के मुजाहराना करदार की तारीफ की थी। इन लोगों पर कड़ी तनकीद की थी जो उल्मा का लिबादा ओढ़कर अंग्रेज हुकमरानों के आलाहकार का करदार अदा कर रहे थे।

नवाये वक्त से बात-चीत करते हुए उन्होंने कहा कि जब वली खां ने उल्माओं के अफसोस नाक करदार का जिक्र किया तो चन्द एक उल्मा ने सरगोशियों में इस बात पर एतराज किया। जिस पर वली खां ने कहा—जिसे इनकी बातों पर एतराज है यह सच बात नहीं सुन सकते, वह बाहर चले जायें। इस पर गिनती के चन्द मुराआन आफता उल्मा उठकर चले गये, जो बाद में अपनी गलती मान कर वापस आ गये। यह मामूली सा वाक्य था जिसका भारत के किसी भी अखबार ने जिक्र तक नहीं किया लेकिन पाकिस्तान के कुछ उल्माओं ने केवल सभी सोहरत हासिल करने के लिये उसे बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया। मौ० फजलुल रहमान ने कहा—कि भारत में मुसलमान पाकिस्तान के निस्वत मजहबी और सियासती तौर पर हमसे ज्यादा आजाद है। मौ० ने कहा—हिन्दू मुस्लिम, फसादात में भारत सरकार का कोई दखल नहीं, ऐसे फसादात तो पाकिस्तान में भी होते रहते हैं। भारत में मुसलमान-पाकिस्तान के बनिस्पत काफी सुदृढ़ व सुरक्षित है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा उपमन्त्री

धर्मरक्षा महाभियान

(पृष्ठ १ का शेष)

कार्यकर्ताओं की बैठकें ली जिसमें उन्हें आर्यसमाज के सार्वभौम भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में दिशा निर्देश दिये।

आपके दौरे से तीनों प्रान्तों के आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं में में विशेषतः युवा वर्ग में नव स्फूर्ति और उत्साह का संचार हुआ। विभिन्न विचार गोष्ठियों में आगामी कार्यक्रम निर्धारित किये गये। लाला जी की इस यात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ की प्रधाना श्रीमती कौशल्या देवी और मन्त्री श्री रमेश चन्द्र तथा उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती एवं आर्य जगत के कार्यकर्ताओं के साथ में रहे।

इस शृंखला में आर्य समाज की सार्वभौम शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले पूर्व संसद की अध्यक्षता में यहां एक विशाल वैदिक धर्म समारोह का आयोजन हुआ। जिसमें वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द सरस्वती महाराज तथा अन्य कर्मठ सन्यासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। भारत के अन्य प्रान्तों से पधारे हुए आर्य समाज के प्रतिनिधियों और अधिकारियों ने इस समारोह में भाग लिया।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीर्जापुर द्वारा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

ओबरा (मीर्जापुर)

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मीर्जापुर ने अपने रजत जयन्ती समारोह ७, ८, ९ मार्च १६८६ के अवसर पर ५ मार्च से ६ मार्च तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का महत्वपूर्ण आयोजन किया है। ६ मार्च को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर जी हंस शिविर समापन पर आर्य वीरों को उद्बोधित करेंगे।

इस अवसर पर एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जावेगा: प्रमुख वक्ताओं में श्री जयप्रकाश आर्य (हिसार) शास्त्रार्थ महारथी पं० सत्यमित्र शास्त्री, स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती (गाजियाबाद) डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री प्रवक्ता (अमेठी) श्री सन्तोष कुमारी कपूर (उपप्रधान-सभा उ०प्र०, आदि अनेक गणमान्य व्यक्तित्व पधार कर अपने विचारोंसे सर्वसाधारण का मार्गदर्शन करेंगे।

श्री ओम्प्रकाश अमीजा (संरक्षक) रामनारायण गुप्त (स्वागताध्यक्ष, श्री नागेन्द्र (प्रधान) रामसूरतसिंह (कोषाध्यक्ष, जगदीशसिंह मन्त्री ने अपनी गतिविधियां तेज करके रजत जयन्ती समारोह सफल बनाने हेतु प्रयास प्रारम्भ कर दिये हैं। संयोजक का उत्तर दायित्व आर्य वीर दल अधिष्ठाता उत्तर प्रदेश ने सम्हाल लिया है।

—प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज ओबरा
जिला-मीर्जापुर

पुस्तक मेरी दृष्टि में

'स्टोर्म इन पंजाब'

—सच्चिदानन्द शास्त्री

किसी अंग्रेजी की पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद होना एक साधारण बात है परन्तु हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद होना साधारण बात नहीं है। वर्तमान पुस्तक "स्टोर्म इन पंजाब" हिन्दी से अंग्रेजी में अनूदित होने वाली ऐसी ही असाधारण पुस्तक है। जिसके लेखक प्रसिद्ध पत्रकार क्षितीश वेदालंकार हैं।

निष्पक्ष आलोचकों ने मुक्त कंठ से यह स्वीकार किया था कि वरिष्ठ पत्रकार श्री क्षितीश द्वारा लिखित "पंजाब तूफान के दौर से" नामक पुस्तक भारतवर्ष की राजनीति साहित्य की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। हिन्दी में उस पुस्तक का जैसा स्वागत हुआ और देखते ही देखते दो संस्करण हाथों हाथ निकल गये, तब कुछ बुद्धिजीवियों ने और विदेश-स्थित भारतीयों ने आग्रह किया कि उस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद होना चाहिए। उसी मांग को पूरा करने के लिए लेखक ने यह संशोधित और परिवर्द्धित अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित किया है।

डा० हरिवंशराय बच्चन ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है—"जिस शोध, श्रम, सूझ-बूझ, साथ ही जिस बेबाकी और निर्भीकता से यह पुस्तक लिखी गई है, उसके लिए जितनी प्रशंसा की जाय, उतनी ही कम होगी। पंजाब की समस्या को जो भी समझना चाहे, उसे यह पुस्तक पढ़नी ही चाहिए। क्योंकि पंजाबकी समस्या का जो भी समाधान होगा, उससे सारा भारतवर्ष प्रभावित होगा। इस लिए प्रत्येक जागरूक भारतवासी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इस समस्या को समझे। मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि इस विषय में इस पुस्तक से बढ़ कर और कोई पुस्तक मेरी दृष्टि में नहीं आई। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि इस पुस्तक का अनुवाद भारत की प्रत्येक भाषा में होना चाहिए। अंग्रेजी में तो तुरन्त ही होना चाहिए। क्योंकि आज-कल के भारतीय बुद्धिजीवियों का बोध-माध्यम अंग्रेजी बन गया है।"

इसी से प्रेरित होकर लेखक ने अपनी पुस्तक का यह अंग्रेजी संस्करण निकाला है। हिन्दी वाली पुस्तक से इस संस्करण में तीन अध्याय और नये जोड़े गए हैं। एक—"इन्दिरा गांधी की हत्या के सम्बन्ध में, दूसरा—उसके बाद के घटना चक्र और आतंकवाद के प्रसार के सम्बन्ध में और तीसरा—आर्य समाज के सम्बन्ध में। इन तीन महत्वपूर्ण नये अध्यायों के जोड़ने से यह पुस्तक और अधिक संग्रहणीय बन गयी है।

शुरू में लेखक ने "पंजाब के नाम जो एक पाती" लिखी है, वह तो ऐसी कवित्वपूर्ण है कि उसको दस बार पढ़ने के बाद भी मन नहीं भरता। विगत ४ वर्षों में पंजाब की भूमि को जिस तूफान से गुजरना पड़ा है उसका पूरी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ लेखक ने जैसा चित्रण किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। पंजाब के सम्बन्ध में हिन्दी और अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें निकली हैं, परन्तु इतिहास के गर्भ में छिपे अनेक रहस्यपूर्ण तथ्यों का जैसा विवेचन इस पुस्तक में हुआ है, वैसा और किसी पुस्तक में नहीं है। यही कारण है कि अन्य पुस्तकों को पढ़ने के बाद सामान्य पाठक उन्हें एक ओर उठा कर रख देगा, जबकि इस पुस्तक को बार-बार पढ़ने पर भी उसकी तृप्ति नहीं होगी। इस पुस्तक में ऐतिहासिक तथ्यों का विवरण भी इस ढंग से सन्नोजित होता है कि उसमें कहीं इतिहास की नीरसता नहीं रहती। किसी कुशल लेखक की कलम से इतिहास भी कितना रोचक हो सकता है, यह इस पुस्तक को पढ़ने से पता लगता है। उपन्यास न होकर भी यह पुस्तक उपन्यास की तरह पाठक को बांधे रखती है।

गुरु नानक से लेकर अन्य गुरुओं तक सिख पंथ किस रूप में विकसित होता गया, फिर भक्तिकाल में जन्मे इस आध्यात्मिक पंथ को किस प्रकार दशमेश गुरु गोविन्दसिंह ने जुझारू खालसा सेना का रूप दिया, इसके बाद कैसे आस्था भटक कर फूट में बदल गयी, किस प्रकार अंग्रेजों ने छल करके सिखों को पटाया और मैकालिफ की माया ने पंथ को भरमाया, किस प्रकार गुरु सिंह सभा अलगाव का परचम लहराती रही और अकाली दल का एक वर्ग अपने जन्म काल से ही खालिस्तान की रणभेरी में फूंक मारता रहा, किस प्रकार आजादी के आन्दोलन में भी सिख राजनीति अनेक नावों पर सवार होकर डावांडोल होती रही, इस सबका लेखक ने अनेक अध्यायों में सरस और प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया है।

मुझे विशेष प्रसन्नता यह देख कर हुई कि लेखक ने सारी पुस्तक में जो राष्ट्रवादी स्वर रखा है, वह भारत की आगामी पीढ़ी के लिए भी सब से अधिक प्रेरणादायक है। इसीलिए लेखक ने उन नामधारी राष्ट्र भक्त कूकाओं पर एक अलग अध्याय ही लिखना उचित समझा है जिन्हें आज की छिछली राजनीति ने आधुनिक पीढ़ी की आंखों से ओझल कर दिया था। आश्चर्य है,उन राष्ट्रभक्त कूकाओं को भी पंथ द्रोही बताया गया था।

पुस्तक में किस प्रकार के तथ्यों का विवेचन है उसकी झांकी आवरण पृष्ठ पर दिए गए "क्लिप इट और नोट" के अन्तर्गत इन मुद्दों से हो जावेगी :—

१—जलियावाला बाग के हत्या-कांड के जिम्मेवार जनरल डायर को स्वर्ण मन्दिर मे बुलाकर सरोपा भेंट किया गया था।

२—महाराजा रणजीतसिंह के खालसा राज को समाप्त करने वाले लार्ड डलहौजी के स्वागत के लिए स्वर्ण मन्दिर मे दीवाली मनाई गयी थी।

३—स्वर्ण मन्दिर की चाबियां अंग्रेज सरकार को सौंप दी गयी थी।

४—सिंह सभा का सदस्य अंग्रेज बन सकता था, हिन्दू नहीं।

५—सन् १८५७ की राज्य क्रान्ति में ब्रिटिश सरकार का विरोध करने वालों को गद्दार कहा गया था और सब सिख रियासतों ने अंग्रेजों का साथ दिया था।

६—भारतीय संविधान और भारतीय राष्ट्र ध्वज को जलाकर उसकी राख राष्ट्रपति को भेजी गयी थी।

७—अकाल तख्त के ग्रन्थियों से ४ करोड़ रुपए का सोना छीना गया था।

८—इन्दिरा गांधी की हत्या के लिए ७५ हजार पौण्ड के पुरस्कार की घोषणा की गई थी।

९—अकाली दल के अध्यक्ष लोंगोवाल की दिन दहाड़े हत्या कर दी गई थी, जबकि वे गुरुग्रन्थ साहब के सामने अरदास करते के लिए झुके हुए थे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सिख नेतृत्व किस प्रकार दिशा हीन बना रहा, किस प्रकार हरित क्रान्ति के पश्चात् नव-धनाढ्य तबके ने आर्थिक और औद्योगिक हितों की होड़ में हिन्दू-विरोधी, सरकार विरोधी और भारत-विरोधी, रुख अपनाना प्रारम्भ किया और किस प्रकार विदेशी शक्तियों की शह पर अलग राष्ट्र की मांग का नारा बुलन्द किया गया और अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र के विभिन्न रूपों में आतंकवाद पनपता रहा, इस सबका

(शेष पृष्ठ १० पर)

पंजाब के सम्बन्ध में यह पुस्तक लिखकर श्री क्षितीश वेदालंकार ने जनता का, और खास तौर से आर्य समाज का, जो उपकार किया है, मैं इसके लिये उनको बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। उन्होंने इस पुस्तक के लिये ऐतिहासिक तथ्यों की खोज करने में जो कठिन परिश्रम किया है, अगर वह सामने न आता तो इतिहास का यह पक्ष जनता की आंखों से ओझल ही रह जाता। कुछ इतिहासकार जान-बूझकर यह भ्रम फैलाते हैं कि सिखों और हिन्दुओं में दरार आर्य समाज ने डाली है। इसका जैसा युक्तियुक्त और ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्रमाणिक उत्तर क्षितीश जी ने दिया है उसे पढ़कर मेरी यह राय है कि यह पुस्तक कम से कम हरेक आर्यसमाज में तो अवश्य होनी ही चाहिये। इस पुस्तक के रहते इस विषय में फैलाई जाने वाली गलत फहमियों के बारे में अब किसी को मौन रहने की जरूरत नहीं रहेगी। राष्ट्रद्रोहियों को निरुत्तर करने के लिये इस पुस्तक के रूप में लेखक ने एक कारगर हथियार पाठकों को सौंपा है। बिना किसी वर्ग विद्वेष और साम्प्रदायिक पक्ष पात के लेखक ने विशुद्ध राष्ट्रवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करके सचमुच ही जनता का बहुत उपकार किया है, इसके लिये मैं उन्हें पुनः हार्दिक बधाई देता हूं।

—रामगोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ऋग्वेद और अमरीकी सर्वोच्च न्यायालय

—हंस—

वियतनाम-युद्ध के दौरान, तीन ऐसे अमरीकी नवयुवकों की, जो अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण के विरोधी थे, इस प्रशिक्षण से मुक्त रखे जाने की प्रार्थना स्वीकार करते हुए, अमरीकी सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया था, उसमें उसने ऋग्वेद का विस्तृत उल्लेख भी किया था। पढ़िये, उस निर्णय का सार।

वियतनाम युद्ध के परिणाम स्वरूप अनेक अमरीकी नवयुवकों में आन्तरिक विक्षोभ उत्पन्न हो गया था। अनेक नवयुवकों ने अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण लेने से सिर्फ इसलिये इंकार कर दिया था कि उनकी अन्तरात्मा युद्ध की विरोधी है। सीगर, जैकबसन तथा पीटर, इन तीन नवयुवकों ने अपने इस विरोध को मुखर करते हुए, आन्तरिक प्रेरणा के आधार पर इस प्रशिक्षण से मुक्त रहने की तब मांग की थी।

अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण लेने से इंकार करना अमरीका में चूंकि एक अपराध माना जाता है, इसलिये सरकार द्वारा उन पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमे तीन अलग-२ जिला अदालतों में चले, और तीनों ने उन्हें कारावास का दण्ड दिया। इस निर्णय के विरुद्ध तीनों ने उच्च न्यायालय में अपील की। उच्च न्यायालय ने उनके तर्क को मान्य करते हुए, उनकी सजा रद्द कर दी। उच्च न्यायालय के इस निर्णय के विरुद्ध इस बार अमरीकी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की।

परम सत्ता में आस्था—

सर्वोच्च न्यायालय में सीगर ने बयान दिया कि अपने धार्मिक विश्वास के कारण वह हर प्रकार के युद्ध में भाग लेने का हृदय से विरोध करता है। उसने कहा, 'मेरी आस्था परम सत्ता में है, और इस आस्था के कारण ही वह इस प्रश्न का 'हां' या ना में उत्तर देने की अपेक्षा इस प्रश्न को रखना ज्यादा पसन्द करूंगा। मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि परम सत्ता में मेरी आस्था के अर्थ यह नहीं हैं कि मेरी आस्था विशुद्ध नैतिक धर्म में नहीं रही है।"

पीटर ने कहा, "मेरी आस्था भी उस परम सत्ता में है, जिसने मानव व प्रकृति का सृजन किया है। मानव का अस्तित्व उस परम सत्ता के कारण ही है। परमसत्ता की अपनी इस परिभाषा के स्पष्टीकरण में ऐसी उक्तियां प्रस्तुत करना चाहूंगा, जिनके भावार्थ यही हैं कि किसी मानव के प्राण लेना उस परम सत्ता के नैतिक विधान का उल्लंघन करना है। मैं अपने इस विश्वास को प्रजा को राज्य के प्रति उत्तरदायित्व से ऊपर मानता हूं। मेरी सजा धार्मिक आधार पर दी गयी है, या नहीं, इस प्रश्न के उत्तर में रेवरेण्ड जॉन होम्स की धर्म की परिभाषा प्रस्तुत करना चाहूंगा, जिसका भावार्थ है, किसी ऐसी परम सत्ता की अनुभूति, जो प्रकृति में परिलक्षित होती है, और जो मानव को उनके नियमों व आदर्शों के अनुकूल, जीवन को विकसित करने में सक्षम बनाती है।"

जैकबसन ने भी अपने बयान द्वारा ऐसी परम सत्ता में अपनी आस्था व्यक्त की, जो सारे सृजन का मूल है। उसने कहा, 'मेरा धार्मिक और सामाजिक चिन्तन पर्याप्त विचार, चिंतन व मनन के बाद विकसित हुआ है। परम सत्ता से एकाकार होने के लिए मानव के लिए आध्यात्मिक होना परम आवश्यक है। मेरे लिए उस परम सत्ता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नियम यह है कि किसी भी मानव को किसी अन्य उद्देश्य की सिद्धि के साधन के रूप में मनमाने ढंग से दूसरों के जीवन की बलि नहीं चढ़ानी चाहिए।'

तीनों ने अपनी आस्था का स्रोत जन-तन्त्रीय अमरीकी संस्कृति बताया, जो धार्मिक एवं दार्शनिक परम्पराओं की विशिष्टताओं से युक्त है, इस प्रसंग में उन्होंने ऋग्वेद का उल्लेख किया, जो मानव की उच्चतम विचारधारा, गहन चिन्तन और सर्वोत्कृष्ट जीवन-प्रणाली को अभिव्यक्त करता है। उन्होंने कहा कि जिस परम सत्ता का उन्होंने बार-२ उल्लेख किया है, उसे अनेक लोग ईश्वर या भगवान के नाम से भी पुकारते हैं।

परम सत्ता के विभिन्न नाम

अमरीकी सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की प्रशंसा की जानी चाहिए कि उन्होंने अमरीकी सरकार की दलील पर विचार करते समय अपने मन व मस्तिष्क खुले रखे, और विभिन्न धर्मों तथा राष्ट्रों की दार्शनिक व आध्यात्मिक हवाओं को उनमें प्रवेश होने दिया। परम सत्ता के अर्थ व उसकी भावना को समझने के लिए उन्होंने भारत व ऋग्वेद की ओर भी अपनी दृष्टि फेरी।

न्यायाधीशों ने ऋग्वेद के अंग्रेजी अनुवादकों का मनन-अध्ययन करने के पश्चात् उसके कथनों को विश्वसनीय माना, और अपने निर्णय में कहा, 'परम सत्ता शब्द का अर्थ संकुचित नहीं हो सकता। उसकी परिभाषा, उसके परम होने के कारण, सर्वसमावेशी और सर्वव्यापी होनी आवश्यक है।

"हमारी ईसाई और यहूदी सभ्यता के प्रादुर्भाव से बहुत पहले, भारत में इस परम सत्ता (परमात्मा) की भावना विविध रूपों में बद्धमूल हो चुकी थी।"

हिन्दू धर्म, और उसके बाद बौद्ध धर्म ने, इस परम सत्ता के स्वरूप, उसकी व्यापकता एवं सर्वोपरिता की स्पष्ट व्याख्या की। हिन्दू धर्म में यह परम सत्ता जिन विभिन्न देवी-देवताओं का रूप लिये हुए है, उनमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश मुख्य हैं। एक अन्य उपास्या वह दैवी शक्ति है, जिसकी व्यापक रूप से पूजा होती है। इस शक्ति को विनाशक भी माना गया है, और रचनात्मक भी। यद्यपि हिन्दू धर्म विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा करता है, तथापि उसकी एक ही परम सत्ता (परमात्मा) में रहती है। उसके अनुसार यह विविध गुणों से संयुक्त है, तथा उसका सदैव अस्तित्व रहता है। इस भाव की अभिव्यक्ति ऋग्वेद के जो हिन्दुओं का प्राचीनतम ग्रंथ है।'

अमरीकी सर्वोच्च न्यायालय का अभिप्राय ऋग्वेद के जिस मन्त्र से है, वह इस प्रकार है:—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथोऽदिव्य स सुपर्णो गरुत्मान।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥

(वे इसे इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि व गुरुत्मान् के नाम से पुकारते हैं, परन्तु वास्तविक परम सत्ता एक ही है। जैसे अग्नि आदि पदार्थों के इन्द्र, मित्र आदि सहस्रों नाम हैं, उसी प्रकार उस परम सत्ता (परमात्मा) के अनेकानेक गुण, कर्म व स्वभाव भी हैं।)

ब्रह्म—परम सत्ता का द्योतक

'अनेक शाखाओं वाले भारतीय दर्शन-शास्त्र ने परम सत्ता के विषय में यूं तो विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं, किन्तु मूलतः वे एक ही बात कहते हैं। हिन्दुओं के पवित्र धर्मग्रन्थों उपनिषदों के अनुसार, 'परम सत्ता वह शक्ति है, जो सृष्टि की रचना भी करती है, और संहार भी। प्रलयकाल में सारी सृष्टि उसी में लय हो जाती है।' उपनिषदों ने इस परम सत्ता के द्योतक शब्द के रूप में 'ब्रह्म' का प्रयोग किया है।

"दार्शनिक दृष्टि से परम सत्ता अनुभूत की जा सकने वाली सर्वोत्तम गुणों से युक्त सत्ता है, जो सत्, चित और आनन्द है, और सारी सृष्टि का आदि मूल है। इस दृष्टि से ब्रह्म अनन्त-अपरिमित और सारी सृष्टि का कर्त्ता है।"

'यह एक रोचक और उल्लेखनीय बात है कि प्राचीन काल की अन्य सभ्यताओं ने भौतिक द्रव्यों, जैसे स्वर्ण, रत्न, [illegible] आदि को सर्वाधिक मूल्यवान मानकर, उनका संग्रह करने का प्रयास किया,

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्यकार, शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

—डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के अद्वितीय विद्वान् लेखक शास्त्रार्थ महारथी और वक्ता स्वामी दर्शनानन्द का जन्म माघ कृष्णा दशमी १९१८ वि० को लुधियाना जिले के जगरांवा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं० रामप्रताप शर्मा था जो मौद्गल्य गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। माता का नाम हीरा देवी था। पुरानी प्रथा के अनुसार इनका नाम बेलाराम रखा गया, किन्तु शीघ्र ही इसे बदल कर इन्हें 'कृपाराम' के नाम से पुकारा जाने लगा कृपाराम की प्रारम्भिक शिक्षा पिता के निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी ग्रन्थ 'गुलिस्तां' तथा 'बोस्तां' पढ़े। साथ ही संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सिद्धान्त कौमुदी पढ़ना प्रारम्भ किया। तत्कालीन प्रथा के अनुसार इनका विवाह वैशाख कृष्णा पंचमी १९२९ वि० को मात्र ११ वर्ष की आयु में पार्वती देवी नामक कन्या से कर दिया गया।

कृपाराम के पिता अपने ग्राम के एक अच्छे व्यवसायी और धनाढ्य व्यक्ति थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि कृपाराम भी एक निपुण व्यापारी बनकर धनोपार्जन करे परन्तु कृपाराम को व्यापार व्यवसाय से सहज विरक्ति थी। स्वतन्त्र प्रकृति के होने के कारण एक दिन अचानक वे गृहत्याग कर सन्यासी बन गये। संन्यासी बन कर वे पंजाब के विभिन्न नगरों में घूमते रहे। इसी अवधि में उन्हें स्वामी दयानन्द के ३७ व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। अब तक उन पर नवीन वेदान्त की विचारधारा का प्रबल प्रभाव था। इस समय उन्होंने जंग आजादी नामक १८ पृष्ठों की एक पुस्तक लिखी जो उर्दू पद्य में थी। जब दीना नगर पंजाब, में वे एक पादरी से बहस कर रहे थे, उनके चाचा जयराम ने उन्हें जा पकड़ा और घर चलने के लिये विवश किया। कृपाराम घर चलने के लिये तैयार तो हुये, परन्तु तीन शर्तों के साथ—(१) गेरुवे वस्त्र नहीं उतारेंगे। (२) घर में न रह कर बैठक खाने में रहेंगे। (३) स्वामी दयानन्द के समस्त ग्रन्थ क्रय करेंगे। शर्तें स्वीकार होने पर वे पुनः घर लौट आये।

प० कृपाराम के पिता पं० दौलतराम अपने जीवन के अन्तिम भाग में काशी में रहने लगे थे। यहां उन्होंने एक क्षेत्र चलाया जिसके माध्यम से संस्कृत पढ़ने के इच्छुक छात्रों के भोजन आदि की व्यवस्था होती थी। पितामह के दिवंगत होने पर पं० कृपाराम को काशी रहकर उनकी सम्पत्ति आदि की व्यवस्था करने के लिये कहा गया। यहां उन्होंने तिमिर नाशक प्रैस की स्थापना १० दिसम्बर १८८६ को की तथा इस प्रैस के माध्यम से वे संस्कृत शास्त्र ग्रन्थों का प्रकाशन कर उन्हें सस्ते मूल्य पर छात्रों को देने लगे। यहां रहकर ही उन्होंने स्वामी मनीषानन्द नामक विख्यात विद्वान् का शिष्यत्व ग्रहण किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निगूढ़ अध्ययन किया। अब वे दृढ़ आर्यसमाजी विचारों के बन चुके थे। काशी में रहकर विद्याध्ययन करने वाले आर्यसमाजी छात्रों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। पं० कृपाराम ने इसे अनुभव किया और उन्होंने एक पाठशाला स्थापित की जिसमें आर्यसमाजी विचारधारा के छात्रों के पढ़ने की सुचारु व्यवस्था थी पं० काशीनाथ शास्त्री इस पाठशाला के अध्यापक थे तथा पं० गंगादत्त शास्त्री एवं पं० भीमसेन शर्मा (आगरा) आदि उन दिनों विद्यार्थी थे।

धीरे-धीरे पं० कृपाराम का क्षेत्र अधिक व्यापक होता गया। अब वे वैदिक धर्म के प्रचारक बनकर पंजाब तथा संयुक्त प्रान्त में भ्रमण करने लगे। १८९३ से १८९६ तक का काल उक्त दोनों प्रान्तों में व्यतीत किया। १८९७ से १९०० तक मेरठ, मुरादाबाद, दिल्ली, आगरा आदि नगरों में रहे। नियमित रूप से शास्त्रार्थ करना, व्याख्यान देना एक ट्रैक्ट रोज लिखना, शंका समाधान करना आदि कार्य—उनकी दिनचर्या के अंग थे। सं० १९०१ में पं० कृपाराम ने संन्यास की दीक्षा स्वामी अनुभवानन्द से ली और दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। अब वे स्वतन्त्र परिव्राजक होकर निर्द्वन्द्व भाव से विचरण करने लगे। स्वामी दर्शनानन्द की प्रवृत्तियां निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती हैं—

१—प्रतिद्वन्द्वी धर्मावलम्बियों से शास्त्रार्थ—उन्होंने पौराणिक, जैन, ईसाई तथा इस्लाम मतों के आचार्यों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये।

२—गुरुकुलों की स्थापना—सिकन्दराबाद (उत्तर प्रदेश) बदायूं तथा ज्वालापुर में गुरुकुल की स्थापना का श्रेय उन्हें ही है।

३—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन—अपने जीवन काल में उन्होंने कोई एक दर्जन पत्र प्रकाशित किये।

४—लेखन कार्य—स्वामी जी ने १८९६ से एक ट्रैक्ट प्रतिदिन लिखने का नियम बना लिया था। इस प्रकार उनकी लेखनी से सैकड़ों ट्रैक्ट निकले। उन्होंने अनेक दर्शनों का भाष्य किया, उपनिषदों पर टीका लिखी। कथा कहानियों के माध्यम से धार्मिक सिद्धान्तों का विवेचन करना उनके साहित्य लेखन की एक अन्य विशिष्ट विधा थी। ११ मई १९१३ को हाथरस में उनका निधन हुआ।

स्वामी दर्शनानन्द का साहित्य मूलतः उर्दू में लिखा गया है। यहां उनके द्वारा लिखित एवं प्रकाशित सभी कृतियों का यथोपलब्ध विवरण किया जा रहा है—

१—सामवेद संहिता—विक्टोरिया यन्त्रालय, काशी में मुद्रित।

२—अष्टाध्यायी काशिका वृत्ति।

३—अष्टाध्यायी महाभाष्य। उनके समस्त ग्रन्थों की संख्या सैकड़ों तक पहुंच चुकी है।

स्व० वीतराग स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के कुछ संस्मरण

वीतराग निःशुल्क गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को उन्नायक स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती का मनोवैज्ञानिक जीवन दर्शन से विदित होता है कि उनका यशोगान करने वाले तत्कालीन आर्य विद्वान् और श्रोतवृन्द कितने प्रभावित होते थे। स्वामी जी के शास्त्रार्थ उनके भाषणों, दर्शनों के भाष्यों से जिन्हें पढ़कर साधारणजन भी उपदेशक बन गये।

निःशुल्क शिक्षा प्रणाली को जीवन प्रदान करने में शिक्षण संस्थानों का महत्व जिनमें गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय-गुरुकुल वृन्दावन, सिकन्दराबाद, बदायूं अभी भी उनके साक्षात् स्मारक हैं। आज उनकी स्मृति में कुछ श्रद्धासुमन प्रस्तुत हैं। पढ़ें और मनन करें।

—आचार्य सत्यव्रत शास्त्री, रामपुर

पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

आर्यसमाज के बनाने और बढ़ाने वालों में स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का स्थान बहुत ऊंचा है। महर्षि दयानन्द के दार्शनिक विचारों से अवगत कराया गया था। दर्शनानन्द शब्द के अर्थ हैं दर्शन-शास्त्र के अध्ययन से आनन्द लाभ करने वाला। स्वामी जी छहों दर्शनों के अंगों में पारंगत थे और स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों सम्बन्धी उनका अध्ययन गहन था। उनकी भाषण प्रणाली ऐसी थी जो बड़ी आसानी से युवकों के हृदयों में दर्शन-शास्त्र के प्रति अनुराग उत्पन्न कर देती थी। शंका समाधान करते हुए—ऐसे उत्तरोत्तर श्रद्धा बढ़ जाती थी।

स्वामी जी स्वभाव से त्यागी थे। हजारों रुपया साहित्य पर व्यय किया। छोटे-छोटे ट्रैक्ट लिखकर बांटा करते थे। एक बार स्वामीजी की गिन्नियां गिर गई,लोगों ने कहा—कि आप जाकर ढूंढ़ लें, उन्होंने उत्तर दिया, "संन्यासी गिन्नियों की तलाश में नहीं जा सकता।"

१—बिजनौर में स्वामी जी से कहा—कि आपने संन्यास क्यों लिया ? आपको कष्ट होता होगा। स्वामी जी ने कहा—नहीं, महमानों से अच्छा खाना हमें मिलता है। वे बोले तो सारा संसार ही संन्यासी हो जाय तो क्या होगा। स्वामी जी ने कहा हो नहीं सकता।

संन्यासियों का अनुपात वहीं रहता है जो शरीर में आंखों का है जैसे समस्त शरीर आंख नहीं बन सकता तब मनुष्य संन्यासी नहीं हो सकते।

आदर्शवादी अधिक थे,उर्दू लिखने के अभ्यासी थे—संस्कृत ग्रन्थों का भी अध्ययन किया था। जब उनका देहान्त हुआ,तब ऐसा कहते हैं कि उन्होंने कहा कि मरने के बाद "मेरा शरीर काट कर कुत्तों को खिला देना" क्योंकि मैं संसार को वैदिक धर्मी बनाने में सफल नहीं हो सका।

म० मुन्शीराम जी के शब्दों में

पं० कृपाराम जी पहले पंजाब सभा के प्रमुख स्तम्भ थे। म० मुंशीराम जी की दायीं भुजा थे। फिर संयुक्त प्रान्त में सभा के सर्वे सर्वा हो गये। म० मुंशीराम ने स्वामी शुद्धबोध तीर्थ को लिखा था, स्वामी दयानन्द के पश्चात् एक तृतीयांश प्रचार का श्रेय स्वामी दर्शनानन्द को ही है।

पं० भगवद्दत्त जी वैदिक रिसर्च स्कालर

स्वामी दर्शनानन्द जैसा तत्त्वदर्शी व्यक्ति यदि योरुप में उत्पन्न हुआ होता तो वहां वह फिलोस्फरों का शिरोमणि करके पूजा जाता और सर्व भूमण्डल उसे वैसा ही प्रतिष्ठित मानता।

डा० मंगलदेव शास्त्री

वैदिक धर्म में उनको असीम श्रद्धा थी ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे ईश्वर विश्वास रोम-रोम व्याप्त था। एषणा भय से ऊपर थे प्राणों का मोह चिरकाल से छोड़ चुके थे। पर गुरुकुल के छात्रों के थोड़े से कष्ट को भी न देख सकते थे। तपस्या, त्याग की मूर्ति थे। उनका "दर्शनानन्द" नाम सार्थक था शास्त्रार्थ महारथी तो वे प्रसिद्ध ही थे। गुरुकुल प्रणाली का सच्चे अर्थों में विस्तार हो वे चाहते थे देश में गुरुकुलों का जाल बिछ जाय।

पं० शिवकुमार जी शास्त्री

श्री स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज का आर्यजगत अनेक प्रकार से चिरकाल तक ऋणी रहेगा महर्षि दयानन्दजी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत सूत्रों की जो हृदय हारिणी व्याख्या अपने ग्रन्थों लेखों में की है वह इस समय तक अद्वितीय है। जिनके कारण आर्य समाज की संस्कृति अनभिज्ञता का समस्त दारिद्रय दूर हो गया। उनके शिक्षा संस्थानों से निकले विद्वान् जो आर्य समाज के गौरव को द्विगुणित कर रहे हैं।

उनके पुण्यस्मरण से अपनी वर्तमान पीढ़ी को दिव्य प्रेरणा मिला सके।

नया प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द) ८)

२—यात्रा (भगवती जागरण) (श्री सच्चानन्द) १०) सै०

३—आत्म-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक) २)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली, २

शरीयत-संविधान और राजीव गांधी

—प्रो० बलराज मधोक

जब से सुप्रीम कोर्ट ने शाहबानो नाम की तलाकशुदा मुस्लिम महिला की अपने पति से जिसने उसे लगभग ४० वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद तलाक दे दिया था, गुजारा मांगने सम्बन्धी अपील को स्वीकार किया है और उसके वकील पति को भारतीय दण्डसंहिता की धारा १२५ के अन्तर्गत रुपये ५०० प्रतिमाह गुजारा देने का आदेश दिया है, कुछ मुसलमान नेताओं और सदस्यों ने आसमान सिर पर उठा रखा है। उनका कहना है कि सुप्रीमकोर्ट ने शरीयत में दखल दिया है। वे मांग कर रहे हैं कि दण्डसहिता की धारा १२५ और संविधान की धारा ४४ जिसके अनुसार राज्य का कर्तव्य है कि सभी नागरिकों के लिए समान कानून की व्यवस्था करे, को हटा दिया जाए और उन्हें आश्वस्त किया जाए कि उनकी सरीयत में दखल नहीं दिया जाएगा। श्री राजीव गांधी के मन्त्रीमण्डल के एक सदस्य श्री अन्सारी ने लोक सभा में भी इसी प्रकार के विचार रखे हैं। राजीव ने अभी तक उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की है अपितु यह भी कहा है कि शरीयत द्वारा प्रतिष्ठित मुसलमानों के विवाह और तलाक सम्बन्धी कानून में दखल देने का उनका कोई इरादा नहीं है। इसलिए यह प्रश्न उभर कर सामने आया है कि "सैकुलर" भारत में इस्लामी शरीयत प्रमुख है कि संविधान और क्या प्रधानमन्त्री संविधान से भी ऊपर है?

इस प्रश्न का ठीक से उत्तर देने के लिए पहले यह समझना होगा कि शरीयत का आधार मुख्य रूप से मोहम्मद साहब का अपना जीवन और उनका विभिन्न परिस्थितियों और अवसरों पर व्यवहार है। उनके मरने के अनेक वर्ष बाद उनको जानने वाले कुछ लोगों ने इसके सम्बन्ध में अपने-अपने अनुभव और अनुभूति के आधार पर कुछ हदीसें लिखी थीं। उनमें एकरूपता नहीं है। उनके आधार पर विभिन्न मुल्लाओं द्वारा दिये गए फतवे या फैसले भी भिन्न-भिन्न हैं। सुन्नी और शिया मुसलमानों की इस सम्बन्ध में मान्यताएं भी बहुत कुछ भिन्न हैं। विभिन्न राज्यों के शासक उनमें अपने-अपने सवालों की पूर्ति के लिए समय-समय पर फेरबदल भी करते रहे हैं। इस प्रकार शरीयत का इस्लाम मजहब के बुनियादी सिद्धान्तो के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। वह एक व्यवहार सम्बन्धी परम्परा मात्र है।

शरीयत का सम्बन्ध सिविल मामलों से भी है और फौजदारी मामलों से भी। फौजदारी मामलों में शरीयत चोरी का दण्ड हाथ काटना और व्यभिचार का दण्ड पत्थरों से मार डालना है। इसमें सूद का लेना और देना तथा शराब पीना भी वर्जित है। परन्तु हिन्दुस्तान के मुसलमान इसके फौजदारी भाग को अपने ऊपर लागू नहीं रखना चाहते। वह केवल शरीयत विवाह और तलाक सम्बन्धी भाग से ही जुड़ा रहना चाहते हैं। क्योंकि मोहम्मद साहब की ११ पत्नियां थी और उनकी पहली पत्नी की आयु उनकी आयु से दुगनी और अन्तिम की आयु उनकी आयु का पांचवा भाग थी। इसलिए बहुविवाह और बेमेल विवाह प्रथा शरीयत अंग मानी जाती है।

शरीयत के अनुसार हर मुसलमान एक समय में ४ पत्नियां रख सकता है। यदि वह उनमें से किसी को छोड़ना चाहे तो उसे तीन बार "तलाक दिया" कहना पर्याप्त है। जिस पत्नी को उसने एक बार तलाक दे दिया हो उससे वह दोबारा विवाह तभी कर सकता है जब वह तलाक शुदा पत्नी किसी और से विवाह करे, उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करे और उसके बाद उससे तलाक मिले। जिस औरत को तलाक दिया जाए यदि वह गर्भवती हो तो सन्तान की उत्पत्ति तक अन्यथा तीन महीनों तक ही उसे गुजारा देने की जिम्मेदारी पति की रहती है।

इस प्रकार शरीयत के अनुसार औरत मरद के पांव की जूती के समान है, जिसे वह कभी भी फेंक सकता है। उसे अनेक सौतों को और हर प्रकार के उत्पीड़न को सहना पड़ता है।

यह स्थिति भारत के संविधान और संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव अधिकार चार्टर के बिल्कुल विपरीत है। भारत का संविधान सेकुलर है, मजहबी नहीं। यह लिंग के आधार पर स्त्री-पुरुष के बीच भेद-भाव की इजाजत नहीं देता। इसकी धारा ४४ राज्य को सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून के लागू करने का भी निर्देश देती है।

कोई मुस्लिम महिला नहीं चाहती है कि उसकी अनेक सौतें हों और उसका पति जब चाहे उसे तलाक दे दे, और उसे कोई गुजारा भी न दे। इसलिए मुस्लिम महिलाओं ने आम तौर पर शाहबानो केस पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत किया है। वे चाहती हैं कि देश में सबके लिए समान सिविल कानून हो और विवाह तथा तलाक के सम्बन्ध में उन पर भी वही नियम लागू हो जो हिन्दू महिलाओं पर लागू होते हैं।

परन्तु मुसलमान मरद, विशेष रूप में मुल्ला मौलवी शाहबानो केस के फैसले से घबरा गये हैं। इसके कई कारण हैं। पहिला यह है कि इससे उनकी बहुविवाह की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा है क्योंकि अब तलाकशुदा मुस्लिम औरतें उनसे गुजारा मांग सकती हैं। दूसरे, अनेक पत्नियों से अनेक बच्चे पैदा करके मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ाने की उनकी राजनैतिक योजना पर इस फैसले से रोक लग सकती है। तीसरे, इस फैसले के कारण मनचले अमीर हिन्दुओं के दूसरा विवाह करने के लिए मुसलमान बनने पर भी कुछ रोक लगेगी। यही कारण है कि जमाते इस्लामी जमीयतउल उलमा, मुस्लिम लीग और शहाबुद्दीन जैसे मुसलमान इस फैसले और न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ के पीछे लट्ठ लेकर पड़ गए हैं। शहाबुद्दीन के अनुसार इस फैसले ने सभी मुसलमानों को इकट्ठा कर दिया है। परन्तु शायद वे मुसलमानों में मुस्लिम औरतों को नहीं गिनते।

मुसलमानों के इस फैसले के विरुद्ध और संविधान की धारा ४४ को हटाने के लिए चलाये जाने वाले आन्दोलन की प्रतिक्रिया भी होने लगी है। सभी राष्ट्रवादी तत्व और दल इस फैसले और साझे सिविल कानून के पक्ष में बोलने लगे हैं।

मुसलमानो द्वारा चलाये जाने वाले इस आन्दोलन से यह प्रश्न कि मुसलमान भारत के नागरिक हैं या विदेशी फिर उठ खड़ा हुआ है। यदि पाकिस्तान की मांग करने के बाद भारत मे स्वेच्छा से रह गये मुसलमान भारत के नागरिक हैं तो उन्हें भारत के संविधान का आदर करना चाहिये और भारत के कानूनों को मानना चाहिए। यदि वे नागरिक नही तो फौजदारी मामलो पर भी उन पर शरीयत लागू होनी चाहिए। और उन्हें मत देने के अधिकार से वंचित कर देना चाहिए। उन्हें यह स्पष्ट रूप से बता देना चाहिये कि भारत इस्लामी राज्य नही। यदि वे शरीयत से इतना ही प्यार करते हैं तो वे पाकिस्तान या किसी और इस्लामी राज्य में जाकर बस सकते हैं।

एक प्रबुद्ध और आधुनिक व्यक्ति के नाते श्री राजीव गांधी से अपेक्षा थी कि वे राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। परन्तु इस मामले मे उन्होने जो रवैय्या अपनाया है उससे उनकी स्थिति बहुत हास्यास्पद और दयनीय बन गई है। एक तरफ तो वे हिन्दुस्तान को २१वीं शताब्दी में ले जाने की बात करते हैं और दूसरी ओर मुसलमान महिलाओ के हितो की उपेक्षा करके और भारत के संविधान की अवहेलना करके वे मुसलमानों के ७वीं शताब्दी की ओर लौटने की बात मानने के संकेत दे रहे हैं। उनके द्वारा अपने मन्त्री श्री अन्सारी के विरुद्ध अभी तक कोई कार्यवाही न करने से उनके मन्त्रीमण्डल के कई अन्य सदस्य भी खिन्न हैं। मन्त्रीमण्डल का उत्तरदायित्व साझा होता है। यदि एक मन्त्री संसद में ऐसी बात कहे जो संसदीय परम्परा, संविधान और नैतिकता के विरुद्ध हो तो उसके छींटें सभी मन्त्रियों पर पड़ते हैं।

१९८४ के चुनाव में श्री राजीव गांधी और कांग्रेस को मुसलमानों से मुसलमानों के मत न के बराबर मिले थे। वे राष्ट्रीय एकता की अपील के कारण अधिकांश हिन्दू मत ले पाये थे और वही उनकी और कांग्रेस की प्रचंड सफलता का मूल कारण था। अब यदि उन्होंने मुल्लाओं को प्रसन्न करने के लिए संविधान और राष्ट्रीय भावना की उपेक्षा की तो हिन्दुओ पर इसकी गहरी प्रतिक्रिया होगी। मुल्ला तुष्टीकरण की नीति से कांग्रेस को मुसलमान मत मिलें कि नहीं यह तो समय बतायेगा परन्तु इसकी छवि अवश्य धूमिल

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गुजरात आर्य महा सम्मेलन सम्पन्न

जामनगर, १-१-८६

महा गुजरात आर्य सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किये गये।

भारत भर में विधर्मियों और विदेशियों द्वारा अज्ञान एवं गरीब लोगों को विदेशी धन द्वारा आर्थिक सहायता देकर धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

१—आज का यह सम्मेलन विधर्मियों, विदेशियों द्वारा हो रहे इन धर्मान्तरों का विरोध करता है। जो भारत सरकार विधर्मियों, विदेशियों की इस प्रक्रिया को नहीं रोकेगी तो भारत के हरेक राज्यों में पाकिस्तान और नागालैण्ड की परिस्थिति होगी। परिणामस्वरूप भारत की एकता के लिये खतरा उत्पन्न होगा और देश छिन्न-भिन्न हो जायेगा।

आज का यह सम्मेलन भारत सरकार से विनती करता है कि देश की एकता, अखण्डता और लोकशाही की रक्षा के लिये विदेशियों द्वारा हो रहे इन धर्मान्तरों पर जल्द ही प्रतिबन्ध लगाने की कार्यवाही करें।

उपरोक्त प्रस्ताव को आर्ष गुरुकुल एटा के आचार्य श्री विश्वदेव जी ने अपनी जोशयुक्त वाणी में अनुमोदन किया था।

२—आज का यह सम्मेलन श्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त गुजरातकी आर्यसमाजों से विनती करता है कि आर्य समाज को वर्तमान सुषुप्त अवस्था में से जाग्रत करके सक्रिय रूप से कार्यान्वित करने के लिए युवाशक्ति को संगठित करके आर्य वीर दल अलग-२ कार्यक्रम देकर युवाओं को आर्यसमाज की बागडोर सम्भालने के लिये तैयार करने के सक्रिय प्रयास करें।

उपरोक्त प्रस्ताव को आर्यसमाज ध्रांगध्रा के मन्त्री श्री शशांक भाई आर्य ने अनुमोदन देकर युवाओं को संगठित होकर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को जनता में फैलाने के लिये कटिबद्ध होने का आदेश दिया था।

३—आज का यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि भारत एक लोकशाही राष्ट्र होने से इसके प्रत्येक नागरिकों को समान हक, एवं समान न्याय मिलने चाहिए। जिस तरह विश्व के प्रथम लोकशाही राष्ट्र ब्रिटेन के प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों को समान सिविल कोड लागू रहता है उसी तरह भारत के प्रत्येक भारतीयों के लिये समान कोड की रचना की जाय और भारत की बहुमती को वर्तमान के अलग-अलग सिविल कोड द्वारा हो रहे अन्याय को दूर किया जाय।

उपरोक्त प्रस्ताव को पाणिनी कन्या महाविद्यालय के आचार्या श्री डा० प्रज्ञादेवी ने विस्तृत महत्व के साथ भारतीय नारीयों के साथ हो रहे अन्याय को दूर करने का समान कायदा बनाने के लिये सरकार को अनुरोध किया था।

४—गुजरात सरकार द्वारा शिक्षण का राष्ट्रीयकरण सरकारीकरण करने के प्रयास हो रहे हैं। वर्तमान में भारत के प्रधान मन्त्री द्वारा शिक्षण के तमाम क्षेत्रों में संशोधन और उसमें क्रान्ति लाने के प्रयास हो रहे हैं और इस विषय में समिति द्वारा राष्ट्रीय कक्षा में निर्णय लेने के प्रयास हो रहे हैं, गुजरात की सरकार द्वारा शिक्षण के राष्ट्रीयकरण और अन्य शैक्षणिक जगत से सम्बन्धित प्रश्नों के बारे में मियां भाई पंच का अहमास तैयार होकर सरकार के समक्ष आ गया है उस वक्त उस पंच की सिफारिशों को प्रकट करके जनता के समक्ष रखने का सरकार का फर्ज अदा करने के बजाय अपने अहम् और दुराग्रहों को पुष्टि देने और समग्र गुजरात की ३२ सरकारी माध्यमिक शालाओं की दयनीय हालत सुधारने में असफल हुई सरकार अपने से १०० गुनी संख्या में जाहिर ट्रस्टों और सेवा भावी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं द्वारा चलती संस्थाओं की शिस्त-बद्ध उत्तमता के लिए सुविख्यात संस्थाओं को राष्ट्रीयकरण के नाम पर सरकार या राजकारणियों के अन्तर्गत स्वार्थ की पुष्टि के लिये छिन्न-विछिन्न करके समग्र गुजरात को आशास्पद विद्यार्थी पीढ़ी की तेजस्विता को खत्म करने को तत्पर हुई है।

इसका आज की यह सभा विरोध करके आवश्यकता होने पर इस सरकार का दिमाग ठिकाने लाने के लिये सत्याग्रह एवं अहिंसक आन्दोलन द्वारा उसका प्रतिकार करने का निर्णय करती है।

सरकार द्वारा लघुमती संस्थाओं के नाम चलती संस्थाओं का— जिसमें शायद लघुमती के विद्यार्थी अभ्यास नहीं करते, गैरफायदा उठाने का और बच्चों को धर्माभिमुख बनाने के प्रयत्न जाहिर में हो रहे हैं उसको जाने-अन्जाने यह सरकार अनुमोदन दे रही है उसको इस सरकारी कारण ने मुक्ति देने के प्रयास का यह सभा विरोध करती है।

शिक्षण लोकशाही का आधार है। उसके स्वातन्त्र्य के लिये आर्य जगत ने बहुत कुछ कार्य किये हैं। भारत की अनेक संस्थाओं ने शिक्षण द्वारा भारत की स्वतन्त्रता के सैनिक तैयार किये हैं और आर्य जगत आज भी विशाल संख्या में शैक्षणिक क्षेत्र में कार्य कर रहा है।

जो गुजरात सरकार आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य शिक्षण संस्थाओं में अपना हस्तक्षेप करेगी तो भारत भर की आर्य संस्थाएं अपना अस्तित्व और स्वातन्त्र्य को बनाये रखने के लिये किसी भी प्रकार का बलिदान देने का प्रयत्न करेंगी। ऐसे आत्मविश्वास के साथ आज की यह सभा गुजरात सरकार को शिक्षण के राष्ट्रीयकरण का आत्मघाती कदम न उठाने की विनती के साथ चेतावनी भी देते हैं।

५—आज की यह सभा भारत सरकार को गोवंशवृद्धि और गोहत्याबन्दी के लिये योग्य कार्यवाही करने की विनती करती है।

शरीयत-संविधान

(पृष्ठ ७ का शेष)

हो जाएगी और यह हिन्दू मतदाताओं को अपने से दूर करने में अवश्य सफल होगी। ऐसी स्थिति को जिसमें चार पत्नी वाला मुसलमान जब किसी हिन्दू को दूसरा विवाह करने पर दण्डित कर सकता है, भारत में अब अधिक देर तक चलाने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

इसलिए मुस्लिम महिलाओं के हित, संयुक्त राष्ट्र संघ का मानव अधिकार चारटर, भारत का संविधान और राजीव गांधी तथा कांग्रेस पार्टी के अपने हित इस की मांग करते हैं कि शरीयत के नाम पर साम्प्रदायिकता फैलाने वालों के साथ सख्ती से निपटा जाये और संविधान की धारा ४४ पर अविलम्ब अमल किया जावे।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४-८५)

(गतांक से आगे)

श्री भवानी लाल गज्जूमल शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जो देवी भवानीलाल शर्मा ककुहास की पुण्य स्मृति मे स्व भवानीलाल शर्मा (कानपुर) अमरावती विदर्भ निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ पाच हजार रुपये की स्थिर निधि १९५९ मे स्थापित की थी जिसके ब्याज का आधा सार्वदेशिक पत्र को दिया जाता तथा आधा असल राशि मे जमा कर दिया जाता है।

शर्मा जी ने ५००० रुपये के दान से एक दूसरी निधि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ कायम की थी। इस निधि से गतवर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश के ४अच्छे सस्करण ५-५, १० तथा २० हजार की सख्या मे छप चुके थे।

इस निधि मे ब्याज एक हजार रुपए जमा हैं।

चन्द्रभानु वेद मित्र स्मारक निधि

यह निधि स्व० श्री चन्द्रभानु जी रईस सीतरो (सहारनपुर उत्तर प्रदेश) निवासी की पुण्य स्मृति मे उनके सुपुत्र स्व० श्री म० वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से १९२५ मे मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

इस निधि के ब्याज से अब तक कर्त्तव्य दर्पण आदि २० पुस्तके छप चुकी है। वर्ष के अन्त मे ब्याज के २५०) रुपए जमा थे।

गंगाप्रसाद गढवाल प्रचार ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० श्री प० गगाप्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिसका ब्याज दानी महोदय तथा उनके बाद आर्य समाज टिहरी (गढवाल) की अनुमति से उक्त समाज के कार्यो पर खर्च किए जाने का प्रावधान किया गया था। इस समय ब्याज १५६०)४६ जमा है।

श्री मूलचन्द बजरंगलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान) स्थिर निधि

स्व० श्री प० मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल मे ५ हजार की राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्त निधि के नाम से जमा है। इसके ब्याज से महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य साहित्य के प्रकाशन का प्रावधान हुआ था। इस निधि के ब्याज से दयानन्द दी मैन एण्ड हिज मिशन ट्रैक्ट छप चुका है। इस वर्ष ब्याज के २५०) रु० जमा हुए गतवर्ष ३५१६)०१ जमा थे अब ३७६६)०१ जमा हैं।

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट् (अजमेर) ने सत्यार्थ प्रकाश के १ वा १॥ रु० मूल्य के सस्करण के प्रकाशनार्थ १० हजार रुपए की स्थिर निधि कायम की जिसके ब्याज से यह ग्रन्थ छपा करेगा। पहले ४ हजार रुपये की स्थिर निधि सार्वदेशिक की सहायतार्थ कायम की थी जिसकी स्वीकृति २३-४-६३ की अन्तरग बैठक ने दी थी। श्री शर्मा जी ने ६ हजार रुपए की राशि प्रदान करके इस स्थिर निधि के स्थान में सत्यार्थ प्रकाश निधि कायम की है। इसकी स्वीकृति १४-११-७६ की अन्तरग बैठक ने दी। इस वर्ष इस निधि के ब्याज के ८ सौ रुपए जमा हुए। वर्ष के अन्त मे कुल ४ हजार ९ सौ रुपए जमा थे।

(क्रमश)

आर्यसमाज की भावी योजना और कार्यशैली पर निबन्ध प्रतियोगिता

पुरस्कार-प्रथम १००० रुपये, द्वितीय ७०० रुपये, तृतीय ५००रुपये तथा दस अन्य आकर्षक पुरस्कार

निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि १५ मार्च १९८६

आर्य समाज के महान् प्रति उच्च विटप को पल्लवित करने में जिन विद्वानो, महर्षि के सेवकों, भक्तो ने अपना जीवन लगाया और लगा रहे हैं कृतज्ञ भारतीय समाज उनका आभारी है। आज आर्य समाज की भावी योजना और कार्यशैली पर विचार करना अत्यावश्यक हो गया है। इसी परिप्रेक्ष्य मे हमने एक प्रसग आर्य जगत् के समक्ष प्रस्तुत किया है। हमारा उद्देश्य नितान्त पवित्र सहृदयता से युक्त है।

सामयिक उभरते प्रश्न

(१) ईश्वर भक्ति के सच्चे स्वरूप को सर्वसाधारण ने अभी तक नहीं अपनाया, बल्कि मूर्तिपूजा, व्यक्तिपूजा और तथाकथित भगवानों का जन्म अधिक होने लगा है। हमारा दायित्व कैसे पूर्ण हो ?

(२) आर्य समाजो मे युवा वर्ग को आकर्षित करने की योजना क्या हो ?

(३) आर्य गुरुकुल, उपदेशक विद्यालय वर्तमान युग की व्यावहारिकता की भूमि पर कैसे प्रभावी हों।

(४) आर्यसमाज के स्कूल कालेजों मे आर्यसमाज के सिद्धान्तों और विचारो का प्रसार-प्रचार कैसे सम्भव हो सकता है ?

(५) आदर्श सन्यासी वर्ग का प्रभाव, सन्यासियो के प्रति हमारा दायित्व तथा वर्तमान सन्दर्भ मे साधु सन्यासियो के कर्त्तव्य एव दायित्व।

(६) देश की राजनीति को प्रभावित करने वाला आर्यसमाज राजनीतिज्ञो से प्रभावित न होकर राजनीति को कैसे प्रभावित करे?

(७) विधर्मियो के कुचक्र से बचने के लिये आर्यसमाज शुद्धि के चक्र जो चलाये, परन्तु प्रोपेगण्डे और दिखाने से बचकर ठोस कार्य योजना किस प्रकार होनी चाहिए ?

(८) गरीबी, बेरोजगरी के उन्मूलन के लिए आर्यसमाज किस प्रकार से भूमिका निभाये।

(९) दहेज, तलाक और फिजूल खर्ची के विरुद्ध आर्यसमाज की भूमिका।

(१०) फिल्म, टी०वी०और नृत्य नाटक की अश्लीलता से बिगडते समाज और वातावरण के प्रवाह को किस प्रकार रोका जाये।

इस प्रकार की और भी अनेक समस्याएं जिन्हे आप समझे, उनका निदान और भावी योजनाओ को ध्यान मे रखकर अपना निबन्ध भेजें। यह निबन्ध और सुझाव आर्यसमाज के प्रभाव की ज्योति को प्रचण्ड कर सकने मे योगदान दे सके इस बात को ध्यान मे रखकर लिखे। इनमे किसी व्यक्ति विशेष पर छीटाकशी नही होनी चाहिये। यह लेखन कार्य और भी अधिक सूझबूझ से हो सके इसलिये श्रेष्ठ सुझावो पर तीन कर्मठ आर्यो और विद्वानो की समिति के निर्णय पर क्रमश. १०००) रु० ७००)रु० और ५००) रुपये के तीन पुरस्कार रखे गये हैं। तीन के अलावा बाकी १० सुझावों को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

पत्र व्यवहार का पता —
सत्यानन्द आर्य ६३/४१ पंजाबी बाग
नई दिल्ली-११००२६

निवेदक:
गजानन्द आर्य
उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली
ट्रस्टी परोपकारी सभा, अजमेर

डी. ए. वी. शताब्दी समारोह पर निकलने वाली विशाल शोभायात्रा का मार्गदर्शन

सभी आर्य संस्थायें व आर्य समाजें इसमें भाग लें।

यह शोभा यात्रा १६ फरवरी को प्रातः ११ बजे लाल-किला मैदान से आरम्भ होगी और चांदनी चौक, घंटाघर, नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टो रोड, कनाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेन्ट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई सायं ५ बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में समाप्त होगी।

इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

स्टोर्म इन पंजाब

(पृष्ठ ३ का शेष)

विवरण पढ़कर कोई भी पाठक बिना स्तब्ध हुए नहीं रह सकता।

एक अध्याय में लेखक ने अपने ढंग से पंजाब की समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है, वह राष्ट्र के भविष्य की चिन्ता करने वाले प्रत्येक जागरूक पाठक के लिए ध्यान देने योग्य है। विस्तारभय से पुस्तक के अनेक महत्वपूर्ण सन्दर्भ का उद्धरण देने का लोभ संवरण करना पड़ रहा है।

पुस्तक का गेट अप छपाई-सफाई, कागज और फोटो कम्पोजिंग इन सबमें सादगी के साथ सौन्दर्य का जैसा संमिश्रण हुआ है, वह भी अत्यन्त चित्ताकर्षक है। पुस्तक न केवल पठनीय, पाठनीय और संग्रहणीय है, प्रत्युत अंग्रेजी जानने वाले मित्रों को भेंट करने योग्य है।

पुस्तक का नाम : "स्टोर्म इन पंजाब"
लेखक : क्षितीश वेदालंकार (सम्पादक—"आर्य जगत्")
प्रकाशक : "दी वर्ड" पब्लिकेशन्स, ८०७/९५, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या : २६४ उपकार (२३ × ३६)
मूल्य (अजिल्द) : ८०) रु०
सजिल्द : १२०) रु०
प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान के पास, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—वेद शर्मा व्यवस्थापक
सार्वदेशिक साप्ताहिक

ऋग्वेद और अमरीकी सर्वोच्च न्यायालय

(पृष्ठ ४ का शेष)

किन्तु प्राचीन काल के भारतीयों ने स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म को अधिक महत्व दिया, और शब्दों द्वारा उच्चारित मन्त्र-शक्ति की सूक्ष्म शक्ति को पहचाना। ऋग्वेद में यह अक्षय शक्ति निहित है, और यही कारण है कि तीस-चालीस शताब्दियों से अधिक काल के बाद भी, वेद काल और प्रकृति के थपेड़ों से अछूते रहकर, आज भी अपना अमर सन्देश विश्व को दे रहे हैं। मिस्र के पिरामिड रेगिस्तान की गर्म हवा से क्षत-विक्षत हुए, चोरों ने उनमें संग्रहीत स्वर्ण को चुराया और भूकम्पों ने उनकी संरचना को बुरी तरह प्रभावित किया। किन्तु वेदों का पीढ़ी दर पीढ़ी, प्रतिदिन, बिना नागा पाठ होता रहा, और वे मस्तिष्क के जीवित तत्वों में होकर, एक सुदृढ़ और अटूट धारा के समान प्रभावित होते रहे हैं।

वेद-भारतीय सभ्यता की आधारशिला

'वेदों में यह असाधारण शक्ति और सजीवता कहां से आयी? अत्यन्त प्राचीन काल से असंख्य व्यक्तियों के धार्मिक व दार्शनिक विचारों को परिपुष्ट करने एवं उन्हें मूर्त रूप देने की शक्ति उन्हें कहां से प्राप्त हुई?

'परम्परा इसका उत्तर यह देती है कि वेद स्वतःप्रमाण हैं, "वेद भारतीय सभ्यता व संस्कृति की आधारशिला तो हैं ही, उन्हें मानव सभ्यता की बुनियाद की एक शिला भी माना जा सकता है। उनमें जिन नियमों का वर्णन है, वे दिव्य ज्योति से युक्त हैं, और ऋषियों ने उनकी व्यवस्था इस ढंग से की है कि वे एक विशेष भाषा में युग-युग से, लोगों को लाभ पहुंचाते चले आ रहे हैं।'

'वेदों का यह जीवनोपयोगी ज्ञान हमें लिखित रूप से नहीं, मौखिक परम्परा द्वारा प्राप्त हुआ है, और यह इतना सुबोध व सुव्यवस्थित है कि उसमें काट-छांट या संक्षिप्तीकरण की कोई गुंजाइश ही नहीं है। सारी व्यवस्था बारीकी और सुव्यवस्था से की गई है। 'वास्तव में, अतीत का सर्वोत्कृष्ट कीर्ति-स्तम्भ ऋग्वेद ही है, जिसमें पुरातत्व का कोई चिन्ह नहीं है।"

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय के अन्त में कहा है, 'हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि अमरीकी कांग्रेस ने जब परमात्मा के स्थान पर 'परम (सर्वोच्च) सत्ता' शब्द का प्रयोग किया, तो ऐसा करते समय, वास्तव में वह धार्मिक प्रशिक्षण और आस्था को परिभाषित कर, उसके अर्थ का स्पष्टीकरण कर रही थी। ऐसा करते समय, उसका अभिप्राय यही था कि इस स्पष्टीकरण में सब धर्म समाविष्ट हो जायें, और राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक विचार बाहर रह जायें। हमारा विश्वास है कि इस परिभाषा के अन्तर्गत परम (सर्वोच्च) सत्ता में आस्था की कसौटी यही है कि निर्दिष्ट विश्वास, जिसका सच्चा एवं सुसंगत होना एक अनिवार्य शर्त है, विश्वास करने वाले के जीवन में स्वीकृत परमात्मा (परम सत्ता) में विश्वास से परिपूर्ण जीवन के साथ-२ ग्रहण कर सकता है या नहीं। जब, ऐसा विश्वास करने वालों के मन में अन्य विश्वास भी समानान्तर स्थान रखते हों, तब यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि कौन सा विश्वास सही है, और कौन-सा नहीं।'

अन्ततः, सर्वोच्च न्यायालय ने सर्वसम्मति से उन तीनों नवयुवकों को, जो अपनी-२ अन्तःप्रेरणाओं से, युद्ध दृढ़ता से, अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण के विरोधी थे, इस प्रशिक्षण से मुक्त किये जाने की उनकी प्रार्थना और अर्जी को स्वीकार किया, और सरकारी तर्क व दलील को रद्द कर दिया।

(नवनीत सितम्बर के आभार)

आर्य युवा महासम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली, ६ फरवरी १६८६

बच्चों मे राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भावना जागृत करने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बच्चों मे खेल-कूद वाद-विवाद, भाषण चित्रकला, आदि मौलिक प्रतिभाओं का विकास करना है, ताकि वे राष्ट्रीय एकता व प्रगति में अपना योगदान दे सकें। यही लक्ष्य आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का था। यह उद्गार श्री कृष्ण चन्द्र पन्त, केन्द्रीय इस्पात व खान मन्त्री ने आर्य युवा महासम्मेलन नेशनल स्टेडियम मे पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर व्यक्त किये, उन्होंने आगे कहा कि बच्चों को सहनशीलता की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे सच्चे नागरिक बनकर देश की सेवा कर सकें।

इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले ने वर्तमान परिस्थितियो मे देश की एकता व अखण्डता की भावना को सुदृढ़ करने के लिए आर्य वीर दल की स्थापना पर बल दिया।

आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस जी ने देश के नव निर्माण मे ऐसे आयोजनो के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को बधाई दी।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे २ से ९ फरवरी १६८६ तक आयोजित आर्य युवा महासम्मेलन मे २८ स्कूलो के बच्चो ने विभिन्न प्रतियोगिताओ मे भाग लिया और ७५ बच्चो को पुरस्कारो से सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल और आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल ने माल्यर्पण द्वारा श्री पन्त जी का स्वागत किया। डा० धर्मपाल ने मच सचालन किया।

प्रचार सभा मन्त्री

दर्शनानन्द जयन्ती पर सफल कवि-सम्मेलन

ज्वालापुर, गुरुकुल महाविद्यालय मे दर्शनानन्द जयन्ती के अन्तर्गत आयोजित कवि-सम्मेलन डा० गौरीशकर आचार्य भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री, राजस्थान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसका सफल सयोजन सुकवि डा० सत्यव्रत शर्मा 'अजेय' ने किया। सस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने माल्यार्पण के द्वारा बाहर से पधारे कविओ का अभिनन्दन किया। कुलपति डा० कपिलदेव त्रिवेदी ने कवि-सम्मेलन की सफलता की कामना की। डा० गौरीशकर ने कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये आशा व्यक्त की कि गुरुकुल के मच से पढ़ी जाने वाली सुकवियो की रचनाए भारतीय अस्मिता से मडित प्रेरणादायक एव गहन अनुभूतियो से सम्पन्न होनी चाहिये।

स्थानीय कविगण प० हरिसिंह त्यागी, डा सुरेशचन्द्र त्यागी, डा आनन्द वर्धन, कीर्तिदेव, सुरेन्द्र कुमार, सजीव कुमार वर्मन, अनिल, भूपेन्द्र, देव शर्मा, नरेन्द्र कुमार, सतीश कुमार, तथा शिशु-कवि निशीकान्त, भवेन शर्मा, ब्रजपाल अर्जुन के काव्य पाठ के पश्चात् हास्य व्यग के लब्धप्रतिष्ठित कवि श्री शिवराज 'राजू' ने नैतिक मूल्यो के ह्रास को प्रदर्शित करने वाली अपनी रचना से वातावरण को सरस बनाया।

कवि-सम्मेलन मे प्रमुख कवियो ने भाग लेकर अपनी रचनाओ द्वारा जनता को मन्त्र मुग्ध किया।

—सत्यव्रत शर्मा, ज्वालापुर

आर्यसमाज मिसिसौगा (कनाडा) के स्थापना समारोह का दृश्य।

बसन्त की बहार आई रे

बसन्त की बहार आई रे।
चारों ओर मस्ती छाई रे॥
हर तरफ हरियाली छाई।
धरती ने मखमल बिछाई॥
फूल गुलाबी है कही खिल रहा।
गेंदा मोती है कहीं फूल रहा॥
चारों ओर मस्ती छाई रे।
बसन्त की बहार आई रे॥
सर्दी ने पल्ला नही छोड़ा।
गर्मी ने नाता नहीं जोड़ा॥
कोयल ने मीठी तान सुनाई।
पवन ने मधुर सुगंध फैलाई॥
मस्ती चारों ओर छाई रे।
बसन्त की बाहर आई रे॥
प्रकृति से कुछ सीख ले।
मस्ती जीवन में अपने भर ले॥
मानव, न पकड़ उदासाई रे।
बसन्त की बहार आई॥

—विजय तलवाड़, कक्षा-११
१/४५ ए पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, शिवाजी नगर (समस्तीपुर) के तत्वावधान में पांच दिवसीय आर्य वीर दल शिविर का आयोजन

दिनांक २५-१२-१९८५ ई० से २९-१२-८५ ई० तक किया गया। इन पांच दिनों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल, रोसड़ा के शाखा संचालक श्री राम सखा आर्य जी ने विधिवत संचालन किया। शिविर का उद्घाटन आर्य समाज शिवाजी नगर के प्रधान जी के करकमलों द्वारा हुआ। बौद्धिक शिक्षण में श्री नन्दकिशोर सिन्हा जी, श्री उमाकान्त जी एवं आचार्य श्री सियाराम जी आचार्य सहयोग देते रहे।

शिविर का समापन समारोह दिनांक २९-१२-८५ को विधिवत् आचार्य श्री सियाराम जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कई आर्य वीरों ने मांस, मछली आदि का परित्याग किया। इसके पश्चात आर्यवीरों ने जनसमूह के बीच लाठी, दण्ड, बैठक, आसन, पिरामिड आदि का प्रदर्शन किया। जिसे उपस्थित जनता ने देखकर करतल ध्वनि से स्वागत किया।

पश्चात् समारोह के अध्यक्ष श्री आचार्य जी ने कहा कि तुम्हीं भावी राष्ट्र के कर्णधार हो। इसलिए अभी से चरित्रवान, विद्वान, कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मवीर बनके देश की सेवा करने का संकल्प लेना चाहिए।

सभी आर्यवीरों को वैदिक साहित्य देकर पुरस्कृत किया गया। ज्ञातव्य है कि साहित्य का दान श्री नवल सिन्हा जी एवं श्री उमाकान्त जी द्वारा दिया गया था।

श्री नन्द किशोर सिन्हा जी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

—राजेन्द्र कुमार
आर्यसमाज, रोसड़ा

उड़ीसा

मथुरा
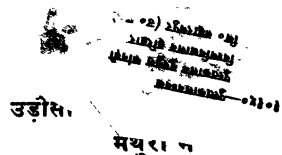
उडीसा की एक २५-२६ वर्ष की महिला भूली-भटकी हुई आर्य समाज कोसीकला जि०मथुरा (उत्तर प्रदेश) में आई है। किसी उड़ीया भाषी से बातचीत कराने पर उसका नाम बासन्ती, पिता अनतोपाल, पति का नाम मुरलीधर आर्य गांव कुकना बताती है। उडीसा के जिन महानुभावों व आर्य बन्धुओं को इस पते से उसके घर, पो० व जिले का पता चल सके, वह उसके पिता या पति से सम्पर्क करके, बासन्ती को आर्य समाज कोसी मथुरा से ले जाने के लिए कहें। बासन्ती अपने पिता या पति के पास जाना चाहती है।

—मंत्र

—आर्य समाज अशोक बिहार फेज-२, नई दिल्ली के यशस्वी तथा धार्मिक अनुष्ठान में चलने वाले श्री प्रकाशनाथ जी धवन का गत वर्ष ट्रक दुर्घटना में निधन हो गया था और उनकी धर्मपत्नी ने पति की पुण्य स्मृति में आर्य समाज को दस हजार का सात्विक दान प्रदान किया था। आर्यसमाज की सेवा करने वाली ऐसी बहन शकुन्तला धवन का भी देहावसान हो गया है और विशेष शोक सभा के समय इनके परिवार वालों ने पांच हजार रुपये समाज को दान दिये।—समाज के मन्त्री द्वारा धन्यवाद।

—मन्त्री आर्यसमाज अशोक बिहार दिल्ली

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सम्पादक—ओमप्रकाश त्यागी प्रबन्ध सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री सृष्टिसम्वत् १९७ ९४९०८६ दयानन्दाब्द १ ? दूरभाष ७८७७१
वर्ष २१ अङ्क १०] म घ शु १८ स० ०४५ रविवार फरवरी १९८९ वार्षिक मल्य ० एक प्रति ५ पसे]

दिल्ली में हिंसात्मक उपद्रव पर्व नियोजित षडयंत्र

पंजाब के उग्रवादियों के हाथ मजबूत करने की चाल

वेदामृतम्

परिवार स्वावलम्बी हो ।

स्वतवांश्च प्रघ सा च,
सान्तपनश्च गृहमेधी च ।
क्रीडी च श क्री चोज्जपा ।

यजु० १ ।८५।।

हिन्दी अर्थ—(हे गृहस्थ तुम) स्वावलम्बी सुन्दर भोजन करने वाले तपस्वी जीवन व्यतीत करने वाले गृहस्थ धर्म के पालक क्रीडाशील शक्तिशाली और सदा विजयी हो ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

'रामजन्म भूमि मुक्ति--एक बहाना

दिल्ली १ फरवरी। दिल्ली मे मुसलमानों द्वारा किए गए हिंसात्मक उपद्रव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पजाब के उग्रवादियो और देशद्रोही शक्तियों के हाथ मजबूत करने के लिय यह हिंसात्मक उपद्रव एक सुनियोजित षडयन्त्र था । दिल्ली तथा दिल्ली के बाहर के कई स्थानो पर एक साथ इस प्रकार की घटनाए होना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

श्री शालवाले ने कहा—अयोध्या मे रामजन्मभूमि की मुक्ति एक बहाना मात्र है । दरअसल इस उपद्रव का उददश्य देश मे साम्प्रदायिक दगे भडकाकर अस्थिरता पैदा करके पजाब के उग्रवादियो की सहायता करना था । इन उपद्रवो पर आम जनता की भी यह राय है कि दिल्ली की जामामस्जिद के ईमाम सयद अब्दुल्ला बुखारी और शाहबुददीन का इस षडयन्त्र मे गहरा हाथ है और पाकिस्तान की शह पर यह उपद्रव किया गया है ।

श्री शालवाले ने भारत सरकार से अनुरोध किया कि ऐसे देशद्रोही तत्वो और इस काण्ड म सम्बन्धित दोषी व्यक्तियों को कडी से कडी सजा दी जावे अन्यथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए राष्ट्र के सामने और गम्भीर चुनौतिया पैदा हो जायगी ।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा उपमन्त्री

आर्य समाज मुहम्मदपुर मे होम्योपैथिक औषधालय के उद्घाटन समारोह के पश्चात् मैनेजिंग ट्रस्टी श्री सत्यनारायण लोहाटी सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले को अभिनन्दन-पत्र प्रदान करते हुये ।

आर्यसमाज शताब्दी समारोह कलकत्ता के अवसर पर वेद सम्मेलन मे लाला रामगोपाल शालवाले भाषण करते हुये ।

आध्यात्मिक सुधा

जम्भे दध्मः

(आपके न्याय पर)

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वांवर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

ऋ० ७।१२।३

हे अग्ने ! तू वरुण, मित्र और वसु भी है। वसिष्ठ जन तेरी ही व्याख्या किया करते हैं। आप सदैव हम पर कल्याण करें।

महाभारत में एक दृष्टान्त आता है। कहते हैं कि महर्षि वसिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम शक्ति-मुनि था। वे अपने पिता की भांति बड़े सात्विक ब्राह्मण थे। उनका दैनिक जीवन परमार्थ साधना में ही व्यतीत होता था। उन्हीं दिनों इक्ष्वाकु वंश के राजा कल्माषपाद राज्य करते थे। एक दिन राजा मृगया से लौट रहे थे।

मार्ग में शक्ति मुनि और कल्माषपाद की भेंट ऐसे मार्ग पर हुई जिस पर एक व्यक्ति ही सुगमता पूर्वक आ जा सकता था। नरेश अति क्लान्त थे। कदाचित् वह शारीरिक श्रम के कारण सामान्य शिष्टाचार के पालन करने में भी असमर्थ थे।

अपने मार्ग में मुनि को देख उन्होंने हटने का आदेश दिया। मुनि के लिए मानो यह परीक्षा की घड़ी थी। उन्होंने नरेश से कहा, "राजन ! आज यह शिष्टाचार के प्रतिकूल आचरण कैसा ? शास्त्र कहता है—

मम पन्था महाराज धर्म एष सनातनः ।
राज्ञा सर्वेषु धर्मेषु देयः पन्था द्विजातये ॥

महा० आदि० १७५।८

"महाराज ! मार्ग तो मुझे ही मिलना चाहिए। यही सनातन धर्म है। सभी धर्मों में राजा के लिए यही उचित है कि वह ब्राह्मण के लिए मार्ग दे।"

रजोगुण के जाग्रत हो जाने पर क्रोध का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही है। क्रोध से अज्ञान उत्पन्न होता है। अज्ञान स्मृति भ्रंश कर देता है। तत्पश्चात बुद्धि विनाश अवश्यम्भावी है तथा बुद्धि विनाश हमारे पतन का कारण बन जाता है। कल्माषपाद भी क्रोध के वशीभूत हो गये। हाथ में चाबुक था। आन्तरिक सन्तुलन खो जाने पर उन्होने मुनि पर उसका अप्रत्याशित प्रहार कर दिया।

कहते हैं कि मुनि ने राजा को शाप दिया कि वह अपने इस दुष्कृत्य का फल राक्षस होकर भोगे। नरेश राक्षस हो गये। राक्षस ने मुनि को अपना ग्रास बना डाला। इस घटना से महर्षि वसिष्ठ किंचित भी विचलित नहीं हुए। राक्षस ने बारी-२ वसिष्ठ के सभी पुत्रों को समाप्त कर दिया परन्तु ऋषि ने क्षमा मार्ग का परित्याग न किया।

विशेष काल व्यतीत होने पर शक्ति-मुनि की विधवा पत्नी अदृश्यन्ती ने एक पुत्र को जन्म दिया जो शैशवावस्था से कुशाग्र बुद्धि होने से वेद पाठी हो गया। युवा होने पर उसने अपने पिता का प्रतिशोध भूमण्डल के समस्त दुराचारी क्षत्रियों से लेने का निश्चय किया। वसिष्ठ जी ने अपने पौत्र को धर्म का समुचित उपदेश देकर इस जघन्य कृत्य से उसे रोका और समझाया।

तस्मात्त्वमपि भद्रं ते न लोकान्हन्तुमर्हसि ।
पराशर परान्धर्माञ्जान ज्ञानवतां वर ॥

महा० आदि० १७९।२३

'हे श्रेष्ठ ज्ञानी पराशर ! तुम श्रेष्ठ सब धर्मों को जानते हो। तुम्हारा मंगल हो। सब लोगों का विनाश तुमको भी उचित नहीं। मनुष्य को यों ही किसी की मृत्यु का निमित्त बन जाता है। तुम पतनोन्मुख करने वाले क्रोध का परित्याग कर दो। अपने स्वाभाविक कर्म का ही अवलम्बन लो।'

पराशर मुनि अपने पितामह की इसी सद्शिक्षा से अनुपम ऋषित्व को प्राप्त हुए। हम समझते हैं मतभेद तो व्यक्ति में होते हैं परन्तु उन्हें दण्ड अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं रखना चाहिए। न्याय को ईश्वरार्पण कर देना ही शास्त्रीय है। जैसाकि वेद में कहा है 'जम्भे दध्म.' हम अपने शत्रु को तेरी दाढ़ में सौंपते हैं। यह उपरोक्त दृष्टान्त वेद के इन्हीं दो शब्दों की व्याख्या मात्र ही तो है।

वेद के उपरोक्त दो शब्द वैसे तो अनेक मन्त्रों में आए हैं परन्तु संध्या के मनसा परिक्रमा के छओं मन्त्रों का उत्तरार्द्ध इन्हीं शब्दों पर समाप्त होता है।

इससे पूर्व कि हम इस वेद मन्त्र पर विचार करें हम पाठकों का ध्यान इस तथ्य की ओर ले जाना चाहते हैं कि वैदिक ज्ञान नष्ट नहीं होता। एक बार बुद्धि उसकी ओर उन्मुख हुई तो वही ज्ञान हमें अपने परिप्रेक्ष में स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है। उपरोक्त दृष्टान्त से मिलती-जुलती एक घटना हमारे इसी क्षेत्र में घटी। इससे वेदोपदेश स्पष्ट करने में सहायता मिलेगी।

हमारे इस क्षेत्र में एक विद्वान निवास करते हैं। परम पावन राम कथोपकथन मानो उनका जीवन है। सभी उनका सम्मान करते हैं। अधिकारी वर्ग में से एक को अपने यहां रामायण पाठ कराना था। उन्हें पंडित जी का पता चला। पंडित जी को आमन्त्रित कर लिया गया। आचार्य और यजमान दोनों एक दूसरे के लिए नवीन थे। राजमद में अहंकार स्वाभाविक ही है और जब दैवयोग से बुद्धि-बल भी उपलब्ध हो जाए तो अहंकार और भी बढ़ जाता है। ये दोनों आचार्य और यजमान वसिष्ट पुत्र शक्ति मुनि और राजा कल्माष्पाद की भांति रामकथा रूपी एक सकरे मार्ग पर मिले। मतभेद होने से वाद-विवाद होना स्वाभाविक था। शास्त्र के अनुसार आचार्य जी ने सन्मार्ग का त्याग उचित नहीं समझा। इधर कल्माष्पाद रूपी इस यजमान ने असन्तुलित दशा में हीन, द्वेष, भावना से प्रेरित हो म्लेच्छ भाषा मे 'गेट आउट' निकल जाओ रूपी चाबुक का शक्ति मुनि रूपी आचार्य पर प्रहार कर दिया।

समाज में इन कलियुगी कल्माषपाद की भर्त्सना होनी ही थी। उपस्थित जन समुदाय मे से भले ही कोई स्पष्ट न बोला हो यह दूसरी बात है, परन्तु आगे चलकर इस घटना के प्रकाश में आने पर ऐसे कदाचारी, अशोभन कार्य करने वाले अभद्र पुरुष की समाज ने जिस प्रकार भर्त्सना की वह मानो इस शक्ति मुनि के श्राप के रूप में ही प्रस्फुटित हुई। शापित होने प्रभावित पुरुष को जो भोग भोगना होता है उसमें तो समय अपेक्षित है। समय आने पर उद्दण्ड पुरुष को उसकी उद्दण्डता का फल अवश्य दुःख रूप में भोगना पड़ता है जैसे खेती पक जाने पर ही उसे दरांती से काटा जाता है। अधिकारी ने जो कृत्य किया वह कल्माषपाद के क्रूर कर्म से ही मिलता-जुलता है। पण्डित जी अपने को इस परिस्थिति में कैसा अनुभव करते रहे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

साम्प्रदायिकता का नंगा नाच क्यों ?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के निवासियों ने यह मान लिया था कि पाकिस्तान बन जाने के पश्चात् अब भारत में रोज-रोज की साम्प्रदायिक हाय-हाय तो खत्म हुई। भले ही भारत विभाजन की प्रक्रिया में जन-धन की महान् हानि-हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही उठानी पड़ी।

धर्म निरपेक्षता मारा देकर भारत के नेताओं ने उन अलगाव वादी शक्तियों को एक बार पुनः सोचने को मजबूर कर दिया कि इस पाक० के बंटवारे को हंस के ले लिया। अब भारत का पुनर्विभाजन करेंगे, डंडों के जोर से। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समय २ पर भारत में यत्र-तत्र झगड़े हुए हैं वह वहीं पर हुए हैं। जहां पर एक अल्पसंख्यक समुदाय का बहुमत रहा है। बहुमत हिन्दू ने कहीं पर भी झगड़ा-फसाद नहीं किया। हां अपने पर किये गये हमले का प्रतिकार तो अवश्य किया है। इस प्रकार अलीगढ़, सम्भल, मुरादाबाद, सहारनपुर, मेरठ, आजमगढ़ और अन्य प्रान्तों में भी जो झगड़े हुए, उन सब में अपनी अल्प मत पक्ष ही है। किन्तु बहुमत पक्ष को सदा यही कहकर दबाया गया है कि तुम बड़े भाई हो, छोटों पर दया करो। यदि पुलिस या फौज की सहायता न मिले, तो यहां पर भी हिन्दू का विनाश ही हुआ है।

महात्मा गांधी जब पांच दिन का अन्तिम समय पर आमरण अनशन दिल्ली में हुए दंगे के समय किया था, उस समय मौ० आजाद ने सरदार पटेल की शिकायत महात्मा गांधी से की थी कि सरदार पटेल मुसलमानों को भारत में जिन्दा नहीं रहने देंगे। मौ० साहब को गांधी जी ने समझाया पर वह न माने तब पटेल को बुलवाया गया उनसे पूछा गया तब उन्होंने को स्पष्टी करण दिया। तब गांधी जी ने प्रार्थना सभा में कहा था कि मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ प्रेम-मुहब्बत के जज्बात पैदा करके रहना पड़ेगा। यदि ऐसा नहीं होता है—तो गान्धी हिन्दुओं के खौलते हुए खून को भूख-हड़ताल और फाका करके नहीं रोक पायेगा। बात ठीक ही थी। इस बात के बाद आज ३८ साल हो गये। सहन शीलता की भी एक सीमा होती है—अपने ही घर मे हम बेगाने बने हैं। ऐसा कब तक चलता रहेगा।

भारत में अल्प संख्यकों बराबरी के अधिकार हैं और वे अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करने के लिये स्वतन्त्र हैं—सरकार मे बराबर का स्थान दिया जाता है—वे नौकरियों में भी उचित स्थान प्राप्त हैं। राष्ट्रपति व सेना मे स्थान शिक्षण आदि सभी जगह उनका महत्वपूर्ण स्थान

पड़ोसी पाकिस्तान में जो कल तक एक घर, एक भाई चारे से बंधा था आज एक इस्लामिक राष्ट्र है एक इस्लाम का राजधर्म है।

अन्य धर्मों के अनुयायियो को द्वितीय श्रेणी के नागरिकों जैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता है। क्या कोई कल्पना भी कर सकता है कि पाकिस्तान या अन्य किसी एशियायी या योरोपीय देश में बहुसंख्यक सम्प्रदाय के पूजा स्थान के द्वार खोलने का अदालत द्वारा आदेश जारी किये जाने के विरोध में स्थान २ पर आन्दोलन, तोड़फोड़, सदन से वाकआउट करके आयोजन किये जायेंगे।

मजलिस ये मुशावरात के नेता सैय्यद शहाबुद्दीन राजनीतिक लाभ कमाने के उद्देश्य से भारत में साम्प्रदायिकता का वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं। क्या पाकिस्तान में वहां के रहने वाले अल्प संख्यक हिन्दू भी अपने हित की बात कह सकता है। आन्दोलन साम्प्रदायिकता के भाव उत्पन्न करने की बात सोच भी नहीं सकता है। जो कोई भी मथुरा या बनारस जाता है उसे मालूम है कि पवित्र पूजा स्थलों को तोड़कर मस्जिदों में परिवर्तित किया

१६वीं शताब्दी में मुगल बादशाह बाबर ने मन्दिर तोड़कर मस्जिद का निर्माण कराया था आज से चार सौ वर्ष पूर्व वहां पर क्या था इस कहानी पर तो इतिहास ही गवाही देगा। वैसे भी राम जन्म भूमि का विवाद एक अदालत से हटकर बड़ी अदालत में गया है जो विचाराधीन है। सत्र न्यायाधीश का निर्णय तो केवल यह है कि ताला किस अदालत ने लगाया था ऐसा कोई सबूत नहीं मिला अतः श्रद्धा के पात्र हिन्दुओं के लिये राम के दर्शनार्थ ताला खुलवा दिया है।

किन्तु इन गड़े मुर्दे उखाड़ने से जो देश में विष फैलाया जा रहा है उसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। अभी अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिस ए मुशावरात के आह्वान पर दिल्ली तथा भारत के विभिन्न भागों में मुस्लिम समुदाय के समर्थकों ने जो रवैया अपनाया है, वह यदि अन्य हिन्दुओं की ओर से भी अपनाया गया, तो क्या परिणाम होंगे।

आज बाबरी मस्जिद ही नहीं, कल को कृष्ण जन्म भूमि, तथा विश्वनाथ के मन्दिर पर, जिसका पिछला सम्भाग आज भी गवाही दे रहा है कि मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाई गई थी। इस प्रकार भारत में न जाने कितने हृदय विदारक काण्ड किये गये, जो हिन्दुओं के दिल दिमागों को परेशान करने के लिये काले पृष्ठ रंगे पड़े हैं। आजादी के स्वर्ण विहान में यदि हिन्दू अपने धर्म स्थानों और अपने बिछुड़े भाइयों को वापस लेने की मांग काम करता है तो क्या अपराध करता है।

साम्प्रदायिकता की आग लगाने वालों के इस रवैये से साम्प्रदायिक सौहार्द तो स्थापित नहीं होंगे, कटुता ही बढ़ेगी।

भारत ने धर्म निरपेक्षता का सिद्धान्त जरूर अपनाया है लेकिन यह सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि अल्प संख्यकों की साम्प्रदायिकता बहुसंख्यकों की साम्प्रदायिकता से कम खतरनाक नहीं होगी। भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिक के लिये कोई स्थान नही होगा, मुशावरात मुस्लिम लीग, और जमायत इस्लामी जैसी घोर साम्प्रदायिक पार्टियों में भारत सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति का जो मखौल बनाया है उसका अंजाम अच्छा नहीं बनेगा।

यदि समय रहते इनकी साम्प्रदायिक गतिविधियों पर पाबन्दी न लगाई गई तो देश को फिरकापरस्त राजनीति की आग से देश को बचाना असम्भव हो जायगा।

देश की अपनी समस्याओं में उलझा हुआ है और उनके सुलझाने में व्यस्त है ऐसे समय में राजनैतिक नेतृत्व हथियाने के जो महत्वाकांक्षी साम्प्रदायिक तत्व साधारण लोगों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं। ऐसे तत्वों को गन्दी राजनीति खेलने नही दी जानी चाहिये। ऐसे ही तत्वों में साम्प्रदायिकता का नंगा नाच करके भारत का विभाजन कराया था। नई भ्रमित दिशा भविष्य में हमें नये मिनी पाकिस्तान के उन मन्सूबों की सोचने को विवश करती है जो समय २ पर विभिन्न अञ्चलों में लगाये जाते हैं—ऐसे अवसर आने से पूर्व ही बीते इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिये।

जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले

श्री यशपाल आर्यबन्धु, आर्योपदेशक आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद २४४०३२

२-३ दिसम्बर सन् १९८४ को भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने में घटी उस कुख्यात गैस दुर्घटना से कौन परिचित नहीं होगा? सन् ८४ जाते-२ जो विष घोल गया था, उसके परिणाम अभी तक भोपालवासी भुगत रहे हैं। हजारों जानें गईं, वह अलग से ९ दिसम्बर ८४ को दूरदर्शन समाचारों में इस तथ्य को स्वीकारा गया कि एक लाख से भी अधिक व्यक्तियों ने आंखों और फेफड़ों में तकलीफ बताई है। इस विषैली गैस के प्रभाव से भोपाल में एक नये प्रकार के कीड़े देखे गये जो काटने पर बहुत दर्द करते हैं और दबाने से मरते भी नहीं। आंखों, फेफड़ों एवं अन्य तत्कालिक बीमारियों के अतिरिक्त इसके दूरगामी दुष्प्रभाव भी पड़े, जिनकी आशंका हमने अपने कई लेखों में समय-२ पर व्यक्त की थी।

वियतनाम युद्ध में प्रयुक्त विषैली गैसों के दुष्परिणामों की उपलब्ध जानकारी के आधार पर हमने यह आशंका व्यक्त की थी कि इस गैस के दुष्प्रभाव से गर्भस्थ शिशुओं तथा भावी गर्भ धारण करने वाली महिलाओं के गर्भस्थ शिशुओं पर विकृति की अत्यधिक सम्भावनायें हैं। हमारी इस आशंका की पुष्टि में समय-२ पर विभिन्न समाचार प्राप्त होते रहे हैं। नवभारत टाइम्स के ८ जनवरी सन् ८५ के अंक में इस तथ्य को स्पष्ट शब्दों में स्वीकारा गया था और बताया गया था कि भोपाल में गर्भस्थ शिशुओं के सर बढ़ गये हैं। खून में जहरीले तत्वों की बहुतायत हो गई है।

भोपाल के विभिन्न अस्पतालों में ४ दिसम्बर सन् ८५ को गर्भपात के मामले काफी संख्या में आये। लखनऊ स्थित औद्योगिक एवं विष अनुसन्धान केन्द्र की डा० एस० बी० चन्द्रा ने आशंका व्यक्त की थी, जिन गर्भवती महिलाओं पर मिक का असर हुआ है, उनके बच्चों में अनेक तरह की खराबियां आ सकती हैं। डा० चन्द्र ने कहा था कि विष अनुसधान केन्द्र के विज्ञानियों ने मिक के हर सम्भव प्रभाव को जांचने के लिए एक साल तक परीक्षण करते रहने की योजना बनाई है।

इसमें कई दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जायेगा। गर्भवती महिलाओं पर मिक का दूरगामी असर होने की सम्भावना का ठीक से पता लगाया जायेगा। तान्त्रिक तन्त्र पर मिक के विषैले प्रभाव का बारीक अध्ययन किया जायेगा। त्वचा पर शरीर के कोशिकाओं पर इस गैस के दूरगामी प्रभाव का अध्ययन होगा। अभी तक के अध्ययन के आधार पर त्वचा, श्वास तन्त्र में गड़बड़ी जैसे दमा, फेफड़ों की कार्य क्षमता में कमी, आंखें खराब होना और गर्भस्थ शिशुओं पर खराब असर पड़ने के आसार हैं। इसके अलावा गैस से प्रभावित लोगों के जिगर व गुर्दे को भी नुकसान पहुंचा है। (देखें—नवभारत टाइम्स, ६-१-८५) इसी समाचार पत्र के २ मार्च ८५ के अंक में श्री भारत डोगरा का लेख 'जहर में जूझ रहे लोगों का जहर' शीर्षक से छपा है। उसमे वे लिखते हैं कि—गैस के कारण हजारों लोगों को फेफड़ों की दीर्घकालीन बीमारियां हो गई हैं। अन्य कई समस्याओं का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि—"ऐसी ही एक विशेष समस्या गर्भवती महिलाओं व उनकी होने वाली सन्तान पर गैस के सम्भावित दुष्परिणाम की है। गर्भ गिरना, मृत बच्चे का जन्म होना, बच्चे में विकृति होना, आदि की शिकायतें मिली हैं। यह स्थिति तो उन महिलाओं की है जो गैस दुर्घटना के समय गर्भधारण की अन्तिम स्थिति में थी। गैस द्वारा उन महिलाओं को और भी हानि होने की सम्भावना है जो उस समय गर्भ धारण की आरम्भिक अवस्था में थीं। एक तो उन पर व भ्रूण पर गैस का बुरा असर हुआ है तथा दूसरी इनमें से अधिकतर महिलाएं सांस आदि के कारण विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अनेक दवाइयां खाने पर मजबूर हुई। इन दवाइयों का भी भ्रूण पर गलत असर पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में विकृत बच्चे पैदा होने का खतरा बढ़ गया है। कुछ महिलायें तो बाध्य होकर गर्भ गिराने की सुविधायें खोजने लगी हैं। एक अन्य समाचार के अनुसार भोपाल में गत दिसम्बर ८४ में हुई गैस दुर्घटना से यूनियन कार्बाइड के आस-पास रहने वाले १४ वर्ष से अधिक आयु के हर दो जीवित लोगों में २८ के फेफड़े खराब हो चुके हैं। (देखे नवभारत टाइम्स ४-५-८५)

उपरोक्त सभी दुष्परिणामों से बचने के लिए हमने कई लेखों में इस बात पर बल दिया था कि भोपाल में विष के प्रभाव को दूर करने के लिए बड़े-२ यज्ञ होने चाहियें। क्योंकि घृत विशेषतया गोघृत में विषनाशन की अद्भुत शक्ति है। और फिर जब ३ दिसम्बर की रात्रि को भी भोपाल के दो आर्य परिवार हवन-यज्ञ के करने से उस विषैले प्रभाव से बच गये तो फिर हवन-यज्ञ को अपनाना सर्वथा युक्तिसंगत और अनिवार्य है। (देखें, हिन्दू ७ अप्रैल, ८५ तथा वैदिक क्रान्ति, जून, ८५) आर्यसमाज के प्रयत्नों से वहां हवन-यज्ञ होते भी रहे हैं। किन्तु कोई बड़े पैमाने पर यज्ञ होने की बात सुनने में नहीं आई। हर्ष का विषय है कि हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता एवं महत्ता को समझते हुए सनातन धर्मावलम्बियों ने भोपाल में एक बृहद यज्ञ का आयोजन प्रारम्भ किया है। ५ जनवरी सन् ८५ के नवभारत टाइम्स में एतद् विषयक समाचार पढ कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि भोपाल स्थित टी० टी० नगर (तातिया तोपे नगर) में एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें २४ लाख दस हजार चार सौ इकतालीस आहुतियां दी जायेंगी और जिसमें २५ कुवन्टल घृत एवं अन्य सामग्री तथा व्यवस्था, भोजन दक्षिणा आदि में छः लाख रुपये व्यय हुआ। जो कार्य आर्यसमाज को आकर करना चाहिये था, तथाकथित सनातन धर्म वालों ने किया है। अतः साधुवाद के पात्र हैं। बेशक थोड़ी पौराणिकता तो उसमें होगी ही किन्तु यज्ञ के जो भौतिक लाभ हैं, एव उससे पर्यावरण की जो शुद्धि होगी, वह अपना महत्व रखती है। हमें इस बात का तो सन्तोष है कि जिस बात को सनातनधर्मी मानते नहीं थे, भोपाल की इस गैस दुर्घटना ने उन्हें उसी को मानने के लिए मजबूर कर दिया है। यह ऋषि का जादू नहीं तो फिर और क्या है? सत्य है

> महर्षिराज! तेजस्य तेरा चहु ओर छा रहा है।
> तेरे बताये पथ पर ससार आ रहा॥

प्रार्थना

> हे दयामय! कर्म अच्छे, करते बीते जिन्दगी।
> शरण तेरी में सदा, करते रहे हम बन्दगी॥
> तेरे दिव्यालोक से, फलता-फूलता परिवार हो।
> शुभ कर्म हम करते रहें, सच्चा धर्म से प्यार हो।
> कुमार्ग से बुद्धि हटा, सन्मार्ग में प्रेरित करें।
> सदाचारी बन सदा हम, दूसरों का हित करें॥
> मन में सदा हमारे प्रभु, आपका ही वास हो।
> अविद्या का नाश हो, विद्या रूपी प्रकाश हो॥
> काम, क्रोध को दूर करके, सच्चाई दीजिये।
> लोभ, मोह और मिथ्या, दूर करके कीजिए॥
> जीवन हमारा हो सफल, कल्याणकारी काम हो।
> तुमको न भूले हम कभी, नित्य प्रिय तुम्हारा ध्यान हो॥

—तरुण कुमार शास्त्री, आयुर्वेद रत्न
वेदीय गुरुकुल [illegible]

ईसायत का हिन्दूकरण

—श्री के० नरेन्द्र

पाठकों को याद होगा कि मैंने पिछले दिनों संकेत किया था कि ईसाई प्रमुख इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि ईसाइयत को इस देश में वह उन्नति प्राप्त नहीं हुई जिसकी वह आशा करते थे। इसका कारण उनके विचार से ईसाइयत एक विदेशी धर्म है और दूसरा कारण कि वह ब्रिटिश साम्राज्य का हरावल दस्ता बनकर कार्य करता रहा है इन कारणों की अब उपेक्षा कर इनके प्रमुखों ने अब अपने आपको भारतीय जीवन दर्शन के अनुरूप बनाने पर बल देना शुरू कर दिया है ताकि लोग यह जान ही न पाएं कि ये लोग हिन्दू हैं या ईसाई ! इसलिये मैं इनके प्रयासों को ईसायत का हिन्दूकरण कहता हूं। इस सम्बन्ध में मैं आपका ध्यान मद्रास में एक गिरजाघर के मुख्यद्वार पर लिखे ऋग्वेद के मन्त्र "संगच्छध्वम-समवध्वम स वो मनांसि जानाताम" की ओर दिलाता हूं कि किस प्रकार इनकी मनोवृत्ति बदली जा रही है और लोगों को भ्रम से यह दिखा रहे हैं कि वह एक मन्दिर है मद्रास के जिस गिरजाघर का वर्णन कर रहा हूं उसका नाम "एकयोएलम" अर्थात् "शाकाहार और इसके बड़े पादरी आर्क बिशप ने आज्ञा दे दी है कि ईसाइयत को पूर्ण भारतीयकरण के प्रश्न पर गहरा विचार करें और अपने सुझाव दें और इससे बढ़कर स्पष्ट शब्दों में एक महत्वपूर्ण बात कह डाली कि जब हम दूसरे धर्मों के लोगों के आर्थिक राजनैतिक और वैज्ञानिक टैक्नालोजिकल मामलों में परीक्षणों का लाभ उठाते हैं तो क्यों न हम इनके धार्मिक परीक्षणों का पूरा-पूरा लाभ उठाएं हिन्दूकरण की ओर झुकने के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जैसा उत्सव तथा शुभ कार्यों में मोम बत्तियों के स्थान पर तेल के दीपक का प्रचलन पादरी लोग धोती कुर्ता पहन जमीन पर आसन लगाकर गिरजाघर में फूल रखना रंगोली अंग्रेजी के स्थान पर स्थानीय भाषा में प्रार्थना ईसाई महिलाएं अब सिर पर सन्दूर लगा सकती हैं। पादरी महिलाएं कर्नाटक संगीत सीखने लगीं हैं आज सबसे बड़ी बात यह हुई है कि भारतीय देवियों की तरह क्वारी मेरी को साड़ी पहने लक्ष्मी की तरह कमल के फूल पर खड़ो दिखाया जा रहा है यह हैं हिन्दूकरण की ओर ईसाइयत के कदम अभी पिछले दिनों पोपपाल का मद्रास में स्वागत उपनिषद के मन्त्रों से सभी ने सामूहिक रूप से किया उनकी हिन्दू रीति अनुसार आरती उतारी गयी। लाट पादरी के सेक्रेट्री फादर फ्रांसीसी ने कहा कि वैदिक मन्त्रों को पढ़ने से कोई गैर ईसाई नहीं बन जाता ईश्वर एक है कोई हिन्दू ईश्वर या ईसाई ईश्वर अलग नहीं है सच्चाई जहां से मिले ईसाई स्वीकार करेंगे।

मैंने आर्क बिशप आफ मद्रास के सेक्रेट्री फादर फ्रांसिस के कुछ विचार पेश किये थे। इन्होंने तो यहां तक मान लिया है कि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण भी गैर ईसाई नहीं है। इनका कहना है कि सचाई जहां भी नजर आये इसे ग्रहण करें। ठीक वह ही बात जो महर्षि दयानन्द सरस्वती कहा करते थे।

फादर फ्रांसिस की तरह फादर अगनेशस है वह भारतीयकरण का परीक्षण नहीं कर रहे वह तो यह कहते हैं कि हम भारतीय हैं और भारतीय होते हुए जो भी बात भारतीय है इसे अपना लेनी चाहिये आपका कहना है, कि 'ईसा मसीह का जन्म नाजरथ में हुआ था किन्तु इस तात्पर्य यह नहीं कि हम नाजरथ की संस्कृति को विश्व-व्यापी बना दें'। ईसा का सन्देश सारे संसार के लिये था। किन्तु प्रत्येक स्थान, प्रत्येक देश और प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय भाषाओं और स्थानीय भावों में पेश किया जा सकता है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमें झिझकने की क्या आवश्यकता है। क्यों न चौकड़ी लगाकर नमस्कार करें। पादरियों को इतने कपड़े पहनने की क्या आवश्यकता है जब हमारा धर्म इसकी आज्ञा नहीं देता और क्यों न हम हिन्दुओं के विभिन्न दृष्टिकोणों को अपनायें जब इससे ईसाई सिद्धान्तों का पता चल सकता है। यह आवश्यक नहीं कि ईसाइयत को रोमन ढंग से ही कहा जाये। रोम अर्थात् वेटिकन इस बात को समझता है। वेटिकन ने दूसरे देशों में ईसाइयों को इस बात की आज्ञा दे रखी है कि वे स्थानीय ढंग से ईसाइयत का प्रचार करें।

जब पोप के स्वागत का प्रोग्राम बन रहा था, तो यह निर्णय किया गया कि हिन्दू और ईसाई दोनों ही मिलकर हिन्दू शास्त्रों के मन्त्र पढ़ें जिनमें ईश्वर से प्रार्थना की गई थी कि इन्हें झूठ से सचाई की ओर ले जाया जाये। कहा जाता है कि पोप पाल ने इस पर कोई ऐतराज न किया क्योंकि इस मन्त्र में कोई ऐसी बात न थी जो ईसाई सिद्धान्तों के विपरीत थी। न ही पोप ने इस बात पर ऐतराज किया कि आपका स्वागत 'पूर्ण कुम्भम्' से किया जाये क्योंकि इस क्षेत्र में अतिथियों का स्वागत करने का यह ही तरीका है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मद्रास के ईसाइयों में एक भारी खींचातानी चल रही है कि ईसाइयत का राष्ट्रीयकरण किया जाये या नहीं। जो लोग इसके पक्ष में हैं वे कह रहे हैं कि दूसरे देशों में इस बात की आज्ञा है तो भारत में क्यों नहीं किन्तु जो लोग इस के विरुद्ध है इनका कहना है कि ये सब हिन्दुआना बातें हैं। इसका उत्तर यह दिया जाता है कि अगर हिन्दू इस देश के निवासी हैं, तो इनके रीति-रिवाजों को कैसे देश से बाहर निकाला जा सकता है ? यह नहीं देखना चाहिये कि ये रीति-रिवाज हिन्दुओं के हैं बल्कि यह देखना चाहिये कि ये भारतीय हैं या नहीं। सच यह है कि हिन्दुत्व और इस देश की राष्ट्रीयता दोनों एक दूसरे के पोषक हैं। तो भी जो लोग राष्ट्रीयकरण के विरोध में है वे भी ऐसा होने से रोकने में पूरा-पूरा जोर लगा रहे हैं। जो हो यह प्रत्येक मान रहा है कि अंग्रेजों के भारत से चले जाने के बाद ईसाई रीति-रिवाज में अवश्य ही परिवर्तन होना था और यह हो रहा है। इसकी गति कितनी ही धीमी क्यों न हो। आज ईसाई पूजा बहुत सी जगहों पर स्थानीय भाषा में होती है। अगर बत्तियां प्रयोग हो रही हैं। कई गिरजाघरों में अञ्जलि नमस्कार करने की आज्ञा दे दी गई। जो प्रार्थना की जाती है और जो गीत गाये जाते हैं वे भी सब भारतीय तर्ज के हैं। पहले गिरजाघर में पियानों या आर्गेन बजता था अब कई जगह पर हारमोनियम आ गया है। अभी भी अंग्रेजी या लैटिन भाषा के गाने गाये जाते हैं किन्तु यह अनुभव किया जा रहा है कि

अधिक लोग इन्हें समझ नही सकते इसलिये इन्हे भारतीय ढग से गाया जाये।

इन सब बातो का विरोध अधिकतर पादरी कर रहे हैं किन्तु साधारण लोगो में यह भावना है कि वे अधिक से अधिक ईसाई रीति रिवाज को छोडकर भारतीय उर्फ हिन्दू रीति रिवाज अपना रहे हैं। जो चालाक और होशियार ईसाई हैं वे इन लोगों को समझ रहे हैं कि इस प्रकार भोले भाले हिन्दुओं में घुसना आसान है। किन्तु जिनको इन तरीकों पर ऐतराज है इनका कहना है कि यदि यह सिलसिला इसी प्रकार जारी रहा तो एक दिन ईसाइयत नाममात्र को रह जावेगी इसी प्रकार ईसाइयों में एक बहस छिडी हुई है। राष्ट्रीयकरण की उन्नति तो हो रही है किन्तु इसका विरोध भी हो रहा है।

जो लोग विरोध कर रहे हैं इनकी भावनाओं को विक्टर कोलंड कर रहे हैं। आप आल इण्डिया ईसाई कांफ्रेंस के प्रमुख हैं। आप का कहना है कि' राष्ट्रीयकरण का यह तात्पर्य नहीं लिया जाना चाहिये कि हमने ईसाइयत को हिन्दू बना देना है इसका गलत तात्पर्य भी न लिया जाये। ईसाई लोग नहीं कह सकते जैसे हिन्दुओं को आमीन कहने में कठिनाई है। ठीक है कि वेटिकन ने भारतीय पादरियो को इस बात की आज्ञा दे दी है कि वे ईसाइयत का जितना राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं कर लें। किन्तु इस परिवर्तन के विरोधियों का कहना है कि इन्होंने पोप को धोखा देकर कई ऐसी बातें मानने पर तैयार कर लिया जो एक दम से हिन्दू थी।

आल इण्डिया ईसाई कान्फ्रेंस के अधिवेशन में एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया था जिसमे यह माना गया था कि पोप का एक सर्वोदा शानदार और सन्तोषप्रद स्वागत किया जाये। इसमे बम्बई के आर्क विशप साईमन फेन्ट और भारत की वप्तिस्ट कार्फ्रेंस के प्रधान भी उपस्थित थे। इस प्रस्ताव मे कहा गया था कि यह स्वागत ईसाई ढग स होना चाहिये और इसमे गैर रस्मे मन्त्र श्लोक पढना और दूसरी बात दूर रखी जाय। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाये कि पोप की आरती न हो। लडकियो का नृत्य न हो। इस बात के लिये विशेष आदेश जारी किये गये कि पोप जब बाईबिल पढ़ रहे हो तो कोई ऐसी बात न की जाये जो हिन्दुआना हो। पूजा के समय किसी भी भारतीय धर्म मे कुर्बानी की आज्ञा नही है। यह इनकी भावनाओं के प्रतिकूल है। किसी स्त्री को इस बात की आज्ञा नहीं कि वह मूर्ति के पास आए। इसके पास किसी स्त्री को नाचने की आज्ञा नहीं और न ही किसी पादरी को हाथ लगाने की ऐसा लगता है कि इस कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने वाले लोगों को पता चल गया था कि मद्रास मे पोप के स्वागत मे कई ऐसी बात की जानी हैं जो शुद्ध हिन्दुआना है ईसाई नहीं। इसलिये इस कान्फ्रेंस में सब ईसाइयों को इस बात से सावधान किया कि वे कोई ऐसी बात न करें जो किसी अन्य धर्म की अन्धी नकल कही जा सके। इन लोगों का कहना है कि इससे ईसाई धर्म की भारी बदनामी हुई है और ईसाई धर्म हिन्दुओं मे मजाक का पात्र बनकर रह गया है। मिस्टर कोलैंड ने बताया कि जब सन १९६४ मे उस समय के पोप भारत आये और उन्होने हिन्दू उपनिषदों के कुछ मन्त्र पढे तो सब समाचार पत्रो मे यह प्रकाशित हो गया कि पोप ने हिन्दू प्रार्थना की है। इसका परिणाम यह हुआ कि कई हिन्दू यह समझने लग गये कि इनका धर्म ईसायत से श्रेष्ठ है क्योंकि पोप को स्वय हिन्दू उपनिषदों से कुछ मन्त्र और श्लोक लेकर प्रार्थना करनी पडी। इस प्रकार भगवान पोप को इस देश मे कई लोगो ने गलत समझा।

मिस्टर कोलंड इन कट्टर पन्थी ईसाइयो के प्रवक्ता हैं जो यह भूल जाते हैं कि ईसाइयत भारत मे भारतीय तरीके से ही जीवित रह सकती है या इसका प्रचार हो सकता है। अब जब कि भारत को अधिक से अधिक भारत बनाने का प्रयास हो रहा है और सभी विदेशी बातों को गुलामी का प्रतीक समझा जा रहा है तो निश्चित रूप में ईसाइयत के प्रचार के लिये जो विदेशी तरीके प्रयोग किये जा रहे हैं इनसे लोग दूर जा रहे हैं। ईसाई पहले ही अंग्रेजो के दुम-छल्ले कहे गये हैं और यदि अब भी इन्होंने इनके रंग ढग अपनाये रखे तो इन पर और भी अधिक आरोप अंग्रेज समर्थक होने का लगेगा।

(१० २ ८६ वीर अर्जुन से साभार)

११ अप्रैल सन् १८७९ के हरिद्वार कुम्भ मेले पर दयानन्द सरस्वती द्वारा धर्म-प्रचार के संस्मरण

श्री रामेश्वर दयाल गुप्त (एम. ए., आर. एल. डी. अध्यक्ष—त्रैतवादीय आर्य पीठ, हरिद्वार रोड, ज्वालापुर

स्वामी जी सन् १८७९को रुड़की से ज्वालापुर पधारे जो हरिद्वार के समीप पंडो का नगर है। वहां ७ दिन ठहरे, २७ फरवरी १८७९ ई. को हरिद्वारमें पधार कर श्रवणनाथ के बाग में निर्मलों की छावनी के सम्मुख मूले मिस्त्रीके खेतमें कलक्टर साहिबके डेरे के समीप अपने खेमे गड़वाकर उतरे। थोड़े दिनों में बहुत से आर्य महाशय बाहर से आ गये और स्वामी जी के पास ठहरे। आते ही समस्त मार्गों घाटों और पुलों तथा मन्दिरों पर एक विज्ञापन लगवा दिया जिसमें पहले स्वामी जी के आगमन की सूचना यात्रियों को दी गई फिर विज्ञापन में स्वामी जी ने अपने मन्तव्य भी लिखे थे और प्रत्येक मनुष्य को धर्म विचार में आने के लिये निमन्त्रण भी दिया। इस विज्ञापन का अन्तिम वचन यह था।

इसलिये आर्यों के इस महासमुदाय मे वेद मन्त्रों द्वारा सब सज्जन मनुष्यों के हित के लिए ईश्वराज्ञा का प्रकाश संक्षेप में किया जाता है। फिर इसके नीचे ऋग्वेद मंडल १ सुक्त ७१ मन्त्र ५, ६ व १० को लिखकर उनकी व्याख्या की और ऐतरेय तैतरेय आरण्यक उपनिषद् का एक वाक्य भी लिखकर उसके अर्थ भी लिख दिये और समापित में यह प्रार्थना की:—

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी जल, अग्नि वायु, आकाश, सूर्य चन्द्र, वर्ष और ऋतु; मास, पक्ष, दिन, रात्रि प्रहर, मुहूर्त घड़ी पल, क्षण, आंख, नाक आदि शरीर, औषधि, वनस्पति, खाना, पीना आदि व्यवहार ज्यों के त्यों हैं। अर्थात् जैसे ब्रह्मा के समय से लेकर जैमिनी मुनी के समय तक इस देश में थे। फिर हम आर्यो की दशा क्यों पलट गई है। मनुष्यों, आप अत्यन्त विचारपूर्वक देखो कि जिसका फल दुःख वह धर्म और जिसका फल सुख वह कभी अधर्म हो सकता है,अपनी दशा अन्यथा होनेका यही कारणहै जो ऊपर लिख आये हैं। अर्थात् वेद विरुद्ध चलना। और फिर उस प्राचीन अवस्था को प्राप्ति कराने वाले (रीति) वेदानुकूल आचार पर चलना है और वह उपचार यह है। जैसे आर्यावर्त निवासी आर्यसमाजों के समासद् कहना और कराना चाहते हैं कि संस्कृत विद्या के जानने वाले स्वदेशीय मनुष्यों की वृद्धि के अभिलाषी परोपकारी निष्कपट होकर सब को सत्यविद्या देने की इच्छा युक्त धार्मिक विद्वानों की उपदेशक मण्डली, और वेदादि सत्यशास्त्रों के पढ़ने के लिये पाठशालायें नियत करना चाहते हैं। इसमें जिस किसी की योग्यता हो वह अभिप्राय को प्रसिद्ध कर इस परोपकारी महोतम कार्य में प्रवृत हो। जिससे मनुष्य मात्र की शीघ्र उन्नति हो सकती है आदि-आदि।

इस अन्तिम अपील में स्वामी जी ने प्रकट किया कि वह दो विषयों के संशोधन का मुख्य कारण समझते थे। एक उपदेशक मण्डली ऐसे मनुष्यों की होनी उचित थी जो (१) संस्कृत के वेत्ता, (२) स्वदेशीय मनुष्योन्नति, (३) परोपकारी, (४) निष्कपट,(५)सबको सत्य विद्या के देने की इच्छा करने वाले, (६) धार्मिक, (७) विद्वान हों और साथ ही पाठशाला स्थापित करना चाहते थे। वेदादि शास्त्रों के पढ़ने के लिये इस मेले में बड़ी भीड़ थी। स्वामी जी ने १२ अप्रैल को चिट्ठी में लिखा था कि २ लाख आदमी आ चुके हैं और उस पर्व में अभी १५दिन बाकी थे,पर्वमें अन्तिम दिन तक भी मनुष्य बहुत आये थे। संवत १९२४ के कुम्भ से लगभग द्विगुण भीड़ मानी जाती थी। गंगा के किनारे-२ आठ-दस कोश तक यात्री ही यात्री दृष्टिगोचर होते थे। स्वामी जी ने इस पौराणिक दल में अपनी ध्वजा झुला कर वैदिक धर्म का डंका बजाया। मूर्ति पूजा आदि पौराणिक सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष रूप से खण्डन किया और बहुत से ब्राह्मण सन्यासी वैरागी और निर्मले आते थे और दांत पीस कर चले जाते थे। कई तो सम्मुख ही कह जाते थे कि "मन तो बहुत चाहता है कि तुझे मार डालूं क्योंकि तूने हमारी उप जीविका छीन ली है और अनर्थ मचा दिया है।" हाय पेट इस पापी उदर ने भारत के इस शिरोमणि वर्ग अर्थात् ब्राह्मणों से क्या-क्या नहीं कराया। पौराणिक विद्या भी अपने पूर्ण बल से मानों इस मेले में विद्यमान थी। स्वामी विशुद्धानन्द बनारस वाले भी आये हुए थे। एक और सतुआ स्वामी जी कनखल के निकट उतरे हुये थे जो अच्छे विद्वान गिने जाते थे। दो और सूर्य विद्वान सुखदेव गिरी जी और जीवन गिरी जी विराजते थे। स्वामी ने सबको पत्र भेजे। परन्तु किसी को साहस न हुआ कि सामने आवे। पण्डित श्रद्धाराम आदि ने भी एक सभा रचाई, और उस सभा की ओर से एक चिट्ठी लिखकर स्वामी जी की ओर भेजी जो हम ठीक वैसी ही पण्डित लेखराम कृत पुस्तक से लेते हैं।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

श्री दयानन्द सरस्वती प्रति।

निवेदन मिदं लिखत साधु वर्ग तथा पण्डितजन और सभासद लोगों की प्रार्थना यह है कि तीन चार बजे से ६ बजे तक धर्मविषयक सदसत् विचार होता है। और यह भी ज्ञात हो कि जब से जूना अखाड़ा माया देवी के समीप अलीगढ़ सद्धर्मावलम्बी सभा प्रारम्भ हुई तब से इस सभा से आपके पास पत्र भेजे गये. अब वह पत्र भेजते हैं कि यदि इस सभा में आकर आप भी कुछ व्याख्यान करें तो इसमें हमको दो फल दीखते हैं। एक तो यह कि एकान्त बैठकर वेद शास्त्र द्वारा व्याख्यान देते रहे हो। विद्वानों के सम्मुख व्याख्यान करने में सबको यह ठीक निश्चय हो जायेगा कि आपका कथन वेद वा शास्त्र के कथानानुसार है या नहीं। २य यह कि आपका कहना वेद-शास्त्र के अनुकूल निकला तो हम आपके मत प्रतिपादन में उद्यत हो जावेंगे और इस एक भाव से आर्यावर्त को बड़ा भारी लाभ होगा। आप कृपा करके सभा में अवश्य पधारें। यदि किसी हेतु से आना न हो तो वह हेतु लिखियेगा।

पण्डित गोविन्द लाल देवबन्दी, सतुआ स्वामी केशवाश्रम स्वामी, चिदघनानन्द स्वामी, पण्डित श्रीधर कासना वाले वेदकुण्ठ शास्त्री पूना, शालीग्रामाचार्य मथुरा गोविन्दाचार्य त्रिकूट गोपाल शास्त्री जम्मू तारानाथ भट्टाचार्य, पण्डित सीताराम पण्डित मनोहर दास कोशल शास्त्री पण्डित अयोध्यादास, पण्डित शत्रुघ्न शास्त्री बांके बिहारी वाजपेयी श्री वैष्णवो के पण्डित नृसिंह शास्त्री पण्डित सुखराम दास गदाधर शास्त्री पण्डित श्रद्धाराम फिल्लौरी पण्डित जवाहरलाल अहमदाबादी पण्डित शम्भूदत्त पण्डित वीर भानु पण्डित गणेशीलाल ज्वालापुरी उतल अघनाश काशी के पांच पण्डित भृगुदत्त अलीगढ़ पं० वासुदेव शास्त्री पं०केशवदत्त पं० लेखराज अलाहाबादी॥

इसके उत्तर में स्वामी जी ने निम्नलिखित उत्तर भेजा

शास्त्रार्थ करने में मुझे किसी समय भी इन्कार नहीं मैं सदैवोद्यत रहता हूं। परन्तु शास्त्रार्थ इस रीति से होना चाहिये कि उसका प्रबन्धकर्ता कोई राजपुरुष होना चाहिये इस शास्त्रार्थ में पण्डितों के सिवा अनपढ़ कोई न हो और शास्त्रार्थ का स्थान ऐसा हो जो न मेरा और न आपका गिना जावे। अब जहां यह सभा हुई हैं। जूना अखाड़े में आने से मुझे प्राणों का भय है यद्यपि मुझे इसमें शोक नहीं कि मेरा शरीर घात हो जावेगा परन्तु इस बात का बड़ा शोक है कि मैं जिस परोपकार के अर्थ से इस शरीर की रक्षा करता हूं वह रह न

जावे। इसलिये मैं वहां आना उचित नहीं समझता।

स्वामी जी ने यह भी कहला भेजा कि यदि स्वामी विशुद्धानन्द जी यह कह दें कि पुरुष मेरे मुकाबले में वेदों को समझाने की योग्यता रखते हैं तो मैं उनसे शास्त्रार्थ करूंगा। वरना मैं पं० विशुद्धानन्द जी को ही मध्यस्थ नियत करता हूं। चुनांचें विपक्षी पण्डित स्वामी जी के चिट्ठी लेकर स्वामी विशुद्धानन्द जी के पास गये। लाला जमीयत राय धारमन स्कूल रुड़की के अध्यापक उस समय वहीं थे जब वह पण्डित स्वामी विशुद्धानन्द जी के पास गये तो उस समय उक्त मास्टर जी कहते हैं कि विशुद्धानन्द जी श्रद्धाराम फिल्लोरिये और पं० चतुर्भुज को इस चिट्ठी के लेखक के गाली देने लग पड़े और कहने लगे कि यह लोग स्वामी दयानन्द के मुकाबले में एक अक्षर भी नहीं जानते। स्वामी विशुद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द को भी पत्र लिखा जिसमें यह लिखा था कि बहुत से अनपढ़ मूर्ख फसाद करने के लिये एकत्र हुये हैं आप उनके कथन पर किंचित ध्यान न दें। चुनाचें सायंकाल को पण्डित भीमसेन जी ने यह चिट्ठा सब लोगों को सुना दी कहते हैं उस समय १०००० के लगभग मनुष्यों की भीड़-भाड़ थी। मास्टर जमीयत राय का कथन है कि यहां स्वामी जी प्रातःकाल ही आवश्यक नित्य नैमित्तिक कर्म से अवकाश पर ७ बजे से पहले ही आसन पर बैठ जाते थे और ११ बजे से २ बजे तक पण्डितों साधुओं और सर्व साधारण मनुष्यों से धर्म विषय पर वार्तालाप करते रहते थे, फिर एक बजे से पांच बजे तक सभा होती थी तदन्तर ७ बजे से ९ बजे तक जो सामाजिक पण्डित व अन्य आर्य पुरुष आये हुये थे उनसे परस्पर धर्म चर्चा हुआ करती थी।

सार यह है कि स्वामी जी सारा दिन धर्मोपदेश में ही लगे रहते थे। क्या जाने काम की अधिकता से या जलवायु के अनुकूल न होने से उनको अतिसार लग गये। यहां तक कि १५ दिन तक निरन्तर अतिसार की व्याधि से स्वामी जी पीड़ित रहे इसलिये स्वामी जी लिखते हैं कि हमको भी १५ दिन से अतिसार लगे हैं। दिन भर में १० या १५ बार जाते हैं। हां, अब कुछ आराम है परन्तु निर्बलता बहुत है। वैशाख वदी १२ सं० १९३६ के पत्र में स्वामी जी ने लिखा था कि ४१० के लगभग दस्त आ चुके हैं। इतनी कड़ी व्याधि होने पर भी वह पुरुषसिंह अपने स्थान से इसलिये न हिला कि कहीं पौराणिक पण्डित यह प्रसिद्ध न कर दें कि स्वामी को छोड़कर भाग गया है। अपने प्रथम विज्ञापनानुसार बराबर पर्व दिन तक स्वामी जी वहीं ठहरे रहे। पर्व के दिन अन्तिम व्याख्यान दे अपने उपदेश की समाप्ति की और लोगों को यह शिक्षा दी कि अब बहुत शीघ्र अपने घरों को चले जाओ क्योंकि यहां महामारी फैलती जाती है और अपने जाने से एक दिन पहले समस्त आर्य समाजियों को वहां से भेज दिया। पण्डित श्रद्धाराम जी ने एक और लीला रची अर्थात् कुछ साधुओं को सिखला कर यह कहलाया कि हमने स्वामी दयानन्द जी से उपदेश सुन उनका मत स्वीकार कर लिया था परन्तु अब हमको अपनी भूल विदित हो गई। हमको फिर अपने सनातन धर्म में ले लिया जावे। चुनाचे पण्डित श्रद्धाराम जी उनसे प्रायश्चित करा कर बड़ी धूमधाम से उनको हरिद्वार की पौड़ियों पर ले गये और लोगों में इस बात का खूब चर्चा फैलाया। परन्तु अन्त में उन्हीं की मण्डली के एक पण्डित गोपाल शास्त्री ने यह सब भेद प्रकट कर दिया। देखो रिसाला विद्या प्रकाशक जून सन् १८७९ ई०।

एक दिन एक परमहंस आनन्द वन नामक संन्यासी कफनी पहिने हुये स्वामी जी के डेरे में आये स्वामी जी उनको आते देखकर खड़े हो गये और खेमे के द्वार तक जाके था अन्दर ले जाकर उनको आसन पर बैठाया। यह महाशय वेदान्ती थे दो घण्टे तक दोनों महाशय परस्पर संस्कृत में वार्तालाप करते रहे। स्वामी जी पुस्तक निकाल-निकाल कर उनको प्रमाण दिखलाते थे। दोनों ने भोजन वहीं पाया। अन्त में दो बजे के समय खड़े हो गये और उस वृद्ध परमहंस ने जिसकी आयु ८० वर्ष की थी अपने शिष्यों से कहा कि मैंने दयानन्द मत को स्वीकार कर लिया तुम भी ऐसा ही मानो।

इस मेले में मेरठ के कमिश्नर साहब सहारनपुर के कलेक्टर और जंगलात महकमे के कन्जरवेटर साहिब भी स्वामी जी से मिलने आये थे। स्वामी जी उस समय उपासना कर रहे थे। उक्त साहब प्रतीक्षा करते रहे और जब स्वामी जी अवकाश पाकर उठे तो उक्त साहबों से मिलकर बड़े प्रसन्न हुये और उक्त साहबों ने अपने आप पुलिस के पहरे का प्रबन्ध कर दिया।

जब मेले में विशूचिका फैलने लगी तो स्वामीजी को विदित हुआ कि पाखाना दबाया जाता है जिस पर उन्होंने कलेक्टर साहब से कहा पखाने के दबाने से विशूचिका अधिक फैलेगी आप इसको कहीं दूर फिकवाने का प्रबन्ध कीजिये। इसी प्रकार उन्होंने पाखाना भूमि में दबाने के विषय में फिर हाकिमों को लिखा। और उनकी शिक्षा से पाखाना भूमि में दबाना हो गया। स्वामी जी को पहले ही भय था कि इतनी बड़ी भीड़ में विशूचिका अवश्य फैलेगी सो उन्होंने एक पत्र में कर्नल अलकाट को ऐसा लिखा था। हरिद्वार में भी वह डाक्टरों से इस विषय में चर्चा करते रहे कि तुम्हारा प्रबन्ध ऐसा बुरा है कि इससे विशूचिका अवश्य फैलेगी। ११ अप्रेल को स्वामी जी वहां से देहरादून को चले गये। यद्यपि उनका विचार सीधा बम्बई जाने का था क्योंकि कर्नल अलकाट प्रभृति साहब बम्बई में पहुंच गये थे और वह स्वामी जी को पत्रों पर पत्र लिखते थे। परन्तु स्वामी जी ने बीमार होने के कारण सीधा बम्बई जाने का विचार छोड़ दिया और कर्नल साहब को इस बात की सूचना दे दी। स्वामी दयानन्द जी १४ अप्रेल को हरिद्वार के मेले से छुट्टी पाकर देहरादून पहुंच गये।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—सेवक शर्मा व्यवस्थापक
सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४-८५)

(गतांक से आगे)

श्री देवव्रत धर्मेन्दु एवं श्रीमती सावित्रीदेवी आर्य साहित्य प्रकाशन स्थिर निधि

दिल्ली निवासी स्व० प०देवव्रत जी धर्मेन्दु के दो हजार के दान से ११-२-१९६३ की अन्तरग की स्वीकृति से यह स्थिर निधि कायम हुई थी जिसके ब्याज से उनकी दयानन्द वचनामृत वैदिक सूक्ति सुधा और वेद सन्देश नामक पुस्तकों के प्रकाशन का प्रावधान किया गया था। अब यह राशि १२ हजार कर दी गई है।

गत वर्ष दयानन्द वचनामृत व वेद संदेश पुस्तकें छपाई गई। १०-११-७९ की अन्तरंग के निश्चयानुसार इस निधि का नाम देवव्रत धर्मेन्दु सावित्री देवी पुस्तक प्रचार निधि रखा गया।

वर्ष के अन्त में ८२०) रुपए ब्याज के जमा थे।

श्री जगतराम महाजन १०० दयानन्द नगर अमृतसर

यह निधि १९६५ मे श्री स्व० लाला जगत राम जी अमृतसर निवासी द्वारा प्रदत्त ४०००) के दान से स्थापित हुई और अन्तरंग ने इसकी २९-१२-१९६५ की बैठक में स्वीकृति प्रदान की। इस निधि के ब्याज से उड़ीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, केरल में आर्य युवक समाज द्वारा वहां की क्षेत्रीय भाषाओं में बारी-बारी से फ्री वितरण के लिए ट्रैक्टों के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। इस व्यवस्था के भग होने की अवस्था में ईसाई मत खण्डन विषयक साहित्य के प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकृत की गई।

इस वर्ष ब्याज के २००) रु० जमा हुए। वर्ष के अन्त मे १४००) रु० जमा हैं।

श्री लाला लब्भू राम (जालन्धर) स्मारक वैदिक साहित्य वितरण निधि

यह निधि लाला लब्भूराम जी ने ५ हजार की राशि से कायम की थी। इसके ब्याज से सत्यार्थ-प्रकाश एव अन्य वैदिक साहित्य देश-देशान्तर में फ्री वितरण किए जाने की व्यवस्था की गई है। विदेशी भाषाओं में प्रकाशित साहित्य के लिए भी इस निधि का ब्याज प्रयुक्त हो सकेगा।

देश में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ का भी आवश्यकतानुसार साहित्य वितरित हो सकेगा। यह सहायता योग्य व्यक्तियों को मुफ्त या आधे मूल्य पर दी जायेगी।

दानी महोदय के निधन के पश्चात् इसके क्रियान्वयन की सूचना उनके सुपुत्र श्री विश्वमित्र जी कपूर जालन्धर को दी जाया करेगी और वे यथा समय अपना प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे। इस प्रकार परंपरागत यह प्रथा चलती रहेगी। प्रचुर साहित्य नि:शुल्क देश-देशान्तर मे वितरित किया गया।

वर्ष के अन्त मे ब्याज के १३८०) रु० जमा हैं।

श्री मोहनलाल जी मोहित मोरिशस स्थिर निधि

यह निधि १३-१-१९६५ की अन्तरग के निश्चानुसार ३ हजार रुपयें के प्रारम्भिक दान से स्थापित हुई थी। सन् १९७५ मे यह राशि ५० हजार रुपये की गई।

इस निधि का ब्याज किसी आर्य विद्वान द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ के प्रकाशन में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मौरिशस के उन आर्य विद्यार्थियो को आवश्यकतानुसार सहायता दी जायेगी जो गुरुकुल व आर्य महाविद्यालय आदि में आर्य समाज की सेवार्थ उपदेश का प्रशिक्षण प्राप्त करते हों। वर्ष के अन्त मे २३,३८४)७० रु० निधि के ब्याज के जमा थे।

श्री स्व० बनवारी लाल पचेरी वाला (साहिब गंज बिहार) स्थिर निधि

यह निधि तीन हजार रुपये से कायम की गई थी। इसके ब्याज की अंग्रेजी साहित्य व सत्यार्थ प्रकाश के भारतीय भाषाओं के प्रकाशन व वितरण पर खर्च किए जाने की व्यवस्था की गई है।

उपयुक्त व्यक्तियो एवं संस्थाओं को साहित्य मुफ्त दिए जाने की भी एक शर्त निर्धारित् की गई थी और इसका निर्णय सार्वदेशिक सभा पर छोड़ा गया था। इस निधि की राशिमय ब्याज के सन् १९८६ में ५९२५) रु० बैंक से मिलेगी जो बौंड के रूप मे जमा है।

श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी १९ सिविक सेक्टर भिलाई (म० प्र०) ने ४० हजार रु० (चालीस हजार मात्र) दान देकर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती 'स्थिर निधि' स्थापित की थी जिसकी स्वीकृति १४-१०-१९७३ की अन्तरग बैठक ने दी। श्री स्वामी जी ने यह राशि ५० हजार कर दी है।

इस निधि के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश और आर्य्याभिविनय पुस्तक हिन्दी तथा देश विदेश की विविध भाषाओ में छपा करेगी। प्रत्येक प्रकाशन पर अच्छे स्थान पर इस निधि का उल्लेख करना होगा। गत वर्ष इस निधि के ब्याज के १७,२००) रु० जमा थे। वर्ष के अन्त मे ४ हजार रुपए जमा हुए। इस प्रकार २१,२००) रु० ब्याज के शेष जमा हैं।

श्रीमती कौशल्या देवी (अमृतसर) स्थिर निधि

श्रीमती कौशल्या देवी (१६ मजीठा रोड अमृतसर) ने (दस हजार रुपया मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की है। इसके ब्याज से वेदाध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तिया दी जाया करेंगी। २१-३-१९७६ को अंतरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। बाद मे इस निधि को बढ़ाकर इन्होंने १२०००) कर दिया। इस वर्ष ब्याज का छात्रवृत्ति के रूप में ९६०) व्यय हुआ।

स्व० राजवैद्य मूलचन्द जी आर्य (दिल्ली) स्थिर निधि

६५००) (छ: हजार पांच सौ रुपया मात्र) के दान से स्व० राजवैद्य मूलचन्द आर्य स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्ष गुरुकुल एटा (उ० प्र०) मे पढ़ने वाले छात्र को सहायता दी जाया करेगी। २७-३-७७ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इस वर्ष ब्याज के ५२०) जमा हुए। गत शेष ५४८)८० था। आर्ष गुरुकुल एटा को पाच सौ बीस रुपए दिये गए। शेष ५४८)८० रहा।

श्रीयुत माधोप्रसाद तथा श्रीमती विद्यावती स्थिर निधि

यह निधि श्री माधो प्रसाद आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ने दस हजार के दान से कायम की है। इसकी स्वीकृति .१६-११-१९७५ की अन्तरग बैठक ने दी। इस निधि का ब्याज वैदिक-धर्म के प्रचार एव समाज कल्याण पर खर्च होगा। बाद मे बढ़ाकर यह राशि १५ हजार रुपए कर दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होंने १५ हजार रुपए धरोहर रूप मे जमा कराया था जो बढ़ाकर ३६ हजार रुपया कर दिया गया, तथा यथा समय स्थिर निधि में परिवर्तित होगा। वर्ष के अन्त में १५००) ब्याज के शेष जमा थे।

स्व० लाला बाबूराम शाहदरा दिल्ली स्मारक स्थिर निधि

दिल्ली शाहदरा के प्रसिद्ध एव वयोवृद्ध आर्य स्व० लाला बाबूराम जी ने एक वसीयत के द्वारा जो दान किया था उसमें से इस सभा को लगभग ४५ हजार नकद १ मकान, १ प्लाट २ सौ वर्ग गज का प्राप्तव्य था। ४६०५१)५३ नकद प्राप्त हुआ तथा शाहदरा का मकान ४ हजार रुपए में बेच दिया गया। १९-३-६४ की अन्तरंग ने यह दान स्वीकृत किया था। इस दान से सभा शाहदरा में बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय चलाती रही है जो अब अनिवार्य कारणों से बंद है। (क्रमश:)

धर्मवीर हकीकतराय

—श्री लालचन्द्र आबद्धा—

१७वीं शताब्दी। आज से कोई अढ़ाई सौ वर्ष पूर्व जब शैतानियत इन्सानियत को निगलना चाहती थी, धर्म का सरे आम मुस्लिम मौलवियों द्वारा अपमान किया जा रहा था, अन्याय तथा अत्याचार की आंधी चल रही थी, उस समय मुहम्मद शाह रंगीले का राज्य था, जो सदैव ऐशो-इशरत में डूबा रहता था और राज्य को काजी व मौलवी (मुल्ला) चलाते थे। उस समय बलात् धर्म-परिवर्तन किया जाता था। कानून काजियों व मौलवियों का बनाया हुआ होता था, जो इस्लाम की दुहाई दे देकर अत्याचार किया करते थे। उस समय हिन्दुओं में भय छाया हुआ था और हिन्दू संस्कृति को पांवों तले रौंदा जा रहा था।

तभी पंजाब का एक चौदह वर्षीय बालक वीर हकीकत राय अत्याचार के विरुद्ध सीना तान कर खड़ा हो गया। धर्म की रक्षा के लिए उसने खुला विद्रोह कर दिया। वीर हकीकत राय अपनी अमर आत्मा को परतन्त्र बनाने वाले अत्याचार के विरुद्ध खड़ा हो गया। उसने ऐलान कर दिया था कि वह आत्मा की आजादी को किसी तरह भी नीलाम करने को तैयार नहीं है। उसे पता था कि आत्मा अमर है। अत्याचार के आगे सिर झुकाना पाप है। इन्सान केवल पैदा होकर मरता ही नहीं बल्कि मर कर जिन्दा होता है।

जालिमों ने उसे हर प्रकार का लोभ दिया। पिता और धर्म-पत्नी के प्यार की दुहाई दी। दौलत तथा ऊंची पदवी का लालच दिया और यहां तक भी कहा कि पंजाब का मुसलमान गवर्नर उसके साथ अपनी लड़की की शादी करने को तैयार है, लेकिन यह सब तभी किया जायगा अगर वह मुस्लिम धर्म ग्रहण कर ले, वरना उस का सिर काट दिया जाएगा।

वीर हकीकत राय ने कहा कि वह किसी भी शर्त पर अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं है। जब स्वयं वीर हकीकत राय की माता ने भी ममता के वशीभूत होकर उसे धर्मपरिवर्तित कर लेने को कहा तो वीर ने माता को उत्तर दिया, "मां जन्म बार-बार नहीं मिलता। आप मेरी भांति प्रसन्न हों कि आपका पुत्र धर्म के लिये बलिदान दे रहा है। परमात्मा पर विश्वास रखो, हकीकत मर नहीं सकता।"

बड़ी निर्दयता से उस वीर बालक हकीकत ने बसन्त के दिन जामे-शहादत पिया था और अपने धर्म देश और जाति के नाम को ऊंचा करके देश को नई जिन्दगी का सन्देश दिया था। उस वीर बालक के बलिदान ने सारी आर्य संस्कृति को ऊंचा कर दिया था।

पंजाब की पवित्र भूमि में १७११ में शहर स्यालकोट में श्री भागमल खत्री के घर इस तपस्वी बालक का जन्म हुआ था। माता-पिता ने अपने इकलौते लाड़ले को बड़े लाड़-चाव से पाला। बचपन में ही उसको धार्मिक शिक्षा दी जाने लगी। उसने थोड़े समय में ही संस्कृत तथा हिंदी सीख ली और धार्मिक पुस्तकें बड़े शौक से पढ़ने लगा।

उस समय राजभाषा फारसी थी, इसलिए हकीकत राय को एक मौलवी के स्कूल में दाखिल करवा दिया गया। थोड़े ही दिनों में वह दूसरे मुसलमान लड़कों पर पढ़ाई में मानीटर हो गया। मुसलमान लड़के हकीकत से जलने लगे और वे उसे जलील करने की साजिश करने लगे ताकि वह पाठशाला छोड़ दे।

एक दिन की बात है, जब मौलवी साहब नमाज पढ़ने चले गए तो मुसलमान लड़कों ने हकीकत से छेड़खानी की और भगवती देवी, जिसका बालक पुजारी था, को गाली भी दी। इस पर बालक हकीकत को क्रोध आया और उसने कहा कि, "अगर मैं यही शब्द बीबी फातिमा की शान में इस्तेमाल कर दूं तो क्या तुम्हें दुःख न होगा?" इस पर मुसलमान लड़कों ने हकीकत को पीटा तथा मौलवी साहब से भी शिकायत कर दी कि हकीकत ने बीबी फातिमा को गाली दी है। यह खबर शैतान लड़कों ने सारे शहर में बिजली की भांति फैला दी।

अन्त में वीर हकीकत को मुसलमान बादशाह ने बीबी फातिमा को गाली देने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। उस समय मौलवियों के परामर्श से कानून चलता था। जब यह मुकद्दमा हाकिम अली की अदालत में पेश हुआ तो काजियों के परामर्श से वीर हकीकत को रसूलजादी की शान में गुस्ताखी के अपराध में मौत का दण्ड दिया।

जब इसके संरक्षकों तथा माता-पिता ने रहम की अपील की तो लाहौर के न्यायाधीशों ने जो मौलवियों के परामर्श से न्याय का खून करते थे, फैसला कर दिया कि अगर हकीकत मुसलमान बनना स्वीकार कर ले तो उसका अपराध क्षमा किया जा सकता है।

लेकिन वह लड़का हड्डी और खून को लोथड़ा नहीं था बल्कि उसके दिल में अपने धर्म के लिए प्यार था और एक आग थी जिसके शोले उसकी आंखों से बाहर निकल रहे थे। मुसलमान गवर्नर मायूस था और वह काजियों द्वारा दिए गए दंड को क्षमा करने में असमर्थ था। कर्तव्य से प्रेरित होकर उसने जल्लाद को संकेत किया। वीर हकीकत ने अपने माता-पिता के चरण छुए। राम राम का जाप शुरू कर दिया और अपनी छोटी-सी पतली गर्दन जल्लाद की तलवार के नीचे रख दी तथा धर्म की रक्षा के लिए शहीद होकर वह सदा के लिए अमर हो गया।

शुद्धि समाचार

युवक तो युवक मुसलमान युवतियां भी स्वेच्छा से वैदिक धर्म के महत्व को और स्त्री जाति की महत्ता को समझते हुए मुस्लिम मत को छोड़ वैदिक धर्म ग्रहण कर रही हैं। आर्यसमाज मलाही पूर्वी चम्पारण के मन्त्री सूचित करते हैं कि बिहार की "तायरा खातून" ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म में हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री इन्द्र देव वर्मा विद्यावाचस्पति के द्वारा कराए विशेष यज्ञ में प्रवेश किया। उनका नाम तारा देवी रखा गया। दूसरी सूचना हिन्दुओं के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए इसी समाज की ओर से अति अधिक प्रयत्न करने पर नारकीय जीवन से मुक्ति पाने वाली लड़कियों को समाज में प्रतिष्ठा का स्थान दिलाने और सीमा कुमारी का वैदिक रीति से आर्य समाज के युवा कार्यकर्ता श्री गणेश चन्द्र चौधरी (मैथिल ब्राह्मण) से विवाह सम्पन्न करा कर अन्य युवकों को आह्वान किया गया कि अवसर आने पर इस कार्य में योग दें।

—सभा-मन्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पौरोहित्य शिविर

हरिद्वार, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में पौरोहित्य शिविर का आयोजन १२ फरवरी से ४ मार्च १९८९ तक भारत सरकार की सहायता से गुरुकुल की पावन भूमि में आयोजित किया गया है। इसमें संस्कारों की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं परिचय सुयोग्य विद्वानों द्वारा कराया जायगा।

(हिन्दुस्तान ११ फरवरी ८९ से)

आर्यसमाज की गतिविधियां

स्वतन्त्रता सेनानी का निधन

गाजियाबाद जनपद के वयोवृद्ध समाजसेवी,स्वतन्त्रता सेनानी, महाशय बनवारीलाल आर्य का ८२ वर्ष की आयु मे दि० ३-१-८६ को निधन हो गया है। वे आर्य जगत मे भीष्म पितामह के नाम से जाने जाते थे तथा आर्यसमाज, दयानन्द नगर के प्रधान थे। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के आजीवन सदस्य थे। महाशय जी ने सन् १९३२ में अंग्रेजो के विरुद्ध आन्दोलन मे जेलयात्रा की थी। भारत सरकार द्वारा उन्हे प्रशस्ति पत्र एव ताम्र पत्र प्रदान किया गया।

—शोक निवारण एव शान्ति यज्ञ बृहस्पतिवार दिनाक ९ १ ८६ को दोपहर २ बजे महाशय जी के निवास स्थान ३७, नई बस्ती गाजियाबाद पर प्रारम्भ हुआ जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री प० बालदिवाकर जी हस श्रीमती गायत्री देवी पील चौ० चरणसिंह,भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, श्रीमती वेदवती पुत्री चौ० चरणसिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। यज्ञ के उपरान्त अनेक लोगो ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की जिनमे श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री बालदिवाकर जी हस श्री पुरुषोत्तम चन्द्रा, प्रो० रत्नसिंह,आचार्य सोमव्रत जी, श्री कर्मचन्द्र जी, श्री जनार्दन जी भिक्षु श्री ओमप्रकाश जी आर्य सेवक, डा० प्रेमदत्त मलिक, प० छेदालाल जी श्री सन्तोष कुमार गुप्ता एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री हरप्रसाद जी शास्त्री इत्यादि मुख्य वक्ता थे।

इस अवसर पर महाशय जी की जीवनी सकलन एव प्रकाशन का सकल्प लिया गया।

—अतुल कुमार गुप्ता
३७, नई बस्ती, गाजियाबाद

काव्य संकलन

कुछ सोच कभी तो तू ओ परमपिता क बन्दे।
निमल करले मन को किये काम सभी तूने गन्दे॥
अहकार अज्ञान हृदय मे रहा गुरू से तरे।
चुपचाप पडा रहा तू दुष्कर्म तुझे रहे घेर॥
अब छोड दे दुष्कर्मों को ओ परमपिता के बन्दे। निमल
काम क्रोध और लोभ म अपना जीवन बिता दिया॥
दुःख में याद किया प्रभु को सुख म तूने भुला दिया॥
इसीलिए तो कहता हूँ ओ परमपिता क बन्दे। निमल
जिनको हम कहते अपना वे सभी पराये है जग म।
जिसको तू भूला बन्दे वो रमा तेरे रग रग म॥
करता रह याद उसे, ओ परमपिता के बन्दे। निमल
सत्सग में आया कर तू द्वार खुले तेरे मन का।
नित ध्यान लगाया कर, परमपिता भगवन का॥
समता ना कुछ मोल, ओ परमपिता के बन्दे। निमल

—तरुण कुमार शास्त्री, आयुर्वेद रत्न
बेलौन, बुलन्दशहर (उ० प्र०)

आर्य समाज खामगाव (महाराष्ट्र) ४४४ ३०३

आर्य वीर दल शाखा सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्य वीर दल के एक शिक्षक श्री अनिल कुमार आर्य इन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ नागपुर के माध्यम से खामगाव आर्य समाज के तत्वावधान मे आर्य वीर दल की शाखा दिनाक ६ जनवरी ८६ को सम्पन्न की। खामगाव नगर मे प्रथमत इस प्रकार का कार्य हुआ है। ४० आर्य वीरो ने इसमे भाग लिया किन्तु १८ आर्य वीरो ने सफलतापूर्वक तथा नियमित रूप से प्रशिक्षण प्राप्त किया दिनाक २६ जनवरी ८६ को गणतन्त्र दिवस के सन्ध्याबेला से इस प्रशिक्षण शिविर का समापन श्री बाहेकर जी वशिष्ठ मन्त्री तथा स्थानीय हिन्दू महासभा के सक्रीय कार्यकर्ता श्री लक्ष्मणलाल खत्री की उपस्थिति मे हुआ। मन्त्री जी ने इस प्रकार के शारीरिक, बौद्धिक तथा आत्मिक विकास के कार्य पर प्रकाश डेकर मार्गदर्शन किया और चूकि यह शाखा स्थानीय समाज मन्दिर से २ ३ कि० मी० दूरी पर है, सभी आर्य वीरो से साप्ताहिक अधिवेशन मे सम्मिलित होने का आवाहन किया। श्री खत्री जी ने वर्तमान स्थिति तथा ईसाई और इस्लाम के आक्रमण पर प्रकाश डाल कर हिन्दू जाति को सजग रहकर प्रतिकार करने पर बल दिया। सभी आर्य वीरो को प्रमाण पत्र तथा आर्य समाज का साहित्य भेट किया गया। इस आयोजन म श्री नेमीचन्द जी इन्होने जैन होते हुए भी हवन करके उत्साह से सहयोग प्रदान किया वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीनो वर्ग बालको ने अपने अपने घटको के साथ नियमित रूप से आर्य समाज मे आने का प्रण दिया है। आशा है कार्य को गति मिलगी।

मन्त्री—आर्य समाज खामगाव

वेदों मे योग विद्या नामक ग्रन्थ को 'दयानन्द पुरस्कार'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला दयानन्द पुरस्कार इस वर्ष वेदो मे योग विद्या ग्रन्थ के रचयिता आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (डा० योगेन्द्र पुरुषार्थी) को दिया गया है उन्हे ११०० रुपये की राशि से सम्मानित किया गया। इसी विषय पर स्वामी जी ने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी। यह ग्रन्थ शोध प्रबन्ध का सशोधित प्रकाशन है। दैनिक हिन्दुस्तान तथा आर्य जगत् आदि साहित्यिक पत्रिकाओ ने इसकी प्रशसा म विशेष समीक्षा की है। इस विषय का यह प्रथम प्रयास है योग में जिज्ञासा रखने वाले सज्जनो के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है। उक्त ग्रन्थ यौगिक शोध सस्थान योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार म प्रकाशित है। ऐसे विद्वान को सम्मानित कर सार्वदेशिक सभा क अधिकारियो ने सराहनीय कार्य किया है।

—सुमेधानन्द सरस्वती प्रधान
आर्य समाज श्री गगानगर (राजस्थान)

झाझर, बुलन्दशहर मे आर्य समाज की स्थापना

महाशय मंगामीराम आर्य का बारहवी पुण्य तिथि पर सत्य सनातन वैदिक धर्म क प्रवक्ता युवा समाज सेवी प० उदय जी श्रेष्ठ धर्माचार्य की कर्मठता तथा प्रेरणा मे विधिवत् आर्य समाज की स्थापना हुई। जनता न प० श्रेष्ठजी को ही स्थानीय आर्य समाज का सस्थापक व सरक्षक महत्त्व घोषित किया। इस अवसर पर देवयज्ञ ध्वजारोहण उदघाटन समारोह तथा प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया।

—रामसिंह प्रेमी मन्त्री
आर्य समाज झाझर

पृष्ठ ९ का शेष)

यह तो वे ही जानें, हा रामायण और गीता का अवलम्बन लेकर मानो वे मार्ग पर स्थिर हो रहे, परन्तु हम तो यहा धर्म ग्रन्थ वेद के शब्दो पर विचार कर रहे हैं—

हे प्रभु! जिनसे हम द्वेष करते है अथवा जो हम से द्वेष करते हैं उन्हे आपकी दाढ़ मे डालते हैं अर्थात् जिनसे हमारा मतभेद है उन्हे आपके न्याय पर छोड़ते हैं।'

(क्रमशः)

आर्यसमाज के सम्पन्न वार्षिक उत्सव

आर्य समाजो के सम्पन्न होने वाले उत्सवों का जिसमे गायत्री यज्ञों का, वाद-विवाद, भाषण-प्रतियोगिता, चतुर्वेद पारायण यज्ञ, शुद्धिसंगर, विशेष-प्रचार, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, दहेज विरोधी सम्मेलन इत्यादि अति उत्साह पूर्वक मनाए गये। जिनके नाम नीचे दिए गए हैं।

—आर्यसमाज रजौली नवादा बिहार, महुरामऊ, उन्नाव, परली बैद्यनाथ महाराष्ट्र, नागपुर, लल्लापुर, वाराणसी, जोधपुर, मीर्जापुर, सत्तम नगर, मूल रोड, चन्द्रपुर।

—आर्य वीर दल अकोला महाराष्ट्र में एक सप्ताह से चलने वाले शिविर का दीक्षान्त समारोह बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें युवकों ने जहां शारीरिक प्रदर्शन दिखाए वहां वैदिक शास्त्रों पर अपने विचारों को सुनाकर उपस्थित जन समूह को अति प्रभावित किया। इस शिविर में स्थायी रूप से ३५ युवकों ने भाग लिया।

—आर्य वीर दल राजस्थान के एक सौ दस आर्य वीरों ने चूरु, झुंझनू, गुढान, मण्डावा आदि क्षेत्रों में पदयात्रा कर आर्य समाज के सन्देश को गांव-२ तक पहुंचाया। उनके गीत-भाषणों तथा वाद-विवाद, कार्यक्रम को देख कर स्थानीय जनता ने भूरी-२ प्रशंसा की।

महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद, द्वारा सचालित वैदिक प्रचार मण्डल ने १ दिसम्बर से ३१ जनवरी तक वैदिक प्रचार मण्डल ने अलियारपुर, कृष्णपुर, असगरपुर, परमनगर गगलऊ, रामनगर, गुशरापुर नगला, साक्तिपुर, अमलैया सुतहणी, हजियापुर कुइयासन्त, कुइया खेडा, बुहियापुर, मीरपुर, न वारग, न दुर्गा, सोना, जानकीपुर, भारतनगर, नहरोसा, सिरमौरा, न हीरासिंह, मञ्झाना, नवाबगज न पजाबा, (फरुखाबाद, एव बखौरा, हरदोई आदि अनेक स्थानो पर वैदिक धर्म प्रचार किया गया।

मन्त्री—धर्मपाल शास्त्री

आर्य समाज न्यू मोतीनगर का वार्षिकोत्सव दिनाक २१-२-८६ से दिनाक २३-२-८६ तक मनाया जायेगा।

प्रधान—तीर्थराम आर्य

आर्य समाज कुबेरपुर
२२ फरवरी से २४ फरवरी तक

शुद्धि समाचार

जो लगभग पांच छै साल पूर्व किन्ही कारणो से ईसाई बन गये थे, डा० आनन्द सुमन के म० प्र० प्रवास के अन्तर्गत उनके विचारो से प्रभावित होकर पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित हो गये। उनकी पत्नि एवं तीन बच्चों ने भी वैदिक धर्म की दीक्षा ली जो सभी शिक्षित एवं सम्पन्न परिवार से सम्बन्धित है।

गोपाल के स्वागत मे १ फरवरी ८६ को यह कार्यक्रम आर्य समाज एक अन्य हिन्दू सगठन के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

मन्त्री आर्य समाज आगर (मालवा)

नया प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द)	८)
२—माता (भगवती जागरण) (श्री खण्डानन्द)	१०) रु०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

परिवार में सभी नीरोग हों

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्, स्ववेशो अनमीवो भवा नः।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

ऋग्० ७-५४-१, तैत्ति० सं० ३-४-१०-१ ॥

हिन्दी अर्थ—हे गृहपति यज्ञिय अग्नि ! हमें जानिए। हमारे लिए सरलता से प्रवेश के योग्य और नीरोगता देने वाले होओ। हम जिस इच्छा से तुम्हारे पास आते हैं, वह हमें दीजिए। हमारे मनुष्यों (परिवार के सदस्यों) और पशुओं के लिए कल्याणकारी होओ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क ११] फाल्गुन कृ० ६ सं० २०४२ रविवार २ मार्च १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करो

मुस्लिम नेताओं का प्रतिनिधि मंडल प्रधानमन्त्री से मिला

दिल्ली २३ फरवरी १९८६

मुस्लिम नेताओं के प्रतिनिधि मण्डल ने दफा १२५ मे संशोधन के लिए सरकार की कोशिशों पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से सख्त एतराज किया है और अपील की कि सरकार इस बात की यकीनी बनाए कि विधान की रूह से महिलाओं को जो हकूक हासिल हैं वह बरकरार रहें और मुस्लिम औरतों को अपने खाविन्दों से गुजारा भत्ता प्राप्त करने का अधिकार बना रहे।

इस सम्बन्ध में प्रतिनिधि मण्डल में शामिल दार्शनिक, प्रोफेसर वकील तथा शिक्षा विशेषज्ञ तथा प्रमुख मुस्लिम नेता सर्वश्री ख्वाजा अहमद अब्बास, सालिम अली, अभिनेत्री शबाना आजमी, दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर श्री रजा, मुमताज इत्यादि नेताओं की यह मांग मुस्लिम महिला हकूक तहत कमेटी के सदस्यों ने प्रधानमन्त्री जी को पेश की और इसी सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री के सचिवालय को मैमोरैन्डम दिया जिसमे कहा गया कि, मारको, मिस्र, लीबिया और तुर्की में महिलाओं को इस तरह के हकूक हासिल हैं आगे कहा गया कि यह बिल आईन की दफा १४ की खिलाफ वर्जी है जिसमें कानून के मुताबिक हर शख्स को बराबर के अधिकारों की गारन्टी दी गयी है।

अकाली सरकार की बेबसी

यह रहे सुरक्षा प्रबन्ध

२४ फरवरी १९८६

पी०पी०एस० गिल द्वारा तरन-तारन २४ फरवरी। पंजाब में सुरक्षा प्रबन्ध बहुत कड़े होने की बात अक्सर कही जाती है लेकिन पुलिस वाले अपने हथियारों को कैसे महफूज रखते हैं, इसकी एक मिसाल रेलवे पुलिस की वह चौकी है जहां से आतंकवादी १६ राइफलें और ४४० कारतूस लूटकर ले गये हैं।

तरनतारन रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म के एक कोने में स्थित यह चौकी एक कमरे की है। रेलवे पुलिस का दफ्तर भी वही कमरा है, रिपोर्टिंग रूम भी। इसमें एक मेज, एक कुर्सी और एक लम्बे बैन्च के अलावा एक बड़ा सन्दूक पड़ा है। जिसे पुलिस की भाषा में कोट यानि असलहगार कहते हैं। इसी में राइफलें और कारतूस पड़े थे। रेलवे पुलिस के ६ कर्मचारी जो वहां तैनात थे, आतंकवादियों के धावे के समय मौजूद नहीं थे। वहां तैनात होम गार्डस में से ११ कर्मि ड्यूटी पर नहीं आये थे।

इन्हीं १६ सुरक्षा कर्मियों की राईफलें कोट में पड़ी थी और इनकी "रक्षा" के लिए जो चार होम गार्डस चौकी में मौजूद थे, उनके पास हथियार नहीं थे।

डी० आई० जी० पी०सी० डोगरा ने हथियारों की रक्षा के इस प्रबन्ध पर बहुत नाराजगी प्रकट की है और कहा है कि होम गार्डस को राईफलें न देने का आदेश जारी करेंगे।

(२५-२-८६ दैनिक ट्रिब्यून)

मधोक लखनऊ में गिरफ्तार

लखनऊ, २३ फरवरी। भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बलराज मधोक को एक पत्रकार वार्ता के बाद गिरफ्तार कर लिया गया।

लखनऊ के जिलाधिकारी आर-एन त्रिवेदी ने कल श्री मधोक के २४ फरवरी तक लखनऊ आने पर रोक लगा दी थी। यह पाबन्दी बुधवार को यहां मुसलमानों के प्रस्तावित प्रदर्शन से साम्प्रदायिक तनाव पनपने के कारण लगाई गई थी। श्री मधोक यहा कई सभाओं में बोलने वाले थे और जिला प्रशासन को अन्देशा था कि उनके भाषणो से साम्प्रदायिक भावनाएं भड़केंगी।

श्री मधोक ने अपनी पत्रकार-वार्ता में मुस्लिम फिरकापरस्तों की जमकर आलोचना की और सरकार से माग की कि इन तत्वों पर सख्त कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि फिरकापरस्तों की हिन्दू-विरोधी कार्रवाइयां बर्दास्त नहीं की जायेगी।

उधर फैजाबाद के पुलिस उपमहानिरीक्षक ने प्रदेश सरकार को सूचित किया है कि विश्व हिन्दू परिषद् राम-जानकी रथों की यात्राएं स्थगित करने के लिये राजी हो गई है। छह में से दो राम-जानकी रथ पहले ही अयोध्या लौट गये हैं। बाकी चार रथ अभी जहां हैं, वहां खड़े कर दिये जायेंगे, क्योंकि उनकी शोभायात्रा से साम्प्रदायिक तनाव फैल रहा है और कुछ जगह झगड़े हुए हैं।

इस बीच बुधवार को यहां होने वाले मुसलमानों के प्रदर्शन से निपटने के लिए जिला प्रशासन मुस्तैद हो रहा है। बाबरी मस्जिद सेंट्रल एक्शन कमेटी की अपील पर प्रदेश भर के मुसलमान, राम जन्मभूमि का ताला खोलने के विरोध में यहां जुटने वाले हैं। बाहर के मुसलमानों को घुसने से रोकने के लिये लखनऊ को तकरीबन सील किया जा रहा है। शहर के भीतर और बाहर बड़ी तादाद में पुलिस तैनात हो रही है और गड़बड़ी कर करने वालों की धरपकड़ हो रही है।

सम्पादक—ओम्प्रकाश त्यागी प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नि० ८

(प्रैस ऐण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली १
सम्पादक	सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी
प्रबन्ध सम्पादक	सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं, भागीदार या हिस्सेदार हैं सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (पत्र की स्वामिनी है)

मैं सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान एवं विश्वास है सही है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रकाशक व मुद्रक

आध्यात्मिक सुधा

जम्भे दध्मः

(आपके न्याय पर)

(गतांक से आगे)

सहिष्णुता का दिव्य गुण आज हमारे समाज में से मानो विलुप्त हो गया है। धार्मिक असहिष्णुता तो अपनी चरम सीमापर विद्यमान है। किंचित मतभेद होते ही हम आपे से बाहर हो जाते हैं। प्रतिपक्षी को तुरन्त अपने मार्ग से हटाना चाहते हैं। यदि वह अपने पक्ष से विचलित नहीं होता तो हम शारीरिक और सामाजिक बल का सहारा लेते हैं। सभी प्रकार की मर्यादाओं का त्याग करके उसे मिटाने में ही अपना गौरव समझते हैं। आज घर में शान्ति नही, मार्ग में सुरक्षा नहीं। हमने चारों ओर अपने शत्रु ही शत्रु निर्मित कर लिये हैं। स्वार्थ ने भाई-२, स्वामी-सेवक, व्यापारी-ग्राहक, राजा-प्रजा पिता-पुत्र सभी को मतान्ध बना डाला है। इसका कारण यही है कि हमने वेद मार्ग का परित्याग कर दिया है। जिस दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्राचीन काल में लोग सतत प्रयत्नशील रहते थे, नाना प्रकार से संयोग करते थे, आज उसकी अवहेलना कर दी गई है।

अंधकार में मार्ग खोजने का प्रयत्न किया जा रहा है परन्तु यह तथ्य गले ही नहीं उतरता है कि जब मूर्ख पिता भी अपनी सन्तान को उपदेश देता तो उस सृष्टि नियन्ता ने भी अपनी इस मानव संतति को सृष्टि के आरम्भ में उपदेश क्यों न दिया होगा। अंधेरे में भटकने वालो! उसका वही उपदेश वेद मन्त्रों के रूप में सौभाग्य से अब भी सुरक्षित है। प्रकृति के नियमों से वह सर्वेव स्पष्ट भी होता रहता है। अपना और अन्यों का मार्ग प्रशस्त करने की आवश्यकता है। समय-समय पर महान पुरुषों ने जो उपदेश दिये हैं उन्हें वेदानुकूल हों तो ग्राह्य अन्यथा त्याज्य समझना चाहिए।

मन्त्र में कहा गया है कि जिस ओर उपासक का मुख है, जिस ओर सूर्य उदित होता है वह पूर्व दिशा है। भाव यह है कि उपासक प्रकाश की ओर अपना मुख रखने का प्रयत्न करे। प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान-जिज्ञासु यदि ज्ञान-विमुख हो जायेगा तो उसका देर सबेर पतन निश्चित है। और जो ज्ञानाभिमुख है तो कालान्तर मे सत्य को प्राप्त कर ही लेगा। सूर्य से दूर जाने वाला एक दिन अंधकार मे विलीन हो जाएगा।

हमारे सौरमण्डल की उस अग्नि का प्रचण्डतम प्रत्यक्ष अनुभूत प्रेरक यह सूर्य ही है। यही समस्त चराचर का प्राणदाता है। सौर-शक्ति ही परिवर्तित रूप इस सौर परिवार के पृथ्वी आदि पर निवास करने वाले जीवधारियों का प्राण है। इस शक्ति पुञ्ज के लुप्त होने के भयावह परिणाम की तो हम कल्पना क्या करें? जब यह शीतकाल में झुक जाता है, ग्रीष्म ऋतु में लम्बवत होने लगता है तो भूमण्डल पर इसका प्रभाव देखते ही बनता है, लोग शीत से कांपने लगते हैं अथवा ताप में झुलसते प्रतीत होते हैं। आज चिकित्सा शास्त्री अथवा सौर-ऊर्जा विशारद इस से और भी उपयोग लेने की बातें सोचने लगे हैं। परन्तु उस परमपिता ने तो इस तथ्य को मनुष्य मात्र के लिए वेदों में पूर्वकाल में ही बतला दिया था। संध्या के छः मन्त्रों में उसे अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, विष्णु और बृहस्पति आदि के नामों से सम्बोधित किया गया है।

परन्तु अधिकतर मनुष्य तो वेद से अनभिज्ञ होने से इस बात को नहीं समझते। वे आगे-पीछे, दांये-बाये, ऊपर-नीचे उस अधिपति को नही देखते। वे अज्ञानवश अपने को ही सर्वेसर्वा मानकर उलट-पलट करने वाला समझा करते हैं और ईश्वर उपासकों से वैर करने लगते हैं अथवा यों कहो कि आस्तिकों से वैर भाव करने लगते हैं।

संसार में ऐसे व्यक्ति भी देखे गये हैं कि जो मन्त्र का भाव न समझकर ऐसे नास्तिकों को अपनी तलवार के घाट उतारना आरम्भ करते हैं। धर्म के नाम से इस प्रकार के युद्ध शताब्दियों तक चलते रहे, परन्तु वे तथाकथित धार्मिक लोग भी सत्य मार्ग से भटके हुए ही थे। उन्होंने यह नहीं सोचा कि सामान्य प्रशासक भी अपराधियों के लिए कोई दण्डसहिता बनाता है तो वह भी उसके कार्यान्वित का अधिकार आतंकित व्यक्ति पर नही छोड़ता। वरन् उसके लिए विधिवत् एक न्याय पालिका की व्यवस्था करता है। न्यायाधीश की नियुक्ति करता है। जहां आतंकित और आततायी व्यक्ति अपने पक्ष को प्रस्तुत करता है, न्यायाधीश दोनों पक्षों को सुनकर दण्ड निर्धारित करता है। जब ऐसा लोक में मान्य है तो यही व्यवस्था ईश्वरीय नियमों में क्यों मान्य नहीं होनी चाहिए।

हे ससारी लोगो! ध्यान से ईश्वरीय आदेशों को सुनो, उन पर मनन करो और तदनुकूल आचरण करो - जो कोई तुम से द्वेष करता है उसे ईश्वरीय न्याय पर छोड दो वह जगन्नियन्ता, घट-घटवासी सब कुछ जानता है। सर्वज्ञ होने के नाते वह जानता है कि किसने किसके साथ क्या अनुचित किया है और उसे क्या दण्ड देना चाहिए?

हा, ईश्वरीय दण्ड परिमार्जक कोटि का है। माता के दण्ड से उसका कुछ-२ अनुमान लगाया जा सकता है। जैसे माता अपने पुत्र को दण्ड देती है परन्तु उसके अनहित के लिए नहीं। और न माता इस प्रकार दण्ड देने लिए किसी अन्य को अधिकृत करती है, पुत्र को स्वयं जितना चाहती है दण्ड देती है। किसे दण्ड का सभी के सम्मुख ढिंढोरा भी नहीं पीटती कि अमुक अपराध में इसे यह दण्ड दे रही हूँ। इसी प्रकार हम नहीं जानते कि जो दण्ड हमें मिल रहा है वह किस अपराध का दण्ड है इस जन्म का भी हो सकता है पिछले जन्म का भी। हम लोग तो यूं ही अनुमान लगाया करते हैं।

आज समाज में व्याप्त अविश्वास को दूर करने का उपरोक्त वेद वाक्य से अधिक सक्षम उपाय और कोई है ही नहीं कि उसे भगवान को अपने सब ओर समझें। वही प्रत्येक दिशा से हमारी रक्षा करती हुआ हमें स्पष्ट दिखलाई दे रहा है। फिर पर भी कोई हमें न समझें,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

[illegible]

भारत की शिक्षा-नीति दोष पूर्ण है ?

संसार भर में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां की राष्ट्र-भाषा 'हिन्दी भाषा' घोषित हो गई है परन्तु भारत सरकार के किसी भी विभाग कार्य, अधिकारी तथा संसद में इसका कोई स्थान नहीं है, परन्तु अंग्रेजी ही प्रचलित है। हां, जनता की मांग पर या पत्रों के उत्तर हिन्दी में चले जाते हैं, परन्तु इनका जाना भी बड़ी देरी से होता है। संसद में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान के सदस्य भी हिन्दी जानते हुए भी अंग्रेजी में बोलते हैं। उन से पूछने पर ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी में बोलने पर मन्त्रियों पर प्रभाव अच्छा पड़ता है, और समाचार पत्र बड़ी सरलता से उनकी बातों को पकड़ते हैं।

आश्चर्य की बात है कि श्री नेहरू जी की बहिन श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित जी रूस की राजदूत बनी, और वह अपना प्रमाण-पत्र लेकर वहां के अध्यक्ष स्व० श्री स्टैलिन के पास गई, परन्तु उन्होंने स्पष्ट शब्दों मे कहा कि प्रमाण-पत्र देश की राष्ट्र-भाषा में है, और ऐसा न हो तो रूस की राष्ट्र भाषा में है। श्रीमती पंडित भारत आई और हिन्दी में स्मरण-पत्र बनवाया गया, और वहां स्वीकृत हुआ। चीन, जापान, रूस के अधिकांश देशों में भी यही नीति है, और वह भारत के लोगों को कोसते हैं कि वह अपनी राष्ट्र भाषा में क्यों नहीं बोलते।

दूसरे राष्ट्रों के लोग भारत में आते हैं, परन्तु वे सब अपनी राष्ट्र-भाषा में बोलते हैं परन्तु भारत सरकार के लोग अंग्रेजी की चीख-सदिर करते रहते हैं। संसारका नियन्त्रण करने वाली यू एन० ओ० अपने लोग अंग्रेजी में बोलते हैं। दूसरे देशों के लोग भारत की दयनीय अवस्था पर हंसते हैं। उनके हंसने का मुख्य कारण यही होता है कि भारत सरकार ने आजादी तो लेली है, परन्तु आजादी की झलक इनकी राष्ट्र-भाषा में नहीं आई। ऐसा लगता है कि भारत आज भी विदेशी है।

भारत के स्कूल इस बात को जानते हैं कि भारत की राष्ट्र भाषा अंग्रेजी है और रहेगी, अंग्रेजी जानने वाला व्यक्ति सरकारी नौकरी पाता है, परन्तु हिन्दी जानने वाले चक्कर खाते फिरते हैं, दुर्भाग्यवश बड़े-२ व्यक्तियों तथा परिवारों के बच्चे अंग्रेजी पढ़ रहे हैं, जबकि छोटे लोगों के बच्चे अपनी भाषा में पढ़ते हैं, इसका परिणाम यही है बड़े लोगों तथा परिवारों के बच्चे सरकारी नौकरी में होते हैं. और छोटे लोगों के बच्चे कार्यालयों में नोकरी करते हैं।

भारत की शिक्षा नीति के दोष का सबसे पहिला कारण तो यही है कि जिन लोगों के हाथों में शासन आया उनकी शिक्षा इंग्लैण्ड आदि देशों में हुई है। इसलिये उनके हृदय की इच्छा अंग्रेजी चाहती है, दूसरा कारण तामिलनाडु जैसी सरकार है, जो हिन्दी को पसन्द ही नहीं कर रही है। सरकार के अधिकारी बार-२ तामिलनाडु को कोसते हैं कि उसकी मर्जी के बिना हिन्दी भाषा आयेगी। वह रेलों के बोर्डों पर भी हिन्दी पसन्द नहीं कर रहे हैं। इन दो कारणों से हिन्दी भाषा का आगमन संकाप्त हो गया है।

भारत की शिक्षा-नीति का कुपरिणाम यह हुआ है कि समूचे भारत में यदि कहीं लोग जमा हों तो कोई व्यक्ति अपनी बात [illegible] में कह सकता है देश की राष्ट्र-भाषा नहीं है। अंग्रेजी भी भारत में अब तक के दो प्रतिशत जनता जानती है। इस प्रकार समूचा देश विघटित है। बाहर की शक्तियां इसी विघटन को बढ़ा रही हैं। सरकार रोती है, परन्तु वह बाहर के लोगों तथा सरकारों गाली देती है, परन्तु अपनी नीति को नहीं देख पाती है। आज जो नीति की दृष्टि से ठीक है उनकी जनता को बाहर के देश कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं, और जिसकी नीति खराब है वह बार-२ रोते रहते हैं जैसा भारत अब कर रहा है।

सरकार से लोग जानना चाहते हैं कि जब हिन्दी-भाषा ही राष्ट्र-भाषा है। यह शिक्षा-संस्थाओं में अनिवार्य क्यों नहीं ? कौन-सा कानून तथा शक्ति भारत सरकार को ऐसा करने से रोक रही है। यदि सरकार उन शक्तियों से भयभीत है तो फिर ईमानदारी के साथ सरकार घोषणा करे कि 'हिन्दी-भाषा' दिखावे मात्र को है, परन्तु राष्ट्र-भाषा अंग्रेजी ही है। सरकार को ऐसा करना चाहिए, कारण यह है कि फिर देश के विद्यार्थी उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम बनायेंगे, वर्तमान समय विद्यार्थियों का समय व धन दोनों ही नष्ट हो रहे हैं, और उनका भविष्य डामाडोल हो रहा है।

भारत के स्कूलों को देखकर कौन ऐसा व्यक्ति है जो कह सकेगा कि भारत की राष्ट्र भाषा क्या है ? सरकारी कार्यालयों को देखकर कोई क्या कहेगा ? सभी घोषणा यही होगी कि 'अंग्रेजी' भारत की राष्ट्र-भाषा है। यदि ऐसा है तो समूचे देश में अंग्रेजी लागू की जाय। ऐसा होने पर देश का क्या बनेगा वह सरकार के अधिकारी जानें, परन्तु देश का काम कैसे चलेगा। वर्तमान समय दोगला समय है। राष्ट्र-भाषा की दृष्टि से इसे क्या कहा जाय। कहने को राष्ट्र-भाषा हिन्दी है, परन्तु अंग्रेजी ही राष्ट्र-भाषा है।

English Translation

1. Bankim, Tilak Dayanand, by Sri Auroviado. Rs- 2-50
2. An Introduction to the Vedas by Ghasi Ram. Rs- 30.00

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
Daynnanda Bhawan, Ramlila Ground
New Delhi-2

सरकार इस बात को समझ ले कि हिन्दी राष्ट्र-भाषा से देश का भविष्य उज्ज्वल होगा, और आर्य जाति अपनी चरम सीमा को पहुंचेगी, परन्तु अंग्रेजी कुछ व्यक्तियों को ऊंचा चढ़ा देगी, परन्तु देश नीचे चला जायेगा, सरकार उसे आज बचा सकती है, परन्तु इस के लिये साहस चाहिये।

स्व० राज गोपालाचार्य ने कहा था कि संस्कृत भाषा को ही राष्ट्र-भाषा बना दें, यदि वैसा होता तो भी कुछ ठीक था, परन्तु अब तो भारत में विदेशी खिचड़ी पक रही है। कुछ लोग खुश हैं, और उनके प्रभाव से कुछ परिवार भी अपने सभी कार्यों में अंग्रेजी लाते हैं, परन्तु एक स्वतन्त्र देश का नागरिक इन्हें देख कर हंसता है। भारत के लोगों के प्रति संसार में प्रतिष्ठा है, परन्तु सरकार को उसका ध्यान करना चाहिए।

यदि सरकार देश-भक्त है, और स्वतन्त्र राष्ट्र की भावना इनमें है तो फिर हिम्मत के साथ इन्हें कहना चाहिये कि भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी है, और रहेगी। इसकी रक्षा, इसके प्रचार तथा प्रसार में सरकार को कठिनाइयां आवेंगी, सरकार डटकर खड़ी हो जाय। जब वह अंग्रेजों को हिम्मत से भगा सकती है, तो फिर अंग्रेजी यहां कैसे रहेगी। हां, अंग्रेजी विदेशी भाषा रहेगी। अंग्रेजी, रशियन, जर्मन आदि की भाषायें रहेंगी। विद्यार्थी उन्हें पढ़ें, परन्तु उनके लिये देश को गुमराह करने की आवश्यकता नहीं है।

देश का कल्याण अपनी राष्ट्र-भाषा, अपनी संस्कृति, अपना साहित्य तथा अपना इतिहास ही होगा। अन्य देशों के इतिहासों को हम पढ़ेंगे, परन्तु उन्हें अपनी नीति का रखते हुये पढ़ेंगे। इसी नीति को सरकार स्वीकार करें, यह उससे मेरी प्रार्थना है।

सामयिक चर्चा—

वेद व्यवहार लोक संस्कृति में स्पष्ट

नई दिल्ली, २०-फरवरी। लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित शारदीमज्ञान महोत्सव भाषण माला में भाषण करते हुए जबलपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० प्रभुदयाल अग्निहोत्री ने आज कहा कि वेदों का विषय बहुत व्यापक है। इन प्राचीन ग्रन्थों में जिन व्यवहारों का वर्णन है, वह आज भी लोक संस्कृति में स्पष्ट झलकता है।

डा० अग्निहोत्री ने अथर्ववेद के वर्णनीय विषयों की व्यापकता का उल्लेख करते हुए बताया कि अथर्ववेद में जीवन के विविध पहलुओं का गम्भीर विवेचन मिलता है।

पंजाब में हिन्दुओं की हत्या राष्ट्रपति शासन उचित

पंजाब की आज क्या हालत है यह आये दिन समाचार-पत्रों, रेडियो से देख-सुन रहे हैं। समझ में नहीं आता, कि यह एक तरफा कार्यवाही कब तक चलता रहेगा। क्या पंजाब की जनता ने बरनाला को इसलिये सत्तारूढ़ किया था कि सत्ता में आते ही वे गलत निर्णय लें। जिनके कारण सुधरे हुए नियन्त्रित हालात पुनः बिगड़ जायें। लोगों को पुनः आतंक के माहौल में जीवन यापन करने पर मजबूर होना पड़े।

पंजाब के मुख्यमन्त्री अपनी भूलों को छिपाने के लिये पर्दा डाल दें कि सब कुछ यह हर राज्य में होता ही रहता है मगर सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है आजकल पंजाब उसी ब्लू स्टार से पूर्व के मुहाने पर खड़ा है। सरकार की चौकसी के बावजूद भी ऐसा माहौल क्यों? अपराधी पुलिस के साये में क्यों पनप रहे हैं। आये दिन उग्रवादी तत्व गिन-गिन कर हिन्दुओं की हत्यायें कर रहे हैं मगर पुलिस उन्हें जान भी नहीं पाती कि वे कौन हैं। अकाली शासन के दौरान २७५ हिन्दू निरीह मारे गये और सरकार कहे कि यह तो होता ही रहता है। जांच की आवश्यकता भी तभी है जब परिस्थितियों का सही ज्ञान न हो। हिन्दू व्यापारी हो या साधारण नागरिक उनकी सुरक्षा करने में भी सरकार असफल है। व्यवसायी वर्ग के अस्तित्व को भी खतरा उत्पन्न है।

अभी पंजाब विभाजन की पीड़ा मिट भी न पाई थी कि अब अपने घर में ही उनके जीवन के साथ खिलवाड़ की जा रही है। अब वे कहां जायें।

केन्द्र सरकार को अविलम्ब बरनाला सरकार को भंग कर राष्ट्रपति शासन को लागू किया जाय। अन्यथा अधिक विलम्ब होने पर पछताना ही पड़ेगा।

राष्ट्रपति की चिन्ताएं

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को राजीव-लोंगोवाल समझौते की कई शर्तें पूरी हो जाने के बावजूद पंजाब में हिंसा के बढ़ते दौर से चिन्ता होना स्वाभाविक है और साम्प्रदायिक विद्वेष की आग भड़काने वालों को अलग-थलग करने में सभी राजनैतिक दलों से सहयोग की उनकी अपील काफी अहमियत रखती है। किसी भी विघटनकारी तत्व के साथ किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जा सकता। राष्ट्रपति का यह आग्रह भी अपनी जगह ठीक है कि ऐसी समाज और राष्ट्र-विरोधी ताकतों के खिलाफ एक संगठित मुहिम चलाई जानी चाहिये। पर उन्होंने यह कहीं नहीं बताया कि सरकारी कोशिशों में दूसरों की शिरकत के लिये जमीन बनाने की दिशा में सरकार ने अब तक क्या किया है और आगे क्या करने का इरादा है।

प्रतिपक्ष के लोग सरकार से खफा हैं। देश के संसदीय इतिहास में यह पहला मौका है, जब प्रतिपक्ष ने प्रधानमन्त्री के निमन्त्रण को ठुकरा दिया और खुद राष्ट्रपति के अभिभाषण का बहिष्कार किया है। आखिर इसकी क्या वजह है? पंजाब पर समझौते के बाद कुछ मुद्दे रह गए हैं, जिनको सुलझाने में प्रतिपक्ष की मदद ली जा सकती है। पर वहां इस हकीकत को कैसे नजरअन्दाज किया जा सकता है कि उस संकटग्रस्त राज्य में अकाली पार्टी और कांग्रेस को छोड़कर किसी पार्टी की कोई प्रासंगिकता नहीं रह गई है। कल तक ये पार्टियां हताश के आलम में आसमान की ओर देख रही थीं। इसलिए इनसे किसी व्यापक सवाल पर सरकार के साथ होने की उम्मीद वैसे भी नहीं थी। खुद कांग्रेस ने पंजाब या असम पर किसी ठिकाने तक पहुंचने से पहले विरोधी दलों को विश्वास में लेने की जरूरत नहीं समझी। इतना जरूर है कि ये पार्टियां अपने आप भी कुछ कर सकती थीं और कर सकती हैं, पर इसके लिए जो अन्दरूनी ताकत चाहिए वह है कहां?

जहां तक सरकार की आर्थिक उपलब्धियों के बारे में राष्ट्रपति द्वारा दिए गए ब्यौरे का सवाल है, उसमें कोई ताजगी नहीं है। ये सब बातें विभिन्न सरकारी मंचों से बार-बार उछाली जाती रही हैं। राष्ट्र के विकास के लिए कुछ तकलीफें उठाने की लोगों से उनकी अपील अब बहुत कुछ बेमानी है, क्योंकि जो कार्रवाई राष्ट्रपति की अपील के बाद होनी चाहिए थी, उनकी सरकार पहले ही उठा चुकी है और लोग अपने को बेहद संत्रस्त महसूस कर रहे हैं। इस एक मुद्दे ने प्रतिपक्ष को एकजुट होने का अवसर जरूर दिया है, पर उनकी यह ऊपर से टपकी एकता देश को रचनात्मक दिशा में ले जायेगी, इसकी क्या गारन्टी है? खतरा तो यह है कि कीमतों के बारे में अभी हाल में उजागर सरकारी असमंजस और उसको लेकर हो रहे शोर-शराबे में कुछ जरूरी मुद्दे भी कहीं खो न जाएं।

(२०-२-८६ जनसत्ता से साभार)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—देव शर्मा व्यवस्थापक, सार्वदेशिक साप्ताहिक

विश्व कल्याण कर्ता—यज्ञ

लेखक—पण्डित वीर सेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य,
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७ (म० प्र०)

१. यज्ञ-विज्ञ का आधार तत्व—

विश्व के जीवन एवं विश्व के स्वास्थ्य के लिए यज्ञ, होम, हवन परम आवश्यक है। यज्ञ-हवन की क्रियाशीलता और उपयोगिता का आध्यात्मिक क्षेत्र में अर्थात् अपने शरीर, प्राण, मन आदि पर अद्भुत प्रभाव होता ही है तथा आधिभौतिक और आधिदैविक क्षेत्रों में भी स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण होता है। यज्ञ समस्त जड़ तथा चेतन सृष्टि का प्राण-पोषक तथा जीवन प्रदाता है। सृष्टि के जीवन का प्रमुख वैज्ञानिक आधारभूत तत्व यज्ञ ही है। मानव सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व भी इस सृष्टि में, प्राकृतिक तत्वों और पदार्थों में, प्रत्येक पिंड में यज्ञ चल रहा था, और अब भी चलता रहता है तथा भविष्य में भी प्रलय पर्यन्त चलता ही रहेगा। अतः यज्ञ सनातन तत्व है, सनातन कर्म है और सनातन धर्म है। स्वभाव ही धर्म माना गया है। अतः यज्ञ सदा आहूत, सर्व समृद्धिकारक एवं परम श्रेष्ठ विज्ञान है।

२. चराचर सृष्टि की उत्पत्ति यज्ञ से—

पुरुष सूक्त के मन्त्रों में बताया है कि परमात्मा के यज्ञ से विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ और उनके भोक्ता—जीव सृष्टि की भी उत्पत्ति हुई। समस्त ज्ञान-विज्ञान एवं कर्त्तव्यों के प्रेरक, सर्व ज्ञानमय वेद भी प्रकट हुए और इनके उपभोक्ता साध्य, देव, ऋषि, मनुष्यादि भी उत्पन्न हुए। इन उत्पन्न ऋषि-मुनियों ने सृष्टि में यज्ञों के विविध रूपों के वैज्ञानिक प्रवाहों तथा उनके प्रभावों को देखा और यज्ञ के विज्ञान को समझ कर प्रारम्भ किये और उनका प्रचलन स्थापित किया। यज्ञ के प्रारम्भिक विज्ञान का सूत्र रूप में प्रतिपादन-मन्त्र पुरुष सूक्त में—

"यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।"

यह है।

इसमें यज्ञ के तीन आधार भूत तत्व बताये हैं—

१—आज्य, २—इध्म और ३—हविः। आज यह भी यज्ञ के लिए यही तीन पदार्थ उपयोग में लिये जाते हैं।

३. यज्ञ के आधार भूत तीन पदार्थ—

सृष्टि के प्रारम्भ के प्राकृतिक यज्ञ में बसन्त ऋतु ही आज्य थी, ग्रीष्म ऋतु ही इध्म थी और शरद् हवि थी। आज भी घृत का संग्रह बसन्त में अच्छा होता है। इन्धन का संग्रह ग्रीष्म में ही अच्छा होता है और औषधि वनस्पतियों का परिपाक शरद में ही ग्राह्य है। प्रकृति के अनुरूप देवों, साध्यों ऋषियों एवं मनुष्यों ने यज्ञ को अपने जीवन में धारण कर नित्य एवं नैमित्तिक कर्मों में यज्ञों का अनुष्ठान धर्म रूप में प्रारम्भ किया तो आज्य के रूप में गोघृत को ग्रहण किया। इध्म अर्थात् इन्धन के लिए कतिपय यज्ञिय वृक्षों से समिधायें ग्रहण की तथा हवि के रूप में औषधियों, वनस्पतियों को ग्रहण कर हवि की मान्यता स्थापित की। इन्हीं तीन आधारभूत पदार्थों का उपदेश यजुर्वेद अध्याय तृतीय के प्रथम मन्त्र में भी निम्न प्रकार है—

"समिधाग्निं दुवस्यत—घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन्हव्या जुहोतन।"

अर्थात् समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त करो, प्रदीप्त अग्नि की घृत से सेवा करो, और उस प्रबुद्ध अग्नि में, प्रदीप्त अग्नि में हव्य पदार्थों की आहुति प्रदान करनी चाहिए।

४. यज्ञ का आधार तत्व-अग्नि का गुण—

यज्ञ के उपर्युक्त तीनों पदार्थ शोधक हैं। अग्नि परम शोधक है। घृत भी परम शोधक है तथा हव्य पदार्थ भी शोधक एवं पुष्टिकर्ता हैं। परन्तु घृत और हव्य पदार्थ जब अग्नि में प्रयुक्त होंगे तभी उनसे विविध प्रकार का लाभ होगा। इसलिए ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में ही सर्व प्रथम अग्नि की साधना करने के लिए उसके गुणों का प्रकाश किया गया है—

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

अर्थात् अग्नि की आराधना करो, अग्नि के गुणों का निरन्तर अनुसन्धान करो, अग्नि से सम्भावित कार्यों को जानकर उसका प्रयोग कला-यन्त्रों में करके विविध सुख प्राप्त करो। वह अग्नि पुरोहित है, तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति के लिए विविध रूप में रचना कार्य साधक इंजीनियर तुल्य है। यह विविध सुखों का संग्रहकर्ता है। यह विविध ऋतुओं का निर्माता है। यह हव्य पदार्थों को ग्रहण कर उनका प्रसारण करता है और विविध प्रकार के रत्नों का निर्माता एवं दाता है। इसी प्रकार अग्नि के सहस्रों अद्भुत गुणों का भण्डार वेद है।

५. यज्ञ की अग्नि का आधारभूत पदार्थ-इध्म—

यज्ञ के लिए समिधा परम आवश्यक है। समिधा के बिना अग्नि की स्थापना एवं स्थिरता नहीं। समिधाओं में ही अग्नि प्रकट होती और उसी में निवास करेगी। समिधायें ऐसे वृक्षों की यज्ञ में प्रयुक्त होती हैं, जिनसे प्रदूषण कम और ऊर्जा तथा आरोग्यता विशेष होती है, तथा अंगार होने पर उनसे कोयला न बन कर भस्म ही बन जाती है। ऐसी समिधायें पलाश, पीपल, आम, विकंकत, गूलर आदि वृक्षों की होती हैं। कामना भेद से भी समिधाओं का प्रयोग होता है। सब कामनाओं के लिए पलाश अर्थात् ढाक की समिधा श्रेष्ठ है। रोग-नाशनार्थ आक की समिधा उपयोगी है, विशेष रूप से वात एवं कफ रोगों में अति लाभकारी है। खैर की समिधा धन लाभ के लिए, पीपल की समिधा प्रजा लाभ के लिए, अदृष्ट दोषों के शमन के लिए उपयोगी है।

६. यज्ञ का दूसरा आधार भूत पदार्थ-घृत—

केवल समिधाओं तथा अग्नि से ही यज्ञ नहीं हो सकता। समिधाओं से प्रदीप्त ज्योतिर्मय अग्नि में घृत की आहुतियां देने से वह इच्छित समय तक प्रदीप्त रह सकती है। दीपक में जैसे घृत या तेल रहने से दीपक की रूई को बत्ती दीर्घकाल तक ज्योतिर्मय बनी रहती है उसी प्रकार समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि के लिए घृताहुतियां अति आवश्यक हैं। अग्नि एवं घृताहुतियों से समृद्ध ज्वालाओं से वर्षा, ऊर्जा वायुमण्डल में, अन्तरिक्ष में दसों दिशाओं में व्याप्त होकर अणु-परमाणु में विद्युत शक्ति संचारित कर के नई ऊर्जा, स्फूर्ति तथा जीवन का संचार करती है। अपवित्रता को भी दूर करती है। घृत में परम शोधक शक्ति है। शरीर में व्याप्त विष को दूर करने में प्रसिद्ध है। इसके इसी गुण के कारण यज्ञ द्वारा समस्त अन्तरिक्ष को शुद्ध, निर्विष एवं शक्ति-सम्पन्न करने के लिए आहुति रूप में प्रयुक्त होता है।

(क्रमशः)

आजादी का पथप्रदर्शक

—श्री रत्नदेव 'आजाद' गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिर गेहिनी,
सत्य सूनुरय दया च भगिनी भ्राता मन सयम:।
शय्या भूमितल दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृत भोजनम्,
एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्मात् भयं योगिनः ॥

भारतवर्ष सदा से ऋषि मुनियो की पवित्र भूमि रहा है, समय समय पर यहा महान् विभूतियो ने इसको पवित्र किया है। जिन्होंने इसके उत्थान के लिये अपना जीवन अर्पण किया है, असह्य कष्टों को सहन किया और दानवता को नष्ट करके मानवता का प्रचार-प्रसार और विस्तार किया।

जिन घटनाओ के प्रति सामान्य व्यक्ति के लिये कोई महत्व नहीं होता, जनता एक क्षण उन पर दृष्टिपात करती है, और दूसरे क्षण ही भूल जाती है। वे ही घटने वाली घटनाए महापुरुषो के जीवन में नये मोड का कारण बन जाती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अति साधारण घटनाओं ने जगत् मे बडी बडी क्रान्तिया कर दी हैं।

१—साधारण रोगियों, वृद्धों को हस्पताल से जाते तथा मुर्दों को श्मशान ले जाते हुए आज हम अपनी आंखों के समक्ष हजारों देखते हैं और कोई विशेष बात नहीं मानते, परन्तु वैसी ही घटना ने राजकुमार सिद्धार्थ को जगल मे जाने के लिये बाधित कर दिया। जिसने करोडों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करुणा और सहानुभूति का स्रोत बहाया था।

२—वृक्ष की डाली से टूटकर गिरते हुए फलों को हम नित्य प्रत्यक्ष देखते हैं किन्तु "आइजन न्यूटन" की दिव्य दृष्टि ने एक वृक्ष से फल के पतन को देखकर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम का साक्षात्कार किया।

वाष्प के द्वारा हिलाये जाते हुए ढक्कन को सभी मनुष्य नित्य-प्रति देखते हैं किन्तु "न्यूकोमेन" की दूरगामिनी बुद्धि ही उसमे वर्तमान वाष्प इन्जन का बीज देख सकी। वृक्ष के पत्तो के मध्य से आता हुआ सूर्य-रश्मियो का प्रकाश प्राय सभी देखते हैं-किन्तु इटली-निवासी "पोटो" महानुभाव ने एक वृक्ष के नीचे मध्याह्न मे लेटे हुए इसी दृश्य को देखकर आधुनिक 'फोटोग्राफी" का सिद्धान्त ढूढ निकाला।

इसी प्रकार की एक घटना शिवरात्रि पर्व से सम्बन्ध रखती है। जिससे शिक्षा लेकर एक १४ वर्षीय बालक ने वर्तमान शताब्दी के भारत के धार्मिक इतिहास मे एक अद्भुत क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

इस देश मे मूर्तिपूजा का इतिहास पुराना है तथा अनेक इष्ट देवो की प्रतिमा बनाकर व्यक्ति अपनी श्रद्धा को व्यक्त करता आया है।

गुजरात प्रान्तीय मौरवी राज्य टकारा ग्राम के ब्राह्मणो के औदीच्य शाखा के अन्तरगत मूलशकर के पिता भी इस परम्परा मे थे। तथा शिव की भक्ति विधि के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु १४ वर्षीय मूलशकर ने सम्वत् १८९५ को अपने पिता के आग्रह पर शिवरात्रि का व्रत रखा। तथा मन्दिर मे जागरण किया। मन्दिर मे जागरण करते हुए भक्तो के निद्रालीन हो जाने पर मन्दिर के बिल से निकल कर नाच-कूदकर शिवलिंग की पिडी पर चढाये गये नैवेद्य को खाते हुए चूहे को देखकर बालक मूलशकर के मन मे कुछ शकाओं ने अपना डेरा आ जमाया। पूर्व दिन की सुनी हुई कथा का स्मरण करते हुए, पिता को जगाकर उत्पन्न शकाओं का समाधान चाहा। कि जिस शिव को आप ससार का रक्षक, पाशुपतास्त्र का धारक, जगत का सहारक, बताते थे, क्या यह वही शिव है अथवा अन्य कोई दूसरा? पिता के द्वारा उक्त शकाओ का समाधान न पाकर बालक मूलशकर का हृदय विचलित हो उठा और उसने सच्चे शिव को प्राप्त करने का दृढ सकल्प कर लिया। दूसरी घटना बहन तथा चाचा की मृत्यु ने उपर्युक्त घटना को और अधिक मजबूत बना दिया। जिससे उन्होंने ससार के समस्त सुखो को ठुकराकर जगल की राह ली।

सम्वत् १९०२ में जिस समय एक तरफ विवाह के उपक्रम में बाजे की तैयारी हो रही थी उस समय वह गृह त्यागकर सदा के लिए चल दिये। गृह त्याग के बाद जिन परेशानियों को उन्होंने सहन किया उनका उल्लेख विस्तार भय से यहा पर करना उचित नही समझता।

बालक मूलशकर ने अनेक योगियों, साधु, महात्माओं से सम्पर्क किया और सच्चे शिव के विषय मे पूछा तथा मनुष्य मृत्यु के मुख से किस प्रकार बच सकता है, यह जानने की लालसा प्रकट की। परन्तु सभी ने अपनी बुद्धि सामर्थ्य के अनुसार उत्तर प्रत्युत्तर दिया, लेकिन बालक मूलशकर को सन्तुष्टि नही हुई। पश्चात् उनकी भेंट एक "पूर्णानन्द सरस्वती' नामक सन्यासी से हुई जिन्होने इनको सन्यास की दीक्षा से दीक्षित करके 'दयानन्द सरस्वती" नाम दिया।

इन्हीं स्वामी दयानन्द ने १९वीं शताब्दी में सामाजिक सास्कृतिक एव धार्मिकक्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया। तथा सोई हुई आर्य जाति को सचेत किया। सन्यास दीक्षा मे दीक्षित होने के बाद सच्चे गुरु की खोज मे १४ वर्ष तक घूमते रहे और अन्त मे १९१७ ई० में "गुरु विरजानन्द जी दण्डी" से उनकी भेंट हुई। २॥ वर्ष तक आर्ष ग्रन्थो के अध्ययन के बाद गुरु के आदेशानुसार उपलब्ध शिक्षा का प्रचार प्रसार करना शुरु किया।

महर्षिवर देश की पराधीनता से बडे दु खी थे। इसी समाधान के लिए धार्मिक एव सामाजिक क्षेत्रों में फैले अन्धविश्वास के विरुद्ध जनता को जागरूक किया। क्योंकि सामाजिक जागृति पैदा करते हुए उन्होंने सोई जनता को बताया कि तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल मे छिप गया है। इस संस्कारों की गन्दी पर्तों को तोड फेंको। तुम्हारा सच्चा धर्म "वैदिक धर्म" है। जिस पर आरूढ होकर तुम पुन विश्व विजयी बनकर "एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मन।

स्व स्व चारित्र शिक्षरन् पृथिव्या सर्वमानवा"॥ के घोष को पुन घोषित कर सकते हो।

गुरुदेव दयानन्द देश में फैली निर्धनता से भी बडे चिन्तित थे। सभी पाठको को विदित है कि एक बार मेरे गुरुदेव गगा के तट पर बैठे जान्हवी की चचल-धवल तरगों को निहार रहे थे, शीतल-सुगन्धित-पावन पवन अपनी मन्द-मन्द मुस्कान से शरीर को स्पर्श करता हुआ बह रहा था। कि सामने से एक स्त्री मृत शिशु का शव उठाये हुये आर्त्तनाद करती हुई आई और गगा की धारा में प्रविष्ट होकर शव पर लपेटे हुए वस्त्र को उतार कर कलेजे के टुकडे को जल मे प्रवाहित कर दिया। और वह वस्त्र धोकर पुन धारण कर लिया यह दृश्य देखकर दया की सजीव प्रतिमा दयानन्द का हृदय दहल उठा। वह विचारने लगे, कि मेरे देश में निर्धनता की यह स्थिति है कि माता शिशु को तो जल में प्रवाहित कर गई किन्तु कफनरूपी वस्त्र को इसलिये उतार लिया कि यदि वस्त्र को बहा देगी तो दूसरा वस्त्र मिलना कठिन हो जायेगा।

स्वामी दयानन्द ने भारत मे जन चेतना स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये की थी उन्होंने कहा था—"कि कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य कभी सुखदायक नहीं होता।

जिन बातों का प्रचार तिलक तथा गांधी ने किया उसकी भूमिका महर्षिवर ने काफी समय पूर्व ही तैयार कर दी थी। गांधी जी की भूमिका करने वाला अगर कोई था, तो वह महर्षि दयानन्द ही था। किन्तु आज की सरकार उस कृतघ्नता को भूलकर गांधी जी को ही आजादी का सर्वेसर्वा मान बैठी है। मैं पूछना चाहूंगा कि क्या

(शेष पृष्ठ ८ पर)

उत्तरप्रदेश शासन का शिक्षा विभाग और आर्यसमाज

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, (उ०प्र०)

उत्तर प्रदेश-शासन द्वारा 'माध्यमिक शिक्षा परीषद् उत्तर प्रदेश" की हाई स्कूल "सामाजिक विज्ञान भाग-१" पुस्तक देखने को मिली। इस पुस्तक के "नव जागरण" स्तम्भ के अन्तर्गत पृष्ठ २५४ से "स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज" पाठ आरम्भ होता है। इस में दो भ्रान्तियां हैं और तीसरी भ्रान्ति पाठ के अन्त में दी गई प्रश्न माला में है।

प्रदेश के लाखों विद्यार्थियों ने इस पुस्तक को प्रतिवर्ष पढना है। इसके पढ़ने से भारत के लाखों भावी नागरिको के मन और मस्तिष्क पर प्रतिवर्ष आर्यसमाज के विषय मे भ्रान्त चित्र उभरेगा। इस पुस्तक में तुरन्त संशोधन होना चाहिये।

भ्रान्ति का कारण यह है कि सम्बद्ध राजकीय अधिकारी ने आर्य समाज के किसी विद्वान से सम्पर्क करने का प्रयत्न ही नही किया। किसी अनाधिकारी व्यक्ति से यह पाठ लिखा लिया गया है। यदि किसी आर्य विद्वान से अधिकारी महोदय परिचित नही थे तो आर्य समाज की शिरोमणि सभा से सम्पर्क करके उपयुक्त सामग्री सम्बद्ध पाठ के लिये उपलब्ध कर लेनी चाहिये थी।

उत्तर प्रदेश शासन के शिक्षा-विभाग के उत्तरदायी का आर्य समाज जैसी विश्वव्यापी संस्था के उच्च संगठनों से अपरिचित होना आश्चर्य का विषय है और वह भी तब—जबकि उत्तर प्रदेश में कम से कम १५-२० डिग्री कालिज व पोस्ट ग्रेजुएट कालिज, सैकड़ों हाई स्कूल तथा इन्टर कालिज और इनसे भी अधिक जूनियर, प्राइमरी, बेसिक आदि शालायें आर्यसमाज द्वारा संचालित हैं। दर्जनों गुरुकुल भी चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त यह तथ्य भी सर्व प्रकट है कि शिक्षा के क्षेत्र में जितना बड़ा योगदान भारत में आर्यसमाज का है, इतना अन्य किसी भी संगठन अथवा संस्था नहीं।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ नगर में आर्यसमाज के प्रदेशीय शिरोमणि संगठन "उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा" का कार्यालय ५-मीराबाई मार्ग, नारायण स्वामी भवन में स्थित है, जो प्रदेश की १८०० (अठारह सौ) आर्यसमाजों की प्रतिनिधि सभा है। वहां से सम्पर्क करने का प्रयत्न ही नहीं किया गया। कारण यह है कि आर्यसमाज क्योंकि शिष्ट, सभ्य तथा सुसंस्कृत जनों का संगठन है, तोड़-फोड़ नहीं कर सकता, किसी अधिकारी पर पथराव नही कर सकता और किसी भवन, रेलों व बसों आदि में आग नहीं लगा सकता अतएव प्रदेश सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा प्रायः आर्य समाज के विषय में पाठ्य पुस्तकों में भ्रान्तिपूर्ण बाते प्रकाशित की जाती तथा कराई जाती रहती हैं। इससे पहले भी इस प्रकार की हरकतें हुई हैं। यथासम्भव शीघ्र ही उनके विषय में भी लिखूंगा।

प्रस्तुत पुस्तक के उपर्युक्त पाठ में निम्न भ्रान्तियां हैं—

१ आर्य समाज का नियम है "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम-पालने मे परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतन्त्र रहें।" इसे इस प्रकार कर दिया गया है "सब मनुष्यों को सर्वथा सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन करने में व्यस्त रहना चाहिये।" (संख्या १० पृष्ठ २५५)

प्रश्न उत्पन्न होता है कि जो सर्वथा सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में व्यस्त रहेगा, उसके व्यक्तिक जीवन और पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं का हल कौन करेगा?

परतन्त्र रहना तो ठीक है क्योंकि सामाजिक सर्वहितकारी नियम में यदि व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य प्राप्त होगा तो असामाजिकता और अराजकता फैलेगी। व्यक्तिगत नियमों में अर्थात् प्रत्येक हितकारी नियम में स्वतन्त्रता की बात ही ठीक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की पृथक्-२ रुचियां और परिस्थितियां होती हैं किन्तु व्यक्तिगत रुचियों और परिस्थितियों को समाज पर नहीं थोपा जा सकता, अपितु उन्हें इस प्रकार मोड़ देना होता है कि सामाजिक सर्वहितकारी नियमों का उल्लघन न हो जाय। उदाहरण के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्व-गृह का कचरा बाहर निकालने का अधिकार रखता है, यह उसका व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य है, उसकी यह स्वतन्त्रता नही छीनी जा सकती। परन्तु उसे अपने घर के कचरे को सड़क पर फेक देने का अधिकार नही हैं। ऐसा करने से सामाजिक सर्वहितकारी नियम भग होता है और सडक पर चलने वाले व्यक्तियों को इससे कष्ट होता है। अतएव उसे वह कचरा नगरपालिका द्वारा इसी कार्य के लिये निर्मित कूडेदान मे या जहां कही कूडा डालने का स्थान निश्चित हो, वही डालना चाहिये। इस प्रकार आर्यसमाज का यह नियम नितान्त बुद्धिपूर्वक निर्मित है। इसमें "सर्वथा" शब्द और "व्यस्त रहना" क्रिया पद जोड़कर न केवल नियम का स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया गया है अपितु उसके अर्थ को भी नितान्त अव्यवहारिक भ्रान्तियुक्त तथा अयोग्यता का परिचायक बना दिया गया है अत वह परिवर्तनीय हैं।

२—"इनमें सबसे प्रसिद्ध गुरुकुल १९०० में हरिद्वार में कांगड़ी नामक स्थान पर लाला मुंशी राम और स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित हुआ।" आर्यसमाज और शिक्षा पृष्ठ २५६) इसे पढ़कर मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि इस प्रदेश में सरकारी तन्त्र ऐसे लोगों के हाथ में है कि जिन्हें न तो किसी विषय की सूझ-समझ और जानकारी है तथा न किसी विषय पर वह खोज जानकारी करने को तैयार है।

स्वामी श्रद्धानन्द और लाला मुन्शीराम दो व्यक्ति नही थे अपितु एक ही व्यक्ति के पृथक्-२ व्यक्तियों की आज्ञानुसार दो पृथक्-२ संज्ञाएं हैं। गृहस्थ के लाला मुन्शीराम वानप्रस्थ मे महात्मा मुन्शी राम और संन्यास में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। गुरुकुल की स्थापना सन् १९०० ई० में नहीं, अपितु १००२ ई० में कांगड़ी ग्राम के निकट बिजनौर जनपद मे महात्मा मुंशीराम जी के द्वारा हुई थी। इन्ही महात्मा मुन्शी राम ने कुछ-२ वर्ष पश्चात् विधिवत् संन्यास-आश्रम की दीक्षा ली और तब वह स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध होकर गुरुकुल का संचालन करते रहे।

३—इस पाठ के अन्त में दी हुई प्रश्नमाला मे प्रश्न है "स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस सम्प्रदाय का स्थापना की है?" यद्यपि यह कि स्वामी दयानन्द सरस्वती सम्प्रदायवाद के नितान्त विरोधी थे। उन्होने तो 'आर्य समाज' की स्थापना की जो एक सस्था। इसका अर्थ यह कि उत्तर प्रदेश सरकार सम्बद्ध अधिकारी को 'समाज' शब्द के अर्थ भी नही आते। समाज सभ्य लोगों से बने सगठन को कहते हैं। आर्य समाज का एक नियम है "ससार का उपकार करना इस समाजका मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" जिस सस्था को स्थापना ही ससार के उपकार के लिये की गयी हैं और उसके साधन उसके नियम मे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति जैसे सर्वमान्य सिद्धान्त बताये गये हैं, उसे सम्प्रदाय बताना या तो नितान्त अयोग्यता का परिचायक है अथवा जान-बूझकर आर्य समाज को विकृत रूप में भावी भारतीय जन मानस में बैठाना उद्देश्य है। इस पुस्तक में तुरन्त सुधार होना चाहिये। अभिप्राय यह है कि उपर्युक्त तीनों स्थल एकदम बदले जाने चाहियें। तथा—

४—आर्य समाज के दसों नियमों को उनके वास्तविक रूप में छपवाया जाना चाहिए।

५—ऐसे उत्तरदायी पद पर बैठा हुआ व्यक्ति इस प्रकार का करने के कारण दण्डित किया जाना चाहिये। जिससे भविष्य में अन्य किसी को इस प्रकार के कार्य करने का दुस्साहस न हो।

सम्पादक के नाम पत्र

धर्म परिवर्तन के ये हथकण्डे अध्ययन के आधार पर

मुझे कुछ दिनों मद्रास रहने का मौका मिला। इस दौरान शहर से २० २५ मील दूर पोप्लाल गांव (जी०एन०टी० रोड पर स्थित) में मैं गया था। गांव में दूर दूर झोपड़े तथा कच्चे मकान बने हुए हैं। एकाध पक्का मकान दिखाई देता था। भाषा वहां सबकी तमिल है। यहां पर ५ १० वर्ष पहले सब हिन्दू थे मगर अब सब मुसलमान तथा ईसाई नजर आते हैं।

वहां मैंने एक बिहारी राजपूत के पंजाबी होटल के नाम से मशहूर होटल में खाने के लिये पूछा तो उसने बताया कि सिर्फ सूखी रोटी खा सकते हो। सब मांस गोमांस से मिश्रित आता है वही बिकता है। सब हिन्दू या मुस्लिम या ईसाई उसी को खरीद कर खाते हैं यह गोमांस जान-बूझकर मिलाया जाता है ताकि हिन्दुओं का धर्म भ्रष्ट हो जावे। अन्य भी कई प्रकार के प्रलोभन देने के लिये अन्य धर्मों ने दलाल छोड़ रखे हैं। हिन्दू तथा जैन मन्दिर भी हैं मगर कोई हस्तक्षेप नहीं करते। ईसाई तथा मुसलमानों में होड़ लगी हुई है दोनों ही अपने मत में लोगों को मिला रहे हैं आज राजनीतिज्ञ अपनी कुर्सी कायम रखने के फेर में लगे हुये हैं, बड़े-बड़े धनाढ्य बैंक बैलेंस के फेर में तथा साधारण आदमी अपने काम धन्धे तथा रोटी के फेर में रहते हैं। आखिर देश तथा राष्ट्र की रक्षा कौन करेगा ? सब हिन्दू जाति को हजम करने के चक्कर में हैं। कुछ गलती हिन्दू जाति तथा उनके अन्ध भक्त आचार्यों, पण्डितों तथा पुरोहितों की भी है। ये भक्ति का झूठा आडम्बर रचकर हिन्दुओं को बहकाते रहे हैं। इनके जाल में फंसकर आज भी हिन्दू जाति अनुप्रमाणित बातें करते तथा मानते हैं। वह समय दूर नहीं जब हिन्दू जो आज बहुसंख्यक हैं अल्पसंख्यक रह जायेंगे। भारत सरकार तथा जनता समय रहते-रहते सावधान हो जाये वरना दूसरा पाकिस्तान तथा नागालैंड बनने में देर नहीं लगेगी जिससे भयानक परिणाम भोगने पड़ेंगे, पहले भी हमने भोगे हैं।

जब तक सबका आराध्य एक ईश्वर एक भाषा देवनागरी तथा एक धर्म "वैदिक" न अपनाया जाएगा तथा धर्म सापेक्ष राज्य की स्थापना नहीं हो जाती तब तक राष्ट्र सुख-चैन से नहीं रह सकता। राष्ट्र अलग-अलग टुकड़ों में बंट जायेगा। समय रहते सरकार तथा जनता को सावधान होना चाहिये ताकि राष्ट्र सुखी तथा समृद्धशाली हो सके। यही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है।—पुष्करलाल आर्य

वैदिक प्रचार समिति मद्रास-८९

आजादी का पथप्रदर्शक

(पृष्ठ ६ का शेष)

मांगने से इतने बड़े देश की आजादी मिलना सम्भव है जब कि आज मांगने से सूई जैसी छोटी वस्तु भी नहीं मिलती ? अगर महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहा जाता है तो महर्षिवर को राष्ट्रप्रपितामह ही कहना होगा, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं।

सच्चे शिव की प्राप्ति एवं मृत्यु पर विजय की कामना ने उसे जहां एक ओर ज्ञान का इच्छुक बनाया तथा लक्ष्य को पूरा किया, वहीं दूसरी ओर भारत में धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में नवीन दिशा निर्देश करने का भी अवसर प्रदान किया। महर्षि का दिया हुआ सन्देश वर्तमान समय की चेतना का संचार कर रहा है।

हम महर्षि द्वारा बताये गये रास्ते पर कितना चल सके हैं। आज में दिशाविहीन है तथा मूल्यों के प्रति अनास्था महर्षिवर का प्रेरणादायक जीवन में भी जागृति उत्पन्न कर सके यही कामना है।

जागे राष्ट्र हमारा

युग-युग शोभित उत्तर में हिमगिरि जिसका प्रहरी।
दीर्घ ओर सागर की लहरें जिसके चरण पखारें॥
राशि-राशि सुन्दरता जिसके कण-कण में है लहरी।
चन्द्रहार सी जिसके उर पर झिलमिल करत सरि-धारा॥

विविध वर्णमय, विविध रूपमय बहु वैचित्र्य भरा यह।
कंचनमय कहीं, कहीं सिकतामय नीरस कहीं हरा यह॥
सभी दृष्टि से अहो ! विलक्षण भारत-पुण्य धरा यह।
प्रलय तुहिन को इसके तन से रवि ने प्रथम उतारा॥

राम कृष्ण जैसी विभूतियां जिसकी रज में खेलीं।
शौर्य धैर्य जिसके कण-कण में करता है अठखेली।
दीर्घ काल (वह हन्त ! पराभव-पीड़ा इसने झेली।
रहा न वह सन्तापित सदियों तक फिर-फिर के हारा॥

नये स्वर्ग स्वामी स्वतन्त्रता का युग-बीज हमें दे।
गांधी ने दी शक्ति अहिंसा का अनुरोध हमें दे।
प्राणित किया क्रान्ति-वीरों ने अरि पर क्रोध हमें दे॥
गूंज अनन्त उठा एक दिन आजादी का नारा॥

पुण्य दिवस, गणतन्त्र बना जब भारत, फिर है आया।
मातृभूमि रक्षण का इसने मन में दीप जलाया॥
शीघ्र मिटा समवेत शक्ति से हैं संकट की छाया।
एक अखण्डित राष्ट्र भाव का हो मन में उजियारा॥

—धर्म वीर शास्त्री
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४-८५)

(गतांक से आगे)

दयानन्द आश्रम

२२५०) की यह निधि शुद्ध हुए मुसलमान बंधुओं (नव मुस्लिमों) की सहायतार्थ १९२७ में कायम की गई थी। इसका ब्याज इसी कार्य में व्यय होता है।]

श्री बरियालाल जी का दान

श्री बरियालाल जी जानकीगंज लश्कर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार रुपये की राशि २९-१-१९६० को सभा को दान में दी थी।

श्री लाला जगन्नाथ जी का दान

स्व० श्री लाला जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी पांच हजार रुपये की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान में दी थी। इसमें से २ हजार रुपये दानी के निर्देशानुसार सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगंज को दे दिए गए थे, शेष ५३०५)८६ सभा को प्राप्त हुए थे। इसका ब्याज वैदिक साहित्य के प्रकाशन पर व्यय किया जाता है। शेष ५३०५)८६ पर गत वर्ष तक ब्याज के ३५३०)६६ जमा थे। इस वर्ष ब्याज के २६५) जमा हुए। वर्ष के अन्त मे ३७९५)६६ जमा रहे।

इस ब्याज से श्री स्व० वैद्य रामगोपाल शास्त्री जी की 'आर्य दास बार' अंग्रेजी पुस्तक २ हजार छपवाई थी।

श्री मोहनलाल लखोटिया स्थिर निधि

श्री मोहनलाल जी लखोटिया, लखोटिया निकेतन १/ए, लवलोक प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रदत्त (पांच हजार रुपये मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की गई। २१-३-१९७८ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इसके ब्याज के १२००) रु० जमा थे। इस वर्ष ब्याज के ४ सौ रुपये जमा हुए। वर्ष के अन्त में १६००) रु० शेष जमा रहे।

श्री स्व० रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार निधि

श्री रामलुभायापुरी दिल्ली के दस हजार के दान से श्री रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि के नाम से यह निधि स्थापित हुई। १६-११-१९७५ की अन्तरंग ने इसकी स्वीकृति दी। इसके ब्याज के ५५८) रु० गत वर्ष जमा थे। ८ सौ रु० इस वर्ष जमा हुए। वर्ष के अन्त में १३५८) जमा में शेष रहे।

श्री अमोलक राम स्थिर निधि

श्री अमोलक राम जी दिल्ली ने दस हजार के दान से स्थिर निधि कायम की है। गत वर्ष एक हजार रुपये बढ़ाकर ११०००) कर दी गई। जिसका ब्याज आर्य साहित्य के प्रकाशन में खर्च होगा।

१-३-१९७९ की अन्तरंग ने इसकी स्वीकृति दी। वर्ष के अन्त में ब्याज के १८७३)३० जमा थे।

श्रीमती जानकीदेवी ज्योति प्रसाद (दिल्ली) स्थिर निधि

१२६७२५) (एक लाख छब्बीस हजार सात सौ पच्चीस रुपया मात्र) के दान से यह निधि स्थापित की गई है जिसका ब्याज मुख्यत: संस्कृत के प्रचार तथा छात्र-छात्राओं की सहायता में व्यय हुआ करेगा। अन्तरंग दिनांक २७-१०-७४ ने स्वीकृति दी। इस वर्ष इस निधि मे ११,६८१)२५ ब्याज के शेष जमा थे।

महाशया शिवचरणदास शोध ग्रन्थ प्रकाशन स्थिर निधि

श्री महाशया शिवचरणदास जी दरियागंज दिल्ली के ५०११) (पांच हजार ग्यारह रु०) के दान से वैदिक सिद्धांतों एवं आर्य समाज के विषयों पर लिखे गए शोध ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ १९७५ में स्थापित की गई।]

इस निधि से ए-क्रीटिकल स्टडी आफ दी कन्ट्रीब्यूशन आफ आर्य समाज टु दी इण्डियन एजुकेशन शोध ग्रन्थ छप चुका है।

वसीयतें

१-५-६६ की अन्तरंग सभा में दो वसीयतें स्वीकृत हुई।

एक वसीयत के अनुसार जो श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु जी आर्योपदेशक ने की सभा को एक मकान गाजियाबाद में प्राप्त होना है जिसका मूल्य लगभग ४० हजार है। इसके अतिरिक्त बैंकों मे जमा रुपया भी प्राप्त होगा।

दूसरी वसीयत के अनुसार सभा को ४० हजार के मूल्य के मकान के अतिरिक्त जेवर तथा बैंकों व डाकखाने में जमा रुपया भी प्राप्त होना है। यह वसीयत स्व० पं० साधुराम जी शाहदरा ने की थी।

पहली वसीयत से प्राप्त धन आर्य कुमारों और कुमारियों के सामार्थ वैदिक साहित्य के प्रकाशन मे व्यय होगा तथा दूसरी से प्राप्त धन, धर्म कार्यों, विद्वानों तथा संन्यासी, महात्माओं की वृद्धावस्था में सहायता देने में व्यय होगा।

१८-७-७० की अन्तरंग के निश्चयानुसार शाहदरा की एक और वसीयत स्वीकृत हो गई थी जिसके अनुसार सम्पत्ति का विवरण इस प्रकार है :—

१—३ प्लाट जिनका क्षेत्रफल १ हजार वर्ग गज से अधिक है। वर्तमान मूल्य लगभग एक लाख रुपया।

२—३ मकान जिसकी कीमत लगभग ३० हजार रुपया। १७८) मासिक किराया प्राप्त हो रहा है।

वसीयतकर्त्री श्रीमती मगादेवी का देहान्त हो जाने से इस वसीयत की सम्पत्ति को अधिकृत किए जाने के लिए कानूनी कार्यवाही की जा रही है। सम्पत्ति पर उसके रिश्तेदारों ने अवैध कब्जा किया हुआ है।

जोधपुर की सम्पत्ति

आर्य समाज जोधपुर की निम्नलिखित सम्पत्ति सभा के नाम है—

१—५६५० वर्ग गज भूमि प्रताप हाई स्कूल के सामने श्री रणछोड़ मंदिर के पास।

२—आर्य श्मशान भूमि २७७२ वर्ग गज

३—गुरुकुल मारवाड़ मण्डोर ७ मकान कुल भूमि २५३६६ वर्ग गज।

४—गौशाला मारवाड़ मण्डोर ५ कोठरी (चारे की) ४ अन्य कोठरियां, ३० हजार वर्ग गज।

रणछोड़ मन्दिर के पास जो प्लाट था उसे सरकार ने हस्तगत करके उसके बदले ३ प्लाट अन्यत्र दे दिए थे।

इस सम्पत्ति पर कुछेक व्यक्तियों ने अवैध कब्जा किया हुआ है। जिसकी मुक्ति के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान में समुचित कार्यवाही की जा रही है।

महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार

स्थिर निधि

श्रीयुत पं० हरदयाल शर्मा (फिजी) द्वारा प्रदत्त ५० हजार (पचास हजार) के दान से महर्षि दयानन्द विदेश प्रचार के नाम से एक स्थिर निधि कायम की गई थी जिसकी स्वीकृति ३०-३-६८ की अन्तरंग बैठक ने दी थी। इस निधि के ब्याज से भारत से बाहर मुख्यत: फिजी में प्रचारार्थ एक उपदेशक रखने का प्रावधान किया गया था।

गत वर्ष इस निधि का ब्याज १३७१२)६३ जमा था। इस वर्ष ब्याज के ४ हजार रुपए जमा हुए। वर्ष के अन्त में जमा १७,७१२)६३ रुपया था।

सभा फिजी में किसी सुयोग्य प्रचारक को भेजने के लिए प्रयत्नशील है। (क्रमशः)

माननीय श्री शुक्र राज जी छुटे अब नहीं रहे

श्री शुक्र राज जी छुटे पहले आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के प्रधान थे। वे तृतीय आर्य सम्मेलन में भाग लेने आये थे। वहां उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में चौथा आर्य महासम्मेलन करने करनेकी घोषणा की थी उनके सभी साथियों ने उनका साथ दिया। तृतीय आर्य महा-सम्मेलन लन्दन ने उस प्रस्ताव का समर्थन किया।

सम्मेलन के प्रस्ताव को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को भेजा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री छुटे के सम्मान में उनकी सेवाओं का ध्यान करते हुए उनके प्रस्ताव का स्वागत किया और दक्षिण अफ्रीका में सम्मेलन की तिथियों की स्वीकृति दी।

परन्तु दुर्भाग्य वश श्री छुटे का शीघ्र ही देहावसान हो गया परन्तु उनके सहयोगी श्री नरदेव वेदालंकार मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका तथा प्रधान, शिशु पाल राम भरोस ने भी छुटे जी की घोषणा का स्वागत किया और आर्य महा-सम्मेलन की योजनाएं बनाईं और उसकी तैयारी लग गये।

दिसम्बर १९८५ में सार्वदेशिक सभा ने दिल्ली में एक सम्मेलन की योजना बनाई थी। परन्तु श्री नरदेव वेदालंकार और शिशु पाल राम भरोस ने उसका विरोध किया और दक्षिण अफ्रीका के सम्मेलन की स्वीकृति प्राप्त कर ली। वह सम्मेलन १३ दिसम्बर १९८५ से २२ दिसम्बर १९८५ तक चला।

जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पांच प्रतिनिधि, सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, स्वामी सत्यप्रकाश, बालेश्वर अग्रवाल तथा श्री सुभाष पाल भाग लेने दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। ये आर्य महासम्मेलन अब तक के विदेशों में हुए सभी आर्य सम्मेलनों से अधिक सफल रहा।

इस आर्य महा-सम्मेलन की सफलता का श्रेय श्री नरदेव वेदालंकार, शिशु पाल राम भरोस आदि नेताओं को है।

सम्मेलन के पश्चात सभी अधिकारी और सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री शुक्रराज जी छुटे के निवास पर गये और वहां जाकर श्री त्यागी जी ने उन्हे भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

जम्भे दध्मः

(पृष्ठ २ का शेष)

हम से द्वेष करे तो उसे ईश्वरीय न्याय पर छोड़ दें।

हम इस कथन से सहमत हैं कि ऐसे धार्मिक, सहिष्णु और शान्त व्यक्तियों को समाज का अपराधी वर्ग निबल समझकर उनका घोर भी तिरस्कार करता देखा जाता है। परन्तु वहां उन्हें हताश होने की आवश्यकता नहीं। ईश्वरीय हाथ बड़े लम्बे हैं कुछ समय पश्चात पापी नाना प्रकार की आधिव्याधियों में फसकर बुरी तरह दण्डित होते हुए देखे गये हैं। आइये हम सब वेद के इस संक्षिप्त परन्तु समर्थतम उपाय को समाज में व्याप्त अविश्वास को दूर करने के लिए हृदयंगम करें कि—

हे न्यायकारी! हम अपने शत्रुओं को आपके न्याय पर छोड़ते हैं। ओ३म् शम्।

नेपाल में आर्यसमाज की स्थापना के नये अधिकारी

नेपाल की संस्कृति की एक झांकी

नया प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द)	८)
२—गीता (भगवती जागरण) (श्री खण्डानन्द)	१०) सै०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

विश्व कल्याण कर्ता—यज्ञ

लेखकः—पण्डित वीर सेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य,
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर ४५२००७ (म० प्र०)

(गताङ्क से आगे)

७. यज्ञ का तीसरा पदार्थ-हवि—

समिधा से प्रदीप्त अग्नि मे घृताहुति देने से विश्व के पर्यावरण मे जीवन एवं पुष्टि होती है। परन्तु और भी अधिक लाभ तथा इच्छित विशेष लाभ प्राप्ति के लिए हव्य द्रव्यो का भी प्रयोग करना चाहिए। हव्य-द्रव्यो के लाभ और प्रभाव को घृताहुति सहस्र गुना बढा देती है। द्रव्य पदार्थ भिन्न-२ विशेष प्रयोजन के लिए यज्ञ मे प्रयुक्त होगे वे इन उन कामनाओ की पूर्ति करेंगे। अत यज्ञ द्वारा इच्छित पर्यावरण बनाया जा सकता है। वेद ने अग्नि को ऋत्विज् ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र मे बताकर इच्छित ऋतु निर्माण पर्यावरण निर्माता का रहस्य प्रकट किया है। हव्य पदार्थों के गुण ज्ञान के आधार पर ही यज्ञ सब कामनाओ की पूर्ति करने मे समर्थ बन जाता है। इसलिए यज्ञान्त मे यजमान कहता है—'सर्वान्नि कामान्त्समर्धय' अर्थात् यज्ञाग्नि इष्टफल प्रदाता है। अत हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करें।

८. हव्य पदार्थों के बारे मे वेद का निर्देश :

हव्य पदार्थों के बारे मे वेद मे अनेक स्थानों पर वर्णन है। अथर्व वेद काड ८ के सूक्त २ के छठे मन्त्र हव्य पदार्थों का निम्न रूप मे वर्णन है—

'जीवला नघारिषा जीवन्तीमोषधीमहम् ।
त्रायमाणा सहमाना सहस्वतीमिह हुवेस्मा अरिष्टतातये ।।''

अर्थात् जीवन देने वाली कभी हानि न करने वाली, स्फूर्ति प्रदाता, जीवन की रक्षा करने वाली, रोगो को दबाने वाली, बलवती औषधियाँ यज्ञ मे जीवन की रक्षा और दृष्टि के लिए होम के द्रव्यों के रूप मे प्रयुक्त करनी चाहिए। ऐसी औषधियो के हव्य रूप मे प्रयोग करने से यज्ञ सब प्रकार से रक्षा करने वाला, सब दोषों का अर्थात् प्रदूषणादि का विनाशक होकर ससार का महोपकारक,जीवन-दाता तथा समृद्धि करने वाला हो जाता है।

९. उक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ के लिए मन्त्र भी आवश्यक है :

उक्त तीनो पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ में मन्त्रों की आवश्यकता का प्रतिपादन वेद मे किया है, जैसा कि निम्न मन्त्र से प्रकट है—

"उप प्रयन्तो अध्वर मन्त्र वो नेमाग्नये ।
आरे अस्मे च शृण्वते ।" (यजुर्वेद अध्याय ३ मन्त्र ११)

यज्ञ मे पहुच कर अग्नि के लिए मन्त्रों का उच्चरण इस प्रकार कर कि जिससे दूरस्थ एव समीपस्थ सभी जन सुन सकें। अत यज्ञ में मन्त्र बोलना आवश्यक है। यज्ञ कर्ताओ को मन्त्र तो बोलना ही चाहिए, जोर से बोलना चाहिए—परन्तु अन्य जो भी यज्ञ मे भाग लें, उपस्थित हों, उनको भी मन्त्र बोलना चाहिए। मन्त्र याद न हो तो स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर में करनी चाहिए। मन्त्र की ध्वनि यज्ञ मे करने से यज्ञ से निर्मित आरोग्यप्रद प्राणो का प्रवेश एव सचार शरीर की नस-नाडियों मे होने लगता है तथा अशुद्धिया निकल जाती हैं। अत यज्ञ के लिए उपर्युक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त मन्त्रोच्चरण आवश्यक है।

१०. यज्ञ सृष्टि का स्वभाव है :

यज्ञ कार्य सृष्टि स्वभाव एव नियम के अनुकूल है। नित्य सूर्योदय होता है। दिन होता है। प्रकाश होता है और ताप व्याप्त होता है। ताप से वायु मण्डल में विभिन्न गतिया प्रारम्भ होने लगती हैं। सृष्टि का जीवन, चराचर जगत् का प्राण और आत्मा सूर्य ही है। सूर्य से ही प्राणों का प्रवाह चलता रहता है। वेद मे "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" मन्त्र वाक्य सूर्य के महत्व को प्रकट करता रहता है। उसी प्रकार हमारे लिए यह अग्नि भी महत्वपूर्ण है। इससे भी वही सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा सिद्ध किये जा सकते हैं अग्नि तत्व ही यज्ञ का आधारभूत प्रधान तत्व है तथा प्रधान कार्यकर्ता है। अत वेद ने इसको पुरोहित कहा। यही प्रधान देव तत्व है। सर्व-कार्य-साधक है। वह हव्य द्रव्य पदार्थों को इतस्तत ले जाने वाला है। पवित्रकर्ता है। प्रवहमान होने से व्यापक रूप से गति कर्ता है। पावक है। प्रदूषणादि का शोधक है। सर्वार्थ साधक है। अग्नि मे जब यज्ञ किया जाता है तो उसकी शक्ति प्रसारण एव प्रभाव असीमित होने लगता है। यज्ञ सृष्टि प्रवाह के अनुकूल होने से ही महत्वपूर्ण है तथा हमारी सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला भी साधक है। (क्रमशः)

पंजाब व काश्मीर में हिन्दुओं का नर-संहार

यह अमानवीय नर-संहार सहन नहीं होगा

प्रधान-मन्त्री को सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री शालवाले का पत्र

माननीय श्री राजीव गाधी जी
प्रधान मन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

सादर नमस्ते !

पजाब और जम्मू काश्मीर मे हिन्दुओ के निरन्तर सामूहिक नर-सहार पर देश की हिन्दू जनता विचलित हो चुकी है। इस मामले मे आपकी उदासीनता से देश की बहुसख्यक जनता के अन्दर अनेक प्रकार की आशकाए उत्पन्न हो गई हैं।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के बाद लोकसभा चुनाव मे सम्पूर्ण हिन्दू समाज ने आपकी खुली हिमायत की थी, किन्तु आपने पजाब और काश्मीर के सम्बन्ध मे निराशाजनक स्थिति अपनाई है। लोकतन्त्र मे बहुमत का मान होता है किन्तु आप अल्प-सख्यकों का हमेशा पक्ष लेते हैं। इसके बावजूद पंजाब और जम्मू-काश्मीर के अल्पसख्यक हिन्दुओं की हत्याये रोकने में आपकी सरकार मौन है।

यदि आपकी सरकार पजाब व जम्मू काश्मीर में हिन्दुओं की सुरक्षा नही कर सकती है, तो हमारी यह माग है कि इन दोनों राज्यों को सेना के सुपुर्द कर दिया जाए। देश की बहुसख्यक हिन्दू जनता इस प्रकार के अमानवीय नर-सहार को और अधिक समय तक सहन नही कर सकती है।

भवदीय
(रामगोपाल शालवाले)
प्रधान

प्रतिलिपि
१—माननीय श्री अरुण नेहरू जी
आतरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री-भारत सरकार, नई दिल्ली
२ श्री बलराम जी जाखड,
लोकसभा-अध्यक्ष, ससद भवन, नई दिल्ली-१

सम्पादकीय

मानव बोध की बेला

शिवरात्रि की रात मानव के कल्याण की रात वह प्रभात बन-कर आई थी जिसमें महान् आत्मा मूलशंकर के रूप उदय हुई थी।

मौर्वी राज्य के टंकारा ग्राम में ब्राह्मण परिवार, शिवरात्रि का महान् व्रत, धारण करने वाले व्रती का संकल्प, रात्रि जागरण ही मुख्य रूप था। पूजन-अर्चन के बाद जागरण था टंकारा ग्राम में छोटा से मन्दिर की उस शिव प्रतिमा पर चढ़े हुए मूषक ने मूलशंकर को चैतन्य कर "असतो मा सद्गमय" की ध्वनि की। जब वृद्ध-जवान नींद के झोंके खा रहे थे तब एक बालक जाग रहा था।

"या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्ति संयमी"

बालक ने विचार किया कि सच्चा शिव मूर्ति में कैसे रह सकता है। वह तो अणु-अणु, रोम-रोम में रमा हुआ है इस प्रकार के बोध समय-समय पर न्यूटन को हुआ था वैसे ही इन घटनाओं को देखकर दयानन्द को बोध हुआ कि—

शिव पर मूषक को कूदते हुये देखकर विश्वव्यापी, सर्वशक्ति-मान् शिव की प्राप्ति के लिये मूल में ही शंकर को शंकर की जिज्ञासा हुई। व्रत भंग होने की दशा में मां का व्याकुल होना स्वाभाविक था वह पति पर असन्तोष प्रकट कर रही थीं इधर से पिता से पुत्र का साक्षात्कार और शंका करके उसका समाधान हो रहा था।

प्र०—यह सच्चा शिव नहीं है?

उ०—वह तो कैलाश पर्वत पर रहता है। फिर यह क्या है?

सम्बन्धियों की मृत्यु ने इस जिज्ञासा को अधिक बढ़ाया। शाक्य मुनि सिद्धार्थ ने ३० वर्ष के भरे यौवन में जरा-रोग, मृत्यु को देखकर महाभिनिष्क्रमण किया था। तो मूलशंकर ने कोमल बाल्यावस्था में ही घर की लात मार कर महाप्रयाण किया। अनेक साधु महात्माओं के द्वार खटखटाये पर कहीं भी मार्ग दर्शन नहीं हुए एक साधु स्वामी पूर्णानन्द जी मिले, जिनसे संन्यास की दीक्षा ली और मूलशंकर से दयानन्द बने। उनकी प्रेरणा पर वह मथुरा स्वामी विरजानन्द जी दण्डी के पास पहुंचे। वहां जाने पर वार्तालाप हो जाने से मन को शान्ति मिली। यह अमर मिलन एक प्रज्ञाचक्षु जिसके अन्तर के चक्षु खुले थे बाहर के बन्द थे दूसरा भीतर से बन्द बाहर से नेत्र खुले थे मिलन की वेला कुछ समझने के लिये बस! समझना ही अमरत्व प्रदान कर गया।

गुरु विरजानन्द ने दयानन्द को परमात्मा का जहां असीम ज्ञान दिया वहां यमुना नदी ने दयानन्द को साम्राज्यों के उत्थान पतन का इतिहास सुनाया। और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का जयघोष किया। वेद की टंकार सुनकर विलासी राजाओं के सिंहासन डोल उठे, मन्दिरों के महन्तों की गद्दियां हिलने लगीं। दलित एवं शूद्र सिर ऊंचा कर चलने लगे, विधवायें देश एवं धर्म की सेवा करने लगीं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने ज्ञान का उपार्जन ४ वर्ष में करके देश के कोने-कोने में धूम मचा दी।

शंकर स्वामी ने उपनिषद् का सहारा लिया, तो दयानन्द स्वामी ने वेदों का आश्रय लिया।

शंकर स्वामी की निष्ठा तथा बुद्धदेव की मानव दया ये दोनों नैष्ठिक ब्रह्मचारी की बहनें हैं। शंकराचार्य की ब्रह्मदृष्टि शूद्र एवं स्त्री को पवित्र नहीं कर सकीं। ऋषि की आंखों के आंसू ने असंख्य विधवाओं को पवित्र कर दिया। म० बुद्ध की करुणाओं ने पशुओं की आयु को अवश्य शान्ति दी। परन्तु स्त्री जाति के आंसू तो दयानन्द ने पोंछे।

महर्षि के हृदय में स्त्री, शूद्र, गाय, ब्राह्मण, हाथी, कुत्ता, कीट, पतंग सब बस सकते थे।

मुहम्मद ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया, परन्तु कुरान की पूजा अवश्य सिखाई। ऋषि ने कभी अपने को निर्भ्रान्त न कहकर अपूर्व निरभिमानता दिखाई। कविराज शांवलदास को अपने शरीर की भस्मी को खेत में डालने की प्रेरणा करके मूर्तिपूजा का क्रियात्मक विरोध किया।

ईसा मसीह ने संसार में प्रेम-राज्य स्थापित करने के निमित्त सूली पर चढ़ते हुए आंसू गिराये, विरोधियों को क्षमा दी।

ऋषि ने आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य बनाने के लिये अपनी देह को हंसते-हंसते छलनी कर दिया और "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" का जाप किया।

स्वामी दयानन्द में ह० मुहम्मद का सा जोश, ईसा का प्रेम, बुद्ध का चरित्र, शंकर की प्रतिभा, बन्दा बैरागी का सा बलिदान कूट-कूट कर भरे हुये थे। महर्षि का सत्यार्थ प्रकाश, ईसा, मूसा, महावीर, मुहम्मद, नानक, शंकर और कबीर सब विचारों को कसौटी पर कसा जाकर कुन्दन बन चुका है। स्वतन्त्रता की ओर कदम बढ़ाता हुआ भारतवर्ष अनुभव कर रहा है कि—

नैष्ठिक ब्रह्मचारी के विचारों की विजय हो रही है।

यदि हिन्दू-जाति ने हरिजनों और स्त्रियों के साथ अत्याचार न किया होता तो आज नोआखली और बिहार, पंजाब के दृश्य हमारे सामने न खड़े होते। यदि हिन्दू जाति ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" तथा "स्वं-स्वयं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्व मानवाः" के आर्य चक्रवर्ती साम्राज्य के स्वप्न लिये होते बृहत्तर भारत की उड़ान ली होती तो आज पाकिस्तान के नारे न बुलन्द होते।

आज की अन्धियारी रात में महर्षि के विचारों की किरणों से ही शिव प्रभात का दर्शन हो सकेगा।

तभी शिवरात्रि का सच्चा शिव प्रभात देख सकेंगे।

शिवरात्रि का महत्व

कोई समझो या मत समझो शिवरात्रि महत्ता और कहीं।
पर आर्य जनों के लिए नहीं ऐसा सुपर्व सिरमौर कहीं॥

अठारह सौ चौरासी का शिवरात्रि पर्व यदि आता ना।
पाकर सद्ज्ञान मूलशंकर श्री दयानन्द बन पाता ना॥

होते न दयानन्दर्षि न था फिर आर्य जाति को ठौर कहीं।
फिर दयानन्द यति को मिलते कैसे गुरु विरजानन्द दण्डी॥

कब होता वेदों का प्रचार फहराती कहां ओम् झण्डी।
क्या मिटता छुआछूत जैसी भद्दी रस्मों का तौर कहीं॥

शिवरात्रि पर्व पर ढोंग रचा कोरा भक्तों ने शिवव्रत का।
पर वह शिवरात्रि टंकारा की उद्धार कर गई भारत का॥
गर वह नहीं आती तो होता क्या नव जागृति का जोर कहीं॥

शिवरात्रि पर बाल मूल ने शिव का सच्चा अर्थ किया।
कल्याण उन्हीं का हुआ जिन्होंने तत्व अर्थ वह समझ लिया॥

समझाये से ना समझ सकें क्या उस पर चलता जोर कहीं।
बस रात जगा करते-करते निज जीवन सारा बिता दिया॥

शिवरात्रि पर्व से बतलाओ तुमने क्या-क्या उपदेश लिया।
अब रहा भतगैल शोर कहीं है भंग चरस का दौर कहीं॥

हे आर्य बन्धुओं सुनो विनय ऋषिबोध रात्रि उत्सव मानो।
मन वचन कर्म से वैदिक पथ पर चलने का दृढ़ प्रण ठानो।
सुख शान्ति मिले ऋषि शिक्षा पर यदि करो लाखमत और कहीं॥

—स्वर्गीय श्री [illegible] शर्मा

वैदिक धर्म और वेदान्त

—सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा —

सनातनधर्मी वा शंकर के मतानुयायी-ऋग्वेद के इस मन्त्र का अर्थ पूर्णतया मौलिक रूप में ध्यान न देकर इसे एक सम्प्रदायवाद की ओर अनर्थ करके ले जाते हैं मन्त्र ऋग्वेद का इस प्रकार है:—

यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम् ।

स्युष्टे सत्या इहाशिषः ।। (ऋ० ८।४४।२३)

शब्दार्थ—(यत-अग्ने) हे परमात्मन् जबकि (अहं त्वं स्याम्) मैं तू हो जाऊं (वा) और (त्वां घा-अहं स्याम्) तू भी मैं हो जा (ते आशिषः सत्याः स्युः तेरी आशीर्भावनायें एवं शिक्षायें सत्य हो जायें ।

इस मन्त्र में अस्ये (वा) शब्द को (विकल्पार्थ) (या) में रख कर हे परमात्मन् ! मैं तू हो जाऊं (वा) या तू मैं होजा, इनमें से एक अवश्य कोई होजा । यदि मैं तू नहीं हो सकता हूं, तो तू मैं होजा और जो तू मैं नहीं हो सकता है तो मैं तू हो जाऊं । इनमें कोई एक सम्भव हो, वह हो जाना चाहिये । ऐसे कथन कर अपने-अपने अभिप्राय को साधने का यत्न करते हैं ।

पौराणिक सम्प्रदाय इससे अवतारवाद सिद्ध करना चाहता हुआ कहता है कि हे परमात्मन् ! यदि मैं तू नहीं हो सकता हूं तो तू मैं होजा, शरीर धारण कर ले भक्त तरण के लिये मानव देह में अवतार लेलें ।

नवीन वेदान्ती—इससे अपने को ब्रह्म बनाने या जीव का ब्रह्म बन जाना सिद्ध करना चाहता हुआ कहता है कि हे परमात्मन् ! यदि तू मैं नहीं बन सकता है तो तू मैं हो जाऊं, मैं ब्रह्म बन जाऊं ।

विवेचन

उक्त सम्प्रदाय के वादों में एक पक्ष सम्भव और एक पक्ष असम्भव ठहरता है । जो-जो सम्भव वह-वह सत्य ठहरता है और जो असम्भव वह सत्य सिद्ध होता है । परन्तु वेद ने दोनों पक्षों को -

स्युष्टे सत्या इहाशिषः । सत्य कहा है परन्तु तू, मैं हो जाना ब्रह्म का जीव बन जाना । सत्य नहीं किन्तु मिथ्या रूप में मानता है कि ब्रह्म ने अपने में जीव की मिथ्या कल्पना कर ली । किन्तु वेद तू का मैं हो जाना भी सत्य कहता है । अतः यह-मन्त्र नवीन वेदान्त का समर्थक न हुआ—किन्तु विरोधी हुआ । मैं का तू हो जाना और तू का मैं हो जाना दोनों पक्ष वैदिक दृष्टि से सत्य कहने से यहां मन्त्र में (वा) शब्द विकल्पार्थ न होकर (च) के अर्थ समुच्चयार्थ में हैं । निरुक्त में (वा) का समुच्चयार्थ बतलाया भी है । (वा अथापि समुच्चयार्थे वायुर्वा त्व मनुर्वात्वा) निरु० १।४ के साथ में वा के समुच्चयार्थ होने में (वा) शब्द सार्थक है ।

(च) अप्यर्थ (अपि, भी के अर्थ में आता है तब अर्थ हुआ कि—हे परमात्मन् ! मैं तू हो जाऊं और तू भी मैं होजा, दोनों का समुच्चय है । दोनों सत्य है दोनों सम्भव हैं । दोनों पक्षों के सम्भव की स्थिति है समाधि वा उपासना योग की, तभी यह मन्त्र समाधि या उपासना योग का प्रदर्शक है समाधि या उपासना की दशा में, उपास्य के गुण उपासक में आ जाया करते हैं ।

ऋषि दयानन्द ने भी स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में स्पष्ट लिखा है तथा वेद में भी "तेजोऽसि तेजोमयि धेहि" अग्नि में पड़ा लोहा भी अग्नि के प्रकाश और ताप को ले प्रकाशमान व ताप वाला बन जाता है । इसी प्रकार उपासक भी उपास्य ब्रह्म के आनन्द का भोग करता ही है ।

वेदान्त सूत्र में कहा है—

भोगमात्रस्सम्म लिंगाच्च । (वेदान्त ४।४।२१)

उपनिषद में भी कहा है कि—रसो वै सः । सं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति । (तै० २।७) यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् ।

तदा विद्वान् पुण्य पापे विधूय निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति । मुण्ड ३।१।३

बस यही बात प्रस्तुत वेद मन्त्र में "मैं का तू हो जाना" कहा है अब रहा—तू भी मैं होजा । सो वह अनन्त परमात्मा समाधिस्थ वा उपासना योगी के आधारित हो जाता है । अल्प देशस्थ सा बन जाता है । जैसे अग्नि लोहे के गोले में प्रवेश कर गोल रूप में भासित होने लगती है । जीवात्मा हृदय प्रदेश में है—

अगुष्ट मात्र. पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः । तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीका धैर्येण ।।कठो० ६।१७

तब ब्रह्म का साक्षात् भी हृदय प्रदेश में होने से ब्रह्म भी जीवात्म प्रदेशीय हो जाता है । वेदान्त में कहा है कि—

अर्भकौक स्वात्तद्व्यपदेशाच्च नेतिचेन्न निचाय्यत्वादेवं व्योमवच्च ।। वे० १।२।७

यहां सूत्र में हृदय प्रदेशीय आत्मवर्ती परमात्मा को निचाय्य उपासक का दृष्टव्य होने से कहा है तथा "अल्पश्रुति' अल्पस्थानत्व श्रुति परमात्मा की —

'अनुकृतेस्तस्य च'वे० १।३। २ अनुष्ठान उपासनानुष्ठान क कारण कही है—उपनिषदकार ने कहा है कि—

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति ईशानो । भूतभव्यस्य ।

बस यही कथन वेद में कहा है, तू का मैं हो जाना कहा है । महर्षि दयानन्द ने भी समाधि का स्वरूप प्रस्तुत कर, "यदग्ने स्याम हं त्वं···।" के अनुसार ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में दिया है कि जैसे अग्नि में लोहा अग्नि रूप हो जाता है वैसे अपने को परमात्मा के प्रकाशस्वरूप ज्ञानस्वरूप और आनन्दस्वरूप में निमग्न कर देना । वेद मन्त्र में यदग्ने' में अग्निस्वरूप परमात्मा कहा है—वह अग्नि में लोहे के गोले का दृष्टान्त मन्त्राशय को स्पष्ट करने में सुसंगत है । लोहे का गोला अग्नि के संग से प्रकाशवान और तापवान अवश्य बनजाता ।

परन्तु अपने गोल स्वरूप को नहीं छोड़ा और अग्नि भी गोले में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

शांकर अद्वैत और दयानन्द-दर्शन

धर्मवीर शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य बी-१/५१, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

अपने अस्तित्व की अनुभूति सभी को होती है। मैं क्या हू, कौन हूँ—यह प्रश्न बाद का है। इसके अतिरिक्त यह प्रश्न भी उठना स्वाभाविक है कि मुझसे भिन्न और भी कोई तत्व है। है तो किस प्रकार का और कितना। इस प्रकार दार्शनिक ऊहा ने सृष्टि के मूल तत्वों की खोज मे अथक परिश्रम किया है।

प्रस्तुत लेख में अद्वैत वेदान्त की शाकर शाखा के प्रवर्तक शकराचार्य तथा आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलनात्मक समीक्षा करने का प्रयास किया जायेगा।

श्री शकराचार्य का दर्शन एक तत्ववादी है। वे जीव को ब्रह्म का ही एक अ श मानते हैं—ममैवाशो जीव लोके जीवभूत सनातन। (गीता १५-७) शाकरभाष्य—मम एव परमात्मन. अशो भाग अवयव एक देश इति अनर्थान्तर जीवलोके जीवभूतो भोक्ता कर्ता इति प्रसिद्ध। उनकी दृष्टि मे जगत् मिथ्या—आभास मात्र है तथा मात्र ब्रह्म ही सत्य है, ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या।

जगत् को मिथ्या प्रतिपादित करने के लिये उन्होने अध्यास की कल्पना की है। अध्यास का अर्थ है—अतस्मिंस्तद् बुद्धि अर्थात् एक वस्तु में अन्य वस्तु की विद्यमानता की बुद्धि कर लेना। इसका मूल है अविद्या—अविवेक। रज्जु (अधिष्ठान) मे आवरण और विक्षेप के कारण अन्य वस्तु सर्प का आरोप हो जाता है। अग्नि मे दाहकता गुण के समान ईश्वर मे एक शक्ति है—माया। यह दो प्रकार से कार्य करती है। १—जगत् के आधारभूत तत्व ब्रह्म का यथार्थ स्वरूप छिपा देना। २—ब्रह्म को संसार के रूप मे भासित करना। जिस प्रकार रस्सी में साप अध्यस्त हो जाता है और भ्रम के शिकार व्यक्ति को भय की प्रतीति होती है, किन्तु यह रस्सी है ऐसा यथार्थ बोध होने पर भयादि की स्वत निवृत्ति हो जाती है। वैसे ही ब्रह्म मे जगत् का जो अध्यास हो रहा है वह आवरण या विक्षेप के हटते ही समाप्त हो जाता है तथा ब्रह्म शेष बचा रहता है।

ब्रह्म ज्ञानी के लिये जगत् अस्तित्व-हीन हो जाता है। यह ही जगत का मिथ्या होना है। ऐसा ब्रह्म ज्ञानी जीते जी ही मुक्त हो जाता है। गीता के ५वें अध्याय के २४वें श्लोक पर शाकर भाष्य है—य ईदृश: स योगी ब्रह्म-निर्वाण ब्रह्मणि निर्वृति मोक्षमिह जीवन् एव ब्रह्म भूत सन् अधि गच्छति।

आचार्य शकर के अनुसार ब्रह्म का जगत् के रूप मे जो विकार है वह प्रतिभासिक है, वास्तविक नहीं। जगत् मूल तत्व का विवर्त है परिवर्तित या परिणत रूप नही है। माया विशिष्ट ब्रह्म सृष्टि के रूप में प्रकाशित हो रहा है। इसलिये सद्ज्ञान के उदय काल मे ही ससार की निवृत्ति हो जाती है।

कर्तृत्व ब्रह्म का स्वाभाविक गुण नहीं है, आरोपित या उपाधिजन्य है। उपाधि का अर्थ है अन्य-ससर्ग। माया अर्थात् कारणोपाधि के संसर्ग से ब्रह्म ईश्वर बन जाता है तथा अविद्या अर्थात् कार्योपाधि से ब्रह्म जीवत्व को प्राप्त कर लेता है। कारण (माया) कार्य (अन्त-करण से पृथक् केवल ब्रह्म रह जाता है—

कार्योपाधिरयं जीव कारणोपाधिरीश्वर।
कार्य कारणतां हित्वा पूर्ण बोधोऽव शिष्यते॥

वेदान्त में छ पदार्थ अनादि माने गये हैं—

जीवेशो च विशुद्धा चित् विभेदस्तु तयोर्द्वयो।
अविद्या तच्चितोर्योग षडस्माकमनादय॥

अर्थात् जीव, ईश्वर, ब्रह्म जीव और ईश्वर का विभेद, अविद्या, अविद्या का चेतन से योग ये षट् पदार्थ अनादि हैं। इनमे प्रागभाव की तरह (घट की उत्पत्ति से पूर्व घट का अभाव तथा बन जाने पर अभाव की समाप्ति), पाच अनादि हैं, किन्तु सान्त भी, क्योंकि विवेक ही पाचों की समाप्ति हो जाती है। केवल ब्रह्म (विशुद्धा चित्) अनादि और अनन्त है।

आचार्य शकर प्रत्यक्षादि प्रमाणो को भी, लौकिक अनुभव को अपूर्ण अतएव अप्रमाणिक मानते हुए, अस्वीकार करते हैं। उनके अनुसार केवल शब्द प्रमाण ही मान्य है। शब्द प्रमाण को प्रत्यक्ष मानते हैं—

'प्रत्यक्ष श्रुति।"

प्रत्यक्षादि को अप्रमाण करने मे भी अध्यास आडे आ जाता है। उनका कहना है कि देहेन्द्रिय मे आत्मा के अध्यास के कारण मैं हू। ऐसी प्रतीति के अनन्तर प्रमातृत्व उत्पन्न होता है। और क्योंकि यह अविद्या जन्य है, इसलिये इस व्यापर, इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान भी अविद्या का परिणाम होने से अविश्वसनीय है, सासारिक विषय प्रतीत होते हैं, अत सत् हैं। साथ ही क्योकि अन्य प्रतीति से बाधित होते हैं या विकारशील हैं, अत असत् भी हैं। उन की यह सत् असत् से विलक्षणता उन्हे तथा उनकी जननी अविद्या, माया को अनिर्वचनीय सिद्ध करते हैं।

कार्य कारण से भिन्न पदार्थन्तर या परिणाम नहीं होता, वह कारण में सत् (वर्तमान) रहता है। सत्कार्यवाद की यह व्याख्या साख्यमत से भिन्न है। शकर स्वामी ब्रह्म को जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान मानते हैं। और क्योंकि ब्रह्म (जगदुपादान) त्रिकाल सत्य है, अत कार्य जगत् भी त्रिकाल मे भी अपना सत्व नही खोता—यथा च कारण ब्रह्म त्रिषु कालेषु सत्व न व्यभिचरति एव कार्यमपि जगत् त्रिषु कालेषु सत्व न व्यभिचरति। ब्रह्मसूत्र १।१।१६ इस प्रकार नाम रूपात्मक जगत् सत्तारूप से सत् किन्तु विशेष रूप से पारमार्थिक दृष्टि से असत् है।

भिन्न-भिन्न जलाशयों में चन्द्र प्रतिबिम्ब के समान भिन्न-भिन्न अन्त करणो मे प्रतिबिम्बित ब्रह्म ही जीव है। घटमठादि के उपाधिभेद से जिस प्रकार व्यापक आकाश परिच्छिन्न-सा प्रतीत होता है, वैसे ही सर्वव्यापी ब्रह्म अविद्या जन्य उपाधि भेद से पृथक् पृथक् जीव रूप मे भासित होता है। उपाधिया टूट जायें तो निरुपाधिक शुद्ध ब्रह्म शेष रह जाये। 'तत् त्वमसि' अद्वैत वेदान्त का आदर्श वाक्य है जिसका अर्थ है—तत् अर्थात् परोक्ष, सर्वज्ञ व उपाधि-रहित ब्रह्म त्वम् अर्थात् अपरोक्ष, अल्पज्ञ व उपाधि विशिष्ट चैतन्य अथवा जीव असि है।

तत् की तात्कालिकता और त्वम् की एतत्कालिकता के कारण अन्वय में उत्पन्न विरोध का परिहार भाग त्याग लक्षण (जहद् जहल्लक्षणा) द्वारा उभयनिष्ठ चैतन्य के ग्रहण द्वारा हो जाता है। इस प्रकार जीव और ब्रह्म में अभेद सिद्ध हो जाता है।

यह शांकर वेदान्त का संक्षिप्त विवेचन है। शंकर स्वामी का अद्वैतवाद पूर्णतः एक तत्त्ववाद (Absolute monism) है। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द तीन अनादि तत्त्व मानते हैं—ईश्वर, जीव तथा जगत् का कारण (प्रकृति) इसके समर्थन में ऋग्वेद का मन्त्र प्रस्तुत करते हैं—द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति। यह आलंकारिक वर्णन है ईश्वर, जीव और प्रकृति का। ईश्वर और जीव दो पक्षियों की भांति मित्रभाव से प्रकृति रूपी वृक्ष पर रहते हैं। दोनों में एक (जीव) पिप्पल अर्थात् कर्म-फल का भोग करता है, किन्तु दूसरा (ईश्वर) फल-भोग न करता हुआ भीतर-बाहर प्रकाशित हो रहा है। श्वेताश्वतर उपनिषद् से भी त्रैतसिद्ध के लिये यह प्रमाण प्रस्तुत करते हैं—

अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः॥

इसमें तीन बार अज शब्द का प्रयोग है। अज अर्थात् जिसका जन्म न हो। प्रकृति, जीव तथा ईश्वर अज हैं। इनका कोई कारण नहीं है। वे तीनों जगत् के (अपने-अपने) ढंग से कारण हैं। प्रकृति (परमाणु रूप) जगत् का उपादान कारण है। ईश्वर मुख्य निमित्त कारण तथा जीव साधारण निमित्त कारण है। ज्ञान (ईश्वर और जीव का) दिशा, काल, आकाशादि जगत् के साधारण कारण हैं। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास के सृष्टि-उत्पत्ति-प्रकरण में स्वामी जी ने विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डाला है।

सप्तम समुल्लास में ईश्वर और जीव विषय पर स्वामी जी ने जो विचार दिये हैं उनका सार यह है। ईश्वर और जीव दोनों चेतन रूप हैं। परमेश्वर का कार्य है—सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय सब का नियमन तथा जीव को कर्मानुसार फल देना। जीव के कर्म हैं—सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन तथा शिल्प-विद्यादि में दक्षता प्राप्त करना। ईश्वर में नित्य ज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं तथा जीव में इच्छा-द्वेषादि (न्यायोक्त) एवं प्राणापान, निमेषोन्मेषादि (वैशेषिकोक्त) गुण हैं। जीव ये गुण परमात्मा से भिन्न हैं। जीव के उक्त गुणों का सम्बन्ध शरीर से तब तक रहता है जब तक जीव शरीर में रहता है। शरीर द्वारा इनकी अभिव्यक्ति से आत्मा जो कि सूक्ष्म है, प्रकाशित होता है।

जीव अपने कर्त्तव्य-कर्मों में स्वतन्त्र है, किन्तु कर्म-फल प्राप्ति के सम्बन्ध में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र है। जीव अपने कर्मों का स्वतन्त्र कर्ता है, अतः कर्म-फल का भोक्ता भी अनिवार्य-रूप से है। पराधीन या ईश्वर प्रेरित होकर कर्म करने की स्थिति में जीव-फल भी क्यों भोगेगा। फिर तो जिसकी इच्छा, आज्ञा या प्रेरणा से कर्म सम्पन्न होगा उसी को पाप-पुण्य का भोक्ता मानना न्यायोचित है।

ईश्वर निराकार, निर्विकार तथा सर्वव्यापक है। जीव प्रति-शरीर भिन्न है किन्तु काल-परिच्छिन्न नहीं है। ईश्वर सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ है। ईश्वर कालातीत, क्लेश, कर्म-विपाक तथा आशय से अपरामृष्ट पुरुष-विशेष है। जीव के कर्मों की अपेक्षा से ईश्वर को त्रिकालज्ञ कह सकते हैं।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने तीन मौलिक तत्त्वों की सत्ता स्वीकार की है। इसे त्रैतवादी दर्शन कह सकते हैं। शंकर स्वामी के अद्वैतवाद में एक ब्रह्म तत्त्व को स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत लेख में दोनों की समीक्षा से यह जानने का प्रयास करना है कि दोनों में सत्य के अधिक समीप कौन है।

निस्सन्देह शंकराचार्य अद्वितीय प्रतिभा-सम्पन्न महापुरुष थे। उनकी तर्कशक्ति तथा नवीन से नवीन उदाहरण देने की अद्भुत क्षमता व संस्कृत भाषा पर अद्वितीय अधिकार जिज्ञासु को आपाततः चमत्कृत कर देते हैं। परन्तु थोड़ा-सा विचार करने के बाद ही उनकी प्रतिपादन शैली का चमत्कार कम होना प्रारम्भ हो जाता है। उन का सम्पूर्ण दार्शनिक चिन्तन अध्यास (Illusion) पर टिका हुआ है। अध्यास का अर्थ है एक वस्तु में अन्य वस्तु की बुद्धि—अतस्मिंस्तद् बुद्धिः। यह एक प्रकार का भ्रान्त प्रत्यक्ष है तथा सादृश्य मूलक है। कवियों ने अपने वर्ण्य का सौन्दर्यातिशय अभिव्यक्त करने के लिये ऐसे भ्रम का अपनी प्रतिभा से प्रयोग किया है। साकेत में उर्मिला की नाक में मोती को देखकर पचरस्त्र शुक मुख में अनार का दाना लिये हुए किसी अन्य शुक में भ्रम में पड़ जाता है। अभिज्ञान शाकुन्तल में नवयौवना शकुन्तला के अधर को विकसित अरविन्द समझकर भ्रमर स्पर्श करने का प्रयास करता है। किन्तु कवि और दार्शनिक में कदाचित् कोई बुनियादी अन्तर होता होगा कि शंकर स्वामी ने रस्सी में सांप के उदाहरण से जगत् का ही अवमूल्यन कर दिया।

देखना है, क्या रस्सी में सांप का उदाहरण जगत् के सम्बन्ध में पूर्णतया घटित भी होता है। रस्सी और सांप अपने-२ स्वरूप में दोनों सत् हैं। जिसने रस्सी को सांप समझा, उसने सांप को देखा होगा। भ्रान्ति दो समान गुण पदार्थों में सम्भव है। किन्तु यहां जगत् तो एक ही है और ब्रह्म जिसमें जगत् अध्यस्त है अतिपरोक्ष है। साथ ही, दोनों में गुण-धर्म की समानता भी नहीं है। वेदान्तमत में एक मिथ्या है दूसरा अनादि-अनन्त। निस्सन्देह जगत् परिवर्तन-शीलता और मिथ्या में अन्तर होना चाहिये, क्योंकि शांकर मत में मिथ्या का अर्थ वस्तु को परमार्थतः नकारना ही है। परिवर्तन वस्तु का पूर्णतः अभाव (Non-existence) तो नहीं है। जल-तत्त्व वाष्प तथा हिम में रूपान्तरित होता रहता है, किन्तु रहता तो है। एक प्रतीति अन्य प्रतीति से बाधित होती रहती है, इसलिये सब प्रतीतियां प्रतीतिकाल में सत् और प्रतीत्यन्तर से बाधित होने के कारण असत् कही गई हैं। इसलिए जगत् या उसका हेतु माया सत्-असत् से विलक्षण अर्थात् अनिर्वचनीय है। अनिर्वचनीय अर्थात् उसका निर्वचन—इदमित्थं व्याख्यान असम्भव है। डाक्टर भी अज्ञातहेतुक रोग का कारण एलर्जी बताकर पीछा छुड़ा लेते हैं। अद्वैत मत में जगत् की तीन दशा कही गई हैं प्रतिभासिक, व्यावहारिक तथा पारमार्थिक। तीनों में भेद क्यों है? ब्रह्म की निरन्तरता है तो तन्निष्पन्न जगत् में निरन्तरता क्यों नहीं है? कहा जायगा कि इसका कारण माया है किन्तु माया तो ब्रह्म की शक्ति है। शक्ति (गुण) शक्तिमान् (द्रव्य) से वह भी सर्वशक्तिमान् ईश्वर से अधिक प्रभावशालिनी कैसे हो गई? और यदि माया कोई भावात्मक पदार्थ है तो उसे त्रैतवादियों के अनुसार एक स्वतन्त्र तत्त्व (प्रकृति) ही क्यों न मान लिया जाय? जगत् को नकारने के लिये शांकर मत में विवरणवाद नाम के एक अन्यवाद ने जन्म लिया। विवर्त अर्थात् जागतिक परिवर्तन आभास मात्र है, यथार्थ नहीं। यथार्थ या परिणाम मान लेने पर कारण से पदार्थान्तर की उत्पत्ति माननी पड़ेगी। जो कारण में पूर्णतः उपस्थित न था। कारण और कार्य का अभेद अद्वैत मत में अभीष्ट है। इस दृष्टि से देखने पर दूध और दही एक ही हैं। अस्तु, यदि किसी बर्ती को प्रवाहिका होने पर खिचड़ी के साथ दूध दिया जाय तो उसे आपत्ति न होनी चाहिये। साथ ही, ऐसी स्थिति में नाम रूपात्मक जगत् खड़ा ही कैसे होगा। आयुर्वेद के अनुसार दूध व दही रस, गुण, वीर्य, विपाक क्या एक ही हैं? अस्तु, कहना चाहिये कि जगत् मात्र एक दृष्टि भ्रम ही नहीं है। यह वास्तविक है, ज्ञेय है और इसका अपना एक मौलिक आधार है जिसे महर्षि सम्मत त्रैतवाद में प्रकृति कहा गया है।

ब्रह्म को जगत् का उपादान (Material Cause) मानना भी बुद्धि-संगत नहीं है। महर्षि यहां समापत्ति दोष बताते हैं। आशय यह है कि यदि ब्रह्म से जगत् प्रादुर्भूत हुआ है तो जगत् विकारी कराना पड़ेगा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

शांकर अद्वैत दर्शन और दयानन्द : दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)

महर्षि दयानन्द ने श्री शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त की सप्तम और एकादश समुल्लास में समीक्षा प्रस्तुत की है। श्री शंकराचार्य अद्वैत तत्व के समर्थक हैं और महर्षि दयानन्द त्रैतवाद के। श्री शंकराचार्य ने अपने सिद्धान्त के समर्थन में उपनिषदों को आधार बनाया है और वेदान्तदर्शन की तदनुकूल व्याख्या की है। महर्षि दयानन्द ने वेदों को आधार बनाया है और वेदों के मन्त्रों से त्रैतवाद की स्थापना की है। साथ ही उपनिषदों और वेदान्तदर्शन के जो सन्दर्भ अद्वैतवाद के समर्थन मे दिए गए हैं, उनका अद्वैतवाद के खण्डन में अर्थ प्रस्तुत किया है।

शांकर अद्वैतवाद का अभिमत है कि ब्रह्म एक अनिर्वचनीय सत्ता है। वह निर्विकल्प निरुपाधि और निर्विकार है। ब्रह्म के स्वरूप निर्णय के लिये दो प्रकार के लक्षणों को स्वीकार किया है—(१) स्वरूप लक्षण, (२) तटस्थ लक्षण। स्वरूप लक्षण उसके तात्विक रूप का परिचय देता है और तटस्थ लक्षण उसके आगन्तुक गुणों का समावेश बताता है। इस लक्षण ब्रह्म को सत्य, ज्ञानरूप और आनन्दमय बताना 'स्वरूप लक्षण' है।

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।
(तैत्ति०उप० २,१,१)

विज्ञानमानन्दं ब्रह्म।
(बृहदा०उप० ३,९,२८)

ब्रह्म जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण है, यह आगन्तुक गुणों के समावेश के कारण तटस्थ लक्षण है। इस प्रकार ब्रह्म स्वरूप से तटस्थ, निर्लेप, निर्विकार और अकारण होते हुए भी सृष्टि की उत्पत्ति आदि का कारण होता है।

सृष्टि के कर्तृत्व के लिए माया की कल्पना की गई है। माया न सत् है, न असत्, न उभयरूप। वह सर्वथा अनिर्वचनीय और अत्यन्त अद्भुत रूप है।

सन्नाप्यसन्नाप्युभयात्मिका नो, महाद्भुताऽनिर्वचनीयरूपा ॥
विवेकचूडामणि श्लोक १११ ॥

इस माया को ही अध्यास, अध्यारोप, अविद्या आदि नाम दिए गये हैं। इस माया की दो शक्तियां हैं आवरण और विक्षेप। इनकी सहायता से ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। आवरण शक्ति ब्रह्म के शुद्ध स्वरूप को ढक लेती है और विक्षेप शक्ति ब्रह्म से आकाशादि पंचतत्वों को उत्पन्न करती है।

शक्तिद्वयं हि मायाया विक्षेपावृतिरूपकम्।
विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादि ब्रह्माण्डान्तं जगत् सृजेत्॥
अन्तर्दृग्दृश्ययोर्भेदं बहिश्च ब्रह्मसर्गयोः।
आवृणोत्यपरा शक्तिः, सा संसारस्य कारणम् ॥
दृग्दृश्यविवेक श्लोक १३,१५ ॥

निर्विकल्प ब्रह्म जब मायारूपी उपाधि से युक्त होकर सगुण रूप धारण करता है तो वह ईश्वर कहा जाता है। वह ईश्वर सृष्टि का कर्ता धर्ता और संहर्ता है। यह कारण शरीर है। कारण शरीर की समष्टि 'ईश्वर' अध्यक्ष है तथा कर्मफल का भोक्ता है।

जीव और ब्रह्म की एकता के समर्थन के लिये चार उपनिषद् वाक्य प्रस्तुत किये गये हैं। इन्हें महावाक्य कहा जाता है। इन चार महावाक्यों का स्वरूप है—

तत्त्वमसि (चैतन्यरूप से जीव ब्रह्म है)।
(छान्दो० उप० ६,८,७)

प्रज्ञानं ब्रह्म (ब्रह्म ज्ञानरूप है)
(ऐत०उप० ३,३)

अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ)
(बृहदा०उप० १,४,१०)

अयमात्मा ब्रह्म
(यह आत्मा ब्रह्म है)
(माण्डूक्य० २)

श्री शंकराचार्य ने अद्वैत मत के समर्थन के लिए उपनिषदों और वेदान्तदर्शन को मुख्यतया अपना आधार बनाया है। उन्होंने इसके लिए वेदों का आश्रय नहीं लिया है। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द ने त्रैतवाद के समर्थन में वेदों को आधार माना है। साथ ही उन्होंने उपनिषदों और वेदान्त दर्शन के सभी सम्बद्ध स्थलों की सप्तम और एकादश समुल्लास में व्याख्या करके सिद्ध किया है कि उपनिषदों और वेदान्त दर्शन के द्वारा अद्वैतवाद सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

यहां पर संक्षेप में आवश्यक प्रसंग उपस्थित किए जा रहे हैं। ऋग्वेद और अथर्ववेद में स्पष्ट रूप से त्रैतवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया गया है। एक मन्त्र में कहा गया है कि एक वृक्ष है, उस पर दो पक्षी बैठे हैं। उन दोनों पक्षियों में से एक मधुर फल का स्वाद लेता है और दूसरा पक्षी कुछ न खाता हुआ केवल साक्षी के रूप में रहता है। इस मन्त्र में वृक्ष के द्वारा प्रकृति का वर्णन है, फलभोक्ता पक्षी के द्वारा जीवात्मा का ग्रहण है और साक्षी के द्वारा जीवात्मा का ग्रहण है इस प्रकार मन्त्र तीन तत्त्वों की सत्ता मानता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन् अन्यो अभि चाकशीति ॥
ऋग्वेद १,१६४,२०, अथर्व० ९,९,२०, निरुक्त १४,३०

इसी प्रकार 'अस्य वामस्य०' मन्त्र में तीन नित्य तत्त्वों का भाई के रूप में उल्लेख है—ईश्वर, जीव, प्रकृति। ईश्वर पालक है, जीवात्मा भोक्ता है और प्रकृति रसाद से युक्त है।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्य० ॥ ऋग्वेद १,१६४,१, अथर्व ९,९,१

यजुर्वेद में ईश्वर जीव और प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता मानी गई है। परमात्मा व्यापक है और प्रकृति व्याप्य। दोनों पृथक् हैं।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किं च जगत्यां जगत्। यजु० ४०,१।

परमात्मा सबके अन्दर है और सबके बाहर है। यह परमात्मा और जीव की पृथकता सिद्ध करता है।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः। यजु० ४०,५

सारे प्राणी परमात्मा में हैं और सब प्राणियों में परमात्मा है। यह जीव और परमात्मा की पृथक् सत्ता बताता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं०। यजु० ४०,६॥

श्वेताश्वतर उपनिषद् में अनेक श्लोकों में तीन तत्त्वों की स्वतन्त्र सत्ता मानी गई है। एक प्रकृति है। यह नित्य है और सत्त्व, रजस् तथा तमस् गुणों वाली है तथा सृष्टि-निर्मात्री है। दूसरा नित्य तत्त्व जीवात्मा है। यह कर्म-फल-भोक्ता है। तीसरा नित्य तत्त्व परमात्मा है। वह फल भोग रहित है, केवल साक्षी है।

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनु शेते, जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः॥
श्वेताश्वर० ४, ५॥

इसी प्रकार त्रैतवाद का समर्थन करते हुए कहा गया है कि तीन नित्य तत्त्व हैं—एक सर्वज्ञ है, दूसरा अल्पज्ञ है और तीसरा भोग्य है। अन्यत्र कहा गया है कि जीव भोक्ता है, प्रकृति भोग्य है और परमात्मा प्रेरक है। इस प्रकार तीन नित्य तत्त्व (ब्रह्म) हैं।

ज्ञाज्ञौ द्वावजावीशानीशौ, अजा ह्येका भोक्तृभोगार्थयुक्ता।
श्वेताश्वर० १, ९॥

भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्॥
श्वेताश्वर० १, १२॥

इस प्रकार वेदों और उपनिषदों में अनेक स्थलों पर त्रैतवाद का समर्थन किया गया है।

आचार्य शंकर ने अद्वैत मत के समर्थन के लिये अध्यास, माया या अविद्या का आश्रय लिया है। अध्यास का अर्थ किया है—अतत् में तद्बुद्धि अर्थात् जो जैसा नहीं है, उसमें उसका बोध जैसे—शुक्ता या सीपी में रजत बुद्धि, रस्सी में सर्प का बोध आदि।

अध्यासो नाम अतस्मिन् तद्बुद्धिः। (उपोद्घात पृष्ठ ९)

अध्यास के द्वारा अद्वैत मत की सिद्धि नहीं की जा सकती है। अध्यास के लिये द्वैत मानना आवश्यक है। एक सत्य वस्तु और दूसरी असत्य वस्तु। सीपी और रजत (चांदी), सर्प और रस्सी दो भिन्न वस्तुएं हैं। एक में दूसरे का भ्रम अध्यास है। अद्वैतमत में ब्रह्म एक ही है, अतः उसमें दूसरे के भ्रम का प्रश्न ही नहीं उठाता है। यदि दूसरी कोई वस्तु है, जिसका उसमें भ्रम होता है तो द्वैत की सिद्धि होती है। इस प्रकार अध्यास अद्वैत मत के लिये घातक है।

आचार्य शंकर के मतानुसार ब्रह्म से भिन्न जीवात्मा नित्य नहीं माना जाता है। जीव को ब्रह्म का प्रतिबिम्ब स्वीकार किया जाता है। परन्तु वेदान्तदर्शन के अनुसार यह मत अमान्य है। वेदान्तदर्शन में एक भी सूत्र इस मत का पोषक नहीं है। इसके विपरीत वेदान्त-दर्शन के सूत्रों में जीवात्मा को अमर, नित्य, कर्त्ता और भोक्ता होना सिद्ध किया गया है। एक सूत्र में जीवात्मा में परमात्मा के प्रतिबिम्ब होने का खण्डन किया गया है। इसका ही संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

जीवात्मा का न जन्म होता है और न मृत्यु। वह अजर और अमर है।

नात्माऽश्रुतेर्नित्यत्वाच्च ताभ्यः। (वेदान्तदर्शन २,३,१७)

यही भाव कठोपनिषद् में भी दिया गया है। 'न जायते म्रियते वा विपश्चिद्०' (कठो० १,२,१८)। ऋग्वेद में भी जीवात्मा को अमर्त्य या अमर कहा गया है।

जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिः अमर्त्यो मर्त्येन सयोनिः।
ऋग् १, १६४, ३०॥

जीवात्मा नित्य है, अजन्मा है, अतएव उसे चेतना और ज्ञाता कहा गया है।

ज्ञोऽत एव। वेदान्त० २,३,१८

अन्यत्र भी वेदान्त दर्शन में जीवात्मा को नित्य कहा गया है।

तस्य च नित्यत्वात्। वेदान्त २,८,१६

जीवात्मा कर्त्ता है। अतएव उसके लिये विधि और निषेध [वाक्य प्रयुक्त हैं कि ऐसा करे और ऐसा न करे।

कर्त्ता शास्त्रार्थवत्त्वात्। वेदान्त० २,३,३३

एक सूत्र में जीवात्मा में परमात्मा के प्रतिबिम्ब का निषेध किया गया है।

अम्बुवदग्रहणात् तु न तथात्वम्। वेदान्त० ३,२,१९

परमात्मा और जीवात्मा का भेद बताते हुए कहा गया है कि परमात्मा द्युलोक आदि का आधार है, परन्तु जीवात्मा नहीं। ज्ञात होता है कि परमात्मा और जीवात्मा की सत्ता पृथक् हैं।

द्युभ्वाद्यायतनं स्वशब्दात्। वेदान्त० १,३,१
प्राणभृच्च। वेदान्त० १,३,४
भेदव्यपदेशात्। वेदान्त० १,३,५

आचार्य शंकर के अनुसार प्रकृति जगत् का उपादान कारण नहीं है, अपितु ब्रह्म ही अभिन्न-निमित्तोपादान कारण माना जाता है। परन्तु वेदान्त दर्शन में प्रकृति को जगत् का उपादान कारण बताया गया है। प्रकृति जगत् का उपादन कारण है, न कि स्वतन्त्र कारण।]

प्रकृतिश्च प्रतिज्ञादृष्टान्तानुपरोधात्। वेदान्त० १,४,२३

सृष्टि की उत्पत्ति में परमात्मा और प्रकृति दोनों कारण हैं। परमात्मा निमित्त कारण है और प्रकृति उपादान कारण।

साक्षाच्चोभयाम्नानात्। वेदान्त० १,४, २५

यद्यपि परमात्मा और प्रकृति दोनों ही सृष्टि की उत्पत्ति के कारण हैं, परन्तु परमात्मा निमित्त कारण और निर्देशक है तथा प्रकृति उसके अधीनस्थ रहते हुए उपादन कारण है। अतएव कहा गया है कि यह प्रकृति परमात्मा के अधीन होने से सार्थक है।

तदधीनत्वाद् अर्थवत्। वेदान्त० १,४, ३

एक सूत्र में अजा अर्थात् प्रकृति शब्द से सत्त्व रजस् और तमस् गुणों से युक्त प्रकृति का वर्णन है। प्रकृति त्रिगुणात्मक है।

ज्योतिरुपक्रमा तु तथा ह्यधीयत एके। वेदान्त० १,४,९

आचार्य शंकर के अनुसार जगत् मिथ्या है और वह स्वप्न के तुल्य अयथार्थ है। इस विचार का खण्डन वेदान्त दर्शन में प्राप्त होता है। इसमें जगत् को स्वप्न के तुल्य मिथ्या या अयथार्थ मानने का निषेध है। शंकराचार्य ने भी इस सूत्र के भाष्य में लिखा है कि जगत् स्वप्न आदि के तुल्य मिथ्या नहीं है।

वैधर्म्याच्च न स्वप्नादिवत्। वेदान्त० २,२,२९

इसके पश्चात् महावाक्य के रूप में प्रतिष्ठापित 'तत् त्वमसि' और 'अहं ब्रह्मास्मि' वाक्यों पर विचार आवश्यक है। 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूं) वाक्य किसी वैदिक संहिता का नहीं है, अपितु शतपथ ब्राह्मण का वाक्य है और इसे बृहदारण्यक उपनिषद् में उद्धृत किया गया है। यह वाक्य है—

ब्रह्म वा इदमग्र आसीत्, तदात्मानमेवावेत्—अहं ब्रह्मास्मि इति। ऋषिर्वामदेवः प्रतिपेदे—अहं मनुः अभवम्, अहं मनुः अभवम्, अहं सूर्यश्चेति। यो वेद अहं ब्रह्मास्मीति स इदं सर्वं भवति।

शतपथ० १४,४,२,२१-२२ बृहदा० १,४,१०

'अहं ब्रह्मास्मि' का भाव है कि मैं ब्रह्मरूप हो गया हूं। उपर्युक्त उद्धरण में ऋषि वामदेव का कथन है कि मैं मनु हो गया हूं, मैं सूर्य हो गया हूं। इसी प्रकार जो अपने आपको ब्रह्मरूप समझता है, वह सब कुछ ही जाता है। यह 'अहं ब्रह्म' वाक्य सापेक्षिक है। इसका

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द का हिन्दी को सारे देश की भाषा बनाने का महान् संकल्प

श्री डा० प्रशान्त वेदालंकार ७।२, रूप नगर, दिल्ली-११०००७

अहिन्दीभाषी होते हुए भी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी को सम्पूर्ण देश की भाषा बनाने का क्रियात्मक प्रयत्न किया था। पहले वे संस्कृत में भाषण किया करते थे और संस्कृत में ही ग्रन्थ रचना करते थे पर बाद में सन् १८७३ से ब्राह्मोसमाज के नेता बा० केशवचन्द सेन (जो स्वयं अंग्रेजी का प्रयोग करते थे) के परामर्श से अंग्रेजी सीखनी स्वीकार न कर उन्होंने हिन्दी में भाषण देना और हिन्दी मे ही ग्रन्थ रचना करनी आरम्भ कर दी। गुजराती पर भी उनका पूर्ण अधिकार था, पर कभी उन्होंने गुजराती का अनावश्यक प्रयोग नहीं किया, कोई ग्रन्थ गुजराती मे नहीं लिखा। यहा तक कि गुजरात और बम्बई में भी पहुँचकर उन्होने हिन्दी (जिसे वे आर्यभाषा कहते थे) का ही प्रयोग किया। दयानन्द का हिन्दी प्रयोग ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

दयानन्द का मत था कि हिन्दी द्वारा समस्त विशृंखलित भारत को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। दयानन्द ने बम्बई में आर्य समाज का संगठन करते हुए आर्य समाज के पांचवें नियम में संस्कृत और आर्यभाषा हिन्दी का पुस्तकालय स्थापित करना और 'आर्यप्रकाश' नामक हिन्दी पत्र निकालना समाज के लिए आवश्यक ठहराया। लाहौर के संगठन संस्कार मे एक उपनियम बनाकर सब आर्य समाजियों के लिए हिन्दी का सीखना आवश्यक कर दिया।

मथुरा में सन् १८७४ मे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान दयानन्द को हिन्दी मे बातचीत करता देखकर जवाहरदास जी ने कहा कि आपको संस्कृत में ही बोलते रहना चाहिए, परन्तु दयानन्द ने उनको समझा दिया कि लोकभाषा में उपदेश देने से मनुष्यों का अधिक हित होता है। हरिद्वार में एक दिन दयानन्द अपने आसन पर बैठे कुछ समझा रहे थे। मध्य में एक सज्जन ने निवेदन किया—यदि आप अपनी पुस्तकों का अनुवाद करा कर फारसी अक्षरों में छपवा दें, तो पंजाब आदि प्रान्तों में जो लोग देव नागरी अक्षर नहीं जानते उनको आर्यधर्म के जानने में बड़ी सुविधा हो जाय। दयानन्द ने उत्तर दिया 'अनुवाद तो सिर्फ विदेशियों के लिए हुआ करता है। देव नागरी के अक्षर थोड़े ही दिनों मे सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा का सीखना कोई कठिन काम नहीं है। फारसी और अरबी शब्दों को छोड़कर इस देश की सभ्य भाषा ही आर्यभाषा है। यह अति कोमल और सुगम है। जो इस देश मे उत्पन्न होकर अपनी भाषा के सीखने में कुछ परिश्रम नही करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है? उसमें धर्मलग्न है, इसका भी क्या प्रमाण है? आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं, परन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्याकुमारी एक ओर अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और प्रकाशित किये हैं।"

हिन्दी को समादृत करने के लिए उन्होंने अकेले स्वयं ही हिन्दी का प्रयोग नहीं किया वरन् इसके प्रचार के लिए वे अत्यन्त सतर्क थे। १४ अगस्त १८८२ को दयानन्द ने लाला कालीचरण रामचरण जी को पत्र में लिखा कि जहाँ तक हो सके आर्यभाषा को राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिए। १७ अगस्त १८८२ को दुर्गाप्रसाद जी को लिखा कि 'अति शोक करने की यह बात है कि आजकल सर्वत्र अपनी आर्यभाषा के राजकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ (भाषा के प्रचारार्थ जो कमीशन हुआ है) उसमें पंजाब, [illegible] परन्तु मध्यप्रान्त, फर्रुखाबाद, [illegible] सर्वत्र पत्र [illegible] मेमोरियल भिजवाइये। यह काम एक के करने का नहीं। और अवसर चूके वह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ तो आशा है कि मुख्य सुधार की नीव पड़ जाएगी। २६ अगस्त १८८२ को प० गोपालरायजी को लिखा कि 'आर्यभाषा के प्रचारार्थ भी आप स्वपुरुषार्थ प्रकट करेंगे।

दयानन्द व्यवहार मे नागरीलिपि के प्रयोग के विषय में अत्यन्त सतर्क थे। २० नवम्बर १८७८ को श्यामजी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखा कि 'अंकों को बांधकर अंग्रेजी और नागरी में लिखना।' उनके इस आदेश का एक बार पालन न करने पर उन्होने दुबारा लिखा कि 'अब की बार भी वेदभाष्य के लिफाफे के ऊपर देवनागरी नहीं लिखी गई, जो कहीं ग्राम में अंग्रेजी पढा न होगा तो अंक वहा कैसे पहुंचते होंगे और ग्रामों मे देवनागरी पढे बहुत काम होते हैं, इसलिए तुम बाबू हरिश्चन्द चिन्तामणि जी से कहो कि अभी इसी पत्र के देखते ही देवनागरी जानने वाला मुंशी रख लेवें। इस प्रकार हिन्दी का प्रयोग वे जन-सामान्य के लिए आवश्यक समझते थे।

दयानन्द ने राजस्थान के महाराजाओं को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दी। उदयपुर के महाराणा श्री सज्जनसिंह जी के लिए दिनचर्या आदि नियम लिखते हुए सातवें नियम में लिखा 'सदा सनातन वेदशास्त्र आर्य राजपुरुषों की नीति पर निश्चित रहकर इनकी उन्नति तन मन धन से सदा किया करें। इनसे विरुद्ध भाषाओं की प्रवृत्ति उन्नति करें व करावें।' साथ ही उन्होंने उदयपुर के महाराणा को प्रेरणा दी कि न्यायालयों में सारा काम हिन्दी भाषा में हो। जो कठिन शब्द अरबी के कानून की पुस्तकों में थे, उनके स्थान में हिन्दी के उपयोगी शब्द बता दिये। स्वामी जी ने इस कार्य का महत्व आधुनिक संघर्ष में बहुत अधिक है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि वे सरल और शुद्ध भाषा लिखने के पक्ष में थे। अपने लेखक ज्वालादत्त को उन्होंने कई बार शुद्ध और सरल भाषा लिखने का आदेश दिया। १९ अगस्त १८८३ को समर्थदास जी को एक पत्र में उन्होंने लिखा कि ज्वालादत्त भाषा भी अच्छी नही बनाता। कही अपनी ग्रामणी भाषा लिख देता है। अपने वेद भाष्य के सम्बन्ध मे उन्होंने कहा कि "मैंने इसका पूरा ध्यान रखा है कि संस्कृत और आर्यभाषा दोनों का सरल प्रयोग करूं ताकि उसे सभी समझ सकें।'

यहा यह भी उल्लेखनीय है कि दयानन्द हिन्दी के पक्षपाती होते हुए भी किसी भाषा से द्वेष नहीं करते थे। वे अंग्रेजी मे तथा मुसलमान को फारसी में पत्र लिखवाते थे। पर साथ ही उनसे यह आशा करते थे कि वे उन्हें हिन्दी हिन्दी मे पत्र लिखें। उन्होंनें अनेक विदेशी मित्रों को नागरी सीखने की प्रेरणा दी। विशेष रूप से एच. एस. अल्का और मैडम ब्लैवट्स्की को हिन्दी सीखने पर बल दिया। एक पत्र में उन्होंने लिखा—'यह सुनकर कि आपने नागरी पढनी आरम्भ दी, बहुत प्रसन्न हुआ।'

दयानन्द भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति के लिए नागरी सीखना तो आवश्यक समझते ही थे, पर साथ ही अन्य प्रान्तीय लिपियों के सीखने पर भी बल देते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि 'जब पांच-पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरो का अभ्यास करावें, अन्य देशीय (प्रादेशिक) भाषाओं के अक्षरों का भी।' सत्यार्थ प्रकाश के ४ थे समुल्लास में उन्होने वैश्य (व्यापार) के लिए देशो सभ प्रदेशों की भाषा जानने पर बल दिया है।

शांकर अद्वैत दर्शन

(पृष्ठ ८ का शेष)

अभिप्राय है कि तत्तुल्य मे अर्थात् उसके समान हो गया हूं। जैसे—'अह राजा' 'अह सिंह.' आदि वाक्यों में ऐश्वर्ययुक्त होने पर अपने आपको राजा कहना, या अत्यन्त शूरत्व के आधार पर अपने आपको सिंह (शेर) कहा जाता है, उसी प्रकार तत्त्वज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ व्यक्ति अपने आपको ब्रह्मत्वभावापन्न कहता है। ब्रह्म और ब्रह्मरूप में अन्तर है। एक वास्तविक है और दूसरा आरोपित या लाक्षणिक। 'मैं सिंह हूं' में साक्षात् शेररूपी पशु होना अभीष्ट नहीं है, अपितु उसके पराक्रमगुण का समन्वय अभीष्ट है। तपा हुआ लोहा अग्निरूप हो जाता है, परन्तु साक्षात् अग्नि नहीं। वह मूल रूप में लोहा ही है। इसी प्रकार तत्त्वज्ञानी तपोनिष्ठ साधक साधना के द्वारा ब्रह्मत्वभावयुक्त हो जाता है। आत्मा-परिष्कार के द्वारा निर्दोष, निर्लेप, निरहंकार आदि गुणों से युक्त हो जाता है। तद्रूपापत्ति या तद्रूपता को एकात्मा नहीं कहा जा सकता है। दोनों वस्तुएं भिन्न हैं, परन्तु गुणसाम्य के आधार पर उन्हें एकरूप कहा जाता है। इसी प्रकार 'तत्त्वमसि' इस वाक्य का भी अर्थ का अनर्थ किया गया है। मूल वाक्य इस प्रकार है—

'स य एषोऽणिमा, ऐतदात्म्यमु इदं सर्वम्, तत् सत्यम्, स आत्मा, तत् त्वमसि श्वेतकेतो इति।' छान्दोग्य उप ६,८,७

इसका अर्थ है—यह जो अणु या सूक्ष्मतमतत्त्व है, वह ही सबका मूल है। वह सत्य है। वह आत्मा है। हे श्वेतकेतु, वह आत्मा तुम हो।

छान्दोग्य उपनिषद् में यह सारा प्रसंग आत्मा या जीवात्मा के लिए है। इस प्रसंग में ९ उदाहरण देकर बताया गया है कि जीवात्मा अणुतत्त्व है। यह सूक्ष्मरूप में सर्वत्र व्याप्त रहता है। जिस अंश को जीवात्मा छोड देता है, वह अंश निष्प्राण या निर्जीव हो जाता है। एक सत् तत्त्व से सभी जीवों का विकास हुआ है, वही आत्मा है। आत्मा मनुष्यमात्र में व्याप्त है। उस आत्मा को जानना ही मनुष्यमात्र का लक्ष्य है।

इस महावाक्य में तत् शब्द से ब्रह्म का अर्थ लेना सर्वथा अप्रासंगिक है, यहां तत् शब्द आत्मा के लिये है। तत् शब्द नपुंसक लिंग है, आत्म पुंलिंग है, अतः यहां पर 'सः' (वह) कहना चाहिये, परन्तु 'तत्' शब्द का प्रयोग है अतः यह वाक्य में प्रयुक्त 'सत्यम्' के लिये है। वह जो अणुरूप में सर्वत्र व्याप्त सत् या सत्यरूप सत्ता है, वह तुम हो। इसमें आत्मा की एकता की अनुभूति का वर्णन किया गया है। यहां पर तत्-शब्द ब्रह्म का वाचक न होकर 'आत्मा' के लिये है। उस आत्मा के लिये ही दूसरा शब्द वाक्य में 'सत्यम्' दिया गया है। वह सत्यरूप या सत् तत्त्व आत्मा है, जो सर्वत्र व्याप्त है। वह सत् आत्मा मानव शरीर में है। उसको ही जानना मानव का लक्ष्य है।

'तत् त्वमसि' महावाक्य अद्वैत वेदान्त के अनुसार भागलक्षणा या जहदजहत्-स्वार्था लक्षणा मानी जाती है। इसका अभिप्राय यह है कि दोनों वस्तुओं में कुछ अंश छोड़ दिया जाता है और कुछ अंश ले लिया जाता है। जितने अंश में विषमता या असमानता है, उतना अंश छोड़ दिया जाता है और जितने अंश में समानता अंश ले लिया जाता है। ब्रह्म (परमात्मा) और जीवात्मा में आत्मा की समानता है। एक परम-आत्मा है, दूसरा जीव-आत्मा। दोनों चेतन हैं। दोनों में भेदक अंश हैं—परम और जीव। अतः परम और जीव को छोड़कर केवल आत्मा या चेतन तत्त्व लेकर दोनों की एकरूपता सिद्ध की जाती है।

यहां यह समझना आवश्यक है कि भागलक्षणा में भेद निरन्तर बना रहता है। दोनों को एकतत्त्व या एकरूप नहीं कहा जा सकता है। गुण-साम्य के आधार पर दोनों में एकतत्त्व की स्थापना की जा सकती है, परन्तु दोनों को एक नहीं कहा जा सकता है। दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहता है। धनी-निर्धन, गुणी-अगुणी, विद्वान्-मूर्ख का भेद होने पर भी हम मानवमात्र में मानवता के आधार पर एकत्व की अनुभूति कर सकते हैं। इसी आधार पर विश्वबन्धुत्व आदि की स्थापना की जाती है। परन्तु यह सब कुछ होने पर भी गुणमूलक भेदों को भुलाया नहीं जा सकता है। इसी प्रकार साधना आदि के द्वारा मानवीय दोषों को दूर करके ब्रह्म या परमात्मा से एकत्व की अनुभूति की जा सकती है। कतिपय गुणों के साम्य के आधार पर दोनों का एकत्व कहा जा सकता है, परन्तु मूलरूप में दोनों की स्वतन्त्र सत्ता विद्यमान रहेगी।

इस प्रकार विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की अपेक्षा महर्षि दयानन्द का त्रैतवाद अधिक युक्तिसंगत और प्रमाणसंगत है। वेद, उपनिषद् और स्वयं वेदान्तदर्शन त्रैतवाद का समर्थन करते हैं।

मध्वाचार्य का द्वैतदर्शन और स्वामी दयानन्द

ले०—प्रो० रत्नसिंह, बी-२१, गान्धी नगर गाजियाबाद

मध्वाचार्य को "पूर्ण प्रज्ञ" और "आनन्द तीर्थ" नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म ११९९ ई० में दक्षिण कनारा जनपद में उदीपी के निकट एक ग्राम में हुआ। छोटी आयु में ही उन्हों ने वैदिक ज्ञान में दीक्षा प्राप्त की, और संन्यास आश्रम में दीक्षित हो गए। उन्होंने विद्याध्ययन, चिन्तन, प्रार्थना और वाद विवाद में अनेक वर्ष व्यतीत किए। यज्ञों में पशुहिंसा की प्रथा को मिटाने का उन्होंने बहुत प्रयास किया। १२७८ ई० में ७९ वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ। शंकराचार्य की भांति इन्होंने भी, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् व भगवद्गीता का भाष्य किया। इनकी दार्शनिक विचारधारा का जन्म शंकर के अद्वैतवाद के विरोध में एक प्रतिक्रिया रूप में हुआ। इनके दर्शन को "विशुद्ध द्वैतवाद" नाम से जाना जाता है।

महर्षि दयानन्द का जन्म मध्वाचार्य के देहावसान के ५४६ वर्ष पश्चात् सन् १८२४ ई० में काठियावाड़ के मोरवी राज्य के टकारा नामक ग्राम में हुआ। २२ वर्ष की आयु में गृहत्याग कर इन्होंने संन्यास आश्रम ग्रहण किया और ५९ वर्ष की आयु प्राप्त कर सन् १८८३ ई० में परलोक गमन किया। महर्षि दयानन्द का अध्ययन ब्रह्मसूत्र-उपनिषद् व भगवद्गीता तक ही सीमित न था। वेद को स्वतः प्रमाण मानकर उन्होंने अपने दर्शन का आधार वेद को बनाया। महर्षि के दर्शन को त्रैतवाद के नाम से पुकारते हैं।

मध्वाचार्य और दयानन्द में लगभग साढ़े पांच शताब्दियों में का अन्तर है। इस अवधि में दार्शनिक क्षेत्र में अनेक मत उत्पन्न हुए। इन दोनों दार्शनिकों के मत में कई समताएं और कई असमताएं हैं। दार्शनिक दृष्टि से दोनों वस्तुवादी हैं। दोनों ने बाह्य जगत्को शंकर की भांति मिथ्या न मानकर यथार्थ स्वीकार किया है। ईश्वर, जीव, व प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता में दोनों का विश्वास है। दोनों के मतानुसार ईश्वर जगत् का निमित्त कारण और प्रकृति उपादान कारण है। दोनों ने मानव जीवनका परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति बतलाया है। प्रस्तुत लेख में हम मध्व व दयानन्द के ईश्वर व जीवात्मा सम्बन्धी विचारों तक ही अपने को सीमित रखेंगे।

ईश्वर :

मध्व ने दो प्रकार की सत्ताएं स्वीकार की हैं—स्वतन्त्र व परतन्त्र। ईश्वर की स्वतन्त्र सत्ता है। वह स्वयभू है। वह निर्गुण नही है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप, अनादि, अनन्त, निर्विकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, नित्य और निर्विकार है। उसमे असंख्य गुण हैं। ईश्वर वेदों का रचयिता है। वह सृष्टि की रचना, स्थिति व संहार का कारण है। जयतीर्थ ने अपनी पुस्तक तत्वप्रकाशिका में लिखा है "ब्रह्म जगत् का निमित्त कारण रूप में पिता पुत्र का निमित्त करण है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह असाधारण शक्तियो का पुंज है। वह असंभव को संभवकर सकता है। जीवके अज्ञान का कारण ईश्वर की माया है। अविद्या के कारण जीवात्मा के स्वाभाविक गुण, ज्ञान व आनन्द ढके रहते हैं। इस प्रकार अविद्या का कारण होने से ईश्वर जीव के बन्धन का भी कारण है। ईश्वर परम दयालु भी है। वह अपनी दया से जीव के बन्धन काटकर उसे मुक्ति प्राप्त कराता है। इसलिए जीवात्मा के बन्धन व मुक्ति का कारण ईश्वर है। आवश्यकतानुसार समय समय पर ईश्वर अवतार धारण करता है।

मध्वाचार्य की भांति महर्षि दयानन्द ने भी ईश्वर को सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, नित्य और निर्विकार आदि स्वरूप वाला स्वीकार किया है। ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में दोनों की कई बातों में समानता है। परन्तु मध्वाचार्य की कई बातों से महर्षि दयानन्द के विचारों का मेल नहीं खाता। मध्वाचार्य ईश्वर को निर्गुण नही मानते। दयानन्द के मत में ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों है।" "जैसे अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण हैं। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमें केवल निर्गुणता व केवल सगुणता हो, किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान, बलादि गुणों से सहित होने से सगुण और रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक होने से निर्गुण कहाता है।

(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास-७)

मध्वाचार्य का यह कथन कि ईश्वर सर्वशक्तिमान होने के कारण असंभव को संभव कर सकता है, युक्त नहीं है। वस्तुः मध्व ही नहीं बल्कि अनेक विद्वान इस भ्रम के शिकार रहे हैं कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है। महर्षि दयानन्द ने इस विचार धारा का प्रबल खण्डन किया है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास में महर्षि लिखते हैं, "जो तुम कहो कि (ईश्वर) सब कुछ चाहता और कर सकता है तो हम तुमसे पूछते हैं कि परमेश्वर अपने को मार अनेक ईश्वर बना स्वयं अविद्वान चोरी, व्यभिचादि, पापकर्म कर और दुःखी भी हो सकता है। जैसे ये काम ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव से विरुद्ध है तो जो तुम्हारा कहना है कि वह सब कुछ कर सकता है, यह कभी नहीं घट सकता"। इसी बात को और स्पष्ट करते हुए वे सत्यार्थ-प्रकाश अष्टम् समुल्लास मे लिखते है—"परन्तु क्या सर्वशक्तिमान, वह कहाता है कि जो असभव बात को भी कर सके? जो कोई असंभव बात अर्थात् जैसा कारण के बिना कार्य को कर सकता है तो बिना कारण दूसरे ईश्वर की उत्पत्ति और स्वय मृत्यु को प्राप्त जड़, दुःखी, अन्यायकारी, अपवित्र और कुकर्मी आदि हो सकता है वा नहीं। जो स्वाभाविक नियम अर्थात् जैसा—अग्नि उष्ण, जल शीतल और पृथिव्यादि सब जड़ों को विपरीत गुण वाले ईश्वर भी नहीं कर सकता और ईश्वर के नियम सत्य और पूरे हैं इसलिए परिवर्तन नहीं कर सकता"। स्पष्ट है कि सर्वशक्तिमान का यह अर्थ नहीं है कि ईश्वर जो चाहे सो करे। इस शब्द का अर्थ केवल इतना ही है कि "परमात्मा बिना किसी के सहाय के अपने सब कार्य पूर्ण कर सकता है।"

मध्वाचार्य का मत कि समय समय पर ईश्वर अवतार धारण करता रहता है, महर्षि दयानन्द को मान्य नहीं है। अनेक युक्तियों एवं शब्द प्रमाण के आधार पर उन्होंने अवतारवाद का खण्डन किया है। जीवात्मा के बन्धन व मोक्ष का कारण है, मध्वाचार्य के इस मत से महर्षि दयानन्द असहमत हैं। उनके मतानुसार जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। अपने स्वतन्त्रतापूर्वक किए गए पवित्र, कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्या भाषणादि कर्म पाषाण—मूर्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बंधन होता है।

जीवात्मा :

मध्वमतानुसार जीवात्मा ज्ञाता, कर्ता व भोक्ता है। यह निश्चय एव नित्य है। जीवात्मा का शरीर व इन्द्रियों से सयोग होता जन्म कहलाता है और वियोग होना मृत्यु। इस मत की एक विचित्र विशेषता यह है कि जीवात्मा को शरीरधारी सरकार तत्व माना गया है। इस मत के समर्थन मे तर्क यह है—चेतना व आनन्द जीवात्मा का स्वभाव है। दीप के प्रकाश के समान सभी प्रकाशमान द्रव्यों में कुछ न कुछ आकार रहता है। यतः जीवात्मा स्व प्रकाशमान है अतः इससे भी कोई आकार अवश्य रहना चाहिए। यहां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यदि जीवात्मा शरीरधारी है तो इसके शरीर का क्या स्वरूप है। निःसन्देह जीवात्मा का शरीर भौतिक नहीं हो सकता क्योंकि वैसा मानने से यह विनाशशील मानना पड़ेगा। अतः यह शरीर अभौतिक है। माध्व दर्शन के इस मत को देहात्मवाद कहते हैं।

इस मत की एक विलक्षणता यह है कि जीवात्मा को अपनी सत्ता के लिए ईश्वराश्रित मानते हुए भी अपने कर्मों के लिए स्वय उत्तरदायी, अनादि व नित्य माना गया है। आनन्द जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है जो अविद्या के आवरण से सुप्त रहता है। जीवात्मा की चेतना व आनन्द ईश्वर की चेतना आनन्द से भिन्न है। जीव संख्या मे अनेक हैं। उनकी भिन्ता का कारण उनका अदृष्ट है। जीव और ईश्वर में भेद है। ईश्वर विभु है और जीवात्मा अणु या परिछिन्न है। जीवात्मा के परिमाण के सम्बन्ध में तीन प्रसिद्ध मत हैं—अणुपरिमाणवाद, मध्यम परिमाणवाद तथा विभु परिमाणवाद। इनमें से दूसरे मत को केवल जैन मानते हैं जिसके अनुसार जीव व शरीर आकार में समान है। मध्व का अणु परिमाणवाद युक्तियुक्त है। ब्रह्मसूत्र २-३-१९ जीवात्मा के उत्क्रान्ति, गति और आगति तीन धर्म माने गए हैं। यदि जीवात्मा को सर्वव्यापक माना जाये तो उस अवस्था में जीवात्मा में उक्त तीन धर्मों का

(शेष पृष्ठ १६ पर)

शांकर और दयानन्द-दर्शन

(पृष्ठ ९ का शेष)

ज्ञानमय क्यों नहीं है ? क्योंकि कारण के गुण-कार्य में अवश्य आते हैं—कारण गुणपूर्वकः कार्य गुणो दृष्टः। और ब्रह्म को ही जगत् रूप में अभिव्यक्त मानें अभिन्नरूप से तो ब्रह्म में स्थूलता आदि दोष मानने पड़ेंगे।

अब विचार करें अद्वैताभिमत जीव के स्वरूप पर। अद्वैत मत में जीव ब्रह्म का ही एक देश है जो अन्तःकरण में प्रतिबिम्बित है। जैसे चन्द्रमा जलाशयों में प्रतिबिम्बित है वैसे ही यहां प्रश्न उठता है निराकार ब्रह्म का प्रतिबिम्ब कैसा, दूसरी बात—क्या किसी ने देखा है जलाशयगत चन्द्र प्रतिबिम्ब को जलाशयान्तर में यात्रा करते हुए? पर अन्त:करण में प्रतिबिम्बित ब्रह्म तो कर्म-बन्धन में पड़कर शरीर से शरीरान्तर की यात्रा करता रहता है। गीता १५।८ पर शांकर भाष्य देखें—पूर्वस्मात् शरीरात् शरीरान्तरं मनः षष्ठानि इन्द्रियाणि गृहीत्वा संयाति इस प्रकार शांकर मत का कोई भी उदाहरण ऐसा शायद ही मिले जो साध्य के साथ पूर्णतया संगत होता हो। इसके अतिरिक्त यह भी चिन्तनीय है कि यदि जीवात्मा और परमात्मा परमार्थत: अभिन्न हैं तो बन्ध और मोक्ष किसका ? क्या अन्त करण से सम्पृक्त जीव भूत ब्रह्म अपने स्वरूप को विस्मृत कर देता है ? अस्तु, बन्ध-मोक्ष व पाप-पुण्य तभी उपपन्न माने जा सकते हैं जब जीव की महर्षि-मतानुसार स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार की जाय।

स्वामी जी जीव तथा ईश्वर की अद्वैतमतीय स्थापनाओं की मीमांसा करते हुए लिखते हैं—"आपका (अद्वैतवादियों का) कार्योपाधि और कारणोपाधि से जीव व ईश्वर का सिद्ध करना तब हो सकता है जब नित्य शुद्ध-मुक्त-स्वभाव, सर्वव्यापक ब्रह्म में अज्ञान सिद्ध करें। जो उसके एक देश में स्वाश्रय स्वविषयक अज्ञान अनादि रूप से सर्वत्र मानोगे तो परिच्छिन्न होने से ब्रह्म इधर-उधर जाता रहेगा और जहां-२ जायेगा वहां-२ का ब्रह्म अज्ञानी और जिस-जिस देश को छोड़ेगे उस-उस देश का ब्रह्म ज्ञानी होता जायेगा तो किसी देश के ब्रह्म को अनादि, शुद्ध-ज्ञान-युक्त न कह सकोगे।"

घटाकाशादि के उदाहरण से जीव को अन्तःकरणोपाधिक ब्रह्म बताना भी युक्ति-संगत नहीं है। कारण, एक स्थान के ब्रह्म के साथ जो घटित होगा वह दूसरे स्थान का ब्रह्म किस प्रकार याद रखेगा। फिर ब्रह्म ही यदि जीव हो है तो उसमें सर्वज्ञता होनी चाहिये। यदि अविद्या के कारण अपने स्वरूप को भूल जाता है तो अविद्या तो अल्पज्ञ का गुण है, सर्वज्ञ का नहीं अतः ब्रह्म को या उसके चिदाभास अविद्याग्रस्त बताकर काम चलाने से तो कहीं अच्छा है कि जीव को स्वतन्त्र अस्तित्व वाला मान लिया जाय तो किसी विप्रतिपत्ति की गुंजायश ही न रहे।

जिस प्रकार जीव की कार्योपाधिक ब्रह्मता ब्रह्म में अज्ञान सिद्ध किये बिना असम्भव है वैसे ही ईश्वर की कारणोपाधिक ब्रह्मता भी असम्भव है।

भागत्याग लक्षणा से जो जीव, ईश्वर का अभेद 'तत्त्वमसि' वाक्य में अर्थ की संगति के लिये तात्कालिकता व एतत्कालिकता आदि विसंगतियों को त्याग कर चेतन रूप साधर्म्य में ऐक्य करके सिद्ध किया है वह स्थायी नहीं हो सकता। साधर्म्य अभेद-सिद्धि के लिये पर्याप्त नहीं होता। फिर इन दोनों में तो विभेद के अनेक आधार हैं। अतः जीव-ईश्वर को व्याप्य व्यापक भाव से एक या अपृथक् किन्तु स्वरूपतः भिन्न मानना चाहिये।

जीव, ईश्वर तथा प्रकृति के त्रिकोण में ही शांकर मत की कला दीखता है प्रकृति और पुरुष को ईश्वर की अनादि प्रकृति गीता में बताया गया है। प्रकृति अपरा प्रकृति, क्षेत्र, माया शक्ति, त्रिगुणात्मिका प्रकृति आदि नामों से एवं जीव, परा प्रकृति, क्षेत्रज्ञ, ईश्वरात्मिका प्रकृति अथवा पुरुष नाम से व्यवहृत है। अन्तर यही है कि अद्वैतमत में दोनों को ईश्वर की प्रकृति मानकर एक तत्त्व में समाविष्ट कर दिया गया है। जबकि महर्षि सम्मत त्रैतमत में तीनों को स्वरूपतः पृथक् माना गया है। तीनों को भिन्न सत्ताक मान लेने पर बन्ध-मोक्ष आदि की समस्या स्वतः हल हो जाती है तथा सृष्टि-रचना की सोद्देश्यता सिद्ध करने के लिये अद्वैतियों की तरह द्रविड प्राणायाम नहीं करना पड़ता। अस्तु, हमें महर्षि का चिर ऋणी होना चाहिये कि उन्होंने अद्वैतमत के ध्वान्त को हटाकर जीवात्मा को स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान कर उसके पौरुष में वृद्धि की।

अन्त में अपने श्लोक द्वय देकर यह विषय समाप्त करता हूं:—

प्रत्यक्षे विमुखस्य नश्यतु कुतो रज्जौ भुजङ्गभ्रमो,
दृष्टे रावरणं चिरस्यतु जगन्मिथ्यात्व-बुद्धेः कथम्।
ईशं संसृति मायया किल महो, जीव तदंश च यो
मुक्तिस्तस्य न सम्भवा, परिणमेदज्ञानिनो साधुतः॥
दयानन्द-मतं श्रेष्ठ यत्र सर्वं सुसंगतम्।
रज्जौ सर्प—समुद्भूता कल्पना न च शांकरी॥

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(वर्ष १९८४-८५)

(गतांक से आगे)

श्रीमती रत्नादेवी मनुमित्र वेद प्रचार निधि

यह निधि हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के श्री पं० मुन्नालाल जी ने ११२००) की राशि से स्थापित कराई है। यह राशि सभा के नाम में कनारा बैंक दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली में जमा है जो १९८६ में १० वर्ष के बाद ३० हजार के ऊपर होगी। इसका ब्याज सभा जहां भी उचित समझेगी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ खर्च किया जायेगा। १० जुलाई १९७७ की अन्तरग ने इसकी स्वीकृति दी।

श्री मुन्नालाल जी ने इस निधि मे वृद्धि कर ६७५७)०६ का १ कैश सर्टिफिकेट क्रय करके दिया है जिसका धन आन्ध्र प्रदेश महेश कोआपरेटिव अरबन बैंक लिमिटेड बेगम बाजार हैदराबाद मे जमा है और सभा को २-४-१९९१ में २०,०००) प्राप्त होगा।

इन राशियो को पुन: फिक्स डिपोजिट मे रखना होगा और जनवरी २००१ मे यह राशि १,८००००) (एक लाख अस्सी हजार मात्र) हो जायेगी। उसके पश्चात् सभा उक्त शर्तों के अनुसार इसका ब्याज खर्च कर सकेगी।

इस सर्टिफिकेट के परिवर्तन की स्वीकृति २१-२-८२ की अन्तरंग बैठक ने दी।

श्री बख्शी खुशहाल स्वास्थ्यानन्द स्थिर निधि

यह स्थिर निधि ५०००) (पांच हजार रुपया मात्र) की राशि से बख्शी खुशहाल जी ने स्थापित की है। जिसकी १७-१-७७ की अन्तरंग बैठक ने स्वीकृति दी, इस निधि के ब्याज से बख्शी जी की निजी पुस्तकें छपा करेंगी। इस निधि का ब्याज ३१५०) जमा है।

दयानन्द दलितोद्धार निधि

यह निधि ३०००) की है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने दलितोद्धार के कार्यार्थ १९२१ में स्थापित की थी। इसका ब्याज दलित कहे जाने वाले बन्धुओ एव छात्र-छात्राओ की सहायता पर खर्च किया जाता है।

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी की वसीयत

१९८० में निधन से पूर्व श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने अपनी धन राशि पुस्तकों के स्टाक तथा उनके प्रकाशन के अधिकार की वसीयत इस सभा के नाम मे की थी। इस वसीयत के अनुसार नकद (बैंकों में जमा) धन पुस्तको का स्टाक वा बिक्री की राशि प्राप्त करने का अधिकार सभा को है। सहारनपुर मे एक कोर्ट से प्रोबेट प्राप्त कर लिया गया तथा डाकखाना व बैंको आदि से, १,०१७३०)०५ रु० प्राप्त हुए थे। कोर्ट की फीस आदि पर ६५९७)३५ व्यय हुए। शेष ९५१३२)७० रु० जमा हैं।

श्री डा० नन्दलाल व श्रीमती सावित्री देवी स्थिर निधि

१० हजार की यह स्थिर निधि १६-११-७९ की अन्तरग सभा द्वारा स्वीकृति हुई थी। इस निधि के दो भाग हैं। प्रथम ५०००) की निधि के ब्याज से आर्य सन्यासियो, उपदेशको तथा भजनीकों के रोगग्रस्त होने पर चिकित्सा कराई जाएगी। दूसरी ५०००) की निधि का ब्याज पहाड़ी क्षेत्रो मे वा नेत्र रोग की रोकथाम पर खर्च किया जायगा। वर्ष के अन्त मे निधि के ब्याज के ४६०८)३१ रुपए जमा थे।

श्री रामरखामल व मथुरा देवी [illegible] स्थिर निधि ८ हजार रुपए

श्री नानकचन्द मथुरा देवी स्थिर निधि [illegible]

ये निधियां वेद प्रचार, हिन्दी भाषा प्रचार व समाज कल्याण कार्यों के सम्पादनार्थ स्थापित की गई हैं। इनकी स्वीकृति १०-११-८६ की अन्तरग द्वारा हुई। इनके क्रमश: ६५३) व ९८०) ब्याज के जमा हैं।

श्री मनोहरसिंह पनगड़िया बनेड़ा (राजस्थान) स्थिर निधि

यह निधि श्री गुमानसिंह जी (पूर्व एकाउण्टेन्ट जनरल रूबी इन्श्योरेन्स कम्पनी) ११ दरियागंज, नई दिल्ली तथा लेखा निरीक्षक देहली राज्य आर्य केन्द्रीय सभा ने ५ हजार रुपये के दान से अपने अग्रज श्री मनोहर सिंह के नाम से १९६७ में स्थापित की थी। ५-१-६७ को अन्तरंग सभा ने इसकी स्वीकृति दी थी।

इसका ब्याज निर्धन छात्र-छात्राओं को जिनके अभिभावको की अथवा माता पिता की मासिक आय ७५०) या इससे कम होगी और पुस्तकें खरीदने में जो असमर्थ होंगे उनकी पुस्तको के क्रय कराने में व्यय होना निश्चित हुआ है। सहायता प्राप्त करने वाले छात्र को नियत फार्म पर आवेदन पत्र देना होता है जिसकी स्वीकृति अब श्री गुमानसिंह जी के सुपुत्र श्री प्रतापसिंह पनगड़िया, ए० ४३ मानसरोवर टोंकरोड, जयपुर देते हैं। यदि ब्याज की राशि पुस्तको के रूप में खर्च न हो तो दो वर्ष बाद यह राशि श्री प्रतापसिंह जी पनगड़िया की अनुमति लेकर सभा किसी दीन, हीन विधवा अथवा अबला आदि की सहायता में खर्च कर सकेगी। गत वर्ष इस निधि मे १९९१)८५ शेष थे। इस वर्ष ब्याज के ४००) रुपया जमा होकर कुल योग २३९१)८५ हुआ। इस वर्ष २८०) व्यय हुए। शेष २१११)८५ जमा रहा।

श्री धन्नाराम कुकरेजा वेदप्रचार स्थिर निधि

श्री सेठ प्रीतमदेव कुकरेजा ने अपने पिता श्री धन्नाराम कुकरेजा की स्मृति में ११००) की स्थिर निधि सभा मे कायम की थी जिसकी स्वीकृति १-४-७८ की अन्तरंग बैठक ने दी थी। इसका ब्याज आर्य समाज के प्रचारको अथवा उनकी आर्थिक सहायता पर खर्च किया जायेगा।

दानी को इस राशि में वृद्धि करने की भी अनुमति दी गई थी। वर्ष के अन्त मे इस निधि का ५१००) और ब्याज १८६९) जमा हैं।

स्त्री आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर स्थिर निधि

यह निधि १०,०००) की है। २६-११-७८ की अन्तरग द्वारा स्वीकृति हुई। इस निधि का ब्याज निर्धन छात्रो की छात्र वृत्ति पर व्यय होगा। इस निधि का ३९३७)५१ ब्याज जमा है।

श्रीमती विद्यावती बहल (लन्दन निवासी) स्थिर निधि ५०००)

यह निधि महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रो की छात्रवृत्ति के लिए है इसकी स्वीकृति २६-४-८० की अन्तरग द्वारा हुई। वर्ष के अन्त मे ३५०) ब्याज का जमा रहा।

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

यह आश्रम ऋषिकेश में रेलवे रोड़ मार्ग पर है। यह आश्रम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की मिलकियत है। आजकल आश्रम की सेवा कार्य के लिए पंचमुनि प्रबन्धक हैं। यात्रियों के ठहरने के लिए सभी प्रकार की सुख सुविधायें उपलब्ध हैं। दैनिक यज्ञ व भजन नित्य होता है। इसके अलावा श्री लालीभाई सोनीभाई धर्मशाला में जो एक कमरा और एक रसोईघर श्री लाला केदार नाथ जी की धर्म पत्नी श्रीमती गैंदादेवी जी सहारनपुर मो० चिंताला का स० १९८८ में बनवाया था, वैदिक आश्रम ऋषिकेश को दान में प्राप्त हुआ है। यह इस आश्रम की अचल सम्पत्ति है और इस समय परमेश्वरी देवी को आश्रम ने ११) मासिक किराये में दे रखा है और आदर्श नगर ऋषिकेश स्थित प्लाट नं० ८७८ पर सार्वदेशिक सभा की ओर से मुकदमा चल रहा है। (शेष पृष्ठ १६ पर)

वैदिक धर्म और वेदान्त

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रवेश कर, गोल रूप में भासित होने लगी। परन्तु स्वरूपतः लोहे के गोले से बाहर पतंग भी है। इसी प्रकार जीव ब्रह्म के संग या उपासना से उसके आनन्द-ज्ञान आदि गुणों से आनन्दी ज्ञानी बन जायेगा पर स्वरूपतः जीवत्व, परतन्त्रता-अल्पज्ञता एवं परिच्छिन्नता आदि को नहीं छोड़ सकता और ब्रह्म या परमात्मा भी जीवात्मा में उपासना द्वारा प्रकाशमान होता हुआ स्वरूपतः उससे भिन्न ही सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और अनन्त रूप में रहता ही है। अतः (यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्) समाधि या उपासना योग की स्थिति का प्रदर्शक है। जीव के ब्रह्म बनने का साधक नहीं अपितु बाधक है।

अच्छा! तो "अहं ब्रह्मास्मि" अर्थात् मैं ब्रह्म हूं इस वचन से तो जीव का ब्रह्म होना सिद्ध होता है? यह वाक्य वेद वचन नहीं है शतपथ ब्राह्मण और बृहदारण्यकोपनिषद् का कथन है। पर वैदिक नहीं। पर वेद विरुद्ध तो नहीं?

जिस अभिप्राय से नवीन वेदान्ती इसे प्रस्तुत करते हैं वह अभिप्राय वेद विरुद्ध ही है कारण—वेद कहता है कि—

उत स्वया तन्वा सं वदे तत्कदा न्वन्तर्वरुणे भुवानि। किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृळीकं सुमना अभिख्यम्॥ ऋ० ७।८६।२॥

अर्थात्—मैं अपनी देह से सम्वाद करता हूं कब वरणीय एवं वरने वाले परमात्मा में मैं अपने को विराजमान समझूं। मेरी यह किस भेंट को स्वीकार करे। मैं कब उस सुखस्वरूप देव को अच्छे मन वाला बनकर देख सकूं।

यदि जीव ब्रह्म होता तो ब्रह्म के अन्दर विराजमान हो जाने की प्रार्थना वेद में क्यों करता और भेंट परमात्मा को देने की क्यों सोचता पुनः परमात्मा को आनन्द स्वरूप कहकर उसके दर्शन की इच्छा क्यों करता। तथा—

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ अथर्व०

यहां परमात्मा को भूत: भविष्य वर्तमान जगत का अधिष्ठाता व सुख स्वरूप ज्येष्ठ ब्रह्म कहकर उसे नमस्कार क्यों करता? अतः "अहं ब्रह्मास्मि" से जीव के ब्रह्म होने का अभिप्राय वेद विरुद्ध भी हुआ। तब उक्त वचन की क्या गति होगी वह इस अवस्था में इस कथन के दो स्वरूप हो सकते हैं—एक तो समाधि या उपासना योग में तात्स्थ्योपाधि, तत्सहचरोपाधि, तद्धर्मोपाधि से उपासक कह सकता है जिसे हमने पूर्व सन्दर्भ "यदग्ने स्यामहं" पर बतलाया। परन्तु नवीन वेदान्त इसे स्वीकार नहीं करता। वह तो सिद्धान्ततः ही जीव को ब्रह्म मानता है। दूसरा उपाय जो इस कथन का है अथर्व से इस पर विचार करते हैं।

"अहं ब्रह्मास्मि" वचन दो ग्रन्थों में दो बार आता है शतपथ व बृहदारण्यक में। शतपथ का ही वह पद उपनिषद है प्रमाण एक ग्रन्थ का ही हुआ। जो निम्न है—

ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् तदात्मानमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति। तस्मात् तत्सर्वं मभवत। तद् यो यो देवानां प्रत्यबुध्यत स एव तदभवत्। तथर्षीणां तथा मनुष्याणाम्। तद्धैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवः प्रतिपेदे "अहं मनुरभवं सूर्यश्चेति" तदिदमप्येतर्हि य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति, स इदं सर्वं भवति, तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशते। आत्मा ह्येषां स भवति॥ श० १४।१।२१ बृ० १।४।१०॥

सृष्टि से पूर्व ब्रह्म ही था उसने अपने को जाना कि अहं ब्रह्मास्मि, मैं ब्रह्म हूं अर्थात् (बड़ी वस्तु हूं) इस कारण वह सब कुछ हो गया। अतः जो जो देवों में ऋषियों व मनुष्यों में प्रति बुद्ध हो गया, अपने को वैसा जान गया, समझ गया, वह वैसा बन गया। इसमें यह उदाहरण है कि वामदेव ऋषि ऐसा अनुभव करते हुए प्राप्त हुए, कि मैं मनु ऋषि हुआ मैं सूर्य ऋषि सो जो इस समय भी जो समझे कि "अहं ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्म हूं अर्थात् (बड़ी वस्तु हूं) वह इनका आत्मा अमला हो जाता है।

इस कथन में यह "ब्रह्मास्मि" वचन दो बार आता है प्रथम-वचन के प्रारम्भ में कि ब्रह्म ही सृष्टि के प्रारम्भ में था उसने समझा—मैं ब्रह्म हूं यह स्थल तो सन्देह का नहीं कि ब्रह्म अपने को ब्रह्म समझे। केवल दूसरा स्थल, इस समय भी जो जानता है—"अहं ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्म हूं वह सब कुछ हो जाता है यही विचारणीय रहा है। इसके विषय में कहना है, यह कथन अर्थवाद का कथन है। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रायः अर्थवाद आता है। अति प्रशंसा या अतिशय बताना, अर्थवाद कहाता है। यथा "अग्निहोत्रं जुहुयात् स स्वर्गमाप्नुयात्" अग्निहोत्र करे सो स्वर्ग प्राप्त करे। लोक में भी हम देखते हैं भिक्षुक जन कहा करते हैं चार पैसा दे दे, तेरा पुत्र जीवे, तू सुखी रहेगा, आदि, यह अर्थवाद है। उक्त—

"अहं ब्रह्मास्मि" वाले ब्राह्मण वचन में अर्थवाद का स्वरूप यह कि प्रथम ब्रह्म था उसने अपने को ब्रह्म बड़ी वस्तु समझा, वह सब कुछ शक्ति सम्पन्न हो गया। ऐसे जो भी देवों, ऋषियों मनुष्यों में अपने को बड़ी वस्तु समझेगा, सचेत हो जायेगा, वह वैसा ही शक्ति सम्पन्न हो जायेगा।

देवों-ऋषियों, मनुष्यों में ब्रह्म हो जाने का उदाहरण ग्रन्थकार को न मिला केवल वामदेव ऋषि का उदाहरण दिया, वह भी ब्रह्म बनने में नहीं, किन्तु वामदेव ऋषि ने अपने को मनु और सूर्यरूप समझा वैसा हो गया। जो इस समय भी चेतेगा अपने को "अहं ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्म बड़ी वस्तु हूं ऐसा समझेगा, वह वैसा ही जायेगा। देव भी उसकी हानि में समर्थ नहीं हो सकते, तो यह स्पष्ट अर्थवाद ही है। ब्राह्मण के इस समस्त अर्थवाद प्रकरण को लोक में हम आज भी घटा सकते हैं। जैसे—

म० गान्धी ने राजनैतिक आन्दोलन में अपने को प्रथम समझा तो वह गान्धी महात्मा बना। ऐसे ही जो प्रथम चाहेगा अपने को नेतृत्व में आगे करेगा—गान्धी बनेगा, अब्दुलगफ्फार खां ने अपने को आगे किया वह भी सीमान्त गान्धी कहाया। आचार्य अभयदेव को गुरुकुल कांगड़ी का गान्धी कहते सुना सुना है। इन बातों से यह सिद्ध हुआ कि यहां यह "अहं ब्रह्मास्मि ब्राह्मण ग्रन्थों का अर्थवाद है। यदि कोई आग्रह करके इन वचनों को न माने केवल मैं ब्रह्म हूं की रट लगाये जीव ब्रह्म है। तो ऐसे आग्रही जन से हम कहेंगे कि यह उपनिषद वेदान्त का सिद्धान्त ही नहीं है कि जीव ब्रह्म है और प्रत्येक मनुष्य अपने को ब्रह्म कह सके। उपनिषद तो कहता है "यो ह वै तत् परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति" (मुण्डक ३।२।९)

अर्थात् जो उस परब्रह्म को जानता है वह ब्रह्म ही हो जाता है जानने वाला ही ऐसा कह सकता है प्रत्येक मनुष्य मैं ब्रह्म हूं, ऐसा नहीं कह सकता है और फिर उक्त वचन में दो क्रियायें हैं—एक "वेद" जानता है, दूसरी "भवति" (हो जाता है) जानने की क्रिया में ब्रह्म के साथ परम् शब्द लगा है और हो जाने की क्रिया में ब्रह्म के साथ (एव) ही, शब्द लगा है। जरा इस वचन पर भी ध्यान दें कि—

परम ब्रह्म का जानने वाला, परम ब्रह्म नहीं हो जाता, किन्तु ब्रह्म हो जाता है। दूसरी बात यह भी कही है "ब्रह्मैव भवति" ब्रह्म ही हो जाता है "ब्रह्म भवति" ब्रह्म हो जाता है ऐसा नहीं कहा। यहां "एव" (ही) शब्द अधिकांश या प्रायः अर्थ में है जैसे कोई पूछता है क्या यह वस्तु सोने की है। दूसरा उत्तर देता है कि सोने की ही है समझे? अर्थात् अधिकांश या प्रायः सोने की है। ऐसे ही यहां भी ब्रह्म ही हो जाता है अधिकांश ब्रह्म के गुण-वाला ही जाता है, इस प्रकार यहां का यह (एव) शब्द "इव" शब्द का अर्थ उपमारूप देता है "ब्रह्म एवं, ब्रह्म इव, ब्रह्म जैसा हो जाता है क्योंकि ब्राह्मणों उपनिषदों के साहित्य में "एव" और "इव" शब्द एकार्थ में आते हैं। जैसे—

पयोव्रत भिक्षा इव हि देवाः अव्यक्तप्रियः॥

यहां "इव" शब्द "एव" के अर्थ में है "इव" का उपमा वाचक अर्थ यहां संगत नहीं होता।

जब कि "एव" शब्द इव की भांति समानार्थक हुए—तब "ब्रह्म भवति" में "ब्रह्म इव भवति। ब्रह्म जैसा हो जाता है" यह अर्थ हुआ, जो यहां संगत होता है। उक्त उपनिषद वचन का भी जो बनावटी करके अन्य वाक्य की शरण में और झुकाव यही रट लगाये, कि "मैं ब्रह्म हूं" जीव ब्रह्म है तो हमें कहना होगा, कि यह मिथ्या कथन है। तुम संसार में ही जीव को ब्रह्म कह रहे हो, जीव ब्रह्म की एकता सिद्ध कर रहे हो। किन्तु वेदान्त दर्शन तो

जीव मुक्ति मे भी स्वरूपत ब्रह्म से भिन्न रहता है देखिये वेदान्त दर्शन के चतुर्थाध्याय के मुक्ति विषयक चतुर्थवाद के वचन—

सम्पद्याविर्भाव स्वेने शब्दात् ॥ वेदान्त ४-४-१

छान्दोग्य मे भी आया है कि अस्माच्छरिरात् समुत्थाय परं ज्योति रूप सम्पद्य स्वेन रूपेणाभि निष्पद्यते ॥

अर्थात् जीव परम ज्योति स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त कर इस शरीर से छूट कर स्वरूप मे वर्त्तमान हो जाता है प्राकृतिक सग मे रहित हो जाता है—

कथन के पोषण मे "सम्पद्याविर्भाव ' उक्त वेदान्त सूत्र था उक्तदशा को कौन प्राप्त होता है इसका स्पष्टीकरण इससे अगले सूत्र से करना है।

मुक्त. प्रतिज्ञानात् ॥ वेदान्त ४४-२

मुक्त जीव स्वकीय रूप से वर्त्तमान होता है क्यो कि ऐसी ही प्रतिज्ञा कथन, क्रमिक उपनिषद के उक्त प्रकरण मे शाकर-भाष्य मे भी मुक्तात्मा के लिये ही यह करना बतलाया है।

"य आत्मा अपहृतपाप्मा इत्यादि मुक्तात्म विषयमेव प्रतिज्ञात पर ज्योतिरूप सम्पद्य स्वेन रूपेणामिनिष्पद्यते" शाकर भाष्य) मुक्ति मे जीव ब्रह्म के समान जगत की उत्पत्ति आदि कार्य नही कर सकता। इन गुणो से वह रहित होता है। अब यह बात देखें, उसी मुक्ति के प्रकरण मे दिये वेदान्त सूत्र मे—

जगत्व्यापार वर्ज प्रकरणाद सन्नि हितत्वात् ॥ वेदा० ४-४-१७

इस सूत्र का अर्थ शकराचार्य को भी ऐसा ही करना पडा—

जगत्व्यापार वर्जमिति जगदुपत्थादि व्यापार वर्जयित्वाऽन्यदणिमाद्यात्मकमैश्वर्यमुक्ताना भवितुमर्हति जगत्व्यापारस्तु नित्यसिद्धिस्येश्वरस्य शकरभाष्य (नित्यमुक्तस्य नित्य मुक्त रहना चाहिये)

अर्थात् जगत् की उत्पत्ति आदि व्यापार को छोडकर अन्य अणिया आदि ऐश्वर्य मुक्तो का हो सकता है। जगत् की उत्पत्ति आदि व्यापार नित्यसिद्ध ईश्वर का ही कार्य है। इस प्रकार उक्त विवेचन मे सिद्ध हुआ कि जीव मुक्ति मे भी ब्रह्म नही बनता स्वरूपत ब्रह्म से भिन्न रहता है। समानता केवल उसके आनन्दादि गुणो को भोग करना ही है जैसा कि उक्त इस मुक्ति प्रकरण वाले वेद सूत्र मे कहा है—

भोग मात्र साम्य लिङ्गाच्च ॥ वे० ४-४ २१

शाकर भाष्य मे कहा है—

भोग मात्र मे वैषामनादिसिद्धेनेश्वरेण समानमिति—

अर्थात् भोग-मात्र ही इन मुक्तो का अनादि सिद्ध ईश्वर के समान है। इस प्रकार जब मुक्ति मे भी जीव ब्रह्म नही बनता, स्वरूपत पृथक् रहता है तब ससार-अवस्था मे जीव को ब्रह्म कहना 'अह ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूँ—

कहना सर्वथा असगत और असत्य है।

स्थिर निधियां

(पृष्ठ १३ का शेष)

श्री अर्जुन लाल आचार्य का दान

श्री स्वर्गीय अर्जुन लाल जी आचार्य रिटायर्ड रेलवे गार्ड ने अपना मकान जो सदर बाजार (नीमच छावनी) में स्थित है जिनका म्यूनिसिपल नम्बर १०३७ तथा मूल्य लगभग दस हजार रुपया है आर्यसमाज नीमच छावनी के उपयोग के लिए सार्वदेशिक सभा को दान किया हुआ है। इस मकान का उपयोग आर्यसमाज नीमच छावनी करता है।

श्री किशोरी लाल पुरी की वसीयत

इस वसीयत से सभा को नकद और विविध कम्पनियों तथा संस्थानों के ५२८३)६० के शेयर्स प्राप्त होने थे जिनका डिस्ट्रिक्ट जज दिल्ली की अदालत से प्रोबेट मिल गया। निम्न प्रकार नकद धन मिला और सभा के नाम शेयर्स परिवर्तित हुए।

१—मोहिनी शुगर मिल्स कलकत्ता	१०००) १०० शेयर्स
२—अपर इण्डिया पेपर कूपर मिल लखनऊ	१००) १ शेयर्स
३—यूनाइटेड कमर्शियल बैंक दिल्ली	६१७)०४ नकद
४—पजाब नेशनल बैंक, करौलबाग नई दिल्ली	२२१)२४ नकद
५—हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक कानपुर	२५०) ५ शेयर्स ५० प्रतिशत भुगतान

६—बाल्कन इन्श्योरेंस कम्पनी मे १५०) मिलने थे २६०)५० मिले। यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कम्पनी से ७५) मिलने थे १८७)८५ प्राप्त हुए। अब कोई शेयर नहीं रहा।

७—प्रीमियर आटो मोबिल लिमिटेड बम्बई का १००) का एक शेयर १२ शेयर्स २ पूरे भुगतान और १० शेयर्स १/२ भुगतान ६५०) अब इस वसीयत का कोई धन तथा शेयर प्राप्तव्य नहीं रहा।

मनायें महर्षि बोध दिवस

बनाये मानस उद्बोधित, मनाये महर्षि बोध दिवस।
जगें हम स्वय जगायें जग, सचाई का अपनायें मग।
कहें नही झिझक करें हम कर्म धर्म का सच्चा समझे मर्म ॥
मिटादे जगतो में से तम, हटादें हर मानव का भ्रम।
निर्बल के बनजाये हमदम, दुष्ट के बन जाये निर्मम ॥
निभायें प्रण यह हर सम में, प्रचारें शाति-शाति चहू दिश ॥१॥

बचाये प्रिय देश को हम, सुधारें देश भेष को हम।
लगाये घावों पर मरहम, मिटादें भेद-भाव को हम ॥
कामना शुभ ही करें हम साधना सच्ची साधें हम।
प्रभु को याद रखें हरदम, सभी जीवो पर करें रहम ॥
किसी के नही मारें तन में, दबावें नही किसी को विवश ॥२॥

समय के समझे भेदो को, पढे हम नित ही वेदों को।
सुधारें अपनी पोथो को, बनाये अपने योधो को।
करें हम प्रात स्नानम्, करें हम प्रात व्यायाम।
समाधी लाये प्राणायम्, विचारें प्रात पावन परम ॥
प्रेरणा पावें क्षण-क्षण में, मिटायें ज्ञानमृत से विष ॥३॥

क्रोध अन्धे को भूलें हम, स्वार्थ गन्दे को भूलें हम।
किसी को अपमानें नही हम, किसी को निन्दानें नही हम ॥
किसी को कहें न कडी गरम, सत्य कहें सबसे प्रिय नरम।
अखिल जग को बनाये आर्यम्, ओम का हस्त लिये परचम ॥
विचारें हम नगर और वन मे, करें नही आलस हम निश दिश ॥४॥

—रेडियो कवि कन्हैया कल्याण-आश्रम
तिजारा (अलवर, राज०)

उद्बोधन

ओस-कणों से प्यास बुझाने वालों सुन लो।
तुम्हे किनारे 'सरस्वती' के आना होगा ॥

भाति-भाति के खिले सुमन, मुसकान एक है।
भिन्न-भिन्न हैं तान, सभी का गान एक है ॥
गढ़ी मूर्तियां कोटि-कोटि, पाषाण एक है।
नाम भेद से भिन्न, किन्तु भगवान एक हैं ॥
वेद-विदित सन्मार्ग सभी को सम हितकर है।
अपना-पन सब भांति तुम्हें अपनाना होगा ॥

चित्रों में हो सके स्यात् कुछ आकर्षण हो।
अपना कुछ अस्तित्व अलग रखता दर्पण हो।
प्रतिबिम्बों से पृथक् बिम्ब तो किन्तु और हैं।
मुग्ध हुआ ससार, इधर करता न गोर है ॥
जिन गहनों पर रीझ रहे वह तो खोते हैं।
मूल रूप में स्वर्ण धातु को पाना होगा ॥

चमक-दमक है, वस्तु वस्तुतः नहीं वास्तविक।
कृत्रिमता से ढका हुआ है चिन्तन मौलिक ॥
मौलिकता का दयानन्द ने दर्श कराया।
हंस सदृश बन नीर-क्षीर ऋषि ने बिलगाया ॥
तत्व तत्व कर ग्रहण सत्व तुम निज में लाओ।
तज कर पन्थ अनार्य, आर्य कहलाना होगा।
ओस-कणों से प्यास बुझाने वालो सुन लो।
तुम्हें किनारे 'सरस्वती' के आना होगा ॥

—डा० सत्यव्रत-शर्मा 'अजेय'
उपाचार्य-गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

पंजि० नं० डी० (डी०) १७८ साप्ताहिक (९-३-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 686/57 Licensed to post without prepayment, License No. U. 93 Post in D.P.S.O. on 6-3-86

मध्वाचार्य का अद्वैत दर्शन

(पृष्ठ ११ का शेष)

सामजस्य नही रहता। छोटे बडे शरीरो के अनुसार आत्मा का माध्यमपरिभाषा मानने पर उसमे सकोच विकास के आवश्यक होने से अनित्यता दोष की प्राप्ति होगी। अत जीवात्मा का अणुपरिणाम मानना ही ठीक है। जीवात्मा सम्बन्धी माध्वमत से महर्षि दयानन्दकी कई बातो मे समानता है, यथा-जीवका ज्ञातृत्व कर्तृत्व व भोक्तृत्व आकार मे अणुपरिमाण, जीवोकी भिन्नताका कारण उनका अदृष्ट और जीवात्मा की नित्यता। परन्तु इस मतकी दो बाते महर्षि दयानन्द को मान्य नही हो सकती। जीवात्माको नित्य मानते हुए उसे साकार मानना—समीचीन नही है। प्रत्येक साकार वस्तु सावयव होती है। सावयव वस्तु समय विशेष मे रचित होती है और ऐसी वस्तु नित्य कदापि नही हो सकती। इसी प्रकार यह मानना कि ईश्वर ने जीवात्मा को उत्पन्न किया, युक्त नही है। जो उत्पन्न होती है वह सादि होती है और जो सादि है वह नित्य नही हो सकती। माध्व मत मे आनन्द को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानना महर्षि दयानन्द को स्वीकार नही। आनन्द केवल ईश्वरका स्वाभाविक गुण होता है। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास मे महर्षि दयानन्द लिखते है—'(प्रश्न जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है। (उत्तर दोनो चेतन स्वरूप है। ' ईश्वर के नित्य ज्ञान आनन्द, अनन्त बल आदि गुण है। स्पष्टत जीव का स्वाभाविक गुण चेतना है जबकि ईश्वर म चेतना और आनन्द दोनो हैं।

जीवात्मा का लक्ष्य मुक्ति

मध्वाचार्य और महर्षि दयानन्द दोनो के मत मे जीवात्मा का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। मोक्ष के कारण के सम्बन्ध मे दोनो के विचारो मे भेद है। ब्रह्मसूत्र के 'जन्माद्यस्य यत" सूत्र का भाष्य करते हुए मध्वाचार्य लिखते है 'ब्रह्म जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और इसके नियमन तथा ज्ञान, अज्ञान बन्ध और मोक्ष का कारण है। ईश्वर की दया (प्रसाद) से ही मुक्ति प्राप्ति सभव है।' इस प्रकार बन्ध और मुक्ति दोनो का कारण ईश्वर है। महर्षि दयानन्द को यह मत मान्य नही है। मुक्ति मे जीव का लय होना है अथवा विद्यमान रहता है इसके बारे मे दोनो का मत समान है अर्थात् मुक्तावस्था मे जीवात्मा विद्यमान रहता है। मुक्ति मे पुनरावृत्ति के सम्बन्ध म दोनो के मत म एक रूपता नही है। माध्व मत मे मुक्तावस्था मे जीवात्मा वैकुण्ठ धाम मे निवास करता है और वहा से लौटकर इस ससार मे नही आती। महर्षि दयानन्द के मत मे मुक्तावस्था में जीवात्मा किसी स्थान विशेष मे निवास नही करता वरन् स्वतन्त्रता पूर्वक अव्याहत गति से सर्वत्र विचरता है। परान्तकाल तक मुक्ति के आनन्द को भोगकर जीवात्मा पुन ससार मे आता है। सत्यार्थ प्रकाश नवम् समुल्लास मे महर्षि दयानन्द ने अकाट्य युक्तियो से मुक्ति से पुनरावृत्ति को सिद्ध किया है। महर्षि का यह मत दार्शनिक क्षेत्र मे अपूर्व देन है।

माधव मत मे मुक्ति के स्तर या प्रकार को स्वीकार किया गया है। भक्ति और ज्ञान से मुक्ति की प्राप्ति होती है। भावको की साधना मे अन्तर प्रत्यक्ष है। अत उनके फल (मुक्ति) मे भी अन्तर होना चाहिए। इस अन्तर के आधार पर मुक्ति के चार प्रकार माने गए हैं। वे हैं—सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य और सायुज्य। सायुज्य अवस्था मे जीवात्मा ईश्वर से सयुक्त हो जाता है। यही वास्तविक मुक्ति है। शेष अवस्थाए इसकी अपेक्षा निम्न स्तर की है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास मे इस प्रकार की मुक्ति की आलोचना करते हुए लिखा है कि जैसी यह चार प्रकार की मुक्ति है वैसी तो कीट, पतग पश्वादिको को भी स्वत सिद्ध प्राप्त है।

निर्वाचन

—आर्य समाज अम्बहटा (सहारनपुर) में प्रधान मोहनलाल सर्राफ, मन्त्री सुरेशन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष रमेशचन्द्र चुने गये।

—आर्य समाज चादपुर (बिजनौर) में प्रधान डा०रामेश्वरप्रसाद, मन्त्री सत्यप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश चुने गये।

—आर्य समाज कृष्णपोल (जयपुर) प्रधान सत्यनारायण शाह, मन्त्री आमरण कोषाध्यक्ष सूर्यनारायण चुने गये।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

माता-पिता सुखी रहें

स्वस्ति मात्रे उत पित्रे नो अस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥
अथर्व० १।३१।४॥

हिन्दी अर्थ—हमारे माता और पिता का कल्याण हो। गायो समस्त संसार और सभी पुरुषों का कल्याण हो। हमारे लिए सभी ऐश्वर्य और उत्तम ज्ञान हों। हम चिरकाल तक सूर्य को देखें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २१ अङ्क १३]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
फाल्गुन शु० ६ स० २०४२ रविवार १६ मार्च १९८६

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

गोवंश का कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) को रेल द्वारा लदान पर रोक लगाने की मांग

नई दिल्ली १० मार्च १९८६

कुछ निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा पैसा कमाने के लोभ में गोवंश की सामूहिक हत्या का एक मामला सामने आया है। दिल्ली से बड़ी संख्या में दुधारु गायों और बछड़ों को रेल द्वारा कलकत्ता भेजा जा रहा है क्योंकि वहां (पश्चिम बंगाल) में गाय-बैलों के कत्ल पर कोई पाबन्दी नहीं है। यद्यपि दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में गोहत्या कानूनन निषिद्ध है किन्तु उनको इन राज्यों से बाहर भेजने पर कोई प्रतिबन्ध नही है। इस विषय में रेल विभाग द्वारा जारी की गयी अधिसूचना का नाजायज लाभ उठाते हुए भ्रष्ट रेल कर्मचारी बड़ी सख्या में गायो आदि का कलकत्ता के लिये लदान कर रहे हैं। वहां उन्हें कसाई खानों को बेच दिया जाता है।

दिनांक ५ मार्च १९८६ को सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्री रामगोपाल शालवाले अपने अन्य कार्यकर्त्ताओं सहित किशनगंज स्टेशन पर पहुंचे जहां उन्होंने गायों एवं बछड़ों से भरी हुई पांच बोगियां देखी जो कलकत्ता भेजी जा रही थीं। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी तथा रेल मन्त्री को इस विषय की जानकारी देते हुए पत्र लिखे हैं और मांग की है कि गोवंश के इस प्रकार के निर्यात पर तुरन्त रोक लगायी जाय। भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के समय में हरियाणा, पजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों से, जहां सविधान की धारा ४८ के अन्तर्गत गोहत्याबन्दी कानून बने हुए हैं रेल और सड़क परिवहन द्वारा गोवश का कलकत्ता के लिये लदान बन्द करने का आदेश दिया गया था। इस आदेश का उल्लंघन कैसे किया जा रहा है, रेल मन्त्रालय द्वारा इसकी जांच करना आवश्यक है। जिससे गोवश का एक सुनिश्चित योजनाबद्ध संहार बन्द किया जा सके।

काश्मीर घाटी में हिन्दुओं को समाप्त करने का षड़यन्त्र

> दिल्ली ४ मार्च को सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में एक हिन्दू शिष्ट मण्डल प्रधान मन्त्री श्री राजीव गान्धी से मिला। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सरकार ने उक्त प्रतिनिधि की बातो पर गम्भीरता से विचार करने के बाद दिनाक ७-३-८६ को जम्मू काश्मीर की सरकार से अपना कांग्रेस आई का समर्थन वापिस ले लिया। परिणाम स्वरूप जी एम. शाह की सरकार अल्पमत में होकर गिर गई और राज्यपाल का शासन लागू कर दिया गया इससे जम्मू काश्मीर की हिन्दू जनता का मनोबल बढा है।

नई दिल्ली ४ मार्च (सायं) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में जम्मू काश्मीर का एक हिन्दू प्रतिनिधि मण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला।

जिसमें आल स्टेट जम्मू कश्मीर, कश्मीरी पण्डित कांफ्रेंस के नेता श्री अमरनाथ वैष्णवी ने कश्मीर में अल्पसख्य हिन्दुओं की दयनीय स्थिति से प्रधानमन्त्री जी को अवगत कराया। प्रतिनिधि मण्डल ने प्रधानमन्त्री से मांग की है कि घाटी में अल्पसख्यकों की रक्षा के लिए केन्द्र सरकार हस्तक्षेप करें।

प्रधानमन्त्री को दिये गये ज्ञापन मे आरोप लगाया गया है कि मुख्यमत्री श्री जी०एम०शाह की मिली भगत से घाटी अल्पसंख्यकोंको समाप्त करने का षड़यन्त्र रचा गया है। प्रतिनिधि मण्डल में शामिल नेताओं ने प्रधानमन्त्री को बताया कि अल्पसख्य इस हालत में घाटी में रहना नही चाहते और यदि सरकार उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सकती तो उन्हें वहां से निकालने की व्यवस्था की जाए।

ज्ञापन में शाह सरकार को बर्खास्त कर गवर्नर का शासन लागू करने और अल्पसंख्यक सुरक्षा आयोग का गठन करने की मांग की गई है।

ज्ञापन में रहस्योद्घाटन किया गया है कि १८ फरवरी को जम्मू में भारी तनाव था, लेकिन मुख्यमन्त्री वहां से कश्मीर घाटी में चले गए।

उनके वहां पहुंचने के बाद घाटी में भी हिंसक घटनाएं शुरु हो गई और अल्पसख्यकों के घरों में आग लगाने, लूटपाट और बलात्कार जैसी घटनाएं हुईं।

श्री अमरनाथ ने बताया कि कश्मीर घाटी में १४ मन्दिर नष्ट कर दिये गये हैं और १५-१६ मन्दिरों को आग लगाई है। श्री अमरनाथ ने बताया कि परसों रात्रि राज्यपाल श्री जगमोहन अनन्तनाग गए थे, वहां हिन्दू महिलाओं ने सड़क पर लेटकर उनका रास्ता रोका और सुरक्षा की मांग की। प्रतिनिधि मण्डल में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, श्री भवानी शंकर श्री अमरनाथ आदि हिन्दू नेता थे। (शेष पृष्ठ ११ पर)

जियो तो ऐसे जिओ

"यज्ञ जीवित तो मैं भी जीवित यज्ञ मृत तो मैं भी मृत ।"

"यज्ञ मेरे आगे-आगे और मैं उसके पीछे-पीछे ।"

"यदि वक्त की कदर नही कर सकते तो अपनी-अपनी घड़ियां उतार कर रख दो ।"

"जो एक पैसे की कदर करना नही जानता वह सौ रुपये की कदर भी नही कर सकता ।

"जितना बीजोगे उतना पाओगे । और ज्यादा से ज्यादा बीजो ।"

"मुझे आलसी व्यक्ति बिल्कुल पसन्द नही ।"

स्वर्गीय गणेशदास अग्निहोत्री जी

ये उद्गार स्वर्गीय अग्निहोत्री द्वारा अभिव्यक्त किये जाते रहे हैं। वही अग्निहोत्री जिनका पारिवारिक नाम कुकरेजा निजी नाम गणेशदास और पुकारने का नाम पिता जी है ।

किसे पता था कोटअदद गाव के मध्यवर्गीय ज़मीदार परिवार में जन्मा मां जानकी का यह लाडला गणेशा लाहौर जाकर प्रसिद्ध उद्योगपति और दिल्ली जाकर अग्निहोत्री बन जाएगा । वही कोटअदद जो रेत के टीलो के ठीक बीचोबीच हैं और जहा रेलगाडी की छुक-छुक की आवाज मेडको की टर्र-टर्र मे मिल जाती है । वही लाहौर जहा शहीद भगतसिंह ने 'मेरा रग दे बसन्ती चोला' आकर दिलो को रग दिया था और वही दिल्ली जिसने सबसे पहले स्वतन्त्रता की धडकन सुनी थी ।

अपने हाथो अपनी रोटी अर्जित करने वाले व्यक्ति के जीवन मे उतार-चढाव आते ही रहते हैं मगर क्या मजाल कि इनके परिश्रम, अनुशासन मित-भाषिता मे लडखड़ाहट आ जाए । यूं तो ८४ वर्ष का समय इतना ज्यादा समय इतना ज्यादा समय नही है लेकिन व्यक्ति के जीवन मे तो उसका पूर्ण जीवन हैं । ७० वर्षों तक घडी की सुई से मुकाबिला करने वाले इस व्यक्ति के नाम के आगे स्वर्गीय लगाते हुए आखें नम हो जाती है ठीक उसी तरह जैसे रात के अ धेरे मे आसमान की आखें नम हो जाती हैं ।

उनकी अ तिम-यात्रा मे अपार जन-समूह है । साधु-सन्त महात्मा-पडित ज्ञानी-ध्यानी और न जाने कौन-कौन ! परिचित, बच्चे-बूढे सभी हाथ जोडे खडे हैं । कोई भी आख ऐसी नही है जो गीली न हो ।

और मेरे सामने··· ··।

वासासि जीर्णानि यथाविहाय······।

ऐसी करनी कर मना, तू ह से जग रोय ।

चौथी जमात तक स्कूली शिक्षा ग्रहण करने वाले इस हृदय मे ऐसी कौन-सी बात होगी कि हजारो हाथ अन्तिम विदा देने के लिए इनके पावो की ओर बढ जाते हैं । शायद इनकी प्रज्ञादृष्टि, जिह्वा पर प्रतिष्ठित होती सरस्वती जी जीवन की पोथियो को पढ़ना जानती है । बुद्धि की तीव्रता इतनी कि आप पचास वस्तुओ की कीमतें बताते चले जाइए केलकुलेटर को जोड़ भी पीछे छूट जाएगा । क्या मजाल कि एक पैसे का हिसाब इधर-उधर हो जाए ।

"याद रखो यदि तुम भगवान को छोड दोगे तो भगवान भी तुम्हे छोड देगा हमेशा अपने परिवार मे कहते रहते थे । कथनी की सुर मे सुर मिलाती करनी की जाय । लगभग चालीस वर्षों से निरन्तर यज्ञ करने की प्रक्रिया मे एक दिन भी तो नागा न हुआ और न समय की खिलाफवर्दी । जितना यज्ञ खुद किया उससे भी ज्यादा लोगो से करवाया । अनेक आर्य समाजें धार्मिक संस्थान, सामाजिक एव शैक्षणिक सस्थानों को इस प्रकार का सरक्षण देते थे कि कभी-कभी ऐसे लगता था कि अपना हाथ जो कुछ दे रहा है उसकी खबर बायें हाथ को भी नही है । जिस तरह माली को अपने बगीचे की एक-एक पत्ती, एक-एक फूल और एक-एक टहनी की खबर रहती है ठीक उसी प्रकार उन्हें भी न केवल अपने परिवार अपितु अपने सपर्क मे आने वाले हर व्यक्ति की रग-रग का पता रहता था । कब, किस समय, किस हद तक लगाम ढीली छोडनी है, बखूबी जानते थे । अब तो ऐसे लगता है इन फूल-पत्तियों को सहलाने वाला हाथ कुछ पीछे बहुत पीछे छूट गया है ।
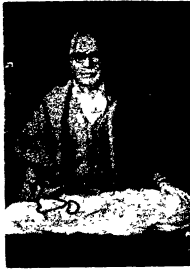
"ज्यादा बोलने से शक्ति कम हो जाती है । कम बोलो और ज्यादा सुनो कहकर प्रेरित करते रहते थे । शायद इसी शक्ति ने उन्हे दूरदर्शी बना दिया । यही दूरदृष्टि मृत्यु को भी बहुत पहले देख पायी थी ।

"जब मेरा प्राणान्त हो तो तत्काल यज्ञ आरभ कर दिया जाए, रास्ते भर आहुतिया दी जाती रहे उसकी पूर्णाहुति से मेरा अन्तिम सस्कार किया जाए । घर लौट कर दूसरी बार सामवेद यज्ञ, आरम्भ किया जाए और उसकी पूर्णाहुति उठावनी वाले दिन की जाए ।" अपनी अन्तिम इच्छा को दुहराते रहे । एक बार, दो बार, कई बार ।

सादा जीवन, उच्च विचार मे विश्वास रखने वाला यह व्यक्ति अपनी अन्तिम यात्रा के लिए जाने वाला है । घर मे वार्षिक यज्ञ साधु महात्माओ की वाणी का उल्लास । शैय्या पर लेटा रुग्ण गृहपति, वाणी मे बेचैनी, चेहरे पर उल्लास, कुछ कहने की जल्दी, इतनी जल्दी कि कही गाड़ी न छूट जाए ।

"मेरे पेट मे दर्द है ।"

"बेचैनी भी है ।"

"जल्दी करो, मेरा वक्त बर्बाद मत करो । पाच सात मिनट मे मुझे खाली कर दो । मुझे देर हो रही है ।"

"कही जाना है क्या ?"

हा बहुत दूर······जल्दी करो ।

"अच्छा ! महात्मा जी को मेरा नमस्कार ! बलदेव जी को चरण वन्दन । सन्त को नमस्कार कर देना । तुम भी मेरे लिए प्रार्थना करना"

पत्नी पुत्री, पुत्र-पुत्रवधु, नाती-नातिन, बहनोई महात्मा सन्त, पडित आचार्य डाक्टर ! सभी के गले रुधे हैं आखें भरी हैं ।

सब को मेरा नमस्कार सब को सद्बुद्धि दो । ओ३म् ओ३म् ······ ···· मुझे जाना है······ ·· कोई अन्तिम इच्छा दान-पुण्य············यज्ञ ही मेरा इष्ट है ·· ·· · अच्छा सब को नमस्कार·········· ओ३म्······ ओ३म्······! एक आर्तनाद ! आत्मा का परम आत्मा में मिलन ! एक ऐसे जीवन का अन्त जिसके प्रारम्भ मे भी ओ३म् और अन्त मे भी ओ३म् ।

काश! श्री गुरु तेग बहादुर आज आ सकते ?

यह आज से ३२० वर्ष पुरानी बात है, कशमीर में हिन्दुओं पर अत्याचार किया जा रहा था। इस देश पर औरंगजेब का शासन था उसने कशमीरी पण्डितों से कहा कि वह मुसलमान बन जाए अन्यथा उनका सफाया कर दिया जाएगा। वह भागे-२ आनन्दपुर साहब में श्री गुरु तेगबहादुर के पास गए और उनसे प्रार्थना की कि किसी प्रकार उन्हें बचा लें। गुरु महाराज ने कहा कि इसके लिए किसी महापुरुष के बलिदान की आवश्यकता होगी। उनका ९ वर्ष का बेटा गोविन्द राय उनके पास ही बैठा था, उसने कहा पिता जी आपसे बड़ा बलिदान और किस का हो सकता है? गुरु महाराज को अपने बेटे की यह बात पसन्द आ गई। उसके बाद जो कुछ हुआ वह हमारे इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय है, जिस पर हम जितना भी गर्व करें कम है। हम यह तो नहीं कह सकते कि उसके बाद कशमीर में हिन्दुओं पर अत्याचार नहीं हुए अपितु यह अवश्य कह सकते हैं कि जो बलिदान उस समय गुरु तेग बहादुर ने दिया था उसने सम्पूर्ण देश का ध्यान कशमीरी पण्डितों पर अत्याचार हो रहा था उस तरफ केन्द्रित कर दिया। आज इस घटना को हुए ३२० वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी दुनिया गुरु तेग बहादुर की याद में अपना सिर श्रद्धा से झुका देती और औरंगजेब को लाहनत भेजती है।

आज फिर कश्मीर में वैसी ही परिस्थितियां उत्पन्न की जा रही है जो ३२० वर्ष पूर्व औरंगजेब के शासनकाल में देखने को मिली थीं। अन्तर केवल यह है कि कश्मीर में औरंगजेबका तो नहीं गुलाममुहम्मद शाह का शासन है और दिल्ली की गद्दी पर औरंगजेब तो नहीं बैठा राजीव गांधी बैठे हैं परन्तु कशमीर में परिस्थितियां वही उत्पन्न हो रही है जो औरंगजेब के समय हुई थीं। विगत कुछ दिनों में जो कुछ कशमीर में हुआ है वह लगभग उसी प्रकार का है जो औरंगजेब के समय में हुआ था। यह क्रम कोई नया नहीं है, किसी न किसी रूप में १९४७ से चल रहा है। उस समय कशमीर में हिन्दुओं की संख्या तीन लाख थी। अब ७० हजार रह गई है और अब उनका सफाया किया जा रहा है। विगत कुछ सप्ताहों में कशमीर में जगह २ हिन्दुओं पर हमले किये गए हैं। उनके मकानों को आग लगाई है, उनके मन्दिरों को तोड़ दिया गया है। आज कोई हिन्दू डर के मारे घर से नहीं निकल सकता, जो निकल सकते हैं वह केवल कश्मीर को छोड़ने के लिए। जमायत इस्लामी नाम की एक संस्था पाकिस्तान के संकेत पर कश्मीर को पूरा इस्लामिस्तान बनाना चाहती है। उसका प्रयास है कि कशमीर में हिन्दुओं का नामोनिशान कहीं नजर न आए।

काश कि आज गुरु तेग बहादुर आ सकते? और वह आकर देखते कि जिन हिन्दुओं के लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया था उनके साथ आज क्या व्यवहार हो रहा है। दिल्ली के तख्त पर औरंगजेब तो नहीं बैठा परन्तु जिन लोगों के हाथ में शासन की बागडोर है उनके कान पर जूं तक नहीं रेंग रही। विगत कई मास से जम्मू और कशमीर के लोग निरन्तर चीख-पुकार कर रहे हैं कि परिस्थितियां बिगड़ रही हैं। इन्हें सम्भालो परन्तु कहीं सुनवाई नहीं हो रही। राज्यपाल कहते हैं कि मन्त्रिमण्डल को बदलो. कशमीर के हिन्दू कहते हैं कि हम लुट गए हैं हमें बचाओ परन्तु दिल्ली के शासकों पर इसका कोई प्रभाव नहीं हो रहा। अरुण नेहरू भी वहां हो आए, अर्जुनसिंह भी वहां हो आए, चव्हाण भी वहां हो आए। परन्तु सब के सब अन्धे हो रहे हैं किसी को दिखाई नहीं दे रहा कि वहां क्या हो रहा है। कश्मीर के हिन्दू तीन लाख से ७० हजार रह गए। वह भी धीरे-धीरे कशमीर छोड़ कर जा रहे हैं। जिस दिन कशमीर में एक भी हिन्दू न रहेगा उसके बाद वहएक और ... बन जाएगा। इसके बाद पर्यटनके लिए कोई हिन्दू कशमीर न जाएगा, कोई अमरनाथ की यात्रा न करेगा, कोई मटट और अनन्तनाग को देखने न जाएगा। कोई खीर भवानी के दर्शन न करेगा।

ऐसी परिस्थितियों में भी दिल्ली के शासकों पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा। न वह पंजाब में कुछ करने को तैयार है,न कशमीर में और धीरे २ पाकिस्तान के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

श्री गुरु तेगबहादुर आ कर क्या करेंगे? यह दुनिया अब उन जैसे महापुरुषों के लिए नहीं है उन्होंने हिन्दुओं की रक्षा के लिए अपना रक्त दिया था आज तो उनके गुरुद्वारों में खून बह रहा है। उनके ही भगत ने सन्त लोंगोवाल की एक गुरुद्वारा में हत्या कर दी दरबार साहब के मुख्य ग्रन्थी पर उस समय गोली चलाई गई जब वह गुरुग्रन्थ साहब के आगे अपना सिर झुका रहे थे। आज न कोई पंजाब में सुरक्षित है, न कोई काश्मीर में सुरक्षित है। पंजाब में अकाली राज है। उन अकालियों का जो अपने आपको गुरु साहिबान के अनुयायी कहते हैं। उन्होंने अपने कान और आंखें बन्द रखे हैं। वह यह सुनने को ही तैयार नहीं कि गुरु तेगबहादुर ने किन लोगों के लिए अपना बलिदान किया था। गुरु महाराज ने जिनके लिए अपना खून दिया था आज उनके अनुयायी उन्हीं का खून कर रहे हैं।

कश्मीर में परिस्थितयां फिर वैसी ही पैदा हो रही हैं। जो औरंगजेब के समय थीं लेकिन आज कोई गुरु तेगबहादुर नहीं है जिन पास कशमीर के पंडित जाकर फरियाद कर सकें। आज कोई गोविन्द राय नहीं है जो अपने पिता को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने को तैयार कर सके।

वास्तविकता तो यह है कि यह दुनिया अब गुरु तेगबहादुर जैसे महापुरुषों के योग्य नहीं है कि वह स्वर्ग से इस नर्क में आएं। यहां अब इन्सान कम रहते हैं शैतान अधिक रहते हैं। पंजाब हो या कशमीर सब जगह एक ही जैसा माहौल है और इस महोल को देखकर अनायास मुंह से निकलता है:—

> "आसमानों से फरिश्ते जो उतारे जाएं
> वे भी इस दौर में सच बोलें तो मारे जाएं।"

मैंने लिखा है कि काश, गुरु तेग बहादुर, आज आ सकते? नहीं, हम अब उन्हें नहीं बुलाएंगे, न वह आएंगे। हम इस योग्य ही नहीं कि उन्हें बुलाएं और वह कहने पर आएं। अब तो हिन्दुओं में ही कोई शिवाजी पैदा हो, कोई राणा प्रताप पैदा तब शायद हिन्दू बच सकें या उनका हिन्दुस्तान बच सके हम जिधर जा रहे हैं अब यह भी पता नहीं कि यह देश भी बच सकेगा या नहीं, हमारे शासक वे लोग हैं जिनका लक्ष्य जीत नहीं है, हार है और जो कहते हैं कि हमारी हार मे ही हमारी जीत है। ये लोग जुआरी हैं। इस देश की ७० करोड़ जनता के भाग्य का जुआ खेल रहे। यह इस देश को क्या बचाएंगे और ऐसे देश में श्री गुरु तेग बहादुर आकर क्या करेंगे?

—वीरेन्द्र

मुस्लिम बिल पर प्रधानमंत्री का भाषण

क्या यही सैक्यूलरिज्म है

—ओमप्रकाश त्यागी

माननीय श्रीमती शाहबानो ने अपने तलाक पर अपने निर्वाह के लिये सुप्रीमकोर्ट मे अपील की थी। सुप्रीमकोर्ट ने भारतीय विधान की धारा १२५ का ध्यान करते हुये, उसके पति पर उसके खर्चे का भार डाला था। इस निर्णय से मुस्लिम महिलाओं में बड़ा उत्साह उत्पन्न हुआ और महिला संस्थाओं ने इसका समर्थन किया गया। भारत की समझदार जनता ने इसका आदर किया। सब की दृष्टि में एक ही बात थी कि कचहरी निष्पक्ष भाव से महिला वर्ग का ध्यान रखती थी।

सुप्रीमकोर्ट के निर्णय के बाद मुस्लिम समुदाय के कुछ कठमुल्लों ने इस निर्णय का विरोध किया, और इसे उनके व्यक्तिगत न्याय मे हस्ताक्षेप बतलाया गया। एक जगह बैठक हुई; और पार्लियामेन्ट के कुछ सदस्यों ने भी लोक-सभा में प्रश्न उठाया। अन्त में बड़े दबाव के बाद शाहबानो ने अपना दावा वापिस ले लिया; परन्तु सुप्रीमकोर्ट का निर्णय अटल था।

मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग इस बात पर विचार करने को तैयार नहीं थे कि दफा १२५ उन पर क्यों लागू नहीं होती थी। वह केवल यही धुन लगा रहे थे कि सरकार उनके व्यक्तिगत कानून में हस्ताक्षेप कर रही है। परन्तु किसी ने इस बात पर बल नहीं दिया कि समूचा उनका व्यक्तिगत बिल उन पर लागू किया जाय, जैसा कि पाकिस्तान में हो रहा है। वहां बड़े कड़े नियम लागू होते हैं। परन्तु मुस्लिम सम्प्रदाय कड़े कानून से बच कर अपने लाभ की बात करते थे; परन्तु १२५ दफा उन पर भी लागू होती है। इस पर कोई व्यक्ति नही बोला।

श्री आरिफ मोहम्मद खां ने इस विधेयक पर अपना कड़ा समर्थन दिया; और अनेकों महिलाओं ने सुप्रीमकोर्ट के निर्णय का समर्थन किया। समझदार मुस्लिम वर्ग और महिलाओं ने निर्णय का समर्थन किया। ऐसा लगा कि इस निर्णय से मुस्लिम महिलाओ का भविष्य बन जायगा।

परन्तु कुछ कट्टर मुस्लिम वर्ग के झांसे मे आकर भारत के प्रधानमन्त्री जी ने लोक-सभा में एक विधेयक उपस्थित किया; अर्थात इस बिल के द्वारा दफा १२५ को बदलकर सुप्रीमकोर्ट के फैसले को समाप्त करने का प्रयास किया, यह किस की सलाह से पेश किया गया यह स्वय प्रधानमन्त्री ही जाने। इसके विरोध में श्री खान साहब ने अपने मन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया।

विधेयक के समर्थन में माननीय प्रधानमन्त्री जी का भाषण पढ़ने योग्य है। आपने अपने भाषण मे एक ही बात पर बल दिया कि भारत सैक्यूलर स्टेट है इसमें किसी भी धार्मिक वर्ग के कानून के विरोध में सरकार नहीं जायगी। इसीलिये विधेयक लाया गया है।

माननीय प्रधानमन्त्री जी से पूछा जाता है कि सैक्यूलर धर्म में मुस्लिम वर्ग ही आता है या अन्य वर्ग भी। क्या आर्य (हिन्दू) वर्ग भी आता है या नहीं। यदि आता है तो नीचे लिखे प्रश्नों के उनके पास क्या उत्तर है—

१—हिन्दू वर्ग में दहेज की प्रथा नहीं थी; परन्तु सरकार ने बलात हिन्दू वर्ग की महिलाओं पर दहेज की प्रथा लागू की गई।

२—भारत सरकार भारत की आबादी को नियन्त्रण में रखने के लिये सरकार ने फैमीली प्लानिंग उत्पन्न की। संसार का कोई धर्म इसका समर्थन नहीं करता, परन्तु सरकार इस प्लानिंग को केवल हिन्दुओं पर लागू की है। इसका मुख्य कारण यही है कि सरकार मुसल्मानों की इच्छा के विरुद्ध कानून बनाना नहीं चाहती है।

३—विदेशों के लोग भारत जैसे विशाल देश की सहायता से नाबालिग अथवा इस प्रकार के बच्चों की पालन करने के लिये ले जाते थे। यह विधेयक पास होने को था, परन्तु मुसल्मानों के विरोध करने से यह विधेयक अब हिन्दुओं पर ही लागू होगा।

४—क्या काश्मीर सरकार को विशेष संरक्षण के लिये दफा ३७० दी गई है। वहां मुसल्मान बहुसख्या में है। सरकार भली प्रकार चल रही है। अन्य राज्यों ने भी अब दफा ३७० लाना, शुरू किया है। क्या यह भी सैक्यूलर के दायरे मे आती है।

५—सरकार ने हरिजन और वनवासियों की सुरक्षा अपने ऊपर ली है। हरिजनो की सुरक्षा ठीक चल रही है; परन्तु वनवासियों की सुरक्षा सरकार ने समाप्त कर दी है। क्या वनवासी भी सैक्यूलर के ढांचे में आते हैं या क्रिश्चियन लोगों को खुश करने के लिये यह प्रथा बनाई गई है।

आशा है माननीय प्रधानमन्त्री मेरे प्रश्नों का उत्तर देंगे। क्या उनकी सैक्यूलर की परिभाषा में केवल हिन्दू वर्ग ही आता है या अन्य वर्ग भी। सरकार ने सैक्यूलरिज्म के ढांचे में जो नीति बनाई है वह दुर्भाग्य पूर्ण है। भारत इसके द्वारा रह सकेगा वह सरकार ही स्वयं सोचे। मेरा दृढ़ मत है सरकार ही देश को निर्बल बना रही है। सरकार की इस दुर्बल नीति का लाभ उठाकर मुसल्मान और ईसाई भारत में इस्लामिक और क्रिश्चियन स्टेट बनाने में लगे हैं। सरकार की यह नीति ही उनको सहयोग दे रही है यह खेद का विषय है।

आत्म कर्त्तव्य

कुरु क्षेत्र मे हो गया बलबुद्धि का अवसान था,
क्रमशः प्रगति करने लगा इस देश में अज्ञान था।
जिसका दुखद फल पाक बंगला देश का निर्माण है,
अब भी यहा पर चल रहा धर्मान्तरण अभियान है ॥१॥
धर्मान्तरण की यह भयानक क्रिया यदि चलती रही,
इसमें विदेशी तत्व को यदि सफलता मिलती रही।
तो भव्य भारतवर्ष की नहीं सभ्यता बच पावेगी,
अपनी पुरातन संस्कृति सोचो कहां फिर जायेगी ॥२॥
क्या राम की पावन कथा इस देश मे चल पायेगी,
उसकी प्रतिष्ठा हिम शिला के तुल्य नही गल जायेगी।
श्री कृष्ण की गीता यहा फिर कौन पढ़ने आयेगा,
प्रभु कीर्तन सन्ध्या हवन कुंभ भी चलने पायेगा ॥३॥
इस देश का कुछ भाग सचमुच रोम बनता जा रहा,
और कुछ भयरहित निशि दिन पाक के गुण गा रहा।
चलती रही यदि यह दशा तो फिर विभाजन पास है,
समझो सजग होकर चलो समझा रहा इतिहास है ॥४॥
तुम सबल अमृत पुत्र हो नैराश्य आलस छोड़ दो,
धर्मान्ध वैदेशिक प्रचारक पुञ्ज का मुख मोड़ दो।
छल बल प्रलोभन नष्ट हों सुख शान्ति का संचार हो,
बीते समय की भांति सबमें शुद्ध सात्विक प्यार हो ॥५॥
फिर राम राज्य समान ही सुख साज साजेंगे यहां,
दुःख दैन्य रह सकते नहीं सुरधाम साजेंगे यहां।
जिस देश में प्रभु ने दिया सर्व प्रथम श्रुति ज्ञान हो,
फिर क्यों न उसका इस धरातल पर अलौकिक मान हो ॥६॥

आचार्य रामकिशोर शर्मा

राष्ट्र निर्माण और युवा शक्ति

डा० धर्मपाल आर्य, महामन्त्री, आर्यप्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

पिछले कई वर्षों के दौरान राजनीतिक अस्थिरता, उखाड़-पछाड़ और आपा-धापी के कारण सम्पूर्ण देश में कुण्ठा और निराशा का जो वातावरण बना उसमें हमारी युवाशक्ति सर्वाधिक प्रभावित हुई। उसमें एक विशेष प्रकार की निराशा जनित कुण्ठा उभर आई। यही कारण था कि स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले युवा, सुभाष बोस के उस कर्तव्य पथ को छोड़कर, हमारी सामर्थ्यवान युवाशक्ति पराजित मनोवृति का शिकार होने लगी। यह आश्चर्यजनक सत्य उस बात से भी उद्घाटित होता है कि पिछले वर्षों में जितने भी दंगे-फसाद, लूटमार, अपराध और आतंकवादी घटनायें हुई, उसमें युवा और किशोर आयु के लोग ही या तो पकड़े गए, या मारे गये। विश्वविद्यालयों अथवा अन्य स्थानों पर उच्छृंखलता के जो दृश्य देखने में आये, उनमें युवाओं ने ही बढ़-चढ़कर भाग लिया।

अब परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन है। युवा प्रधानमन्त्री के नेतृत्व में आशा की जा सकती है कि देश का युवा मानस सक्रिय होगा। उसे अपनी सम्पूर्ण आकांक्षाओं, अपेक्षाओं और भावनाओं को पूरा करने का अवसर मिलेगा। आज सभी क्षेत्रों के युवा वर्ग की आशायें उन्हीं पर टिकी हैं। यह वर्ग चाहे श्रमिक वर्ग हो, शिक्षित वर्ग हो या अधुनातन विज्ञान से जुड़ा वर्ग हो। गत वर्ष सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और कलात्मक स्तर पर जो निर्णय लिए गए हैं, उनसे भी युवा जन को विश्वास मिला है। त्रासदी यह रही कि युवाजनों की उच्छृंखलता जनित घटनाओं को कभी तो युवा भटकाव कह कर टाल दिया गया और कभी उसका कारण बेरोजगारी, बढ़ती आबादी अथवा शिक्षापद्धति में दोष बताया गया। कभी यह कहा कि युवा पीढ़ी को सही सामाजिक धरातल मिल सके, ऐसा अवसर ही नहीं आया। कभी यह बताया गया कि यह उसी विनाशपूर्ण स्थिति का परिणाम है जिसने सारे संसार को अपनी लपेट में ले रखा है।

अब युवा वर्ग के सामने नये आयाम खुल रहे हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति में बदलाव, आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में नई दृष्टि, विज्ञान की गति के साथ कदम बढ़ाकर चलने की योजनाएं आदि सभी एक खुली दृष्टि की देन है। यह ठीक है कि देश की राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक ढांचे की गड़बड़ी को ठीक करना सहज नहीं है। पर यह कार्य युवा मानस अपने दृष्टिकोण को साफ रखकर कर सकता है। युवा शक्ति का सर्वाधिक योगदान गरीबी हटाने में हो सकता है। घर-घर तथा गांव-२ के कोने-२ तक जाकर सरकार की अनेक योजनाओं को जन साधारण तक पहुंचाने का काम इसी युवा शक्ति का है। यह तभी सम्भव है जब उसकी दिशा निर्दिष्ट हो। २१ मार्च, १९८५ को लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में बोलते हुए प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने कहा था कि "अगर शिक्षा को और मजबूत करना है, और बढ़िया करना है तो सबसे जरूरी है कि हम अध्यापकों से शुरु करें, क्योंकि वहां से ही एक्सीलेंसी आ सकती है, वहीं से कौशल आ सकता है। पुन. प्रश्न उठता है कि क्या हम अध्यापकों को आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करा सके हैं। आज अध्यापक हड़ताल पर हैं। वे ट्रेड यूनियन के मार्ग पर हैं। वे आज की आपा-धापी में शायद अपना ही रास्ता भूल गये हैं। उन्हें [illegible] अपनाना होगा तभी तो अध्यापक युवाओं को सही दिशा-निर्देश कर सकेंगे।

[illegible] केवल पुरुष जाति की शक्ति नहीं है। युवतियां भी [illegible] हैं। वे [illegible] शिक्षा टैक्नोलोजी और कम्प्यूटर तक की विधाओं में प्रवीणता प्राप्त कर रही है। राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका निस्सन्देह सराहनीय हो सकती है। यह आवश्यक है कि वे अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करें जिससे भारत की गरीब, पिछड़ी जनता को उपर उठाया जा सके। परिवार कल्याण की योजनाओं के प्रति जन-जन को सचेत करने में उनकी भूमिका के महत्व को नकारा नहीं जा सकता ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में युवकों के माध्यम से यह कार्य सरल हो सकता है।

आज का सबसे विकट प्रश्न राष्ट्रीय एकता का है। हमारे युवकों का वर्ग आतंक के बल राष्ट्रीय एकता को विघटित करने में लगा है। निस्सन्देह धर्मान्धता उसकी भावनाओं को ईंधन देती है और वह बिना आगा-पीछा सोचे अपने स्वार्थी, धर्माधिकारियों के आदेश पर कुछ भी करने के लिए टूट पड़ता है। यह उम्र ही ऐसी होती है कि व्यक्ति कुछ करना चाहता है, फिर चाहे वह मानव कल्याण के लिए हो अथवा मानव विनाश के लिए। लेकिन आवश्यकता है उनका मार्ग निर्देश करने की। राजनेता, अध्यापक, धर्माध्यक्ष कोई भी उनको सही रास्ता नहीं दिखा पा रहा है। हमने धर्मनिरपेक्षता के आदर्शों को अपनाया है। कुछ दिग्भ्रमी नेता अलग-२ मजहबों के नाम लेकर हमें बताना चाहते कि हम अलग-१ है। पर ऐसा है नहीं, हम सभी भारतीय हैं। भारत हमारा राष्ट्र है। मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करना और सभी को समान अधिकार दिलाना हमारा धर्म है। युवाशक्ति इन संकीर्ण दायरों से निकलकर, मुक्त भाव से सबको समान बनाने कार्य कर सकती है।

भारत का गुटनिरपेक्ष देशों में महत्व पूर्ण स्थान है। भारत उन राष्ट्रों का मार्गदर्शन कर सकता है जो किसी महाशक्ति से बन्धे नहीं है। भारत को सबल बनाने, उसकी आवाज को सशक्त करने में युवा शक्ति की भूमिका निर्विवाद है। हमारा नारा तो यही है कि सब समान है। विश्व कल्याण के लिए यह आवश्यक है कि निरस्त्रीकरण को पूर्णतः लागू किया जाये। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आन्तरिक और बाहरी संकटों से निर्माणकारी शक्तियां उभरती हैं और गणतन्त्रात्मक राष्ट्र और अधिक सगठित और मजबूत बनता है। पर इसमे हमारी उस शक्ति का अपव्यय होता है, जो राष्ट्र और मानव कल्याण में लगायी जा सकती है।

युवा शक्ति एक और काम तेजी से कर सकती है, और वह है शान्ति स्वतन्त्रता और समानता के लिए जेहाद। जिस क्षेत्र में भी अशान्ति, आतंक और घृणा व्याप्त है, वहां विश्व-सुरक्षा तथा शान्ति के लिए, युवा शक्ति कार्य कर सकती है। यह अराजकता इस बात से भी आ जाती है कि आज विश्व को आर्थिक असुरक्षा का भय है। इसका सर्वाधिक असर विकासशील देशों पर पड़ता है। यह आवश्यक कि हमारे युवा अकर्मण्य न बनें। वे अपना रोजगार स्वयं खोजें, वे किसी अन्य पर निर्भर न रहे। वे आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए प्रयत्नशील रहे।

युवा शक्ति का योगदान विकलांगों और वृद्धों की सेवा में भी हो सकता है। यदि विकलांग की सहायता करके उन्हें अपने जीवन-यापन के योग्य बनाया जा सके तो यह हमारी बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। विकलांगों को गरीबी का शिकार तो होना ही पड़ता है, उन के प्रति २ समाज की उदासीनता उन्हें और अधिक दुखी कर देती है। वृद्ध घरों में रहते हुए भी अपने आपको, घर की वर्तमान धारा से कटा हुआ महसूस करते हैं। उनकी शारीरिक क्षमतायें भले ही कम हो गयी हों, पर उनके पास अपने जीवन का अनुभव होता है। उनके पास विषम परिस्थितियों पर काबू पाने के बाद की विजयी मानसिकता होती है। युवा वर्ग को उनसे निर्देशन प्राप्त करके जीवन-युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इससे जहां उसका अपना कल्याण होगा, वहां बूढ़े लोगों को भी यह अहसास होगा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

विश्व कल्याण कर्ता—यज्ञ

लेखकः—पण्डित वीर सेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य,
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दोर ४५२००७ (म० प्र०)

(गतांक से आगे)

११. यज्ञ द्वारा पर्यावरण में शोधन प्रक्रिया :

यज्ञ ब्रह्माण्ड को शुद्ध एवं पुष्ट करता है। संसार को जीवन देता है। अग्नि में होमा हुआ पदार्थ वायु मण्डल में शीघ्र व्याप्त हो जाता है। व्याप्त हो जाने से अन्तरिक्षस्थ ताप एवं विद्युतादि अग्नियों तथा सूर्य रश्मियों द्वारा ताप की तीव्रता, उग्रता एवं ताप की परिवर्तित स्थितियों में, होमा हुआ पदार्थ सूक्ष्म रूप से उत्तरोत्तर ऊपर गति करता है और ताप की न्यूनता से वह नीचे की ओर भी गति करता है : इस प्रकार होमे हुए पदार्थों की गति यज्ञ के द्वारा ऊपर नीचे की ओर क्रमशः होने लगती है और एक प्रकार की घर्षण क्रिया प्रारम्भ होने लगती है जिससे प्रदूषणों का निवारण कार्य शीघ्र होने लगता है। परिणामतः शन्नो वातः पवताम्—सुखकारी वायु चलने लगती है। अतः प्रदूषणों के निवारण के लिए यज्ञ अत्यन्त सुगम तथा श्रेष्ठ साधन है। तथा इसको वैज्ञानिक कार्य समझ कर अंगीकार करना चाहिए।

१२. पवित्रता-सृष्टि का स्वभाव है :

सृष्टि के पदार्थों का स्वभाव शुद्धता एवं पवित्रता का है। प्रदूषण स्वभाव नहीं है। अपितु, यह तो विकार है। अस्वाभाविक है—अतः उसका निवारण कार्य भी सहज ही है। होम में होमे हुए पदार्थ सुगन्धित, रोगनाशक और पुष्टि प्रदाता होने से उनका घर्षण वायुमण्डल में यज्ञ में बारम्बार आहुति प्रदान करने से सहज में ही होने लगता है। यज्ञाग्नि मे आहुति देते ही अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल मे घर्षण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तथा बार-बार आहुति देने से घर्षण अर्थात् मार्जन, शोधन क्रिया का क्षेत्र स्वतः ही विशाल होता जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर तापक्रम क्रमशः घटने से पृथ्वी की ओर घर्षण क्रिया होने लगती है। रात्रि और दिवस के तापमानों से भी यज्ञ की इस क्रिया को स्वभावतः संरक्षण और बल प्राप्त होता है तथा प्रदूषणों का विशुद्धिकरण होता जाता है।

१३. यज्ञ से विश्व में आरोग्यता एवं पुष्टि :

यज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध एवं पुष्ट होता है—यह ध्रुव सत्य है। वायु मण्डल मे ही मेघों का निर्माण होता है। यज्ञ की आहुति से उत्पन्न ऊष्मा, वाष्प, एवं धूम्र का संयोग अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल में प्रविष्ट होकर मेघ मण्डल मे स्थित हो जाता है और मेघमण्डल के कणों को शुद्ध एवं संस्कारित कर वृष्टि का हेतु बन जाता है। वायु एवं वृष्टि जल की शुद्धता से पृथ्वीस्थ वृक्ष, वनस्पति, अन्न फलादि शुद्ध, पुष्ट एवं आरोग्यता प्रदान करने वाले हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ से विश्व का महोपकारक होता है। आज के समय में प्रदूषण की समस्या उग्र तथा आक्रामक रूप में भी उपस्थित होती जाती है। इसकी शान्ति भी यज्ञ से ही होगी। प्रदूषणों की समस्या का निराकरण यज्ञ ही है। यज्ञ प्रतिदिन घरों मे होने के साथ-२ औद्योगिक प्रतिष्ठानों मे भी अनिवार्य रूप से यज्ञ होने चाहिए। तभी प्रदूषणों का व्यापक रूप से निराकरण होगा। अथर्ववेद काण्ड ८, सूक्त २ के मंत्र २८ मे बताया है कि—यज्ञाग्नि विविध कष्टों मे पार लगाने वाली है, प्रदूषणों का नाश करने वाली है, घातक तत्वों को नष्ट करने वाली है। पीड़ाओं को हरने वाली, शुद्धिकर्त्ता तथा महौषध है। यजुर्वेद अध्याय एक के मन्त्र ८वें में अग्नि को—धूरसि, सब दोषों को नष्ट करने वाला, 'सस्नितमम्' शुद्धि का हेतु कहा है। मन्त्र ९ मे "अपहतं रक्षः" दुर्गन्ध्यादि दोषों का नाश करने वाला बताया है। उसको यज्ञ ऊपर चढा देता है। इस प्रकार अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है।

१४. यज्ञ जीवन है—प्रदूषण जीवन विनाशक है :

प्रदूषणों से रोग होते हैं और मृत्यु भी हो जाती है—यह एक सर्वजन विदित सत्य है। यह प्रदूषण वायु में फैलकर जन-संहारक हो जाता है। वायु में प्रदूषण व्याप्त हो जाने से वह जल में, वृक्ष-वनस्पतियों में तथा पृथ्वी के ऊपरी भाग एवं पृथ्वी के भीतर भी प्रविष्ट हो जाता है। इसी प्रकार स्थान-२ पर यदि यज्ञ होंगे तो उनका अंश घृत के साथ शक्तिशाली बन कर वायुमण्डल में व्याप्त होगा। जिससे प्रदूषणों का निवारण तत्काल होगा और रोगों का शमन भी होगा, प्राणिमात्र को ही नहीं, अपितु वृक्ष, वनस्पति आदि तथा पृथ्वी, जल आदि का भी शोधक एवं पुष्टिकारक सिद्ध होगा। इस प्रकार यज्ञ विश्व के जीवन का निर्माता एवं विश्व का कल्याण करने वाला सिद्ध हो सकेगा।

राष्ट्र निर्माण

(पृष्ठ ५ का शेष)

कि वे पूर्णतः अनुपयोगी नहीं हो गये हैं। समाज को उनकी जरूरत है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बीस सूत्री कार्यक्रम प्रारम्भ किया था। इससे अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़ वर्गों, कारीगरों, खेतिहर मजदूरों, महिलाओं और शहरी ग्रामीण गरीब तबके की दशा को सुधारा जा सकता है। पौष्टिक आहार, महिलाओं और बच्चों का कल्याण आदि इस कार्यक्रम के अंग हैं। हमारी युवा शक्ति इस कार्यक्रम को ईमानदारीसे पूरा करनेमें बेहतर योगदान कर सकती है।

जहां बड़ों की मानसिकता, उदासी, उदासीनता के घेरे में घिर जाती है, वहा युवा वर्ग की मानसिकता परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील होती है। आज युवा वर्ग को उस प्रेरणा की तलाश है, जो उनमें समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह में पूरी आस्था और ईमानदारी पैदा कर सके। युवा वर्ग को देश की दृढ़ता, विकास और उसकी एकता-अखण्डता के लिए कमर कस कर सर्वस्व समर्पित करना होगा। इस कार्य को पूरा करने के लिए युवाओं को अपने भीतर छिपी शक्ति को रचनात्मक दिशा देनी होगी। इसी छिपी शक्ति को ज्ञान कराने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने २ फरवरी १९८६ से ९ फरवरी १९८६ तक आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया जिसमें केन्द्रीय खान और इस्पात मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने युवा वर्ग को अपना सही मार्ग चुन कर राष्ट्र निर्माण में संलग्न होने की प्रेरणा दी।

प्रस्तावित शिक्षित नीति के आधारभूत सिद्धान्त

— स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

१—शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा का समन्वित विकास करना है। किसी भी शिक्षा नीति मे यह भाव सर्वत्र ओत-प्रोत रहना चाहिये।

२—देश की एकता को सुदृढ़ करने के लिये समूचे देश मे एक सी शिक्षा नीति या शिक्षा पद्धति होनी चाहिये। शिक्षा-काम का निर्धारण केन्द्र द्वारा तथा उसका कार्यान्वयन राज्यों द्वारा होना चाहिये।

३—प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा रहे। परन्तु देश की एकता को बनाये रखने और शिक्षा के स्तर को ऊंचा रखने के लिये विश्वविद्यालय के स्तर पर देशभर में शिक्षा का माध्यम एक अर्थात् हिन्दी को रखना अनिवार्य है।

४—संविधान की धारा ३४१ के अनुसार हिन्दी राजभाषा के रूप में मान्य है। तदनुसार एक दिन कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यवहार होना है। हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ बनाये बिना यह संभव नही होगा। उच्चतम शिक्षा के माध्यम के रूप मे भी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही सक्षम होगी। देश की सभी भाषाओं का मूल संस्कृत में है। यहां के धर्म, संस्कृति साहित्य, इतिहास और परम्परायें सभी का आधार संस्कृत है। अतः नये शिक्षाक्रम में माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी के लिये संस्कृत के अनिवार्य विषय के रूप मे अध्ययन की व्यवस्था होनी चाहिये। इस संदर्भ में संविधान की धारा ३५१ भी ध्यातव्य है।

५—अंग्रेजी के पठन-पाठन की व्यवस्था रहे, किन्तु किसी भी स्तर पर उनका अध्ययन अनिवार्य नही होना चाहिये।

६—भारत में सबको समान अधिकार प्राप्त है। ऐसी अवस्था में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक का भेद देश की भावात्मक एकता में बाधक है। कम से कम शिक्षा के क्षेत्र में इस अन्तर के लिये ध्यान नही होना चाहिये।

७—सबको अवसर की समानता प्रदान करने के लिये आवश्यक है कि सपूर्ण शिक्षा सर्वथा निःशुल्क हो। एतदर्थ अपेक्षित धन शिक्षा कर (Education Tax) लगाकर जुटाया जाये।

८—ऊंच-नीच की भावना को समाप्त कर समाजवाद की स्थापना के लिये आवश्यक है कि पब्लिक स्कूलों, माडल स्कूलों तथा कैपिटेशफीसन (Capitation Fee) से स्थापित अथवा संचालित स्कूलों पर तत्काल पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये।

९—म्यूनिसिपल कमेटियों, सरकारी या अर्द्ध सरकारी तथा स्वयंसेवी संगठनो द्वारा संचालित स्कूलों के स्तर को ऊपर उठाया जाये। इसके लिये कतिपय देशों में प्रचलित क्षेत्रीय स्कूल (Neighbouring School) पद्धति को अपनाया जाये जिसके अनुसार एक क्षेत्र में रहने वाले छोटे बड़े, धनी-निर्धन सभी बालकों को अनिवार्य रूप से अपने ही क्षेत्र पड़ौस में स्थित स्कूल में पढ़ना होगा।

१०—सहशिक्षा पर प्रतिबन्ध होना चाहिये। यदि वैसा करना संभव न हो तो अधिक से अधिक प्राइमरी और तत्पश्चात् स्नातकोत्तर स्तर पर ही इसकी अनुमति हो।

११—१०-२ की अवधि में अनिवार्य धार्मिक (नैतिक) शिक्षा का प्रावधान होना चाहिये। धर्मनिरपेक्ष राज्य मे धार्मिक शिक्षा का आधार वेद ही हो सकता है, क्योंकि सृष्टि के आदि मे अथवा प्राचीनतम होने के कारण वेद से किसी का विरोध उत्पन्न नहीं होता।

१२—मात्र पुस्तकों के पठन-पाठन से धर्म का ग्रहण नहीं होता। इस जीवन जीवन में संक्रमित होता है। समस्त शिक्षण सस्थाओं में धर्म-शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देते हुए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय से। अक्तूबर १९५५ को सभी राज्यों के शिक्षा मन्त्रियों तथा विश्व विद्यालयों के कुलपतियों के नाम भेजे परिपत्र में कहा गया था :—

"The development of moral and spiritual values is basic to all educational objectives. Instruction uninspired by moral ard religious values will be inadequate as a preparation for democratic citizenship The central problem of moral education is that it is more a matter of practice than theory It it not communicated by intelectual means alone but transamitted from one person to another by living human contacts.

दूसरे राज्यों मे यह कहा जा सकता है—"Values are caught not taught स्पष्ट है कि जब तक शिक्षक" सादा जीवन, उच्च विचार और निर्दोष आचरण" वाले नहीं होंगे, तब तक शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं होगा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार रहेगा। इसलिये अध्यापको के लिए इस प्रकार की आचार सहिता तैयार होनी चाहिये और उसका उल्लंघन करने वालों के लिये ऐसी कठोर दण्ड व्यवस्था होनी चाहिये जिससे शिक्षा क्षेत्र मे कोई चरित्रहीन व्यक्ति प्रवेश न कर सके और आजाये तो उसे तत्काल निकाला जा सके। अध्यापको की नियुक्ति करते समय और उन्हें स्थायी करते समय जितना ध्यान उनकी शैक्षणिक योग्यता पर दिया जायेउससे कहीं अधिक उनके आचार-विचार पर दिया जाये।

१३—अध्यापकों के लिये मांस, मादक द्रव्यों (शराब, तम्बाकू) आदि का सेवन करना सिनेमा देखना आदि सर्वथा निषिद्ध होना चाहिये।

१४—शिक्षण संस्थाओ मे तथाकथित सांस्कृतिक कार्यक्रमो के आयोजनो पर रोक लगानी चाहिये।

१५—प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार कालिज स्तर पर आवासीय व्यवस्था होनी चाहिये। समस्त प्राध्यापकों तथा छात्रो को कालिज परिसर में ही रहना चाहिये। ये स्थान नगरो से बाहर होने चाहियें। छात्रो पर अधिक भार न पड़े—इसके लिये सरकार से पर्याप्त अनुदान मिले।

१६—१० अथवा १०-२ के साथ विद्यार्थी की प्रवृत्ति, अध्यापकों के परामर्श तथा माता की इच्छा के अनुसार निश्चित दिशा मे डाल देना चाहिये।

१७—आज कल जब किसी को अन्य कोई काम नहीं मिलता तब वह नो महीने का प्रशिक्षण प्राप्त कर अध्यापक बन जाता है। अध्यापक वही बने जो १०-२ के बाद अध्यापक बनने का निश्चय करके तदनुसार ही बी० ए० के तीन और प्रशिक्षण के दो वर्ष की पढ़ाई करे। अध्यापक के लिये केवल विद्यास्नातक होना पर्याप्त न होकर विद्याव्रत स्नातक होना आवश्यक हो। अध्यापक के योगक्षेम का पूर्ण दायित्व संस्था के संचालकों का होगा।

१८—पत्राचार पाठ्यक्रम तथा खुले विश्वविद्यालयो के द्वारा शिक्षा का उद्देश्य पूरा नही होता। वे केवल डिग्री प्राप्त करने के साधन हैं। एक ओर डिग्रियोंका अवमूल्य करना और दूसरी ओर डिगरिया ही देने की व्यवस्था करना वदतो व्याघात नहीं तो क्या है। ये संस्थायें शिक्षा के के अन्तर्गत नहीं आ सकती।

१९—प्राचार्यों, प्राध्यापको, संचालकों आदि के नैतिक स्तरको ध्यान में रखते हुए स्वायत्ता प्राप्त महाविद्यालयों का परीक्षण करना व्यर्थ सिद्ध होगा।

२०—अध्ययन काल मनुष्य का निर्माण काल होता है। जो अभी स्वयं नही बना, उसे समाज और देश के निर्माण की जिम्मेदारी सोपना खतरे से खाली नही होगा। समाज की गतिविधियो, देश की राजनैतिक से अवगत कराने तथा भावी नेतृत्व के लिये समर्थ बनाने के नाम पर प्रवृत सवर्ष मे वाद विवाद करने संगठन बनाने, निर्वाचनो में प्रबल होने आदि की छूट देकर उन्हें राजनीति से और राजनीतिकों को शिक्षण सस्थाओ से परे रखना सभव नहीं होगा। अध्ययन काल में विद्यार्थियो का कर्त्तव्य पुस्तको तथा गुरुजनों के माध्यम से अपनी बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने तथा चरित्र का विकास करने तक सीमित रहना चाहिए।

२१—पारिवारिक दायित्वों, व्यावहारिक, कठिनाइयों तथा बेकारी की समस्या को ध्यान में रखते हुए स्त्रियों को अध्यापन तथा चिकित्सा विभाग से अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में यथासम्भव नौकरी नही करनी चाहिये।

स्वास्थ्य चर्चा

अथर्ववेदीय अपस्मार (मिर्गी) वर्णन और चिकित्सा

—डा० हरगोपाल सिंह, मनोविश्लेषक चिकित्सक, गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय, हरिद्वार

अथर्ववेद एक ओर हमें सांसारिक बन्धनों से मुक्ति के लिये ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा देता है तो दूसरी ओर वह संसार की बाधाओं पर विजय पाने और सुखी जीवन यापन की कला भी सिखाता है। मानव जीवन की लघुता दैनिक समस्याओं से लेकर शासकों की दीर्घ अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान इस महान वेद में निहित हैं जो आधुनिक विज्ञान के मापन में सही हैं। किन्तु कुछ संकुचित दृष्टि-कोण के व्यक्ति उन्हें सही अर्थों में न समझकर अथर्ववेद की महानता में शंका करते हैं। उन्हीं जीवनोपयोगी विषयों में से एक विषय भैषज्यपनी है जिसके अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक, मानसिक रोग दोषों से मुक्ति पाने और सौ वर्षों तक स्वस्थ जीवन भोगने की प्रक्रियायें वर्णित हैं।

अथर्ववेद को भेषज वेद और अमृत वेद के नामों से इसीलिये पुकारा जाता है क्योंकि इसके मन्त्रों की बड़ी संख्या चिकित्सा और स्वास्थ्य प्राप्ति के विषयों का निरूपण करती है। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार अथर्ववेदीय पंडित भिषग् (चिकित्सक) भी होता है जो धार्मिक प्रक्रियाओं यथा मन्त्र, यज्ञादि के साथ औषधि देते हुये रोगी के रोग का निवारण करता है। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद इस लिए कहा जाता है क्योंकि आयुर्वेद के ज्ञान का आधार ही अथर्ववेद है ऐसा महर्षि चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि सभी मानते हैं। अथर्ववेद में अनेक प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों के लक्षण, कारण और चिकित्सा वर्णन परोक्ष और अपरोक्ष रूप में दिये हैं। अपस्मार (मिर्गी) रोग का वर्णन भी उन्हीं में से एक है जिसका वैज्ञानिक विवेचन हम अथर्ववेद में स्पष्ट पाते हैं।

अपस्मार (मिर्गी) रोग का सामान्य वर्णन अथर्ववेद काण्ड—२, ४।२, ८।१।१,४,६,७,१६, १८-२१ और १९।३६।६ में दिया है। मैक्स-मूलर का कथन है कि केशव के अनुसार अ० कां० १।२१ तथा कौशिक के अनुसार अ० कां० ६।१०५ भी अपस्मार के बारे में हैं। किन्तु अपस्मार का स्पष्ट वर्णन अ० कां० ८।१।१६ में मिलता है फिर भी इसके बारे में कुछ भ्रान्ति है जिसे इस लेख में दूर किया गया है। मैक्समूलर इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए "जम्भ" शब्द के आगे प्रश्न सूचक चिन्ह लगाकर अस्पष्ट छोड़ देते हैं। व्हिट ने भी इसकी व्याख्या में तीन बार प्रश्न सूचक चिन्ह लगाकर अपूर्ण छोड़ देते हैं। यद्यपि वे इतना तो स्पष्ट कहते हैं कि जम्भ एक प्रकार का अचेत करने वाला दौरा है। रामचन्द्र शर्मा सायण का अनुसरण करते हुये कहते हैं जम्भ भीषण मानस रोग पैदा करने वाला राक्षस है। ग्रिफ्थ और कारम्बेलकर अपने-२ ग्रन्थों में जम्भ का अर्थ दौरा पैदा करने वाला राक्षस करते है।

प्रिय रत्न आर्ष अ० का० २।४।२ की व्याख्या में जम्भ कोई मानस रोग बताते हैं जो शरीर के जोड़ों को जकड़ देता है। सातवलेकर जम्भ का अर्थ दांत, जबड़े और मुंह से लेते हैं। 'जभीगात्र विनामे' धातु से जम्भ शब्द बनता है जिसका अर्थ शरीर को मरोड़ना आदि है। शब्द कोशों में जम्भ का अर्थ पीसना भी है। रामायण में विश्वामित्र द्वारा राम को और राम द्वारा लव कुश को जम्भास्त्र (शत्रु को अचेत करने वाले अस्त्र) देने का वर्णन है। इस प्रकार जम्भ की व्याख्या में कुछ विद्वान भ्रान्तिपूर्ण हैं और कुछ सत्यता के समीप पहुंचे भी हैं किन्तु स्पष्ट नहीं समझ पाए हैं कि वह किस रोग का वर्णन है। लेकिन जब इस मन्त्र में वर्णित लक्षणों का विवेचन आधुनिक मनोचिकित्सा शास्त्र के ऐपीलैप्सी रोग के वर्णन से तुलनात्मक रूप में करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि वह अपस्मार (मिर्गी या ऐपीलैप्सी) रोग का वर्णन है।

लक्षण:—विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गये अ० का० ८।१।१६ के भाषानुवाद के अनुसार इस रोग के लक्षण इस प्रकार हैं कि जम्भ दौरे के समय, रोगी तुरन्त ध्यान रहित हो जाता है, शरीर अकड़ जाता है, संसार से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है, जबड़ों में जीभ कट जाती है, अचेत हो जाता है, केवल युवा और पुरुषों पर ही रोग का हमला होता है, स्त्रियां उनके लिए रोती हैं इत्यादि।

इस वर्णन में चार बातें मुख्य हैं—१. दौरे के समय जबड़ों में जीभ कटना, २. शरीर अकड़ना, ३. अचेत हो जाना और ४. रोग पुरुषों को ही होना। अब देखते हैं कि आधुनिक मनोचिकित्सा शास्त्र साइकियेटरी का अपस्मार रोग के बारे में क्या कहना है। डब्लू० एल० जनसन ऐपीलैप्सी रोग के वर्णन में उपरोक्त सभी बातें सन्निहित करते हैं कि चेतना खो जाती है, रोग पुरुषों को ही होता है, ७५ प्रतिशत रोगी युवा अर्थात् २० वर्ष से पूर्व इससे पीड़ित होते हैं, जीभ प्रायः कट जाती है, शरीर अकड़ जाता है इत्यादि। फ्लमक, युंग, स्टेकील, ब्राउन सभी ऐपीलेप्सी के ये ही लक्षण मानते हैं। मैक्समूलर ने जम्भ (अपस्मार) और ग्रही (हिस्टीरिया) रोगों के लिए एक ही शब्द कन्वल्शन (दौरा) प्रयोग किया है। अर्थात् वे जम्भ (अपस्मार) और ग्रही (हिस्टीरिया) रोगों में भेद नहीं कर पाए हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि कभी-२ चिकित्सक भी हिस्टीरिया और मिर्गी रोगों के विभेद में धोखा खा जाते हैं। किन्तु इस रोग के दौरे में जीभ का कटना, एक ही ओर को गिरना और केवल पुरुषों को होने से अपस्मार का मिर्गी से विभेद निश्चित होता है क्योंकि हिस्टीरिया में ये ये लक्षण नहीं होते। अ० का० ८।१।१६ में वर्णित जम्भ के दौरे की विशेषता कितनी आश्चर्य जनक स्पष्टता से आधुनिक साईकियेटरी ऐपीलेप्सी (अपस्मार या मिर्गी) रोग से मिलती है। अतः लक्षणों के आधार पर निश्चित है कि अ० का० ८।१।१६ आधुनिक रोग अपस्मार का वर्णन करता है। अथर्ववेद की अपनी विशिष्ट शैली है जिसमें व्यक्तिकीकरण (परसोनीफिकेशन) विधि विस्तार से अपनाई गई है व्यक्तिकीकरण विधि में निर्जीव तथा भौतिक वस्तुओं को प्रतीकात्मकता के आधार पर उनके अनुरूप किन्हीं सक्रिय प्राणियों का नाम दे दिया जाता है। रोगों के नामकरण में भी अथर्ववेद ने यही विधि अपनाई है। इसलिए अपस्मार रोग वर्णन में अथर्ववेद ने इस रोग की भयंकरता के अनुरूप प्रतीकात्मक 'जम्भ' नाम देकर इसका वर्णन किया है।

कारण:—अ० का० २।८।१ में दौरे की बीमारी को क्षेत्रीय माना माना है। क्षेत्रीय शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है, शारीरिक और वंशानुगत। अर्थात् अपस्मार रोग दो कारणों से उत्पन्न होता है—प्रथम शारीरिक दोष से और द्वितीय माता पिता से आए जन्मजात दोष से। आधुनिक मनोचिकित्सा शास्त्र भी अपस्मार का कारण जन्मजात दोष मानता है और इसका कारण मानसिक न मानकर शारीरिक मानता है। इस प्रकार अथर्ववेद और आधुनिक मनोचिकित्सा शास्त्र के अपस्मार के कारण सम्बन्धी विचार समान हैं।

चिकित्सा:—अपस्मार रोग निवारण के लिए अथर्ववेद में कई प्रकार की चिकित्सायें दी हैं उनमें से सर्वोत्तम अ० का० २।४।२ में वर्णित जंगिड वृक्ष से बनी औषधि और मणि का प्रयोग है। यह औषधि रोग के शारीरिक दोषों के निवारण के लिए है। मानसिक पक्ष के दोषों के निवारणार्थ हवन तथा संकेत चिकित्सा बताई है। इस प्रकार शारीरिक और मानसिक दोनों पक्षों के दोषों को दूर करने का निर्देश है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में भी अपस्मार के

(शेष पृष्ठ १० पर)

पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा तथा भारत में मुसलमानों की स्थिति

—श्री राजीव अग्रवाल, बड़ा बाजार, अमरोहा मुरादाबाद

"अमर उजाला" २७-२-८६ के अंक मे प्रकाशित समाचार पाकिस्तान में हो रही हिन्दुओं की दुर्दशा देखकर तथा देश में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों को मद्देनजर रखते हुए देश की एकता व अखण्डता के लिए देश के मुसलमानों से कुछ स्पष्ट सवाल करना चाहता हूँ कि वह अपने-अपने दिलों पर हाथ रखकर सोचें कि :—

(१) क्या पाकिस्तान में हिन्दुओं व सिखों को वोट देने का अधिकार है जबकि भारत में मुसलमानों को वोट देने का अधिकार है।

(२) क्या पाकिस्तान में हिन्दुओं सिखों की अपनी-अपनी कोठियां, जमीन जायदाद, स्कूटर, कारें, जीपें, बसें, ट्रक, व बडे-बड़े व्यवसाय आदि हैं जबकि इस देश में मुसलमानों को वह सभी सुविधायें प्राप्त हैं।

(३) क्या पाकिस्तान में हिन्दुओं के पास अपनी सुरक्षा के लिए शस्त्र आदि के लाइसेंस प्राप्त हैं जबकि भारत में मुसलमानों पर अनगिनत हथियार मौजूद हैं- जिनका उपयोग साम्प्रदायिक दंगों के दौरान पुलिस व सेना पर किया जाता है।

(४) क्या पाकिस्तान में हिन्दू व सिख नये-नये मन्दिर, गुरुद्वारा बनवाकर उन पर लाउस्पीकर लगाकर पूजा-पाठ कर सकते हैं जबकि हिन्दुस्तान में मुसलमानों को मस्जिदें बनाने व उनपर लाउडस्पीकर लगाने की पूरी छूट दी हुई है।

(५) क्या पाकिस्तान मे हिन्दुओ को अपने धार्मिक जलूस निकालने, सभाएं करने तथा सरकार के विरोध में हड़ताल करने व जेल भरने की इजाजत है जबकि भारत मे मुसलमानों को यह सभी अधिकार हैं।

(६) क्या पाकिस्तान में हिन्दू, हिन्दी को पाकिस्तान की दूसरी भाषा का दर्जा देने की मांग उठा सकते हैं जबकि हिन्दुस्तान मे मुसलमानो को उर्दू को दूसरी भाषा बनाने के लिए हड़तालें करने व आन्दोलन करने की पूरी आजादी है।

(७) क्या पाकिस्तान में रहकर हिन्दू यह नारे लगा सकते हैं कि पाकिस्तान को हिन्दुस्तान बनायेंगे जबकि इस देश के मुसलमान खुलेआम भारत विरोधी नारे लगाकर पाकिस्तानी झंडा फहराकर भारतीय खिलाड़ियों पर ही ईंट-पत्थर बरसाते हैं और यह नारे लगाते है कि हिन्दुस्तान को भी पाकिस्तान बनाना है।

(८) पाकिस्तान में कितने हिन्दू या सिक्ख राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमन्त्री, मन्त्री, ससद सदस्य व विधायक हैं। या हुए।' छोटे व उच्च पदों पर पुलिस व प्रशासनिक सेवा में कितने अधिकारियो के पद मिले हुए हैं जबकि भारत में मुसलमानों को यह अधिकार भी प्राप्त हैं।

पाकिस्तान में हिन्दुओं की हो रही ऐसी दुर्दशा पर भारत सरकार ने पाकिस्तान का इसे आन्तरिक मामला समझकर कभी आवाज नहीं उठायी जबकि पाकिस्तानी नेताओं ने हमेशा भारत के आन्तरिक मामलो मे दखल-अन्दाजी करते हुए बार-बार भारत पर यही आरोप लगाया कि भारत में मुसलमान सुरक्षित नही है और मुसलमानो पर जुल्म हो रहे हैं। उपरोक्त सभी बातों पर यदि गौर करें तो साफ पता चल जाएगा कि कौन किस पर जुल्म कर रहा है। यदि भारत मे मुसलमानों के साथ वास्तव में ही वैसा जुल्म करा जाए जैसा पाकिस्तान मे मुसलमान हिन्दुओ के साथ कर रहे हैं तो पाकिस्तानी नेताओं का चिल्लाना सही होता। लोकसभा में भारत के विदेश-मन्त्री श्री बलीराम भगत ने पाकिस्तानी नेताओं के आरोपों को गलत व बेबुनियादी बताते हुए इसे भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप बताया है जो सर्वथा उचित है।

"दैनिक हिन्दुस्तान" २४ फरवरी के अंक मे श्री विनोद कुमार मिश्र के लेख से प्रत्येक देशभक्त नागरिक सहमत होगा कि यदि भारत के मुसलमान इस देश में अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं तो वह शौक से पाकिस्तान में जाकर बस सकते हैं। उन्हें अब कोई रोकेगा भी नहीं। सन् १९४७ की बात और थी। अब समय बहुत बदल गया है, और साम्प्रदायिक दंगों से देश व देश के नागरिक बहुत नुकसान उठाकर परेशान हो गये हैं, वैसे भी देश की आबादी बहुत बढ़ती जा रही है। भारत-सरकार को भी चाहिए कि वह मानवता के नाते पाकिस्तान के हिन्दुओं व सिक्खों को वापस अपनी सर जमीं पर बुलाकर बसाए और सम्मान से उन्हें जीने का अधिकार दे। देखा जाए तो घुसपैठ के जरिए बहुत से लोग पाकिस्तान व बंगलादेश से गैर-कानूनी ढंग से आकर देश के कई प्रान्तों मे बस रहे हैं।

उपरोक्त सभी बातें ऐसी हैं जो साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रविरोधी ताकतों को अवश्य लगेंगी लेकिन राष्ट्रवादी मुसलमान जो इस देश की एकता व अखण्डता में पूर्ण विश्वास रखते हैं, इन बातों को ध्यान में रखकर देश से उस साम्प्रदायिकता के जहर को जड़ से खत्म करने में भारत सरकार को सहयोग देंगे जो पाकिस्तानी नेताओं के इशारों पर इस देश मे साम्प्रदायिक दगों के रूप मे फैल रहा है। पाकिस्तानी नेता यह अच्छी तरह समझ रहे हैं कि श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में भारत २१ वी शदी मे पहुंचते-पहुंचते विश्व का एक बहुत ही शक्तिशाली राष्ट्र उभर कर आयेगा। शायद पाकिस्तानी नेताओ को को भारत की यह प्रगति व खुशहाली फूटी आंखों नही सुहा रही है। लेकिन पाकिस्तान का अस्तित्व शायद तब तक न रहे, भारत तो २१ वी शदी मे पहुंचेगा।

दिल्ली में ७० ईसाईयों की शुद्धि

दिल्ली २३ फरवरी आज आर्यसमाज न्यू मोती नगर दिल्ली में एक विशेष शुद्धि समारोह का आयोजन आर्य समाज के नेता श्री रामभज बत्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर ईसाई धर्म को त्याग, वैदिक धर्म में स्वेच्छा से प्रवेश करने के लिये उत्तर प्रदेश के जिला रामपुर और बदायू से आए ७० सदस्यों ने यज्ञ पर बैठकर यज्ञोपवीत धारण किया। यज्ञ की महिमा तथा वैदिक धर्म की विशेषता की प० रामदत्त जी शर्मा ने बड़े महत्वपूर्ण शब्दों में बताई इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी ने देश की एकता कायम रखने के लिए अपील की, इसी समारोह में सर्वश्री रामलाल जी मलिक, प्रो० के चान्दला, मेधावी शास्त्री तथा श्री तीर्थ टन्डन ने सभा को सम्बोधित किया।

ईसाई धर्मी पुनः अपने वैदिक धर्म में वापिस

दिनाक ६-२-८६ को उदयपुर से १०० किलोमीटर दूर डूगरपुर में आर्य समाज, उदयपुर द्वारा आयोजित एक सादा समारोह में तीन ईसाई परिवारों के १६ व्यक्तियों को शुद्धि संस्कार कर पुन उनके वैदिक (हिन्दू) धर्म में परिवर्तित किया गया। उक्त अवसर पर उन्हें यज्ञोपवीत धारण करा उनके हिन्दू नामकरण भी दिए गये तथा यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

उक्त आयोजन उनकी स्वयं की प्रार्थना पर किया गया। यह व्यक्ति पूर्व में आदिवासी हिन्दू थे। समारोह के अवसर पर आर्य समाज, उदयपुर की प्रधान श्रीमती मालती अग्रवाल, मन्त्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता, पुरोहित श्री भवरलाल जोशी समाज के अन्य व्यक्ति उपस्थित थे। —मन्त्री आ. स उदयपुर

आर्य वीर दल की गतिविधियां

जिला अलीगढ़ में युवा अभ्युत्थान में आर्य वीर दल की महत्त्वपूर्ण भूमिका

श्री ब्रह्मदेव शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी सक्रिय

अलीगढ़। जिला आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष श्री ब्रह्मदेव शास्त्री ने अलीगढ़ जिले की आर्य वीर दल संगठन के हित में एक सघन कार्यक्रम द्वारा लगभग १०० युवाओं की यौगिक व्यायाम और वैदिक धर्म के उपदेशों से आप्लवित करके उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराये और उन्हें आर्य वीर घोषित किया। इस संदर्भ में आपने नवाबपुर लमेड़ा नगला, बोमई, गुलेरिया, जिरोली, समैना मुम्मदपुर, नागर, नगला हंसी, नगला मुंशी, राजमऊ, केशर, निनामई, रामनगर, मछरिया नगला ततारपुर, पेंटरा भूडिया, बीसौरा, उदिया नगला कुढार, भूपाल गढ़ी के युवकों को दीक्षित किया स्मरण रहे जिला अलीगढ़ में श्री शास्त्री जी का यह दूसरा अभियान है इससे पूर्व श्री भूदेव ने तहसील खैर में ग्रामों में अभियान चलाकर आर्य वीर दलों का विकास किया।

—संवाददाता

महाराष्ट्र आर्य वीर दल के बढ़ते चरण

योग साधना द्वारा रोगों का निदान

डा० देवव्रत के सफल परीक्षण

किल्लेधारूर। आर्य समाज किल्लेधारूर में डा० देवव्रत व्यायामाचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मार्ग दर्शन में तीन सप्ताह की प्रशिक्षण शिविर ११ फरवरी से योग आसन, सायं जुडो कराटे, लाठी आदि से युवाओं को प्रशिक्षित किया गया। बौद्धिक दृष्टि से भी उन्हें वैदिक धर्म के मूल सिद्धान्तों से परिचित कराया गया। इससे नौजवानों में चेतना का संचार हुआ और उन्होंने आर्य वीर दल की विधिवत स्थापना कर ली।

गुरुकुल मेडसी के भी दो ब्रह्मचारी श्री वीरेन्द्र और अनिल ने प्रशिक्षण लिया। अम्बाजोगाई के एक वीर ने भी प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने क्षेत्र में कार्य करने का संकल्प लिया।

—सोमनाथ शंकरचा

देवबन्द तहसील में आर्य वीर दल ग्रामीण क्षेत्र में सक्रिय

देवबन्द। इन दिनों देवबन्द तहसील में श्री सेवाराम वानप्रस्थी और आर्य वीर दल के शिक्षक श्री राजेश सक्रिय होकर ग्राम प्रचार कर रहे हैं।

आप दोनों महानुभावों ने देवबन्द में ३ जनवरी से १६ जनवरी तक, ग्राम वास्तम सुलतानपुर में १८ जनवरी से २८ जनवरी तक और हरिपुर, वेस्ट सहारनपुर में ९ फरवरी से १८ फरवरी तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगा कर युवाशक्ति को आर्य वीर दल संगठन का अंग बना कर दीक्षित किया। क्षेत्र में इससे आर्य समाज के रचनात्मक कार्यक्रमों पर प्रकाश हुआ है।

—संवाददाता

मिर्गी वर्णन और चिकित्सा

(पृष्ठ ८ का शेष)

लिये औषधि चिकित्सा ही मुख्य होती है और मानसिक चिकित्सा गौण होती है। इस प्रकार अपस्मार रोग की चिकित्सा के लिए भी अथर्ववेद का आधुनिक मनोचिकित्सा शास्त्र में विचार साम्य है। किन्तु अपस्मार की चिकित्सा में विषम समस्या जंगिड़ वृक्ष को पहिचानने की है। आज की स्थिति में जंगिड वृक्ष अथर्ववेद के उन्हीं कुछ पेड़ पौधों में से हैं जिनकी पहिचान अब तक कुछ नहीं हो पाई है। सन्तोष का विषय है कि इन औषधियों की खोज जारी है और यदि जंगिड वृक्ष का पता चल गया तो करीब २० रोगों की चिकित्सा में मदद मिलेगी।
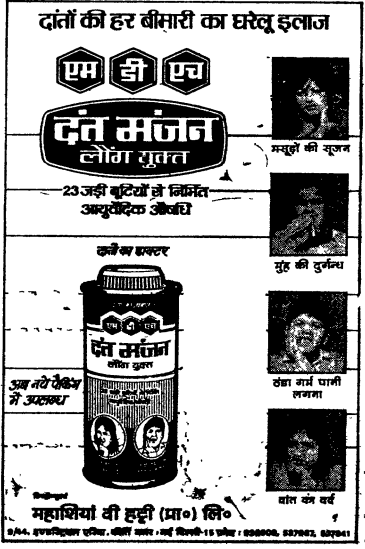
अथर्ववेद में इस प्रकार के बहुत से शारीरिक एवं मानसिक रोगों के ही वर्णन नहीं हैं वरन बहुत-सी जीवनोपयोगी विद्याओं के भी वर्णन हैं जो आज के विज्ञान की कसौटी पर सत्य ही सिद्ध नहीं होती बल्कि कई दृष्टिकोणों से उनसे अधिक परिष्कृत और उत्तम लाभकारी भी हैं पर खेद है कि वे विद्यायें लुप्त पड़ी हैं। उनको प्रकाश में लाने के लिए संस्कृत और आयुर्वेद के विद्वानों तथा आधुनिक वैज्ञानिकों की सहयोग पूर्ण सम्मिलित अनुसंधान की आज नितान्त आवश्यकता है। इस विभिन्न विषयों की सम्मिलित अध्ययन की विधि को अन्तर्विषयी अध्ययन उपागम विधि कहते हैं। अथर्ववेद की अपनी विशिष्ट वर्णन शैली है जिसके मर्म को जाने बिना उसका रहस्य प्राप्त नहीं होता।

नया प्रकाशन

१—वीर बैरागी (भाई परमानन्द)	४)
१—माता (भगवती जागरण) (श्री सच्चिदानन्द)	१०) सै०
१—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आर्यसमाज की गतिविधियां

हिन्दी के साथ अन्याय : कल्याणी

हैदराबाद, १७ फरवरी। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र के प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्याणी ने नतारा सरकार द्वारा अध्यादेश ५२५ जारी कर वर्तमान में छठीं कक्षा से हिन्दी के अध्ययन को आठवीं कक्षा से कर देने के पग को कड़ी आलोचना की है।

जोरदार शब्दों में इसकी भर्त्सना करते हुए उन्होंने कहा, सभा इसका कड़ा विरोध करती है।

श्री कल्याणी ने कहा, महर्षि दयानन्द जी ने जहां आर्य समाजियों के लिए आर्य भाषा (हिन्दी) सीखना अनिवार्य माना था जिस आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के माध्यम से समूचे भारत वर्ष में वैदिक धर्म का प्रचार, समाज सुधार आन्दोलन तथा राष्ट्रीय बृहत आन्दोलन चलाया, उसकी मान्यता यही है कि हिन्दी ही भारत की एकता, अखण्डता प्रस्थापित कर सकती है। भारत में वर्तमान जातीयता, क्षेत्रीय वादिता के संकीर्ण विचारों का दृढ़ उन्मूलन कर सकती है।

इससे पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा ने हिन्दी विरोधी नीति के विरुद्ध वर्तमान आन्ध्र सरकार को सर्वप्रथम कठोर पत्र लिखा था। उसी के पश्चात् ही समूचे राज्य में चर्चा का विषय बना है। तेलगू देशम सरकार ने भारतीय संविधान एवं विशेषकर भारत भारती के साथ खिलवाड़ कर अब हम समाज सेवी, हिन्दी प्रेमी व राष्ट्र प्रेमियों को ललकारा है। (हिन्दी मिलाप)

आर्यसमाज मुखमेल पुर दिल्ली का उद्घाटन समारोह

दिनांक २८ मार्च १९८६ को प्रात. १० बजे आर्यसमाज भवन का उद्घाटन लोक सभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ करेंगे।

इस अवसर पर ध्वजारोहण सभा प्रधान श्रीरामगोपाल शालवाले करेंगे। आशीर्वाद श्रीस्वामी ओमानन्द सरस्वती मुख्य अतिथि प्रो० शेर-सिंह भू०पू० केन्द्रीय मन्त्री, श्री डा० लोकेशचन्द्र सदस्य राज्य सभा, श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आ० प्र० सभा, श्री सहदेव सहगल रिटायर्ड लेफ्टिनेन्ट जनरल आदि पधारेंगे।

—चौ० हीरा सिंह, प्रधान, आ० स० मुखमेलपुर

श्री देवराज बहल को महान शोक

दिनांक ९-३-८६को श्री देवराजजी बहल की भाभी श्रीमती राम-प्यारी जी का लुधियाना में हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया दिनांक १५-३-८६ को ६ बी०/८ नार्दन एक्सटेंशन एरिया ओल्ड नगर में सायं ४ बजे से ५॥ बजे तक शोक सभा का आयोजन होगा। सर्व-साधारण से निवेदन है कि उक्त समय पर उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। — सम्पादक

हिन्दुओं को समाप्त करने का षड़यन्त्र

(पृष्ठ १ का शेष)

श्री नगर से प्रें० ट्र के अनुसार हिन्दू एकशन कमेटी ने कहा कि यदि शीघ्र ही अल्पसंख्यक की सुरक्षा के लिए कदम न उठाए गए तो राज्य में उनका जीना मुश्किल हो जायेगा।

कमेटी के प्रवक्ता श्री बी० के० हाडू ने बताया कि गत ४० वर्ष से कश्मीरी पण्डितों के खिलाफ एक षड़यन्त्र रचा जा रहा है। और उनसे दूसरे दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार हो रहा है। उन्होंने कहा कि बर्दाश्त की अब हद हो गई है। यदि हमें शान्ति से नहीं रहने दिया गया तो हम सामूहिक रूप से घाटी छोड़ने को बाध्य हो जायेंगे।

श्री हांडू ने घाटी के उन मुसलमानों की प्रशसा की जिन्होंने हिन्दुओं की रक्षा की।
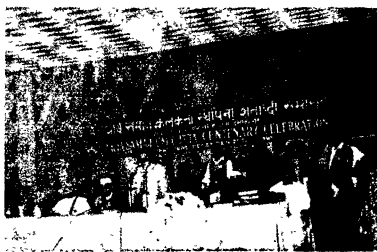
कलकत्ता आर्यसमाज शताब्दी के उद्घाटन समारोह में श्री एच० के० एल० भगत भाषण करते हुये। बैठे हुये गजानन्द आर्य, पं० उमाकांत उपाध्याय, ला० रामगोपाल शालवाले, श्री घनश्याम गोयल, श्री सीताराम आर्य।

तलाक शुदा मुस्लिम महिला द्वारा चार बच्चों सहित हिन्दू धर्म ग्रहण

कानपुर। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे विख्यात महिला उद्धारक आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने एक तलाकशुदा मुस्लिम महिला को उसके चार बच्चो सहित उनकी इच्छानुसार (वैदिक धर्म) हिन्दू धर्म ग्रहण कराया।

बताया जाता है कि यह २६ वर्षीय तलाकशुदा महिला मलका बेगम अपने चारो बच्चो सहित श्री देवीदासआर्य के निवास स्थान गोविन्दनगर मैं सहायतार्थ पहुँची और अपनी दुखद कहानी सुनाई कि उसे पति ने तलाक देकर बेसहारा कर दिया है। अत वह इस्लाम को छोड़ना चाहती है। उसकी सहायता की जाये। श्री आर्य ने उसे हिन्दू धर्म मे शिक्षित कर उसका नाम माया देवी तथा बच्चो के नाम राम, श्याम, शान्ती व मालती रखा। तत्पश्चात इस महिला की इच्छानुसार उसका विवाह एक हिन्दू युवक प्रहलाद से वैदिक रीति से कराया गया।

शुद्धि व विवाह समारोह मे इस जोडी को उपस्थित जन समूह ने आशीर्वाद दिया तथा प्रसाद ग्रहण किया। —मन्त्री

आर्य वीर दल सम्मेलन धौलाड़ी ग्राम में सम्पन्न

मेरठ, २६ फरवरी ८६। आर्य समाज धौलडी के वार्षिकोत्सव पर २७-२-८६ को सार्वदेशिक आर्य वीर दल जनपद मेरठ की ओर से आर्यवीर दल सम्मेलन मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री सौदान सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज खानपुर ने की मुख्य अतिथि पद पर श्री बालदिवाकर हंस जी प्रधान सचालक-सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने जनता एव आर्यवीरो को सम्बोधित किया। सम्मेलन मे श्री सुरेन्द्र सिंह आजाद, ब्र नरेन्द्र कुमार आर्य, देवेन्द्र कुमार जी, शोभाराम जी, बहिन राजबाला जी, आशाराम प्रेमी, जयपाल सिंह जी आदि-२ विद्वानों एव युवको ने भाग लिया। सम्मेलन का सयोजन-आचार्य धर्मपाल शास्त्री, सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल मेरठ मण्डल-मेरठ ने किया अन्त मे गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के ब्रह्मचारियो का व्यायाम प्रदर्शन हुआ और विश्वपाल जी जयन्त (आधुनिक भीम) गुरुकुल कण्वाश्रम-पौडी गढवाल ने शक्ति प्रदर्शन मे दो कारो को एक साथ रोककर दिखाया जनता पर बहुत प्रभाव पडा और प्रेरणा प्राप्त की।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—व्यवस्थापक, सार्वदेशिक साप्ताहिक

हुआ है । ... निर्वाचन निम्नवत् सम्पन्न हुए --

—आर्य समाज चौक प्रयाग में प्रधान मोहन जी पाण्डेय, मन्त्री पं० लालबहादुर शास्त्री कोषाध्यक्ष देवराज चुने गये ।

—आर्य समाज राजकोट (सौराष्ट्र) में प्रधान नारायण भाई, मन्त्री लक्ष्मण भाई, कोषाध्यक्ष भगवान जी भाई चुने गये ।

—आर्य समाज पूर्व नया पुर (जोधपुर) में प्रधान जगदीश सिंह मन्त्री ब्रह्मसिंह, कोषाध्यक्ष मनोहर परिहार चुने गये ।

—आर्य समाज लाडीखेत (अलमोड़ा) में प्रधान भगवतीप्रसाद शर्मा, मन्त्री रामदत्त पाण्डेय, कोषाध्यक्ष बालादत्त पपने चुने गये ।

—आर्य समाज वेंकट नगर में प्रधान रामसुन्दर मिश्र, मन्त्री मुद्रिकाप्रसाद अवस्थी, कोषाध्यक्ष बलदेव सोनी चुने गये ।

—आर्य समाज पुरानी मण्डी (सहारनपुर) में प्रधान साहबसिंह, मन्त्री बाबूराम, कोषाध्यक्ष सोमप्रकाश चुने गये ।

—आर्य समाज हरेन्द्र नगर (कानपुर) में प्रधान ननाचन्द आर्य, मन्त्री रामजी आर्य, कोषाध्यक्ष चुने गये ।

—आर्य समाज अफजलगढ़ (बिजनौर) मे प्रधान चौ० विजयपाल सिंह, मन्त्री यतीशकुमार, कोषाध्यक्ष चौ० चरणसिंह चुने गये ।

—आर्य समाज बसवकल्याण (जि० बिदर) में प्रधान उदयमुनि जी, मन्त्री माणिक राव, कोषाध्यक्ष नरसिंहराव चुने गये ।

—आर्य समाज हावड़ा (बंगाल) मे प्रधान जगदीश नारायण जी, मन्त्री केशवदेव धीमान, कोषाध्यक्ष प्रेमचन्द शुक्ल चुने गये ।

—आर्य समाज दाऊद विद्यालय (औरंगाबाद) मे प्रधान श्यामलाल आर्य, मन्त्री केदार प्रसाद, कोषाध्यक्ष सिद्धेश्वरप्रसाद चुने गये ।

—आर्य समाज मण्डावा (झुनझुनु) मे प्रधान मगनसिंह, मन्त्री श्री नेतराम, कोषाध्यक्ष विश्वनाथ चुने गये ।

—आर्यसमा... जीत सिंह राणा मन्त्री कु... गये ।

—आर्य समाज सीहोर भोपाल क्षेत्र (म० प्र०) में प्रधान अवधनरायन, मन्त्री नरेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष रामभरोसे जी चुने गये ।

—आर्यसमाज कृष्णनगर (मथुरा) में प्रधान रामकुमार सहगल, मन्त्री परमानन्द फोजदार, कोषाध्यक्ष श्रीमती लज्जावती चुने गये ।

—आर्य शिक्षा समिति कुरुक्षेत्र दयानन्द महिला विद्यालय में प्रधान डा० ओमप्रकाश ललित, मन्त्री चौ० रणसिंह, कोषाध्यक्ष रामकृष्ण सेठी चुने गये ।

—आर्य समाज मनिहारी कटिहारी बिहार में प्रधान अक्षयकुमार सिन्हा, मन्त्री शिवेन्द्र मोग्रर, कोषाध्यक्ष जनकप्रसाद चुने गये ।

—आर्य समाज खाजपुर (पटना) में प्रधान गंगाप्रसाद जी, मन्त्री उपेन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष देवचरण चुने गये ।

—आर्य समाज पुसद (महाराष्ट्र) में जानकीलाल गट्टाणी, मन्त्री धर्मदेवसिंह, कोषाध्यक्ष द्वारकाप्रसाद चुने गये ।

—आर्य प्रतिनिधि सभा (हिमाचल प्रदेश) में प्रधान कृष्णलाल आर्य, मन्त्री भगवानदेव चैतन्य, कोषाध्यक्ष शिवदत्त चुने गये ।

—आर्यसमाज भीमकुण्ड (म० प्रदेश) में प्रधान क्षेमचन्द, मन्त्री भंवरसिंह, कोषाध्यक्ष पारसिंह चुने गये ।

—आर्य समाज प्रतिनिधि जम्मू काश्मीर में प्रधान डा० योगेन्द्रकुमार, मन्त्री राजेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष देवराज सेठी चुने गये ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

वेदामृतम्

माता-पिता दानी मधुरभाषी हों

आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।
पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम् ॥
ऋग्० ५ । ४३ । २ ॥

हिन्दी अर्थ—मैं सुन्दर स्तुति से और नमस्कार से अजेय [illegible]क और पृथिवी को अपनी शक्ति की वृद्धि के लिये अपनी [illegible] लाना चाहता हूं। यशस्वी द्यावापृथिवी पिता और माता [illegible]प हैं। ये दोनों मधुरभाषी और सुन्दर दानी हैं। ये प्रत्येक [illegible]ट मे हमारी रक्षा करें।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क १४] फाल्गुन शु० ११ सं० २०४२ रविवार २३ मार्च १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन सम्पन्न
अमरीकी जहाजी बेड़े पर कड़ी प्रतिक्रिया
भाषाई आधार पर पृथक् राज्य की मांग गलत
समान नागरिक न्याय संहिता की मांग : धारा ३७० को समाप्त किया जाये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की एक बैठक दिनांक १५ तथा १६ मार्च १९८६ को आर्यसमाज दीवानहाल देहली में हुई।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने इसकी अध्यक्षता की तथा देश के समस्त भागों से आये प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। निम्नलिखित मुख्य प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

१—एक प्राप्त सूचना के अनुसार अमरिका का छठा जगी बेड़ा अपने ४५०० नौ सैनिकों के साथ करांची (पाकिस्तान) बन्दरगाह में पहुच गया है। कहने के लिए इसका उद्देश्य नौ सैनिकों को विश्राम और मनबहलाव का अवसर देना है। किन्तु इसी जगी बेड़े के करांची पहुचने के साथ-साथ पाकिस्तानी सेना का भारत की सीमा पर, विशेषकर जम्मू काश्मीर के पुंछ और राजोरी क्षेत्रों से लगती हुई सीमा पर भारी जमाव हमारे देश के लिए चिन्ता का विषय है।

२—दुर्भाग्य से हमारे देश के अन्दर कुछ धार्मिक कट्टरपन्थी धर्म के आधार पर अपने आपको एक पृथक् जाति घोषित करते हुए अपने लिए अलग राज्य की माग कर रहे है। हमारे अन्दर ही कुछ ऐसे तत्व भी हैं जो क्षेत्रीयता के आधार पर स्वय को अपनी मातृ-भूमि से अलग करने को आवाज उठाने लगे है। दोनो ही प्रकार के तत्वों से हमारे देश की सुरक्षा और अखण्डता को खतरा पैदा हो गया है। सार्वदेशिक सभा देश की सरकार और जनता से अनुरोध करती है कि वे इस प्रकार के विघटनवादी तत्वों से सावधान हैं। क्योंकि वे कुछ विदेशी ताकतों के इशारो पर नाच रहे हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य देश मे अस्थिरता पैदा करना तथा उसे इस प्रकार विभाजित करना है कि उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाय और वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलों मे कोई प्रमुख भूमिका निभाने के योग्य न रहे।

इस सभा की यह मान्यता है कि देश की सुरक्षा के लिए देशवासियों में एकता का होना एक प्रमुख आवश्यकता है। इसके लिए यह सभा निम्न मांगें प्रस्तुत करती है।

१—भारत सरकार धर्म, भाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गयी पृथक् राज्य की मांग को दण्डनीय अपराध घोषित करे। इस विषय में यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा में उठाये गये एक प्रभावी कदम के रूप में संविधान की उन धाराओं को निरस्त कर दिया जाय जिनके द्वारा देश की जनता का धर्म, भाषा और संस्कृति के आधार पर बहुसंख्यक अथवा अल्पसंख्यक मानकर विभाजन किया जाता है।

२—सविधान की धारा के अन्तर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार अब यह आवश्यक हो गया है कि देश मे एक "समान नागरिक न्याय संहिता" को लागू किया जाय। इस समय ससद मे मुस्लिम कट्टर-पन्थियों के तुष्टीकरण के लिए जो विधेयक पेश किया गया है वह तुरन्त वापिस लिया जाय क्योंकि इसके पारित होने पर भारतीय दण्ड विधान की धारा १२५ के अन्तर्गत मुस्लिम महिलाओं को अपने अधिकारो की लड़ाई से वंचित कर दिया जायेगा।

३—भारतीय संविधान की धारा १ में परिवर्तन करके देश को "राज्यों का संघ" न मानकर "प्रशासनिक इकाइयों का संघ" माना जाय।

यह सभा यह भी अनुरोध करती है कि पजाब में हिंसा और तोड़ फोड़ की कार्यवाही रोकने के लिये उसे उस समय तक सेना के सुपुर्द कर दिया जाये जब तक वहां पूर्ण शान्ति स्थापित न हो जाय। और वहां से पंच-मार्गियों का सफाया न हो जाय। सभा का सुझाव है कि देश की उत्तर पश्चिम की सीमा से लगने वाले जम्मू-कश्मीर, पजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर एक बृहद् राज्य बनाया जाय। इस प्रकार का संगठित राज्य वर्तमान परिस्थितियों में देश को आन्तरिक वाह्य सुरक्षा के लिए प्रभावी सिद्ध होगा।

सभा की धारणा है कि जम्मू कश्मीर में शाह सरकार को बर्खास्त करके भारत सरकार ने एक अभिनन्दनीय कार्य किया है। सभा यह भी मांग करती है कि इससे सम्बन्धित संविधान की धारा ३७० को भी समाप्त कर दिया जाय जिसके द्वारा जम्मू कश्मीर को एक विशिष्ट राज्य का दर्जा प्राप्त है।

राम जन्मभूमि के ताले खुलने पर मुस्लिम समुदाय द्वारा विरोध क्यों ?

—श्री रामगोपाल शालवाले

विगत १ फरवरी को जब अदालत के आदेश द्वारा राम जन्मभूमि का पुरातन मन्दिर हिन्दुओ के लिए खोल दिया गया तो देश के समस्त मुस्लिम समुदाय में रोष की लहर दौड गई। इस मन्दिर को हिन्दुओं की पूजा के लिए अदालत ने खोल तो दिया है लेकिन अभी यह फैसला होना बाकी है कि यह जगह वास्तव में हिन्दुओं की है या मुसलमानों की। १ फरवरी के फैसले पर भारत के सारे हिन्दुओं को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने अपने अपने घरों पर दीप मालायें जलाई। इसके पश्चात् कट्टरपंथी मुल्लाओं के भडकाऊ भाषणों की वजह से १४ फरवरी को दिल्ली में १५ फरवरी को श्रीनगर (काश्मीर) और १६ फरवरी को मध्यप्रदेश में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। हिन्दुओं के कथनानुसार यह स्थान भगवान राम की जन्मभूमि है, जबकि मुसलमान इसे बाबरी मस्जिद बताते हैं, जिसे १६ वीं सदी में मुगल बादशाह बाबर ने बनवाया था। वैसे इस स्थान के साथ भारत के अन्य कई सुप्रसिद्ध व्यक्तियों का नाम भी जुड़ा हुआ है। यह इमारत ऊपर से देखने में मस्जिद जैसी प्रतीत होती है लेकिन इसके अन्दर का भाग बिल्कुल मन्दिर जैसा ही है। ४० फुट ऊंचे इस भवन में तीन गुम्बद है। आदिकाल से ही अयोध्या नगरी हिन्दुओ की पुण्यस्थली रही है। राजा इक्ष्वाकु से लेकर राजा राम तक सूर्य-वंश के लगभग ६४ राजाओ ने यहा राज्य किया था। ३२१ पावन नगरो के उत्तर मे सरयू नदी बहती है जिसका देश की पवित्र नदियों में अपना विशिष्ट स्थान है।

अयोध्या जैन धर्म का भी जन्म स्थान है। जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों में से २२ सूर्यवंशी थे और उनमे से ५ तीर्थंकर अयोध्या मे ही हुए जिनमे प्रथम आदिनाथ या ऋषभनाथ भी थे। बौद्धकाल में भी अयोध्या प्रसिद्ध नगरी रही है। गौतमबुद्ध को गया से ज्ञान प्राप्त हुआ और बनारस के पास सारनाथ मे उन्होंने धर्मचक्र चलाया सस्कृत कवि और नाटककार अश्वघोष भी अयोध्या के ही थे। तुलसी दास ने अपनी महानकृति रामचरित मानस की रचना भी अवधी मे की जिसने बाल्मीकि की रामायण सहित रामकथा के अन्य सारे ग्रन्थो को पीछे छोड दिया। प्रथम सिख गुरु नानक देव जी और दसवें अन्तिम गुरु गोविन्दसिंह ने अयोध्या की यात्रा की थी और कुछ समय तक वहा निवास भी किया।

ऐतिहासिक तथ्यो के अनुसार १६वी शताब्दी में मुगल सम्राट बाबर के आदेश पर अयोध्या के इस राम जन्म स्थान को कब्जे मे ले लिया गया। बाबर ने जो वहुक्म शहशाहे हिन्द मालिककुल जहान बादशाह बाबर हजरत जलालशाह की ख्वाहिश के मुताबिक अयोध्या के जन्म स्थान को शाही कब्जे मे ले लिया गया और उसमे रद्दोबदल किया गया। साथ ही हिन्दुओ को भी बदस्तूर उस इबादतगाह मे इबादत करने की इजाजत बख्शी गई है। बावजूद इसके भी वे अपनी हरकतो से बाज नही आते रहे लिहाजा बजरिए इस हुक्म-नामे के तुमको बइत्तिलाए आगाह किया जाता है कि अयोध्या के अन्दर हिन्दु-स्तान के किसी भी गैर सूबे के बाशिन्दगान कोई भी हिन्दू काफिले दाखिल न होने पाए बल्कि बाहर से आए जिस भी शख्स पर कारकुनों को सुबहा अशक हो कि वह अयोध्या मे घुसना चाहता है तो उसे फौरन गिरफ्तार करके कैद-खाने में रखा जाय और फर्ज अदायगी समझते हुए हर शाही कारकुन व अहलदारो के इस हुक्मनामे की सख्ती से तामील हो।

शाही मुहर

बाबर के आदेश से प्रतीत होता है कि श्रीराम जन्मभूमि पर बलात अधि-कार हिन्दुओ को असह्य था। सारा हिन्दू समाज उसे मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील था। इतिहास के अनुसार १५२६ ई० मे बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और अपना राज्य जमाया। सन १५२८ ई० में वह सेना सहित अयोध्या आया लेकिन शहर से ३ कोश दूर घाघरा नदी के किनारे ठहर गया। एक दिन बाबर अयोध्या के फकीर फजल अब्बास कलन्दर से मिला और उसे बहुत सा धन तथा वस्त्रादि भेंट करना चाहा किन्तु फकीर ने नहीं लिया। इससे बाबर की उसके प्रति और श्रद्धा जम गई। जाते वक्त बाबर ने जब और किसी खिदमत के लिए फकीर से पूछा तो उसने राम जन्म स्थान को मिटाकर मस्जिद बनाने की बात कही। फलस्वरूप बाबर ने अपने सिपह-सालार मीर बकीखां को हुक्म दिया कि फजलशाह की ख्वाहिश के मुताबिक मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बना दो।

मीर बकीखां की फौज ने श्री राम जन्म भूमि पर धावा बोल दिया। बिजली की तरह यह खबर फैलते ही हिन्दू बड़ी संख्या में इकट्ठे होकर शाही फौज का सामना करने लगे। बंकी खा के पास तोप खाना था फिर भी विकट युद्ध हुआ और कई दिनों तक भीषणता से चलता रहा जिसका विवरण लख-नऊ गजटियर के अक ३६ के पृष्ठ ३ पर लिखा है। इस भयंकर युद्ध मे लग-भग पौने दो लाख हिन्दुओ ने अपना बलिदान दिया। उनके मारे जाने के बाद ही बकी खा मन्दिर में घुस सका। इन बलिदानो मे सबसे महत्वपूर्ण मेहताब-सिंह का बलिदान था। वह भीटी का राजा था। खबर सुनते ही युद्ध मे शामिल हो गया और मारा गया।

बाबर सन् १५३० मे मरा और सन् १५३५ मे फकीर फजल। लेकिन उनकी दुर्भावना का प्रतीक बाबरी मस्जिद आज भी खड़ी है। रामजन्म भूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए हिन्दुओ ने समय पर जो सघर्ष किया वह भारतीय इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायगा। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद १ फरवरी १९८६ को पहली बार इस जन्मभूमि के ताले खुले और हिन्दुओं को अपनी खोई हुई निधि वापस मिली। इस सम्बन्ध मे मेरा मुसलमानों से यही निवेदन है कि वे इस कार्यवाही मे हिन्दुओ का साथ देते हुए अदालत के आदेश को शिरोधार्य करें। इतिहास साक्षी है कि भारत के किसी भी हिन्दू राजा ने अन्य मतावलम्बियो के धर्म स्थानो सहिष्णुता का परिचय देते हुए रामजन्म भूमि के सम्बन्ध मे सठे हुए इस विवाद को समाप्त करेंगे।

सम्पादकीय

होलिकोत्सव का स्वागत है

वैदिक धर्मावलम्बियों में प्राचीन काल से यह मान्यता चली आ रही है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पण करके ही वस्तु को अपने उपयोग में लाया जाता था। जिस प्रकार मानव देह में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्व प्रधान है वह विद्युत रूप से ब्रह्माण्ड में व्यापक है। और भूतल पर सब में वास करती है।

देव यज्ञ का भौतिक अग्नि ही प्रधान साधन है क्योंकि वह सब देवों का दूत है। वेद में अग्नि को देवदूत कहा है। वही सब देवों को होम में डाले हुए द्रव्य को पहुंचाता है। इसीलिए नवागत अन्न को अग्नि में समर्पित करते हैं। उसके बाद मानव उस अन्न को ग्रहण करता है।

अग्नि में भुने हुए अधपके शमी धान्य को होलक कहते हैं। होला स्वल्प वात, कफ, मेद, श्रम के थकान के दोषों का शमन करता है। जिस-२ अन्न का होला बनाया जाता है उसमें उसी अन्न का गुण होता है। आषाढ़ी के प्रत्येक अन्न को ही होलक शब्द से प्रयोग किया है पीछे यह शब्द शमीधान्यों की होला के रूप में प्रयुक्त हो गया।

आषाढ़ी अन्न की फसल भारत में सर्वश्रेष्ठ मानी है। भारत में अकाल पड़ने पर आषाढ़ी की फसल कम मारी जाती है। ऐसे जीवनाधार अन्न की अगुवाई पर कृषकों का मन आनन्द से क्यों न पूरित हो उठे। इस अवसर पर उनका मन-रंगरेलियां मनाने का स्वाभाविक है।

वस्तुतः इस प्रकार के उत्सव कृषक जनता में ही विद्यमान है। विविध प्रकार के धन्धों में लगे हुए, अति व्यस्त, स्वार्थान्धा लोगों में उत्साह उत्पन्न नहीं होता।

भारतीय परम्परा में यह पर्व आमोद प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्म परायण-भारतीयों की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता की पुट दिखाई देती है।

यज्ञों के परिमार्जन में जो वर्षा-ऋतु में विकृत हो चुके हैं नए पैदा हुए रोगों के प्रतिकार्थ यज्ञ द्वारा वायुमण्डल की संशुद्धि होती है। आज वसन्त ऋतु अपने यौवन पर है उसका रूप दिनों दिन रम्यान्तर होता जा रहा है।

चराचर जगत ने इसी आनन्द से नवीन बाना बदल लिया है। ऐसे आषाढ़ी सस्य के शुभागमन पर भारत की प्रधान जनता और सबके अन्नदाता कृषक समूह के मन में प्रसन्नता भर देती है।

अतः अब तक भी जन साधारण में यह प्रचलित है कि घर की सफाई करके आगत नए अन्न का अग्नि में समर्पित करके फिर प्रयोग में लाया जाए। तदनुसार आषाढ़ी की नवीन फसल के आगमन तथा विकृत वातावरण को संशुद्धि समय के ऋतु परिवर्तन से प्रमुदित मन एक पर्व का रूप लेकर होलिकोत्सव होता है।

इस अवसर पर गाना-बजाना, आमोद-प्रमोद, इष्ट मित्रों में सप्रेम सम्मेलन, होलिकोत्सव के उपयोगी लौकिक अंग हैं। जो समय हमारे लिए मंगलकारक या सौभाग्य सूचक मानकर परमात्मा का गुणानुवाद कर आनन्दोत्सव मनाना स्वाभाविक ही है। साथ ही परस्पर प्रेम परिवर्धन का भी उपयुक्त अवसर माना है।

भेदभाव की दूरी

इस पर्व पर ऊंच नीच, छुटाई-बड़ाई का विचार छोड़कर पवित्र हृदय से आपस में मिलने की परम्परा ने सौहार्द का वातावरण पैदाकर दुष्प्रवृत्तियों को दूर किया है। पैदा हुए वैर विरोधों ने मनों को अपना आवास बना लिया है तो उन्हें अग्नि देव की साक्षी में भस्मासात् कर दिया जाय। अतः होलिकोत्सव प्रेम प्रसार का पर्व होकर फटे हृदयों को मिलाती है। एकता का पाठ पढ़ाती है यह वर्ष भर प्रेम में तन्मय हो जाने को उन्मत्त कर देती है।

आज संसार फटे दो हिस्सों में बंटा हुआ है। भाई-भाई के खून का प्यासा संसार है। कैसे दिलों को जोड़ा जाय। इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ ही परस्पर गले मिला सकते हैं। होली का पवित्र पर्व आनन्द उल्लास का पर्व है। किन्तु काल की गति से उसमें कदाचार और अभद्र व्यवहार प्रवेश पा चुका है।

आज आवश्यकता है कि बाल-वृद्ध वनिताओं की उछाहभरी उमंगे कलह-कालुष्य और वैमनस्य की विचार धारा को अग्नि में भस्मसात कर दें।

विकृत रूप

आजकल जिस प्रकार से होली पर्व को मनाया जाता है उसे देखकर कोई बुद्धिमान मनुष्य चिन्ता व्यक्त नहीं करेगा।

मुझे याद है कि गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर के समीप कटारपुर गांव है जहां कभी गोकशी पर भयंकर मारकाट हुई थी और अच्छे-भले आर्यों को सजा मिली थी। स्वतन्त्रता के बाद आर्य समाज का उत्सव हुआ, उसमें जलूस-होलिकोत्सव मनाते, रंग खेलते चलना था। किन्तु मुसलमानों ने आपत्ति की, कि सरकारी लिखत में रंग न खेलकर कीचड़ से होली खेली जाएगी। जिलाधीश ने कागज देखकर वैसा ही करने को कहा—

हमारे श्रद्धेय-आचार्य श्री पं० भद्रदेव जी शास्त्री वहीं उपस्थित थे उन्होंने जिलाधीश को स्पष्ट कहा—कि हमारे किन्हीं लोगों ने भूल की उसका सुधार कीचड़ से हटकर रंग पर, फिर कभी इसमें भी सुधार कर चन्दन रोली से खेला जायगा। कभी इसमें मूर्खता आई, तो क्या उसमें सुधार नहीं आ सकता है।

जिलाधीश महोदय समझ गये और उन्होंने सुधार करके रंग खेलते हुए जलूस को निकलने दिया। मतलब है कि विकृत रूप कभी सुधार में भी परिवर्तित होना चाहिए।

आज गाली-गलौज, अश्लीलता का वातावरण चलाया है वह दूर-कर भद्र व्यवहार को पैदा करे।

प्राचीन काल में शिक्षाप्रद अभिनय करके अभ्युदय को जन्म देते थे इस प्रकार काल्पनिक कथाओं को भी इस पर्व के साथ जोड़ा गया है जो गलत है। यह देव यज्ञ कार्य है इसे बड़ी पवित्रता से मानव मात्र मनाकर परस्पर प्रेम के भाव पैदा करना चाहिए।

आवश्यक-सूचना

हैदराबाद सत्याग्रह : स्वतंत्रता सेनानी पेंशन

जैसा कि पहले भी सूचित किया जा चुका है, भारत सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह मे जेलयात्रा करने वाले आर्य वीरों को 'स्वतन्त्रता सेनानी पेन्शन' देना स्वीकार कर लिया है। साथ ही अब यह भी निश्चित हुआ है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित सत्याग्रहियों को ही पेन्शन दी जाएगी। इस समय तक जितने भी प्रार्थना पत्र सभा के कार्यालय में प्राप्त हो चुके हैं उनकी सूची भारत सरकार के गृह मन्त्रालय को भेज दी गयी है। यदि किसी आर्य बन्धु ने, जिन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया हो, अभी तक अपना प्रार्थना-पत्र न भेजा हो तो वे उसे २० मई सन् १९८६ से पहले पूर्ण विवरण भेज दें। भारत सरकार द्वारा यह तारीख अन्तिम रूप से निश्चित की गयी है। इस तिथि के बाद आने वाले किसी भी प्रार्थना-पत्र को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

दिनांक १२ मार्च १९८६,

रामगोपाल शालवाले
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक धर्म ही मानव जाति का संरक्षक

अन्य धर्म आक्रमक : केन्द्रीय मन्त्री श्री सीताराम केसरी का आह्वान

आर्यसमाज द्वारा बृहद् पंजाब के निर्माण की मांग : ऋषि बोधोत्सव सोत्साह सम्पन्न

दिल्ली ८ मार्च : दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर, विशाल जन सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय मन्त्री श्री सीताराम केसरी ने कहा वैदिक धर्म संसार का सबसे पुराना और परिपक्व धर्म है। यह गंगा की धारा की तरह पवित्र है। अन्य सभी धर्म कम उम्र होने के कारण आक्रामक हैं। वैदिक धर्म ने मानव जाति को अहिंसा, ज्ञान, विनय और शीलता का ज्ञान दिया है। इसने लोगों के जीवन को संवारा है।

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए उन्होंने कहा म० दयानन्द ने वैदिक धर्म की रक्षा और इसके प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने में अपना आत्मोत्सर्ग करना पड़ा। दयानन्द ने अन्याय, पाखण्ड, अधर्म और रूढ़िवाद के विरुद्ध लोहा लिया। उन्होंने नई नीति व तकनीक से धर्म के प्रति ज्ञान की ज्योति जगाई थी। महर्षि दयानन्द अन्तर्यामी, विद्वान और तपस्वी थे। उन्होंने वैदिक धर्म को ही सत्य सनातन धर्म बतलाया है।

श्री केसरी ने कहा हमें अपने आचरण और मनोबल सुदृढ़ बनाना चाहिए और धर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न करनी चाहिए। यदि हम यह कर सकें, तो कोई भी ताकत हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती है।

समारोह के अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा जब तक आत्म शुद्धि नहीं हो जाती तब तक किसी का मुकाबला नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने आत्मज्ञान के पश्चात् ही ज्ञान और धार्मिक स्वतन्त्रता का आह्वान किया।

श्री शालवाले ने विदेशी धन के बल पर सेवा सहायता, कुछ कपट और, प्रलोभन से ईसाईकरण और इस्लामी करण की घटनाओं पर रोष प्रकट करते हुए कहा कि इसके लिये वोटों की तुष्टीकरण की राजनीति जिम्मेदार है। उन्होंने कहा अभी पिछले दिनों रांची में पोपाल के आगमन पर एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाकर पोप साहब का स्वागत करने की योजना बनाई गई थी, हमने इसका विरोध किया। पोपपाल एक धार्मिक नेता के रूप में शान्ति मिशन पर आते तो हमें कोई आपत्ति नहीं होती किन्तु जब इस आगमन के पीछे कोई षड़यन्त्र हो तो आर्य समाज कैसे चुप रह सकता था। इसलिए जिस दिन पोपलाल ने भारत में पैर रखे, हमने उसी दिन उड़ीसा में २५०० ईसाइयों की शुद्धि करके पोपपाल और मिशनरियों के षड़यन्त्र को विफल कर दिया। हमने १ लाख हिन्दुओं के ईसाई-करण के षड़यन्त्र के पीछे पोपपाल के आगमन पर विरोध व्यक्त करते हुये भारत सरकार को ज्ञापन भी दिये।

उन्होंने कहा महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को उसका पूरा अधिकार दिलाने का प्रयत्न किया उन्होंने इस देश की आस्था व धर्म को बचाने का काम किया। यही कारण है कि अग्नि के समक्ष ७ फेरों के बाद वैदिक धर्म नव दम्पत्तियों को जीवन भर एक सूत्र में रहने की प्रेरणा देता है। इसलिए हमारी धार्मिक मान्यताएं व परम्पराएं अक्षुण्य हैं। जब कि इस्लाम में तीन बार तलाक बोल देने पर कभी भी पति पत्नी को छोड़ सकता है। मुस्लिम पर्सनल-ला मुस्लिम महिलाओं के लिये एक अभिशाप बन चुका है। अभी पिछले दिनों शाहबानो के मामले में उच्चतम न्यायालय ने जो निर्णय दिया है, उस पर कई मुल्लाओं ने आपत्तियां की हैं। हमारी मांग है कि—जो लोग संविधान व राष्ट्रध्वज का अपमान करते हैं, भारत में रहकर भी दूसरे देशों का गुणगान करते हैं, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिये खतरा पैदा करते हैं, ऐसे लोगों को किसी भी हालत में माफ नहीं किया जाना चाहिए।

आर्यसमाज की ओर से श्री शालवाले ने निम्न प्रस्ताव सम्पुष्टि हेतु प्रस्तुत किये:—

(१) आर्यसमाज भारत सरकार से मांग करता है कि राष्ट्रीय अखंडता और उग्रवाद का मुकाबला करने के लिये जम्मू काश्मीर, हिमाचल हरियाणा तथा पंजाब को एक विशाल राज्य बना दिया जाये।

(२) सरकारी व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग किया जाये।

(३) भारत सरकार द्वारा जम्मू काश्मीर में शाह मन्त्रिमण्डल भंग करके राज्यपाल शासन लागू करने पर बधाई देते हुये मांग करता है कि पंजाबमें भी बरनाला सरकार को भंग करके पंजाब का शासन सेना को सौंपा जावे।

सम्मेलन का उद्घाटन श्री रामचन्द्र विकल सांसद ने किया उन्होंने कहा कि आर्य समाजी विचारधारा का व्यक्ति कभी भी राष्ट्रद्रोही नहीं हो सकता है, इसलिए हमें आवश्यकता है कि हम लोगों में ऐसे संस्कारों का प्रचार करें। यदि आर्यसमाज इसके प्रति आश्वस्त न रहा तो यह देश भटक सकता है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए आर्य समाज पर इस देश के बहुसंख्य लोगों को गर्व है।

दिल्ली की हजारों आर्य जनता व धर्म प्रेमियों ने इस समारोह में भाग लिया था। श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज, श्री बाबू सोमनाथ एडवोकेट, हैदराबाद के भू०पू० मेयर श्री बी० किशनलाल आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री डा० धर्मपाल महाशय धर्मपाल तथा सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री व अन्य अनेक प्रमुख आर्य जन इसमें उपस्थित थे।

अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने सम्मेलन के प्रस्तावों को पारित कराकर सबका धन्यवाद किया।

धर्म-परिवर्तन का दोषी कौन ?

रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक' ई० ५३२१, राजाजीपुरम् लखनऊ

आज देश में धर्म-परिवर्तन की जो परिस्थिति विषम रूप में उपस्थित है, उसकी ओर प्रत्येक देशवासी का ध्यान बरबस आकृष्ट हुआ है। देश के अछूत कहे जाने वाले तथा गरीबी में जीवन जी रहे लोगों के धर्म-परिवर्तन का जो मुहिम चल पड़ी है उसके पीछे क्या कारण है ? इस पर विचार अनिवार्य हो गया है। वैसे तो यह धर्म-परिवर्तन उस समय से प्रारम्भ हो गया था जब विदेशियों ने भारत की पवित्र धरती को अपने आक्रमणकार कलुषित पदों से अपवित्र करना प्रारम्भ कर दिया था। मुस्लिम आक्रमणकारियों का मत था कि जो मुसलमान नहीं है वह काफिर है। काफिर का या तो कत्ल उचित है या फिर उसे मुसलमान बनाना और इस क्रम में इन आक्रमणकारियों ने तलवारके बल पर हजारों हिन्दुओं को धर्म-परिवर्तनके लिए विवश कर दिया। तलवार के बल बूते पर जो धर्म-परिवर्तन हुआ उससे कहीं कम पद-लिप्सा के कारण धर्म-परिवर्तन नहीं हुआ। हिन्दुओं के आपसी मतभेदों एवं पारस्परिक संघर्षों को देखते हुए वे लुटेरे जो मात्र सोने का चिड़िया को लूटने, यहां से लाखों की संख्या मे हिन्दुओं को पकड़कर उन्हें दास बनाने का स्वप्न लेकर भारत में आए थे वे हिन्दुओं की असंगठित शक्ति को देख अपना साम्राज्य स्थापित करने से नही चुके।

इस आक्रमणके काल से लेकर अंग्रेजी सत्ता स्थापित होने तक भारत की स्वाधीनता के लिए जहा एक ओर वीर छत्रसाल, रानी दुर्गावती, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह जैसे अनेक स्वतन्त्रता भिमानी भारत सपूतों ने भारत की स्वतन्त्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए अपने रक्त को एक-एक बूंद की आहुति दी वहीं पद लिप्सा और चन्द चांदी के टुकड़ों के मोह में मानसिंह व जयसिंह जैसे देश के कलंक आक्रमणकारियों को अपनी बेटी और बहन सौंप उनकी गुलामी में संलग्न हो गये। इसका बहुत बड़ा प्रभाव संघर्षशील समाज पर पड़ा और काफी हद तक वह भी क्रिया-शून्य सा हो गया जिसके कारण उन आक्रमणकारियों को मनमानी करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

आज देश में जितने भी मुसलमान है उनमें से ९५ प्रतिशत ऐसे हैं जिनके चौथी या पांचवीं पीढ़ी के वंशज कोई ठा० रणविजयसिंह, कोई लाला चम्पतराय, कोई पं० दीनानाथ तो कोई कल्लू, रामआसरे और रामखेलावन रहे होंगे। वहीं आज विदेशी धन के जोर में स्वाधीन भारत मे भी यहां के अशिक्षित निर्धन और तथा-कथित उपेक्षित बन्धुओं को धन व सम्मान का लालच देकर धर्मच्युत करने में सहायक हो रहे हैं। इस प्रकार के अन्धा-धुन्ध धर्म-परिवर्तन के कारण हिन्दू समाज के कर्णधारों में चिन्ता व्यक्त हुई और उनके द्वारा भी परावर्तन प्रारम्भ किया गया। हिन्दू समाज के हित चिन्तकों को मुस्लिम व ईसाई मिशनरियों से स्पष्ट खतरा प्रतीत होने लगा। सितम्बर ८१ में विश्व हिन्दू परिषद के दिल्ली अधिवेशन में विश्वनाथ ब्रह्मचारी ने जो भाषण दिया उससे इस समाज में व्याप्त चिन्ता स्पष्ट नजर आती है। उन्होंने कहा—"स्मरण रहे ईसाईयों और मुसलमानों की आंखें हरिजन और गिरिजन बान्धवों की ओर ही धर्म-परिवर्तन का शिकार बनाने के लिए लगी हुई हैं। उनकी गरीबी और अज्ञान का वे फायदा उठा रहे हैं......जब पाकिस्तान बना तब मुसलमानों ने नारा दिया था "हंस के लिया है पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान" लेकिन गत दो युद्धों में भारतीय वीर सैनिकों द्वारा युद्धभूमि में करारी हार होने उन्हें होश आया कि हिन्दुस्तान को लड़कर लेना टेढ़ी खीर होगी इसलिए उनका ध्यान युद्ध की ओर से हटकर गरीब हिन्दुओं का हिन्दू समाज की कमजोर करने की ओर गया।" श्री ब्रह्मचारी जी ने जोर देते हुए कहा था कि "जैसे युद्धभूमि में हमारे वीर सैनिकों ने इनके दांत खट्टे किये। हम सामाजिक और सांस्कृतिक पटल पर उन्हें सबक सिखायें। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दू समाज में धर्मान्तरण के विरुद्ध एक आवाज उठ रही है।

इस धर्म परिवर्तन का मूल कारण क्या है इस पर विचार करना अति-आवश्यक है। कुछ समय पूर्व मीनाक्षीपुरम् किस प्रकार रहमतनगर बना ? उसके पीछे क्या कारण थे ? इस सम्बन्ध में वहां के मुसलमानों का बयान था कि (इस परिवर्तन के पीछे विदेशी धन की प्रमुख भूमिका रही है। विदेशी धन के सम्बन्ध में तत्कालीन गृह राज्य मन्त्री द्वारा दी गई सूचना बहुत महत्वपूर्ण थी कि लगभग ५ हजार धार्मिक मिशनरी एव सामाजिक संस्थाओं को १९७७ अरब २४ करोड़ रुपया विदेशों से मिला है। तत्कालीन कृषि राज्य मन्त्री आर० वी० स्वामी नाथन ने स्पष्ट किया था कि "त्रिचना पल्ली की एक शिक्षा संस्था को ही अकेले ३ करोड़ रुपया अरब देश से प्राप्त हुए।" क्या इस प्रकार की अतुल विदेशी धनराशि के भारत में आने का उद्देश्य धर्म-परिवर्तन और समाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में अव्यवस्था फैलाना नहीं है। तेल के धन की शक्ति से उभरते हुए कुछ देश भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप के लिए व्याकुल हो रहे हैं।

धर्म-परिवर्तन के लिए जहां अन्धाधुन्ध विदेशी धन का प्रयोग कुछ राष्ट्र-द्रोही तत्व कर रहे हैं वहीं पर निम्न वर्ग (हरिजन) का धर्मान्तरण हो रहा है उसे धन के साथ-साथ सामाजिक समानता एवं प्रतिष्ठा देने का दावा भी यह तत्व करते हैं। भोले-भाले निर्धन तथा अशिक्षित बन्धु सैकड़ों वर्षों तक सामाजिक तिरस्कार पाने के कारण उस ओर आकृष्ट हो जाते हैं।

किन्तु क्या उन्हें वह सब प्राप्त हो जाता है जिसका लालच देकर उन्हें धर्मच्युत किया गया है इस सम्बन्ध मे नबाब छतारी के पोते डा० रफजल-अखलाक जिन्होंने मुस्लिम नमाज की अनेक कुरीतियों से ऊबकर हिन्दू-धर्म स्वीकार किया है का बयान उल्लेखनीय है उन्होने कहा—भुखमरी की मार मार से पीड़ित इन बेचारे भोले-भाले हरिजनों को यह पता ही है कि मुसलमानों में ऊंच नीच की कुप्रथा किस हद तक व्याप्त है। किसी शेख-सैयद या पठान के सामने कोई जुलाहा मुसलमान सीधा खड़े होने की जुरत नहीं कर सकता।"

धर्मान्तरण के पीछे जहां विदेशी शक्तियो का हाथ है वहां समाज में छुआछूत के कारण उत्पन्न समाजिक विसंगतियां भी जिम्मेदार हैं। हिन्दू समाज का ही एक अंश दीर्घकाल से अस्पृश्यता का खिताब लिए सारे समाज से उपेक्षित रहकर नानाविध कष्ट सहता रहा है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः" तथा "हिन्दवः सहोदरा सर्वे" का उद्घोष करने वाले इस हिन्दू समाज के लिए अपने अन्य वर्ग के प्रति इस प्रकार की उपेक्षा नहीं।

आज जहां हिन्दू समाज पूर्व परिवर्तित स्वबन्धुओं को वापस लाने के लिए कृत संकल्प हो रहा है वही सबसे पहले उसे शरीर के अभिन्न अंग को शरीर से अलग रखने की मानसिकता भी त्यागनी होगी तभी वह अपना अस्तित्व बेचारी रखने मे समर्थ व सक्षम हो सकेगा।

गोहत्या-औचित्य एवं निदान

–सुरेशचन्द्र शास्त्री
५८७, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

प्राचीन काल से ही गाय भारतीय संस्कृति का अंग रही है। यहां तक कि इसे "माता" के रूप में माना जाता रहा है। किसी समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था और इस देश मे घी-दूध की नदियां बहती थी। आज यह बातें हमे कहावत के रूप मे प्रतीत हो रही हैं क्योंकि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हम ईश्वर को भूल रहे हैं, गाय की हत्या कर रहे हैं, पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहे हैं।

आज गोहत्या कराने का एकमात्र औचित्य विदेशी मुद्रा का अर्जन है। परन्तु जब हम इसके दूसरे पक्ष पर ध्यान दें तो स्पष्टत इस औचित्य पर एक प्रश्न चिन्ह लग जाता है। आध्यात्मिक या धार्मिक दृष्टि से जहां इस देश के बहुसख्यक समुदाय की भावनाओ से गाय एक पूज्या के रूप मे जुड़ी है वहीं दूसरी ओर आर्थिक दृष्टिकोण से भी यह हमारी समृद्धि का प्रतीक है।

अमरीकन सरकार के १९४८ के प्रयोगो के आधार पर एक एकड़ जमीन के उत्पादन मे से प्राणीज प्रोटीन मनुष्य को देना हो तो दूध, मांस और अंडे के द्वारा किस प्राणी से कितना मिल सकता है, यह सक्षेप मे निम्न प्रकार है

	दूध से	अंडे से	मटन (बकरी मास) से	गोमास से
१- अनाज	२१९७	१०३	११३	१२५
२- फेट	७८	२४	१५	३
३- प्रोटीन	७२	२४	२१	२७ ५
४- केलरोज	७,११ ७५०	१३२१९१	१,३७,२९५	१,३०,०००
५- मनुष्य				
३००० केलरी	२२७	५४	४६	४३

उपर्युक्त आकड़ो से स्पष्ट है कि एक एकड़ जमीन मे से दूध के द्वारा पांच गुना मनुष्यो को पोषण मिल सकता है।

भारत मे गाय का विशेष स्थान बताते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था हिन्दुस्तान मे गाय ही मनुष्य का सच्चा साथी एव सबसे बड़ा आधार है। वह हिन्दुस्तान की कामधेनु है। वह सिर्फ दूध ही नहीं देती बल्कि सारी खेती का आधार स्तम्भ है। हमने गोरक्षा मे हिन्दुस्तान की खेती की हस्ती का समावेश होता है। पशुओ की रक्षा की पहली सीढ़ी है।

पूना विश्वविद्यालय के ऊर्जा विभाग के प्रमुख डा० विष्णु गणेश भिडे ने वर्ष १९८४ को विज्ञान परिषद की सगोष्ठी मे स्पष्ट कहा है। 'भारतवर्ष मे प्रतिवर्ष १३ हजार लाख टन गोला गोबर मिलता है। अपार ऊर्जा उत्पन्न की जाती है। गोबर सुखाकर उपले, कडे और उसे जलाने पर उसकी ८० प्रतिशत शक्ति नष्ट हो जाती है। फिर बचे ऊर्जा लगभग ३ हजार लाख टन शेष रह जाती है।"

बगलौर स्थित इडियन इस्टीटयूट आफ मैनेजमेंट के डा० एन एस रामास्वामी के अनुमानानुसार भ्रमरत पशु उतनी ही ऊर्जा देते हैं जितनी ऊर्जा देश के कुल विद्युत प्रबन्ध से मिलती है।

भारत वर्ष की कुल जनसख्या विश्व की सम्पूर्ण जनसख्या का १५ प्रतिशत है और हमारा खनिज तेल भडार केवल १/२ (आधा) प्रतिशत है। इस प्रकार वर्तमान मशीनीकरण युग को दृष्टि मे रखे तो निश्चित ही हम बहुत पीछे हैं और यदि इसी के सहारे रहेंगे तो निश्चित ही एक दिन तेल का भडार भी समाप्त हो जाएगा और हम दूसरे पर अवलम्बित होगे। यदि हम अपनी पशु-बल शक्ति को देखें जिसके अनुसार हमारे पास लगभग ७ करोड बैल, ८० लाख भैसे, १० लाख ऊंट और लगभग १० लाख घोड़े कृषि कार्य एव भार-वाहक के रूप मे लगाए गए हैं। यदि एक पशु की क्षमता मात्र आधा "हार्स पावर" मान ली जाए तो उक्त ८ करोड पशुओ से प्राप्त लगभग ४ करोड 'हार्स पावर' बैठती है तो हमारी यह अमूल्य निधि है।

अपनी इस ऊर्जा शक्ति का वर्णन करते हुए नैरोबी मे नए और पुनः प्रयोग मे लाए जाने वाले ऊर्जा स्रोतो पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था—"भारत में पशु हमारे बिजलीघरों से भी अधिक ऊर्जा प्रदान करते हैं। बिजलीघरो की कुल क्षमता २९ हजार मेगावाट है। इसलिए पशुओ को हटाने से हमे दो सौ से तीन सौ खरब रुपए अतिरिक्त बिजली पैदा करने के लिए खर्च करने पड़ेंगे। इसके अलावा किसानो को सस्ती खाद और ईधन की हानि तो होगी।"

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के अनुसार एक गाय की एक पीढ़ी से उत्पन्न दूध व अन्न से चार लाख १० हजार चार सौ चालीस मनुष्यों मनुष्यो का पालन एक बार के भोजन से होता है और औसतन ६ गाय की पीढ़ीसे असख्य मनुष्यो का पालन हो सकता है। जबकि इसके मास से अनुमान है कि केवल ८० मासाहारी मनुष्य एक बार मे तृप्त हो सकते हैं।

गोदुग्ध को हमारे सन्त महात्माओ ने "अमृत" के समान माना है। राज-निघण्टु मे इसका वर्णन इस प्रकार है—

> गव्यक्षीरं पथ्यमत्यन्तरूच्यं स्वादु स्निग्धं वातपित्तमयध्नम् ।
> कान्तिप्रज्ञामेधागपुष्टि धत्ते स्पष्टं वीर्यवृद्धिं विधत्ते ॥२१६॥

अर्थात गाय का दूध सबके लिए पथ्य अर्थात सर्वदा सेवन करने योग्य अर्थात सब अवस्थाओ मे हितकारी है। अत्यन्त रुचिकारक और स्वादु है। स्निग्ध चिकना, रूक्षता को नष्ट करने वाला है। सेवन करने से कान्ति, तेज, सुन्दरता प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा को बढाने वाला और सब अगो को पुष्ट एव बलिष्ठ बनाता है तथा प्रत्यक्ष स्पष्ट रूप से वीर्य और बल को वृद्धि करता है। गोदुग्ध के सेवन से व्यक्ति तेजस्वी, कान्तिमान, सुन्दर, स्वस्थ, सुख, सगठित शरीर वाला बनाता है। बुद्धिमान और मेधावी बनता है तथा प्रज्ञा को प्राप्त करता है। दूध सद्य तुरन्त प्रत्यक्ष रूप से वीर्यवान बनाता है। गोदुग्ध शीघ्र और बहुत अधिक वीर्य की वृद्धि करता है। गोदुग्ध मे सर्वप्रकार की मानसिक, बौद्धिक शारीरिक और आत्मिक उन्नति होती है।

गोवश घास, पुआल, घटिया हल्का अन्न खली चूनी खाकर दूध, घी, मक्खन, छाछ और अन्य पौष्टिक आहार के साथ गोबर देता है। तथा मरने के पश्चात भी उसके चमड़े व हड्डिया उपयोग मे लाई जाती हैं। यह धारणा भी सही नही है कि बुढ़ापे मे गाय बैल किसान के लिए बिल्कुल निराश होते है। १९५५ मे स्थापित पशु सरक्षण और विकास समिति ने अपनी रिपोर्ट मे एक महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किया था। उसके अनुसार बूढ़ी गाय पर किसान को (उस समय के मूल्य के अनुसार) कुल २३ रुपए खर्च आता था, जबकि उसी अवधि मे उसके गोबर का मूल्य ५२) रुपए हो जाता था।

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है। गोवश हमारे अर्थतन्त्र की रीढ है। जवा-हर लाल नेहरू के शब्दो मे 'यह मान लेना कि बैलो को समाप्त करके किसानो के लिए कोई समस्या खड़ी नही होगी, कृषि के अर्थतन्त्र को न सम-झने के बराबर है'।

ग्रामीण अर्थरचना का बुनियादी पहलू बताते हुए प्रसिद्ध सर्वोदयी नेता स्व जयप्रकाश नारायण ने कहा है कि गाय और उसकी सतान, उसका मल-मूत्र मरने के बाद उसका कलेवर हमारे कृषि सम्बन्धी तथा ग्रामीण अर्थशास्त्र का अविभाज्य अंग है। जो लोग यन्त्रीकृत "फार्मों" के और तथाकथित वैज्ञानिक पद्धतियो के सपने देखते हैं वे एक अवास्तविक ससार मे रहते हैं जिनका भारत की परिस्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं है। हमारी कृषि सम्बन्धी और ग्रामीण अर्थरचना का भविष्य गाय तथा बैल पर जितना निर्भर है उतना शायद सिंचाई को छोड़कर और किसी साधन पर निर्भर नहीं है। इस आर्थिक पह-लुओ के कारण भी गाय का रक्षण करना और पशुओं की उन्नति करना परम विवेकयुक्त हो जाता है। गोहत्या बन्दी अपने आप में एक बहुत बड़े मानवीय मूल्य का प्रतिपादन है"।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर गोरक्षा का औचित्य स्पष्ट हो जाता है तथा गोहत्या से कितनी हानि हो रही है इसका भी आकलन किया जा सकता है। सरकार को, जो विदेशी मुद्रा का लोभ संवरण नही कर पा रही है, इस ओर ध्यान देना चाहिए। —

जिस देश का प्रधान मन्त्री स्वय इसका अनुभव कर रहा हो वहां पर तो शीघ्रातिशीघ्र इस निधि को बचाने का प्रयास करना चाहिए। इसके निदान हेतु सक्षेप मे निम्न बातें आवश्यक हैं—

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज के दार्शनिक दृष्टिकोण की अन्य दर्शनों से तुलना

ले०—प्रो० डा० रामेश्वर दयाल गुप्त, एम. ए., पी. एच. डी. अध्यक्ष, त्रैतवादी आर्य पीठ, ज्वालापुर

आर्यसमाज एक बहुधन्धी संस्था है। विशाल ,महत्वांक्षा वाले आर्यजन, आर्य समाज के माध्यम से दुनियां के सब अच्छे कार्य कर डालना चाहते हैं। वैदिक त्रैत दर्शन की स्थापना वैदिक मर्यादा और संस्कृति का संरक्षण, देश का राजनैतिक मार्गदर्शन, हिन्दी राष्ट्रभाषा का प्रसार, गौरक्षा, समाज सुधार, इतिहास परिशोधन, नशा-निषेध, शास्त्रार्थ और फिर स्कूल, कालेज, गुरुकुल और संस्था का प्रजातान्त्रिक पद्धति से चलाना अर्थात् वोटबाजी और पार्टीबाजी सभी आर्यसमाजियों ने अपने कन्धे पर उठा रखें हैं।

इनमें से हमारे बहुत से कार्य तो अब जन-कल्याणीय राज्य की नीति में समानिष्ट हो गये हैं यथा शिक्षा प्रचार, समाज सुधार आदि। इसी प्रकार बहुत से कार्यकलापों के लिये कहीं अधिक सशक्त अन्य शक्तियां उभर कर सामने आ गई हैं। हिन्दू मब सत्र के माध्यम से अपने अधिकारों की रक्षा करने में सक्षम हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रभृति हिन्दी का कार्य उठा रहे हैं। सर्वदलीय गौरक्षा समिति की बात में अब बहुत बल है। नशा-निषेध के लिये लड़ने वालों के भी संगठन हैं। केवल एक वस्तु ही ऐसी है जिसे करने वाले कोई नहीं हैं। और वह वस्तु है त्रैत दर्शन की स्थापना और उसका सम्वर्द्धन। महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर त्रैतवाद को संसार के विचारकों के सम्मुख प्रस्तुत किया था। हमारे इस उन्नतिशील देश में धीरे-२ जब सब समस्यायें कालान्तर में हल हो जायेगी, परन्तु तब भी त्रैतवाद के प्रचार का कार्य शेष रह जायेगा। शंकर स्वामी का अद्वैत २२०० वर्ष से, नागार्जुन का शून्यवाद २१०० वर्ष से, रामानुज का द्वैतवाद और माध्वाचार्य का विशिष्टाद्वैत शताब्दियों से चालू है और जब तक संस्कृति है, अमर है, दयानन्द की उच्चकोटि की देन त्रैतवाद है। दयानन्द त्रैतवाद के प्रणेता के रूप में अमर है। त्रैतवाद का प्रसार आर्यसमाज के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता। वैदिक धर्म और आर्यसमाज के लिये यदि कोई एक पर्याय वाचक शब्द है तो वह त्रैतवाद। आर्यों के इस दर्शन का प्रचार उनकी बहुत गतिविधियों के कारण रुक-सा गया है।

किसी भी देश का जैसा दर्शन होता है, वैसे ही उस राष्ट्र के संस्कार बन जाते हैं। तदनुसार ही वहां के राष्ट्र की महत्वाकांक्षायें बनती हैं। साहित्य सृजन से लेकर कलात्मक अन्य प्रवृत्तियों का स्फुटीकरण भी उसी मान्यता के आधार पर होता है। लोक गीत, लोक संगीत, कथा कहानियां सभी में उसी एक दर्शन को हम पिरोया हुआ देख सकते हैं।

बौद्ध दर्शन ने ३ विचारों को आर्य सत्य की संज्ञा दी—

१—यह संसार दुःखमय है।

२—दुःख से छूटा जा सकता है।

३—दुःख से छूटने का उपाय बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्ट मार्ग है।

इस दर्शन का प्रभाव यह हुआ कि सारे घर-बार,राज-पाट, ज्ञान-विज्ञान सबसे हाथ जोड़कर सारा देश भीरु बन गया। मुहम्मद बिन कासिमने ७२६ में सिन्ध पर विजय प्राप्त की थी। तब से सन् १२०६ तक अर्थात् लगभग ५०० वर्ष तक मुसलमान लगातार दिल्ली तक आक्रमण करते रहे और हराये जाते रहे। पर जब एक बार दिल्ली के चौहान राजा को जीत लिया गया तो शेष पूर्वाञ्चल तो १०-१२ वर्ष में उन्होंने जीत लिया। बिहार और बंगाल प्रभृति सूबे तो १८ बीस सिपाहियों ने जीत लिये।

कारण यह भूभाग बौद्धों से आवृत थे जो राज-काज-संसार सब को दुःख-मूलक मानते थे और जहां कहीं अद्वैतवादी थे, वे भी संसार को माया समझते और दुःख को मूल मानते थे। इसी अद्वैत की प्रेरणा तुलसीदास ने अकबर के समय में हिन्दुओं को दी थी, जब कि राजस्थान में महाराणा प्रताप जीवन-मरण का युद्ध लड़ रहे थे।

यहां हम पद्मपुराण का एक उद्धरण देते हैं:—

मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमेवच।
मयैव कथितं देवि! कलौ ब्राह्मण रूपिणा॥
अपार्थश्रुतिवाक्यानां दर्शयं ल्लोकगर्हितम्।
कर्म स्वरूप त्याज्यत्वमत्र च प्रतिपाद्यते॥
सर्वकर्मपरिभ्रंशान्नैष्कर्म्यं तत्र चोच्यते।
परात्मजीवयोरैक्यं मयात्र प्रतिपाद्यते॥
ब्राह्मणोऽस्य परं रूपं निर्गुणं दर्शितं मया।
सर्वस्य जगतोऽप्यस्य नाशनार्थं कलौयुगे॥
वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायावादमवैदिकम्।
मयैव कथितं देवि! जगतां नाशकारणत्॥

पार्वती जी के प्रश्न के उत्तर में महादेव जी कहते हैं.—

हे देवी! मायावाद का असत् शास्त्र जो छिपा हुआ बौद्धमत है, मैंने ही कलियुग में ब्राह्मण रूप से रचा है। जिसमें वैदिक श्रुतियों का उल्टा अर्थ किया गया है, वा जिसमें वेद की निन्दा है, वा जिसमें कर्म को सर्वथा छोड़ देने का वर्णन है। तथा जिसमें सर्व कर्मों से रहित को ही निष्कर्म कहा है। साथ ही परमात्मा व जीव की एकता भी करती है। जिसमें परब्रह्म को सर्वथा गुणों से रहित कहा है। वह मैंने स्वयं जगत् के नाशार्थ कहा है कि वह कलियुग में वेद के अर्थ के सदृश प्रगट हो। हे देवी! जगत् के नाश के लिए वेदार्थ के सदृश यह मायावाद महाशास्त्र मैंने ही कहा है। यह स्पष्ट है ऐसे दर्शनों से भीरु सन्तति हीं जन्म लेगी।

इस्लाम भी रूह को नहीं मानता। न जीव के कर्म स्वतन्त्र्य को ही मानता है। हां इस्लाम संसार को दुःखमय मानकर उसे छोड़ने का उपदेश भी नहीं देता। फलत. इस्लाम प्रभावी क्षेत्र ने ऐसे मानस को जन्मा जो संसार के राज्य की कामना करता है, और खुदा की मर्जी पर सब बात छोड़, खुदा की आज्ञावत ही अपने नेता की आज्ञा को मानता है।

त्रैतवाद की आधारभूत मान्यतायें यों हैं—

हम सबको दो पदार्थ प्रत्यक्ष दीखते हैं। एक तो मैं और दूसरा मेरा भोग्य पदार्थ। अंग्रेजी में इसे आई (अह) तथा आई इट (इद) कहेंगे। त्रैतवाद दर्शन इन दोनों की सत्ता का यथार्थ और वास्तविक होना मानता है।

इस शरीर के अन्दर इस शरीर का मालिक आत्मा इन्द्र विद्यमान है। जिन साधनों से वह इस शरीर तथा वाह्य जगत से सम्पर्क रक्खे हुये हैं, वे इन्द्रियां कहलाती हैं। यह इन्द्र ही जीव या आत्मा या जीवात्मा है, वह अनादि और अनन्त है। उसका कभी नाश नहीं होता। इसलिये वह अनादि अर्थात् अजन्मा है। जैसे हम वस्त्र बदलते हैं ऐसे ही जीवात्मा कर्म और तद्जनित संस्कार समुच्चय के कारण भिन्न-भिन्न योनियों में चोले बदलता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। फल भोगने में परतन्त्र है। उसे ईश्वर ने नहीं बनाया। जब से ईश्वर है, तभी से वह है। कभी उसका नाश, क्षय या ईश्वर में ऐसा मिलन नहीं होगा जो उसकी स्वतन्त्र सत्ता नष्ट हो जावे। जीव का कर्म स्वतन्त्र भी एक अमिट स्वभाव है। उसके द्वारा किये कार्य स्वयं उसके उत्तरदायित्व में हैं। न तो वे खुदा की मरजी से होते हैं न ईश्वर की योजना और सर्वसत्ता के बन्धन अनुसार होते हैं। मैं ५ मिनट के बाद क्या करूंगा, इसे ईश्वर नहीं जानता मैं जैसे-२ कार्य करता जाता हूं, वैसे-२ ही ईश्वर जाना जाता है। मेरे किये हर अच्छे या बुरे कार्य का फल मुझे अवश्य भुगतना पड़ेगा। स्तुति, उपासना, भक्ति या पूजा से मेरे भोगों में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। जीव को न किसी का आशीर्वाद और न किसी का श्राप लगता है। (क्रमशः)

गोहत्या-औचित्य

(पृष्ठ ६ का शेष)

१—सम्पूर्ण गोवंश हत्याबन्दी का केन्द्रीय कानून बने।

२—कानून का कार्यान्वयन कड़ाई से हो।

३—गोमांस का निर्यात पूर्णतः बन्द हो।

४—गोवंश को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय।

५—गो-सदनों की समुचित व्यवस्था हो। समाज और सरकार दोनों मिलकर भार उठाएं।

६—गो-सदनों के लिए बाजारों पर आवश्यक लाग-बाग लगाई जाय।

७—दानदाताओं को आयकर में शत-प्रतिशत छूट हो।

८—गो-संवर्द्धन की नीति संबंधी नस्ल तैयार करने की हो, ताकि बछड़ा खेती-जोत के लिए उत्तम बैल बने एवं बछड़ी उत्तम दुधारू गाय हो।

९—फूड प्लानिंग की तरह फौडर प्लानिंग भी हो, ताकि चारा-दाना पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सके।

१०—गोचर भूमियां सुरक्षित रहें।

११—खली, भूसा आदि पशु खाद्य का निर्यात बन्द हो।

१२—पेपर आदि उद्योगों में पशु खाद्य चारे का उपयोग बन्द हो।

१३—शुद्ध गोदुग्ध को शुद्ध भैंस दूध के बराबर भाव मिले। फैट प्रतिशत पर भाव निर्धारण पद्धति बन्द हो।

१४—यन्त्रचालित ट्रक, ट्रैक्टर आदि तथा बैलगाड़ी आदि में इस प्रकार की मर्यादा बांधी जाय कि छोटे फासले के लिए एवं गांवों में ट्रक का उपयोग न किया जाय।

सरकार के साथ साथ सामाजिक संस्थाओं एवं जन-साधारण को भी इसके रचनात्मक कार्यों को करना चाहिए। यथा-गोरक्षा हेतु जन-जागरण, गोदुग्ध का ही प्रयोग, गोशालाओं की समुचित व्यवस्था, गोहत्या हेतु जाने वाली गायों पर रोक, सत्याग्रह तथा गोसंवर्द्धन हेतु तन-मन-धन से सहयोग आदि।

"विश्व को भारत की अद्वितीय देन" बताते हुए आचार्य दादा धर्माधिकारी ने कहा है कि "भारत ही एक ऐसा देश है जहां करोड़ों की संख्या में मनुष्य निरामिष भोजी हैं। और जहां गाय जैसा एक मनुष्येतर प्राणी अवध्य माना गया है। यह कोई धार्मिक अन्धविश्वास नहीं है और न केवल कोरा भावनात्मक जड़ कर्मकाण्ड है। यह इंगित है जीवन की प्रतिष्ठा में। गाय के विषय में भारतीय संस्कृति का संकेत केवल भारतीय नहीं है अपितु मानवीय संकेत है, जो सार्वभौम और विश्वव्यापक है।"

एक बार गाय के अवध्य करार देने के बाद मनुष्य उसके रक्षण की गोवध में गम्भीरता से सोचने लगेगा। सच तो यह है कि मनुष्य को अवध्य करार देने के बाद भी हम उसे पूरी तरह बचा नहीं सके। फिर भी किसी ने यह प्रतिपादन तो नहीं किया है कि मनुष्यों का संहार करना चाहिए या नरमांस बाजार में बिकना चाहिए।"

गोमाता की प्रशंसा में अमेरिका के टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर श्री मालकम आर पेटसन लिखते हैं। "महाकवि होमर ने युद्ध, वर्जिल ने [illegible] (सस्यावरण) होरेस ने प्रेम, दांते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया। परन्तु मुझमें यदि सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथों में हजारों तारों का तानपूरा (वीणा) होता तथा सारा संसार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ के गीत गाता और उसके गुण बखानता तथा उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता"।

महात्मा गांधी ने गोरक्षा में सबकी रक्षा बताते हुए कहा था "मैं जैसे जैसे गोरक्षा के प्रश्न का अध्ययन करता हूं वैसे वैसे उसका महत्व मेरी समझ में आ रहा है। हिन्दुस्तान में गोरक्षा का प्रश्न दिन-दिन गंभीर होता जायेगा, क्योंकि इसमें देश की आर्थिक स्थिति का सवाल छिपा हुआ है।

आज तो गाय मृत्यु के किनारे खड़ी है और मुझे यकीन नहीं है कि हमारे प्रयत्न इसे बचा सकेंगे। लेकिन यह नष्ट हो गई तो हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी। मेरा मतलब हमारी अहिंसा प्रधान और ग्रामीण संस्कृति से है।

गोहत्या जब तक होती है तब तक मुझे लगता है कि मेरी खुद की हत्या हो रही है। हमारे लिए तो प्राणीमात्र की रक्षा करना धर्म है। लेकिन जब तक सबसे उपयोगी पशु को हम सच्चे अर्थ में नहीं बचा लेते तब तक दूसरे जानवरों की रक्षा नहीं हो सकती। हमने तो गाय की उपेक्षा करके गाय और भैंस दोनों को मौत के दरवाजे पहुंचा दिया। इसलिए मैं कहता हूं कि उपयुक्त उपाय करके हम सचमुच गाय को बचा लेंगे तब दूसरे जानवर भी बच जायेंगे।"

अतः सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा ही भारतीय संस्कृति एवं इस देश की रक्षा होगी।

काश्मीर घाटी में औरंगजेबी अत्याचार

ले०—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर

जम्मू-काश्मीर में उग्रवादी और पाकिस्तान समर्थक स्थायी डेरा डाले हुए हैं। यहां पर जो भी सरकार बनती है वह इन राष्ट्रविरोधी तत्वों को आश्रय देती रही है। इनके विरुद्ध अभी तक कोई सख्त कार्यवाही नहीं की गई है। यही कारण है कि अल्प संख्यक हिन्दुओं पर आये दिन अत्याचार होते रहते हैं। शेख अब्दुल्ला की सरकार हो या फारुक की सरकार हो या शाह की सरकार ये सभी सरकारे मुसलमानों के हितों के लिये कार्य करती रही हैं। उनके हितों पर ही ये जीवित हैं। धारा ३७० उनके लिये वरदान बनी हुई है। शेख अब्दुल्ला के समय में यहां पर जम्मू काश्मीर आर्मेड पुलिस बनी जिस में मुसलमानों को अधिक संख्या में भर्ती किया गया। उसी पुलिस के संरक्षण में ये औरंगजेबी अत्याचार हो रहे हैं। श्री नगर में यह पुलिस तमाशा देखती रहती है और जम्मू में हिन्दुओं पर अत्याचार करती है।

पिछले दिनों फारुक की सरकार के रहते हुए उग्रवादी सक्रिय हुए और उग्रवादी तथा पाकिस्तान समर्थक तत्वों ने मिलकर आगजनी और लूटमार की। इस बार शाह सरकार के शासन में वही काण्ड उसी तरह से दोहराये गये।

विधान सभा के अन्दर शाह ने मस्जिद बनवाई वह भी मन्दिर की जगह पर, उसे हटवाया गया तो अब विधान सभा में ही अन्यत्र मस्जिद बनाई जा रही है जिसका विरोध यहां की धर्म निरपेक्ष जनता कर रही है।

श्री राम की जन्म भूमि के ताले खुले तो देश विदेश में मुसलमान बोखला उठा।

जम्मू में थोड़े से मुसलमानों ने भी इतनी हिम्मत की कि जलूस की शक्ल में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये और कहा कि हिन्दोस्तान में रहना होगा तो अल्ला-हो अकबर कहना होगा। पुलिस इस राष्ट्र-विरोधी तमाशे को देखती रही जब कुछ देशभक्त हिन्दुओं ने उनका विरोध किया तो उल्टा हिन्दुओं पर ही लाठी चार्ज किया गया और गोली चलाई। अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियां शुरु कर दी। श्री नगर में झूठी अफवाहें फैलाकर वहां जो काण्ड हुए उन्होंने औरंगजेब के अत्याचारों को ताजा कर दिया।

अनन्तनाग, पुलवामा, बारामूला में तथा श्रीनगर शहर में पुलिस की देख-रेख में जो काण्ड हुए वे वर्णन नहीं किये जा सकते। घाटी के ५० गांवों में लूटपाट और आगजनी हुई। श्रीनगर शहर में भी दुकानें जलाई गई तथा मकान लूटे गये।

४६ मन्दिरों को जलाया गया, क्षतिग्रस्त किया गया। मूर्तियां तोड़ी गईं, उन पर पेशाब किया गया। १०७ मकान व दुकाने जलाई गई या लूटी गई। दर्जनों हिन्दू लड़कियों को जबरदस्ती निकाल कर बलात्कारियों को दिया गया। खन्नाबल में एक हिन्दू युवती को निर्वस्त्र करके सड़क पर छोड़ दिया गया।

आर्यसमाज मन्दिर हजूरी बाग को तथा आर्य समाज वजीर बाग को जलाने का प्रयत्न किया गया। एक बार हजूरी बाग आर्य समाज को जला चुके हैं। पुन: निर्मित भवन को जलाने की योजना चल रही है। फारूक अब्दुल्ला ने यह कहा ही था कि इसे फिर कोई जला देगा। जमाते इस्लामी और जमाते तुल्बा जैसी संस्थाएं पाकिस्तान के नारे लगाती हैं। और पाकिस्तानी झण्डे वहां लगाती हैं परन्तु इन पर कभी पाबन्दी नहीं लगाई गई। वहां के मुसलमानों के हिन्दुओं के लिये तीन नारे हैं—रलियो, गलियो, चलियो, अर्थात् या तो मुसलमान बन जाओ, या नष्ट हो जाओ या चले जाओ।

आज वहां का हिन्दू या तो नष्ट हो रहा है। या मुसलमान बन रहा या भाग रहा है। एक लाख काश्मीरी हिन्दू और पंजाबी अपने को असुरक्षित मानकर वहां से भागने के लिये तैयार बैठा है। काफी वहां से भाग कर दिल्ली, जम्मू आदि स्थानों पर बस गये हैं।

वास्तव में जम्मू काश्मीर में इन काण्डों से बचाव के लिये प्रथम तो धारा ३७० समाप्त होनी चाहिये। और इस प्रदेश को केन्द्रशासित प्रदेश बनाना चाहिये।

देश की सीमा पर इस प्रकार के देशद्रोही काण्ड देश की एकता और अखण्डता के लिये जबरदस्त खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। केन्द्र न पंजाब में कुछ कर पा रहा है और न जम्मू काश्मीर में। निरीह हिन्दू निर्दयता के साथ मारा और लूटा जा रहा है। अपने ही देश में अपने ही नेताओं की नाक के नीचे अपनों पर ही अत्याचार हो रहे हैं तो हिन्दुओं की रक्षा या तो भगवान ही कर सकेगा या सभी हिन्दू एक मंच पर आकर अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकेंगे।

शहीदों की होली

होली खेला शहीदों ने अंग्रेजों के संग-रंग।
होली खेला शहीदो ने अंग्रेजों के संग॥

होली खेला श्रद्धानन्द ने कांग्रेस रह गई दंग।
चांदनी चौक मे सीनाताना सगीनें होगईं भंग॥
होली खेला······॥१॥

होली खेला रामप्रसाद बिस्मिल किया जेल मे हवन।
काकेरी में लूटा खजाना, सरकार हो गई तंग॥
होली खेला······॥२॥

होली खेला भगतसिंह फेंका पार्लीमेंट में बम।
वैसराय की घिग्गि बंध गई, संसद हो गई भंग॥
होली खेला······॥३॥

होली खेला चन्द्रशेखर, पिस्तौल के संग।
सिपाईयो को चुन चुन मारा, गोरे हो गये तग॥
होली खेला······॥४॥

होली खेला मदनलाल ढींगरा, पहुंच गया लन्दन।
'डायर' को गोली से उड़ाया, लन्दन होगई तंग॥
होली खेला······॥५॥

होली खेला मंगल पाण्डे फौज रहगई दंग।
क्रान्ति का जो बिगुल बजाया, अफसर हो गया तग॥
होली खेला······॥६॥

होली खेला शुभाषचन्द्र ने हिटलर रह गया दग।
अंग्रेजों की जड़ें उखाड़ा, होश हो गया भंग॥
होली खेला······॥७॥

वीरो होली खून से खेलो छोड़ो शराब और भग।
वैश्याओं का नचाना छोड़ो, यह अच्छा नही ढग॥
होली खेला······॥८॥

आपस में सब मेल बढ़ाओ होजाओ इक रग।
भारत मांको अखण्ड करदो, दुश्मनको करो तंग॥
होली खेला······॥९॥

—ठाकुर नरसिंह राणा आर्य

काव्य-सुधा

होली है

सतयुग में होली

सतयुग में,
होली की गोद से,
जीवित
बच गया था प्रह्लाद,
विजय हुयी थी,
सच्चाई की,
किन्तु आज।
सच्चाई की बन गयी राख,
जीवित है,
भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद,
मेंहगाई और रिश्वतखोर।
परम्परा चली आ रही है,
हर चौराहे पर,
आग लगायी जा रही है।
चौराहों की यह आग,
प्रह्लाद को बचाने के लिये,
चाहती है लगना,
युवा हृदयों में॥

होली शहीदों की

जिन्होंने,
खेली, खून की होली,
अपने सीने पर झेली,
बन्दूक की गोली।
२३ मार्च, १९३१
फांसी भी तुमने चुनी,
बन्दे मातरम्, बन्दे मातरम्,
जिनके गले से निकले,
एक ही बोली,
यह शहीदों की होली।
वतन के खातिर,
खेली,
जिस खून की होली,
कभी,
देश में युवकों की,
ऐसी भी थी टोली,॥
यह शहीदों की होली, शहीदों की होली

—बृजकिशोर रस्तोगी

ये भी होली कोई होली है

प्यार की मिठास नहीं आस की सुवास नहीं,
दूर-दूर पास नहीं रोती रंगरोली है।
रंगका भी भाव नहीं चंगका भी काम नहीं;
रंग है कुरंग आज आग' बीच खोली है।

रंगमें है कांच और कांचमें तो सांच नहीं,
आंच लगजाय ऐसी ऐसी हाट खोली है।
होली में ठिठोली नहीं कुसड़ियों को टोली नहीं;
सांच सांच बोली ये भी होली कोई होली है॥१॥

होली का मजा है तभी पाप जो किए वे कभी,
भूल जायें आज सभी राग और द्वेष को।
मार रहे होली सिर्फ रंग भरी झोली सिर्फ,
भूल जायें आज बस छोड़ भाव वेष को।

तन को भी भूल जायें मन को भी भूल जायें,
भूल जायें गांव प्रान्त देश परदेश को।
सांस के शिवालय में देह के देवालय में,
बसता जो कंस उसे मार दें हमेशा को॥२॥

होली का जो रूप नहीं आज वो स्वरूप नहीं,
छांव है तो धूप नहीं दिल में न प्यार है।
फूल की जगह शूल हूब गये मस्तूल,
ढूंढती फिरे है कूल मायस बहार है।

रंग में मिला है खून प्यार को दिया है भून,
चढ़ा है जनून आज आत्मा बीमार है।
आदमी को आदमी न देख के है खुश आज,
प्रेम के तो नाम से—ही चढ़ता बुखार है॥३॥

सांप का भरा है विष भारती को मारती जो,
ऐसी वैसी गगरी को चौराहे पे फोड़ दो।
शूल हैं घृणा के उगे बगिया में आज खूब,
चुभने से पहले ही तेज नोक तोड़ दो।

छोड़ दो वसीले छन्द तोड़ दो घृणा के बन्ध,
जिन्दगी में सुधा सार आम-सा निचोड़ दो।
भेद की जो खाइयां हैं पाट दो सभी ही आज,
टूट जो गया है तार आज फिर जोड़ दो॥४॥

—सारस्वत मोहन (मनीषी)
डी०ए०वी० कालेज अबोहर

आया होली का त्योहार

कण-कण में उल्लास जगा है,
आशाओं का सूर्य उगा है,
रूप देख कर पुष्प प्रकृतिका—
अब प्रमाद का दनुज भगा है।
मनुज-मनुज के उर आंगन में—
छाया आज असीमित प्यार।
आया होली का त्योहार॥

खेत - बाग - वन बने सुरम्य,
लगती वसुन्धरा अब रम्य,
प्रेम - दया - ममता - समरसता—
के मृदु भाव प्रस्फुटित प्रकम्प,
प्रकृति वधू की सुन्दरता पर—
होते कोटिक मन बलिहार।
आया होली का त्योहार॥

पिकी - पपीहे का मधु गुंजन,
करता है जन मन अनुरंजन,
मृदुल बयार बना है निर्मम,
तूफानों का महा प्रभंजन,
नव्य उषा की सौम्य रश्मियां—
बिखराती सुख सौख्य अपार।
आया होली का त्योहार॥

—राधेश्याम आर्य

आर्य समाज हमारा है

नव जागृति का रहा प्रणेता
पाखण्डो के गढ का जेता
वेदो का पावन प्रकाश जो—
जगती के जन जन को देता
वही क्रान्ति दर्शी इस युग का—
प्राणो से भी प्यारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

अन्यायो से जो लडता है,
वेदो का प्रचार करता है,
प्रेम दया की, मानवता की,
शिक्षा जगती को देता है,
वही धारा पर खुशहाली का—
लगा रहा अब नारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

जगती के जन श्रेष्ठ बने,
सौम्य समृद्धि वितान बने,
घनीभूत हो इस धरती पर—
सत्य धर्म के मेघ घने,
दलितो तथा अछूतो को दे—
रहा सतत सहारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

स्वतन्त्रता का कर उद्घोष,
मिटा गुलामी का सब दोष,
'कृण्वन्तो विश्वमार्यं' का—
किया धारित्री पर है घोष,
नया समाज बनाएगें हम—
कण - कण ने ललकारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

आर्य समाज मुखमेलपुर दिल्ली चलो

मान्यवर * निमन्त्रण-पत्र *

आपको जानकर हर्ष होगा कि आर्य समाज मन्दिर मुखमेलपुर दिल्ली के नव निर्मित भवन का उद्घाटन २८ मार्च १९८६ को प्रात १० बजे होगा।

कन्या गुरुकुल नरेला की कन्याओ द्वारा यज्ञ प्रात ९ बजे आरम्भ हो जायेगा।

उद्घाटन माननीय श्री डा० बलराम जाखड अध्यक्ष लोक सभा

ध्वजारोहण एवं आशीर्वाद श्री रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

मुख्य अतिथि माननीय श्री रामनिवास मिर्धा संचार मन्त्री भारत सरकार, श्री प्रो० शेरसिंह जी प्रधान हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा एव हु० रक्षा वाहिनी, श्री डा० लोकेशचन्द्र सदस्य राज्य सभा, श्री सहदेव रिटायर्ड ले० जनरल आप मित्रों सहित आमन्त्रित हैं

दर्शनाभिलाषी :

चौ. हीरासिंह (भू. पू. कार्य. पार्षद) मांगेराम आर्य मुखमेलपुर गाव निवासी
मन्त्री स्वागत कर्ता

आर्य समाज बैंकाक थाईलैण्ड का चुनाव सम्पन्न

मास फरवरी के अन्तिम सप्ताह में चुनाव सम्पन्न श्री सहदेवसिंह जी प्रधान श्री संग्राम सिंह जी मन्त्री श्री पलक धारीचन्द कोषाध्यक्ष श्री मनोज सिंह उपप्रधान श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी उपमन्त्री श्री वीरबहादुर निरीक्षक श्री नरसिंह शाही आदि। निर्वाचित हुए—

—संग्रामसिंह मन्त्री

... स्थापित

श्री जैकिशन दास
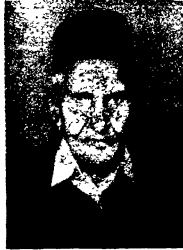
श्रीमती शोभावती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे ३०,००० तीस हजार की स्थिरनिधि श्रीमती शोभावती धर्मपत्नी ल० जैकिशन दास पुत्र भूतपूर्व ल० बुलीचन्द सराफ लाहौर वाले कोठी नवाब ४-७/ बी०/२१ दरियागंज अन्सारी रोड दिल्ली २ के नाम से स्थापित की गई है।

आर्य समाज दीवानहाल, देहली के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में

विशेष रियायत। १००) से अधिक की पुस्तकें खरीदने पर २५ प्रतिशत छूट। मुख्य प्रकाशन

१—सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्दो मे (हिन्दी) मूल्य
२—वेदार्थ कल्पद्रुम (ले० आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री ,, ६०) प्रति
३—ऋग्वेद प्रथम भाग (अंग्रेजी अनुवाद श्री धर्मदेव जी) ,, ४०) ,,
४—ऋग्वेद, तृतीय भाग ,, ,, ,, ८०) ,,
५—ऋग्वेद तृतीय भाग ,, ,, ,, ६५) ,,
६—सामवेद ,, ,, ,, ६५) ,,
७—अथर्ववेद प्रथम भाग
(अंग्रेजी अनुवाद आ० वैद्यनाथ शास्त्री) ,, ६५) ,,
८—अथर्ववेद द्वितीय भाग ,, ,, ,, ६५) ,,
९—बंकिम तिलक दयानन्द श्री अरविन्द घोष (अंग्रेजी) ,, २) ,,
१०—संस्कार विधि (आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री) अंग्रेजी ,, २०) ,,
११—सत्यार्थ प्रकाश डा० चिरंजीव भारद्वाज (अंग्रेजी) ,, ४०) ,,
१२—दयानन्द दिव्य दर्शन लेखक क्षितीश वेदालंकार ,, २५) ,,
१३—वृहद् विमान शास्त्र लेखक स्वामी ब्रह्ममुनि ,, २०) ,,
१४—योग रहस्य लेखक महात्मा नारायण स्वामी जी ,, ४) ,,
१५—मृत्यु और परलोक लेखक नारायण स्वामी जी ,,
१६—कर्तव्य दर्पण ,, ,,
१७—आत्म दर्शन ,, ,,
१८—दयानन्द और विवेकानन्द ,,
१९—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका घासीराम कृत (अंग्रेजी) ,, २०)

नोट—सभा के प्रकाशन विभाग में उपलब्ध अन्य साहित्य की जानकारी के लिए विस्तृत सूची-पत्र मगायें। मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

कुछ आप भी करें

इस मामले में ... और ... । यह वहां कार्यसमिति है जिसमें अभी कुछ दिन ... सरकार से ... कि वह बढ़ाई गई कीमतों पर पुनर्विचार करे लेकिन यह ... हुई कीमतों का समर्थन कर रही है। ... राष्ट्र विरोधी और साम्प्रदायिक

जाए तो प्रश्न उठता है कि ... में ... और सक्रिय है ? पंजाब में हिन्दू ... और ... भारतीय ... के बीच खूनी मुठभेड़ें ... जा रही हैं। क्या पंजाब की इंका ने इस साम्प्रदायिक तनाव को रोकने के लिए कोई लोकप्रिय कदम उठाया है ?

राज्य और केन्द्र में इंका पार्टी का रुख कुछ इस तरह है कि पंजाब में सद्भाव और सुरक्षा बनाए रखने की सारी जिम्मेदारी अकेली बरनाला सरकार पर है। जनतन्त्र की भारतीय शैली का अभिशाप यह भी है कि शासक-दल को सत्ता सौंपकर सारी पार्टियां अपनी रचनात्मक जिम्मेदारियां भूल कर उसे मुसीबत में डालने और गिराने की साजिश में लग जाती हैं। पंजाब में एक विरोधी दल शासन कर रहा है लेकिन मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के हिन्दू-मुस्लिम दंगों को लेकर ही इंका ने कौन से सकारात्मक कदम उठाए हैं ? शाहबानो के मामले के शोले अभी दहक ही रहे थे रामजन्म भूमि की रजिस्ट्री ने घी का काम किया। शाहबानो का मामला और रामजन्म भूमि को 'मुक्त' कराने का आन्दोलन किसी दैवी विपत्ति की तरह नहीं टूटे। देश के सभी दल और सरकारें उनसे बखूबी वाकिफ थे और उनके खतरनाक परिणामों से भी। लेकिन किसी ने भी उनमें चेतावनी नहीं ली। यह कारुणिक है कि कुछ साम्प्रदायिक हिन्दू राम मन्दिर की मुक्ति पर कुछ इस तरह ताल ठोक रहे हैं जैसे उन्होंने महमूद गजनी को वापस भेज दिया।

देश का कोई भी राजनैतिक दल साम्प्रदायिक सद्भावना के स्थायित्व में मन में रहा था। लेकिन दिल्ली में चह्वाण-नेहरुद्वय की आंखों के सामने दंगे कैसे भड़कने दिए गए ? और इन सब जगहों पर इंका ने शान्ति और सद्भावना स्थापित करने के लिए क्या भूमिका निभाई ? साम्प्रदायिक सौमनस्य की दुहाई देना और राष्ट्र विरोधी साम्प्रदायिक तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई दहाड़ना पिछले अड़तीस वर्षों से हो रहा है। लेकिन हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई साम्प्रदायिकता को साहसपूर्वक साम्प्रदायिकता कहना है और उससे निपटना हमारे अवसरवादी राजनीतिक दलों और सरकारों के बस के बाहर की चीज लगती है। इंका चाहे तो अपनी प्रस्तावित आचार-संहिता में एक पूरा परिच्छेद साम्प्रदायिकता पर रखकर सांकेतिक शुरुआत कर सकती है।

शोक सन्देश

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि मेरी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव व्याख्याता, घनश्यामसिंह आर्य, कन्या महाविद्यालय, दुर्ग (म०प्र०) का दिनांक ७ मार्च ८६ को आकस्मिक निधन हो गया है।

—रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९६०८५३०८६ ८६ | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २६४०७१ | वार्षिक मूल्य २० एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क १०] | चैत्र शु० ५ सं० २०४२ | रविवार ३० मार्च १९८६

जम्मू काश्मीर और पंजाब को पांच साल के लिए सेना के हवाले किया जाये।

वेदामृतम्

पुत्रादि को यथायोग्य धन बांटें

प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते,
रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते।
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं
यस्ताकृणोः प्रथमं सास्तुक्थ्यः॥

ऋग् २।१३।४॥

हिन्दी अर्थ—हे परमात्मन्! अपनी सन्तानों को यथायोग्य धन का विभाजन करने वाले गृहस्थ (सुखपूर्वक अपने घरों में रहते हैं) जैसे अतिथि को पोषक और धारक धन (देकर प्रसन्न रहते हैं) अपने आपकी पारिवारिक सम्पत्ति में बढ़ न रखने वाला व्यक्ति पितृरूप द्युलोक से प्राप्त भोजन को दांतों से खाता है। जिसने सर्वप्रथम ये नियम बनाए हैं, वह इन्द्र स्तुत्य है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

संविधान में आवश्यक संशोधन किया जाय

शिष्टमण्डल की प्रधानमन्त्री से मांग

दिल्ली २५ मार्च १९८६

आज प्रातः ९ बजे जम्मू काश्मीर और पंजाब के हिन्दू नेताओं का एक शिष्टमण्डल श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमन्त्री श्री राजीवगांधी से मिला और जम्मू काश्मीर तथा पंजाब के हिन्दुओं पर किये जा रहे लोम हर्षक अत्याचारों की चर्चा करते हुए उनकी स्थाई सुरक्षा को मांग को।

इस अवसर पर प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन भी दिया जिसमे मांग की गई कि शाह सरकार की भांति पंजाब में बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त कर दिया जाय।

श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री से कहा कि इस समय संसद में कांग्रेस पार्टी पूर्ण बहुमत में है, इसलिए जम्मू काश्मीर तथा पंजाब को बचाने के लिए संविधान में आवश्यक परिवर्तन करके सरकार यह अधिकार प्राप्त करे कि यदि देश के किसी भी प्रान्त में—उग्रवादी तत्त्व, विदेशी एजेण्ट, अलगाववादी या तस्करो करके देश की अखण्डता और प्रभुसत्ता को तोड़ने का प्रयत्न करे तो प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को अधिकार हो कि पांच वर्ष के लिए उस संवेदनशील क्षेत्र को सेना के हवाले किया जा सके।

शिष्टमण्डल में सुप्रीमकोर्ट के एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाह, श्री अवतार कृष्ण, श्री अमरनाथ गारू, श्री मोतीलाल मल्ला, श्री बलभद्र मातू, श्री बृजनाथ रैना और धर्मवीर बत्रा आदि प्रमुख व्यक्ति थे।

प्रधानमन्त्री श्री राजीवगांधी ने शिष्टमण्डल की बातें सहानुभूति पूर्वक सुनी और उचित सुरक्षा का आश्वासन दिया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री-सार्वदेशिक सभा

अन्धों के लिए मरणोपरान्त नेत्र दान-महादान

श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने नेत्र दान की वसीयत कर दी

२५ लाख नेत्रहीनों को १२॥ लाख अपनी आंखें देकर नावीनों को रोशनी दें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री ला० रामगोपाल शालवाले ने मरणोपरान्त अपनी आंखें देने का वचन दिया है। उनका कथन है प्राणीमात्र पर, दया के भाव दिखाने की भांति नेत्र हीनों को रोशनी प्रदान करना सबसे महान पुण्य कार्य है। प्रकाशित मार्मिक अपील में आर्य जनता से निवेदन किया है कि मैंने अपनी दोनों आंखें मरणोपरान्त नेत्रहीनों को दान देने के लिये वचन दिया था। इस विषय में मैं आम जनता से और आर्य समाज के जन-नायकों से यही कहूंगा कि वह भारत वर्ष के १५ लाख नेत्र हीनों के

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली की ओर से —

देश की समस्त आर्य समाजों के नाम विशेष पत्र

प्रधान एवं मन्त्री जी,

सादर नमस्ते।

आप जानते हैं कि इस समय हमारा देश अनेक प्रकार के बाहरी और आतरिक संकटो से ग्रसित होता जा रहा है। पाकिस्तान, अमेरिका और दूसरे देश भारत की अखण्डता और सुरक्षा को समाप्त करने के सब प्रकार के प्रयोग कर रहे हैं।

पजाब के अकाली सिक्खों द्वारा धर्म के नाम पर खालिस्तान बनाने के प्रयत्न लगभग चार वर्षों से हो रहे हैं। आपको मालूम है कि पजाब के हिन्दू इस समय भारी सकट से गुजर रहे हैं, जम्मू-काश्मीर मे भी संकट के शिकार हिन्दू ही हुए हैं।

राम जन्म-भूमि के ताले अदालती आदेश पर खोले गए हैं। वह एक वैधानिक विवाद था, किन्तु उसे भी मुसलमानों ने मजहबी रग देकर दगे शुरू करा दिए। पोपपाल के भारत आगमन पर १ लाख हिन्दुओ को ईसाई बनाने की योजना की गई थी, जिसे आर्य समाज के प्रयत्नों से निरस्त कर दिया गया था। पजाब के उग्रवादी सिक्ख और कश्मीर के पाकिस्तानी मुसलमान दोनो ताकतें मिलकर पजाब व कश्मीर को भारत से अलग करना चाहते हैं। उपरोक्त घटनाक्रम को देखते हुए जो खतरा देश के सामने उपस्थित हुआ है, ऐसा पहले कभी नही हुआ था।

इन सभी उपद्रवो का और आने वाले खतरो पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा ने दिल्ली में १५-१६ मार्च ८६ को गभीरता पूर्वक विचार करके जो प्रस्ताव पारित किया है, प्रस्ताव दिनाक २३-३-८६ के सार्वदेशिक साप्ताहिक मेप्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किए हैं।

आपसे निवेदन है कि आगामी ३० मार्च को पंजाब-काश्मीर दिवस अखिल भारतीय स्तर पर बडे समारोहपूर्वक सभी राष्ट्रवादी एव हिन्दू सस्थाओं को साथ लेकर व्यापक आन्दोलनात्मक रूप में मनावें और उसमे प्रस्ताव पारित करके समाचार-पत्रो, भारत सरकार और इस सभा को भिजवाए।

—रामगोपाल शालवाले
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्व० श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज को
स्व० पं० हरिशंकर जी शर्मा की

श्रद्धांजलि

तुम त्याग मूर्ति तुम तेज पुंज, तुम पावन पुण्य प्रभाकर थे।
ऋषि दयानन्द के परमभक्त, तुम वैदिक धर्म दिवाकर थे॥
तुमने अपना उज्वल जीवन, मानव मंगल मे लगा दिया।
प्रेरक कल्याणी वाणी से, सोती जनता को जगा दिया॥

तुम धर्म वीर तुम कर्म वीर, दे दे दलील समझाते थे।
भाषण में भव्य भाव भर-भर, सबको सन्मार्ग सुझाते थे॥
तुम परम पिता के विश्वासी, तुम भोग भावना पालक थे।
तुम स्वयं सजग सस्था स्वरूप, वैदिक गति मति संचालक थे॥

सबसे पहला गुरुकुल खोला, नि.शुल्क वेद की शिक्षा दी।
भूले भटकों का मोह मेट, विज्ञान ज्ञान की शिक्षा दी॥
रच रच कर छोटे बडे ग्रन्थ, किरणें प्रकाश की फैलाई।
वैदिक मन्त्रों की रम्य रश्मि, जन भाषा में भर छिटकाई॥

तुम शास्त्रार्थ सग्रामसिंह, निर्भय प्रतिवादी भयकर थे।
तुम धर्म धाम तुम कृपाराम, दर्शनानन्द शिवशंकर थे॥
तुम स्वर्ग सिधारे हे स्वामी, भौतिक शरीर का अन्त हुआ।
शिक्षा स्वरूप जो छोड़ गये, वह गौरव ज्ञान अनन्त हुआ॥

नेत्र दान—महादान

(पृष्ठ १ का शेष)

लिये १२.५ लाख व्यक्तियों को आंखे दान देकर वसीयत कर दें। इससे देश के लाखों इन्सानों को जहां रोशनी मिलेगी, वहां देश का आधा अन्धापन भी दूर होगा और मानव जीवन में नेत्रदान करके महापुण्य कार्य भी होगा।

वास्तव में यह एक धार्मिक कृत्य है जिसका देश के रचनात्मक कार्यों मे आयसामाजिक व्यक्तियो, कार्यकर्ताओं को अग्रणी होना चाहिए और लाखों की सख्या मे अपने मरणोपरान्त आंखों की वसीयत का फार्म भरवाकर आई रिसच फाऊंडेशन से अधिक जानकारी प्राप्त कर अपना नाम व पता आयु का विवरण देकर प्राप्त की जा सकती हैं।

सभा प्रधान के नेतृत्व मे आंखे प्रदान करके लाखों इन्सानों को उनसे महति प्रेरणा मिली है।

श्री ला० रामगोपाल शालवाले का जीवन राष्ट्र देश धर्म और जाति के लिए समर्पित है हो किन्तु उन्होने मरणोपरांत भी यदि शरीर का कोई तत्व किसी के काम आ सके तो इसे महापुण्य बताया है। उन्होंने एक रोचक घटना बताई मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के एक रिटायर्ड वकील श्री रघुवर दयाल से जब नेत्र दान करने को कहा गया तब उन्होने अपने धार्मिक गुरुओं से उसकी अनुमति लेनी चाही तब एक धर्माचार्य ने कहा यदि मृतक व्यक्ति अपना नेत्र दान करेगा तो अगले जन्म में वो अन्धा ही पैदा होगा।

माननोय श्री प्रधान जी ने तथा अन्य धर्माचार्यों ने इस व्यवस्था के विरुद्ध अपने विचार दिये हैं। आज आर्यसमाज को अपने सामाजिक उन्नति के क्षेत्र में इस पवित्र नेत्र दान कार्य में नेतृत्व करके इस अभियान को शक्तिशाली और उपयोगी बनायें।

मानवता की सेवा के लिए आर्य नर-नारियों को नेत्र दान के कार्य में आगे आना चाहिए और राष्ट्र के जागरुक व्यक्तियों में अपना स्थान प्रमुखता से देकर यश के भागी बनेंगे।

आवश्यक-सूचना

हैदराबाद सत्याग्रह : स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन

जैसा कि पहले भी सूचित किया जा चुका है, भारत सरकार ने हैदराबाद सत्याग्रह में जेलयात्रा करने वाले आर्यवीरो को 'स्वतन्त्रता सेनानी पेन्शन' देना स्वीकार कर लिया है। साथ ही अब यह भी निश्चित हुआ है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित सत्याग्रहियो को पेन्शन दी जाएगी। इस समय तक जितने भी प्रार्थना-पत्र सभा के कार्यालय मे प्राप्त हो चुके हैं उनकी सूची भारत सरकार के गृह मन्त्रालय को भेज दी गयी है। यदि किसी आर्य बन्धु ने, जिन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया हो, अभी तक अपना प्रार्थना-पत्र न भेजा हो तो वे उसे ३० मई सन् १९८६ से पहले पूर्ण विवरण भेज दें। भारत सरकार द्वारा यह तारीख अन्तिम रूप से निश्चित की गई है। इस तिथि के बाद आने वाले किसी भी प्रार्थना-पत्र को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

दिनाक १२ मार्च १९८६, रामगोपाल शालवाले
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

मारीशस के आर्यसमाज भवन में मारीशस को स्वतन्त्रता की १८वीं वर्षगांठ

लेखक—पण्डित धर्मवीर घूरा, अध्यक्ष मोरिशस हिन्दी लेखक संघ, बाक्वा, मारीशस

गत १२ मार्च को मोरिशस टापू ने अपनी स्वाधीनता की अठारवीं वर्षगांठ मनाई। मौके पर भारी आयोजन किया गया था। प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगनाथ जी सपत्निक आर्य सभा के भवन में पधारे थे, क्योंकि रविवार ता० ९ मार्च को १ बजे दिवस काल में आर्य समाज में स्वामी दिव्यानन्द जी, सरस्वती के आचार्यत्व में एक महायज्ञ का आयोजन किया था, साथ में आर्य सभा के अनेक पुरोहित भी यज्ञ अनुष्ठान में सहयोग दे रहे थे।

हमेशा १२ मार्च ही के प्रात.काल में आर्य भवन में ऐसा आयोजन किया जाता था, और मोरिशस के प्रथम प्रधानमन्त्री स्वर्गीय डाक्टर शिवसागर रामगुलाम जी इन आयोजनों में शामिल होते थे, आप सन्देश दिया करते थे, साथ ही स्वतन्त्रता प्राप्ति के आयोजनों मे आर्य समाज द्वारा दिये गये सहयोग के प्रति आभार और धन्यवाद किया करते थे।

गत ९ मार्च को सर विरासायी रिंगाडू जी को भी सम्मानित करने की योजना बनाई गई थी, पर वे बीमार पड़ गये थे इसलिए उनकी अनुपस्थिति में उनकी धर्मपत्नी पधारी थी और मौके पर उन्होंने आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी O.B.E. आर्य रत्न के प्रति और आर्य सभा मोरिशस के प्रति आभार प्रकट किया था। उन्हें इस मौके पर फूलों का गुच्छा अर्पित किया गया था। श्रीमती सरोजनी जगनाथ जी को भी फूलों का गुच्छा पेश किया गया था। प्रधानमन्त्री जी को और भारत के राजदूत को मालायें दी गई थीं।

श्री विरासायी रिंगाडू जी को गत जनवरी मास में नये महा राज्यपाल के रूप में मनोनित किया गया था। साथ में दो तीन रोज पूर्व इंग्लैंड की महारानी जी के द्वारा उन्हें K.C.M.G. की उपाधि से सम्मानित किया गया था। तो इसी खुशी में उनके प्रति बधाई दी गई, क्योंकि वर्षों से डाक्टर रामगुलाम जी के समय से वे बहुत ही ईमानदारी के साथ राष्ट्र सेवा में तन, मन, धन के साथ लगे रहे। जोश और साहस के साथ वित्त मन्त्री की हैसियत से उन्होंने वर्षों तक काम किया था। गत १५ दिसम्बर सन् १९८५ की घटना है कि मारीशस के भूतपूर्व राज्यपाल तथा प्रधानमन्त्री डाक्टर सर शिवसागर रामगुलाम जी के महाप्रयास से श्री रिंगाडू जी को यह ओहदा सम्भालने के लिए मनोनीत किया गया।

महायज्ञ के बाद स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने अपने एक भाषण में यह कहा कि स्वतन्त्रता सबसे बड़ा प्यारा शब्द है। सभी जीव-जन्तु स्वतन्त्र ही रहना चाहते हैं। आपने बताया कि सन् १९१२ की बात है भारतीय स्वतन्त्रता की आन्दोलन के लिए भारत में आर्य समाज ने कितना बल दिया था और उन दिनों आप हैदराबाद आदि की जेल में इसी कारण से थे तो उसी वर्ष श्री रामप्रसाद बिस्मिल जी को फांसी के तख्ते पर लटकाया गया था। इस घटना को सुनकर लोगों को बड़ा दु.ख हुआ था। फिर स्वामी जी ने कहा कि स्वतन्त्रता को प्राप्त करके उसका संरक्षण करना चाहिए। इसके लिए कठिन से कठिन कार्य भी करना चाहिए। संकीर्णता को दूर करना चाहिये। अपने देश की संस्कृति से प्यार करने के लिए सबसे अपील की। आपने बताया कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने स्वराज्य की घोषणा की थी और तभी से भारतीय नेता गण भारत स्वतन्त्रता के लिए जोर-शोर से काम करने लगे थे।

आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी ने अपने भाषण के दौरान यह विचार व्यक्त किया कि मोरिशस में गत १९२० से आर्य समाज राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दे रहा है। सन् १९३५ में जब स्व० डाक्टर रामगुलाम जी इंग्लैण्ड से डाक्टरी शास्त्र का अध्ययन करके लौटे थे तो यही पर आर्य सभा में उनका स्वागत किया था। और सन् १९८५ में भी उनका अन्तिम स्वागत यहां पर किया गया था। डाक्टर रामगुलाम जी ने राज-काज में लिप्त रहते हुए भी हिन्दी भाषा सीखीथी। आपने श्री रिंगाडूजी को उनके गर्वनर जनरल बनने के शुभावसर के लिए उनके प्रति बधाई अर्पित की और मौके पर उपहार के रूप में भेंट उनकी पत्नी के करकमलों में अर्पित की गई। इसी मौके पर प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगनाथ जी को गरीबों की सहायता के लिए १००० हजार रुपयों का एक "चैक" प्रदान किया, मोरिशस आर्य सभा की ओर से।

मोरिशस के प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगनाथ जी ने एक सुन्दर भाषण के दौरान कहा कि सर शिवसागर रामगुलाम जी ने मोरिशस की स्वतन्त्रता के लिये बहुत संघर्ष किया था। कहा कि इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य सभा मोरिशस के सदस्यों ने भी बहुत सहयोग प्रदान किया। आपने यह भी बखान किया कि जो लोग स्वतन्त्रता के विरोधी थे वे आज भी हैं। इसलिए हमको बहुत सोचना चाहिए और हमें करना चाहिए। हमें एकता और भाईचारे के साथ भविष्य को उज्वल बनाने के लिए काम करना चाहिए तभी हम प्रगति करेंगे। एकता से शक्ति प्राप्त होगी और हम अपनी भाषा और संस्कृति को सम्भाल कर रख सकेंगे। अन्त में आपने बताया कि श्री रिंगाडू जी का स्वास्थय एकाएक खराब हो जाने के कारण वे उपस्थित नहीं हो सके फिर इनकी सेवाओं का बखान करते हुए उनके प्रति बधाई दी। दान में दिये गये पैसे के लिए धन्यवाद दिया।

भारत के उच्चायुक्त श्री प्रेमसिंह जी ने अपने भाषण के दौरान कहा कि जब भारत से लोग यहां पर पधारे थे तो लोगो ने बहुत कष्ट झेले थे। उनके संघर्षमय काल को नहीं भूलना चाहिए। आपने इस बात पर बल दिया कि गांवों में जब आप जाते हैं तो यह दिखाई देता है कि नौजवान लोग उन पूर्वजों के संघर्षों और उनकी भाषा संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। उन नौजवानों को अपनी पीढ़ियों के लिए बहुत कुरबानी करनी चाहिए। जिस हालात में लोगों ने मोरिशस को हरा-भरा किया उसे कभी भी नहीं भूलना चाहिए फिर आपने नये गर्वनर जनरल के प्रति बधाई दी और मोरिशस के १८वें स्वतन्त्रता दिवस के मौके के लिए भारत सरकार और भारतीय जनता की ओर से मंगल कामनायें अर्पित कीं।

भारतीय दूतावास के द्वितीय सचिव डाक्टर हरगुलाल गुप्त जी ने कहा कि मोरिशस के लिए आज एक ऐतिहासिक दिवस है। आपने भारतीय दूतावास और भारत सरकार की ओर से बधाई दी। आपने कहा कि जिन लोगों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा की है उनके इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। इस देश में इन्सान को इन्सान के रूप में देखा गया है इसके लिए भी बधाई देता हूं। आपका देश इन्द्रधनुष की भूमि है। इस देश से आपको प्यार करना चाहिये। आपने इस बात पर बल दिया कि भारत से फिजी, ब्रिटिश गायना, ट्रिनिडाड, गायना, सुरिनाम तथा विश्व के और अनेक देशों में हमारे पूर्वज गये पर हमारी भाषा और संस्कृति की जितनी रक्षा यहां पर आप लोगों ने की उतना बहुत कम लोगों ने की। आपके पूर्वजों ने इस देश की मिट्टी को अपने खून और पसीने से सींचा है, जिसे सारा विश्व जानता है, पर भविष्य निर्माण आपके हाथों में है। फिर

(शेष पृष्ठ १० पर)

सामयिक चर्चा—

मुस्लिम औरतों की दुर्दशा

आप लोगों को मालूम ही नहीं कि अधिकांश मुस्लिम औरतों की अपने पतियों के हाथों से क्या दुर्दशा होती है और कोई यह भी न समझे कि सभी मुसलमान ऐसा व्यवहार करते हैं! मुस्लिम धर्म के इलावा अन्य मतों के लोग भी पीछे नहीं हैं पर—फिर भी अन्य मतों की बेवियां परदे में न रहने के कारण अपनी आवाज समय-२ पर उठाती रहती है परन्तु मुसलमानों में औरतों को मर्दों के मुकाबले कम आजादी होने से वह जुल्म के घूंट पीती रहती है और कोई ऐसा अवसर जब आ पड़ता है (जैसे आजकल शाहबानो केस बहु-चर्चित हो गया है) तब वह अपनी हालात जार की जो कहानी सुनाती हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

इसी सम्बन्ध में इन दिनों महाराष्ट्र से लगभग ३१ व्यक्तियों का वुफद दिल्ली में आया हुआ है इनमें १८ औरतें ऐसी हैं जिन्हें उनके खावन्दों ने तलाक दे रखा है, इनमें से एक महिला महमूना खान जो कि अमरावती यूनीवर्सिटी की लेक्चरार है बताया कि "अगर सरकार मुस्लिम औरतों की सुरक्षा नहीं कर सकती और जाबता फौजदारी दफा १२५ के आधीन हमें मिले हुए अधिकारों को सलब करती है तो समझ लीजिए कि वह मुस्लिम औरतों से भारतीय शहरी होने का अधिकार छीन रही है।

इस वुफद की सभी औरतों ने कहा कि शाहबानो केस में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विरोध कुछ खाते-पीते खानदानों के लोग करते हैं जिन्हें इस बात का पता ही नहीं कि मुस्लिम औरतों की अकसरीयत किन हालात से गुजर कर रही है—क्या उन्होंने कभी सोचा कि वह लड़कियां जो १४ साल की भी नहीं हुईं परन्तु तलाक मिलने पर जिन्दगी की तमाम तमन्नाएं और सुनहैरी ख्वाब चूर-२ हो जाते हैं। मैमूना खान ने बताया कि हमने-एक यूनिवर्सिटी के लेक्चरार से शादी इसलिए नहीं की कि वह खूबसूरत या अमीर था बल्कि इसने सोचा कि यह नौजवान तुर्की पसन्द है परन्तु उसने कुछ अर्से के बाद यह कहकर तलाक दे दिया कि (मैमूना) नास्तिक है और उसे मौलवियों ने कहा है कि वह किसी नास्तिक को घर में न रखे और मुझे रात के १।। बजे बच्चों सहित घर से निकाल दिया। इसी तरह एक महिला ममताज ने बताया कि वह एक स्टाफ नर्स है और उसे शादी के ठीक आठ दिन बाद इसलिए घर से निकल जाने को कहा कि वह उसे तलाक दे चुका है क्योंकि वह उसे नापसन्द है क्योंकि मेरे (ममताज) गाल पर एक छोटा-सा फोड़ा निकल आया इस प्रकार अनेकों दुःख भरे पत्र प्राप्त होते हैं जिन्हें फिर कभी पत्र द्वारा दर्शाया जावेगा। (के० नरेन्द्र की कलम से)

प्रताप दिनांक २४ फरवरी

माता ही बालक की निर्माता है

ज्वालापुर, १६ फरवरी, गुरुकुल महाविद्यालय में आयोजित २१ दिवसीय 'पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर' के पांचवें दिन प्रशिक्षार्थियों के समक्ष आचार्य विद्यानिधि वानप्रस्थी ने संस्कारों का वैज्ञानिक वर्गीकरण करते हुए कहा कि 'पुंसवन' आदि कतिपय संस्कार तो ऐसे हैं जिनसे माता के माध्यम से हो गर्भस्थ शिशु का संस्कृत किया जाता है। इसलिये कहा जाता है कि माता ही निर्माता है। संस्कारों से आत्मबल बढ़ता है, जिस व्यक्ति में आत्मबल होता है वह शारीरिक बलवानों की अपेक्षा अधिक बलिष्ठ होता है। अतः संसार में महान कार्य उसी के द्वारा सम्पन्न होते हैं। माता के समान ही पिता और गुरु का भी संस्कार-निर्माण में बराबर योगदान है। इसलिये कहा गया है कि—

मातृमान, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद।

तत्पश्चात जातकर्म, निष्क्रमण और चूडाकर्म संस्कारों पर उन्होंने पारस्कर गृह्यसूत्र आदि ग्रन्थों के परिप्रेक्ष्य में संक्षिप्त प्रकाश डाला।

जात-कर्म का अर्थ है जब बालक उत्पन्न हो तो उत्पन्न होते ही बालक की शुद्धि के लिये जो कर्म किया जाता है। और निष्क्रमण का अर्थ है बालक का शुद्ध वायु के लिये बाहर निकलना। एवं चूडा-कर्म केश-छेदन को कहते हैं, जो बालक के जन्म के पहले वर्ष या तीसरे वर्ष में किया जाता है।

अपराह्न द्वितीय चक्र में 'कर्ण वेध' संस्कार की विधि का विवेचन स्वामी वासुदेवानन्द जी महाराज ने किया। आश्वलायन गृह्यसूत्र के अनुसार बालक का कर्णवेधन या नासिका-वेधन जन्म से तीसरे या पांचवें वर्ष में करना चाहिए। 'भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम्'। अर्थात् हम कानों से सर्वदा ही कल्याणकारी शब्दों को सुनें, यह भावना इस संस्कार के मूल में विद्यमान है।

डा० नारायण मुनिश्चतुर्वेदः ने दोनों वक्ताओं के वक्तव्यों पर धन्यवाद देते हुये उक्त संस्कारों की ऋषि प्रणीत विधि का सारगर्भित विवेचन किया।

संस्कारों से अभीप्सित सन्तान की प्राप्ति

ज्वालापुर, १७ फरवरी, गुरुकुल महाविद्यालय में आयोजित २१ दिवसीय "पौरोहित्य" प्रशिक्षण-शिविर षष्ठ दिवस, मूर्धन्य मनीषी डा० विष्णुदत्त 'राकेश' ने प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष संस्कारों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत कर वैदिक विधि की वरीयता प्रतिपादित की। संस्कारों के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम छान्दोग्योपनिषद् में 'संस्कार' का प्रयोग हुआ है। तन-मन के दोषों के परिमार्जन एवं दिव्य गुणों के आधान के लिये संस्कार किये जाते हैं। संस्कार मन को संस्कृत कर आत्मा को प्रकाशित करता है, जिस प्रकार धूल-धूसरित कांच-मंजूषा में प्रज्वलित ज्योति भी निष्प्रभ अथवा मन्द प्रतीत होती है, उसी प्रकार सदोष शरीर में विद्यमान आत्मा का उजाला भी मन्द पड़ जाता है, वह आत्मज्योति प्रखर रूप में सामने आ सके इसीलिये कांच रूपी तन के परिशोधन की आवश्यकता होती है। षोडश संस्कारों के माध्यम से मनुष्य अभीप्सित सन्तान की प्राप्ति कर सकता है, उसे अपने सपनों के अनुरूप ढाल सकता है। नोबेल पुरस्कार के विजेता खुराना' का भी यही मत है कि -'गर्भस्थ भ्रूण को बदलने से अभीप्सित सन्तान पैदा की जा सकती है।' संस्कार बीज गत भी होते हैं और वातावरण जन्य भी होते हैं। जब प्रह्लाद गर्भ में था तो उसकी माता नारद के आश्रम में रही, इसीलिये उसका गुण,कर्म,स्वभाव हिरण्यकशिपु से पृथक् हो गया।

वैदिक और पौराणिक संस्कार पद्धतियों की तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि दोनों ही वेद—'विहित' हैं, अन्तर केवल यह है कि पौराणिक प्रत्येक संस्कार के प्रारम्भ में गणपति-पूजन, पुण्याहवाचन, नान्दीमुख श्राद्ध और मातृ की पूजा करते हैं, ऋषि दयानन्द ने अपनी विधि में इनको छोड़ दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि तन्त्रोक्त गणेश की आकृति ऊ के अनुरूप है।

पुरोहित स्वयं शिक्षित, सदाचारी और संस्कृतज्ञ हो तभी जनता को संस्कारों से वास्तविक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। मात्र-संकल्प ही मनुष्य के सुषुप्त संस्कार जगाकर उसे देश की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान करा। जाति, गोत्र, कुल, तिथिवार और नक्षत्र आदि का स्मरण कराता है। अन्त में उन्होंने पुंसवन संस्कार का प्रशिक्षण देते हुए कहा—कि यह संस्कार का प्रशिक्षण देते हुए कहा कि यह संस्कार पुत्रत्व को प्राप्ति के लिये किया जाता है। पारस्कर, गोभिलीय और शौनक गृह्य सूत्रों में इसके करने का प्रावधान गर्भ-स्थिति के दूसरे या तीसरे महीने में निर्दिष्ट है। स्त्री-पुरुष युक्ताहार विहार होकर इस संस्कार को अपनाएं, तभी बलवान् सन्तान प्राप्त कर सकते हैं।

—डा० सत्यव्रत शर्मा 'अजेय' एम.ए. पी-एच.डी.
उपाचार्य-गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

प्रवासी भारतीयों के मसीहा-स्वामी भवानी दयाल संन्यासी

—ब्रह्मदत्त स्नातक

प्रवासी-भारतीयों के कल्याण के लिए जिन लोगों ने उन्नीसवी शताब्दी के पिछले चरण में एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में काम किया, उनमे लाला लाजपतराय, महात्मा गांधी, गोपाल कृष्ण गोखले, बनारसी दास चतुर्वेदी, सरोजिनी नायडू, राइट आनरेबल और श्रीनिवास शास्त्री आदि अनेक नाम हमारी स्मृति में आ जाते हैं। स्वामी भवानी दयाल सन्यासी के जीवन की विशिष्टता यह है कि इन लोगों की भांति वे भारत में पैदा नहीं हुए थे फिर भी उन्होंने अपनी जन्मभूमि के साथ-साथ मातृभूमि की सेवा की थी। इसका अर्थ यह है कि स्वामी जी को केवल अपनी जन्मभूमि जो वर्तमान दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसवाल प्रदेश के जोहानीजवर्ग नगर मे है, उससे ही प्यार नहीं था, जहां उनका जन्म १० दिसम्बर, १८९२ को हुआ था। यदि उनकी जन्मभूमि दक्षिण अफ्रीका में थी, तो भारत उनकी पितृभूमि और मातृभूमि थी, जहां से उनके बिहार निवासी पिता जयरामसिंह और माता मोहिनी देवी कलंकप्रद कुलीप्रथा के अन्तर्गत जाकर बस गए थे। अपनी इस मातृभूमि के प्रवासी भारतीयो तथा अन्य नागरिकों की भवानी दयाल सन्यासी ने बड़ी निष्ठा से यावज्जीवन सेवा की। वे एक प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्ता, राजनैतिक नेता, समाज सुधारक, हिन्दी के प्रख्यात लेखक और पत्रों के सम्पादक और पत्रकार थे, जिसका भरपूर लाभ न केवल उनकी जन्मभूमि के देश-निवासियों को मिला अपितु विश्वभर मे फैले समस्त प्रवासी भारतवासी उनकी सेवाओं से लाभान्वित हुए।

स्वामीजी ने अपनी प्रवासी की कहानी मे अपनी इन गतिविधियों का बड़े संकोच के साथ वर्णन किया है। अंग्रेजी मे उनके जीवनी लेखक इंडियन कोलोनियल एसोसिएशन के मन्त्री प्रेमनारायण अग्रवाल ने सम्पूर्ण विस्तार से स्वामी जी के जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है, यद्यपि अपनी पुस्तक "भवानी दयाल संन्यासी" में उन्होने दक्षिण अफ्रीका के सार्वजनिक कार्यकर्ता का शीर्षक उनके लिए दिया था। स्वामीजी ने अपनी जन्मभूमि के लिए दारुण कष्ट उठाए, कारावास भोगा और अनेक आंदोलन चलाए, और साथ ही अपनी मातृभूमि और पितृभूमि भारत के लिए भी उन्होंने सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। भारत में भी उनको कारावास तथा अनेक प्रकार से सताया गया, परन्तु यहां भी उन्होंने राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र मे बढ़चढ़ कर भाग लिया।

भारत में रहकर भी उन्होंने भारत के स्वाधीनता संग्राम मे और सभी प्रकार के रचनात्मक कामों में सराहनीय कार्य किया। उनका भारत तथा प्रवासियों के प्रति प्रेम इसी बात से स्पष्ट है कि अपने बहुअरा ग्राम मे रहकर द्वितीय दशक में न केवल उन्होंने राष्ट्रीय पाठशाला खोली, अपितु, प्रवासी भवन का निर्माण किया और वहां प्रवासियों से सम्बन्धित प्रामाणिक साहित्य का पुस्तकालय बनाया। इसका उद्घाटन देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के हाथों हुआ था। अपने इसी गांव मे और उसके बाद बिहार मे दक्षिण अफ्रीका की भांति उस समय की प्रगतिशील जनसंस्था आर्य समाज के कार्यों में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अपने जीवन के पिछले वर्षों में भवानी दयाल संन्यासी ने अजमेर में भी एक विशाल प्रवासी भवन स्थापित किया, जो आज भी मौजूद है। उन्होंने अपने पुत्र और भतीजे को पढ़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका से गुरुकुल वृन्दावन में भेजा था जिससे उनका भारतीय संस्कृति से गहरा प्रेम प्रकट होता है। इस प्रकार दो नावों पर सवार होकर भी उन्होंने सफलता पाई। उनका नाम वस्तुतः भवानी दयाल था और १९२३ में विधिवत् भारत आकर सन्यास लेने के बाद उनका नाम भवानी दयाल संन्यासी हो गया। इस संन्यास में उन्होंने सन्यसेत् सर्वकर्माणि(सन्यासी कुछ काम न करे) की शास्त्रीय आज्ञा के विपरीत जीवन में सदैव कर्मयोगी को सर्वोपरि स्थान दिया।

दक्षिण अफ्रीका से १९०४ में भवानी दयाल के पिता सपरिवार अपने बहुअरा गांव सपरिवार लौट आए। वहां समुद्र यात्रा और उसके साथ ही साथ बाल विधवा से शादी करने पर बिरादरी ने उनके परिवार का घोर अपमान किया था, जिससे भवानीदयाल को जात पांत के झमेले और पौराणिक रूढ़िवादी हिन्दू धर्म से घृणा हो गई। बंग-भंग और स्वदेशी आन्दोलन शुरू होने पर १९०५ में भवानी दयाल गांव-गांव घूमकर स्वदेशी का प्रचार करने लगे और अगले वर्ष (१९०६) में कलकत्ता कांग्रेस के अधिवेशन के बाद उन्होने स्वराज्य का सन्देश जगह-जगह पहुंचाना शुरू किया। मुजफ्फरपुर में बम फेंकने वाले नाबालिग नवयुवक खुदीराम बोस और उसके साथी प्रफुल्लचन्द्र चाकी की आत्महत्या से उनके मन मे क्रान्तिकारी भावनाएं उमड़ने लगी। १९०७ में उनका जगरानी देवी से विवाह हुआ। साढ़े आठ वर्ष मातृभूमि मे बिताकर भवानीदयाल अपनी जन्मभूमि को दक्षिण अफ्रीका वापिस लौट आए।

गांधी जी के सान्निध्य में

जन्मभूमि में पहुंचने पर उसी दिन भवानीदयाल महात्मा गांधी जी के दर्शन करने फिनिक्स आश्रम में पहुंच गए। अपनी आत्मकथा में उन्होंने उसके संस्मरण इस प्रकार दिए हैं—"रास्ते में मैं महात्मा गांधी जी की उसी मूर्ति की कल्पना कर रहा था, जिस रूप मे उन्हें अपने बचपन में जोहानीजवर्ग में देख चुका था, किन्तु वहा पहुँचते ही मेरी कल्पना भ्रान्त सिद्ध हुई। आश्रम के निकट पहुंचा तो देखता क्या हूँ कि महात्मा गांधी बहुत मोटे कपड़े का एक जांघिया और एक अधबही (आधी बांह की कुर्ती) पहने खेत में कुदाल चला रहे हैं, न पैरो में जूते थे, न सिर पर टोपी। वे कुदाल इस तेजी से चला रहे थे कि उनके सभी साथी पीछे छूट गये थे। मैंने मुखाकृति देखकर उन्हें पहचान लिया और चरणो की धूलि माथे पर चढ़ाई।" गांधी जी से उनका यह प्रथम परिचय दक्षिण अफ्रीका मे हुआ था। और उसके बाद भारत में जीवन के अन्तिम क्षणो तक घनिष्ठ रूप से बना रहा।

भवानी दयाल दक्षिण अफ्रीका में व्यापार द्वारा पैसा कमाने के उद्देश्य से लौटे थे, किन्तु गांधी जी को देखकर उनका मानचित्र ही बदल गया। उन्होंने कालर और टाई दोनों को स्वाहा कर दिया। बाद में प्रवासियों पर लगने वाले ३ पौंड प्रति व्यक्ति कर के विरोध में जबर्दस्त हड़ताल और सत्याग्रह वहां चला। उनमे न केवल भवानी दयाल और उनकी पत्नी जेल में गई, अपितु गांधी जी और कस्तूरबा भी गिरफ्तार हुए। इसी सत्याग्रह का प्रयोग गांधी जी ने बाद में भारत में भी स्वाधीनता प्राप्ति के लिए किया था।

सम्पादन और पत्रकारिता के क्षेत्र में

भवानीदयाल के जेल से छूटते ही गांधी जी ने अपने "इण्डियन ओपीनियन" का सम्पादन करने और फिनिक्स आश्रम में रहने का उनसे अनुरोध किया। उनकी बीमार पत्नी जगरानी देवी को रेलवे स्टेशन से एक हाथठेला मे जुतकर स्वयं गांधी जी ले आए। कुछ दिनो के बाद पत्नी का देहान्त हो गया। इसी काल मे उनका दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रूज से परिचय हुआ, जिनके द्वारा प्रवासियो की सेवा और भारतीय स्वाधीनता के कार्यों में बड़ा सहयोग मिला। इस काल मे उन्होने दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास लिखा और वहां से निकलने वाले एक अन्य पत्र 'धर्मवीर' का सम्पादन उन्होंने किया और हिन्दी के प्रचार और साथ ही वैदिक धर्म के प्रचार के काम में वे जुट गए।

१९१९ में भवानी दयाल सपत्नीक भारत लौट आए और इस प्रकार यहां सार्वजनिक जीवन में उनका प्रवेश हो गया। प्रवासियों के प्रश्न पर इसी काल में उनकी स्व० बनारसीदास चतुर्वेदी से भेंट हुई। अमृतसर की कांग्रेस में वे न केवल शामिल हुए, और स्वागताध्यक्ष महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के पास ठहरे, अपितु पहली बार प्रवासी भारतीयो के प्रश्न पर उन्होंने राष्ट्रीय महासभा मे अपना महत्वपूर्ण भाषण दिया और इस विषय में वहां प्रस्ताव भी पास कराया। बाद में कानपुर कांग्रेस में बाकायदा एक प्रवासी विभाग की स्थापना हुई और भारतीय कांग्रेस के अंग के रूप मे दक्षिण अफ्रीकी कांग्रेस को भी अपने २० प्रतिनिधि भेजना स्वीकार हो गया।

हिन्दी की सेवा

दक्षिण अफ्रीका में १९२२ मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी बीमार (बाद मे दिवंगत) पत्नी के अनुरोध पर भवानीदयाल ने अपनी सारी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परिवार नियोजन और हिन्दू

—डा. गंगाराम (निदेशक) वैदिक शोध संस्थान, अलीगढ़

पोप पाल द्वितीय ने भारत विदाई से पूर्व ईसाइयों से अपील की कि वे परिवार नियोजन न करें। ईसाइयों की मदर टैरसा भी परिवार नियोजन के विरुद्ध है तथा भ्रूण-हत्या को मानव-हत्या मानती हैं। मुस्लिम मुल्ला-मौलवी से लेकर आधुनिक उच्च शिक्षित मुसलमान भी परिवार नियोजन को मजहब विरोधी मानते हैं। मुस्लिम व्यक्तिगत कानून में वे किसी प्रकार के परिवर्तन के भी इसीलिए विरोधी हैं क्योंकि इससे उनकी आबादी का बढ़ता हुआ औसत कम हो जाएगा। हिन्दुस्तान में अहिन्दू इस तथ्य को भली-भांति समझते हैं कि परिवार नियोजन के राष्ट्रीय कार्यक्रम को न अपनाने से वे आगामी ५०-६० वर्षों में बहुमत मे हो सकते हैं। इसीलिए परिवार नियोजन केन्द्रों लगभग शत-प्रतिशत नसबन्दी और गर्भपात के केस हिन्दुओं के ही होते हैं।

परिवार नियोजन की वर्तमान प्रक्रिया से यदि आगामी ५०-६० वर्षों बाद हिन्दू हिन्दुस्तान मे अल्पमत में हो गया तो उसका वही हाल होगा जो ईरान में पारसियों का हुआ या लेबनान और सायप्रस में ईसाइयो का हो रहा है। मलेशिया, पाकिस्तान और बंगलादेश में हिन्दुओं की जनसंख्या कम हो जाने के बाद जो उनकी अधोगति हुई है, उसे भी ध्यान में रखना आवश्यक हैं। मलेशिया मे मुसलमान ५१ प्रतिशत होते ही उसे इस्लामिक राज्य बना दिया गया जबकि वहा ४९ प्रतिशत आबादी हिन्दुओ, बौद्धो और चीनियों की है। अतः लोकतन्त्र और धर्म निरपेक्षता भी हिन्दुस्तान मे तभी तक है जब तक कि हिन्दू बहुमत मे हैं।

परिवार नियोजन हिन्दुओं के आर्थिक सिद्धान्त के भी प्रतिकूल है क्योंकि वे भोग और भोक्ता के वैदिक सिद्धान्त को मानते हैं। परमात्मा ने सृष्टि में पहिले भोग भेजे और बाद में भोक्ता। यदि वह भोग से पहले भोक्ता को भेज देता तो जीव सृष्टि के प्रारम्भ में ही मर जाता। इसलिए परमात्मा के विधान के अनुसार ही सृष्टि मे मनुष्य; पशु, कीट और पतग की आबादी होती हैं। मनुष्य के एक मुह के साथ-२ दो हाथ भी परमात्मा देता है। हिन्दुस्तान मे ६५-३० वर्ष पूर्व खाद्यान्न की जो कमी थी, आबादी बढ जाने के बावजूद भी क्या वह दिखाई देती है ? अब भारत मे खाद्यान्न इतना अधिक है कि विदेशो में लाखों टन गेहूँ, चावल, आदि भेजने के बाद सरकारी गोदामों मे उसे सड़ने से हमारी सरकार बचा नही पा रही है।

योरोप के हालैण्ड जैसे घनी देश मे जनसख्या का जो प्रतिवर्ग मील अनुपात है उस दृष्टि से हिन्दुस्तान में ४ अरब आबादी को आसानी से खिलाया जा सकता है। रसायनिक खादों और आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों से लाखों एकड़ बन्जर भूमि को उपजाऊ बनाया सकता है। हिन्दुओं की आबादी का दबाव यदि बढ़ा भी तो वे करोड़ो की सख्या मे उन देशो मे घुसपैठ कर सकते हैं जहां आबादी बेहद कम हैं। क्या हम विशाल राष्ट्र होकर भी बगला देश के मुस्लिम घुसपैठियों को रोक पा रहे हैं ? क्या जब इगलैड में आबादी का दबाव बढ़ा तो वे कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण अफीका, आस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड आदि देशों में करोड़ो की संख्या में नही बस गये ? क्या आज भी करोड़ों लोग अफ्रीकाई और अमेरिकाई देशों मे नही खप सकते। क्या करोडो भारतीय अपने साम्यवादी मित्र देश रूस में जाकर नही बस सकते जहां जनसंख्या बढ़ाने के लिए सरकार नाना प्रकार के प्रोत्साहन देती है। रूस जैसे साम्यवादी देश व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के शोषण के विरोधी है। और वैदिक सिद्धान्त राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के शोषण के विरुद्ध है। अत: साम्यवाद के अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त के अनुसार विशाल जनसंख्या वालें गरीब भारत के नागरिक कम जनसख्या वाले सम्पन्न और क्षेत्रफल मे विशाल रूस मे जाकर बसने लगें तो वह क्यों कर रोकेगा। इससे मार्क्सवाद मजबूत ही होगा।

गर्भपात और नसबन्दी हिन्दू धर्म और अध्यात्म विरोधी भी हैं। योरोप के अधिकाश कैथोलिक देशो में भ्रूण-हत्या प्रति बन्धित है। फिर धर्मपरायण भारत में इसे कानूनी रूप दिया जाना भारत की आत्मा का हनन है। आखिर भारत जैसे राष्ट्र का क्या भविष्य होगा जिसमे मां गर्भपात द्वारा अपने बच्चे को गर्भ मे ही मार देती हो।

परिवार नियोजन दार्शनिक दृष्टि से भी हिन्दू विरोधी है क्योंकि जिस जीवात्मा को अपने पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर मनुष्य योनि में आना है, किन्तु उसे हिन्दू महिला परिवार नियोजन नसबन्दी या भ्रूण-हत्या के द्वारा मनुष्य योनि में ही न आने दें तो स्वाभाविक रूप से वह जीवात्मा अहिन्दू औरत के उदर से जन्म लेगी। इसीलिए ऋग्वेद में परमात्मा का दस सन्तान तक उत्पन्न करने का आदेश है—"इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु। दशास्यां पुत्रा नाधेहि पतिमेकादशं कृधि।" ऋग्वेद ॥

म० १० । सू० ८५ । मं० ४५ ॥

इसलिए परिवार नियोजन नसबन्दी और गर्भपात राजनैतिक, आर्थिक धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से हिन्दू विरोधी हैं और यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान के जिस क्षेत्र में भी हिन्दू अल्प मत मे होता जा रहा है, वहीं विघटनकारी और पृथकतावादी शक्तियां सिर उठा रही हैं। अत: यह कथित राष्ट्रीय कार्यक्रम् राष्ट्र, विरोधी हैं। क्योंकि हिन्दुओ के अल्पमत मे आते ही इस देश का राजनैतिक स्वरूप मजहबी बन जायेगा और हमारी भावी पीढ़ियां का हाल वही होगा जो काबुल, गंधार सिन्ध, बलोचिस्तान, सीमान्त प्रदेश, पश्चिमी पजाब, पूर्वी बगाल आदि मे हिन्दुओं का हुआ है। क्या हिन्दू समाज परिवार नियोजन के वर्तमान राष्ट्र विरोधी स्वरूप को अपना कर अपने पैर मे स्वय कुल्हाड़ी मारेगा। अतः हिन्दू समाज के विनम्र सेवक के नाते मैं देश ६५ करोड़ हिन्दुओ और समस्त हिन्दुओं और समस्त हिन्दू संगठनो से अपील करता हूं कि वे नसबन्दी-शिविरो के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन करें ताकि भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार को इस दिशा में जापान की तरह कोई तर्क संगत कानून बनाना पड़े।

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

(पृष्ठ ५ का शेष)

सम्पत्ति जमीन और बगला बेचकर उनके नाम पर एक प्रिंटिंग प्रेस खोलकर "हिन्दी" नामक पत्र को निकालना शुरू किया। मारीशस, फिजी, डेमरारा, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, टागानिका, यूगाडा, कीनिया, रोडेशिया आदि देशो में प्रवासी हिन्दुस्तानियों मे वह समाचार अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। परन्तु बाद में पारिवारिक कारणो से वह काम बन्द करके उन्हें भारत लौट आना पड़ा। भारत मे रहते हुए उन्होंने आर्यावर्त (पटना) और हजारी बाग जेल मे सजा भुगतते हुए हस्तलिखित पत्र "कारागार" का भी सम्पादन किया। उनकी हिन्दी की रचनाएं बहुत सी हैं, जिनमें प्रमुख (१) दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास (२) दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव (३) हमारी कारावास कहानी (४) महात्मा गाधी (५) ट्रासवाल में भारतवासी (६) नेपाली हिन्दू (७) वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता (८) शिक्षित और किसान (९) वैदिक प्रार्थना (१०) वैदिक धर्म और आर्यसमाज तथा (११) प्रवासी की कहानी है।

दक्षिण अफ्रीका मे भारतीयो के एक ही परिवार के विभिन्न व्यक्तियों को अंग्रेजी में बात चीत करते देखकर हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। भारत में रहते हुए कलकत्ता के हिन्दी पत्रकार सम्मेलन कानपुर मे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसरों पर स्वामी जी ने सक्रिय भाग लिया। इसी प्रकार १९३१ में देवघर में बिहार साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बने। वृन्दावन में प्रवासियों के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर जेल में रहने के बावजूद स्वामी जी ने अपना अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में लिखकर भेजा था। सन १९२४ में मथुरा की दयानन्द जन्म शताब्दी में भाग लेने के बाद वे भारतीय पत्रकारों के बीच प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में प्रचार लेखों द्वारा करते रहे। वे राष्ट्रीय महा सभा की गतिविधियों में बराबर भाग लेते रहे। स्वामी भवानी दयाल सन्यासी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में अपनी जन्मभूमि व मातृभूमि दोनों की समग्र निष्ठा से जिस प्रकार आजीवन सेवा की वह इतिहास का गौरवमय अध्याय है। उनके प्रयत्नों की सुखद परिणति १९४७ में भारत को स्वाधीनता और विदेशों में भारतवंशियों को कतिपय राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति से आंकी जा सकती है। १९५२ में उनका स्वर्गवास अजमेर में हो गया।

आर्यसमाज के दार्शनिक दृष्टिकोण की अन्य दर्शनों से तुलना

ले०—प्रो० डा० रामेश्वर दयाल गुप्त, एम. ए., पी. एच. डी. अध्यक्ष, त्रैतवादी आर्य पीठ, ज्वालापुर

(गतांक से आगे)

जीव के चिन्ह दो हैं—

उसे वस्तुओं के प्राप्त करने की इच्छा होती है। उसे अपने जैसे अन्य जीवों की उन्नति पर द्वेष होता है। वांछित वस्तु की प्राप्ति पर सुख और अप्राप्ति पर दुःख होता है। जिन वस्तुओं को उसे प्राप्त करना होता है, उनके लिये वह प्रयत्न करता है इस प्रयत्न को वह अपने स्वाभाविक तथा जन्म जन्मान्तरों मे अर्जित ज्ञान के आधार पर प्राप्त करता है। परन्तु उसका ज्ञान समिति है, पर इसे वह बढ़ाता रहता है।

जब उसके सारे कार्य स्वार्थ रहित हो पदार्थ भाव से किये जाते हैं, तो उसे एक निश्चित समय के लिये स्थूल शरीर में आ फंसने से मुक्ति मिल जाती है, पर ब्रह्मा का एक वर्ष बीत जाने पर पुनः इस शरीर बन्धन में आना होता है।

जीव अनेक हैं, पर उनकी संख्या निश्चित है। एक भी नया जीव न बढ़ता है, न घटता है। हरेक जीव का अपना पृथक् अस्तित्व एवं व्यक्तित्व और लेखा-जोखा है। उनके परस्पर व्यवहार से समाज निर्मित है। पर सारे जीव एक ही सत्ता से निश्चित अथवा उत्पन्न नहीं हैं। सब पृथक् सत्ता है।

प्रकृति

दूसरी सत्ता इदं शब्द में समाविष्ट यह प्रकृति है। यह जितने पदार्थ अन्न, जल, वनस्पति एवं भूगर्भ में स्थित खनिज आदि हैं, वे कुछ मूल तत्वों से बने हैं। यह वास्तव में उन मूलतत्वों की विकृति है। मूलतत्व भिन्न-२ अनुपात में मिलाये जाकर ही अन्न या खनिज के रूप में प्रगट होते हैं। तत्वों का भी विश्लेषण किया जा चुका है और विज्ञानाभिमत ११२ तत्व भी फोड़ दिये गये हैं। एक भार वाला धन विद्युत का भाग है और उसके चारों ओर ऋण विद्युत घूमता रहता है। इस धन या ऋण विद्युत के परमाणुओं की भिन्न-२ संख्या का मिश्रण हो जगत में भांति-२ के पदार्थ उत्पन्न करता है। यह सारी प्रकृति वास्तविक है। माया या स्वप्न नहीं है। करोड़ों वर्षों से उसका अस्तित्व स्वयं सिद्ध है। मूल भार सब धन विद्युतों का अथवा परमाणुओं का निश्चित है। एक ग्राम भी वस्तु नई नहीं बनाई जा सकती न नष्ट की जा सकती है। यह भी जीव की भांति अनादि है और अनन्त है। यह सृष्टि क्रम ऐसा ही चलता रहेगा। इस सृष्टि में उत्पत्ति-प्रलय तो परमाणुओं के मिलन वा विघठन से होते रहेंगे। पर यह उत्पत्ति-प्रलय का प्रवाह अनन्त है और सदा होता रहेगा। इस क्रम का नाश कभी नहीं होगा।

यह पदार्थ जीव के भोग के लिये जीव को अर्पित है। जीवात्मा इन पदार्थों का भोग करके प्रमुदित होता है। और जीव की भांति वह सुख भी वास्तविक अतएव प्राप्य है। एक विधान के अनुसार इन पदार्थों से भोग प्राप्त करने का हर जीव मात्र का अधिकार है, यह भोग सब जीवों को परस्पर यथायोग्य अर्जन एवं यथा योग्य व्यवहार पूर्वक प्राप्त होना चाहिये। कुछ पदार्थ कुछ जीव प्राप्त कर सकेंगे और कुछ दूसरे जीव इन पदार्थों का परस्पर न्याय पूर्वक विनियोजन होना चाहिये। पदार्थों में अपनी सत्ता है। दूसरी शक्तियां इन्हें गति देती है। अतः यह गतिशील हो जाती है। जब तक उस आरोपित गति में बल होता है, वे गतिशील बनी रहती हैं। पदार्थों में ज्ञान नहीं होता। पदार्थ स्वयं गति में परिवर्तन नहीं हो सकते। जीवात्मा और प्रकृति दोनों सदैव के साथी है, पर एक दूसरे में परिवर्तित नहीं हो सकते।

हम सब प्रकृति को अपने चारों ओर व्याप्त देखते हैं। जो प्रत्यक्ष है उसके अस्तित्व से इन्कार कैसा? हां जीव और ईश्वर इन्द्रियों से अनुभूत नहीं हैं। न दिखाई देते हैं, न सुनाई। किसी कर्मेन्द्रिय द्वारा प्रत्यक्ष नहीं होते। अतः उनका अस्तित्व सिद्ध करने में कठिनाई हो सकती है। प्रकृति के अस्तित्व में वैज्ञानिक और भौतिकवादी भी विश्वास करते हैं। उनकी मान्यता है कि प्रकृति के भौतिक पदार्थों से ही जीव बनता है और ईश्वर तो है ही नहीं। अतः प्रकृति ही सब कुछ है। इसलिए उनका नाम भौतिकवादी रख दिया गया है। हम उनसे सर्वांश में सहमत है कि प्रकृति का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। और इसकी सबसे बड़ी दलील है कि जो न हो वह हो जावे या जो हो उसका अनहोना नहीं हो सकता। अभाव से भाव और भाव से अभाव नहीं हो सकता।

नासते विद्यते भावो न भावे विद्यतेसतः।

अत इस प्रकृति को कभी किसी ने नहीं बनाया। यह केवल रूप बदला करती है। डल्टन महोदय ने जो Atomic Theory प्रतिपादित की थी उसका यही आधार था कि परमाणु का नाश नहीं होता। Indestructibiuty of atom. परमाणु रूप बदल देता है। मोमबत्ती जब जलती है तो उसका कारबन वायु से आक्सीजन ले उससे यौगिक हो कारबन डाई आक्साइड (co२) गैस बन जाता है। कारबन एवं आक्सीजन के भार के योग के बराबर ही यह गैस बनती है। सृष्टि में १ ग्राम भी न तो कोई नया पदार्थ बन सकता है न नष्ट हो सकता है। परमाणु सदैव से है। तभी वन से ईश्वर है। और सदा ही रहेगा। प्रलय काल में सारे यौगिक (Compound) और मिश्रण (Mixture) पृथक हो जाते हैं। परमाणु अवस्था पर पहुंच जाते हैं। पुनः सृष्टि होते समय यह परमाणु अपनी (Valeney) शक्ति के अनुसार भिन्न-२ परमाणुओं से मिलाये जाते हैं और भिन्न प्रकार के भोग पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। सारी वनस्पति जगत की उपज—अन्न, फल-फूल प्राय. केवल ३ तत्वों आक्सीजन हाइड्रोजन एवं कार्बन से बने हैं। कभी २ कुछ वनस्पतियों में नाइट्रोजन एवं फासफोरस और कैल्शियम व लोह कुछ परिणाम में मिल जाते है। यह (Organic Chemistry) का विषय है।

अन्य नक्षत्रों पर और भी तत्व हो सकते हैं। अभी चन्द्रमा से जो धूल अमेरिका के आकाश-यात्री लाये हैं वह पृथ्वी पर प्राप्त किन्हीं तत्वों में से नहीं हैं। यह तत्व ही मूल प्रकृति है। इनसे जब और पदार्थ बन जाते हैं तो उन्हें हम विकृति कहते हैं। विकृति अनादि अनन्त नहीं है। प्रकृति ही अनादि अनन्त है। (क्रमशः)

स्व० बिहारीलाल शास्त्री जी को सावित्री देवी शर्मा की

श्रद्धांजलि

'पागवड़ा' इति ग्रामो मुरादाबाद मण्डले ।
तीर्थं स्थानन्तु धीपीनां विरामः साधुसङ्गतेः ॥
जन्मभूमिरियं पुण्या बिहारीलाल शास्त्रिणः ।
पौष कृष्णस्य सप्तम्यां विहायास्मान् दिवङ्गतः ॥

वैदिक वाङ्मय, संस्कृत साहित्य तथा अरबी फारसी के प्रसिद्ध विद्वान् महर्षि दयानन्द के अन्य भक्त, विद्वद्वरेण्य आचार्य पंडित बिहारीलाल जी शास्त्री (मेरे पूज्य ताऊजी) हम सब शोकाकुल पारिवारिक जनों को छोड कर दिव्य परलोक के अमर यात्री बन चुके हैं। उनका सुपावन तपस्वी जीवन चारु-चरितामृत तथा दिग्दिगन्त व्यापिनी कीर्ति कौमुदी से आलोकित आर्य जगत् उस प्रातः स्मरणीय भव्य मूर्ति का अपने हृदय पटल पर सर्वदा पुण्य दर्शन करता रहेगा। मुरादाबाद जिले के पागवड़ा नामक ग्राम में सन् १८९० में आपके शुभावतरण से यह भारतभूमि वीर प्रसविनी हुई थी। आप समृद्धशाली सम्पन्न माता-पिता की एकमात्र सन्तान थे। पौराणिक परिवार में उन्होंने सर्वप्रथम शिव पूजन की परम्परा का ही निर्वाह किया। अपनी पूज्या माताजी की प्रेरणा से प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू-फारसी के माध्यम से हो दी गई। उसी के परिणामस्वरूप आप उर्दू, अरबी, फारसी के विशेष विद्वान् बने। कुरान-बाइबिल आदि ग्रन्थों का आद्योपान्त गम्भीर अध्ययन कर वैदिक सिद्धान्तों पर आजीवन प्रभावोत्पादक शास्त्रार्थ करते रहे। विपक्षी मुसलमान ईसाई भाई सब ही आपकी तार्किक भाषा, पारिवारिक स्नेहमय सद्भाव अत्यन्त आदर करते थे। वस्तुतः पूज्य ताऊजी "वसुधैव कुटुम्बकम् यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्" जैसे सार्वभौम, कल्याणकारी मानवतावादी सूत्रों को व्यावहारिक जीवनकारी आदर्श मानते रहे। यही उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा का मौलिक रहस्य है।

एक दिन सौभाग्य से उनके परिवार में आये हुये एक संस्कृतज्ञ विद्वान् (पं० छेदालाल जी) ने उन्हें सस्नेह संस्कृत भाषा के अध्ययन की शुभ प्रेरणा दी। उनकी आज्ञा का सविनय अक्षरशः पालन करते हुये उन्होंने समस्त वैदिक वाङ्मय का अङ्गोपाङ्ग सहित स्वाध्याय किया। इसी अनवरत शैक्षिक तपश्चर्या के परिणाम स्वरूप पूज्य ताऊजी भारत के वर्तमान विद्वानों में मूर्धन्य माने गये।

वक्तृत्व कला के धनी, शास्त्रार्थ महारथी पूज्य ताऊजी ने न जाने कितनी बार मनोरञ्जक भाषा में ही विपक्षियों को सैद्धान्तिक विषयों पर शास्त्रार्थ करते हुये परास्त किया। उनके सौजन्य एवं हार्दिक स्नेह के कारण विरोधी भी उन्हें अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते थे। सचमुच पूज्य शास्त्रीजी अजातशत्रु थे। उनके रोचक व्याख्यानों में हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आदि सब ही बन्धु समान रूप से उपस्थित होते थे। अकाट्य तर्कों से प्रभावित होकर उनके भक्त बन जाते थे।

व्याख्यान वाचस्पति होने के साथ-साथ वे आदर्श गुरु और सुयोग्य अध्यापक भी थे। बरेली, बदायूं उज्जियानी, आगरा, सम्भल तथा अजमेर आदि स्थानों में रह कर अपने-अपने अध्यापन कौशल से समस्त शिष्य वर्ग को प्रभावित किया। उनके विनोदी स्वभाव, सरस सदुपदेशों से आज भी अनेक मुस्लिम ईसाई शिष्य भी आपको पितृ तुल्य मानते हैं। यही थी उनकी "आत्मवत् सर्व भूतेषु" वाली सार्वजनीन हित भावना।

सुयोग्य लेखक—पूज्य ताऊजी ने अपनी आर्ष प्रतिभा से अनेक दार्शनिक धार्मिक एव सामाजिक शिक्षाप्रद ग्रन्थों का प्रणयन किया जिनके अध्ययन से कितने मनुष्यों की आन्तरिक ज्योति प्रकाशित हुई। विविध प्रश्नोंका समाधान मिला। आध्यात्मिक शङ्कायें समाहित हुई। आपकी ओजस्विनी वाणी के समान लेखनी भी सारगर्भित तथ्यों की प्रकाशिका एवं अव्याहत गति वाली थी देश-विदेश के आर्यजन उन्हें उनकी पुस्तकों के स्वाध्याय के माध्यम से ही अपने हृदय पटल पर उनका पुण्य दर्शन करते थे। नियमित दिनचर्या के पालन में वस्तुतः वे अत्यधिक कष्ट सहिष्णु, तपोधनी एवं कठोर साधक सिद्ध हुये। ऐसे ही महामानवों के विषय में निम्नाङ्कित सूक्ति अथन सार्थक प्रतीत होता है :—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि लोकोत्तराणां चेतांसि कोऽहि विज्ञातुमर्हति ।

सर्वथा राग, द्वेष, ईर्ष्या, विहीन, पर प्रशंसक व्यक्तित्व पूज्य ताऊजी ने अपने पराये का भाव त्यागकर सब ही स्वजनों की प्रशंसा द्वारा उनका उत्साह वर्धन किया। शरणागत किसी भी व्यक्ति को निराश नहीं किया। यथासम्भव सब की सहायता की। निष्काम कर्मयोगी बन कर पूज्य ताऊजी ने अनेक अरक्षित अनाथों का भोजन वस्त्र सुशिक्षा द्वारा परिपालन किया। वे आज भी उनकी सहायता एवं उदारता गुणगान करते नहीं थकते हैं। पूज्य ताऊजी के दिवङ्गमन के अनन्तर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि ऐसे शुभचिन्तक सर्वहित प्रेरक सहायक व्यक्तित्व के महाप्रयाण से इस देश की अपूरणीय क्षति हुई उनका श्रेष्ठ चरित्र "न भूतो न भविष्यति" का उत्कृष्ट उदाहरण है। उनके जीवन में निर्लोभता, निर्भयता, स्पष्टवादिता जैसे गुण सदैव पारस्परिक व्यवहार में प्रकट होते रहे।

आज पूज्य ताऊजी ने अपने पीछे विनयशील समृद्ध परिवार (पितृभक्त पुत्र श्री अरविन्द कुमार शर्मा (नगर के धनाढ्य व्यक्तियों में अग्रगण्य-फैक्ट्री), पुत्रवधू श्रीमती सुशीला देवी, सुशील पौत्र राजीव कुमार शर्मा, तीन पौत्रियां (सौ० नीरजा सौ० तनूजा तथा आयुष्मती जया) भूतपूर्व संसद सदस्य श्रीयुत रमेश विकट (भतीजे) तथा श्रीमती वेदप्रभा शर्मा (भतीजी) छोड़ा है। सब ही पारिवारिक स्वजन सभ्य सुशिक्षित एवं धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत हैं। इस ६ मास की (३ जौलाई से ३ जनवरी ८६ तक) अस्वस्थता में सभी स्वजनों ने श्रद्धापूर्वक उनकी हार्दिक सेवा की। पूज्य ताऊजी ने सबको अनेकशः आशीर्वाद दिये।

आश्चर्य है घोर शारीरिक कष्ट में भी पूज्य ताऊजी निरन्तर भगवद्भजन में तन्मय रहे। आंखें खोलने पर समाचार पत्रों में भेजने के लिये उत्तम लेख लिख-वाते रहे। मिलने को आये हुये स्वजनों को अपनी जीवन कालीन शिक्षाप्रद शास्त्रार्थ चर्चायें सुनाकर ज्ञानवर्धन करते रहे। अन्तिम क्षण तक उनकी लोकहित कारिणी कर्म तन्मयता बनी रही। कभी किसी व्यक्तिसे अपनी अपार वेदज्ञता व्यक्त नहीं की। उनके जीवन के पवित्र आदर्श थे—"वदनं प्रसाद सदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः"।

वस्तुतः वे पार्थिव शरीर से हम सब से विमुक्त होकर भी यशः काय से हमारे मध्य सर्वदा विराजमान रहते हुए हमें ज्ञानमय सन्मार्ग में प्रेरित करते रहेंगे। आज हम उस दिवङ्गत पुण्यात्मा को सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर वियोगाकुल परिवार के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। प्रभु इस असह्य वेदना को सहने शक्ति प्रदान करें।

संसार के पांच आध्यात्मिक शत्रु

लेखक—दिनेश शर्मा पाराशर आचार्य वैदिक प्रवक्ता जयप्रकाश नगर दिल्ली-५३

हमारे जीवन में जहां अनेकों शत्रु बन जाते हैं। वैसे ही नाना प्रकार के दुर्वृत्ति वाले स्वभाव के मनुष्य जीवन मे शत्रु बाह्य एवम् आन्तरिक होते हैं। उसी प्रकार संसार के पाच आध्यात्मिक शत्रु होते हैं—प्रथम शत्रु है 'अज्ञान' दूसरा शत्रु है 'स्वार्थ' तीसरा शत्रु है विक्रोश' चौथा शत्रु है 'आलस्य' पांचवा शत्रु है 'अभाव' ये आध्यात्मिक शत्रु हैं बाधक हैं घातक हैं। इनमे से प्रत्येक पर यहां विचार करते हैं। महाभारत ग्रन्थ मे जो कि सस्कृत महाकाव्य ग्रन्थ है भगवान् वेद व्यास ने गीता मे कहा है—'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिद विद्यते' अर्थात् 'संसार में ज्ञान के सदृश-समान पवित्र वस्तु दूसरी नही है'। इससे यह स्पष्ट है कि अज्ञान के सदृश अपवित्र कोई दूसरी वस्तु भी नहीं है मैं अज्ञान को सबसे बड़ा शत्रु इसलिये कहता हूँ कि यह संसार के हितैषियो के साथ से भी ससार का अहित करवा डालता है। जो लोग स्वभाव से दुष्ट हैं, जिन्हें परपीड़ा में निष्कारण आनन्द आता है, अथवा जो स्वार्थवश दूसरो के हित का नाश करते हैं, उनके हाथो ससार का अनिष्ट होना तो बिलकुल स्वाभाविक ही है। किन्तु अज्ञान से हित चाहने वाले भी अपनी समझ में हित कहते हैं ऐसा समझते हुए भी, अहित कर बैठते हैं। अथवा समस्या उपस्थित होने पर किं कर्तव्य विमूढ़ होकर विवश ही बैठे रहते हैं। जिन मनुष्यों ने सत्य का प्रकाश करने वाले विज्ञान वेत्ताओं को धमकाया, सताया और जीते-जी जला तक दिया, वे अपनी समझ मे ससार का और स्वयं विज्ञान वेत्ताओं का दोनों का हित ही साध रहे थे। जब तक रेलगाड़ी तथा व्योमयान का आविस्कार न हुआ था, मनुष्य दूर देश-स्थित मनुष्यो का हित चाहते हुए भी विवश थे। इस सारे दु.ख का कारण था अज्ञान। इसीलिए चरक महाराज के स्वर में स्वर मिलकार कहना पड़ताहै कि 'प्रज्ञानराधों मूले सर्वरोगाणाम्' अर्थात् समझ का दोष सब रोगो की जड है।

इस समय मानव जाति के संगठन के सम्बन्ध मे जो अज्ञान फैला हुआ है, जो साधारण सी भूलें हम एक छोटे परिवार के सम्बन्ध मे होंने सहन नही कर सकते वे ही सारे मानव समाज को दु.ख दे रही हैं। यह देखकर किसे आश्चर्य न होगा? सच तो यह है कि इन साधारण से मनोवैज्ञानिक तथ्यो के ठीक प्रयोग न होने से संसार में कितना दु.ख बढ़ रहा है तो प्रेम लज्जा और संकोच पर विजय पा ही लेता है। मनुष्य जीवन मे महान् शत्रु यह अज्ञान है। अविद्या अन्धकार अज्ञान को उत्तम ज्ञानरूप वेद से वैदिक महापुरुषों ऋषि महर्षियों के सदुपदेशों से दूर करना चाहिये।

दूसरा शत्रु है 'स्वार्थ'

ससार का दूसरा शत्रु स्वार्थ अथवा तृष्णा है। यो तो सद्चरित्र महात्माओ को छोड़कर साधारण मनुष्य-मात्र स्वार्थ और प्रेम के मेल का परिणाम है। किन्तु कई मनुष्यों में यह स्वार्थ असाधारण मात्रा में पाया जाता है। महाराज भर्तृहरि जी ने मानव समाज के बड़े सुन्दर विभाग किये हैं। वे लिखते हैं —

'एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्ये सामान्यास्तु परार्थं मुद्यमभृत' स्वार्थाविरोधेन ये। तेऽमी मानुष राक्षसा, परहितं स्वार्थाय निघ्नान्ति ये ये तुघ्नन्ति निरर्थक परहित ते के न जानीमहे॥ नीति० ७५॥

अर्थात् इस संसार मे चार प्रकार के मनुष्य है—जो अपने हित का त्याग कर दूसरों की भलाई करते हैं। कुछ लोग साधारण श्रेणी के होते हैं, जो अपने स्वार्थ की हानि न होने पर भी परोपकार के लिये उद्योग करते हैं। जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित को नष्ट करते हैं, वे नर अधम हैं, परन्तु जो व्यर्थ ही दूसरों के हित का नाश करते हैं भर्तृहरि जी कहते हैं वे कौन हैं, हम नहीं जानते अर्थात् इस पद मे मनुष्यों की चार श्रेणियां हैं— उत्तम, मध्यम, अधम और निकृष्ट। उत्तम पुरुष अपने स्वार्थ का ध्यान न कर दूसरों का हित करते हैं। मध्यम पुरुष अपने हित की हानि न करते हुए दूसरों की भलाई करते हैं। अधम पुरुष स्वार्थ के लिये परहित मे बाधा उपस्थित करते हैं और निकृष्ट मनुष्य वे हैं जो व्यर्थ ही दूसरों के हित का विनाश करते हैं। स्वार्थ मनुष्य को राक्षस बना देता है। यह काम, लोभ, मोह और अभिमान के रूप में प्रकट होता है। जिनमें से काम और लोभ मुख्य हैं।

तीसरा शत्रु है विक्रोश—

मनुष्य-जाति का तीसरा शत्रु विक्रोश है। यह वह दुर्गुण है जिसके कारण वे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन्हें भर्तृहरि जी ने चौथी श्रेणी मे रखा है। कई मनुष्यों मे दूसरों के दु.ख में आनन्द लेने की स्वाभाविक दुष्प्रवृत्ति होती है। वह काम क्रोध लोभ आदि किसी भी कारण से नहीं, किन्तु निष्कारण दूसरो को पीड़ा देते हैं। उनके हृदय मे जो स्वाभाविक विध्वंसकरिणी प्रवृत्ति होती है उसे हमने अनुक्रोश के उलटे विक्रोश का नाम दिया है। वस्तुतः देखा जाय तो स्वार्थ और विक्रोश का मूल भी अज्ञान है। यदि इन मनुष्यों को अपने कर्मों के फल का पूर्ण रूपेण ज्ञान हो जाय तो वे ऐसा कभी न करें। पूर्ण ज्ञान से हमारा तात्पर्य है कि उन्हे साक्षात्कार हो जाय। क्योंकि उपदेश मात्र से ज्ञान तो सबको मिल ही जाता है।

चौथा शत्रु है आलस्य—मानव समाज का आलस्य शत्रु है। इसे हमने स्वार्थ तथा विक्रोश से अलग इसलिए रखा है क्योंकि यह बहुधा धर्मात्मा मनुष्यो मे भी पाया जाता है। यह वही वस्तु है जिसे गीता मे अज्ञान से हम उत्पन्न होता है जो सब प्राणि मात्र को मूढ़ बना देता है। यह तमोगुण प्राणियों को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के बन्धनो से बाधता है। जैसा कि यह श्लोक है—

तमस्त्व ज्ञानजं विद्धि मोहन सर्व देहिनाम्।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत॥ गीता १४। ८॥

अर्थात् हे भारत अर्जुन? तू यह समझ ले कि तमोगुण अज्ञान मूलक है, यह देहधारी मात्र को भ्रम मे डाल देता है। यह मनुष्य को लापरवाही आलस्य और निद्रा के पास में बाध देता है। बहुत से ऐसे मनुष्य पाए जाते है सचित धन में से बहुत दान करते हैं परन्तु कार्य कुछ नही करते। उनमें पराए दु.ख मे समवेदना पायी जाती है। वे दान भी करते हैं इसलिए उन्हें स्वार्थी कैसे कहें? जहां तक बन पड़ता है वे किसी को दु.ख भी नहीं देते। परन्तु स्वयं करते कुछ नही। इनका दोष आलस्य है। संसार मे किसी को दु.ख न देना इतने मात्र से मानव जाति का कल्याण नही हो सकता, प्रत्येक मनुष्य को कुछ न कुछ देना भी चाहिए। बहुत से ऐसे हैं जो दु.ख न देना मात्र मे धर्म की इति श्री समझते हैं। उनका कहना है कि—

"अजगर करै न चाकरी पछी करै न काम।
दास मलूका कह गए सबके दाता राम॥

ऐसे मनुष्य सचमुच अजगर की तरह चुप चाप पडे रहते है। अजगर तो किसी को दु.ख भी देता है परन्तु वे किसी को दु.ख नही देते। किन्तु ऐसे मनुष्यो से भी मानव समाज का हित नही हो सकता। इसलिए हमने आलस्य को मानव समाज का चौथा शत्रु माना है। वेद मे इस पुरुषार्थ की क्रिया को सवन के नाम से पुकारा गया है। हर एक मनुष्य का धर्म है कि वह किसी न किसी पदार्थ मे से सार को खींच निकाले। जो सवन नही करते वे प्रभु के प्यारे नही हैं। ऋग्वेद मे कहा है:—

"य सुन्वत सखा तस्मा इन्द्राय गायत॥ ऋ० १। ४। १०॥

जो सवन करने वालो का सखा है उस इन्द्र के परमात्मा व राजा के गीत गाओ। तो आलस्य सवन का उलटा है। यह भी मानव जाति का महा शत्रु है। पांचवा शत्रु है अभाव—मानव जाति का पांचवां शत्रु अभाव है। वस्तुतः सोचें तो इसका भी मूल अज्ञान है। किन्तु इसको हमने अन्य शत्रुओ से पृथक् इसलिए रखा है कि यह उन मनुष्यो से भी पाप करवाता है जो स्वभाव से दुष्ट अथवा आलसी नही है। उदाहरण के लिए किसी देश में दुर्भिक्ष आ पड़े तो वहा अच्छे पुरुषो को भी अपना आप सभालना कठिन हो जाता है। किसी ने क्या अच्छा कहा है—

बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्।
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।

अर्थात् भूखा आदमी कौन-सा पाप नही कर डालता! भूखे लोग निर्दयी हुआ करते हैं। यह अभाव दो कारणो से उत्पन्न होता है—प्रथम उपभोग्य वस्तुओं के ह्रास से, और दूसरा उपभोक्ताओं की अतिवृद्धि से। ज्ञान मनुष्य इन दोनो विपत्तियों का उपाय पहिले से सोच कर इनका प्रतीकार करते हैं। इसीलिए हम कहते हैं कि मानव जाति का सबसे बडा शत्रु अज्ञान है। ससार में पाच आध्यात्मिक शत्रु कौन-कौन से हैं हमने संक्षेप से कुछ विचार किया।

आर्यसमाज की गतिविधियां

भाषण प्रतियोगिता

ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) के अवसर पर दिनांक ८-३-८६ को आर्य समाज, अल्मोडा में नगर के अनेक विद्यालयों (रा०इ०का०, एडम्स बा० इ० का०, तथा चिल्ड्रन्स एकेडेमी, एस ए बी, अल्मोडा) के छात्रो ने निम्नांकित विषय पर आयोजित की भाषण-प्रतियोगिता मे भाग लिया—

(१) भारतीय संस्कृति की रक्षा से ही भारत की रक्षा सम्भव है। (कक्षा ५ से ८ तक के लिए।

(२) वेद-वेदागो की रक्षा से ही भारत की रक्षा। (कक्षा ९ से १२ तक के लिए)।

अवर वर्ग मे १८ तथा प्रवर वर्ग मे ४ विद्यार्थी सम्मिलित हुए। प्रवरवर्ग, सभी प्रतियोगियो को ज्ञानवर्धक साहित्य और प्रमाण पत्र दिये गये, जब कि निम्नांकित को सफलता के लिए विशेष पुरस्कार प्रदान किये गये—

अवर वर्ग—प्रथम कु० निधि मनोट, कक्षा ५, चिल्ड्रन्स एकेडेमी, अल्मोडा, १५) रुपए। द्वितीय—कु० रेणुका भोज, कक्षा ५, ,, ,, अल्मोडा, १०) रुपये। तृतीय—कु० ज्योति जोशी, कक्षा ८, एडम्स बा०इ० का०, अल्मोडा, १०) रुपये।

प्रवर वर्ग—प्रथम—श्री महेशचन्द्र काण्डवाल, कक्षा ११, रा०इ०का०, अल्मोडा, १५) रु०, द्वितीय—कु० रुचि टमटा, कक्षा १०, एडम्स बा०इ०का०, अल्मोडा, १०) रु०, तृतीय—कु० हेमा बगड्वाल, कक्षा ९, ,, ,, ,, अल्मोडा, १०) रु०।

इस उत्सव की अध्यक्षता श्री जगत प्रकाश खुल्वे, अवकाश प्राप्त जिला विद्यालय निरीक्षक तथा प्रधान, आर्य समाज, अल्मोडा द्वारा सम्पन्न हुई तथा पुरस्कार वितरण श्रीमती कुसुम अग्रवाल (पुत्र वधू स्व० हीरालाल प्रतपाल) के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। श्री रवीन्द्र उप्रेती, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिकारी, नैनीताल ने ७० रु० सफल प्रतियोगियो को प्रदान कर उनका उत्साह बढ़ाया। इस अवसर पर मन्त्री, आर्य समाज, अल्मोडा ने भारतीय संस्कृति तथा ऋषि बोधोत्सव के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला।

डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री, मन्त्री, आ स अल्मोडा।

मारीशस की स्वतन्त्रता

(पृष्ठ १ का शेष)

आपने अपनी एक सुन्दर कविता सुनाई और आर्यसमाज के कार्यों की प्रशंसा की थी और कहा था कि आर्यसमाज का इतिहास मनुष्य को प्रगति करने मे विश्वास दिलाता है। महर्षि दयानन्द जी को १७ बार विष दिया गया पर उन्होने घर-घर वेदों का सन्देश पहुचाया। महर्षि दयानन्द जी के जीवन की अन्तिम घटनाओ का विवेचन करते हुए बताया कि वे आधुनिक युग के सबसे बड़े ऋषि थे। भारत के इतिहास मे महर्षि दयानन्द जी और महात्मा गांधी जी का नाम आता है।

आर्यसभा के मन्त्री श्री मूनशंकर रामखनी जी एम०ए०ने सब लोगों का परिचय यथार्थ रूप से दिया था। यह कार्यक्रम शानदार रहा।

मोरिशस की राजधानी पोर्ट लुई है, यहां पर जनवरी मास मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (देहली, के मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी से आर्य सभा के सभी पुरोहित और आर्य सभा की उपदेशिकाएं से भेट वार्ता की थी। यह जगह ९ मार्च को खचाखच भरी हुई थी।

कार्यक्रम के अन्त मे सभा के उपप्रधान तथा मोरिशस के दक्षिण प्रान्त के नेता श्री लछाया जी ने महर्षि दयानन्द के सघर्षमय जीवन पर एक बहुत ही रोचक कविता सुनाई थी और शान्ति पाठ किया था।

दूसरे रोज मारिशस के सभी पत्रों ने और रेडियो तथा टेलीविजन ने आर्य सभा द्वारा किये गये इस ऐतिहासिक कार्य की सुन्दर रिपोर्ट दी थी।

दयानन्द मठ दीनानगर में शिवरात्री उत्सव सम्पन्न

१५दिन तक कथा चली रही महर्षि दयानन्दजी की जीवनी पर प्रकाश डाला जाता रहा प्रतिदिन प्रातः वेद पारायण यज्ञ चलता रहा। शहर से बारी बारी यजमान बनते रहे ९-३-८६ को पूर्णाहुति हुई ३००० से ऊपर व्यक्तियों ने लंगर मे भोजन किया।

मठ के विद्यार्थी श्री कर्मचन्द शास्त्री ने यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उन्हें विश्वविद्यालय की ओर से स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया विद्यार्थी कर्मचन्द जी को पुरस्कार रूप मे मठ की ओर से १०१) रुपए प्रदान किए गए। दूसरे विद्यार्थी अनिल ने प्राज्ञ कक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया उन्हें भी १०१) रुपए और वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। दंगल में सारे पंजाब से पहलवानो ने भाग लिया उन्हे भी १०००) रुपए के इनाम बांटे गए सन ११४० से गुरुकुल मे शास्त्री परीक्षा तक शिक्षा नि शुल्क दी जा रही है। – सुबोधानन्द प्रचार मन्त्री

होने वाले उत्सव

आर्य विरक्त (वानप्रस्थ सन्यास) आश्रम ज्वालापुर, जि० सहारनपुर उ० प्र० का ५६ वा वार्षिकोत्सव दिनाक १५ से १८-४-८६ तक मनाया जाएगा।

—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार (उ० प्र०) का ७१ वां वार्षिकोत्सव दिनाक १२ से १४ अप्रैल तक मनाया जाएगा इस महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए हम आपको आमन्त्रित करते हैं।—विक्रमसिंह, मन्त्री

—आर्य समाज नरोरा जि० बुलन्दशहर (उ० प्र०) का चतुर्थ वार्षिक उत्सव दिनाक १०, ११, १२, मई १९८६ को मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के नेता एवं सन्यासी गण पधार रहे हैं। —मन्त्री

—आर्य समाज श्रीकमपुर बनी पो० मवा जि० बदायू का ६ वा वार्षिक उत्सव दिनाक ३०-५-८६ से १-६-८६ तक मनाया जाएगा जिसमे आर्यजगत के उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान तथा भजनोपदेशक भाग ले रहे हैं। —मन्त्री

यज्ञ की महिमा

—ज्ञानदेवी आर्या,
अध्यापिका, गुड़गावां छावनी

यज्ञ का अर्थ है परोपकार। कोई भी पुण्य कार्य किया जाय उसे यज्ञ कहते हैं। किसी भूले-भटके व्यक्ति को राह पर लगाना, सन्मार्ग दिखाना, भूखे व्यक्ति की भूख मिटाना, प्यासे को प्यास बुझाना, किसी निर्धन बच्चे को पढ़ाना, किसी निर्धन कन्या का विवाह कराना सर्दी में ठिठुरते व्यक्ति को तन ढ़ाने के लिये गर्म वस्त्र देकर उसके दुःख मिटाना आदि जितने भी ऐसे शुभ कर्म हैं सभी यज्ञ कहाते हैं। परन्तु इन सबसे बढ़कर भौतिक यज्ञ है जिसे देवयज्ञ कहते हैं। यह वह यज्ञ है जिससे अपने पराये, शत्रु तथा मित्र पास तथा दूर रहने वाले सभी का भला होता है। कुछ लोग कहते हैं कि आर्यों का दिमाग खराब हो गया है कि इतनी महगाई के समय में जब कि कितने ही ऐसे लोग हैं जिन्हें सारा दिन परिश्रम करने के बाद में भी भर पेट भोजन नहीं मिल पाता है बहुत से व्यक्ति भूखे पेट को भरने के लिये पराई जूठन तक खा जाते हैं। ऐसी परिस्थिति मे जो घी आदि जलाते हैं, चावल, जौ, तिल, सामग्री आदि भस्म कर देते हैं उससे कई व्यक्तियों का पेट भर सकता है क्षुधा शान्त हो सकती है। ऐसी दलीलें देकर लोगों को गुमराह करते हैं यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा को ठेस पहुंचाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को यह ज्ञात होना चाहिये कि संसारमें ऐसा कोई भी शुभ कार्य नहींहै जिसके पीछे ऊंची भावना निहित न हो। यदि वे लोग विज्ञान को समझते होते तो ऐसी बात कदापि न करते। क्योंकि अग्नि में पड़ने से वस्तु के गुण कई गुना बढ़ जाते हैं। अत घृत सामग्री से दूर दूर तक की जलवायु शुद्ध होती है खेतों से जो अन्न उपजता है वह शुद्ध होता है और जलवायु की शुद्धि से रोगों का नाश होता है। सब लोग सुखी होते हैं किसी ने ठीक कहा है कि "यज्ञों का करना छूटा भारत का नसीबा फूटा" बात वास्तव में सत्य है ऐसे-ऐसे असाध्य रोग पैदा हो रहे हैं जिनका कोई उपचार ही नहीं है। दूसरा अग्नि में वह शक्ति है कि अन्दर की गन्दी वायु को छिन्न-भिन्न तथा हल्का करके बाहर निकाल देती है तथा शुद्ध वायु का प्रवेश कराती है। सामग्री भी कोई घास-फूस नहीं है। उसमें चार प्रकार की औषधियां होती हैं रोग नाशक, बलवर्धक, पौष्टिक तथा सुगन्धित। इसलिये अग्नि द्वारा किया गया यज्ञ अत्यन्त लाभदायक है। यज्ञ के द्वारा संगति करण और जलवायु आदि की शुद्धि, आपस में मेल-जोल बढ़ना तीसरा दान इसे आदान और प्रदान होता है। इसलिये हमें प्रतिदिन बाकी शुभ कर्मों के साथ यज्ञ करना चाहिये। यज्ञ हमारे जीवन का श्रेष्ठ और सुन्दर कर्म है यज्ञ का करना और करना आर्यों का धर्म है।

आर्य समाज शिवाजी नगर (मसनीपुर) बिहार के तत्वावधान मे पाच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर श्री रामसखा यादव शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा सम्पन्न हुआ।

विशेष-सूचना

मुझे यह सूचित करतेहुए दुख होता है कि सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के कुछ ग्राहको को बार-२ रिमाइंडर भेजने के बाद भी अभी वार्षिक शुल्क सभा कार्यालय मे जमा नही हुआ है। ऐसे ग्राहको मे आर्य समाजे भी सम्मिलित हैं। मेरा सभी ग्राहको व आर्य समाजो के पदाधिकारियो से निवेदन है कि वह शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क सभा कार्यालय मे भिजवा कर सहयोग प्रदान करें।

नोट—सन १९८५ से सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का वार्षिक शुल्क २०) कर दिया है। जिसकी सूचना पहले दी जा चुकी है। फिर भी कुछ ग्राहक १६) भेजते हैं और हमें ४) के लिए दुबारा पत्र व्यवहार करना पडता है। कृपया ध्यान दें। बार-२ शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एकवार २५०) भेजकर सार्वदेशिक पत्र के आजीवन सदस्य बनें। चैक अथवा ड्राफ्ट "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से भेजें।

ओम्प्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

पुस्तक-समीक्षा

यजुर्वेद-शतकम्

लेखक—विद्याभास्कर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, एम ए, प्रकाशक—आर्य समाज मन्दिर, २८०४-बाजार सीताराम, दिल्ली-६। पृष्ठ १२८, मूल्य-१४) रुपए, साईज २०×३६ का बडा।

महर्षि दयानन्द सचित्र, प्लास्टिक कोटिम यजुर्वेद-शतकम् आज देखने को मिला। पुस्तक का बाह्य आवरण सुन्दर और आकर्षक है। कागज भी मेपलियो वाला बढिया, सुन्दर और मजबूत हैं। दो रग में प्रकाशित है।

इस 'यजुर्वेद-शतकम्" मे यजुर्वेद के प्रसिद्ध, गृहस्थियों के लिए स्वाध्याय हेतु अत्यन्त उपयोगी १०० मन्त्रो को छाट-छाट कर संकलित किया है। प्रत्येक मन्त्र का पदार्थ ऋषि दयानन्द कृत भाष्य के अनुसार प्रकाशित है।

भावार्थ श्री शास्त्री जी ने अपनी सरल भाषा में लिखा है। आपकी लेखन-शैली अनूठी ही है। प्रत्येक मन्त्र का सकलन भी उपयोगी स्मरणीय है।

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में ईश प्रार्थना के प्रतिदिन गाए जाने वाले सुन्दर-सुन्दर ५६ भजनो का भी संकलन है। इस दृष्टि से "यजुर्वेद-शतकम्" अत्यन्त उपयोगी तथा संग्रहणीय बन पड़ा है। यह प्रयास वस्तुत. स्तुत्य है स्वाध्याय प्रेमियों के लिए। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क कर सकते हैं— 'मधुर प्रकाशन, गली आर्यसमाज, २८०४-बाजार सीताराम, दिल्ली-६।

—रामभूल शर्मा

रजि० नं० डी० (सी०) ७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३० ३ १९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. U 93 Post in D.P.S.O. on 28 3 86

धार्मिक ग्रन्थ

वीर वैरागी—(भाई परमानन्द)	मूल्य रुपये
लेखमाला आर्य वीर दल—(श्री ओम्प्रकाश त्यागी	मूल्य ४
पूजा किसका—(श्री लाला रामगोपाल जी	)५ पैसे
धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यन्त्र	)५०
आर्य समाज	)१०
ब्रह्म कुमारी पोल की पोल	६०
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत	४
मेरे सपनों का भारत	४
वेदों में निरुक्त	२ ५०
वेद सन्देश	१)५०

प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २

कविराज हरनामदास की
६ अमूल्य पुस्तकें

... स्वास्थ्य

... पुस्तकें ... २० रुपये

... महर्षि दयानन्द ८० अध्याय डाक खर्च सहित १० रुपये

वेद प्रचारक मण्डल

रामजस रोड करोल बाग दिल्ली ५

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य जगत प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों से आरम्भ कर दिया है जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वों से युक्त है। यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ५) प्रति किलो।

जो बन्धु अपनी हवन सामग्री का निर्माण स्वयं करना चाहें वह सब ताजी हवन हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं यह हम सेवा मात्र है।

विशिष्ट हवन सामग्री १०) प्रति किलो

योगी फार्मेसी, लक्सर रोड

डाकघर गुरुकुल कांगड़ी २४९४०४ हरिद्वार (उ० प्र०)

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता:—

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, १७७ चांदनी चौक, (२) मै० ओम आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड़ गंज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किशन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शंकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय:—

६३, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

फोन नं० २६६८३८

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

मातृभाव में समृद्धि

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९ ६४९०८६]
वर्ष २१ अंक १३

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

चैत्र ... स० २०४२ रविवार १ जून १९८६

दयानन्दाब्द १६१ ... १३४३३
वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १० पैसे

जम्मू काश्मीर में दंगों के बाद उत्पन्न हुई स्थिति पर सभा प्रधान श्री शालवाले का प्रैस वक्तव्य

१ अप्रैल जम्मू काश्मीर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले अपने अन्य सहयोगियों के साथ ३१ मार्च से १ अप्रैल १९८६ तक काश्मीर घाटी की यात्रा पर गये थे। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य वहां हाल ही में हुए हिन्दू अल्पसंख्यकों के साथ दंगों के पश्चात की स्थिति का स्वयं मौके पर पहुंचकर अध्ययन करना था। उन्होंने काश्मीर घाटी के दक्षिण भाग में स्थित उन सभी गांवों का निरीक्षण किया जो इन दंगों से प्रभावित हुए थे और वहां के निवासियों से व्यक्तिगत रूप से बात चीत की २० फरवरी १९८६ को दिन के लगभग १२ बजे गाजीगुंड से बारामुला तक के लगभग १२० किलो मीटर में फैले हुए भू भाग में स्थित गांवों पर एक साथ हमले हुए। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि यह हमले एक पूर्व सुनियोजित योजना के अनुसार किये गये थे और इस षडयन्त्र का मुख्य उद्देश्य काश्मीर घाटी के अल्पसंख्यक हिन्दुओं की जान माल और इज्जत को नष्ट करना था श्री शालवाले अनन्त नाग के रास्ते में दंगा प्रभावित स्थानों पर भी गये।

बिज बेहेड़ी स्थित शिव मन्दिर में शिवलिंग नन्दी गणेश तथा अन्य छोटी छोटी मूर्तियों को बुरी तरह तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दिया गया था। अनन्तनाग से ३ मील दूर स्थित वनपोह में तीन हिन्दू दुकानों को लूटा गया तीन मन्दिरों को जलाया गया। तेरह मकानों को भी आग लगायी गई जिससे लाखों रुपयों का नुकसान हुआ वे वानो लोक भवन और गौतम नाग भी गये। सबसे अधिक नुकसान वामों में हुआ जहां हिन्दुओं के अधिकांश मकान जलाकर राख कर दिये गये और प्राय हरेक मकान को लूटा गया लोक भवन में तीन मन्दिरों और एक धर्मशाला में आग लगा दी गयी और वहां का सारा सामान बिस्तर बर्तन आदि लूट लिया गया।

गौतम नाग का दृश्य बड़ा करुणा जनक था वहां एक नवनिर्मित दुमंजिले मन्दिर को नष्ट कर दिया था।

हिन्दुओं को सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से तंग करने की शिकायत भी सुनने को मिली हर स्थान पर श्री शालवाले के समक्ष एक ही प्रश्न उठाया गया कि काश्मीर घाटी में अल्पसंख्यकों का भविष्य क्या है? और उनकी सुरक्षा की क्या गारन्टी है इन स्थानों पर बच्चों बूढ़ों महिलाओं और युवकों के चेहरों पर घबराहट और भय की छाप स्पष्ट दिखाई देती थी। श्री शालवाले ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि वे धैर्य रखें और अपना साहस न छोड़ें। वे राज्य सरकार के तथा केन्द्रीय सरकार के सम्बन्धित अधिकारियों से मिलकर इस मामले की समस्या का हल ढूंढने का प्रयत्न करेंगे।

> २०फरवरी को जम्मू काश्मीर में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़ा गया तथा उनके घर एवं दुकानों को जलाया गया तथा उन्हें काश्मीर छोड़ने पर बाधित किया गया। इस सारे षडयन्त्र में जमाते इस्लामी जमाइत तुलबा आदि मुस्लिम संगठनों का हाथ था। इस स्थिति का निरीक्षण करने हेतु सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने जम्मू काश्मीर के उन संवेदनशील ४० ग्रामों तथा कस्बों का दौरा किया।

श्री शालवाले को यह भी बताया गया कि पाकिस्तान बंगला देश बिहार और तिब्बत से आकर बहुत से मुसलमान काश्मीर घाटी में स्थायी रूप से बस गये हैं। और आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्हें स्थायी निवास के प्रमाण पत्र भी दे दिये गये हैं। जब कि वहां सदियों से रहने वाले हिन्दुओं काश्मीरी पण्डितों को यह प्रमाण पत्र नहीं दिये गये।

जिन्होंने यह प्रमाण पत्र प्राप्त कर भी लिये थे उन्हें भी अब तरह तरह से परेशान किया जा रहा है। बहुत से मुस्लिम संगठन जिनमें जमाते इस्लामी जमाइत तुलबा और अल्लाह वाला प्रमुख है काश्मीर घाटी में भारत विरोधी प्रचार में लगे हुए हैं और खुले आम भारत विरोधी नारे लगाते हुए घूमते हैं।

श्री नगर से देहली लौटते हुए श्री शालवाले ने जम्मू काश्मीर के गवर्नर श्री जगमोहन से करीब आध घण्टे तक काश्मीरकी समस्या के बारे में बात की और उन्होंने वहां जो कुछ देखा और सुना उससे उन्हें अवगत कराया। उन्होंने गवर्नर को यह भी बताया जो लोग समाज विरोधी कार्यवाही में पकड़ भी गये थे उन्हें भी अदालत ने या तो वैसे ही या जान बूझकर निर्धारित १४दिन की अवधिमें अनेक चालान कोर्ट में पेश नहीं किये थे। इस तरह जिन्होंने लूट मार आगजनी और हत्या जैसे अपराध किये थे वे भी अब खुले आम घूम

(शेष पृष्ठ १२ पर)

प्रधान-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दयानन्द विद्या निकेतन, दीमापुर (नागालैंड) में अग्निकांड

दानी महानुभावों से सहायता की अपील

आपको ज्ञात ही होगा कि सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में लगभग पिछले १० वर्षों से अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ मध्य प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा आदि क्षेत्रों में शिक्षा एवं समाज सेवा का कार्य कर रहा है, वहा आश्रम व नागालैंड मे भी संघ की सेवाए प्रशंसनीय एवं संतोषजनक रही है। उत्तर पूर्वी भारत के आसाम और नागालैंड के ४ सेवा केन्द्रो को अपने कार्यों से ही ख्याति प्राप्त है। यह सभी केन्द्र दयानन्द विद्या निकेतन तथा दयानन्द सेवाश्रम संघ के नाम से प्रसिद्ध है इन सभी केन्द्रों मे कुल मिला कर ८०० और ९०० के बीच आदिवासी बच्चे शिक्षा व सेवा प्राप्त कर रहे हैं।

बड़े खेद से लिखना पड़ रहा है कि गत मास अर्थात् २० मार्च ८६ को किन्ही भ्रान्त ईर्ष्यालु तथा निम्न विचार के लोगों ने जो दयानन्द विद्या निकेतन, दीमापुर, (नागालैंड) के बढ़ते कदम न सह सके, अर्द्धरात्रि मे विद्यालय तथा छात्रावास में आग लगा दी। ध्यान रहे कि इसी विद्यालय में नागाओं के ही ४७७ लडके पढ़ते हैं। यह तो प्रभु की कृपा हुई कि कुछ सहृदय लोगों ने छात्रावास के लगभग ६० नागा बच्चो को अग्नि की लपेट से सुरक्षित कर दिया।

उपरोक्त दुर्घटना की सूचना प्राप्त होते ही, संघ के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी तथा कोषाध्यक्ष एवं प्रशासकीय मन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री वायुयान द्वारा एकदम वहा पहुचे और उन्होने स्थिति का पूरा ब्यौरा लिया जो कि चित्रो द्वारा आपके सामने है। अनुमानत दीमापुर विद्यालय की दो लाख से ऊपर की क्षति हुई है, जिसे अविलम्ब पूरा करने की आवश्यकता है। इस क्षति का ध्यान तथा विद्यालय को पुन चालू होने की स्थिति मे लाने के लिए दोनो अधिकारियों ने दीमापुर की आर्य समाज के प्रधान श्री जगदीश जी यादव, मन्त्री श्री विमल जी तथा अन्तरंग सदस्य कर्मवीर जी के सुझाव पर तथा सहयोग से दीमापुर के दानी महानुभावों से संपर्क किया। दीमापुर के सभी विशेष व्यक्तियो ने इस अग्नि काण्ड की बहुत निन्दा की तथा उदारता पूर्वक सहयोग दिया। सभा और संघ उन दानी व्यक्तियो के प्रति विशेष आभारी है. जिन्होने इस आपत्ति के काल मे धन तथा सामान आदि का सहयोग उदारता पूर्वक दिया, जिसे विद्यालय पुन. पूर्व स्थिति में आ सके, उन दानी महानुभावों की दान सूची निम्नप्रकार से है :—

आपकी सेवा में भी सादर निवेदन है कि इस आपत्ति की स्थिति मे उपरोक्त विद्यालय एवं छात्रावास के पुनर्निर्माण के लिए उदारता पूर्वक अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग दें जिसे संघ अपने सेवा कार्य को चालू रहने मे निर्बाध गति से आगे बढ सके।

हमे पूर्ण विश्वास है कि आप हमारा मनोबल बढ़ायेंगे और उदारता पूर्वक धन देकर इस क्षति को पूरा करने में पूरा हाथ बटायेंगे।

कृपया जो ड्राफ्ट् और बेंक चैक द्वारा राशि भेजें, वह अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के नाम से ही भेजें।

विशेष संघ से आयकर मुक्तिकर का प्रमाण पत्र भी आप प्राप्त कर सकते हैं।

निवेदक :

रामगोपाल शालवाले	ओम्प्रकाश गोयल	ओम्प्रकाश त्यागी	पृथ्वीराज शास्त्री
प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली	प्रधान अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम	महामन्त्री अ०भा०सेवा संघ	कोषाध्यक्ष एवं प्रशासकीय मन्त्री

दयानन्द विद्या निकेतन दीमापुर (नागालैंड) मे आग लगने पर विद्यालय की स्थिति का निरीक्षण करते हुए श्री ओम्प्रकाश त्यागी सभामन्त्री एवं श्री पृथ्वीराज शास्त्री संघ के मन्त्री

दयानन्द विद्या निकेतन दीमापुर (नागालैंड) मे आग लगने पर विद्यालय की स्थिति को देखकर परामर्श करते हुए श्री ओम्प्रकाश त्यागी सभामन्त्री एवं श्री पृथ्वीराज शास्त्री संघ के मन्त्री

नकद सहायता देने वाले महानुभावों की सूची

१—चैम्पियन एजेन्सीज चर्च रोड दीमापुर	रु० १००१)
२—नागालैण्ड इन्जीनियरिंग कं० चर्च रोड दीमापुर	रु० ३०१)
३—श्री बी० एल० शर्मा खण्डेलवाल मोटर्स दीमापुर	रु० ५०१)
४—श्री दुलीचन्द जैन जैन मन्दिर दीमापुर	रु० ११००)
५—श्री राम प्रताप बजाज जैन मन्दिर दीमापुर	रु० ५०१)
६—मैं० जूली स्टुटियो स्टेशन रोड दीमापुर	रु० २०१)
७—मैं० सीमा वाच क० स्टेशन रोड दीमापुर	रु० ५०१)
८—श्री विमल जैन पुराना बाजार दीमापुर	रु० ११००)
९—मैं० किशनलाल सेठी एण्ड क० दीमापुर	रु० ५०००)
१०—श्री जगदीश यादव चर्च रोड दीमापुर	रु० ६५००)
११—श्री विनोद देव किरन स्पोर्टस दीमापुर	रु० ३५००)
१२—मैं० ए० वी० एजेन्सीज दीमापुर	रु० १००१)
१३—श्री होके सेमा पुराना बाजार दीमापुर	रु० २००)
१४—दयानन्द विद्या निकेतन बोकाजान के अध्यापक तथा कर्मचारी बोकाजान	रु० ६२५)
१५—श्री भृगुनाथ दुबे गोलाई बस्ती बोकाजान	रु० ५१)
१६—श्री जोगेन्द्रसिंह बोकाजान बाजार	रु० १०१)
१७—श्री सुन्दरसिंह गोलाई बस्ती बोकाजान	रु० ५१)
१८—श्री हंसराज पुराना बाजार दीमापुर	रु० ५१)
१९—श्री विनोद पुराना बाजार दीमापुर	रु० ३१)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

आर्य समाज के संन्यासी

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ईश्वर विश्वास और आस्तिक भावों के प्रचार प्रसार की बातें करते हैं तो सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य की पूर्ति हेतु तपः पूतः उच्च कोटि के संन्यासी-महात्मा उपदेशक को पैदा करना ?

आज इस अभाव की पूर्ति कैसे हो क्या वे एक व्रती सेवाभावी त्याग, साधना के धनी सन्यासी हैं ? अधिकतर इस प्रश्न पर विचार-विमर्श सभी जन करते ही रहते हैं। साथ ही अपनी दुर्बलताओं पर पश्चाताप भी करते हैं। आर्य समाज की स्थापना से लेकर वर्तमान काल तक स्वामी जी के बाद वैदिक सिद्धान्तों की विजय पताका सर्वत्र फहराने वाले वीतराग तपस्वी स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, म० नारायण स्वामी जैसे व्यक्तित्व के संन्यासी जिन्होंने जीवन अर्पित किया था। उन जैसे आर्य समाज में उच्चकोटि के त्यागमूर्ति विद्वान् संन्यासियों का सर्वथा अभाव नजर आता है। कुछ यत्र तत्र विचरण कर कार्य करते भी हैं—उनका अपना व्यक्तित्व जैसा है उसी के अनुसार उनका प्रभाव भी पड़ता है कुछ विद्वान् भी हैं वह निस्तेज हैं।

कुछ साधनों के अभाव में, जो कर्त्तव्य पालन करने चाहियें उसमें अपने को समर्थ नहीं पाते हैं। परिणामतः हमने या समाज के धर्मध्वजियों में संन्यासियों की गरिमा, को हतप्रभ कर दिया है या उन्होंने स्वयं अपना व्यक्तित्व निखारने की चेष्टा नहीं की है। साथ ही कुछ गैरिक वस्त्र धारण कर अब भी परिवार पालन करने में व्यस्त हैं और अधिकारी वर्ग के मुख देखकर ही बातें करते हैं।

विद्वता एवं साधना व तप विहीन संन्यासी, और संन्यासी विहीन आर्य-समाज, फिर कैसे मिलें दिशा बोध !

कुछ प्रश्न अपने से भी करने हैं क्या जो साधारण स्तर के सन्यासी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं क्या हम उनके प्रति हम अपना उत्तरदायित्व निर्वहन कर रहे हैं।

सन्यास गृहण करने की भी एक मर्यादा है हर एक को सन्यास लेने का अधिकार भी नहीं हैं परन्तु जो काषाय-वस्त्र धारण कर अपना जीवन जंगलों में या क्षेत्रों में लगाया हुआ है उन्हें अपने कार्य के साथ जीवन यापन की चिन्ता भी सताती रहती है।

गृहस्थ त्याग के उपरान्त भी अपने जीवन निर्वाह से निश्चिन्त न हो सके। तब फिर जन कल्याण की कामना करना असम्भव ही है।

यह बात नहीं कि त्याग-वृत्ति हीन ही समाज हो गया है। अस्पतालों में दीन-दुःखी जनों की सेवार्थ अपना जीवन लगाया है।

दूसरी ओर ईसाई मिशन के साधन सम्पन्न सेवी वनवासियों में घर घर जाकर लोगों में ईसा की विचारधारा को फैलाकर सेवा कर रहे हैं।

फिर क्या कारण है कि आर्य समाज का सन्यासी सनातनधर्मी साधु में घुसकर उनके विचारों में बदलाव लावें। फिर लोक-कल्याणकारी कार्यों मे लगे। जन-मानस को अपने पीछे लगाने के लिये स्वयं को चैतन्य करना पड़ेगा। आर्य समाज का संन्यासी बिना टिकट यात्रा नहीं करता है—इतना ही चाहिये काम करने पर साधन भी मिलेंगे, और जन-मानस भी चलेगा। केवल संगठित होकर कार्यक्रम बनाकर लगा जाय और स्वधर्म स्वसंस्कृति के हितार्थ जन-सेवा के आदर्श को अपना पड़ेगा।

आर्य समाज के ऐसे आश्रम हैं जहां विद्वान सन्यासी अपने समीप कर कुछ कर्मठ व्यक्ति पैदा किये जा सकते हैं।

वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर तथा तपोवन देहरादून जैसे और भी स्थान हैं जहां समर्पित जीवन जीने वाले व्यक्तियों को प्रशिक्षित करके दयानन्द की भांति राष्ट्र को अर्पित किये जाएं। इसके लिए वह संस्थायें या सार्वदेशिक सभा अपना दायित्व पूरा करें और उनकी सुख-सुविधा का दायित्व ले, ताकि वह तपस्वी दाने-दाने के लिए भटकता न फिरे। असहायावस्था होने पर हमने ऐसे साधु देखे हैं जिनका अन्त बुरा ही हुआ है या अपने परिजनों के पास चले गये हैं, सेवा का अभाव रहा है।

हम उनका सम्मान तो पूर्ण रूपेण करें परन्तु वह भी निश्छल होकर व्रती बनें तो सेवा न होने पर भी हम कष्ट नहीं अनुभव करेंगे। वित्तैषणा लोकेषणा से हमें बचकर रहना होगा।

कार्य के करने के समय साधनों की इच्छा न कर महर्षि की तरह या फिर जैन-साधुओं व विनोबा की भांति धरा को धाम समझकर समाजसेवी बनें। ससार कष्टमय ही है-साथ ही परीक्षा-स्थली भी है पग-पग पर आपकी परख होगी, तब समाज सेवा की जा सकेगी। बोलो हो तैयार—

ऋग्वेद के पहले मंडल के १३१वें सूक्त का पद्य अनुवाद

—रचयिता स्वामी दिव्यानन्द

लोक प्रभुर सब झुकते तुमको ।।
तब अनुशासन में आवें।
सन्त जनों के प्रिय तुम हो ।।
हम शरणागति हो पावें ।।१।।

वैभव धन पाने को जन।
नित्य आपको ध्यावें ।।
मन कर्म अर्पण कर तुमको।
नित्य निकट आपके आवें ।।२।।

ज्योतिनाद है रूप प्रभु का।
इन्द्रिय मन सुख पावें ।।
मन आत्मा सुख चेतना।
ज्योति नाद से पावें ।।३।।

अपना रूप दिखाओ हमको।
तब प्रकाश को पावें ।।
भूल-भटक में आ जाते।
हमको राह पर लावें ।।४।।

अपना रूप दिखाया जबहि।
आनन्द पा हरषावे ।।
सन्तजन पा आपको प्यारे।
हरष और हरषावे ।।५।।

उषा समान प्रकाश की लालो।
चरण शरण सुख पावें ।।
विषय वासना मिटे हमारी।
पुनि पुनि नाद सुनावें ।।६।।

समृद्ध किया प्रकाश रूप से।
पाप विचार मिटावें ।।
नाद सुनाओ पाप मिटाओ।
हम तेरे बन जावें ।।७।।

आर्यत्व के आंसू

—प्रदीप कुमार आर्य
मन्त्री-आर्य समाज मन्दिर साचोर, जिला-जालौर (राजस्थान)

ईश्वर···आत्मा···धर्म · कर्मफल सब कुछ घोर पाखण्ड, विद्या के शत्रुओं धूर्तों की कपोल कल्पनाएं हैं ये आवाजें गूञ्ज रही थीं अभागे आर्यावृत मे लगभग दो शदी पूर्व ! वेद धूर्त के गीत "यावत् जीवेद् सुख जीवेत्" के भयानक शब्द तथा अन्यत्र विष्णु शिव ··राम···दुर्गा आदि-आदि अनेकों रूपवान ईश्वर कल्पनाएं धूर्तों की धार्मिक ठेकेदारी वेद ईश्वर कृत परन्तु यदि स्त्री और शूद्र यदि वेद मन्त्र सुन भी लें तो उनके कानों में गर्म शीशा डाल देना चाहिए ऐसी दयनीय मान्यताएं, विधवाओं का करुण क्रन्दन पतनोन्मुख राष्ट्रीयता पराधीनता का शिकमा शोषित, दलित एवं गरीब वर्ग अविद्या का घटाटोप अन्धकार भारत का मृतप्राय: होता आदर्श, बिलखती राष्ट्र की आत्मा, यह था दयनीय मानचित्र हमारे राष्ट्र का।

ईश्वर की दया से एक ज्योति किरण निकली, एक दिव्यात्मा का आविर्भाव, एक अनूठा तेज यहां अवतीर्ण हुआ, असुरता के सागर की लहरों को चीरता हुआ, अविद्या के पिशाचों को ललकारता हुआ, धर्म के धूर्त ठेकेदारों को चुनौती देता हुआ यह केशरी आगे बढा, एक क्रान्ति विश्व मे जागी, मनुजता पुलकित हो उठी ··परन्तु···परन्तु राष्ट्र की नियति को यह अच्छा नहीं लगा। युग के मसीहा देव दयानन्द को भारत की गोद से जुदा कर दिया, परन्तु यह देव वे जाते जाते अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान डेविस के शब्दो मे, "एक अग्नि" प्रज्वलित कर गया १८७५ ईस्वी मे।

इस चैत्र प्रतिपदा को १११ वर्ष हो चुके हैं अनेकों शहीदों का रक्त भरा इतिहास लिखा हुआ है परन्तु खेद ! इनके लहू की यादें हमारे अन्त-पटलों पर अंकित नही रही। कितने आर्य नौजवान इस इतिहास की पुनरावृत्ति करने का साहस रखते हैं, कितने ऋषि पुत्र मूलशकर के समान बीहड़ जंगलों में, अनन्त की अनजानी राहों में समष्टि की अगम्य गोद पाने हेतु धन आदि ऐश्वर्यों को ठोकर मार कर निकल सकते हैं। इस बीते समय मे आर्य समाजों का विस्तार हुआ। गुरुकुल भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ते रहे। आर्य कहलाने वाले व्यक्ति भी अपनी सख्या बढाते रहे। परन्तु अफसोस ! आर्यत्व नहीं रहा। ऋषि के आदर्श पलायन कर गए। आर्यों की वेद पर श्रद्धा, देव दयानन्द पर श्रद्धा, यज्ञ पर श्रद्धा कितनी है, यह आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगों मे सभासदों की उपस्थिति को देखकर मालूम हो सकती है।

ओह आर्य सन्तान भवनों को बनाने से पूर्व अन्त:करण को बना लें, जीवन को याज्ञिक बना लें।

हमारे बड़े-बड़े कार्यक्रम "ऊंची दूकान फीका पकवान" को चरितार्थ करते हैं। ऋषि-मेला अजमेर १९८५ का अन्तर्राष्ट्रीय वेद विमर्श महासम्मेलन इसका ज्वलन्त प्रमाण है मात्र १०-१५ विद्वान करीब ३०-४० श्रोता, सार्वदेशिक या प्रान्तीय सभाओं के नेताओ की नितान्त अनुपस्थिति, यहा तक कि विश्व वेद परिषद का अछूतापन यह था दयनीय रूप उस सम्मेलन का। विभिन्न प्रस्ताव जो रखे गये थे, उन पर क्रियान्विति हुई या नहीं ईश्वर जाने, या फिर परोपकारिणी सभा ही जाने। वेद विरोधी साहित्यों का, हमारे कार्य क्रमों (दयानन्द निर्माण शताब्दी समारोह, अजमेर सन १९८३ भू-भारती, दिसम्बर ८३ द्वितीय के सन्दर्भ में) पर तीखे आक्षेपों का प्रतिवाद क्या हमारे न्यासीगण तैयार करायेंगे मुझे सन्देह है। ओह दयानन्द की जय-जयकार करते नही थकने वालो, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का उद्घोष करने वालो क्या ऐसे ही होगा वेद विद्या का विस्तार, ऋषि के स्वप्नो का साक्षात्।

ऋषि बोधोत्सव के पावन अवसर पर कोई भी मूलशकर क्या जागता है, नहीं। वाद-विवाद और शास्त्रार्थ की प्रेरणा ऋषि से हमें मिल गई, परन्तु यज्ञीय जीवन, योग साधन की प्रेरणा कहां गई इस पर हमारे आर्य नेताओं, विद्वानों, नौजवानों को चिन्तन करना होगा। यम नियमों का पालन स्वप्न की वस्तु ही रहा है। अरे भारत सन्तान क्या यम नियमों को बिल्कुल भुला दिया है। मुझे विश्वास है कि शायद पच्चीस प्रतिशत आर्य तो यम-नियमों से ही अनभिज्ञ होगे। आर्यवीरो अपने दिलों पर हाथ रखकर सोचो आप में से कितने मताग्रस्त है, कितने अस्तेयवृती है। नितान्त स्वार्थान्ध, कोरा पूंजीवाद, निष्क्रियता, प्रमाद और विलासिता यही है तुम्हारा स्वरूप। "आर्य समाज अमर रहे" "वेद की ज्योति जलती रहे" "इदम न मम" "स्वाहा" आदि वाक्यों का प्रसारण करते मानव के चोले में 'टेप रिकार्डर' यज्ञ और सत्संगों के अवसर आते हैं। ऋषि सन्तान नौजवान आर्य और आर्याएं जो कि राष्ट्र के कर्णधार हैं, शृंगारी जीवन, अश्लील चलचित्र, शृंगारी भोजन से कहां तक दूर है विचार तो करे। मित्र मण्डली के साथ सिनेमा जाता अन्धा नौजवान, अंग्रेजीयत का गुलाम नौजवान "मातृवत् परदारेषु" का उपहास कर रहा है। धन के चकाचौंध में अन्धा बना गृहस्थ, चोरी, काला बाजारी, रिश्वत···आदि आदि अनेकानेक घृणित धन्धे अपना कर, पूंजीपति बनने के स्वप्न देखता हुआ "परद्रव्येषु लोष्ठवत्" की धज्जियां उड़ाता हुआ अपने लोक और परलोक को नष्ट कर रहा है हमारे वैदिक विद्वान मात्र उपदेशों में फंसे भोगवाद में ही जीते देखे जा सकते हैं काश ! हमारा जन्म ही नहीं होता। धर्म के नाम पर पाखण्ड, दयानन्द के दिल को रुलाता था, परन्तु क्या करें, कैसे करें, आज दयानन्द नही है, अन्यथा हम जैसे पाखण्ड में फंसे झूठे आर्यों को सर्वप्रथम निशाना बनाता।

मैं नहीं सोचता, कि दयानन्द हमसे दूर हो गया, मैं नहीं सोचता कि दयानन्द की मशाल बुझ गयी, नहीं, नहीं पहने तो वह मशाल लिये फिरता था परन्तु आज प्यारे मित्रो वह स्वय मशाल बन गया। ओह दयानन्द के कृतघ्न आर्यों उसकी दिव्य आत्मा देवयान में भ्रमण कर रही होगी या फिर ब्रह्मानन्द मे लीन, हमारे पाखण्ड, हमारी निष्क्रियता, हमारा स्वार्थ आदि को देखकर खून के आसू बहा रही होगी लेकिन हमारी आंखों में पानी नही, आर्य नेता कारों में घूमते हैं दयानन्द पैदल भटकता था, आर्य नौजवान अश्लील उपन्यासों रूपी महाग्रन्थों को पढ़ते, मित्रों में बैठे गप्पे लड़ाते, कृत्रिम अंग्रेज चार्वाक के अनुयायी बन रहे है, परन्तु नौजवान दयानन्द नर्वदा के गहन वनों में, हिमालय की बर्फीली चोटियों पर सच्चे गुरु को खोज रहा था। पूंजीपति बनने के स्वप्न देखने वालो याद करो उदयपुर के राणा और ओखीमठ के महन्त के प्रलोभनों को वह सच्चा आर्य ठुकरा रहा था। ओह भारत मण्डल हम में और दयानन्द में यह आकाश-पाताल का अन्तर मानवता की आत्मा को विदीर्ण कर रहा है। रसातल की ओर अग्रसर वह आर्य समाज राष्ट्र की आत्मा को कुंठित कर रहा है। अत हे ऋषि सन्तान इस वर्ष से हमें एक विशेष परिवर्तन लाना होगा। स्वार्थ, पूंजीवाद, शृंगार की बेड़ियों को काटना होगा तो आओ ऋषि के वचनो "उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य परान्नि बोधत्" पर अमल करें। ससार का कोई भी आकर्षण, कोई भी दबाव हमें झुका नहीं सके उसके लिए हे प्रभो ! हमें शक्ति दो, बुद्धि दो, ताकि—

"प्रभो वेद वीणा बजे विश्वभर में।"

दयानन्द की हार्दिक कामना पूर्ण हो सके ॥'ओ३म् शान्ति'

जीवन-दर्शन

—प्रो० भद्रसेन (डाक० साधु आश्रम होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

किसी की जीने की इच्छा तभी पूर्ण होती है, जब जीवन सम्मान और सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है, अन्यथा तो जीवन केवल अधूरा ही नहीं, अपितु बिल्कुल बेकार और नीरस लगता है। कई बार तो व्यक्ति ऐसे जीवन से मरना अधिक अच्छा समझता है × । जिसके अनेक उदाहरण प्रायः हमारे सामने आते रहते हैं। इसी स्थिति को सामने रखकर ही जिया फतेहाबादी ने कहा है— जो जीना है तो जीने की तरह जी।
भरोसा जिन्दगी में मौत का क्या॥

वस्तुतः जिसने भी जीते जी इज्जत, यश प्राप्त किया, उसी का जीवन सफल है* । अतः कीर्ति, यश, इज्जत, आत्मसम्मान ये सब जीवन के पर्याय हैं, क्योंकि इसके अभाव में जीवन अधूरा होता है जैसे कि पराधीन। कीर्ति जहां अच्छे कर्मों, दूसरों की भलाई, विशेष मेहनत, योग्यता, विद्या आदि से मिलती है, वहा जीवन के किसी भी क्षेत्र मे कोई विशेष कार्य, आविष्कार, उपलब्धि से भी यश होता है। जबकि उस उपलब्धि से दूसरों का भला हो। तभी तो कहते हैं—'कोई हंस के जिया, कोई रोके। मगर जिन्दगी पाई उसने, जो कुछ होके जिया॥

संसार मे उसी का जीना सार्थक है, जो अपने भले के साथ दूसरों का भी भला करता है‡, औरों के काम आता है क्योंकि अपने लिए तो कोई भी जी लेते हैं। परोपकार मे ही जीवन की सार्थकता है कि बात में विशेष रूप से जीवन के लक्ष्य की ओर निर्देश है। जिसका सीधा सा भाव है कि केवल अपनी प्रगति तक ही किसी को सीमित नहीं रहना चाहिए, अपितु इसके साथ दूसरों की प्रगति के लिए यथा सम्भव यथाशक्ति प्रयास करना चाहिए।

कई बार विपरीतार्थक शब्द से भी किसी शब्द का भाव स्पष्ट हो जाता है। जैसे कि जीवन का विपरीत शब्द है मृत। मृत शब्द जहां मरे हुए, जीवन शून्य के लिए प्रयुक्त होता है वहां जीवन व्यवहार के करने में असमर्थ के लिए भी मृत शब्द का प्रयोग होता है, यथा रोगी, दुर्बल को भी मृतक जैसा ही कहा जाता है† जिससे सिद्ध होता है कि स्वास्थ्य ही जीवन है क्योंकि स्वस्थ, सशक्त होने पर ही कोई जीवन के सारे व्यवहार कर सकता है, अन्यथा तो रोगी मृतक की तरह निष्क्रिय, निष्फल होता है। और मृत का उल्टा है अमृत जो कि जीवन का पर्यायवाची है, अमृत की चर्चा करते हुए यजुर्वेद और उपनिषदों में कहा है कि आत्मज्ञान, सही शिक्षा से अमृत की प्राप्ति होती है‡‡ जिसका सीधा सा अभिप्राय यही है कि विद्या जीवन की सफलता का एक आवश्यक साधन है क्योंकि उसी से भी जीवन के पूर्ण रूप का पता चलता है तथा जीवन के लिए जरूरी सभी चीजों की उपलब्धि होती है। अतएव भारतीय साहित्य में विद्या की भरपूर प्रशंसा मिलती है।

विद्या की इतनी अधिक प्रशंसा का मूलभाव भी यही है, कि विद्या से ही जीवन सार्थक है, तथा उसके बिना जीवन सर्वथा निरर्थक है, जैसे कि कुत्ते की पूंछ। अतएव विद्याविहीन को कोरा पशु कहा जाता है। विद्याविहीन अन्धे की तरह इधर-उधर ठोकर खाता हुआ भटकता ही रहता है। इसीलिए विद्या की प्रकाश से और अविद्या की अन्धकार से तुलना की जाती है। प्रकाशवत् विद्या हर वस्तु के स्वरूप को स्पष्ट करती हैं। इस सारे का भाव यह है, कि एक ज्ञानवान ही अपने जीवन के सारे कार्य करने में सफल होता है।

अनेक भाषाओं में ऐसे वचन मिलते हैं, जिनसे जीवन का स्वरूप स्पष्ट होता है जैसे कि—

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं॥

जिन्दादिली, हिम्मत, वीरता, साहस, पराक्रम, आत्मविश्वास की वाचक है।

जिन्दगी है गम में हंसना ऐ 'बहार'।
मुस्करा कर गुंचा यह समझा गया॥

इन वचनों से जीवन का पूर्ण रूप हमारे सामने आता है, पुनरपि अनेक बार व्यक्ति यह कहने के लिए विवश हो जाता है।'

"यह है ऐसा काव्य कि जिसकी एक नही परिभाषा।
सांसों के छन्दो में बन्दी जिसके नवरस, भाषा॥
शब्द-शब्द में है घुमाव कुछ अर्थ नहीं खुल पाता,
देख-देखकर 'आह' निकलती 'वाह' नहीं मिल पाती।
जिस जीवन को जीता, उस की थाह नही मिल पाती॥"

—विश्वप्रकाश दीक्षित बटुक

× सम्भावितस्य चाकीर्ति मरणादतिरिच्यते—गीता २,३४—अपमान मौत से भी अधिक खटकता है। अयशो यद्यस्ति किं मृत्युना—नीति शतक यदि बदनामी है तो फिर मौत की क्या जरूरत। पराधीन एवं कैदी के जीवन में भौतिक आवश्यकता तो पूर्ण होती है पर इज्जत नहीं होती है अतः सर्वत्र पराधीनता की निन्दा की जाती है। पराधीन देशों का इतिहास इसका स्पष्ट प्रमाण है।

* कीर्तिर्यस्य स जीवति अर्थात् जिसकी कीर्ति है, वही जीतों में गिना जाता है। स्वाधीन नागरिक सम्मान युक्त और पराधीन अपमानित होते हैं।

‡ तज्जीवन यत्र परोपकारः वस्तुतः उसी का जीवन है जिसमें दूसरों की भलाई के कार्य किए हैं। जो दूसरों की भलाई करते हैं उन्हीं को ही सदा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। सारा इतिहास ऐसे परोपकारियों के चित्रण से ही चित्रित है और इससे भिन्न के जीवन को निरर्थक दर्शाते हुए ही कहा जाता है—

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पन्थी को छाया नही फल लागे अति दूर॥

या कोई पश्चाताप करते हुए कह उठता है—

मेरा जीवन कुछ काम न आया। जैसे सूखे पेड़ की छाया॥

विस्तार के लिए देखिए—वियोग वेदना का—जीवन की सार्थकता प्रकरण।

‡‡ काकोऽपि जीवति चिरायु बलिं च भुङ्क्ते। दूसरों के टुकड़ों पर बहुत दिन कौए भी जी लेते हैं।

† मृतकल्पा हि रोगिणः रोगी मरे जैसा ही होता है।

‡‡ विद्ययाऽमृतमश्नुते। यजुर्वेद ४०, १४। मृत्योरमृतं गमय। बृह० १,३,२८ यहां विद्या शब्द प्रकरण के अनुसार आत्मज्ञान का वाचक है और अमृत अमरता का। यही भाव केनोपनिषद में इस प्रकार से आया 'विद्यया विन्दतेऽमृतम्। मनुस्मृति का विद्यातपोभ्यां भूतात्मा ५, १०८ वचन भी यही दर्शाता है कि यहा विद्या—आत्मज्ञान का वाचक है विस्तार के लिए देखिए—सुखी कैसे रहें।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय और राष्ट्रीय एकता

डा० गंगाराम, निदेशक वैदिक शोध संस्थान, अलीगढ़

मुस्लिम लीग के एक महत्वपूर्ण नेता चौ० खली कुजमान ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "पाथ वेज टू पाकिस्तान में बड़ी कृतज्ञता पूर्वक लिखा है कि यदि अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय न होता तो उन्हें पाकिस्तान कदापि न मिल पाता क्योंकि इसी विश्व विद्यालय के अध्यापकों और छात्रो ने अखण्ड हिन्दुस्तान के मुसलमानों को 'ब्रेन' प्रदान किया। वास्तव में तत्कालीन भारत सरकार द्वारा १९२० में ए.एम.यू. एक्ट, १९२० के तहत अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय स्थापित करने से बहुत पूर्व सैयद अहमद खां द्वारा स्थापित मोहम्मडन एग्लों आरियन्टल स्कूल, अलीगढ़ मुस्लिम अंग्रेज एकता का केन्द्र था। सैयद अहमद को ब्रिटिश सरकार से मिला 'सर' का खिताब उनकी अंग्रेज-भक्ति का प्रतीक है। वे भारत को दुल्हिन मानते थे माता नही। माता के प्रति श्रद्धा और आदर का दृष्टिकोण होता है जबकि दुल्हिन के प्रति वासनात्मक। सैयद अहमद ने मुसलमानों के लिये 'मुस्लिम डिफेन्स एसोसियेसन' संस्था बनायी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जिन्ना से बहुत पूर्व 'हिन्दु जमायत' कहकर मुसलमानों को उसमे सम्मिलित न होने के लिये कहा। वास्तव मे वे ही उस मुस्लिम साम्प्रदायिकता के जनक थे जिसके कारण मुस्लिम लीग और मुस्लिम इण्डिया (पाकिस्तान) का निर्माण हुआ।

हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिकता और पृथकता के पोषण के लिये स्थापित की गयी इस शिक्षा संस्था का सस्थापक ऐसा व्यक्ति था जिसके वास्तविक जनूनी चरित्र पर बड़े-बड़े राजनैतिक नेता और शिक्षा शास्त्री प्रकाश डालने से न जाने क्यों कतराते हैं। इसीलिए इस विश्व विद्यालय ने मुस्लिम लीग को अधिकांश नेता दिये। यहां से पढ़कर कोई भी मुस्लिम छात्र न लाल-बाल-पाल की तरह राष्ट्रवादी नेता बन सका और न ही पं० रामप्रसाद बिस्मिल, असुफाक उल्ला, रोशनसिंह, गेंदालाल दीक्षित, चन्द्रशेखर आजाद और शहीदे आजम भगतसिंहकी तरह क्रान्तिकारी ही बन सका। यहा तो ऐसे छात्र पैदा हुये जिन्होने अलीगढ रेलवे स्टेशन पर मौलाना आजाद का अपमान किया या पाकिस्तान के निर्माण के लिये मारे देश मे "सीधी कार्य-वाही करवाई"। अलीगढ जनपदके नागरिक १९४६-४७ में इस विश्वविद्यालय के लोमहर्षक अत्याचारों को अभी तक नही भूल पाये हैं। कल्यानगज में तो ग्रामीण किसानों और उनके पशुओं को जीवित ही जला दिया गया।

जब १९४७ में मजहब के आधार पर मुसलमानो को हिन्दुस्तान मे से लगभग एक तिहाई भू-भाग "मुस्लिम इण्डिया" के रूप में दे दिया गया तो हिन्दू इण्डिया (हिन्दुस्तान) के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू को राष्ट्रवादी नेताओं ने सुझाव दिया था कि वे डी० ए० वी० कालिज लाहौर से अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय का स्थानान्तरण कर लें। डी.ए.वी. कालिज, लाहौर का परिसर इस विश्वविद्यालय के परिसर से तब बड़ा ही था तथा यहां के अधिकांश अध्यापक और छात्र राष्ट्र के साथ शत्रुता पूर्वक व्यवहार करने के कारण पाकिस्तान भाग गये थे। इसी लिये १९४३ के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पं० नेहरू ने यहां के छात्रों से स्पष्ट कहा कि वे इस विश्वविद्यालय को राष्ट्र-जीव न के साथ डालें। किन्तु बाद की घटनाओं ने सिद्ध कर दिया कि भारत-विभाजनसे न यहां के अध्यापकों और छात्रों ने ही कोई सबक सीखा और न ही इस देश के धर्म निरपेक्ष राजनेताओं ने ही उन्हें सबक सिखाया। २५ अप्रैल १९६५ को तत्कालीन उपकुलपति नवाब अली यावर जंग ने इस विश्व विद्यालय के प्रशासन, अनुशासन और शैक्षणिक स्तरको सुधारने के लिये एकैडेमिक कौंसिल मे १९२० के अधिनियम में प्रभावशाली परिवर्तन के लिये विचार विमर्श किया। श्री जंग ने जब शैक्षिणिक स्तर को ऊंचा करने तथा साम्प्रदायिकता पर प्रहार करने के उद्देश्य से उस समय की ७५ प्रतिशत आन्तरिक और २५ प्रतिशत वाह्य छात्रो के प्रवेश की नीति का विरोध करते हुए इस अनुपात को ५०-५० प्रतिशत करने का प्रस्ताव रखा तो यहां के साम्प्रदायिक छात्रों ने इस पर कातिलाना हमला किया। १९६५ में तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री चागला को लिखे अपने पत्र में श्री जग ने लिखा कि यह विश्व विद्यालय शिक्षा संस्था के स्थान पर फिरकापरस्त और राष्ट्र विरोधी लोगों के लिए एक 'अनाथालय' बन गया है। नवाब अली यादर जग की इस विश्व विद्यालय के बारे मे लिखी रिपोर्ट शासन और प्रशासन के लिए पठनीय है तभी वे इस शिक्षा सस्था के वास्तविक स्वरूप को जान सकते हैं।

१९६५ में भारत पाक युद्ध के समय यहां के छात्रों द्वारा ब्लैक आउट न करना, हांकी के खेल में पाक द्वारा भारत को पराजित करने पर मिठाई वितरित करना, बाबू जगजीवन राम, इन्द्र कुमार गुजरात आदि जैसे राष्ट्रीय नेताओ को आये दिन अपमानित कहना, १९६९ में गांधी जयन्ती पर गांधी चबूतरे को तोड़ फोड कर रामध्वनि को ध्वस्त कर देना, गीता आदि पवित्र ग्रन्थों को जलाना आदि राष्ट्र द्रोही कार्यों को दुनियां जानती हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी जैसी हेकड प्रधान मन्त्री ने इसी लिए १९७२ में इस विश्व-विद्यालय के बारे में एक अधिनियम पारित इस पर सरकार का थोड़ा-सा नियन्त्रण स्थापित किया था। जनवरी, १९७९ में श्रीमती गांधी ने अलीगढ़ के लगभग ५०० लोगों के प्रतिनिधि मण्डल के नेतृत्व करने पर मुझे अपने निवास पर बताया था कि वे इस विश्व विद्यालय पर सरकार का और भी अंकुश स्थापित करना चाहती थी किन्तु विरोधी नेताओं और सांसदों ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। जनता सरकार द्वारा इसे १९८० में पुनः अल्प संख्यक स्वरूप देने के असफल प्रयासों के कारण ही श्रीमती इन्दिरा गांधी सरकार को बाद अल्पसंख्यक स्वरूप देना पड़ा। इसे अल्पसंख्यक स्वरूप पुन: प्रदान करने का विरोध केवल सी० पी० एम० के सांसद श्री ज्योतिमय बसु ने अवश्य किया था अन्यथा भाजपा के श्री वाजपेयी सहित सभी सांसद मुंह बन्द किये बैठे रहे।

मेरे परम मित्र और शिया थ्योलोजी के अध्यापक डा० इलिजा हुसैन ने १९७६-७७ में इस विश्व विद्यालय के साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी चरित्र और क्रिया कलापों को अपने विभिन्न लेखों द्वारा जब उजागर किया तो यहां के साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के शिक्षकों के भड़काने पर छात्रों ने उन पर भी कातिलाना हमला करने का असफल प्रयास किया। असहाय डा० इलिजा हुसैन को लगभग दो-ढाई महीने तक मेरे निवास पर रहना पड़ा। डा० इलिजा हुसैन जैसे राष्ट्रवादी के आतिथ्य से मैं आज भी अपने को अत्यन्त अहोभाग्य समझता हूँ। अपने दृढ़ राष्ट्रवादी विचारों के कारण डा० इलिजा हुसैन को लगभग तीन वर्ष तक निलम्बित रहना पड़ा। मार्क्सवादी डा० इरफान हबीब, डा० गोपी शंकर गुप्ता, हृदय रोग विशेषज्ञ, डा० एम० सी० गुप्ता, प्रोफेसर एनाटोमी, डा० डी० कुमार, डा० जे० एन० प्रसाद आदि को अपने राष्ट्रवादी विचारों के कारण इस विश्व विद्यालय मे नाना प्रकार की यातनायें सहन करनी पड़ी हैं। विश्व विद्यालय में राष्ट्रीय अभिवादन, नमस्ते,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यज्ञ की महत्ता

श्री नृसिंह देव अरोड़ा, चौक सौदागर मोहल्ला, अजमेर
(संयुक्त मन्त्री, प्राकृतिक स्वास्थ्य परिषद)

वैदिक वाङ्मय में यज्ञ को सर्वोत्तम (श्रेष्ठ) कर्म कहकर इसकी महत्ता को प्रकट किया है प्राचीन काल में अग्निहोत्र अर्थात् हवन की बहुत प्रतिष्ठा थी। प्रत्येक द्विज सवेरे नित्य कर्म के रूप में वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ हवन किया करता था। इसका महत्त्व आध्यात्मिक के साथ-साथ भौतिक भी है। वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरंगें आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती हैं तथा हवन में होम की जाने वाली सुगन्धित जड़ी-बूटियां वायुमण्डल को शुद्ध करती है। पशु, पक्षियों, अपगों, हीनों आदि को भोजन देना भी अग्निहोत्र का अंग था। हवन की प्रथा हिन्दू मात्र में आज भी प्रचलित है। प्रत्येक शुभ कार्य का अनुष्ठान हवन से प्रारम्भ होता है परन्तु अब यह केवल एक रस्म या दस्तूर बन गया है। अग्निहोत्र के पूर्ण लाभ तभी होते हैं जब वह वैदिक पद्धति के अनुसार श्रद्धापूर्वक किया जाये।

वैदिक यज्ञों में सार्वजनिक कल्याण की भावना ही ओतप्रोत है। भारतीय धार्मिक कृत्यों में वैदिक यज्ञों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह यज्ञीय परम्परा अति प्राचीन होते हुए भी आधुनिक काल की सभी जटिल समस्याओं के समाधान करने में समर्थ है। आधुनिक वैज्ञानिक युग के समस्त शुभ अवसरों पर यज्ञानुष्ठान किया जाता है। अतः यज्ञ की महत्ता स्वतः ही परिलक्षित हो जाती है। इसलिए संसार में यज्ञ से उत्कृष्ट कोई कर्म नहीं है। यज्ञ वास्तव में सृष्टि विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, वायुमण्डल शोध विज्ञान एवं मन्त्र विज्ञान आदि अनेक विद्याओं से ओतप्रोत वैदिक पद्धति है।

यज्ञ में गोघृत, हव्य पदार्थ, समिधा आदि के अतिरिक्त मन्त्र की ध्वनि का भी प्रभाव पड़ता है। अग्निहोत्र में इन सबका अपूर्व सम्मिश्रण है।

वनस्पति से ओत प्रोत वायुमण्डल संसार को आरोग्य, जीवन, दीर्घायु एवं सजीवता देता है। पहाड़ी प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियां उगती हैं जिनका आरोग्यप्रद जलीय अंश सूर्य ताप के कारण वायु में घुल जाता है इससे पहाड़ी खण्डों में सदैव वनस्पति जन्य शुद्ध वायुमण्डल बना रहता है। इसी कारण आरोग्य लाभ के लिए पहाड़ी स्थानों पर जाने वाले व्यक्ति वहां की शुद्ध वायु में नैसर्गिक जीवन जीकर स्वास्थ्य व दीर्घायु को प्राप्त होते हैं। परन्तु वायु प्रदूषण वर्तमान जगत् की एक भारी समस्या बनती जा रही है। यह प्रदूषण फैक्ट्रियों, मिलों, पैट्रोल, गैस, डीजल, कोयले आदि से दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कार, स्कूटर, ट्रक, बस, ट्रेक्टर हवाई जहाज, अणु विस्फोट आदि वैज्ञानिक आविष्कार वायु प्रदूषण बढ़ाने में सहायक होते हैं।

पेड़-पौधों के अलावा वायु शुद्धि का दूसरा साधन (यज्ञ) हवन है इसीलिये प्राचीन काल में प्रत्येक भारत वासी, गाय पालने के साथ-साथ, नित्य यज्ञ किया करता था। हवन से वायुमण्डल के कीट, पतंगों व मच्छरों का नाश होता है तथा सुगन्धित वायुमाण्डल प्राणियों को आरोग्यता प्रदान करता है, हमारे यहां विवाह संस्कार, गृह-प्रवेश, होली, दीवाली आदि पवित्र उत्सवों पर अग्निहोत्र (हवन) करने की परम्परा प्रचलित है। आर्यसमाज मन्दिरों में तो नित्य हवन किया जाता है।

अतः बढ़ते हुए वायु प्रदूषण को कम करने के लिये प्राचीन वैदिक पद्धति को अपनाना हितकारी है। फैक्ट्रियों, कल कारखानों, आदि वायु को दूषित करने वाले स्थानों पर अनिवार्य रूप से नियमित हवन होना चाहिये। इसके साथ ही स्कूल, कालेजों, चिकित्सालयों तथा पंचायत घरों आदि स्थानों पर अधिक पेड़ लगाने के साथ-साथ हवन का प्रचार व प्रसार होना चाहिये।

हवन के लिये सूर्योदय से १५ मिनट पूर्व तथा १५ मिनट बाद (इस प्रकार आधा घण्टे का समय) सबसे श्रेष्ठ माना गया है इसी प्रकार सायंकाल सूर्यास्त से १५ मिनट पूर्व जब सूर्य की अन्तिम किरणें विदा होती हैं तथा १५ मिनट सूर्यास्त के बाद का उत्तम समय है।

यह सर्वविदित है कि गिलोय, सोमलता आदि औषधियों एवं जड़ी बूटियों के अलावा थोड़ा सा गाय का शुद्ध घी, शहद, खाण्ड, तिल, जो चावल आदि वस्तुओं को मिला कर अग्नि में आहुतियां देने से वायु पर बड़ा प्रभावकारी असर पड़ता है जिससे वायु पर बड़ा प्रभावकारी असर पड़ता है जिससे वायुमण्डल शुद्ध व स्वच्छ होता है। यज्ञ से वायु गर्म होकर ऊपर उड़कर हवा को गति देती हुई मंडराती रहती है और वायु प्रदूषण को दूर करती है। इस प्रकार पवित्र अग्नि की ज्वालाएं गर्मी व प्रकाश, पृथ्वी एवं आकाश को पवित्र करती है।

अग्निहोत्र की अनुभूत उपलब्धियां

(१) यज्ञ से आम के वृक्ष में फल आने लगे यज्ञ के वायुमण्डल से वनस्पति को पोषण व जीवन मिलता है। उदाहरणतः चेम्बूर(बम्बई) में मेहताजी के बंगले में कुछ आम के वृक्ष हैं। एक वृक्ष में बौरे नहीं आता था तो फल कहां से आये ? उनके यहां सात दिन यज्ञ हुआ। सौभाग्य से यज्ञ वेदी उसी आम के वृक्ष के नीचे ही बनाई गई थी जिसके प्रभाव से उस वर्ष उसमें फूल आ गये। वास्तव में यज्ञ की सुगन्धित वायु प्राणिमात्र को तो प्रिय है ही वृक्ष-वनस्पति को भी प्रिय है। यज्ञों से वर्षा का योग भी बनता है।

(२) रक्त शुद्धि—हवन की प्रिय सौरभ नासिका मार्ग में और (मन्त्र उच्चारण करते समय) कंठ मार्ग से हमारे अन्दर प्रवेश करके फेफड़ों में छनती हुई रक्त कोषों में जाकर रक्त शुद्ध करती है। इससे जुकाम, नाक व गले के रोग भी ठीक होते हैं।

(३) हृदय रोग पर अद्भुत प्रभाव इन्दौर में देखने को मिला था। एक हृदय रोगिनी को चिकित्सकों ने तो बिस्तर पर पड़े रहने को सलाह दी थी। अन्ततः उस निराश रोगी को जब यज्ञ में थोड़ा बिठाया गया तो धीरे-धीरे उसमें बैठने का अपूर्व बल आ गया। और एक माह में तो वह स्वस्थ होकर गृहकार्य करने लग गयी।

(४) गूंगे बहरे बोलने सुनने लगे—विद्वान् पण्डित वीरसेन, वेदविज्ञानाचार्य, महारानी, पथ, इन्दौर, गणपति मन्दिर में २१ नवम्बर से २६ नवम्बर' ८२ तक सरस्वती यज्ञ सम्पन्न किया था। यज्ञ पदार्थों में विभिन्न मिश्रित औषधियों गिलोय, सोमलता, चन्दन ब्राह्मी, गूगल, आदि से इतना गुणकारी प्रभाव हुआ कि गूंगो की वाक् शक्ति में बधिरों की बधिरता में सुधार होने लगा, इशारों के बजाए वे बोलने का प्रयत्न करने लगे।

इसके पूर्व बड़ौदा कन्या महाविद्यालय के अधिष्ठाता ने सूरत में एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया था। वहां पर एक निराश १२ वर्षीय जन्म से गूंगी ज्योतीनाथ की कन्या को दो हफ्ते यज्ञ में बैठाया गया तो उसमें बोलने के लक्षण प्रकट होने लगे।

(५) कैंसर में उत्तम प्रभाव—इन्दौर के डा० सोलंकी की धर्मपत्नी की कैंसर अस्पताल में चिकित्सा की गई परन्तु लाभ न होने पर वहां के यज्ञमर्मज्ञ वीरसेन जी के परामर्श से यज्ञ में गिलोय का प्रयोग कराया गया। यज्ञ की सौरभ ने पुनर्जीवन प्रदान किया और महा औषधि का काम किया। (क्रमशः)

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

(पृष्ठ ८ का शेष)

को भी सम्प्रदायिक तत्वों द्वारा सहन नहीं किया जाता है।

आज हमारे युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी और उनकी सरकार राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति चिन्तित हैं। उन्हें देखना चाहिये कि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय की क्या भूमिका है? जनवरी, १९७१ में यहांके हजारों छात्रों ने शमशाद बाजार में साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दुओं की लगभग तीन दर्जन दुकानों को जला दिया दूधियायों और इन्जनीयरिंग के जौहरी नामक छात्र को कत्ल कर दिया तथा रेडियो स्टेशन को जलाने का असफल प्रयत्न किया। साम्प्रदायिक तत्वों ने ऐसा आतंक फैलाया कि विश्व विद्यालय परिसर ने हिन्दू अध्यापकों और डाक्टरों को नगर में भागना पड़ा।

और अब जब कि न्यायालय ने ३७ वर्ष बाद राम जन्म भूमि के ताले खोलने के आदेश दिये तो फरवरी, ८६ में यहां के कई हजार छात्रों ने सभाओं, नारे बाजी, पोस्टर बाजी, तोड़-फोड़ आदि के द्वारा जो क्रिया कलाप किये हैं, उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि यह विश्व विद्यालय भारतीय राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए कैंसर का फोड़ा है जिसका ऑपरेशन शीघ्र से शीघ्र किया जाना चाहिए। क्या राष्ट्रीय एकता को चुनौती देने वाले विश्व विद्यालय को किसी भी इस्लामिक देश में सहन कर लिया जाता? क्या पश्चिमी लोकतान्त्रिक देश ऐसे विश्व विद्यालय को सहन कर लेते? और साम्यवादी देश तो पलक मारने की देरी को अन्दर अन्दर ही इस विश्व विद्यालय के साम्प्रदायिक स्वरूप को नष्ट कर इसे राष्ट्र-जीवन के साथ समरस कर देते। आखिर, भारतीय जनता के गाढ़े खून व पसीने की कमाई के धन से यह साम्प्रदायिक और मजहबी विश्व विद्यालय कब तक चलता रहेगा, यही देखना है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के बढ़ते आजीवन सदस्य

१२३१५ श्री गंगा प्रसाद जी, सुन्दर साह कोल्ड स्टोर्स, ख्वाजपुरा, पटना (बिहार)
८२४० „ डा० एस. एल. स्वामी, मुर्तजापुर, अकोला (महा०)
१२३९९ „ केदार रविन्द्र सांवले, विद्यानगर, धाराशिव, उस्मानाबाद(महा.)
१०५२० „ लाला श्याम सुन्दर आर्य, ९१ ई कमलानगर दिल्ली
८३३६ „ डा. राजेन्द्र प्रसाद आर्य, मैडीसन शाप मीना बाजार बेतिया
९७८५ „ मिठन लाल आर्य प्रेमी, पो० पिंडवाड़ा जि० सिरोही (राज.)
१२४२१ „ राव हरिश्चन्द्र आर्य, शान्तीभवन, मुकुन्द राजपथ, नागपुर
४३५४ „ स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, आर्य समाज ताड़ीखेत (उ० प्र०)
६६०१ „ मन्त्री जी आर्य समाज, सरदार पुरा जोधपुर (राज०)
१२४४३ „ प्राचार्य महोदय, डी. ए. वी. पोस्ट ग्रेजुएट कालेज देहरादून
१२४३८ „ अरविन्द कुमार विद्यासागर शास्त्री ६४ आर्य नगर अलवर
१२४७९ „ ओमप्रकाश कालरा उपमहाप्रबन्धक, ए. एफ. के. किरकी, पूना
७२११ „ पी० एन० पत्तेवार, नान्देड़ हाउसिंग सोसायटी, नान्देड
८६८६ „ ब्रह्मप्रकाश देवशर्मा, शर्मा निवास, स्टेशन रोड सुजानगढ़
८६८७ „ लक्ष्मीचन्द्र रतनप्रकाश शर्मा, स्टेशन रोड, सुजानगढ़
१२५२६ „ सुभाष नवीन चन्द्रपाल, एस०वी० रोड सांताक्रूज बम्बई
१२५४० „ इन्द्र ट्रेडिंग एजेन्सी, शालमर्चेन्ट, बाजार घन्टाघर, अमृतसर
११९५ „ मन्त्री जी, आर्य समाज रक्सौल पू० चम्पारण, बिहार
१०८६६ „ भूपतराय शिवशंकर मेहता, गौरवनगर अहमदाबाद
१०८२६ „ सम्पादक महोदय, रंगभूमि मासिक, दरियागंज, नई दिल्ली
१२५५९ „ मती शशिकान्ता शास्त्री S/o लक्ष्मणकुमार शास्त्री पाण्डुनगर, कानपुर
३७१३ „ विंगकमांडर योगेन्द्रपाल कोहली, ए-६३ लाजपतनगर साहिबाबाद, गाजियाबाद
७८८३ „ मन्त्री जी, आर्य समाज कछोली, जि० वलसाड (गुज०)
७२११ „ प्रधान जी आर्य समाज २१/III AH4 फरीदाबाद (हरि०)
१२६३७ „ ब्रजानन्द आर्य, १९ बालीगंज, सरकुलर रोड कलकत्ता
१२६७१ „ दुर्गाप्रसाद भट्ट पत्रकार, दवोली जि० बाराबंकी (उ० प्र०)
१२७३८ „ वीरमित्र शास्त्री, ग्रा० मीसा पो० बड़ागांव फैजाबाद
५२२७ „ यशपाल गुप्ता, ८६ चन्द्रलोक, प्रीतमपुरा दिल्ली-३४
१२७६६ „ मन्त्री जी आर्य समाज अशोक नगर पीलीभीत (उ० प्र०)

नोट—२५०) रुपये भेजकर आजीवन सदस्य बनें।

—सभा-मन्त्री

ईसाइयों के गढ़ को तोड़ने वाला गुरुकुल आमसेना और स्वामी धर्मानन्द सरस्वती !

जिन दिनों इस धर्म निरपेक्ष भारत वर्ष में ईसाईयों के धर्मगुरु पोप जॉन पाल (द्वितीय) का आगमन हुआ तो उन दिनों भारत के समस्त पत्र पत्रिकाओं में चर्चा का विषय बना रहा। सम्पूर्ण देश मे इसकी प्रतिक्रियाएं हुई। परन्तु क्रियात्मक रूप से विरोध कहीं नहीं हुआ। तब उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं गुरुकुल महाविद्यालय आमसेना के आचार्य श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने इस चुनौती को स्वीकार कर २ फरवरी १९८६ को गुरुकुल आमसेना में ढाई हजार से अधिक ईसाइयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। जिसका विवरण पत्र-पत्रिकाओं में छप चुका है। इस कार्यक्रम से न केवल उड़ीसा, अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् मे उत्साह की लहर फैल गई।

यद्यपि इस प्रकार का शुद्धि कार्यक्रम मार्च एवं अक्टूबर में भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री की उपस्थिति में हुए थे। इसी शृंखला में इस वर्ष भी लगभग चार हजार ईसाई हिन्दू धर्म मे दीक्षित हुए।

सामान्य रूप से तो शुद्धि का कार्यक्रम चल ही रहा था परन्तु सन ८५ से इस कार्यक्रम ने अपना विशाल रूप धारण कर लिया, तब श्री प्रो० रतनसिंह जी (गाजियाबाद) की देखरेख में गुरुकुल आमसेना, आर्यसमाज पटनागढ़, आर्यसमाज बलांगीर, आर्य समाज सम्बलपुर के वार्षिकोत्सव एवं शुद्धि समारोह मनाए गए। इस प्रकार पुन. ८२ में गुरुकुल आमसेना में, ८३ में ग्राम कुमुण्डे, ८४ में सम्बलपुर मे विशाल शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस प्रकार लगभग ८००० (आठ हजार) व्यक्ति पुन: अपने हिन्दू धर्म मे लौट आए। परिणाम स्वरूप बलागीर तथा सम्बलपुर जिले का एक विस्तृत भाग ईसाई मिशनरी के चगुल से छूट गया है। यदि सार्वदेशिक सभा एव प्रान्तीय सभाएं हिन्दू सगठन तथा भारतीय सस्कृति के प्रेमी धन सम्पन्न सज्जन श्री स्वामी जी को खुले हाथों से सहायता देकर आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त कर दें तो उड़ीसा एवं मध्यप्रदेश का बहुत सा भाग ईसाइयत से मुक्त हो सकता है। शुद्धि का कार्य सकटपूर्ण एवं कष्ट साध्य है। यह साहस स्वामी धर्मानन्द जी जैसे कर्मठ, तपस्वी व्यक्ति का ही है कि हरियाणा के समृद्धि इलाके एव खान खान पान को छोड़कर उड़ीसा के वन्य अंचल मे जाकर शुद्धि का चक्र चलाया एव उड़ीसा में भी सबसे पिछड़ा जिला काला हाण्डी को अपनी कर्म स्थली बनाया।

स्वामी धर्मानन्द जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, आपका जन्म रोहतक जिले के सामान्य कृषक परिवार मे हुआ। माता जी आर्यविचार धाराओं से ओतप्रोत थी। जिनके शुभ सस्कार इन पर भी पड़े बचपन से ही प्रतिदिन सन्ध्या हवन करके ही स्कूल पढ़ने जाते थे। एक दिन बड़ा आर्य जगत के स्वनाम धन्य श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का व्याख्यान सुना फिर आप स्कूलीय शिक्षा को परित्याग कर वैदिक आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन करने गुरुकुल झज्जर चले गये। मेधावी बुद्धि के कारण ५-६ वर्ष में ही व्याकरण-दर्शनाचार्य की परीक्षा देकर सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ किया। सन १९६१ मे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर गुरुकुल झज्जर के सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर सेवा की। सन १९६७ के गोरक्षा सत्याग्रह में भाग लेने के लिए गुरुकुल से चले गए। पुन: सत्याग्रह में भाग लेकर उड़ीसा को अपना कार्यक्षेत्र चुना। ग्राम आमसेना में गुरुकुल प्रारम्भ करके कार्य करने के लिए अपने साथी तैयार करने शुरू किए, फलस्वरूप अल्पकाल में गुरुकुल से अनेक योग्य विद्वान ब्रह्मचारी स्नातक निकलने लगे जो चारों ओर फलकर कार्य कर रहे हैं। गुरुकुल का संचालन भी अब आपके शिष्य अखिलेश जी आचार्य व वामदेव जी शास्त्री कर रहे हैं। इस तरह यह संस्था अपनी अल्पकालीन अवधि में ही उड़ीसा की समस्त आशा एवं गतिविधियों का आधार बन चुकी है।

जब गुरुकुल का रूप नियमित हो गया तब स्वामी जी ने 'स्टेट बैंक से ऋण लेकर एक मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) लगाई, और सर्वप्रथम ऋषि के अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" उड़िया भाषा में प्रकाशित किया। तत्पश्चात् ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार भानु, आर्याभिविनय, आदि ४० पुस्तकें उड़िया भाषा में छप चुकी है। इनके प्रमुख लेखक सहयोगी श्री पं० विश्विकेशन जी शास्त्री एव मास्टर श्री लम्बोदर पटनायक, जो कि उड़ीसा के लेखराम हैं। दोनों ही लेखनी के धनी हैं। दोनों ही स्कूल में अध्यापन कार्य करते हुए उड़ीसा के प्रचार प्रसार कार्य में बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं। दोनों ने उड़िया भाषा में अनेक पुस्तकें लिखकर अपनी ही राशि से प्रकाशित की, जिससे उड़ीसा में प्रचार का एक ठोस आधार तैयार हो गया।

प्रकाशन विभाग के साथ-साथ गुरुकुल से एक मासिक पत्रिका उड़िया एव हिन्दी भाषा में प्रकाशित होती है। गुरुकुल का अपना बृहत् पुस्तकालय भी है जिसमे वैदिक साहित्य के साथ दूसरी पुस्तकें हैं जिनकी सख्या लगभग १०-१२ हजार है। इसी प्रकार कृषि, आयुर्वेदिक फार्मेसी, नि:शुल्क चिकित्सालय आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य गुरुकुल मे चल रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले एव मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के निर्देश पर उड़ीसा के प्रसिद्ध लेखक, ओजस्वी वक्ता इन्जि० प्रियव्रत जो दास के साथ मिलकर 'उत्कल आर्य प्रतिनिधि' सभा का गठन किया एव आर्य समाजों का गठन किया। फलस्वरूप आज उड़ीसा मे सैकड़ों आर्यसमाजें हैं। अहिन्दी भाषी क्षेत्र मे आर्य समाज का जितना प्रचार उड़ीसा में हुआ, शायद ही अन्य प्रदेशों मे उतना हुआ होगा। इन सबका श्रेय स्वामी धर्मानन्द जी एव उनके सहयोगियों को है।

स्वामी जी कर्मठ व तपस्वी है। लगन के पक्के हैं। उनकी बहुत कुछ करने की तमन्ना है किन्तु यह सब धनाभाव से सम्भव नहीं हो सकता। यदि उन्हें इस दृष्टि से अर्थात् धनाभाव से उन्मुक्त कर दें तो उड़ीसा को ईसाईयत की चगुल से मुक्त करा सकते हैं।

अत: उनके साहस को बढाने के लिए प्रत्येक दानी महानुभाव का पुनीत कर्त्तव्य है कि वे यथाशक्ति उनकी सहायता करें। आपको परमात्मा ने धन दिया है, आप अपनी सम्पत्ति को राष्ट्र कल्याण के लिए लगायें।

अपनी हर प्रकार की सहायता—श्री आचार्य जी, गुरुकुल आश्रम आमसेना जि० कालाहाण्डी (उड़ीसा) के पते पर भेजें।

—धूमकेतु आर्य
अध्यापक-दयानन्द वेद विद्यालय
गौतम नगर, नई दिल्ली-४९

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य समाजों के निर्वाचन

—स्त्री आर्य समाज शाहजहांपुर डा० पुष्पलता श्रीवास्तवा प्रधान, श्यामा सरीन मन्त्री, पदमावती कोषाध्यक्ष।

—गुरुकुल ततारपुर (उ० प्र०) डा० शौदानसिंह आर्य प्रधान, विनोद कुमार शास्त्री मन्त्री, रणवीर पाहवा कोषाध्यक्ष।

—राजेन्द्रप्रसाद मार्ग जालना ४३१२०३ श्रीमती सवितादेवी आर्य प्रधान, श्री सकरलाल आर्य मन्त्री, डा० बांकूलाल जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल गाजियाबाद (उ०प्र०) अजयकुमार आचार्य प्रधान, राधारमन आर्य मन्त्री, देवेन्द्र प्रकाश कोषाध्यक्ष।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल बुलन्दशहर (उ० प्र०) धर्मेन्द्रसिंह प्रधान, चन्द्रपालसिंह मन्त्री, नेकपाल आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज कोसी कला जिला मथुरा (उ० प्र०) चन्द्रभान आर्य प्रधान, विजय कुमार आर्य मन्त्री, राजेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज नगर झांसी हरिसिंह जी यादव प्रधान, आर० के० सिंह परिहार मन्त्री, रामगोपाल आर्य कोषाध्यक्ष।

—ग्राम जड़ौली पो० जड़ौदा जिला मेरठ (उ० प्र०) नई आर्य समाज की स्थापना हुई जयचन्द्रसिंह आर्य प्रधान, मा० वेदप्रकाश आर्य मन्त्री, मा० धर्मवीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष।

—नगर आर्य समाज साहबगंज गोरखपुर देवीलाल आर्य प्रधान, रमेश प्रसाद गुप्त मन्त्री, यशोदानन्द केशरवानी कोषाध्यक्ष।

—दयानन्द सेवाश्रम संघ भोपाल मध्य प्रदेश त्रिवेणी सहाय वानप्रस्थी गुना प्रधान, श्री रामकृष्ण बजाज मन्त्री, माधुरी शरण अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज ब्यापुर भाया दानापुर कैन्ट जिला पटना (बिहार) श्री भगवानसिंह प्रधान, श्री योगेन्द्र प्रसादसिंह मन्त्री, श्री नन्द किशोर कोषाध्यक्ष।

गढ़वाल वेदप्रचार समिति देहरादून ठाकुरसिंह नेगी प्रधान, उम्मेदसिंह मन्त्री, मनोहरलाल एम. ए. कोषाध्यक्ष

—विश्व वेद परिषद चण्डीगढ पंजाब डा० भवानीलाल भारतीय प्रधान, राजेन्द्र प्रसाद वर्मा मन्त्री, रघुनाथराय शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज केराकत जौनपुर (उ०प्र०) राजाराम आर्य प्रधान, रामनारायण आर्य मन्त्री, ज्ञानचन्द कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज तिजारा जिला अलवर (राजस्थान) मामराज आर्य प्रधान, किशनदास मन्त्री, मंगतूराम कोषाध्यक्ष।

उत्तर प्रदेश

—आजमगढ विद्याधर प्रधान, रामज्ञेय मौर्य मन्त्री, कैलाशचन्द कोषाध्यक्ष

—खुरजा मंगलदेव प्रधान, डा० राजेन्द्रप्रसाद मन्त्री, राधेश्याम कोषाध्यक्ष

मध्य प्रदेश

—रतलाम ब्रह्मदत्त गुप्ता प्रधान, के सी. चन्दन मन्त्री, काशीराम कोषाध्यक्ष

—मुरैना विश्वव्रत ब्रह्मचारी प्रधान, कृपाशंकर मन्त्री, धर्मवीर कोषाध्यक्ष

—उज्जैन ओमप्रकाश अग्रवाल प्रधान, यादव कुमार मन्त्री, गोवर्धनलाल कोषाध्यक्ष

—गाजीपुर कृष्णचन्द्र आर्य प्रधान, सुखदेव शास्त्री मन्त्री, यादवलाल कोषाध्यक्ष

—मठवारा गुलाबचन्द प्रधान, टुन्नीलाल मन्त्री रामलाल कोषाध्यक्ष

राजस्थान

—मदनगंज-किशनगढ़ मोतीलाल प्रधान, डा. वीर रत्न मन्त्री, गंगासहाय कोषाध्यक्ष

—जयपुर (कृष्ण पोल बाजार) सत्यनारायण साहू प्रधान, ओमशरण विजय मन्त्री, सूर्यनारायण गुप्त कोषाध्यक्ष

—जैसलमेर विजय कुमार प्रधान, हेमचन्द्र मन्त्री, हर्ष प्रिय कोषाध्यक्ष

—बारां (जिला कोटा) म० मदन मोहन व्यास प्रधान, शिवधर शर्मा मन्त्री, जेठा भाई कोषाध्यक्ष

कार्यक्रम सम्पन्न

—आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के १४१वें बोध दिवस पर एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया इस अवसर पर जिले भर की समस्त आर्य संस्थाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर नवभारत टाईम्स लखनऊ के स्थानीय सम्पादक श्री रामपालसिंह ने अपने विचारों से महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की मुख्य अतिथि प्रो० वासुदेवसिंह पूर्व मन्त्री उ० प्र० शासन ने स्वामी जी के कार्यों की चर्चा की कार्यक्रम में अनेक नेताओं ने भाग लिया। —जयदेव शर्मा प्रचार मन्त्री

—आर्य समाज मन्दिर बल्देवाश्रम खुरजा (उ. प्र.) में दिनांक २-३-८६ से ९-३-८६ तक महर्षि बोध सप्ताह हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें उ. प्र. सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी श्री शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती राजबाला, आचार्य रामकिशोर आदि ने भाग लिया कार्यक्रम सफल रहा।

—डा० राजेन्द्र प्रसाद, मन्त्री

शुद्धि

आर्य समाज बामनिया जिला झाबुआ (म० प्र०) में महर्षि बोधोत्सव के अवसर पर सात लोगों की शुद्धि की गई। —ओंकारसिंह, मन्त्री

—आर्य समाज समालखा के अधिकारियों के प्रयत्नों से निम्न लिखित तीन युवकों ने स्वेच्छा से ईसाई धर्म त्याग वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

पूर्व नाम	नये नाम जो रखे गए
श्री आई० जोहू वरितो—	श्री आई० शिवानन्दन
श्री डी० अमबासामन -	श्री डी० सुन्दरा राजन
श्री एस जाकोब जेरज -	श्री डी० रामकुमार

— आर्य समाज रतलाम के उत्साही मन्त्री श्री के० सी० चन्दन ने सूचना दी है कि पारसी युवती कु० सयोवर हुसदवाला ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म में १३-२-८६ को प्रवेश करने की प्रार्थना की तथा उसकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर उसी दिन उसका नाम कु० सुनीता रखा गया और वहीं पर श्री राकेश व्यास आर्यवीर के साथ विवाह संस्कार भी कराया गया। दोनों पार्टियों के उपस्थित सज्जनों को समाज की ओर से आशीर्वाद तथा सम्मान प्रदान किया गया।

—आर्य समाज निजामाबाद में करुणा नाम की ईसाई युवती ने वैदिक धर्म में प्रवेश की इच्छा प्रकट की तथा विवाह का प्रबन्ध भी समाज पर सौंपा गया समाज के सजग अधिकारियो ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। तथा उनका विवाह सम्पन्न करा दिया गया।

सरकार कट्टर पंथियों के आगे न झुके

आर्य समाज की मांग

कानपुर। आर्यसमाज के तत्वावधान में अमर शहीद धर्मवीर प० लेखराम दिवस के सम्बन्ध में आयोजित सभा में प्रसिद्ध आर्य नेता तथा उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने कहा कि देश मे साम्प्रदायिकता का जनून (उन्माद) बढ़ता चला जा रहा है। यह देश के लिए खतरे की घण्टी है। पं लेखराम की भांति प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी मजहबी जनून की शिकारी हुयी थी। आज सरकार पुन: मुस्लिम कट्टर पंथियो के आगे झुक रही है। साम्प्रदायिक तुष्टीकरण की नीति से नये विभाजन की नींव रखी जा रही है।

सभा मे सर्वश्री जगन्नाथ शास्त्री शुभकुमार कोहरा श्रीमती बीरा चोपड़ा मनोरमासिंह शीला उप्पल आदि ने भी प० लेखराम को श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की। —मन्त्री

शोक समाचार

—आर्य समाज दार्जिलिंग के उत्साही कार्यकर्ता श्री गम्भीर राही की पूज्या बहिन अर्जुनमाया के देहान्त पर शोक सभा तथा शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

—श्री वेदानन्द आर्य गोविन्दपुर मेरठ के पूज्य पिताजी श्री हरीसिंह जी की मृत्यु पर मेरठ में विशेष यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया।

गौरक्षा क्यों

लेखक—आचार्य सत्यप्रिय वैदिकाश्रम तिजारा, अलवर (राज०)

बन्धुओ ! एक लोकोक्ति आती है कि "हस्तिन. पदे सर्वेपादा निमग्ना." अर्थात् हाथी के पैर मे सभी के पैर समा जाते हैं। इस ही प्रकार गौरक्षा मे धर्म, कर्म, संस्कृति, राष्ट्र रक्षा, मानव निर्माण और मानव का अन्तिमोद्देश्य धर्मार्थ काम, मोक्ष की प्राप्ति भी सन्निहित है।

अथवा इसको यूं समझ सकते हैं कि जैसे खाड की रोटी को जिधर से सेवन करें उधर से ही मधुर लगती है। वैसे ही गौमाता को भी जिस उपरोक्त पहलुओं से विचार कर देखें पूर्णरूप से उसकी सिद्धि में गौमाता को पाओगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि अय राष्ट्रवासियो ! राष्ट्र-रक्षा, चक्रवर्ति राज्य और योग की सिद्धि चाहते हो तो गौमाता की रक्षा करो। वेद में कहा है—"कास्य मात्रां न विद्यते" उत्तर—"गोस्तु मात्रा न विद्यते" "गावो विश्वस्य मातर." गौ के गुणो की सीमा नही। गायें सारे संसार की माता हैं। हमारी जननी माता यदि हमको एक बार दूध पिलाती है तो गौमाता हमे कई बार दूध पिलाती है।

थोडा विस्तार से गौ महत्त्व पर विचार करें।

सर्वप्रथम वर्णाश्रमो की दृष्टि से विचारिये। ब्रह्मचर्याश्रम मे बुद्धि, विद्या और ब्रह्मचर्य की रक्षा मुख्याग है। वे मुख्य रूप से गौदूध, घी आदि से प्राप्त होगे। भैंस के दूध से नही। भैंस का दूध आलस्य, प्रमाद बढाने वाला है। बुद्धि को ठम करने वाला है। जैसा भैंस का पड्डा।

गृहस्थाश्रम मे पारस्परिक स्नेह। खाने-पीने के लिये उत्तम, पौष्टिक पदार्थ आवश्यक हैं। गौदूध पारस्परिक स्नेह को बढाता है। जैसे सैकडों बैल (साड) एक जगह प्रेम से रह लेते है। भैंसे दो भी नहीं रह पाते लड़ मरते हैं। गौदूध, घी आदि ही उत्तम, पौष्टिक और सेवनीय पदार्थ है।

दूसरे गौखाद का उत्पन्न हुआ अन्न सब खादों से पवित्र अन्न होता है।

वाप्रस्थ के साधना, स्वाध्याय, और चिन्तन-मनन मुख्य धर्म माने हैं। साधनादि के लिये भी उत्तम भोजन सुबुद्धि और सुविचारो पर आधारित है। इनकी पूर्ति गौदूध आदि से होगी। भैंस के दूध लस्सी से साधना समय शरीर मे भारीपन और आलस्य बढ़ता है। घुटनो मे वाय से पीडा होने लगती है जिससे देर तक एक आसन से बैठ नहीं सकता। साधना मे एक निश्चल आसन का होना अति आवश्यक है।

सन्यासी को त्यागी, तपस्वी, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, परोपकारी, विद्वान नगर २ ग्राम २ मे धर्म प्रचार की भावना युक्त होना लिखा है। ये सब भावनायें (गुण) गौदूध आदि के सेवन से और गौसेवा से प्राप्त होंगी "क्यो जैसा खाये अन्न तैसा होवे मन" जैसा पीवे पानी वैसी बोले वाणी" यह लोकोक्ति सत्य प्रसिद्ध है। गौमाता का जीवन व दूध परोपकार, त्याग, तपादि उपरोक्त गुणों से भरपूर्व है।

वर्णों की दृष्टि से "ब्रह्मजानाति इति ब्राह्मण" अर्थात् वेद, ईश्वर, धर्म-कर्मादि के सूक्ष्म तत्त्व को जानने वाला ब्राह्म होता है। सूक्ष्मता, पवित्रता और चिन्तनशक्ति के लिए वैसा ही उत्तम गौदूध रूप मे भोजन सुलभ, और सद्ग्रन्थों के पढने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने और सेवन से ही सम्भव है।

क्षत्रिय "क्षाक्षात् त्रायते" क्षत्रिय जो चोर, डाकू और शत्रुओ से देश-धर्म की रक्षा करे वह क्षत्रिय होता है। इन कार्यों की सिद्धि वीर, धीर, गम्भीर, निर्भीक और ज्ञानी जन ही कर सकता है। कायर, कमजोर, भीरू और मूर्ख (वेद ज्ञान रहित) क्या कर सकता है। वीरता आदि की प्राप्ति गौदूध के समान किसी मे नही जैसे श्री राम, श्री कृष्ण, श्री प्रताप, गुरु द्रोणाचार्य और श्री स्वामी दयानन्द वीर-धीर, धर्मात्मा, देशभक्त त्यागी, तपस्वी विद्वान और बलवान ही कर सकता है।

वैश्य और शूद्र मे व्यापार कृषि-गोपालनादि और सेवा भाव मुख्य है—इस भावना का प्रेरक भी गौदूध ही है।

पाचो महायज्ञों की दृष्टि से और चतुर्वर्ग की प्राप्ति की दृष्टि से भी गौ के घी, दूधादि के सेवन से ही होगी। कहने का भाव यह है कि गौमाता जीते जी तो सेवा करती ही है दूध-बैल और खादादि देकर। और मरने पर भी हमारे पैर रक्षार्थ चमड़ा भी दे जाती है। इसलिए गौमाता की रक्षा, वृद्धि और विकास करना हम सब का परम धर्म है।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल अलीगढ के १ माह के प्रचार कार्य (जो कि तहसील खैर के १५ स्थानो पर २, २ दिन चला) मे श्रीमान जयनारायण आर्य (उप सचालक उ० प्र०) जी के आदेश पर श्री रघुराज आर्य व श्री भूदेव आर्य जी के अथक प्रयास से ३१ जनवरी को श्रीमान प० बालदिवाकर 'हंस' जी द्वारा समापन किया गया। इस कार्यक्रम मे ब्र० आजाद, सुरेन्द्र सिंह आर्योपदेशक जी (शिक्षक सा. आ. वीर दल गु० न० वि० ततारपुर) एव स्वामी 'प्रज्ञानन्द जी 'सिद्धान्ती" का विशेष योगदान रहा। चित्र मे श्री प्रेम भिक्षु भाषण कर रहे हैं।

वेदाध्ययन शिविर

नई दिल्ली १४ अप्रैल। स्थानिक वेद-संस्थान में १९ से २५ मई, १९८९ तक होने वाले साधना-शिविर का प्रमुख विषय "वेदाध्ययन की विधि" होगा। प्रसिद्ध वेदमर्मज्ञ डा० फतहसिंह ऋग्वेदीय वाकसूक्त का अध्यापन करेंगे। विश्वकर्मा के दो सूक्तों का भी अध्यापन होगा। जिनकी रुचि वेदाध्ययन में है वे इस अवसर का लाभ ले सकते हैं।

पता सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७
दूरभाष : ५०२३१६

श्री देवीदास आर्य को पुत्र शोक

कानपुर। सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य के २६ वर्षीय युवा पुत्र श्री विजय आर्य एडवोकेट के निधन से शोक फैल गया। बाजार बन्द हो गये तथा कचहरी व शिक्षण संस्थायें बन्द हो गईं। हजारों लोगों ने श्री आर्य के घर पहुंच कर सहानुभूति प्रकट की। आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर के प्रांगण में बहुत बड़ी शोक सभा हुयी। अनेक सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक और शिक्षण संस्थाओं ने शोक सभायें करके शोक प्रस्ताव पारित किये।

तपोवन में बृहद् यज्ञ २१ अप्रैल से

देहरादून, २२ मार्च। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन मे वृहद् यज्ञ एवं साधना-शिविर २१ अप्रैल से २७ अप्रैल तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होगे। अन्य विद्वानो के अतिरिक्त प० शिवाकान्त जी उपाध्याय (नई दिल्ली) के प्रवचन सप्ताह-भर चलेंगे।

उल्लेखनीय है कि तपोवन के अप्रैल तथा अक्तूबर मे प्रति वर्ष होने वाले वृहद यज्ञो के अवसरो पर दूरस्थ स्थानो से भी नर-नारी बडी सख्या में आते हैं।

देवदत्त बाली, मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वे अपना शुल्क अविलम्ब भेजने का कष्ट करें।

कुछ ग्राहकों पर कई वर्ष का शुल्क बकाया है उनको स्मरण पत्र भी भेजे जा चुके हैं, ऐसे सभी ग्राहकों से आशा की जाती है कि वे अपना बकाया शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजकर सहयोग करेंगे।

—व्यवस्थापक, सार्वदेशिक साप्ताहिक

रजि० नं० डी० (सी०) १० सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-४-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६१
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. U. 93 Post in D.P.S.O. on 10-4-86

दयानन्द विद्या निकेतन की दान सूची

(पृष्ठ २ का शेष)

- श्री सोमनाथ पुराना बाजार दीमापुर .... रु० ..
- श्री एम० सी० सिंह पुराना बाजार दीमापुर .... रु० ..
- श्री यू० के० शोमन पुराना बाजार दीमापुर .... रु० ..
- ... पुराना बाजार दीमापुर .... रु० ५
- ... आर्य पुराना बाजार दीमापुर .... रु० ..
- श्री ... दीमापुर .... रु० १०००

अथवा इन ... सामान

सामान देने वाले महानुभावों की सूची

(१) मै० ... दीमापुर एक बन्डल सी० आई० शीट्स
(२) श्री राजन शर्मा ... एक बन्डल सी० आई० शीट्स
(३) मै० विनोद फन्सी स्टोर्ज एम० जी० रोड दीमापुर एक बन्डल सी० आई० शीट्स
(४) मै० ... मैशीनरी स्टोर दीमापुर ...
(५) मै० ... दीमापुर एक बन्डल सी० आई० शीट्स
(६) श्री एम० एम० अग्रवाल दीमापुर एक सौ बोरी सीमेन्ट
(७) श्री माणीलाल जैन दीमापुर दो बन्डल सी० आई० शीट्स
(८) श्री बापुराम अग्रवाल अलुमीनियम फैक्टरी दीमापुर चार बन्डल सी० आई० शीट्स
(९) श्री ओम्प्रकाश दीमापुर तीन बन्डल सी० आई० शीट्स
(१०) मै० नेथमल चिरंजीलाल एण्ड क० दीमापुर पचास बोरी सीमेन्ट
(११) श्री पदमचन्द जैन दीमापुर एक बन्डल सी० आई० शीट्स
(१२) श्री टोम्बीसिंह मिडलैण्ड एक सीलिंग फैन
(१३) श्री थोक चूम मेघजीतसिंह नहरबाडी एक दीवार घड़ी
(१४) श्री कैलाशदास पुराना बाजार एक ट्रक सैण्ड

रहे है। फरवरी १९८६ में हुए दंगा के बाद ... पर अल्पसंख्यकों के जान-माल की हर सम्भव रक्षा की जायेगी और अपराधियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी सब स्थिति पर विचार करके श्री शालवाले ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये।

१—काश्मीर की राज्य सरकार और भारत सरकार सारी स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करे और भविष्य में काश्मीर घाटी मे रहने वाले अल्पसंख्यक हिन्दुओं की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करें। समाज विरोधी विघटनकारी तत्वों की गतिविधियों को सख्ती से दबाया जाय।

२—काश्मीर की राज्य पुलिस बहुसख्यक सम्प्रदाय की पक्षपाती है। इसकी जांच करके अवांछित तत्वों के विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाय।

३—घाटी मे रहने वाले अल्पसख्यकों के जान-माल की पूरी सुरक्षा की गारन्टी की जाय।

४—जम्मू काश्मीर तथा पंजाब में हो रही हिंसक घटनाओं को दबाने और समाज विरोधी तत्वों को नष्ट करने के लिए भारतीय संविधान में ... संशोधन किये जायें।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

' सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६ दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २३४३७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क १८] चैत्र कृ० ११ सं० २०४२ रविवार १० अप्रैल १९८६

विदेशी धन पाने वाली १४ संस्थाओं की जांच

क्या यह धन धर्मपरिवर्तन में लग रहा है

आंतरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री अरुण नेहरू का वक्तव्य

नई दिल्ली, ११ अप्रैल। भारत मे स्वयसेवी कार्यों के लिए विदेशों से लगभग दो अरब रुपए की सहायता के बारे मे सरकार जॉच कर रही है। यह बात लोकसभा मे आतरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री अरुण नेहरू ने बताई।

उन्होने बताया कि विदेशी सहायता पाने वाली १४ बडी सस्थाओ व व्यक्तियो के बारे मे छानबीन की जाएगी।

इस तरह की विदेशी सहायता को काफी गम्भीर बताते हुए मन्त्री महोदय ने कहा कि सरकार इस सन्दर्भ में सम्बन्धित कानूनो के सशोधन पर विचार कर रही है।

श्री नेहरू ने कहा यह जानना काफी महत्वपूर्ण है कि क्या यह धन धर्मपरिवर्तन मे लगाया जा रहा है

उन्होने कहा कि विदेशी चन्दे से बहुत सी सस्थाओ ने बहुत ही अच्छे कार्य किये हैं लेकिन हमे यह भी पता चला है कि भारी मात्रा मे विदेशी धन सदेहास्पद व्यक्तियो के पास आ रहे हैं।

श्री नेहरू ने बताया कि पिछले एक सप्ताह मे पजाब पुलिस और केन्द्रीय सुरक्षा बलों ने मिलकर पंजाब में साढे चार सौ आतकवादियो को पकड लिया है और सघर्ष मे सात मारे गये है। आठ पुलिसकर्मियो की मृत्यु हुई है।

आंतरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री श्री अरुण नेहरू ने लोकसभा मे यह जानकारी देते हुए कहा : राज्य की स्थिति अत्यन्त कठिन है पर उसे 'सही धारा' मे लाने के जोरदार प्रयास किये जा रहे हैं, जिनका असर दीखने लगा है। उन्होने सदन से बरनाला सरकार को पूरा सहयोग और समर्थन देने का अनुरोध किया ताकि वह आतंकवादियो से कारगर तरीके से निपट सके।

श्री नेहरू गृहमन्त्रालय की बजट मागो पर हुई चर्चा मे हस्तक्षेप कर रहे थे।

सीमाओं पर सुरक्षा व्यवस्था की चर्चा करते हुए श्री नेहरू ने बताया कि सीमाओं पर निगरानी के कार्य को अधिक कुशल व प्रभावी बनाने प्रशिक्षण पर ज्यादा जोर दिया जायेगा। कुल बल के १० प्रतिशत व्यक्ति बदल-बदल हर समय प्रशिक्षणाधीन रहेंगे।

सीमावर्ती इलाको के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से विकास के लिये एक विशेष सीमा विकास अभिकरण स्थापित किया जाएगा। भूतपूर्व सैनिको को सीमा क्षेत्रो में बसाने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

आतरिक सुरक्षा मन्त्री ने सदन को जानकारी दी कि अगले वर्षो मे पश्चिमी सीमाओं पर सुरक्षा बलो मे सख्यात्मक और गुणात्मक दोनो ही दृष्टियो से बहुत सुदृढ किया जायगा। इसके लिए एक पचवर्षीय योजना तैयार की गई है।

पूर्वी सीमाओं पर कटीले तार लगाने के साथ-साथ वहां सीमा सड़कों का विस्तार किया जाएगा। अगले कुछ वर्षो मे ढाई हजार किलोमीटर लम्बी सीमा सड़कें बनाई जायेंगी। उत्तरी सीमा पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस की शक्ति बढाई जा रही है।

श्री नेहरू ने कहा . पुलिस को किसी प्रकार के राजनीतिक हस्तक्षेप के बिना व्यावसायिक कुशलता के साथ कार्य करने दिया जाना चाहिये। केन्द्र ने राज्यो की पुलिस के आधुनीकीकरण के लिये काफी धनराशि स्वीकृति की है। सभी राज्यो को लिखा गया है कि वे पुलिस कर्मियो की आवास व्यवस्था और प्रशिक्षण कार्य पर खास ध्यान दें।

उन्होने इस बात पर खेद प्रकट किया कि राज्य सरकारें केन्द्र द्वारा स्थापित कमाडो प्रशिक्षण सस्थान और अपराधो का पता लगाने सम्बन्धी ब्यूरो का पर्याप्त लाभ नही उठा रही है।

श्री नेहरू ने बताया कि त्रिपुरा मे उग्रवादियो की समस्या से निपटने के लिए केन्द्र ने वहा की (मार्क्सवादी कम्युनिस्ट) सरकार को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

वेदामृतम्

पुत्र कर्मठ और कृतज्ञ हों

ते सूनवः स्वपसः सुदंससो,
मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये।
स्थातुश्च सत्यं जगतश्च धर्मणि
पुत्रस्य पाथः पदमद्वयाविनः ॥

ऋग्० १-१५६-३

हिन्दी अर्थ—वे सुन्दर कर्म करने वाले, आश्चर्य जनक शक्ति-सम्पन्न पुत्र प्रातिभज्ञान (ईश्वरीय ज्ञान) के लिए मातृतुल्य महान् द्युलोक और पृथिवी को जानते हैं। चर और अचर जगत् के निश्छल पुत्र के मार्ग की धार्मिक कार्यो मे (ये दोनो) अवश्य रक्षा करते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सम्पादक—ओमप्रकाश त्यागी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज दीवान हाल शताब्दी समारोह

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली की स्थापना के सौ वर्ष होने के उपलक्ष्य में विविध भव्य समारोहों का आयोजन किया गया है।

राष्ट्र एकता यज्ञ (राष्ट्र मेध यज्ञ)

१८ अप्रैल से २७ अ० तक प्रातः ७-३० से ९-३० बजे तक

स्थान—आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली।

ब्रह्मा—स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज, **ऋत्विज**—पं० राजगुरु शर्मा, प० यशपाल सुधांशु, **उपदेष्टा**—श्री शिवकुमार शास्त्री, आचार्य हरिदेव, श्री जैमिनी शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ, डा० महेश विद्यालंकार, डा० वाचस्पति उपाध्याय आदि अनेक विद्वान।

उद्घाटन समारोह

२५ अप्रैल २ बजे

स्थान—मावलंकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली।

अध्यक्ष—**श्री रामगोपाल शालवाले**

मुख्य अतिथि—**श्री के० सी० पन्त** (केन्द्रीय इस्पात मन्त्री)

वक्तागण—डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज
स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज
श्री शिवकुमार शास्त्री
श्री प० राजगुरु शर्मा
श्री डा० वाचस्पति उपाध्याय

विशाल शोभा यात्रा

२६ अप्रैल—प्रातः १० बजे से

स्थान:—लाल किला मैदान पुरानी दिल्ली से प्रारम्भ होकर, चांदनी चौक, नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौज काजी, अजमेरी गेट से होती हुई रामलीला मैदान में सम्पन्न होगी।

शोभा यात्रा आर्य समाज की शक्ति का प्रदर्शन संगठन तथा अनुशासन का परिचायक है इसमें अपनी पूर्ण शक्ति से बढ़-चढ़कर भाग लें।

मुख्य समारोह

२७ अप्रैल, रविवार प्रातः

स्थान—तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष—**श्री रामगोपाल शालवाले**

मुख्य अतिथि—**श्री सीताराम केसरी** (संसदीय कार्य राज्य मन्त्री)

वक्तागण—डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी
श्री स्वामी दीक्षानन्द जी
श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
श्री शिवकुमार शास्त्री
श्री प० राजगुरु शर्मा

समस्त महानुभावो से प्रार्थना है कि सम्पूर्ण कार्यक्रम में भारी संख्या मे पधारें तथा इस पुनीत यज्ञ मे अपनी दान राशि की भी आहुति अवश्य प्रदान करें।

प्रधान
सूर्यदेव

संरक्षक—**रामगोपाल शालवाले**
स्वागताध्यक्ष—**सोमनाथ मरवाह**

महामन्त्री
मूलचन्द गुप्त

आर्य समाज दीवानहाल शताब्दी समारोह समिति

रजनीश फाउंडेशन की सम्पत्ति कुर्क

नई दिल्ली, ११ अप्रैल। रजनीश फाउन्डेशन तथा रजनीश फाउन्डेशन लिमिटेड पर बकाया आयकर तथा सम्पत्ति कर की बकाया राशि वसूलने के लिए उनकी अचल सम्पत्ति कुर्क कर ली गई तथा किताबों और बैंकों खातों को सील कर दिया गया।

इस कार्यवाई से गत ३१ मार्च तक १५ लाख ६६ हजार ८६२ रुपये की वसूली की गई। यह जानकारी आज लोक सभा में वित्त-राज्यमन्त्री श्री जनार्दन पुजारी ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में दी।

रजनीश फाउंडेशन पर आयकर का तीन करोड़ ५९ लाख ४१ हजार रुपये से अधिक तथा सम्पत्ति कर का ३१ लाख ६० हजार ८६८ रुपया बकाया था। इसी तरह रजनीश फाउंडेशन लिमिटेड को आयकर का दो लाख ३३ हजार ९११ रुपया देना है।

श्री पुजारी ने बताया कि रजनीश फाउंडेशन पर आयकर का २१ लाख ७७ हजार ९०५ रुपया पिछले पांच साल से अधिक से बकाया है।

वित्त राज्यमन्त्री ने स्पष्ट किया कि आचार्य रजनीश पर व्यक्तिगत रूप से आयकर तथा सम्पत्ति कर नहीं लगाया जाता है। रजनीश फाउंडेशन के नाम से जो न्यास है उस पर आयकर तथा सम्पत्ति कर दोनों तथा रजनीश फाउंडेशन लिमिटेड पर केवल आय कर लगता है।

उन्होंने बताया कि रजनीश फाउंडेशन की कुल सम्पत्ति १९७०-७१ में केवल एक लाख ११ हजार ८५६ रुपये थी, जो केवल दस साल में बढ़कर चार करोड़ दस लाख रुपए से अधिक हो गई है। १९८२-८३ में सम्पत्ति का आंकलन नहीं किया गया।

इस न्यास की आय १९७०-७१ से १९७४-७५ तक कुछ नहीं थी। १९७५-७६ में यह एकदम चार लाख ५७ हजार ४१४ रुपए हो गई। अगले सात साल में यह बढ़ कर दो करोड़ १४ लाख ९५ हजार ७१० रुपये हो गई, लेकिन अगले ही वर्ष १९८२-८३ में न्यास ने एक करोड़ ५२ लाख ८२ हजार १२९ रुपए का घाटा दिखाया है।

रजनीश फाउंडेलन लिमिटेड ने १९८०-८१ में ८८९२० रुपए का घाटा दिखाया। १९८१-८२ में एक लाख ७४ हजार ४७० रुपए का लाभ हुआ, जिसे अप्रैल के बाद कम करके ५१०६० रुपए कर दिया गया।

(नव० टा० १२-४-८६ से साभार)

सम्पादकीय

आज की शिक्षा पद्धति और युवकों का कर्त्तव्य

भारतीय समाज में—विद्यमान सामाजिक कुरीतियों की ओर ध्यान दें तो यह पहले से कम नहीं, अपितु अधिक ही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भावी पीढ़ी में नवीनता लाने के लिए उसे तैयार करना है। आज की व्यसनों छूतछात की समस्याओं से जूझने के लिए कटिबद्ध हो। आर्य युवकों की संगठित शक्ति बुराइयों के खिलाफ युद्धस्तर पर तैयार की जाय तो समाज का आने वाला समय अन्धकार से निकल कर प्रकाशमय हो सकता है। भावी पीढ़ी में दहेज के दानव जातपांत के बन्धनों और अन्य विवाह जैसे सामाजिक समारोहों में सादगी लाने, परिवारों में नारी सुरक्षा और उनके गौरव को बचाने व बढ़ती हुई कामुकता-वृत्ति तथा ऐय्याश विलासिता के विपरीत एकजुट होने को तैयार करना होगा। इसके लिए हमें अपने गुरुकुलों, शिक्षणालयों, कन्या विद्यालयो की ओर ध्यान देना होगा।

सुलभ बाल जीवन में कोमल स्वभाव वाले बालकों को प्रारम्भ से ही समुचित शिक्षा प्रदान कर एक नया वातावरण तैयार किया जाय। यदि बालकों, किशोरों को उनके अध्ययन काल में ही उन्हें सदाचारी, देशभक्ति तथा धार्मिक मूल्यों के प्रति सतर्कता के साथ ज्ञानवर्धन की नसीहत भर सकें तो योजना में नवीनता आ सकती है।

इस ओर यदि हमें प्राचीन काल के विद्यामन्दिरों की ओर ध्यान दें तो उस पीढ़ी से कुछ दिशाबोध प्राप्त हो सकता है।

आर्य समाज के शिक्षा सिद्धान्तों की ओर दृष्टिपात करना होगा कि महर्षि के बाद एकसौ वर्षों में प्रारम्भ की गई हमारी शिक्षा विषयक नीतियों में हम कहां तक सफल हुए हैं। तो इस प्रश्नचिन्ह पर अवश्य ध्यान दें और सफलता के उन मूल तत्वों के क्या कारण थे उन्हें ध्यान में रखकर आगे की शिक्षा नीति पर पुनः चला जाय।

यह सत्य है कि आर्य समाज ने शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर शिक्षा की नीति में दृढ़ नींव रखी थी।

युवा पीढ़ी को दो धाराओं मे बहना पड़ता था :—

१—एक श्री स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी दर्शनानन्द के गुरुकुलों की प्राचीन प्रणाली का आधार। जिसमें महर्षि प्रणीत सम्यक् शिक्षण और शिक्षा-प्रणाली में चरित्र निर्माण में उचित आदर्श ग्रहण किये। महर्षि ने जिस शिक्षा के क्षेत्र में जिन आदर्शों की स्थापना की उनमें स्वामी जी के कतिपय ग्रन्थों के विभिन्न प्रकरणों को ले सकते हैं जिनके द्वारा स्वामी जी साधारण स्तर से राज-दरबार तक उचित शिक्षा का मार्ग दर्शन दे रहे हैं। जिससे शिक्षा के मूलभूत आदर्शों को वह स्वयं शिक्षा संस्थाओं को खोलकर देना चाहते थे।

दूसरी ओर डी. ए. वी. कालिजों को खोलकर वह भी लगभग उसी उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते थे कि विद्याध्ययन में प्राच्य और पाश्चात्य आदर्शों का सही मूल्यांकन करके समन्वय दे सकें।

प्रथम छात्रों को संस्कृत साहित्य, स्वदेशाभिमान, स्वसंस्कृति विषयक ज्ञान कराया जाय व ऐसा पाठ्यक्रम दिया जाय और पाश्चात्य, ज्ञान विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति के मूल सिद्धान्त, शिल्पकला और जीवनोपयोगी विधाओं का भी ज्ञान कराया जाय। इसमें म० हंसराज जैसे एकनिष्ठ व्यक्ति ने सारा जीवन संस्थाओं की सेवा में अर्पित कर दिया।

उन महापुरुषों के मन व मस्तिष्क इस बात पर केन्द्रित थे कि शिक्षा का मूल्यांकन बाजार भाव पर हो साथ ही जीवन का स्वरूप नैतिक मूल्यों पर किया जाय। परिणामतः उस युग के व्यक्ति एक आदर्शपरक व्यक्तित्व लेकर निकले। जिनकी आज भी आवश्यकता है। तो उसी परम्परा का निर्वहण करना होगा। वैसे ही शिक्षणालय खुले भावी पीढ़ी में, निर्माण शक्ति के वह सिद्धान्त के बीज बोये जायें जो मर्यादित होकर देश के नये ढांचे को नवीनता प्रदान कर सके। साथ ही देश की उन बीमारियों से उलझ कर जाति व समाज को अपने चरित्र से सुलझा सकें। इस कार्यक्रम को लेकर चलें तो भविष्य नयी पीढ़ी से आशावान बनेगा।

"नग्नपूजा बन्द करो"

कर्नाटक के जिला शिमोगा के चन्द्रगुट्टी गांव में रेणुका देवी के मन्दिर में नग्न नर-नारियों द्वारा पूजा करने की कुप्रथा बन गई है। इस नग्न पूजा करने वालों में युवक-युवतियां बहुत बड़ी संख्या मे होते हैं। ये तथाकथित भक्तगण वर्धा नदी में स्नान के बाद इस देवी के मन्दिर के सामने बने चबूतरे पर पहुंच कर एकत्रित हजारों लोगों की चिन्ता किये बिना ही अपने सभी वस्त्र उतार कर पूर्णतः नग्न हो जाते हैं तथा देवी की मूर्ति की पूजा करते हैं। इनमें नग्न नारियों को देखने के लिए हजारों पुरुषों की भीड़ लग जाती है। यहां नग्न होकर पूजा करने वालों की यह धारणा है कि नग्नपूजा से देवी प्रसन्न होती है तथा इच्छापूर्ण कर देती है।

इस बार पुलिस तथा सुधारवादी संगठनो ने इस भ्रष्ट पूजा-पद्धति को रोकने का प्रयास किया तो देवी की मूर्ति के अन्धभक्तों ने उन पर आक्रमण कर दिया और उनके वस्त्र फाड़ दिए।

जड़ मूर्तियों की पूजा का यह एक अति निकृष्ट परिणाम एवं रूप है। यदि जड़ मूर्ति पूजा न होती तो ऐसी नीच प्रथायें कभी जन्म न लेती और ऐसे कुकर्म कभी न होते। वास्तव में देवी के वरदान की बात पूर्णतः कपोल कलपित है। जो मूर्ति अपने ऊपर बैठी धूल-मक्खी तक को नहीं उड़ा सकती, जिसे कुछ भी दिखाई-सुनाई नहीं देता, वह किसी का क्या भला कर सकती है ? अतः किसी भी जड़ वस्तु के समक्ष दीप जलाना, घंटी घण्टे बजाना, नाचना-गाना, प्रार्थना करना आदि सब व्यर्थ है।

यह नग्न पूजा घोर दुराचारी पुरुषों का कुकृत्य है। वे इस पूजा के बहाने परायी माता-बहनों, बहू-बेटियों को नंगी देखना चाहते हैं तथा समाज में खुला व्यभिचार फैला रहे हैं। साथ ही निठल्ले बैठकर लाखों रुपये ऐंठना चाहते हैं। वे अपने इन कुकर्मों को बड़ी सरलता से सफलतापूर्वक कर रहे हैं।

शासन से निवेदन है कि इस गन्दी पूजा को तुरन्त रोके तथा नग्न पूजा करने वालों तथा करवाने वालों को बन्दी बनाकर कठोर दण्ड देवे। यदि यह नीच प्रथा बन्द नहीं हुई तो आज तो कर्नाटक के एक गांव में है, परन्तु कल सम्पूर्ण देश में प्रचलित हो जायेगी।

इस प्रकार के अन्धविश्वासों, कुरीतियों और पाखण्डो का खण्डन आर्य-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जम्मू-कश्मीर में दंगा-पीड़ित अल्पसंख्यक हिन्दुओं को मुआवजा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री रामगोपाल शालवाले ने हाल ही में अपने जम्मू-काश्मीर के दंगाग्रस्त क्षेत्रों के दौरे से लौटने के बाद, प्रधान मन्त्री एव गृहमन्त्री भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा था कि दंगा-पीड़ित हिन्दुओं को उनके मकानों, दुकानों तथा माल आदि के हुए नुकसान का मुआवजा दिया जाय। प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ! काश्मीर सरकार ने हिन्दुओं को इस प्रकार का मुआवजा देने की बात स्वीकार कर ली है। दगों के दौरान तोड़े और जलाये गए मन्दिरो, दुकानों और मकानों को सरकार अपने व्यय पर दुबारा बनवायेगी, तथा लूटे गये तथा आगजनी में नष्ट हुए समान का भी मुआवजा देगी।

आर्य समाज द्वारा हिन्दुओं में हित में किये गये कार्यों में यह एक सराहनीय उपलब्धि है। मुआवजे की न्यायसंगत मांग को स्वीकार करने के लिए हम भारत सरकार के आभारी हैं।

ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री-सभा

आर्यसमाज के क्रांतिकारी कवि एवं वक्ता श्री सियाराम निर्भय का प्रेस वक्तव्य

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा तलाक शुदा शाहबानो के सम्बन्ध में दिये गये फैसले तथा श्री राम जन्मभूमि को लेकर आज भारत का मुसलमान देश विभाजन के पूर्व की स्थिति मे सड़कों पर उतर गये हैं। भारत के विरोध में नारा लगाना सर्वोच्च न्यायालय को मुर्दाबाद कहना तथा पाकिस्तान जिन्दाबाद का नारा लगाना सरासर देशद्रोह हैं।

आज मुसलमानों के साम्प्रदायिक मांगों का समर्थन करने वाले देश के कुख्यात तस्कर हाजी मस्तान और जनता पार्टी के महामन्त्री मिन्नी जिन्ना सैयद शाहबुद्दीन जैसे लोग हैं।

हैदराबाद में बाबरी सेना का गठन करना अपने आपको मुगल तथा तुर्क आतातायियों की औलाद तथा वंशज मानना स्वतन्त्र भारत के साथ विश्वास घात है।

भारत सरकार को चाहिए कि जिस प्रकार हिन्दुस्तान के लिये अंग्रेज शासक विदेशी थे उसी प्रकार मुगल और तुर्क शासक भी हमारे लिये विदेशी हैं। सरकार अगर अंग्रेज शासकों के नाम से सड़कों का नाम हटाकर राष्ट्रवादी भारतीय पुरुषों का नाम से रखा हैं। उनकी मूर्ति को हटा दिया गया है। उसी प्रकार सरकार का उत्तरदायित्व हैं कि वह देश की एकता तथा राष्ट्रीय स्वाभीमान के लिये मुगल और तुर्क लुटेरों के नाम पर रखे गये सड़क तथा मकबरो का अधिग्रहण करके उसे राष्ट्रीय पुरुषों के नाम पर रखें। आज भारत की राजधानी दिल्ली मे औरंगजेब के नाम पर सड़क और गली हैं। महाराष्ट्र में औरंगाबाद स्टेशन का नाम भी आज औरंगजेब के नाम पर हैं। जिस बख्तीयार खिजली ने नालन्दा विश्वविद्यालय मे आग लगा दी आज उसी के नाम पर बिहार में बख्तीयारपुर स्टेशन है। वे सभी नाम पराधीनता सूचक तथा भारतीय स्वाभिमान को गिराने वाले हैं। उन्हें जल्द से जल्द हटाकर उस क्षेत्र के क्रान्तिकारी वीर महापुरुषों के नाम पर स्टेशन तथा नगर का नाम सरकार को रखना पड़ेगा तभी देश का सही इतिहास भावी पीढ़ी के सामने आदर्श बनकर आयेगा।

राम जन्म भूमि का ताला तो न्यायालय द्वारा खुल गया है। परन्तु काशी का विश्वनाथ मन्दिर और मथुरा की श्रीकृष्ण जन्म भूमि मस्जिद के रूप में खड़ी है उसे सरकार देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं का आदर करते हुए उन्हें अपना तीर्थस्थान वापस करा दे।

सियाराम निर्भय, पटना (बिहार)

वेद प्रकाश

बीते वर्ष हजारों जिसमें, वेद प्रकाश न पाया!

(१)

आच्छादित था तमाविद्या से, रहा भ्रम था भारी।
छुआछूत अस्पृश्यता से, वैदिक रीति बिसारी॥
बिना वेद-सब चले चलाये, पन्थ अनेक बनाके।
विविध भांति अन्धे अविद्या में, गौरव-ज्ञान गंवाके॥
लोप हुई सब वैदिक-विद्या, सत-पथ निज बिसराया।
बीते वर्ष हजारों जिसमें वेद-प्रकाश न पाया॥

(२)

ऐसे युग में भेजा ईश्वर, एक ऋषि ब्रह्मचारी।
देखा जिधर-उधर तम छाया, कौन? करे रखवारी॥
पाखण्ड पोल प्रतिमा पूजक, बिठा दिया अवतारी।
धरा-वेद-ज्ञान सद्-विद्या, होश न रहा लिगारी॥
देख दयानन्द, असमंजस में, रह-रह कर पछताया।
बीते वर्ष हजारों जिसमें, वेद प्रकाश न पाया॥

(३)

ओम् का झण्डा लेकर उतरे, पाखण्ड पोल हटाने।
गौरव-भारत की सद्विद्या, जिसको सत्य बताने॥
वह ऋषि था संन्यासी, वह था योगी सच्चा।
उनके तेज-तपोबल आगे, ठहर सके नहीं कच्चा॥
वेद-घोषणा करके गुञ्जे, वैदिक-पन्थ बनाया।
बीते वर्ष हजारों जिसमें, वेद-प्रकाश न पाया॥

(४)

हुए एक शत् वर्ष बराबर, कितना काम हुआ है।
न ही पाता वर्ष हजारों—बीते न काम हुआ है॥
अरे दयानन्द न आते तो, भारत कौन बचाता।
कौन? खोलते गुरुकुल आ के, रचना कौन रचाते॥
कौन? दिखाता दिव्य-ज्योति को, तमसा-तिमिर नशाया॥
बीते वर्ष हजारों जिसमे, वेद-प्रकाश न पाया।

(५)

नारी-उत्थान कौन? यहां करते, विधवाओं भटकाती।
मानव-मान कुचलते जाते, अविद्या थी मंडराती॥
चार-भुजाएं आठ भुजा-दो, कर मन्दिर बनवाए।
इतना ही नहीं तक पहुंचे, लिङ्ग-भङ्ग पुजवाये॥
माता-बहिन बेटियां पूजे, ऐसा पन्थ चलाया।
बीते वर्ष हजारों जिसमे, वेद प्रकाश न पाया॥

(६)

अविद्या-रात्रि चली अन्तरिक्ष को, वेद प्रकाश बढ़ा है।
सौ वर्षों से कितना आगे, भारत-भाग्य चढ़ा है॥
असीमोपकार-ऋषिवर तेरा, करके देव-सिधाये।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सव्य भाव से आर्यावर्त, जगाये॥
ऋणी रहा 'घनसार' तुम्हारा, कौन? चुकाय-चुकाया।
बीते वर्ष हजारों जिसमे, वेद प्रकाश न पाया॥

—कवि कस्तूर चन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज०)

यज्ञ की महत्ता

श्री नृसिंह देव अरोड़ा, चौक सौदागर मोहल्ला, अजमेर
(संयुक्त मन्त्री, प्राकृतिक स्वास्थ्य परिषद)

(गतांक से आगे)

(६) यज्ञ द्वारा तपैदिक का इलाजः—

जबलपुर टी० बी० सेनोटोरियम के मेडीकल आफिसर स्वर्गीय डाक्टर कुन्दन लाल जी ने यज्ञ द्वारा क्षय के हजारों रोगी अच्छे किये थे। उनका यह दावा था कि सूर्योदय व सूर्यास्त के समय हवन के साथ-साथ यदि ढंग से प्राकृतिक चिकित्सा, उपस्थ स्नान से पेडू द्वारा उपचार किया जाय तो देश क्षय-मुक्त हो जायेगा।

(७) उन्माद के रोगी को लाभः—

उत्तर-प्रदेश के इटावा के एक आयुर्वेद शिरोमणि वैद्य कृष्णदेव जी के पुत्र को उन्माद रोग ने आ घेरा चिकित्सा से लाभ नहीं होने पर उन्होंने एक हजार गायत्री मन्त्र से यज्ञ किया परिणाम स्वरूप रोगी को आधे से अधिक-लाभ हो गया।

(८) आविष्कारों की जन्मस्थलीः—

जर्मनी में तो यह दृढ़ता से कहा जाने लगा है कि वे बच्चे जो जन्म से ही अग्नि होत्र के वातावरण में रहे, पले हैं, मृदु तथा अनुकूल स्वभाव के होते हैं, उनमें चिड़चिड़ाना नहीं रहता—अध्यापकों की भी अनुभूति है कि ऐसे बच्चों को बिना विशेष परिश्रम के ही वे पढ़ा देते हैं। नित्य प्रति अग्नि होत्र की वायु श्वास द्वारा लेने नाक, गले, जुकाम आदि के रोग जल्दी ठीक हो जाते हैं। वहां एक परिवार में एक कमजोर दिमाग का ९ साल का बच्चा रात्री में बिस्तर पर पेशाब कर देता था लेकिन जबसे उस घर में अग्निहोत्र किया जाने लगा वह बच्चा स्वस्थ हो गया।

अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में तो अग्निहोत्र विश्वविद्यालय की स्थापना भी हो चुकी है।

भारतीय मनीषियों ने यजुर्वेद में वर्णित यज्ञ विज्ञान के विधि-विधान को दैनिक कार्यक्रम में अपनाकर आध्यात्मिक एवं भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त किया था। उन दिनों वातावरण का शुद्धिकरण, असाध्य रोगों से निवारण, एवं अन्य वनस्पति-जन्य उपलब्धियों आदि के स्रोत केन्द्र यज्ञ ही थे।

यज्ञ का लघुतम स्वरूप "अग्निहोत्र" (जो एक प्राचीन वैदिक क्रिया है) आज कल विश्व के कई देशों में बीमारियां दूर करने प्रदूषण रोकने एवं कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए गृह-चिकित्सा के रूप में अपनाया जा रहा है। पश्चिम जर्मनी में तो अग्नि होत्र की पवित्र विभूति (भस्म) से सरल औषधियां भी बनने लगी है जिससे सिरदर्द, जुकाम, दस्त, पेट व नेत्रों की बीमारियां आदि दूर हो जाती हैं, वहां इसका नाम 'होम थेरेपी' रक्खा है।

फ्रांस के विज्ञान वेत्ता प्रो० टिलबर्ट के प्रमाणित कर दिया है कि खांड के धुएं में वायु शोधन की विलक्षण क्षमता होती है। इससे तपैदिक तथा अन्य बिमारियों के कीटाणु नष्ट होते हैं। चेचक के टीके के आविष्कर्ता डा० हेंफिकिन (फ्रांस) ने भी घी जलाकर परीक्षण किया था और बतलाया था कि अग्नि में घृत-आहुति देने से रोग के कीटाणु नष्ट होते हैं। डा० टाइलिट ने किशमिश, मुनक्का इत्यादि सूखे मेवों के परीक्षण के बाद बतलाया था कि उस धुएं में टाईफाइड के कीटाणु नष्ट करने की असाधारण क्षमता है। इसी प्रकार जायफल को जलाने से उसके तेल परमाणु कार्बन के कणों में घुसकर उन्हें शुद्ध बना देते हैं।

आजकल इंजेक्शन, टीके आदि का चलन बढ़ गया है, क्योंकि प्रभावी इंजेक्शन द्वारा औषधि को रक्त में पहुंचाने से त्वरित लाभ जाता है, परन्तु इससे भी अधिक कारगर सूक्ष्म उपाय प्राणी की सांसों के द्वारा यज्ञीय सौरभ को शारीरिक कोषों तक पहुंचाने की सात्विक क्रिया यज्ञौषधि है। इससे नैसर्गिक आनन्द की उपलब्धि भी होती है। अतः विज्ञान के परिवेश में यज्ञ चिकित्सा का महत्व भी विश्वव्यापी होता जा रहा है।

अग्नि होत्र यज्ञ : प्रदूषण से वैदिक रीति साकार हुई—

भारत के सूक्ष्म जीव वैज्ञानिक डा० अरविन्द मांडेकर ने अग्निहोत्र के धुएं का विश्लेषण किया है उनका कहना है कि धुएं में में सूक्ष्म जीवाणु शोधक करने वाला फार्मलीहाइड एवं अन्य अवरोधक तत्व होते हैं। प्रयोग करने के बाद में उन्होंने जाना कि कमरेमें सूक्ष्म जीवाणु की संख्या अग्निहोत्र के पश्चात् अस्सी (८०) टके कम हुई। इस अग्निहोत्र को वायु शोधक कहा गया है, यह केवल कल्पना ही नहीं है। आज प्रदूषण से बचाव में यह अत्यन्त सत्य सिद्ध हो रहा है जैसा कि भोपाल गैस दुर्घटना के दौरान प्रकट हुआ है। २१ दिसम्बर ८४ की रात दो बजे कछवाहा परिवार में छाती में दर्द, जी मिचलाना, आंखों में जलन व घुटन सी लगी उधर गली मोहल्ले के लोग यह सुनकर कि दो किलोमीटर दूर स्थित यूनियन कार्बाइड फैक्टरी में गैस लीक हो रही है वहां से भागने लग पड़े। पहले तो कछवाहा परिवार ने भी भीड़ के साथ भागने की सोची थी कि पत्नी ने सुझाव दिया कि घर में अग्नि होत्र क्यों नहीं कर लें ? हवन शुरु करके २० मिनट के अन्दर ही गैस के चिन्ह दूर होने शुरु हो गये। इसी तरह भोपाल रेल्वे स्टेशन के पास एक राठौर परिवार रहता है। इस स्टेशन के क्षेत्र में गैस दुर्घटना में सर्वाधिक मौतें हुई थीं। परन्तु इस परिवार ने जो पांच वर्षों से नित्य हवन करता आ रहा था, तत्काल अग्निहोत्र शुरु कर दिया और गैस के दुष्प्रभाव से बच गया। एक सजीव उदाहरण समुद्र पार चिली देश का है। हाल ही में वहां बर्फ का विनाशक तूफान आया था, लेकिन अग्नि होत्र करने वाले उसके प्रभाव से सुरक्षित बचे रहे।

सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंह जी महाराज भी अपने शिष्यों से कह गयेहैं कि जब से विदेशी तुर्कोंने हम भारतीयों को हवन करने से रोका है तब से ही इस देश में अकाल, महामारी आदि प्राकृतिक प्रकोप बढ़ रहे हैं। हमें हवन यज्ञ अवश्य करने चाहिएं ताकि हमारी सन्तानें स्वस्थ व होनहार बनें।

आज के युग में जब पृथ्वी, आकाश में सर्वत्र प्रदूषण ही प्रदूषण बढ़ रहा है तो इसके निवारण का एकमात्र उपाय यज्ञ, केवल यज्ञ ही है। तभी तो दूर-दृष्टा स्वामी दयानन्द सरस्वतीने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में होम के धार्मिक, पारमार्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व को स्पष्ट किया है।

ब्रह्मचर्य का पोषक महर्षि दयानन्द

आचार्य दिनेशचन्द्र शर्मा पाराशर वैदिक प्रवक्ता
एल ब्लाक जयप्रकाश नगर, घोण्डा दिल्ली-३१

भगवान् वेदने एवम् ऋषि-महर्षि योगी लोगों ने महान् पुरुषों ने अपने धर्म ग्रन्थों में ही या स्वजीवन में ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा गायी है। अथर्ववेद में ब्रह्मचर्य सूक्त है ग्यारहवें काण्ड में ब्रह्मचर्य का महान् वर्णन है। यहां तक वर्णन मिलता है—ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत ॥ अ० ११ ॥

अर्थात् ब्रह्मचर्य रूपी तप से दिव्य पुरुषों ने विद्वानों ने मृत्यु को दूर भगा दिया, पछाड़ डाला, मार डाला इन्द्र=भगवान् ने, राजा ने, नेता ने, जीवात्मा ने, वेदाध्ययन और धर्माचरण के द्वारा आस्तिक पुरुषों के लिए अधिकारी जनों के लिए, इन्द्रियों के लिए बहुत उज्ज्वल सुख, प्रकाश, ज्ञान, आनन्द, सौन्दर्य बल प्रदान किया है। है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला दीर्घ आयु को प्राप्त करता है। वे मृत्यु को भी जीत लेते हैं। जब राजा ब्रह्मचारी, सदाचारी होता है, तभी वह प्रजा को सुखी कर सकता है, अन्यथा नहीं। ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ जीवन की आधार शिला है। ब्रह्मचारी विद्वानों का सुयश तो अमर होता है। सदाचारी विद्वान् लोग विधिपूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत का अनुष्ठान करते हैं। साधारण लोग मृत्यु से डरा करते हैं। तत्व वेत्ताओं को मौत का क्या डर? जब मृत्यु की घड़ी आती है, प्रभु प्रेम के उल्लास से अनुप्राणित होकर वे तत्क्षण ही घोषणा किया करते हैं "जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनन्द। मरने ही से पाइये, पूरण परमानन्द। मौत यह मेरी नहीं, मेरी कजा की मौत है। क्यों डरूं? जब मरके दोबारा नहीं मरना मुझे।

ब्रह्मचारियों पर ईश्वर की विशेष कृपा रहती है। ये वे ही पवित्र आत्मा है, जो दिलों की दुनिया पर राज्य करते हैं। 'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठा या वीर्य लाभो भवत्यपि सुरत्वं मानवो याति चान्ते याति चान्ते याति परां गतिम् ॥

ब्रह्मचर्य के पालन से बल की प्राप्ति होती है—मनुष्य देव बन जाता है और मरने पर मोक्ष को प्राप्त करता है। ब्रह्मचर्य के पालन से बुद्धि बल, शरीर बल, आत्मबल, अत्यन्त बढ़ते हैं जिससे वह अत्यन्त शान्ति आनन्द सुख को प्राप्त करता है। (शतपथ० ११-३-६-२) में कहा है 'ब्रह्मचारी न काञ्चनार्ति मच्छति' अर्थात् ब्रह्मचर्य के धारण करने से किसी प्रकार का दुःख प्राप्त नहीं होता। वीर्यमेव बलं बलमेव वीर्यम् अर्थात् वीर्य ही बल है और बल ही वीर्य है। अतः जीवन में जितेन्द्रिय, सयमी, सदाचारी होना चाहिए। 'मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दु धारणात् अर्थात् वीर्य की एक बूंद भी नष्ट करना मृत्यु का कारण है और वीर्य की रक्षा करना जीवन का हेतु है। वीर्य शक्ति का अथाह स्रोत एवं विशाल भंडार है। वीर्य एक अनमोल रत्न है जिसके धारण से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष स्वयं-मेव सिद्ध हो जाते हैं। यह रोग और व्याधियों को दूर भगाने वाला है।

एक आदर्श ब्रह्मचारी इस युग में हुए, आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द, स्वर्गीय बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र लिखते हुए कहते हैं जिस प्रकार दयानन्द एक अत्यावश्यक हितकर और महान् विषय के श्रेष्ठत्व का कीर्तन कर गये हैं, वैसा अन्य किसी ने नहीं किया। शंकराचार्य, रामानुज, माध्वाचार्य, कबीर, गोरांग आदि महापुरुष वृन्द ने ब्रह्मचर्य के श्रेष्ठत्व और महत्व को परोक्षभाव और साधारण भाव से प्रतिष्ठित नहीं किया, परन्तु इतना अवश्य कहते हैं कि जिस असाधारण और अपरिहार्य भाव से ब्रह्मचर्य की आवश्यकता और गौरव का ऋषि दयानन्द प्रचार कर गए हैं, वैसा अन्य किसी आचार्य को करते हुए हमने नहीं देखा। मुरादाबाद के स्व० राजा जय किशनदास ने कहा था जिस ओर जिस आग्रह और उत्साह के साथ स्वामी जी ब्रह्मचर्य की आवश्यकता प्रतिपादन करते थे उस प्रकार से इस विषय पर बोलते हुए हमने किसी को नहीं सुना "वह सबसे अधिक बल ब्रह्मचर्य पर दिया करते थे।" ऋषि दयानन्द का निश्चल विश्वास था कि ब्रह्मचर्य के बिना मनुष्य का किसी प्रकार का कल्याण साधित नहीं हो सकता। चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, धार्मिक हो, या आध्यात्मिक हो जैसे ब्रह्मचर्य के बिना राजा के लिए सुप्रणाली के अनुसार राज्य शासन करना असम्भव है और शरीर के लिये सुसन्तान करना असम्भव वैसे ही ब्रह्मचर्य के बिना जाति विशेष का उन्नयन और अभ्युत्थान भी असम्भव है। वह बार-बार कहा करते थे कि यदि इन मृत प्रायः मनुष्य जाति को पुनर्जीवित करना है, इस हत-रंस्व आर्यावर्त्त के शिर को एक बार फिर गौरव मुकट से मण्डित करना है। तो इसका उपाय ब्रह्मचर्य की रक्षा करने के सिवाय अन्य कुछ नहीं है। इसीलिए उन्होंने प्राचीन ब्रह्मचर्याश्रम के पुनरुद्धार के लिये विशेष यत्न किया था और इसीलिये उन्होंने (महर्षि दयानन्द ने) गुरुकुल के स्थापना की व्यवस्था की थी। महर्षि दयानन्द जैसे स्वयं निष्कलंक ब्रह्मचारी थे और जैसा लाभ ब्रह्मचर्य द्वारा उन्होंने स्वयं उपलब्ध किया था, वैसे ही निष्कलंक ब्रह्मचारी वह अन्य साधारण मनुष्यों को बना, वैसा ही लाभ उपलब्ध कराना चाहते थे। इसी हेतु से ऋषि दयानन्द वह अपने देशवासियों से ब्रह्मचर्य धारण करने का बारम्बार आग्रह अनुरोध करते थे। ऋषि दयानन्द भारत वासियों से सदा ही बल पूर्वक कहा करते थे कि तुम बच्चों के बच्चे और लड़कों के लड़के हो। यदि कोई उनसे पूछता कि आप ऐसा क्यों कहते हैं तो वह यही उत्तर दिया करते थे कि भारत वर्ष में आजकल माता-पिता ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं करते और इसीलिए भारत भूमि में बच्चों के बच्चे ही जन्म ग्रहण करते हैं। यह देश सर्वथा मनुष्य विहीन और मनुष्य शून्य हो चला है। भारत की महिमा का मूल क्या था? ब्रह्मचर्य? आर्यों की जिस सर्वोच्च प्रतिभा को देखकर प्राचीन यूनान और रोम आश्चर्यान्वित हो गये थे उसका हेतु क्या था? ब्रह्मचर्य! जो उपनिषदादि अनुपम और उपादेय ग्रन्थ-माला के रचयिता थे, वह कौन थे? ब्रह्मचारी! रामायण और महाभारत के जिस अलौकिक सौन्दर्य को देखकर मनुष्य मंडली अवाक् रह जाती है, उसके सृष्टिकर्त्ता कौन थे? ब्रह्मचारी! गम्भीर विचार शीलता और तत्वानुसन्धान के अद्भुत क्षेत्र स्वरूप सांख्य-मीमांसा की रचना किन्होंने की? ब्रह्मचारियों ने! अर्थनीति, युद्धनीति, व्यवहार नीति और धर्मनीति के प्रवर्तक कौन थे? ब्रह्मचारी! पाणिनी का पुनरुद्धार साधन पूर्वक भाषानु-वादक, साहित्य विज्ञान के पथ का प्रचारक कौन था? एक ब्रह्मचारी! भारत भूमि का जो कुछ संबल, जो कुछ गौरव, जो कुछ प्रतिष्ठा थी उस सबके मूल में ब्रह्मचर्य ही विद्यमान था।

अतः जब तक ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान होता रहेगा, तब तक भारत के विजय होने की सम्भावना नहीं हो सकती, जब तक ब्रह्मचारी का उदय होता रहेगा तब तक मनुष्य जाति के लिए निराश होने का कोई कारण नहीं है। यह निश्चय है कि यदि आर्यावर्त्त फिर जागेगा यदि इन पर दलित पराजित जीवी मनुष्यों का पुनरुत्थान होगा तो ब्रह्मचारियों के द्वारा ही होगा। यदि आर्यों का अखण्ड गौरव फिर कभी वापस आकर चमकेगा तो ब्रह्मचर्य की ही महिमा से चमकेगा। क्योंकि बल, बुद्धि, वीर्य, मेधा, [illegible] [illegible], विशेषता और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

'धर्म-निरपेक्ष' भारत गणराज्य और कश्मीर

—त्रिलोकी नाथ भट्ट उपाध्यक्ष, कश्मीरी समाज, आगरा

कश्मीर घाटी में फरवरी मास में हुये भीषण दंगों में वहाँ की निहत्ती अल्प संख्यक हिन्दू जनता पर ढाये गये अत्याचारों (जैसे लूटमार, आगजनी, निजी सम्पत्ति तथा धर्मस्थलों का विध्वंस, महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार आदि) के सम्बन्ध में जितने भी लेख, सम्पादकीय तथा टिप्पणियां आपके सम्मानित पत्र में गत कई सप्ताह से प्रकाशित होते आये हैं। वे न केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण अपितु सामयिक हैं। इनके लिये कश्मीर की हिन्दू जनता ही नहीं, देश के प्रत्येक विचार-शील व्यक्ति को आपका आभारी होना चाहिये।

वास्तव में आर्य समाज ही देश का विश्व भर की एक मात्र ऐसी संस्था है। जो सदा मानव कल्याण की ही बात सोच सकती है। इस उपेक्षित हिन्दू समाज के हितों की रक्षा के कार्य में भी अग्रणी है। हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने सर्वप्रथम उन पीड़ित कश्मीरी पण्डितों के प्रति सहानुभूति एवं समवेदना प्रकट करते हुये उनको भारत सरकार के उच्चाधिकारियों के अतिरिक्त प्रधान मन्त्री तक से मिलवाया। यह क्या कम सेवा है?

अब पूज्य श्री वानप्रस्थ जी ने यह मांग कि पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर राज्यों को पांच वर्षों के लिये सैनिक शासन के अन्तर्गत लाया जाये ये भी एक अत्यन्त ही बुद्धिमता पूर्वक तथा तर्क-संगत सुझाव है। प्रत्येक मननशील राष्ट्र भक्त को इसका बलपूर्वक समर्थन करना चाहिये।

कौन नहीं जानता, इस सीमावर्ती, संवेदनशील प्रदेश में भारत सरकार को देश के विभाजन के तुरन्त पश्चात से ही किन-२ भयंकर परिस्थितियों से दो-चार होना पड़ा है। अब तक समस्यायें ही समस्यायें खड़ी होती जा रही हैं। और चारों ओर से यहां का हिन्दू ही पिसा जा रहा है। यह कहना भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कि देश के प्रथम प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू के मस्तिष्क से उपजा वह 'धर्म निरपेक्षता' का सिद्धान्त (जिसका आविष्कार उन्हें मूलतः इस कश्मीर घाटी को ही लक्ष्य बनाकर करना पड़ा था) यदि इतिहास का एक बड़ा ही उपहास कहीं सिद्ध हुआ तो वह भी इसी कश्मीर घाटी की ही पृष्ठ भूमि है। आज तक भारत सरकार के कोष से कितने अरब, कितने खरब रुपये इस राज्य की सुरक्षा तथा इसके आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के नाम पर व्यय हुये। यदि उसका एक प्रतिशत भी देश के अन्य पिछड़े हुये राज्यों जैसे उड़ीसा, बिहार, उत्तर प्रदेशादि पर लगाया गया होता तो यहां की दरिद्रता की दशा इतनी भयावह नहीं होती। परन्तु इस तथाकथित 'धर्मनिरपेक्षता' का सबसे बड़ा शिकार यह कश्मीर का हिन्दू और तत्पश्चात समूचे देश का बहुसंख्यक कहलाने वाला यह हिन्दू समाज ही सदा से बना आ रहा है। हमें विस्तार में जाने की आवश्यकता ही नहीं। देश का प्रत्येक यथार्थवादी नागरिक वस्तुस्थिति से परिचित है।

सबसे बड़ी दुर्भाग्य की बात यह है कि इस कश्मीर की स्थिति को नष्ट भ्रष्ट करने वाले मुख्यतः वहां के कतिपय वही नेता हैं जिन्होंने अपने आपको सदा ही राष्ट्रवादी, समाजवादी, तथा धर्म-निरपेक्षता में आस्था रखने वाले अग्रणी नेता घोषित कर बड़े बड़े राष्ट्रीय नेताओं को भ्रम में डाले रखा। इनमें सर्वप्रथम लीजिये—शेरे कश्मीर, मरहूम शेख मुहम्मद अब्दुल्ला को। जिनकी अब भी देश के बड़े 'सेक्यूलर तथा राष्ट्रीय नेताओं में ही गणना की जाती है हम उनकी अन्य विशेषताओं का यहां पर विस्तार भय से उल्लेख न करते हुये एक दो बातों पर ही थोड़ा सा विचार करेंगे कि अपने सारे राजनीतिक जीवन में कभी उन्होंने एक भी ऐसा उदाहरण प्रस्तुत नहीं किया किया कि वे इस भारत देश के वासियों की एक राष्ट्रीयता, विचारधारा या उनकी भावनात्मक एकता के पक्षधर रहे हों। उल्टा वहां तक उनकी शक्ति काम करती रही। वे अलगाव वादी प्रवृत्तियों का ही परिचय देते रहे। जैसे—

१—एक राष्ट्रीय नेता के रूप में १९४६ में उनको सर्वप्रथम भारत की तत्कालीन 'संविधान सभा' का सदस्य बनाया गया। वहां पर उन्होंने अपने घनिष्ट मित्र तथा प्रशंसक श्री नेहरू के हृदय तथा मस्तिष्क पर पूर्ण रूप से प्रभाव डालकर कश्मीर के लिये धारा ३७० जुड़वाई। इसके पश्चात कश्मीर के लिये प्रथम संविधान, प्रथक् 'रेडियो कश्मीर,' एक और प्रधान मन्त्री एक 'सदरे रियासत' यहां तक कि भारत की सर्वोच्च न्यायालय की परिधि से बाहर एक अलग 'सलतनत' स्थापित कराके ही वहां से उठे। तत्पश्चात अपनी उसी प्रथकवादी नीतियों का अन्धाधुन्ध पालन करते-२ १९५३ में अपने उस परम मित्र तथा भारत के तत्कालीन प्रधान मन्त्री के उपकारों तक को भूलकर उनके ही नहीं अपितु देश की अखण्डता तक के प्रति भी विद्रोह करने से उन्होंने संकोच नहीं किया। उनकी इन देश घातक चालों को भापने के पश्चात ही जवाहरलाल नेहरू ने इस ढोंगी तथा अलगवादी 'नेता' का तुरन्त ही पता कटवा दिया था। जिसके फलस्वरूप वे पूरे १८ वर्ष तक एक माने हुये बागी के रूप में अपने एक और सहायक अलगाववादी अफजल बेग के साथ कई कारागारों की शोभा बढ़ाते रहे।

इन दोनों 'राष्ट्रीय' नेताओं ने जो भारत विरोधी विचारधारा तथा प्रथकवादिता की भावना को अपने उस कारावास की अवधि में प्रसारित किया वह किसी से छुपी नहीं। उनके कार्यकाल में वहां पर हिन्दुओं के साथ भेद-भाव, नौकरियों तथा उच्च शिक्षाओं के प्रवेश में पक्षपात आदि की संकीर्ण नीतियां पनपीं। बड़े ही सूक्ष्म रूप से हिन्दुओं का काश्मीर घाटी से पलायन कराने की नीतियां तब ही से अपनाई जा रही थीं। शेख साहब तथा उनके परिवार जन अब जनमत मोर्चे के समर्थक बने थे।

२—२२ वर्ष तक कलाबाजियां खाते-२ जब यह दोनों तथाकथित 'राष्ट्रीय' तथा 'सेक्यूलर' नेता पुनः १९७५ में कश्मीर की राजगद्दी पर आरूढ़ हुये। तो अपने स्वभाव के वशीभूत होकर दोनों ने अपने पुराने अपमानों का बदला चुकाने के अभिप्रय से रही-सही भारतीय संस्कृति का जम्मू-कश्मीर राज्य से सफाया करने की ओर बड़ी तन-मयता से अपनी शक्ति लगाना आरम्भ किया। दोनों तो सिद्धान्त से पक्के 'कट्ट-पन्थी' थे ही।

अब उन्होंने धीरे-२ कश्मीर को भारत के तिरंगे झंडे तले ही एक सुन्दर से 'मिनी पाकिस्तान' का रूप दिया। बेग साहब को सत्ता से बाहर धकेल कर तो यह 'सेक्यूलरिज्म' के विश्व विख्यात 'अलमबरदार' अब यहां के एक बेताज 'सुलतान' ही बन गये थे। अब तक किसी हिन्दू छात्र को मेडिकल, इन्जीनियरिंग में योग्यता के उच्चतम शिखर पर होते हुए भी यदि प्रवेश नही दिया जाता और वह उच्च-न्यायालय से 'रिटपेटीशन' में जीत भी जाता। परन्तु राज्य सरकार के गुप्त (भेद-भाव वाले) आदेशों के प्रभाव में बहुधा उस न्यायालय के आदेशों की धज्जियां ही उड़ा दी जाती थीं। फलतः अधिकतर हिन्दू प्रत्याशियों को जीविका की खोज में देश के अन्य भागों में बराबर जाना पड़ रहा है।

१—शेख साहब के जीवन काल में ही कश्मीरघाटी में बहुत सारे ऐसे गांव तथा छोटे कस्बों के नाम भी बदल दिये गये जो हिन्दुओं के धर्मस्थलों या हिन्दी भाषा से सम्बन्धित थे। जैसे 'उमानगरी' का पुराना नाम था 'शेख पुरा' में परिवर्तित किया गया। यह भी कोई छुपी बात नहीं है।

४—यह भी एक सत्यकथा है कि कुछ ही वर्ष पूर्व इसी 'धर्म-निरपेक्ष' नेता ने राज्य में एक गुप्त आदेश के द्वारा गीता तथा सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थों को समस्त लाइब्रेरियों तथा सरकारी कार्यालयों से हटवाने तक का दुःस्साहस किया था। अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय आर्य नेताओं के अथक प्रयासों से ही उस आदेश को उन्हें निरस्त करना पड़ा था।

५—स्वर्गीय नेहरू की भांति ही उनकी सुपुत्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी शेखसाहब के परिवार को असंख्य लाभ पहुंचाये, गद्दारी के बदले में उनको इन्दिरा जी ने पुनः गद्दी सौंप तो दी थी। परन्तु उनकी अत्यन्त संकीर्ण तथा अलगाववादी उस प्रवृति को आज तक कोई बदल नहीं सका।

६—१९८२ में शेख साहब के देहावसान के पश्चात सर्वप्रथम उन के सुपुत्र डा० फारूख ने सत्ता हथिया ली। उनका गत २० वर्षों का जीवन काल भी अब किसी से छुपा नहीं है। अपने तत्कालीन अप-दस्थ पिता के भारत विरोधी गुप्त अभियान में डा० फारुख, उनके भ्रातृगण, भगिनी तथा बहनोई जी भी अपना परिचय भली भांति पहले से ही दे चुके थे। शायद ही कोई भूला होगा।

७—मुख्य मन्त्री पद सम्भालने के तुरन्त पश्चात डा० फारूख ने अपने स्वर्गीय पिता की भांति ही अपने 'उपकारक' नेहरू परिवार के साथ भी टक्कर की घातक नीति अपनाई। हिन्दू हितों पर कुठाराघात कर, पंजाब के आतंकवादियों को जम्मू कश्मीर में प्रशिक्षण केन्द्रों की गुप्त रूप से छूट देने तथा कश्मीर में राष्ट्रविद्रोही, पाकिस्तानी तत्वों तथा कट्टर पन्थी साम्प्रदायिक नेताओं के साथ गठ-जोड़ के बावजूद भी वे अन्त तक अपने को एक 'सेक्यूलर' राष्ट्रवादी ही घोषित करते रहे। परन्तु अपने कुकृत्यों की पराकाष्ठा पर ही वे तुरन्त ही सत्ता हाथ से खो बैठे। उनके कार्य-काल में भी कश्मीर घाटी से हिन्दुओं का धीरे-२ पलायन जारी रहा। क्योंकि उनके सारे ही गुटबाज भी बहुसंख्यकों के तुष्टीकरण में ही संलग्न थे।

८—दुर्भाग्य से फिर वही सत्ता जी एम शाह जैसे 'फिरकापरस्त मौका परस्त' 'भ्रष्टाचारों के सरगना' तथा सैद्धान्तिक रूप से भारत की सत्ता को सदा से चुनौती देने वाले एक पाखण्डी नेता के हाथ में आई थी। अपने काले कार्यकलापों से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वास्तव में उन्होंने राष्ट्रीय हितों के साथ विश्वास घात ही किया है। सत्ता से मुक्त होने के कुछ ही दिनों में वे अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने लगे हैं। यदि हमारे राष्ट्रीय नेताओं के मस्तिष्क अब कुछ सबक सीखने की स्थिति में पहुंच गये हों तो उनको सर्वप्रथम ऐसे देश के शत्रुओं के विरुद्ध अभियोग चलाने से संकोच नहीं करना चाहिये। वर्तमान में यही समय की पुकार है।

कश्मीरी हिन्दुओं में भय तथा अविश्वास की लहर व्याप्त!

भले ही अपने देश में इस धर्मनिरपेक्षता के कहीं कुछ अवशेष रह गये हों। कम से कम कश्मीर में वह कब का 'दफन' हो चुका है। इस धर्मनिरपेक्षता पर सदा से बलिदान होते आ रहे कश्मीर घाटी में बचे-कुचे मुट्ठी भर असहाय हिन्दुओं की संख्या जो ५० वर्ष पूर्व लाख की थी अब मुश्किल से ६०-६५ हजार ही रह गई बताते हैं। यह सब अब अस्थिरता, आतंक के वातावरण में ही अपने दिन बिता रहे हैं। अनेकों तो अब शरणार्थी बनकर शिविरों में रह रहे हैं। उनके पुनर्वास की भी एक जटिल समस्या उत्पन्न हुई है।

यहां इस तथ्य से इंकार भी नहीं किया जा सकता कि स्वर्गीय शेख मु० अब्दुल्ला के जीवन काल में वहां पर बसे हिन्दुओं के कम से कम जान व माल तो सुरक्षित थे। उन्होंने कभी भी उन अराष्ट्रीय तथा पाकिस्तानी तत्वों को इस प्रकार के अत्याचारों की खुली छूट नहीं दी। वे एक दूरदर्शी तथा परिपक्व राजकीय नेता थे। और जानते थे कि इस विशाल देश में ७ से ८ करोड़ मुसलमान भी अल्प संख्यकों के रूप में ही सम्मान तथा सुरक्षता के वातावरण में अन्यत्र निवास करते हैं। परन्तु उनके इन 'जानशीन' (उत्तराधिकारी) नेताओं में सत्ता का उन्माद तथा साम्प्रदायिक कटुता एवं कट्टरता कूट कूटकर भरी होने के कारण वे कभी कोई विशाल दृष्टिकोण अपना ही नहीं सकते थे। आज कश्मीर का क्या देश का कोई भी सच्चा देश भक्त (हिन्दू) न तो डा० फारूख, न ही वहां के किसी अन्य नेता पर विश्वास कर सकता है।

अब धारा ३७० को उड़ाना ही एक मात्र बचाव है!

हमारी और समस्त विचारशील भारतीयों की अब एक ही धारणा है कि जब तक संविधान की यह देश घातक धारा ३७० पूर्णतया: निरस्त नहीं की जाती। कश्मीर का उन्मादग्रस्त बहुसंख्यक कभी भी भारत के प्रभुत्व को न अब तक स्वीकार कर चुका है, न कभी भविष्य में करेगा।

अतः पांच वर्ष के लिये वहां का शासन अर्द्ध सैनिक सत्ता के अन्तर्गत ही लाना एक मात्र बचाव का उपाय है। "ईश्वर हमारे प्रधान मन्त्री को भुक्त (सही) दिशा में चलने की सद्बुद्धि प्रदान करे। ओम् शम्।

(पृष्ठ ६ का शेष)

महर्षि दयानन्द

शारीरिक पराक्रम जिस प्रकार ब्रह्मचर्य पर निर्भर है, मनुष्य की आशा, उत्साह, अभ्यव साम, कष्ट सहिष्णुता, श्रम शीलता, तितिक्षा और अटल प्रतिज्ञता आदि का संचार और परिपुष्टि भी उसी प्रकार ब्रह्मचर्य पर निर्भर है। जैसे अपने जीवन में महर्षि दयानन्द निष्कलंक ब्रह्मचर्य का परिचय देकर अपनी विद्या, पाण्डित्य और प्रतिभा आदि के विषय में असाधारणत्व को प्रतिष्ठित कर गये हैं, वैसे ही महर्षि दयानन्द अपने जीवन में ब्रह्मचर्य को सर्वोच्च आसन पर स्थापित करके इस देश का महान् संस्कार कर गये हैं।

अपने ही हुए हैं पराये

—श्री यशपाल 'मन्त्री' आर्य वीर दल
रसूलपुर कलां बदायूं (उ० प्र०)

आज मैं अपने मित्र के घर गया। देखा कि सामने मेज पर एक पत्रिका रखी थी 'सरिता' अंक ७१५। मैंने उसमें लेख चुना अश्वमेघ यज्ञ हिंसा और अश्लीलता का तांडव नृत्य' लेखक डा० सुरेन्द्रकुमार शर्मा। उसे पढ़कर मैं बुरी तरह दुःखी हुआ।

डा० साहब ने जिस रामायण द्वारा अंश प्रतिपादित किये हैं। वह मुगल एवं अंग्रेजों के शासनकाल में [गुलामी में] किन्हीं नीच, बेहूदे लोगों ने हमारी दिव्य संस्कृति और-वेदों से विश्वास हटाने हेतु अनेक हथकंडे अपनाकर यह लिखी होगी। लेखक का तर्क ऐसे ही गुलामी में हुई रचना द्वारा प्रतीत होता है। लेखक निम्न पंक्तियों पर ध्यान दें।

उन्नसवीं शताब्दी का इतिहास घोर अन्धकारमय था। उस समय आर्यावर्त्त के एक भूखण्ड भारत पर अविद्या और कुरीतियां रूपी अन्धकार की घनघोर घटाएं छाई हुई थीं। भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति लगभग समाप्त हो चुकी थी। हमारे साहित्य की होली प्रथम मुगलों ने, बाद में अंग्रेज लार्ड मैकाले ने दिलभर के जलाई। भारतीय इतिहास तोड़-मरोड़कर पेश [प्रस्तुत] किया गया। इसके कारण समाजमें ऐसा अंकुरण हुआ कि वह आगे चलकर कई शाखाओं में फैल गया और नये-नये धर्म ग्रन्थ बनने आरम्भ हो गए। इन ग्रन्थों के द्वारा यदि कोई विदेश चला जाये तो धर्म भ्रष्ट, शूद्र जाति के द्वारा छू लिया तो धर्म भ्रष्ट, मुसलमान, पादरी या अन्य के साथ बैठकर दूध पी ले तो जाति भ्रष्ट। इस भांति नाना भांति के पाप पाखण्ड फैल गये थे। जिनकी छाप अब भी है। ऐसे ही शास्त्रों में अब भी पुनरावृत्ति डा० साहब जैसे लेखक कर देते हैं। इन शास्त्रों के रचयिताओं ने 'स्त्री शूद्रो नाधीयताम' कहकर स्त्री और शूद्रों को वेद पठन-पाठन से वंचित कर दिया। शंकराचार्य, माध्वाचार्य महीधर जैसे ढोंगी पाखण्डियों ने गलत प्रचार करके वेदों से व्यक्ति की रुचि प्रायः नष्ट कर दी थी। वेदों का स्थान ऐसे भ्रष्ट लोगों के ग्रन्थों ने ले लिया था। ऐसे ऊंट-पटांग प्रतिबन्ध लगा देने से समाज बिखर गया और कुरीतियों ने जन्म लिया और मनुष्य इन ग्रन्थों पर विश्वास करने लगा ऐसी ही गुलामीमें निर्मित रामायण जिसे बाल्मीक के नाम पर जनता को धोखा दिया, के अंश डा० साहब ने प्रस्तुत किये हैं। अब आप देखें सही अब बाल्मीकीय रामायण के बालकांड सर्ग ६,७,८ श्लोक क्रमशः १ से ६, १ से १३, १ से १६। महाराज दशरथ ने पुत्र की कामना से पुत्रेष्टि यज्ञ किया था न कि अश्वमेध यज्ञ। यदि महाराज ने अश्वमेध यज्ञ किया तो उसका कारण दृष्टव्य है।

अश्वमेध यज्ञः—राजा के द्वारा किंचित मात्र एक अश्व जिसे उसके प्रभाव सम्पन्न प्रदेश में स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण हेतु छोड़ा जाता था, जिसकी देखरेख सेना के उच्चाधिकारी स्वयं करते थे। यदि उस घोड़े का कोई अपमान करता था तो वह राजा का चिह्न होने के कारण राजा का अपमान होता था और युद्ध आदि अपनी प्रतिष्ठा हेतु होते थे किन्तु इसके विपरीत अश्व का स्वागत होता तो राजा उसे अपने राष्ट्र की सुख शान्ति से मैत्र लगाता था जिसके उपलक्ष में राजा यज्ञ करता था।

ऐसे यज्ञों में शुद्ध घृत तथा शुद्ध वनस्पति औषधियां (सामग्री) का प्रयोग होता है न कि डा० साहब के अनुसार घोड़े की चरबी या उसके अंग स्वाहा करना। आप शुद्ध ज्ञान वेदों को पढ़कर पुनः प्राप्त कर लें।

कुछ असंगत बातें हैं जैसे रानी का घोड़े से मिलाना आदि। अतः आप यजुर्वेद भाषा भाष्य महर्षि स्वामी दयानन्दकृत अवश्य पढ़ें। इसे पढ़ने के पश्चात् निश्चित है कि आप अपने लेख पर प्रायश्चित करेंगे।

महाभारत और अश्वमेध— महाभारत सम्पूर्ण तो गलत नहीं किन्तु जैसा मैं पहले लिख चुका हूं कि इसमें अधिकतर विरोधियों ने गप्पें लिख मारी हैं। अश्वमेध के अन्तर्गत व्यास द्वारा यह कहना कि अश्वमेध से व्यक्ति के सारे पाप धुल जाते हैं तत्पश्चात् युधिष्ठिर ने ऐसे यज्ञ के लिए ३०० पशुओं की बलि दी और घोड़े की चरबी आहुति के रूप में हवन में डाली सोचिये क्या धर्म का रक्षक इस प्रकार का राक्षस बन सकता है? अवश्य ही ऐसा ग्रन्थ किसी राक्षस ने लिखा होगा।

ऐसे यज्ञ से यजमान को पापों से मुक्ति तो नहीं अपितु इसके पापों में और वृद्धि होती है क्योंकि वह पापों के नाश के बदले में अन्य जीवों को नष्ट करके और पाप कमाता है। क्या गीताप्रेस गोरखपुर भी महाभारत, षष्ठ खण्ड, हिन्दी अनुवाद सहित पृ० ६२१०-६१ पर ऐसा लिखता है तो सभी ऋत्विक अपने बुद्धि विचार पर ध्यान दें।

ध्यान देने योग्य बात तो यह है कि यह ग्रन्थ कब, कौन सी दुष्ट गुलामी की आत्मा थी। जिसने इन्हें इतना भ्रष्ट बना दिया हम सुनें, पढ़ें, समझें और मनन कर पश्चात् विचार व्यक्त करें तब कहीं बात अकाट्य होती है किन्तु लेखक श्री डा० साहब भावुक हैं और उन्होंने उल्टा, सीधा लिख मारा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि डा० साहब किसी मिशनरी से धन हड़प बैठे हैं। तभी तो तोड़ मरोड़ कर रहे हैं। डा० महोदय हमें यह बताने का कष्ट करें कि यजुर्वेद के कौन से मन्त्र में लिखा है कि पटरानी घोड़े के वीर्य छोड़ने वाले लिंग को खींचकर अपनी योनि में प्रविष्ट करें। क्या ऐसा सम्भव है?

आंखों पर हरा चश्मा लगाने पर हर वस्तु हरी दिखाई देती है आप भी उन्हीं में से एक हैं। आप चश्मा उतार फेंकिये और ज्ञान सागर में गोते लगाइये तब आपको यथार्थ स्थिति ज्ञात होगी। यज्ञ के विषय में यजुर्वेद का प्रथम तथा द्वितीय अध्याय पढ़ो। उसमें त्रुटि कहीं नहीं है हां तुम्हारे जैसे बुद्धि वालों ने त्रुटि कर दी है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना श्रेष्ठ पुरुषों का कर्तव्य है। चाहे वह किसी वर्ण या जाति का क्यों न हो? इसके विपरीत जो लेख देते हैं वे पक्के भ्रष्ट, नीच प्रवृत्ति के स्वार्थी तत्व हैं।

यज्ञ करना श्रेष्ठ कर्म है और श्रेष्ठ किसी भी आत्मा को किसी प्रकार का कष्ट न देने का नाम है। फिर यज्ञ का विस्तृत वर्णन यजुर्वेद में है, पढ़ें। बड़े शर्म की बात है कि मनीषी पुरुष भी वेदों का पालन नहीं करते हैं। उल्टे दोष निकालते हैं। ऐसा कोई हिन्दू शास्त्र नहीं जो कि अश्व या अन्य जीव का आलंगन करने की अनुमति दे और ऐसा है भी कोई मनुष्यकृत ग्रन्थ तो वह राक्षसकृत होगा। महीधर अथवा भीमसेन शर्मा तो मानव की खाल में राक्षस थे। धर्म ग्रन्थ क्यों पढ़े जाते हैं? ताकि शुद्ध वातावरण बन सके, समाज दृढ़ बन सके, सभी चरित्रवान बनें।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्य समाज प्रेम नगर करनाल, (हरियाणा) मा० रामशरण आर्य प्रधान, उमेश चन्द्र गोयल मन्त्री, गोविन्द राम काठपालिया कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज शाखा मानपुर (बिहार) इन्द्र देव नारायण प्रधान, जगत बिहारी वर्मा मन्त्री, महावीर प्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

—मानपुर (बिहार) भोलानाथ शर्मा प्रधान, अशोक कुमार मन्त्री, धीरेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

—गोरखपुर (उ०प्र०) रामशरन चौधरी, प्रधान, भीमचन्द्र मन्त्री, किशोरी लाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—कानपुर, राधा किशन छोटा प्रधान, आदित्य कुमार पांडे मन्त्री, हरिहर साहू कोषाध्यक्ष चुने गए।

—वाराणसी, तुलसीराम प्रधान, रामफेरन मन्त्री, रामराज मौर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—डाक पत्थर, वृजेन्द्र सिंह सोलंकी प्रधान, महिपालसिंह मन्त्री सुरेन्द्र पाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—बहराइच, बख्शी राम मोहन प्रधान, भरतसिंह मन्त्री, हरी राम वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

रसौली, स्वामी दयाल प्रधान, रमाकान्त मन्त्री, जगदीश प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आयुध निर्माणी क्षेत्र, रघुवीरसिंह प्रधान, देवेन्द्र प्रकाश मंत्री, ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

—सिरकोनी जौनपुर, रामराज यादव प्रधान, पारस नाथ निगम मन्त्री, सत्यव्रत आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—फैजाबाद, दुर्गाप्रसाद गुप्त प्रधान, रामप्रकाश राजपाल मन्त्री, श्यामपाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—मुजफ्फर नगर, विश्व बन्धु जी आचार्य प्रधान, अंगद दत्त शर्मा मन्त्री, हरदत्त शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—चोपन मीरजापुर, ममल मिस्त्री प्रधान, डा० विशीराम मंत्री, सत्यनारायण कोषाध्यक्ष चुने गये।

—भोला नगर डा० बादऊ, बाबू सिंह प्रधान, आनन्द कुमार मन्त्री चुने गये।

—झज्झर डा० खास, मोमराज सिंह प्रधान, रामसिंह प्रेमी मंत्री, चुने गये।

—शास्त्री नगर-मेरठ, देवदत्त शर्मा प्रधान, राजेन्द्र कुमार मन्त्री, बलवन्त राय कोषाध्यक्ष चुने गए।

—फतेह पुर, देवेन्द्र प्रकाश प्रधान, डा० हर्ष वर्धन मन्त्री, राजनारायण कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज माडल टाऊन लुधियाना का वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

लुधियाना ३ मार्च।

आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना का वार्षिक उत्सव पूर्व निश्चयानुसार २८, २९, ३० मार्च को बड़े उत्साह के वातावरण में प्रारम्भ किया।

दिनांक २८ मार्च को प्रातः विधि पूर्वक यज्ञ आरम्भ हुआ। आर्य पुरुष और देवियां भारी संख्या में यज्ञ में भाग ले रहे थे। उसी समय दरेसी मैदान में उग्रवादियों द्वारा निहत्थे नागरिकों पर निर्मम गोली कांड की खबर सारे नगर में फैल गई।

आर्य समाज माडल टाऊन में यज्ञ करते हुए आर्य बन्धुओं ने इस सूचना को बड़े दुःख और आश्चर्य से सुना।

आर्यसमाज माडल टाऊन के अधिकारियों ने इस दुःखद घटना की निन्दा करते हुए जनता से शांत वातावरण बनाए रखने की अपील की।

आर्य समाज का उत्सव बराबर तीन दिन तक बड़े उत्साह के वातावरण मे चलता रहा। इस अवसर पर प्रो० रतनसिंह जी गाजियाबाद, पं० यशपाल जी मुरादाबाद, कुमारी विमला छाबड़ा बरनाला, पं० विजयकुमार जी सभा से ठाकुर दुर्गासिंह जी आदि के प्रभावशाली भाषण और भजन हुए।

आर्य समाज के इस शानदार उत्सव से आर्य हिन्दू जनता मे आत्मविश्वास और अपने देश के प्रति गौरव की भावनाएं उत्पन्न हुई। इस उत्सव के लिए समाज के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

महामहिम राष्ट्रपति द्वारा विश्वकर्मीयनम: पुस्तक का विमोचन !

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का समस्त साहित्य महामहिम को सप्रेम भेंट !!

श्री ज्ञानी जैलसिंह द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में हुए प्रयास की सराहना

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री पं० बाल दिवाकर हंस के सद्प्रयास से विश्वकर्मीय नम पुस्तक का विमोचन महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने ३ फरवरी १९८६ को किया और ग्राम्य विकास में शैक्षणिक स्तर कायम करने वाले विद्वानों की प्रशस्ति करते हुए पुस्तक के लेखक श्री प० हुकमचन्द शर्मा को बधाई दी।

श्री हंस ने श्री पं० बहालसिंह, श्री चौ० किशोरसिंह, श्री शकरलाल शर्मा, श्री सुरेन्द्र हिन्दी, देवराज शास्त्री वेदराम सरपच नगला कानपुर आदि महानुभावो का परिचय राष्ट्रपति महोदय से कराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा लिखित राष्ट्रीय चेतना मे योगदान करने वाले साहित्य को भी महामहिम राष्ट्रपति महोदय को भेंट करते हुए श्री हस ने उन्हे बताया कि आर्यसमाज किस प्रकार राष्ट्रीयता का नयी पीढ़ी मे बीजारोपण कर रहा है। राष्ट्रपति महोदय ने आर्यसमाज के इन युवा उत्थान कार्यक्रम की सराहना की और (श्री ला० रामगोपाल शालवाले को स्मरण करते हुए अपने सचिव से कहा वे मुझसे मिलना चाहते थे, उन्हें समय दें और सूचित कर दे। राष्ट्रपति महोदय ने आगुन्तक व्यक्तियो के साथ प्रसन्नमुद्रा मे अनेक चित्र खिचवा कर उन्हें उपकृत किया। अन्त मे श्री हस ने राष्ट्रपति महोदय का धन्यवाद करते हुए अभिवादन किया।

—सम्वाददाता
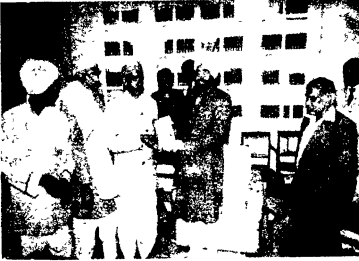
महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानीजैलसिंह प्राचीन विज्ञान भव्य दर्शन पुस्तक का विमोचन करते हुए।

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी को राष्ट्रपति भवन मे आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस सार्वदेशिक आर्य वीर दल के साहित्य को भेंट कर उसके गठन की प्रक्रिया को समझा रहे हैं।

हरिद्वार में कुम्भ मेला और दुर्घटनाओं की पुरानी कहानी

१३९८ से १९८६ तक

नई दिल्ली, १४ अप्रैल। हरिद्वार की हर की पौड़ी पर आज १९५० की याद ताजा हो गई। फर्क सिर्फ इतना हो रहा कि तब हर की पौड़ी पर लगभग ५०० लोगों ने दम तोड़ा था और आज की संख्या ५० से ६० के बीच है।

हरिद्वार में कुम्भ और दुर्घटनाओं का पुराना नाता है। प्राप्त विवरण के अनुसार सन १३९८ के कुम्भ में आततायी तैमूर लंग ने लूट और कत्ले-आम मचाया था।

सन १६६० के कुम्भ में भी ऐसा ही कुछ हुआ था। तब हमारे समाज में सम्मान्य सन्यासियों में ही जमकर युद्ध हुआ था। बताया जाता है कि नागा और वैष्णव साधुओं के इस संघर्ष में १८ हजार लोग मारे गए थे।

सन १७८३ के कुम्भ में हरिद्वार में महामारी फैल गई थी और दो हजार से ज्यादा लोगों की जानें गई थीं।

सन १७९६ में कुम्भ के अवसर पर १० अप्रैल को सिख घुड़सवार फौज और संन्यासियों में जमाकर लड़ाई हुई थी। इस लड़ाई में संन्यासी महन्त मानपुरी सहित भारी संख्या में लोग मारे गए थे। घायलों की संख्या भी बहुत ज्यादा थी। इस संघर्ष में २० सिख सिपाही भी खेत रहे थे।

सन १८१९ के कुम्भ में संकरी हर की पौड़ी पर मची भगदड़ में लगभग ४३० लोग सीधे स्वर्ग गये थे। इसके बाद कुम्भ में भी बीमारी की चपेट में यात्री आते रहे।

सन १९२७ के कुम्भ में हरिद्वार की हर की पौड़ी पर लकड़ी के बैरियरों में दब कर सैकड़ों लोग मरे थे। इस कुम्भ में महात्मा गांधी भी हरिद्वार आये थे।

सन् १९३८ में तो हरिद्वार में कुम्भ मेले में अजब ही नजारा था। उस वर्ष गंगा पार के इलाके में कुछ दुकानों में आग लग जाने से मेले में भगदड़ मच गई थी। इस भगदड़ में सैकड़ों की जानें गई थीं। इसके तुरन्त बाद फैले हैजे ने आग में घी का काम किया था।

सन् १९५० में इस व्यवस्था को बदलकर लोहे के बैरियर लगाए गए थे। किन्तु परिणाम उलटा ही निकला। भीड़ इतनी बढ़ गई कि उसे सम्भालने के लिए लगाए गए बैरियर ही लोगों की जान के ग्राहक बन गए। तब लगभग ५०० लोग गंगा मैय्या की बलि चढ़ गए थे।

इन तमाम दुर्घटनाओं को मद्दे नजर रखते हुए १९६२ के कुम्भ में तत्कालीन मेला अधिकारी चारलू साहब ने यातायात की विशेष योजनाएं बनाई। उसके बाद दुर्घटनाएं बन्द हो गई थीं। १९६२ के बाद हर की पौड़ी पर यह पहली दुर्घटना है।

ऐसा नहीं है कि हरिद्वार में ही कुम्भ दुर्घटनाएं हुई हैं। तीर्थराज प्रयाग में १९५४ में पड़े महाकुम्भ में ५०० से अधिक लोगों की जाने गई थीं। इस दुर्घटना के दिन प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू भी मेले में ही थे।

(नवभारत १४-४-८६ से साभार)

रजि० नं० डी० (डी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-४-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. U. 93 Post in D.P.S.O. 86

गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल

शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

१६ जून से २५ जून १९८६

आर्य वीरों में सर्वत्र हर्ष की लहर

झज्जर। पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की कृपा से आर्य गुरुकुल झज्जर की ओर से सदा की भांति इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन १६ जून से रहा है। डा० देवव्रत व्यायामाचार्य उपप्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल इस शिविर में स्वय शिक्षकस्तर के आर्य वीरो को प्रशिक्षित करेगे।

२४, २५ जून को सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हंस भी अपने विचारो से शिविरार्थियो को सम्बोधित करेगे। सौभाग्य इस विषय मे यह होगा कि पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का सानिध्य आर्यवीर को प्राणवान बनाने सजीवनी बूटी के समान लाभकारी सिद्ध होगा।

श्री हरमोहनलाल जी का देहावसान

विश्व हिन्दू परिषद के महामन्त्री श्री हरमोहनलालजी के दुःखद देहावसान के समाचार से समूचे हिन्दू समाज को भारी शोक एवं दुःख हुआ —

अपने जीवन काल मे श्री हरमोहनलाल जी सर्दैव हिन्दू जाति के उत्थान के लिए काम करते रहे वे वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश कर चुके थे और अपना समग्र जीवन देश धर्म और समाज के लिए अर्पण कर चुके थे —उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसका भरना अत्यन्त कठिन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने बाहरके दौरे सेवापिस लौटकर जब यह समाचार सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ—परमात्मा उनकी आत्मा को शाति प्रदान करे। —सम्पादक

समाप्त हो सकता है। अत आर्य समाज तथा अन्य समाजसुधा... का खण्डन कर तथा व्यापक प्रचार-अभियान चलाकर इस कुप्रथा को जड से उखाड फेंके।

इस कुपूजा की ओर आकृष्ट होने वाले भाई-बहनो से निवेदन है कि वे पाखण्डियो द्वारा चलाई गई इस लज्जाजनक पूजा को भूलकर भी न करें, क्योंकि इससे कभी कोई लाभ नही हो सकता। भारतीय संस्कृति में नारी देवी (अर्थात् देने-ही-देने वाली) के पूज्य स्थान पर सुशोभित है। परन्तु इस निर्लज्ज पूजा मे इन देवियो को निर्लज्ज किया जाता है। अत. नारियों को इस पूजा मे कभी भी सम्मिलित नही होना चाहिए। लज्जा उनका अमूल्य आभूषण है। उन्हे अपना यह अमूल्य आभूषण इस प्रकार अन्ध-विश्वास में फंसकर नही लुटवाना चाहिए। यदि सब प्रकार के दुःखों से बचना चाहते हो तथा सब सुख पाना चाहते हो तो एक निराकार परमेश्वर की ही उपासना करो। उसके लिए नित्य गायत्री-मन्त्र का जप किया करो।

डा० वेद प्रकाश, अध्यक्ष
वैदिक धर्म-रक्षा-सभा, मेरठ

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, अशोक विहार, फेज I, दिल्ली-११००५२ के लिए एक सुयोग्य एवं अनुभवी पुरोहितकी आवश्यकता है। वेतन, दक्षिणा तथा निःशुल्क निवास स्थान इत्यादि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। पूर्ण विवरण सहित आवेदन-पत्र भेजे।

—मन्त्री आर्य समाज

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दामृतम्

र कर्मठ सुयोग्य हो

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥
ऋग् ३-४-९, ७-२-९, तैत्ति० सं० ३-१-११-१

हिन्दी अर्थ—हे सृष्टि कर्ता देव! तुम दाता हो। तुम शीघ्र प्रभावकारी और पोषक वीर्य हमें दो, जिससे वीर कर्मठ, अतिनिपुण, सोमरस निकालने वाला और आस्तिक पुत्र पैदा हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २१ अङ्क १९]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
वैसाख कृ० ४ सं० २०४३ रविवार २७ अप्रैल १९८६

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष . २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का
आन्तरिक सुरक्षा राज्यमंत्री श्री अरुण नेहरू के नाम पत्र

दिनांक ११ अप्रैल १९८६ को लोकसभा में दिये गये आपके उस वक्तव्य को पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई जिसमें आपने सूचना दी थी कि सरकार देश में उन व्यक्तियों और संस्थाओं के विरुद्ध जांच प्रारम्भ करेगी जिनके ऊपर बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के आरोप हैं।

जैसा कि आपने स्वयं स्वीकार किया है, देश में विदेशी मुद्रा के आयात की समस्या बहुत गम्भीर रूप धारण कर चुकी है क्योंकि गुप्त रूप से इस धन का अधिकांश भाग राष्ट्र विरोधी और समाज विरोधी कार्यों में व्यय किया जाता है। आर्यसमाज लगभग पिछले ३० वर्षों से विदेशी मुद्रा के आयात से उत्पन्न हुई गम्भीर परिस्थितियों पर आवाज उठाता रहा है और समय-समय पर सरकार को चेतावनी भी देता रहा है। लेकिन खेद है कि तब हमारी आवाज को किसी ने नहीं सुना। यह सर्वविदित है कि इस विदेशी मुद्रा का अधिकांश भाग अमरीका तथा कई अरब देशों से आता है। कहने के लिये तो यह धन समाज सेवा और मानव कल्याण से सम्बन्धित उपयोगी कार्यों पर खर्च करने के लिये आता है किन्तु वास्तव मे इसका उपयोग ईसाई मिशनरियो और मुस्लिम कठमुल्लाओं द्वारा आदिवासी और हरिजन हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन के कार्यों मे किया जाता है। अब तो इस रहस्य पर से भी पर्दा उठ चुका है कि इन ईसाई और मुल्ला अधिकांश राष्ट्र विरोधी कार्यों में लगे हुए हैं। इनको कुछ विदेशी ताकतों का भी समर्थन प्राप्त है जिनका एकमात्र उद्देश्य देश को विघटित करके उसे कमजोर बनाना है। क्योंकि एक सुदृढ़ और संगठित भारत उनकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधक है। अस्तु!

प्रसन्नता की बात है कि अन्ततोगत्वा भारत सरकार ने, देर से ही सही, विदेशी मुद्रा की गम्भीर परिस्थिति को अनुभव करते हुए एक सही दिशा में सही कदम उठाने का निर्णय लिया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश त्यागी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पं० बिहारीलाल शास्त्री : कुछ संस्मरण

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज बरेली २४३००५

प० बिहारीलाल शास्त्री, जिनको मैं नाना जी कहा करती थी, उनके तीन जनवरी उन्नीस सौ छियासी मे दिवगत होने पर, उनकी सुनाई गई घटनायें तथा बातें, जो हृदय पटल पर अंकित थी, अब सस्मरण के रूप मे मुखर हो रही है। इधर छै माह से निरन्तर वे रुग्णावस्था मे चल रहे थे, मैं जब भी दर्शनार्थ जाती वे कोई न कोई घटना, या कोई तथ्यपूर्ण बात अवश्य बताया करते, उन बातो मे से कुछ बातें सक्षेप में लेखबद्ध कर, मैं आर्य पत्रों में भेज देती थी।

'धर्म' तथा 'साहित्य' की चर्चा उन्हें इस रुग्णावस्था में भी प्रिय थी। ३-११-८५ को जब मैं नाना जी को देखने गई, उनसे पूछा—अब आप कैसे हैं? बोले 'ठीक नहीं हूँ। अब बस एक महीने का मेहमान हूँ।' मैंने कहा—"नाना जी ऐसा मत कहिए। आपकी शताब्दी मनायी जायेगी।" "नही नही! अब जीना अच्छा नही लगता। बेटी मेरा नाम रखियो।" "आपका तो स्वय ही इतना नाम है, हा वेद-पथ पर निरन्तर चलकर आत्म सन्तोष पाती रहूँगी।" मेरा लेखन भी अविरोम रहेगा। आर्य पत्रो मे लिखती रहूँगी।" "बस-बस! यही मेरी इच्छा है। तदनन्तर बोले—"अब लोग सब बातें भूल गए। लोग समझते हैं कि 'भारत' नाम शकुन्तला के पुत्र दुष्यन्त के नाम पर पड़ा है, किन्तु बात इसके बिलकुल विपरीत है। 'भारत' का मतलब है "भा" प्रतिमा, बुद्धि, प्रकाश, एवं ज्योति, जो उसमें उन्नत है वही 'भारत' है। दर्शनों का सबसे बडा 'प्रवर्तक' "भारत' है। उच्चकोटि के ग्रन्थो के प्रमाण सब'हिन्दू' के दिए हुए हैं। अब लोग आर्यत्व 'भूल गए। उनमे सूझबूझ की कमी आ गई है। "हिन्दू" का मतलब "काफिर" क्यों समझते हैं?

"हिन हिंसा दुरिन पाप"—अर्थात् जो हिंसा को पाप समझे वह 'हिन्दू' है। आज हिन्दुओ की अवस्था भ्रष्ट होती जा रही है, क्योकि वह अपने सनातन वैदिक-धर्म को भूलता जा रहा है। इतिहास इस बात का प्रमाण हैं कि 'हिन्दू' ने किसी जाति को सताया नही, लूट-पाट नही की, मन्दिर, मस्जिद तथा गिरजा नही तोडे न किसी की स्त्रियों का अपहरण किया। 'हिन्दू' ने अन्य काम यह किया कि जिसे सहायता की आवश्यकता हुई, उसे सहायता दी।' कुछ देर ऐसे ही मुझसे बातें करते रहे, तदन्तर मैं घर वापस आ गई।

उसके बाद ११-११-८५ को मैं पडित जी के निवास स्थान पर उन्हे देखने गई। मुझे देखकर प्रसन्नभाव से आशीर्वाद दिया। मैंने कहा "नाना जी आज अपने जीवन की कोई घटना सुनाइए।" नाना जी बोले—"जब मैं अल्पायु था, तब से ही मुझे पूजा-पाठ का शौक था। मैंने दो वृक्ष तुलसी के लगाए। उन्ही के पास बैठकर जप करता था। मेरे सनातन धर्मी रहित यह देखकर प्रसन्न होते थे। जब मैं सोलह वर्ष का हुआ, तो मुझे 'सत्यार्थ-प्रकाश' देखने को मिला, जिसे देखते ही मेरा मन परिवर्जित हो गया। किन्तु तब मैं आर्य समाजी नही बना था। जब मैंने प० तुलसीराम और प० भीमसेन के शास्त्रार्थ को सुना, तभी से मैं आर्यसमाजी बन गया।"

पूज्य नाना जी से मेरे अन्तिम दर्शन दिनाक ३१-१२-८५ को हुए। मैंने उनसे कहा—"नाना जी अपने जीवन की कोई घटना लिखवाइए।" 'बेटी! तुम चार दिन यहा घर, रुक जाओ। तुम्हें बहुत बातें बताना है। आज तो बस दर्शन की चर्चा कर रहा हूँ। पूरी दुनिया मे दर्शन भारत से फैला। सम्पूर्ण 'दर्शन' और 'शास्त्र' की भूमि भारत है।" इतना कहने के बाद नाना जी चुप हो गए। दो मिनट मौन रहकर पुन: उपर्युक्त कथन तीन-चार बार दुहरा दिया।

उस दिन उनकी ध्वनि मे कुछ कम्पन था "अब रहने दीजिए। विश्राम कीजिए। अब चलती हूँ।" पुन बोले—"बेटी अब कब आएगी?" मैंने 'कल' कह दिया। 'फिर मुझसे समयादि पूछ कर बोले—' मेरा मुंह ढक दे बेटी। खूब फलो फूलो। दुनिया मे नाम करना।" मैं घर लौट आई। किन्तु कथनानुसार दूसरे दिन नही पहुँच सकी। तीन जनवरी छियासी को मेरे डिग्री कालेज मे एन एस. एस. का सास्कृतिक कार्यक्रम था, अत. उस दिन चाहते हुए भी मैं नाना जी के दर्शनार्थ न जा सकी। तीन जनवरी को मध्यान्ह मे, उनका छियानवे वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। लगता है, पूज्य नाना जी के साथ एक युग ही समाप्त हो गया। उनका मनोविनोदी स्वभाव, रह रहकर याद आता है। इस मरणशील ससार मे, उसी श्लोक का निरन्तर चिन्तन हो रहा—

"वय येभ्यो जात.श्चिरपरिगता एव खलु ते।
सम यैः सम्बद्ध. स्मरणपदवीं तेऽपि गमिता॥

इदानीमे तेस्मः प्रतिदिवस मासन्न पतनाद।
गतास्तुल्यावस्थां सिक तिल नदी तीर तरुभि:॥

अर्थात् जिनसे उत्पन्न हुए, जिनके साथ वर्धित हुए, खेले, तथा रहे, वे सभी चले गए, अब हम भी रेतीले तट पर लगे वृक्षों के समान हैं, जो समय सरिता मे टूटकर गिर कर बह जायेंगे। महत्व की बात है कि हम कैसे रहे? अपने जीवन को कैसे व्यतीत किया।" 'कीर्तियस्य स: जीवति' अर्थात जिसका यश है, वही जीवित है।

"कुछ आए कुछ चल दिए कुछ बैठे तैयार।
इसीलिए इस लोक का नाम पड़ा संसार॥

पाश्चात्य विचारकों ने भी कहा है—

"Man lives not in years but in deeds"

"Life like a dome of many coloured glass. Stains The white radiance of Eternity" P. B. shelly (Adonals)

लेखन मेरी रुचि रही है अल्पायु से ही लिखती रही हूँ, तथा तीन सौ से अधिक लेख कविताए एवं कहानियां विविध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। किन्तु आर्यपत्रो मे लेख मैंने नाना जी के कहने से ही भेजना आरम्भ किए। "आर्य मित्र" तथा 'सार्वदेशिक' में लेख भेजने को मुझसे नाना जी कहते रहते थे। मेरा परिवार वैदिक मतानुयायी है, मेरे पिताजी विद्यावाचस्पति प० रमेशचन्द्र पाठक, एम० ए० साहित्य व्याकरणाचार्य सम्प्रति गुरुकुल रुद्रपुर मे हैं, दिवगत विदुषी मा डा० शारदा पाठक, भूतपूर्व प्रधाना चार्या थी।

नाना जी ने मेरी रुचि और सस्कार देखकर ही 'आर्य पत्रों' मे लेख भेजने को प्रोत्साहित किया। 'बीज' ही न होंगे तो अंकुर किधर से फूटेंगे? अंकुरों को वर्धित करने का कार्य माली ही कर सकता है। मानव प्रयत्न करता है, हितचिन्तक प्रोत्साहित करते हैं, तथा कृपा करने वाला एकमात्र ईश्वर है।

आज नाना जी हमारे मध्य नही है, किन्तु उनके स्वर अब भी गूंज रहे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दीवान हाल शताब्दी समारोह

(पृष्ठ १ का शेष)

२६ अप्रैल शनिवार

भव्य शोभा यात्रा

प्रात: १० बजे लालकिला मैदान से फव्वारा, चांदनी चौक, नई सडक, बडशाहबुला हौजकाजी, अजमेरी गेट, आसफअली रोड होता हुआ रामलीला मैदान मे समापन होगा। (जिनके पास टोपिया हैं वे टोपी अवश्य पहनें)।

२७ अप्रैल रविवार

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मध्यान्ह २ बजे
स्थान—ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली।
भजन—श्री गुलाब सिंह राघव
वेद पाठ गान्धर्व महाविद्यालय
मुख्य अतिथि - श्री बलराम जाखड (अध्यक्ष लोक सभा)
श्री नारायण दत्त तिवारी उद्योग मन्त्री भारत सरकार
श्री सीताराम केसरी (संसदीय कार्य मन्त्री)
अध्यक्ष—लाला रामगोपाल शालवाले
[प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]
पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज
प० राजगुरु शर्मा
डा० वाचस्पति उपाध्याय
प० क्षितीश कुमार वेदालकार
शान्ति पाठ—

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि समस्त कार्यक्रमों मे परिवार व इष्ट मित्रो सहित भारी सख्या मे पधारिए।

सम्पादकीय

सुपात्र को दान, सदुद्देश्य का ध्यान आवश्यक है

मानव को दिया दान-भारतीय मर्यादा में सात्विक माना है। किन्तु वह सोद्देश्य होना आवश्यक है। बन्जर-भूमि में पड़ी वर्षा व्यर्थ है जबकि लहलहाती खेती में वही वर्षा वरदान सिद्ध होती है।

समय-२ पर सदुद्देश्य के साथ सुपात्र को दिया दान वरदान साबित होता समय का ध्यान इसलिए परम-आवश्यक है, कि—

का वर्षा—जब कृषि सुखाने ॥

जिसे आज तन ढकने के लिए वस्त्र चाहिये, उसे आप यह आश्वासन देकर सन्तुष्ट नहीं कर सकते, कि मरने पर हम तुम्हें कफन देंगे। किसी के मरने पर गोदान देने से-यह अच्छा है कि उसे जीते जी गाय दी जाय। जिससे वह उसका उपयोग कर सके। साथ ही इतना दीजिए जितना चाहिए, आवश्यकता से अधिक देने से उदारता प्रकट नहीं होती है। आवश्यकता के अनुरूप सहायता देना ही उदारता है।

सदुद्देश्य का ध्यान इसलिए आवश्यक है कि दान करने से पापों की वृद्धि नहीं होनी चाहिए। उस दान से यदि कोई अनुचित कार्य होता है तो वह वरदान अपने लिए ही अभिशाप बन जायगा। तो चाहिए यह, कि दान वही अच्छा है जिससे अधिक जन-समाज का हित हो सके।

आज राष्ट्र में दान की उपयोगिता है किन्तु कहां कितना और किस लिए दिया जाय। इस योग्यता को नहीं देखा जाता है। जिस प्रकार वर्षा का प्रभाव समुद्र में नहीं, इसके बजाय-उपजाऊ भूमि या तालाबों द्वारा ही देखा जाता है उसी प्रकार दान का महत्व व प्रभाव भी दोनों प्रकार है। दान भी कैसा हो-समर्थ दुर्जनों को दान देना वैसा ही जैसे—डाकू को अपना हथियार देना? और लोभी व्यक्ति की दशा-सदा-दीन ही बनी रहती है। उस व्यक्ति को सुपात्र मान लेने से भूल हो सकती है। सुपात्र वह है जो शारीरिक, आर्थिक, या सामाजिक असमानताओं की दुर्बलताओं के कारण, असमर्थ असहाय हो। पतित हो, बन्धन ग्रस्त हो। उसी को शक्ति प्रदान करना, गिरे को उठाना, मुक्त बनाना परोपकार कहा जायेगा। निर्बल-अनाथ और रोगी ही दान के पात्र होते हैं।

ऐसे व्यक्तियों को सत्प्रयोजन हेतु आर्थिक सहायता होनी चाहिए। शुद्ध-सात्विक-धन का तात्पर्य है अपनी कमाई में अर्थ शुचिता, न्याय पूर्वक की गई हो। ऐसी कमाई लोकोपयोगी कार्यों में लगाना ही सच्चा दान है। किसी दशा में भी अपना राग-द्वेष नहीं बांटना चाहिए। उन्हें तो न देना ही परोपकार है। छल प्रपंच करने या चोरी करके दान करना अपना और लोक का अपकार ही करना है।

आज बड़े २ करोड़पति या वर्ष सोलुर-टैक्सों की चोरी करके दान करते हैं और फिर दान का सर्टिफिकेट मांगते हैं जिससे वह निर्दोष साबित हो सकें। बड़े-२, टाटा-बिड़ला विशाल मन्दिरों का निर्माण या अपने व्यवसाय की वृद्धि में धन को लगाते हैं पर उससे गरीब दीन या अनाथ का क्या भला हुआ। आज भारत में उन दीनजनों को कोई पूछने वाला नहीं, जिनके पेट में भूख है। शरीर-उजड़ा है तन-मन रोग ग्रस्त है—विदेशों का पानी धन उन धन-मानस के मनो को चिन्ता मुक्त करने में लगा है। मदर टेरेसा पारितोषक पा रही है। परन्तु आज भारतीय जन-दान तो कर रहे हैं पर-कहां? भारतीय चिन्तन धारा कहां प्रवाहित है। मठ-मन्दिरों में पड़ा धन सड़ रहा है। मठाधीश सोने के सिंहासनों पर विराजमान होकर जर-जोरुओं से सेवा करा रहे हैं। पैरों में पड़ा इन्सान कराह रहा है उसका आर्तनाद इन पूंजीपतियों के कानों से अतिदूर है।

दान का महत्व सम्मान पूर्वक देकर नीचे पड़े प्राणी पर दया भाव दिखा कर उठाकर गले लगाने में हैं। आंखें पिचकी, गाल बैठे, हाथ पसार पसार कर दीन अदीन बनने की लालसा में चिल्ला रहा है पर सुनने वाला कोई नहीं है।

मांगने पर तिरस्कार पूर्वक देने से दान की महिमा घटती है बढ़ती है किसी को नीचा या पतित बनाकर कुछ देना सर्वथा अनुचित है स्वेच्छापूर्वक सत्कार के साथ देने से साधारण वस्तु भी असाधारण बन जाती है। मान का पान भी सोने चांदी जवाहरातों से भी बढ़कर है।

गुप्तदान भी लोग करते हैं उसमें चोरी की बू भी है और यश-कीर्ति से दूरी भी है। उसे लेने में अपमानित नहीं होना पड़ता है। साथ ही दाता का अहंकार भी प्रकट नहीं होता है। अहंकार से पुण्य नष्ट हो जाता है।

शास्त्र में सत्पुरुष के जो लक्षण गिनाए हैं—

(१) उदार होकर प्रिय वक्ता हों। (२) शूर होकर बकवादी न हो। (३) दाता होकर अपात्र पर धन की वर्षा कभी न करें। (४) निष्ठुर हुए बिना प्रगल्भ होना चाहिए।

प्रियं ब्रूयातकृपणः शूरः स्याद विकत्थनः।
दाता नापात्र-वर्षी च प्रगल्भः स्यादनिष्ठुरः ॥ हितोपदेश

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर लोक-सेवा, दान, परोपकार-भावों में प्रवृत्त होना ही पवित्र भाव हैं। इसी में जीवन की सार्थकता है रहीम ने कहा है कि—

तबहीं लगि जीवों भलो दीबो परै न धीम।
बिन दीबो जीबो जगत, हमहिं न रुचै रहीम ॥

लोक हितार्थ आवश्यक है कि—

स्वार्थ त्याग यही हमारी सभ्यता का सनातन आदर्श है यही तप और त्याग है यही सर्वोदय का मूल मन्त्र है और यही अमरता का महायज्ञ है मानव समाज को पांच महायज्ञों में बांटकर पितृयज्ञ-बलिवैश्व यज्ञ देव-यज्ञ अतिथि यज्ञ करने का पुण्य लेना ही गृहस्थी या अर्थ संचयी का मुख्य धर्म है।

परहित करना आत्म त्याग है आर्य-जनों की रीति सनातन।
इस नश्वर जग में मरकर भी, रहते अमर इसी विध सज्जन ॥

गुरुकुल-महाविद्यालय ज्वालापुर के ७९वें वार्षिक महोत्सव पर दीक्षान्त भाषण

श्रीमति प्रसन्नी देवी, जनस्वास्थ्यमन्त्री हरियाणा

दिनांक १३ अप्रैल, १९८६ ई०

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय कुलपति जी, विद्वद्जन, नवीन स्नातक, ब्रह्मचारिगण समुपस्थित सभ्यवृन्द !

आज आप लोगों के मध्य उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह देखकर अत्यन्त हर्ष है कि यह गुरुकुल पवित्र गंगा के तट पर सुरम्य भूमि में स्थित है। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि इस महाविद्यालय के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी भारत के अग्रगण्य मनीषियों में हैं। इन्होंने संस्कृत और हिन्दी भाषा में उच्च कोटि का विपुल साहित्य लिखा है। राजकीय सेवा में रहते हुए इन्होंने प्रबन्ध कुशलता, अनुशासन एव कर्त्तव्य परायणता की उच्च शिक्षा प्राप्त की है। मुझे पूर्ण आशा है कि इनके निर्देशन में यह संस्था उत्तरोत्तर उन्नति करती रहेगी।

मुझे इस बात से विशेष प्रसन्नता हुई है कि इस गुरुकुल में निर्धन एवं साधनहीन छात्रों को उच्चतम शिक्षा प्रदान की जाती है। इस संस्था में किसी प्रकार के जातिभेद, वर्गभेद, प्रान्तभेद आदि को स्थान नहीं है। यह एक गौरव की बात है तथा सभी संस्थाओं के लिए अनुकरणीय है। मुझे यह बताया गया है कि इस संस्था को स्थापित हुये ७४ वर्ष हो गये हैं। इस अवधि में यहां १० हजार से अधिक छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। पांच हजार से अधिक स्नातक हो चुके हैं। ५०० से अधिक स्नातक हरिजन, पर्वतीय एवं जनजाति के हैं। यहां छात्रों से किसी प्रकार का शिक्षा शुल्क नहीं लिया जाता है। मुझे इस बात से भी हार्दिक प्रसन्नता है कि यहां कुछ स्नातक देश के अग्रगण्य विद्वानों, राष्ट्रीय नेताओं और समाज सेवियों में है। यहां के कुलपतियों की एक आदर्श परम्परा रही है, जिसके अन्तर्गत पूज्य स्वामी शुद्धबोध तीर्थ जी, पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, डा० हरिदत्त शास्त्री सप्ततीर्थ एवं डा० गौरीशंकर जैसे त्यागी, तपस्वी उदारमना एवं विद्वन्मूर्धन्य व्यक्ति रहे हैं। यहां के स्नातकों में डा० सूर्यकान्त, पं० उदयवीर शास्त्री, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, वर्तमान कुलपति आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि यहां के स्नातकों में संसद सदस्य रह चुके हैं—श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री शिवकुमार शास्त्री एवं स्वामी रामानन्द जी। इसी प्रकार कुछ स्नातक उत्तर प्रदेश विधान सभा के भी सदस्य रह चुके हैं। यहां के अनेक स्नातक उच्चकोटि के साहित्यकार, सम्पादक, लेखक, कवि, शास्त्रार्थ महारथी, कुशल वक्ता और समाज सुधारक रहे हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि इस गुरुकुल ने सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया है। यहां के कुलपति आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ का अधिकांश जीवन राष्ट्रीय आन्दोलन एवं जेल में ही बीता है।

यह संस्था महर्षि दयानन्द के आदर्शों को लेकर स्थापित हुई है। इसके संस्थापक एक वीतराग संन्यासी एव प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्द जी थे। निर्धन छात्रों को गुरुकुल पद्धति से निःशुल्क शिक्षा देना और देश के लिए योग्य नागरिक तैयार करना उनका लक्ष्य था। आर्यसमाज का देश और विदेश में पूर्ण प्रचार हो, इसके लिए स्वामी दर्शनानन्द जी ने पांच गुरुकुलों की स्थापना की। इनमें यह गुरुकुल महाविद्यालय प्रमुख है।

राष्ट्रीय भावना

आज पूरे भारत में अधिकांश समस्याओं के मूल में राष्ट्रीय भावना का अभाव है। साम्प्रदायिक भावना, जातीय भेदभाव, जातीय संघर्ष, प्रान्तीय विद्वेष, ऊंच नीच की भावना भाषा सम्बन्धी विवाद एवं तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति का मूल कारण राष्ट्रीय भावना, एकता एवं समन्वय की भावना का न होना ही है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि मैंने गुरुकुल में इन भावनाओं एवं कुप्रवृत्तियों का अभाव पाया है।

प्राचीन संस्कृति

विश्व में भारत का गौरव प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार पर है। वेद उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थ हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों की गहन साधना के फल हैं। इन ग्रन्थों ने न केवल भारतवर्ष को ही प्रेरणा दी है अपितु सारा विश्व इनसे लाभान्वित हुआ है। संस्कृत भाषा एवं उपनिषद् भारतीय संस्कृति के प्राण है। हमारे ये सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है। इसका पूर्ण लाभ संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। मेरा अनुरोध है कि अपनी संस्कृति के ज्ञान अवश्य प्राप्त करें। सामंजस्य और सौहार्द की भावना पर वेदों में विशेष बल दिया गया है। अतः वेद की ये सूक्तियां उपादेय है—

> संगच्छध्वं सं वदध्वम्०।
> साथ चलो, मिलकर बोलो।
> समानो मन्त्र समिति. समानी०।
> विचार समान हों और निश्चय एक हों।

नव स्नातकों के लिये सन्देश

नवस्नातकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए मेरा सन्देश है कि नवस्नातक ही भावी राष्ट्र के कर्णधार हैं। आप ही स्वामी दयानन्द, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकते हैं। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" संसार भर को आर्य एवं उन्नत बनाने का उत्तरदायित्व आप पर ही है। मातृसंस्था के गौरव की वृद्धि के प्रति सचेष्ट रहें। मेरा अनुरोध है कि आप इसे शिक्षा की समाप्ति न समझते हुए शिक्षा का प्रथम सोपान समझें और निरन्तर अपनी शैक्षिक योग्यता विकासोन्मुखी रखें। समाज में वर्तमान कुरीतियों को दूर करने के लिये दृढ़ संकल्प लेकर आप जीवन में प्रवेश करें।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।

पुरुषार्थी को ही श्री मिलती है और पुरुषार्थी का ही सहायक परमात्मा होता है, अतः कभी भी पुरुषार्थ से विमुख न हों विपत्तियों और कठिनाइयों से कभी भी विचलित न हों। दृढ़ निश्चय ही आपकी सफलता की कुंजी होगी। आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास की भावना से सदा उन्नति पथ पर अग्रसर हों।

शिवास्ते सन्तु पन्थान।

आपका मार्ग कल्याणमय हो।

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

का संक्षिप्त परिचय

—प्रशान्त वेदालंकार

हिन्दी में अर्थशास्त्री विषयों की प्रमुख पत्रिका 'सम्पदा' के प्रवर्तक श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार के निधन से पुरानी पीढ़ी का एक ऐसा पत्रकार हमारे बीच से उठ गया जिसकी निष्ठा, कर्मठता और सिद्धान्तवादिता पर आशंका नहीं की जा सकती थी। वह आर्यसमाजी थे और गांधीवाद को निर्भ्रम न मानकर भी विचारों तथा आचरण में किसी गांधीवादी से कम नहीं थे। विचारों के पक्के, काम निष्ठापूर्वक करने वाले, मिलनसार, निरभिमानी और लोकरंजन तथा व्यवहार-कुशलता के राही थे। इसीलिए उनका परिचय क्षेत्र बड़ा था और सभी मिलने-जुलने वालों के वक्त पर सहायक होते थे।

कृष्णचन्द्र जी का जन्म पंजाब के उस भाग में हुआ था जो देश-विभाजन के बाद पाकिस्तान का अंग बन गया है, किन्तु उनका शिक्षण एवं कार्यक्षेत्र बहुत-कुछ देश के उसी भाग में रहा जो आज भी भारत में ही है। इसीलिए उनकी राष्ट्र भाषा हिन्दी रही, जिस के अन्त काल तक वह पूर्ण भक्त रहे और बोल-चाल तथा लेखन-भाषण में भी पूरी तरह उसी का प्रयोग करने की पूर्ण सावधानी उन्होंने रखी। गांधी जी के आह्वान पर गुरुकुल मुलतान में आठवीं कक्षा के इस विद्यार्थी ने खादी पहनने का निश्चय किया जिसका यावज्जीवन तो सपत्नीक व्यवहार किया ही, बल्कि मरणोपरान्त भी उनकी अन्तिम क्रिया के वक्त हमने देखा पूर्ण आर्यसमाजी विधि तथा वस्त्रों में खादी से ही काम लिया गया।

कृष्णचन्द्र जी के पिता चौधरी जेसाराम तत्कालीन पंजाब प्रान्तान्तर्गत मुजफ्फरगढ़ जिले के बसीरा गांव में रहते थे। वहीं २८ नवम्बर, १९०४ ई० को कृष्णचन्द्र जी का जन्म हुआ और पिता के आर्यसमाजी विचारों के कारण दसवीं श्रेणी तक मुलतान में अध्ययन कर आगे की पढ़ाई उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी में की। १९२६ में वहां से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त कर उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की, जिससे संस्कृत और हिन्दी का परिपूर्ण तथा अंग्रेजी का सम्यक ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ। इतिहास और अर्थशास्त्र उनके प्रिय विषय थे और इन विषयों की अधिकांश पुस्तकें उन्होंने पुस्तकालय से लेकर पढ़ डाली थीं। 'गुरुकुल पत्रिका' में लेख देने का भी उन्हें शौक था। गुरुकुल की शिक्षा उन दिनों मात्र पढ़ाई न होकर समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठा की दीक्षा थी, जिससे नवस्नातक कृष्णचन्द्र भी अप्रभावित नहीं रहे और राष्ट्रीयता तथा समाज की सेवा के भावों से अभिभूत होकर ही वहां से निकले। गुरुकुल की शिक्षा का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

अजमेर में

कृष्णचन्द्र जी में यह प्रवृत्ति शायद कुछ अधिक ही थी, जिसका परिचय गुरुकुल कांगड़ी में उस समय के एक प्रमुख राष्ट्रीय नेता सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में हुई एक वादविवाद प्रतियोगिता में मिला। सेठ जी उनके प्रति आकर्षित हुए और स्नातक बनने के बाद अपने पास आने का निमन्त्रण दिया। बातचीत में पत्रकारिता की ओर रुचि देखकर उसमें परिपक्वता प्राप्त करने के लिए उन्होंने राजस्थान सेवा संघ के अजमेर से निकलने वाले मुखपत्र 'तरुण राजस्थान' में उनके लिये व्यवस्था कर दी। यह सम्भवतः १९२६-२७ की बात है। जब वह अजमेर आये तब मैं भी वहीं था और पत्र में काम करते हों या नहीं, फिर भी वही ऐसा अड्डा था जिसे हम निस्संकोच अपना कार्य-क्षेत्र मानते थे। तभी मेरा कृष्णचन्द्र जी से सम्पर्क हुआ जो अजमेर में तो प्रगाढ़ हुआ ही उसके बाद पहले उनके और बाद में मेरे भी दिल्ली आ जाने पर पारिवारिक-सा बन गया।

अजमेर में 'तरुण राजस्थान' (साप्ताहिक) से कृष्णचन्द्र जी ने पत्र-कारिता का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही कमाई, और इतिहास के अपने ज्ञान के उपयोग के लिए सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के सहायक के रूप में भी कार्य करने लगे थे। इसी बीच सस्ता साहित्य मण्डल की स्थापना हो चुकी थी, जिसका प्रारम्भ गांधी जी की आत्मकथा के प्रकाशन से अजमेर में हुआ था। बाद में उसका काम बढ़ाने और उसके द्वारा 'मासिक त्याग भूमि' के प्रकाशन का निश्चय किया गया तो केसरगंज में बड़ी जगह लेकर प्रेस और कार्यालय के साथ साथ कार्यकर्त्ता भी बढ़ाए गये। हरिभाऊ उपाध्याय और क्षेमानन्द 'राहत' के संयुक्त सम्पादकत्व में 'त्यागभूमि' निकली जिसमें सम्पादकीय सहायक के रूप में अकेला मैं था, परन्तु धीरे-२ रामनाथ सुमन, हरिकृष्ण प्रेमी तथा और भी कई आये। कृष्णचन्द्र जी भी कुछ काम करने लगे थे साथ ही देश-दर्शन तथा विश्वदर्शन जैसे स्तम्भ भी वह लिखते थे।

बिड़ला मिल में

इसी बीच मजदूर आन्दोलन में उनकी रुचि हुई, जिस पर हरिभाऊ जी ने श्री घनश्यामदास बिरला को लिखकर या उनसे बातचीत कर वैसी व्यवस्था की। इसके लिए वह श्री गुलजारीलाल नन्दा की देख-रेख में चल रहे अहमदाबाद के 'मजदूर महाजन' में कुछ प्रशिक्षण प्राप्त कर बिरलों के तथा अन्य भी ऐसे केन्द्रों में गये जहां मजदूरों के कल्याण का कार्य होता था और अन्त में बिरला जी की दिल्ली स्थित कपड़ा मिल में पहले लेबर आफिसर के रूप में नियुक्त किए गये। इसी तरह दिल्ली उनका आगमन हुआ। उन दिनों आज से ५५ वर्ष पूर्व मजदूरों की दशा अत्यन्त दयनीय होती थी। मिल अधिकारी मजदूरों की सुख-सुविधा का बिल्कुल ध्यान न करते थे। वे मजदूरों से ज्यादा-से-ज्यादा काम लेना ही अपना कर्त्तव्य मानते थे। पर कृष्ण जी ने उनके कल्याण के अनेक कार्य शुरु किए। मजदूरों के लिये मकान बनवाए। उनके बच्चों के लिए झूले और पार्क की व्यवस्था की, लड़कियों के लिए स्कूल खोला और एक पुस्तकालय की भी स्थापना की। यह सब बातें मिल के पुराने अधिकारियों को नहीं भायी, लिहाजा तीन वर्ष बाद ही उन्हें यह नौकरी छोड़नी पड़ी।

बिड़ला मिल में काम करते समय ही ७ अप्रैल १९३० को श्रीमती ईश्वर देवी से उनका विवाह हुआ।

वीर अर्जुन में २० वर्ष

बिरला मिल का काम १९३३ में छोड़ वह फिर से पत्रकारिता में आ गये। दिल्ली का 'वीर अर्जुन' उस समय हिन्दी का प्रमुख दैनिक पत्र था जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वनामधन्य पुत्र इन्द्र जी के द्वारा सचालित होकर विशिष्ट स्थान रखता था। कृष्णचन्द्र जी की लगन और कार्यपटुता देखकर जब 'साप्ताहिक अर्जुन' के रूप में उसका अलग से साप्ताहिक संस्करण १९३६ में निकला तो इन्द्रजी ने उन्हीं को उसका सम्पादक बनाया और जब तक इन्द्र जी का स्वामित्व रहा तब तक वही उसके सम्पादक रहे। १९५१ में जब स्वामित्व-परिवर्तन हुआ तो नये मालिकों के अनुसार नई नीति अपनाने के बजाय कृष्ण चन्द्र जी ने उससे अलग हो जाना ही ठीक समझा। वीर अर्जुन में रहते हुए उन्होंने प्रसिद्ध काकोरी षड्यन्त्र के अभियुक्तोंका फोटो वीर अर्जुन में छाप दिया जो विदेशी शासन के उस युग में अत्यन्त साहस का काम था। पर इसका फल भी उन्हें भुगतना पड़ा और कई दिन तक लाल किले में हवालात में बन्द रहना पड़ा। अंग्रेज सरकार शायद उन्हें क्रान्तिकारियों से सम्बद्ध समझ रही थी हालांकि वह गांधी जी के अहिंसात्मक संघर्ष के पक्षधर थे। (क्रमशः)

गोरक्षा के सम्बन्ध में उदासीन रहने का आर्य समाज पर निराधार आरोप

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, सम्पादक गोधन मासिक १ सदर थाना रोड, दिल्ली-६

दिनांक २९-९-८२ के आर्य जगत में श्री वीरेन्द्रसिंह पमार ने "क्या गोरक्षा के लिए आर्यसमाज को फुर्सत है" शीर्षक लेख में गोरक्षा के सम्बन्ध में आर्यसमाज की भूमिका की समीक्षा करते हुए लिखा है कि आर्य समाज ने शिक्षा तथा समाज सुधार के क्षेत्र में जो कार्य किया वह प्रशंसनीय है परन्तु गोरक्षा के सम्बन्ध में आर्यसमाज उदासीन ही रहा है "लेखक की यह धारणा निराधार है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सवासो वर्ष पहले गोहत्या के विरोध में जो हस्ताक्षर अभियान चलाया और भारतीयों की गोरक्षा सम्बन्धी मनोभावना से ब्रिटिश सरकार को अवगत कराया, यह उत्साह आज भी जीवित है। स्वराज्य प्राप्ति से पहले और बाद में आर्यसमाज ने गोहत्याबन्दी सम्बन्धी सभी प्रवृत्तियों में सक्रिय भाग लिया। स्वराज्य से पहले आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता लाला लाजपतराय कांग्रेस के अधिवेशनों के साथ गोरक्षा सम्मेलनों के माध्यम से गोहत्या के विरोध में आवाज बुलन्द करते रहे। स्वराज्य प्राप्ति के बाद स्वामी करपात्री जी महाराज तथा लाला हरदेवसहाय जी ने गोहत्याबन्दी के लिये जो आन्दोलन चलाये, उन सभी के साथ आर्यसमाज का सक्रिय योगदान रहा।

स्वराज्य अनन्तरकाल में सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति के तत्वावधान में दिल्ली में जो प्रचण्ड गोरक्षा सत्याग्रह और सम्पूर्ण गोवंश हत्याबन्दी के लिए १९६६ में संसद भवन पर १५ लाख गोभक्तों का ऐतिहासिक प्रदर्शन हुआ उसके पीछे भी आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

इस प्रदर्शन को अगर कांग्रेस सरकार षड़यन्त्र करके असफल न बना दिया होता तो सरकार को सम्पूर्ण गोहत्याबन्दी की मांग स्वीकार करनी ही पड़ती। इस आन्दोलन में एक लाख गोभक्तों ने सत्याग्रह किया जिसमें ६०-७० हजार सत्याग्रही आर्यसमाज के थे। आर्यसमाज दीवानहाल इस सत्याग्रह का प्रमुख केन्द्र था। उसने एक सत्याग्रह छावनी का रूप धारण कर लिया था। गोरक्षा सत्याग्रह के के इस अभियान में आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता लाला रामगोपाल शालवाले व गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवानदेव ने विशिष्ट भूमिका अदा की।

लेखक का यह कथन भी भ्रांत है कि ऐसा कोई गोहत्या विरोधी आंदोलन नहीं जिसका नेतृत्व केवल आर्यसमाज ने किया हो। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज का उदार तथा समन्वयात्मक दृष्टिकोण रहा। आर्यसमाज के पास उस समय प्रचुर शक्ति थी। वह स्वतन्त्र आन्दोलन चला सकता था, परन्तु उसने गोरक्षा आन्दोलन का नेतृत्व नहीं किया ताकि उसमें सभी देशवासियों और गोहितैषी संगठनों का उनमुक्त सहयोग मिले—किसी एक को श्रेय न मिले। आर्यसमाज ने उस समय अपने को पृष्ठभूमि में ही रखना उचित समझा और सर्वदलीय संगठन का निर्माण कराके गोहत्याबन्दी आन्दोलन को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। आर्यसमाज के ऊपर अनेक सार्वजनिक प्रवृत्तियों के संचालन उत्तरदायित्व है जिसे दूसरे संगठन निभाने में समर्थ नहीं हैं। शुद्धि, अछूतोद्धार, जातिपांति उन्मूलन, पिछड़े वर्ग तथा हरिजन भाइयों के धर्मान्तरण तथा सबसे अहम काम वैदिक धर्म का देश-देशान्तर में प्रचार और प्रसार है। इन प्रवृत्तियों को एकांगी रूप से चलाने का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए भी आर्यसमाज गोरक्षा आन्दोलन को सफल बनाने में सक्रिय सहयोग देता रहा है। इस समय भी जब प्रचण्ड आन्दोलन की भूमिका नहीं है आर्यसमाज कत्ल के लिये ले जाने वाले गोवंश को रुकवाने में तत्परता दिखाता रहता है।

लेखक ने किसानों की संकटपूर्ण स्थिति की चर्चा करतेहुए उनकी कठिनाइयों के निवारण की आवश्यकता प्रकट की है। राज्य सरकारों के गोरक्षा सम्बन्धी कानूनों का सख्ती से पालन किये जाने की ओर भी इशारा किया है। लेखक ने इस सम्बन्ध में कुछ उपयोगी सुझाव दियेहैं। इसमें जनमत जाग्रत करने के लिए एक प्रचक संगठन की आवश्यकता बताई है। अनुपयोगी पशुओं के लिये गोसदन बनाना, मेलों और उत्सवों में एकत्रित जनता को गोरक्षा के प्रति सक्रिय करना आदि इन सभी सुझावों से न केवल आर्यसमाज सहमत है बल्कि जगह-जगह आर्यबन्धु इस दिशा में सक्रिय भी हैं। यह सही है कि वर्तमान सरकार की गलत नीतियों तथा गोवंश के प्रति उपेक्षा की भावना होने से गोहत्या को प्रोत्साहन मिल रहा है। देश से बहुत बड़े प्रमाण में गोमांस निर्यात हो रहा है। प्रतिवर्ष करीब डेढ़ करोड़ गोवंश की कत्ल हो जाती है। महर्षि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में दुःखी होकर कहा है कि गोआदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा दोनों का विनाश होता है। विनाश की यह प्रक्रिया जारी है। अगर हम चाहते हैं कि देश बचे, उसकी संस्कृति और सम्पत्ति बचे तो गोहत्या के कलंक को मिटाने के लिये कृतसंकल्प होना चाहिए। आर्यसमाज की अनेक प्रवृत्तियों में व्यस्तता और महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए यह अपेक्षा होना स्वाभाविक है कि आर्यसमाज गोहत्याबन्दी जैसे अहम आन्दोलन का भी नेतृत्व सम्भाल सकेगा। गोरक्षा का प्रश्न एक राष्ट्रव्यापी समस्या है। इस यज्ञ को पूर्ण करने के लिये प्रचण्ड जनशक्ति जाग्रत करनी होगी और सरकार के मस्तिष्क से धर्म निरपेक्षता का भूत निकालकर देश में हिन्दूराष्ट्र के निर्माण की भावना जाग्रत करनी होगी।

मानव लक्ष्य प्राप्ति का एकमात्र साधन योग

लेखक – वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति ११/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-५१

मानव देहधारी प्राणी के लिए इस संसार में दो ही मार्ग हैं। या तो भोगों से भरा संसार ही प्राप्त कर ले या आनन्द के भण्डार परमात्मा को। तुम्हें जो चाहियें चुन लो, अरे! यह स्वतन्त्रता मानव शरीर में ही तो उपलब्ध है।

भोग तो अन्य योनियों में भी भोगे जा सकते हैं,किन्तु योग (परमात्मा से मेल) तो केवल मनुष्य योनि में ही सम्भव है। इसीलिए तो सन्त तुलसी दास ने कहा है:—

बड़े भाग मानुष तन पावा।
और यह मानुष तन ही तो—
साधन धाम मोक्ष का द्वारा।

अय मानव! सत्यज्ञान और अपरोक्ष देव की प्राप्ति के लिए उठ खड़ा हो, और अपने ही पूर्वज ऋषि की इस ओजस्विनी पवित्र वाणी पर ध्यान दें। 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्नि बोधत' वेदान्त की इस घोषणा को सुन, और सांसारिक आसक्तियों से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर परम-कल्याणी मां से सम्बन्ध जोड़।

अय मानव! यह जीवन तुम्हे जीने के लिये तो मिला है, परन्तु जीवन को सुन्दरतम बनाकर जो, और इतना सुन्दर बना कि वह 'सत्यमम् शिवम् सुन्दरम्' का पावन और अलौकिक रूप तुम्हे सहज भाव से दीखने लगे। सांसारिक उपलब्धियां सब तेरे लिए ही हैं उन्हें भोगो, अवश्य भोगो, परन्तु सदा सर्वदा सावधान रहो। ऐसा न हो कि कहीं तुम उनमें फंस जाओ और वे तुम्हें ही भोगने लगें। इसीलिये महाराजा भर्तृहरि ने कहा है—

भोगा: न भुक्ता: वयमेव भुक्ता:।
तपो न तप्तं वयमेव तप्ता:॥
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा:।
कालो न यातो वयमेव याता:॥

अर्थात् हमने भोग क्या भोगे, भोगों ने ही हमारा भुगतान कर दिया।

इसीलिए तो कहा है—भोगे रोग भयम्। अतः तुम क्या हो और संसार से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? यह जाने बिना जीना मरुस्थल में खेती के समान है। योग तुम्हें बतायेगा कि जीवन क्या है, संसार क्या है, तुम क्यो हो और तुम्हारा संसार से क्या सम्बन्ध है?

योग और योगी के लिये आज लोगों ने गलत धारणायें बनाली हैं। वे लोग योग को संसार से अलग करके देखते हैं, किन्तु यह गलत है। योग संसार से कहीं अलग जाकर जंगल या वन में बसने से नहीं होता। अपितु संसार योग के मार्ग में बाधक न होकर साधक ही है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि तुम संसार की ओर अपनी सही स्थिति समझ लो, और उस स्थिति के अनुरूप अपने को ढाल लो। ऐसा होने पर तुम संसार के इशारे पर नहीं बल्कि संसार तुम्हारे इशारे पर नाचने लगेगा।

भागती फिरती थी दुनिया, जब तलब करते थे हम।
अब जो नफरत हमने की, वह बेकरार आने को है॥

जीवन सुन्दरता से जीने के लिए है, जंगलों और वनों में रहने का समय तो लगभग समाप्त सा हो चुका है। कभी ठीक था, ऋषि-मुनि वनों में भी आश्रम बनाकर रहते थे। आज की परिस्थिति में कम सम्भव है।

स्मरण रखो कि सद्गुण दुर्गुणों के मुकाबले में इतने कमजोर नहीं हैं कि वे संसार में रहकर सुरक्षित न रह सकें। सद्गुण यदि कमजोर हैं तो वे जंगल में भी सुरक्षित न रह सकेंगे। जियो, परन्तु सुन्दरता से जीओ। संसार में रहो किन्तु रहते हुए भी अपने सम्बन्ध [illegible] को न भूलो। यही योग है। "योग. कर्मसु कौशलम्" यह [illegible] है। योग की आधारशिला पर खड़ा जीवन व्यक्तित्व [illegible] होता है और आत्मा को शक्ति, सामर्थ्य, प्रकाश और दिव्य-ज्योति से भर देता है। सम्पूर्ण गीता में यही तो भगवान कृष्ण ने अर्जुन को नानाप्रकार से समझाया है। जप, तप, व्रत, संयम नियम सब साधन हैं, साध्य नहीं हैं। साध्य तो आत्म-साक्षात्कार और परमात्म दर्शन ही है, जो सर्वदा तुम्हारे पास है।

सब जगह मौजूद है, पर वह नजर आता नहीं।
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं॥

पाठक वृन्द? हमने अज्ञान का पर्दा डाल रक्खा है। बस आवश्यकता इसी बात की है कि उसे हटा दिया जाये।

वजह मालूम हुई तुझसे मिलने की सनम,
मैं खुद ही पर्दा था, मुझे मालूम न था।

यही जीवन का परम लक्ष्य है, जहां पहुंचकर साधक अपने परम स्वरूप को न केवल जानता या देखता है, वरन् उसी में आत्म-सात हो जाता है, किन्तु इस परम स्थिति में पहुंचाने की सामर्थ्य अनन्य भक्ति में ही है।

'श्रद्धया सत्यमाप्यते।'

अर्थात् अन्धविश्वास रहित सच्ची श्रद्धा भक्ति से ही सत्य की प्राप्ति होती है। अनन्य भक्ति बिना अपरोक्ष ज्ञान के हो नहीं सकती। अपरोक्ष ज्ञान कराने वाला साधन ही योग है। अनन्त आनन्द के भण्डार उस चेतन तत्व से सम्बन्ध होते ही सांसारिक विषय और उन्हें भोगने की रुचि स्वभावतः ही समाप्त हो जायेगी। प्राणी राग द्वेष से विमुक्त होकर भोगों की पराधीनता से स्वाधीन हो जायेगा। भोगों का अस्तित्व समाप्त होते ही मन विकल्प रहित होकर निर्मल हो जायेगा। मन के निर्मल होते ही अन्तःकरण शुद्ध हो जायेगा।

पाठको? और पाठिकाओं! उस सुख और शान्ति की प्राप्ति के लिए कहीं अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं है। वह तो हर जगह और हर स्थिति में तुम्हारे अन्दर ही विद्यमान है। आवश्यकता है उसे जगाने और जानने की। उसे जानकर और उससे सम्बन्ध स्थापित कर जहां कहीं भी रहो, आनन्द से रहो। घर में परिवार के साथ रहते हुये भी यदि तुमने उससे अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, तो संसार की वासनाएं और बड़े से बड़ा तूफान भी तुम्हें तिल भर भी विचलित नहीं कर सकता। इसीलिए तो ऋषियो ने मार्ग दिखलाया है कि पहले योगी बनो और फिर कर्मों में प्रवृत्त हो जाओ। संसार में रहकर हर प्रकार के कर्म करते हुए भी तुम निःस्पृह रहकर भोगो (विषयों, की आसक्तियों में न फंसोगे। क्योंकि योगी बनकर तुम्हे यह विदित हो जायेगा कि तुम न तो कर्त्ता हो और न भोक्ता हो। तब समस्त कर्म तुम्हारे अन्दर बिना कोई हलचल किये सहज रूप से होंगे। जैसाकि योगीराज कृष्ण ने कहा है—

योगस्थः कुरु कर्माणि संगत्यक्त्वा धनंजय।
सिद्धय सिद्धयोः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

साहित्य समीक्षा

वेद ज्ञान पीयूष पुस्तक

प्रकाशक—मुनिशंकर वानप्रस्थ
१-डी० एस० आई० डी० फ्लैट्स पीतमपुरा दिल्ली-३४
मूल्य १०)

श्री मुनिशंकर वानप्रस्थ ने 'वेद ज्ञान पीयूष' लिखकर वैदिक धर्म की महती सेवा की है। आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम जी ने मृत्यु शैय्या पर एक वसीयत की थी कि आर्य समाज की लेखनी का काम बन्द न हो! आदर सहित उसी वसीयत को मूर्तरूप देते हुए मान्यवर मुनिशंकर जी ने 'वेद ज्ञान पीयूष के नाम को सार्थक करते हुए अनादि काल से ज्ञान मार्ग को प्रशस्त करने वाले वैदिक धर्म के अमर सिद्धान्तों के विषयों पर दार्शनिक एवं वैदिक आधार पर इस ग्रन्थ का निर्माण किया है और इस प्रकार पुरातन एवं सनातन वैदिक धर्म की उन मान्यताओं को मूर्तरूप दिया है। जिनका प्रतिपादन पांच हजार वर्षों के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने विश्व में किया है। इस ग्रन्थ रत्न में धर्म का स्वरूप एवं मतमतान्तर धर्म एवं सम्प्रदाय, वैदिक-धर्म की मान्यतायें, ईश्वर सिद्धि और ब्रह्म का स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव, वेदज्ञान अहिंसा—इसमें प्रतिपादित वेद विद्या, वेद ज्ञान का प्रतिपादन प्राण विद्या, मन आत्मा और गायत्री पर गहन विचार, उपासना की सर्वोत्तम विधि जैसे अनेक विषयों पर विदेशी एवं भारतीय मतमतान्तरों की मान्यताओं पर सम्यक् विचार के अनन्तर वेद और उपनिषदों के प्रमाण के आधार पर सृष्टि उत्पत्ति के वैज्ञानिक स्वरूप की बड़ी गहन एवं सूक्ष्म दृष्टि से विचार करके दर्शाया गया है। अन्त में परमानन्द एवं मोक्ष की विधि बताकर जीवन मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त करके श्री मुनि शंकर वानप्रस्थ ने जन्म मरण के चक्र में भटती हुई मानव जाति का मार्ग इस ग्रन्थ द्वारा प्रशस्त करके भारी उपकार किया है।

मैं आर्य जनता एव आवागमन में विश्वास करने वाले भाई बहनों से अनुरोध करता हूँ। ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें। —रामगोपाल शालवाले
प्रधान सा० आ० प्र० सभा

आर्य वीर दल द्वारा नरवाणा जींद) में उपव्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविरायोजन

नरवाणा (जींद)। समस्त प्रान्तों के दल संचालकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सारे भारत में दल शिक्षकों की उभरती मांग को पूर्ण करने हेतु २३ मई से ३१ मई १९८९ तक नरवाणा (जींद) आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मे उपव्यायाम शिक्षक बनाने हेतु प्रशिक्षण कर आयोजन किया जा रहा है।

अतः जो आर्य वीर किसी एक शिविर में प्रशिक्षण पूर्व में ले चुके हैं। वे ही धुन के धनी आर्य वीर इस प्रशिक्षण-शिविर के लिए ग्राह्य होंगे।

इन्हें इस शिविर के बाद गुरुकुल झज्झर में पुनः प्रशिक्षित किया जायगा तथा जो योग्य होंगे उन्हें योग-क्षेम से युक्त कर विभिन्न प्रान्तों में नियुक्त कराने का यत्न किया जायेगा। इस शिविर का समस्त व्यय भार का उत्तरदायित्व इस क्षेत्र के मण्डलपति रामकुमार जी आर्य एवं हरियाणा प्रान्त के अधिष्ठाता श्री धर्म वीर जी ने सम्हालने की घोषणा की है। सारे क्षेत्र में इस युवा पीढ़ी को सुसंस्कृत करने के इस कार्य की प्रशस्ति की जा रही है।
—संवाददाता

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम

आशानन्द भजनोपदेशक द्वारा एक लाख का दान

गाजियाबाद। सदैव की भांति इस वर्ष भी शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम का वार्षिकोत्सव अन्तिम दिन विशाल प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न हुआ आठ अप्रैल से नव तथा मध्य मध्य में अनेकानेक विद्वान संन्यासियों, विद्वानों के प्रवचनों ने गाजियाबाद के धर्म प्रेमी नागरिकों को आकर्षित किया। उपस्थिति बड़ी ही अच्छी होती थी।

उत्सव की महान उपलब्धि ये रही कि महामहो भजनोपदेशक श्री आशानन्द जी मैजिकसैटर्न ने एक लाख रुपये की राशि आश्रम के आचार्य श्री प्रेमानन्द जी सरस्वती को वेद, यज्ञादि के प्रचार प्रसार के लिये प्रदान कर श्रोताओं को चकित कर दिया आत्म विभोर होकर श्री आशानन्द ने कहा, इस तुच्छ राशि को शुभ कार्यों में खर्च कीजिये मैं और धन दूंगा। प्रभु कृपा से धन बहुत है यह श्रेष्ठ कार्यों के लिये ही है बैंकों में जमा करने के लिये नहीं, सभी श्रद्धालु लोगों ने भी मुक्तहस्त से दान देकर आश्रम की वृद्धि की।
—संवाददाता

आर्य समाज हरफरी (बदायूं) २६ मार्च के वार्षिक उत्सव पर श्री शालवाले का आह्वान

नरोरा से आगे १५ किलो मीटर दूर कच्चे खेतों में आर्यसमाज हरफरी के वार्षिक उत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले एवं सभा उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री वहां पहुँचे।

सर्वप्रथम सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने स्वामी ब्रह्मानन्द का पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत किया। स्वामी जी आर्य समाज में प्रवेश से पूर्व राम कृष्ण मिशन में थे। स्वामी जी आर्यसमाज से प्रभावित होकर राम कृष्ण मिशन को त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश कर वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा कार्य कर रहे हैं। इस उत्सव में ग्रामीण क्षेत्रों से हजारों लोगों ने लाभ लिया।

उत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने युवकों को आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें आर्य समाज में आना चाहिए और देश के समस्त क्षेत्रों में आर्य वीर दल की शाखाओं की स्थापना करनी चाहिये। श्री शालवाले ने जम्मू काश्मीर और पंजाब में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों के बारे में बताया और शासन मांग की कि पंजाब को शीघ्र सेना के हवाले किया जाये। इस समय देश खतरे के दौर से गुजर रहा है। जिससे देश की अखण्डता के लिए खतरा है। इससे देशवासियों को सावधान रहना चाहिए। सभा के अन्त में श्री शालवाले ने श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी एवं अन्य कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया।

धूमकेतु से सम्भावित आपदायें ?

—काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)

७५ साल बाद पुनः दिखलाई पड़ने वाले धूमकेतु से होने वाली सम्भावित आपदाओं के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगायी जा रही हैं। एक ओर जब पश्चिमी वैज्ञानिक फ्रेडहायल तथा अन्य कइयों की यह धारणा है कि 'आज से करोड़ों वर्ष पूर्व से 'जैवतत्व' धूमकेतुओं की पूंछ के सहारे पृथ्वी पर आने लगे और उन्हीं के कारण पृथ्वी पर जीवन का विकास हुआ।' तब यह कैसे माना जाय कि इस बार धूमकेतु की लाखों मील लम्बी पूंछ अपने साथ असंख्य ऐसे जहरीले तत्व और सूक्ष्म विषाणु लावेगी कि जिनसे विश्व के अनेक भागों में नये किस्म की बीमारियां फैलेंगी ? पुनः यदि यह सच भी मान लिया जाय कि धूमकेतु की पूंछ में तरह-२की जहरीली गैस असंख्य सूक्ष्म विषाणु होते हैं तो उनका कुप्रभाव वायु-प्रदूषण और महामारियों के रूप में प्रकट हो सकता है जिसके लिये प्रतिरोधक या कुप्रभाव को नष्ट अथवा क्षीण करने के कतिपय उपाय किये जा सकते हैं जिनमें हवन सर्वोत्तम उपाय है। परन्तु ऐसे कुप्रभावों के निवारणार्थ सर्वत्र विशाल यज्ञ (हवन) किये जायें तभी उन के सुपरिणाम सुस्पष्ट दृष्टिगोचर हो सकते हैं।

खगोल शास्त्रियों और अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों की धारणानुसार धूमकेतु के पृथ्वी के अति निकट आ जाने पर उसके प्रभाव के कारण भूकम्प, भयंकर समुद्री तूफान व शीतलहर और ज्वालामुखी विस्फोट इत्यादि किसी न किसी प्राकृतिक अनर्थ की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। परन्तु धूमकेतु के आगमन के प्रभाव का सम्बन्ध संसार में प्रतिदिन होने वाली दुर्घटनाओं, राजनीतिक उथल-पुथल, महायुद्ध और राजाओं, महाराजाओं, राष्ट्राध्यक्षों वा महापुरुषों के निधन इत्यादि से जोड़ना सर्वथा असंगत वा अमान्य है। उदाहरणार्थ हजारों व्यक्तियों की जान लेवा गत वर्ष की भोपाल गैस त्रासदी का या अभी हाल में भिलाई में हुये इस्पात संयन्त्र में गैस विस्फोट जैसी घटनाओं का सम्बन्ध धूमकेतु के आगमन से जोड़ना सर्वथा हास्यास्पद व अविश्वसनीय है। इस मामले में हमारे भारतीय ज्योतिषी और भविष्यवक्ता तो और भी अधिक कुशल व अग्रणी हैं। ज्यों ही नये वर्ष का आगमन होता है त्यों ही ये लोग देश के प्रमुख राजनीतिक नेताओं व व्यक्तियों का वर्ष भर का भविष्य बखान डालते हैं और संसार भर की राजनीतिक उथल-पुथल की भविष्यवाणी कर देते हैं जो देश-विदेश में चल रही राजनीतिक गतिविधियों के सूक्ष्म अवलोकन या अध्ययन पर अनुमानित होती हैं। यदि उनमें से कोई बात किसी भविष्यवक्ता की सत्य निकले तो कोई विशेष बात नहीं क्योंकि किसी वर्तमान घटनाक्रम को देखते हुये उसके परिणाम के सम्बन्ध में अनुभवी राजनीतिज्ञों या विचारशील व्यक्तियों का अनुमान प्रायः सही निकलता है।

यही बात ग्रहों की पृथ्वी से अति निकट या दूर होने की स्थिति पर चरितार्थ होती है। परन्तु ये ग्रह (धूमकेतु आदि) कोई दैत्य, हिंसक पशु या दुष्टात्मा नहीं हैं जो किन्हीं विशेष व्यक्तियों को जान-बूझकर हानि पहुंचावें या अपनी किसी पुरानी दुश्मनी का बदला लें। कहा जाता है कि धूमकेतु जिस दिशा में निकलता है वहां के देश इससे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इस बार धूमकेतु पश्चिम दिशा में निकला है अतः पाश्चात्य खगोल शास्त्रियों और अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों के मतानुसार इस बार धूमकेतु के आगमन को सर्वाधिक अनिष्टकारी परिणाम यूरोपीय देशों को भुगतना पड़ेगा। परन्तु राजनीति से रोटियां सेंकने वाले एक प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी जी महाराज की मान्यतानुसार 'धूमकेतु का असर वर्ष (१९८६) भर रहेगा तथा इससे राष्ट्रीय स्तर के नेतागण एवं उद्योगपति प्रभावित होंगे। खासकर धूमकेतु का अनिष्टकारी प्रभाव दिल्ली पर खासतौर से पड़ेगा और इसके फलस्वरूप बड़ी बैंक डकैतियां व अग्नि-दुर्घटनायें होंगी जिनसे जान-माल का भारी नुकसान होने का अन्देशा है।'

समीक्षा—यदि ज्योतिषी जी महाराज ने धूमकेतु के अनिष्ट के बारे में दिल्ली के सम्बन्ध में सर्वाधिक विचार किया था तो उन्होंने अभी कुछ दिन पहिले दिल्ली के एक पांच सितारा होटल में भीषण आग लगने के बारे में पहिले से भविष्यवाणी क्यों नहीं कर दी और भीषण आग न लग सकने के उपाय क्यों नहीं प्रकाशित कर दिये ?

यही बात राजा-महाराजाओं या राष्ट्राध्यक्षों के बारे में भी चरितार्थ होती है। शासकों या राष्ट्राध्यक्षों ने धूमकेतु का क्या बिगाड़ा है जो वह इनका अनर्थ करेगा ? सन् १९१० में जब धूमकेतु दिखा था तब उसके कुछ ही समय बाद यदि संयोगवश ब्रिटिश सम्राट एडवर्ड सप्तम की मृत्यु हुई तो इसका यह अर्थ नहीं है कि इस बार भी कई राजाओं, राष्ट्रपतियों, राजनेताओं और महापुरुषों की मृत्यु होगी ही। यों तो प्रति वर्ष किसी न किसी प्रसिद्ध राजनेता या महापुरुष की मृत्यु होती ही रहती है।

पुनः धूमकेतु के दुष्प्रभाव के कारण राष्ट्राध्यक्षों इत्यादि की मृत्यु के सम्बन्ध में ज्योतिषियों में एक मत भी नहीं है।

उदाहरणार्थः—यूरोपीय देशों के तीन और अमेरिका के दो प्रमुख ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की है कि 'इस बार विश्व के कम से कम पांच देशों के राष्ट्राध्यक्ष और दो प्रधान मन्त्रियों का देहान्त १९८६ के मई महिने से नवम्बर तक होने की सम्भावना है।' जब कि इस देश के एक-दो सुविख्यात ज्योतिषियों ने कम से कम तीन राष्ट्राध्यक्ष या राष्ट्र प्रमुखों की शोचनीय मृत्यु होने की तथा लगभग डेढ़ दर्जन बड़े नेताओं के जीवन के लिए संकट पैदा होने की आशंका व्यक्त की है।

'सम्भावना है,' 'आशंका है,' 'हो सकती है' इत्यादि ज्योतिषियों की संदिग्ध भाषा भी इनकी भविष्यवाणियों की असत्यता प्रकट करती है। 'लग गया तो तीर, नहीं तो तुक्का' वाली कहावत के अनुसार यदि इनकी कोई बात सत्य निकली तो डींग हांकेंगे नहीं तो चुप होकर बैठ जायेंगे।

धूमकेतु के अनिष्टकारी प्रभाव के बारे में भी ज्योतिषियों में मतैक्य नहीं है। देश के एक सुविख्यात ज्योतिषी के मतानुसार धूमकेतु का असर वर्ष भर रहेगा। किन्तु दूसरे ज्योतिषियों के अनुसार धूमकेतु का प्रभाव तीन वर्ष तक रहेगा। जबकि महाराष्ट्र ज्योतिष महामण्डल के कुछ सदस्यों ने यह भविष्यवाणी की है कि 'धूमकेतु के आगमन के कुप्रभाव सन् १९८५ से १९८९ तक (चार वर्ष) स्पष्ट रूप से देखे जा सकेंगे। महायुद्ध होने न होने के बारे में भी ज्योतिषियों में एक राय नहीं है। कुछ के मतानुसार सन् १९८६ के मध्य में विश्व के कुछ क्षेत्रों में युद्धाग्नि भड़केगी, परन्तु कई ज्योतिषियों के अनुसार इस वर्ष किसी बड़े या विश्वयुद्ध का योग नहीं है। इसी प्रकार देश के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी के अनुसार भू०पू० प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई, चौधरी चरणसिंह और अन्य अनेक राजनेताओं व जार्ज फर्नांडीज का भाग्योदय इस वर्ष होने की सम्भावना नहीं है। जब कि एक अन्य सुविख्यात ज्योतिषी के अनुसार इस वर्ष जार्ज फर्नांडीज व वर्तमान दल के सांसदों का भाग्योदय होगा ही।

इस प्रकार हम देखते हैं कि धूमकेतु के कुप्रभाव, की अवधि और उसके दुष्परिणामों के सम्बन्ध में ज्योतिषियों में एक मत नहीं है अतः उनकी ये समस्त भविष्य वाणियां केवल अनुमान पर आधारित होने के कारण अविश्वसनीय हैं। यों तो राज्यपाल

(शेष पृष्ठ १० पर)

विरोध दिवस सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले के निर्देशानुसार सम्पूर्ण देश में दिनांक ३०-३-८६ को पंजाब में हो रहे नर संहार का विरोध करने के लिए दिवस मनाया गया देश की समस्त आर्य समाजों एवं हिन्दू संगठनों ने अपने यहां साधारण सभाओं में इस आशय के प्रस्ताव पास करके भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री भारत सरकार, गृह-मन्त्री भारत सरकार तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नाम भेजे हैं। प्रस्तावों का मूल प्रारूप, जो सर्व सम्मति से पारित किए गए, निम्न प्रकार था।

इन सभाओं ने विघटनवादी तत्वों से देश की सुरक्षा व अखण्डता को होने वाले खतरों के प्रति भारत सरकार एवं जनता का ध्यान आकर्षित करते हुए अनुरोध किया गया कि वे विदेशी शक्तियों के इशारे पर देशमें अस्थिरता पैदा करके देश की प्रगति अवरुद्ध करने के उद्देश्य से साम्प्रदायिक दंगे कराने वाले इन तत्वों से सावधान रहें।

इन सभाओं की यह मान्यता है कि देश की सुरक्षा के लिए देशवासियों में एकता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

पारित प्रस्ताव

(१) अमेरिका के नौ सैनिकों के साथ जंगी बेड़े के करांची (पाकिस्तान) बन्दरगाह पर पहुंचने तथा जम्मू कश्मीर सीमा पर पाकिस्तानी सेना के भारी जमाव से देश की अखण्डता के लिए भारी खतरा उत्पन्न हो गया। अतः सरकार से अनुरोध है कि इसका शीघ्र ही प्रतिकार करे।

(२) भारत सरकार धर्मभाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गई पृथक राज्य की मांगों को दण्डनीय अपराध घोषित करें, साथ ही संविधान की उन धाराओं को निरस्त कर दें जिनके आधार पर बहुसंख्यक अथवा अल्पसंख्यक मानकर विभाजित किया जाता है।

(३) देश में एक समान नागरिक न्याय संहिता लागू की जावे और मुस्लिम कट्टर पन्थियों के पुष्टिकरण के लिए पेश किया गया शाहबानों प्रकरण विधेयक वापिस लिया जावे।

(४) भारतीय संविधान की धारा एक में परिवर्तन करके देश को राज्यों का संघ न मानकर प्रशासनिक ईकाइयों का स्थान दिया जावे, जिससे देश की अखण्डता बनी रहे।

(५) इन सभाओं ने भारत सरकार से अनुरोध किया कि पंजाब में हिंसा और तोड़ फोड़ की कार्यवाही रोकने के लिए पूर्ण शांति होने तक उसे सेना के सुपुर्द कर दिया जावे तथा उत्तर पश्चिम सीमा से लगने वाले जम्मू काश्मीर पंजाब हरियाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर एक बृहद प्रांत बना दिया जावे।

धूमकेतु से सम्भावित आपदायें ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

या मुख्यमन्त्री राजनीतिक अस्थिरता के कारण बदलते ही रहते हैं और प्रतिवर्ष किसी न किसी प्रसिद्ध राजनेता या महापुरुष की मृत्यु होती ही रहती है। संसार के कई देशों में युद्ध चल ही रहे हैं और यदि वे युद्ध विश्व युद्ध में परिवर्तित हो जायें तो भी कोई आश्चर्य नहीं, परन्तु इन घटनाओं का सम्बन्ध धूमकेतु के आगमन से जोड़ना सर्वथा असंगत व अन्धविश्वास है। अतः इन बातों की भविष्यवाणी करके जनता को व्यर्थ में आतंकित करना और अपना गौरव प्रस्थापित करने का प्रयत्न करना ज्योतिषियों के लिये अशोभनीय है। हाँ यदि किसी प्राकृतिक असाधारण उलट-फेर की या जहरीली गैस अथवा विषाणुओं से किसी महामारी के फैलने की निश्चित सम्भावना हो और यदि उनके प्रतिरोधक उपाय किये जा सकते हों तो अवश्य किये जावें, परन्तु वे उपाय (माग अरोहे बैठकर, हरिनाम स्मरण, कीर्तन आदि न होकर वैज्ञानिक हों।

आर्य समाजों की सूची जहां पर पंजाब विरोध दिवस मनाया गया

१. आर्य समाज गोलीपेठ जि० मेदक (आन्ध्र प्रदेश)।
२. आर्य समाज उटकूर जि० महबूब नगर (आन्ध्र प्रदेश)।
३. आर्य समाज गजवेल जि० मेदक ,,
४. ,, ,, ब्रह्मपुरी मेरठ (उ० प्र०)
५. ,, ,, मद्रास (आन्ध्र प्रदेश)
६. ,, ,, मन्दिर सिविल लाइन्स अलीगढ़
७. ,, ,, महबूब नगर (आन्ध्र प्रदेश)
८. ,, ,, ग्राम चिटमपल्ली जि० रंगारेड्डी (आ० प्र०)
९. ,, ,, लश्कर नया बाजार ग्वालियर
१०. ,, ,, मल्हार गंज इन्दौर (मध्य प्रदेश)
११. ,, ,, सागर (म० प्र०)
१२. ,, ,, मन्दिर न्यू मोतीनगर (कर्मपुरा दिल्ली)
१३ ,, ,, (रजि०) जनक नगर सहारनपुर
१४. केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा बी० बरुआ रोड़ गौहाटी आसाम
१५. आर्य समाज मन्दिर गोपपुरा ग्वालियर
१६. आर्य केन्द्रीय सभा करनाल हरियाणा
१७. आर्य समाज मोहल्ला गोविन्द गढ़ जालन्धर नगर १४४००१
१८. आर्य समाज डेसापुरी नागपुर
१९. मन्त्री आर्य समाज अशोक नगर गुना (म० प्र०)
२०. आर्य समाज मवाना जि० मेरठ (उ० प्र०)
२१. आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर आईपाक मार्ग जालन्धर पंजाब
२२. आर्य स्त्री समाज बुढ़ाना गेट मेरठ
२३. आर्य समाज नयागंज हाथरस (उ० प्र०)
२४. आर्य समाज बागपत जि० मेरठ (उ० प्र०)
२५. आर्य समाज पुरी पंजाब
२६ आर्य समाज अजमेर (राज०)
२७. आर्य समाज फीरोजाबाद
२८. आर्य समाज टंकारा (गुजरात)
२९. आर्य समाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़
३०. आर्य समाज मन्दिर सूरत (गुज०)
३१. गुरवार बाजार आर्य समाज गोलीपेट हैदराबाद
३२. आर्य समाज जयपुर हाउस आगरा (उ० प्र०)
३३. आर्य प्रतिनिधि सभा (उ० प्र० लखनऊ)
३४. आर्य समाज धर्माश्री जहीराबाद
३५. आर्य समाज चम्बा हिमाचल प्रदेश
३६. आर्य समाज पनोड़ा होशियारपुर
३७. आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर
३८. आर्य समाज फिरोजपुर शहर
३९ आर्य समाज अशोक विहार दिल्ली
४०. आर्य समाज रेलवे कालोनी रतलाम (म० प्र०)
४१. आर्य समाज नारायण पेठ जिला महबूबनगर (आ० प्र०)
४२. आर्य समाज बोधर गुड़ा ,, ,, ,,
४३. आर्य समाज महिदपुर जिला उज्जैन म० प्र०
४४. आर्य समाज इन्दौर म० प्र०
४५. आर्य समाज शाजापुर ,, ,,
४६. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश दिल्ली
४७. आर्य समाज प्रेमनगर करनाल हरियाणा
४८. आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर (हरि०)

आर्यसमाज की गतिविधियां

नेपाल में आर्य समाज का द्वितीय आर्य महासम्मेलन

नेपाल की राजधानी काठमाण्डो में होगा।

विभिन्न आर्य समाचार-पत्रों के माध्यम से आपको पता चला होगा कि हाल में ही विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल मे प्रथम आर्य महासम्मेलन वीरेन्द्र सभागृह मे बड़ी ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ, यह हमारा प्रथम प्रयास था।

अब हमारा और श्रद्धेय सभा प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले का संयुक्त विचार है कि द्वितीय आर्य महासम्मेलन नेपाल की राजधानी काठमाण्डो मे हो जिसके लिए केन्द्रीय समिति का भी चयन किया है जिसका नाम 'नेपाल आर्य समाज' रखा है।

नेपाल एक गरीब देश है साथ ही यहां के आर्य समाजियो की सख्या एव स्थिति अत्यन्त दयनीय है।

सहयोग आपका और कार्य हमारा

विराट नगर वाले सम्मेलन से पहले यहा के आर्य समाजी सुसुप्त थे अब कुछ जागृत हो गये हैं साथ ही प्रशासन भी समर्थक है हमारा सौभाग्य है कि हमें नेपाल देश के सम्माननीय प्रधानमन्त्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल जैसे संरक्षक मिले हैं।

काठमाण्डो वाले सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल नरेश महाराजा श्री वीरेन्द्र वीर विक्रम शहादेव के कर कमलो से हो यह हमारा प्रयत्न रहेगा साथ ही भारत तथा अन्य देशो के आर्य समाजें इस आर्य महासम्मेलन मे शरीक हों और विश्व के एक मात्र हिन्दू राष्ट्र का दर्शन करें।

हम चाहते हैं कि यह सम्मेलन २०४३ वि० स० कार्तिक अक्टूबर १९८६ महीने मे हों।

विश्व मे फैले सब आर्य समाज एव आर्य समाजी बन्धुओ से हमारा निवेदन है कि इस सम्मेलन को सफल बनाने हेतु नये सुझाव विचारादि भेजकर हमारे मार्ग दर्शन कर अनुग्रहीत करें। हमारा पता है—

—प्रकाशचन्द्र सुवेदी
महा सचिव
विश्व हिन्दू संघ पो० बा० ४०५
पशुपति, काठमाण्डो नेपाल

युवा शक्ति का गुरुकुल एवं वीरांगनाओं की विद्यापीठ

आर्य जगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि आबू पर्वत (राजस्थान) पर पन्द्रह बीघे जमीन क्रय करके महान कर्मठ सन्यासी स्वामी धर्मानन्द आर्ष गुरुकुल एव अट्ठाइस बीघे धरती श्री देवीराम चौहान से दान में कन्या गुरुकुल के लिये शिवगज मे प्राप्त कर ली गई है जिसमे शीघ्र ही कन्या गुरुकुल की स्थापना की जावेगी। दोनो गुरुकुलो की नीव महान तपस्वी संन्यासी श्री ओमानन्द सरस्वती द्वारा रक्खी जावेगी।

आर्ष गुरुकुल आबू एव कन्या गुरुकुल शिवगज शिलान्यास समारोह के उपलक्ष्य मे सामवेद परायण यज्ञ श्री लाला नन्द जी वेद वागीश के आचार्यत्व मे हो रहा है। ३१ मई १, २ जून को उत्सव होगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बाल दिवाकर जी हंस, श्री प्रो० कर्मवीर जी व श्री डा० कृष्णलाल जी आदि कई विद्वान पधार रहे है।

मन्त्री, आर्य समाज आबू पर्वत

अजेय जी को मातृ-शोक

ज्वालापुर (हरिद्वार) गुरुकुल महाविद्यालय के उपाचार्य डा० सत्यव्रत शर्मा 'अजेय' की माता जी का बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया। यह लगभग ८० वर्ष की थी। अन्त्येष्टि संस्कार जाह्नवी के तट पर वेद मन्त्रों के साथ कनखल मे हुआ। महायात्रा मे अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवगत की आत्मा को शान्ति एव शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—हरिगोपाल शर्मा
प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

पं० बिहारीलाल शास्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

हैं, उनके सत्कार्य बोल रहे हैं, तथा उनका यशशरीर जीवित है। उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जिन आदर्शों एव लक्ष्यों को लेकर वे अन्त तक जीवित रहे, हम भी उन्हें लक्ष्य बनाकर प्रशस्त पथ पर चलते रहें। मानव का सच्चा साथी केवल धर्म है—

"एक. प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एको अनुभुक्ते सुकृत एक एव च दुष्कृतम् ॥ (मनुस्मृति)

[illegible]
करती हैं—

"उद्यान ते पुरुष नावयानम्"
"वेद मेवाभ्यसेत् मार्गोस्थो नावसीदति"

हम इस ससार यज्ञ की सुरभित आहुति बने, इसी मे इस जीवन-यात्रा की सफलता निहित है।

विदाई समारोह

सावदेशिक प्रकाशन लिमिटेड दरियागज दिल्ली के कमठ कमचारी श्री जगदीशसिह का कम्पनी के अन्य कार्यकर्ताओ ने दिनाक १६ ४ ८६ का भाव भीनी विदाई दी। श्री जगदीशसिह उपरोक्त कम्पनी प्रस मे सन १६७२ ई० से कार्य रत हैं। आपकी सेवाओ से प्रस के प्रबन्धक तथा कमचारी सभी सन्तुष्ट हैं। इस अवसर पर उनका फूल मालाओ से स्वागत करके विदाई दी गई।

—सवाददाता

ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

सावसाधारण को यह जानकर हर्ष होगा कि आगामी १ मई से ३ मई १६८६ तक ऋग्वद पारायण यज्ञ के साथ २ म वर्णिक अ य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस सार आयोजन क लिये श्री ओकारसिह एडवोकेट उदयवीरसिह आय लालगढ़ी और डाक्टर दिवाकर शास्त्री अप्रत्याशित रूप से धन सग्रह क साथ व्यवस्था आदि म जुट हैं स्थानीय अनेक सुयोग्य कायकत्ता अपना हार्दिक सहयाग दे रहे है।

—सवाददाता

वधु चाहिए

उत्तम गायना परिवार का लडका गायना निवासी २५ वर्षीय युवक (वाशिग्टन डी० सी० अमरीका की राजधानी के फैडरल गवमन्ट कम्प्यूटर विभाग मे सेवारत परिवार एव लडका सुशील है।

अच्छी आय वाले युवक के लिए म दर सुशील गहकार्यो म दक्ष भारतीय कन्या चाहिए जाति बन्धन नहा। सम्पक कर —

—धमजित जिज्ञासु
४३ ८९ स्माल स्ट्रीट फर्लामिग ग्याक

अत्यन्त दुख क ... न
श्री सत्यप्रकाश जी का आकस्मि ... च
२ १५ बजे निधन हो गया। वह ... प्रित
था और उन्ही के ही प्रयासो से कायरत था।

—मै ... नवास्तव
मन्त्री आर्य ... ज मिण्ड

आर्य युवकों के लिए अद्भुत सग्रह

आर्य युवक-उद्घोष

दैनिक सन्ध्या यन ८१ प्र रणास्पद गीत आय युवक प्रशिक्षण शिविर का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम वैदिक प्रश्नोत्तरी की १५ पृष्ठीय पुस्तक

—एक अनूठी कृति

सम्पादक—श्री अनिल कुमार आय

मूल्य ५ रु० प्रति

सम्पक कर—प्रब धक केन्द्रीय आय युवक परिषद दिल्ली, कबीर बस्ती दिल्ली ११०००७

नया प्रकाशन

१—वीर बरागी (भाई परमानन्द)	४)
२—माता (भगवती जागरण) (श्री खण्डानन्द)	१०) सै०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता:- (१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ७७ चादनी चौक (२) मै० ओम आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर, सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड गज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी, गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कमिकल्स क०, गली बताशा बारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किसन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ११७ लाजपतराय मार्किट (८) ... सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय:
६३, गली राजा केदार नाथ, चावडी बाजार, दिल्ली-६
फोन न० २६१८७१

सार्वदेशिक प्रस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६ दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क २०] चैत्र कृ० ११ सं० २०४३ रविवार ४ मई १९८६

आर्यसमाज दीवान हाल के शताब्दी समारोह में राष्ट्ररक्षा यज्ञ की पूर्णाहुति पर महामहिम उपराष्ट्रपति श्री वेंकटरामनजी

आर्य समाज दीवान हाल के शताब्दी महोत्सव पर भारत के उपराष्ट्रपति श्री वेंकटरामन ने हिन्दू धर्म में जागृति लाने की दृष्टि से आर्य समाज की की गई सेवाओं की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखने मे सर्व साधारण एव विशेष रूप से आर्य समाज को आगे आने के लिए अपील की।

उपराष्ट्रपति ने कहा आर्य समाज वास्तव मे एक हिन्दू धर्म के पुनर्जागरण का प्रतीक है और वह हिन्दू धर्म की प्राचीन विशुद्धता और गरीमा को फिर से वापिस लाना चाहता है। पिछले सौ वर्षों मे आर्य समाज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैला है और नवीन विचारधारा के कारण उसने अनेक कुरीतियो को दूर किया है। श्री वेंकटरामन ने कहा कि आर्य समाज समूची मानवता की भलाई के लिए उठा और उसका आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् रहा भारत की स्वाधीनता मे आर्य समाज के योगदान को देश कभी नही भुला सकता। स्वामी श्रद्धानन्द लाला लाजपतराय के नाम आर्य समाज की कीर्ति को अक्षुण्य बनाए रखेंगे।

श्री वेंकटरामन ने अपने भाषण में रोमा रोला की इन पक्तियो को उधृत किया।

(वह स्वामी दयानन्द सरस्वती) मे एक कर्मयोगी और चिन्तक होने के साथ नेतृत्व की अनूठी प्रतिभा थी वे भारतीय सगठन और पुर्ननिर्माण के दृढ़ दूरदर्शी व्यक्ति थे।

अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के द्वारा उन्होने अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता को सिद्ध किया, यज्ञ के नाम पर होने वाले अश्वमेध गोमेध या नरमेध के खण्डन मे कितनी सूझबूझ से अपने विचारो को रखा।

यदि इस प्रकार का यज्ञ करने वाले स्वर्ग मे जाते हैं तो वे अपने सम्बन्धियों को क्यो नही मारकर यज्ञ मे डाल दे।

उपराष्ट्रपति श्री वेंकटरामन ने विचार व्यक्त करने से पूर्व यज्ञ की पूर्णाहुति पर यज्ञ में भी भाग लिया।

प्रधान मंत्री का सन्देश

प्रधान मंत्री

नई दिल्ली
२४ अप्रैल, १९८६

प्रिय श्री सच्चिदानन्द शास्त्री,

आपका २५ मार्च का पत्र मिला। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली अपने प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का २७ अप्रैल को सार्वजनिक अभिनन्दन कर रहीहै। समारोह की सफलता और उनकी दीर्घायु के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

आपका
राजीव गांधी

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमंत्री
सार्वदेशिक सभा, महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

श्री शालवाले की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ का उद्बोधन-भाषण

आर्यसमाज दीवान हाल के शताब्दी समारोह के अवसर पर तालकटोरा, इन्डोर स्टेडियम में आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री बलराम जाखड़ ने कहा—महर्षि दयानन्द ने हमें स्वदेश, स्वभाषा, स्वराज्य जैसे शब्द और उसका मूल मन्त्र दिया लेकिन हम उसे भूल गये यही कारण है कि आज धर्म के नाम पर आई-आई की ओर रहा है।

हमें भारतीय होने पर गर्व नही रहा, संस्कृति से प्रेम नही रहा यह किसकी कमी है, सरकार की या हम सबकी। हम यदि सजग हैं तो सरकार को बदल सकते हैं। क्योंकि निजी हितों में डूबकर देश को भुला बैठे हैं, उठो आत्मा को जगाओ और बच्चे-बच्चे मे महर्षि की वह वाणी भर दो, किसी भी हालत में देश के हितों की आहुति नहीं देनी है।

देश में हुये नैतिक अवमूल्यन और धर्म के नाम पर हत्याओं व हादसों के वर्तमान दौर पर दुख व्यक्त करते हुए लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़ की आंखें अश्रुपूरित हो भाव विह्वल होगयी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

श्री शालवाले को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट

लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ के कर कमलों से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया। ग्रन्थ भेंट करने से पूर्व श्री प० राजगुरु जी शर्मा ने एक अभिनन्दन-पत्र श्री शालवाले को पढ़कर दिया। साथ ही श्री बा० सोमनाथ जी मरवाह अध्यक्ष स्वागत समिति ने अभिनन्दन ग्रंथ, तैयार करने की प्रक्रिया को प्रस्तुत कर योजना कैसे क्रियान्वित हुई, इसकी चर्चा करते हुए, बीच में आए व्यवधानों का भी दिग्दर्शन कराया।

श्री क्षितीश वेदालकार, श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती श्री वाचस्पति जी उपाध्याय, पं० शिवकुमार शास्त्री ने श्री लाला जी की सेवाओं की सक्षेप में चर्चा कर ऐसी कामना की कि उन्हें देश जाति धर्म की चिरकाल तक सेवा करते हुए दीर्घायु मिले।

श्री शालवाले द्वारा संन्यास की घोषणा

श्री शालवाले ने अपने अभिनन्दन के उत्तर में कहा—कि मैंने अपने जीवन मे जो कुछ किया है वह सब उस ऋषि का प्रताप है, मैंने कुछ नही किया। उन्होंने कहा-कि मैं नही चाहता था कि आप लोग मेरा अभिनन्दन करें, मैंने ऐसा कौन सा काम किया है जिस हेतु मेरा यह अभिनन्दन किया गया है फिर भी मैं राष्ट्रीय एकता-अखण्डता की भावना जन-जन मे जगाने के लिए 'संन्यास ग्रहण करने की घोषणा करता हूँ।

आज के उपरान्त अब दुनियादारी से हटकर सन्यास आश्रम की ओर जाने को ही उचित समझता हूँ। साथ ही अपनी सभा की बैठक बुलाकर मैं सभा के अधिकार पद से भी मुक्त होना चाहता हूँ।

इस घोषणा पर उपस्थित जनमानस भाव विह्वल हो, आश्चर्य मैं पड़ गया और कहा कि आप तो स्वभाव से ही सन्यासी हैं—केवल गैरिक वस्त्र ही बदलने हैं।

स्वामी दीक्षानन्द जी ने श्री लाला जी के सन्यास पर यज्ञ-कुण्ड की तीन मेखलाओ की चर्चा तीन-आश्रमों से की और चौथा सन्यास आश्रम अग्निकुण्ड की अग्नि से तुलना करके श्री लाला जी द्वारा अग्नि मे प्रवेश कर सन्यास का रूप लेने पर १-१ ग्यारह होकर समाज को आगे बढाने मे योग देने की बात कही।

श्री बलराम जाखड़ ने श्री शालवाले के सन्यास धारण की घोषणा पर बधाई देते हुए कहा कि मैं राष्ट्र रक्षा के इस काम मे कन्धा से कन्धा मिला कर चलूगा।

श्री जाखड़ का भाषण

(पृष्ठ १ का शेष)

श्रोताओं में भी आंसूओं की धारा बह निकली।

जिसने कोई भी धर्म ग्रन्थ पढ़ा है वह कभी अत्याचार नहीं कर सकता है। इससे यह बात साबित होती है कि धर्म के नाम पर लड़ने वाले लोगों ने कभी धर्म को जाना ही नहीं है श्री जाखड़ ने—

शिक्षा प्रणाली पर प्रहार करते हुए कहा कि पिछले ४० वर्षों में जो पढ़ाया गया उससे देश प्रेम और संस्कृति गायब है यदि यह सिखा देते कि सबसे पहले देश है तो नव जवानों की यह पीढ़ी इस तरह लड़ नहीं रही होती और न किसी हाथों में खेल रही होती।

प्रसिद्ध पत्रकार वेद प्रताप वैदिक ने कहा—

अगर राष्ट्र की रक्षा करनी है तो यह धर्म परिवर्तन करने से नहीं होगी। देश में पैदा हुए सांस्कृतिक शून्यता को भरने का प्रयास नहीं किया गया तो हिन्दू रहते हुए भी यह देश नष्ट हो जायेगा। आपने कहा कि भाषा, भूषण, भोजन, भजन और भेषज के मामले में भारत आत्म निष्ठ नहीं होगा तो उसकी राष्ट्रीयता सुरक्षित नहीं रह सकती।

लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़

को

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति

श्री डा० कपिल देव जी द्विवेदी आचार्य

द्वारा आर्य समाज दीवान हाल के राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

के शुभावसर पर सादर

अभिनन्दन पत्र

भेंट किया गया

श्री शालवाले को अभिनन्दन पत्र भेंट

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले को अभिनन्दन पत्र भेंट करके श्री प० राजगुरु जी शर्मा ने यह विचार व्यक्त किए कि अभिनन्दन ग्रन्थ के पूर्ण करने में श्री बा० सोमनाथ जी मरवाह ने आर्थिक सहयोग देकर ग्रन्थ के पूर्ण करने मे जो योगदान दिया, उनके हम आभारी हैं। साथ ही उनके लेखन सामग्री जुटाने मे अति योगदान भी सराहनीय है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के लेखन व सामग्री जुटाने मे श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सभा उपमन्त्री की कार्यकुशलता भी अनुकरणीय है उनके प्रयत्नो से ही इस आयोजन को पूर्णता मिली है।

कार्य की पूर्णता मे—कार्यालय को भुलाना भी असम्भव है। श्री रामभूल शर्मा, श्री वसुदेव जी, श्री दानसिंह जी आदि का ग्रन्थ सम्पादन में बड़ा ही योगदान है और यह बधाई के पात्र हैं।

यज्ञोपवीत-संस्कार सम्पन्न

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा के पौत्र चि० अजयकुमार का उपनयन सस्कार २७-४-८६ को प्रात. राष्ट्र-रक्षा यज्ञ के शुभावसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। श्री पूज्य स्वामी जी महाराज ने यज्ञोपवीत देते समय 'ब्र० अजय को जो जीवन का पवित्र उपदेश गायत्री मन्त्र के साथ दिया। वह बड़ा ही हृदयग्राही था।

मातृमान-पितृवान-आचार्यवान पुरुषो वेद का रहस्य देकर कहा कि—

माता की नाभि से बच्चे का सीधा सम्बन्ध रहा है और हृदय से बालक का जीवन हृदय से बधा हुआ है तथा आचार्य के मस्तिष्क का बालक से विवेकपूर्ण ज्ञान देने से इन तीनो के ऋण से उऋण होना ही यज्ञोपवीत के तीन धागो का रहस्य है। श्री स्वामी जी ने प्रतिज्ञा कराई कि तुम सदा मातृ-पितृ आचार्य के भक्त रहकर ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करते रहना।

श्री लाला जी ने संस्कार सम्पन्न होने पर आचार्यों को दक्षिणा दी और यज्ञशेष सभी महानुभावो को प्रदान किया।

दिल्ली में शतायु आर्यसमाज आंदोलन और दीवानहाल

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऐसे समय जन्म लिया जबकि लोग भौतिकवाद की ओर झुक रहे थे और वेदादि शास्त्रों को जंगलियों की बात मानते थे। महर्षि ने इनके विरुद्ध आदोलन किया और लोगों को ईश्वर, जीव और वेद के सत्य स्वरूप को बताया। जो लोग अंग्रेजों की सभ्यता-संस्कृति सीखने के लिए लालायित थे, उन्होंने अपनी संस्कृति पर गर्व करना सीखा। महर्षि ने राजनीति शास्त्र को 'स्वराज्य' शब्द दिया। आर्य समाज ने अछूतों, अभाव ग्रस्त लोगों दलितों, विधवाओं, बाढ़ग्रस्तों, सभी का उपकार किया। स्त्रियों के लिए, अछूतों के लिए शिक्षा और व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

महर्षि दयानन्द का युग पुनः जागरण और सुधारणा का युग था और इन आन्दोलनों में महर्षि और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का प्रमुख योगदान था। वे आधुनिक भारत के महानतम चिन्तक थे। उनके धर्म, दर्शन, समाज, राज्य, अर्थ, शिक्षा सम्बन्धी विचार समस्त मानवमात्र का मार्ग दर्शन करते है। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना इसी उद्देश्य से की थी। 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' उन्नीसवीं सदी में ब्रह्म-समाज, प्रार्थना समाज आदि आन्दोलनों का कार्य क्षेत्र अत्यन्त सीमित रहा। पर आर्य समाज का क्षेत्र विशाल एवं विस्तृत रहा हैं। समाज सुधार, चरित्र निर्माण, संगठन कोई क्षेत्र इसके लिए अछूता नही रहा। सामाजिक कुरीतियों के निवारण, पाखण्ड के खण्डन, अन्धविश्वासों और मिथ्या रूढ़ियों के निराकरण, स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, सामाजिक न्याय और समता की स्थापना, स्वदेशी और राष्ट्रीयता की भावनाओं के विकास आदि के लिए जो ठोस कार्य आर्य समाज ने किया है, वह संभवतः किसी भी संस्था ने नहीं किया। भारत आज स्वतन्त्र है। यहां के नागरिकों में जो राष्ट्रीय चेतना, अपने धर्म और संस्कृति के प्रति गर्व की अनुभूति और आत्म गौरव विद्यमान है, उसका श्रेय भी आर्य समाज को ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना बम्बई में १८७५ में की थी, वे अपने आर्य समाजों की स्थापनाओं, वेद-प्रसार, वेदों के भाष्य, अन्य ग्रन्थो के प्रणयन मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए भी सतत संलग्न रहे। उन्हें बंगाल, बम्बई, उत्तर-प्रदेश पजाब, दिल्ली, राजस्थान आदि सभी स्थानो पर भ्रमण करने का अवसर मिला। आर्य समाज के कार्य में उन्हें अभूतपूर्व सफलता पजाब मे मिली।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पितृगृह छोड़ने के बाद १८५५ मे आबू से मारवाड़, अजमेर, जयपुर, अलवर, दिल्ली, मेरठ और हरिद्वार की यात्रा की थी। उस समय उनकी आयु लगभग ३२ वर्ष थी। वे उस समय की स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना से अछूते नहीं रहे। तात्यां टोपे आदि से भी उनका विचार-विमर्श हुआ। इस लम्बी पैदल यात्रा मे निश्चय ही वे क्रान्ति और विद्रोह की भावना से जुड़ गए होंगे। उन्होंने अंग्रेजों और सिपाहियों के अत्याचारों को अपनी आंखों से देखा था।

बाद में वे दण्डी स्वामी विरजानन्द के सम्पर्क मे आए : उन्होने आर्षग्रंथों संस्कृत व्याकरण का अध्ययन उनके पास रहकर किया। गुरु-दक्षिणा में स्वामी विरजानन्द ने सुयोग्य शिष्य से समाज सुधार और वेद प्रचार की मांग की। ऋषि दयानन्द के हृदय में भी तड़प थी और वे अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए निकल पड़े।

सन १८७७ में महारानी विक्टोरिया से भारत का शासन सूत्र अपने हाथों में ले लेने के उपलक्ष्य में लार्ड रिपन द्वारा 'दिल्ली दरबार' का आयोजन किया गया। इसमें देशी रियासतों के राजा-महाराजाओं उच्च सरकारी पदाधिकारियों, सम्भ्रान्त वर्ग के लोगों को आमन्त्रित किया गया था। स्वामी जी ने सभी गणमान्य लोगों से मिलकर भारत की उन्नति के लिए सम्मिलित रूप से प्रयत्न करने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने की योजना बनाई। उन्होंने शेरमल के अनार बाग मे डेरा लगाया। यह स्थान अजमेरी गेट से दक्षिण-पश्चिम की ओर कुतुब रोड़ पर था। इनके डेरे पर एक बोर्ड लगा था। उस पर लिखा था—'स्वामी दयानन्द सरस्वती का निवास स्थान'। स्वामी जी की ओर से एक विज्ञापन बंटवाया गया जिसमें यह कहा गया था कि सत्य और असत्य के निर्णय का यह उपयुक्त अवसर है। सबको परस्पर मिलकर धर्म और कर्त्तव्य के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करना चाहिए। इसी प्रकार की एक सभा का आयोजन दंडी स्वामी विरजानन्द ने भी १८६१ में किया था। यह कार्यक्रम आगरा में हुआ था, पर उन्हें सफलता नहीं मिली थी। स्वामी विरजानन्द के सुयोग्य शिष्य स्वामी दयानन्द ने भी इस अवसर का लाभ उठाना चाहा। स्वामी जी ने निमन्त्रण को स्वीकार करके बाबू केशव चन्द्र सेन (ब्राह्मसमाज कलकत्ता), बाबू नवीन चन्द्र राय (ब्राह्मसमाज लाहौर) श्री सैयद अहमद खां (अलीगढ़), मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी (पंजाब), बाबू हरीशचन्द्र चिन्तामणि (बम्बई), मुंशी इन्द्रमणि (मुरादाबाद) स्वामी जी के निवास स्थान पर आए। उन्हें भी इस कार्य में विशेष सफलता नहीं मिली।

स्वामी जी दिल्ली, लखनऊ, शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद, छलेसर होते हुए, आर्य समाजों पाठशालाओं के विभिन्न स्थानों पर स्थापना करते हुए दिल्ली पहुंचे। यहां से जनवरी १८७७ के मध्य तक दिल्ली रहकर मेरठ और सहारनपुर की ओर प्रस्थान कर गए।

इस दिल्ली संगोष्ठी का एक और महत्व है। पजाब से आए अनेक महानुभावों से महर्षि दयानन्द का सम्पर्क हुआ। उन्होंने आग्रहपूर्वक स्वामी जी को पजाब में बुलाया। वे ३१ मार्च १८७७ को लुधियाना पहुंचे। उन्होंने लगभग १६ महीने पंजाब में बिताये। वहां एक तरह से आर्यसमाजों का जाल सा बिछ गया। एक जुलाई १८७७ के अंक में 'बिरादरे हिन्द' नामक पत्र मे लिखा था—'यह पुरुष ससार में केवल धार्मिक सुधार का ही इच्छुक नहीं है, वरन् जाति की बाल विवाह आदि सब बुराइयों पर भी उनकी दृष्टि है। स्त्रियो की शिक्षा और स्वतन्त्रता का वह विशेष रूप से इच्छुक है। अविद्या, हठ और दुराग्रह को दूर करना, विद्या का प्रचार करना, और उसे एक आदर्श समाज बनाने का यत्न करना इस पुरुष का साधारण तथा विशेष अन्तिम ध्येय हैं।'

पंजाब से वे सहारनपुर, रुड़की, मेरठ होते हुए ९ अक्तूबर १८७८ को दिल्ली आए। वे सब्जी मण्डी मे लाला बालमुकुन्द केसरी चन्द के बाग में ठहरे थे। वे वहां छः नवम्बर तक रहे। १३ अक्तूबर से छत्ता शाह जी में उनके व्याख्यान हुए। उनके व्याख्यानों से प्रभावित होकर दिल्ली के निवासियों ने भी आर्य समाज की स्थापना का निश्चय किया। दानापुर के लाला मक्खन उन दिनों दिल्ली में थे। उन्होंने १७ अक्तूबर को एक पत्र लिखा था कल उन्होंने बहुत ही बढ़िया उपदेश लोगों को सुनाया है। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं कि थोड़े दिनों में यहां भी समाज स्थापित हो जाए, क्योंकि तीन-चार मनुष्य बड़े सहायक हैं और सभासद हो गये हैं और एक नया समाज स्थापित किया जाएगा।

महर्षि के उपदेशों के परिणाम स्वरूप १८७८ के नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह में दिल्ली में 'आर्य समाज देहली' स्थापित हो गया। इसके प्रथम प्रधान लाला मक्खनलाल और प्रथम मन्त्री लाला हकूमत राव थे। दिल्ली से स्वामी जी राजस्थान चले गए और अजमेर, पुष्कर, मसूदा, नसीराबाद और

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना बम्बई में १८७५ में की था। वे अपने आर्य समाजों की स्थापनाओं, वेद-प्रसार वेदों के भाष्य, अन्य ग्रन्थों के प्रणयन मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए भी सतत सलग्न रहे : देश के विभिन्न प्रमुख नगरों में भ्रमण कर आर्य समाजों की स्थापना में उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिलेगी।

सन १८७७ में लार्ड रिपन द्वारा दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया इसमें देशी रियासतों के राजा-महाराजाओ उच्च सरकारी पदाधिकारियों सम्भ्रान्त वर्ग के लोगों को आमन्त्रित किया गया। स्वामी जी सभी गणमान्य लोगों से मिलकर भारत की उन्नति के लिए सम्मिलित प्रयत्न करने के लिए विचार-विमर्श करने दिल्ली आए। उन्होंने उस समय अजमेरी गेट से दक्षिण-पश्चिम की ओर कुतुब रोड पर शेरमल की बगीची मे डेरा जमाया था।

रिवाड़ी में धर्म प्रचार करते हुए पुन: दिल्ली लौट आए। वे ६ जनवरी १८७९ में यहां आए। यहां से १५ जनवरी को मेरठ चले गये।

'आर्य समाज देहली' की स्थापना के सम्बन्ध में एक और तथ्य को उद्धृत किया जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ३ नवम्बर १८७८ को एक पत्र लन्दन में श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को लिखा। उससे यह ध्वनित होता है कि दिल्ली में आर्य समाज की स्थापना उन्होंने स्वयं १ नवम्बर सन १८७८ को की थी।

वह आर्य समाज कुछ वर्षों तक कार्य करता रहा। धीरे-धीरे इसकी गतिविधियां समाप्त हो गई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण के पश्चात सन १८८३-८४ में रायसाहब लाला दामोदर जी के निवास स्थान १८ अलीपुर रोड पर आर्य सज्जनों ने पुन: 'आर्य समाज देहली' की स्थापना की। १८९५-९६ में इसका चावड़ी बाजार में अपना भवन बन गया और इसे 'आर्यसमाज देहली, चावड़ी बाजार दिल्ली' नाम से अभिहित किया गया। आर्य समाज देहली चावड़ी बाजार दिल्ली' नाम के शीर्ष पत्र आज भी कार्यालय में उपलब्ध है। कितने ही उस जमाने के पत्र हैं। एक ऐतिहासिक पत्र 'कमिश्नर दिल्ली' का आर्य समाज के मन्त्री के नाम उपलब्ध है जिसमें लिखा है कि दिल्ली विश्व विद्यालय की कोर्ट में एक स्थान रिक्त हुआ है जिसकी पूर्ति आपके समाज द्वारा भेजे गये प्रतिनिधि से की जाएगी।' यह पत्र इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि 'आर्यसमाज देहली' की शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका रही।

लाला दीवान चन्द जी आवल के सात्विक दान से १९३७-३८ में 'दीवान हाल' का निर्माण हुआ। तब से यह 'आर्य समाज देहली' आर्य समाज दीवान हाल से प्रसिद्ध हुआ है। यह आर्य समाज अपनी गरिमा के अनुरूप वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न है।

महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी का आयोजन १९२५ में मथुरा में किया गया था। इस शताब्दी आयोजन का उल्लेखनीय महत्त्व इसलिए है कि इस अवसर पर 'आर्य स्वराज्य सम्मेलन' का भी आयोजन किया गया था। पहले आर्य समाज के नेता अपने को धर्म प्रचार और चरित्र निर्माण तक सीमित रखते थे। स्वामी श्रद्धानन्द को अंग्रेजी के अमानवीय व्यवहार से विशेषकर जलियांवाला बाग कांड से, उनके प्रति वितृष्णा हो गई थी और आर्यसमाज क्षेत्र में स्वराज्य, स्वतन्त्रता आदि शब्दो का प्रयोग होना प्रारम्भ हो गया था। स्वामी जी महर्षि के लिए 'स्वराज्य' शब्द को गहराई से पकड़ा। इस 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग १९०६ मे दादा भाई नौरोजी भी कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन मे कर चुके थे। मथुरा में 'आर्य स्वराज्य सम्मेलन' की अध्यक्षता, आचार्य टी० एल० वास्वानी की पूर्व स्वीकृति मिलने पर भी अचानक अस्वस्थ हो जाने से न आ पाने पर स्वामी श्रद्धानन्द ने की थी। इस सम्मेलन का मूल उद्देश्य 'आर्य स्वराज्य सभा' की आवश्यकता के सम्बन्ध मे लोकमत तैयार करना था।

इसके अनन्तर दो वर्ष पश्चात सन १९२७ ई० में दिल्ली में प्रथम आर्य महासम्मेलन हुआ। इसके प्रधान महात्मा हंसराज थे। स्वामी श्रद्धानन्द की नृशंस हत्या के कारण 'आर्य समाज देहली' के सदस्यों में रोष था और वे राजनैतिक गतिविधियों से उदासीन नही रह सकते थे।

पांचवा आर्य महासम्मेलन पुन: दिल्ली में १९४४ में हुआ। इसका प्रधान पद डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने ग्रहण किया। इससे पहले १९३८ में शोलापुर में आर्य महासम्मेलन हुआ था। वह काल हैदराबाद सत्याग्रह का काल था। इसके प्रधान श्री लोकनायक अणे थे। आर्य समाजी नेताओं-महात्मा हंसराज, महात्मा नारायण स्वामी, आचार्य रामदेव के अतिरिक्त अन्य लोगों द्वारा अध्यक्ष पद ग्रहण करना, इस बात का द्योतक है कि आर्य समाज की नीति जन-जन में व्याप्त हो रही थी। पाचवे आर्य महासम्मेलन में इस बात पर स्पष्ट विचार कि स्वतन्त्र भारत के सविधान का क्या स्वरूप हो। डा० मुकर्जी उस समय भी पाकिस्तान की मांग के प्रति सचेष्ट थे। उन्होंने कहा था- 'नये विधान में भारत की एकता और अखण्डता का कायम रहना बड़ी आवश्यक बात होगी। श्री घनश्याम सिंह गुप्त, प० विनायक राव विद्यालंकार आदि नेता आर्य समाज से जुड़े थे। भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी ये लोग संविधान सम्बन्धी विषयों के प्रति जागरूक रहे।

सन १९३१ मे दिल्ली मे करोल बाग आर्य समाज की स्थापना की गई इसमे वे ही सदस्य थे जो 'आर्य समाज देहली' में पहले थे। क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ आर्य समाजो की सख्या भी बढ़ने लगी थी। भारत के विभाजन के पश्चात तो यहां पर बहुत से लोग पश्चिमी पंजाब से आकर बसे और यह दिल्ली का प्रमुख आर्य समाज बन गया। इसके अन्तर्गत दलितोद्धार का सराहनीय कार्य किया गया। यहां एक पुत्री पाठशाला भी चलाई जा रही थी।

ग्रामीण क्षेत्र में, नरेला में आर्य समाज की स्थापना १९१४ में हुई थी परन्तु यह सक्रिय नहीं रही थी। १९३१ में महात्मा नारायण स्वामी ने इसकी आधार शिला रखी। यहां अछूतों की शुद्धि की गई और ईसाइयों को वैदिक धर्म का अनुयायी बनाया गया। आर्यवीर दल, आर्य कुमार सभा, रात्रि पाठशाला, शिल्प शिक्षणालय और औषधालय सदृश अनेक कार्यक्रम इस समाज ने अपने हाथ में लिए।

स्वतन्त्रता के बाद तो दिल्ली में आर्यसमाजों और आर्य शिक्षण संस्थानों का जाल बिछ गया। आज यहां २०० से भी अधिक आर्य समाजें हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्माण की आवश्यकता सन १९०० में 'आर्य समाज देहली' के वार्षिकोत्सव पर ही अनुभव की गई। सन् १९०० में आर्यसमाज देहली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही 'भारत धर्म महामंडल' का एक महोत्सव दिल्ली में आयोजित किया गया था। इसमें अन्य नगरों से भी आर्य विद्वान आये थे। सर्वोच्च संस्था-सार्वदेशिक सभा के गठन की प्रक्रिया पर विचार करने के लिए समिति बनाई गई जिसमें निम्न व्यक्ति थे-पण्डित भगवान दीन, लाला मुंशीराम, पं० वंशीधर, पं० काशीराम तिवारी, मुंशी नारायण प्रसाद, लाला रामकृष्ण।

३१ अगस्त १९०९ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रथम अधिवेशन दिल्ली में हुआ। यह निर्विवाद है कि सारा प्रबन्ध 'आर्य समाज देहली' ने ही किया था। प्रारम्भ मे केवल छ: प्रान्तीय सभाएं सभा के साथ सम्बद्ध हुई, बाद मे १९२७ में खुर्जा, बरेली, गाजियाबाद और देहली (चावड़ी बाजार) को एक-एक प्रतिनिधि सीधे भेजने का अधिकार दिया गया। प्रारम्भ में सार्वदेशिक सभा का कार्यालय लाला ज्योतिप्रसाद के मकान में एस्प्लेनेड रोड पर था। सन् १९३३ मे यह कार्यालय 'श्रद्धानन्द बलिदान भवन' नया बाजार में चला गया। लाला नारायण दत्त ठेकेदार प्रारम्भ से ही सार्वदेशिक सभा के सचालन से जुड़े रहे। वे १९२१ से १९३३ तक इसके कोषाध्यक्ष रहे। वे दो वर्ष इसके मन्त्री भी रहे।

दिल्ली में स्वामी जी के ६ अक्तूबर १८७८ को पुन: आगमन पर उनके व्याख्यानों से प्रभावित हो दिल्ली निवासियों के नवम्बर १८७८ में आर्यसमाज देहली स्थापित किया। यह आर्य समाज कुछ ही वर्षों तक कार्यरत रहा इसके बाद १८८३-८४ में राय सहाब लाला दामोदर जी के निवास १८ अलीपुर रोड पुन: आर्य समाज स्थापित किया गया। दिल्ली का प्रसिद्ध आर्य समाज दीवान हाल १९३७-३८ मे लाला दीवानचन्द जी आवल के सात्विक दान से बना।

सन् १९२१ में स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली मे 'दलितोद्धार सभा' की स्थापना की। इस सभा में दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता स्वामी रामानन्द थे। १९२३ में आगरा में 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की गई। इसके प्रथम प्रधान भी स्वामी श्रद्धानन्द ही थे।

सन् १९३९ में हैदराबाद के धर्मयुद्ध का संचालन किया गया। सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाया गया यह आन्दोलन आर्यसमाज के इतिहास मे विशेष स्थान रखता है। उस समय सभा के प्रधान श्री घनश्याम सिंह गुप्त थे। इसकी पहली विशेषता थी कि इतने बड़े पैमाने पर पहले शासन सत्ता के विरुद्ध कोई संघर्ष नहीं किया गया था। १९०९ में पटियाला में, १९१८ मे धौलपुर में आर्य समाज ने संघर्ष किये थे। पर इसमें दस हजार से अधिक सत्याग्रही जेल में भेजकर नया कीर्तिमान स्थापित किया था। इसका संचालन केन्द्र 'आर्य समाज देहली दीवान हाल चांदनी चौक दिल्ली' था। इसकी दूसरी विशेषता थी कि इस धर्मयुद्ध मे जैन, सिक्ख, सनातनी, ईसाई और कुछ मुसलमान भी आर्य समाज के साथ थे। इसकी तीसरी विशेषता बलिदानों की है। लाला नारायण दत्त, लाला ज्ञानचन्द, लाला देशबन्धु गुप्त आदि दिल्ली वासी 'आर्य रक्षा समिति' के सदस्य थे। प्रो० रामसिंह और लाला रामगोपाल शालवाले ने इस धर्म युद्ध की सफलता के लिए अथक प्रयास किया। इसमे आर्य समाज को सफलता मिली।

—डा० धर्मपाल

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

का संक्षिप्त परिचय (२)

—प्रशान्त वेदालंकार

(गतांक से आगे)

वीर अर्जुन में काम करते समय उन्होंने हिन्दी पत्रकार संघ की स्थापना में भी योगदान दिया और उसके मन्त्री रहे। 'वीर अर्जुन' छोड़ने के बाद भी उन्होंने पत्रकारिता नहीं छोड़ी, बल्कि १९५२ की फरवरी से ही 'सम्पदा' नाम से स्वयं ही एक मासिक पत्रिका निकाली जिसे आर्थिक विषयों तक ही सीमित रखा। यह बड़े साहस का काम था लेकिन कठिनाइयों व रुकावटों के बावजूद इस तरह उसे चलाया कि आर्थिक विषयों की एकमात्र पत्रिका तो वह थी ही, परन्तु उसने अपना विशिष्ट स्थान भी बना लिया था। सम्पदा की एक विशेषता थी प्रतिवर्ष निकलने वाले उसके एक या दो विशेषांक। पच्चीस वर्षों में सम्पदा के निकलने वाले विशेषांकों की लम्बी सूची है। इनमें कई विशेषांकों के विषय तो तब तक अछूते थे जैसे योजना अंक, भूमि-सुधार अंक, चम्बल बांध अंक, वस्त्रोद्योग अंक आदि।

सन् १९८५ में कृष्णचन्द्र जी को पक्षाघात हुआ। बाईं टांग और बाएं हाथ पर प्रभाव पड़ा जिससे चलने में कठिनाई होने लगी। हिम्मत तो फिर भी नहीं हारी और 'सम्पदा' का काम चलाते रहे। लेकिन हालत बहुत बिगड़ जाने पर १९७७ में आखिर उसका दायित्व हस्तान्तरित करना ही पड़ा।

दो वर्ष पहले से तो उनका स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था। चलना-फिरना तो दूर, संध्या भी नहीं होती थी और वाणी अवरुद्ध हो गई थी। न वह कुछ कह सकते थे, न यही पता चलता था कि वह दूसरे की समझते और किसी को पहचानते भी हैं या नहीं। आखिर १८ फरवरी १९८१ की रात दस बजे के करीब भगवान् ने कृष्णचन्द्र जी को अपने पास बुला ही लिया।

वैसे उन्हें जानने वाले जानते ही थे कि सम्पादकीय कार्य के अलावा समय-२ पर विभिन्न पत्रों में वह लेख लिखते रहते थे और कई पुस्तकों की रचना भी उन्होंने की थी, जिनमें 'चीन का स्वाधीनता युद्ध' और 'कांग्रेस का इतिहास' जैसी राजनीतिक पुस्तकों के अलावा 'हिन्दी व्याकरण', 'सरल रचना-विधि' (दो भाग), 'आविष्कार और आविष्कारक' 'भ्रमण और साहस की कहानियां', 'वर्तमान जगत्,' 'आधुनिक संसार', 'प्रबन्ध प्रकाश', 'आधुनिक हिन्दी निबन्ध' जैसी पाठ्य पुस्तकें भी हैं। पारिवारिक समस्याओं पर भी उन्होंने एक पुस्तक लिखी—'बहन के पत्र'।

लेकिन वह केवल कोरे पत्रकार नहीं थे। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था। अनेक धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भी वह सक्रिय भाग लेते थे।

आर्य समाज

आर्य समाज से उनका अटूट सम्बन्ध था। वह जहां भी रहे वहीं आर्यसमाज को उन्होंने सजीव संस्था बना दिया। जब वह सब्जी मण्डी में रहते थे तो आर्यसमाज आर्यपुरा के एक दशक से भी अधिक समय तक उसके प्रधान बने रहे। आर्यसमाज के भवन का निर्माण उन्हीं के समय में हुआ। आर्यसमाज आर्यपुरा में ही पहले-पहल स्त्री आर्यसमाज की स्थापना हुई। उसके बाद उन्होंने आर्यसमाज गोविन्द भवन की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया। शक्ति नगर में आकर उनके सहयोग से आर्यसमाज शक्ति नगर का भवन बना। वह वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य रहे। आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों में भाषण देने जाया करते थे। जो [illegible] की [illegible] में वह जोवन भये तो वहां की आर्य समाज में [illegible] भाषा आयोजित की गई।

खराब स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने आर्यसमाज शक्तिनगर में विचार गोष्ठियों का आयोजन शुरु किया।

संध्या-हवन भी उनके जीवन का अभिन्न अंग था और वह प्रतिदिन यज्ञ करते थे। जब पक्षाघात के आक्रमण के बाद उनसे नीचे बैठना न हो सकता था तो वह कुर्सी पर बैठकर यज्ञ करने लगे। जब अधिक अशक्त होने पर उनका चलना-फिरना बन्द हो गया, तब वह पलंग पर बैठे-२ हवन करते थे।

आर्यसमाज के साथ गुरुकुल को भी वह कभी नहीं भूले। स्नातक मण्डल की बैठकों में वह नियमित रूप से भाग लेते थे। अपने स्नातक बन्धुओं से उन्हें विशेष लगाव था। स्नातक बनने के पूरे ५० वर्ष बाद उन्होंने अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों से उनका कुशल क्षेम पूछा।

हिन्दी सेवा

हिन्दी और संस्कृत से भी उन्हें अनन्य प्रेम था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में उन्होंने कई बार भाग लिया। दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन सब्जी मण्डी में कराने में वह अग्रणी रहे। दैनिक कामकाज में वह न केवल स्वयं हिन्दी का प्रयोग करते थे बल्कि अन्य व्यक्तियों को भी हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करते थे। यदि किसी विवाह आदि का निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में मिलता था तो वह उसमें सम्मिलित नहीं होते थे। जब उनका चलना-फिरना काफी कम हो गया था तब भी उन्होंने एक छोटी-सी पुस्तिका प्रकाशित की थी: 'शक्तिनगर के हिन्दी सेवी।'

इन्द्रप्रस्थीय संस्कृत परिषद् के तो वह प्राण थे। निरन्तर कई वर्ष तक परिषद् की गोष्ठियां उनके निवास स्थान पर होती रहीं। संस्कृत सुभाषितों से बच्चों को परिचित कराने के लिए उन्होंने 'सुभाषित रत्नमाला' नामक पुस्तक लिखी। (क्रमशः)

ऋषि दयानन्द और इसलाम

शान्तिप्रकाश ४५३ बरकतनगर, जयपुर (राजस्थान)

इसलाम मत की चौदहवीं शताब्दी समाप्त होकर अब पन्द्रहवीं शताब्दी कुछ काल से प्रारम्भ हुई है। आर्यों की सृष्टि संम्वत् या वैदिक सम्वत् एक अरब १७ करोड़ वर्ष से ऊपर है। वैदिक धर्म कि लिये तो इसलाम तो नवीनतम ही है। संसार में आदि जितने भी सम्प्रदाय हैं वह प्रायः महाभारत काल से पश्चात् के हैं। उनमें भी इसलाम की अभी पन्द्रहवीं शताब्दी का आरम्भ है।

इसलाम जब चौदहवीं शताब्दी में था तो प्रायः मुसलमानों में यह समझा और कहा जाता था चौदहवीं शताब्दी की समाप्ति के साथ ही संसार में प्रलय आ जायेगी जिससे मुसलमान हजरत साहब पर ईमान लाने के कारण बहिश्त (स्वर्ग) में चले जायेंगे और काफिर सबके सब दोजख में सदैव के लिए दुःखों और कष्टों में डाल दिये जायेंगे। सूरा मर्यम में एक स्थान पर लिखा है कि—

व इम्मिन्कुम इल्ला वारिदोहा काना अलारब्बेका हतमन् मक्देखिय्यन् ॥ सुम्मा ननुज्जिल्लजीननक् व नजएज्जालिमीना फी जिसिय्यन् ॥

और कोई नहीं तुममें सूरा मरियम से जो न पहुंचे उस पर हो चुका तेरे रब्ब पर अवश्य नियत पश्चात् पहुंचायें हम उनको जो डरते रहे। और छोड़ देंगे पापियों को उसी में औंधे ॥

इस आयत पर टिप्पणी में लिखा है—

बहिश्त (स्वर्ग) को मार्ग नहीं, किन्तु दोजख (नरक) के मुख में। दोजख तनूर की भान्ति है। मुख उसका संसार में बड़ा। किनारे से किनारे तक मार्ग पड़ा है, बाल समान (सिर के बाल समान) तेज जैसे तलवार। ईमान वाले उस पर से सुरक्षित निकल जायेंगे और पापी गिर पड़ेंगे। पुनः कर्मानुसार कई दिनों के पश्चात् सिफारिश से और दयालु परमेश्वर की दया से ईमान वाले पार हो जायेंगे। अन्ततः जिसने कल्मा सच्चे मन से कहा है वह सब निकलेंगे और काफिर (उसी में) पड़े रहेंगे। पुनः उसका मुख बन्द हो जायेगा।

मोजहुल्कुरान-गुटका पृ० ५२७ गयासनामी कोष में लिखा है कि सिरात के अर्थ मार्ग के हैं और पुल का नाम भी है जो दोजख (नरक) के सिर पर बाल से भी अधिक सूक्ष्म और तलवार की धार से अधिक तीक्ष्ण है।" (गयासुल्लगात)

मेरा दृढ विश्वास है कि उपनिषद् वचन में जो धर्म मार्ग के लिये लिखा है कि—

'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्या दुर्गं पाथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

कठोप०

धर्म का मार्ग उस्तरे के तीक्ष्ण धार की भान्ति है। ऐसा क्रान्त-दर्शी लोग कहते हैं।

इस सारी कथा का मूल भी यही प्रतीत होता है।

सचमुच धर्म का मार्ग कठिन से कठिनतम है। संसार भर के सुधारकों, ऋषि-मुनियों और नबियों-पैगम्बरों को इसीलिये बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं।

बालपन में मैंने नरक के जो फोटो देखे और उनकी व्याख्या सुनी थी। वह मैंने शास्त्रार्थों के युग में गरुड़ पुराण में वैसी ही पढ़ी थी।

यथार्थ यह है कि धर्म मार्ग में सुधारकों को संसार बड़े-बड़े कष्ट देता है। किन्तु वह इन कष्टों को सहन कर लेते हैं और संसार पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। पाप, पुण्य का सूक्ष्म प्रभाव मन पर ही पड़ता रहता है। पाप थोड़ा है तो इस जन्म में इसका भुगतान होकर मोक्ष प्राप्ति शीघ्र सम्भव हो जाती है। समान पाप पुण्य से कुछ जन्मों में पाप के गहरे अंकुर वालों को स्थावरादि योनियों में डालकर उन पापों के सस्कार मंद या क्षीण हो जाने पर पुनः मानव योनि में लाकर परमात्मा उसे उच्च कर्म करने का अवसर प्रदान करता रहता है। जिससे जीव मोक्ष मार्ग का राही बनकर परमपद प्राप्ति के योग्य हो सकें।

२—इसी के हेतु पुनर्जन्म का सिद्धान्त स्वीकार करना पड़ता है। वेद वेदांग में तो पुनर्जन्म की यथार्थता को अकाट्य माना है। वेद में ही लिखा है कि —

अप्स्वग्ने सधिष्टव सोषधीरनु रुध्यसे।
गर्भे सञ्जायसे पुनः ॥

हे जीव ! तेरा स्थान जलों में भी है। औषधियों में भी तू रोका जाता है। और पुनः तू गर्भ में होता हुआ उत्पन्न होता है।

अपश्यं गोपामनिपद्यमान मा च परा च पथि भिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीस विषूचीर्वसानः आवरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ॥

अथर्ववेद

इन्द्रियों का स्वामी जीवात्मा शुभा शुभ मार्गों पर गमन करता हुआ (अच्छे बुरे कर्म करता हुआ) अच्छे बुरे संस्कारों के कारण बार-बार पुनर्जन्म प्राप्त करता रहता है।

जीवात्मा जन्म-जमान्तरों के निष्काम कर्मों के संचय को प्राप्त करके मुक्ति प्राप्ति के योग्य बनकर परमात्म कृपा से मुक्त हो जाता है।

महर्षि दयानन्द तो मुक्ति से लौटना भी स्वीकारते हैं। क्योंकि शास्त्र का यही सिद्धान्त हैं कि—

"ते परामृता परिमुच्यन्ति सर्वे।"

वह जीव मुक्ति के आनन्द को भोगकर पुनः संसार के कर्म क्षेत्र में लौट आते हैं।

ऋग्वेद के एक सूक्त के चार मन्त्रों में मुक्ति के स्वरूप का रोचक वर्णन करते हुए उनका कर्म क्षेत्र में पुनः लौट आना प्रभावित शब्दों में वर्णित किया गया है।

महर्षि दयानन्द इसी को न्याय मानते हैं। क्योंकि सीमित कर्मों का फल असीम कभी नहीं होता।

यदि मुक्ति से लौटना न हो तो कपिल मुनि सांख्य दर्शन में वे कहते हैं कि—

इदानीमिव सर्वत्र नात्यं तोच्छेदः।

अब की भान्ति सर्वत्र संसार का अत्यन्त उच्छेद कभी नहीं होता।

अतः निष्काम कर्मफल से प्राप्त मुक्ति का समय सीमाबद्ध है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य समाज स्थापना और उद्देश्य

कृष्ण दयाल प्रजापति, आर्य समाज रजौली जिला नवादा (बिहार)

जब हमारे देश पर अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई तो उसने सर्वप्रथम यही सोचा कि इस राष्ट्र को न केवल राजनीतिक दृष्टि से पंगु बनाया जाय अपितु भाषा, भाव, आचार-विचार का दासत्व भी इन पर थोपा जाय। उनकी चेष्टा रही कि शिक्षा, सभ्यता, धर्म और विचार की दृष्टि से भी भारतवासी अपने शासकों का मुंह जोहने वाले बन जायें। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होंने अंग्रेजी ढंग के स्कूल और कालेज स्थापित किए तथा उसमें पश्चिमी शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ कर दी। लार्ड मैकाले द्वारा निर्धारित इस शिक्षा योजना ने भारतीयों के स्वात्मबोध को सर्वथा नष्ट कर दिया। भारतीय समाज में बाल-विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा प्रथा, छुआछूत आदि की रूढ़िवादिता की व्याधि फैल गयी थी। ऐसी विकट परिस्थिति में देश में धार्मिक और सांस्कृतिक पुनः जागरण का आन्दोलन चलाने की आवश्यकता थी। इसके लिए सर्वाधिक शक्तिशाली ज्योतिर्धर महर्षि दयानन्द से भारतीयों को वेदों की ओर लौटने की बात कही तथा वेदों से सुदृढ़ आधार पर ही हिन्दू समाज को संगठित करने का प्रयास किया।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने मित्रों और भक्तों के आग्रह पर चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा सम्वत १९३२ तदनुसार ६ अप्रैल १८७५ ई० शनिवार के दिन बम्बई के गिरगांव मुहल्ला में पारसी डा० मानिकराव जी की वाटिका में मानव मात्र के कल्याण तथा सामाजिक एवं धार्मिक उत्थान के लिए आर्य समाज के नाम से एक महान अभियान का श्री गणेश किया। आर्य समाज स्थापना के समय श्री महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल राव, हरिदेश मुख, सेवकलाल कृष्ण दास, गिरिधर लाल और दयालदास कोठारी आदि प्रतिष्ठित पुरुष आर्य समाज के सभासद बनें। प्रारम्भ में समाज के सिद्धांत और विधान को २८ नियमों में निबद्ध किया गया। इसके पश्चात जब सन १८७७ ई० में लाहौर आर्य समाज की स्थापना हुई तो इन्हीं २८ नियमों को संक्षिप्त करके सम्प्रति प्रचलित १० नियमों का रूप दिया गया। आर्य समाज ने वेदों के आधार पर धर्म के सिद्धान्तों की नवीन व्याख्या की और बताया कि धर्म का अभिप्राय केवल रूढ़िवादी विचारों का अनुसरण करते हुए क्रिया काण्डों के पालन में ही नहीं हैं, बल्कि धर्म उन गुणों के समूहों का नाम है जो मनुष्य के आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान में सहायक है। इसलिए आर्य समाज वेदों, उपनिषदों तथा ऋषि ग्रन्थों में प्रतिपादित उस नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का प्रचार और प्रसार करना चाहता है जिसमें विश्व-बन्धुत्व तथा मानव प्रेम के सूत्र गुंफित हैं।

आर्य समाज ने अपने जो सिद्धान्त बनाए हैं वह किसी देश और काल विशेष के लिए नहीं बनाया बल्कि उसके छठे नियम के अनुसार 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना सर्वोपरि लक्ष्य ठहराया। यह केवल मानव ही नहीं प्राणिमात्र का हित चाहता है। मालुम है—"अपने देश में अपना राज्य" की घोषणा सन् १८७५ ई० में सर्वप्रथम सत्यार्थ प्रकाश द्वारा आर्य समाज के प्रवर्तक ने ही की थी कि अविद्या, अज्ञान और अभाव को दूर करना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है। आर्य समाज के सेवकों ने अनेक प्रकार की आंधियों का प्रतिरोध करके इस महान कार्य को पूरा करते हुए अपने प्राणों तक न्यौछावर करके अविद्या और अज्ञान को दूर करने का सद्-प्रयत्न किया। यज्ञोंकि नाम पर पहले जो हिंसा होती थी, लेकिन आज से १११ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द ने ही यह घोषणा पूर्वक कहा था कि वैदिक यज्ञ हिंसा से रहित होते थे। अश्वमेध यज्ञ है। प्राचीन समय में समय पर वर्षा होती थी, समय पर कृषि होती थी। देश धन-धान्य से परिपूर्ण था। क्यों? उस समय घर-घर हवन-यज्ञ की प्रधानता थी। आज हमने अग्निहोत्र करना भूला दिया। वेद कहता है—"अग्निहोत्र जुहुयात् स्वर्ग कामः"। यदि स्वर्ग की कामना रखते हो तो दैनिक यज्ञ करो। इसी के आधार पर आर्य समाज के विद्वानों एवं कार्य कर्ताओं ने घर-घर यज्ञ करके देश के वायुमण्डल को सुगन्धित बनाने का प्रयत्न किया।

समाज सुधार कार्य—किसी राष्ट्र को ऊंचा उठाने के लिए उतनी राजनीतिक संग्राम की आवश्यकता नहीं, जितनी की उसकी सामाजिक बुराईयों को दूर करने की विवाह प्रथा में समुचित सुधार, वर्णाश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या, अस्पृश्यता निवारण तथा नारी-शिक्षा आदि क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय रहे हैं। आर्य समाज के प्रवर्तक पूज्य महर्षि दयानन्द ने सामाजिक त्रुटियों को दूर करने पर काफी बल दिया। अफगानिस्तान जो मुसलमानों का राज्य है, वहां नौवीं शताब्दी मे पालवंश के हिन्दू राजे राज्य करते थे तथा पूरा अफगानिस्तान हिन्दू था। हिन्दुओं के राजपूत जितने लड़ाकू थे उतने मुसलमान नही। उसी प्रकार जितने विद्वान हमारे ब्राह्मण थे उतने पठान नहीं। लेकिन आज भारत के पतन का क्या कारण है? 'हिन्दुओं की फूट'। यह फूट जिसका नाम वर्णव्यवस्था और जात-पात है। यह सारे भारत को ले डूबी है। तुलसीदास जैसे कवि ने भी यह कह डाला कि—

पूजिये विप्र शील गुण हीना, शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीणा।

इसी से दुःखी होकर अछूत और शूद्र मुसलमान और ईसाई हो गये और बनते जा रहे हैं। अछूतोद्धार और शुद्धि का चक्र चलाकर आर्य समाज ने हिन्दु जाति के कटते हुए पैरों को बचा लिया। इस महान कार्य के करने में हमें अनेकों कठिनाईयां झेलनी पड़ी, कितने शहीद हुए। आप जानते होंगे पिछले वर्ष केरल के मीनाक्षीपुरम् मे हजारो हिन्दू धन के लोभ में और बलात मुसलमान बना लिए गये थे। हमारे आर्य नेताओं और कर्मठ कार्यकर्ताओं ने कितनी शारीरिक और आर्थिक सकटो को झेलते हुए वहां तक पहुंच कर तत्परता से शुद्धि का कार्यक्रम चलाकर बिछुड़े लोगों को पुनः अपने मार्ग पर लाया। हाल मे ही जब पोपपाल का भारत आगमन हुआ तो ईसाईयों की ओर से १ लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाकर उसके स्वागत करने की योजना थी। ऐसे अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी, राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह, गृहमन्त्री श्री चह्वान और आन्तरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुणनेहरू से मिला। सबों के आश्वासन के अतिरिक्त श्री नेहरु ने वायरलेश से विहार राज्य सरकार को इस विषय में पूरी सावधानी बरतने को कहा और उन्होंने बड़ी दृढ़ता से यह भी कहा कि ऐसा कोई तमाशा होने नहीं दिया जायगा। परिणाम स्वरूप एक भी ईसाई नहीं बन सके, उल्टे उड़ीसा के काला हाण्डी में ढाई हजार बने ईसाइयों को अपने पूर्वजों के धर्म में पुनरावर्तन किया। है कोई संस्था जो बिछुड़े हुए अपने भाईयों को शुद्ध कर पुनः मिला लेता हो। आर्य समाज ही एक ऐसा सक्रीय आन्दोलन है जिसके अथक प्रयास से हिन्दू जाति बच रही है।

हिन्दू समाज की दूसरी बुराई थी स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार

न देना । स्वामी शंकराचार्य और तुलसी दास ने नारियो को नरक का द्वार कहा तथा पढने से बिल्कुल वंचित रखा । धन्य हैं स्वामी दयानन्द जिन्होंने लडकियो को पढने के लिए जालन्धर मे कन्या महा विद्यालय खोला और अछूत बच्चो को उसमें पढने की अनुमति दी । उन्होने कहा— यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' । जहा नारियों की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं । इसलिए—

नारि निन्दा मत करो, नारि नर की खान ।
नारि से नर होत हैं, ध्रुव प्रह्लाद समान ॥

मुसलमानो को देखें ! चाहे वह शिया हो या सुन्नी, एक ही अल्लाह को मानता है ओर एक ही मस्जिद मे जाकर नमाज पढते हैं । ईसाई, चाहे वह रोमन कैथोलिक हो या प्रोटेस्टेंट, एक ही गिरजाघर मे बैठकर प्रार्थना करते हैं । सब मुसलमानो का एक ही धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ और ईसाइयो का एक ही धर्म ग्रन्थ 'इंजिल' है । ठीक इसके विपरीत हिन्दू ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि तेंतीस करोड देवी देवताओ को मानते तथा धर्म ग्रन्थो मे अठारह पुरान और कई स्मृतिया हैं । यह सब एक मन्दिर मे बैठकर पूजा नही कर सकते । आइए आर्य समाज के मन्दिर मे सवर्ण, अवर्ण अछूत और शूद्र सब इकटठे बैठकर ईश्वर प्रार्थना, उपासना और यज्ञ हवन कर सकते हैं । सनातनी हिन्दू केवल जन्म से ब्राह्मण जाति के व्यक्ति को ही मन्दिर का पुजारी या पुरोहित मानते हैं पर आर्य समाज शूद्र कहलाने वाले जाति के विद्वानो को भी अपना पुरोहित बनाया ।

इस्लाम और ईसाई धर्म मे अभिवादन के केवल एक ही शब्द क्रमश सलाम और गुडमार्निंग है पर हमारे हिन्दू लोग जै गोपाल, राम-राम, जै राम जी की आदि अनेक शब्दो से अभिवादन करते हैं । आर्य समाज ने मानव मात्र को एक सूत्र मे बाधने के लिए सार्थक और भावपूर्ण शब्द "नमस्ते" का प्रचार किया । अब रेडियो सिलोन के प्रसारक अमीन सयानी भी नमस्ते शब्द से ही अपने श्रोताओ का अभिवादन करते हैं ।

संक्षिप्त रूप से यह कहा जा सकता है कि देव दयानन्द ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप और उसकी परम कल्याणी शाश्वत वाणी का ज्ञान कराया । आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय विषयो मे पथ-प्रदर्शन किया । भ्रान्ति भावनाओ का परिहार करके हमे वेद प्रदर्शित अभ्युदय तथा श्रेयस का सरल सीधा सत्पथ सुझाया । तिरस्कृत मातृशक्ति का उत्थान, सम्मान द्वारा राष्ट्र के निर्माण का गौरवमय मार्ग दिखाया । अवहेलित, पद दलित, अपमानित मानव मात्र के पुन उद्धार का आग्रह पूर्वक आदेश दिया । स्वदेश, स्वतन्त्रता आत्म गौरव एव स्वावलम्बन का पाठ पढाया । मानव समाज मे ऊंच-नीच की भेदभावना की इतिश्री करके देश, काल प्रान्त और भाषा आदि की विघटन कारी दीवारो को मटियामेट करके प्राणी प्रेम, विश्व बन्धुत्व एव सार्वजनिक सौहार्द का उच्च आदर्श हमारे समक्ष उपस्थित करके अपने दुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने का ढग हमारे हृदय पटल पर अंकित कर दिया । कहा तक वर्णन किया जाए ।

गिने न जायें मुमकिन है वालू के जर्रे समुन्दर के कतरे फलक के सितारे ।
मगर तेरा एहसान स्वामी दयानन्द, न गिनती मे आये कभी हमसे सारे ॥

मेरे प्यारे बन्धुओ ! आओ और आर्य समाज के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर वैदिक मार्ग पर आगे बढ़ो । क्योंकि—

जब तक सत्य सनातन पावन, वैदिक धर्म प्रचार न होगा ।
तब तक भ्रान्ति, अशान्ति रहेगी, सुखमय यह ससार न होगा ॥

इसलिए आर्य समाज आपको आह्वान करता है कि—

वैदिक तरु की शिशिर छाया मे, हे मानव तुम आओ ।
पीकर श्रुति पीयूष सनातन, नीज मानस के ताप मिटाओ ॥

ऋषि दयानन्द और इस्लाम

(पृष्ठ ६ का शेष)

रात्रि मे निद्रावस्था प्राप्त करके थकावट दूर होवे पुनः कर्म क्षेत्र में जूझना पड़ता है । इसी प्रकार मोक्ष एक बहुत लम्बी नींद की भान्ति है किन्तु वहां शारीरिक शक्तियों का सर्वथा अभाव है । केवल आत्मा की स्वाभाविक शक्तियों से आनन्द प्राप्ति होती है ।

मोक्ष काल में जीवात्मा अपनी स्वाभाविक शक्तियों के द्वारा परमानन्द में रमण करता हुआ लोक-लोकान्तरों में सर्वत्र जगदीश्वर की महिमा का अनुभव करता हुआ विचरण करता है ।

मुक्ति भी सान्त है जिसकी अवधि सुदीर्घ काल की शास्त्रों में वर्णित की है । अन्यथा सब जीव मुक्ति में जा चुके होते हैं और प्रकृति के कार्य बन्द होकर निष्प्रयोजन हो जाते । भगवान् के उत्पत्ति स्थिति के गुण भी नष्ट प्राय होते । जो सर्वथा असम्भव है । भगवान् का कोई गुण किसी समय भी निष्क्रिय नहीं होता । कहीं लालन-पालन हो रहा है । कहीं प्रलय और सृष्टि कर्तृत्व मे ईश्वर रमण कर रहा है । कहीं मुक्त जीव भगवान् के आनन्द मे डुबकियां लगा कर आनन्द से शराबोर हो रहे हैं । भगवान् की लीला अद्भुत है । दाऊद ने भी अपने गीतों बोला है कि हे परमात्मन् ! दया कर और मोक्षावस्था का शुभ प्रसाद मुझे पुन प्राप्त करा । पृ० ५२७ बाईबल लाहौर कुराने करीम मे भी जीवो की शक्ति को प्रति क्रान्त करके सदैव के महादु ख सागर मे डुबो नही देता ला युकल्लिफुल्लाहो नफ्सन् इल्लावुस्अहा ।

सूरा बकर आयत २८६

नहीं कष्ट देता भगवान् किसी जीव को, किन्तु जितनी भुक्तने की शक्ति हो ।

मोक्ष और दु खों का सागर तो अथाह है । किन्तु उससे लाभ और हानि जीव की शक्ति पर ही आधारित है । इसलिये वेद मुक्ति से पुन लौटने के सिद्धान्त का वर्णन करता है और महर्षि दयानन्द का मुक्ति से लौटने के सिद्धान्त को मानना वेद पर आधारित है । वेद मे कई स्थानो पर मुक्ति से पुनरावृत्ति का सिद्धान्त स्पष्ट है तो बाईबल और कुरआन शरीफ में इंगित मात्र है किन्तु इसलाम इनसे इनकारी है । परन्तु अन्त मे मुसलमान भी कह देता है कि—

खुदा की बातें खुदा ही जाने ।

कुछ भी हो । महर्षि जी ने ईसाईयत और इसलाम को आह्वान करते हुए देहली दरबार के अवसर पर स्पष्ट कहा कि जिन सिद्धान्तों पर हम एक विचार के हैं उनका मिलकर प्रचार करें एक हो जायें और विचारणीय सिद्धान्तों पर अन्तत सहमति होती जायेगी । ऐकाश कि मेरे भाईयों ने माना होता और भारत ससार का प्रमुख निर्माण कर पाता ।

आर्य संस्कृति एवं सभ्यता के गौरवमय इतिहास को बिगाड़ने का षडन्यत्र

मांगेराम आर्य एम. ए., बांकनेर, दिल्ली-४०

सृष्टि से लेके पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था, अन्य देश में माण्डलिक अर्थात छोटे-छोटे राजा होते थे (मनु० २-२०), चीन का आदत्त, अमेरिका का बभ्र वाहन, यूरोप देश का बिडालाक्ष, ईरान का शल्य, यूनान आदि के सब राजा धृतराष्ट्र के राजसूय यज्ञ में आए थे। महाभारत और मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में सब भूमि में चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे हैं। महाभारत युद्ध में अधिकांश योद्धा और विद्वान वीरगति को प्राप्त हुए। इसके पश्चात साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। विद्या का स्थान अविद्या ने, वैदिक मार्ग का स्थान 'वाम मार्ग' ने ले लिया। फलस्वरूप भारत की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक स्थिति बिगड़ने लगी। इस स्थिति का लाभ उठाने का सर्व प्रथम यूनान के सिकन्दर तथा सेल्यूकस ने असफल प्रयास किया। फिर एक हजार वर्ष तक अरबी, तुर्की, और मुगलों ने हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को नष्ट करने में कुछ सफलता प्राप्त की। उन्होंने हमारे असंख्य धार्मिक ग्रन्थों को जलाया। लाखों का धर्मपरिवर्तन किया, हमारे भवनों का नाम परिवर्तन किया, जैसे समुद्रगुप्त द्वारा महरौली (दिल्ली) में बनाए विष्णु ध्वज का नाम कुतुबमीनार, राजपूतों द्वारा आगरे में बनाए मन्दिर भवन का नाम ताजमहल रख दिया। इस युग में अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म की रक्षा करने वालों में राजा दाहर, हकीकत राय, गुरुतेगबहादुर, गुरुगोविन्द सिंह के पुत्र (जोरावर सिंह व फतह सिंह) बन्दा वैरागी, भाई मतिदास सदृश हजारों वीरों के अमर बलिदान, और महाराणा प्रतापसिंह, छत्रपति शिवाजी सदृश: असंख्य शूरवीरों के पराक्रम के कारण हमारी संस्कृति व सभ्यता को पर्याप्त संरक्षण मिला।

अठाहरवीं शताब्दी में यूरोपीय शक्तियों का भारत में प्रभाव बढ़ने लगा। युरोपीय विद्वान के० अरदू (फ्रेंच) ने सन १७६७ ई० मे और विलियम जोन्स (इंग्लैंड) ने १७८६ ई० में आर्य भाषा संस्कृत का अध्ययन कर घोषणा की कि युरोपीय भाषाएं और संस्कृत एक ही परिवार की भाषाएं हैं। उनका तात्पर्य यह था कि संस्कृत युरोप में जन्मी फिर भारत में इसका प्रसार हुआ। आर्य भाषा के इतिहास को बिगाड़ने का यह पहला प्रमुख प्रयास था।'

१८३५ ई. में भारत में ब्रिटिश सरकार के विधि मन्त्री लार्ड मैकाले ने एक "नई शिक्षा नीति" बनाई, जिसके अनुसार शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना और पाश्चात्य साहित्य और विज्ञान को पढ़ाने की व्यवस्था स्कूल-कालेजो में सरकार द्वारा की गई। अंग्रेजी भाषा को माध्यम बनाकर हमारी भाषा, संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करने का षडयन्त्र रचा गया।

प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध में (सन १८५७-५८ ई०) मे भारतीयों में अपने धर्म, संस्कृति, स्वराज्य की रक्षा के लिए आत्म सम्मान जाग उठा। भारत के गौरवमय अतीत ने उनको महान प्रेरणा दी। भारतीयों के राष्ट्राभिमान ने अंग्रेजों के अहंकार को कुछ समय के लिए मिट्टी में मिला दिया था। अंग्रेजों ने "१८५७ की पुनरावृत्ति न हो" इस विचार को लेकर भारतीयों के प्रेरणास्रोत अतीत के इतिहास को बिगाड़ने के लिए जर्मन के संस्कृत विद्वान प्रो० मैक्समूलर की सेवाए प्राप्त की। प्रो० मैक्समूलर ने १८५६ ई० मे केवल भाषा को काल्पनिक आधार बनाकर घोषणा की कि भारतीय आर्यो का मूल निवास स्थान मध्य एशिया है। इस मत की पुष्टि सन १८७४ ई० में प्रो० सेसस ने की। प्रो० मैक्समूलर ने ऋग्वेद का रचना काल प्रथम तो १२०० ई. पू. बीस वर्ष पश्चात् ३००० ई० पू० घोषित किया, किन्तु उन्होंने अपने मत की पुष्टि में कोई प्रमाण नही दिया। केवल कल्पना ही प्रस्तुत की। इस कल्पना ने हमारे स्वर्णमय अतीत पर भयंकर चोट की है।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भारतीयो मे स्वदेशाभिमान चरम सीमा पर था। भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल ने मोहन' जोदड़ो की खुदाई (१६२१-१६२७) के दौरान १६२४ ई० में घोषणा की कि भारत में आर्यों से पहले "सिन्धु-घाटी की सभ्यता खोज ली गई है। हड़प्पा की खुदाई (१६२७-३१) का काम जे० एचम मैके के नेतृत्व में हुआ। संसार की सर्वश्रेष्ठ एवं मौलिक सभ्यता के इतिहास को बिगाड़ने का यह एक और घृणित षडयन्त्र रचा गया।

"प्राचीन भारत" पुस्तक पाठ्य क्रम से निकाल दी जाए

स्वतन्त्र भारत सरकार की संस्था "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित "प्राचीन भारत" (कक्षा ११ वीं के लिए) इतिहास की पुस्तक के १६८५ ई० के संस्करण में आर्यो की सभ्यता और संस्कृति के इतिहास को अत्यन्त घृणित ढग से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक से लिए हुए कुछ उद्धरण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं।—"अथर्ववेद में···भूत प्रेतों के निवारण के लिए ताबीज धारण करने का भी सुझाव दिया गया है···हड़प्पा सस्कृति के साहित्य और उनके विचारों एवं विश्वासों के बारे में कुछ नही कहा जा सकता (पृष्ठ ३७)।"

"हड़प्पा संस्कृति का अस्तित्व २५०० ई० पू० से १७५० ई० पू० तक रहा (पृष्ठ ३८)"

"हड़प्पा संस्कृति के उद्गत और इसके अन्त के बारे मे निर्णायक रूप से कुछ नही कहा जा सकता। एक मत यह भी है कि हड़प्पा संस्कृति का विध्वंस आर्यो ने किया।···हमारे पास इस बात का कोई प्रमाण नही है कि हड़प्पा वासियो और आर्यों के बीच कड़ा संघर्ष हुआ" (पृष्ठ ३६)।

"आर्यो का जीवन स्थायी नहीं था।···भारत आगमन से पहले आर्य लोग ईरान पहुचे।···'हिन्द्र-युरोपीय भाषा की सबसे प्राचीन कृति ऋग्वेद'··। भारत में आर्यो का आगमन १५०० ई. पू. के कुछ पहले हुआ।···ऋग्वेद के दस्यु संभवत इस देश के मूल निवासी थे (पृष्ठ ४०)"

"आर्य लोग शहरो में नहीं रहते थे, उनकी मिट्टी के घरों वाली बस्तियों की सम्भवत. किलेबन्दी की जाती थी। ऋग्वेद का काल लगभग १६०० ई. पू. से १००० ई. पू. का ही है (पृष्ठ ४१)"

"ऋग्वेद में न्यायाधीश के बारे मे कोई जानकारी नही मिलती। पर इसका यह अर्थ नही कि वह एक आदर्श समाज था। ऋग्वेदिक काल के दो प्रमुख पुरोहितों···वशिष्ठ और विश्वामित्र···गायो और दासियों के रूप में भरपूर दक्षिणाएं प्राप्त की।···चोरियां होती थीं, विशेषत. गायो की।··· नागरिक व्यवस्था अथवा प्रादेशिक प्रशासन जैसी किसी चीज का अस्तित्व था।···राज्य की स्थापना ही नही हुई थी" (पृष्ठ ४२)

"शूद्रो के चौथे वर्ण का उद्भाव ऋग्वैदिक काल के अन्तिम दौर मे हुआ। भूमि अथवा अनाज के दान के बारे मे हमे कोई उल्लेख नही मिलता।" (पृष्ठ ४३)

"सोम नाम का एक मादक पेय भी था। ऋग्वैदिक काल···वे लोग आध्यात्मिक उन्नति अथवा मोक्ष के लिए देवताओ की आराधना नही करते थे। वे इन देवताओं से मुख्यतः सन्तति, पशु, अन्न, धन, स्वास्थ्य आदि की मांग करते थे (पृष्ठ ४४)"।

"महाभारत युद्ध··· ६५० ई. पू. के आस पास (दो कबीलों) कोरवो और पाण्डव के बीच लड़ा गया था।···उत्तरवैदिक काल के लोग पक्की ईंटो का इस्तेमाल नही जानते थे।···वैदिक साहित्य मे राम का कोई उल्लेख नही मिलता है।···यज्ञ में होने वाली पशु-बलि के कारण बैल उपलब्ध नही हो सकते थे।···सीता के पिता विदेह राजा जनक भी स्वयं हल जोतते थे। (पृष्ठ ४६)"

(क्रमश.)

आर्य जगत् के महान् विद्वान्

प्रो० गुरुदत्त विद्यार्थी

(डा० शान्ती स्वरूप शर्मा)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ३०-११-१८८३ को सायं ५॥ बजे शरीर छोड़ने का एलान कर दिया—अजमेर के एक बाग में जहां पर महापुरुष मृतक शैय्या पर लेटा हुआ था—के दर्शनों के लिए हजारों लोग भारत के कोने-कोने से पहुँच चुके थे—लाहौर से गुरुदत्त विद्यार्थी जिसकी उमर १९ साल थी और नास्तिक विचारों का था और लाला जीवनदास अजमेर पहुंच गए थे—पं० गुरुदत्त पर दयानन्द का काफी प्रभाव हुआ था जब वह २० जून १८८० को लाहौर आए थे—इस समय गुरुदत्त ने महर्षि से ईश्वर की हस्ती के बारे में काफी बहस की थी और लाजवाब हो गए थे—मगर आखिर में आपने महर्षि को कहा "भगवन मेरी आत्मा नहीं मानती कि ईश्वर कोई चीज है" इस पर महर्षि ने इसे कहा था कि "समय आएगा जब आप ईश्वर भक्त बन जाओगे।" अपनी आत्म-कथा में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने लिखा है कि "महर्षि दयानन्द का सारा शरीर छालों से फूला पड़ा था क्योंकि इन्हें बहुत सख्त किसम का जहर दिया गया था पर महर्षि के मुख से आह तक नहीं निकल रही थी—सारा शरीर इनका जल रहा था—भारी कष्ट देखने वालों को देखकर दुःख हो रहा था इसके बावजूद आप अवस्था में लीन थे—वह शान्त चित्त समाधि में चले गए—और उनके मुख से वेद मन्त्र निकलने शुरू हो गए उनकी वानी में ओज था – ध्वनि में सुर था—उच्चारण में जरा भी निर्बलता अथवा कष्ट महसूस नहीं हो रहा था—मैं आश्चर्य चकित खड़ा यह सब नजारा देख रहा था—उन्होंने ईश्वर की स्तुति प्रार्थना की और समाधी में बैठ गए और दोनों आंखें खोल कर कहा कि "ए सर्व-शक्तिमान ईश्वर तेरी यही इच्छा है—तेरी इच्छा पूर्ण हो—मेरे ईश्वर तूने अच्छी लीला की है" यह कह कर वह समाधी में चले गए—जीव आत्मा शरीर छोड़ कर चली गई मैं यह सारा नजारा टकटकी लगा कर देख रहा था—मेरे मन में भारी इन्कलाब आ चुका था—मैं आस्तिक बन चुका था—मैं एक जंग लगा हुआ लोहा था महर्षि की मृत्यु ने मुझे सोना बना दिया था—मेरा जीवन बदल चुका था।"

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एक बड़ा दार्शनिक था—१९ वर्ष की उमर में वह सभी परीक्षाएं उत्तम श्रेणी में पास कर चुका था वह यूनीवर्सिटी में हर परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता रहा उसने २२ वर्ष की उम्र में एम ए. पास किया—वह बड़ा तर्क करने वाला विद्वान था—उसने इस दौरान फारसी भाषा का भी अध्ययन कर लिया—महात्मा हंसराज और शेरे पंजाब लाला लालपतराय आपके सहपाठी थे—आप इतने तीव्रबुद्धि के थे कि संस्कृत की उत्तम प्रकार की शिक्षा भी इसी दौरान हासल कर ली—बताया जाता है कि पुस्तकालय की सभी पुस्तकें गुरुदत्त ने पढ़ डाली – इतने बुद्धिमान थे कि जिस किताब को एक बार पढ़ लेते वह उनको जबानी याद हो जाती—महर्षि की मौत के बाद गुरुदत्त ने आर्य साहित्य का मन्थन शुरू किया—आर्य साहित्य पर १७ पुस्तकें लिखी—आपकी शोहरत सारे आर्य जगत मे फैल गई—आप गवर्नमैन्ट कालेज में प्रोफैसर बन गए—मगर शीघ्र ही नौकरी से त्याग-पत्र देकर आर्य समाज के काममें जुट गए—वह शास्त्रार्थ के महारथी थे—जहां पर भी आर्य समाज को इनके प्रचार की जरूरत होती थी वह वहां पर भी पहुंच जाते थे—डी. ए. वी. कालेज के लिए इन्होंने काफी चन्दा इकट्ठा कर के उसे अपने पाव पर खड़ा कर दिया इन्हें अपने जीवन मे आर्य-समाज का काम करने का केवल ५ वर्ष का समय मिल सका मगर इन पांच वर्षों में इन्होंने उत्तरी भारत में ही नहीं अपितु भारत के दूसरे भागों में भी जा जाकर आर्य समाज का प्रचार किया—और वह बीमार रहने लगे इन्हें तपेदिक की बीमारी हो गयी—गुरुदत्त जी पंजाब के शहर मुलतान में पैदा हुए और २१-४-१८९० को सिर्फ २६ वर्ष की उम्र में यह महान पुरुष हम से सदा के लिए जुदा हो गया इनकी जान बचाने के लिए इन्हें पहाड़ियों पर ले गए क्योंकि तपेदिक का उस वक्त कोई इलाज इजाद नहीं हुआ था—मगर सब कोशिशें बेकार साबित हुई—इस महान पुरुष को केवल ५ वर्ष का समय काम करने का मिल पाया तथापि इसी समय के दौरान उसने अपनी विद्वता की धाक सारे भारतवर्ष में बैठ दी थी—इनकी मौत से भारतवर्ष को बहुत नुकसान पहुंचा—हम आज आर्य जगत के इस अजीम फिलासफर को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं। (प्रताप २१-४-८६)

मानव धर्म

नाना जन्मों के सुकृतों का फल प्यारा मानव जीवन है।
इसमें ही सम्भव है केवल पाना सच्चा जीवन धन है॥
इसको पाकर भी यदि हमने नहीं किया कभी भी ईशभजन।
तो सत्य समझ लो व्यर्थ गया अपना हीरा जैसा जीवन॥१॥

भौतिक धन गया न साथ सुनो जाना न किसी के साथ कभी।
कल्याण इसी में अपना है कर सदुपयोग लो मित्र अभी॥
अन्यायोपार्जित धन रखना निश्चय ही है विष का संग्रह।
इससे मनुष्य को मिलता है अत्यन्त भयानक यम निग्रह॥२॥

जिसको सुख साधन माना है वह तो है बन्धन का साधन।
इसमें फंस करके होता है सर्वथा व्यर्थ मानव जीवन॥
वह धन सुखदायक होता है जो उत्तम ढंग से आया हो।
जो बिना किसी को कष्ट दिए अपने ही श्रम से आया हो॥३॥

उस धन से पुण्य कमाना ही जीवन को सफल बनाना है।
अपने ही हित में व्यय करना तो सबने निन्दित माना है॥
उपकार सभी का किया करो अपकार किसी का करो नहीं।
अपना कर्तव्य निभाओ तुम अधिकार किसी का हरो नहीं॥४॥

वेदों का यह उपदेश भव्य हम सबको ही अपनाना है।
अपना प्यारा सुन्दर अतीत फिर इस वसुधा पर लाना है॥
तब फिर अपना प्यारा जीवन धर्मानुकूल बना पायेगा।
प्रभु का सामीप्य प्राप्त होगा संसार सदा सुख पायेगा॥५॥

—आचार्य रामकिशोर शर्मा
प्रधानाचार्य
श्री राधा कृष्ण संस्कृत महाविद्यालय
खुरजा (उ० प्र०)

दो श्रद्धांजलियां

स्वर्गीय श्री बिहारीलाल जी शास्त्री के प्रति :—

पैदा करते तर्क से अरि-दल में भूचाल।
हुए दिवंगत वाद के विज्ञ बिहारीलाल॥
विज्ञ बिहारीलाल व्यंग्य के माहिर तीखे।
वेद-भिन्न-मत-मातंगों पर सिंह-सरीखे॥
सुधी-शूर शास्त्रार्थ-समर के श्रुति-अनुरागी।
धन्य धर्म धौरेयं चिरन्तन यश के भागी॥

स्वर्गीय श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री के प्रति :—

साधु-शील सहृदय परम ऋजुता-मृदुता-केन्द्र।
महाशोक, नर-लोक से प्रस्थित हुए सुरेन्द्र॥
प्रस्थित हुए सुरेन्द्र बन्धुतादर्श पुराने।
वसुधागत क्यों हुए प्रेम-सम्बन्ध निभाने॥
'कल्पद्रुम' मे खोल उन्होंने यश का खाता।
लिया अचानक तोड़ हन्त, जगती से नाता॥

—धर्मवीर शास्त्री
BI/२१ पश्चिम विहार
नई दिल्ली-६३

आर्य समाज दीवान हाल के शताब्दी समारोह के अवसर पर

प्रधानमन्त्री का सन्देश

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल के शताब्दी समारोह के मौके पर अपने सन्देश मे शिक्षा, समाज सुधार और अन्धविश्वास उन्मूलन के क्षेत्र मे आर्य समाज के योगदान की तारीफ की।

सूचना-प्रसारण मन्त्री श्री गाडगिल का सन्देश

सूचना प्रसारण मन्त्री वी. एन गाडगिल ने अपने सन्देश मे कहा कि "स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में चलाए गए समाज सुधार आन्दोलनो मे अग्रणी था।

उन्होने कहा कि स्थापना के समय से ही इस सगठन ने समाज मे फैली रूढियो धार्मिक आडम्बरो, जात-पात, बाल-विवाह, जैसी अनेक सामाजिक बुराइयो का खुलकर विरोध किया। इसने जनता मे राष्ट्रीय चेतना जगाने मे प्रमुख भूमिका निभाई।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) के तत्वावधान मे डी०ए०वी० इण्टर कालिज टटीरी मे २३ मई ८६ से १ जून ८६ ई० तक लगभग १५० आर्य वीरो के लिये मण्डलीय स्तर पर शिविर का आयोजन किया गया है। प्रस्तुत शिविर मे प्रधान शिक्षक डा० देवव्रत आचार्य उपसचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली तथा बौद्धिकाध्यक्ष प० फूलसिंह आर्य धनौरा (टटीरी सचालक सा० दे० आ० वीर दल मण्डल मेरठ रहेगे। प्रवेशार्थ हाई स्कूल या समकक्ष योग्यता धारी युवक सम्पर्क या पत्र-व्यवहार मन्त्री आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) से करे।

—राधेश्याम आर्य
मन्त्री

आर्य समाज विनय नगर (सरोजिनी नगर), नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विनय नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव शनिवार (१० मई और रविवार ११ मई, १९८६ को सरोजिनी नगर मार्किट पार्क मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर महत्वपूर्ण सम्मेलनो का आयोजन किया जा रहा है अनेक विद्वान पधारेंगे। ५ मई से १० तक प्रात ६-३० बजे से ७-३० बजे ऋग्वेद महायज्ञ और रात्रि को ६ बजे से १० बजे तक वेद कथा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती करेगे। कथा से पूर्व ८ से ६ बजे तक श्री सत्यदेव जी स्नातक भजनोपदेशक के मनोहर भजन हुआ करेंगे।

रविवार ११ मई-८६ को प्रात १० से दोपहर १ बजे तक दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे आर्य समाज स्थापना दिवस, उत्सव स्थल पर मनाया जायेगा जिसमे दक्षिण दिल्ली की सभी समाजे भाग लेगी। दोपहर १ बजे ऋषि लगर भी होगा।

—रोशनलाल गुप्ता
प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज मोती नगर के उत्सव पर
सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले का स्वागत करते हुए आर्य समाज मोती बाग नई दिल्ली २१ के प्रधान श्री ज्ञानचन्द जी महाजन। पीछे बाये खडे हुए आर्य समाज मोती बाग के मन्त्री श्री जयप्रकाश शास्त्री तथा दाये दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान जी हरबन्स सिंह खेर दिखाई दे रहे है।

गाजियाबाद में सार्वदेशिक आर्यवीर दल का पुनर्गठन

नगर आर्य समाज गाजियाबाद मे आर्य समाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ १० अप्रैल को मन्त्र म आश्रम के सचालक श्री स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी शास्त्रार्थ महारथी वयोवृद्ध श्री अमर स्वामी जी सरस्वती का हार्दिक अभिनन्दन आर्य समाज के प्रधान दानवीर श्री रघुवर दयाल जी ने किया आर्य समाज के मन्त्री विजयपाल शास्त्री ने बताया कि जहा आज हम १११ वी वर्षगाठ आर्य समाज स्थापना दिवस मना रहे हैं वहा आज के दिन का महत्व इसलिए भी है कि आज विक्रमी सम्वत और सृष्टि सम्वत भी है। आज के दिन ही श्री अमर स्वामी जी का जन्म हुआ और आज के दिन ही अपने सन्यास आश्रम की दीक्षा ली थी।

इस दिन की महिमा पर तथा आर्य समाज के अब तक के सक्षिप्त इतिहास पर श्री अमर स्वामी जी, स्वामी प्रेमानन्द जी, प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए० तथा श्री बालदिवाकर जी हस सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, ने अपने ओजस्वी, सामयिक, सारगर्भित विचार रखे। इस सुअवसर पर श्री बालदिवाकर जी हस ने इसी आर्य समाज में आर्यवीर दल के पुनर्गठन की घोषणा की। परिणाम स्वरूप बहुत से नवयुवकों ने एतदर्थ अपनी सेवाए अर्पित करने का वचन दिया। एक समिति बनाकर एक शिक्षक की भी व्यवस्था कर दी गई। नगर निवासियों ने नगर के भिन्न भिन्न स्थानो पर दीपावली मनाई। मन्त्री जी ने सभी को धन्यवाद दिया।

—मन्त्री आ स गाजियाबाद

स्वतन्त्रता सेनानी लाला मक्खनलाल टटीरी मण्डी का स्वर्गवास

सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और चन्द्रशेखर आजाद के साथी लाला मक्खनलाल बसल का गत ७ अप्रैल को अग्रवाल मण्डी टटीरी मे उनके निवास स्थान पर निधन हो गया वह ७८ वर्ष के थे। १६ अप्रैल १९०७ को टटीरी जिला मेरठ में जन्मे लाला मक्खनलाल १४ वर्ष की आयु मे ही स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कूद पड़े थे। १९२६ में क्रान्तिकारियो के सम्पर्क मे आये और दिल्ली षड्यन्त्र केस के चन्द्रशेखर आजाद, विमल प्रसाद जैन भवानी प्रसाद शर्मा, सच्चिदानन्द अज्ञेय जैसे क्रान्तिकारियों को शरण दी तथा हिन्दुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के लिए सदस्यो की भर्ती की। ८ जून १९३२ को उन्हें तीन वर्ष की कड़ी कैद की सजा सुनाई गयी जो मेरठ व अलीगढ़ की जेलो मे काटी इसके अलावा भी कई बार जेल गये।

लाला मक्खनलाल बसल १३ वर्षों तक डिस्ट्रियल बोर्ड के सदस्य आर्य-समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी के प्रधान तथा टटरी टाऊन एरिया कमेटी के चैयरमैन रहे।

—सुभाषचन्द आर्य
सदस्य आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी

—आकोट ता० ३०-३-८६ को प्रात १० । बजे आर्य समाज मन्दिर मे आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर के मन्त्री श्री रमेशचन्द जी श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी का ४२ वर्ष की अल्पायु मे हृदयगति रुक जाने से ता० ७ मार्च को दुखद निधन हुआ इस हेतु श्री नामदेवराव शास्त्री गुहे आर्योपदेशक सभा, इनके उपस्थिति में शोक सभा हुई। श्री नामदेव शास्त्री जी ने श्रद्धाजलि पर भाषण देते हुए कहा कि श्रीमती लक्ष्मी देवी का आकस्मिक दुखद निधन हो जाने से सम्पूर्ण आर्य जगत की एव महिला समाज की महान क्षति हुई। आर्य समाज के सभी कार्यकर्ताओ ने गहरा शोक प्रकट करते हुए खडे होकर मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। हम आर्य समाज की ओर से इस दुःखद निधन पर श्री रमेशचन्द जी और उनके शोक सतप्त परिवार के लिए हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। और दिवगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा को शांति के लिए ईश्वर प्रार्थना करते हैं।

—नामदेव शास्त्री गुहे, मन्त्री

१०३ मुस्लिम राजपूतों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

आगरा। समाचार है कि ग्राम सालह नगर ग्राम सभा (बरुअर) तहसील खेरागढ़ जिला आगरा में आर्य समाज तथा क्षत्रीसमाज के सयुक्त प्रयास से एक धार्मिक समारोह प्रात सम्मेलन में १०३ मुस्लिम राजपूतों ने स्वेच्छा से अपना पुराना हिन्दू धर्म ग्रहण किया यज्ञ की पवित्र वेदी पर आसीन सभी पुरुषों को यज्ञोपवीत प्रदान किये गये इन्होंने अहमदी जमात जो कादयान से संबंध था खत्म कर दिया इन परिवारों के मुखियों के नाम इस प्रकार हैं श्री सौदानसिंह (छनेकी) सुनहरी रमेश सौदान (साहिक) गगाधरसिंह (गजवी) चन्द्रपालसिंह (चन्द्र) सतेन्द्रसिंह (सत्तार) चन्दनसिंह (चादखा) सुखवीरसिंह (सुकम) राजेन्द्रसिंह सत्य प्रकाश (सत्तो) जवाहरसिंह (जहूरा) इत्यादि। टी० परशुरामसिंह चौहान क्षत्री महासभा के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता मे सम्पन्न एक महती सभा में श्री रामप्रकाश खेड़ा व सर्वोदयी नेता चिम्मनलाल जैन मेजर आगरा शिवराज सिंह भदौरिया व पतोलसिंह चौहान व गुलाबसिंह तोमर वगैरह ने हिन्दू धर्म की विशेषताओ पर प्रकाश डाला ठा० पतोलसिंह चौहान आगरा निवासी को इन्ही ६ माह के अन्दर ग्राम कैमार व परसारा व सुजान व कोटा व अल्हैपुर त० हाथरस जिला अलीगढ़ मे शुद्धि कराने का श्रेय है अल्हैपुर में लाला रामगोपाल शालवाले भी गये थे और उनमें ओजस्वी भाषण हुये थे उपस्थित क्षत्री समाज ने शुद्ध किये बन्धुओ को हुक्का खाना पीना व्यवहार किसी शादीमे अपना लिया ये मुगल कालीनसे हिन्दी कारावास में इस्लाम मत अपना लिया था ठा० पतोलसिंह चौहान अवैतनिक कार्यकर्त्ता हैं।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

का शरीर सुदृढ़ हो

ातिष्ठ, अश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा, आयुष्टे शरदः शतम् ॥
अथर्व० २-१३ ४ ॥

हिन्दी अर्थ—हे बालक ! तू आ और इस शिला पर पैर रख । तेरा शरीर पत्थर के तुल्य दृढ हो जाए । सारे देवता तेरा सौ वर्ष की आयु करें ।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २१ अङ्क २२]
वैसाख शु० ९ सं० २०४३ रविवार १८ मई १९८६
दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

श्री त्यागी जी के आकस्मिक निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग द्वारा पारित शोक प्रस्ताव

दिनाक ११-५-८६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की यह अन्तरग सभा इसके यशस्वी मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी के १० मई १९८६ को आकस्मिक देहावसान पर गहरा दुख प्रकट करती है। श्री त्यागी जी ने आर्य समाज, वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार मे अपना जो अमूल्य जीवन लगाया था, उनके लिए समस्त आर्य जाति उनकी ऋणी रहेगी। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री के रूप मे उनके कार्यकाल मे देश-देशान्तर मे अनेक कार्यक्रम और महा-सम्मेलनो का शानदार आयोजन किया गया। देशान्तर मे कई आर्य समाजो का गठन और प्रतिनिधि सभाओ का निर्माण भी हुआ। श्री त्यागी जी ने सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रो मे जो मूल्यवान सेवाए राष्ट्र को दी है, वह एक लम्बा इतिहास है। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य-वीर-दल का गठन और अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना म उनका ही प्रमुख हाथ रहा है।

श्री त्यागी जी का निधन आर्य समाज, और हिन्दू जाति को अपूर्णीय क्षति है, इसकी पूर्ति कभी भी होना सभव नही है।

यह सदन दिवगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए परमात्मा से उनके परिजनो, मित्रो और शुभचिन्तको को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना करता है।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान सभा

श्री ओम्प्रकाश त्यागी--एक श्रद्धाञ्जलि

— श्री ब्रह्मदत्त स्नातक

जिला बुलन्दशहर (उ० प्र०) के एक गांव 'सौली' में जन्मे श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने अपने जीवन मे प्रसिद्धि समाजसेवा और अद्भुत साहस की जो ऊंची मयार द्वारा स्थापित की वह किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यन्त गौरव की वस्तु है। लोकसभा में जब उन्होने धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक को प्रस्तुत किया,उस पर जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहसें चलीं तब भारत के अल्पसंख्यकों की खुशामद करने वाली राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियों ने उनके इस विधेयक का घोर विरोध किया। अपवाद रूप से कुछ राजनीतिज्ञों ने सैद्धांतिक स्तर पर उस विधेयक का समर्थन किया, परन्तु शासकदल ने जिसके व प्रमुख सदस्य थे, अर्थात् जनता पार्टी ने विधेयक का समर्थन करना नही स्वीकार किया, अपितु अनेक तुष्टीकरण के समर्थकों ने खुलकर उनका विरोध किया। परन्तु वे सिद्धान्तवादी थे। विधेयक के प्रश्न पर भारतीय जनता पार्टी जिसके वे लौहस्तम्भ थे, उनका साथ छोड गए। तत्कालीन प्रधान मन्त्री मोरारजी भाई ने इस विधेयक को एक उचित कदम बताया था, और श्री चरणसिंह ने भी इसका समर्थन किया, परन्तु श्री जगजीवन राम ने इसे वापस लेने पर दबाव डाला। और शासकदल जनता पार्टी के नेताओ ने उन पर विधेयक प्रस्तुत न करने के लिए अनेक प्रकार के दबाब डाले, पर वे टस से मस नहीं हुए।

अब यह विधि की विडम्बना देखिए कि श्री त्यागी ने अपने राजनैतिक दल से नाता तोड़ लिया। जीवन के इस अन्तिम भाग मे राजनीति के इस घिनौने रूप को देखकर आर्य समाज और जन जातियों की सेवा के काम में वे समर्पित ही गए। त्यागी जी का जीवन आर्य समाज के सेवा क्षेत्र से शुरू हुआ, और अन्त मे अपने जीवन को उसी कार्य के लिए सर्वात्मना समर्पित कर दिया। भारत के पूर्वांचल और मध्य भारत के आदिवासी अंचलों मे उन्होने अपना कार्यक्षेत्र बना लिया था। दयानन्द सेवाश्रम को स्थापित कर उन्होंने इन क्षेत्रो मे सेवा और शिक्षा के कार्य का जाल फैला दिया। आज उनको प्राण और जीवन देने वाला नही रहा। भारतीय जनता पार्टी के साथ उनका सम्बन्ध सस्थागत रूप से लगभग समाप्त था, परन्तु अपने पिछले साथियो से भेंट करने मृत्यु मे पहले दिन (६ मई) दिल्ली में हुए भारतीय जनता पार्टी के महा अधिवेशन मे वे पहुचे थे।

शायद उस अधिवेशन की कार्यवाही को देखकर उनका विचार मन्थन इस ऊंचाई तक हुआ कि वहा से घर लौटने के बाद उनकी तबियत खराब हुई और रात के बाद वे सवेरे ही दिवगत हो गए। उनकी अपनी मातृसस्था आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वे १३ वर्षों तक महामन्त्री रहे, और इमरजेन्सी के दौरान जब उन्होने आर्यसमाज को राजनैतिक बदले की भावना से सरकारी कोप का शिकारहोते देखा, तो अपनी उस प्रिय सस्था के पद से भी मुंह मोड़ लिया। यह उनके चरित्र की महानता थी। यदि अनुचित न माना जाय तो उनकी राजनैतिक और सामाजिक, धार्मिक सस्थाओ ने त्यागी जी का उचित मूल्यांकन नहीं किया।

पिछले दो दशको मे श्री त्यागी ने न केवल देश मे बल्कि विदेश मे भी भारतीय सस्कृति धर्म और भाषा को आगे फैलाने मे महत्वपूर्ण योगदान किया। पूर्वी अफीका मे वर्षो तक वे प्रचारक के रूप मे रहे। नैरोबी, तनजानिया, दारेस्सलाम, मोम्बासा सभी उनके कार्यक्षेत्र रहे। मौरिशस, नैरोबी और लन्दन मे तीन अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर के आर्य महासम्मेलनो का आयोजन सफलता पूर्वक उन्होने किया। और उनके द्वारा भारतवासियो मे एक नए जागरण को विकसित किया।

हाल ही मे दक्षिण अफीका मे जो अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन हुआ। उस तीन मास के प्रवास में श्री त्यागी और इन पंक्तियों का लेखक ने साथ-साथ यात्रा की और एक कमरे मे ठहरे। मुझे उनके सरल और नियमित जीवन का पूरा परिचय तभी मिला। दक्षिण अफीका में अनेक अवसरो पर भारतीयों के बीच अंग्रेजी में भी हमें भाषण देने होते थे। त्यागी जी हिन्दी के ओजस्वी वक्ता थे परन्तु अंग्रेजी में भी उन्होंने वहां पर तैयारी के साथ अच्छा प्रभाव डाला।

द० अफ्रीका के जातीय भेदभाव की निन्दा

दक्षिण अफ्रीका में वहा के राजनैतिक संकट को दूर करने के लिए सरकार की ओर से अनेक सरकारी गैरसरकारी और संसद सदस्य हमारे निवास पर उन दिनों आते थे। एक अवसर पर प्रिटोरिया सरकार ने राजनैतिक स्थिति पर चर्चा करने के लिए हमे आमन्त्रित किया। वहा के प्रेसीडेन्ट बोथा के दायें हाथ जो सूचना विभाग के डायरेक्टर जनरल थे उन्होंने डरबन से बुलाकर अपने विशेषज्ञों के द्वारा दक्षिण अफीका की राजनैतिक स्थिति पर बातचीत की। इनमे एक सैनिक सलाहकार भी थे। बाद मे मध्यान्ह भोज पर हमें आमन्त्रित किया। उस अवसर पर श्री त्यागी ने बलपूर्वक जातीय समस्या का न्यायपरक समाधान ढूंढने पर जोर दिया, और आज यह तथ्य पहली बार लोगो को ज्ञात होगा कि एक अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन डरबन मे हुए अधिवेशन में बोथा सरकार को जातीय समस्या का हल न्यायपूर्वक करने के लिए जो अन्तिम प्रस्ताव पास किया गया था, उसको दक्षिण अफीका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामभरोसे ने प्रस्तुत किया था और उसका अनुमोदन बलपूर्वक शब्दों मे त्यागी जी ने किया था। जातीय सम्बन्धों में सुधार की अनेक घोषणाए उस विशाल अधिवेशन के बाद बोथा सरकार ने वहां लागू की।

१९४७ मे नोवाखाली (पूर्वी बगाल) में महात्मा गांधी की शान्ति यात्रा मे बलपूर्वक जो हिन्दू कन्याएं और स्त्रियां अपहृत की गई थी, उनको आततायियों से निकालने का काम श्री त्यागी ने अपने स्वयं सेवकों की मदद से और गांधीजी की जानकारी में किया था। असम के भूकम्प में पीड़ितों के लिए सहायता शिविर उन्होंने लगाए। हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारसमें जब कुछ गुन्डागर्दी की घटनाएं हुई। छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार हुआ, तब स्व. महामना मालवीय जी ने विश्वविद्यालय के अखाड़े से ओम्प्रकाश नाम के इस युवक को बुलाकर सहायता मांगी। उन्होंने कुलपति की आज्ञा का तुरन्त पालन किया, जिस पर मालवीय जी ने छाती से लगाकर प्यार सम्मान किया। श्री त्यागी १३ वर्षों तक लोकसभा के सदस्य रहे। हिन्दी, राष्ट्र की सुरक्षा, कमजोर वर्गोंका उद्धार और सरलता उनके जीवन की प्रमुख विशेषताएं थीं। उनके मित्रों में सभी वर्गों के लोग थे और नवयुवकों को आकर्षित करने की उनमें असाधारण क्षमता थी।

श्रीयुत ओम्प्रकाश त्यागी सभामन्त्री का निधन सभा कर्मचारियों पर वज्रपात

दिनांक १०-५-८६ को प्रात काल सभा कार्यालय मे जैसे ही श्री त्यागीजी के आकस्मिक निधन का समाचार मिला एकदम आखो से आसू निकल पड़े। मृत्यु प्रकृति के नियमानुसार प्रत्येक का आलिंगन करती है यह सत्य किसी से छिपा नही है। मैं आदरणीय त्यागी जी के सम्पर्क मे १९६७ में आया था उसके बाद उपमन्त्री व मन्त्री के रूप मे तभी से उनके साथ कार्य करने का व निकट से समझने का अवसर मिला। श्री त्यागी जी निर्भीक, कोमल हृदय, दयालु नम्र स्वभाव, गरीबो के दुख दर्द को समझने व सबके साथ समानता का व्यवहार करने वाले थे। सभा का कोई छोटा-सा सेवक हो या बडा कार्यकर्ता उनसे वे झिझक अपनी बात कह देता था। वे बडे प्रेम से सुनते तथा सहृदयता पूर्वक निर्णय लेने मे सक्षम थे। वे वर्षों सभा के अधिकारी होने के साथ-साथ सामद भी रहे। सभा का प्रत्येक कर्मचारी कही भी जाकर उनके नाम की जानकारी देकर सहज ही कार्य करा लाता था यह उनके राजनैतिक व सामाजिक व्यक्तित्व का प्रभाव था। पूज्य त्यागी जी की रिक्तता का अनुभव सभा का प्रत्येक कर्मचारी आजीवन करता रहेगा। आर्य समाज को समर्पित ऐसे निष्ठावान महापुरुष के चरणो मे शत-शत प्रणाम।

—रामभूल शर्मा
एकाउन्टेन्ट सभा

सम्पादकीय

विदेशों ... भारत को दारुल-हब बनाने की योजना :

क्या सरकार नोटिस लेगी ?

श्री शहाबुद्दीन जो जनता पार्टी के महासचिव हैं अपने आस्ट्रेलियाई प्रेस के साथ साक्षात्कार में जो बयान दिया है उसमें आपके बयान से साम्प्रदायिकता की बू आती है। यह राष्ट्रीय भावनाओं पर चोट पहुंचाने वाला है। उनका यह बयान राष्ट्रीय एकता के विरोधियों के समकक्ष उन्हें ला बैठाता है प्रजातान्त्रिक देश में बयान देने के तरीके होते हैं और उसकी भाषा भी संयत होती है।

उनका बयान रामजन्म भूमि के निर्णय से रुष्ट होकर दिया अथवा किसी अन्य कारणों से। उनकी यह घोषणा मुस्लिम युवकों को देश के प्रति निष्ठाहीन बनने के लिए उकसाती प्रतीत होती है।

प्रथम बात यह कही कि यदि अल्पसंख्यक मुसलमान हिन्दू बहुमत के खिलाफ सड़कों पर निकल आए, तो भारतीय सरकार और सेना उस दशा में नियन्त्रण नहीं कर सकेगी। सैय्यद साहब के इस राष्ट्रघाती बयान में कितनी राष्ट्रभक्ति है।

उनका यह कहना कि भारत सरकार नागा विद्रोहियों और पंजाब विद्रोह को कुचल न सकी है। यह जनता पार्टी व लोकसभा के सदस्य के नाते गैर-जिम्मेदाराना बयान है। जहां तक विद्रोहियों के दबाने की बात है उन्होंने सेना की शक्ति का स्वरूप कई बार देखा है आप इस पर प्रश्न चिन्ह लगा सकते हैं क्योंकि भारत सरकार ने राष्ट्रीय संकट काल में सेना का सीमित सहयोग लिया है क्योंकि घर में शक्ति का प्रयोग कैसा ? समस्याओं के समाधान को शान्तिपूर्वक सुलझाना ...

अगर उन्हें मानसिक दिवालिएपन का बयान देना ही था तो राष्ट्रभक्त मुसलमानों को इस दलदल में न फांसते। सैयद साहब को जनता पार्टी का मुखौटा न ओढ़कर मुस्लिम-लीग का जामा पहनकर बयानबाजी करनी चाहिए थी। सन ४७ से पूर्व के बयानों की भांति उनकी यह बददिमागी का सबूत है जो देश को विनाश के दावानल में झोंकने के समान है। श्री चन्द्रशेखर जनता पार्टी के नेता और सरकार ने इस घिनौने बयान पर आपत्ति क्यों नहीं की। क्यों नहीं उन्हें पार्टी से अलग किया गया और सरकार ने इस दिवालिए-पागल को जेल का द्वार क्यों नहीं दिखाया। अल्पसंख्यकों के साथ किया गया सद्व्यवहार। फिर ऐसी बेतुकी बातें क्यों कर रहे हैं।

यदि भारतीय संस्कृति की बहुमत पर यह हिन्दू राष्ट्रवाद की छाप लगी होती, तो आज भारतीय संसद में जियाउर्रहमान अन्सारी, मोहसिना किदवई, खुर्शीद आलमखां का अस्तित्व नहीं होता।

बेतुकी-बेबुनियाद की बातें बन्द करो ?

सैय्यद साहब भारत एक सुन्दर चमन है इसे उजाड़ने व बरबाद करने के सपने मत देखो। इस चमन को पूज्य बापू के रक्त से सींचा है मौ० आजाद ने अपनी जीवनीय शक्ति की खाद से हरा किया है। जहां अनेक धर्मों और संस्कृतियों तथा सभ्यताओं के फूल खिले हैं हमारी सेनाओं तथा नेताओं ने इस खूबसूरत चमन को अपने हाथों से संवारा है और संवार रही है अपने ही हाथों से अपने पैर नहीं काटते हैं। सेनाओं का काम इस सुसंस्कृत देश की रक्षा करना है। इसकी रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति सदा ही दी है उनका खुला मस्तिष्क विशाल हृदय है। शहाबुद्दीन साहब अपनी मुसलमानों में नेतागिरी चमकाने और निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए भारत के मुसलमानों को भड़काकर आन्दोलन चलाना चाहते हैं। बीते इतिहास को शायद भूल गए हैं कि आपसी संघर्षों से कौम व राष्ट्र को कितनी हानि उठानी पड़ी है।

यह रेडियो प्रसारण देश की अखण्डता व एकता में कितना बाधक है। याद रखो सय्यद साहब यदि नव जवानों पर इतना भरोसा है कि उस दिन के इन्तजार का कि आपके बयान पर ही सड़कों पर निकल कर हिन्दू प्रभुत्व के खिलाफ साम्प्रदायिक विद्वेष को बढ़ावा देने जैसा है काश ! हिन्दू ने भी अंगड़ाई ले ली चटाई की तरह लपेटकर तुम्हारे ही खून की नदी में गोता लगाया जाएगा।

म० गांधी के शब्दों में यदि मुसलमानों को भारतमें प्रेम और मुहब्बत के जज्बात पैदा करके रहना है तो हिन्दू के खून को खौलने मत दो; अन्यथा गांधी भूखहड़ताल और फाका करके हिन्दू को आपे से बाहर होने से रोक नहीं पाएगा।

साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाला बयान अति अशोभनीय है। राष्ट्रीय गरिमा पर करारी चोट है अखण्डताका बाधक वक्तव्य शहाबुद्दीन साहब जरा सोच-सम्हल कर दो।

यह भारत दारुल-हब ऐसे नहीं बनेगा।

जगे पुन: वेदो की ज्योति

मूक स्वरों के निर्मम दूत !
बने तुम कैसे हो अनजान ?
लेकर शक्ति निरन्तर तुम हे
बना सकते यह जगत महान।
पतझर की झंझा में, सही,
नवागत हो सकता मधुमास।
शूलों की शय्या पर क्रूर,
होता मृदुल कली सुविकास।
कण्टक से आकीर्ण रहें पथ,
इस जगती का यही रहस्य।
सफल बने श्रम मनु पुत्रों का,
मरु भी हों जब श्यामलशस्य।
नवजीवन की गरिमा के तुम;
प्रत्युत्तर से बल-समुदाय।
शक्ति अपरिमित विस्मृत करके;
पथ पर विचलित हो, निरुपाय।
उठो ! नवल बल से अभिपूरित,
कर दो यह सारा संसार।
जगे पुन: वेदों की ज्योति,
धरणि का हो मंगल, उपकार।
स्वर्ग बने वसुधा यह सारी,
जन जन का हो सुचि कल्याण।
दलित पतित निर्बल को निर्मल,
मिले मनुजता का शुभ त्राण॥

—राधेश्याम आर्य

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक सभा का अन्तिम संस्कार-सम्पन्न

११ मई, प्रातः ७ बजे से साकेत कालोनी, नई दिल्ली, निवास से शव-यात्रा चलकर आर्य समाज दीवान हाल पहुंची। यहां पर दिल्ली नगर की आर्यसमाजों प्रतिनिधि सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। वैदिक-ध्वनि के साथ उनका स्वागत किया। आर्य नर-नारी अश्रुपूरित नयनों से श्री त्यागी जी के पार्थिव शरीर पर पुष्प वर्षा की।

श्री रामगोपाल जी शालवाले ने अगवानी करके उन्हें निगमबोध घाट चलूस के रूप में प्रस्थान किया। गुरुकुल गौतम नगर के विद्यार्थियों द्वारा गायत्री-मन्त्र के उच्चारण के साथ शव-यात्रा दीवान हाल से लाल किले के सामने तथा लाल बत्ती, जी० पी० ओ० होकर होकर निगमबोध घाट पर पहुंचे। निगमबोध घाट पर राजस्थान उत्तर प्रदेश के आर्य वीर दल संचालकों एवं प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने अर्थी को कन्धों पर उठाया।

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु १ कनस्तर घी, १ मन सामग्री, चन्दन आदि की व्यवस्था सार्वदेशिक सभा की ओर से की।

निगमबोध घाट पर, जब चिता पर पार्थिव शरीर को रख लकड़ियां चयन की और चिता में जब अग्नि दी गई, तो हजारों अश्रुओं पूरित जन-समुदाय ने जय-ध्वनि की और पं० महेन्द्र कुमार जी शास्त्री, यशपाल जी सुधांशु आदि पंडितों ने वेद-मन्त्रों के उच्चारण के उनके परिवार जनों से संस्कार सम्पन्न कराया।

संस्कार-पूर्ण होने पर, प्रार्थना-सभा प्रारम्भ हुई। जिसे पं० यशपाल जी सुधांशु प्रार्थना के पश्चात् शान्ति पाठ कर सभा विसर्जित की।

श्री लाला कृष्ण अडवाणी तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री केदरनाथ साहनी व श्री मदन लाल जी खुराना ने आर्य समाज दीवान हाल पहुँच कर श्री त्यागी जी को श्रद्धांजलि अर्पित कीं।

सामाजिक कार्य

सन् १९४६ ई० में नोवाखाली त्रिपुरा आदि धर्मान्ध साम्प्रदायिकता के शिकार हुए। सार्वदेशिक सभा की सक्रियता से श्रीओम्प्रकाश जी त्यागी अपने आर्य वीरों को लेकर कलकत्ता गये और रिलीफ कार्य में महीनों लगे रहे। और सात केन्द्रों की देख-भाल श्री त्यागी जी करते रहे।

नोवाखाली के साम्प्रदायिक दंगों के मध्य एक ऐसी घटना घटी, जिसका इतिहास की दृष्टि से बड़ा महत्व है, मा० गांधी जी भी वहां गये थे साथ में श्रीमती सुचेता कृपलानी भी गई हुई थी, श्री त्यागी जी तथा आर्य वीरों के सामने गुण्डों की गुण्डागिरी काफी कम हो चुकी थी फिर भी वे श्रीमती सुचेता जी को गायब कर देना चाहते थे जिससे एक अन्तर्राष्ट्रीय धमाका हो जाता। किन्तु आर्य वीरों के होते मुस्लिम गुण्डों की चल नहीं पा रही थी। अतः गांधी जी व सुचेता जी के कान भरते रहते और श्री त्यागी जी की शिकायतें करते रहते। सुचेता जी ने शिकायत की चर्चा श्री त्यागी से भी की। श्री त्यागी जी ने गुण्डों की नियत साफ न होने की सुचेता जी को भी बता दी। एक-दो दिन पीछे सुचेता जी के आश्रम पर उन गुण्डों ने धावा बोल दिया। और सुचेता जी को निकाल ले जाने की योजना में थे ही, कि श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी आर्य वीरों के साथ कांग्रेस कैम्प में बचाने पहुंच गये, तब वह योजना सफल न हो सकी। सुचेता जी को इस घटना से प्रभावित हुई और आर्यसमाज की प्रतिष्ठा भी बढ़ी।

आसाम का भूकम्प

आसाम में सहायता केन्द्र डिब्रूगढ़ में खोला गया था भूकम्प के सहायता कार्य में बंगाल के अलावा ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार रीमिस्मी पहाड़ी इलाकों में भी सहायता कार्य किया। हाथी की पीठ पर बैठकर सहायता सामग्री लेकर शरणार्थियों के पास पहुंचाई जाती थी श्री ओम्प्रकाश त्यागी इस कठिन समय में अपने दल के साथ सबसे आगे थे। डिब्रूगढ़ केन्द्र पर श्री त्यागी जी का सहायता कार्य सबसे अच्छा था।

पूर्वी बंगाल से विस्थापितों की सहायता

जून १९७१ में श्री त्यागी जी शरणार्थियों का जायजा लेने कलकत्ता गये और विस्थापितों की दयनीय दशा देखी और ईसाई मिशन द्वारा इनकी गरीबी तथा दुःखी-दीनों का वह नाजायज फायदा उठाना चाहते थे श्री त्यागी जी की राय से एक रिलीफ सोसायटी बनाई गई। सार्वदेशिक सभा में आर्थिक मदद भी दी। रिलीफ का कार्य राष्ट्रीय स्तर पर श्री त्यागीजी ने जो सहयोग दिया आर्यसमाज या भारत सेवक संघ रिलीफ का कार्य कर रहा था।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी दिवंगत

तुम क्या गए कि बज़्में तमन्ना चली गई
तुम क्या गए सारे सहारे चले गए।

यह घटना आर्यों के लिए हृदय विदारक है कि माननीय ओम्प्रकाश त्यागी का शरीर अन्त हो गया वैसे वैदिक धर्म की मान्यताओं में—

वायुर निलम् मृत मेदमं भस्मान्तं शरीरं-ओम् कृतो स्मर

अर्थात—शरीर में आत्मा है तब तक शरीर सुन्दर व विवेकी है किन्तु आत्मा के निकलने के बाद शरीर भस्म होने योग्य है।

ओम्प्रकाश त्यागी जी केवल एक व्यक्ति नहीं थे उनके मृदु व्यवहार प्रेरणादायी व्यक्तित्व एवं गागर में सागर वाले विचार सभी के लिए अनुकरणीय है। उनमें तनिक भी अहंकार नहीं था सबके सहारे के रूप में जानता था उन्हें, वेद उनका आधार था—उसी वेदवाणी के अनुरूप वह "प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्यम" की भांति सबको प्यार करते थे।

उनसे दूरभाष पर वार्ता हुई (शरीरान्त से केवल १२ घंटे पूर्व) मैं स्वभाव से चंचल हूं मैं फोन पर ही मचल गया, रूठ गया तब उन्होंने सहज रूप में कहा-बच्चे तो रूठते हैं, खैर कोई बात नहीं कल मैं तुम्हारे लिए टाफी लेकर आऊंगा।

उनकी यादें आजीवन विस्मृत न हो सकेंगी—परमेश्वर, उन्हें मोक्ष पदगामी करे व हम सब आर्यों में इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें व हम उनके स्वप्नों को साकार कर सारे संसार में वेद की ज्योति को आलोकित कर संसार में चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की नींव डाल सकें।

—डा० आनन्द सुमन, वैदिक प्रवक्ता
तपोवन आश्रम देहरादून

श्री ला. रामगोपाल शालवाले द्वारा आंखों देखा हाल

कश्मीर घाटी में क्या हो रहा है ?

राजधानी दिल्ली में पिछले दिनों कश्मीरी पंडितो का एक दो दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ । इस सम्मेलन में कश्मीर घाटी में बसने वाले अल्पसंख्यकों में कश्मीर न छोड़ने और उनमे नए सिरे से यहीं बसे रहने की भावनाओं को प्रोत्साहित करने के प्रयत्न किए गये । लेकिन इन सभी प्रयत्नों के बावजूद आज हालांकि जम्मू-कश्मीर मे शाह सरकार को हटाकर गवर्नरी राज लागू है, फिर भी कश्मीर के अल्पसंख्यक और खास तौर पर कश्मीरी पंडित कश्मीर से निकल कर देश के विभिन्न भागों में बस जाने की योजनाएं बना रहे हैं । इस समय जम्मू-कश्मीर का कश्मीरी पंडित बावजूद श्री अरुण नेहरू के आश्वासनों और केन्द्र सरकार के प्रयत्नों के सहमा हुआ, हतोत्साहित और अपनी जान तथा माल समेत बहू-बेटियों की इज्जत के प्रति बेहद संवदेनशील है । शायद कश्मीरी पंडितों के दिलों मे दो माह पहले के दंगों ने इस कदर गहरा असर छोड़ा है कि अब उन्हें कश्मीर छोड़ने के अलावा और कोई भी रास्ता बाकी बचा नजर नहीं आ रहा है ।

कुछ अर्सा पहले पंडितो की कश्मीरी समिति ने एक पाच सदस्यीय कमेटी बनाई थी । इस कमेटी का काम यह पता लगाना था कि फरवरी माह मे कश्मीर घाटी के अन्दर जो दगे हुए थे उनके पीछे कौन-कौन शक्तियां काम कर रही थीं ? और इन दगों का असल कारण क्या था ? उपरोक्त समिति के अध्यक्ष और कमेटी के एक सदस्य श्री जे एल. भट्ट ने अपने एक बयान मे यह रहस्योद्घाटन किया है कि "जो कुछ फरवरी माह मे कश्मीर में हुआ उसे 'दंगों' की संज्ञा नही दी जा सकती । यह एक साजिश थी जिसकी मदद से कश्मीर के अल्पसख्यकों के वजूद को खत्म करने की कोशिश की गई थी ।" फरवरी माह में कश्मीर में हुए दगो का असल कारण कश्मीरी पंडितों की इस कमेटी के मुताबिक एक सोची-समझी और गहरी चाल थी जिसकी मदद से कश्मीर घाटी में से हिन्दू अल्पसंख्यको को धमका कर वहा से बाहर भगा देने की एक साजिश रची गई थी ।

कश्मीर घाटी से यहा आए कश्मीरी पंडितों की दुःखभरी कहानियां रोंगटे खड़े कर देने वाली हैं । इन कहानियों के मुताबिक दंगाइयों ने बड़ी ही 'प्लान' के साथ घाटी के चुने हुए और संवेदनशील इलाकों पर हमले किए । शहरों से दूर गांवों मे उस समय हमले किए गये जब मर्द लोग खेतो पर गए हुए थे । जो भी मर्द नजर आया या तो उसे मार दिया गया या अधमरा कर दिया गया । यहां तक कि गायों को भी नहीं छोड़ा गया, क्योंकि हिन्दुओ के लिए वह पूजनीय है । हिन्दुओं की औरतों के साथ जबरदस्ती की गई और इन दंगों में पूरी कश्मीर घाटी मे शायद ही कोई ऐसा मन्दिर बचा हो जिसे दंगाइयों ने नुक्सान न पहुँचाया हो ।

शायद महा शिवरात्री का शुभ दिवस घाटी के अल्पसख्यको के लिए एक अशुभ संदेश लेकर आया था । इस दिन दोपहर के ठीक १२ बजे एक सुनियोजित योजना के अधीन काजी कुण्ड से लेकर बारामूला तक दंगाइयों ने एक ही समय और एक ही तरीके के साथ हिन्दू अल्पसंख्यकों के घरों पर हमले शुरू कर दिए । हजारों ही बेघर हो गए, सैकड़ों औरतों की इज्जत से खेला गया और अनगिनत लोग अभी तक गुम हैं ।

पिछले माह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने दंगाग्रस्त कश्मीर घाटी का दौरा किया । वहां से वापिस आकर श्री शालवाले ने अपनी रिपोर्ट प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भेजी । कश्मीर घाटी की अपनी यात्रा के पश्चात जब मेरी लाला जी से मुलाकात हुई तो वह काफी दुःखी थे । उनके मुताबिक जो कुछ उन्होंने वहां देखा है, वह सचमुच दुःखद है । लाला रामगोपाल जी के मुताबिक इस समय कश्मीर के अन्दर ऐसा माहौल बन चुका है जिसमें अब वहां अल्पसंख्यको का रहना असम्भव है । इनके पास अब कश्मीर छोडकर देश के किसी और हिस्से में बस जाने के अलावा और कोई भी रास्ता नही बचा है ।

लालाजी के मुताबिक उनके कश्मीर दौरे के दौरान उन्होंने यह देखा था कि काफी बड़ी संख्या में बंगलादेश, बिहार, तिब्बत और पाकिस्तान से मुसलमान सम्प्रदाय के लोग कश्मीर घाटी मे आ बसे हैं । ये लोग अब यहां अपना कारोबार चला रहे हैं और यही इन लोगों ने अपने स्थायी निवास स्थान स्थापित कर लिए हैं । इससे बढकर इन बाहरी लोगों ने कश्मीर में रहने के लिए स्थायी नागरिकता के प्रमाण पत्र भी हासिल कर लिये हैं । जबकि दूसरी तरफ हजारों की संख्या मे सदियो से घाटी में रहने वाले भारत के अन्य सम्प्रदायों के नागरिकों जिनमें सिख और ईसाई भी शामिल हैं तथा खासतौर पर हिन्दू पंडितों को वहां रहने के लिए स्थायी नागरिकता के प्रमाण पत्र नहीं दिये गये हैं ।

कुछ हिन्दुओं, सिखों और ईसाइयो को बेशक थोडी संख्या मे कश्मीर की स्थायी नागरिकता के प्रमाण पत्र मिले हैं लेकिन अब इनके खिलाफ जानबूझ कर झूठी शिकायतें प्रदेश के अधिकारियो के समक्ष दर्ज की जा रही हैं । स्थायी नागरिकता पाने वाले इन थोड़े से अल्पसख्यकों को धमकाया और डराया जा रहा है । देश-विरोधी तत्व इन लोगो को बेनामी चिट्ठियां डालकर धमका रहे हैं कि वे कश्मीर से चले जाएं । कई मुस्लिम संगठन जिनमे जमायते इस्लामिया, जमाते तुलबा और अल्लाहवाला यहा की मुस्लिम जनता की भावनाओ को अल्पसख्यको के खिलाफ भडका रहे हैं । भारत के खिलाफ एक लम्बे अर्से से कश्मीर घाटी में भावना बनाई जा चुकी है । खुले तौर पर अब तो घाटी मे पाकिस्तान समर्थक और भारत विरोधी नारे लगाये जाते हैं । मुस्लिम संगठनो, पाकिस्तान समर्थको और प्रदेश के स्थानीय सरकारी अफसरो और विभिन्न राजनीतिक दलो की मदद से कश्मीर को दूसरा पंजाब बनाए जाने की साजिश आजकल चल रही है । इस साजिश के अधीन यहां के अल्पसंख्यकों को निकाल कर घाटी को पूर्ण रूप से एक ही सम्प्रदाय के लोगो के रहने योग्य बनाया जा रहा है । यह एक अन्तर्राष्ट्रीय साजिश है । जिससे हम फसते चले जा रहे हैं । पहले पंजाब मे यह साजिश चलाई गई अब कश्मीर की बारी है ।

कश्मीर की घाटी में जो कुछ भी रहा है, वह विदेशी शक्तियों और खास तौर पर पाकिस्तान की एक सोची समझी और गहरी साजिश का नतीजा है । १९४७ से लेकर आज तक पाकिस्तान ने हमेशा कश्मीर घाटी के मुसलमानों को भारत के खिलाफ भड़काने के प्रयास किए । स्वर्गीय शेख अब्दुल्ला से लेकर श्री गुलाम मुहम्मद शाह तक और डा० फारुख तथा कांग्रेस पार्टी की सरकारें भी प्रदेश में पनप रहे इस देश विरोधी पौधे को जड़ो से काटने में नाकाम सिद्ध हुई है । भारत विरोधी संगठन और तत्व आज से १९

साल पहले भी कश्मीर में थे और आज भी हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि इस समय पेट्रोडालर की मदद से वह पहले से भी ज्यादा मजबूत हो चुके हैं।

यह बात तो सर्वविदित है कि भारी मात्रा में पाकिस्तान से लोग धड़ाधड़ पिछले ३९ वर्षों से कश्मीर में घुसपैठ कर रहे हैं। इसके अलावा यहां की सरकारों ने भारत के विभिन्न प्रान्तो से मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों को कश्मीर में आकर बस जाने के लिए प्रोत्साहित किया। देश के अन्य सम्प्रदायों का कोई व्यक्ति अगर जबरदस्ती यहां घुस भी आया तो उसे कारोबार और घर स्थापित करने में इस कदर मुश्किलें पेश आई कि वह अपने आप ही यहां से भाग खड़ा हुआ, जबकि मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों को यहां हर तरह की सहूलियतें प्रदान की गई। यानि एक भारतीय नागरिक की बजाए एक पाकिस्तानी के लिए कश्मीर मे रहना, कारोबार करना और बस जाना कहीं आसान है।

जो कुछ पाकिस्तान पंजाब में कर रहा है, वही कुछ कश्मीर में भी हो रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि पंजाब में गोली की मदद से अल्पसंख्यकों मे आतक फैलाया जा रहा है। वहा काश्मीर में अल्पसख्यकों को डरा-धमकाकर बाहर निकाला जा रहा है ताकि बैलट की मदद से यहां जीत प्राप्त की जा सके। सार यह है कि पजाब और कश्मीर दोनों ही जगह अल्पसंख्यकों को भगाने की साजिश जोर-शोर से चल रही है। पंजाब और कश्मीर दोनों ही सुरक्षा की दृष्टि से भारत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पाकिस्तान की सीमा भी इन्हीं प्रदेशों से ज्यादा लगती है। लेकिन दुख की बात है कि हमारी केन्द्र सरकार इस नाजुक मामले पर कोई भी ठोस कदम उठाने में अभी तक नाकामयाब सिद्ध हुई है।

२० फरवरी को घाटी मे जो दगे हुए हैं, वह तो अभी शुरूआत है। यह भी कहा जा रहा है कि जम्मू-कश्मीर के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री गुलाममुहम्मद शाह की मूक सहमति से ही यह दगे हुए हैं। शायद इसीलिए केन्द्र सरकार ने इन दंगों के पश्चात शाह सरकार को हटाकर यहां राज्यपाल राज लागू कर दिया है। इस समय जम्मू-कश्मीर की बागडोर एक सुलझे हुए प्रशासक श्री जगमोहन के हाथों मे है। राज्यपाल राज लागू होने के फौरन बाद श्री जगमोहन ने खुद घाटी के दंगाग्रस्त इलाको का दौरा किया था। श्री जगमोहन अपने दौरे के बाद इस बात से सहमत हो गये कि कश्मीर घाटी में हुए इन दंगों के पीछे भारत विरोधी तत्वों और शक्तियो का हाथ था, और शाह सरकार तथा स्थानीय प्रशासन इन दंगो को रोकने की क्षमता रखते हुए भी चुपचाप बैठा रहा। श्री जगमोहन अब इस बात से भी सहमत हो चुके होंगे कि पाकिस्तान की यह एक सोची समझी और गहरी चाल थी जिसके मुताबिक अल्पसंख्यको का वजूद खत्म करके कश्मीर घाटी को पाकिस्तान के लिए भारत विरोधी योजनाए बनाने के लिए पूर्ण रूप से तैयार किया जा रहा है। श्री जगमोहन यह भी जानते हैं कि २० फरवरी के बाद हजारों अल्पसंख्यक घाटी को सदा-सदा के लिए छोड़ देने की तैयारी कर चुके हैं। जब जम्मू-कश्मीर में केन्द्र सरकार ने राज्यपाल राज लागू किया था, तो ऐसा लगा था कि यहां का माहौल बदलेगा। कुछ हद तक ऐसा ही हुआ है लेकिन अब जम्मू-काश्मीर के अल्पसंख्यकों का विश्वास राज्यपाल शासन से भी धीरे-धीरे उठता चला जा रहा है।

कश्मीर के अल्पसंख्यको का यह कहना है कि अभी तक प्रशासन ने दंगों के मुजरिमों को ठीक ढंग से धरपकड़ शुरू नहीं की है। अभी भी हिन्दुओं की जान-माल पर खतरा पहले जैसा ही बना है। भारत विरोधी और पाक समर्थक तत्व आज भी घाटी में दनदनाते घूम रहे हैं। गवर्नरी राज के दौरान ही एक और कट्टरपंथी संगठन जमायते-इस्लामी की स्थापना कश्मीर घाटी में हुई है। कश्मीर के अल्पसख्यक यह सोचने पर मजबूर हो गये हैं कि अगर गवर्नरी राज में यह हालत है तो फिर जब कल को यहां सरकार बनेगी, चाहे वह डा० फारूक की बने या कांग्रेस (इ) की, तो उनका भविष्य क्या होगा ?

भारत सरकार को यह भी पता चला है कि फरवरी माह के दंगों के पश्चात भारत विरोधी तत्वों ने प्रोत्साहित होकर धड़ाधड़ घुसपैठिये और पेट्रोडालरों के अम्बार यहां लगाने शुरू कर दिये हैं। गवर्नरी राज के बावजूद ऊपर से देखने में काशमीर घाटी की आग ठण्डी हो गई लगती है लेकिन अन्दर ही अन्दर यह सुलग रही है। इस आग को दुबारा भड़काने वाले शरारती तत्व गुप्त रूप से सामान इकट्ठा करने में लगे हैं। कुछ नहीं पता, कब यह आग दुबारा भड़क पड़े। लेकिन अब अगर यह आग दुबारा घाटी में भड़की तो फिर यहां के अल्पसख्यकों का वजूद सदा-सदा के लिए मिटा दिया जाएगा और भारत सरकार हाथ मलती देखती ही रह जाएगी। सचमुच कश्मीर का भविष्य मुझे बेहद खतरनाक नजर आ रहा है। अगर जल्दी ही श्री राजीव गांधी ने कुछ न किया तो फिर कश्मीरघाटी मे एक ऐसी आग भड़केगी कि फिर उस पर काबू पाना असम्भव हो जाएगा।

—अश्विनी

गम्भीर है ईसाई मिशनरियों का मामला

—लेखक वसन्त कुमार तिवारी—

मार्च के प्रथम सप्ताह में अम्बिकापुर में दो छात्र सुभाष त्रिपाठी और पंकज सिन्हा की शिनाख्त पर निष्कलंक आश्रय से १२ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर रिमांड पर छोड़ दिया गया।

इन व्यक्तियों पर इन छात्रों को पीटने का आरोप था। छात्रों का कहना है कि उनकी पिटाई करने वाले इन १२ व्यक्तियों के अलावा ३०-४० लोग और भी हैं, परन्तु उनकी शिनाख्त के लिए उन्हें मिशन द्वारा संचालित छात्रावास नहीं ले जाया गया। निष्कलंक आश्रम ईसाई मिशनरी संचालित है। घटना की पृष्ठभूमि में छात्रों द्वारा ईसाई मिशन की गतिविधियों का विरोध करना बताया जाता है।

दिसम्बर माह में विश्व हिन्दू परिषद् के संगठन मन्त्री रामाराव नायडू ने एक पत्रकार वार्ता में कहा था कि केन्द्र शासन के आदेश के बावजूद सरगुजा तथा रायगढ़ जिले में सन् ४५ से बसे १० ईसाई पादरियों को बाहर नहीं निकाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन सबको उनकी अवांछनीय गतिविधियों के कारण देश निकाला दे दिया गया है। बताया गया कि ३ सितम्बर ८५ को इन पादरियों को देश बाहर जाने का आदेश दे दिया गया था, जबकि इनका वीसा दिसम्बर ८५ में समाप्त हो रहा था। इस आदेश के तत्काल बाद मध्य प्रदेश क्रिश्चियन एसोसिएशन की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा आयंगर सरगुजा जिले के कुछ प्रभावशाली लोगों के साथ एक प्रतिनिधि मण्डल के रूप में मुख्यमन्त्री मोतीलाल वोरा से मिली। इस प्रतिनिधि मण्डल में एक राज्य सभा सदस्य की ईसाई पत्नी भी शामिल थी। वोरा ने ६ पादरियों को फिलहाल देश में रहने की अनुमति प्रदान कर दी, जिसकी क्रिश्चियन एसोसिएशन ने सराहना की। पेटर दम्पति, एल० डी० रेडेट, जे० सोमर्स तथा जॉन वेनेट को अनुमति प्रदान की गई थी।

वीसा नामंजूर करना अथवा देश से बाहर जाने का आदेश देना मुख्यमन्त्री के कार्य क्षेत्र में नहीं आता, अतः उस आदेश पर स्थगन देना भी सम्भवतः उनका अधिकार नहीं होगा। समझा जाता है कि मुख्य मन्त्री ने इन पादरियों के निष्कासन पर तत्काल कार्रवाई नहीं करने की ओर जिला प्रशासन को इशारा कर दिया होगा। पादरियों के निष्कासन पर एक ओर ईसाई धर्मावलम्बी नाराज हैं तो दूसरी ओर गैर ईसाई आदेश स्थगित कर दिए जाने से नाराज हैं। सामरी क्षत्र के विधायक महेश्वर पैंकरा का कहना है कि देश निकाले का आदेश स्थगित नहीं किया जाना चाहिए था। उन्हें कम से कम सरगुजा जिले से बाहर तो कर ही देना चाहिए। ईसाइयों की एक गुप्त बैठक में इस आदेश पर रोष व्यक्त करते हुए कहा गया कि यदि पादरियों को देश निकाला दिया जाता है तो ईसाई खूनी क्रांति कर देंगे। इस आशय का एक समाचार एक स्थानीय साप्ताहिक में प्रकाशित हुआ। स्थानीय अधिकारी तथा केन्द्र का खुफिया विभाग इस समचार से सक्रिय हुए। बताया जाता है कि अधिकारियों द्वारा इस आशय की एक रिपोर्ट राज्य तथा शासन को भेजी जा चुकी है। स्थानीय अधिकारी यह मानते हैं कि खूनी क्रान्ति जैसा तो कुछ नहीं होगा, परन्तु सतर्कता की जरूरत अवश्य है।

पादरियों के निष्कास का आदेश स्थगित हो जाने से ईसाइयों का खोया हुआ मानसिक बल वापस आ गया और इसका प्रदर्शन पिछले दिनों उस समय देखने को मिला, जब १८ जनवरी को अम्बिकापुर में पास्कल टोपनो नामक पादरी को बिशप की पदवी तथा गद्दी प्रदान करने का एक भव्य समारोह हुआ। इस समारोह में मध्यप्रदेश व बिहार के लगभग १० हजार ईसाई शामिल हुए। उपस्थित १२ बिशपों में से ९ मध्य प्रदेश के थे तथा ३ बिहार के। रांची से आए पास्कल टोपनो को रांची चर्च के आर्क बिशप टेलीस्फर ने बिशप की गद्दीनशीनी कराई। समारोह में कई लाख रुपए व्यय होने का अनुमान है। बताया जाता है कि इसके पूर्व मिशन का इतना बड़ा समारोह इस क्षेत्र में कभी नहीं हुआ।

छत्तीस गढ़ के सरगुजा तथा रायगढ़ जिले में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियां यद्यपि १५० से २०० वर्ष पुरानी है, परन्तु पिछले ५० वर्षों में उनमें व्यापक प्रसार हो गया है; फलस्वरूप बड़े पैमाने पर आदिवासी ईसाई बनते जा रहे हैं। सरगुजा जिले में सन् ५१ में ईसाइयों की संख्या ५४५ थी, वह सन् ६१ में बढ़कर ८७८५ हो गई और निरन्तर बढ़ रही है। सन् ७१ में १४,९४३ तथा सन् ८१ में ३८,२१० हो जाने का अनुमान है। रायगढ़ जिले में सन् ५१ में यह संख्या १४,३४५ थी, वह सन् ६१ में ९०,३१६ हो गई। सन् ७१ में १,१२,२०१ तथा सन् ८१ में १,४४,७४६ होने का अनुमान लगाया जाता है। जनगणना विभाग उजागर रूप में ये आंकड़े नहीं बताता, परन्तु शासकीय कार्यों के लिए उसके पास ये आंकड़े उपलब्ध हैं। मध्यप्रदेश में ईसाई जनसंख्या में पिछली गणना के अनुसार लगभग १३.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रायगढ़ जिले मे जशपुर तहसील एक ऐसी तहसील है, जहां की ८५ प्रतिशत आबादी ईसाई है। एक अन्य आकलन के अनुसार देश में सन् ४१ में मात्र ५३ लाख ईसाई थे, जो सन् ६१ में ८४ लाख हो गए और अब कम से कम ३ करोड़ हो गए हैं। ईसाई धर्मावलम्बियों की संख्या देश की बढ़ती जनसंख्या के साथ जोड़ी जा सकती है। पर इस बात की लगातार शिकायतें मिलती रही है कि लालच, दबाव व गरीबी तथा अशिक्षा का लाभ उठाकर ईसाई मिशनरी धर्म परिवर्तन करा रहे हैं। उनकी गतिविधियां आदिवासी क्षेत्रों में व्यापक हो रही है।

इन शिकायतों के बावजद इस धर्मान्तरण पर शासकीय तौर पर लगाने की कोई कारगर कार्यवाई प्रदेश मे नहीं की जा सकी है। पुराने मध्यप्रदेश में मुख्यमन्त्री स्वर्गीय पंडित रविशंकर शुक्ल ने जस्टिस तारा शंकर नियोगी की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया था। धर्म परिवर्तन कराने की जांच की रिपोर्ट इस आयोग ने सन् ५८-५६ में शासन को दी। परन्तु तब तक तथा मध्यप्रदेश बन गया था और पंडित रविशंकर शुक्ल दिवंगत हो गए थे, अतएव यह रिपोर्ट भी फाइलों में दब गई। रिपोर्ट में सुझाए गए कदमों पर अमल नही किया जा सका।

कहा जाता है कि मध्य प्रदेश शासन के स्थायी आदेश रायगढ़ तथा सरगुजा जिले कलेक्टरों को हैं कि वे इस तरह के धर्म परिवर्तन के मामलों की शासन को सूचना दे। रायगढ़ के एक पूर्व कलेक्टर के अनुसार इन जिलों का हर कलेक्टर आने वाले कलेक्टर को "हैंडिंग ओवर नोट" में इस बात का उल्लेख करता है। उक्त कलेक्टर का कहना है कि वे खुद और दूसरे कलेक्टर भी इस बात मे समहमत थे कि लालच व दबाव से धर्म परिवर्तन कराया जाता है। परन्तु सप्रमाण मामला नहीं बनने के कारण अदालत तक ले जावे योग्य नहीं हो पाता। लाभ पाया व्यक्ति गवाही देने को तैयार नहीं होता।

इस समस्या का शासकीय हल अब तक नहीं निकाला जा सका। कई बार यह सोचा गया कि सामाजिक तौर पर इस पर रोक लगाई जाए। जशपुर में स्थापित कल्याण आश्रम ट्रस्ट की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी परन्तु वह ज्यादा कारगर भूमिका नहीं निभा पाया। वह जनसंघ तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रभाव में आ गया। यहां के लोग आपातकाल में भी गिरफ्तार कर लिए गए थे।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री स्वर्गीय कार्तिक उरांव ने इस समस्या के

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य संस्कृति एवं सभ्यता के गौरवमय इतिहास को बिगाड़ने का षडयन्त्र

मंगेराम आर्य एम. ए., शकरपुर, दिल्ली-४०

(गतांक से आगे)

आर्यों के घरों में दैनिक पांच प्रकार के यज्ञ किए जाते थे—देवयज्ञ, ऋषि यज्ञ, पितृ यज्ञ, नृयज्ञ, भूतयज्ञ। अमावस्या व पूर्णिमा को विशेष यज्ञ किए जाते थे। सोम यज्ञ, राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, अभी यज्ञों का भी विधान है। यज्ञों में पशुबलि की कुप्रथा की देन "वाममार्गियों" की देन थी, आर्यों की नहीं।

यजुर्वेद के मन्त्र अ० ३-९,१० में "मोक्ष प्राप्ति के लिए, सबके कल्याण के लिए होम करते हैं कहा गया है।" ओम आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा (तैतिरीयोपनिषद) में ब्रह्म की प्राप्ति कर आनन्द में विचरने की प्रार्थना की गई है। यजु० अ० ३०-३ के मन्त्र ओम विश्वानिदेव···में दुष्ट आचरण दूर करने और सुखकारक आचरण प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है।" धर्मार्थ काम मोक्षाणां" में मोक्ष आर्यों का जीवन का अन्तिम लक्ष्य माना गया है। प्रघासिनो हवामहेमस्तश्च रिशादसः। करं भेण सजोषसः (यजु. ३-४४) में "प्रीति से यज्ञ करने वाले विद्वान लोगों को सत्कारपूर्वक नित्यप्रति बुलाते रहें। सामवेद के प्रथम मन्त्र 'अग्न आ याविहीतये··' ईश्वर से हृदय में प्रकाश करने के लिए···और अथर्ववेद के प्रथम मन्त्र' ये त्रिषप्ताः परियन्तिविश्वा···" में पराक्रमी और परोपकारी होने की प्रार्थना की गई है। अथर्ववेद के अन्तिम मन्त्र 'पनाय्य तदश्विना कृतं' तां उपयाता पिबध्यै' में राजा और मन्त्री को सोम अर्थात, तत्व रस पीने की प्रेरणा दी है। गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक सोलह प्रकार के संस्कारों का विशेष महत्व था।

मनु० ४-२३९ में कहा गया है कि परलोक में न माता, न पिता, न पुत्र, न स्त्री, सहाय कर सकते हैं किन्तु एक धर्म ही सहायक होता है। अपने स्वार्थ के लिए कोई काम न करे-महाभारत उ. पर्व। माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पुत्र भृत्यकादिको को भोजन कराके गृहस्थ को भोजन करना चाहिए। यह बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि में अन्न दान का स्पष्ट संकेत है। मा नो वधी. पितर मोत मातरम् (यजु० १६-१५)। माता, पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा देव पूजा कहलाती है। आर्यों का धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन अत्यन्त महान नैतिक मूल्यों सत्य, परोपकार, मोक्ष से ओत-प्रोत था। कालान्तर मे यज्ञ कर्मकाण्डों में जटिलताओं के कारण धार्मिक जीवन में गिरावट आनी आरम्भ हो गई थी।

सामाजिक जीवन—वैदिक आर्यों के सामाजिक जीवन के स्वरूप को शरीर के स्वरूप के समान प्रतिपादित किया गया है : ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत बाहू राजन्य कृत। उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रोआयत। ऋ० १०-९०-१२ ब्राह्मण का कार्य पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान लेना व दान देना। क्षत्री का कार्य राष्ट्र रक्षा व शासन करना, वैश्य का कार्य कृषि व व्यापार करना, शूद्रों का कार्य तीनो वर्णो की सेवा करना था। वर्ण व्यवस्था शुद्ध रूप से जन्म के आधार पर न होकर केवल कर्म के आधार पर होती थी। मनुष्य ब्रह्मचर्य आश्रम में (२५ वर्ष तक) विद्या उपार्जन, गृहस्थ आश्रम मे (२५ से ५०) तक रहकर सांसारिक अभ्युदय करे, वानप्रस्थ आश्रम में (५० से ७५) वनों मे रहकर ब्रह्मचारियों को विद्यादान करे और अध्यात्म चिन्तन करे, सन्यास आश्रम में (७५ से १००) तप, त्याग और संयम का आदर्श जीवन बिताते हुए परोपकार में सारा समय लगाए और जीवन के अन्तिम लक्ष 'मोक्ष' को प्राप्ति करें। वैशेषिकदर्शन में कणाद मुनि का धर्म का लक्षण 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः' जिस द्वारा सांसारिक अभ्युदय और मोक्ष की सिद्धि हो, वही धर्म है।

शर्यणावति सोमामिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।
आत्मनि करिष्यन् वीर्यं महद् इन्द्रायन्दो परिस्रव।(ऋ० ५-११३-१)

परमैश्वर्य के लिए, हे चन्द्रमा के तुल्य सबको आनन्द करने हारे पूर्ण विद्वान। तू संन्यास लेके सब पर सत्योपदेश की वृष्टि कर। राजा का कर्त्तव्य था कि वह सबसे वर्ण आश्रम व्यवस्था का पालन कराये।

वैदिक काल में गुण, कर्म स्वभाव में एक समान लड़के और लड़की का विवाह वयस्क अवस्था में होता था। भाई बहिन का विवाह निषिद्ध था। स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। स्त्री जाति का पूर्ण सम्मान था। "अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।" ऐतिरीय ब्राह्मण २-२-२-६ अपत्नीक पुरुष को यज्ञ करने का अधिकार नहीं होता था। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। मनु० ३-५५। जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके देव संज्ञा धरा के आनन्द से क्रीड़ा करते हैं। नियोग और विधवा विवाह प्रचलित थे।

आर्यों का रहन सहन बड़ा उत्तम था। रूई, रेशम, ऊन के बने कपड़े पहनते थे। आभूषणों में "रूकम और मणि" का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में निष्कण् और वेदों में 'निष्ग्रीव' (गले का हार) का उल्लेख है। घरों में रहन-सहन के सभी प्रकार के उपकरण एवं उपयोगी घरेलू सामग्री होती थी। आर्यो का भोजन सात्विक, पौष्टिक था। भोजन में अन्न, कन्द, मूल, फल, दूध, घृत, दाल, तिल, गन्ना आदि (कृषि उत्पादक) थे। आर्य लोग गाय को माता कहते थे, वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर गाय को 'अघन्या' (जिसका वध न किया जा सके) कहा गया है, भला वे फिर इसका मांस कैसे खा सकते थे। पाश्चात्य विद्वानों ने गोघन का अर्थ गोमांस करके अपनी घृणित मनोवृत्ति का भद्दा नमूना पेश किया है। गोघन का अर्थ है गाय के दूध से बने पदार्थ जो अतिथि को दिए जाते थे जैसे खीर। संक्षेप में आर्यों का समाज एक आदर्श समाज था।

साहित्य और कला विज्ञान—वैदिक काल के इतिहास का प्रमुख स्त्रोत वैदिक साहित्य है। वेद प्रधान तथा धर्मग्रन्थ है। वेदों से उस युग की धार्मिक सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दशाओं की जानकारी प्राप्त होती है। राजनीतिक इतिहास तो रामायण, महाभारत, पुराणों व अन्य ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है। वैदिक ग्रन्थो की सूची इस प्रकार से है—चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चार ब्राह्मण-ग्रंथ ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ, दस उपनिषद-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैतिरेय, छान्दोग्य और बृहदारणयक, छ. दर्शन-पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग सांख्य वेदान्त, मनुस्मृति (प्रक्षिप्त श्लोक छोड़कर) बाल्मीकि रामायण, महाभारत, विदुर नीति, पिङ्गलाचार्यकृत छन्दोग्रन्थ, निरूक्त, यास्क मुनिकृत निघण्टु, महाभाष्य, महर्षि पाणिनिकृत अष्टाध्यायी, आयुर्वेद, धनुर्वेद, नारदसंहिता, शिल्प विद्या, हस्तक्रिया, बीजगणित, खगोल विद्या आदि के अन्य ग्रंथ भी हैं। जो भी वेदानुकूल ग्रन्थ हैं वे सभी वैदिक ग्रन्थों में सम्मिलित है।

"शतपथ ब्राह्मण ११-४-२-३ और मनु० १-२-३ में स्पष्ट लिखा है कि परमात्मा ने सृष्टि की आदि मे अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा इन चार महर्षियों के आत्मा मे वेद का प्रकाश किया। जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी। तब तक मिश्र यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं थी। वेद परमेश्वरोक्त है। इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए (सत्यार्थ प्रकाश)। वेदों के निर्माणकाल के सम्बन्ध में कुछ अन्यमत इस प्रकार है—प्रो० मैक्समूलर ३००० ई. पू. लोकमान्य तिलक ४२००ई.पू. अविनाशचन्द्र दास २७०००वर्ष पूर्व, रामशरण शर्मा १५००ई पू.।

वैदिक काल में आर्यो के भवन बड़े सुन्दर, दिव्य होते थे। अथर्ववेद के ९-३-१.७.१५.१६.१९.२१.२२.२४ मन्त्रों में भवनों के निर्माण की विधि और प्रमाण दिये गए हैं। इस प्रकार की दिव्य कमनीय, बनाई हुई शाला सुखदायक रोगरहित होती है। मनुष्यों को ऐसे घर बनाने का स्पष्ट संकेत है। महाभारत में काफी प्रमाण मिलते हैं।

(क्रमशः)

श्री त्यागी जी बनाम पुरुषार्थी युवा शक्ति के मार्ग दर्शक थे

मेरा तो भाई मुझ से छिन गया

हा ! हन्त, अन्ततः लक्षाधिक युवकों के मार्ग दर्शक और उनके अन्यान्य बन्धु को भी तू इस अप्रत्याशित ढंग से उठा ले जायेगा। यह स्वप्न में भी आशा नहीं थी मैं उन्हें सदा बड़ा भ्राता मानता था वे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सक्रिय संस्थापक थे। सभी आर्य वीरों के प्रति मातृत्व भाव से आपूरित रहकर उनका हित चिन्तन किया करते थे। अभिमान उन्हें छूकर भी नहीं गया था। "यदन्तरं तद् बाह्यं, तद् बाह्यं यदन्तरम्" के अनुरूप वे जैसे हृदय में थे वैसे बाहर और जैसे बाहर वैसे हृदय में, सत्य यह है कि उनकी करनी कथनी में कभी अन्तर नहीं दिखाई दिया।

मुझे आर्य वीर दल में लाने वाले वे ही थे। जोधपुर सरदारपुरा आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर सन् अड़तालीस में वे मुझ से बोले "मैं मान सकता हूं हंस भैय्या तुम शीघ्र राजस्थान की मिनिस्टरी में आ जाओगे तुम आर्थिक दृष्टि से भी वैभवशाली बन जाओगे परन्तु "महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का मात्र एक राजमार्ग मुझे दिखाई देता है राष्ट्र में आस्तिक, राष्ट्रभक्त सत्य सनातन वैदिक धर्म से अप्लावित युवाशक्ति का निर्माण करना" यदि इससे आप सहमत हो सकें तो हम दोनों मिल ग्यारह होकर व्रती जीवन में नियुक्त होकर जिधर निकलेंगे उधर ही अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु को चरितार्थ होता देख सकेंगे।

मैंने जीवन उन्हें सौंप दिया। जीवनका बड़ा भाग उन्हीं के निर्देशन में उपप्रधान संचालक के रूप आस्था सहित सक्रिय रहा, बंगाल में महात्मा गांधी की पद यात्रा, हैदराबाद पुलिस कार्यावाही, करांची "सत्यार्थ प्रकाश-प्रतिबन्ध" विरोधी सत्याग्रह, आसाम बाढ़ादि अनेक जीवन के मूल्यवान सेवा अवसरों पर मैं उनके साथ जुड़ा रहा। वे राजनीति में गये, वहां भी उन्होंने धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक संसद् में प्रस्तुत कर अपनी निर्भीकता और दूरदर्शी की छाप सारे भारत पर डाली।

उनके ही कहने पर मान्य लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा के निर्देश को मैंने स्वीकारा तब से आज तक प्रधान-संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल के रूप में सेवारत हूं।

अभी गत् मंगलवार को ही मैंने अपने परम श्रद्धेय स्नेही भाई से, आग्रहपूर्वक अनुरोध कियाथा कि आप आर्य वीर दल के प्रारम्भिक दिनों के इतिहास को आप अपनी ओज लेखनी से लिख डालें – कहीं यह कार्यकाल के गर्त में यूं ही न समा जाय और हम न रहें। उन्होंने कहा ठीक है और अगले दिन मुझे बोले चिन्ता न करो मैंने आर्य वीर दल का इतिहास लिखना प्रारम्भ कर दिया है अब तुम्हें एक कार्य करना होगा उसे साथ-साथ पढ़कर अपनी स्मृति के अनुसार संशोधन कराते रहो। यह कार्य मैं जल्दी ही पूरा करना चाहता हूं। ....और आज वे महा प्रयाण के पथ के पथिक हो गये.............मैं एकाकी पन अनुभव करता हुआ रोमांचित हो रहा हूं। क्या वे सचमुच अब कार्यालय नहीं आवेंगे यह सोचता हुआ अविरल अश्रु बिन्दु" वह निकलते हैं। ईश्वर उन्हें सद्गति और हमें परिवार स्वजनों के साथ सांत्वना प्रदान करें।

—बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

ईसाई मिशनरी

(पृष्ठ • का शेष)

स्थायी हल के लिए एक योजना बनाई थी, जिसके अन्तर्गत वे बिहार, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा की सीमा पर तीनों प्रदेश के क्षेत्रों में एक आदिवासी विद्यालय की स्थापना करा रहे थे। इसमें प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालयीन शिक्षा तथा रोजगार पूरक शिक्षा का प्रबन्ध कराया जा रहा था। इसके लिए तीनों राज्यों से जमीन ले ली गई थी तथा आर्थिक सहायता भी प्राप्त की जा रही थी। योजना के पूर्ण स्वरूप लेने के पूर्व ही उनका अचानक देहान्त हो गया और योजना भी ठप्प हो गई। उनका कहनाथा कि यदि सही शिक्षा तथा रोजगार उपलब्ध कराया जाए तो कोई कारण नहीं कि आदिवासी, ईसाई धर्म स्वीकार करने की ओर आकर्षित हो।

अम्बिकापुर के नए पदारूढ़ बिशप पास्कल टोपनों का कहना है कि लालच और प्रलोभन से धर्म परिवर्तन करना चौदहवीं-पन्द्रहवीं सदी में सम्भव हो सकता था, पर इस सदी में ऐसा नहीं है। उनका कहना है कि आदिवासियों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया है पर अपनी संस्कृति नहीं बदली। टोपनो या अन्य कोई भी धर्मगुरु यह स्वीकार नहीं करेगा कि लालच से वह अपने अनुयायी बना रहा है। यह निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जा चुका है कि आदिवासियों के बीच उनकी आवश्यकताएं पूरी कर धर्म परिवर्तन के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। इन क्षेत्रों में ईसाई प्रचारक अब स्कूल अस्पताल तक सीमित नहीं रह गए हैं, वे अब किसानों को कर्ज अदायगी तथा सामाजिक कार्यों के लिये भी धन देते हैं। शिक्षा के लिए सहायता देकर आदिवासियों को बाहर भी भेजते हैं। सरगुजा, रायगढ़ क्षेत्र में बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहां सरकारी सहायता पहुंच ही नहीं पाती। मिशन से सहायता पाने वाला आदिवासी कम से कम शासकीय और आर्थिक शोषण का शिकार नहीं। भर पेट खाना, कपड़ा तथा सुख-सुविधा जो उपलब्ध कराए तथा शोषण से बचाए, वही धर्म सबसे अच्छा है, यदि यह मानसिक आदिवासियों की बन रही है तो किसे दोष दिया जा सकता है? परिस्थितियों का लाभ उठाकर ईसाई मिशनरी इन क्षेत्रों में अपना विस्तार कर रहे हैं। पर इन परिस्थितियों में शासकीय या गैर शासकीय कोई भी एजेन्सी इन जरूरतमन्द आदिवासियों को राहत नहीं दे पा रही। एक ईसाई पादरी ने कहा कि हमारे देश के बाहर जाने से काम नहीं रुकेगा। हमारी दूसरी पीढ़ी यह काम जारी रखने में सक्षम है।

जानकार सूत्रों का कहना है कि पादरियों के निष्कासन का मामला पोप जानपाल की भारत यात्रा को मद्दे नजर रखते हुए मदर टेरेसा की सिफारिश पर ही रोका गया था। इस आशय के संकेत मुख्यमन्त्री को मिले थे। स्मरणीय है कि पोप जान की रांची यात्रा पर सरगुजा तथा रायगढ़ जिले के आदिवासी ईसाई हजारों की संख्या में रांची गए थे। बताया जाता है कि सैकड़ों तो पदयात्रा कर वहां पहुंचे थे।

उपादान की दार्शनिक पृष्ठभूमि पर शंकर और मूलशंकर

— आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री

(गतांक से आगे)

द्वितीय निर्वचन से 'आप्लृ व्याप्तौ' धातु से 'आप्नोति, व्याप्नोति पूर्वतः व्याप्त इव सर्वपदार्थान् इति'।

इससे सर्वव्यापक परमात्मा का ग्रहण होता है तथा तृतीय निर्वचन 'अव्याप्तो व्याप्तो भूत इति' अर्थात् जो व्याप्त न होकर शरीर में व्याप्त सा होता है वह जीवात्मा है।

आत्मा शब्द को केवल जीवात्मा अर्थ में प्रयुक्त मानने पर तत्तद् भाष्यकारों को वे दर्शनकार नास्तिक जान पड़ते हैं, पर पूर्वापर प्रसंगानुसार उन-२ स्थलों पर जीवात्मा और परमात्मा दोनों अर्थ ग्रहण करने चाहिये। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में इसी को स्पष्ट किया है कि "वैशेषिक और न्याय भी आत्मा शब्द से अनीश्वरवादी नहीं हैं" क्योंकि 'अतीत सर्वत्र व्याप्नोतीति आत्मा' जो सर्वत्र व्यापक और सर्वज्ञत्वादि धर्मयुक्त सब जीवों का आत्मा है, उसको मीमांसा, वैशेषिक और न्याय ईश्वर मानते हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने आप्त पुरुष महान् ईश्वर भक्त महर्षि गोतम, कणाद, और भगवान् कपिल को अदूरदर्शी टीकाकारों के अज्ञानकृत् नास्तिक के आरोपित लांछन से बचा लिया।

महाकवि कालिदास के शब्दों में 'आपातत' प्रत्यवभासमान विरोध अन्ततः ब्रह्मैक्यवाद में समस्त दार्शनिक विचारधाराओं का पर्यवसान ऐसे ही दीखता है जैसे जाह्नवी आदि अनेक नदियों का समुद्र में—

बहुधाऽप्यागमैर्भिन्ना पन्थानः सिद्धि हेतवः।
त्वय्येव निपतन्त्योघा जाह्नवीयाः इवार्णवे॥

मानव जीवन का चरमोद्देश्य मोक्ष है जो कि सभी दर्शनों का प्रतिपाद्य है तब विसंवाद का कोई अवकाश नहीं।

अब सृष्टि के उपादान प्रतिपादन में अद्वैतवाद अथवा त्रैतवाद इनमें से कौन-सा सिद्धान्त अकाटस्थ एवम् सब दार्शनिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है, इस पर विचार किया जा रहा है।

आचार्य शंकर जगत् की उत्पत्ति में प्रकृति को कारण 'उपादान' नहीं मानते, प्रत्युत ब्रह्म को ही अभिन्न निमित्तोपादान कारण मानते हैं यथाः—

"चेतनमेकम द्वितीयं ब्रह्म, क्षीरादिवद् देवादिवच्चानपेक्ष्यबाह्य साधनं स्वयं परिणम मानं जगतः कारणमिति स्थितम्।
शा॰ भा॰ २।१।२६

अर्थात् एक अद्वितीय चेतन ब्रह्म दूध आदि और देवादि से समान बाह्य साधनों की अपेक्षा किये बिना ही स्वयं परिणत होता हुआ जगत् का कारण है, यह सिद्ध हुआ।

यहाँ पर सूत्र की छाया में आचार्य शंकर प्रश्नोद्भावन करते हैं कि क्या ब्रह्म सम्पूर्ण रूप से जगत् रूप में परिणत होता है अथवा अंशतः? स्वयं ही समाधान करते हैं, सम्पूर्णतया अथवा अंशतः भी ब्रह्म जगत् रूप में परिणत नहीं होता प्रत्युत 'नैष दोषः', अविद्या कल्पित रूप भेदाभ्युदगमात्। नहि अविद्याकल्पितेन रूप भेदेन सावयवं वस्तु सम्पद्यते। नहि तिमिरोपहतनयनेनानेक इव चन्द्रमा दृश्यमानोऽनेक एक एव भवति। अविद्याकल्पितेन नामरूपलक्षणेन रूप भेदेन व्याकृता-व्याकृतात्मकेन तत्वान्यत्वाभ्यामनिर्वचनीयेन ब्रह्म परिणामादि सर्वव्यवहारास्पदं प्रतिपद्यते। पारमार्थिकेन च रूपेण व्यवहारातीतमपरिणतमवतिष्ठते।"

अर्थात् यह दोष नहीं है, क्योंकि अविद्याकल्पित रूपभेद स्वीकार किया गया है, अविद्या कल्पित रूप भेद से वस्तु सावयव नहीं हो जाती जैसे तिमिर दोष से दूषित नेत्र द्वारा चन्द्रमा अनेक सा दृश्यमान होने पर भी अनेक नहीं हो जाता, वैसे अविद्या से कल्पित नामरूपात्मक व्यक्त और अव्यक्त रूप, सत् और असत् से विलक्षण अनिर्वचनीय रूप भेद से ब्रह्म परिणामादि सब व्यवहारों का आश्रय होता है, परन्तु पारमार्थिक रूप से सब व्यवहारों से प्रतीत और परिणाम रहित है।

अब प्रश्न यहां यह है कि अविद्या क्या है?

सत्यार्थ प्रकाश में योग दर्शन का सूत्र अविद्या के लक्षण के लिये स्वामी जी ने उद्धृत किया है 'अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मख्यातिरविद्या' अर्थात् अनित्य, अपवित्र, दुःख और अनात्म में नित्य, पवित्र, सुख तथा आत्मबुद्धि रखना ही अविद्या है। रज्जु में सर्प, सिकता में जल, शुक्ति में रजत आदि समझना, तारों को टिमटिमाता देखना, यह सब भ्रम, भ्रान्ति, मिथ्या-ज्ञान, विपर्यय अर्थात् अविद्या ही है।

यह अविद्या भावात्मक है या अभावात्मक? हम देखते हैं कि इसका भावात्मक स्वरूप भी है। शंकराचार्य तो "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" की प्रस्तावना में लिखते हैं 'एवमविरुद्धा' प्रत्यगात्मन्यपि 'अनात्माध्यासः। तमेतमेवम् लक्षणमध्यासम् पण्डिता अविद्येति मन्यन्ते, तद्विवेकेन च वस्तुस्वरूपावधारणम् विद्यामाहुः। तत्रैवम् सति यत्र यदध्यासः तत्कृतेन दोषेण गुणेन वाणमात्रेणापि स न संबध्यते, तमेतमविद्याख्यम् आत्मानात्मनोरितरेतराध्यासम् पुरस्कृत्य सर्वे प्रमाण प्रमेय व्यवहारा लौकिकाः वैदिकाश्च प्रवृत्ताः सर्वाणि च शास्त्राणि विधि प्रतिषेध मोक्षपराणि' अर्थात् इस प्रकार प्रत्यगात्मा में अनात्मा का अध्यास भी अविरुद्ध है।

उक्त लक्षण वाले इस अध्यास को विद्वान् लोग 'अविद्या' ऐसा मानते हैं और इसके विवेक द्वारा वस्तुस्वरूप के निश्चय को विद्या कहते हैं। ऐसा होने पर अध्यास के अविद्यात्मक होने पर, अथवा वस्तुरूप का निश्चय होने पर जिसमें जिसका अध्यास होता है, तत्कृत दोष अथवा गुण के साथ अणुमात्र भी वह सम्बन्धित नहीं होता। पूर्वोक्त इस अविद्या संज्ञक आत्मा आत्मा और अनात्मा के परस्पर अध्यास को आगे रखकर सब लौकिक और वैदिक प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय, व्यवहार प्रवृत्त हुये हैं और विधि निषेध बोधक मोक्षपरक शास्त्र प्रवृत्त हैं।

तो क्या यह अविद्या आचार्य शंकर के शब्दों में अनिर्वचनीय कह कर छोड़ दी जाये और इस पर विचार न किया जाये? भला जो अविद्या नित्य शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वभाव सदृश सर्वोपरिस्थ सत्ता को ग्रस्त कर अज्ञानी बना देने की शक्ति रखती है उसे अनिर्वचनीय कह कर कैसे छोड़ा जा सकता है? फलतः प्रश्न उपस्थित होगा कि यह अविद्या द्रव्य है या गुण? यदि द्रव्य है तो अद्वैत सिद्धान्त का विघात होता है और यदि गुण है तो ब्रह्मातिरिक्त अन्य किसी सत्ता के अभाव में यह अविद्या ब्रह्म का ही गुण ठहरेगा।

इसीलिये महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में सिद्धान्ती और वेदान्ती का प्रश्नोत्तर लिखा है।

सिद्धान्ती—ब्रह्म में जगत् का प्रत्यय किसे हुआ?
वेदान्ती—जीव को।
सिद्धा॰—जीव कहां से आया?
वेदान्ती—अज्ञान से।
सिद्धा॰—अज्ञान कहां से उत्पन्न हुआ! और कहां रहता है?
वेदान्ती—अज्ञान अनादि में और ब्रह्म में रहता है।
सिद्धा॰—ब्रह्म में ब्रह्म का अज्ञान है या किसी और का? वह अज्ञान किसे हुआ?
वेदान्ती—चिदाभास को।
सिद्धा॰—चिदाभास का रूप क्या है?
वेदान्ती—ब्रह्म, ब्रह्म का अज्ञान अर्थात् अपने रूप को स्वयं भूल जाता है।

(क्रमशः)

श्री ओम्प्रकाश त्यागी के सम्बन्ध में आर्य समाज दीवान हाल में शोक सभा सम्पन्न

दिनांक १३-५-८९ को सायं पांच बजे शोकसभा प्रारम्भ हुई जिसमें देश-विदेश से आर्य बन्धुओं ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री शिवकुमार शास्त्री पूर्व सांसद ने की सभा में आर्य नेताओं ने श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी के सम्बन्धों एवं संस्मरणों की चर्चा की चर्चा करतेहुए कई नेताओं की आंखों से अश्रुधारा बह निकली सभा में दिल्ली के प्रमुख सामाजिक नेताओं ने भाग लिया जिनके नाम निम्न प्रकार से हैं। श्री एस०एन० भारद्वाज लन्दन से स्वामी सत्य प्रकाश, प्रो० शेरसिंह जी लाला रामगोपाल शालवाले पं० राजगुरु शर्मा, लाला इन्द्रनारायण जी ओम्प्रकाश गोयल प्रेमचन्द गुप्ता, राधाकृष्ण बजाज, डा० मण्डन मिश्र, प०बाल-दिवाकर हंस मन मोहन तिवारी, रामचन्दराव बन्देमातरम् वी० किशनलाल आदि अनेक नेताओं ने त्यागीजी के बारे में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की सभा के अन्त में त्यागी के परिवार की ओर श्री रघुराजसिंह जी त्यागी ने सार्व० सभा एवं सभी आगन्तुक महानुभावों के प्रति आभार प्रकट किया और त्यागी जी के आदर्शों पर चलने का वचन दिया। —सम्वाददाता

स्वामी नारायण मुनि के निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले की श्रद्धाञ्जलि

विगत ३ मई १९८९ को गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के श्रद्धानन्द चिकित्सालय में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पूर्व आचार्य, संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् व त्याग मूर्ति श्री स्वामी नारायण मुनि के देहावसान पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने गहरा शोक प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए शोक सभा में भाव विह्वल होकर कहा कि—श्री स्वामी नारायण मुनि जो जिनका पूर्व नाम श्री लक्ष्मीनारायण जी था वह महान् तपस्वी, त्यागी, संस्कृत वांङमय के प्रकाण्ड विद्वान् थे। ऐसे महान् संन्यासी और गुरुपद गामी के निधन से वैदिक धर्मी समाज में जो स्थान रिक्त हुआ है, वह कभी पूरा न हो सकेगा। उनके सानिध्य में अनेक विद्वानों ने देश सेवा के क्षेत्र में जो अमूल्य योगदाद दिया है, वह भुलाया नहीं जा सकता है। आचार्य नरदेव जी व पद्मसिंह जैसे विद्वानों की वह देन थे। वह त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति थे। उनके शिष्य देश के अनेक भागों में उच्च पदों पर आसीन हैं।

श्री शालवाले ने भाव विह्वल होकर कहा कि गत मास बरनावा जाते समय उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज के अन्तिम दर्शन किये थे और उनके चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। उस समय भी स्वामी जी महाराज अनेक भक्तों के साथ घिरे हुए थे। श्री स्वामी जी महाराज अनेक भक्तों के साथ घिरे हुए थे। श्री स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा दर्शाए गए मार्ग पर चलकर स्वामी जी ने विद्यादान स्मारक की जो नींव रखी है, आशा है उनके भक्त और विद्यार्थी इससे मजबूती प्रदान करेंगे।

शोकसभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति की हार्दिक प्रार्थना की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-उपमन्त्री

आर्यत्व का सजग प्रहरी सो गया!

भाई ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी ने अपने जीवन काल में जो सेवायें भारत राष्ट्र व धार्मिक जगत की हैं वे एक सच्चे राष्ट्र-भक्त व ऋषि भक्त के जीवन की खुली किताब है।

बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी का एक होनहार छात्र जो शरीर बुद्धि-व चरित्र का धनी था युवावस्था में ही आर्य समाज की युवाशक्ति आर्य वीर दल का प्रधान सेनापति बनकर आर्यसमाज के इतिहास से साथ जुड़ गया।

आपने पिछले ५० वर्षों में आर्य समाज द्वारा छेड़े गये प्रत्येक आन्दोलन में बढ़कर भाग लिया प्राणों का मोह भी नहीं किया। परिवार की भी कभी चिन्ता नहीं की राजनैतिक क्षितिज पर १५ वर्षों तक भारतीय संसद सदस्य के रूप में रहकर भारत राष्ट्र की सेवा की व जब तक भारतीय संसद का इतिहास पढ़ने वाले व्यक्ति रहेंगे ओम्प्रकाश त्यागी द्वारा भारतीय संसद में प्रस्तुत धर्म स्वतन्त्र विधेयक को घटना इस महान देश भक्त व हिन्दू जाति के महान रक्षक को याद करोगे।

भारत में आपात काल की इस काली छाया को कौन भूल सकता है, जिसके डर से अनेक लोगों ने पार्टी ही छोड़ दी किन्तु उस समय इस बहादुर सेनानी ने भारतीय जनता पार्टी के महामन्त्री पद पर रहकर उस स्थिति का विरोध किया किन्तु अपने राजनैतिक जीवन पर आंच नहीं आने दो कालान्तर में जब आपने भारतीय जनतापार्टी में भी जातीय वाद मुस्लिम परस्ती व राष्ट्र हित जैसी समस्याओं पर भी तुषाराघात होते अनुभव किया तो तत्काल राजनीति से संन्यास लेकर केवल ध्येनता आर्य समाज व आर्य जगत की सेवा में लग गये।

विगत २० वर्षों से आपके साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ आप कठोर परिश्रमी व महर्षि के मिशन हेतु अपना सर्वस्व स्वाहा करने की इच्छा रखने वालों में थे। कुछ वर्षों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ जरूर थे लेकिन अत्यन्त ही उत्साही थे देहावसान के पूर्ण दिवस तक सार्वदेशिक सभा में समय पर उपस्थित रहे आपके रिक्त स्थान की पूर्ति होनी सर्वथा असम्भव है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करे व आपके भरे पूरे परिवार को इस महान वज्राघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

मैं अपनी ओर से व समस्त मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भाई ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी को श्रद्धांजलि प्रदान करता हू। —राजगुरु शर्मा, प्रधान
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
महू (म० प्र०)

महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह खुर्जा में

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला बुलन्दशहर के तत्त्वावधान मे महाराणा प्रताप जयन्ती समारोह दिनाक १८-५-८९ रविवार को १२ बजे से बड़ी धूम-धाम से खुर्जा मे मनाया जायगा। जिसमे जिले भर के हिन्दू, मुस्लिम राजपूतो के हजारों प्रतिनिधि भाग लेगे। यह दृश्य अपने आप मे अनुपम होगा।

इस समारोह मे भारत के उच्चकोटि के अनेक नेतागण पधार रहे हैं।

मन्त्री- धर्मेन्द्र शास्त्री

आर्य वर चाहिए

सुन्दर, सुशील तथा वैदिक परिवार की २२ वर्ष की कन्या के लिये। शिक्षा बी० ए० तथा बी० एड० गृह कार्यों में पूर्ण तथा कुशल। कद ५ फुट ३ इंच दहेज लोलुप व्यक्ति सम्पर्क न करें।

द्वारा आचार्य रवीन्द्र रवि आत्रेय व्याकरणाचार्य
पुरोहित, आर्य समाज, पहाड़ी धीरज,
मन्दिर वाली गली, दिल्ली

आर्यसमाज विजयाष्टक

दुर्दम्य दोहन दुःख मेटा देश का जिसने सभी ।
दुःख दीने का अवलोक सुख अपना नही समझा कभी ॥
रक्षा सदा करता रहा जो जन्म भू के लाज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥१॥

नि.स्वार्थ सेवा का जिसे निज मर्म से ही ध्यान है ।
कर्त्तव्य पालन का जिसे निज देश पर अभिमान है ॥
धुन है सदा जिसको अकेले अन्य हितके काज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥२॥

होवे जगत् मे दासता पर वह सदा स्वाधीन है ।
उसके विवेक समुद्र का यह विश्व सारा मीन है ॥
प्रतिभा मयी मणी रूप जो है मातृ भू के ताज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥३॥

है सार जिसको ही मिला विज्ञान पारावार का ।
मर्मज्ञ जो है द्वैत मे अद्वैतता के प्यार का ॥
महिमा सिवा जिसके न कोई जानता प्रभुराज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥४॥

बलिदान होना जानता जो धर्म के सग्राम मे ।
है नाम की इच्छा न जिसको अन्यहित के काम मे ॥
जिसको हटा सकती न पीछे भीति भी यमराज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥५॥

अन्यान्य मत जिसकी पकड़ अगुली खड़े होने लगे ।
वे बाल्य धी से आज हैं यद्यपि बड़े होने लगे ॥
पर सामने जिसके जगत की पन्थ माया आज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥६॥

गौरव समेत अगम्य जिसका माननीय गुरुत्व है ।
गंधर्व गण भी गा रहा जिसका प्रकृष्ट प्रभुत्व है ॥
शोभा नही अन्यत्र उसके सत्यता मय साज की ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥७॥

जिसने दलित ह...
अज्ञान माया विश्व की ते...
झुक झुक करूं मैं वन्दना उस वीर ते... ।
जय-जय कहो जय शील जीवित आर्य ! आर्य समाज की ॥८॥

—कविराज रत्नाकर शास्त्री
अध्यक्ष श्री विमला रसायनशाला (इटावा)

उप व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर नरवाना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सभी प्रान्तीय सन्चालकों तथा आर्यवीरों को सूचित किया जाता है कि, उपव्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर हरियाणा जीन्द जिले मे आर्यसमाज नरवाना में २ से १५ जूनतक लगाया जा रहा है इससे पूर्व सूचना मे दिनांक गलत छप गया था। इस शिविर का संचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य करेंगे शिविर में प्रधान सचालक पं० बालदिवाकर हंस जी सहित अनेकों उच्चकोटि के विद्वान बौद्धिक प्रशिक्षण देंगे शिविर मे केवल वे ही आर्यवीर ग्राह्य होंगे जिन्होने पहले कहीं ५ शिविरो मे प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। आवश्यकतानुसार शिविरार्थी को सामान साथ लाना होगा। शिविर शुल्क १५ रुपए होगा। हरियाणा से दूसरे प्रान्तो के आर्यवीरों पर यह शुल्क शिथिल होगा। अन्य प्रान्तों से आने वालों को दिल्ली से नरवाना के लिए रेलगाड़ी तथा बसें मिलती हैं जो रोहतक जीन्द होकर नरवाना पहुंचती है आर्य स्कूल रेलवे स्टेशन के पास ही है। अत. इच्छुक महानुभावों को चाहिए कि २५ मई तक अपने नाम सयोजक व्यायाम शिक्षण प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज नरवाना जिला जीन्द के पते पर भेजकर आवश्यक जानकारी ले लेनी चाहिए।

—रामकुमार आर्य मण्डलपति

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क २१] ज्येष्ठ कृ० २ सं० २०४३ रविवार २५ मई १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक सभा के शिष्टमण्डल की

पंजाब यात्रा

होशियारपुर, जालन्धर, अमृतसर, बटाला पट्टी, तरन-तारन लुधियाना तथा सीमावर्ती संवेदनशील देहातों का दौरा

यदि पंजाब के तीन जिलों को सेना के हवाले न किया गया तो देश की सुरक्षा एवं अखण्डता को भारी खतरे की सम्भावना

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, उपप्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, उत्तर प्रदश आय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी तथा मध्यप्रदेश सभा के प्रधान श्री राजगुरु शर्मा इस दौरे में शामिल थे।

(शेष समाचार पेज दो पर)

सार्वदेशिक सभा के शिष्ट-मण्डल की पंजाब यात्रा

जालन्धर, १९ मई (भनोट)। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सद्भावना प्रतिनिधि मंडल ने, जो १५ मई से पंजाब की एक सप्ताह की यात्रा पर है, आज यहां एक पत्रकार सम्मेलन में मांग की कि गुरदासपुर, अमृतसर व फिरोजपुर के तीन सीमांत जिलों को गड़बड़ग्रस्त क्षेत्र घोषित करके इन्हें सेना के हवाले कर दिया जाए क्योंकि अब पंजाब की समस्या केवल कानून व्यवस्था की समस्या नहीं रही। इससे देश के टूट जाने का खतरा पैदा हो गया है तथा इस समस्या को प्रतिरक्षा की दृष्टि से देखना जरूरी है। पंजाब में केन्द्र का तात्कालिक हस्तक्षेप जरूरी है क्योंकि यहां हमारी सीमा असुरक्षित हो गई है। खतरे के समय लोगों के सहयोग की दृष्टि से गृह मोर्चा कमजोर हो रहा है।

प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले कर रहे हैं और इसमें सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम, प्रोफेसर शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री राजगुरु शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश, श्री मोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री बी० कृष्ण लाल और श्री लक्ष्मीचन्द्र आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली तथा संसद सदस्य श्री कमल चौधरी शामिल हैं।

प्रतिनिधि मंडल लुधियाना, होशियारपुर, बटाला, तरनतारन, पट्टी आदि के गांवों तथा जालन्धर का दौरा कर चुका है और इस दौरान शहरों व गांवों में काफी लोगों से मिला है।

प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि राज्य सरकार का हालात सुधारने के लिए प्रभावी कदम उठाने का कोई इरादा नहीं। उसके सदस्य आपस में बटे हुए हैं और अपनी गद्दियां सुरक्षित रखने में लगे हैं। कानून व्यवस्था मशीनरी को निष्पक्ष रूप से अपना कर्त्तव्य निभाने की अनुमति नहीं तथा लोगों को विश्वास नहीं रहा कि स्थानीय पुलिस उनकी रक्षा कर सकती है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार अपने को पृथक सरकार बताती है जिसकी एक धर्मनिरपेक्ष देश में कोई जगह नहीं तथा यह अपने आपको बचाने के लिए खतरनाक डगर पर चल रही है।

प्रतिनिधिमंडल ने चेतावनी दी है कि यदि पंजाब से सामूहिक निकास रोकने के लिए तत्काल कदम न उठाये गये तो उसकी व्यापक प्रतिक्रिया हो सकती है। सिखों में यह विचार फैलाया गया है कि यदि मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बन सकता है तो सिखों के लिए खालिस्तान भी बन सकता है। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने कहा कि श्री बरनाला ने दरबार साहब जाकर जो पश्चाताप स्वीकार किया है उसका अर्थ यह है कि सरकार सबसे ऊपर नहीं बल्कि ग्रंथी सबसे ऊपर हैं। साम्राज्यवादी देश भारत की तृतीय शक्ति बनने की कोशिशों को अच्छा नहीं समझते अतः उनकी सहायता से पाकिस्तान खालिस्तान बनाने में मदद कर रहा है। इस प्रकार वह बंगला देश बनाए जाने का बदला लेना चाहते है। प्रतिनिधिमंडल ने मत व्यक्त किया कि १५ से २५ वर्ष की आयु के मध्य सिख युवकों की एक खालिस्तान फोर्स बनाने की कोशिश की जा रही है। खालिस्तान के लिए एक पोस्टर युद्ध शुरू है। गावों में दीवारों पर तथा गुरुद्वारों में पोस्टर लगाए गए हैं जिनमें हिन्दुओ से कहा गया है कि वे चले जाएं अन्यथा उन्हें खत्म कर दिया जाएगा। उनकी लड़कियां व स्त्रियां उठा ले जाने की धमकियां दी गई है तथा नाम लेकर कहा गया हैं कि अमुक स्त्री अमुक की पत्नी बना दी जाएगी। बटाला से ७ किलो मीटर दूर स्थित गांव खोजेवाल के लोगों ने बताया कि स्त्रियां उठाने के लिए तिथियां निश्चित की गई हैं।

प्रतिनिधि मंडल ने बताया कि कुछ प्राइवेट ट्रांसपोर्ट आप्रेटरो ने पाकिस्तान से रुपया व हथियार लाने के लिये वेतन भोगी तस्कर रखे हुए हैं और ऐसी इन ट्रांसपोर्ट कम्पनियों के कुछ मन्त्री भी मालिक हैं। पुलिस अधिकारी अपराधियो को जानते हैं परन्तु जब वे इन पर हाथ डालने की कोशिश करते हैं तो उन पर किसी मन्त्री या किसी अन्य बड़े आदमी की ओर से दबाव डाला जाता है। उग्रवादी शहरों मे भी आसानी से छिप जाते हैं। खालिस्तान की स्थापना के लक्ष्य से नौजवानों को अमृत छकाया जा रहा है।

प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि हमारी सीमाएं असुरक्षित हो चुकी है तथा केन्द्र सरकार को तुरन्त हरकत में आना चाहिए। प्रतिनिधिमंडल प्रधानमन्त्री से भेंट करके उन्हें अपने अनुभव बताएगा।

श्री त्यागी जी का स्वर्गवास

समाचार पत्रों द्वारा यह ज्ञात कर अत्यन्त हार्दिक दुःख हुआ कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानमन्त्री श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी जी का शरीरान्त हो गया। श्री पुरुषार्थी जी ने समाज तथा देश की जो सेवायें की हैं वे अनुकरणीय एवं स्वर्णाक्षरों में अंकित होने योग्य हैं।

आर्य जगत् का यह घोर दुर्भाग्य है जो उसके एक से एक अमूल्य रत्न छिनते चले जा रहे हैं। श्री पुरुषार्थी जी का ऐसे समय में यह वियोग और भी अधिक दुःखदायी है जब कि दयानन्द महाविद्यालय आर्यसमाज दीवानहाल आदि की शताब्दियां मनायी जा रहीं हैं और सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री लाला रामगोपाल वानप्रस्थ जी का विशद अभिनन्दन समारोह हो रहा है।

परम पिता प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत महान् आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो और सभी दुःखित आर्य बन्धुओं को धैर्य धारण करने की शक्ति मिले जिससे कोई हताश न हो और इस अनभ्रवज्रपात को साहस से सहन कर सके। —राजर्षि रणञ्जय सिंह (अमेठी)

श्री ओमप्रकाश त्यागी मेरे मित्र थे

माननीय श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के आकस्मिक स्वर्गवास का टी० वी० पर समाचार सुनकर हार्दिक वेदना हुई। उनके निधन से आर्य समाज की एक अपूरणीय क्षति हुई है। व्यक्तिगत रूप से मैं एक अत्यन्त वेदना से व्यथित हूं अपने अभिन्न मित्र व भाई के अन्तिम संस्कार मे हार्दिक इच्छा होते हुए भी परिस्थिति वश मजबूर हो शामिल न होकर सका यह वेदना जीवन भर मुझे सताती रहेगी।

वास्तव में उनका सारा जीवन त्याग-तपस्या में व्यतीत हुआ। जहां उन्होंने अपना जीवन सार्थक वहां अपना नाम भी सार्थक किया। जाते जाते एक अन्तर्राष्ट्रीय सस्था की स्थापना कर अपनी सेवाओ का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। दक्षिण अफ्रीका के गत आर्य सम्मेलन में आर्यसमाज को गौरान्वित किया। हाल की वे दोनों घटनाएं उनके जीवन की कीर्ति को चिरस्थायी बनायेंगी। आर्यवीर दल की स्थापना तो एक प्रकार से उनका जीवन मूल था ही फिर भी दयानन्द सेवाश्रमों की स्थापना करके सामाजिक उपेक्षित एव दलित वर्गों की सेवा उन्हें महापुरुषो के समकक्ष ला खड़ा कर देती है। लोभ लालच द्वारा गरीब व अनपढ़ देश के हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन मे वह अत्यन्त दुःखी थे जिसके विषय मे जहा जनता का ध्यान आकर्षित करते रहे वहां ससद मे अपने जनता पार्टी के शासन काल मे धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने का एक साहसपूर्ण बिल पेश किया और उस बिल का समर्थन न मिलना उन्होने देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

पेट्रोडालर द्वारा देश के अछूतो का इस्लामीकरण के अड्डे को फोड़ने वालों में वे प्रमुख थे। हिन्दुओ के आलस्य व प्रमाद के कारण उन्हें बड़ी निराशा होती थी और कहते थे कि "जब तक हिन्दु पिटता नहीं तब तक उसे जोश नहीं आता है। संसद मे आर्य समाज के कार्य को सदैव प्रमुखता देते थे आर्य समाज व देश के इतिहास मे उनकी कीर्ति सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। "कीर्तियस्य स जीवति" के अनुसार वे अब भी जीवित ही हैं उनके परोपकार के कार्य सदैव प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हुए हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे। उनके चरणों में अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए परमपिता परमात्मा से उन्हें सद्गति प्रदान करने एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं। —भगवती प्रसाद गुप्त

सम्पादकीय

आर्य समाज के नेता श्री रामगोपाल जी शालवाले अपने डेपुटेशन के साथ पंजाब में

आज पंजाब जल रहा है, इस पंजाब पर सदा से ही संकटों के बादल छाये रहे हैं जिन्हें बांटने के लिये, हिन्दू और गुरुओं के शिष्यों (सिक्खों) ने जान की बाजी लगाकर उसकी रक्षा की थी। आज वही सिक्ख-भाई अपने हिन्दू भाई के जान लेवा बने हैं परिणामतः पंजाब का हिन्दू सिक्खों से अपने को असुरिक्षत महसूस कर रहा है। सरकार भी सुरक्षा की कोई जिम्मेदारी लेना नहीं चाहती है, अतः हिन्दू पंजाब से सुरक्षा के लिये हरियाणा, उ० प्र० हिमाचल की ओर घरबार छोड़कर भाग रहा है ऐसा क्यों ?

इस वातावरण का जायजा लेने, आर्य समाज का एक शिष्ट-मण्डल कश्मीर के बाद अब पंजाब का दौरा कर रहा है।

वास्तविकता क्या है ? दो भाई आपस में क्यों लड़ रहे हैं, उनमें से एक में अपनी असुरक्षा की भावना क्यों बनी है। हिन्दुओं में घबराहट क्यों हैं, अपनी जान माल को दाव पर लगाकर जैसे पाकिस्तान से भागे थे आज अपने घर में भी बेगाने हैं।

पंजाब के कुछ हिन्दू परिवारों का हरियाणा में आ कर रहना एक अल्पसंख्सक समुदाय की असुरक्षा की भावना ही नहीं बताता। यह इससे कहीं ज्यादा गम्भीर हालत का लक्षण है। लेकिन इससे घबराकर खतरे की घंटी बजाने की जरूरत नहीं है। पंजाब में हिन्दू आज से नहीं कोई छः सात साल से असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने १९७७ के चुनाव में अकालियों और जनता पार्टी के उम्मीदवारों को खुलकर समर्थन दिया था। तब लोक-सभा में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली थी। और विधान सभा में अकालियों और जनता पार्टी को दो तिहाई बहुमत मिला था। हिन्दुओं के इतने वोट नहीं मिलते तो अकालियों को ५८ सीटें नहीं मिल सकती थी। लेकिन तीन साल के अकाली-जनता राज और सन्त भिंडरांवाले के उदय ने हिन्दुओं को असुरक्षित कर दिया। इसका नतीजा निकला १९८० में जब इन्दिरा गांधी को तेरह में से बारह लोक सभा सीटें और कांग्रेस को विधान सभा में बहुमत मिला। हिन्दुओं की असुरक्षा की भावना ने ही कांग्रेस को पंजाब में जिताया। वे मानते थे कि बढ़ते अकाली उग्रवाद और अराजकता की ताकतों से इन्दिरा गांधी जैसी सख्त और दमदार नेत्री ही निपट सकती है। अकालियों का साथ देने वाली जनता पार्टी (जो दरअसल पुराना जनसंघ और अब की भारतीय जनता पार्टी) को हिन्दुओं ने रद्द कर दिया। लेकिन बाद के पांच साल उनके लिए और भी ज्यादा असुरक्षा के रहे। आपरेशन ब्लू स्टार और इन्दिरा गांधी की हत्या ने दोनों समुदायों के बीच तनाव, संवादहीनता और अविश्वास बढ़ाया। इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दंगे के शिकार जब पंजाब पहुंचे तो पंजाबी हिन्दुओं ने उनकी देखभाल और सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। एक मानसिक स्तर पर दोनों समान थे। पंजाब के हिन्दुओं की सहानुभूति बाहर से भाग कर आए सिखों के साथ स्वाभाविक थी। पंजाब समझौते का पंजाबी हिन्दुओं ने राहत के साथ स्वागत किया और सितम्बर के चुनाव में अकालियों को वोट भी दिए। वे मानते थे कि अकालियों का सत्ता में आना पंजाब में शान्ति और साम्प्रदायिक समरसता वापिस ला सकता है। लेकिन उसके बाद की आतंकवादी हिंसा से उतना नहीं जितना अकाली दल की फूट ने सरकार में उनका विश्वास डोलाया है।

पंजाब हिन्दू अल्पसंख्यक किसी भी राज्य के दूसरे अल्पसंख्यकों से अलग हैं। बहुसंख्यक सिक्ख समाज पंजाब के हिन्दू समाज से ही निकला है। उनका खून एक है, वंश एक है। वे एक दूसरे के दूध के दूध और पानी के पानी हैं। सारे सिख गुरु हिन्दू परिवारों से आए। और ज्यादातर सिख भी हिन्दू परिवारों से ही बने। परिवार के बड़े बेटे को सिख बनाने का चलन कुछ ऐसा ही था जैसे एक बेटे को सेना में भेजना। हिन्दू सिख ज्यादा से ज्यादा एक ही समुदाय के दो धार्मिक सम्प्रदाय थे जिनमें आपसी दुश्मनी नहीं भाई चारा था। इन दोनों के बीच अलगाव, अलग पहचान का आग्रह और अब दरार पिछले पचास-साठ साल की बातें हैं। घड़ी की सुई वापस नहीं घुमाई जा सकती। सिखों ने अपनी पहचान और अपना अपना धर्म अलग मान लिया है और वे हिन्दू धर्म के अंग होने से इंकार करते हैं तो इसका उन्हें हक है। आखिर इस बहुधर्मी, धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र में इसकी छूट ही नहीं मान्यता भी है। लेकिन सिखों को अपने को अलग मानना पंजाबी हिन्दू को एक गहरे धर्म संकट में ही नहीं, अस्तित्व के संकट भी डालता है। वे पंजाब में सिखों को अपना बड़ा भाई मान कर उन्हें पहल सौंप चुके हैं। अब वही भाई कहे कि हम अलग हैं तुम अलग तो हिन्दुओं को समझ नहीं पड़ता कि क्या करें ?

वे सिर्फ सिखों की प्रतिक्रिया में जो ठीक लगता है, करते हैं। इससे उनकी असुरक्षा और बढ़ती है। जो समाज अपनी पहले दूसरे हाथों में सौंप देता है उसकी दयनीयता का कोई पारावार नहीं होता। पंजाबी हिन्दू ऐसी हालत में हैं। वे कोई ऐसे अल्पसंख्यक भी नहीं हैं। अड़तालीस प्रतिशत आबादी नाम की अल्पसंख्यक होती है। दिक्कत मानसिकता की है। 'खालिस्तान' के लिए धर्मयुद्ध की घोषणा अकाली दल की फूट और आतंकवादी हिंसा उनसे वही करवा रही है जो वे करना नहीं चाहते हैं कि आतंकवादी यही चाहते हैं हिन्दू पंजाब छोड़कर जाएं, बाकी जगह उसकी प्रतिक्रिया हो और सिख भाग कर पंजाब आएं तो खालिस्तान अपने आप बन जाएगा। कोई हिन्दू यह नहीं चाहता। वह यू० पी० के हिन्दू की तुलना में पंजाब के सिख का ज्यादा सगा है। इसलिए भजनलाल और बरनाला को सरकारी स्तर पर और सिख हिन्दू समुदायों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को नागरिक स्तर पर इसकी गारण्टी करना चाहिए कि न हिन्दू पंजाब छोड़कर जाएं न सिख दूसरे राज्यों से पंजाब की ओर रुख करें। आतंकवादी साजिश को नाकाम करने का यही तरीका है। और इससे पंजाब में आपसी विश्वास और सुरक्षा बढ़ सकती है। तनाव है शायद दरार भी है पर वह निश्चित ही भरी जा सकती है।

चरित्र निष्ठा ही मानवता का मूलाधार है

—ला० रामगोपाल शालवाले

उपर्युक्त विचार स्व० श्री पुरुषोत्तम दास जी आर्य (दरवें वाले) के दिवंगत होने पर आयोजित 'श्रद्धांजलि सभा' में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष माननीय ला० रामगोपाल शालवाले ने व्यक्त किए। 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम' इस वेद मन्त्रांश के प्रकाश में आपने कहा कि "श्री लाला पुरुषोत्तम दास जी के जीवन की धन्यता का सबसे बड़ा रहस्य एक इस सचाई में ही निहित है कि उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र महात्मा श्री प्रेमभिक्षु जी (पूर्व नाम श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम) जैसी दिव्य विभूति को भारत राष्ट्र मां आर्य समाज के चरणों में सर्वथा समर्पित कर दिया, जिन्होंने आर्य समाज के मानवतावादी (स्वरूप को अपनी लेखनी, वाणी और शिविर आयोजनों की मंगलमयी साधना द्वारा उजागर करते हुए 'चरित्र निर्माण अभियान' को जन्म दिया है। सच में चरित्र निष्ठा ही मानवता का मूलाधार है।'

इस अवसर पर प्रख्यात वैदिक विद्वान भू०पू० सांसद और सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री पं० शिव कुमार जी ने 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' इस प्रसिद्ध गीता वाक्य को प्रस्तुत करते हुए बताया कि मृत्यु तो सुनिश्चित है। हां, कुछ ऐसे महान व्यक्तित्व भी होते हैं जो मरकर भी यशः शरीर से अमर हो जाते हैं। स्व० पुरुषोत्तमदास जी ऐसे ही कर्मयोगी थे। हम मृत्यु को भूलें नहीं, साथ ही सत्कर्मों से प्रेरणा लें।

श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री (वरिष्ठ उपमन्त्री सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि पूज्य ला० पुरुषोत्तम दास जी की जीवन साधना की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति माननीय श्री प्रेमभिक्षु जी के रूप में हुई है। इसलिए हम कह सकते हैं कि अपने जीवनादर्शों के रूप में वे आज भी हमारे मध्य में है और कि हम निरन्तर उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी (लखनऊ) के अतिरिक्त श्री मक्खनलाल जी अग्रवाल (आगरा), श्री सत्यानन्द जी आर्य (सुपुत्र श्री स्व० लालमन जी आर्य) दिल्ली, श्री रणजीत आर्य (फरीदाबाद), श्री अनूप सिंह जी आर्योपदेशक (गोवर्धन), श्री वेद प्रकाश जी 'प्रकाश' खिरोर (मैनपुरी), श्री गेंदालाल जी आर्य, श्री द्वारका प्रसाद जी आर्य (बाजना) श्री देवीदास जी आर्य, श्री देवेन्द्र जी आर्य वैदिक मिशनरी ऊंचा गांव, श्री अभयदेव जी वानप्रस्थ वै० मि० (प्रधान जिला सभा) श्री प्रहलाद कुमार जी आर्य (प्रधान आ. स. हिन्डौनसिटी), श्री जगदीश प्रसाद जी एडवोकेट (मन्त्री आ. स. हिन्डौन), श्री रामप्रकाश जी आर्य वै० मि० दिल्ली (शकूरबस्ती), श्री आशाराम जी आर्य (श्री विरजानन्द स्मारक, मथुरा) श्री छैलबिहारी जी आर्य (आर्य समाज, छाटा) ने भाव भीनी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत कीं। राम राज्य परिषद् के श्री आचार्य प्रेम वल्लभ जी व्यास, श्री हरचरण लाल जी शर्मा 'पेंटेण्ट' श्री स्वामी प्रेमानन्द जी, श्री स्वामी नित्यानन्द जी, श्री स्वामी मोक्षानन्द जी, श्री पं० भूदेव जी शास्त्री, साहित्याचार्य, डी० ए० वी० के प्रबन्धक श्री मुरारी लाल जी अग्रवाल, के श्री मुरारी लाल जी खन्ना, आर्य समाज कृष्णानगर, मथुरा के श्री विष्णुदत्त जी ठीठा, ट्रस्ट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर जी आर्य (दिल्ली) ने बड़े ही भाव भरित हृदय से श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुए स्व० आर्य जी के गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री श्यामसुन्दर जी आर्य ने वैदिक परिवार निर्माण एवं वैदिक मिशनरी निर्माण योजना का मूल सूत्रधार भी स्व० लाला जी को बताया।

श्रद्धांजलि समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सन्चालक माननीय श्री पं० बालदिवाकर जी 'हंस' तथा मुख्य अतिथि थे—विद्वद्वर जी आचार्य शिवराज जी शास्त्री। आपने बताया कि ऐसा निष्ठावान आर्य परिवार मैंने अन्यत्र नहीं देखा, जहाँ छोटे छोटे सभी बच्चे और सभी महिलाएं ऐसे शुद्ध मन्त्रोच्चारण सहित ऐसी श्रद्धा से यज्ञादि करते हों। दोनों ही विद्वानों ने स्वर्गीय दिव्यात्मा से कर्मण्यता, पुरुषार्थवत्ता और आर्यत्व की प्रेरणा लेने की मार्मिक अपील की। श्री सत्यदेव जी गुप्त (आ. स. सेवासदन बल्लबगढ़) ने अपने आर्य समाज से लाए शोक प्रस्ताव को प्रस्तुत किया। अन्य अनेकों आर्य समाजों और संस्थाओं से समवेदना पत्र प्राप्त हुए।

कार्यकर्ताओं के रचनाकार

श्री त्यागी जी

— डा० आनन्दप्रकाश उपमन्त्री-सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज की शिरोमणि सभा के यशस्वी मन्त्री प्रातः स्मरणीय श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी का निधन, हम सबके लिए एक प्रबल आघात है। उनकी सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आर्य वीरदल के माध्यम से सैकड़ों हजारों की संख्या में आर्य समाज के लिए समर्पित, कर्मठ कार्यकर्त्ता दिए। जिन्होंने जीवन पर्यन्त अज्ञान-अविद्या, अभाव को दूर करने का व्रत धारण किया और जो आर्य समाज की धवल कीर्ति की रक्षा में प्राणपण से लगे हुए हैं। मैंने सदैव उन्हें अपना गुरु और मार्गदर्शक माना। उन्होंने लम्बे काल तक विश्व के अनेक देशों में आर्य समाज का प्रचार कर देशान्तर प्रचार के क्षेत्र में नए इतिहास की रचना की। अभी चार मास पूर्व दक्षिण अफ्रीका में सम्पन्न आर्य महासम्मेलन में दिए गए अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने आर्य जगत् के समक्ष सामयिक प्रचार नीति का स्वरूप उपस्थित किया था। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व और उनके ओजस्वी विचार, पूरे भूमण्डल में आर्यों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे।

अराष्ट्रीय प्रचार निरोध की दृष्टि से किए गए उनके कार्य राष्ट्र रक्षा के लिए जागरूक प्रहरी और संघर्षशील योद्धा होने के परिचायक हैं। ईसाई मिशनरियों के क्रियाकलापों को उजागर करना, धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक लाना, दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना करना तथा अपनी लेखनी द्वारा दर्जनों पुस्तकों का सृजन कर तथ्यों को प्रकट करना, यह सभी कार्य राष्ट्रीय अखंडता की दिशा में किए गए उनके स्तुत्य कार्य माने जायेंगे। वैदिक धर्म और संस्कृति के एक सशक्त प्रवक्ता के रूप में उन्होंने जन मानस पर एक अमिट छाप छोड़ी है। ऐसी महान विभूतियां संसार में बहुत कम ही आया करती हैं जो धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सभी क्षेत्रों में एक साथ प्रभाव डालने की क्षमता रखता हो।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पद पर १३-१४ वर्षों तक रहकर आपने संगठन को नवीन दिशा देने का सर्वत्र प्रयत्न किया। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आर्य नेता के आदर्शों को चिरस्थायी रखने की क्षमता हमें प्रदान करे।

कहते हैं इतिहास अपने-आपको दोहराता है

क्या वह पंजाब में फिर दोहराया जाएगा ? और क्या सिख अपने हाथ से एक बार फिर उसी तरह सत्ता खो देंगे जिस तरह उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह के बाद खो दी थी।

महाराजा रणजीतसिंह का अकाल चलाना जून १८३९ में हुआ था। तब उनका साम्राज्य लाहौर से काबुल तक फैला हुआ था। महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के तुरन्त बाद उनके बेटों में लड़ाई शुरू हो गई। उनकी महारानी और उनके मन्त्रियों के बीच नहीं बनती थी। कई जरनैलों ने विद्रोह कर दिया था। अन्तिम सिख शासक दिलीपसिंह को अंग्रेज इंग्लैंड ले गए यह भी कहा जाता है कि उसने ईसाई धर्म अपना लिया था। वह फिर वापिस नहीं आया और १८५० तक अंग्रेज ने सारे पंजाब पर अधिकार कर लिया था। पंजाब भिन्न-भिन्न रियासतों में बट गया। किसी ने पटियाला को सम्भाल लिया किसी ने नाभा। किसी ने कपूरथला और किसी ने फरीदकोट। महाराजा रणजीतसिंह का शानदार और विशाल साम्राज्य कई भागों में बट गया और उसको अंग्रेज की अधीनता स्वीकार कर ली। नाम को तो ये सब सिख रियासतें थीं लेकिन सबने अंग्रेज को अपना सर्वोच्च शासक स्वीकार कर लिया और ये सब राजे-महाराजे अंग्रेज की चौखट पर माथा रगड़ने लगे। अंग्रेज की वफादारी इस सीमा तक बढ़ गई कि १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में इन्होंने अंग्रेज का साथ दिया।

इतिहास फिर से अपने-आपको दोहराने लगा है। २५ सितम्बर १९८५ को पंजाब विधानसभा का जो चुनाव हुआ उसमें अकाली दल को वह सफलता मिली जो इससे पहले कभी नहीं मिली थी। अकाली महाराजा रणजीतसिंह जैसी साम्राज्य तो स्थापित नहीं कर सके लेकिन पंजाब में पहली बार एक ऐसी सरकार स्थापित हुई जो यदि आराम से चलती तो आगामी १५,२० वर्ष तक निर्बाध सत्ता में रह सकती थी।

लेकिन यह तो ६ मास भी न चल सकी। जो अकाली सरकार २७ सितम्बर १९८५ को बनाई गई थी, वह तो टूट चुकी है। मुख्य-मन्त्री आज भी वही हैं लेकिन मन्त्रिमण्डल वह नहीं है। पहला मन्त्रिमण्डल तो ६ मास में टूट गया। जो अब बना है जिसमें मन्त्रियों की एक फौज खड़ी कर दी गई वह कब तक चलती है, इसके बारे में अभी कुछ कहना कठिन है। मन्त्रिमण्डल जितना बड़ा होता जाता है उतना ही कमजोर होता है। एक मुख्यमन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल में तभी विस्तार करता है जब वह अपने-आपको कमजोर समझता है। १९१४ से लेकर १९४७ तक पंजाब रोहतक से लेकर अटक तक फैला हुआ था। उस समय शिमला, कांगड़ा, कुल्लू, मनाली ये सब क्षेत्र पंजाब में ही शामिल थे और उस समय पंजाब के केवल ६ मन्त्री थे। आज का पंजाब उस पंजाब का पांचवा भाग है। और मन्त्रियों की संख्या ३० है अधिकतर अयोग्य। जो मन्त्री बनाए गए हैं वह इसलिए नहीं बनाए गए कि वह इस योग्य है कि वह मन्त्री बनाए जायें। केवल इसलिये कि आज परिस्थितियों में उनका यही मूल्य है। कई राजनीतिज्ञ अपने-आपको नीलाम पर रखते हैं जिधर से अधिक बोली पड़े उधर हो जाते हैं।

जो मन्त्री आज नजर आ रहे हैं वह नेता तो नहीं हैं। नेताओं की दुम अवश्य हैं इसलिए वह मन्त्री बना दिये गये। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जितनी बेकद्री आज मन्त्रिमण्डल की हो रही है पहले कभी नहीं हुई थी। आज सरकारी दफ्तर का सेवादार बनना कठिन है सरकार का मन्त्री बनना सरल है। सेवादार बनने के लिए तो फिर भी किसी योग्यता या अनुभव की आवश्यकता होती है। मन्त्री बनने के लिये इसकी भी आवश्यकता भी नहीं होती। आज-कल एक क्लर्क की आसामी के लिए बी०ए० और एम०ए० प्रार्थना पत्र देते हैं। मन्त्री बनने के लिए इसकी आवश्यकता भी नहीं होती और यह सब राजनीतिक दलों का हाल है। प्रत्येक मन्त्रिमण्डल को सौदेबाजी का साधन बना रखा है।

परन्तु मैं तो पंजाब की बात कर रहा था और पूछ रहा था कि महाराजा रंजीतसिंह का पंजाब कहां गया, महाराजा रंजीतसिंह ने अपने राज्य को कहां से कहां तक पहुंचा था और आज के अकालियों ने इसे कहां पहुंचा दिया है। इसे देखकर निःसंकोच विचार आता है कि:—

> एक हम हैं कि लिया अपनी ही सूरत को बिगाड़।
> एक वह हैं जिन्हें तस्वीर बना आती है।।

कहां महाराजा रंजीतसिंह और कहां सुरजीतसिंह बरनाला, प्रकाशसिंह बादल, गुरचरणसिंह टोहरा, बलवन्तसिंह और अमरेन्द्र सिंह। यह लोग वह कुछ तो नहीं बना सके जो रंजीतसिंह ने बनाया था परन्तु रंजीतसिंह के बाद जो कुछ हुआ था वह यह जरूर बना रहे हैं। रंजीतसिंह के बाद उनके राज्य के टुकड़े हो गए थे। पंजाब पर अंग्रेज का शासन हो गया था। महाराजा रंजीतसिंह ने तो कई वर्ष पंजाब पर शासन किया था। अकाली ६ मास में ही परस्पर उलझ पड़े हैं। जिस दरबार साहब को पवित्रता की रक्षा के लिए यह सब कुछ किया जा रहा है उसी दरबार साहब का यह लोग स्वयं अपमान कर रहे हैं।

महाराजा रंजीतसिंह में एक और विशेषता थी जिसके सहारे उन्होंने इतना बड़ा राज्य बना लिया था। वह सबको साथ लेकर चलते थे। उन्होंने हिन्दू सिख और मुसलमान में कभी कोई अन्तर नहीं समझा था। आज का अकाली हिन्दुओं से घृणा करता है और उनके चेले चांटे हिन्दुओं पर गोलियां चला रहे हैं। यदि इन्होंने हिन्दुओं को अपने साथ रखा होता तो इनका यह बुरा हाल न होता जो अब हो रहा है। मैं यह नहीं कह रहा है कि हिन्दुओं में कोई कमी नहीं है। हिन्दुओं में भी 'बिकाऊ माल' बहुत है। यदि अकालियों ने हिन्दुओं को भी अपने साथ रखा होता तो हिन्दू भी इसी तरह बट जाते जिस प्रकार अब अकाली बट गये हैं। इस स्थिति में यह एक विशुद्ध साम्प्रदायिक लड़ाई न बनकर हो सकता है कि सिद्धान्त की लड़ाई कुछ अकालियों की स्वार्थतता की लड़ाई है। एक ओर यह कहते हैं कि पुलिस के दरबार साहब में जाने से इसका अपमान होता है। दूसरी ओर जो लोग सरकार पर यह आरोप लगाते हैं वह स्वयं इसका अपमान करते और कराते रहे हैं। गुरचरणसिंह टोहरा ने स्वयं भिंडरांवाला को वहां लाकर बिठाया था और अब दरबार साहब दमदमी टकसाल के हवाले कर दिया है ताकि यदि वह खालिस्तान की घोषणा करना चाहते हैं तो शौक से करें। जब दरबार साहब में खालिस्तान की घोषणा हुई और श्री अकाल तख्त पर खालिस्तान का झण्डा लहराया गया उस समय तो दरबार साहब का अपमान नहीं हुआ अब हो गया है। जब पुलिस ने उन लोगों को वहां से निकाला है जो दरबार साहब का अपमान कर रहे थे। दरबार साहब में गोलियां चलती रही हैं, निर्दोष लोगों का खून होता रहा है और उस समय यह सब अकाली मौन बैठे रहे हैं। अब कहते हैं कि दरबार साहब का अपमान हो रहा है।

सिख पंथ कोई दूसरा रंजीतसिंह उत्पन्न नहीं कर सका। आज के अकाली महाराजा के मुकाबला में बौने हैं। इसलिये वह रंजीतसिंह के समय का पंजाब तो नहीं बना सके। उसकी मृत्यु के बाद का पंजाब उन्होंने बना दिया है। इतिहास अपने-आपको दुहरा रहा है।

—वीरेन्द्र

उपादान की दार्शनिक पृष्ठभूमि पर शंकर और मूलशंकर

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री

(गतांक से आगे)

सिद्धा०—इसके विस्मरण में क्या निमित है ?

वेदान्ती—अविद्या ।

सिद्धा०—अविद्या सर्वव्यापी सर्वज्ञ का गुण है या अल्पज्ञ का ?

वेदा०—अल्पज्ञ का

सिद्धा०—तुम्हारे मत में तो सर्वज्ञ चेतन से अन्य चेतन है ही नहीं । इत्यादि ।

इस प्रकार 'अविद्या' यह कहकर "पर कहीं नहीं जा सकती" । यह कथन तो वदतोव्याघात ही होगा । जैसे घट और मठ आदि आकाश नहीं, पर एक ही आकाश घट मठादिगत है, पर घट मठादि तो आकाश से भिन्न हैं । इसी प्रकार कार्यरूप जगत् और जीव, ब्रह्म से और ब्रह्म, जगत् और जीव से भिन्न है ।

परिणामतः द्रव्य और गुण का समवाय सम्बन्ध होने से विद्या स्वरूप ब्रह्म का गुण अविद्या नहीं हो सकती वह ब्रह्म तो "शास्त्र-योनित्वात्" वेदा० १।१।३ सर्वविद्याओं का मूलस्रोत है । यही तर्क उपाधि के विषय में भी घटित है ।

ब्रह्म का गुण अविद्या या उपाधि मानने पर तथा मध्य में अन्य निमित कारण के अभाव में ब्रह्म के साथ यह भी अनादि अनन्त होकर नित्य हो जायेंगे और ब्रह्म भी अज्ञानी सिद्ध हो जायेगा ।

विद्वद्वर कुमारिल भट्ट ने अद्वैतवाद का खण्डन अपने श्लोक वार्तिक में इस रूप में किया है:—

स्वयं च शुद्ध रूपत्वात् असत्वाच्चाऽन्यवस्तुनः ।
स्वप्नादिवदविद्यायाः प्रवृत्तिः तस्य सिङ् कुता ॥
अन्ये नोपप्लवेऽभीष्टे द्वैतवादः प्रसज्यते,
स्वाभाविकी यविद्यां तु नोच्छेतुं किंचिदर्हति ।

अर्थात् यदि ब्रह्म स्वयं सिद्ध है तथा शुद्धस्वरूप है, एवम् इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है तो स्वप्नादिवत् अविद्या की उत्पत्ति किसने की ? या ब्रह्मातिरिक्त अन्य कोई कारण है तो अद्वैतत्व विघात होता है, यदि उसकी यह अविद्या स्वाभाविक है तो कभी नष्ट नहीं हो सकती ।

इसलिये शंकराचार्य की अविद्या अनेक दोषों व समस्याओं की जननी है । हमारी दृष्टि से जो अविद्या, अज्ञान या भ्रम है वही ईश्वर की अपेक्षा से माया है, शंकर की दृष्टि में माया और अविद्या में कोई विशेष भेद नहीं । यथा—

"अविद्या प्रत्युपस्थापित नामरूप मायावेशवशे नासकृत् प्रयुक्तत्वात् ।'

अर्थात् अविद्या से प्रत्युपस्थापित नामरूपात्मक माया के आवेश के बल से चेतन में ईश्वर भाव और प्रवर्त्य-प्रवर्तक भाव उत्पन्न है, ऐसा अनेक बार निराकरण किया गया है । परन्तु बाद के अद्वैतवादियों ने अविद्या और माया में भेद माना है । यथा—

"अविद्योपाधिको जीवो न मायोपाधिकः खलु,
माया कार्यगुणच्छन्ना ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।"

अर्थात् माया ईश्वर की उपाधि है और अविद्या जीव की । इस प्रकार भी अविद्या के समान माया के विषय में भी वही प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या माया द्रव्य है या गुण ? प्रथम उत्तर से अद्वैत का विघात द्वितीय उत्तर से ब्रह्म का गुण मानने पर माया भी अनादि और नित्य ठहरती है फिर तदुत्पन्न होने से जगत् की त्रिकालभाविनी सत्ता भी नित्य माननी पड़ेगी । पुनरपि शंका होगी कि क्या यह माया चेतन है या जड़ ? यदि चेतन है तो दूसरा तत्व उपस्थित हो गया यदि जड़ है तो ब्रह्म इस माया के वशीभूत कैसे हुआ ?

अतः वेदों से इस मायावाद का सामंजस्य नहीं बैठता । डा० प्रभुदत्त शास्त्री ने अपनी पुस्तक "दी डाक्ट्रिन आफ माया" में गणना की है कि ऋग्वेद में माया शब्द ७० बार, अथर्व में २७ बार तथा साम, यजु० में ९, ९ बार आया है, परन्तु अविद्या के अर्थ में कहीं भी प्रयुक्त नहीं है ।

प्रत्युत प्रकृति और प्रज्ञा अर्थ में प्रयुक्त है ।

इन सभी उलझनों का का समाधान त्रैतवाद के अन्तर्गत प्रकृति में ही सम्भव है जैसा कि महर्षि दयानन्द ने कहा कि तीन पदार्थ नित्य हैं ईश्वर जीव, प्रकृति । इसमें सत्यार्थप्रकाश में निम्न प्रमाण उद्धृत किये हैं—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते: ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति ॥
ऋ० मं० १ सू० १६६, मं० २०

तथा "अजामेकां लोहित शुक्ल कृष्णां"

इस उपनिषद् में अजा से प्रकृति, अज से जीवात्मा तथा द्वितीय अज से परमात्मा का ग्रहण स्पष्ट है । निष्कर्ष यह है कि अन्य नास्तिकों को पराजय के हेतु से भी स्वीकृत अन्य निमितोपादान ब्रह्म को जगत् का कारण मानना बहुत ही लचर सिद्धान्त रहा । जगत् के विषय में वेदान्तियों की काव्यमयी उक्तियां निस्सार दी हैं ।

जगन्महिम्ना न जगत्प्रसिद्धिः,
न चिन्महिम्नाऽपि जगत्प्रसिद्धिः ।
न च प्रमाणाज्जगतः प्रसिद्धिः,
स्वतोऽस्य माया मयता प्रसिद्धिः ॥

तथा कर्ता ब्रह्म कदापि जगत का उपादाकारण नहीं हो सकता क्योंकि उपादान को कार्यरूप में आने के लिये विकृत होना अनिवार्य है । वैदिक साहित्य मे जगत् के उपादान तत्व को त्रिधातु, प्रकृति, स्वधा, अदिति, माया, वृक्ष, अजर, तमस्, प्रधान आदि अनेक नामों से अभिदिन किया गया है ।

आचार्य शंकर जैसा महाप्रज्ञ एक स्थान पर जगत को ब्रह्म का विवर्त स्वीकृत करता है तो अन्यत्र जगत् को ब्रह्म का परिणाम मानता है जब कि अपरिणामी ब्रह्म का जगत् परिणाम नहीं हो सकता । इस प्रकार हमने देखा, महर्षि दयानन्द द्वारा सम्मत जगत् का उपादान कारण प्रकृति को मानना ही श्रेष्ठ समाधान है ।

(समाप्त)

श्री ओम्प्रकाश त्यागी : दयानन्द के वीर सैनिक तुम धन्य हो!

श्री दानसिंह मेहरा, हैड क्लर्क सार्वदेशिक सभा

१० मई १९८६ की प्रातः आर्य जगत् और हिन्दू समाज के लिए वज्रपात की प्रातः सिद्ध हुई। जाति, धर्म और संस्कृति का पुजारी और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का प्रबल योद्धा अचानक इस संसार से चल बसा। दयानन्द का यह अनन्य सेवक लाखों लोगों के दिलों पर एक अमिट छाप छोड़ गया। सार्वदेशिक सभा के यशस्वी मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का निधन आर्य समाज और हिन्दू जाति की अपूर्णीय क्षति है, जिसे पूरा नहीं किया जा सकता।

इस कर्मवीर व्यक्तित्व का अन्तर्दर्शन बहुत गम्भीर और गहरा था। उनके साथ निजी सहायक के रूप में काम करते हुए १६ वर्षों की दीर्घ अवधि में कभी भी ऐसा अवसर देखने को नहीं मिला कि उनके मुखमण्डल पर कभी कोई निराशा, क्रोध अथवा दुःख का भाव उत्पन्न हुआ हो। उन्होंने कभी भी छोटे बड़े का भेद नहीं किया। कार्यालय में प्रवेश करते ही सबसे पहले स्वयं ही हाथ उठाकर अथवा हाथ जोड़कर सबको नमस्ते करते थे। उनकी बातों में एक मीठा स्वर था, एक आकर्षण था, पंच तत्वों के भौतिक शरीर को राख होता देखकर भी मन नहीं मानता की त्यागी जी हम से अलग हो गये हैं। उन्होंने कभी भी गरीब, अमीर जात-पात या छुआ-छूत का अन्तर अपने मन में नहीं आने दिया। उनके सारे मित्र ही मित्र थे, उनका विरोधी हिन्दू जाति में ढूंढकर भी हमारी दृष्टि में कभी, नहीं आया।

भरा हुआ शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व, अन्तर्दर्शन की गम्भीरता से युक्त था। उनकी व्यवहार शालीनता, मनोविनोद और कार्य प्रेरणा के भाव सबको मोहित करते थे। कभी भी कोई समस्या उनके सामने आती तो वह तुरन्त ही वहां पर जो कोई होता, उसे पूछ बैठते कि कैसा करना चाहिये। जो राय उन्हें उचित लगती, उसी पर चल पड़ते थे। उन्होंने दूसरों की सम्मति लेने में कभी छोटे-बड़े अथवा अपने पराये का भेद नहीं किया।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन का पहला कदम दयानन्द के सेवक के रूप में आर्य समाज की सीढ़ी पर रखा, वह जीवन भर फिर दयानन्द और आर्य समाज का निष्ठावान सैनिक होकर रह गया।

श्री त्यागी जी को अपने जीवन में अभाव और उथल पुथल का भारी सामना भी करना पड़ा। कई बार उन्होंने अपने जो संस्मरण सुनाए वह दिल को छू लेने वाले थे। लेकिन इस वीर पुरुष ने कभी हार नहीं मानी। रचनात्मक शैली के इस कलाकार ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। संसद सदस्य के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय समस्याओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। हिन्दू जाति की रक्षा के लिए उन्होंने संसद में विवादास्पद धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक भी रखा किन्तु वोटों की तुष्टीकरण की राजनीति ने इस बिल को पास नहीं होने दिया। इसका व्यापक प्रभाव श्री त्यागी जी के मन पर पड़ा, यही कारण था कि १९८० के लोक सभा के चुनाव के पश्चात् उन्होंने भारतीय जनता पार्टी से त्यागपत्र दे दिया।

आर्य जाति की रक्षा पंक्ति के रूप में उन्होंने आर्य वीर दल की स्थापना की आज देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी आर्य वीर दल की कई शाखाएं कार्यरत हैं। आर्य वीर दल ने सेवा, सहायता के अब तक कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। भारत को ईसाईकरण से बचाने के लिये दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना भी श्री त्यागी जी की प्रेरणा पर ही हुई थी। संघ इस समय देश के उत्तर पूर्वीक्षेत्र व अन्यान्य भागों में शानदार काम कर रहा है।

श्री त्यागी जी को प्रेरणा पर जहां देशान्तर में मारीशस नैरोबी लन्दन और डरबन आर्य महासम्मेलन हुए, वहीं उनके मन्त्री काल में अजमेर महासम्मेलन आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह, सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी और श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी जैसे समारोह भी भारत में हुए मारीशस सम्मेलन में भारत से जाने वालों के लिए विशाल अकबर पोत की याद श्री त्यागी जी की स्मृति देती रहेगी। श्री त्यागीजी के कार्यों का इतिहास बहुत लम्बा है।

लगभग डेढ़ दशाब्दी से सार्वदेशिक सभा के सर्वोच्च मंच पर श्री रामगोपाल जी शालवाले (प्रधान) श्री ओम्प्रकाश त्यागी (मन्त्री) और श्री सोमनाथ मरवाह (कोषाध्यक्ष) के त्रिमूर्ति की जो अजेय चट्टान, हैदराबाद के लोहपुरुष स्व० पं० नरेन्द्र (स्व० स्वामी सोमानन्द की दूर दृष्टि से बनाई गई थी आज उसकी एक कड़ी गिर गई है। श्री त्यागी जी का विकल्प कोई दूर दृष्टि वाला ही ढूंढ पाएगा।

जहां आर्य समाज को, हिन्दू जाति को श्री त्यागी जी के वियोग का गम है, वहीं हम जैसे अनुचरों की भी अन्तर्पीड़ा बार-बार आर्तनाद कर उठती है। हे महापुरुष आप पुनः पुराना वस्त्र त्याग कर नए परिधान में इसी धरा में जन्म लो, आपकी आवश्यकता है। दिवंगत के चरणों में मेरा शत शत प्रणाम।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी भी चले गए

जब अपना कोई साथी जाता है तो दुःख अवश्य होता है। यद्यपि फिर हम अपने आप को यह धीरज देने की कोशिश करते है कि सबने जाना है। अब उनका समय आ गया था वे चले गये। बात तो ठीक है लेकिन कुछ लोग ये भी होते हैं जो चले तो जाते हैं लेकिन अपनी एक ऐसी याद पीछे छोड़ जाते हैं जो वर्षों उनकी याद दिलाती रहती है। श्री ओमप्रकाश त्यागी भी उनमें से एक हैं। उन्होंने लगभग ५० वर्ष अपने देश और धर्म की सेवा की थी। अभी जवानी में कदम रखा ही था कि वह आर्य समाज मे शामिल हो गए। सारे देश में उन्होंने आर्यवीर दल की शाखाएं कायम की। और फिर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री भी बन गए। इसी दौरान लगभग पन्द्रह वर्ष लोकसभा के सदस्य भी रहे। वहां उन्होने वह ऐतिहासिक विधेयक भी पेश किया था जिसमें बलात धर्म परिवर्तन रोकने की व्यवस्था थी। उनकी गतिविधियो का एक बडा केन्द्र उत्तरपूर्वी भारत का वह क्षेत्र था जहां दूसरे देशों से आए ईसाई पादरी गरीब हिन्दुओ को लालच देकर ईसाई बनाने का प्रयास करते रहते हैं। त्यागी जी ने वहा आकर कई आश्रम भी खोले थे। उन्होंने दुनिया के कई बड़े-बड़े देशों का दौरा भी किया था। गत दिसम्बर में वह दक्षिणी अफ्रीका भी गए थे। वहां भी आय समाज ने एक बहुत बड़ा सम्मेलन किया था जिसमें शामिल होने के लिए त्यागी जी को आमन्त्रित किया गया चूंकि वे उच्च कोटि के वक्ता थे। इसलिए जब वे बोलते थे तो लोगों पर इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता था। यही कारण था कि उन्हें जगह-जगह से आमन्त्रित किया जाता था।

आज वह कहानी समाप्त हो गई। त्यागी जी अपने जीवन का अन्तिम अध्याय लिखकर चले गये। विगत कई वर्षों से उन्हें हृदय रोग था। फिर भी वह काम करते रहते थे। जब उनसे कहा करते थे कि एक दिन तो जाना ही है। आराम करने से वह दिन टल नही सकता। इसलिए वह काम करते रहे और करते ही चले गये। एक बहुत बड़ी रिक्तता पैदा हुई है हमारे समाज में। बहुत कम लोग ऐसे मिलते हैं जो उस लग्न से काम करते हैं जिस तरह त्यागी जी करते थे। लेकिन हमें यह सब सहन करना ही पड़ता है। परमात्मा का अपना विधान है उसी के अनुसार दुनिया चलती है। इसी विचार से जो कुछ हुआ है उसे हमें स्वीकार करना पड़ेगा और अपने जाने वाले भाई को हम केवल यही श्रद्धांजलि भेंट कर सकते हैं कि जो काम वह अधूरा छोड़ गए हैं उसे जहां तक सम्भव हो उसे पूरा करने का प्रयास किया जाए। —वीरेन्द्र

आर्य संस्कृति एवं सभ्यता के गौरवमय इतिहास को बिगाड़ने का षडयन्त्र

मांगेराम आर्य एम. ए., बांकनेर, दिल्ली-४०

(गतांक से आगे)

कृषि के साथ-साथ शिल्प कलाएं भी बड़ी उन्नत अवस्था में थी। प्राकृतिक टांगों के स्थान पर लोहे की टांगे लगा दी जाती थी। कुम्हार सुवर्णाकार, बढ़ई उच्चकोटि के शिल्पकार थे। रथ, वाहन, नौकाओं का विशेष उपयोग होता था। सोने की मुद्राओं का निर्माण होता था। वैदिक युग में उच्चकोटि का साहित्य और सभी उन्नत कलाएं थी।

शिक्षा—वैदिक काल में शिक्षा का बड़ा महत्व था। शतपथ ब्राह्मण १४-६-१०-५ के अनुसार "मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेद" अर्थात् बच्चे का निर्माण करने वाले माता, पिता व आचार्य हैं। उपनयन संस्कार के द्वारा आचार्यकुल (गुरुकुल) में शिक्षा आरम्भ होती थी। आचार्यकुल नगरों व ग्रामों से दूर आश्रमो मे स्थित होते थे। जिनमें गोशालाओं का होना अनिवार्य था। इन आचार्यकुलों को पर्याप्त भूमि दान में मिलती थी। वहां आचारवान, तपस्वी, विद्वान, अध्यापक होते थे और शिष्यों को तपस्वी जीवन व्यतीत करना पड़ता था। समावर्तन (दीक्षान्त) संस्कार के अवसर पर आचार्य उन्हें भविष्य मे भी "स्वाध्याय मे लगन" और "धर्माचरण करने" का उपदेश देते थे। स्त्री-पुरुषों सभी को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था। यजुर्वेद २६-२ में लिखा है "यथेमां वाच कल्याणी-मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय।" सभी के यज्ञोपवीत व उपनयन संस्कार होते थे। गार्गी, अनुसुया सदृशः अनेक स्त्रियां भी मन्त्र द्रष्टा थी। शतपथ ब्राह्मण मे विदुषी स्त्रियो का उल्लेख है।

वैदिक युग मे तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए आर्य लोग बड़े उत्सुक थे। परमात्मा, आत्मा व सृष्टि (जगत) ये तीन मूल तत्व थे। "मृत्यु पर विजय" प्राप्त की जा सकती है, यह आर्यो का विश्वास था। दर्शन और उपनिषदों की रचना इसका प्रमाण है। वैदिक युग के शिक्षा केन्द्रो मे विदेशों से भी विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए यहा आते थे। भारत "विश्वगुरु" कहलाता था।

आर्थिक जीवन—आर्यों का आर्थिक जीवन पशुपालन, कृषि, उद्योग एव व्यापार पर आधारित था। गोधन का बडा महत्व था। भैंस, बकरी आदि पशु भी पाले जाते थे। आर्यावर्त्त देश धन-धान्य से भरपूर था। शिल्प व उद्योग उन्नत दशा मे थे। वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग, बढ़ई का शिल्प, चर्म उद्योग, शालाओ (भवनो) व पुलों का निर्माण, नाव निर्माण आदि कार्य उन्नत दशा मे थे।

व्यापार मे बहुधा वस्तु विनिमय एवं निष्क (सोने के सिक्के) का प्रयोग होता था। अन्य देशवासी इसलिए भारत को 'सोने की चिड़िया" कहते थे, क्योंकि आर्य लोग उनसे वस्तु के बदले अधिकतर सोना लेते थे। व्यापार समुद्र और स्थल दोनों भागों मे होता था। ऋग्वेद १०-१२६-२ मे पूर्वी और पश्चिमी समुद्रो का वर्णन है। ईरान, तुर्की, रोम आदि देशों के साथ व्यापार सम्बन्ध अधिक थे।

आर्य जाति से भिन्न जाति के लोग "पणि" आर्यों की गायें चुरा ले जाते थे। किन्तु पणि जाति के वृद्ध सदृशः लोग ऋषियो को गौए दान भी करते थे। अथर्ववेद मे सुन्दर शालाओं (भवनों) का तथा ऋग्वेद ७-५५-६ में विशाल भवन (महल) का वर्णन है। ऋग्वेद १-१६६-८ में पुर या दुर्ग की संज्ञा का संकेत है। जनपदों (नगर राज्यो) की राजधानी पुर कहलाती थी। ऋग्वेद में ग्रामों का उल्लेख मिलता है। महाभारत के समय आर्यो के भवन सूर्य-चन्द्र के समान चमकते थे। अनेक विद्याओ, विज्ञानों, ज्योतिष, चिकित्साशास्त्र, गर्भ अश्वविद्या, हस्तविद्या, शरीर विज्ञान, धनुर्वेद आदि का विशेष रूप से वर्णन मिलता है। शिल्पियों और व्यापारियों के महत्वपूर्ण संगठन (समूह-निगम) थे। वैदिक काल में आर्यों की आर्थिक दशा बहुत ही अच्छी थी।

राजनीतिक जीवन—वैदिक युग में प्रजा राजा का वर्ण करती थी। (अथ. ६-८७, १,३-८८,१.२) राजा की सहायता सभा और समिति करती थी। राजा एवं राजाधिकारी पूर्ण धार्मिक विद्वान्। राजा के अधिकारी रत्न कहलाते थे। इन रत्नियों की संख्या २२ थी-सेनापति, पुरोहितः राजा (स्वयं) महर्षि, सूत, ग्रामणी, क्षत्रिय, संग्रहीता, भागदुघ, अक्षवाप, गौविकर्ता, पालागल। राजभाषा संस्कृत थी। सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखे थे। ये ग्रन्थ सम्पूर्ण ज्ञान के भंडार थे। फ्रांस के वैकालयर अपनी पुस्तक "बाईबिल इन इण्डिया में लिखते हैं, "सब विद्या और भलाईयों का भंडार आर्यावर्त्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं। "दाराशिकोह" बादशाह ने भी कहा था, "जैसी पूरी विद्या संस्कृत भाषा में है वैसी किसी भाषा में नहीं"।

वैदिक काल में युद्ध सामग्री अति उत्तम थी। धनुष. बाण, कटार, भालो के अतिरिक्त आग्नेयास्त्र (गोला) था। वरुणास्त्र से आग्नेयास्त्र को नष्ट किया जाता था। नागफांस, मोहनास्त्र (नशे की चीज), पाशुपतास्त्र (बिजली का) तोप (शतघ्नी), बन्दूक (भुशुण्डी) आदि अस्त्र प्रयोग में आते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रूस और उनसे यूरोप देश में उनसे अमेरिका आदि देशों मे फैली है। इकबाल कवि ने भी भारत की अमर संस्कृति के बारे में ठीक ही कहा है—

> यूनान मिश्र रोमा मिट गए सभी जहां से।
> पर बाकी है अब भी नामों निशां हमारा ॥

आर्यावर्त्त के दूर-दूर देशों तक विवाह गान्धार की राजपुत्री से, पाण्डु का विवाह ईरान की राजकन्या माद्री से, अर्जुन का विवाह अमेरिका की उलोपी से हुआ। राजसूय और अश्वमेध यज्ञो में अनेक देशों के राजाओं का आना लिखा है। संक्षेप मे वैदिककाल में आर्यों का चक्रवर्ती, आदर्श शक्तिशाली जनकल्याण राज्य था। राजा हरिश्चन्द्र, राजा रामचन्द्र, राजा कृष्णचन्द्र सदृशः सत्यवादी, मर्यादा पुरुषोत्तम, योगीराज राजा हुए हैं। महाभारत युद्ध के पश्चात् (सन ३१०२ ई. पू) आर्यावर्त देश का चक्रवर्ती राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। प्राची दिशा के जनपद "साम्राज्य" दक्षिणी दिशा के "भौज्य" प्रतीची दिशा के "स्वराज्य", उत्तर दिशा के "वैराज्य (विराट) और मध्य देश के "राज्य" आपस में संघर्षरत रहने लगे। देश में "वाममार्ग" का प्रादुर्भाव हो गया।

(समाप्त)

कर्म की महिमा

—आचार्य पं० रामकिशोर शर्मा—
श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जा (उ० प्र०)

"सभी क्षेत्रों में कर्म सफलता की कुंजी है" यह सर्वसम्मत तथ्य है। इतिहास साक्षी है कि कर्म के बिना किसी व्यक्ति को कभी भी अपने कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं हुई, अतएव सदा से सर्वत्र कर्म का महत्व रहा है। पुरुषार्थ, उद्योग तथा उद्यम आदि शब्द कर्म के ही वाचक हैं। परमपिता परमात्मा ने अपनी दिव्यवाणी वेद में कर्मशील मनुष्य को ही जीवित रहने का अधिकारी बताया है। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का यह मन्त्र प्रमाण रूप में प्रस्तुत है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ; यजु०४०।२

अर्थः—कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि। ऋ० १०।५३।६

अर्थात् कर्तव्य करते हुए अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर हो।

यो जागार तमृचः कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह, तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥
ऋ० ५।४४।१४

अर्थः—जो जागता है उसे ऋचायें चाहती हैं, जो जागता है उसे ही साम प्राप्त होते हैं, जो जागता है उसे यह सोम प्रभु कहता है मैं तेरे सख्य में निरन्तर घर-वाला हूं, अर्थात् मैं तेरे साथ हूं। इस मन्त्र में जागने का अर्थ कर्म करना है।

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः॥ ऋ० ७।३३।११

अर्थात् जो कर्म करते-२ थक नहीं जाता, देवता उसके सहायक नहीं होते हैं। परमपिता परमात्मा ने स्पष्ट शब्दों में प्राणियों को उपदेश दिया है कि अपने जीवन को सफल करने हेतु "कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः" अर्थात् कर्म मेरे दाहिने हाथ पर तथा विजय बायें हाथ पर है यह दिव्य आदर्श स्वीकार करो। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में—

नाना श्रान्ताय श्रीरस्ति। पस्यो नृप द्वरो नरः।
इन्द्र इच्चरतः सखा। चरैवेति चरैवेति॥

अर्थ—कर्म से थके बिना श्री प्राप्त नहीं होती। आलसी मनुष्य पापी होता है। पुरुषार्थी का मित्र ईश्वर है। इसलिये पुरुषार्थ करो, इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने अपने प्रिय मित्र अर्जुन को गीता के दूसरे अध्याय में "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" अर्थात् तुम्हारा कर्म करने का अधिकार है फल में नहीं; क्योंकि वह तो स्वयं सिद्ध है। यह उपदेश दिया है। गीता में "नियतं कुरु कर्म त्वम्" इत्यादि वचनो के द्वारा निश्चित रूप से कर्म करने का आदेश दिया है।

महर्षि वेद व्यास ने अपने अमर ग्रन्थ महाभारत में उद्धरेदात्मानं नात्मानं मवसादयेत्।

अर्थात् अपना उद्धार अपने पुरुषार्थ से करो, पुरुषार्थ न करके अपने को मत गिराओ यह कहकर कर्म का महत्व सिद्ध किया है।

महाकवि माघ ने—"उद्यम साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥

अर्थः—उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये ६ गुण जहां रहते हैं। वहां भगवान सहायक होता है यह लिखकर कर्मशील व्यक्ति का सहायक भगवान होता है यह स्पष्ट रूपेण स्वीकार किया है। नीति शास्त्र के महापण्डित श्री विष्णु शर्मा ने "उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि" अर्थात् कार्य कर्म से ही सिद्ध होते हैं तथा उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः॥ अर्थात् "उद्योगशील श्रेष्ठ पुरुष के समीप लक्ष्मी स्वयं आ जाती है।" इत्यादि वाक्यों द्वारा कर्म का गुणगान किया है। महर्षि गोतम ने अपने न्याय दर्शन में—"सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः" अर्थात् जाति, आयु तथा भोग का साधन कर्म माना है।

समस्त संसार में कर्म की प्रधानता है इस सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी ने वैदिक दृष्टिकोण को अपने शब्दों में "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा" इस प्रकार प्रस्तुत किया है। एक हिन्दी कवि की कर्म के सम्बन्ध में निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं।

बिना कर्म के कभी न रण में जय की भेरी बजती है।
बिना कर्म के कभी न जग में सुखद राह भी मिलती है।
डग-डग, पग-पग पर भी देखो कर्म-कर्म की माया है।
कर्म किया है जिसने उसका जीवन सफल बनाया है।

उर्दू भाषा के कवि गनी ने कर्म को सफलता का मूल बताते हुए "बे मुशक्कत कुछ मुयस्सर हो नहीं सकता गनी" यह उद्घोष किया है।

उपरलिखित प्रमाण तथा हमारे पूर्वजों के गौरमय चरित्र कर्म की ही महिमा के परिचायक है। फिर भी कुछ भाग्यवादी व्यक्ति

पुरुष, पौरुषं, तावद्यावद्दैवन्तु समुखम्।
विपरीत मते दैवे न पुरुषो न च पौरुषार॥

अर्थ—जब तक दैव अनुकूल है, तब तक पुरुष और पौरुष है दैव के विपरीत हो जाने पर न पुरुष से कुछ होता है और न पौरुष से।

तादृशी जायते बुद्धि व्यवसायोऽपि तादृशः।
सहायास्ता दृशश्चैव, यादृशी भवितव्यता॥

अर्थ—जैसी भवितव्यता (भाग्य) है मनुष्य की बुद्धि, उद्योग तथा सहायक वैसे ही हो जाते हैं अर्थात् सब कुछ भाग्य से ही होता है कर्म करना व्यर्थ है।

"दव मेव हि नृणां वृद्धौक्षये कारणम्॥"

अर्थात् मनुष्यों के विकास एवं विनाश में भाग्य ही कारण है, कर्म नहीं।

यत्पूर्वं विधिना ललाट लिखितन्तन्मार्जितुं कः क्षमः।

अर्थात् जो पूर्व ही विधाता ने ललाट में लिख दिया है, उसे कौन मेट सकता है इत्यादि वचनों का आश्रय लेकर कर्म के महत्व की उपेक्षा करते हुए देखे जाते हैं। यह मार्ग, शास्त्र तथा युक्ति दोनों के विरुद्ध है। क्योंकि जिन ग्रन्थों में भाग्य की महिमा लिखी है वही भाग्य है क्या यह द्रष्टव्य है। जैसे—पूर्वजन्मकृतं कर्म तेद्दवमित्युच्यते। अर्थात् पूर्व जन्म में किये गये कर्म ही इस जन्म में भाग्य बन जाते हैं।

भाग्यानि पूर्वं तपसा खलु सचितानि, काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः।

अर्थ—जैसे वृक्ष समय पर फल देते हैं उसी प्रकार पुरुष के पूर्व कर्मों से संचित भाग्य ही समय पर फल देता है। इस युक्ति से भी यह सिद्ध है, कि भाग्य का निर्माण पूर्व जन्मों के कर्मों द्वारा ही होता है।

प्राक् स्वकर्म तथाकारं दैवं नाम न विद्यते।

अर्थात् पूर्वकृत अपने कर्मों के अतिरिक्त भाग्य और कुछ भी नहीं है। इस विवेचन से स्पष्ट सिद्ध है कि भाग्य का निर्माता होने के कारण कर्मानुष्ठान ही आवश्यक है भाग्याश्रय उचित नहीं।

वर्तमान युग में भी लोकमान्य श्री बालगंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, महात्मागांधी, श्री सरदार पटेल एवं नेहरू आदि ने अहर्निश किये गये कर्मानुष्ठान द्वारा ही पवित्र भारत वसुन्धरा को वैदेशिक शासको की दुःखद परतन्त्रता से मुक्त किया। संसार में वे ही देश समुन्नत है या होते हैं जहां के निवासी भाग्य का नहीं, उद्योग का सहारा लेते हैं। जापान आदि देश इस तथ्य का प्रमाण है।

आर्यसमाज के संस्थापक, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार भाग्य की उपेक्षा कर कर्मानुष्ठान का प्रतिपादन

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज की गतिविधियां

नारी नारी में अन्तर का विरोध

कानपुर। प्रसिद्ध महिला उद्धारक एवं प्रदेश प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने लोकसभा द्वारा स्वीकृत मुस्लिम महिला बिल पर कड़ी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा है कि पहले समाज में पुत्र व पुत्री अन्तर व्याप्त है अब भारत सरकार इस बिल द्वारा नारी नारी में अन्तर करके न केवल मुस्लिम महिलाओं के साथ अन्याय किया है अपितु देश विभाजन के लिए एक बार पुनः दो कौमों की नीति को प्रोत्साहित भी किया है जो देश के हानिकारक सिद्ध होगा। —मन्त्री, केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर (राष्ट्र रक्षा यज्ञ) इण्टर कालिज खैर (अलीगढ़) दिनांक ४ जून से १८ जून १९८६ तक

नई पीढ़ी को संस्कारित करने तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए आर्यवीर दल जनपद अलीगढ़ द्वारा ४ से १८ जून १९८६ तक एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन इन्टर कालिज खैर (अलीगढ़) में किया जा रहा है। जिसमें २०० युवको को धार्मिक संस्कार संध्या, हवन, योगासन, प्राणायाम आदि के प्रशिक्षण के साथ-२ शारीरिक प्रशिक्षण लाठी, भाला, जूडो कराटे, सैनिक शिक्षा आदि का प्रशिक्षण योग्यतम शिक्षकों के द्वारा दिया जायेगा। शिविर में आर्य समाज के वरिष्ठ नेता संन्यासी महात्माओं का बौद्धिक विशेष रूप से श्रवणीय होगा जिसमें आम जनता भी लाभान्वित हो सकेगी।

शुल्क ३० रु० मात्र। जो प्रवेश पत्र सहित २० मई, १९८६ तक अर्थनायक पर जमा कराने चाहिए।

गणवेश सफेद फौजी कमीज, खाकी नेकर, ब्राउन कपड़े के जूते, सफेद मोजा, कपड़े की बैल्ट, सफेद सैन्डो बनियान, काला अण्डरवीयर, लाल लंगोट, केसरिया टोपी, पीतल के बैज, सीटी, डोरी एवं लाठी।

शिविर व्यवस्था प्रशिक्षणार्थी को अनुशासन पूर्वक शिविर में रहना होगा। अपने साथ बिस्तर, भोजन करने हेतु आवश्यक बर्तन, नोटबुक, पैन अपना आवश्यक सामान साथ लाना होगा।

सभी प्रकार की जानकारी के लिए निकटत आर्य समाज से सम्पर्क करें। शिवरार्थी ३ जून को सायं खैर आर्य समाज में आ जावें।

सम्पर्क करें—महेशचन्द्र अग्रवाल, अर्थनायक, नवीन प्रेस, मामू भान्जा रोड़, अलीगढ़ फोन : ७२६५ जयनरायण आर्य, उपसचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, उ० प्र० सराय ग्वाली जयगंज, अलीगढ़ फोन : ४०४६

विनीत :—रघुराजसिंह आर्य (जिला संचालक), भूदेव आर्य (मन्त्री)

सामवेद परायण दूषित पर्यावरण उन्मूलन महायज्ञ

श्री नगर दिल्ली ३५। दिनांक ४ से ८-६-८६ तक श्रीनगर लारेंस रोड़ ए २ ब्लाक दिल्ली-३५ में आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जिला फरीदाबाद हरियाणा के तत्वावधान में सामवेद पारायण-दूषित पर्यावरण उन्मूलन एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ होने जा रहा है। आप सभी यज्ञ प्रेमी सादर आमन्त्रित हैं। प्रेमसिंह शर्मा एवं ठेकेदार बलजीत सिंह ककरामा

कर्म की महिमा

(पृष्ठ ६ का शेष)

किया, आर्य समाज के इतिहास के निर्माण में मूलतत्व कर्मानुष्ठान ही है। आर्य समाज के विशाल भवन, अनेकों महाविद्यालय एवं विद्यालय तथा गुरुकुल पूर्व नेताओं के अपार उद्योग के परिचायक है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है, कर्म द्वारा ही अभीष्ट लाभ सम्भव है।

अत: अपने जीवन, समाज एवं राष्ट्र की सर्वतोन्मुखी समुन्नति करने हेतु सभी राष्ट्रवादियों को विकास के बाद के भाग्य की अपेक्षा कर कर्म की साधना करनी चाहिये। तभी हम अपने देशी स्वतन्त्रता, अखण्डता और एकता की रक्षा कर सकेंगे।

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

विषय:—"आर्य समाज की भावी योजना और कार्यशैली"

विद्वानों के निर्णायक मण्डल ने निम्नलिखित प्रतियोगियों को पुरस्कृत घोषित किया है, जिनके नाम निम्न हैं—

(१) प्रथम पुरस्कार (१००० रु०) डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़
(२) द्वितीय „ (७०० रु०) श्री वेद प्रकाश आर्य, एम० ए०, बम्बई
(३) तृतीय „ (५०० रु०) आचार्य ओंकारमिश्र प्रणव शास्त्री, आगरा

इन तीन प्रतियोगिताओं के अलावा १० अन्य व्यक्तियों को भी मूल्यांकन के अनुसार १००-१०० रु० के सान्त्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया है—

सर्वश्री बलजीत शास्त्री, नई दिल्ली। हरेन्द्र राय एडवोकेट, आगरा। वेदमित्र आर्य, कानपुर। डा० मदनमोहन जावलिया, भीलवाड़ा (राजस्थान)। ब्रह्मचारी राजेन्द्र आर्य, खरोड़िया (जम्मू कश्मीर)। डा० सत्यपाल शास्त्री, मेरठ। पं० मधुकर बसन्तराव आर्य, मराठवाड़ा। डा० गंगाप्रसाद विद्यार्थी, जबलपुर। भगवानदेव चैतन्य एम० ए०, मण्डी (हि० प्र०)। वीरेन्द्र मुनि शास्त्री, लखनऊ।

इस प्रतियोगिता में कुल ११४ प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया, जिसमें आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान, मनीषी और कार्यकर्ता तो थे ही साथ ही साथ समस्त भारत के सभी क्षेत्रों के लोगों ने इसमें काफी उत्साह पूर्वक भाग लिया।

हमारी यह कामना है कि आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम उनका क्रियान्वयन तदनुसार उनके साधनों की योजना इस प्रकार बने, ताकि अगले सौ वर्ष आर्य समाज के स्वर्णिम हो सके तथा व्यक्ति, समाज देश व मानवता के कल्याण के प्रति आर्य समाज ज्योति स्तम्भ का कार्य कर सकें।

गजानन्द आर्य, संयोजक-लाखमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता

सम्पन्न उत्सव

—आर्य समाज सकलपुर वाराणसी का १० वां वार्षिकोत्सव ११, १२ व अप्रैल को प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। डा० प्रशस्त मित्र जी शास्त्री एवं अन्य भजनोपदेशकों का ग्रामीण जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। पास के दो अन्य गांवों के लोग प्रभावित होकर (निमनी व नन्दापुर) में भी आर्य समाज के गठन का निश्चय किया। —शिवचन्द्र आर्य

विविध समाचार

आर्य नेता द्वारा धर्म परिवर्तन करने पर अब्दुल्लापुर में हिन्दुओं की पिटाई का कड़ा विरोध

कानपुर—उरई व कानपुर की सरहद पर स्थित थाना कुठौंद क्षेत्र की मुस्लिम बस्ती अब्दुल्लापुर में बलात धर्म परिवर्तन करने के लिये गत सप्ताह हिन्दुओं की पिटाई की गयी। इस बस्ती में कुछ ही हिन्दू परिवार रहते हैं।

सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने अपने एक वक्तव्य में उक्त आरोप लगाते हुए कहा है कि गत वर्ष अक्टूबर माह में इस गांव में गोहत्या करते कुछ मुसलमानों को पुलिस ने बन्दी बनाया था तब से गांव के बहुसख्यक वर्ग मुसलमानों ने गांव के बचे खुचे पांच हिन्दू परिवारों को धमकी देना प्रारम्भ कर दी कि वह मुसलमान बन जाये अथवा गांव छोड़ कर भाग जायें। जब हिन्दुओं ने इस धमकी का विरोध किया तब कुछ मुस्लिम गुण्डों ने उनके घरों में घुसकर जमकर उनकी पिटाई की।

श्री आर्य ने आगे बताया कि अब्दुल्लापुर निवासी ५० वर्षीय श्री छोटेलाल धोबी ने थाना कुठौंद में इस सम्बन्ध में नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई है तथा पुलीस अधीक्षक जालौन के समक्ष अपनी करुण कहानी सुनाई।

श्री आर्य ने प्रदेश सरकार से मांग की है कि वह इस दिशा में तुरन्त कड़ा कदम उठाकर अपराधियों को सख्त सजा देने की कार्यवाही करें।

—शुभ कुमार

फीजी की महिला समाज सेविका श्रीमती प्रमोदिनी को भारत यात्रा

नई दिल्ली १२ मई ८६। फीजी द्वीप समूह की राजधानी सूवा के केन्द्रीय आर्य समाज की उपप्रधान श्रीमती प्रमोदिनी निरन्जन भारत सरकार के निमन्त्रण पर फीजी सरकार के प्रतिनिधि के रूप मे दिल्ली आई। श्रीमती निरंजन इन दिनों फीजी की साउथ पैसिफिक युनिवर्सिटी मे प्रशासन का कार्य देखती हैं। उनकी प्राथमिक शिक्षा वहां की आर्य कन्या पाठशाला मे हुई है। वे सूवा सिटी काउन्सिल की भी सदस्या रही है। इन दिनो वे फीजी की राष्ट्रीय महिला परिषद की अध्यक्षा है और इस सिलसिले मे हाल मे लडन में हुए सम्मेलन मे भाग लेने के बाद भारत पहुची थी। फीजी की आर्य प्रतिनिधि सभा की वे अन्तरग सदस्या और प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं और आर्यसमाज के कार्यों मे वह और उसके पति श्री नारायणसिह बढ-चढ़ कर भाग लेते हैं वे फीजी गिरमिट कोसिल की भी अध्यक्षा है। श्री ब्रह्मदत्त स्नातक को फीजी में उन्होने बहुत सहयोग १९८२ में दिया था।

दिल्ली मे आने पर श्रीमती प्रमोदिनी ने आर्य समाज और महिलाओं के कार्यों को देखने की इच्छा प्रकट की। वे जनकपुरी आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर भाग लेने गई और बताया कि किस प्रकार गिरमिट कालमें गए भारतीयो ने वहा जाकर आर्य समाज के द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा की है।

अपने इस ठहरने के दौरान श्रीमती प्रमोदिनी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में अपने देश की ओर से सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी के निधन पर समवेदना प्रकट की और सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के संन्यास लेने की घोषणा को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि निश्चय ही इस कार्य से विदेश और देश के आर्यनर-नारियों को गहरी प्रेरणा मिलेगी।

यहां से वे आज फीजी के लिए प्रस्थान कर गईं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

पो० ग्राम पनसल्ला जिला बेगूसराय निवासी श्री गांगी पासवान जी के पिता श्री जगदीप पासवान जी का निधन १०५ वर्ष की आयु में दिनांक १०-३-१९८६ ई० को हृदयगति रुक जाने के कारण हुई। वे एक धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी थे। वे अपने पीछे भरे पूरे परिवार को बिलखते छोड गए। उनकी अन्त्येष्टि क्रिया पूर्ण वैदिक रीति आर्य समाज शेरडा के पुरोहित एवं संगठन सचिव श्री प० रामसखा आर्य जी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। इस शांति यज्ञ के अवसर पर आर्य समाज पनसल्ला के अधिकारी एवं सदस्य गण उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि श्री गागी पासवान जी आर्य समाज पनसल्ला के मन्त्री हैं। अपने पिता की स्मृति मे मन्त्री जी एक वेद खरीद कर आर्य समाज को देने का वचन दिया है। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज पनसल्ला के प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने किया। इस अवसर पर कई लोगों ने यज्ञोपवीत लिए एव मास मछली आदि का परित्याग करने का सकल्प लिया।

—प्रधान, आर्य समाज पनसल्ला

उत्सव सम्पन्न

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि घोड़ासहन पूर्वी चम्पारण (बिहार) मे आर्य समाज का दूसरा वार्षिकोत्सव पर एक महागायत्री यज्ञ का आयोजन किया। जो कि प० गगाधर शास्त्री के अध्यक्षता में १८-४-८६ से २२-४-८६ तक चला।

शोक प्रस्ताव

—आर्य समाज टान्डा अफजल अपने दिनाक ४-५-८६ के साप्ताहिक अधिवेशन मे अपनी आर्य समाज के एक कर्मठ पदाधिकारी एव परम सहयोगी एव अवकाश प्राप्त प्रो० गनपतसिंह के दिनाक ३०-४-८६ को मिशन अस्पताल बरेली मे आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करती है। और ईश्वर से यह प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे, और शोकाकुल परिवार को धैर्य सहन करने की शक्ति दें। —ऋषिराम वर्मा

—आर्य समाज कोसी कला के प्रधान, श्री चन्द्रभान जी आर्य के आकस्मिक निधन से आर्य समाज कोसी की अपूर्णीय क्षति हुई है।

प्रधान जी विगत ४० वर्षों से आर्य समाज से जुड़े हुये थे। प्रधान जी को १५ दिन पहले पाक्षाघात हुआ था उन्हें दिल्ली ले जाया गया लेकिन अथक प्रयासों के बाद भी प्रधान जी को न बचाया जा सका आर्य समाज की समस्त शिक्षण सस्थाए शोक मे १ दिन के लिए बन्द रही।

तथा शोक श्रद्धाजलि दी गई। परिवार जनो को इस दुखद घड़ी मे धैर्य धारण करने की प्रभु से मगल कामना की गई। —मन्त्री

—आर्य समाज मसूरी की आज की यह सभा आर्य समाज मसूरी के प्रधान स्वर्गीय श्री चरणदास जी साहनी के अचानक निधन पर हार्दिक शोक तथा सम्वेदना प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा सदगति प्रदान करे और शोक सतप्त परिवार को इस महान दुख को सहन करने तथा धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे।

—परमात्मा शरण मन्त्री

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज रतलाम (म० प्र०) श्री एन एल. सुन्दर प्रधान, श्री रमेशचन्द्र चौहान मन्त्री, श्री कैलाश नारायण जी खेराडा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज पचपुरी गढवाल, प्रधान-शान्ति प्रकाश प्रेम, मन्त्री-श्री वासुदेव विमल सेरामल्ला, कोषाध्यक्ष-बलवन्त सिंह रावत।

—आर्य समाज गुलबर्गा कर्नाटक श्री शिवकुमार शास्त्री प्रधान, श्री नारायण राव मन्त्री, श्री नरसिंहराव कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज तिलहर शाहाजहापुर (उ० प्र०) श्री नन्दलाल जी आर्य प्रधान, श्री लोकेश कुमार जी आर्य मन्त्री, श्री ओमशकर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज गुञोटी ता उमरगा जि० धाराशिव (महा०) श्री रामराम सूर्यवंशी प्रधान, प राणा जी भोसले मन्त्री, श्री रमेशचन्द्र ठाकुर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज टकारा (गुजरात) श्री अमृतलाल मेघाजा श्री एसमुखराय परमार मन्त्री, भगवान देवकारी कोषाध्यक्ष।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा उन्नाव रविशकार शर्मा प्रधान, आचार्य शिवदास शास्त्री मन्त्री, बाबूलाल बजाज कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी श्री बेचन राम आर्य प्रधान, श्री रामगोपाल आर्य मन्त्री, श्री बुद्धदेव कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज कपूरथला श्री रोशनलाल प्रधान, श्री हरिसिंह मन्त्री, श्री जोगिन्द्रपाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज करनैलगज गोण्डा ठा० भगेलू सिंह प्रधान, श्री छेदीलाल कसेरा मन्त्री, श्री सत्यनारायण कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मन्दिर चौ० मागीराम आर्य प्रधान, श्री नन्दलाल जी शर्मा मन्त्री, श्री पन्नालाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सासनी श्री सियाराम प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य मन्त्री, श्री शिवप्रसाद अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य स्त्री समाज सीसामऊ कानपुर प्रधान, श्रीमती शशिकान्ता जी शास्त्री, श्रीमती दर्शना जी लाम्बा मन्त्रिणी, श्रीमती शीलवती जी सक्सेना कोषाध्यक्ष।

१०११०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

—आर्य समाज सीसामऊ कानपुर श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री प्रधान, श्री जसवन्तराय जी लाम्बा मन्त्री, श्री वेदपाल जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रमा कालोनी खण्डवा (म. प्र) मोहन नारायण चौधरी प्रधान, श्री अनोखी लाल मन्त्री, पी एस अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—नगर आर्यसमाज गुलाब सागर जोधपुर (राज०) श्री वत्सराज आर्य प्रधान, श्री रत्नलाल जी द्विवेदी एडवोकेट मन्त्री श्री बसन्तलाल जी आर्य प्रतिनिधि।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल बिजनौर (उ० प्र०) सचालक श्री दुर्गाप्रकाश जी मित्तल अध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य श्री हरिकृष्ण शास्त्री रविप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज चिटगोप्पा जि० बिदर (मैसूर राज्य) श्री अरुणाचल जी मकाल प्रधान विरबसणोभदकुटी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बटोली श्री महेन्द्रपाल सिंह आर्य प्रधान, श्री चन्द्रपाल सिंह आर्य मन्त्री श्री मागेराम आर्य कोषाध्यक्ष।

—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर श्री द्विजराज शर्मा पुरोहित प्रधान श्री राजमगल विश्वकर्मा मन्त्री श्री रमेश प्रसाद गुप्त कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज शाहगज आगरा (उ० प्र०) श्री ब्रजलाल आर्य प्रधान, श्री रघुनाथ सहाय आर्य मन्त्री, ताराचन्द कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सेक्टर २३ न्यूटाऊन फरीदाबाद हरियाणा श्री महावीर प्रसाद मगला प्रधान, नोनकरण आर्य मन्त्री, श्री हरप्रसाद गर्ग कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला शहर डा० वेदप्रकाश गुप्ता प्रधान श्री जगदीशचन्द मुटरेजा मन्त्री रामेश्वर दास गुप्ता कोषाध्यक्ष।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे
वर्ष २१ अङ्क २४] | ज्येष्ठ कृ० ९ सं० २०४३ | रविवार १ जून १९८६

पंजाब की दर्दनाक और खतरनाक तस्वीर

आर्यसमाज मन्दिर अनारकली में ठहरे परिवार कह रहे हैं ?

किसे अपना घर छोड़ना सुहायेगा ? लेकिन क्या करें ?

मौत उनके सिर पर मंडरा रही थी ?

लाला रामगोपाल शालवाले से वार्त्ता

दिल्ली। आर्यसमाज मन्दिर मार्ग (अनारकली) के पीछे विद्यालय मे कुछ परिवार पजाब से आतकित होकर दिल्ली आये हैं। इनमे एक अध्यापक बृजमोहन भी है। वे फतेहाबाद के पास घूदा मे अध्यापक हैं। फतेहाबाद अमृतसर से ४० कि० मी० दूर है। हिन्दू-सिक्ख बराबर की सख्या मे हैं पर २०० परिवार इस गाव को छोड चुके हैं। कौन कहां है यह हमे पता नही है ?

ये प्रधानमन्त्री से मिलकर अपनी आपबीती उन्हे सुनाना चाहते है और पजाब सरकार की विफलता को उनके कानो मे डालना आवश्यक मानते है।

ये सात परिवार १० मई से दिल्ली मे है। आर्यसमाज के परिसर में आने से पहले वे अपने रिश्तेदारो के पास ठहरे और एक एक दिन गुजार कर इस आर्य समाज में आकर बसे है। जिस समय अवसर मिला अपना समान लिया और गाव को अलविदा कर-कर चल दिये। किसे अपनी मातृभूमि छोडनी सुहायेगी लेकिन क्या कर मौत हमारे सिर पर मडरा रही थी। हमारी वहा सुरक्षा नही है। आज-कल जितनी हत्याय हो रही है उतनी दो साल पूर्व भी होती थी। परन्तु उनका कहना है कि काग्रस शासन आतकवाद का मुकाबला नहीं कर सकी, उनकी उम्मीद थी कि अकाली शासन सब ठीक कर लेगा।

श्री बरनाला ने दरबार साहब में पुलिस कार्रवाई की परन्तु आतकवाद के बढते चरण से अकाल तख्त के आगे झुक गये। अब जूते साफ करते फिर रहे है।

उनका कहना है कि हमारे गाव में नो हत्याये की गई, भय का वातावरण व्याप्त है। इनकी बातो से स्पष्ट भय प्रकट होता है। बृजमोहन का कहना है कि हिन्दुओं सिक्खो के आपसी भाई चारे को वे स्मरण भी करते है उनमे से एक का कहना है कि मेरे सभी मामे सिक्ख है, पर उनके लडके हिन्दू है परन्तु एक मामा हिन्दू है। उनके लडके सिक्ख है। मेरा मामा श्रद्धलु सिक्ख है वह गुरुद्वारे मे मत्था टेककर ही भोजन करता है। उन्होने कहा कि मैं आर्य समाजी होते हुए भी दिन मे जप जी साहब का पाठ करता हू। फिर भी माहौल को दूषित करके आतक पैदा कर दिया। सरकार नाम की कोई चीज नहीं है तब क्या कर जहा जगह मिलेगी, वही आत्म रक्षार्थ जायगे। ये लोग श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले (सभा प्रधान) के साथ प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से भेंट कर अपनी करुण कहानी उनके सामने प्रस्तुत करके सुरक्षा की माग करगे।

लाला जी इन परिवारों की सुध लेने आर्य समाज मन्दिर (अनारकली) मन्दिर मार्ग गये थे।

सार्वदेशिक सभा के शिष्टमंडल ने पंजाब में क्या देखा?

नई दिल्ली। १५ से २१ मई तक उपद्रवग्रस्त और अशान्त पजाब का दौरा करने के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधि मण्डल यहा लौट आया। इस दौरे से पजाब की हिन्दू जनता को सान्त्वना मिली और उनके मन-मस्तिष्क पर यह प्रभाव पडा कि उनकी सुध लेने वाला भी कोई है।

यह प्रभाव व्यापक रूप से दृष्टि गोचर हुआ। जालन्धर और नई दिल्ली से प्रकाशित सर्वाधिक ग्राहक सख्या वाले दैनिक पजाब केसरी के स्थानीय सम्पादक श्री अश्विनी कुमार ने पत्र के २६ मई के अक मे "लाला रामगोपाल शालवाले ने पजाब मे क्या देखा ?" शीर्षक से एक सम्पादकीय लिखा है। वे लिखते हैं कि पिछले दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले अन्य प्रदेशों के कई प्रमुख आर्यसमाजी नेताओ का शिष्टमण्डल लकर पजाब क दौरे पर गये थ। लाला जी के नेतृत्व मे यह दल पजाब के सभी प्रमुख नगरो और उग्रवाद ग्रस्त देहाती क्षेत्रो मे भी गया और वहां के उद्योगपतियो व्यापारियो और कृषकों से मिला। इस शिष्टमडल का मुख्य उद्देश्य उन लोगो से मिलना और उनके विचार प्राप्त करना था, जो पिछले कुछ समय से पजाब मे हो रही हिंसा के शिकार हुए है। इस दल ने पजाब में कई स्थानों पर जन-सभाओं को भी सम्बोधित किया।

पजाब के दौरे से वापस आने के पश्चात् लाला जी ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को एक पत्र लिखा। (पूरा पत्र सार्वदेशिक के इसी अक मे पृष्ठ तीन पर देख।)

पूरा पत्र उद्धृत के बाद सम्पादकीय के अन्त मे अश्विनी कुमार ने लिखा है कि "मेरी अपनी व्यक्तिगत राय मे लालाजी ने अपने उपरोक्त पत्र मे श्री राजीव गाधी को जो भी लिखा है वह एक कटु सत्य है। सचमुच लाला जी ने अपने इस पत्र मे पजाब की एक दर्दनाक और खतरनाक तस्वीर पेश की है।

श्रद्धावान, एकनिष्ठ भक्त को प्रभु का अचानक दर्शन :

पा लिया! पा लिया!!

उद्वयम् तमसस्परि स्व, पश्यन्तमुत्तरम् ।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।

अन्वय— वयम् तमस 'परि स्व उद् पश्यन्तम्, उत्तरम् देवम् [पश्यन्तम्], देवत्रा उत्तमम् ज्योतिम् सूर्यम् अगन्म ।।

अर्थ—अन्धकार से दूर भले प्रकाश को, आनन्द को हमने अनुभव किया है। फिर उससे भी अधिक भले आनन्द को अनुभव किया है। तदुपरान्त देवों की कोटि से भी श्रेष्ठ, उत्तम, ज्योतिस्वरूप, सूर्य के समान अद्वितीय प्रकाश एव आनन्दस्वरूप भगवान् को पा लिया है। अत्यधिक श्रद्धा, सम्पूर्ण समर्पण, अपूर्व निष्ठा और आस्तिकता के कारण ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मैंने उस वाछनीय परम तत्व को पा लिया है।

मनसा परिक्रमा के मन्त्रो द्वारा हम छ दिशाओ से अपने को द्वेष-रहित कर चुके हैं। राग और द्वेष एक ही वस्तु के दो पहलू होने से वस्तुत एक ही हैं। राग तो अच्छा पहलू है। द्वेष ही दु खदायी, चिन्तावर्धक और छटपटाहट का कारण है। बधन तो राग से भी होना है, द्वेष से भी। परन्तु इन दोनो मे द्वेष अति अनिष्टकारी अर्थात् गलत काम कराने मे प्रेरणा देने वाला है। उसे प्रभु के न्याय-तुना पर धर, मानव निश्चिन्त होते ही जो परम आनन्द क्रमश पाने लगता है, उसी का सकेन इस मन्त्र मे है।

द्वेषरहित होने पर वह पहले सासारिक बन्धनो, सम्बन्धो, पदार्थों में आनन्द पाता है। फिर इनमे ऊपर उठ, देवत्य पा, मैत्री-करुणा मुदिता-उपेक्षा, दया, न्याय, उपकार, दान आदि दिव्य गुणो को धारण कर, दिव्य आनन्द को अनुभव करने लगता है। इस प्रकार के निरन्तर अभ्यास से अनन्तर उसे परमैश्वर्येत्र (सर्वोत्तम ज्योतिस्वरूप, सूर्य के समान दीप्तिमय, भगवान् के आनन्दमय स्वरूप का आनन्दघन आभास होने लगता है। उसे ऐसा लगता है कि मुझे उस अलौकिक, दिव्य, अनित्र, अजर, शुद्ध-बुद्ध मुक्त का दर्शन मिल गया है। आर्कीमीडिस को जब विज्ञान के रहस्यमय नियम का पता चला तो वह टब मे से निकल कर भाग चला और चिल्लाने लगा—'यूरेका, यूरेका" (पा लिया-पा लिया)। उसे यह ध्यान ही न रहा कि वह दिगम्बर ही चला आया है। इसी प्रकार की दशा भक्त की तब हो जाती है। वह श्रद्धातिरेक से चिल्ला उठता है।

"अगन्म अगन्म ज्योतिरुत्तमम्।'

चित्तवृति के निरन्तर निरोध, यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार बाह्य अगो का सतत अभ्यास, फिर धारणा-ध्यान-समाधि की अविकल्प-परिचर्या से सम्प्रज्ञात, तत्पश्चात् असम्प्रज्ञात समाधि का लाभ होता है। अनेको विघ्नो बाधाओ को पार करते हुए, ऐश्वर्यमयी सिद्धियो की उपेक्षा करते हुए मोक्ष की स्थिति, तत्पश्चात् नि श्रेयस का अधिगमन होता है।

इतनी लम्बी कठोर जटिल साधना से पूर्व ही, भक्त की आस्तिकता की पराकाष्ठा और निष्ठा की चरम सीमा के कारण उसे जो भगवान की एक भूली-भटकी किरण का आभास मिलता है उसके अतीव शुद्ध, सात्विक, सरल, प्रसादपूर्ण आनन्द की अनुभूति से ऐसा आभास होता है कि भगवान को उसने पा लिया है। तब वह चिल्ला उठता है—

'अगन्म अगन्म ज्योतिरुत्तमम्—'

अनेको सन्तो ने ससार को मिथ्या कहा है। भक्तो ने उनकी वाणी सुन 'सत्य वचन' माना है। परन्तु सन्तो की वाणी को हृदय से स्वीकार नही कर पाये। ससार को—ससार के चमत्कृतरूप को—अनुपम शब्द को, मधुर रस को, मनोहारी गन्ध, को, कोमल स्पर्श, को, आकर्षक रूप को, एकदम असत्य, मिथ्या कैसे मान लें। उपस्थिति को, अनुभव को झूठा कैसे मान लें? नहीं मान सकते। सन्तो की वाणी को भी सत्य मानना है। इस पहेली से परेशान है। दुविधा मे है। इन सबको छोड कर अन्यत्र सुख की कल्पना ही हो नही सकती। उसकी कल्पना विद्वान चाहे कर लें, जन साधारण नही कर सकता। ध्रुव को छोड कर, अध्रुव को ग्रहण करने में बुद्धिमानी नही। जन साधारण के लिये जो वर्तमान है, जो इन्द्रियागम्य है, वही सत्य है, वही ध्रुव है। ठीक है यह नष्ठ हो जाता है, तो और मिल जाता है। इसलिए इन्द्रियातीत आनन्द के अस्तित्व को किसी प्रकार स्वीकार करना उसे, भाता नही। वह सन्त की वाणी मे 'हा जी, हा जी" मिलाता रहेगा। तबले पर चलती हुई अगुलियो की तरह या नर्तक के पदो की अविरल क्रमबद्ध ताल के सदान वह चाहे अनायास कुछ कह दे। भक्त का मन गवाही नही देता।

इन्द्रियातीत, परम शुद्ध, सात्विक, प्रसादपूर्ण आनन्द के प्रति इस प्रकार के आविश्वास की स्थिति मे, जब भक्त के श्रद्धा से घनीभूत आस्तिकता की आस्था से सान्द्र हृदय पटल पर सूर्यरूपी प्रभु को भूली-भटकी एक किरण का दूर से प्रकाश (कितना सूक्ष्म होगा वह !!) पडता है तो उसका अविश्वास डगमगा जाता है। वह आनन्दातिरेक मे चिल्लाता है—

अगन्म, अगन्म ज्योतिरुत्तमम्।"

—धर्मवीर (टकारा)

पुमंवन संस्कार की वैज्ञानिकता
गर्भस्थ शिशु से बातचीत

हेवार्ड (कैलोफोर्निया)।

पत्नी की गर्भावस्था के अन्तिम महीने मे पति उसके पेट पर अपना गाल सटाकर अजन्मे शिशु से रोज सुबह और रात को बातें किया करता था।

एक दिन इस अनूठे व्यक्ति डेनियलसन ने अपने अजन्मे शिशु से कहा, 'अरे बच्चे, मैं तेरा पिता हूँ।' बस गर्भ के अन्दर से शिशु ने जवाब मे अपना पैर हिला दिया, जो गर्भवती ईलोन डेनियलसन के पेट पर साफ महसूस हो रहा था।

गतवर्ष अक्तूबर मे प्रसव कक्ष मे डेनियलसन ने पहली बार अपने बेटे से आपने सामने बात की। ताज्जुब की बात देखिए, पिता के "अरे बच्चे, मैं तेरा पिता हूँ' कहने पर शिशु का रोना बन्द।

ईनील डेलियलसन ने बताया कि शिशु पिता की आवाज सुनते ही अपना सिर उठाकर उसे देखने लगा।

यह बच्चा चार महीने की उम्र मे 'मम्मा मम्मी और "डा-डा' डैडी कहने लग गया था। सात महीने मे तो वह चलने भी लग गया। अब तो वह जूस, और 'नेक्कम' जैसे कठिन शब्दो का भी सही-सही उच्चारण कर लेता है। वह अब लगातार। १५-२० मिनट तक चित्रो की पुस्तक देखकर अपना मनोरजन भी करता है।

हा उसे बेबी सुपीरियर बच्चे का खिताब मिल चुका है। इस बच्चे का प्रसव कराने वाले डा० रेन वान डे कार का कहना है कि यह अजूबा बालक मा की आतो की आवाज उसके दिल की धडकन, उसकी सास की सूक्ष्म ध्वनि और अन्य कई बाहरा आवाजें आसानी से सुन लेता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मंडल द्वारा अपने पंजाब के दौरे से लौटने पर प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को अंग्रेजी में लिखे गए पत्र का हिन्दी रूपान्तर

दिनांक : २१ मई, १९८६

प्रिय श्री राजीव गांधी,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक अध्ययन दल हाल ही में पंजाब प्रान्त का १६ मई, १९८६ से २१ मई, ८६ तक दौरा करके वापिस लौटा है। इस दल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि-नेता सम्मिलित थे। यह पत्र सभी प्रमुख नगरों और उपद्रवग्रस्त देहाती क्षेत्रों में गया और वहां के उद्योगपतियों, व्यापारियों और कृषकों से मिला था, जो पिछले कुछ समय से पंजाब में हो रही हिंसा का शिकार हुए हैं। कई स्थानों पर इस दल ने जन समाजों को भी सम्बोधित किया।

इस दल की यात्रा का मुख्य उद्देश्य पंजाब की सही स्थिति का पता लगाना था और वहां की जनता को इस तथ्य से अवगत कराना था कि इस समय देश की सुरक्षा और अखण्डता को बचाना ही उन सबका मुख कर्तव्य है और इसके लिए उन्हें साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखकर उन शक्तियों से लड़ना है, जो देश को विघटित करके उसे कमजोर बनाना चाहते हैं। दल के वक्ताओं ने अपने भाषणों में उस भय और आतंक की भी चर्चा की जो इस समय पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले हिन्दुओं में फैला हुआ है। उन्हें यह धमकियां दी जा रही हैं यदि वे पंजाब छोड़कर नहीं गए तो मार दिया जायेगा और उनकी स्त्रियों को बेइज्जत किया जायगा आदि।

सार्वदेशिक सभा के शिष्ट मण्डल की पंजाब यात्रा

सार्वदेशिक सभा का शिष्ट मण्डल पंजाब में लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर, गुरुदासपुर, विभिन्न स्थानों पर जाकर दुःखी हिन्दुओं के करुणा-जनक हृदय-विदारक विचारों को सुनने गए, प्रतिनिधियों के नाम श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम्, श्री कमल जीत चोधरी संसद सदस्य, प्रो० शेरसिंह, श्री राजगुरु शर्मा शामिल थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह उपरोक्त दल परिस्थिति के सन्दर्भ में आपसे निवेदन करता है कि भारत सरकार पंजाब की समस्या पर निम्न तथ्यों को ध्यान मे रखते हुए विचार करके तुरन्त कदम उठावे अन्यथा पंजाब की स्थिति और भी अधिक खराब हो सकती है।

१—बरनाला सरकार अपने आपको 'पंथ सरकार' कहकर प्रचारित करती है। इस समय पंजाब के शासन मुख्यमन्त्री अथवा राज्याध्यक्ष के आदेशों का कोई प्रभाव नहीं है। वहां तो केवल सिख ग्रन्थियों और दूसरे पन्थ नेताओं की ही बात मानी जाती है। प्रकारान्तर से पंजाब पर उन्हीं का शासन है। यह परिस्थिति भारतीय संविधान की मूल भावनाओं के एकदम विपरीत है। भारत वर्ष एक धर्म निरपेक्ष राज्य है जहां किसी भी धर्म विशेष पर आधारित सरकार का कोई स्थान नहीं है। सार्वदेशिक सभा का विचार है कि पंथ सरकार की भावना और कार्य उन खालिस्तान समर्थक तत्वों से अलग नहीं है जो सरे आम राज करेगा खालसा की आवाजें लगा रहे हैं, हिन्दुओं को अब वहां विदेशी समझा जा रहा है और इस प्रकार के हालात पैदा किए जा रहे हैं जिससे उनका पंजाब में रहना असम्भव हो गया।

२—सार्वदेशिक सभा ने अनुभव किया है कि पंजाब के हिन्दुओं में बरनाला सरकार के प्रति कोई विश्वास नहीं रह गया है। कानून और व्यवस्था बनाए रखने वाला प्रशासनिक तन्त्र अप्रभावी सिद्ध हुआ है जिसका मूल कारण उसमें निष्ठापूर्वक अपना उत्तरदायित्व पूरा करने की इच्छा का अभाव है। बरनाला स्वयं जानते हैं कि उनकी सरकार के बहुत से मन्त्री उग्रवादियों के समर्थक और हित चिन्तक हैं।

३—गत १२ मार्च से २६ मार्च १९८६ तक उग्रवादियों और उन के समर्थक लगभग २० हजार सिक्खों ने बटाला शहर का घेराव किया था। पास के खोजेवाल गांव में ब्राह्मण कृषको तथा हिन्दू जमींदारों की हत्या की गई। अमृतसर जिले के पट्टी और तरनतारन कस्बों में भी बहुत से व्यापारी मारे गए। इन घटनाओं से हिन्दुओं का मनोबल बिल्कुल टूट चुका है। यदि स्थिति पर तुरन्त नियन्त्रण न किया गया तो हिन्दुओं का सामूहिक पलायन कभी भी शुरु हो सकता है। कुछ व्यापारी किसान अपना घर-बार छोड़कर इस समय तक पंजाब से अन्यत्र चले भी गए हैं।

४—भारत पाकिस्तान सीमा पर तस्करी का धन्धा करने वाले लोग अधिकांश सिक्ख हैं जो बड़े बड़े ट्रांसपोर्टरों से पैसा प्राप्त करते हैं। पंजाब पुलिस इनमें से अधिकांश को जानती है। यह पाकिस्तान से पैसा और हथियार भारत में लाकर उग्रवादियों को देकर उनकी सहायता करते है। पुलिस कुछ तो स्वयं उस धन्धे में भागीदार होने के कारण कुछ राजनैतिक दबाव के कारण इन तस्करों के खिलाफ कोई भी कदम उठाने में डरती है।

५—पिछले चार वर्षों में पंजाब की हिन्दू जनता भयंकर हत्याकाण्डों के दौर से गुजरी है। सार्वदेशिक सभा का यह प्रतिनिधि मण्डल जहां-२ भी गया वहां के रहने वाले पुरुषों और स्त्रियों ने अत्याचारों की करुण कहानी उसे सुनाई। सबके मुख पर एक प्रश्न था कि इन हत्याओं और अत्याचारों का अन्त होगा भी या नहीं? क्या उन्हें पंजाब से निकाल कर किसी अन्य सुरक्षित स्थानों पर भेजने का प्रबन्ध किया जायगा या नहीं? यह दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि दल के सदस्यों के पास जनता के इन ज्वलन्त प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था।

पंजाब समस्या पर सार्वदेशिक सभा के विचार

सभा दृढ़ मन्तव्य है कि विदेशों में, विशेषकर इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा आदि देशों में रहने वाले कुछ महत्वाकांक्ष सिख राजनेताओं ने भारत के अन्दर रहने वाले सिख समुदाय में यह भ्रान्ति फैलाने में सफलता प्राप्त कर ली है कि खालिस्तान की स्थापना सम्भव है। केवल थोड़े से बलिदान से वे अपने इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह तो एक प्रत्यक्ष रहस्य है ही कि पाकिस्तान इस विषय में खालिस्तान समर्थकों और उग्रवादियों को हर तरह की सहायता कर रहा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शिष्टमण्डल का राजीव को पत्र

(पृष्ठ ३ का शेष)

है। सिख युवकों को पाकिस्तान में 'मकाण्डो ट्रेनिंग' दी जा रही है जिससे वे भारत में घुस कर तोड़-फोड़ की कार्यवाही कर सकें और इस प्रकार देश में कानूनी अव्यवस्था फैलावें। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि इस प्रकार के प्रशिक्षित हजारों सिख नौजवान पाकिस्तान से भारत में आ चुके हैं।

बरनाला सरकार में इस विस्फोटक स्थिति का सामना करने का राजनैतिक साहस नहीं है। उसके बहुत से मन्त्री उग्रवादियों के समर्थक और पृष्ठ पोषक हैं। यह बरनाला स्वयं भी जानते हैं। प्रशासनिक तन्त्र एकदम अप्रभावी और निष्क्रिय सिद्ध हो चुका है।

पंजाब समस्या देश की सुरक्षा की समस्या है कानून और व्यवस्था की नहीं

प्रधान मन्त्री के रूप में आप शायद यह हमसे अधिक ही जानते होंगे कि पाकिस्तान में सिखों को भारत में तोड़-फोड़ की कारवाई करने आदि के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। उनके द्वारा पंजाब में खासकर सीमा से लगने वाले फिरोजपुर, अमृतसर और गुरुदासपुर जिलों में जो आतंक फैलाया जा रहा है, उसके कारण वहां के हिन्दू किसी भी समय सामूहिक रूप से पलायन कर सकते हैं। सीमा पार पाकिस्तानी सेना की गतिविधियां इन दिनों तेज होती जा रही है जैसा कि १९६२ में चीन के भारत पर आक्रमण से पहले 'नेफा' क्षेत्र में थी। उस समय कमाण्ड-इन-चीफ-जनरल थिम्मैया और जनरल थोरट की सामयिक चेतावनी पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और भारत को पराजय का अपमान झेलना पड़ा।

सार्वदेशिक सभा अनुभव करती है कि पंजाब की स्थिति अब केवल कानून और व्यवस्था का प्रश्न न रहकर देश की सुरक्षा का प्रश्न बन गई है और इसका एकमात्र हल यही है कि सीमावर्ती क्षेत्र तुरन्त सेना को सौंप दिए जायें। इस दल ने अपनी पंजाब यात्रा के दौरान हजारों सिख नौजवानों को पीली पगड़ी पहने हुए देखा जो इस बात का द्योतक है कि उन्होंने 'अमृतधारी' बनकर खालिस्तान के लिए अपनी जान तक कुर्बान करने का वचन दे दिया है। पंजाब के विभिन्न नगरों के गुरुद्वारों में १५ से २५ वर्ष तक के सिख युवकों को निरन्तर अमृतधारी बनाया जा रहा है जिसकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जैसे ही पाकिस्तान से लगने वाले क्षेत्र हिंदुओं से खाली हो जायेंगे, वह अमृतधारी युवक पाकिस्तानी सेना की सहायता से उस पर कब्जा कर लेंगे। इससे पूर्व की इस प्रकार की स्थिति पैदा हो, सभा का अनुरोध है कि यह तीनों जिले को अविलम्ब सेना के हवाले कर दिये जायें। इस विषय में देर करना देश के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

सार्वदेशिक सभा इस समस्या को हल करने में भारत सरकार की सहायता करने के लिए तैयार है। यह इतना ही चाहती है कि इस विषय में तुरन्त कार्यवाही की जाय अन्यथा पंजाब से हिन्दुओं का सामूहिक पलायन देश के अन्य क्षेत्रों में भी हिन्दू-सिख वैमनस्य पैदा कर सकता है और साम्प्रदायिक झगड़े हो सकते हैं, जिससे देश की आन्तरिक सुरक्षा और एकता खंडित हो सकती है।

भवदीय

अधोहस्ताक्षरी

१—रामगोपाल शालवाले, प्रधान
२—रामचन्द्रराव, वन्देमातरम् उप प्रधान
३—कमलजीत चौधरी, संसद सदस्य
४—प्रो० शेरसिंह, प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा
५—राजगुरु शर्मा, प्रधान मध्य प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा
६—डॉ० किशनलाल, कोषाध्यक्ष आन्ध्र प्रदेश आर्य प्र० स०
७—मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
८—लक्ष्मी चन्द, आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली

गुरुद्वारे की नाजायज तामीर बूटासिंह की सरपरस्ती में

नई दिल्ली २१ मई। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी नाजायज तामीरात रोकना चाहते हैं, मगर हमारे नए मर्कजी वजीर दाखला बूटासिंह हैं कि इसकी न सिर्फ होसला अफजाई कर रहे हैं और जिन नाजायज तामीरात को वजीर दाखला का आशीर्वाद हासिल हो उन्हें गिराने की जुर्रत पुलिस या डी०डी०ए० में कहां हो सकती है। इसकी वाजह मिसाल कबीरधाम गुरुद्वारा जिसका निशान साहब यमुना पुसता रोड से अगले कृष्ण कुंज बस स्टैंड से नजर आने लगता है, यह गुरुद्वारा प्रबन्धकों ने जबरन कब्जा किया हुआ है, दो हफ्ते पहले पार्क के गिर्द बिल्डिंग तोड़कर इसकी तामीर शुरु हुई और अब तो यहां तक ऐलान कर दिया गया है कि जिस इलाका रमेशनगर में गुरुद्वारा बन रहा है, इसका नाम भी बदलकर गुरु-अमरदास नगर रख दिया जायेगा। इलाका के अवाम ने डी०डी०ए० से इस बारे में शिकायत भी की और कुछ शकरपुर थाने भी गये मगर पुलिस ने उसकी रिपोर्ट दर्ज करने से साफ इनकार कर दिया। श्री बूटासिंह गुजश्ता रविवार को सुबह ८ बजे के करीब इस गुरुद्वारे में गये। इनके इस दौरे का इन्तजाम शकरपुर थाने के सबइन्स्पैक्टर हरिश्चन्द्र ने किया। इससे पहले ८ मई को भी वे यहां आये थे और इन्हीं की मौजूदगी में निशान साहब स्थापित किया गया था।

(प्रताप, नई दिल्ली २१-५-८६)

आर्य समाज हमारा है

नव जागृति का रहा प्रणेता,
पाखण्डों के गढ़ का जेता,
वेदो का पावन प्रकाश जो-
जगती के जन जन को देता,
वही क्रान्ति दर्शी इस युग का-
प्राणों से भी प्यारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

अन्यायो से जो लड़ता है,
वेदों का प्रचार करता है,
प्रेम दया की, मानवता की,
शिक्षा जगती को देता है,
वही धरा पर खुशहाली का-
लगा रहा अब नारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

जगती के जन श्रेष्ठ बने,
सौम्य समृद्धि बिना न बने,
घनीभूत हों इस धरती पर-
सत्य धर्म के मेघ घने,
दलितों तथा अछूतों को दे-
रहा सतत सहारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

स्वतन्त्रता का कर उदघोष,
मिटा गुलामी का सब दोष,
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का
किया धरती पर है घोष,
नया समाज बनाएं ने हम-
कण-कण ने ललकारा है।
आर्य समाज हमारा है॥

—राधेश्याम,आर्य

वधु चाहिये

अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ श्री त्यागी जी

प्रिय भाई श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी के नाम से पहले स्वर्गीय शब्द जोड़ते हुए कलम रुक जाती है, मन झिझकता है, आंखें भीग जाती हैं, हाथ कांपने लगता है पर विधाता के विधान को माने बिना कैसे निभेगी। मैं ५ मई १९८९ को महाराष्ट्र के इस आर्य महासम्मेलन में जो निलङ्गा में हो रहा था यजुर्वेद पारायण यज्ञ करा रहा था, १० मई शनिवार को यहां पर शोभा यात्रा का कार्यक्रम था—उस क्षेत्र के युवकों में विशेष उत्साह था, निलंगा की छोटी सी नगरी आर्य घोषों से गुंजायमान हो रही थी। सहसा कुछ काना-फूसी होने लगी घोषों की ध्वनि मन्द होने लगी शोभा यात्रा में चलने वालों के कदम रुकने लग गये।

मैंने भी कई लोगों से पूछा कि क्या बात है? सभी सन्दिग्ध स्थिति मे थे अतः अपने मुख से कोई भी कुछ कहना नहीं चाहता था, साहस करके एक व्यक्ति ने कहा कि रेडियो पर श्री त्यागी के निधन का समाचार आया है, रात्रि को टेलिवीजन पर इस बात की पुष्टि भी हो गई। मन निराश हुआ, मस्तिष्क में न जाने क्या-२ विचार आने लगे। उनके सहसा निधन की सूचना से तो आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि पर्याप्त समय से वह हृदय रोग से जूझ रहे थे, मुझे कहा करते थे कि कभी भी किसी समय हृदय की गति रुक सकती है। चाहता हूं कि फिसटना न पड़े, वैसा ही हुआ। शनिवार प्रातः आनन-फानन में हस्पताल भी पहुंच गए। डाक्टरों से जांच भी हो गई, दाखिल भी हो गए, बिस्तर भी निश्चित हो गया, डाक्टर ने टीका भी तैयार कर लिया पर ज्यों ही बिस्तर पर लेटकर थोड़ा अपने सिर को उसने सीधा किया—डाक्टरों की सारी पड़ताल और दवाई की भरी सूई धरी रह गयी।

उनसे मेरा लगाव लगभग गत १५ वर्षों से हुआ जो निरन्तर बढ़ता रहा, अभिन्नता होती गयी विचारों की समानता ने समीपता बढ़ा दी।

उनके मस्तिष्क में जाति के पिछड़े वर्ग, ट्राइबल वर्ग आदि जाति कि विधर्म का शिकार ईसाई-मुस्लिम प्रचारकों द्वारा बनाए जाने से विशेष चिन्ता थी, इसी उद्देश्य से संघ की स्थापना १९६८ में हुई जो उनका स्वप्न था। मुझे कहा करते थे कि आर्यसमाज का क्रियात्मक कार्य यही है।

न जाने क्या हो गया है? समाजों को, हिन्दुओं को, धार्मिक सभाओं को इस कार्य की ओर इनका ध्यान क्यों नही जाता! न जाने उनका मेरे में आजसे लगभग १२वर्ष पूर्व ऐसा विश्वास हो गया था मानो उसने जान लिया कि मैं उनके स्वप्न को साकार कर सकूंगा, मेरे मन में उनका आना-जाना देश के पूर्वांचल में कार्य करने की लग्न तो उनमें श्री लाल बहादुर शास्त्री की प्रेरणा से बहुत समय पूर्व हो चुकी थी। डीफू (आसाम, में एक डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना उसने की थी। नागालैंड में तथा आसाम के बोकाजान, कण्डा गाम क्षेत्रों में सेवा कार्य प्रारम्भ करने का मूलरूप में श्रेय स्व० सुशील कुमार को है जिसे श्री त्यागी जी ने ही प्रेरित किया। श्री सुशील के बलिदान के बाद इस कार्य क्षेत्र को सम्भालने का प्रश्न आया तो श्री त्यागी जी ने मेरी पीठ ठोकी—उत्साह दिया, मैंने उन की प्रेरणा पर पूर्वांचल के क्षेत्रों का सेवा कार्य सम्भाल लिया उनके उत्साह और मार्गदर्शन में कार्य फैलाया गया। मैं रिजर्व बैंक की सेवा से निवृत हुआ तो सारा समय इसी कार्य में देने लगा।

संघ की स्थिति को सम्भालते ही उस क्षेत्र की अर्थ और प्रबन्ध की समस्याएं सामने आयी श्री त्यागी जी मार्ग दर्शन देते थे पर उत्साह देते कि सारा कार्य मैं ही करूं जैसे किसी बच्चे को तैरना सिखाने के लिए सहारा दिया जाता लिपटा नहीं जाता ठीक उनकी यही स्थिति थी, संघ का कार्य-भार सम्भालने पर मेरी यही स्थिति थी अर्थादि की समस्याएं ज्यों-२ मैं हल करता गया उस क्षेत्र में वैदिक विचारधारा का प्रचार जब होने लगा कुछ लोगों की शुद्धि भी हुई उन्हें यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होती थी अपने परिचित क्षेत्रों से वे जी भर कर सहयोग भी दिलाते थे।

इसमें सन्देह नहीं यदि श्री त्यागीजी के हाथमें विश्व की आर्यसमाज की नीति निर्धारण का पूर्ण अधिकार होता तो राष्ट्र के हर प्रान्त एक सशक्त दयानन्द सेवाश्रम संघ कुटिर उद्योग और साधन सम्पन्न औषधालय होता इनकी सहयता से हर क्षेत्र पिछड़े लोगों को सेवा द्वारा अपनी ओर आकर्षित किया जाता अच्छे युवक पुरोहित तैयार किये जाते सरल और मधुर भाषा में वैदिक विचारधारा प्रचार और प्रसार किया जाता उनके हृदय में एक आग थी जो सम्पूर्ण हिन्दू जाति के कल्याण के लिए आर्यसमाज सारी शक्ति लगाने की भावना रखती थी अन्तरजातीय विवाह उनकी सूझ थी। मैं अधिक क्या लिखूं मेरा मन और मस्तिष्क अभिन्नतया उनके मन और मस्तिष्क से परिचित रहा उनको शाब्दीक श्रद्धाञ्जलि देने का कोई लाभ नहीं होगा।

सच्ची श्रद्धांजलि तो उनके प्रति यही होगी राष्ट्र के प्रत्येक भाग में धर्मान्तरण रोका जाये पीछड़े वर्ग में सेवा से उनमें विश्वास पैदा किया जाये जात-पात दहेज जैसी कुरीतियां हटाकर शिक्षा सेवा के महा यज्ञ से जाति के पीछे वर्ग को सुरक्षित किया जाये।

—पृथ्वी राज शास्त्री

न्यूयार्क जाते-जाते स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती को स्वर्गीय त्यागी जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि

स्वर्गीय श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी की मृत्यु इतनी अकस्मात हुई कि मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। वे मेरी न्यूयार्क यात्रा का उत्सुकता के साथ प्रबन्ध कर रहे थे। मैं १४ तारीख को प्रातः काल न्यूयार्क आर्यसमाज के उद्घाटन के लिए जा रहा हूं। इस यात्रा के सम्बन्ध में प्रतिदिन त्यागी जी से मेरी बातचीत होती रहती थी।

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) की यात्रा में त्यागी जी मेरे साथ बराबर रहे, और अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन का उन्होंने नेतृत्व किया। हम लोगों ने कई महत्वपूर्ण निर्णय इस सम्मेलन में लिये। अब त्यागी जी का अभाव निरन्तर अखरेगा।

मुझसे श्री त्यागी जी का प्रथम परिचय १९७१ में हुआ था, जब वे मेरे संन्यास संस्कार में सम्मिलित हुए थे। त्यागी जी को हम लोगों ने अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ का उपाध्यक्ष भी बनाया था, जिसे मोरिशस के वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मोहनलाल मोहित के आर्थिक अनुदान से संघठित किया गया है।

त्यागी जी को मैंने अत्यन्त निकट से देखा था। युवकों के वे जन्मजात नेता थे। आर्यसमाज के प्रति उनका सच्चा अनुराग था। अच्छे प्रभावशाली वक्ता थे। देश के दूरस्थ आञ्चलों में उन्होंने निर्भीकता से काम किया। पुरानी पीढ़ी का एक युवक हमसे विदा हो गया। आर्य वीर दल के तो वे प्राण थे।

एक कर्मठ व्यक्तित्व

अकाल मृत्यु होती है या नहीं, इस विषय पर बड़ा वाद-विवाद होता है। कभी-२ बुद्धिमान् लोग भी उसके पक्ष-विपक्ष में तर्कों के तरकस लेकर ऐसे खड़े हो जाते हैं, जैसे युद्ध के मैदान में दो योद्धा आमने-सामने खड़े हों। कुछ लोग कहते हैं कि परमात्मा ने मनुष्य की आयु १०० वर्ष निर्धारित की है, इसलिए इस आयु से पहले होने वाली प्रत्येक मृत्यु अकाल मृत्यु है। दूसरे लोग कहते हैं कि अकाल मृत्यु कभी होती ही नहीं। प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु तभी होती है, जब उसका 'काल' आता है। किसका काल कब आता है, इसका फैसला मनुष्य के हाथ में नहीं है, वह तो विधाता के हाथ में है। इस प्रकार इस बहस का कहीं अन्त नहीं है।

अकाल मृत्यु होती हो या न होती हो, पर एक बात निश्चित है कि प्रत्येक जन्मधारी प्राणी के लिये मृत्यु अवश्यम्भावी है। यम के दूत न तपस्वी और योगी को छोड़ते हैं, न महामृत्युञ्जय का मन्त्र जपने वाले मन्त्रद्रष्टा ऋषियों को, न वृद्धावस्था और मृत्यु को दूर भगाने वाली औषधियों का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को, न मृत्यु से डरने वाले योद्धाओं को, न दानियों को न सेवकों को। मृत्यु तो एक ऐसा महान सपाट समतल बना देने वाला यन्त्र है, जो ऊबड़-खाबड़, ऊंचे नीचे, गड्ढों और टीलों को समान रूप से इकसार कर देता है। परन्तु मृत्यु का देवता भी मानव जगत से एक बात नहीं छीन सका। जब एक दिन मरना अवश्यम्भावी है तब ऐसा क्यों होता है कि किसी के महाप्रयाण पर लोग कहते हैं, कि इस व्यक्ति को अभी नहीं जाना चाहिए था, देश और जाति का जो उपकार इसके माध्यम से हो रहा था, उसके लिए इस को और ठहरना चाहिए था, और किसी-किसी हत भाग्य मानव के लिए जनता यह क्यों कहती है—कि अच्छा हुआ, अमुक व्यक्ति चला गया, उसके जाने से तो धरा का भार कुछ कम हो गया।

शायद मृत्यु के पश्चात् लोक मानस की यह प्रतिक्रिया ही किसी व्यक्ति के जीवन की निरर्थकता और सार्थकता की सबसे बड़ी कसौटी है। जिसके जाने पर सब लोग कहते हैं कि इसे अभी नहीं जाना चाहिए था, वह अकाल मृत्यु है, और जिसके जाने पर लोग पृथ्वी का भार हल्का अनुभव करते हैं, वह काल मृत्यु कही जानी चाहिए।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने जैसा कर्मठ जीवन बिताया उसका उदाहरण मिलना कठिन है। अपने यौवन के प्रारम्भ में ही आर्य समाज के प्रति प्रेम ने उनकी जीवन की धारा पलट दी। और उसके बाद पूरे ५० वर्ष तक अनन्य निष्ठा के साथ आर्य समाज की सेवा में लगे रहे। आर्य वीर दल के संचालक के रूप में आर्य वीर दल को जिस शिखर तक उन्होंने पहुंचाया, वह अतुलनीय है। संसद सदस्य के रूप में धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक प्रस्तुत करके जो राजनीति दर्शन का सही मार्ग दर्शन किया, वह भी अतुलनीय है। और सार्वदेशिक के महामन्त्री के रूप में अलवर, मोरिशस, नैरोबी और लन्दन में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन करके आर्य समाज को देश-देशान्तर में जिस ऊंचाई का स्पर्श करने का सौभाग्य प्रदान किया, वह भी अतुलनीय है। ऐसे कर्मठ व्यक्ति के निधन पर यह भावना सहज ही मन में उठती है—

"अभी यह व्यक्तित्व कुछ और समय तक हमारे बीच रहता तो कितना अच्छा होता।"

—क्षितीश वेदालंकार

मैथ्यू आयोग की भान्ति वैंकट रमैया आयोग भी हरियाणा को कुछ नहीं दे सकेगा

प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरियाणा रक्षा वाहिनी

रोहतक १२ मई कल दयानन्द मठ, रोहतक में हरियाणा रक्षा वाहिनी की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें हरियाणा के कोने कोने से कार्यकर्ता उपस्थित हुए। इस अवसर पर हरियाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो. शेरसिंह ने कार्यकर्ताओं को बताया कि जिस प्रकार मैथ्यू आयोग के हाथ बान्ध दिये थे और एक छोटे से पंजाबी भाषा वाले ग्राम कन्दू खेड़ा के कारण सैकड़ों हिन्दी भाषी ग्राम हरियाणा को नही दे सका, इसी प्रकार वैंकट रमैया आयोग के अधिकार क्षेत्र से अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र से निकाल कर इसके भी हाथ बान्ध दिये हैं। अत: यह भी हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा में नही दे सकेगा। ऐसी स्थिति में हरियाणा रक्षा वाहिनी ने निश्चय किया है कि अब आयोग के सम्मुख हरियाणा का दावा प्रस्तुत नही किया जायेगा आपने हरियाणा सरकार को भी सुझाव दिया है कि जब यह आयोग हरियाणा को कुछ दे ही नही सकता तो इस आयोग का बहिष्कार करना चाहिये और अगले सीमा आयोग को ही हरियाणा का दावा प्रस्तुत करके न्याय प्राप्त करने का यत्न किया जा। प्रो० शेरसिंह ने मैथ्यू आयोग द्वारा अबोहर फाजिल्का क्षेत्रों में जनगणना कराने के परिणाम पर चर्चा करते हुए कहा कि जिन ग्रामों में अपनी भाषा हिन्दी लिखवाई थी, उन्हें हरियाणा में सम्मिलित कराना तो दूर रहा, पंजाब सरकार तथा अकाली कार्यकर्ता उन ग्राम वासियों को इसका दण्ड दे रहे हैं। भारत सरकार को चाहिये कि उन हिन्दी भाषी जनता को अकालियों की गुलामी से शीघ्र आजाद करायें।

हरियाणा को पानी का भी उचित भाग मिलना चाहिए और पंजाब विभाजन से पूर्व हरियाणा के किसानों को जितना पानी मिलता था और जो आबियाना दिया जाता था, उसको आधार मान कर ही ट्रिब्यूनल को पानी बटवारा करने हरियाणा की जनता को न्याय देना चाहिए।

सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का कार्य निर्माण भारत सरकार की देख रेख में किसी निगम द्वारा सेना की उपस्थिति मे शीघ्र करवाना चाहिए।

खालिस्तान की योजना का उल्लेख करते हुए प्रो० साहब ने भारत से मांग की कि राष्ट्र द्रोही तथा भारत के टुकड़े करने वालों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही करके पंजाब में शान्ति स्थापित करनी चाहिए। प्रो० शेरसिंह इन प्रस्तावों का सभी ने समर्थन किया।

इस अवसर पर अबोहर के भूतपूर्व विधायक मास्टर तेगराम जी ने हरियाणा के कार्यकर्ताओं से अबोहर फाजिल्का की हिन्दी भाषी जनता को हरियाणा मे मिलाने के लिये पूरा सहयोग प्रदान करने की अपील की। पंजाब जिला संगरूर के ग्राम अमदाला के सरपंच चौ० भलेराम जैन ने बताया कि हमने वैंकट रमैया आयोग से जिला संगरूर के २९ तथा जिला पटियाला के १६ ग्रामों को जिनकी भाषा हिन्दी तथा खान-पान, रहन-सहन आदि हरियाणवी है को पंजाब से निकाल कर हरियाणा में मिलाने के लिए दावा किया है।

चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक ने सुझाव दिया कि यदि पंजाब सरकार हरियाणा को हिन्दी भाषी तथा नहरों के लिए पानी नही दे तो हरियाणा की सीमा से कोयला तथा पैट्रोल पंजाब को भेजना बन्द कर दिया जावे। ईंट का जवाब पत्थर से देने पर ही अकाली सन्मार्ग पर आ सकेंगे।

—केदारसिंह आर्य, प्रचार मन्त्री
हरियाणा रक्षा वाहिनी दयानन्द मठ, रोहतक

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

आत्मकथ्य परिचय

मेरे पत्रकार जीवन के पचास वर्ष समाप्त हो रहे हैं—पत्रकार जीवन की आधी शताब्दी बीत गई। इस दीर्घकाल में बीसियों मधुर और कटु अनुभव हुए हैं। इस दीर्घकाल को मैं तीन भागों में बांट सकता हूं—प्रागैतिहासिक, अर्जुन और सम्पदा।

विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों की पत्र-पत्रिकाओं में कुछ वर्ष तक लेख आदि देने के बाद मुझे हिन्दी के यशस्वी पत्रकार श्री हरिभाऊ उपाध्याय के साथ 'त्यागभूमि' में तीन वर्ष काम करने का मौका मिला। इसमें भी 'विश्व दर्शन' और 'देश दर्शन' दो महत्वपूर्ण स्तम्भ मेरे हाथ में थे। उन दिनों श्री घनश्यामदास बिड़ला त्यागभूमि में विशेष रुचि लेते थे। उनके परामर्श से श्री पारसनाथ सिन्हा मेरी लिखी सामग्री पर एक दृष्टि डाल लिया करते थे। इस व्यवस्था का परिणाम यह हुआ कि मुझे पूर्ण परिश्रम और अध्ययन के साथ अपनी सामग्री तैयार करनी पड़ती थी।

अजमेर से दिल्ली आने के बाद बिड़ला मिल में मुझे 'लेबर सेक्रेटरी' के तौर पर काम करना पड़ा। इन वर्षों में मुझे श्रम समस्या के अध्ययन का अच्छा अवसर मिला और मुझे अनेक कटु और मधुर अनुभव हुए।

१६३३ से उन दिनों के प्रसिद्ध पत्र—'वीर अर्जुन' में काम किया। इन दिनों मुझे हिन्दी के एक मूर्धन्य पत्रकार श्री पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति के निरीक्षण में अर्जुन के सम्पादकीय विभाग में काम करने का अवसर मिला और २० वर्ष तक इसी पत्र के विभिन्न पदों पर काम करता रहा।

इस पत्र में जहां मुझे आदरणीय पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनेक बहुमूल्य परामर्श मिलते रहे वहां अपने सहयोगियों—श्री सत्यकाम विद्यालंकार (३ वर्ष) और रामगोपाल विद्यालंकार (१० वर्ष) के स्नेहपूर्ण सहयोग का भी मुझे लाभ मिलता रहा।

अर्जुन की नीति विशुद्ध राष्ट्रीय थी। इसलिए मुझे पत्र में कार्य करते हुए किसी प्रकार की दुविधा नहीं हुई। यद्यपि अनेक प्रश्नों पर मेरा पत्र के संचालक पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति से मतभेद भी रहा। किन्तु यह उनकी प्रशंसनीय उदारता ही रही कि उन्होंने मेरे काम में कभी हस्तक्षेप नहीं किया। उनका यह परामर्श मुझे सदा स्मरण रहेगा कि सम्पादक को अपने विचारों का प्रकाशन स्वतन्त्रता और निर्भीकता से करना चाहिए। अर्जुन में कार्य करते हुए अनेक ऐसे अवसर आए जब कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश के नेता आकर के उनसे अपनी शिकायतें करते थे। किन्तु उन्हें सदा ये उत्तर दिया कि सम्पादक स्वयं उत्तरदायी व्यक्ति है। आपको जो कहना हो उन्हें ही कहिए। एक-दो अवसर ऐसे भी आए जब कि स्वयं पण्डित इन्द्रजी के विरुद्ध भी एक समाचार छप गया। मैं पण्डित जी की सहनशीलता और उदारता का कायल हो गया, जब उन्होंने यह कहा कि जब मेरा सम्पादक ही इसे प्रकाशन योग्य ठहराता है, तो मुझे कुछ नहीं कहना। इसके विपरीत जब मैं अन्य संचालकों का व्यवहार देखता हूं जिनमें आज के कांग्रेसी नेता भी शामिल हैं तो स्वयं पण्डित इन्द्र जी की उदारता पर मेरा आश्चर्य बढ़ जाता है। यद्यपि अर्जुन उन दिनों में सबसे प्रतिष्ठित पत्र था और हिन्दी प्रदेशों में उसकी धाक थी किन्तु आर्थिक दृष्टि से उसे कठिनाइयों का ही सामना करना पड़ा। उन दिनों न सरकार के विज्ञापनों का कुछ सहयोग मिलता था और न उद्योगपतियों का ही हिन्दी पत्रों को सहयोग मिलता था। स्वयं पण्डितजी भी कोई उद्योगपति नहीं थे। इसलिये अर्जुन के कार्यकर्ताओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। बहुत वर्षों तक मैं ही 'वीर अर्जुन' साप्ताहिक पत्र का अकेला सम्पादन करता रहा। कोई प्रूफ रीडर तक मुझे नहीं मिल सका। इसके बावजूद अर्जुन अपनी सामग्री के कारण ही लोकप्रिय रहा।

अर्जुन की लोकप्रियता का मुख्य श्रेय उसकी स्वतन्त्र राष्ट्रीय नीति को था। वह किसी दल और दलगत राजनीति में नहीं पड़ा। न कोई समृद्ध उद्योगपति उसे प्रभावित कर सका। अनेक प्रश्नों पर मेरा तत्कालीन माननीय पत्रकारों से भी मतभेद प्रकट हुआ और मैं निर्भयतापूर्वक राष्ट्रहित की दृष्टि प्रत्येक प्रश्न पर स्वतन्त्र विचार करता रहा। ऐसे ही प्रश्नों में हिन्दी के स्थान पर प्रान्तीय भाषाओं के प्रचार का विरोध भी मुझे करना पड़ा।

स्वयं पण्डित इन्द्र जी ने एक लेख दिल्ली के एक प्रसिद्ध उद्योगपति के विरुद्ध लिखा और जब उन्होंने पण्डित इन्द्र जी से बात करनी चाही तो वे टाल गए। बातचीत में उन्होंने मुझे कहा कि उद्योगपति मुझे आर्थिक सहयोग का प्रलोभन देकर रोक सकते हैं। मैंने इसका अवसर आने देना उचित नहीं समझा।

अर्जुन में बीस वर्ष तक कार्य करने के पश्चात् अर्जुन छोड़ने पर विवश होना पड़ा, क्योंकि अर्जुन के अधिकारी बदल गए थे। नये अधिकारियों से मेरी नीति नहीं मिलती थी। मैंने उन्हें स्पष्ट कह दिया कि जो कलम कांग्रेस-नेहरू की राष्ट्रीय नीतियों की प्रशंसा करती रही है, वह कैसे आज उनका विरोध करे। एक बार नये अधिकारियों ने पण्डित नेहरू की एक नीति के पक्ष में एक सम्पादकीय लिखने से रोकना चाहा। मैं उन दिनों कार्यालय से छुट्टियों पर था किन्तु मेरा नाम सम्पादक के नाम पर छपता था। इसलिए मैं स्वयं कार्यालय में गया और लेख छपने के लिए दे दिया। इन मतभेदों का स्वाभाविक परिणाम यह होना था कि मैं अर्जुन छोड़ दूं।

इसके बाद मेरे सामने प्रश्न आया कि मैं क्या करूं। तब यह निश्चय किया कि किसी पत्र में स्वतन्त्र रूप से ही काम करना सम्भव है। सम्पदा के प्रारम्भ का यही मूल कारण था।

उन दिनों राजनीति सम्बन्धी अनेक पत्र हिन्दी में निकलने लगे थे जिन्हें अनेक उद्योगपति अपने समृद्ध साधनों से चला रहे थे। स्वराज्य प्राप्ति का एक मुख्य उद्देश्य पूरा हो चुका था। अब देश के सामने मुख्य समस्या थी स्वराज्य के चेक को नकदी में भुनाने की। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने आर्थिक समृद्धि का एक महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

अर्जुन की चर्चा करते हुए उसके कुछ विशेषांकों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है। यों तो उन दिनों के समाचार पत्र दीवाली या दशहरे आदि पर्वों पर अपने विशेषांक प्रकाशित करते थे। किन्तु

अर्जुन ने एक नई परिपाटी को जन्म दिया । उसने अनेक विशेष विषयों पर अपने विशेषांक प्रकाशित किये । स्वराज्य अंक, महिला अंक, रियासत अंक, उद्योग व्यापार अंक और किसान अंक आदि इनमे विशेष उल्लेखनीय हैं । इन अंकों का हिन्दी पत्रकारिता मे विशेष स्थान रहा है । इनमे लेख चयन अधिकाधिक ज्ञातव्य सामग्री से युक्त होता था । इन अंकों को तत्कालीन पाठक बहुत रुचि से पढते थे और अपना ज्ञान वर्द्धन करते थे । इन विशेष विषयो पर प्रकाशित विशेषांकों की परम्परा मैंने सम्पदा में भी जारी रखी । बालबन्धु परिषद् का पृष्ठ अब तो सामान्य हो गया है किन्तु इसका प्रारम्भ अर्जुन ने ही किया था । इसे बाल साहित्य के विशेषज्ञ श्री रामकृष्ण खद्दर जी का पूर्ण सहयोग मिलता था ।

यह वर्ष ऐसे महत्वपूर्ण समय के रहे हैं जब देश राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा था । इसलिए सम्पादक को भी अधिक परिश्रम करना पडता था । रियासतों मे प्रजा मण्डल और सार्वजनिक सभा के आन्दोलन जारी थे । सरकार की आर्थिक नीतियो मे महत्वपूर्ण परिवर्तन आ रहे थे । भारत का करोडों रुपये का कर्ज ब्रिटेन पर था किन्तु उसने वह सब कर्ज एक झटके मे भारत पर डाल दिया । हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी उन दिनों राजनीतिक दलबन्दी का शिकार हो रहा था । इन परिस्थितियों मे सम्पादक का कर्तव्य बहुत बढ गया था । इन परिस्थितियों मे उसे अपनी जानकारी और दृष्टि बहुत व्यापक रखनी पडती थी । इसलिए उन दिनों के पत्रकार को बहुत अध्ययन तथा परिश्रम करना पडता था । अर्जुन मे काम करते हुए हमे अपने उत्तरदायित्व का बहुत ध्यान रखना पडता था । जो कि आज के लिये एक स्वप्न की चीज हो गई है ।

सम्पदा

सम्पदा का प्रकाशन एक साधनहीन परन्तु उत्साही पत्रकार का प्रकाशन है । इस दृष्टि से सफल पत्र संचालक नहीं, सफल पत्रकार को सामने रखना होगा ।

सम्पदा ने अपने प्रथम अंक मे कुछ नीतियों का उल्लेख किया था और वे नीतियां थीं—वर्गहित या दलहित की अपेक्षा राष्ट्रहित को सामने रखना । सम्पदा का यह विश्वास रहा है कि राष्ट्रीयता का उददेश्य तभी पूर्ण हो सकता है जब वर्ग, भाषावाद, प्रान्त आदि के संकुचित क्षेत्रों से ऊंचा उठकर समस्त राष्ट्रहित की दृष्टि से प्रत्येक प्रश्न पर गुणावगुण का विचार करते हुए लेख-सामग्री दी जाए । इसलिए सम्पदा न उद्योगपति का पत्रहै और न किसी समाजवादी विचारधारा का । उसने समय-समय पर मजदूर अंक, समाजवादी विचारधारा का । उसने समय-समय पर मजदूर अंक, समाजवाद अंक, किसान अंक प्रकाशित करके इन वर्गों के हितो की उपेक्षा नही कीहै । सम्पदा की एक अन्य विशेषता यह रही है कि सामान्यत देश के अंग्रेजी पढे लिखे विद्वान अर्थशास्त्र को पश्चिम की दृष्टि से देखते हैं जब कि सम्पदा सर्वोदय अर्थशास्त्र को विशेष महत्त्व देती है और यही विशषता उसे देश मे प्रचलित अर्थशास्त्र के पत्रों से अलग करती है । सम्पदा का यह दृढ़ अभिमत रहा है कि महात्मा गांधी ही व्यापक दृष्टि से नव-निर्माण की विचारधारा के प्रबल स्रोत रहे हैं । इस दृष्टि से सम्पदा के प्राय प्रत्येक अंक मे सर्वोदय पृष्ठ दिया जाता है । विभिन्न उद्योगों की समस्याओं पर उसके सुविचारित लेख प्राय अध्ययन के आकर्षण रहे हैं । पूना से प्रकाशित एक अंग्रेजी पत्र ने तो यह लिखा कि यह अंक प्रत्येक देशभक्त की मेज पर रखने लायक हैं । अर्थशास्त्र के एक वरिष्ठ अध्यापक के शब्दों मे सम्पदा के विशषांक गीता और बाइबिल की तरह पढने लायक हैं । इनमें विषय की विविधता और सर्वांगीणता और स्पष्ट दृष्टि का महत्त्व रहा है । समाजवाद अंक में तास एजेंसी के पांच पृष्ठ विज्ञापन होने के बावजूद रूस की आर्थिक दृष्टि का समर्थन नहीं किया । एक उद्योगपति ने जब सम्पदा में प्रकाशित विचारों पर कुछ आपत्ति की तो सम्पदा का उत्तर था—'यह सम्पादक का दृष्टिकोण है ।' एक मिल मैनेजर ने यह कहा कि 'आप तो सदा सरकारी नीति का समर्थन करते हैं । अपने मित्रों और हितैषियों की सम्मति के बावजूद सम्पदा एक विशेष स्वतन्त्र दृष्टि रखती है । तीन-चार पंचवर्षीय योजनाओं पर प्रकाशित विशेषांकों मे जहां उस योजना का प्रामाणिक परिचय दिया जाता रहा है, वहा उसके आलोचक पक्ष की भी उपेक्षा भले ही हो गई हो । इसके कारण सम्पदा के व्यवहारिक पक्ष की उपेक्षा भले ही हो गई हो किन्तु उसकी स्वतन्त्र पत्रकारिता की उपेक्षा नहीं हुई ।

मैंने श्रद्धेय पण्डित इन्द्रजी और हरिभाऊ उपाध्याय के साथ रहकर पत्रकारिता की जो शिक्षा ली थी, उसमे स्वतन्त्र दृष्टि और निर्भीक विचार प्रकाशन की विशेषताए थीं । इन्ही विशेषताओं को मैंने सदा अपने सामने रखा । मुझे कुछ आदरणीय हितैषी मित्रों ने समय समय पर यह राय दी कि मैं व्यावहारिक पक्ष की उपेक्षा न करू और किसी उद्योगपति या सम्पन्न संस्था से विशेष सम्पर्क रखू ताकि सम्पदा के संचालन मे कठिनता न हो । किन्तु इसका अर्थ था कि मैं उसके प्रभाव मे रहू ।

सम्पदा का जीवन एक साधनहीन पत्रकार का जीवन रहा है । फिर पक्षाघात के आक्रमण और मेरी निरन्तर अस्वस्थता ने मुझे सम्पदा के प्रचार और प्रसार मे भी असमर्थ कर दिया । उस कारण मैं विभिन्न प्रदेशों मे जाकर सम्पर्क स्थापित नहीं कर सका । फिर भी मुझे इस बात का सन्तोष है कि सम्पदा की सम्पादकीय नीति और विभिन्न लेखको के अमूल्य सहयोग के कारण सम्पदा अपने जीवन के २४ वर्ष पूरे कर सकी है । सम्पदा का हिन्दी पत्रकारिता में एक विशेष स्थान रहा है और उसके विशेषांक आज भी पठनीय और आकर्षक रहे हैं ।

बल और बलिदान की वीर भूमि चित्तौड़गढ़

श्री ब्रजकिशोर रस्तोगी

जिन वीर गाथाओं के लिए इतिहास के पन्ने लहू से रंगे हैं। तलवार की धार जिनकी अमर कीर्ति है। उसी वंशानुगत क्रम में जन्मे महाराजा सज्जनसिंह को अंग्रेजी सरकार की तरफ से सन् १८८१ में जी. सी एस. आई. (ग्रेट कमाण्डर आफ दी स्टार आफ इण्डिया) नामक सर्वोच्च उपाधि से लार्ड रिपन ने स्वयं चित्तौड़ आकर सम्मानित करना चाहा। लेकिन सूर्यकुल भूषण महाराणा ने यह उपाधि लेने से इन्कार किया और स्पष्ट शब्दो में कहा कि "उदयपुर के महाराणा "हिन्दुआ सूरज" कहलाते हैं इसलिए मुझे स्टार (तारा) बनने की आवश्यकता नही है।" इस पर गवर्नर जनरल ने यह कहलाया कि यह खिताब बराबरी वालों को मिलता, उसे आप अवश्य स्वीकार करें।

केसरिया बाने की रक्षा के लिए बप्पा रावल की अमर गाथा, राणा कुम्भा का युद्ध कौशल, सांगा का देश प्रेम, प्रताप का शौर्य जयमल पत्ता का पराक्रम सरदार झाला की स्वामी भक्ति, भामाशाह द्वारा पीढ़ियो का संचित धन राणा के चरणों में अर्पण, अनेकानेक जीवन्त और रोगटे खड़े कर देने वाले संस्मरण को बनाया है उन लोगों ने जो जन्म भूमि को माता का सम्मान देते हैं, पूजा करते, और अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं। नस नस में, वीरता, अदम्य साहस, देश धर्म के लिए कुर्बानी का जज्बा पैदा करना चित्तौड़ वंशज की विशेषता हैं।

चित्तौड़, मेवाड़ और उदयपुर राज्य एक दूसरे के पर्याय कहे जा सकते है। उसी राज्य का आदर्श था "जो दृढ़ राखे धर्म पर तिहि राखे करतार राज्य के महाराजा अपने को प्रजा का सेवक ही समझते थे। उन्होने सदैव राज्य का स्वामी अपने इष्टदेव एक लिंग महादेव को ही स्वीकार किया। अपने को तो केवल उनका दीवान ही सम ते थे। यही कारण है कि मेवाड़ में महाराणा को राजपूताने मे दीवान जी कहते है।

मेवाड़ राज्य का यशगौरव चित्तौड़गढ़ के खण्डहरो मे आज भी सुरक्षित है। महाराजाओं की विजय नगरी वीर भूमि मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ है। ५०० फुट ऊंची दुर्गम पहाड़ियो पर एक पृथक उभरा हुआ ढालूद्वार पर्वत पर चित्तौड़गढ़ का दुर्ग लगभग ८ मील के परिक्षेत्र मे है। प्राचीन नगर पर अनेक बर्बर आक्रमण हुए जिसकी कहानी उसके खंडहर मन्दिर महल कह रहे हैं। जिसके पराक्रम की यशोगाथा से प्रेरित होकर ब्रिटिश इतिहासकार कर्नल टाड ने फरवरी १८२१ में यहां भ्रमण किया और बुरी तरह उजाड़े गये नगर को देखकर रो उठा। उसके मर्म भेदी शब्दो को यों व्यक्त किया जा सकता है।

"युगों के अवशेषों के चारों ओर मैं विचार मग्न हो गया हूँ। दुर्ग पर पड़ती हुई सूरज की अन्तिम किरण को भी निर्मेष देखता रहा। इसके दुःखों को किसने अनुभव किया है। यहा के चिन्ह स्वय अपनी गाथा कहते हैं। वे कार्य जिनको मुरझाना नही चाहिए। वे नाम जिनकी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। वह गौरव जो उजड़ रहा है उसे बनाया रखना चाहिए। जब तक सन्ध्या ने अपने काले कफन से उन अवशेषों, मन्दिर महलों को ढक न दिया तब तक मैं उन्हें निरन्तर देखता रहा है। वह राष्ट्रों में महान राष्ट्र, राजाओं महाराजा आज कितना दया का पात्र बन गया है।"

सन् १८१८ में महाराणा भीमसिंह के शासनकाल मे मेवाड़ रियासत के लिए अंग्रेजों ने अपना राजदूत बनाकर कर्नल टाड को भेजा था। उसने राजस्थान का इतिहास अपने निजी व्यय से छपवाकर अंग्रेजी में प्रकाशित करवाया। (एनाल्स एण्ड एन्टिक्वटीज आफ राजस्थान) उसने वीर भूमि राजस्थान के लिए लिखा है कि राजस्थान में कोई छोटा-सा राज्य भी ऐसा नहीं है जिसमें थर्मापीली (योरप में एक स्थान) जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहा लियोनिडास जैसा योद्धा उत्पन्न न हुआ हो।"

चित्तौड़ का इतिहास—इसका नाम चित्रांगद या चित्रकूट था जिसका अपभ्रंश और अधिक लोकप्रिय नाम हुआ चित्तौड़गढ़। यह मेवाड़ की प्राचीन राजधानी बप्पारावल की नगरी है। वीरता और धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध, [illegible] में कम, लेकिन मातृ भूमि के खातिर मर मिटने का दम रखने वाले राजपूतों का इतिहास चित्तौड़ का इतिहास है। उन्होंने सहस्रों लड़ाइयां जीती हैं। जब कभी उनकी पराजय हुई तो भी उनके शौर्य और पराक्रम की सर्वत्र प्रशंसा ही हुई हैं। उनकी यश कीर्ति लोकगीतों में मिलती है। चित्तौड़ के कुल गौरव में बप्पारावल, रत्नसेनसिंह महाराणा कुम्भा, राणा सागा, उदयसिंह, महाराणा प्रताप, अमरसिंह राणा लक्ष्मणसिंह जरातसिंह, राजसिंह, भीमसिंह, फतेहसिंह, सज्जनसिंह, सरूपसिंह, भगवतसिंह, जो विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष भी थे।

१५ शताब्दी के मध्य महाराणा कुम्भा-सिंहासनारूढ़ थे। स्वयं सर्वशक्ति सम्पन्न एक निर्भीक योद्धा, महान विद्वान. कला और शिल्प कला के आश्रय दाता थे। इन्होंने अनेकों लड़ाइयां जीती थी। सन १४४० के लगभग मालवा और गुजरात दोनों के सुल्तानो ने मिलकर मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया था किन्तु महाराणा कुम्भा ने दोनो को बुरी तरह पराजित किया। इस शानदार विजय के उपलक्ष्य में राणा कुम्भा ने चित्तौड़गढ के दुर्ग मे विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया। उसी समय एक लिंग महादेव के मन्दिर का भी जीर्णोद्धार करवाया। महाराणा सागा ने अपने पुर्वजो की शान को बनाये रखा। उन्होंने दिल्ली सुल्तान इब्राहीम लोदी को दो बार परास्त किया। सागा के बाद उदयसिंह और महाराणा प्रताप मातृभूमि के लिए सघर्ष करते रहे। प्रताप और बूंदी नरेश के सिवाय सब राजपूत राजा अकबर को अपनी पुत्रियां भेट कर चुके थे। इससे उनका सिर नीचा हो गया था। केवल प्रताप का ही स्वाभिमान सुरक्षित था। उसने अकबर के सामने अपना सिर तक नहीं झुकाया पुत्री भेट करने का तो प्रश्न ही नही उठता था। अन्त में महाराणा परिवार की ही विजय हुई और राणा राजसिंह के शासन काल मे चित्तौड़गढ़ राजपूतों के अधिकार में था।

जब बादशाह औरंगजेब ने हिन्दू मन्दिरो को नष्ट करना शुरू किया। उसी समय उसकी धर्मान्ध नीति से दुःखी होकर गोस्वामी दमोदरदास जी मथुरा के गोवर्धन मन्दिर की प्रसिद्ध मूर्ति श्री नाथ जी का विग्रह लेकर राजस्थान भर में घूमते रहे, कोई कोई रखने के लिए तैयार न था। बूंदी, कोटा, पुष्कर, किशनगढ़ जोधपुर सभी नरेशों ने अपने यहा रखने एवं सहारा देने से इन्कार कर दिया। उदयपुर के महाराणा राजसिंह ही थे जिन्होंने न केवल मूर्ति की स्थापना करवाई बल्कि पूजा पाठ के लिए सिहाड गाव भेट कर दिया। यह कस्बा आज नाथद्वारा के नाम से जाना जाता है। महाराणा यह सकल्प किया कि "औरंगजेब उस मूर्ति को तभी हाथ लगा सकेगा, जब एक लाख राजपूत उसकी तलवार से मार दिये जाएंगे।"

निलंगा आर्य महासम्मेलन : एक दृढ़ संकल्प

निलंगा १२ मई। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के यहां हुए खुले अधिवेशन में दिशानिर्देश करते हुए कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि प्रत्येक आर्य समाज को अपने यहां एक पाठशाला, एक व्यायामशाला और एक यज्ञशाला रखनी चाहिए। यह देश की सांस्कृतिक शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक है।

महासम्मेलन के अध्यक्ष पद से विश्वबन्धु शास्त्री ने कहा कि स्वर्गीय शेषराव वाघमारे ने जिनकी स्मृति में यहां सम्मेलन हुआ, अपना सारा जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित किया था। यह हर्ष की बात है कि महाराष्ट्र के इस निलंगा क्षेत्र में सम्मेलन में भाग लेने के लिए १० हजार से भी अधिक प्रतिनिधि इस राज्य के कोने-कोने से आए हैं। उनके जीवन को सामने रखकर उनके समान ही हमें सारे देश में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कार्यकर्त्ताओं की जरूरत है जिसे महाराष्ट्र पूरा कर सकेगा।

युवा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए नरेश आचार्य ने कहा कि युवकों को आहार की शुद्धता रखनी चाहिये। इससे मन की शुद्धता रखनी चाहिये। इससे मन को शुद्ध रखने में सहायता होती है। युवकों को स्वचरित्र का निर्माण करने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिये।

इसी सम्मेलन का संचालन करते हुए देवरत्न आर्य ने कहा कि मादक द्रव्यों के त्याग के साथ रहन-सहन में शुद्धता रखनी चाहिए। प्रत्येक युवक को बलवान भी होना चाहिये और इसके लिए सर्वत्र आर्य वीर दलों की सेना गठित की जाय।

आध्यापक सत्यकाम पाठक के आह्वान पर सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए हजारों प्रतिनिधियों में से २ सौ युवकों ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज के कार्यों के लिये अर्पित करने का संकल्प किया।

राष्ट्र की रक्षा

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में देवरत्न आर्य ने कहा कि साम्प्रदायिक शक्तियां सिर उठा रही हैं। पंजाब और असम में विदेशी तत्व घुस कर वहां एकता को नष्ट कर रहे हैं। हिन्दुओं और सिखों में द्वेष की भावना फैलाना पाकिस्तान का उद्देश्य रहा है। असम में घुसपैठियों के जरिए भाषावाद को लेकर उपद्रव होते हैं। हिन्दुओं को स्वयं की एकता करनी होगी। केवल हिन्दू एकता ही देश को बचा सकती है। हमें ऊंचनीच, भाषावाद, प्रांतवाद, धनी-निर्धन आदि की सभी संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठना होगा।

महा सम्मेलन में भोलराम पाटील, उत्तममुनि, हरिश्चन्द्र गुरुजी के अत्यन्त प्रभावशाली भाषण हुए।

वेद सम्मेलन

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए विश्वबन्धु शास्त्री ने 'विधि, और संविधान' की चर्चा की और कहा कि ईश्वर विधि है, उसकी बनाई सृष्टि ही विधान है और मनुष्यों को इन दोनों के सम्बन्ध में जितना ज्ञान आवश्यक है, वह वेद अर्थात् संविधान है। उन्होंने बताया कि वेद सभी सत्य ज्ञान की पुस्तक है। वेद चार हैं और अपौरुषय हैं। इनका सही अर्थ और ज्ञान होना जरूरी है। केवल विद्वान ही इनके अर्थ नहीं कर सकता। एतदर्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का पठन जरूरी है।

डा० सोमदेव शास्त्री ने सम्मेलन करते हुए मन्त्रों के ज्ञान के साथ आर्यों के ज्ञान के साथ आर्यों के ज्ञान पर बल दिया और प्रत्येक आर्य परिवार को संस्कृत पढ़ने के लिये आह्वान किया।

डा० वशिष्ठ बल से ने कहा कि वेद अजर और अमर हैं। 'पश्य देवस्य काव्यं, न ममार न जीर्यति' कहा है। ईश्वर का काव्य कभी पुराना नहीं होता है। इस कारण वेदों की उपयोगिता आज भी है। सारे ज्ञान उससे ही निकले हैं। इसे नष्ट नहीं किया जा

प्रा० सुनीति देवी, अनिला देवी, पृथ्वीराज शास्त्री, प्रो० चह्वाण आदि के भी भाषण हुए।

यजुर्वेद महायज्ञ ५ मई के प्रातः काल से ११ मई तक चला। ब्रह्मा के रूप में पृथ्वीराज शास्त्री ने भाग लिया। यज्ञ के बाद सोमदेव शास्त्री का गीता प्रवचन भी हुआ। शिव जयन्ती के दिन शाम को ५हजार आर्यों का जुलूस निकला जिसमें सारा निलंगा शहर गूंज उठा। ओमकुमार वर्मा के भजनोपदेश से सारी बस्ती तृप्तहो गई।

महिला सम्मेलन का संचालन भारती आर्य ने किया और अध्यक्षता प्रो० सुनीती देवी ने की। दौलतराम चड्ढा, पांडूरग राव और बलीराम पाटील और आप्पाजी बाहेती के सहयोग से कार्यकर्त्ता सम्मेलन में हजारों प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

(नवभारत टाइम्स दिनांक १३-५-१९८६)

त्यागीजी के निधन पर आर्यजगत् शोक संतप्त

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में शोक प्रस्तावों का अम्बार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानमन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के निधन को दो सप्ताह बीत चुके हैं, लेकिन शोकाकुल आर्य जनों के आंसू थमने में नहीं आ रहे। सार्वदेशिक सभा को तार और पत्र द्वारा मिलने वाले शोक प्रस्तावों का अम्बार लग गया है और यह क्रम अभी भी जारी है।

प्रस्ताव भेजने वाली कुछ संस्थाओं और व्यक्तियों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं:—

आर्यसमाज राजामण्डी, आगरा, श्री गजानन्द आर्य, कलकत्ता, श्री इन्द्रजीत लखपति आर्य, मोगरगा (लातूर), भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा आन्ध्र प्रदेश (सिकन्दराबाद) आर्यसमाज बहराइच, आर्यसमाज गोलागोकर्णनाथ (खीरी), आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के विदर्भ नागपुर, आर्यसमाज पारणा (मेहसाणा) आर्यसमाज आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड (वाराणसी), और महिला आर्यसमाज, गाजियाबाद, आर्य समाज वैदिक आश्रम, ऋषिकेश, आर्य समाज नारायण विहार (दिल्ली), आर्यसमाज पुलबगश (दिल्ली), आर्य गुरुकुल महाविद्यालय कालवा (जींद), आर्यसमाज बुन्दरकी (मुरादाबाद), आर्यसमाज राजनगर, गाजियाबाद, आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक, बसवकल्याण, आर्यसमाज हुमनाबाद (बीदर), आर्यसमाज अनाज मन्डी, शाहदरा दिल्ली, आर्यसमाज शामली, (मुजफ्फर नगर),विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी), आर्यसमाज उस्का बाजार (बस्ती), आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर), आर्य स्त्रीसमाज, मेरठ शहर, आर्य समाज बुरहानपुर (मध्य प्रदेश), श्री अमरनाथ प्रसाद, बरबीघ (मुंगेर), श्री मोतीलाल आर्य लाडनू, श्री फूलचन्द्र शर्मा 'निडर', भिवानी, आर्यसमाज पीपाड़नगर (जोधपुर), आर्यसमाज भगत कंवर राम कालोनी, इन्दौर, आर्यसमाज बस्ती, श्री मुरारी लाल आर्य मण्डी (हिमाचल प्रदेश), श्री रामोतार शास्त्री, पटना, आर्यसमाज शाहजहांपुर, श्री जगदीश चन्द्र मल्होत्रा, आर्य विद्यामन्दिर, बम्बई, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती गोदभागा, चन्द्रपाल आर्य आदर्श इण्टर कालेज, बहजोई (मुरादाबाद), दयानन्द सेवाश्रम, बासवाड़ा, जिला बुलन्द शहर, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, खुर्जा, दयानन्द सेवाश्रम संघ बोकाजान, दीमापुर, आर्यसमाज आगरा नगर, जिला सहारनपुर आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज लश्कर, आर्यसमाज भिलाई नगर, ब्रह्मचारी आर्य नरेश, दिल्ली, आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर, असम आर्य प्रतिनिधि सभा, गोहाटी, आर्य समाज मन्दिर बलदेवाश्रम, खुरजा, आर्यसमाज मोहतानगर, इन्दौर, स्वामी सुमेधानन्द, दयानन्द मठ, चम्बा, आर्यसमाज शिवाजी चौक खण्वा, जिला पूर्व निमाड़, द्वितीय आर्य महासम्मेलन, निलंगा, जिला लातूर, आर्य वीर दल, जींद, वेद प्रचार समिति, सहारनपुर, आर्य समाज केराकत (जौनपुर), आर्यसमाज सालापार (सहारपुर) आर्य समाज महाराजपुर, जिला छतरपुर, दयानन्द सेवाश्रम, थांदला, जिला झाबुआ, आर्यसमाज मलाही (पूर्वी चम्पारण), आर्यसमाज जरीपटका (नागपुर), आर्यसमाज हरदोई, आर्यसमाज गोरेगांव, बम्बई, श्री अम्बाजी आनन्दराव आर्य, हुमनाबाद (बीदर), आर्य समाज चिटगोप्पा (जिला बिदर), आर्यसमाज गुजरांवाला टाउन (दिल्ली) आर्यसमाज फिरोजाबाद (आगरा), आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, आर्यसमाज नई मण्डी, (मुजफ्फर नगर), श्री रामकुमार शर्मा, धामपुर (बिजनौर), जिला आर्य सभा बरबीघा (मुंगेर), आर्यसमाज बीसलपुर (पीलीभीत), डा० ओम्प्रकाश शर्मा, गवां (उत्तर प्रदेश), आर्य वीर दल साहपुरी (वाराणसी) श्री जे०पी०पगारे, रतलाम, श्री वासुदेव शर्मा, पटना, जिला सर्वदलीय किसान उपभोक्ता संघर्ष समिति, सिरोही, गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, नगर आर्यसमाज, लखनऊ, आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ, डा० प्रशान्त वेदालंकार, दिल्ली, आर्यसमाज साउथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद, गांधी पब्लिक नेशनल विद्यालय, कानपुर, आर्य समाज नामनेर, आगरा, आर्यसमाज हल्द्वानी, नैनीताल, आर्यसमाज तिजारा (जिला अलवर), श्री सत्यानन्द मुंजाल, लुधियाना, आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर, आर्यसमाज सावली आदि (गढ़वाल), आर्यसमाज, अजमेर, आर्यसमाज, देहरादून, श्री प्रदीप कुमार आर्य, गवां, श्री प्रभुचन्द आर्य पथिक, चेवारा, (मुंगेर), आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, हाथरस, वैदिक सन्यास आश्रम, गाजियाबाद, आर्यसमाज सम्भल (मुरादाबाद), आ० स० हैवी इलेक्ट्रिकल्स, भोपाल, आ० स० टंकारा (गुजरात), श्री प्रेमभिक्षु, वेदमन्दिर, मथुरा, आ० स० रजौली (नवादा), आ० स०, महू (म० प्र०), आर्य मित्र मंडल, राजकोट, आ० स०, बांकीपुर, आ० स० रानीबाग शकूर बस्ती (दिल्ली), आ० स०, मण्डी बांस, मुरादाबाद, आ० स० सुलतान बाजार, हैदराबाद, महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य वीर दल बिहार, मुजफ्फरपुर, आ० स० लक्ष्मीपुर, आ० स० गान्धी नगर, जम्मू, आ० स० सिलीगुड़ी (जिला दार्जलिंग), दयानन्द भवन समिति, हैदराबाद, श्री रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य एवं उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, वैदिक दैनिक आर्य सत्संग, वेदमन्दिर, सहारनपुर, आ० स० मवाना, मेरठ आ० स० लल्ला पुरा, वाराणसी, डा० वर्मा दिल्ली राजहरा (दुर्ग), श्री हरगुणदास आर्य, अजमेर, श्री राजेन्द्र कुमार, अजमेर, श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, लखनऊ, श्री ओम्प्रकाश बाहरी, बिलासपुर (मध्य प्रदेश), आ० स० बदायूं, श्री पन्नालाल 'पीयूष', उदयपुर, आ० स०, फोकल प्वाइंट, लुधियाना, आ० स० सुलतानपुर (जिला रायसेन), जिला आर्य सभा, पटना, आ० स० ताजगंज, आगरा, आ० स० अमरोहा (मुरादाबाद), आर्य वीर दल, सम्भल (मुरादाबाद), आ० स० कोसीकलां (मथुरा), आ० स० वीर गांव टिटोटा (बुलन्द शहर), श्री रोशनलाल गुप्त, आगरा, आ० स० मीनाक्षी पुरम् (तेनकाशी), श्री नारायण स्वामी, मदुरै नगर, श्री जगदीश प्रसाद वैदिक, इन्दौर, आ० स० डरबन, श्रीमती कौशल्या देवी, रायपुर, आ० स० बंगलोर, आ० स० बसन्त विहार, नई दिल्ली, आर्य परिवार, आगरा, अखिल भारत हिन्दू महासभा, नई दिल्ली, आ० स० विभव नगर, आगरा, आ० स० कैलाश ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, बड़ोदा, श्री बाबू लाल अग्रवाल, हैदराबाद, आ० स० गंगापुर सिटी (जिला सवाई माधोपुर), सार्वदेशिक आर्य वीर दल, बरेली, आ० स० शक्तिनगर, अमृतसर, आ० स० पूंजला नयापुरा, जोधपुर, आ० स० मध्य कलकत्ता, गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अहमदाबाद, आ० स० नयागंज, हाथरस, श्री उमाकान्त, प्रमिला वस्त्र भण्डार, वाराणसी, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली।

शुद्धि समाचार

—आर्य समाज गरोठ के तत्वावधान में ईसाई महिला श्रीमती कुमारी [illegible] ग्राम सुवाँ पोस्ट [illegible] जिला इन्दौर निवासी की स्वेच्छा से शुद्धि संस्कार वैदिक रीति से विधिवत सम्पन्न हुआ।

शुद्धि संस्कार पश्चात् महिला का नाम श्रीनिता कुमारी रखा गया और इस अवसर पर संस्था प्रधान श्री रामगोपाल जी सेठिया, उपप्रधान श्री रामचन्द जी रावत ने वैदिक धर्म पर प्रकाश डाला।

शुद्धि संस्कार समारोह में समस्त आर्यजन, नगर के गणमान्य नागरिक सम्मिलित हुए।

शुद्धि संस्कार का कार्य श्री नारायणसिंह आर्य द्वारा संचालित हुआ।

—आ० स० उपमन्त्री

—दिनांक २३-४-८६ को ग्राम बबड़ जिला झुंझुनू में यज्ञ (हवन) किया गया और मुसलमान नटो ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म को ग्रहण किया। समाज में इज्जत और रोटी बेटी का सम्बन्ध बनाया गया। तत्पश्चात उनके हाथ से ग्रामीणों ने प्रीतिभोज ग्रहण किया।

यह कार्यवाही सेवानन्द सरस्वती हिन्दू शुद्धि सरक्षणीय समिति, हरियाणा कार्यालय आर्य समाज मन्दिर संभालखा द्वारा सम्पन्न हुआ। और सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे यह कार्यवाही की गई। श्री मांगेराम भजनोपदेशक के सहयोग से यह शुद्धि कार्य किया गया।

प्राचीन नाम	नवीन नाम	पिता का नाम	संख्या
१—गुलाम	गुलाबसिंह	नौरग	१५
२—अमरू	अमरसिंह	नौरग	८
३—बिरजा	बृजानन्द	नौरग	१०
४—हेमू	धर्मपाल	नौरग	१२
५—रेमू	रमेश	अमरसिंह	७
६—ओम्प्रकाश	ओम्प्रकाश	गुलाबसिंह	२
७—रोहताश	रोहिताश	गुलाबसिंह	६
८—हीमा	हरीसिंह	गुलाबसिंह	८
९—गन्नी	ज्ञानीराम	बिरजानन्द	६
१०—बलबीर	बलबीरसिंह		२
११—महेन्द्र	महेन्द्रसिंह		४
१२—तारा	ताराचन्द	[illegible]सिंह	[illegible]
१३—वेद प्रकाश	वेद प्रकाश	गुलाबसिंह	[illegible]
		योग	८४

—मांगेराम

—पं० प्रेमानन्द शास्त्री की अध्यक्षता में पथरा नेपाल में गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ और इस अवसर पर एक मुस्लिम युवक सोबराती मियां का शुद्धि संस्कार कराकर हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया गया और इस मौके पर प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया। इनका नाम बदलकर शम्भु रखा गया।

—मनोज कुमार आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २१ अङ्क १६]

ज्येष्ठ शु० ८ स० २०४१ रविवार १२ जून १९८३

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : ६०४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

पंजाब की जनता के दुःख दूर करने के लिए आर्य समाज सब प्रकार का बलिदान करने को तैयार

नई दिल्ली। पजाब की जटिल और विषम समस्या पर विचार के लिए ६ जून को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज दीवान हाल मे एक बैठक का आयोजन किया गया विभिन्न आर्यसमाजो के लगभग १००प्रतिनिधि और कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। अनेक वक्ताओं व अपने विचार प्रकट किये। प्राय सभी का यह मत था कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा–विशेषत इसके माननीय प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले इस समस्या को अपने हाथ मे ले। प्रतिनिधियों को यह सुझाव पसन्द न था कि सत्याग्रह या अनशन का सहारा लिया जाये। कुछ गरमागरम भाषण भी हुए। प्राय प्रत्येक वक्ता के भाषण की समाप्ति इस अनुरोध के साथ हुई कि लाला रामगोपाल जी शालवाले मार्ग दर्शन करे।

लाला जी ने अपने १५ मिनट के सारगर्भित और अर्थ पूर्ण भाषण मे एक एक सुझाव को लिया और अन्त मे कहा कि "आप हमे कुछ दिनो की मोहलत दीजिये। हम प्रधान मन्त्री से मिलकर शीघ्रातिशीघ्र इस समस्या का कोई न कोई सन्तोषजनक समाधान अवश्य निकालेगे। लाला जी ने हृदयस्पर्शी शब्दों में कहा कि "हम पंजाब की जनता के दुःख दूर करने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करेंगे। पंजाब की निर्दोष जनता की रक्षा के लिए आर्यसमाज कुछ भी उठा न रखेगा।" (शेष पृष्ठ २ पर)

स्त्री से परिवार की समृद्धि

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि
यमनी ध्रुवासि धरित्री ।
इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै
त्वा पोषाय त्वा ॥
यजु० १४-२२ ॥

हिन्दी अर्थ - स्त्री परिवार का नियन्त्रण करने वाली, तेजस्विनी, स्वय नियन्त्रण मे रहने वाली और सबको नियम मे रखने वाली है। वह परिवारमे निश्चल भाव से रहने वाली और परिवार की धारक (पोषक) है। तुझे अन्न-समृद्धि के लिए, शक्ति के लिए, श्री-वृद्धि के लिए और घर की पुष्टि के लिए रखते हैं।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सभा-प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा २२ जून को संन्यास आश्रम में प्रवेश

संन्यास की दीक्षा स्वामी सर्वानन्दजी महाराज प्रदान करेंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान लाला रामगोपालजी शालवाले २२ जून को सन्यास आश्रम मे प्रवेश कर रहे हैं। वे आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी और यतिमण्डल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द जी (दयानन्द मठ, दीनानगर) से सन्यास आश्रम की दीक्षा लेंगे। उस दिन आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली मे प्रात सात बजे से सन्ध्या हवन यज्ञ आदि के बाद लाला जी चतुर्थ आश्रम मे दीक्षित होगे। यह कार्यक्रम दोपहर ११ बजे तक चलेगा। सभी आर्य समाजो के प्रतिनिधियो से निवेदन है कि वे इस अवसर पर उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढाये।

लाला जी ने ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के अपने कर्त्तव्यो को निभाते हुये लगभग ६० वर्ष तक आर्य समाज के माध्यम से देश और जाति की सेवा की है। अब वे लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा का पूर्णत परित्याग कर के सन्यस्त जीवन प्रारम्भ करेगे और तालकटोरा स्टेडियम मे की गई अपनी घोषणा के अनुसार देश भर मे घूम-घूमकर जनता का मार्ग दर्शन करेंगे—अपना सारा समय सेवा और परोपकार मे लगायेंगे।

आप सब से अनुरोध है कि इस अवसर पर उपस्थित होकर प्रेरणा प्राप्त करे। श्री लाला जी का सन्यास आश्रम का प्रवेश आर्य जगत के लिए नव चेतना का सन्देश है। —सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री, सभा,

प्रधान-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा के शिष्टमंडल की पंजाब यात्रा-२

सायंकाल जालन्धर नगर मे हिन्द समाचार-पत्र समूह के सम्पादक अमर शहीद, महान् राष्ट्र भक्त स्वर्गीय श्री लाला जगत नारायण जी व योग्य पिता के योग्य सुपुत्र अमर शहीद महान व निर्भीक पत्रकार श्री रमेशचन्द्र जी चोपड़ा (जो पिताश्रम पंजाब में उग्रवादियो की गोलियो से शहीद गये थे) परिवार के दूसरे पुत्र श्री विजय कुमार जी चोपडा ने अपने परिवार सहित श्री लाला रामगोपाल जी व उनके साथ आये सद्भावना मण्डल का हिन्द समाचार-पत्र समूह कार्यालय मे भावभीना हार्दिक स्वागत किया।

श्री विजय कुमार जी चोपड़ा का परिवार-पत्रकारिता के इतिहास मे अमर शहीद श्री गणेश शकर जी विद्यार्थी के अमर बलिदान के पश्चात् वह परिवार है जिसने इस देश की स्वच्छ, निर्भीक व आदर्श पत्रकारिता की रक्षा करते हुए देश की अखण्डता व एकता के लिए अपनी अमर लेखनी को किसी भी कीमत पर नहीं बेचा, आतंकवाद, भय व लालच के सम्मुख नतमस्तक नहीं हुए। यही कारण था कि आतंकवादियों ने भारत माता के लाडले इन दो पिता पुत्र को अपनी गोलियों से शहीद कर दिया यह अत्यन्त ही गौरव की बात है कि श्री लाला जगत नारायणजी के द्वितीय पुत्र श्री विजय कुमार चोपडा ने अपने स्वर्गीय पिता द्वारा जलाई गई राष्ट्रीयता की मशाल को अपने त्याग व बलिदान की भावना से दृढता पूर्वक थाम लिया है। वे बहुत निर्भीकता से पत्रकारिता के आदर्शों की रक्षा करते हुए देश की राष्ट्रीयता व अखण्डता हेतु निर्भय होकर लिख रहे हैं। श्री विजय कुमार चोपडा ने विगत २ वर्षों से पजाब मे चल रहे आतकवाद व उसके परिणामो की विस्तृत जानकारी प्रदान की व साक्षी स्वरूप सैकड़ों ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किये, जिन्हें देखकर व पढकर ऐसा लगने लगा कि इन परिस्थितियों में यदि पजाब की बरनाला सरकार अन्यथा केन्द्रीय सरकार ने अविलम्ब ठोस कदम नही उठाया तो यह प्यारा भारत देश और इसमें भारत माता का मस्तक स्वरूप ऐतिहासिक पंजाब आतंकवाद की आग में जलकर खाक हो जायेगा जिसका परिमार्जन आगामी सैकडों वर्षों तक सम्भव नही होगा।

यहा से लाला जी प्रतिनिधि मण्डल के साथ पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा वीर प्रताप व प्रताप उर्दू के प्रधान सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी के निवास स्थान पर उनसे भेंट हेतु उपस्थित हुए। श्री वीरेन्द्र जी एक निर्भीक आर्य नेता के नाते सबसे आगे बढ़कर इस राज्य की हिन्दू व आर्य जनता की सुरक्षा करनी चाहिए तथा आतंकवादियो के हौसले पस्त करने चाहिये, किन्तु विवशता है श्री वीर जी का नाम आतंकवादियों की हो लिस्ट में है व पजाब के हालात अब इतने बिगड़ चुके हैं कि श्री वीर जी जैसा बहादुर व्यक्ति भी यह कहने को बाध्य हो गया कि "लाला जी, मैं तो यहा पजाब मे अभी तक इसलिए बैठा हूँ कि यदि मैं भी यहा से चला गया तो पजाब के सारे हिन्दू पजाब से पलायन कर जायेंगे।" यद्यपि यह सुनकर मन मे खिन्नता तो हुई किन्तु क्या कर सकते थे। परमेश्वर से पजाब की व वीर जी की रक्षा हेतु प्रार्थना करते हुए जालधर के दैनिक मिलाप के प्रधान सम्पादक श्री यश जी के कार्यालय मे पहुचे। श्री यश जी ने प्रतिनिधि मण्डल का हार्दिक स्वागत करते हुए श्री लाला जी को पजाब की भीषण परिस्थितियों की जानकारी प्रदान की। श्री यश जी ने अत्यन्त दृढता पूर्वक कहा कि लाला जी पजाब के देहात से हिन्दुओं का जाना प्रारम्भ हो गयाहै। यदि तत्काल ही कोई प्रभावशाली कदम देश के प्रधानमन्त्री, बरनाला सरकार व राष्ट्रपति द्वारा नही उठाया गया तो आषाढ़ मास के अन्त तक गेहूँ की फसल बेचकर हिन्दू हर हालत मे यहा से जाने हेतु बाध्य हो जायेंगे। जाना प्रारम्भ हो गया है।

१७ मई प्रातः जालधर से अमृतसर की ओर प्रस्थान किया। सर्वप्रथम दुर्ग्याना मन्दिर मे पहुँचे। यहां दुर्ग्याना मन्दिर के प्रधान ट्रस्टी व अन्य अधिकारियों ने प्रतिनिधि मडल का हार्दिक स्वागत किया व कहा कि लालाजी आप ही पहले नेता हैं, जिन्होने पंजाब मे आकर मौत के मुंह में धकेली जा रही हिन्दू जाति की खबर लेने की हिम्मत की है व आपके होसले बुलन्द हैं, जो आप पजाब के सवेदन शील गावों मे जाकर हिन्दुओं की दुर्दशा का जायजा लेने व हमारा मार्ग दर्शन करने अपने प्रतिनिधि मडल के साथ पधारे हैं। आर्य समाज के इस सशक्त प्रतिनिधि मडल में आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली के आर्य नेता पधारे हैं हम सब आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। इसके पश्चात् उन्होने हमें अमृतसर, गुरदासपुर व फीरोजपुर के उन ग्रामों की विस्तृत जानकारी प्रदान की, जहां उग्रवादियों की टोलियां सरेआम हिन्दुओं को गोली मार देती हैं व पुलिस व प्रशासन मूक दर्शक की भांति देखता रहता है। श्री गोपीचन्द्र भाटिया, श्री दुलीचन्द थापर श्री पं० किशोरचन्द (शिव सेना), श्री स्वामी हरीश जी, श्री प्रकाश चन्द्र जी व अन्य महानुभावों ने अपने विचार रखें। लालाजी ने सभी से धैर्य रखने व संगठित होने की अपील की तथा यहां से बटाला की ओर प्रस्थान करना ही चाहते थे कि—कुछ लोगों ने रोते हुए प्रतिनिधि मण्डल के सम्मुख अपनी व्यथा सुनाई।

श्री प्रकाशचन्द्र गांव मूसा कलां (तहसील तरन तारन) ने बताया कि पिछले रविवार हमारे गाव में रात्रि के ७ बजे ६-७ नौजवान सरदार जो पीली पगड़ियां बाधे थे, बन्दूकें चलाते हुए गांव मे आए। गांव वाले भयभीत हो गए। मेरे घर पर आकर किवाड तोड़ दिया। सारे परिवार के लोग काप रहे थे। मुंह से आवाज नहीं निकाल सकते थे। इसी समय एक ने मेरे सीने पर बन्दूक की नाल लगायी व कहा कि जो कुछ है, जल्दी निकालो व दूसरे ने हमारे घर की बहू बेटियों की कान की बालियां निकाल ली व जो भी घर घर में सोने चादी के जेवर थे (करीब साढ़े सात तोला सोना व कुछ चांदी) सभी छीन ली। २५०० रुपया की नगदी छीन कर गालियां दीं तथा कहा कि खबरदार जो किसी से कुछ कहा तो सारे परिवार को गोली से मार डालेंगे। जाते जाते कह गए कि अगले रविवार फिर आयेंगे। कहीं से भी ५० हजार रुपया लाकर रखना वरना घर में आग लगा देंगे व सभी को मौत के घाट उतार देंगे। हमारे यहां से दूसरे घरों में चले गए। गांव में जैसे मौत का सन्नाटा था। वे लोग दूसरे घरो से भी लूटपाट कर गोलियां चलाते हुए शान से चले गए। (क्रमश.)

बलिदान करने को तैयार

(पृष्ठ १ का शेष)

लाला जी ने कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित श्री कृष्णकान्त के लेख के हवाले से बताया कि आतंकवादियों के असली इरादे क्या हैं? (सम्बद्ध लेख इसी अंक मे पृष्ठ तीन पर पढ़।)

बैठक में उपस्थित सज्जनों में मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव महामन्त्री डा० धर्मपाल और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल के नाम उल्लेखनीय हैं।

गुरुकुल कांगड़ी में प्रवेश प्रारम्भ

आश्रम पद्धति से चलने वाले गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार में ६ वर्ष से ८ वर्ष तक की आयु के बालकों का प्रवेश १ जुलाई से ३१ जुलाई तक प्रारम्भ हो रहा है।

गंगा के तट पर विद्यालय का विशाल प्रांगण बालकों के खेल-तथा सामूहिक व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापकों द्वारा उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों के साथ सस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

शिक्षा निःशुल्क है। पूरी जानकारी के लिए ५) रुपये का मनीआर्डर भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

—सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आतंकवादी आखिर चाहते क्या हैं ?

इस बार हम सम्पादकीय के स्थान पर यह लेख प्रकाशित कर रहे हैं, जिसके लेखक स्वर्णमन्दिर में जाकर दमदमी टकसाल और अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के कार्यकर्ताओं से मिले थे।

लेखक (श्री कृष्णकान्त) संसद् सदस्य रह चुके हैं। राष्ट्रवादी और बुद्धिवादी विचारधारा उन्हें अपने पिता लाला अचिन्तराम से विरासत में मिली है।

लेखक ने सिख समाज को सलाह दी है कि वह अपनी नितनई माँगे मनवाने के लिए दलील के तौर पर गान्धी और नेहरू के वायदों की बेकार बातें न करें।

पंजाब में हम जिन चुनौतियों का मुकाबला कर रहे हैं उन्हें ठीक से समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि आतंकवादी क्या सोच रहे हैं। बार-बार हर जगह यह बात कही जाती थी कि उन युवकों से बात करनी चाहिए ताकि पंजाब का मसला हल हो सके। इसलिए मैं अप्रैल के पहले हफ्ते पंजाब में कई जगह गया और विशेष तौर से स्वर्ण मन्दिर में जहाँ अखिल भारतीय सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन और दमदमी टकसाल के लोग जमे हुए थे। मैं उनसे स्वर्ण मन्दिर के अन्दर और बाहर कई स्तरों पर मिला। उनके मानस और चिंतन को जानने की कोशिश की ताकि वह चित्र साफ हो सके जिसे लेकर वे इतने बड़े आंदोलन का बीड़ा उठाए हुए हैं। सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन के दफ्तरों में कई फोटो लगी हुई हैं जिनमें भिंडरांवाले बेअन्तसिंह, रायगढ़ के कमांडिंग आफीसर पुरी, भगोड़ों और हाईजैकरों की फोटोएं थीं।

मैंने पूछा कि आपकी मांगे क्या हैं ? उन्होंने साफ शब्दों में बताया—अलग विधान, अलग प्रधान, अलग निशान—ये आनन्दपुर साहिब के पहले और मूल प्रस्ताव मे हैं। अपनी बातों मे चण्डीगढ़, नदियों का पानी, बन्दियों की रिहाई और भगोड़ों के बसाने का सवाल भी आया। लेकिन वे इन्हें अपनी असली माँगें नहीं मानते। दो घंटे की आपसी बातचीत के दौरान मैंने उनसे चार बार पूछा कि अगर ये मांगें मान ली जाएं तो क्या मसला हल हो सकता है। उन्होंने इससे साफ इनकार किया और कहा कि उनकी माँगे हैं—अलग विधान, अलग प्रधान और अलग निशान। जब मैंने उनसे पूछा कि आप ये बातें कैसे मनवाएंगे तो उन्होंने कहा कि वे हिंसा में विश्वास नहीं रखते और वे इसकी कभी पहल नहीं करते। लेकिन अगर उन पर हमला हो तो वे उसका जवाब देने में विश्वास रखते हैं। 'हम गांधी की अहिंसा को नहीं मानते।' मैंने उनसे कहा कि मैं उनकी समस्याओं के विस्तार में नहीं जाना चाहता। मैं तो केवल उसकी रूपरेखा जानना चाहूँगा। उन्होंने बताया कि जिस तरीके से हमने बटाला और नकोदर शहरों का घेराव किया था वैसा ही घेराव करेंगे। पानी और बिजली बन्द करने की बात करेंगे। सूखी हुई नहर को मिट्टी डालकर पाटेंगे। ये इस तरीके से शासन को अपंग कर देंगे।

मैंने कहा कि इस तरह आपके और शासन के बीच आमना-सामना हो सकता है और हिंसक वातावरण बनेगा। शासन की हिंसा के मुकाबले में आपकी छोटी हिंसा ठहर नहीं पाएगी। आप इतने बड़े शासन की हिंसा का मुकाबला कैसे करेंगे ? उनका विचार था कि भारतीय राष्ट्र ध्वस्त हो जाएगा। विभिन्न स्तरों पर बात चीत करते हुए उन्होंने कहा कि विख्यात इतिहासकार टॉयनबी ने कहा था कि राज्य कोई पवित्र चीज नहीं है जिसे छुआ नहीं जा सके और उसकी सीमाएं बदलती रहती हैं। उन्होंने अमेरिकन फ्यूचरालाजिस्ट का नाम लेते हुए बताया कि उनका विचार है कि २० वीं शताब्दी के अंत तक या २१ वीं शताब्दी के शुरू में बड़े-बड़े राज्य टूट जायेंगे जैसे रूस, चीन और भारत। इसके साथ ही उग्रवादियों की इस बानी पर अटूट विश्वास है कि खालसा राज्य बनेगा और उसके लिए वे शहीद होने को तैयार हैं। इस तरह से कुछ अंश मार्क्सवाद, कुछ अंश माओवाद कुछ इतिहासकारों की बातें और गुरुओं के विश्वास उनकी आस्था के अंग हैं। मैंने सवाल किया कि हिंसा से तो नैतिक तौर पर जनता आपके विरुद्ध हो सकती है क्योंकि गुरुओं ने अहिंसक तरीका अपनाकर ही जनता को ऊंचा किया था और अपने साथ लिया था। उनका जवाब था कि गुरु गोविन्दसिंह तक वे एक ही ज्योति देखते हैं।

मैंने कहा कि आदमी बेअन्त सिंह के कारण सब सिखों के खिलाफ बदले की भावना पैदा नहीं होनी चाहिए थी। दिल्ली में जो नरसंहार हुआ वह अच्छा नहीं था। उन्होंने मुझे जवाब दिया कि वे बेअन्त सिंह के काम को एक व्यक्ति का काम नहीं समझते। बेअन्तसिंह ने सिख कौम का बदला लिया है। मैंने कहा कि अगर आप ऐसा समझते हैं तब तो दिल्ली में जिन हिन्दुओं ने सिखों को मारा वे भी अपने आपको वाजिब समझ सकते हैं। उनका कहना था कि वह वारदात तो कांग्रेसी सिखों या लोंगोवाली गद्दारों की है। हम तो बेअन्त सिंह को कौम का शहीद मानते हैं।

मेरी इस दलील का उन पर कोई असर नहीं था। उनके आंदोलन से पंजाब के बाहर के सिखों पर क्या असर पड़ेगा, इस बात से वे चिंतित नहीं थे। मेरे साथ एक सिख टैक्सी ड्राइवर गया था जिसका नवम्बर के दंगों में काफी नुकसान हुआ था उसकी टैक्सी जल गई थी। उस टैक्सी ड्राइवर ने स्वर्ण मन्दिर में उनके कुछ साथियों से बात करते हुए पूछा कि हम लोगों का क्या होगा जो दिल्ली में या बाहर रहते हैं और जिनका लाखों का नुकसान हुआ है। जवाब मिला कि आजादी की लड़ाई में नुकसान तो उठाना ही पड़ता है। जब पाकिस्तान बना था तो जिन्ना ने भी हिन्दुस्तान में रहने वाले मुसलमानों को अपने हाल पर छोड़ दिया था। उनके विचार में सिख आबादी के ८५ प्रतिशत पंजाब में रहने वाले सिखों की स्वतन्त्रता को पंजाब के बाहर रहने वाले १५ प्रतिशत सिखों के लिए कुरबान नहीं किया जा सकता। पंजाब के बाहर के सिखों के बारे में उनकी राय है कि वे आखिरकार अपने काम के कारण बनिये हैं और भ्रष्टाचार से धन कमाते हैं। वे लोग अपने आपको संत लोंगोवाल या ज्ञानी जैलसिंह आदि से अधिक सच्चा और ईमानदार मानते हैं।

सन्त लोंगोवाल एक तरफ धर्मयुद्ध चला रहे थे और उन्होंने ही बब्बर खालसा की स्थापना की जो हिंसक तरीके से अपने विरोधियों को मरवाते थे। इसी तरह ज्ञानी जैलसिंह ने भी दल खालसा की स्थापना की थी। सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के संयोजक कहलो का कहना था कि पंजाब में जो हिंसा हो रही है वह तो सरकार के आतंकवाद का ही जवाब है। वे कहते हैं कि बच्चों और औरतों पर हाथ नहीं उठाना चाहिए। मैंने उनके एक मित्र से कहा कि यह बात गुरु गोविन्द सिंह महाराज की मिसाल देकर संत भिंडरावाले भी कहा करते थे लेकिन गुरु साहिब ने जिस परिप्रेक्ष्य में यह बात कही थी उसे वे लोग भूल गये हैं। गुरु साहिब ने तो यह बात उन फौजियों के बारे में कही थी जो दूसरी फौज के साथ लड़ने आते हैं। इक्का-दुक्का गद्दारों से उसका मतलब नहीं था। आपके सन्दर्भ में जब औरतों और बच्चों को नहीं छूने की बात कही जाती है तो औरत कहती है कि मेरा सुहाग चला गया मैं क्या करूं। बच्चा कहता है कि मैं अनाथ हो गया हूँ, मैं पिता के बिना क्या करूं। इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था।

ये बातें सुनकर मुझे चिन्ता हुई कि ये आतंकवादी तो अपने रास्ते पर चलने के लिए उतारू हैं। सही या गलत जिस ढंग से सोचते हैं उससे वापस आने की कोई बात नहीं है। सरकार को अगर अपने कर्तव्य को निभाना है तो उसे भी हिंसा से इसका मुकाबला करना पड़ेगा। इससे जो स्थिति पैदा होगी वह बहुत भयानक रूप ले सकती है। अगर कहीं हमारी पुलिस या सुरक्षा पंक्तियों में सांप्रदायिकता फैल गई तो बहुत बड़ा नरसंहार हो सकता है। अभी तो गनीमत है कि हमारी सुरक्षा सेनाएं अराजनैतिक हैं। मुझे इसका जवाब मिला कि उन्होंने सब बातें सोच रखी हैं। उन्हें ब्लू स्टार या दिल्ली जैसे दंगे-फिसाद की कोई चिन्ता नहीं। वे तो चाहेंगे भी कि ऐसा हो ताकि अलगाव की भावना और बढ़े। उनके विचार में यह राज्य तो वह करो टूटेगा ही। उन्होंने कहा कि देशभक्ति का वास्ता देकर अब सिखों क

(शेष पृष्ठ १२ पर)

स्व० आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार- एक समर्पित प्रचारक

—भद्रदत्त स्नातक

आर्य समाज के प्रसिद्ध पत्रकार म० कृष्ण और स्व० रामप्रसाद बिस्मिल आदि के बारे में लम्बे समय से बड़े यथार्थरूप में जो उनके द्वारा लिखे पत्रों मेसंस्मरण एवं लेख पढ़नेको मिले, वे दीनानाथ जी के चरित्र की सत्यता को स्पष्ट करते हैं,और याद आ जातेहैं संस्कृत के नीतिकार के वे शब्द, जिनके अनुसार दूसरो के अंशमात्र गुणों को विशाल रूप मे जनमानस के सम्मुख वे प्रस्तुत किया करते थे—

परगुणपरमाणन् पर्वती नित्यम्, कृत्य
निज हृदि विकसन्त: सन्ति सन्त: कियन्त: ।

वे यथार्थ और भावना दोनो का समावेश अपनी रचनाओं में करते थे।

पिछले कई मास से दुर्घटना में ग्रस्त हो जाने पर वे चलने फिरने से मजबूर थे, परन्तु उनकी लेखनी अन्तिम समय तक नहीं थकी। उनकी रचना के अक्षर बुढ़ापे से बिगड़ जरूर गए थे, परन्तु उनकी स्मरणशक्ति पूर्णतया उज्ज्वल थी। काश, इन पंक्तियो का लेखक उनके जीवनवृत्त को उनके जीवन काल मे पाठकों के सम्मुख रख पाता। १९८९ के वर्ष मे उनके तीन पत्र हमारे पास आए, और अपने स्वभाववश मुझे लेखों के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया या प्रशंसा लिखने में वे चूकते नही थे।

प्रारम्भिक जीवन

उनके अपने शब्दो में गंगापार और वर्तमान हरिद्वार से लगभग ५-६ मील दूर रेतीली और घने जगलयुक्त शिवालिक उपत्यका से लगे कांगडी गांव में स्थित गुरुकुल में मार्च१९०२मे वे प्रविष्ट हुए थे। इस ग्राम से २ मील दूर थाना गाजीपुर, जिला बिजनौर (उ० प्र०) में पहाड़ी नाले के तट पर उन दिनों यह गुरुकुल स्थापित था।

महात्मा मुंशीराम (बादमे स्वामी श्रद्धानन्द) की देखरेख में इस सस्था मे उन्होंने १५ वर्ष शिक्षा प्राप्त की और सिद्धान्तालकार बने, बाद में दो वर्ष तक गुरुकुल मे सेवा की। पारिवारिक जीवन की दृष्टि से उनकी सन्तानें अच्छे पदों पर नियुक्त हैं।

श्री दीनानाथ जी के अपने शब्दो में ९३ वर्ष के इस आयुचक्र मे उन्होने विविध और विभिन्न क्षेत्रों मे कार्य किया। उनका सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन १९२३-२४ से शुरू हुआ था। आर्यसमाज में वे उपदेशक और पुरोहित के रूप मे पजाब मे और बाहर काम करते रहे। लाहौर के सर गगाराम ट्रस्ट द्वारा संचालित विधवा आश्रमों तथा अन्य संस्थाओ मे वे क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रूपमे श्रेष्ठ सेवा,तपस्या और त्यागमय जीवन बिताते हुए पूरी निष्ठा के साथ रहे। अपने जीवनकाल मे उन्होंने बहुत सारा आध्यात्मिक और जीवन के लिए प्रेरणादायक साहित्य लिखा,जो पाठकोंमें लोकप्रिय रहा। "भारत की प्राचीन नीतियां" पुस्तक का विमोचन श्री बी. डी. जत्ती (तत्कालीन उपराष्ट्रपति) द्वारा हुआ था और बाबू जगजीवनराम ने उसकी भूमिका लिखी थी। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाओ में अमृत पथ, अध्यात्मयोग, आर्यसमाज की उपलब्धियां, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, प्रेरक जीवन कहानियां आदि है।

पत्रकारिता व सम्पादन

श्री दीनानाथ जी भारत सेवक समाज के मुखपत्र भारत सेवक ८ वर्षों सम्पादक रहे, तथा उसके कई प्रकाशनो का सम्पादन करते रहे। जन जागृति के लिए दिल्ली के ग्राम सहयोगी नामक साप्ताहिक के भी वे सम्पादक रहे। आर्य समाजिक पत्र-पत्रिकाओं मे उनके लेखो की धूम रहती थी। वे दैनिक विश्वमित्र(कलकत्ता) के सम्पादक रहे उन्होंने कुछ अन्य मासिक पत्रिकाओ का भी सम्पादन किया। हिन्दुस्तान व नवभारत टाइम्स जैसे दैनिकों में सामाजिक विषयों पर वे पिछले ३० वर्षों मे लिखते रहते थे।

अपने जीवन काल मे दीनानाथ जी ने डेढ़ दर्जन के लगभग पुस्तकें लिखी और सम्पादन के अतिरिक्त सैकडो लेख सामान्य एव ख्यातिप्राप्त सभी प्रकार के पत्रों में वे लिखते रहे।

पंडित दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

वे अन्त तक पुरुषार्थ करते रहे

सार्वदेशिक के पाठक स्वर्गीय पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार के नाम से अवश्य ही परिचित होंगे। उनसे मेरा प्रथम परिचय सन् १९४१ में हुआ। उन दिनों वे दैनिक वीर अर्जुन के सम्पादकीय विभाग में काम करते थे। तब से जीवन के अन्तिम क्षण तक उनसे किसी न किसी रूप सम्बन्ध बना ही रहा।

उनमें मैंने जो विशेष गुण देखा, वह यह है कि वे सदा काम में लगे रहते थे। खाली बैठना उनके स्वभाव में ही नहीं था। वृद्धावस्था में वे प्रवचन करने के लिए सुदूरवर्ती आर्यसमाजों तक में जाते थे। उनका जीवन बहुआयामी था। वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के निजी सचिव रहे और वीर अर्जुन में शहीद भगतसिंह के साथ न केवल काम करते थे अपितु रहते भी उन्हीं के साथ थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने संस्मरण धर्म युग आदि कई पत्र-पत्रिकाओं में लिखे थे। लेखन और प्रवचन में उनकी गहरी रुचि थी और इन दोनों कामों के लिए अध्ययन अत्यावश्यक है। उनका अध्ययन क्रम लगातार चलता रहा। ६-७ वर्ष पूर्व उन्होंने अपना विशाल पुस्तकालय आर्य समाज करोल बाग को दान कर दिया था।

वे अनेक सामाजिक संगठनों से सम्बन्धित रहे, लेकिन मुख्यत: वे पत्रकार ही थे। उनके परिचय का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। चरैवेति चरैवेति (चलते चलो, चलते चलो, उनका जीवन मन्त्र था। प्रतिदिन कुछ न कुछ लिखना उनका नियम था।

वे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारते थे। समृद्ध न थे, फिर भी उन्होंने अपनी सन्तानों को उच्च शिक्षा दिलाई। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सत्येन्द्र हसराज कालेज में अध्यापक हैं। उनके एक अन्य पुत्र की धर्म पत्नी के नाते नई दिल्ली के कुमारी हसराज माडल स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती सन्तोष तनेजा उनकी पुत्रवधू है। उन्हे घर मे सब सुख सुविधाएं प्राप्त थीं, लेकिन वे सुविधा भोगी थे ही नहीं -परोपजीवी तो बिलकुल नहीं थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी अनेक कामों में उनका सहयोग मिलता रहता है। कार्यं वा साधयेय शरीर वा पातयेयम् (या तो कार्य सिद्ध करूंगा, अन्यथा शरीर छोड़ दूंगा) उनका आदर्श था।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे भी उनकी गति थी। उनकी पुस्तक 'अध्यात्मयोग' मैंने अनेक बार पढ़ी है। उसे पढ़ते-२ जी नहीं भरता, तृप्ति नहीं होती।

पण्डित जी प्रतिदिन प्रात काल आर्याभिविनय के एक मन्त्र का अर्थसहित पाठ करके आध्यात्मिक आनन्द का अनुभव किया करते थे। यह बात उन्होंने एक बार स्वयं ही बताई थी।

एक बार जब हिन्दुस्तान टाइम्स के तत्कालीन सम्पादक हिरण्मय कार्लेकर ने लिखा कि "सामान्यत: हिन्दू आत्मा और परमात्मा को एक ही मानते हैं, तब उन्होंने सम्पादक के नाम पत्र लिखकर उनकी इस गलत धारणा का युक्तियुक्त खण्डन किया था।

उनका पुरुषार्थ एकांगी नहीं था। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फलों के लिए था।

सार्वदेशिक परिवार की ओर से स्वर्गस्थ आत्मा को नम्र श्रद्धांजलि।

—सत्यपाल शास्त्री

वेद प्रचार सप्ताह मनाया जायेगा

आर्यसमाज नकुड़ (सहारनपुर) में दिनांक १५ जोलाई ८९ से १९ जोलाई ८९ तक ५ दिन के लिए वेद प्रचार सप्ताह मनाया जायेगा। जिसमें श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु (अबोहर) के द्वारा वेद कथा होगी।

—भूपेन्द्र कुमार गोयल
मन्त्री, आर्यसमाज
नकुड़ जि०, सहारनपुर (उ० प्र०)

हवन-यज्ञ से रोग-चिकित्सा

श्री पं० वीर सेन 'वेदश्रमी' वेद-विज्ञानाचार्य
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर-४५२००७

१—यज्ञ से सब कामनाओं की पूर्ति :

तैत्तिरीय संहिता में लिखा है कि—सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते। अर्थात् समस्त कामनाओं के लिए यज्ञ का उपयोग होता है। इसीलिए समस्त लौकिक एवं पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये भारत में यज्ञों का अनुष्ठान होता था और अब भी बहुत सी परिस्थितियों में यज्ञ किये जाते हैं तथा उनका किसी न किसी प्रकार का परिणाम प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से दिखाई देता है। यज्ञ द्वारा ही तो नित्य हम अस्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय अर्थात् प्रजा, पशु, ब्रह्मवर्चस्, अन्नादि से समृद्धकर यह कामना करते हैं। इसी प्रकार यज्ञान्त में सर्वान्नः कामान्त्समर्धय (शतपथ) यह बोलते हुए अपनी समस्त कामनाओं की समृद्धि की कामना करते हैं। यज्ञ से समस्त कामनाओं की पूर्ति के बारे में सहसा लोगों को विश्वास नहीं होता। परन्तु प्राचीन ऋषियों ने दृढ़ता पूर्वक इसका प्रतिपादन निम्नलिखित शब्दों में किया है—

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता॥

अर्थात् जहां प्रत्यक्ष और अनुमान से कोई उपाय प्रतीत नहीं होता, उसका उपाय वेद से ज्ञात होता है इसी से वेद का वेदत्व है। यही वेद की अपूर्व सामर्थ्य है।

२—यज्ञ से रोग मुक्ति :

यजुर्वेद अध्याय १८ में जहां सैकड़ों कामनाओं की पूर्ति यज्ञ से प्रतिपादित की गई है वहीं 'अयक्ष्मं च मे, अनामयच्च मे, जीवातुश्च मे, दीर्घायुत्वं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्' का उल्लेख ६वें मन्त्र में है। अर्थात् मेरा यक्ष्मादि रोगों से रहित शरीर आदि और रोग-विनाशक कर्म, मेरा रोगादि रहित और इसकी सिद्धि करने वाली ओषधियां, मेरा जिससे जीते हैं या जीवन प्रदान करता है, वह व्यवहार और पथ्य भोजन, मेरा अधिक आयु का होना आदि यज्ञ से सामर्थ्यवान् बनें। इस प्रकार वेद ने आरोग्य निमित्त, रोग निवारण के लिए एवं जीवन वृद्धि के लिए यज्ञ करने का उपदेश या आदेश दिया है। इस पर श्रद्धा रखते हुए रोग अवस्था में रोग मुक्ति के लिए यज्ञ भी अवश्य करना चाहिये।

३. यज्ञ-चिकित्सा का प्रबलतम साधन है—

अथर्ववेद काण्ड ३, सूक्त ११ के प्रथम मन्त्र में कहा है—

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।

अर्थात् मैं तुझ रोगी को जीवन प्रदान करने के लिये ज्ञात और अज्ञात बड़े से बड़े राजयक्ष्मादि रोगों को यज्ञ में हवि प्रदान द्वारा रोग मुक्त करता हूं। तात्पर्य यह है कि सभी प्रकार के प्रकट या अप्रकट तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म रोगों से मुक्ति प्रदान करने का प्रबलतम साधन यज्ञ है। इस दृढ़ विश्वास के साथ इसका उपयोग चिकित्सा कार्य में करना चाहिये। यज्ञ चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना होनी चाहिये और यज्ञ चिकित्सा के शिविरों का भी आयोजन करके विश्व को नीरोग बनाने एवं सुखी करने का प्रयत्न करना चाहिये। यज्ञ चिकित्सा का व्यावहारिक या क्रियात्मक सुगम मार्ग प्रबल रूप से जनता के सम्मुख उपस्थित किया जाना चाहिये।

४. निराश एवं असाध्य रोग स्थिति में यज्ञ से लाभ —

अथर्ववेद काण्ड ३, सूक्त ११ के दूसरे मन्त्र में कहा है—

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमाहरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय॥

अर्थात् यदि आयु नष्ट हो रही ज्ञात हो रही है या इससे परे है यह ज्ञात हो रही है या मृत्यु समीप ही आ गई है। ऐसी सब अवस्थाओं में मृत्यु की गोद से निकाल कर सौ शरद पर्यन्त जीवन के लिए मैंने तेरा यज्ञ एवं हवि से संस्कारित हाथों से स्पर्श किया है। यह मन्त्र यज्ञ की और अधिक महान शक्ति द्योतक है। इतनी महान् सामर्थ्य यज्ञ की ज्ञात होने पर यज्ञ द्वारा चिकित्सा कार्य में अवश्य प्रवृत्त होना चाहिये। इसी महान शक्ति का समर्थन अथर्ववेद काण्ड ४, सूक्त १३ के मन्त्र ६ में भी है।

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

अर्थात् मेरा यह हाथ ऐश्वर्यवान है, परम सामर्थ्यवान् है। मेरा यह हाथ समस्त रोगों की चिकित्सा में समर्थ हो गया है। अब इसका स्पर्श या मर्दन कल्याणकारी है। इसी प्रकार अथर्ववेद काण्ड ७, सूक्त ७६ के मन्त्र पांचवें में कहा गया है—

कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे।

अर्थात् हे मृत्यु, तूने जिस घर में हमने यज्ञ किया है उसे क्यों मारा। ये वाक्य भी यज्ञ चिकित्सा के महत्व को प्रकट कर रहे हैं।

५. औषधियों का यज्ञ द्वारा उपयोग प्रभावशाली होता है

अथर्ववेद काण्ड ८, सूक्त २ के मन्त्र ६ में कहा है—

जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्।
त्रायमाणां सहमानां सरस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये।

अर्थात् जीवन देने वाली, कभी न हानि करने वाली, जीवन प्रदान करने वाली, रक्षा करने वाली, रोग दबाने वाली, बल देने वाली, औषधि को रोगनिवारण के लिये मैं हवि के रूप में प्रयुक्त करता हूं। वेद इसी प्रकार की औषधियों को यज्ञ में हवि रूप में प्रयोग करने की प्रेरणा देते हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में धूनी, धूम्रादि के प्रयोग अनेक रोगों की निवृत्ति के लिए ऋषियों ने लिखे हैं। इन धूनियों का प्रयोग अब भी ग्राम-२ में प्रचलित है। ये धूनियां अर्थात् ओषधि विशेष के धूम्र बाल रोगों के लिए बहुत प्रचलित थे तथा इनका उपयोग स्त्री, पुरुषों, पशुओं के विविध रोगों पर तथा श्वासादि भी प्रचलित थे। मानसिक रोगों, उन्माद रोगों जिन्हें भूत बाधा व ग्रह बाधा के रूप में माना जाता था, उनके लिये तो अति प्रचलित यह धूनी चिकित्सामान्य थी। कृषि कार्य में वृक्षों के रोगों में भी धूम्र चिकित्सा ही लाभकारी मान्य किया जाता रहा।

६. रोगियों को यज्ञ का सेवन अति लाभकारी है —

प्रायः समर्थ रोगी अपनी चिकित्सा के लिए देश-विदेश या पर्वतीय स्थानों पर जाते हैं। ऐसे व्यक्ति यदि यज्ञ का भी प्रयोग करें तो उन्हें अति शीघ्र लाभ होगा ही, और वे बहुत से व्यय से भी बच सकते हैं तथा उनके द्वारा आयोजित यज्ञ से अन्य अनेक रोगियों को भी लाभ होगा। वर्तमान समय की चिकित्सा प्रणाली में कठिन एवं चिन्तनीय स्थिति में प्राण वायु (ओक्सीजन) देने की प्रणाली वायु चिकित्सा का ही एक अंग है। रोग की चिकित्सा के लिए ओषधि-सेवन, इन्जेक्शन आदि का सर्वत्र प्रचार है। खाने की ओषधियों से अधिक शीघ्र प्रभाव इन्जेक्शन से होता है। परन्तु यज्ञ द्वारा रोगी को भेषज वायु के माध्यम से श्वास-प्रश्वास द्वारा स्वाभाविक रूप से ओषधि तत्व प्रविष्ट होकर अधिक प्रभावशाली रूप में अतिशीघ्र, आश्चर्यजनक रीति से लाभ करता है। जो रोग वर्षों से शरीर में घर किए हुए हैं, वे भी बहुत अंशों में अतिशीघ्र दूर हो जाते हैं-ऐसा हमारा अनेक बार का अनुभव है।

७. पर्वतीय स्थानों में आरोग्य का रहस्य—

पर्वतीय स्थान एवं पर्वतों की घाटियां वृक्ष, वनस्पति, ओषधियों तथा विविध गुल्म, लता पुष्पों से पूर्ण होती हैं। सूर्य के ताप से उनमें से मन्द-२ रूप से ओषधियों का सार वहां की वायु में भर जाता है

और इतस्ततः प्रवाहित भी होता रहता है। उस भेषज पूर्ण वायु के सेवन का अपूर्व लाभ वहां जाने पर स्वतः ही अहर्निश उन्हें प्राप्त होता है जो पर्वतीय स्थानों पर जाते हैं। पर्वतीय मार्ग ऊंचे-नीचे होते हैं। उन पर भ्रमणार्थ जाने से श्वास प्रश्वास स्वभावतः गहरा चलने लगता है तथा शीघ्र भी। इससे पर्वतीय भेषज वायु का प्रभाव शीघ्र होने लगता है और रोगी को स्वास्थ्य लाभ भी विशेष रूप से होने लगता है। गहरे श्वास-प्रश्वासों से स्वाभाविक रूप से प्राणायाम की क्रिया भी स्वतः होने लगती है अर्थात् भेषजयुक्त वायु में गहरे श्वास प्रश्वास से आरोग्य शीघ्र प्राप्त होता है तथा स्वास्थ्य लाभ होता है।

८. यज्ञ द्वारा अपने गृह को औषधिपूर्ण वायु से भेंट करें

यदि आप चाहते हैं कि पर्वतीय भेषज वायु आपको घर पर ही प्राप्त हो जायें तो आप घर पर ही नित्य यज्ञ करें और यज्ञ की वायु का सेवन करें तथा अन्यों को भी सेवन करायें। यज्ञ में जो घृत और औषधियों से युक्त हवि स्वाहा के उच्चारण के साथ अग्नि में दी जाती है उससे तुरन्त ही भेषज वायु औषधियुक्त वायु का निर्माण होने लगता है। यज्ञ करते समय स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर से करें जिससे भीतर का दूषित वायु वेग से बाहर निकल जाये और यज्ञ से निर्मित औषधयुक्त भेषज वायु आपके भीतर गहरी प्रविष्ट हो सके। जितने जोर से आप स्वाहा का उच्चारण करेंगे। परिणाम स्वरूप आपके श्वास-प्रश्वास का वायु उतने ही गहरे वेग से आप में प्रविष्ट होकर आरोग्य का संचार करता जायेगा। अर्थात् स्वाहा की उच्च ध्वनि से प्राणायाम का लाभ स्वतः ही होता जायेगा। जो लोग घर में या अन्यत्र यज्ञ न करके प्राणायाम करते हैं, उन्हें लाभ उतना नहीं हो सकता जितना यज्ञ से निर्मित आरोग्यप्रद वायु से होगा। अतः अपने घर में नित्य प्रातः सायं सूर्योदय एव सूर्यास्त के समय पर यज्ञ अवश्य करके अपना व संसार का महोपकार अवश्य करें। यज्ञ द्वारा औषधियों से वायुमण्डल में सोमतत्व तथा उसका वायुमण्डल के जल तत्व के साथ सयोग होने से अमृत तत्व भी भर जाता है। सोम और अमृत तत्व से जीवन मे दिव्यत्व उत्पन्न होता है।

९. सोम एवं अमृत से पूर्ण कलशों का निर्माण--

यदि आप सोम तत्व एव अमृत पूर्ण कलश प्राप्त करना चाहते हैं तो यज्ञ कुण्ड के समीप और यज्ञशाला में जलपूर्ण कलश रखें। इन कलशों में यज्ञ से निर्मित सोम तत्व स्वतः आकर्षित होगा और इनमें प्रविष्ट होगा तथा इनमें परिस्रुत भी होगा। सोम तत्व के उनमें परिस्रुत होने से वे कलश जल अमृत मे परिणत होंगे। उन जलों में यज्ञ की सुगन्ध यज्ञान्त में अनुभूत होगी। उन जलों का जो रोगी पान करेंगे, उनके रोग दूर होंगे और जीवन शक्ति बढ़ेगी। उन्हीं जलों से स्नान, अभिषेक, तर्पण, मार्जन, आचमन आदि से शारीरिक एवं मानसिक रोगों की शान्ति होगी। बुद्धि सात्विकता को प्राप्त होगी। असाध्य रोग भी शान्ति होगी। यज्ञ चिकित्सा के लिए आज सोम और अमृत पूर्ण कलशों-कुम्भों के निर्माण के महत्व को समझ कर उपयोग करने की आवश्यकता है। रोगी के जल, भोजनादि पकाने में भी यह जल उपयोग मे लेना चाहिये।

१०. यज्ञोत्पन्न भेषज वायु पूर्ण कलश निर्माण--

यजुर्वेद में वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति। अ० १९, मन्त्र २७ में यह कहा है --

अर्थात् जिन कलशों में यज्ञोत्पन्न वायुओं से कलश भरे जाते हैं वे वायव्य कलश हैं। इनका भेषज कार्य में उपयोग करना चाहिये। वर्तमान स्थिति में जैसे गैस सिलेण्डर होते हैं उसी प्रकार भेषज वायु से पूर्ण कलश सिलेण्डर तैयार करके रोगी के कमरे में छोड़ना चाहिए या गुब्बारों में यज्ञ की गैस धूम्र को भर कर यथा अवसर औषधयुक्त पर्यावरण रोगी के कमरे या बड़े हाल का बनाया जा सकता है। रोगी के कपड़ों पर उन्हे यज्ञ धूम्र से सुवासित किया जा सकता है। इससे रोगी को विशेष लाभ होता है। विविध कल्पनाओं द्वारा यज्ञ के जल, धूम्र आदि का प्रयोग करना चाहिये। (क्रमशः)

श्री शालवाले प्रथते जगत्याम्

डा० कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

(१)

दयानन्दे धीरे प्रतिपल-सुभक्ति दृढवसो,
वरेण्यो वीराणाम् असमप्रतिभः कार्य-सरणौ।
शरण्यो दीनानाम अमित-गुण-युक्तो दृढव्रतः,
व्रती धीरो वीरो जयति ऋषिभक्तो विमलधीः॥

(२)

सदाऽऽर्याणां मार्गम् अनुसरति हित्वा भयततिं,
सदा सक्तो राष्ट्रोन्नयन-करणे धार्मिक विधौ।
कृतिं मत्वा पूजां जनहितकरीं क्लेश-बहुलां,
विरक्तो भोगाद्यैः सतत-कृत-धर्मार्चन-विधिः॥

(३)

शिशोः कालादेव कृत-श्रम-रतिः स्वार्थविमुखः,
सदोद्युक्तो धर्मे, पतित-जन-त्राणे सुखकरे।
समाजस्योत्थाने, दलित-विधवा-रक्षण-विधौ,
शतं जीव्यादेषः, दशरथ-सुतोदात्त-महिमः॥

(४)

स्वधर्मे सत्कृत्ये परिहृत-निजोदात्त-विभवः,
भवे भव्यां भूतिं वहति गुणरूपेण सततम्।
सतामादर्शोऽसौ, विषय-विमुखो लब्ध-सुयशाः,
चिरं जीव्यादेषः, गुण-गण-युतो धीर-धिषणः॥

(५)

विदेशे देशेऽसौ, प्रथिततम-शूरो गुण निधिः,
सभाया आर्याणां गुरुतरधुरं धारयति यः।
विचारे चाऽऽचारे दृढमतिरयं साहसगुणः,
श्रिया कीर्त्या मत्या, विलसतु भवे भास्कर-गुणः॥

संस्कृत श्लोकों का हिन्दी अनुवाद

शालवाले जी का यश संसार भर में फैल रहा है

(१)

मेधावी दयानन्द मे प्रतिक्षण भक्ति रखने वाले, वीरों मे श्रेष्ठ, कार्य करने में अप्रतिम प्रतिभाशाली, दीनो को शरण देनेवाले, अतुल गुणों से युक्त, दृढ़ व्रत वाले, व्रती, धीर, वीर, ऋषिभक्त और विमल बुद्धि वाले श्री शालवाले की जय हो।

(२)

वे निर्भय होकर सदा श्रेष्ठ मार्ग पर चलते हैं। वे सदा राष्ट्रोत्थान के कार्य मे और धार्मिक विधिविधान मे जुटे रहते हैं। जन हितकारी कष्टकाकीर्ण कार्यों को परमात्मा की उपासना मानकर करते रहते हैं। भोगादि से विरक्त हैं और वे सदा धार्मिक सन्ध्या-वन्दन करते हैं।

(३)

बचपन से ही वे कम करने मे उत्साही हैं, स्वार्थ से विमुख हैं, धर्म कर्म और पतित लोगों की सुखकर रक्षा मे सदा उद्यत रहते हैं। समाज के उत्थान और दलितो व विधवाओ की रक्षा के उपाय करते, रहते हैं। रामचन्द्र जी के समान उदात्त महिमा वाले शालवाले जी सौ वर्ष तक जीवित रहें।

(४)

उन्होंने अपनी नेक कमाई को अपने धर्म के अच्छे कामो मे लगाया है। अपने गुणों के कारण वे ससार में भव्य विभूतियां धारण करते हैं। वे सज्जनों के आदर्श हैं, विषयो से विमुख हैं, यशस्वी हैं। अनेक सद्गुणों से युक्त धीर और बुद्धिमान् शालवाले जी चिरकाल तक जीवित रहें।

(५)

वे देश-विदेश में सुप्रसिद्ध हैं, शूरवीर हैं, गुणों के निधान हैं। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गुरुतर बोझ अपने कन्धों पर धारण कर रहे हैं। आचार-विचार के मामले में वे दृढ़ हैं; साहस उनका गुण है। सूर्य के गुणो वाले शालवाले जी शोभा, कीर्ति और बुद्धि से सुशोभित हों।

नीदरलेण्ड (होलेण्ड) में आर्य समाज का प्रचार

—रामपाल शास्त्री व्यायामाचार्य

पिछले दिनों मुझे पं० आनन्द जी विरजा एम० ए० सूरिनाम वासी के साथ ३ मास हॉलैण्ड में वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार का अवसर मिला।

जो प्राचीन वैदिक संस्कृति हमें ऋषि महर्षियों द्वारा आदि सृष्टि में प्राप्त हुई, उसी प्राचीन संस्कृति को भारत की इस पावन भूमि से हजारों मील आज भी उसी रूप में बनाये रखे हुये हैं, जिस रूप में हमें प्राप्त हुई थी। आज से लगभग १२५ वर्ष पहले जिस समय भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई थी, उस समय अंग्रेजों द्वारा हमारे भाईयों को कैद करके सूरिनाम साउथ अमेरिका आदि देशों में ले जाया गया था। भारत माता के इन लाड़लों ने वहां पर अनेक प्रकार के कष्ट सहन करते हुए भी अपने धर्म संस्कृति व सभ्यता को नहीं छोड़ा। इतिहास के पाठक यह सब जानते हैं कि वहां पर भी आर्य वीर अपने धर्म व संस्कृति को रक्षा में बलिदान देने में भी कभी पीछे नहीं हटे। उन्हीं बलिदानियों के फलस्वरूप जिन्होंने वैदिक धर्म को व आर्य सभ्यता को वहां जाकर इतना फैलाया है कि आज सूरिनाम को छोटा भारत कहा जाता है।

१९७५ ई० में जिस समय सूरिनाम देश आजाद हुआ उस समय कुछ लोग नीदरलैण्ड (होलैण्ड) में आकर यहां के नागरिक बन गये। सूरिनाम से जो आर्य यहां पर आये उन्होंने यहां पर वैदिक धर्म, आर्य सभ्यता व संस्कृति का प्रचार व प्रसार किया। होलेंड में आज लगभग १२ आर्यसमाजें प्रति सप्ताह अपना सत्संग करती हैं। तथा स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के मिशन को पूरा करने के लिए जी-जान से लगी हुई है।

अगर मैं सभी आर्यसमाजों का परिचय व इतिहास लिखने लगूं तो बड़ा लम्बा हो जायेगा। अतः मैं केवल आर्यसमाज प्रभाकर रोटरडम व आर्य समाज आर्य सभा रोटरडेम के विषय में दो चार शब्द लिख रहा हूं। जिसके माध्यम से मैंने तथा भ्राता पं० आनन्द जी तीन मास तक वहां पर वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। आर्य समाज प्रभाकर रोटरडेम के पास अपना मन्दिर है जो वहां के आर्य भाईयों ने मिलकर लगभग ५ लाख रुपये में खरीदा है। मन्दिर तीन मंजिला बड़ा सुन्दर व विशाल है। जिसमें प्रति सप्ताह सत्संग व सप्ताह में तीन दिन हिन्दी व तीन दिन संस्कृत की कक्षायें चलती हैं। तथा प्रतिदिन सायं ६ बजे से ८ बजे तक आर्य वीर दल की शाखा लगती है। जिसमें नवयुवकों को ब्रह्मचर्य सम्बन्धि नियमों व योगासनों की शिक्षा दी जाती है। तीन मास तक का यह शिविर मैंने (रामपाल व्यायामाचार्य) ने अपनी देख रेख में चलाया, जिसमें प्रतिदिन ६० से ७० नौजवानों की उपस्थिति होती थी। और सभी नवयुवक बड़ी श्रद्धा व लगन से योगासन सिखते थे। शिविर की समाप्ति से एक दिन पहले आर्य समाज प्रभाकर रोटरडेम में आर्य समाज के प्रधान श्री रामखिलावन जी, उपप्रधान पं० रामअवतार जी, मन्त्री जीवन गणेश जी, एवं भूतपूर्व उपप्रधान श्री गया प्रसाद जी मल्लू की देखरेख में आर्य वीर दल के अधिकारियों का सर्वसम्मति से चुनाव हुआ। जिसमें निम्न अधिकारी चुने गये।

सभापति—श्री गोपालाचार्य तुचून।
मन्त्री—पं० देवानन्द भमेलू।
उपमन्त्री—श्री जौन आर्चीव।
व्यवस्थापक—पं० जीवन, मन्त्री आर्यसमाज प्रभाकर।
शाखानायक—विजय कुमार गणेश व श्री कृष्ण जी।
उप शाखानायक—श्री जगदीश विश्वेश्वर।
पुस्तकालयाध्यक्ष राजेश भमेलू व नरेन्द्र गणेश।

शिविर के समापन समारोह पर रोटरडेम के भारत एसोसिएशन काफ पान हाल में आर्य वीरों की ओर से एक शो दिया गया जिसमें नवयुवकों द्वारा योगासनों का प्रदर्शन व मेरे द्वारा शक्ति प्रदर्शन हुआ। जिसको देखकर वहां की जनता आर्यसमाजों के कार्यों व शिक्षा से प्रभावित हुई। मेरे द्वारा जिस समय छः सूत तक के सरिये गले द्वारा ब्रह्मचर्य व प्राणायाम के बल से मोड़े गये तथा २ सूत मोटी जंजीर तोड़ी गयी व थाली को हाथ से कागज के समान चीरता देखकर जनता हतप्रभ हो गयी। उसी समय लगभग २५ नवयुवकों ने आर्य वीर दल की सदस्यता स्वीकार की व नियमित आर्य वीर दल की शाखा में आने की प्रतिज्ञा की। जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूं कि सप्ताह में तीन दिन संस्कृत, तीन दिन हिन्दी की कक्षायें लगती हैं। ये कक्षायें ३ मास तो भ्राता पं० आनन्द कुमार जी व मेरे द्वारा लगाई गयी। तथा उसके अतिरिक्त सप्ताह में दो दिन छोटे बच्चों को हिन्दी सिखाने के लिए श्री पं० जीवन गणेश जी व पं० रामअवतार जी पं० विश्वेश्वर द्वारा भी कक्षायें लगती थी।

जिसमें ६०-६५ बच्चे आकर हिन्दी सिखते थे। इन्हें यह हिन्दी की शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। आर्यसमाज की ओर से हालैण्ड में बहुत थोड़े समय में ही आर्यसमाज प्रभाकर बहुत उन्नति कर गया तथा कर रहा है। यह सब वहां के आर्य भाईयों का कमाल है जो परस्पर के एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करते हैं। समाज के सभी अधिकारी व सदस्य आपस में मिलकर आर्यसमाज का कार्य तन-मन धन से सेवा करते हैं। सभापति श्रीराम-खिलावन जी एक बहुत ही अच्छे दानी व सज्जन आदमी हैं आप पण्डितों उपदेशक महानुभावों का बड़ा मान सम्मान करते हैं।

समाज के मन्त्री श्री जीवन गणेश जी तो इस समाज के प्राण हैं। मैं तीन मास तक उनके साथ रहा। मैंने देखा किस प्रकार से दिन-रात वे एक करके सारा समय आर्यसमाज के लिए लगाते। आप स्वयं अच्छे पंडित व वक्ता हैं। सूरिनाम के अन्दर भी आपके बाबा जी एक मन्दिर चलाते हैं, वहां पर भी आपने आर्यसमाज का बड़ा कार्य किया। आपकी माता जो इस समय ९५ वर्ष की है बहुत ही कट्टर आर्य विचारों की एक आदर्श महिला है। आपने समाज के कार्य को आगे बढ़ाने में सबसे पहले अपनी जमा-पूंजी से ५००) रुपये दिये। इतनी बड़ी आयु में भी आप प्रति सप्ताह मन्दिर में आती हैं। [illegible] प्रातः हवन करके ही अगला कार्य करती है। आप की धर्म पत्नी पण्डिता सूर्यावती जी गणेश एक आदर्श महिला हैं।

सेवा-भाव तो आपके अन्दर इतना है कि जैसे यह आपको विरासत में ही मिला हो। प्रतिदिन प्रातः संध्या-हवन करके ही आप अगला कार्य करती है, सभी बच्चों को आपने सन्ध्या-हवन सिखाया हुआ है और प्रतिदिन साथ में बैठकर सन्ध्या-हवन करते हैं। पं० जीवन जी के साथ-२ आप आर्य समाज के सभी कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेती हैं, आपने अपने परिश्रम से ही तीन पण्डितायें तैयार की हैं जो आज हवन संस्कार आदि कराती हैं जहां पर आप योग्य पण्डिता हैं वहां आपका बड़ा सरल स्वभाव व सेवा का गुण भी आपकी शोभा बढ़ाता है। आर्य समाज के भूतपूर्व उपप्रधान श्री गया प्रसाद जी मल्हू एक बहुत ही कर्मठ व लगनशील व्यक्ति हैं, जिन्होंने सूरिनाम में भी आर्यसमाज का खूब कार्य किया और आज-कल यहां पर भी तन-मन-धन से लगे हुए हैं। आपने सार्वदेशिक के प्रधान आदरणीय वानप्रस्थी श्री रामगोपाल जी शालवाले से मिलकर होलेण्ड में आर्य समाज प्रगति पर है यह बताया तथा प्रधान जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। आर्यसमाज के उपप्रधान श्री पं० रामअवतार जी एक अच्छे योग्य पण्डित हैं। आप आर्य समाज में बच्चों को हिन्दी पढाने में बहुत समय लगाते हैं। आपके सभी बच्चे आर्य समाज के रंग में रंगे हुए हैं। आपकी बड़ी लड़की तो दोर्द्रेख्त में आर्य समाज मन्दिर चलाती है।

इस प्रकार पं० विश्वेश्वर पं० तुकून गोपालाचार्य जी एवं पं० बहादुर पं० रामलाल कोषाध्यक्ष हर समय आर्य समाज के कार्यों को बढ़ाने में लगे रहते हैं। श्री प० नैमेसन जी आर्य समाज के उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आप स्कूल में हेडमास्टर पद पर कार्य कर रहे हैं।

भूतपूर्व उपप्रधान श्री गया प्रसाद जी मल्हू ने बताया कि इस समय समाज मे लगभग ८-९ पण्डितायें कार्य कर रही हैं। सप्ताह में दो दिन हिन्दी पढ़ने के लिये ७०-८० बालक एवं बालिकाएं आती हैं। संस्कृत एवं मन्त्रोच्चारण सीखने के लिये भी इस समय १०-१२ नव-युवक युवतियां आ रही हैं और प्रतिदिन 'आर्य वीर दल' की शाखा लगती है। जिसमें ७०-८० नवयुवकों की उपस्थिति होती है। आर्य समाज प्रभाकर के बढ़ते हुए चरण को देखकर कुछ आर्य भाईयों ने रोटरडम में एक आर्य समाज की स्थापना की जिसका नाम आर्य सभा आर्यसमाज रखा। वैसे तो दोनों समाजें मिलकर कार्य करती हैं। एक दूसरे का सहयोग करते हैं इन दोनों समाजों के कार्यों की दुन्दभी होलेण्ड के सभी नगरों में बज रही है।

आर्य समाज आर्य सभा के पास भी अपना विशाल मन्दिर है जिसमें ५०० व्यक्ति आराम से बैठ सकते हैं। मन्दिर में प्रति सप्ताह सत्संग लगता है। तथा समय-समय पर विशेष वेद सप्ताह व प्रवचन एवं विशेष अन्य संस्कार आदि के भी कार्यक्रम होते रहते हैं। आर्य समाज के मन्त्री श्री विष्णु जयपाल जी स्कूल में हेडमास्टर हैं। आप स्कूल के बाद सारा समय आर्य समाज के कार्यों में लगाते हैं। आप एक उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता के साथ २ एक अच्छे वक्ता भी हैं। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती जयपाल जी भी आपके प्रत्येक कार्य में हाथ बंटाती है। आपके पिता श्री शिव हर्ष जयपाल जी एक माने हुए पण्डित हैं। जो आर्य सभा आर्य समाज में ही कार्य करते हैं। मन्त्री श्री हरिलटबर शर्मा जी व श्री रामजग जी चौधी कोषाध्यक्ष व अन्य सभी सदस्य पूरा-२ सहयोग करते हैं। पण्डिता लच्छमन जी पण्डिता बदलू जी, पण्डिता अक्विर जी इत्यादि व पं० श्री बख्तावर जी श्री वानप्रस्थी सेवक राम जी (टूलम जी) पं० भजन प्रसाद जी, प० दीपा जी प० कृष्ण जी इत्यादि ६० पंडित व ६० पंडितायें इस समय आर्य सभा आर्य समाज मे कार्य कर रही हैं। इस प्रकार से नीदर लेंड में आर्य समाज का कार्य दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। रोटरडम की यह समाजें आपस में "संगच्छध्वम्" के अनुसार परस्पर में सहयोग करती हैं।

तीन मास की यह प्रचार यात्रा मेरी बहुत सफल रही। इस यात्रा में मुझे जो सहयोग बहन आशा व विद्यावती जी एवं श्री जोन बंधी तथा भाई गंगा प्रसाद जी कल्लू ने दिया। उसके लिये मैं आप का आभार व्यक्त करता हूं व आर्यसमाज आर्य सभा तथा आर्य समाज प्रभाकर रोटरडम के सभी अधिकारियों व सदस्यों का भी धन्यवाद करता हूं। जिन्होंने मुझे बड़ा सम्मान दिया तथा सहयोग किया। परमपिता से यही कामना करता हूं कि आपको इतना सामर्थ्य व शक्ति दे आप इसी तरह आर्य समाज कार्य करते हुये दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति करें।

अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति पर न चलें

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के नाम खुला पत्र

आदरणीय श्री राजीव जी,

सादर नमस्ते ।

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे ।

निवेदन यह है कि राष्ट्र मां इन्दिरा गांधी जी ने अपने जीवन के अन्तिम पांच वर्षों में मुस्लिम तुष्टीकरण एवं अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की नीति का परित्याग कर दिया था और खुले आम घोषणा की थी कि भारतवर्ष में अल्पसंख्यकों को जितने अधिकार प्राप्त हैं, विश्व के किसी भी अन्य देशों में नहीं है। अभी-२ मैं राजस्थान और मध्यप्रदेश के कई स्थानों से होकर आया हूं, जहां पर पहले जनता के १० में से ६ आपका पक्ष लिया करते थे और आपकी प्रशंसा किया करते थे। आज हिन्दू समुदाय में १० के १० लोग (उन लोगों को छोड़कर जिनकी रोटी-रोजी और गद्दी आप पर निर्भर करती है), सबके सब आपको गाली दे रहे हैं और आपके कट्टर विरोधी बन गये हैं।

मुस्लिम महिला विधेयक लाकर आपको क्या मिला। हिन्दुओं का विरोध, पढ़े-लिखे मुसलमानों का विरोध, मुस्लिम समाज की बहुसंख्यक महिलाओं का जो तलाक से दु:खी हैं, उनकी बददुआएं। आपके इस बिल को पास कराने से आप कहीं के नहीं रहे। हिन्दू समाज में आपके प्रति नफरत फैलती जा रही है, और मुसलमान भी जो पढ़े-लिखे हैं, आपका साथ देने को तैयार नहीं।

हम आपके हितैषी हैं। हमें आपसे किसी प्रकार की गद्दी नहीं चाहिए और न ही आर्यसमाज के किसी कार्यकर्ता को किसी प्रकार का लालच है। आपको प्रतिष्ठा को गिरते हुए देखकर हमें दुःख होता है। क्योंकि आपको विजयी बनाने में हमारा भी कुछ योगदान है। लोग हम से पूछते हैं। आपके साथ हमें भी गालियां देते हैं।

आज तक कांग्रेस के इतिहास में, जो कभी नहीं हुआ वह भी तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में मुसलमानों को इकट्ठा करके, उनके भाषण कराकर कर दिखाया है। क्या आप कांग्रेस के सारे इतिहास से यह साबित कर सकते हैं, कि उसने किसी समुदाय को विशेष सम्मेलन करके उनके हित की बात की हो। क्या यही राष्ट्रीयता है, जिसका आप ढिंढोरा पीट रहे हैं।

ऐसा लगता है कि आपके परामर्शदाता आपको गलत दिशा में ले जा रहे हैं। जनता में आपके प्रति अनिष्ठा की भावना पैदा हो गई है। यदि यही नीति जारी रही तो जहां यह देश की एकता के लिए खतरा साबित होगी वहां इन्दिरा कांग्रेस को भी ले डूबेगी।

आर्यसमाज ने सारे भारतवर्ष में लगभग ४० हजार कार्यकर्ताओं को लगाकर चुनाव प्रचार में दिन रात एक करके लोगों को राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व का वास्ता देकर कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं पर काफी असर पड़ा और उन्होंने तीन चौथाई बहुमत देकर आपको प्रधान मन्त्री के आसन पर बिठाया। चुनाव प्रचार में दिल्ली तथा देश के अन्य स्थानों में मैंने स्वयं जा जाकर देखा है कि मुसलमानों ने आपको १० प्रतिशत और सिखों ने आपको २ प्रतिशत मत भी नहीं दिये और हिन्दुओं ने आपको ८० प्रतिशत से भी ऊपर मत देकर विजयी बनाया। यदि आज चुनाव हो जाये तो हिन्दुओं का २० प्रतिशत मतदान भी मिलना कठिन हो जायेगा। उसका क्या परिणाम होगा, यह आप सोच लें।

यह पत्र मैं आपको इसलिए लिख रहा हूं कि हम नहीं चाहते कि सारे उत्तर भारत में और दक्षिण में भी कई स्थानों पर हिन्दू आपसे मुख मोड़कर अन्य किसी राजनीतिक पार्टी में मिल जावें।

अतः मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप इस पत्र गम्भीरता से विचार करें और समय रहते राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी जी की तरह मुस्लिम एवं अल्पसंख्य तुष्टीकरण की नीति का परित्याग करें।

मैं आपको पुन: विश्वास दिलाता हूं कि जिस राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के नारे को लेकर आपने चुनाव जीता था, उस पर स्थिर रहें और सच्चे अर्थों में असाम्प्रदायिक, समाजवादी और जनकल्याणवादी भारत के निर्माण में लगे। तब आप आर्यसमाज के साथ सारे हिन्दू जगत् का समर्थन प्राप्त करें।

धन्यवाद, भवदीय

ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५-हनुमान रोड, नई दिल्ली

भय व आतंक के कारण पंजाब से हिन्दुओं का पलायन देश की एकता व अखण्डता के लिए चुनौती

दिल्ली २४ मई। विराट हिन्दू समाज के महासचिव सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने कहा है कि पंजाब के सिख बाहुल्य गांवों से आतंकवादियों के भय व आतंक तथा पंजाब सरकार द्वारा समुचित सुरक्षा प्रदान न किए जाने के कारण हिन्दुओं द्वारा पलायन एक अत्यन्त दुखदायी घटना है।

पंजाब से हिन्दुओं का पलायन एक तरफा न होकर दो तरफा ना हो जावे और खालिस्तान का मनसूबा रखने वालों की इच्छा पूरी न हो, इसके लिए पंजाब व केन्द्र सरकार को सचेष्ट होना है। सनातन धर्मी नेता श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता, विराट हिन्दू समाज के कार्यालय सचिव श्री आर० पी० मालवीय व सनातन धर्म महासभा के सचिव श्री वेद प्रकाश जी के साथ करनाल मे पंजाब से आए संतप्त हिन्दू परिवारों से भेंट करके लौटे हैं। सभी परिवारों का मनोबल ऊंचा है परन्तु सुरक्षा के अभाव में उन्हें यह पग उठाना पड़ा। एक महिला तो केवल सात रोज का शिशु साथ लेकर आई है।

श्री गुप्त के साथ गये अध्ययन दल ने करनाल के पूर्व व वर्तमान एम० एल० ए० तथा जिलाधीश से भेंटकर सारी स्थिति का जायजा लिया।

सुरेन्द्र मोहन (प्रचार सचिव)

उपदेशक महाविद्यालय की प्रवेश सम्बन्धी सूचना

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुना नगर, (निकट खादीपुर) अम्बाला, हरियाणा में शिक्षा सत्र ८६ ८७ हेतु प्रवेश प्रारम्भ हैं। प्रवेश के इच्छुक हाईस्कूल उत्तीर्ण छात्र श्री प्रधानाचार्य से पत्र व्यवहार करें।

भोजन, शिक्षा और निवास सर्वथा नि:शुल्क हैं।

त्यागीजी के निधन पर शोक प्रस्तावों का तांता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के निधन पर देश-विदेश से आने वाले शोक प्रस्तावों का तांता अभी भी लगा हुआ है। शोक प्रस्ताव भेजने वाले कुछ व्यक्तियों और संस्थाओं के नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

आर्य समाज चन्दौसी (जिला मुरादाबाद)। आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर। आर्य समाज स्वरूपनगर, कानपुर। आर्य समाज सोनारी (जमशेदपुर)। आर्य समाज देहरादून। आर्य समाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर। आर्य समाज बड़ा बाजार, कलकत्ता। आर्य समाज मण्डी (हिमाचल प्रदेश)। आर्य समाज पहासू (बुलन्दशहर)। सन्त कृपाल नगर, संडीला (हरदोई)। भारत समाज सेवादल, फीरोजाबाद (आगरा)। विश्व वेदपरिषद, चण्डीगढ़। आर्य समाज कोटद्वार (गढ़वाल)। श्री ब्रह्मदेव आर्य सिद्धांतशास्त्री रामनगर वासना (महाराष्ट्र)। श्री ऋषिपाल आर्य, मैनपुरी। आर्य समाज शकरपुर विस्तार, दिल्ली। आर्य समाज केसर बाग, लखनऊ। आर्य समाज लहेरिया सराय (दरभंगा)। आर्य समाज, जींद। राय गुरुचरणदास सकलेचा, हैदराबाद। आर्य समाज चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)। आर्य समाज शिवगंज (सिरोही)। आर्य समाज वाराणसी छावनी भोजूबीर, वाराणसी। श्री रमेशचन्द्र, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर। आर्य समाज महाराजपुर (जिला छतरपुर)। आर्य समाज किराना बाजार, मुलबर्मा। आर्य समाज जमालपुर (मुंगेर)। जिला आर्य सभा, रांची, वेदमन्दिर, सायला (सुरेन्द्र नगर)। आर्य समाज कृष्ण नगर (मथुरा)। आर्य युवा परिषद, पोरबन्दर। आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका, नैरोबी। श्री डी. डी. सूद, प्रधान आर्य समाज नैरोबी। श्री वीरसेन हुसांग, नयापुरा. गुना। आर्य समाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली। आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा)। आर्य समाज बिहार शरीफ (नालन्दा)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा। दयानन्द मठ रोहतक। गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार। श्री सत्यपाल अग्रवाल, मोहल्ला बेगम सराय कलां, अमरोहा। डा० मेघराज जैन डोकेन (मंदसौर)। आर्य समाज इन्दूर (निजामा बाद)। श्री सुखदेव शास्त्री, यज्ञभवन, सहारनपुर। आर्य समाज जामनगर, बृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा, राजकोट। आर्य समाज मन्दिर चमनपुरा, अहमदाबाद। आर्य समाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली। आर्य समाज अडींग (मथुरा)। आर्य शिक्षा समिति। आर्य समाज मठपारा, दुर्ग, आर्य समाज इटारसी। केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर। आर्य विद्या मन्दिर सोसायटी, बम्बई। श्री मनुदेव 'अभय' सुदामानगर, इन्दौर। आर्य समाज (गुरुकुल विभाग), लुधियाना रोड़, फीरोजपुर छावनी। श्री मदनलाल यूनाइटिड स्टेट्स आफ अमेरिका। श्री विजयकुमार शर्मा, ४ वैस्टलैंड, खमरिया जबलपुर-५। श्री नवलकिशोर आर्य, प्रचारमन्त्री, उत्तरप्रदेश आर्यवीर दल, कार्यालय मेस्टन रोड़, कानपुर। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, आदर्शनगर, ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर राज्य)।

त्यागी जी की याद चिरकाल तक बनी रहेगी

सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८ मई) में श्री ओम्प्रकाश त्यागी (मन्त्री सार्वदेशिक सभा) के आकस्मिक निधनका समाचारपढ़कर हमसब बरतानिया केआर्य परिवारों पर जैसे वज्रपात हुआ। स्वर्गीय श्री त्यागी जी चतुर्वेदी प्रतिभा के महान व्यक्तित्व से सुशोभित थे। वे उन कुछ एक व्यक्तियों में से थे जिन्होंने आजीवन सक्रिय रूप में देश और विदेशों में वैदिक धर्म को फैलाया और आर्य समाज के आन्दोलन को न केवल बढ़ाया, अपितु सबल बनाया। उनके चले जाने से जो क्षति हुई है, वह अनुमान की सीमा से परे है। विश्वभर के आर्य समाजी नेताओं और कार्यकर्ताओं से उनका सम्पर्क रहा है।

वे एक निडर नेता थे। हिन्दू हितों के संरक्षण के लिए उन्होंने सदा प्रयत्न किया। आर्य समाज का सम्बन्ध विशाल हिन्दू जाति के साथ रक्षक, पथ प्रदर्शक और सहायक के रूप में बनाए रखने में वे पुरुषार्थी रहे। कितने ही वर्षों तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में उनकी उपस्थिति और सहयोग आवश्यक समझे जाते थे। वैदिक सिद्धांतों का उन्हें पूर्ण ज्ञान तो था ही, साथ ही व्याख्यानों और लेखों द्वारा उनकी व्याख्या सर्व सुलभ ढंग से कर सकने की उनमें अद्वितीय क्षमता भी थी। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संगठन, विदेशों में प्रतिनिधि सभाओं के निर्माण और सामाजिक सुधार तथा सच्ची राष्ट्रीयता अथवा भारतीयता के कार्यक्रमों में उनका बड़ा योगदान रहा।

स्वर्गीय श्री त्यागी जी लंदन में भी आते रहे, और जब तक वहां रहने का समय उनके पास होता, वे आर्य समाज लन्दन के अधिकारियों से निरन्तर सम्पर्क में रहते। उनके सुझाव रचनात्मक हुआ करते थे, और उनका अनुभव अति विशाल था। ऐसे नेता की याद चिरकाल तक बनी रहेगी। आर्य समाज के इतिहास में उनका कार्य प्रशंसनीय और अनुकरणीय रहेगा। आर्यसमाज लंदन के पिछले रविवार के सत्संग में शोक प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। उनकी दीर्घकालीन सेवाओं के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दिवंगत आत्मा की शांति और सद्‌गति के प्रार्थना की गई।

परमपिता परमात्मा उनके परिवार को धैर्य और शक्ति प्रदान करें जिससे इस व्यथा, क्षति और विपत्ति को सहन किया जा सके।

आर्य प्रतिनिधि यू० के० और आर्यसमाज लन्दन आपके विश्वसनीय साथी के देहावसान पर आपसे और सार्वदेशिक सभा से हार्दिक सम्वेदना प्रकट करती है।

—सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, यू. के.

त्यागी जी को मेरी श्रद्धांजलि

वैसे तो अनेक आर्य संन्यासी महानुभावों तथा आर्य विद्वान महाशयों ने मेरे इस कार्य की प्रशंसा में पत्र भेजे हैं जो मैं प्रभु प्रेरणा पर १९६७ से करते आ रहा हूं, परन्तु सबसे महत्त्व पूर्ण पत्र श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी (अब दिवंगत) का ही है, जिसमें उन्होंने लिखा था कि "आपकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है।"

यह पत्र उन्होंने तब भेजा था जब १९७३ में मैंने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती कृत वेदभाष्य पर आधारित यजुर्वेद का हिन्दी पद्यानुवाद समाप्त कर ऋग्वेद का पद्यानुवाद प्रारम्भ किया था और वकालत को इस कार्य में बाधिका जानकर ३५ वर्षीय वकालत छोड़ दी थी व त्यागी जी से आशीर्वाद मांगा था।

हाल ही में ऋग्वेद भाष्य का पद्यानुवाद पूरा होने वाला है, इसीलिए मैंने विचार किया था कि त्यागी जी से मिलूं और मार्गदर्शन लूं साथ ही प्रशंसा के लिए उन्हें धन्यवाद दूं।

परन्तु मेरी यह साध पूरी न हो पाई, जिसका मुझे बहुत दुःख है।

दिवंगत श्री त्यागी जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उनके द्वारा की हुई प्रशंसा का पात्र बनने का प्रयत्न करना ठान रहा हूं। उनके निधन से जो क्षति हुई है वस्तुतः वह अपूरणीय है। किन शब्दों में शोक व्यक्त किया जाए, समझ में नहीं आता।

—स्वामी ओ३म् प्रेमी चतुर्वेदी
गुरुकुल परिसर होशंगाबाद (म० प्र०)

त्यागी जी अब हमारे बीच नहीं रहे

श्री त्यागी जी के देहावसान का दुःखद समाचार सुनकर बड़ा आघात पहुंचा। व्यथित मनः स्थिति में दीर्घ काल तक यही सोचता रहा कि क्या हो गया? अनेकानेक विचार सामने आने लगे। श्री त्यागी जी के निधन से आर्य समाज की जो क्षति हुई है, उसकी कल्पना मात्र से मन सिहर उठा। आर्य समाज का एक महान स्तम्भ, कार्यकर्ता, विद्वान, कुशल लेखक और अत्यन्त मधुर एवं हृदयहारी वक्ता हमारे बीच से चला गया। अभी पूर्व श्री त्यागी जी के भाई का निधन हुआ था और अब वे स्वयं महा प्रयाण कर गए।

मैं दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति तथा दुःखित स्वजनों को धैर्य प्रदान करने के लिए प्रार्थना करता हूं। —काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)

आयसमाज नागदा के उत्सव पर श्री सेवाराम पटेल सावदेशिक सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले का स्वागत करते हुये।

एक भील नौजवान जो मध्यप्रदेश के वनवासी क्षत्रो मे वैदिक धर्म प्रचार कर रहा है।

आयसमाज के निष्ठावान संयासी स्वामी सेवानन्दजी जो आजकल देहाती क्षत्रो मे वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

आय समाज ? बानहान शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे आहुति देते हुए भारत के उपराष्ट्रपति श्री आर वेंकटरमन जी साथ मे खड़े है सभा प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह।

पंजि॰ नं॰ डी॰ (सी॰) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-६-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसंस नं॰ U ९३
R N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment Ltcense No.U 93 Post in D P S O on 12-6-86

आतंकवादी चाहते क्या है ?

(पृष्ठ ३ का शेष)

बरगलाया नही जा सकता। १९८४ के लोकसभा चुनावो मे राजीव गाधी ने देशभक्ति और आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव का लेकर जिस तरीके से सिखो के खिलाफ विषवमन किया है उसके बाद अब देशभक्ति के नाम पर उन्हें उभारा नही जा सकता।

जब केन्द्र और हिन्दुओ के बारे मे वे कहते है कि किस तरीके से उन्होने सिखो के साथ भेदभाव की नीति अपनाई है तो मैंने उनसे कहा कि कई बातें पजाब के हिन्दू भी कहते हैं। इस तरीके से हम अगर यह उठाना शुरू करें कि पहल किसने की थी तो किसी भी नतीजे पर नही पहुचेंगे। क्या ऐसी बात हो सकती है कि जो हो चुका सो हो चुका की भावना को लेकर भुला दिया जाए और आगे से रास्ता साफ हो सके ? तो उन्होने कहा कि यह तभी हो सकता है भारत सरकार जब अलग विधान अलग प्रधान और अलग निशान की बात मान ले।

कहलो का कहना था कि सरकार खालिस्तान हमारी गोद मे डालेगी तो हम ले ही लगे। यह वही बात है जो सत भिडरावाल कहा करते थे। मैंने उनसे कहा कि भारत का कोई भी सत्तारूढ दल ये तीन बात नही मान सकता। अब्राहम लिंकन जैसे जनतत्रवादी राष्ट्रपति भी देश की एकता बचाए रखने के लिए फौज का इस्तेमाल करके खतरा माल लेने मे हिचके नहीं थे। देश की एकता एक बहुत बडा सवाल होना है। आज भी अमेरिकन जाजिया जनरल सरमन के नाम से आतक पैदा हो जाता है कि किस तरीके से उन्होने अमेरिकन एकता को बनाए रखने के लिए नरसहार किया था।

मैंने उन्हे जनरल जिया के प्रेस सलाहकार सुलेरी के दो लेखो की बात बताई। एक लेख मे उन्होने ब्लू स्टार के बाद खालिस्तान बनान की प्रशसा की थी और कहा था कि बौद्ध स्थान और जैन स्थान भी बनने चाहिए लेकिन वो बन सकता क्योकि भारत मे ऐसा कोई भाग नही जहा बौद्धो और जैनो का बहुमत हो। दूसरे लेख मे उन्होने ही लिखा हैं कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद कोई भी राष्ट्र राज्य टूटा नही है।

अफ्रीका के देश नाइजीरिया का एक हिस्सा बियफा उससे अलग नही हो सका हालाकि फ्रास जाबिया और तजानिया ने उसे अलग राष्ट मान भी लिया था। उन्होने इसराइल की मिसाल भी दी। लेकिन मैंने उनसे कहा कि यह न भूले कि इसराइल रूस और अमेरिका की मदद से बना था। इसराइल चारो ओर से सपूण राज्य है। दूसरी तरफ यह भी बात याद रखने की है कि बोल्गा के पास रहने वाली जमन आबादी को स्टालिन ने दूसरे महायुद्ध के बाद भिन्न भिन्न जगहो मे बाट दिया था। अलग विधान अलग विधान, और अलग नि[illegible] की बात करते हुए कश्मीर की धारा ३७० का भी जिक्र आया तो मैंने [illegible] विलय भारत मे सशर्त हुआ था। प जाब या अ[illegible] [illegible]था। वह भारत का ? [illegible]

अब ऐ[illegible] इस बात का [illegible] स्थान देने को तैयार [illegible] जहा अहमदिया लोग जो इस्लाम म[illegible] नही रह सकते वहा सिखो को कोई स्थान कैसे मिल सकता है [illegible]ता जनक बात मुझे यह लगी कि जब सरकारी और गैर सरकारी सूत्रो से मालूम हुआ कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और गुरुद्वारोके पास अपने प्रबन्ध के लिए सेवादार नही है और आत कवादी समझते हैं कि स्वर्ण मन्दिर या दूसरे गुरुद्वारो को अगर उनसे पुलिस खाली भी करा ले तो फिर वे इन पर कब्जा कर लेंगे। प जाब और सिख सम्प्रदाय की अनेक मिसाल तो ग्रन्थी, रागी और ढाडी बन गए है जो सुबह शाम आदर्शो का ऐसा रूप पेश करते हैं जिससे लोगो के मनो मे मनमुटाव पैदा होता है। इसका क्या इलाज होगा ? अगर मन्त्री विधायक शिक्षा शास्त्री या साधारण सिखो के दिमाग मे एक ही बात आए कि केन्द्र उनके साथ भेदभावपूण नीति अपनाता रहा है और हिन्दू उनके दुश्मन हैं तो यह सब माहौल तो आत कवादियो के हाथो मे ही काम करेगा। आतकवादियो का तो कहना ही था कि च डीगढ नदियो आदि का पानी बिजली उनकी असली मार्गे नही है लेकिन इनके प्रचार से तो उनको मदद ही मिलती जिससे व हि दू सिखो मे अलगाव को बढावा देनेमे सफलहोगे।

आवश्यकता तो इस बात की है कि अकालियो और सिखो के समझदार लोग जो इस खतरे को अच्छी तरह समझते हैं सामने आए और फिर यह खुलकर कह सक कि अब गाधी और नेहरू के वायदो की बेकार बाते नही करनी चाहिए। अब भारत राष्ट्र राज्य बन रहा है। हमारे साथ अगर भेद-भाव हो रहा है तो सिखो ने भारतीय समाज मे किस प्रकार ऊचा स्थान पाया है ? अच्छे समाज का कोई भी क्षत्र हो भारत मे किसी भी सम्प्रदाय या धम का बोलवाला नही हो सकता। यहा तो सब का साझा बोलबाला ही होगा जो सारे भारत का बोलबाला होगा। (६ जून ८६ जनसत्ता से साभार)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज, नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क २६] | आषाढ़ कृ० १४ सं० २०४३ | रविवार ६ जुलाई १९८६

सार्वदेशिक सभा का आवश्यक परिपत्र

पंजाब की वर्त्तमान परिस्थितियों पर आर्यसमाज का विशेष सम्मेलन १२-१३ जुलाई को दिल्ली में

श्रीमन्नमस्ते,

आप जानते हैं कि पंजाब की स्थिति किस प्रकार दिन प्रति-दिन भयंकर रूप धारण करती जा रही है। जो पंजाब कभी देश की समृद्धि में सबसे आगे था, आज वह उजड़ता जा रहा है। हिन्दुओं पर होने वाले लोमहर्षक अत्याचार अब सीमा को लांघ चुके हैं। अकाली आन्दोलन की आड़ में पाकिस्तानी और विदेशी तत्त्व हिन्दुओं को पंजाब से निकालकर देश को खण्डित करना चाहते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिष्टमण्डल पंजाब के अनेक संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा कर चुका है और वहां के अत्याचारों और आंखों देखी दुरवस्था की सूचना एक विशेष प्रतिवेदन के साथ केन्द्रीय सरकार को भी दे चुका है।

इस सम्बन्ध में सभा ने ही सबसे पहले केन्द्रीय सरकार से मांग की थी कि पंजाब को ५ वर्ष के लिए सेना के हवाले कर दिया जाये और वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को सुरक्षा के पूर्ण प्रबन्ध किए जायें। किन्तु खेद है कि भारत सरकार अकालियों के प्रति एक प्रभावहीन नरम नीति पर चल रही है। इसी कारण पंजाब की स्थिति में और गिरावट आती जा रही है।

अतः सभा ने भारत सरकार से निवेदन किया है कि १२ जुलाई १९८६ तक पंजाब के हिन्दुओं की सुरक्षा एवं सीमावर्ती राज्य को बचाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया तो १२-१३ जुलाई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देश-भर के आर्य नेताओं का सम्मेलन बुलाकर आर्यसमाज द्वारा इस विषय में अन्तिम कदम उठाने का निर्णय करेगी।

आपसे प्रार्थना है कि १२ जुलाई (शनिवार) को पंजाब समस्या पर गम्भीर विचार-विनिमय करने के लिए सायंकाल ४ बजे आर्य-समाज मन्दिर दीवानहाल, दिल्ली में तथा १३ जुलाई (रविवार) को सायंकाल ४ बजे खुले अधिवेशन में भाग लेने के लिए विट्ठलभाई पटेल भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली में पधारने की कृपा करें।

मुझे आशा है कि आप पंजाब के हिन्दुओं के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए इन दोनों सभाओं में अवश्य उपस्थित होंगे।

भवदीय
आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

श्री शालवाले के संन्यास ग्रहण पर

प्रधानमन्त्री का शुभ कामना सन्देश

नई दिल्ली
२३ जून १९८६

प्रिय श्री सच्चिदानन्द,

आपका १७ जून का पत्र मिला जिसमें आपने श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा रविवार को संन्यास ग्रहण करने का जिक्र किया है। श्री शालवाले हमेशा दर्शन-शास्त्र में अपनी गहरी रुचि के कारण जाने जाते रहे हैं।

एक सन्यासी को किसी की शुभ कामनाओं की जरूरत नहीं होती। परन्तु मुझे उम्मीद है कि उनके परिश्रम से समाज लाभ उठाता रहेगा।

आपका
राजीव गांधी

२५ जून को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया जिसका विवरण आप पिछले अंक में पढ़ चुके हैं। यह चित्र उसी सवाददाता सम्मेलन का है।(बायें से)श्री सूर्यदेव, श्री रामगुरु शर्मा, प्रो० शेरसिंह, स्वामीजी और श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् बैठे दिखाई देरहे हैं।

सम्पादक - सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री स्वामी आनन्दबोध जी

—श्री वीरेन्द्र

(सचालक, दैनिक प्रताप व वीर प्रताप, जालन्धर)

जिन्हें हम कल तक श्री रामगोपाल शालवाले कहते थे, वे आज श्री स्वामी आनन्दबोध बन गए हैं। वेद मे मानवीय जीवन के चार पडाव बताए गये हैं। पहला ब्रह्मचर्य आश्रम, दूसरा गृहस्थ आश्रम, तीसरा वानप्रस्थ आश्रम और चौथा सन्यास। वेदों के अनुसार जब एक मनुष्य अपने जीवन की अन्तिम मजिल पर पहुचता है, उस समय तक उसे इस योग्य हो जाना चाहिए कि जब यह दुनिया छोड़ने का समय आए तो न उसे इसका दुख हो न उन लोगो को जिनके साथ वह अपने जीवन मे किसी न किसी रूप मे जुडा रहा हो। ब्रह्मचर्य आश्रम मानवीय जीवन का वह दौर होता है जब वह अधिकतर दूसरो के सहारे चलता हुआ अपने आपको इस योग्य बनाता है कि जिस दौर मे उसने इसके बाद कदम रखना है उसमे वह दूसरे के सहारे के बिना ही चल सके। गृहस्थ आश्रम के बारे मे कहा जाता है कि यह वह आधार है जिसके सहारे सारा समाज चलता है। यह उसी रूप में सम्भव हो सकता है यदि गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के बाद एक व्यक्ति न केवल स्वय अपने पाव पर खड़ा हो सके बल्कि दूसरो का भी सहारा बन सके। फिर तीसरा वानप्रस्थ आश्रम आता है जब मनुष्य स्वय को विश्व से अलग करके उस दिन की तैयारी करने लगता है, जब उसे अपने समाज को भी छोडना पडेगा और वह अपने जीवन का एक-एक पल मानव मात्र की सेवा में गुजारेगा। यह उसके जीवन की अन्तिम मजिल होती है अर्थात् सन्यास आश्रम। वेदो मे यह भी लिखा है कि जिसने सन्यास आश्रम मे प्रवेश करना हो उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह तीन प्रकार के मोह त्यागने को तैयार हो जाए। सबसे पहला यह कि वह अपने परिवार से लगाव बिल्कुल छोड दे। दूसरा यह कि उसे धन-दौलत से कोई मोह न रहे और तीसरा यह कि उसे ख्याति की इच्छा न रहे। वह जो भी काम करे और जो भी सेवा करे, निष्काम और निःस्वार्थ भाव से करे। जो व्यक्ति इन तीन शर्तों को पूरा करने को तैयार हो उसे ही सन्यासाश्रम मे जाना चाहिए।

आर्यसमाज को इस बात पर गर्व है कि उसने उच्च कोटि के कई सन्यासी पैदा किये हैं, जिन्होने अपने तप और त्याग से और जनता की निष्काम सेवा से सन्यास आश्रम को चार चांद लगाए हैं। हमारे देश मे साधु बहुत हैं (कहते हैं कि ५० लाख हैं) लेकिन सन्यासी बहुत कम हैं। केवल कपडो का रग बदलने से ही कोई सन्यासी नहीं बन जाता। उसके लिए बहुत अधिक त्याग करना पडता है। आर्यसमाज के संन्यासियों ने अपने सभी कर्त्तव्य निभाते हुए देश के संन्यासियों में अपने लिए वह स्थान प्राप्त कर लिया है जो अन्य सन्यासियो को कम मिला है। देश में कई सन्यासियों ने बडे-बडे मठ बना रखे हैं जहां वे आराम का जीवन व्यतीत करते हैं। आर्यसमाज के सन्यासी दूसरों के लिए अपना खून भी दे देते हैं। उनमे से कई सन्यासी बनने से पहले खुशहाल जीवन गुजारते हैं और उन्हें हर प्रकार का सुख-ऐश्वर्य प्राप्त रहता है लेकिन सन्यासी बनने के बाद उनके पास अपनी एक कौडी भी नही रहती। जो कुछ उनके पास होता है, वह अपने समाज को दे देते हैं।

आर्यसमाज के प्रमुख सन्यासियों में अब एक और की वृद्धि हुई है। लाला रामगोपाल का सारा जीवन देश और समाज की सेवा मे ही व्यतीत हुआ है। इसमे सन्देह नही कि आर्यसमाज के साथ उनका विशेष सम्बन्ध था। वह उसके सबसे बडे अधिकारी थे। इसलिए वह उसकी जितनी भी सेवा कर सकते थे, वह उन्होने की। यह कहना भी अतिशयोक्ति नही होगा कि उन्होने अपने जीवन का एक-एक पल आर्यसमाज की सेवा मे गुजारा है। इसका यह अभिप्राय नही कि उन्होने आर्यसमाज से बाहर किसी की सेवा नही की, गो-रक्षा के लिए वे बडे से बडा बलिदान देने को तैयार हो गये थे। जब उन्हें पता चला कि दक्षिणी भारत मे अरब देशो के धन से गरीब हिन्दू जनता को मुसलमान बनाया जा रहा है तो वे वहां भी पहुचे और उसे रोकने के लिए उनसे जो कुछ हो सका, उन्होने किया। गत दिनो जब पोप पाल भारत आए थे तो उन्हे पता चला कि इस अवसर पर एक लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाया जाएगा। उन्होने भारत सरकार से कह दिया कि ऐसा नही होने दिया जाएगा चाहे आर्यसमाज को बडे से बडा बलिदान भी क्यो न करना पड़े। हम गर्व से कह सकते हैं कि ईसाइयो की यह योजना पूरी न हो सकी और इसका बहुत कुछ श्रेय लाला रामगोपाल को है।

अब वे एक नए रूप मे हमारे सामने आयेंगे। उनके लिए सम्मान तो हमारे दिलो मे पहले भी था। अब सम्मान श्रद्धा का रूप धारण कर गया है। जिसने सन्यास ले लिया उसने अपने धर्म और समाज के लिए सब-कुछ दे दिया। सन्यासी जब भगवा वस्त्र धारण करता है तो वह अग्नि के रूप मे आम लोगो के सामने आता है। आग हर तरह के कूड़ा-करकट को भस्म कर देती है। इसी तरह एक सन्यासी से भी यह आशा की जाती है कि वह हर तरह के पाप और पाखण्ड को, दुराचार और भ्रष्टाचार को समाप्त कर देगा। स्वय भी सच्चाई की राह पर चलेगा और दूसरो को भी उस पर चलाने का प्रयास करेगा। आर्यसमाज के सन्यासी आज तक इस परीक्षा में पूरे उतरते रहे है। आशा ही नही, अपितु पूर्ण विश्वास है कि श्री स्वामी आनन्दबोध जी महाराज भी इस आशा को पूरा करेंगे।

सरकार हिन्दू विस्थापितों को राहत देने की व्यवस्था करे : स्वामी आनन्दबोध का प्रधानमन्त्री को पत्र

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि सरकार पजाब के विस्थापित हिन्दुओं के, जो इन दिनों दिल्ली और अन्य नगरों में आर्यसमाज मन्दिरों आदि में रुके हुए हैं, आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था करे।

स्वामी जी ने यह भी लिखा है कि "सरकार इन लोगों को विश्वास में लेकर तुरन्त पंजाब भेजने की व्यवस्था करे।"

पंजाब का खून

दूध सापो को फिर हम पिलाने लगे,
आजमाये को फिर आजमाने लगे।

चैन की जिन्दगी रास आती नहीं,
सोये फितनो को फिर हम जगाने लगे।

लोग किस मुह से कहते है अपना उन्हे,
बस्तियो को जो मरघट बनाने लगे।

खून इतना बहा धर्म के नाम पर,
धर्म से लोग दामन बचाने लगे।

यह नकल का जमाना है 'निर्बाध' जी,
माल असली कहा पर दिखाने लगे॥

—विजय निर्बाध

संस्कृत के माध्यम से आई. ए. एस.

श्री शकरनारायण पाणिग्रही ने भारत की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा की परीक्षा सस्कृत मे उत्तीर्ण की है।

श्री पाणिग्रही ने न केवल सब प्रश्नपत्रों के उत्तर सस्कृत मे लिखे अपितु उत्तीर्ण होकर साक्षात्कार भी सस्कृत मे ही दिया।

मॉरिशस के आर्य नेता का निधन

रोज हिल (मौरिशस)। मौरिशस आर्यसभा के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त नन्दलाल का निधन हो गया है। उनके अन्त्येष्टि सस्कार के समय प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, अनेक मन्त्री और ससद्सदस्य उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने पत्र मे उनके निधन पर शोक प्रकट किया है।

सम्पादकीय

पंजाब से आए हिंदुओं की सुनो

आज देश की सुरक्षा, अखण्डता, एकता की भावना को बनाये रखने के लिए आवश्यकता है भाईचारे की। पंजाब में काफी समय से विदेशी शक्तियों द्वारा अपनाये गये व्यवहार से वहां का हिन्दू अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहा है। हत्या और लूटपाट के कारण आर्य-हिन्दू जनता पंजाब से भागकर देश के विभिन्न अञ्चलों में सुरक्षा के लिए आ रही है। ऐसी स्थिति में पंजाब के किसी भी सिख नेता ने दो शब्द भी हमदर्दी में नहीं कहे तथा भारतीय सरकार ने भी उनकी सुध तक नहीं ली।

आर्यसमाज व अन्य धार्मिक संस्थाओं ने अपनी शरण में लेकर उनकी समुचित व्यवस्था की है। हिन्दुओं के परिवारों के प्रति घोर उपेक्षापूर्ण रवैये का आरोप लगाते हुए सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने भारत सरकार से मांग की है कि उनके पुनर्वास और कारोबार की समस्या को सुलझाकर उनके दुःख को दूर करे।

स्व०श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के उपरान्त जब जन-आक्रोश उभरा था उस समय भारत सरकार ने पीड़ित सिख समुदाय के साथ जो हमदर्दी का व्यवहार अपनाया और उन्हें आवास भोजनादि की तथा आर्थिक मदद की थी वह समयोचित कार्य मानवता पूर्ण था।

परन्तु आज उन्हीं सिखों द्वारा हिन्दू के साथ किये गये बर्बरतापूर्ण व्यवहार, अत्याचार से पीड़ित हिन्दू अपने को असहाय अनुभव कर रहा है। प्रांतीय तथा भारत सरकारने किसी भी प्रकारकी सहायता न कर उन्हें उपेक्षित ही समझा है। इस प्रकार के व्यवहार से उनके दिलों को भारी ठेस पहुंची है। वे दर-दर की ठोकरें खाकर प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति आदि से त्राहि माम् की पुकार कर रहे हैं। इस पर भी उनकी पीड़ा को सुनकर किसी प्रकार की सहायता नहीं की जा रही है।

चाहिये तो यह था कि श्री उपराज्यपाल महोदय आकर उनके आंसू पोंछते और उनकी यथाशक्ति मदद करते। पर उपेक्षित, उत्पीड़ित, असहाय हिन्दू की आवाज सरकार के कानों तक नहीं पहुंची। संस्थायें चाहे आर्य-समाज हों या सनातन धर्म सभा हों, उन्होंने पीड़ित हिन्दू की आवास की सुविधा तथा भोजनादि की समुचित व्यवस्था की है। अधिकतर व्यक्ति सिर छिपाने के लिए अपने रिश्तेदारों के घरों में भी रह रहे हैं।

कुछ व्यक्तियों ने उपराज्यपाल महोदय से मिलकर मांग भी की है कि इन लोगों की रिहाइश, भोजन और व्यवसाय के लिए आर्थिक सहायता सरकार से दिलवायें।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार पांच-छः सौ से अधिक लोग आर्यसमाज के विद्यालयों तथा सनातन धर्म के मन्दिरों में शरण लिए हुए हैं लेकिन यह कितनी हास्यास्पद और लज्जाजनक बात है कि इनको देखने, हाल-चाल पूछने तक प्रशासन का कोई व्यक्ति इनके पास नहीं गया है।

अब विद्यालयों के खुलने का समय समीप आ रहा है। ऐसे समय में आवश्यकता है कि इनके आवास की अविलम्ब व्यवस्था की जाय और सरकार उन्हें डी. डी. ए. के मकान एलाट करके दे। साथ ही जो परिवार अपनी सम्पत्ति आदि छोड़ कर आये हैं उनकी क्षतिपूर्ति भी की जानी चाहिए।

मानवता का तकाजा था कि इस सकटपूर्ण स्थिति में सरकार उनके जान-माल की रक्षा करती। परन्तु देखा यह गया है कि साम्प्रदायिक शक्तियों के आगे सरकार झुकती है। आज ऐसी ताकतें सारे भारत में विद्रोह की आग लगाकर वातावरण को दूषित कर राष्ट्रीयता को खतरा उत्पन्न कर रही हैं। सरकार अपनी दब्बू नीति के कारण उनके आगे झुक रही है और कठोर कदम उठाने में हिचकिचा रही है। आवश्यकता थी इस बात की कि अविलम्ब उस क्षेत्र को सेना के हवाले किया जाता, जिससे असुरक्षित मानवता को संरक्षण प्राप्त होता। उत्पन्न आतंकवाद के कारण भयावह स्थिति बनती जा रही है और असहाय हिन्दुओं को वहां से पलायन के अतिरिक्त कोई चारा नहीं नजर आ रहा है। कष्टों के दूर करने का [illegible] है।

आर्यसमाजों के नाम परिपत्र

पंजाब के विस्थापित हिन्दुओं की सहायता के लिए पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दिल खोलकर दान दें

आज पंजाब उग्रवाद और आतंकवाद से जल रहा है। वहां का हिन्दू पूरी तरह भयभीत होकर पंजाब छोड़ कर अन्य राज्यों के विभिन्न नगरों में सुरक्षा हेतु पहुंच रहा है। दिल्ली, हरयाणा, हिमाचल, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के अनेक नगरों में अब तक लाखों हिन्दू पहुंच चुके हैं।

आर्यसमाज इस सम्बन्ध में भारत सरकार से संपर्क रखे हुए है और इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि सरकार की ओर से तुरन्त कोई ऐसी व्यवस्था हो जाये जिससे वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं में आत्म-विश्वास पैदा हो सके और उनका पलायन रोका जा सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की २२ जून की अन्तरंग सभा में यह निर्णय लिया गया है कि यदि भारत सरकार यथाशीघ्र पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं करती तो सार्वदेशिक सभा की ओर से आगामी १२-१३ जुलाई को भारत की समस्त आर्य समाजों का कन्वेन्शन बुलाया जायेगा और आगे की कार्यवाई पर निर्णय लिया जायेगा।

इस संकट की घड़ी में समस्त आर्यसमाजों, आर्य जनता तथा राष्ट्रवादी जनता से हमारा निवेदन है कि पंजाब के विस्थापितों को मंदिरों, धर्मशालाओं में हर प्रकार का सहयोग-संरक्षण प्रदान करें। सार्वदेशिक सभा ने इस कार्य के लिए पंजाब हिन्दू सहायता कोष की स्थापना कर दी है। सभी समाजों व धर्मप्रेमी जनता से अपील है कि वह अपनी सहयोग राशि निम्नलिखित पते पर तुरन्त भिजवाने का कष्ट करें—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

निवेदक

सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा मंत्री
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

२७ जून, १९८६

इन्दिरा जी की हत्या का षड्यन्त्र : कुछ रहस्योद्घाटन-२

—अश्विनी मिन्ना (स्थानीय सम्पादक, पंजाब केसरी, दिल्ली)—

श्रीनगर से विमान अपहरण में मिली कामयाबी से अतिंदरपाल सिंह के हौसले बहुत बुलन्द थे। खुफिया सूत्रों के अनुसार प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की सुरक्षा व्यवस्था के अभेद्य कवच में अतिंदरपाल सिंह ने अगस्त ८४ में छेद कर दिये थे। तब प्रधानमन्त्री की सुरक्षा में तैनात सब-इन्सपेक्टर बलबीरसिंह को उसी ने १५अगस्त के दिन लाल किले में प्रधानमन्त्री की हत्या के लिये तैयार किया किन्तु ऐन वक्त पर बलबीर ने अपने परिवार को हिन्दुस्तान से सुरक्षित विदेश भेजने और उसे पांच लाख रुपए नकद देने की मांग की। इससे षड्यन्त्रकारियों को उसके इरादों पर शक हो गया और यह योजना पूरी न हो सकी। इन दो हादसों के बाद श्रीमती गांधी की हत्या की योजना अति गुप्त तरीके से अतिंदरपाल सिंह ने कुछ विदेशी तत्त्वों के सहयोग से स्वयं बनाई और ३१ अक्तूबर ८४ की मनहूस सुबह उसे सौ फीसदी कारगर कर दिखाया।

भोपाल में अप्रैल के तीसरे सप्ताह दो सिख युवकों से की गई पूछताछ में कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र हाथ लगे हैं। आनन्दराम आयोग के अन्तर्गत कार्यरत सी.बी.आई. के विशेष जांच दल ने गत २८ अप्रैल को भोपाल के २१-वर्षीय सिख युवक बरजिंदरपाल सिंह और २३-वर्षीय युवक सुरिन्दरपालसिंह से करीब सात घण्टे पूछताछ की। बरजिंदरपाल सिंह एक सम्पन्न सिख बाप का बेटा है और भोपाल में अरेरा कालोनी में अपने पिता के मकान में रहता है। उसके पिता पेशे से व्यवसायी हैं। मकान के सामने ही एक छोटा गुरुद्वारा है। बरजिंदर भोपाल के पोलिटेक्निक कालेज का द्वितीय वर्ष का छात्र है। सुरिंदरपालसिंह बी०ए० द्वितीय वर्ष का छात्र है और वह उज्जैन के शासकीय इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ता है। यह भोपाल के जहांगीराबाद क्षेत्र में मजदूरों की बस्ती सिलावटपुरा का रहने वाला है। इसके पिता रायचन्द सरकारी नौकरी से रिटायर होने के बाद अब ट्रक चलाते हैं। यह परिवार हिन्दू है लेकिन सुरिंदरपाल सिंह ने सिख मत स्वीकार किया हुआ है और अब वह एक कट्टर सिख युवक है। इन दोनों सिख युवकों के अतिंदरपालसिंह से भोपाल के दिनों में और उसके भोपाल छोड़ने के बाद गहरे सम्बन्ध रहे हैं। यहां तक कि अतिंदरपाल सिंह के यहां से फरार होने के बाद से वे उसकी इच्छानुसार राज्य की गतिविधियों को ध्यान में रखकर यहां अखिल भारतीय सिख छात्रसंघ की कार्रवाई के सूत्र संचालक रहे हैं। अतिंदर और उसके परिवार के बीच सम्पर्क की कड़ी भी यही दोनों युवक थे। जांच दल को इन युवकों से कई महत्वपूर्ण सुराग लगे हैं, जो षड्यन्त्र की तह में जाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

अतिंदरपाल के भोपाल से पलायन के बाद ये दोनों युवक उससे दिल्ली या अन्य स्थानों में जाकर बराबर मिलते रहे हैं। एक खुफिया सूत्र के अनुसार बरजिंदरपाल और सुरिंदरपाल ने अपने सौ-पेजी इकबालिया बयान में बताया है कि अतिंदरपाल के दिल्ली स्थित पाकिस्तानी दूतावास के गुप्तचरों से निकट सम्बन्ध रहे हैं। वह उनसे नियमित मिलता रहता था। इन्दिरा गांधी की हत्या के एक सप्ताह पहले भी वह पाकिस्तानी दूतावास के गुप्तचरों से मिला था। वहां से लौटने के बाद अतिंदरपाल सिंह ने इन युवकों को तब भोपाल में रह रहे अपने परिवार और पिता की परवरिश के लिए २० हजार रुपए दिए थे। इन युवकों को यह हिदायत भी दी थी कि वे उसके परिजनों को ३० अक्तूबर से पहले भोपाल से बाहर सुरक्षित स्थान पर भेज दें। इसलिए अतिंदरपालसिंह का परिवार इन्दिरा गांधी की हत्या के समय राज्य के संभागीय मुख्यालय सागर में सुरक्षित रहा। इसका आशय यह कि उसे इस बात का अंदेशा था कि श्रीमती गांधी की हत्या के बाद दंगे भड़क सकते हैं। सी.बी.आई. का यह विशेष जांच दल कोई एक दर्जन बार राज्य के मुख्यालय भोपाल, इन्दौर, उज्जैन, देवास, दुर्ग, रायपुर की यात्रा कर चुका है। ये तथ्य जानकारी में आने के बाद जांच दल का काम थोड़ा प्रगति पर है।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार अतिंदरपालसिंह ने श्रीमती गांधी पर ३१ अक्तूबर की सुबह पिस्तौल और स्टेनगन से गोलियों की बौछार करने वाले सब-इन्स्पेक्टर बेअन्तसिंह और सिपाही सतवन्तसिंह से कभी सीधा सम्पर्क नहीं रखा। योजना का सूत्रधार तो अतिंदरपाल ही रहा, पर उनसे सम्पर्क का माध्यम दूसरे आतंकवादी थे। प्रधानमन्त्री निवास की सुरक्षा व्यूह रचना तथा उनके रोजमर्रा के कार्यक्रमों को ध्यान में रख कर ही हत्या का प्लाट तैयार किया गया था।

गुप्तचर सूत्रों को अभी तक मिली जानकारी के अनुसार अतिंदरपाल इन्दिरा गांधी की हत्या का प्लाट बनाकर जम्मू के पास से २८ अक्तूबर ८४ को ही पाकिस्तान चला गया था। सीमा के उस पार मौजूद पाकिस्तानी इंटेलिजेंस के लोगों ने उसका स्वागत किया था। सीमा पर पहुंचते ही अतिंदरपाल ने इन्दिरागांधी की हत्या की योजना का मूल प्रारूप उन्हें सौंप दिया था। ये स्थितियां साफ बताती हैं कि इन्दिरा गांधी की हत्या में पाकिस्तान का स्पष्ट हाथ है। पाकिस्तान और अमरीका के सम्बन्धों की घनिष्ठता को देखते हुये इस आशंका को गलत नहीं कहा जा सकता कि इस षड्यन्त्र की जानकारी अमरीकी संस्था सी०आई०ए० को भी रही हो। अतिंदरपाल सिंह ने जो योजना बनाई थी, वह सौ-फीसदी ज्यों की त्यों कामयाब हो गई। सुविज्ञ सूत्रों के अनुसार पाकिस्तान सरकार ने न केवल अतिंदरपाल को अपने यहां पनाह दी है, बल्कि उसे वरिष्ठ राजनैतिक शरणार्थी का दर्जा, वेतन, सरकारी बंगला और कार दी गई है। इन दिनों वह लाहौरमें है। कनाडा में सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन के गठन से लेकर पंजाब मे आतंकवादी गतिविधियों का संचालन और खालिस्तान की ताजा घोषणा, सब कुछ उसी के इशारे पर हो रहा है। इसकी पुष्टि पिछले दिनों पंजाब और राजस्थान में पकड़े गये प्रमुख आतंकवादी देविन्दर सिंह, सरबजीतसिंह और गुरिंदर सिंह से पूछताछ के दौरान हुई। पाकिस्तान के लाहौर, स्यालकोट और फैसलाबाद में पंजाब में पहुंच रहे सिख युवकों को दी जा रही आतंकवादी और छापामार लड़ाई की ट्रेनिंग का मुख्य संचालक भी वही है।

अब जांच दल के सामने सबसे जटिल प्रश्न यह है कि इन्दिरा गांधी की हत्या का षड्यन्त्र रचा कहां गया? भोपाल अथवा मध्य प्रदेश के किसी शहर में, दिल्ली में (जो उन स्थितियों को देखते हुये सम्भव नहीं है) या जम्मू के किसी इलाके में? दूसरा अहम सवाल यह है कि जब अतिंदरपाल की गतिविधियां इतनी देशद्रोही थीं तो मध्य प्रदेश पुलिस की गुप्तचर शाखा अथवा केन्द्रीय इंटेलिजेंस ब्यूरो ने उस पर लगातार निगाह क्यों नहीं रखी? क्या वह अपने छात्र जीवन से ही खतरनाक खेल खेल रहा था?

जब यह परिवार भोपाल आया, अतिंदरपाल नौ-दस वर्ष का था। हायर सैकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जब वह कालेज में बी०ए० की पढ़ाई कर रहा था, तभी उसने अखिल भारतीय सिख छात्र संगठन के लिये काम करना शुरु किया। भोपाल के ही अरेरा कालोनी क्षेत्र में रहने वाले डा० सुन्दरसिंह और उनके पुत्र सुदर्शन सिंह की प्रेरणा से वह सिख छात्र संघ के काम में सक्रिय हुआ और भोपाल जिले का अध्यक्ष नामजद किया गया। अतिंदरपाल बहुत ही अन्तर्मुखी है, इसलिये उसकी गतिविधियों की कोई भनक किसी को नहीं लगी। १९८० के बाद जब भिंडरांवाले ने अपना प्रभाव बढ़ाना

(शेष पृष्ठ १० पर)

सिखो! हिन्दुओं को बचाओ : हिन्दुओ! सिखों को बचाओ

—क्षितीश वेदालंकार—

अनन्तनाग (कश्मीर) से एक शुभ समाचार मिला है। पिछले दिनों पाकिस्तान समर्थकों द्वारा कश्मीरी पंडितों को लूटने, हिन्दू मन्दिरों को जलाने, उनकी महिलाओं को बेइज्जत करने और उनके घरों को बर्बाद करने की भी वारदात हुई थी उसके कारण वहां से बहुत-से कश्मीरी पंडित कश्मीर छोड़कर चले गये थे। इस प्रकार जाने वालों में कई प्रमुख हिन्दू वकील भी थे। तब अनन्तनाग के मुसलमान वकीलों ने वहां काम करना बन्द कर दिया और यह मांग की कि जब तक हमारे भाई और साथी हिन्दू वकील लौट कर नहीं आयेंगे, तब तक हम भी अदालत का बहिष्कार जारी रखेंगे। अपने मुसलमान बन्धुओं की इस सद्भावना से प्रेरित होकर अनन्तनाग छोड़कर गये प्रमुख हिन्दू वकील वापिस आये और तब वहां के वकीलों ने अदालत का बहिष्कार खत्म कर दिया। यह आतंकवाद पर साम्प्रदायिक सौहार्द और कश्मीर के पारम्परिक सहिष्णुता-प्रधान स्नेह का द्योतक है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कश्मीर में भी भारत विरोधी आन्दोलन करने वाले और हिन्दुओं को वहां से आतंक फैला कर निकालने वाले कुछ सिर-फिरे लोग हैं जो पाकिस्तान की शह पर काम करते हैं। कश्मीर की आम जनता में अभी तक हिन्दू विरोधी भावना उस उग्र रूप में नहीं है, जिसकी सारे देश को आशंका थी।

हमें लगता है कि बहुत-कुछ इसी प्रकार की बात पंजाब में भी है। इस समय वहां हिन्दुओं को आतंकित करके पंजाब से पलायन के लिए मजबूर करने वाला सिर-फिरे सिखों का एक वर्ग है, वहां आम सिख बहुमत उस प्रकार का हिन्दू विरोधी नहीं है, बल्कि वह सदियों से साथ-साथ रहने की उसी स्नेहिल परम्परा का उपासक है जिसके लिए अब तक पंजाब प्रसिद्ध रहा है। आखिर हो भी क्यों न? हिन्दू और सिख कभी अलग थे ही नहीं। जो एक ही मां के सपूत थे और हमशीर भाई-बहिन थे और समान गुरुओं के शिष्य थे, जिनके पूर्वज, जिनके धर्म शास्त्र और ऐतिहासिक महापुरुष समान थे जो सैंकड़ों सालों के इतिहास के लम्बे दौर में जय-पराजय और हर्ष-विषाद के समान रूप से उपभोक्ता रहे, देश की आजादी के लिए जिन्होंने साथ-साथ खून बहाया और देश के विभाजन की भीषण त्रासदी का जिन्होंने समान रूप से मुकाबला किया, वे आपस में अलग हो भी कैसे सकते थे। परन्तु नहीं, इतिहास कोई बधी-बंधाई नहर नहीं है। वह तो एक बरसाती नदी की तरह है, जिसमें बाढ़ आने पर कूल-किनारों का कुछ पता नहीं लगता और बाढ़ के पानी के साथ न जाने कितना कूड़ा-कचरा और मिट्टी बहकर चले आते हैं। बाढ़ जब आती है तो पेड़ों को उखाड़ती है, फसलों को बर्बाद करती है और गांवों को भी उजाड़ती है। परन्तु बरसात का मौसम समाप्त होने पर वह जल प्रलय का दृश्य भी समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार इतिहास में कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं; जब जातियों की जातियां पागल हो जाती हैं। उन्हें भूत-भविष्य कुछ दिखाई नहीं देता और वे अपने वर्तमान पर अपने हाथों से कालिख पोत लेती हैं। शायद इन्हीं को लक्ष्य करके शायर ने कहा है—

तारीख की नजरों ने वे वक्त भी देखे हैं,
लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।

पिछले ५ साल से पंजाब इसी खता के दौर से गुजर रहा है। इसका बीज अंग्रेज बो गये थे। उन्होंने ही मुस्लिम लीग को भड़का कर पाकिस्तान बनवाया और वे ही अपने पिट्ठुओं की पीठ पर हाथ रखकर उनसे खालिस्तान का नारा लगवा रहे हैं। इस खालिस्तान के आन्दोलन की जड़ पंजाब में उतनी नहीं जितनी ब्रिटेन, कनाडा, अमरीका और पाकिस्तान में है। पंचमांगी किस देश में नहीं हैं और आतंकवादी भी किस देश में नहीं हैं। परन्तु भारत के इन पंचमांगियों और आतंकवादियों को जिस प्रकार की शह उपरोक्त विदेशों से मिलती है वैसी शह और किसी देश के आतंकवादियों को नहीं मिलती। अभी कुछ दिन पहले ही अमरीका ने आतंकवादियों को सहयोग देने के आरोप में लीबिया पर जो बमबारी की उसका शोर सारे संसार में मच गया। परन्तु भारत के इन चन्द आतंकवादियों को सहयोग देने के विरुद्ध संसार की आखें बन्द हैं।

पंजाब से सैंकड़ों परिवार जिन हालात में वहां से निकल कर आये हैं, उन हालात को पैदा करने की जिम्मेदारी किसकी है? निश्चय ही पंजाब के आम सिखों की नहीं। पंजाब के आम सिख तो अपने हिन्दू भाइयों के साथ उसी प्रेम से रहना चाहते हैं, जिस प्रेम से अब तक रहते आये हैं। परन्तु ये आतंकवादी उस प्रेम से रहने दें तब न। पंजाब के इन बेरोजगार पढ़े-लिखे युवकों के लिए इस समय आतंक फैलाकर हत्या करना भी रोजगार का जरिया बन गया है। अब हत्या एक बिजनेस है और इस बिजनेस का मालिक है पाकिस्तान जिसे औद्योगिक परिभाषा में "एम्प्लायर" कहना चाहिए। वह अपने इन एम्प्लाईज अर्थात् आतंकवादी कर्मचारियों के लिए सब तरह की सुविधाएं जुटाता है। पाकिस्तान उन्हें अपने यहां प्रशिक्षण देता है, उन्हें आधुनिक हथियार देता है और वे जितने हिन्दुओं की हत्या करें, उसके हिसाब से उन्हें पैसा देता है। अपने कर्मचारियों का इतना खयाल रखने वाला मालिक दुनिया में और कहां मिलेगा? फिर बैंकों को लूटने से जो पैसा हाथ में आता है, वह तो इन आतंकवादियों का अपना है ही। साथ ही आतंकवादी गांवों, कस्बों और शहरों के धनी व्यक्तियों को बुलाकर बन्दूक की नोक पर उन्हें धमकी देते हैं कि इतने हजार रुपए दो तो तुम्हारी जान बख्शी जायेगी, नहीं तो तुम नहीं, तुम्हारा परिवार नहीं। ऐसे हालात में हिन्दुओं को वहां से भाग कर आना पड़ रहा है।

इन आतंकवादियों से निपटने में सबसे बड़ी दो बाधाएं हैं। पहली बाधा तो यह है कि पंजाब की पुलिस का न केवल मनोबल क्षीण हो चुका है बल्कि उनके अधिकतर लोग आतंकवादियों से मिले हुए हैं। इसलिए वे आतंकवादियों को जानते-पहचानते हैं, फिर भी पकड़ते नहीं हैं। कभी पकड़ते भी हैं तो उन पर दण्ड संहिता की वे धाराएं लागू करते हैं, जिन्हें साबित करना कठिन हो जाये और वे आतंकवादी साफ छूटकर निकल जायें।

दूसरी बड़ी बाधा यह है कि बरनाला सरकार अपनी उदारता और देश की अखण्डता के समर्थन का ढोल पीटते हुए भी अपने आपको पंथिक सरकार कहने से बाज नहीं आती। इसलिए उसकी दृष्टि में सिख पंथ के अनुयायी तो प्रथम दर्जे के नागरिक हो गए, और पंजाब के जितने इतर लोग हैं, वे दूसरे दर्जे के नागरिक हो गए। किसी भी धर्मराज्य की सबसे बड़ी खराबी यही है कि वह अपने समानधर्मा लोगों को इतर धर्म वालों से वरीयता देने लगता है। इस दृष्टि से अपने संविधान में सम्प्रदाय-निरपेक्षता का सिद्धांत स्वीकार करके भारत सरकार ने सारे संसार में एक अद्भुत आदर्श की स्थापना की है। सच पूछो तो यह सारा संघर्ष साम्प्रदायिकता और सम्प्रदाय-निरपेक्षता के बीच है। इस दृष्टि से यह संघर्ष केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं है। यह अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष है। भारत के चारों तरफ सम्प्रदाय-सापेक्ष या

तानाशाही राज्य स्थापित हैं। कम्युनिस्ट राज्य भी तानाशाही के ही दूसरे रूप हैं। उन सबके बीच मे सम्प्रदाय-निरपेक्षता के झण्डे का अलम्बरदार भारत तानाशाही के समुद्र मे एक द्वीप की तरह खडा है। अगर इस संघर्ष में भारत सरकार पराजित हो जाती है तो यह ससार के भविष्य का दिशा सूचक होगा और भारत अगर जीत जाता है, (उसे हर हालत में जीतना ही है) तो आतकवाद के नाम पर उभरी पथिक स्वार्थों की ओट लेने वाली इस साम्प्रदायिकता को समाप्त करना ही होगा।

इसलिए बरनाला सरकार को यदि कुछ करना है तो सबसे पहले उसे अपने आपको पथिक सरकार कहना छोडकर पजाब के समस्त निवासियो की सरकार कहना होगा। उसे हिन्दुओं की रक्षा की जिम्मेदारी भी उसी तरह से निभानी होगी, जिस तरह वह सिखो की रक्षा की जिम्मेदारी निभाती है। हिन्दू और सिख मे भेद करना सरकार को शोभा नही देता। हम अकाली बन्धुओ से कहना चाहते हैं कि आतकवाद कभी किसी का सगा नहीं होता। आज वह हिन्दुओ को आतकित कर रहा है,तो कल वह सिख अवाम को आतकित करेगा। इसलिए सबसे पहला काम यह करना चाहिए कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और उसके मुख्य ग्रन्थी घोषणा करें कि बेगुनाहों की हत्या करने वाले,आतकवादी,हत्यारे हैं—केवल हत्यारे--वे सिख नहीं हैं—इसलिए उन्हें किसी भी प्रकार की शरण देना या दण्ड से बचाना, स्वर्ण मन्दिर मे घुसने देना या अकालतख्त की कारसेवा करने देना गैर-सिखी काम हैं। इन आतकवादियों को तनखैया घोषित क्यों नही किया गया? सब सिख नेता मंच से सदा यही कहते हैं कि सिख धर्म बेगुनाहों की हत्या करना नही सिखाता। परन्तु जब आतकवादियों से निपटने का प्रसग आता है तब तोहडा, बादल एण्ड कम्पनी के हृदय मे न जाने कहा से इन आतकवादियो के प्रति करुणा का स्रोत उमड पडता है। चोरो के साथी भी हमेशा चोर होते हैं। इसलिए जिस दण्ड के पात्र ये आतकवादी हैं, वही दण्ड तोहडा एण्ड कम्पनी को भी मिलना चाहिए।

हम पजाब के सिखो से अपील करते हैं कि जिस तरह अनन्तनाग के मुसलमानो ने आग्रह करके वहा के कशमीरी पडितो को वापिस बुलाया है उसी तरह वे भी पजाब सरकार से आग्रह करे और स्वय सगठित होकर आन्दोलन करें कि पजाब से गए हुए सब हिन्दू जब तक वापिस नही आवेंगे तब तक हम चैन से नही बैठेंगे। इसी प्रकार का आन्दोलन पजाब से बाहर के सिखों को भी करना चाहिए। जहा हम सिखो से यह अपील करते हैं, वहा सारे देश के हिन्दुओ से भी यह अपील करते हैं कि देश का कोई ऐसा हिस्सा नही है, जहा सिख न बसते हो--पजाब मे आतकवादियो की कारगुजारी की सजा पजाब के बाहर के सिखो को नही मिलनी चाहिए। किसी सिख का बाल बाका नही होना चाहिए। सब अपने को पूरी तरह सुरक्षित समझें और वे किसी भी सूरत मे और किसी भी प्रलोभन से भागकर पजाब जाने के लिए विवश न हो। सिखो ! तुम पजाब के हिन्दुओ को बचाओ, और समस्त देश के हिन्दुओ ! तुम पजाब से बाहर के सिखों को बचाओ। तभी देश का भविष्य सुरक्षित रह सकता है।

प्रार्थना

हे प्रभु सबको पावन कर दो,
मोह ध्वान्त मे भटक-भटक कर
मानव अब चल रहा कुपथ पर
धर्म न्याय निष्प्राण हो रहे
इनमे फिर नव जीवन भर दो ॥ हे प्रभु०

भौतिकजनक विज्ञान बढ रहा,
जग विनाश के शिखर चढ रहा।
इस पथ-भ्रष्ट जगत् को स्वामिन्
सुपथ दिशा आलोकित कर दो॥ हे प्रभु०

भौतिक सुख साधन का यह फल,
बना हुआ है सब जग विह्वल।
जिससे सभी सुखी हों प्राणी,
उस विवेक की वर्षा कर दो ॥ हे प्रभु०

पर हित निरत सभी का मन हो,
पाप-पुण्य से रहित भुवन हो।
मृत्यु भीति जिससे भग जाये,
वह अपना उपदेश मधुर दो ॥ हे प्रभु०

श्रुति प्रकाश से ज्योतित जग हो,
सबका ही मगलमय मग हो।
नर निर्मित पन्थों के तम को,
दिव्य विभा से भगवन हर दो।
हे प्रभु, सबको पावन कर दो ॥

—आचार्य रामकिशोर शर्मा

देवभाषा संस्कृत प्रियः श्री शालवाले महाभागः

जब यह रचना लिखी गई थी, तब श्री रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थी थे। अब वे संन्यस्त हो गये हैं और उनका शुभ नाम महात्मा आनन्दबोध सरस्वती हो गया है। यह तथ्य ध्यान में रखकर प्रस्तुत रचना पढ़ें।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामिनाऽकमात्र स्वतः प्रमाणवेदाः संस्कृते एव विद्यन्ते। अन्ये अनेकभाषासु तेषामनुवादाः प्रकाशितास्तथापि वेदानां गूढरहस्यं तेष्वेव सरलतया प्रकाशितं भवति, ये संस्कृतज्ञाः सन्ति। अतः संस्कृतमयवेदानामध्ययनाध्यापनं च आर्याणां परमो धर्मोऽस्ति। नायमाशय एतस्य यत् कश्चिदपि संस्कृतातिरिक्त भाषासु वेदानुवादस्य वाचन कृत्वा 'वेद-पाठी' विशेषणं संज्ञा वा लब्धुं शक्नुयात्। फलतः प्रत्येकार्यस्य संस्कृताध्ययन तादृशमेवानिवार्यम् यादृशं वेदानां प्रतिपादितम्। अंग्रेजी-उर्दू आदिक भाषा माध्यमेन वेदसम्मेलनेषु वेद महिमानं तु महावाचणैः प्रकाशयितुमर्हेत्, परं समग्र जीवन यावत् संस्कृतं नाधीयीत इत्येवमार्यत्वं न सम्भवति।

संस्कृतभाषा प्रेम प्रख्यापनं स्वयं पठित्वा संस्कृतग्रन्थानां प्रकाशनेन संस्कृत विदुषां वाऽभिनन्दनेन वा प्रोत्साहनेनाऽपि भवितुं शक्यते। एतन्निकषकषणे श्री रामगोपाल जी शालवाले महाभागाः परीक्षिताः सन्तः सर्वथा खराः सिध्यन्ति। दश वर्ष पूर्व घटितमिदं वृत्तम्। आवाभ्यां स्वज्येष्ठ पुत्र्याः वैवाहिकनिमन्त्रणपत्रम् संस्कृतभाषायां मुद्रापितम् यतो हि अस्मद् बालकानां मातृभाषा संस्कृतमेव वर्तते। इदमामन्त्रणपत्रम् श्री रामगोपालजी शालवाले महोदयानीप निमन्त्रयितुमप्रेष्यत। बहुकार्य व्यस्ततया तेषामागमन न समभावि पर वर-कन्याभ्यां संस्कृते लिखित्वा प्रेषिता. आशीर्वादा सर्वेषामस्माकं आततरां प्रसन्नतामजनयन्।

श्री लाला जी-स्वभाव एव यत्ते सार्वदेशिकसभायाः स्वप्रधानत्वकाले सभायां संस्कृतविदुषां चयनमवश्य विदधति। संस्कृतविद्वान् तु न कश्चित् निर्वाचन प्रतियोगितामभिनन्दति, तदपि सहयुक्त प्रणाल्या सुप्रतिष्ठित वर्गे वा विदुषो रक्षति। एतत्परम्परा प्रतीक स्वरूप एव अद्यापि संस्कृतविद्वांस. विद्वन्मान्या श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्रिणः, श्री प० शिवकुमार जी शास्त्रिण, श्री आचार्य सच्चिदानन्द शास्त्रिणो विद्याभास्करा. आचार्यप्रवर श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्रिणो दर्शनवाचस्पतयः प्रभृतय सन्ति। सार्वदेशिक सभायाः इतिहासे इदमादर्शरूपमनुपम कृत्यमेव एतस्य प्रधानवर्यस्य यत् "वेदार्थ कल्पद्रुमो" मौलिकरूपे संस्कृते प्रकाशितः। अग्रिमा योजना श्रुतिमायात्, यत् निकटे भविष्यति "संस्कृत सत्यार्थप्रकाशस्य' प्रकाशनमपि सभया क्रियते। एतेन एवैषां संस्कृत प्रति याऽनन्यसाधारणी निष्ठा प्रदृश्यत इत्यतो हर्ष निर्भर हृदयेन भृशम् कामयेऽहम् यत् —

संस्कृतां वेदभाषां तां पालयन् वर्धयन् सदा।
शतायुर्भवतात् कुर्वन् संस्कृतज्ञाभिनन्दनम्।

—साहित्य पुराणेतिहासाचार्या निर्मला मिश्रा
विदुषी, एम ए०, एल०टी०
प्राचार्या, बदायूं स्थ पार्वती आर्य कन्या कालेजस्य

हिन्दी अनुवाद

देवभाषा संस्कृत के प्रेमी महाभाग शालवाले

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिन वेदों को एकमात्र प्रमाण माना है, वे संस्कृत में ही हैं। वैसे तो वेदों का अनुवाद अनेक भाषाओं में हो चुका है, फिर भी सरलतापूर्वक वेदों का गूढ़ रहस्य उन्हीं के हृदयों में प्रकाशित होता है, जो संस्कृत के ज्ञाता हैं। इसलिए आर्यों का परम धर्म है कि वे संस्कृत में रचित वेद पढ़ें और पढ़ायें। इसका यह मतलब नहीं कि कोई भी संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओं मे वेदों का अनुवाद पढ़कर वेदपाठी हो सकता है या कहला सकता है। इसलिए प्रत्येक आर्य के लिए संस्कृत का अध्ययन उतना ही आवश्यक है, जितना वेदों का। भाषण देने में प्रवीण लोग वेद-सम्मेलनों में अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं के माध्यम से वेदों की महिमा तो बखान सकते हैं, लेकिन सारी उम्र गुजर जाये और संस्कृत का अध्ययन न किया जाये यह आर्यत्व नहीं।

संस्कृत भाषा से प्रेम इस प्रकार भी प्रकट किया जा सकता है कि स्वयं संस्कृत पढ़कर संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित किये जायें, संस्कृत के विद्वानों का अभिनन्दन किया जाये। जब हम इस कसौटी पर महाभाग श्री रामगोपाल जी शालवाले को कसते हैं, तो वे पूरा तरह खरे उतरते हैं। यहां मैं दस वर्ष पूर्व की एक घटना की चर्चा करना चाहती हूं। हमने अपनी ज्येष्ठ पुत्री के विवाह का निमन्त्रण पत्र संस्कृत भाषा मे छपवाया। कारण यह कि हमारे बच्चों की मातृभाषा संस्कृत ही है। हमने श्री रामगोपाल जी शालवाले को बुलाने के लिए भी यह निमन्त्रणपत्र भेजा। अनेक कार्यों मे व्यस्त होने के कारण उनका आना सम्भव न हुआ, लेकिन उन्होंने संस्कृत में वर और कन्या के लिए आशीर्वाद लिख भेजा, जिससे हम सबको बहुत प्रसन्नता हुई।

लाला जी का यह स्वभाव ही है कि वे अपनी प्रधानता के समय में सभा मे संस्कृत के विद्वानों का चुनाव अवश्य करते थे। संस्कृत का कोई भी विद्वान् चुनाव प्रतियोगिता मे खड़ा होना पसन्द नहीं करता, इसलिए लाला जी विद्वानों को सहयुक्त प्रणाली से अथवा प्रतिष्ठित वर्ग मे ले लेते हैं। इसी परम्परा के प्रतीकस्वरूप आज भी संस्कृत के विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री आचार्य सच्चिदानन्द शास्त्री विद्याभास्कर, आचार्य प्रवर श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री दर्शनवाचस्पति इत्यादि हैं। इन्हीं प्रधान महोदय का सार्वदेशिक सभा के इतिहास मे यह आदर्श और अनुपम कार्य रहा कि मूलरूप में संस्कृत मे "वेदार्थ कल्पद्रुम" प्रकाशित हुआ। एक अग्रिम योजना के बारे में भी मैंने सुना है—शीघ्र ही सभा "संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश" प्रकाशित करेगी। इसी से पता चल जाता है कि इनकी संस्कृत के प्रति कितनी निष्ठा है। मैं अत्यन्त हर्ष के साथ कामना करती हूं कि वे वेदों की भाषा संस्कृत का सदा पोषण और वर्धन करते रहें और इसी प्रकार संस्कृत के विद्वानों का अभिनन्दन करते हुए शतायु हों। इति शम्।

मारिशस में भारतीय संस्कृति : जबरदस्त चुनौतियां

— अभिमन्यु अनत —

अगर हम द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की बात न भी करें, तो भी यह प्रश्न हुए बिना नहीं रहता कि दस वर्ष पहले मारिशस में भारतीयता और भारतीय भाषाओं की जो स्थिति थी, वह किस चुंगल में चली गई ? इस देश में भारतीय संस्कृति, धर्म और भाषाओं को डेढ़ सौ सालों से पनप कर फलित होते हुए देखा गया और वह भी शारीरिक और मानसिक दासता की हालत में। जिस अस्मिता और उसके मूल्यों को पसीने की बूंदों के साथ-साथ खून की बूंदें बहा बहा कर सुरक्षित ही नहीं किया गया, बल्कि सवारा भी गया, वह देश की आजादी और भारत-मारिशस सबंधों के और भी घनिष्ठ हो जाने के बाद विकसित न सही, तो भी बरकरार क्यों नहीं रखी जा सकी ?

इस सवाल का कोई जवाब बन पाये, इससे पहले संस्कृति और भाषा के प्रति फ्रांस सरकार की आज जो नीति तीसरी दुनिया में सक्रिय है, उसकी एक झलक तो देख लें। विश्व भर में फ्रांसीसी संस्कृति और फ्रेंच भाषा के प्रचार-प्रसार में जो प्रगति हुई है, उसका पता केवल यह जानकारी पा लेने से चल जाता है कि इस समय विश्व-भर में ३९ देश अपने को 'फ्रांकोफोन' देश मानते हैं। दस साल पहले जब इस लेखक को क्यूबेक (कनाडा) में फ्रांसीसीभाषी देशों के एक विश्व सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला था, उस समय यह संख्या इतनी बड़ी नहीं थी। वक्त के साथ भाषा-संस्कृति की यह प्रगति फ्रांस ने कैसे की इसका भी यहां जवाब ढूंढने से पहले हम यह जान लें कि फ्रांकोफोन का क्या अर्थ है।

क्या बला है फ्रांकोफोन ?

फ्रांकोफोन शब्द पहली बार उपयोग में उन्नीसवीं शती के बीच आ तो गया था पर इसकी सार्थकता १९६२ के बाद ही से शुरू हुई। फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता ओनेसीम रेक्लू के चलाये हुए इस शब्द का अर्थ है—वे देश, जहां फ्रेंच का उपयोग राष्ट्रीय स्तर पर होता हो। आज विश्व भर में इस तरह के ३९ देश हो चुके हैं, जिनमें अफ्रीकी देश या तीसरी दुनिया के देश प्रमुख हैं। ये अफ्रीकी देश क्यों ? इस उत्तर का दायित्व हम किसे दें ? खैर, यहां उन देशों के नाम जान लेने से शायद इसका उत्तर तो अपने आप सामने आ जायेगा। फ्रेंच बोलने वाले ये देश हैं—मारिशस, सिनेगाल, वियतनाम, ट्यूनिसिया, जाईर, वान्वाटू, टोगो, चाड, सेशेल, रुवांडा, नाइजीरिया, मोनाको माली, लेबनान, लूक्जेंबर्ग, हाईटी, गाईना, गाबो, बेल्जियम, बेनिन, बुर्किना, बुरुंडी, कनाडा, सेंट्रल आफ्रीकान, कोमोर, कांगो, कोत दिव्वार, जीबूती, दोमिनिक फ्रांस, कामेरून, मिस्र, बीसो गाईना, लेयोस, मायोत, मारोक, मोरिटानी सेंट लूसी, डर्सावक तथा क्यूबेक, कुछ दिनों में मडागास्कर भी इस फेहरिस्त में शामिल हो कर रहेगा।

इस अभियान को लेकर चलने वाली फ्रांसीसी संस्था का नाम है आ से से ते (आजास दे कोपेरास्यों कील्चीरेल ए तकनीक), जिसके पास अथाह राशि है विश्व भर में फ्रांसीसी संस्कृति और भाषा का प्रचार-प्रसार करने को। पर इन करोड़ों रुपयों से अधिक सशक्त जो चीज है, वह है संस्था का अपनी भाषा और संस्कृति से प्रेम और उनके विस्तार के लिए अथाह निष्ठा और उन्हें साकार करने के लिए वैज्ञानिक ढंग-तरीके।

मारिशस से पहले भारत का भी सांस्कृतिक रिश्ता अपने पास-पड़ोस के देशों से ले कर सुदूर पूर्व तक फैला हुआ था। कई ऐसे देश थे, जिन्हें महाभारत और रामायण का देश कहा जाता था। तब एक अथाह निष्ठा की बात थी, वह भी उन देशों में भारतीय उच्चायोगों के अभाव में। आज बेशुमार देशों की तरह मारिशस में एक भव्य भारतीय उच्चायोग है, पर संस्कृति और भाषा के प्रति निष्ठा के अभाव में इस देश की भारतीय संस्कृति और भारतीय भाषाएं दम तोड़ती प्रतीत हो रही हैं। अगर स्थिति यही रही तो यहां की भारतीयता बहुत दिनों तक टिक नहीं पायेगी। यह आशंका यहां के भारतीयता की सांसें लेने वालों को जकड़े जा रही है।

पहले उन कारणों को जान लें, जिनसे आज भारत-मारिशस संबंधों के अधिक घनिष्ठ होने के बावजूद यहां भारतीय भाषाओं और संस्कृति के प्रति पहले के सभी अनुराग कम होते चले जा रहे हैं और दूसरी तरफ से इस शिथिलता का पूरा लाभ उठाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जा रही। मारिशस में अगर आज भारतीय भाषाओं के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एक लम्बी यात्रा की-सी स्थिति में है, तो इसका पहला कारण तो देश की संस्कृति और भाषा नीति की चली आ रही अस्पष्टता है। दूसरा, और बहुत ही बड़ा कारण है भारत की लापरवाही, यहां स्थित उच्चायोग की ओर से सांस्कृतिक गतिविधियों की समाप्ति। बात यहीं तक सीमित होती तो भी इतनी निराशा नहीं होती। भारतीय उच्चायोग से हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएं मांगने पहुंचे गांव के गरीब जनों को भिखारी कह दिया जाये तो फिर हिन्दी पत्र पत्रिकाओं के प्रति रुझान कैसे बना रह सकता है ? हिन्दी लेखकों के लिए आयोजित एक वर्कशाप के लिए तीन वर्षों से लगातार कोशिश की जा रही है कि उच्चायोग भारत से कोई लेखक यहां लाने में सहयोग दे, वह भी इस उच्चायोग से नहीं हो पाता।

आज जब इस देश में स्थित अन्य शक्तिशाली देशों के उच्चायोग पूरी सक्रियता के साथ अपनी संस्कृति और भाषा देश में अधिकाधिक व्यापक बनाने में जुटे हुए हैं, तो भारतीय उच्चायोग एक कुंभकर्णी नींद में सोया-सा प्रतीत हो रहा है। मारिशस सरकार की भाषानीति तो उस समय से समझ में नहीं आ रही है, जब से विश्ववादियों की झिड़कियों के सामने वह भीगी बिल्ली बन बैठी थी। उसका साहस नहीं हो सका था कि अपने ही प्रस्ताव के मुताबिक वह भारतीय भाषाओं को मारिशस की परीक्षाओं में सही मान्यता दे सके। फिर इसके बाद विश्व मुद्राकोष के आदेश पर प्रारंभिक सरकारी स्कूलों के लिए हिन्दी अध्यापकों की भर्ती को रोक बैठना उसकी भाषा पक्षधरता का दूसरा कारण है। लोग सकड़ों की संख्या में हिन्दी अध्यापक बन कर अपनी रोजी रोटी की जो आस रखे हुए थे और जिस आस के सहारे एक बहुत बड़ा हुजूम हिन्दी पढ़ लिख रहा था, वह तो हताशों में आ कर आज पालथी मारे बैठा है। (क्रमशः)

सम्पादक के नाम पत्र

सभा प्रधान जी के नाम विदेश से एक पत्र

श्रीमान् लाला जी, सादर नमस्ते।

यहां पर दूध की बहुतायत होने से यहां की सरकार व कांग्रेस ने यह योजना बनाई कि १० लाख दुधारू गायों का शीघ्रातिशीघ्र वध किया जाये और प्रत्येक किसान का कोटा नियत किया गया कि उसे अमुक संख्या में गायें कट्टीखाने को भेजनी होंगी, अगर वह नियत संख्या में गायें कट्टीखाने को भेजेगा तो पुरस्कृत होगा और न भेजेगा तो दंडित होगा। इस कानून का मैंने आर्य समाज न्यूयार्क की ओर से विरोध किया। इस विरोध-पत्र का उत्तर मिला कि प्रत्येक किसान को यह कहा गया है कि वह नियत संख्या में गायें या तो कट्टीखाने को भेजे या विदेशों को निर्यात कर दे। मैंने फिर लिखा कि प्रत्येक किसान के लिए निर्यात करना संभव न होगा। अच्छा यह है कि अमरीका सरकार स्वयं उन देशों को, जहां गायों की संख्या कम है, गायों का दान रूप में वहां दूध की मात्रा बढ़ाने के उद्देश्य से निर्यात करे। इससे अमरीका की विदेश नीति को उन देशों का अनुग्रह रूप लाभ होगा।

अब अमरीका सरकार और झुकी है। उसने मुझे लिखा है—"We will provide assistance to public-interest groups for the pupose of promoting donations of cattle to underdeveloped countries". मैक्सिको को इस सम्बन्ध में ५ करोड़ डालर उधार दिया गया है। ऐसे उधार की रकमों की अक्सर ग्रान्ट के रूप में ही समाप्ति होती है। आपने गाजियाबाद के पास बड़ी गोशाला खोली है। अगर आप चाहें तो उस गोशाला व अन्य गोशालाओं को इन गायों के दान के लिए अमरीका सरकार को अमरीका के भारत स्थित राजदूत के माध्यम से हमारे नाम का उद्धरण देतेहुए लिख व मिल सकते हैं। आप भारत सरकार को भी इस दिशा में अग्रसर होने को कह सकते हैं। कहना यह होगा कि अमरीका वाले इन गायों को भारत तक पहुंचाने का प्रबन्ध करें। इस सम्बन्ध में आपके आदेशों का हम पालन करेंगे।

यहां आर्य समाज मन्दिर उद्घाटन का कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ।

न्यूयार्क — धर्मजित् जिज्ञासु

(सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी ने इस सम्बन्ध में कृषि मन्त्री श्री गुरदयाल सिंह ढिल्लों को पत्र लिख दिया है।—सम्पादक)

गोहत्या पर पूरी रोक लगे

महोदय,

भगवान् कृष्ण, स्वामी दयानन्द, महात्मा रामचन्द्र जी वीर, महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी आदि अनेकानेक महापुरुषों ने गाय को भारत की माता माना। डा० राममनोहर लोहिया ने अनेकानेक खोजपूर्ण तथ्य दिये कि भारत के लिये गाय किसी भी उम्र में किसी भी हालत में घाटे का सौदा नहीं और यह वध योग्य कतई नहीं और जो भी भारतीय इसे मारता है या मारने में सहयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में करता है, वह निन्दनीय है, देशघाती, देशद्रोही एवं राक्षस है, असभ्य है। गाय या गोवंश को वाणिज्य की दृष्टि से भी देखें तो यह अपने जीवन में जितना खर्चा खाती है उससे कहीं अधिक चुका देती है और जब अमृत पिला कर पालती है तो उसे ही दूध बन्द होने पर जैसे सूखी लकड़ी को चूल्हे में देते हैं वैसे कटने के लिए बूचड़खाने में भेज दिया जाता है।

अजमेर से आये दिन वध हेतु गोवंश हावड़ा-कलकत्ता के बूचड़खाने के लिये (५००-५०० एक दिन में) बुक होकर जाते हैं। रेलवे इसके लिये झूठा प्रमाण पत्र Cattle—Bullocks—For Trade & not for Slaughter House सील लगाकर डिक्लेरेशन देकर जाते हैं।

राजस्थान से उपयोगी गोवंश का निष्क्रमण बन्द है, साथ ही अनुपयोगी का प्रमाण-पत्र वेटरिनरी डाक्टर, जिला पशु पालन का भी होना अत्यावश्यक है। ये नहीं दिये जाते और झूठे भी दिये जा सकते हैं। कलकत्ता और बम्बई में इनका व्यापार केवल वध हेतु होता है। अन्य कोई हेतु नहीं। इसे रोका जाना चाहिए।

नसीराबाद — मिश्रीलाल सिन्दल

युग की आवश्यकता

महोदय,

पंजाब में प्रतिदिन निर्दोष लोगों का खून बहाया जा रहा है। कश्मीर में वैदिक संस्कृति के प्रतीक मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। हमारी माताओं व बहनों के सतीत्व को लूटा जा रहा है। असम, त्रिपुरा, नगालैण्ड जल रहे हैं। ईसाई मिशनरी अपना जाल फैला रहे हैं। आखिर क्या होगा इस देश का? देश एक धर्मशाला बन गया है। हम सब ऐसे चौराहे पर खड़े हैं, जहां से न आगे जा सकते हैं और न पीछे। आर्यसमाज की सार्वभौमिक, जन-कल्याणकारी विचारधारा सारे संसार को पुनः आर्यत्व की ओर प्रेरित कर सकती है। तो आइये, हम सब मिलकर ससार में वैदिक धर्म की ज्योति का प्रकाश फैलायें। यही इस युग की आवश्यकता है।

देहरादून —(डा०) आनन्द सुमन

सपूत-सम्बोधन

जागो जवानो वीर सपूतो! मां ने तुम्हें बुलाया है।
लिये परीक्षा का सन्देशा काल चुनौती लाया है॥
उठी आंधियां पश्चिम से हैं संस्कृति-दीप बुझाने को।
चली आ रहीं पूर्व दिशा को ईसवी ध्वज फहराने को॥
भारतीयता भित्ति दुर्ग की दृढ़ प्राचीर ढहाने को।
वैचारिक विस्फोट मसाले का गुब्बार उठाया है॥१॥

टेम्स नदी के जल से फूटी बपतिस्मा की धारा है।
भारत भू को भ्रष्ट बनाने का उद्देश्य विचारा है।
प्रेम, शान्ति का धरे मुखौटा खोटी जीवन-धारा है।
इससे दूर हमेशा रहना यह धोखे की कारा है॥२॥

शिक्षा सदन, चिकित्सा-संस्था और अनाथों की सेवा।
औषधि, अन्न, वस्त्र का देना दूध, मिठाई, फल मेवा॥
छल-छद्मों के जाल बिछाये जो प्राणों के हैं लेवा।
करने को आखेट खगों का यह बहेलिया आया है॥३॥

सब कुछ है, शृंगार सुनहरी, चाल, शहद-सी बोली है।
आकर्षक सेवा का लेकर भरे द्रव्य की झोली है॥
इठ्ठीली अठ्ठीर लिए आ लगी घूमने टोली है।
स्वतन्त्रता सीता को हरने मारीचों की माया है॥४॥

सुनो, राम के वंशज वीरो! इनको तुम टिकने मत देना।
गुदड़ी के लालों को प्यारे कौड़ी में बिकने मत देना॥
जय गीतों को धरा पृष्ठ पर इनको तुम लिखने मत देना।
शपथ उसी की शूर शहीदों ने जो रक्त बहाया है॥५॥

स्वार्थ विमानों में ये बैठे नभ की ओर न जाने पायें।
मानसरोवर की सुषमा पर गन्दे गोध नहीं मंडरायें॥
राष्ट्रीय एकत्वशिला में छेद ये कहीं कर ना जायें।
स्वाभिमान हनुमान संजीवन बूटी लेकर आया है॥६॥

प्रबल प्रभञ्जन सुनो पश्चिमी, हिमगिरि-वंशज जाग रहे हैं।
हाथ न डलो, नहीं केंचुए ये तो काले नाग रहे हैं॥
देशद्रोह की चिता जलाने ये ज्वाला घर आग रहे हैं।
"प्रणव" जोश जो उबल पड़ा तो दबता नहीं दबाया है॥७॥

—ओंकार मिश्र "प्रणव" शास्त्री
शास्त्री-सदन, रामनगर (कटरा), आगरा-६

इन्दिरा जी की हत्या......

(पृष्ठ ४ का शेष)

शुरु किया, तो यह उनकी ओर आकर्षित हुआ। मेहता चौक और बाद में स्वर्ण मन्दिर में आकर उनसे मिलता रहा। तब अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के अध्यक्ष अमरीक सिंह ने इसे अखिल भारतीय सिख छात्र संघ का वरिष्ठ उपाध्यक्ष नामजद कर दिया। १९८३ में अपने भाई गुरिंदरपाल की बीमारी के दौरान अतिंदर लगातार कई महीने दिल्ली रहा। तब एक रिश्तेदार प्रभजोत सिंह बेदी के १४, सेंट्रल लेन, बंगाली मार्केट स्थित मकान में रहा। इसी दौरान उसका आतंकवादियों से निकट सम्पर्क हुआ। यह सर्वविदित है कि भिंडरांवाले के उदय से 'ग्रापरेशन ब्लू स्टार' के बाद तक मध्य प्रदेश के इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, दुर्ग और रायपुर से सिखों द्वारा लाखों रुपये चन्दा स्वर्ण मन्दिर भेजा जाता रहा है। ऐसी स्थिति में अतिंदरपाल सिंह द्वारा परिवार के उदरपोषण के लिये पैसों का अभाव बताकर नौकरी करना एक बहाना लगता है। सम्भव है कि अतिंदरपाल ने 'हितवाद' में नवम्बर ८३ में नौकरी महज इसलिये शुरु की हो कि एक अखबार की आड़ में उसकी गतिविधियां सन्देह की निगाह से नहीं देखी जायेंगी। 'हितवाद' के परिसर में ही स्थित 'गंगोत्री भवन' की ऊपरी मंजिल में रीजनल पासपोर्ट अधिकारी का दफ्तर है। ट्रैवल एजेंसी पासपोर्ट बनवाने का व्यवसाय भी करती है। पाकिस्तान जाने के लिये वीजा दिलवाना भी इनका धन्धा है। सम्भव है कि इस ट्रैवल एजेंसी के जरिये पाकिस्तान जाने वालों के माध्यम से वहां मौजूद अपने गुप्तचर सम्पर्कों से अतिंदरपाल द्वारा पत्रव्यवहार किया जाता रहा हो। पुराने भोपाल से उर्दू का एक अखबार निकलता है। उसके भी दिल्ली स्थित पाकिस्तानी हाई कमीशन तथा पाकिस्तान के सरकारी हुक्मरानों से निकट सम्पर्क बताये जाते हैं। बहरहाल, फरवरी ८४ तक अतिंदरपाल की गति विधियों पर किसी को सन्देह नहीं हुआ।

२३ फरवरी ८४ को 'हितवाद' भोपाल में अतिंदरपाल द्वारा दिया गया एक बयान छपा, जिसमें सिखों के धार्मिक स्थलों में हस्त-क्षेप के लिये हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल को बर्खास्त करने की मांग की गई थी। उसमें यह भी कहा गया था कि पंजाब के बाहर बसे सिख पूरी तरह भिंडरांवाले को समर्पित हैं। उसमें कहा था कि भारत में सिख और सिख धर्म सुरक्षित नहीं हैं इसलिये खालिस्तान की मांग वाजिब है। मध्य प्रदेश में दिया गया अपनी तरह का यह पहला बयान था। फिर भी राज्य की गुप्तचर पुलिस ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो ने अतिंदरपाल के इस बयान को गम्भीरता से लिया। उसी का परिणाम था कि पंजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री दरबारा सिंह जब १६ अप्रैल ८४ को भोपाल में आयोजित कौमी एकता सम्मेलन में भाग लेने आने वाले थे, तो केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो के निर्देश पर १६ अप्रैल ८४ की सुबह भोपाल के मंगलवारा थाना की पुलिस ने अतिंदरपाल को उसके शान्तिनगर स्थित घर से पकड़ लिया था। दिन भर उसे टी०टी० नगर थाने में रखा गया था। उससे दरबारा सिंह की सुरक्षा के खतरे के सम्बन्ध में पूछताछ की गई थी। इस बीच भोपाल के कई प्रभावशाली लोग उसे छुड़ाने थाना पहुंचे थे पर उसे छोड़ा तब गया जब टी०टी० एक्सप्रेस से दरबारासिंह भोपाल छोड़कर वापिस दिल्ली रवाना हो हो गये। इस घटना से भी राज्य की खुफिया पुलिस ने कोई सबक नहीं लिया और अतिंदरपाल सिंह बेफिक्र अपनी गतिविधियों में मशगूल रहा।

जनवरी से जून ८४ के बीच अतिंदरपाल के सम्पर्क आतंकवादियों से बढ़ते चले गए। इस बीच पंजाब और दिल्ली के कुख्यात आतंकवादी कुलजीत सिंह (अमृतसर), वीर विरेंदरजीत सिंह (नई दिल्ली), हरवंश सिंह (पुरानी दिल्ली), बलजीत सिंह और बिरेन्दर सिंह आठ दिन भोपाल आकर बेखटके अतिंदरपाल सिंह के घर और 'हितवाद' के दफ्तर में उससे मिलते थे। केन्द्रीय गुप्तचर ब्यूरो की यह उदासीनता उन्हें संदेह के घेरे में ला खड़ा करती है। आपरेशन ब्लू स्टार के बाद जब इस्तीफा देकर अतिंदरपाल सिंह गायब हो गया तब भी पुलिस सोती रही। उसकी नींद तब खुली जब श्रीनगर में एयर बस के अपहरण कांड में अतिंदरपाल का नाम सामने आया। उसके दो-तीन दिन बाद राज्य खुफिया पुलिस जब उसके घर पहुंची, तो उसका परिवार मकान खाली कर गायब हो चुका था। इतना ही नहीं, इस हादसे के बाद भी अतिंदरपाल ईद के मौके पर पुनः भोपाल आया। उसे मोती मस्जिद के निकट देखा भी गया। पुलिस की आंख तब भी नहीं खुली। भोपाल के कल्याणी वर्किंग वूमेंस होस्टल में जब उसकी बहन सुरिंदर कौर के साथ छोटी बहन परमिंदर रहती थी, तब भी उसने उनके खर्चे के लिए पांच हजार रुपए का ड्राफ्ट भेजा था। यदि पुलिस सतर्क होती तो शायद अतिंदरपाल बहुत पहले गिरफ्तार हो जाता और संभव है कि देश की प्रधानमन्त्री की हत्या न होती।

बहरहाल अब अतिंदरपाल पाकिस्तान में कहीं छिपा बैठा मौज फर्मा रहा है। एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है कि जब भारत की खुफिया एजेंसियों के पास इस बात के पक्के सबूत मौजूद हैं कि अतिंदरपाल सिंह पाकिस्तान में छिपा बैठा है तो फिर हमारे देश की सरकार ने श्रीमती गांधी के इस हत्यारे को वापिस देने और इसे भारतीय पुलिस के हवाले करने की बात पाकिस्तान सरकार से क्यों नहीं की है ? शायद भारत सरकार भी अब यह समझती है कि पाकिस्तान से बार-बार बात करने का अब कोई फायदा नहीं होने वाला है।

अब जब हमें पता चल चुका है कि हमारे देश की अखंडता को नष्ट करने के लिए पाकिस्तान जी-जान से कोशिशें कर रहा है तो मेरी अपनी व्यक्तिगत राय में भारत सरकार को पाकिस्तान से दो-टूक बात कर ही लेनी चाहिये। वर्ना हम शर्म करते रहेंगे और हमारी इस शराफत का फायदा उठाकर पाकिस्तान हमारे ही घर में सेंध करता चला जायेगा। मैं तो इससे भी बढ़कर सोचता हूँ कि हमें अपनी रक्षा के लिए और अखंडता को कायम रखने की खातिर अगर अब पाकिस्तान से दो-दो हाथ करने पड़ें तो इसमें भी कोई हर्ज नहीं है।

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज हैदरगंज बाजार (जिला फैजाबाद)— प्रधान-श्री अनन्तनारायण मिश्र, मन्त्री-डा० जयदेव और कोषाध्यक्ष-श्री अजयकुमार ब्रह्मचारी।

—आर्यसमाज बहापुरी (चौंडा), दिल्ली, प्रधान-श्री श्रीकृष्ण आर्य, मन्त्री-श्री ढूंढीराम भारद्वाज और कोषाध्यक्ष-श्री विश्वेश्वरप्रसाद।

—आर्यसमाज मानमेर (आगरा), प्रधान-श्री कैलाशनाथ वर्मा, मन्त्री-श्री आत्मानन्द जी द्विवेदी और कोषाध्यक्ष-श्री भगवान् अग्रवाल।

—आर्यसमाज धुर्वा (रांची), प्रधान-श्री रामानन्द मंडल मन्त्री-श्री रामजी तिवारी, और कोषाध्यक्ष-श्री द्वारकाप्रसाद।

—आर्यसमाज ताजगंज (आगरा), प्रधान-श्री देवीप्रसाद मिश्र, मन्त्री-श्री गिरिजाशंकर आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री प्रकाशचन्द्र कुलश्रेष्ठ।

—आर्य स्त्री समाज ताजगंज (आगरा)। प्रधान-श्रीमती विमला चड्ढा, मन्त्री-श्रीमती कलावती चौरसिया और कोषाध्यक्ष-श्रीमती सतीशलता।

ईसाई युवती की शुद्धि

आर्यसमाज अजमेर द्वारा कृष्णगंज अजमेर निवासिनी २४-वर्षीया कु० सुनीता मेसी द्वारा स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन हेतु प्रार्थना-पत्र देने पर हिन्दू (वैदिक) रीति से शुद्धि संस्कार कर उसे वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया तथा धर्म परिवर्तन के पश्चात् उसका नाम सुनीता आर्या रखा गया। बाद में कु० सुनीता आर्या के अनुरोध पर वैदिक विधि से उसका विवाह संस्कार मेयो लिंक रोड-निवासी ललिताप्रसाद तिवारी के साथ किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित थे। समाज की ओर से श्री ललिताप्रसाद तिवारी को वैदिक साहित्य प्रदान किया गया।

मीनाक्षीपुरम् (दक्षिण भारत) में आर्यसमाज के बढ़ते चरण

आर्यजगत् शायद अभी तक मीनाक्षीपुरम् की घटनाओ को भूला नही होगा जहा कुछ समय पूर्व मुस्लिम कठमुल्लाओ के षड्यन्त्र से ११०० हिन्दू (हरिजन) परिवारो को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था। आर्य-समाज ने तुरन्त इसके विरुद्ध आवाज उठाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा अन्य अधिकारी इस सम्बन्ध मे ७ बार मीनाक्षीपुरम् गये और वहा एक बृहद आर्य सम्मेलन का आयोजन भी किया। जो हिन्दू परिवार मुसलमान बन गये थे उन्हें फिर से हिन्दू धर्म मे दीक्षित करने का कार्य आरम्भ किया गया। वहा आर्यसमाज की स्थापना की गयी।

आर्यसमाज मीनाक्षीपुरम् की यज्ञशाला

प्रसन्नता की बात है कि आर्य-समाज को धीरे-धीरे इस कार्य मे काफी सफलता मिली है। मीनाक्षी-पुरम् समाज के प्रधान श्री के० एम० अनन्तरामशेपन् ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी को एक विशेष पत्र द्वारा सूचित किया है कि धर्मपरिवर्तन की जो प्रक्रिया पहले हिन्दुत्व से इस्लाम की ओर बह रही थी अब वह विपरीत दिशा मे चल रही है। फलत. मीनाक्षीपुरम् में हिन्दुओ की सख्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। हिन्दू जाति और आर्य-समाज के लिए यह एक शुभ सकेत है

मीनाक्षीपुरम् मे लगभग ७० हजार रुपयो की लागत से एक भव्य हवन मण्डप का निर्माण पूरा हो चुका है। एक स्कूल का भवन बनाने की योजना भी विचाराधीन है, जहा हरिजन हिन्दुओ के बच्चे वैदिकधर्म की शिक्षा प्राप्त करके हिन्दू नागरिक बनकर देश एव समाज की सेवा कर सकेंगे।

व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

नरवाना। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज नरवाना (जिला जीद) मे एक व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन २ जून से १५ जून तक किया गया। शिविर मे महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, हरयाणा पजाब, दिल्ली आदि के १५० आर्य वीरो ने भाग लिया। शिविर का निर्देशन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य ने किया तथा सयोजन आर्य वीर दल हरयाणा के अधिष्ठाता प्रो० धर्मदेव विद्यार्थी ने किया।

शिविर मे आर्य वीरो को राइफल ट्रेनिंग, प्राथमिक चिकित्सा, लाठी, जूडो, कराटे तथा अन्य भारतीय व्यायामो का प्रशिक्षण दिया गया। बौद्धिक कार्यक्रम मे प्रि० रमेश कुमार जी, श्री रामभक्त लागियान (ए डी एम जीद), स्वामी भीष्म जी आदि विद्वानों द्वारा उद्बोधन दिया गया।

शिविर के दीक्षान्त समारोह की अध्यक्षता श्री राधाकृष्ण (एस डी एम. नरवाना) ने की। मुख्य अतिथि श्री रणजीतसिंह आई० ए० एस० (अतिरिक्त उपायुक्त जीद) द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।

ध्वजारोहण के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य, श्री राधाकृष्ण जी (एस डी० एम. नरवाना) एव आर्यसमाज के अधिकारीगण।

व्यायाम प्रदर्शन करते हुए आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर पुण्डरी के आर्यवीर शिविर उद्घाटन हेतु आये मुख्य अतिथि श्री राधाकृष्ण और सयोजक प्रो०धर्मदेव विद्यार्थी थे।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मेरठ के प्रस्ताव

(१) शाहबानो के वाद पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को निष्प्रभाव करने के लिए तथा खुशामदी तत्वों को प्रसन्न करने के लिए केन्द्रीय सरकार की ओर से मुस्लिम महिला विधेयक पास करवाने का प्रयत्न दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे देश की बहुत हानि हुई है। देश में सबके लिए एक नियम संहिता होनी चाहिए। इसलिए समझदार मुसलमान इस बिल के विरोधी हैं। आर्यसमाज इसे देश के लिए बहुत ही घातक मानता है।

(२) प्रभात समाचार पत्र में यह पढ़कर इस सभा में बड़ी चिन्ता का अनुभव किया गया कि भारत में एक सेना का गठन किया जा रहा है जिसका पंजीकरण दिल्ली में हो चुका है और जिसने अपना हथियार एक फुट का चाकू घोषित किया है। इस सभा का मत है कि इस प्रकार की सेनाओं पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाये और यदि पंजीकरण हो चुका है तो उसे तुरन्त निरस्त किया जाये। यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि प्रत्येक आर्य का राष्ट्र की रक्षा को देखते हुए आग्नेय अस्त्र ही धार्मिक हथियार है। आत्मरक्षा और देशरक्षा में आग्नेय अस्त्र की स्वीकृति हम आर्यजनों को प्रदान की जाये।

(३) यह सभा पंजाब के तरनतारन आदि क्षेत्रों से हिन्दुओं को भगाने और खालिस्तान बनाने के षड्यन्त्र की भर्त्सना करती है। पाकिस्तान के इशारे पर पंजाब और कश्मीर से हिन्दुओं का पलायन बहुत ही घातक है। पंजाब और कश्मीर को सेना के सुपुर्द करके आतंकवादी और उग्रवादी गतिविधियों का शीघ्र अन्त करके भारत सरकार को उक्त राज्यों में हिन्दुओं को आश्वस्त करना चाहिए ताकि उक्त स्थानों पर हिन्दू सुरक्षा और प्रतिष्ठा से रह सकें और राष्ट्र को बचाया जा सके। — इन्द्रराज

मन्त्री, आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मेरठ

उत्तरकाशी में आर्य महासम्मेलन

देहरादून। गढ़वाल वेदप्रचार समिति ने उत्तरकाशी में तृतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। २३-२४-२५ मई को हुए इस सम्मेलन में अनेक विद्वानों, सन्यासी-महात्माओं और भजनोपदेशकों ने धर्म और आध्यात्मिक ज्ञान की गंगा बहाई। उत्तरकाशी आर्यसमाज के चुनाव में श्री सोहनलाल शाह प्रधान, श्री सत्यदेव गुप्त मन्त्री और श्री सुमन रावत कोषाध्यक्ष चुने गये।

उपदे...

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ... संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा में नवा... । प्रवेश २५ जून से १० जुलाई तक होगा।

गुरुकुल एरवाकटरा में प्रवेश प्रारम्भ

इस गुरुकुल में श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ की पाठ विधि के अनुसार पाठ्यक्रम तथा परीक्षा की व्यवस्था है। भोजन शुल्क केवल ५०) रुपया मासिक, अध्ययन की उत्तम व्यवस्था। वातावरण बहुत ही सात्विक तथा पवित्र है। प्रवेशार्थी शीघ्रता करें, क्योंकि स्थान सीमित है। पत्र भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

आचार्य राजदेव नैष्ठिक, प्रधानाचार्य
आर्ष गुरुकुल, एरवाकटरा (इटावा)

आवश्यकता

आर्यसमाज सुमेरपुर, जिला पाली (राजस्थान) द्वारा संचालित चेतन विद्या मन्दिर में संस्कृत व वैदिक सिद्धांत अध्यापन हेतु योग्य अध्यापक-अध्यापिका की आवश्यकता है। सेवा निवृत्त अध्यापक-अध्यापिका भी आवेदन कर सकते हैं। अध्यापन के साथ पौरोहित्य कार्य में निपुण पति-पत्नी को प्राथमिकता दी जायेगी। पूर्ण विवरण सहित १० जुलाई तक आवेदन करें। नियुक्ति मिलने पर वेतन के अलावा आवास, बिजली, पानी आदि की नि:शुल्क सुविधा दी जायेगी।

—भंवरपाल गोयल
प्रधान, आर्यसमाज दयानन्द मार्ग सुमेरपुर-३०६९०२
जिला पाली (राजस्थान)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २१ अंक ३०] आषाढ़ शु० ६ स० २०४३ रविवार १३ जुलाई १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

मेरी गुजरात यात्रा : दो दिन का व्यस्त कार्यक्रम

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा का विवाद सुलझा : वन विकास केन्द्र का अवलोकन

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की लेखनी से—

शनिवार पांच जुलाई को सायंकाल ४।। बजे मैं नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से डीलक्स ट्रेन पर सवार हुआ और अगले दिन प्रातःकाल ४।।बजे बड़ोदा पहुंचा। रेलवे स्टेशन पर श्री मंगलसेन चोपड़ा, श्री मधुसूदन पित्ती, श्रीमती प्रतिभा पण्डित आदि अनेक प्रतिष्ठित आर्य नेता और आर्यसमाज बड़ोदा के अनेक कार्यकर्त्ता मुझे लेने आये हुए थे। इन लोगों ने मेरा आत्मीयतापूर्ण और प्रभावशाली स्वागत किया।

वहा से हम सीध बड़ोदा के आर्य कन्या महाविद्यालय मे गये। दुर्भाग्य से महाविद्यालय मे आपसी विवाद चल रहा है। इसमे दो पक्ष हैं—पण्डित आनन्दप्रिय और श्री मधुसूदन पित्ती। दोनो ने अपने-अपने मत के अनुसार सारी स्थिति मुझे समझाई। दोनो ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अधिकार दिया कि वह मतभेद समाप्त कराकर समझौता करवाये। उन्होने यह भी कहा कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान जो फैसला दगे,वह दोनो पक्षो को मान्य होगा।

इस प्रसग मे मैं कुछ शब्द आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा के पिछले इतिहास के बारे मे भी लिख दू। इस महाविद्यालय की स्थापना बड़ोदा के महाराजा स्वर्गीय गायकवाड के समय हुई थी। महाराजा ने अमृतसर से मास्टर आत्माराम जी को (जिन्हे बाद मे राज्यरत्न की पदवी से विभूषित किया गया) बुलाकर उन्हे पिछड़े वर्गों के उद्धार का काम सौपा। उन्ही दिनो भीमराव अम्बेडकर बड़ोदा मे विद्याध्ययन कर रहे थे। महाराजा गायकवाड ने विद्यार्थी भीमराव अम्बेडकर को छात्रवृत्ति देकर अध्ययन के लिए विदेश भेजा। यही से भीमराव अम्बेडकर का अभ्युदय प्रारम्भ हुआ और वे सस्कृत व अ ग्रेजी के प्रकाड पण्डित हुए। वे एक योग्य विधिवेत्ता थे और उन्होने ससार के अनेक देशो क सविधानो का अध्ययन करके भारतीय सविधान की रचना मे उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

कन्या महाविद्यालय पहुचकर मैंने सभी कक्षों मे जाकर विद्यार्थियो और अध्यापको से विचार विमर्श किया। महाविद्यालय के परिसर मे अनेक सस्थान चल रहे हैं। मैने उन सबका निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय डाक्टर दलीप वेदालकार भी मेरे साथ थे।

सायकाल चार बजे श्री मधुसूदन पित्ती के आग्रह पर मैं आर्यसमाज आत्माराम पथ गया, जहा एक सावजनिक सभा मे मेरा स्वागत किया गया। वहा से हम पाच बजे आर्य वन निवास फार्म ट्रस्ट वसुरी (जिला साबरकांठा) पहुचे। यहा एक आर्ष गुरुकुल की स्थापना की गई है, जिसके सचालक स्वामी सत्यपति जी हैं। यह

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पंजाब में राशन डिपो केवल सिखों को

पजाब सरकार ने जिला अधिकारियों को गुप्त हिदायतें दी हैं कि राशन डिपो केवल सिखों को दिये जायें—अन्य किसी सम्प्रदाय के सदस्यो को नही।

जिला सोशलिस्ट पार्टी के भूतपूर्व सचिव श्री भागराम ने पजाब के मुख्यमन्त्री सुरजीत सिंह बरनाला का ध्यान इस ओर खींचा है। उनका कहना है कि जब वे एक राशन डिपो की अलाटमेंट के लिए जिला खाद्यान्न कट्रोलर के पास गए, तो उसने जवाब दिया कि राज्य सरकार की हिदायत है कि राशन डिपो केवल सिखो को दिये जायें।

यहां प्रेस को अपना ज्ञापन भेजकर श्री भागराम ने कहा कि बरनाला सरकार द्वारा अपनाई गई नीति धर्मनिरपेक्ष नही। उन्होंने मुख्यमन्त्री से अनुरोध किया कि वे साम्प्रदायिक आधार पर काम करना बन्द करें।

उक्त आशय का समाचार ८ जुलाई के हिन्दुस्तान टाइम्स मे प्रकाशित हुआ है। साम्प्रदायिक और मजहबी आधार पर किया जाने वाला यह भेद-भाव धर्मनिरपेक्षता की कब्र खोद रहा है। जब हिन्दू आत्मरक्षा के लिए शिवसेना गठित करते हैं तो धर्मनिरपेक्षता के ठेकेदार शोर मचाने लगते हैं कि प्राइवेट सेना खड़ी करने से अराजकता फैल जायेगी। ऊपर केवल सिखो को राशन डिपो अलाट करने की जिस हिदायत की चर्चा है, क्या उसमे पैदा होने वाली स्थिति अराजकता से कुछ कम है? एक ओर तो बरनाला पजाब से पलायन करने वाले हिन्दुओ को वापस लौटने को कहते हैं और दूसरी ओर यह अन्धेरगर्दी कि राशन डिपो केवल सिखो को दिये जायें।

हमारा निश्चित मत है कि पंजाब की वर्त्तमान सरकार से न्याय की आशा करना दुराशामात्र है और केन्द्र को ऐसे सब मामलो को अपने हाथ मे लेकर न्याय करना चाहिए।

बाबू जगजीवनराम दिवगत

पुरानी पीढी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता बाबू जगजीवनराम का,जिनके परिचय के लिए उनका नाम लेना ही पर्याप्त है, ६ जुलाई को दिन के दस बजकर बीस मिनट पर निधन हो गया। अगले दिन उनके ग्राम चन्दवा (जिला भोजपुर) मे उनकी अन्त्येष्टि कर दी गई। इस अवसर पर राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और प्रधान मन्त्री राजीव गांधी भी उपस्थित थे।

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

जूते साफ करने वाला हमारा मुख्यमंत्री नहीं हो सकता

आतंकवाद से सताए पंजाब से आए लोगों ने बरनाला को झिझोड़ा :

गृहमन्त्री की कार क्षतिग्रस्त

— आलोक गौड़ —

नई दिल्ली, ३ जुलाई ।; केन्द्रीय गृहमन्त्री बूटासिंह पजाब के मुख्यमन्त्री सुरजीतसिंह बरनाला तथा दिल्ली के उपराज्यपाल हरिकिशनलाल कपूर कल रात पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी में ठहरे हुए पंजाब से आये शरणार्थियों को पजाब वापस जाने के लिए राजी करने की कोशिश मे विचित्र स्थिति मे फंस गए तथा जन आक्रोश को देखते हुए तीनों को जान बचा कर भागना पड़ा। श्री बूटासिंह,श्री बरनाला तथा श्री कपूर कल रात साढे आठ बजे जनकपुरी मे आर्यसमाज एव सनातन धर्म मन्दिर में ठहरे व्यक्तियों को पजाब जाने के लिए समझाने बुझाने गए थे। इन तीनों नेताओं ने पजाब से आए हिन्दुओ की कथा लगभग एक घण्टे तक सुनी लेकिन जब श्री बरनाला ने बोलना शुरू किया तो लोगों ने उन्हे बोलने नहीं दिया।

इन मन्दिरो मे रह रहे व्यक्तियों ने अपनी बात सुनाते हुए श्री बरनाला पर उग्रवादियों से मिले होने का आरोप लगाया। यहा ठहरी हुई महिलाओं ने कहा कि जो आदमी एक वर्ग विशेष की जूतिया साफ करे वह हमारा मुख्यमन्त्री नहीं हो सकता। हमारे लिए तो खालिस्तान बन चुका है।

लोगो ने पजाब के मुख्यमन्त्री से कहा कि यदि आप हमारी सहायता करना चाहते हैं तो जो सम्पत्ति हम अपने पीछे छोडकर आए हैं उसके मूल्य का दस प्रतिशत हमें यहीं मुआवजे के रूप में दे दें।

उन्होने कुछ सन्दिग्ध उग्रवादियों के नाम बताते हुए कहा कि यदि पजाब सरकार अल्प सख्यकों को उनकी सुरक्षा का अहसास दिलाना चाहती है तो इन्हें गिरफ्तार करे।

जब वहा के हगामे को देखते हुए तीनों नेताओ ने वहा से निकलना चाहा तो दो महिलाए श्री बरनाला की कार के आगे खड़ी हो गईं। उन्होंने कहा कि 'जब हम यहा पडे हैं, तुम कहां जा रहे हो। हमारे ठहरने की व्यवस्था करके जाओ।'

बाद मे युवको ने इनकी कारो पर उछल-कूद शुरू कर दी जिस से बूटासिंह की कार क्षतिग्रस्त हो गई।

बताया जाता है कि उपराज्यपाल राहत शिविरो मे ठहरे लोगो को नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा मन्दिर मार्ग पर निर्मित रैन बसेरे की विशेषताएं बताने तथा उन्हे वहा जाने के लिए समझाने बुझाने आए थे, जबकि बूटासिंह व बरनाला पलायन करने वालों को पजाब वापस भेजने के लिए राजी करने आए थे।

ये तीनो बाद मे पश्चिमी दिल्ली के तिलक नगर व उत्तम नगर मे लगे हुए राहत शिविरो मे जाने वाले थे लेकिन जनकपुरी में हुई प्रतिक्रिया को देखते हुए इन्होने वहा जाने का विचार छोड़ दिया।

सेना गांव में रहे तो....

पजाब मे सेना भेजने का कोई फायदा नही होगा, क्योकि सेना केवल शहरो मे ही तैनात कर दी जाती है। यदि सेना गावों मे भी तैनात की जाए तो कुछ असर हो सकता है।

यह कहा लेखराज ने जो गाव गगली (जिला अमृतसर) से पलायन करके इन दिनो राजौरी गार्डन के आर्यसमाज मन्दिर में ठहरे हुए हैं। लेखराज अपनी भरी-पूरी दुकान छोड़कर अपने चार बच्चों व पत्नी सहित यहां आये हैं।

उन्होने कहा कि जब आस-पड़ोस में हिंसक घटनाएं घटित हो रही हो तो एक आदमी हाथ पर हाथ धरे कब तक बैठ सकता है।

उन्होंने बताया कि मैं अपनी विवाहित लड़की को भी यहा लाना चाहता था लेकिन पास मे पैसे न होने के कारण नहीं ला सका।

लेखराज ने बताया कि एक सम्प्रदाय विशेष के बुजुर्ग तो फिर भी हमारा लिहाज करते हैं लेकिन नौजवान पीढ़ी जानो दुश्मन बनी हुई है तथा उन्हीं लोगों के यहां ठहरने देनेपर जोर दे रही है जो केश रखे व पगड़ी बांधें।

इस मन्दिर में अपने परिवार सहित ठहरे गंगली के ही कुलवंतराय ने बताया कि दूसरे गांव के लोग हमारे यहा आकर अल्पसंख्यकों में भय पैदा करते हैं, जबकि गांव के बुजुर्ग सिख आने से रोकते हैं।

सुखतराय भी गगली से ही अपने परिवार सहित आए हैं। उन्होंने बताया कि जडियाला गुरु मे हुए उपद्रव के बाद अल्पसख्यकों को दुकानें नही खोलने दी गईं जबकि एक सम्प्रदाय विशेष के सदस्यों की दुकानें खुली रहीं।

फतेहाबाद से आए मगतराज ने कहा कि राज्य में हिन्दू सेना का प्रभाव केवल कुछ शहरों तक ही सीमित है। इस सगठन का गांवों से कुछ लेना देना नहीं है। गांवों से अल्पसंख्यक पहले ही पलायन कर चुके हैं। जो बचे हुए हैं वे भी शीघ्र छोड़कर चले जायेंगे।

ये चारों व्यक्ति अपने परिवारों सहित आ तो गए हैं लेकिन उनके पास पैसे नही हैं। क्या यह नहीं सोचा है कि परिवार के पालन के लिए क्या करेंगे? इसके जवाब मे इन्होंने कहा कि पहले जान बचाना जरूरी था।

श्री जगजीवन राम को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की श्रद्धांजलि

बाबू जगजीवन राम के निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि उनके दिवगत होने से राष्ट्र ने एक अनुभवी और राष्ट्रभक्त नेता खो दिया।

स्वामी जी ने कहा कि बाबू जगजीवन राम का बाल्यकाल से आर्यसमाज से गहरा सम्बन्ध रहा। सन् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन मे वे जब भूमिगत रहे तो वे लगातार ६ मास आर्यसमाज दीवान हाल में पं० रामचन्द्र देहलवी के साथ रहे।

बाबू जगजीवन राम जी को उच्च शिक्षा दिलाने में आर्यसमाज के नेताओ ने पूरा सहयोग दिया। बाबू जी केन्द्रीय मन्त्रिमडल मे अनेक पदों पर आसीन रहकर सफलतापूर्वक कार्य करते रहे। भारत पाक युद्ध मे रक्षा मन्त्रालय का भार उन पर था और तभी बागलादेश मे ८८ हजार पाक सैनिकों ने हथियार डाले। इस सैन्य सचालन मे प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी तथा बाबू जी का दिमाग काम कर रहा था। उस युद्ध मे आर्यसमाज दीवानहाल द्वारा प्रारम्भ किये गये राष्ट्र रक्षा यज्ञ की पूर्णाहुति मे बाबू जी ने भाग लिया। म० गाधी की तरह बाबू जी हरिजनो को विराट् हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानते थे। वे जीवनपर्यन्त पौराणिक रूढ़िवाद से घोर सघर्ष करते रहे। वैदिक मान्यताओ और महर्षि दयानन्द के प्रति बाबू जी सदैव आस्थावान् और नतमस्तक रहे।

उनके दिवगत होने से राष्ट्र और हिन्दू समाज ने एक सच्चा हितैषी और मार्गदर्शक खो दिया। ऐसे राष्ट्रभक्त विद्वान् नेता के स्थान की पूर्ति होना असम्भव है।

स्वामी इन्द्रवेश का अनशन समाप्त

रोहतक। यहा चार जुलाई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (सन्यासपूर्व नाम श्री रामगोपाल शालवाले) ने स्वामी इन्द्रवेश को फलो का रस पिलाकर २१ दिनों से जारी उनका अनशन समाप्त करवाया।

यह अनशन वेंकटरमय्या आयोग के निर्णय और पंजाब में हिन्दुओ के उत्पीडन के विरुद्ध किया गया था।

इस अवसर पर अनेक आर्यसमाजी नेता उपस्थित थे।

सम्पादकीय

भाषाई साम्प्रदायिकता का पुराना ज्वर

विवादों के घेरे में उत्तर प्रदेश सदा ही रहा है और वहीं से एक नये विवाद का जन्म भी होता है। अभी-अभी इलाहाबाद की आग शान्त भी न हो पायी थी कि लखनऊ ताल्लुकेदार कालिज में नया विवाद खड़ा हो गया। पढ़ने व सुनने वाले भी आश्चर्य-चकित रहे होंगे कि कालिज में जो प्रिन्सिपल हैं वे एक अल्प-संख्यक समुदाय के मुसलमान बुजुर्ग हैं। वह भी ८५ साल की आयु के। वास्तविकता कुछ भी हो पर जैसा पढ़ा है, उस व्यक्ति की उम्र ८५ की ही है। सरकार की आंख के नीचे ५८ साल की उम्र के बाद कार्यमुक्त हो जाता है पर यह कब्रिस्तान में जाने वाला व्यक्ति एक कालिज मे कैसे पहुंच गया। चयन समिति की आंखों में मोतियाबिन्द था या अन्धेरी रात में चयन किया था। इस बूढ़े व्यक्ति का।

बात यहीं तक नहीं रही। इस व्यक्ति ने साम्प्रदायिकता की आग कैसे भड़कायी, पुराना पापी था। अच्छे अनुभवों से परिपक्व।

बात यह थी कि कालिवन ताल्लुकेदार कालिज की प्रवेश परीक्षा मे भाग लेने गये छात्रों को प्राचार्य ने कहा कि कालिज परिसर में हिन्दी मे बात-चीत न करें—यह एक पब्लिक स्कूल है। इस पर छात्रो में असन्तोष होना ही था। उन्होंने इस पर आपत्ति की आपत्ति करने पर प्राचार्य भड़क उठे और हिन्दी के विरुद्ध विषवमन करना शुरू किया। बस फिर क्या था, विद्यार्थी विश्वविद्यालय लखनऊ छात्रसंघ से मिले और उन्हें सारी स्थिति बताई और प्राचार्य तथा विद्यार्थियों के विवाद की बात स्पष्ट की। इस पर छात्रसंघ के नेताओं ने उस कालिज में पहुंच कर प्राचार्य से बातें की और कहा कि यह क्लास रूम नहीं है और न सभी अभ्यर्थी उनके साथ हैं। इस पर मेजर हबीबुल्लाह बिगड़कर आग बबूला हो गये तथा कहा कि कालिवन कालिज है यूनिवर्सिटी नहीं है।

इसके प्रांगण में कुत्तों और सुअरों की भाषा नहीं चलाई जायेगी। इस भाषा पर आपत्ति करके छात्र हबीबुल्लाह पर टूटपड़े। विवाद में मार-पीट भी की गई और छात्रों को यह घोषणा भी करनी पड़ी एक पत्रकार सम्मेलन में कि राष्ट्रभाषा का अपमान करने के गम्भीर आरोप में कालिवन कालिज के प्राचार्य को गिरफ्तार किया जाय, जिसने इस प्रकार भाषाई समस्या खड़ी कर एक विवाद को जन्म दिया।

छात्रसंघ ने एक कदम यह भी उठाया है कि छात्रसंघ ध्यान रखें कि शिक्षण संस्थाओं, सरकारी दफ्तरों और निजी प्रतिष्ठानों मे कहां हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी में काम किया जाता है।

अच्छा हुआ कि इस विवाद को छात्रों ने अपने हाथों में ले लिया बड़ी पुरानी बात है। एक बार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु जन-अभियान चलाया था किन्तु उनकी इस बातको किसी ने भी नहीं सुना। अन्ततोगत्वा एक घोषणा कर ही दी कि जो भी दुकानदार अपने बोर्ड नामपट्ट आदि हिन्दी में नहीं लिखवायेगा उससे विद्रोह की राह पर चला जायेगा। एक दिन एक विशाल जलूस लखनऊ वि०वि० से चलकर हजरतगज में आया कि लोगों ने अंग्रेजी बोर्ड उतार दिये—हिन्दी में लिखवाकर टांगे।

विद्रोह ने क्रान्ति को जन्म दिया। तब जन-मानस जागा था। किन्तु थोड़े समय के बाद फिर जैसे का तैसा। एक हबीबुल्लाह नहीं लाख लाख इन्सान राष्ट्रीयता को दाव पर लगाये बैठा है। राष्ट्र के कानून उसके अपने स्वयं पर हैं।

आज उस (छात्रसंघ) ने यह घोषणा की कि इंगलिश स्कूलों में ताले डाले जायेंगे जब तक हिन्दी माध्यम से कार्य नहीं किया जायेगा तब तक ताले नहीं खोले जायेंगे।

यह आवाज पूरे जिले में, प्रान्त व देशव्यापी पैदा की जाय और सरकारको भी बाध्य कियाजाय कि अपना सारा काम हिन्दी—राष्ट्र-भाषा में करें।

१—सरकार से पूछा जाय कि अवकाशप्राप्त मेजर-जनरल किस प्रकार ८५ वर्ष की आयु में यहां प्राचार्य बना दिये गये।

२—आते ही एक उपद्रव की दीवार खड़ी कर दो। यह योजनाबद्ध कार्यक्रम है कि देश की सुरक्षा, राष्ट्रीयता, दगे-फसाद कराकर देश को खतरे में डालकर स्वतंत्रता को ही दांव पर लगाया जाय।

दक्षिण में भाषाई आन्दोलन अभी चला पर शीघ्र ही शान्त हो गया। इलाहाबाद बमों की आग में जला। ठीक ऐसे ही समय पर प्रान्त की राजधानी में भाषा का पलीता आग लगाकर छोड़ दिया।

छात्रसंघ बधाई का पात्र है। वे ऐसे समय में संगठित होकर राष्ट्रहित में कार्य करें।

राष्ट्रभाषा का अपमान करने वाले लोग राष्ट्र विरोधी करार दिये जायें। यह कार्य सरकार नहीं कर पायेगी। यह छात्रसंघ घातक करके ही कर सकेगा।

यदि घोषणा के अनुसार कार्य किया गया तो सारे लखनऊ का वातावरण ही हिन्दीमय बन जायेगा। साथ ही राष्ट्रविरोधी ताकतें भी दफनाई जायेंगी।

छात्रसंघ का आंदोलन जन-आन्दोलन का रूप ले और सड़कों, बाजारों में भी नामपट्टों को जबर्दस्ती बदलवाने की घोषणा करे। आपका काम भी होगा और छात्रसंघ को यश भी मिलेगा। लखनऊ विश्व-विद्यालय की भांति अन्य विद्यालय भी इस बात का ध्यान रखें कि ऐसी राष्ट्रघाती देशद्रोही शक्तियों को जन्म के साथ ही विनाश के गड्ढे में दफना दें।

वापस घर चलो, हिन्दुओ !

हिन्दू-सिक्ख दोनों एक ही हैं। दोनों में परम्परा से रोटी बेटी के सम्बन्ध रहे हैं। फिर अचानक दरार क्यों? इसका मूल कारण है हमारी तथाकथित आजादी के बाद की गन्दी राजनीति और पक्षपात तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा। इसी से कई राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियां पनपी हैं व विकसित भी हुई हैं। हम एक ओर धर्मनिरपेक्षता की बात करते हैं दूसरी ओर उच्च वर्ग, पिछड़ी जाति एवं हरिजन की भी बातें करतेहैं। इससे हमारी परस्पर की सद्भावना मिट रही है।

आज बरनाला अभागे हिन्दुओं से दिल्ली में मिलकर घर वापस चलने को कह रहे हैं पर सिक्खों में आन्तरिक भावना है कि हिन्दुओं को पंजाब से भगाकर नये राजनीतिक उपद्रव खड़े किये जायें॥ बरनाला हिन्दुओं की रक्षा कैसे कर सकेंगे क्योंकि असन्तुष्ट अकाली ही नहीं किन्तु उनके मन्त्रिमण्डल के साथी भी उपद्रवी आतंकवादियों के साथ हैं। उस पर भी संविधान के समान ऊपर पंथ के ग्रन्थी हैं। जो न आतंकवादियों को तनखय्या घोषित करते हैं और न उनकी निन्दा ही करते हैं आतकवाद को प्रश्रय व बढ़ावा दिया जा रहा है।

क्या पंजाब केवल सिक्खों का है? सारा भारत सभी भारतीयों का ही है। सिर-फिरे आतंकवादी अलगाववादी और समझौते की भाषा नहीं समझते। सीमावर्त्ती क्षेत्रों को सेना के हवाले नहीं किया जाता तो निर्दोष हिन्दुओं की हत्या और उनका पलायन किसी भी प्रकार समझाने से नहीं सुलझ सकता। बरनाला की लफ्फाजी को सुनते-सुनते महीनों गुजर गये।

आर्यसमाज की मांग है कि पुनः विशाल पंजाब का निर्माण किया जाय। साथ ही फौज भी हमारी सुरक्षा करे।

बरनालाजी, आप तो घर से भी बाहर कर दिये गये हो। आपको कोई नहीं सुनता। अतः बरनाला को बर्खास्त करके राज्यपाल शासन लागू किया जाय। फिर समान्तर प्रक्रिया समझौते की भी चालू की जाय। घुटने टेकना समझौता नहीं।

दिनकर के शब्दो में—

चिन्तन कर यह जान कि तेरे क्षण-क्षण आहट से।
दूर-दूर तक के भविष्य का मनुज जन्म लेता है॥

स्वामी आनन्दबोध सरस्वत्या प्रयाग उच्चन्यायालये न्यायमूर्तेर्यादवेत्याख्याय बनवारीलालाय प्रोत्साहनम्

बहुश्रुताय न्यायाधीशाय श्रीमते बनवारीलाल यादव महोदयाय आर्यसमाजस्य सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था सार्वदेशिकार्य प्रतिनिधि सभाध्यक्षस्य आनन्दबोधे त्याख्यस्य भूयोभूय: नमस्ते ।

ज्ञायते यद् माननीयेन तत्र भवता भवता स्वकीये न्यायखण्डपीठे विवादास्पदके अभियोगे अशेष निर्णय: संस्कृतभाषायामेव प्रतिष्ठापित: उच्चारितश्च । श्रीमतामेषा साध्वी परम्परा गीर्वाणावाणी न केवलं मूर्धाभिषिक्तां करिष्यत्यथ च भारतवर्षे भारतीय संस्कृतिं समुन्नतिं प्राप्स्यति । अथ च विवादे प्राड्विवाकैरपि संस्कृते एव स्वपक्ष: स्थापित: इति ज्ञात्वास्माकं चेत: भृशमहो आह्लादं लभते । आर्यसमाजप्रवर्तक: श्रीमद्दयानन्द महर्षि: सदा सर्वदा भवत्सदृशैर्महाभागै: विद्वद्भि: संस्कृत भाषाया: प्रोन्नतिमकामयत । वेदाङ्गेषु संस्कृत व्याकरणस्याध्यापनार्थं स्वामिवर्यै: घोर: प्रयास: कृत: । अथ च तेन मार्गेण वेदाध्ययनं जातिभेदं लिङ्गभेदं च परिहार्य सर्वमनुष्याणां कृते सुलभमकारि ।

भागधेया: भवन्त: एतज्ज्ञात्वातीव मोदं लप्स्यन्ते यल्लोक सभाध्यक्षाय माननीय श्री बलराम जाखड़ महोदयाय मदर्थं च गत वैशाख मासे आर्यसमाजेन गीर्वाणवाण्यामेव द्वे अभिनन्दने कृते आस्ताम् । श्रीमतामामोदार्थमवलोकनार्थं तयोर्द्वे प्रती सहैवात्राह प्रेषये ।

दिग्दिगन्ते भवतां यश: सरस्वतीप्रसादश्चाधिक भूयादिति प्रार्थना भगवते जगदीश्वराय वय कुर्म: समस्ता: आर्यजना: ॥

आषाढ़ कृष्णा एकादशी
२०४३ विक्रमाब्द

ह०—आनन्दबोध सरस्वती

हिन्दी अनुवाद

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बनवारीलाल यादव को प्रोत्साहन

आर्यसमाज की सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (पूर्वाश्रम नाम—रामगोपाल शालवाले) की ओर से विद्वान् न्यायाधीश श्री बनवारीलाल यादव को बार-बार नमस्ते ।

ज्ञात हुआ कि माननीय–आदरणीय आपने अपने न्यायालय की खण्डपीठ मे एक विवादास्पद अभियोग में पूरा का पूरा निर्णय संस्कृत भाषा में लिखा और सुनाया । आप द्वारा डाली गई यह अच्छी परम्परा न केवल संस्कृत भाषा को हमारे मस्तक पर अभिषिक्त करेगी अपितु भारतवर्ष में भारतीय संस्कृति को भी उन्नत करेगी । इतना ही नही, ज्ञात हुआ है कि इस विवाद में वकीलों ने भी अपना-अपना पक्ष संस्कृत में ही रखा । इस आशय का समाचार जानकर हमारा चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ । आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती सदा-सर्वदा चाहते थे कि आप जैसे विद्वान् महानुभाव संस्कृत की उन्नति करें । स्वामी जी ने वेदांगो मे संस्कृत व्याकरण के अध्यापन के लिए घोर प्रयत्न किया । यही पर बस नही, उन्होंने इस मार्ग से वेदाध्ययन के लिए जातिभेद और लिंगभेद का अन्तर न करते हुए इसे सब लोगो के लिए सुलभ कर दिया ।

आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि पिछले वैशाख महीने मे आर्यसमाज ने संस्कृत भाषा मे लोकसभा के अध्यक्ष माननीय श्री बलराम जाखड़ और मुझे अभिनन्दनपत्र भेंट किये । आपकी प्रसन्नता और अवलोकन के लिए उनकी दो प्रतियां मैं इस पत्र के साथ ही आपको भेज रहा हूं ।

हम सब आर्यजन परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिग्दिगन्त में आपका यश और सरस्वतीप्रसाद अधिकाधिक फैले ।

आषाढ़ कृष्णा एकादशी
२०४३ विक्रमाब्द

ह०—आनन्दबोध सरस्वती
(पूर्वाश्रम नाम—रामगोपाल शालवाले)

कृत्रिम गर्भाधान वाली मुस्लिम औरतों को पत्थर मार-मारकर मृत्युदण्ड की चेतावनी

जद्दा । सऊदी अरब के धार्मिक साप्ताहिक पत्र 'अल मुस्लिमून' ने चेतावनी दी है कि कृत्रिम गर्भाधान से संतति प्राप्त करने वाले मुस्लिम दम्पती व्यभिचार के दोषी हैं । धार्मिक नेताओं के हवाले से पत्र ने कहा है कि ऐसी पत्नी की सजा पत्थर मार-मार कर जान लेना है और ऐसी संतति को उत्तराधिकार नहीं मिल सकता । पत्र ने कहा है कि बहुत-से धनी मुसलमान पुरुष, जो पिता नहीं हो सकते, अपनी पत्नियों को लन्दन और यूरोप या अमेरिका के दूसरे नगरों में ले जाते हैं और वहां उन्हें कृत्रिम उपायों से गर्भधारण कराते हैं । बहुत-से दम्पती तो केवल सन्तान की चाह से ऐसा करते हैं, पर अधिकतर को यह डर रहता है कि अगर उनके बच्चा न हुआ तो सारी दौलत रिश्तेदारों के पास जाएगी ।

मुस्लिम धार्मिक नेताओं ने कहा है कि अगर कोई स्त्री पति को बताये बिना कृत्रिम उपाय से गर्भ धारण करती है तो वह व्यभिचार की दोषी है । अगर पति की सहमति है तो दोनों परमात्मा को धोखा देते हैं । नेताओं ने कहा है कि किस देश मे क्या सजा दी जाये, यह निर्धारित करना वहां की सरकार का काम है पर शरीअत के अनुसार व्यभिचारिणी स्त्री के लिए मृत्युदण्ड की व्यवस्था है ।

हैदराबाद सत्याग्रह सम्बन्धी पेन्शन के प्रार्थना पत्र

सभा के कार्यालय में अब तक जितने आवेदन-पत्र हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालों के पेन्शन पाने हेतु प्राप्त हुए थे, वे भारत भारत सरकार के गृह मन्त्रालय को भेजे जा चुके हैं । आगे की सूचना से आपको अवगत किया जायेगा ।

जो लोग ३० जून तक गृहमन्त्रालय को सीधे आवेदन कर चुके हैं, उनके लिए सरकार जेल के प्रमाणपत्र, न्यायालय का निर्णय और सहयात्री द्वारा दिया गया प्रमाणपत्र भेजना आवश्यक है । इनके बिना आवेदन-पत्र रद्द हो सकते हैं ।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह : अब आवेदन पत्र न भेजें

इस सभा ने ३० मई तक हैदराबाद मे आर्यसमाज सत्याग्रह (१९३८-३९) के सम्बन्ध मे आवेदन पत्र भेजने की सूचना सार्वदेशिक मे निकाली थी । भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में निर्धारित फार्म पर आवेदन की जो अन्तिम तिथि तय की थी, उसका हमारे साथ सम्बंध नही था ।

इस सम्बन्ध मे सैकडों आवेदन पत्र, जिनमे से अधिकतर भूमिगत कार्य करने की सम्पुष्टि में भेजे गए हैं, ३१ मई के बाद बहुत बड़ी संख्या मे और रजिस्टर्ड ए०डी० द्वारा प्राप्त होते रहे हैं ।

तिथि समाप्त होने के बाद आज भी रजिस्टर्ड ए० डी० द्वारा दर्जनों आवेदनपत्र इस कार्यालय मे पहुंचे हैं । हमने खेदपूर्वक उन सबको लेने से इनकार कर दिया है और वे आवेदकों के पास लौट जायेंगे ।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

मारिशस में भारतीय संस्कृति : जबरदस्त चुनौतियां-२

— अभिमन्यु अनत —

एक तीसरे कारण से यह निराशा यहां हिन्दी जगत् में और भी बढ़ी, जब तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के दौरान दिल्ली में मारिशस के सरकारी प्रतिनिधि ने यह कह दिया कि मारिशस में अगर हिन्दी जीवित है,तो फिल्मी अभिनेताओं और गायक-गायिकाओं के कारण। यह प्रवृत्ति देश के उन सभी सांस्कृतिक आन्दोलनों को नकार देने की थी, जिनसे इस देश में भाषा और संस्कृति-फली-फूली थी। हिन्दू महासभा, आर्य सभा, हिन्दी प्रचारिणी सभा, जन आन्दोलन, हिन्दी परिषद् तथा अन्य सभी संस्थाओं को भी नकार दिया गया था उस राजनीतिक फूट से। आज सभी सभाएं भी हताश हैं।

इस तरह यह देश काफी हद तक हिन्दी की शिथिलता का खुद जिम्मेदार है, पर साथ ही साथ भारत भी इस जिम्मेदारी को बांटता है।

आज से कोई दस ही वर्ष पहले यहां स्थित भारतीय उच्चायोग की जो सांस्कृतिक सक्रियता थी, वह तो अब सपना बन गयी है, तब इण्डिया हाउस से लेकर भारत सांस्कृतिक केन्द्र तक हर सप्ताह, हर महीने, कोई न कोई सांस्कृतिक और साहित्यिक गोष्ठियां होती रहती थीं, आज तो वर्ष भर में भी वैसा आयोजन नहीं हो पाता। कभी इस उच्चायोग की ओर से हर बैठक, सभा और सब में आजकल, बाल भारती की प्रतियां भेजी जाती थीं, अब तो यह सिलसिला बन्द ही नहीं हो गया है, बल्कि जब कोई भूला-भटका हिन्दी की कोई पत्रिका मांगने उस ओर चला जाता है, तो उसे भिखारी कह दिया जाता है। उच्चायोग का पुस्तकालय पन्द्रह वर्ष पुरानी पुस्तकों के साथ चिड़ियाघर-सा लगता है। नवभारत टाइम्स, टाइम्स आफ इण्डिया, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान,दिनमान आदि कुछ पत्रिकाएं पहुंचती तो हैं, पर मेज पर कभी नहीं होतीं, उन्हें हर वक्त विशेष लोग अपने घर पर पढ़ रहे होते हैं।

भारतीय भाषाओं ने अब भी दम नहीं तोड़ा है

मारिशस में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाएं हमेशा से मजदूरों और आम आदमी की भाषाएं रही हैं। पुस्तकों के सस्ते संस्करणों द्वारा यहां पर भाषा और संस्कृति को दफनाये जाने से रोका गया है, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों और पत्रिकाओं की प्यास तो यहां की जनता को आज भी है, लेकिन भारत की बुक पोस्ट नीति के कारण वे पुस्तकें मंगवा नहीं पाते। अभी कुछ ही वर्ष पहले दोनों देशों के बीच जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम था, उसके तहत दोनों देशों के लेखक,कलाकार, विद्वान् एक-दूसरे के यहां आ-जा कर विचारों का आदान-प्रदान करते थे। इससे मारिशस के सृजनात्मक जगत् का काफी बल मिलता था, अब तो वह पुल भी टूट गया है, राजनेता तो अब भी उसी रफ्तार के साथ आते-जाते रहते हैं। काश ! इनकी इस आवाजाही से सांस्कृतिक रिश्ता दमदार हो पाता।

भारत को तो इस बात का गर्व होना चाहिए था कि भारत से बाहर दुनिया में एक मारिशस ही है, जहां कल तक भारतीय संस्कृति बुलन्दी पर थी, स्वतन्त्रता के बाद मारिशस में दो सौ हिन्दी पुस्तकें लिखी गयीं और प्रकाशित हुईं। यह संख्या यहां की अंग्रेजी-फ्रेंच में प्रकाशित पुस्तकों की मिली-जुली फेहरिस्त से भी लम्बी है, पर इधर दस वर्षों में प्रकाशन का यह सिलसिला भी ठप पड़ा हुआ है। भारत से बाहर वह केवल मारिशस ही है, जहां हिन्दी का साहित्य इतना समृद्ध हो सका। कम से कम पांच ऐसे लेखक आज इस देश में इतनी प्रतिबद्धता के साथ लिख रहे हैं कि जर्मन, रूसी, अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच भाषा में भी उस साहित्य का अच्छा अनुवाद होने लगा है। जो प्रोत्साहन उन्हें भारत सरकार से मिलना चाहिए था, वह कहीं और से मिल रहा है।

एक-दो हिन्दू त्योहारों को धूम-धड़ाके से मना लेने से एक संस्कृति जीवित नहीं रह जाती। मारिशस में भारतीय संस्कृति किस तरह भीतर ही भीतर खोखली होती चली जा रही है, उसका पता बस इन सच्चाइयों से चल सकता है। इस देश में कभी जन-आन्दोलन के दौरान पण्डित विष्णुदयाल, समुद्र-किनारे को गंगा रूप देकर वहां गंगा-स्नान के अवसर पर प्रवचन किया करते थे—भारतीय संस्कृति की महिमा गायी जाती थी। आज उस अवसर पर गंगा-स्नान की जगह मदिरा-स्नान होता है और एक ओर जब महिलाएं पूजा-पाठ में लगी होती हैं तो दो कदम दूर पुरुष वर्ग बिसाईं बों के साथ शराब की बोतलें लिये बैठा होता है।

यह विसंस्कृतिकरण आज हर ठौर पर देखने को मिलता है। भारतीय फिल्मों की इससे बेहतर नकल और क्या हो सकती है ? कभी इस द्वीप में भारतीयों की अपनी दस से अधिक पत्र-पत्रिकाएं थीं,आज तो उस तरह की एक भी पत्र-पत्रिका नहीं। गांवों में हिन्दी पाठशालाओं की संख्या घटती ही चली जा रही है। आज के मारिशसीय युवा का यह सवाल होता है कि जब इस देश में रूसी, चीनी, अरबी प्रतिनिधि टेलीविजन पर आते हैं तो अपनी भाषा में बोलते हैं, जबकि भारत के प्रतिनिधि अंग्रेजी बोल कर आत्मगौरव अनुभव करते हैं। जिस भाषा से खुद भारत को शर्म आती हो, उस हिन्दी को हम क्यों पढ़ें ? अब तो भारतीय फिल्मी संस्कृति की बाढ़ में यहां के शादी-ब्याह में गीत-भजन-कव्वाली-गजलें नहीं होतीं, उनकी जगह डिस्को का ज्वर होता है।

यहां के लेखकों को विश्व-भर में आयोजित सम्मेलनों में पहुंचने के अवसर मिलते रहते हैं। यहां तक कि हिन्दी के रचनाकार भी दुनिया-भर की सरकारों के निमन्त्रण पा कर अन्य देशों के साहित्यकारों से मिलकर विचार-विमर्श तो कर आते हैं। पर भारत पहुंचने की आस ही लगाये रह जाते हैं।

यहां स्थित महात्मा गांधी संस्थान को कभी भारतीय भाषाओं और संस्कृति के प्रचार-प्रसार का साधन माना गया था। आज तो वह संस्था भी अपने सीमित बजट में दुनिया की हर संस्कृति के प्रचार का ठेका लिये बैठ गया है। उसे भी तो उन्हीं आकाओं को खुश करना है, जिनसे उसे बेशुमार सहायता मिल रही हो।

फिर से जुड़ाव की कोशिश जारी

इस समय मारिशस में हो रहे अत्यन्त ही सराहनीय सांस्कृतिक कार्यक्रम और भाषा का प्रचार-प्रसार फ्रांस सरकार के सहयोग से चल रही कोई चार फ्रांसीसी संस्थाओं की ओर से हो रहा है। वह चाहे साल कोलचीरेल फ्रांसे हो या मांत्र बोदलेर, चाहे आ०से०ते० हो या फ्रांसीसी उच्चायोग। इन सभी शक्तियों की सक्रियता से यहां सप्ताह में दो-तीन सांस्कृतिक-साहित्यिक गतिविधियां हो ही जाती हैं, नाटक मंडलियों से लेकर विद्वानों, लेखकों, कलाकारों का आना-जाना नियमित ढंग से होता ही रहता है। यह सक्रियता इन संस्थाओं में जितनी बुलन्दी पर है, उतनी ही मृत-सी स्थिति में यहां का भारतीय उच्चायोग है। अपनी संस्कृति के इस प्रचार-प्रसार में भारतीय संस्कृति और भाषा यहां मर तो नहीं रही, पर उन्हें खुद मर जाने देने की साजिश चलायी जा रही है।

अगर आज विश्व-भर में फ्रेंच बोलने वाले ३१ देश हैं, कम से कम भारत से बाहर हिन्दी बोलने और जीने वाले एकमात्र देश को अपनी इस सांस्कृतिक धरोहर के साथ जी लेने तो दिया जाये।

आज की जो भारतीय सरकारी या गैर-सरकारी संस्थाएं भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए काम कर रही हैं, उनका ध्यान मारिशस की ओर भी तो जाना चाहिए। मारिशस के हिन्दी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

न्यूयार्क में अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन और आर्यसमाज मंदिर का उद्घाटन समारोह

--आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री--

मैं सदा ही तीन मास बाद एक मास महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में सभा के आवश्यक कार्यों के करने के लिये जाया करता हूँ। इसमें अपने पद से सम्बद्ध सभी आवश्यक कार्यों और दूसरे विशेष कार्यों को पूरा करके आया करता हूं। इसी सिलसिले में २४ फरवरी १९८९ से २ अप्रैल १९८९ तक मैं दिल्ली में रहा। मेरी विदुषी पत्नी श्रीमती उर्मिलादेवी शास्त्री भी मेरे साथ थीं। दिल्ली से ३ अप्रैल की डीलक्स से बड़ोदा वापस आना था। अतः कार्य में व्यस्तता बढ़ गई थी। ३१ मार्च को न्यूयार्क से सार्वदेशिक सभा में फोन आया कि आर्यसमाज न्यूयार्क की ओर से श्री आचार्य जी को उनके घर के पते पर बड़ोदा पत्र भेजकर प्रार्थना की गई है कि वे इस समाज के उत्सव पर होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन की अध्यक्षता करें और शीघ्र अपनी स्वीकृति भेजें। सभा के कार्यालय सचिव ने कहा कि श्री आचार्य जी यहां उपस्थित हैं, आप फोन पर उनसे बात कर स्वीकृति लेलें। यह फोन आर्यसमाज न्यूयार्क के कर्मठ और सुयोग्य मन्त्री श्री धर्मजित् जिज्ञासु का था। उन्होंने सब बातें कही और बताया कि "यहां की समाजों और दूसरे स्थानों के सभी आर्यजन वेद सम्मेलन को बहुत महत्त्वपूर्ण ढंग से कर रहे हैं अतः सभी चाहते हैं कि आप उसकी अध्यक्षता करें।" मैंने कहा "आप इसे स्वीकृति ही समझें परन्तु इसकी पुष्टि बड़ोदा जाकर सब डाक देखकर आपके पत्र के उत्तर में पत्र से करूंगा।" बड़ोदा आकर मैंने स्वीकृति भेज दी। वेद सम्मेलन और उत्सव की तारीखें पहले ११ मई से १९ मई तक थीं परन्तु जल्दी हम लोग न पहुँच पायेंगे अत. १७ मई से २५ मई तक निश्चित कर दी गईं। मेरी पत्नी को एंजाइना की बीमारी है अतः उन दिनों वे चारपाई पर थी। मेरे जाने में कठिनाई थी। परन्तु उन्होंने कहा कि "आप व्यवस्था करके जाइये, क्योंकि वहां के आर्यसामाजिकों की प्रार्थना पर आपने स्वीकृति दी है। व्यवस्था में सरलता यह हुई कि मेरी पुत्री शमी डालुंग एडवोकेट दिल्ली से बच्चों के साथ बड़ोदा आ गई और एक मास तक रही। मैंने सब व्यवस्था कर डाक्टर से पूछा और डाक्टर ने कहा कि आप जाइए, अब मैं देख लूंगा। मैं १४ मई की रात्रि में चलकर १५ मई को बम्बई पहुंचा। बम्बई मे मैं आर्यसमाज काकड़वाड़ी मे ठहरता हूँ। वहा आर्यसमाज के विद्वान् परामर्श-दाता श्री पं० दयाशंकर जी शर्मा और मन्त्री श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री वसन्त राय जी पटेल तथा सभी अधिकारी आर्यजनो ने आदर-पूर्वक विदाई दी। यह समाज महर्षि द्वारा स्थापित प्रथम समाज है। इस समाज का बहुत लम्बे अर्से से मेरे साथ सम्बन्ध रहा है और अब भी यह समाज मुझे पूरा सम्मान देता है।

मैंने एक दिन में वीजा तैयार कराया और सब कार्रवाई पूरी की, परन्तु २१ मई तक विमान में स्थान नहीं था। २१ मई के लिए आरक्षण था। इससे पूर्व १४ मई को मेरा आरक्षण था परन्तु न्यूयार्क से कागजात देर में मिले और न जा सकने से आरक्षण रद्द कराकर तारीख बदलवाई। लगातार प्रयत्न रहा कि २१ मई से पूर्व जगह मिल जाये। दैवयोग से १९ मई के रात्रि के विमान में आरक्षण मिला। यह १९ मई की रात्रि में प्रातः ५ बजे गया अर्थात् २० मई को गया। मैं न्यू इण्डिया वायुयान से २० मई को सायंकाल न्यूयार्क पहुँचा। श्री धर्मजित् जी जिज्ञासु और मान्य स्वामी सत्यप्रकाश जी मुझे लेने आये थे। उनके साथ सीधा ही जाकर कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ। मेरे और स्वामी जी महाराज के व्याख्यान हुए।

मान्य स्वामी जी दिल्ली से १४ मई के विमान से चलकर पहले ही वहां पहुँच गये थे और उत्सव में उनके व्याख्यान चल रहे थे। इस उत्सव में यजुर्वेद पारायण यज्ञ १७ मई से प्रारम्भ हुआ था और उसकी पूर्णाहुति अन्तिम दिन हुई थी। यज्ञ श्री प० धर्मजित् जिज्ञासु, श्री प० सतीश जी ब्रह्मचारी, श्री पं० रामलाल जी तथा अन्य विद्वान् उत्साह से करा रहे थे। इसमें सभी अधिकारी जन आर्य भाई-बहन आते थे, यजमान बनते थे और सब मे प्रसन्नता की लहर थी। यज्ञ और उत्सव के सभी दिनों मे दिन-भर बहुत बड़ी उपस्थिति में कार्यक्रम चलता था। भोजन भी लोग वहीं पर करते थे। भोजन घरों से तैयार होकर भी आता था। आर्यसमाज मन्दिर में नीचे के तले में भोजन बनाने आदि की व्यवस्था भी है। यज्ञ से जनता प्रभावित थी। उत्सव १७ से मई २५ तक चलता रहा। प्रातः, मध्याह्न और रात्रि को भी कायक्रम चलता था। सारी कारंवाई अंग्रेजी भाषा में होती थी और जनता बड़े चाव से भाग लेती और व्याख्यान आदि सुनती थी।

२४ मई को अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन की कारंवाई शान्त वातावरण में उत्साह के साथ प्रारम्भ हुई। वेद मन्त्रों के पाठ और ईश प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मैं चूंकि सम्मेलन का अध्यक्ष था अतः मुझे पूर्व ही अध्यक्षीय भाषण करने के लिए कहा गया। मैंने डेढ़ घण्टे के लगभग अंग्रेजी में वेद के सम्बन्ध मे विशेष पहलुओ को लेकर भाषण दिया। लोग मन्त्रमुग्ध होकर भाषण सुनते रहे। श्रोताओं की श्रद्धा, मुद्रा और भाव भङ्गिमा को देखकर मैंने भी वेद विषय का विशद प्रतिपादन किया। लोग इतने प्रसन्न हुए कि देखते ही बनता था। मेरे भाषण के बाद ही सम्मेलन का असली रूप सामने आ गया और सफलता दृष्टिगोचर होने लगी।

स्वामी श्री सत्यप्रकाश जी भाषण के लिए खड़े हुए। वे इतने प्रसन्न थे कि भाषण के प्रारम्भ मे ही बोले कि "अध्यक्षीय भाषण अपूर्व हुआ और इसे तो छापकर लोगों में प्रसारित करना चाहिए।" संयोगवश हुआ ऐसा कि व्याख्यान लिखकर लाने को कहा ही नही गया था। स्वामी जी वैज्ञानिक विद्वान् हैं। उन्होंने भी अपना भाषण बहुत अच्छे प्रकार से दिया। उन जैसे विद्वान् सन्यासी को जैसा बोलना चाहिए, वैसा ही वे बोले।

इसके अनन्तर अन्य विद्वानों के भाषण हुए। सभी ने वेद पर अपने विचारों को सतुलित ढग से प्रकट किया। इसमे कई देशों से विद्वान् और आर्य भाई-बहन आये थे। गायनीज भाई-बहन तो अपने आर्यत्व की छाप डाल रहे थे।

अन्त मे श्री प० धर्मजित् जिज्ञासु का भाषण हुआ। वे बहुत सुन्दर बोले। वे समाज के मन्त्री थे और वे ही इस सम्मेलन के संयोजक थे। भाव-विभोर हो उन्होंने कहा "मैं जो चाहता था उससे भी अच्छा यह अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन हुआ। इस सफलता से मैं हृदय से अति प्रसन्न हूँ। तारीफ करने के लिए मेरे पास शब्द नही।" उन्होंने यह भी चर्चा की कि इस प्रकार के सम्मेलन को अब स्थायी बनाना पड़ेगा। दो वर्ष बाद फिर इसका आयोजन किया जायेगा। सम्मेलन की सफलता को देखकर सभी ने इसे अभूतपूर्व कहा।

२५ मई को उत्सव का अन्तिम दिन था। मध्याह्न मे आर्यसमाज मन्दिर का विधिवत् उद्घाटन स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा हुआ। आज का उत्सव भी बहुत प्रभावशाली रहा। जनता पर्याप्त आई थी। भाषण, भजन आदि हुए। मरा भी भाषण इस उपलक्ष्य मे हुआ। आर्यसमाज के सघटन और उद्देश्य पर विशेष विचार प्रस्तुत किया गया। शान्तिपाठ के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ। इस उत्सव में राजनयिक लोग भी आये थे और उन्होंने भी अपने विचार प्रकट कर आर्यसमाज और उसके कार्यों की प्रशंसा की। देवियों ने भी बड़े उत्साह से कार्य किया। श्रीमती पोपली आदि कार्य में सदा तत्पर रहीं।

आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन हुआ।

इसका पूरा पता और नाम इस प्रकार है—

ARYA SAMAJ INC.
NEW YORK
150—22 Hillside AVE.
JAMAICA, QUEENS, N.Y., USA

संघटनात्मक और रचनात्मक

आर्यसमाज और वेद के प्रचार-प्रसार के लिए अमेरिका का क्षेत्र उर्वर है। वहा पर प्रचार अच्छा हो सकता है। उत्सव समाप्ति के बाद मैंने २६ मई से १० मई तक न्यू मैक्सिको, कैलीफोर्निया आदि प्रदेशों का निरीक्षण

(शेष पृष्ठ १० पर)

महरौली का ज्योतिः स्तम्भ (कुतबमीनार)-१

—आचार्य उदयवीर शास्त्री—

संसार के शिल्पिक निर्माण में महरौली के मीनार का विशेष स्थान है। यह मीनार किसने बनाया? क्यों बनाया? और कब बनाया? इन प्रश्नों का अभी तक कोई निश्चित निर्भ्रान्ति उत्तर विद्वत्समाज के सम्मुख नहीं आ पाया है।

आजकल यह मीनार 'कुतबमीनार' के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ लोग इसका उच्चारण 'कुतुबमीनार' करते हैं। इस उच्चारण के साथ कदाचित् वह कहानी छिपी हुई है, जिसके अनुसार इस मीनार के निर्माण आदि के साथ मुस्लिम बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक का नाम जोड़ लिया गया है। कुतुबुद्दीन ऐबक का दिल्ली पर अधिकार सन् ११९२ ईसवी में हुआ, यह इतिहास द्वारा जाना जाता है। मीनार के विषय में जो तीन प्रश्न हमारे सामने हैं—किसने, कब और क्यों इसका निर्माण कराया, इन प्रश्नों का उत्तर—इस विचार की छाया में कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसका निर्माण कराया—युक्तियुक्त एवं प्रामाणिक रूप में मिल सकता है या नहीं? इसकी परीक्षा करनी चाहिये। इस समय हमारा इतना ही लक्ष्य है कि इस लोकप्रवाद की विभिन्न रीति से जांच की जाये कि इस प्रवाद का आधार कोई ऐतिहासिक तथ्य सम्भव है या नहीं?

१. मीनार के साथ ही कुतुबुद्दीन ऐबक का एक निर्माण है—'कुव्वत-उल्-इस्लाम' नामक मस्जिद। मस्जिद के मुख्य द्वार के माथे पर जो लेख उत्कीर्ण है, वह इस प्रकार है—

"ईं हिसार रा फतह कर्द ईं मस्जिद जामा रा बसाख्त बतारीख की शहर सनः तः सना व समानीन व हम समाय (स) तः अमीर अस्फहसालार अजल कबीर कुतुबुद्दौलतुद्दीन अमीरुल उमरा ऐबक सुल्तानी ऐजाजुल्ला अनसारह् बीस्त व हफ्त आलात बुतखाना के दर हर बुतखाना दो बार हजार बार हजार दलिवाल सरफ शुदा बूद दरी मस्जिद बकार बस्ताशुदा अस्त खुदाये इज वो जल बरा न (बड़ा था) बन्दा रहमत कुनद हर के बरनीयत ए बानी खैर दुआए इमान गोयद।"

हिन्दी रूपान्तर—

यह क़िला जीता गया सन् ५८७ हिजरी (सन् ११९२ ई०) में और इस जामा मस्जिद को महान् सेनापति अमीर कुतुबुद्दौलतुद्दीन अमीरुल-उमरा ऐबक सुल्तानी ने बनवाया। ईश्वर उसके सहायकों को शक्ति दे। बीस और सात (कुल २७) मन्दिरों को, जिनमें प्रत्येक के ऊपर बीस लाख (२×१०००×१०००) दिल्लीवाल खर्च हुए थे, तोड़कर उनकी सामग्री से इस मस्जिद का निर्माण हुआ। दयालु परमेश्वर उस पर अनुग्रह करे, जो इस महान् निर्माता के लिये प्रार्थना करे।

इस लेख से निश्चित है कि मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने कराया। लेख में जिन सत्ताईस मन्दिरों के तोड़े जाने का जिक्र है, उनके विषय में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे इसी सीमित क्षेत्र में निर्मित थे। वे कैसे मन्दिर रहे होंगे, इसका स्पष्ट लेखा-जोखा करना आज कठिन है, फिर भी मस्जिद के मुख्य द्वार के माथे पर उत्कीर्ण लेख से हमें इस विषय में कुछ संकेत मिलते हैं। उस पर यदि हम सावधानतापूर्वक गम्भीरता से विचार करें, तो उन मन्दिरों की साधारण रूप-रेखा की कल्पना हमारे मस्तिष्क में उभर आ सकती है।

अ—पहला संकेत है, उत्कीर्ण लेख में—आलात—शब्द का प्रयोग। यह शब्द जिस रूप में प्रयुक्त हुआ है, उसका अर्थ है कि मन्दिरों के तोड़े हुए मलबे से मस्जिद का निर्माण कराया गया। फ़ारसी लुग़त में 'आला' शब्द का अर्थ 'यन्त्र' भी है, उसका बहुवचन 'आलात' है। इस शब्द का इस मौके पर प्रयोग एक खास मसलहत से किया गया मालूम होता है कि यह मन्दिरों के तोड़े हुए मलबा अर्थ को कहता हुआ उन मन्दिरों के यन्त्ररूप में किये गये निर्माण का भी संकेत कर सके। इस प्रयोग से यह अभिव्यक्त होता है कि वे मन्दिर रूप जैसे कुछ रहे होंगे। उन मन्दिरों का यन्त्ररूप होना—दिल्ली में जन्तर-मन्तर नाम से प्रसिद्ध निर्माण की ओर यकायक हमारे ध्यान को आकृष्ट करता है। 'जन्तर' पद—जो स्पष्ट 'यन्त्र' का अपभ्रंश है—इसकी वास्तविक रूपरेखा को प्रस्तुत करता है, यह समस्त निर्माण किसी विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति के लिये साधनरूप से प्रयुक्त किया जाता है। 'मन्तर' पद इसकी रहस्यमयता को स्पष्ट करता है। इसकी रहस्यमयता यही है कि न केवल साधारण व्यक्ति, अपि तु विशिष्ट व्यक्ति भी जब तक इस निर्माण की विशेषताओं को जान-समझ नहीं लेते, तब तक उनके लिये यह सब रहस्य ही बना रहता है, इस साधन से उन्हें किसी अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती।

इस तरह के निर्माण के लिये जहां हम 'जन्तर' पद का प्रयोग देख रहे हैं, वहां 'मन्दिर' पद का प्रयोग भी खुले आम रूप में देखा जाता है। वर्तमान भारत में ऐसे निर्माण पांच स्थानों पर हैं—दिल्ली, जयपुर, मथुरा, वाराणसी, उज्जैन। दिल्ली में जैसे यह निर्माण 'जन्तर-मन्तर' नाम से प्रसिद्ध है, ऐसे वाराणसी आदि में इसे 'मान-मन्दिर' नाम से पुकारा जाता है। मस्जिद के माथे के उत्कीर्ण लेखमें उन मंदिरों का यन्त्ररूप संकेतित होना यह अभिव्यक्त करता है कि वे कोई ऐसे ही निर्माण रहे होंगे, जैसे ये 'जन्तर-मन्तर' अथवा 'मान-मन्दिर' आदि हैं। इस सम्भावना को यदि तथ्य की सीमा तक स्वीकार किया जाता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां प्राचीनकाल की बनी हुई कोई वेधशाला (आब्जरवेटरी) रही होगी।

आ—उन मन्दिरों की रूप-रेखा को समझने के लिये मस्जिद के माथे पर लगे उत्कीर्ण लेख में दूसरा संकेत है उन मन्दिरों के सम्भावित मूल्य का निर्देश। लेख में प्रत्येक मन्दिर के निर्माण का व्यय 'बीस लाख दिल्लीवाल' बताया गया है। उस समय का 'दिल्लीवाल' सिक्का जो रुपये के स्थान पर प्रचलित रहा, आधुनिक अवमूल्यन से पहले के प्रचलित सिक्कों में लगभग बारह आने के बराबर माना जाता रहा है, ऐसा उस विषय के विशेषज्ञों का कथन है। इसमें कालिक अन्तर के अनुसार कुछ न्यूनाधिक अन्तर हो सकता है, पर एक मन्दिर की लागत पन्द्रह-सोलह लाख रुपये के लगभग आंकी जा सकती है। यह संभव है, किन्हीं मन्दिरों का निर्माण व्यय कुछ न्यूनाधिक रहा हो, फिर भी उक्त संख्या को औसत रूप माने जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। प्रत्येक मन्दिर के लागत व्यय की इस निर्दिष्ट व्यवस्थित संख्या के दो परिणाम सामने आते हैं—पहला उस काल में एक मन्दिर पर इतना अधिक धन व्यय होना तथा दूसरा प्रत्येक मन्दिर पर लगभग समान धनराशि के व्यय होने से उन समस्त मन्दिरों के निर्माण का कोई एक समान लक्ष्य होना। यदि वे मन्दिर विभिन्न उद्देश्यों से विभिन्न कालों में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा निर्माण कराये गये होते, तो उनके निर्माण में एक समान धनराशि के व्यय होने की संभावना का कोई अवसर न रहता।

उस काल में निर्माण सामग्री के इतना अधिक सस्ता होने पर भी प्रत्येक मन्दिर के निर्माण में पन्द्रह-सोलह लाख रुपये का व्यय किसी भी विचारक के ध्यान को इस ओर आकृष्ट करता है कि उस निर्माण का अवश्य कोई यान्त्रिक रूप रहा होगा, जिसे प्रस्तुत करने में इतना अधिक व्यय अनायास संभव है। प्रत्येक मन्दिर का व्यय लगभग समान होना इस दूसरे परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट करता है कि इन मन्दिरों के निर्माण का लक्ष्य कोई एक ही रहा होगा, जिसके अनुसार समस्त मन्दिरों का निर्माण लगभग समान

व्यय में हो सका। इससे उन मन्दिरों के एक व्यक्ति द्वारा एक काल में नैरन्तर्य से निर्मित होने पर भी प्रकाश पड़ता है। यह उपर्युक्त निर्माण के वेधशाला में होने को स्पष्ट करता है। यह स्थिति मन्दिरों की रूपरेखा को पर्याप्त सीमा तक अभिव्यक्त करती है।

३—मन्दिरों की रूपरेखा को समझने के लिए मस्जिद के उत्कीर्ण लेख में तीसरा संकेत है मन्दिरों की निश्चित संख्या। लेख स्पष्ट कहता है कि उस सीमित क्षेत्र में तोड़े गए मन्दिरों की कुल संख्या सत्ताईस है, न न्यून न अधिक। यह ऐसी संख्या है, जिसे आकस्मिक नहीं कहा जा सकता। आकस्मिक कहे जाने की आशंका उस समय सर्वथा विलीन हो जाती है, जब हम पूर्वोक्त दोनों संकेतों पर गहरी दृष्टि डालते हैं। मन्दिरों का यान्त्रिक रूप और उनके निर्माण में लगभग समान प्रभूत व्यय किसी विशिष्ट आधार पर उनकी नियत संख्या होने की संभावना पर प्रकाश डालता है। जैसे पहले संकेत यहां किसी वेधशाला होने की संभावना को अभिव्यक्त करते हैं, ऐसे ही यह तीसरा संकेत—सत्ताईस मन्दिरों का होना—वेधशाला की संभावना को अधिक स्पष्ट करता है, जहां ज्योतिष सम्बन्धी सत्ताईस नक्षत्रों के विवरण के लिए निर्मित यान्त्रिक शालाओं को सत्ताईस मन्दिरों के रूप में जाना जाता रहा हो। यदि मन्दिर अधिक होते, तो सत्ताईस से अतिरिक्त शेष रहते, यदि न्यून होते, तो तोड़े जाने वाले मन्दिर सत्ताईस कैसे होते? फलतः मस्जिद के माथे पर लगे उत्कीर्ण लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिन सत्ताईस मन्दिरों को तोड़कर उस मलबे से मस्जिद का निर्माण किया गया, वे वेधशाला के रूप में निर्मित विशिष्ट भवन अथवा अपने रूप के निर्माण थे।

परीक्षा—परिणाम अथवा परिस्थिति की छाया में हमें मीनार के निर्माण की परीक्षा करनी चाहिये। मीनार के विषय में पूर्वोक्त तीन प्रश्नों व जिज्ञासाओं को लेकर जब यह कहा जाता है कि मीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने कराया, तब स्वभावतः यह प्रश्न होता है कि उसने इसका निर्माण किस प्रयोजन के लिये कराया होगा अथवा इसके निर्माण में उसका क्या प्रयोजन रहा होगा।

'मजीना' नहीं—कहा जाता है कि मस्जिद के साथ एक ऐसा स्थान बनाया जाता है, जहां नमाज पढ़ाये जाने से पहले उसके ऊपर चढ़कर नमाज पढ़ाने से पहले उसके ऊपर चढ़कर नमाज पढ़ाने वाले मुल्ला द्वारा अजान दी जाती है, जिसका तात्पर्य है—नमाज में उपस्थित होने के लिये सबको सूचित करना। ऐसे स्थान को 'मजीना' कहते हैं। प्रस्तुत मीनार के विषय में लोगों का कहना है कि समीपवर्ती मस्जिद का यह 'मजीना' है। परन्तु परीक्षा करने पर यह निश्चित हो जाता है कि लोगों का वैसा कहना सिर्फ खयाली पुलाव है, नितान्त कल्पनामात्र। कारण, १. संसार में कोई ऐसी मस्जिद नहीं, जिसका मजीना मस्जिद के मुख्य भवन से बाहर हो, २ भवन की बुलन्दी के स्तर के अनुकूल न हो। ३. प्रायः समस्त मस्जिदों में 'मजीना' दो बनाये जाते हैं, न कि एक। ४. मस्जिद बन जाने पर ही 'मजीना' का निर्माण सम्पन्न होता है। ऐसा नहीं होता कि 'मजीना' पहले बन जाये और मस्जिद अधूरी रह जाये, पर इन सब बातों का व्यतिक्रम प्रस्तुत मस्जिद व मीनार में है।

चारों तर्कों का विवरण

दूसरा तर्क महत्वपूर्ण—अजान के लिये चढ़ना तथा आवाज का ऊपर आकाश में हो विलीन न हो जाना।

तीसरा—मस्जिद की बुलन्दी के अनुसार मजीना।

यहां मस्जिद की ऊंचाई अठारह फुट और 'मजीना' की २३६ फुट है। समस्त संसार की मस्जिदों और उनके मजीनाओं में बुलन्दी का यह अनुपात नहीं है। लिहाजा मीनार मस्जिद का मजीना नहीं है। (क्रमशः)

मारिशस में भारतीय संस्कृति......

(पृष्ठ ५ का शेष)

जगत् को आर्थिक सहयोग की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी एक सही दिशा और एक आत्मीय प्रोत्साहन की।

मारिशस की भारतीय संस्कृति को एक भारतीय रिश्ते की जरूरत है, पर वह तभी बन सकता है, जब भारत का ध्यान उसकी ओर हो। राजनीतिक रिश्ते तो टूटते-बनते और बनते-टूटते रहते हैं, भारत के उच्चायोग अगर मित्र देशों से केवल मात्र राजनीतिक रिश्ते कायम रखने के लक्ष्य से काम करेंगे तो उससे कुछ होने का नहीं। मारिशस और भारत का असली सम्बन्ध तो संस्कृति का रहा है, पर राजनीतिक रिश्ते बनाते-बनाते यह सांस्कृतिक रिश्ता आज लड़खड़ाने लगा है।

अब भी अगर भारत अपने उच्चायोग के जरिये मारिशस में भारतीय संस्कृति की ओर ध्यान दे तो रिश्ते के फिर से सशक्त हो जाने में देर नहीं लगेगी। राजनीतिज्ञों के बहुत अधिक आने-जाने से जो संस्कृति सामने आयी, वह भारतीय संस्कृति न होकर अफीमचरस की संस्कृति हो गयी, इस संस्कृति का जन्म दोनों देशों से दूर आम्स्टरडम जैसे शहर में हुआ, जिसे मारिशस के अखबार 'इण्डियन कनेक्शन' कहते हुये थक नहीं रहे।

आज फ्रांस सरकार के फ्रांसीसी संस्कृति से रिश्ता जोड़े हुए देशों में जिन वैज्ञानिक तरीकों से सांस्कृतिक संवाद और सम्मेलन हो रहे हैं, उनसे इन तमाम देशों का वह सांस्कृतिक रिश्ता एक नया आयाम पा रहा है। काश, ऐसी उम्मीद भारत सरकार से भी की जा सकती।

दोनों देशों के बीच कुछ दिनों में फिर से संयुक्त आयोग की बैठक होने वाली है। कहीं ऐसा न हो कि एक बार फिर सारे पत्ते राजनीति के ही होकर रह जायें। औरों को तो सांस्कृतिक साम्राज्य की चिंता है, भारत को कम से कम संस्कृति की सुरक्षा का सवाल तो आ जाये।

नए आसमान की तलाश में पंजाब से पलायन

गुड़गांव, ३ जुलाई। पंजाब में आतंकवाद व हिंसा के ताडव से आतंकित ३० से भी अधिक हिन्दू परिवार गत एक माह के दौरान गुड़गाव पहुंच चुके हैं। इन परिवारों को तलाश है एक नए आसमान की जिसकी छाया में इन्हें दो जून की रोटी मिले तथा वे सर्वथा सुरक्षित रह सकें।

गत दिनों पंजाब केसरी का सवाददाता जब ४-८ मरला में एक माह से डेरा डाले ५ परिवारों के एक दल से मिला तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि 'हम अपनी आन और इज्जत बचाने के लिए अपनी जमीन-जायदाद छोड़कर पंजाब से भागकर यहां आए हैं। हम हर परिस्थिति में गुजर कर लेंगे परन्तु वापस नहीं जायेंगे।'

पिछले दिनों पंजाब से पलायन कर यहां आने वाले हिन्दुओं की संख्या मे तेजी से वृद्धि हुई है। इन परिवारों मे अमृतसर, बटाला, गुरदासपुर से आए लोग हैं जो अपने रिश्तेदारों के यहां अथवा मकान किराये पर लेकर रह रहे हैं। अमृतसर से १२ किलोमीटर दूर बटाला रोड पर स्थित कस्बा चाविण्डा-देवी (धाना कत्थू नंगल) से आए श्री गिरधारी लाल शर्मा (६०) ने बताया कि ३० हजार की हिन्दू-बहुल आबादी वाला प्रमुख व्यापारिक कस्बा वीरान नजर आता है। अधिकतर हिन्दू कस्बा छोड़कर जा चुके हैं। हिन्दुओं की दुकानों पर ताले पड़े हैं। भाजपा के सक्रिय कार्यकर्त्ता गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि सिख आतंकवादी मुख्य रूप से ब्राह्मणों व व्यापारियों को निशाना बना रहे हैं। हिन्दुओ के खिलाफ इश्तहार लगाये जाते हैं तथा व्यापारियों से लेन-देन व आपसी सम्बन्ध तोड़ने के लिए धमकियां दी जाती हैं। सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक घरों से निकलना संभव नहीं। बहू-बेटियों को उठाने की धमकिया दी जाती हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस उग्रवादियों से मिली हुई है तथा हिन्दू युवकों के खिलाफ झूठे मुकद्दमे दर्ज किये जाते हैं। श्री शर्मा ने कहा कि यदि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस न होती तो शायद पंजाब में हिन्दू देखने को भी नही मिलता। स्वयं उनका लड़का एक कुख्यात उग्रवादी की धमकी के कारण ४ दिन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के शिविर में छिपा रहा। फिर जान बचाकर भागा। श्री शर्मा अपनी किरयाना तथा बेकरी की दुकान व मकान को छोडकर दो लडको, बहुओं तथा पोते-पोतियों के साथ यहा टिके हुए हैं।

हरयाणा सरकार से शिकायत

दो बच्चों के पिता अवतारचन्द (३०) ने बताया कि आतंकवादियो के गिरोह दिन-दहाड़े दुकानों को लूटते हैं। परन्तु पुलिस मूक दर्शक बनी रहती है। रात को निकटवर्ती गावों से ट्रालियो में भरकर लोग आते हैं तथा हुड़दंग करते हैं। लाउडस्पीकर पर खुलेआम धमकियां देते हैं। पर पुलिस कुछ नहीं करती। अवतारचन्द, जो व्यवसाय से हलवाई हैं, को शिकायत है कि हरयाणा सरकार इन अभागे हिन्दू परिवारों के लिए कुछ नहीं कर रही।

श्री कीमतीलाल शर्मा (४५) बटाला की चीनी मिल में आपरेटर थे। अपनी पत्नी शारदा तथा ४ बच्चो के साथ यहां आ गये हैं। पत्नी गर्भवती है। एक फैक्टरी में ४०० रुपये की नौकरी मिली है। रहने को मकान की समस्या है। वापस जाने को तैयार नही। कीमती लाल का कहना है कि जब दिल नहीं मिलते तब वापस जाना बेकार है। श्री शर्मा ने देखी है अपनी बस्ती में एक हिन्दू की मौत तथा एक हिन्दू अधिकारी के घर पर उग्रवादियो का हमला। पाकिस्तान से आकर ध्यानपुर महतो मे आकर बसे कीमतीलाल की आंखों के सामने फिर वही पुराना मजर है।

अधिकतर परिवार आतंक तथा दुःख व विवशता मे डूबे हुए हैं। इन परिवारों को बरनाला सरकार से कोई आशा नही। एक वृद्ध ने रुंधे गले से कहा कि हम लाखो की जायदाद छोड़कर यों ही नही आ गये हैं। पुरखों की जमीन को छोड़ने का बड़ा दर्द है हमारे दिल मे। परन्तु हमारे सामने उस उस समय कोई चारा नहीं रह गया जब हमारी गोद मे खेले, हमारे सामने बड़े हुए लड़के ही हमारी बहू-बेटियो को उठाने की धमकियां देने लगे।

इन परिवारों के सामने रोजगार के साथ-साथ आश्रय की समस्या है। नगर मे मकानों के किराये महंगे हैं और इनके पास साधन नही। एक परिवार तो एक बदबूदार कोठरी (८० रुपए प्रतिमाह) में रह रहा है। ज्यादातर परिवारो का सामान भी वहीं रह गया है।

४० हजार लोग पंजाब छोड़ चुके

नई दिल्ली, ३ जुलाई। पंजाब से पलायन कर आये लगभग ४०,००० हिन्दुओ को पुनः वापस भेजे जाने के प्रश्न पर केन्द्र सरकार को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

जानकार सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि केन्द्र सरकार इन लोगो को रेड क्रास से सहायता पहुंचाए जाने पर विचार कर रही है क्योकि ये हिन्दू अन्य सरकारी सहायता कबूल नहीं कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि ये अल्पसख्यक हिन्दू निकटवर्ती राज्यों हिमाचल प्रदेश, हरयाणा, राजस्थान और दिल्ली को पलायन कर चुके हैं।

खैर (अलीगढ़) में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

खैर (अलीगढ़)। एक श्रेष्ठी परिवार सर्वश्री हरप्रसाद महेशचन्द्र आर्य द्वारा २० से २५ जून तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन सानन्द हुआ। २० जून को समारोह का शुभारम्भ आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हंस द्वारा हुआ। इसी अवसर पर सध्या यज्ञ रहस्य पुस्तक का, जो यज्ञ प्रसाद के रूप में वितरित की गई, विमोचन हंस जी ने किया। प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ, मध्याह्नोत्तर भजन और रात्रि को वेदोपदेश होते रहे।

श्री आत्मानन्द विद्यालंकार दिवंगत

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, लाहौर मे अनेक सस्थाओं में अध्यापक रहे, स्वाध्यायशील, अत्यन्त सात्त्विक जीवन के धनी, गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य स्नातक श्री पं० आत्मानन्द विद्यालकार का स्वल्पकालिक बीमारी के पश्चात् ९२ वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया। २१ जून को प्रातः दयानन्द श्मशान घाट, निजामुद्दीन मे वैदिक विधि से उनका अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न हुआ। २३ जून को साय आर्यसमाज डिफेंस कालोनी मे उनका चौथा, शान्तियज्ञ और पगडी की रस्म हुई। अनेक वक्ताओ ने उनके प्रति अपनी श्रद्धाजलि व्यक्त की। 'सार्वदेशिक' की ओर से उनके परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना और दिवगत आत्मा की सद्‌गति की कामना। —सम्पादक

श्री जयदेव जी आर्य का निधन

बम्बई के सुप्रसिद्ध वस्त्र व्यवसायी दानवीर श्री जयदेव जी आर्य (प्रधान, आर्यसमाज चेम्बूर, बम्बई) का दिनांक १७ अप्रैल १९८९ को प्रात. ६ बजे उनके निवास स्थान पर देहान्त हो गया। आपकी आयु ६५ वर्ष की थी। वे अपने पीछे अपनी धर्मपरायण पत्नी, ३ पुत्र एव २ पुत्रियां छोड़ गये हैं। आपको श्रद्धाजलि देनेके निमित्त आर्यसमाज, चेम्बूर एवं आर्यसमाज सान्ताक्रुज, बम्बई में विशाल सभा हुई जिसमें अपार भीड़ थी। सहस्रो नर-नारी अश्रुपूरित देखे गये। श्रद्धांजलि देने वालों में कैप्टन श्री देवरत्न जी, देवव्रत जी शास्त्री, श्री ओंकारनाथ जी, श्री बृजबिहारी लाल जी, प० सत्यकाम जी विद्यालंकार, श्री ईश्वर आडवानी (भूतपूर्व मन्त्री, महाराष्ट्र) श्रीमती सशीला देवी विद्यालकृता, आचार्य सोमदेव जी शास्त्री, डा० सी. डी. पजाबी, प्रधान, कलक्टर कालोनी और पं० रामदत्त जी (गुरुकुल एटा) थे।

इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी ने ५०००) रुपये आर्यसमाज, चेम्बूर तथा ५०००) रु० आर्यसमाज, सान्ताक्रुज को दिये।

प्रवेश सूचना

पश्चिमाञ्चल मे "श्री कन्या गुरुकुल" की प्रतिष्ठापना कर दी गई है, जिसका आगामी शैक्षिक सत्र एक जुलाई से प्रारम्भ हो चुका है। अनुभवी अध्यापिकाओ के सरक्षण में प्राचीन एवं अर्वाचीन विषयों की समन्वित शिक्षा के साथ सैन्य शिक्षा संगीत, पाक, शिल्पकला आदि का यथेष्ट परिज्ञान कराया जाता है। योग्यता सम्पादन के अनन्तर वाराणसी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित मान्य तथा उच्च परीक्षाएं दिलाने का प्रावधान है। अच्छी शिक्षा हेतु शीघ्र पत्र व्यवहार करें। प्रधानाचार्या, श्री कन्या गुरुकुल रुद्रपुर तिलहर (शाहजहांपुर)

आर्य वीर दल की गतिविधियां

हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन २७, २८ सितम्बर को रोहतक में

पलवल। आर्य वीर दल हरयाणा का दसवां प्रान्तीय महासम्मेलन २७, २८ सितम्बर को रोहतक में मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इसमें २००० आर्य वीर पूर्ण गणवेश में उत्साहपूर्वक भाग लेंगे। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वान्, आर्य संन्यासी तथा हजारों आर्य प्रतिनिधि पधारेंगे। सम्मेलन में आर्य वीर क्षात्र शक्ति का प्रदर्शन करते हुए बिना दहेज विवाह का संकल्प लेकर प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर फीरोजपुर झिरका सम्पन्न

फीरोजपुर झिरका। पहाड़ी स्थल "झिर" पर आयोजित सार्वदेशिक आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर १५ से २३ मईतक अत्यन्त प्रभावोत्पादक कार्यक्रमों को प्रस्तुत करता हुआ सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री सत्येन्द्र प्रकाश शास्त्री इस शिविर के संयोजक थे। सर्वश्री भजनलाल आर्य, सत्यपाल आर्य, पद्मचन्द आर्य, सुभाषचन्द्र आर्य, ओम्प्रकाश आर्य, शिवचरण आर्य, नरदेव आर्य, वेदप्रकाश आर्य आदि महानुभावों के अतिरिक्त आर्य स्त्री समाज एवं अनेकानेक आर्य बन्धुओं का शिविर को पूर्ण सहयोग रहा।

शिविर में दीक्षान्त भाषण सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान श्री बालदिवाकरहंस ने दिया। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी मे युवाशक्ति को राष्ट्रभक्त बनने की सलाह दी और कहा, आज विदेशी पड़ोसी राष्ट्र अपनी घातक चालें चल कर हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन करने का घातक षड्यन्त्र रच रहे हैं। पंजाब और कश्मीर की हृदय विदारक मानव संहार की योजनाबद्ध घटनाएं इसके प्रबलतम सबूत हैं। आपने आर्य वीरों को ब्राह्म बल और क्षात्रबल के समन्वय के साथ सेवा धर्म को अपनाने की हार्दिक अपीलकी। आर्य वीरों ने करतल ध्वनि से इसे अंगीकृत करने का संकेत दिया सहभोज के साथ शिविर समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

बिहार में आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

बिहार के सभी आर्यसमाजों से अपील है कि अपने यहां समाज में आर्य वीर दल का संगठन करें। इसके लिए सार्वदेशिक सभा ने बिहार को एक शिक्षक निःशुल्क दिया है, जो बिहार में कई महीनों से कार्य कर रहे हैं। घोड़ा सहन, रक्सौल, नरकटियागंज और बौनाहा आर्यसमाज में आर्य वीर दल की शाखा लगना प्रारम्भ हो गया है। आप अपने यहां भी समाज में शाखा लगाने के लिए तत्पर होकर सहायतार्थ निम्नलिखित पते पर मिलें। शिक्षक भेज दिये जायेंगे।

रामाज्ञा वैरागी, संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, बिहार, वैरागी कुटीर, कलम बाग चौक, मुजफ्फरपुर (बिहार)।

न्यूयार्क में वेद सम्मेलन

(पृष्ठ ६ का शेष)

किया। आर्यसमाज के कार्य का यह अच्छा क्षेत्र है। न्यूयार्क को केन्द्र बनाकर सर्वत्र प्रचार किया जाना चाहिए। लास एंजलेस में आर्यसमाज है उसका मन्दिर भी है। सभी प्रदेशों में आर्यजन मौजूद हैं। कई स्थानों पर आर्यसमाजों का अधिवेशन भी घर पर लगाते हैं। न्यू जर्सी में भी आर्य परिवार हैं न्यूयार्क में तो आर्यजन हैं ही। गायना के आर्यजन वहां आकर आबाद हैं। वे उत्साह से कार्य करते हैं। न्यूयार्क समाज में पंजाब के लोग तो हैं ही, वर्तमान अधिकारी भी उन्हीं में से हैं। न्यूयार्क समाज के कर्मठ और उत्साही मन्त्री श्री धर्मजित् जी और उनके बच्चों और लड़कियों का परिवार ही एक आर्यसमाज बन सकता है। सभी वहां रहते हैं और समाज में कार्य करते हैं। गायना के लोगों में आर्यसमाज के वर्तमान प्रधान बड़े ही भद्र पुरुष और आर्य हैं। उनके पिता ने आर्यसमाज का गायना मे स्थापना आदि का सराहनीय कार्य किया था। डा० सतीश ब्रह्मचारी बहुत ही उत्साही विद्वान् हैं। वे भारत से ही पढ़कर गए हैं। बहुत अच्छे युवक कार्यकर्त्ता हैं। श्री प० रामलाल जी, श्री पं० हरप्रसाद जी आदि सभी से मिलकर बात हुई। न्यूयार्क समाज के प्रधान, भूतपूर्व कोषाध्यक्ष जी आदि से भी वार्ता की गई।

निम्नलिखित बातों पर सहमति करके पालन करने का निश्चय किया गया। मुझसे लोगों ने आदेश चाहा था, अतः मैंने ये आदेश दिये और उनका पालन करने को कहा—

(१) गायना के आर्यसामाजिक जन और न्यूयार्क के वर्तमान आर्यजन सब मिलकर न्यूयार्क आर्यसमाज मे ही रहेंगे। दोनो के अधिवेशन एक साथ ही होंगे, पृथक्-पृथक् नही। सब न्यूयार्क समाज के ही सदस्य रहेंगे।

(२) आर्यसमाज मे अमेरिकन और दूसरे लोगों को भी आर्यसमाज का सदस्य बनाया जाये और आर्यसमाज मे लिया जाये। पठित वर्ग से सम्पर्क किया जाये। इससे आर्यसमाज मजबूत होगा। इस कार्य को वेग दिया जाये।

(३) संस्कृत, हिन्दी, धर्मशिक्षा आदि के लिये कक्षायें चलाई जायें। इनमें से कुछ कक्षायें डा० ब्रह्मचारी सतीश ने चालू भी कर दी हैं।

(४) आर्यसमाजों को एक संगठन में लाकर उच्च संगठन बनाने का भी प्रयत्न किया जाये।

(५) यू० एस० ए० में जहां-जहां आर्यजन हैं उनसे संपर्क रखा जाये।

श्री पं० धर्मजित् जी जिज्ञासु ने मुझसे एक विशेष योजना पर बात की और मैंने उसकी स्वीकृति भी दी। वह एक ऐसे संस्थान की रचना का है, जहां से वेदों का सुन्दर अनुवाद अंग्रेजी भाषा में विस्तार से किया जावे। इस विषय में प्रयत्न किया जा रहा है। यह कार्य चालू हो जावे तो विशेष महत्त्व का होगा।

स्वामी आनन्दबोध जी के नाम एक भावपूर्ण पत्र

महामान्य स्वामी आनन्दबोध जी के पावन सन्यस्त पद को अविरल प्रणाम।

भाग्यशाली हैं वे सज्जन जिन्होंने स्वामी सर्वानन्द जी के श्रीमुख से उच्चारित आपकी सन्यास दीक्षा के पुनीत शब्दों को श्रवण किया और भाव-विभोर कर देने वाले उस अनुपम दृश्य का प्रत्यक्षावलोकन कर अपने नेत्रों को सार्थक किया। हमने तो समाचारपत्रों में प्रकाशित आपकी सन्यास दीक्षा के नयनाभिराम छायाचित्र एवं शुभ समाचार का अवलोकन कर अपने मन-नयनों को पावन किया।

सन्त श्रेष्ठ! आपको जीवन के इस उत्कर्ष पर हार्दिक बधाइयाँ। आर्य-जगत् को समर्पित आपके यशस्वी जीवन का सन्यास के सोपान पर आरोहण अनुकरणीय है। इस अवसर पर वैदिक धर्म की सेवा, हिन्दुत्व के उत्थान तथा राष्ट्रीय ऐक्य सम्बन्धी जो उद्गार आपने प्रकट किये, वे आपके अन्तःस्थ शुभ सकल्पों की अभिव्यक्ति हैं।

परमपिता परमात्मा आपको अपने सत्सकल्पों के क्रियान्वयन का सामर्थ्य प्रदान कर आपके यश सौरभ का दिग्दिगन्त मे विकिरण करें तथा आप "पश्येम शरद शतम्" से अभिव्यक्त जीवन के वेदोक्त आदर्श को मूर्त रूप प्रदान कर शतायु हो।

—अर्जुन देव शर्मा
प्रधानाचार्य, ज्वालापुर इन्टर कालेज, ज्वालापुर

बोकाजान (असम) स्थित यज्ञशाला। इसका निर्माण आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली की सहायता से पूर्ण हुआ।

साहित्य समीक्षा

संसार में अल्पसंख्यकों की समस्याएं और उनका निदान

आज हमारे देश मे अल्पसख्यक सम्प्रदाय द्वारा अनेक प्रकार की जटिल समस्याएं खडी की जा रही हैं। जनता और सरकार दोनो परेशान हैं।

ऐसा लगता है कि यदि इस महामारी का इलाज न किया गया तो देश की अखण्डता को खतरा होने की सम्भावना है।

भूतपूर्व सासद श्री निरजन वर्मा ने गहरी खोज के अनन्तर अल्पसंख्यक समस्या को ससार के अन्य राष्ट्रो ने जिस योग्यता से हल किया, उसकी प्रामाणिक झलक इस महान् कृति मे मिलेगी। विशेष कर रूस और टर्की तथा अन्य देशो में अल्पसख्यको ने जो ऊधम मचा रखा था उसे किस प्रकार शांत किया गया। विद्वान् लेखक ने ससार भर के देशो की स्थिति पर खोज करके देश की भारी सेवा की है। देश की राजनैतिक एव धार्मिक विचारधारा मे जन सामान्य को इस महान् ग्रन्थ से मार्गदर्शन मिलेगा।

श्री निरंजन वर्मा देशवासियों के धन्यवाद के पात्र हैं।

मूल्य ४५ रुपये

मिलने का पता—

राजधानी ग्रन्थागार

१६ H-IV लाजपत नगर, नई दिल्ली-५१०००२४

स्व० ललितादेवी, जिनकी स्मृति मे शुद्धि सहायक निधि मध्ये खड्गपुर (जिला मुगेर) निवासी उनके पुत्र श्री कृष्णप्रसाद केसरी लोहा विक्रेता ने दो हजार रुपये दान दिये।

हिन्दू महासभा में शुद्धि एवं विवाह

नई दिल्ली। अखिल भारत हिन्दू महासभा के केन्द्रीय कार्यालय में दिनाक २५ जून बुधवार को कु० कविता सरवरिया ईसाई युवती को हिन्दू धर्म मे प्रविष्ट कराकर श्री कुसुम कुमार झा जी के साथ वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ।

शुद्धिकरण एवं विवाह का पौरोहित्य प०सुन्दरलाल ने किया। केन्द्रीय सचिव डा० सुरेन्द्र सिंह लोढा ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। इस शुद्धिकरण एवं विवाह समारोह मे वर-वधू के परिवारजनो एव मित्रो के अलावा असम प्रदेश हिन्दू सभा के अध्यक्ष श्री भैया जी, श्री के० पी० लूयरा; श्री अशोक गुप्त एव श्री ओम्प्रकाश दानी आदि भी उपस्थित थे।

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्यसमाज उत्तरकाशी, प्रधान-श्री सोहनलाल शाह, मन्त्री श्री सत्य-देव गुप्त और कोषाध्यक्ष-श्री सुमन रावत।

—आर्यसमाज सिलीगुड़ी (जिला दार्जीलिंग)—प्रधान-श्री रतिराम शर्मा, मन्त्री-श्री सर्वेश्वर झा और कोषाध्यक्ष-श्री सुभाषचन्द्र नकीपुरिया।

—आर्यसमाज सहतवार (बलिया)—प्रधान-श्री केदारप्रसाद, मन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री शिवजी शर्मा।

मेरी गुजरात यात्रा

(पृष्ठ १ का शेष)

वन विकास केन्द्र लगभग तीस लाख रुपए की लागत से स्थापित किया गया है। इस गुरुकुल में दस ब्रह्मचारी छहों दर्शनशास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन ब्रह्मचारियों की योग्यता बी. ए., एम. ए के समकक्ष है। मैंने इन ब्रह्मचारियो से वार्तालाप किया। यह देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ये ब्रह्मचारी आर्ष प्रणाली से विद्याध्ययन कर रहे हैं। सारे आर्यजगत् के लिए यह एक शुभ समाचार है कि इस निर्जन वन में एक गुरुकुल स्थापित हुआ है। गुरुकुल के निरीक्षण के समय आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री मंगलसेन चोपडा, मन्त्री श्री रतनलाल अग्रवाल और अनेक अन्य सज्जन भी हमारे साथ थे।

अगले दिन प्रात.काल छह बजे से सात बजे तक मैं अहमदाबाद की सिन्धी कालोनी मे आयोजित एक हवन-यज्ञ और सत्संग मे सम्मिलित हुआ। वहा अनेक लोगो ने मास-मदिरा त्याग और सात्त्विक जीवन बिताने का व्रत लिया। यह सारा कार्यक्रम आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री कमलेश की देख-रेख मे हुआ। उनका प्रवचन प्रभावशाली था।

वहा से हम आर्यसमाज काकरिया पहुँचे। उस दिन उनका वार्षिक अधिवेशन और चुनाव था। चुनाव मे श्री रतनलाल जी प्रधान चुने गये। इसके बाद मैंने आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सग, पारिवारिक सत्संग और हवन-यज्ञ मे भाग लिया। सभी स्थानो पर मेरा आत्मीयतापूर्ण और हार्दिक स्वागत हुआ। इसके बाद आर्यनगर कालोनी के मन्दिर में, जहा हरिजन रहते है, मेरा स्वागत हुआ। एक सार्वजनिक सभा मे मैंने बाबू जगजीवन राम के निधन पर शोक प्रकट किया। हरिजन बन्धुओ मे आर्यवीर दल और आर्यवीर संघ अपना कार्यक्रम चलाते है। वहा हवन-यज्ञ का आयोजन था। विराट् सभा हुई। लाउड स्पीकर की भी व्यवस्था थी।

सम्वाददाता सम्मेलन

इसके बाद मैंने आर्यसमाज काकरिया मे एक सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया। वहा पजाब पर चर्चा हुई। मैने सवाददाताओ के प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर दिये।

अहमदाबाद मे आर्यसमाज के मिशन के लिए जनता में उत्साह है। अनेक सज्जनो ने सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित १२-१३ जुलाई की सभाओं के सम्बन्ध मे उत्सुकता प्रकट की और उनमें भाग लेने का वचन दिया।

इस व्यस्त कार्यक्रम से थकावट स्वाभाविक थी। रात को मैं गहरी नीद सोया।

सात जुलाई को प्रात.काल ७-५५ के विमान से मैं ९ बजे दिल्ली लौट आया, जहा कार्यभार मेरी प्रतीक्षा कर रहा था।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (जिला मथुरा) में प्रवेश प्रारंभ

समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि वह अपने बच्चों का प्रवेश शीघ्र कराकर लाभान्वित हो।

पढ़ाई की सुचारु व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य सहवर्ती क्रियाकलापों की भी व्यवस्था है।

—मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन (मथुरा) को आर्थिक सहायता की अपील

देश की सभी आर्यसमाजों व समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने व इसे एक आदर्श संस्था का रूप देने के लिए अधिक से अधिक धन का सहयोग दें। गुरुकुल के भवनों की मरम्मत व नए भवनों के निर्माण के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन आर्यजगत् की प्राचीन व ख्याति प्राप्त संस्थाओं मे से एक है। कृपया धन गुरुकुल विश्वविद्यालय के पते पर भेजे।

—सन्तोष कुमारी, कुलपति

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ दयान दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मल्य २०) एक प्रति ५० पमे
वर्ष २१ अङ्क ३२] श्रवण कृ० ६ स० २०४३ रविवार २७ जुलाई १९८६

पंजाब के विस्थापितों को हर सुविधा दी जायेगी

प्रधानमन्त्री का आश्वासन : पाकिस्तान से लगी सीमाओं को सील करने के बारे में फैसला शीघ्र

सार्वदेशिक सभा के शिष्टमण्डल से २५ मिनट की मुलाकात

(हमारे कार्यालय सवाददाता से)

नई दिल्ली १७ जुलाई। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने आज सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के एक शिष्टमण्डल को आश्वस्त किया कि पजाब से पलायन करके आये विस्थापितो को वे सब सुविधाय दी जायगी जो १९८४ के दगों मे पीडित सिख विस्थापितो को दी गई थी।

प्रधानमन्त्री ने शिष्टमण्डल को यह जानकारी भी दी कि सेना पाकिस्तान की सीमाओ को सील करने के लिए कितने क्षत्र को अपने हाथ मे ले इस बारे मे भारत सरकार शीघ्र फसला कर रही है।

आज प्रात ९ बजे आयसमाज का एक शिष्टमण्डल २५ मिनट के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से मिला। सावदेशिक सभा के अध्यक्ष श्री स्वामी आन द बोध सरस्वती के नेतृत्व मे गठित इस शिष्टमण्डल में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे—प्रो० शेरसिह श्री सूर्यदेव प० राजगुरु शमा श्री जगदीशप्रसाद वैदिक प० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री बृजमोहन और चोधरी लक्ष्मीचन्द।

शिष्टमण्डल ने एक ज्ञापन प्रधानम त्री को दिया। मुलाकात मे निम्नलिखित मुद्दे उठाये गए—

१—पजाब से हिन्दुओ का पलायन तुरन्त रोका जावे। जो लोग देहात से उखड कर आते हैं उ हे पजाब से शहरो मे ही भारत सरकार द्वारा स्थापित शिविरों मे रखने का प्रब ध किया जाये तथा उन विस्थापितों का वही सुविधाए दी जाय जो १९८४ के दगो मे पीडित सिख विस्थापितो को दी गई थी।

२—अमृतसर गुरुदासपुर और फीरोजपुर जिलो की सीमा से लगे १५ मील तक के क्षत्र को सेना के हवाले किया जाये ताकि पाकिस्तान से लगी सीमाओ को प्रभावपूण रूप से सील किया जा सके।

३ पजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये जिससे अल्पसख्यको मे विश्वास पदा हो सके त कि वे पलायन न कर तथा उग्र वादियो का सफाया किया जा सके।

४—स्वामी आनन्दबोध जी ने मिजोरम समझौते के सम्बन्ध मे फलाई जा रही अनेक भ्रान्तियो की ओर प्रधामन्त्री का ध्यान आकृष्ट किया और उनके निराकरण पर जोर दिया। प्रधानमन्त्री जी ने ध्यान से सब बात सुनकर कहा—

(क) पजाब से पलायन करके आये विस्थ पितो का वे सब सुविधाए दी जायगी जो १९८४ मे दगा पीडित सिख विस्थापितों को दी गई थी।

(ख) पाकिस्तान की सीमाओ को सील करने के लिए कितने क्षत्र को सेना अपने हाथ मे ले इस बारे मे भारत सरकार शीघ्र फसला कर रही है

(ग) भारत सरकार बरनाला सरकार को सक्रिय ही नही कर रही बल्कि उसे सब प्रकार की सहायता दे रही है ताकि हि दुओ का पलायन रोका जा सके और उग्रवादियो का सफाया किया जा सके।

(घ मिजोरम के बारे मे फलाई जा रही सब भ्र ि तया निराधार हैं। वहा कोई विशेष दर्जा या विशेष प्रावधान किए जाने की बात नही और सब कुछ सविधान के अ तगत ही किया जा रहा है।

(ङ) हरयाणा को रावी व्यास के पानी का उचित हिस्सा मिले इसके लिये भारत सरकार सब आवश्यक कदम उठा रही है।

बरनाला को हटाने के लिए अनशन

आयसमाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर मे आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान प्रो०नन्दकिशोर जी ने एक सप्ताहके लिए अनशन प्रारम्भ कर दिया है। प्रोफसर साहब से आय जगत भली भाति परिचितहै। प्रो० नन्दकिशोर जी के दिल मे हि दुत्व के प्रति असीम लगन एव उत्साह है। उनकी माग है कि बरनाला सरकार को तुर त अपदस्थ किया जाये पजाब से पलायन कर रहे हिन्दुओ को रोका जाये तथा उनकी जान माल की पूरी सुरक्षा की व्यवस्था की जाये। उग्रवादियो से शक्ति से निबटा जाये।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आन दबोध सरस्वती जी की ओर से प्रो० नन्द किशार जी को पत्र द्वारा आशी र्वाद भेजा गया है।

सम्पादक— सच्चिदानन्द शास्त्री

आचार्य उदयवीर शास्त्री सम्मानित

२१ हजार रुपये के पुरस्कार के साथ अनेक उपहार भेंट

बम्बई। २६ जून की वह चिरस्मरणीय सन्ध्या। उस दिन वयोवृद्ध और विद्यावृद्ध आचार्य उदयवीर जी को २१ हजार रुपये के वेद-वेदांग पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए एक ऐतिहासिक समारोह का आयोजन किया गया। इस आयोजन के सूत्रधार थे आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य।

सभापति का आसन उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री हंसराज खन्ना ने ग्रहण किया।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने आयोजन की भूमिका स्पष्ट करते हुए कहा कि हमने इस पुरस्कार के लिए तीन लाख रुपये की स्थिर निधि एकत्र करने की योजना बनाई थी। इसमे से पौने तीन लाख रुपये जमा हो चुके हैं। इस राशि के ब्याज से २१ हजार रुपये के वेद-वेदांग पुरस्कार के अतिरिक्त अगले वर्ष से ग्यारह हजार रुपये का एक अन्य पुरस्कार भी उपदेशकों को दिया जायेगा।

इस अवसर पर श्री उदयवीर शास्त्री को अभिनन्दनपत्र भी भेंट किया गया, जो कैप्टन देवरत्न आर्य ने पढ़ा। अभिनन्दनपत्र पढ़े जाने के बाद आर्य विद्या मन्दिर सोसायटी के मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र मल्होत्रा ने शाल ओढ़ा कर शास्त्री जी का सम्मान किया। आर्यसमाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के मन्त्री महाशय चिमनलाल ने चन्दन की माला से शास्त्री जी का स्वागत किया। उनके बाद बम्बई की लगभग २५ आर्यसमाजों और आर्य संस्थाओं के प्रधानों और मन्त्रियों ने शास्त्री जी को चन्दन की मालाओं से लाद दिया। शास्त्री जी ने इस सम्मान के लिए आभार प्रकट करते हुए कहा कि इस सम्मान ने मेरे सारे जीवन की तपस्या को सफल कर दिया है।

समारोह के मुख्य अतिथि सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास ने शास्त्री जी के प्रति शुभ कामना प्रकट करते हुए कहा कि शास्त्री जी शतायु ही नहीं, उससे भी अधिक आयु प्राप्त कर वैदिक साहित्य का भण्डार भरते रहें।

श्रीमती देवेन्द्र कपूर ने श्रीमती शिवराजवती आर्य को चन्दन की माला पहनाकर उनका सम्मान किया। शिवराजवती जी ने पुरस्कार की स्थिर निधि के लिए सत्तर हजार रुपये की राशि एकत्र की थी।

इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन श्री हंसराज खन्ना ने किया।

समारोह में अनेक गण्यमान्य नागरिक और प्रतिष्ठित विद्वान् उपस्थित थे। समारोह की समाप्ति प्रीतिभोज के साथ हुई।

पुरस्कृत विद्वान् का संक्षिप्त परिचय

आचार्य उदयवीर शास्त्री का जन्म ६ जनवरी १८९४ को बनैल (थाना पहासू, जिला बुलन्दशहर) में हुआ। सन् १९२१ में उनका विवाह श्रीमती विद्या कुमारी के साथ हुआ। दर्शन शास्त्र आपका प्रिय विषय है।

आज से ८२ वर्ष पूर्व आपका जो अध्ययन क्रम प्रारम्भ हुआ था, वह आज तक चल रहा है। आपको मिली उपाधियों और पदवियों की सूची बहुत लम्बी है। आप अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, नेशनल कालेज लाहौर, ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर, ओरियंटल कालेज जालन्धर आदि में अध्यापक रह चुके हैं। स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के गुरु और आश्रयदाता रहे हैं। विरजानन्द वैदिक संस्थान, गाजियाबाद में वर्षों शोधकार्य करते रहे हैं। आजकल अजमेर में अपनी पुत्री के पास निवास करते हैं।

साहित्य समीक्षा

निजाम की जेल में

लेखक—क्षितीश वेदालंकार; प्रकाशक—दि वर्ल्ड पब्लिकेशन्स, ८०७/९५, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-११००१९; पृष्ठ संख्या १८६; मूल्य बीस रुपये।

क्षितीश जी ने छात्रावस्था में एक पुस्तिका लिखी थी—'आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति'। प्रस्तुत पुस्तक उसी का संवर्धित संस्करण है। 'सार्वदेशिक' के पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि सन् १९३८-३९ में आर्यसमाज ने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए रियासत हैदराबाद में सत्याग्रह किया था, जिसमें २८ हजार सत्याग्रही जेल गये। सत्याग्रह से पहले और सत्याग्रह के बाद कुल मिला कर ३६ व्यक्तियों को तो धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राण ही देने पड़े।

अब जब भारत सरकार ने इन सत्याग्रहियों को पेंशन देकर सम्मानित करने का फैसला किया है, सारा इतिहास पुनः प्रकाश में आ रहा है। क्षितीश जी ने 'आर्य जगत्' में, जिसके वे सम्पादक हैं, एक लेखमाला लिखी। जिन दिनों यह लेखमाला आर्य जगत् में प्रकाशित हो रही थी, इसकी अगली किश्त की बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा की जाती थी और पिछली किश्त चर्चित रहती थी। प्रस्तुत पुस्तक में वह पूरी लेखमाला तो है ही, और भी बहुत-कुछ है। इसी से हम पुस्तक की उपयोगिता और रोचकता का अनुमान लगा सकते हैं। श्रेष्ठ लेखन की कसौटी यह है कि पाठक उसमें बह जाये—डूब जाये। इस कसौटी पर यह पुस्तक खरी उतरती है।

किसी भी सच्चे सम्पादक को दुनियां भर की जानकारी रखनी होती है। दैनिक हिन्दुस्तान के सेवा निवृत्त वरिष्ठ सहायक सम्पादक होने के नाते क्षितीश जी को अनेक अल्पज्ञात घटनाओं की जानकारी रहती है। उनका परिचय क्षेत्र भी विशाल है। घटनाओं की जानकारी में वे उससे भी सहायता लेते हैं। परिणाम यह है कि प्रस्तुत पुस्तक अनेक चित्ताकर्षक घटनाओं से परिपूर्ण है। केवल एक उदाहरण पर्याप्त होगा—"महात्मा गांधी सन् १९१४ के विश्व युद्ध में अंग्रेजों के साथ थे। फौज में भर्ती होने के लिए स्वयंसेवक तैयार करने से भी नहीं चूके थे। उन्होंने उस समय अंग्रेजों को सलाह दी थी कि वे भारत की हकूमत हैदराबाद के निजाम को सौंप जायें और पूरे मन और पूरी शक्ति से अंग्रेजों से लड़ें एवं जब युद्ध में विजयी होकर आयें तो पुनः भारत की हकूमत निजाम से ले लें, क्योंकि निजाम हैदराबाद उनका ऐसा विश्वस्त साथी है कि वह कभी उन्हें धोखा नहीं देगा। महात्मा गांधी के इस कथन पर वीर सावरकर ने तुनक कर कहा था कि अंग्रेज भारत की हकूमत निजाम को सौंप कर क्यों जायें, नेपाल के हिन्दू नरेश को सौंपकर क्यों न जायें? वह भी तो अंग्रेजों का उतना ही विश्वसनीय साथी है।"

क्षितीश जी ने यह घटना विचार पद्धति का अन्तर स्पष्ट करने के लिए दी है। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी अनेक घटनायें हैं, जो पुस्तक को पठनीय बना देती हैं। स्थान की कमी इस बात की अनुमति नहीं देती कि हम जेल जीवन की घटनायें देकर बतायें कि पुस्तक की विषय-वस्तु कितनी हृदयग्राही है।

यह पुस्तक अन्य स्थानों के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तक विभाग से भी प्राप्य है।

—सत्यपाल शास्त्री

पंजाबसे हिंदुओं का पलायन तुरन्त रोका जाये

चंडीगढ़ केन्द्र शासित क्षेत्र ही रहने दिया जाए

सरकार दमदमी टकसाल व सिख छात्र संघ से बातचीत न करे : प्रधानमन्त्री को सार्वदेशिक सभा का ज्ञापन

१७ जुलाई को प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मुलाकात के समय सार्वदेशिक सभा के शिष्टमंडल ने उन्हें जो ज्ञापन दिया, उसमें मांग की गई है कि पंजाब से हिन्दुओं का पलायन तुरन्त रोका जाए, चंडीगढ़ केन्द्र शासित क्षेत्र ही रहने दिया जाये और सरकार दमदमी टकसाल व सिख छात्र संघ से बातचीत न करे।

ज्ञापन अविकल रूप में नीचे दिया जा रहा है —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित देश के सभी क्षेत्रों के आर्य-समाजी नेताओं का एक सद्भावना मण्डल कुछ समय पूर्व पंजाब के दौरे पर गया था, जिसका उद्देश्य (१) पंजाब की स्थिति का अध्ययन करना और (२) उन सम्भावनाओं का पता लगाना था जिनके द्वारा उस राज्य में रहने वाले सभी वर्गों ने एक बार फिर भाईचारे की भावना पैदा कर वहां पुनः सामान्य स्थिति पैदा की जा सके।

अपने दौरे से लौटने पर इस सद्भावना मण्डल ने सार्वदेशिक सभा को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिस पर सभा ने गम्भीरतापूर्वक विस्तार से विचार किया। परिणामस्वरूप पंजाब समस्या के बारे में सभा जिस निर्णय पर पहुंची है, उसे इस ज्ञापन द्वारा आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

बरनाला सरकार

जब बरनाला मन्त्रिमंडल का गठन हुआ था, तब पंजाब के हिन्दुओं ने भी अकाली पार्टी को चुनाव के समय अपना समर्थन दिया था और आशा की थी कि पंजाब के सभी निवासियों के साथ चाहे वे किसी जाति या धर्म के मानने वाले हों, समान व्यवहार किया जायेगा। किन्तु दुःख की बात है कि यह आशा पूरी न हुई।

श्री बरनाला ने कार्य करने का अपना अलग ही ढंग निकाला है, जिस पर ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, तभी उनकी कार्य प्रणाली के पीछे छिपे उनके असली उद्देश्य को समझा जा सकता है।

इस समय पंजाब में जो सरकारी तन्त्र काम कर रहा है, उसमें सिखों की संख्या बहुत अधिक है। जो उग्रवादी पहले गिरफ्तार किये गये थे, उन्हें बरनाला मन्त्रिमंडल ने न केवल जेल से मुक्त कर दिया, अपितु उन्हें पुलिस तथा अन्य प्रमुख सरकारी विभागों में नियुक्त भी किया

बरनाला सरकार प्रकारान्तर से "पंथ की सरकार" बन गई है, जो सिख धर्मियों के आदेशानुसार केवल सिखों के हितों के लिए कार्य कर रही है। इससे एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी गई है, जिसमें पंजाब का हिन्दू यह सोचने पर विवश है कि अब वहां उसके लिए कोई स्थान नहीं और उसे अपने जीवन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना घर-द्वार छोड़कर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर चले जाना चाहिए। हिन्दुओं का पंजाब से पलायन शुरू हो चुका है, लेकिन अब तक बरनाला सरकार ने उसे रोकने के लिए कोई प्रभावपूर्ण कदम नहीं उठाया और न ही उन्हें पंजाब में सम्मानपूर्वक अपना जीवन यापन करने का आश्वासन दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दृष्टि में बरनाला सरकार ने न केवल भारतीय संविधान की मूल भावना की उपेक्षा की है, बल्कि वह हिन्दुओं के सामूहिक नरसंहार को रोकने में भी असफल रही है। हमारे पास यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त कारण हैं कि पंजाब सरकार जान-बूझकर इस प्रकार के कार्य कर रही है, जिससे धीरे-धीरे वहां खालिस्तान का स्वतः निर्माण हो जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आपसे मांग करती है कि बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके पंजाब को खालिस्तान बनने से रोका जाये और वहां हिन्दुओं का नरसंहार बन्द किया जाये।

वास्तव में यह बहुत दुःख की बात है कि देश में अन्यत्र रहने वाले अन्य अल्पसंख्यक वर्गों को तो विशेष रूप से संरक्षण दिया जाता है लेकिन पंजाब के हिन्दुओं के साथ, जो वहां अल्पसंख्यक हैं, जानवरों से भी बुरा व्यवहार किया जाता है। जहां वे कम संख्या में हैं, वहां तो वे कष्ट भोग ही रहे हैं, लेकिन जिन स्थानों में उनकी संख्या अधिक है, वहां भी उनकी दशा अच्छी नहीं है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अब तक यह नहीं समझ सकी कि ऐसे सिखों को, जिनका अपराधी रिकार्ड है, कानून तोड़ने पर भी गिरफ्तार क्यों नहीं किया जाता? जबकि हिन्दुओं को केवल अपनी सुरक्षा के लिए शिव सेना जैसे संगठन बनाने पर गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता है। इस प्रकार की असंगत परिस्थितियों का तुरन्त अन्त होना चाहिए।

पंजाब समस्या की गम्भीरता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह दृढ़ विश्वास है कि खालिस्तान एक संगठित शक्ति बन चुका है और कुछ विदेशी ताकतें हमारे देश को विघटित करने के लिए उसका उपयोग कर रही हैं। हमारे जैसी सामाजिक और धार्मिक संस्था की अपेक्षा सरकार के पास तो इस बात के प्रबलतर प्रमाण होने चाहिए कि खालिस्तान की मांग के पीछे किन-किन विदेशी शक्तियों का षड्यन्त्र काम कर रहा है। यह मानना सत्य नहीं है कि कुछ आतंकवादियों को समाप्त कर देने मात्र से खालिस्तान का आन्दोलन असफल हो जायेगा। इसकी जड़ें विदेशों में हैं और तथाकथित अकाली एवं अन्य शक्तियां इस आंदोलन को समाप्त होते देखना नहीं चाहती।

पंजाब की समस्या पाकिस्तानियों की सहायता से केवल खालिस्तान बनाने की समस्या तक सीमित नहीं, किन्तु वहां की जनता और भारत सरकार के सामने एक बहुत गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र उपस्थित है, जिसका एकमात्र उद्देश्य हमारे देश को खंडित करना और उनमें यह भावना पैदा करना है कि वे एक पृथक् कौम हैं और उन्हें एक 'अलग' राज्य की मांग करने का अधिकार है। परिस्थिति वास्तव में बहुत गम्भीर है। इसलिए सभा केन्द्र से अनुरोध करती है कि इस पर वह सही दृष्टिकोण से विचार करे और

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पंजाब जल रहा है। उत्पीड़ित आर्य-हिन्दू जनता पंजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर सुरक्षा हेतु पहुंच रही है। आर्यसमाजों व सनातन धर्म सभाओं से निवेदन है कि पंजाब से आई पीड़ित हिन्दू जनता को मन्दिरों, स्कूलों में ठहराकर उन्हें पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस संकटकालीन स्थिति में तन, मन, धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-२

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

तुरन्त समुचित कार्रवाई करे। इस विषय में सभा निम्नलिखित मांगें केन्द्रीय सरकार के सामने प्रस्तुत करती है—

(१) बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके संविधान की रक्षा की जाये। बादल ने तो पुस्तक रूप में भारतीय संविधान को जलाया था, लेकिन बरनाला उसकी मूल भावना को ही समाप्त कर रहे हैं।

(२) पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दृष्टि में न तो बरनाला, न बादल और न कोई अन्य पार्टी पंजाब विधान सभा में बहुमत प्राप्त करने में समर्थ है। वर्तमान परिस्थिति में फिर से चुनाव कराना भी खतरे से खाली नहीं। सभा का मत है कि राष्ट्रपति शासन कम से कम ५ वर्ष के लिए लागू किया जाय। इसके लिए संविधान में आवश्यक संशोधन किया जा सकता है।

(३) पंजाब के तीनों सीमावर्ती जिले—अमृतसर, गुरुदासपुर और फीरोजपुर तुरन्त सेना को सौंप दिए जाएं। यह न केवल हमारे पड़ौसी देश की अमैत्रीपूर्ण गतिविधियों को देखते हुए आवश्यक है, बल्कि इसलिए भी आवश्यक है कि भारत विरोधी अन्य विदेशी शक्तियां भी हमारे देश के खिलाफ इसी क्षेत्र से कार्य कर रही हैं।

(४) पंजाब और कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों में भूतपूर्व (सेवा निवृत्त) सैनिक परिवारों को बसाया जाना चाहिए, जिससे वहां के हिन्दुओं तथा देश की सीमाओं की सुरक्षा की जा सके।

(५) पंजाब के उन शहरी क्षेत्रों में जहां हिन्दू अधिक संख्या में हों, शिविर लगाकर अन्य उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में आने वाले हिन्दुओं को रखा जाये, जिससे पंजाब के हिन्दू पंजाब में ही रहें और उन्हें अन्य राज्यों में न भागना पड़े। वहां उनकी सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध किये जायें।

यह सारा कार्य केन्द्रीय सरकार अपने हाथ मे ले, और जो हिन्दू पंजाब छोड़कर अन्य प्रान्तो में चले गये हैं, उन्हें वही सुविधाएं प्रदान की जायें जो बरनाला सरकार पंजाब में आने वाले सिखों को प्रदान कर रही है और भारत के अन्य राज्यों की सरकारें भी १९८४ के दंगों के तथाकथित सिख पीड़ितों को दे रही है।

(६) चण्डीगढ़ को केन्द्रशासित क्षेत्र ही रहने दिया जाय। सभा की दृष्टि में यह निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है—

(क) चण्डीगढ़ का निर्माण संयुक्त पंजाब की राजधानी के रूप में हुआ था। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह न तो पंजाब और न हरयाणा की राजधानी के रूप में उपयुक्त रहेगा।

(ख) चण्डीगढ़ के अधिकतर निवासी गैर-सिख नागरिक हैं, जो पंजाब में नहीं जाना चाहते। उनके दृष्टिकोण को नजरअन्दाज नही करना चाहिए।

(७) भारत सरकार को दमदमी टकसाल और आल इंडिया सिख स्टुडैण्ट्स फैडरेशन के नेताओं से किसी भी रूप में वार्तालाप आरम्भ करने के विचार का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए। इस प्रस्ताव को उन लोगों ने हवा में उछाला है, जो देशद्रोहियों के साथ छिपे रूप में मिले हुए हैं और जो राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करते हैं, जिन्होंने भारतीय संविधान की प्रतियों को जलाया है और जो खुले तौर पर विद्रोह का झण्डा उठाए खड़े हैं। दमदमी टकसाल के नेताओं ने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की है कि वे पृथक् प्रधान, पृथक् संविधान और पृथक् ध्वज चाहते हैं। उन्हें जब तक यह प्राप्त नहीं होगा, वे चैन से नहीं बैठेंगे।

(८) शहाबुद्दीन जैसे लोगों पर कड़ी नजर रखना जरूरी है, जो अपने वक्तव्यों द्वारा यह धमकी दे रहे हैं कि उनके अपने सम्प्रदाय के लोग जिनकी संख्या इस देश मे १० करोड़ है और जो आबादी का साढ़े बारह प्रतिशत भाग हैं, एक प्रतिशत सिख अल्पसंख्यक समुदाय की तुलना में देश के समक्ष अधिक भयंकर स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं। ऐसे वक्तव्य देश को और अधिक संकट की स्थिति में डाल सकते हैं।

इस सभा ने सरकार के ऐसे सभी प्रयासों में अपना सहयोग दिया है, जिससे देश की अखण्डता सुरक्षित रहती हो और अभी भी अपना सहयोग देते रहने को यह सभा तत्पर है। परन्तु जब देश की सुरक्षा को खतरा हो और हिन्दुओं की, जो इस देश में बहुमत में हैं, प्रतिदिन हत्या की जा रही हो, यह सभा मूक दर्शक बनी नहीं रह सकती। अतएव हमारा आपसे निवेदन है कि आप तुरन्त ही प्रभावपूर्ण कार्रवाई करें।

गत १२-१३ जुलाई को देश के प्रमुख आर्य नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन दिल्ली में सम्पन्न हुआ, जिसमें पंजाब की स्थिति पर विस्तार से विचार किया गया। इस सम्मेलन ने एक आठ-सदस्यीय समिति का गठन किया है, जिसका उद्देश्य स्थिति की समीक्षा करके भावी कार्यक्रम का निर्माण करना है। इस सम्मेलन ने यह भी निर्णय किया है कि सम्पूर्ण भारत में आगामी १५ अगस्त को 'पंजाब बचाओ—देश बचाओ' दिवस मनाया जाये।

हमें आशा है कि सरकार हिन्दू समाज में फैल रहे जन आक्रोश को शान्त करने के लिए प्रभावपूर्ण कदम उठायेगी।

—डा० आनन्दप्रकाश

उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

साप्ताहिक सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

कुछ ग्राहकों का दो-तीन वर्ष का शुल्क बकाया है। उन्हें रिमाइंडर द्वारा भी समय-समय पर सूचित किया जा चुका है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भेज दें। शुल्क प्राप्त न होने पर हमें विवश होकर सार्वदेशिक भेजना बन्द करना पड़ेगा जो मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक आर्यसमाज में सार्वदेशिक पत्र जाये। सभी आर्य बन्धुओं को आर्यसमाज की गतिविधियों की जानकारी के लिए यह पत्र पढ़ना चाहिए।

शुल्क भेजते समय मनीआर्डर कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या और पूरा पता लिखें।

बार-बार शुल्क भेजने की दुविधा से बचने के लिए आप एक बार ही २५० रुपये भेजकर पत्र के आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

मुझे आशा है कि सभी ग्राहक शीघ्र सार्वदेशिक पत्र का शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे।

नोट—चैक अथवा ड्राफ्ट "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से भेजें।

वार्षिक शुल्क २० रु०
आजीवन शुल्क २५० रु०

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

यूकेलिप्टस भारतीय है

लखनऊ। बीरबल साहनी पुरावनस्पति संस्थान के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि यूकेलिप्टस भारतीय मूल का वृक्ष है और प्राचीन काल में यह भारतीय उप महाद्वीप एवं आस्ट्रेलिया में बहुतायत से उगता रहा है। उस समय आस्ट्रेलिया एक विशाल भू खण्ड 'गोंडवाना' से भारत से जुड़ा था।

वैज्ञानिकों ने उक्त दावा मध्यप्रदेश के मांडला में ६ करोड़ वर्ष पुराने यूकेलिप्टस के एक फासिल के अध्ययन के आधार पर किया है।

अध्ययन से यह भी पता लगा है कि प्राचीन काल में आस्ट्रेलिया और भारत में एक जैसे पेड़ पौधे उगते रहे होंगे। वैज्ञानिकों के अनुसार विश्वास किया जाता है कि १० करोड़ वर्ष पूर्व भारत और आस्ट्रेलिया एक ही अक्षांश पर स्थित थे।

कुछ वैज्ञानिकों ने यह भी मत व्यक्त किया है कि भारत का उत्तर-पूर्वी भाग लगभग आठ करोड़ वर्ष पूर्व आस्ट्रेलिया से जुड़ा हुआ था। यद्यपि यूकेलिप्टस भारतीय मूल का ही वृक्ष है लेकिन यह धीरे-धीरे अतीत में लुप्त हो गया। बाद में १८वीं शताब्दी के अन्त में पुनः भारत लाया गया।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस अध्ययन से कुछ और प्रश्न भी उभर कर सामने आये हैं। जैसे कि क्या भारत आस्ट्रेलिया से जुड़ा हुआ था और वे कब अलग हुए?

कश्मीर प्रश्नों के घेरे में

— नेत्रपाल शास्त्री

प्रचार यह किया जाता है कि जम्मू-कश्मीर में केवल ३५ प्रतिशत होने पर हिन्दुओं भी को अधिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

अनुपात के आधार पर अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार करना भारतीय संविधान के प्रतिकूल है। प्रश्न यह है कि जिस पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण कश्मीरी पण्डित यहां से निरन्तर भाग रहा है (जिसमें अब तेजी आयेगी) इसे कैसा रोका जाये ?

मुसलमान यह नहीं चाहता कि हिन्दू कश्मीर मे रहे। हिन्दू सन् १६४७ से विद्वेष, घृणा, पक्षपात तथा प्रतिशोध के शिकार होते चले आ रहे हैं। फरवरी में हिन्दुओं पर जो अत्याचार हुए, वे सुविदित हैं।

दंगों के पीछे डा० फारूक, कांग्रेस और सरकारी सत्ता का हाथ है। जो विद्रोही दल काश्मीर मे रक्तिम क्रान्ति की तैयारी में लगे हुए हैं, उन्हें भी रिहर्सल के लिए अच्छा मौका मिल गया। दगों के पीछे उद्देश्य था, शाह की सरकार को गिराना।

शाह दगे नही करा सकता, क्योंकि जनता पर उसकी पकड़ नहीं है। प्रशासन पर भी शाह का नियन्त्रण नही रहा था। शाह अपनी ही सरकार को गिराने के लिए गड़बड़ क्यो करवाता?

शाह की सरकार तो गिर गई और राज्यपाल का शासन लागू हो गया। जिन उपायों से यह परिवर्तन हुआ है क्या वे उपाय स्थायी हैं?

ऐसा करने के लिए (परिवर्तन लाने के लिए) हिन्दुओं को ही बलि का बकरा क्यो बनाया गया ?

अदूरदर्शितापूर्ण एव पैशाचिक कार्य के लिए उत्तरदायी कौन है ?

हिन्दू अन्दर से हिल गया है और भागना चाहता है। जो जा सकता है वह व्यक्तिगत रूप से भागेगा ही। जो नहीं भाग सकेगा उसे उनमें मिलना ही होगा। ऐसी अवस्था मे कश्मीर भारत का अंग रह सकेगा ?

कश्मीर का हिन्दू आश्वस्त हो सके, इसकी क्या गारन्टी है ?

निश्चित रूप से भविष्य में हिन्दुओं से राजनैतिक,सामाजिक और धार्मिक सुविधायें भी छीन ली जायेंगी। जीवन विकास के मार्ग मे गतिरोध खडा किए जाने पर क्या हिन्दू यहा रह सकेगा ?

जब घर मे और घर से बाहर कदम-कदम पर हिन्दुओं को अपमानित किया जा रहा है, स्त्रियों के साथ मनमानी की जा रही है, तब यहा का हिन्दू कब तक खून के आसू पीता रहेगा ?

केन्द्र यह चाहता है कि कश्मीर का हिन्दू कश्मीर मे रहे तो उसे सरक्षण क्यों नहीं देता ?

बी. एस. एफ. और सी. आर. पी. एफ. को हवाई जहाजों से इधर-उधर दौड़ाने से क्या स्थायी शान्ति स्थापित हो सकती है ?

खोए हुए विश्वास को केन्द्र वापिस कैसे कर पायेगा ?

ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिनसे कश्मीर घिरा हुआ है।

ऊपर हमने जो प्रश्न उठाए हैं, हमारे विचार में उनका समाधान है—

राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर चलना होगा। सत्ता प्राप्ति की नीति का परित्याग करना होगा।

देश में एक ही संविधान के अन्तर्गत सबको रहना होगा और राष्ट्रीय धारा मे ही चलना होगा।

चुनाव प्रणाली में ऐसा परिवर्तन लाना अब अनिवार्य हो गया है, जिसमें व्यक्तिवाद, जातिवाद, भाईभतीजावाद और प्रान्तवाद को बढ़ावा न मिले।

देश की सुरक्षा के लिए, उन्नत प्रगतिशील तथा शक्तिशाली होने के लिए लोकतन्त्र के अन्तर्गत रहते हुए ही हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी होगी।

हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए हिन्दुओं को सगठित करना होगा।

प्रशासन की दृष्टि से देश को पांच भागों में विभाजित करना अब आवश्यक हो गया है।

जम्मू-कश्मीर राज्य की कुल जनसख्या १६८१ की जनगणना के अनुसार—

मुसलमान—	३८,४३,४२१
हिन्दू—	१६,२०,४४८
सिख—	१,३३,४७५
बौद्ध—	६७,७०८
ईसाई—	८,४८१
जैनी—	१,५७६
कुल सख्या—	५६,७७,१०६
मुसलमान—	पौने पैंसठ प्रतिशत हैं।
हिन्दू—	सवा पैंतीस प्रतिशत हैं।

इस प्रकार मुसलमान हिन्दुओं से साढ़े उनतीस प्रतिशत अधिक हैं।

जो कार्य राष्ट्रहित में है, उसे कार्यान्वित करने में यदि विरोध आता है तो उससे डरना नहीं चाहिए।

आन्तरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए कारगर उपाय करने होंगे।

देश में रामराज्य स्थापित करने के लिए भ्रष्टाचार, अनाचार और तस्करी को जड़ से मिटाना होगा।

शिक्षा को भारतीय सभ्यता और सस्कृति के अनुरूप बनाना होगा। शिक्षा देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हो।

पांचवीं तक तो शिक्षा का प्रबन्ध गावों और शहरों मे ही किया जाये। पांचवी के बाद शिक्षा का प्रबन्ध गावो और शहरो से दूर रमणीक वातावरण मे किया जाये।

शिक्षा अपने में पूर्णत स्वतन्त्र हो। प्रारम्भ मे दस वर्ष तक तो शिक्षा पर होने वाले व्यय को केन्द्र वहन करे, दस वर्ष के बाद केन्द्र व्यय के केवल आधे भाग का ही भुगतान करे।

महर्षि दयानन्द के कतिपय उपदेश

संकलियता — पं० सोमदत्त शर्मा एम. ए., पीएच. डी., स्का. डी., विशारद, प्रीस्ट हिन्दू टैम्पल, नॉटिंघम, इंगलैंड

(१) भगवान् के रचे अद्भुत पदार्थ ही भगवान् की महान् मूर्तियां हैं —

जो मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे है, तो परमेश्वर के बनाए पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिन में ईश्वर ने अद्भुत रचना की है, क्या ऐसी अद्भुत रचना-युक्त पृथिवी, पहाड़ आदि परमेश्वर-रचित महामूर्तियां कि जिन पहाड़ आदि से वे मनुष्य-कृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता ? (सत्या० प्र० ११ समु०)

(२) पुरुषार्थी पुरुष को परमेश्वर शीघ्र प्राप्त होता है —

परमेश्वर अत्यन्त दयालु है। अतः जो जीव उसकी प्राप्ति के लिए तन, मन, धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करता है, परमात्मा उसको शीघ्र ही प्राप्त होता है। (स० प्र० ९ समु०)

(३) ईश्वर को न मानना तथा उसकी भक्ति न करना कृतघ्नता है—

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख है। क्योंकि जिस परमेश्वर ने इस जगत् के सब पदार्थ हम जीवों के सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना और ईश्वर को ही न मानना अत्यन्त कृतघ्नता और मूर्खता है। (स० प्र० ७ समु०)

(४) प्रभु उपासना का फल—

जब साधक यमनियमादि साधनों को करता है, उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्य-प्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है······जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर का समीप प्राप्त होने से सब दोष-दुःख छूटकर, परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव भी पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल तो पृथक् होगा ही, परन्तु आत्मा का बल इतना अधिक बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबराएगा और सब दुःखों तथा क्लेशों को सहन कर लेगा। (स० प्र० ७ समु०)

(५) परमेश्वर के योग से सब तृष्णाएं नष्ट हो जाती हैं —

यह जीव तृष्णा के वश हो, परमेश्वर से विमुख होकर उससे भिन्न पदार्थों मे सदा भटका करता है। परन्तु जब उसको परमेश्वर का योग प्राप्त हो जाता है तब सब तृष्णा आदि दोष दूर हो जाते हैं। फिर वह पूर्णकाम परमेश्वर में ही सदा रमण करता है। (स० प्र० ९ समु०)

(६) प्रभु प्रेमी की पहिचान—

सच्चा प्रभु का प्रेमी किसी से घृणा नही करता, वह ऊंच-नीचादि भेद-भावना को त्याग देता है। वह उतने ही पुरुषार्थ से दूसरों के दुःख निवारण करता है, कष्ट और क्लेश हरता है, जितने पुरुषार्थ से वह अपने कार्य करता है। ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव में आत्म-प्रेमी कहलाते हैं। (श्री दयानन्द प्रकाश)

(७) कौन बड़ा है ?—

अभिमानी पुरुष बड़ा नहीं होता। बड़ा वही है जिसने अहंकार को जीत लिया है। (श्री द० प्र०)

(८) हरि-कथा में नींद क्यों आती है ?

हरि-कथा एक सुकोमल शय्या के समान है, फिर यदि उस पर नींद न आए, तो और कहां आए ? और नृत्य, गान आदि उत्तेजक भाव आत्मा के लिए कांटों का बिछौना है, फिर भला उस पर नींद कैसे आ सकती है ? (श्री द० प्र०)

(९) अपने शरीर को बलवान् बनाओ—

खान पान की तरह व्यायाम भी नित्य करना चाहिए। बलवान् मनुष्य ही सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। निर्बल मनुष्य का जीवन सार-रहित, रोगों का घर और नरक-धाम बना रहता है। (श्री द० प्र०)

(१०) द्वेषी का द्वेष, द्वेष करने से दूर नही होता —

अपमान-कर्ता का अपमान करने से उसका सुधार नही होता, किन्तु सम्मान देने से सुधार हो जाता है। जैसे आग में आग डालने से वह शांत नहीं होती, ऐसे ही द्वेषी को द्वेषबुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती। जैसे अग्नि को शांत करने का साधन जल है, उसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन भी शान्ति धारण करना है। (श्री द० प्र०)

(११) जितेन्द्रिय किसे कहते हैं ?

जितेन्द्रिय उसे कहते हैं, जो स्तुति सुन के हर्ष, निन्दा सुनके शोक, अच्छा स्पर्श करके सुख और बुरे स्पर्श से दुःख, सुन्दर रूप को देखकर प्रसन्न और बुरे रूप को देख कर अप्रसन्न, उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दुःखित तथा सुगन्ध में रुचि और दुर्गन्ध में अरुचि नहीं करता। (स० प्र० १० समु०)

(१२) तप का स्वरूप —

यथार्थ शुद्धभाव, सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, मन को अधर्म में न जाने देना, बाह्येन्द्रियों को पापाचरणों में जाने से रोकना अर्थात् शरीर, इन्द्रिय और मन से सदा शुभ कर्मों का आचरण करना, वेदादि सत्यविद्याओं का पढ़ना-पढ़ाना, वेदानुकूल आचरण करना आदि उत्तम धर्म-युक्त कर्मों का नाम तप है। (स० प्र० ११ समु०)

(१३) आनन्द-प्राप्ति के उपाय —

जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक सत्पुरुषों का सङ्गी, योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय और सुशील होता है, वही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्तहोकर इस जन्म और परजन्म में सदा आनन्द में रहता है। (स० प्र० ११ समु०)

(१४) तीर्थ—

वेदादि सत्-शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैरता, सत्यभाषण, सत्य करना, ब्रह्मचर्य-पालन, आचार्य, अतिथि, माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना, शान्ति, जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान-विज्ञान आदि—ये सब शुभ गुण और कर्म दुःखों से तारने वाले तीर्थ कहलाते हैं। (स० प्र० ११ समु०)

(१५) पराए दोष न देखकर पहिले अपने दोषों को देखो—

बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिन्हें अपने दोष तो नहीं दीखते, किन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं, क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दूसरे के दोषों में दृष्टि दे के निकाले। (स० प्र० अनुभूमिका ४)

(१६) परहानि करना मनुष्यपन नहीं है—

सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण-भंगुर जीवन मे पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से सर्वथा बहिः है। (स० प्र० अनुभूमिका ४)

(१७) जो प्राणी मृत्यु का ध्यान रखता है, वह पापों में लिप्त नहीं होता—

जो जीव यह विचार करेगा कि मुझे मरना अवश्य है, अतः मुझे पाप-कर्म नहीं करना चाहिए, वह जीव सदा विचारपूर्वक ही कर्म करेगा और कभी भी पापों में लिप्त न होगा। (स० प्र० ७ समु०)

(१८) किनके बिना मनुष्य को सुख नहीं मिलता ?

पुरुषार्थ, सत्यधर्म का अनुष्ठान, सत्यविद्या का ग्रहण, सत्संग, जितेन्द्रियता और परमेश्वर की प्राप्ति अर्थात् मोक्ष—इनके बिना जीव को कभी भी सुख नहीं होता। (स० प्र० ९ समु०)

(१९) आचार किसे कहते हैं ?

राग-द्वेष आदि दोषों को हृदय से छोड़ देना, सज्जनता, प्रीति आदि गुणों को धारण कर लेना ही आचार है। (स० प्र० १० समु०)

(२०) भारत की उन्नति का उपाय—

एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति की साधक है। कड़े तथा खरे उपदेशों से जाति को जगा कर, कुरीतियों और कुनीतियों को नष्ट करना ही मेरे खण्डन का एक मात्र उद्देश्य है। इसीलिए मैं जाति के हित के लिए अनेक प्रकार के कष्ट, गालियां और विष-पान आदि भी सह लेता हूं। (उपदेश-मंजरी)

शरीर में जीवात्मा का स्थान कहां है ?-१

-डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री, जम्मू

इस विषय पर पक्ष और विपक्ष में लेख प्रकाशित हुए हैं। श्री राजवीर शास्त्री जी तथा श्री वैद्यनाथ शास्त्री जी दोनों ही रक्त प्रक्षेप करने वाले सीने के मांस पिण्डरूप हृदय में जीवात्मा की स्थिति मानते हैं। दोनों ही ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना प्रकरण में "यदिदम्" इस उपनिषद् की कण्डिका की केवल हिन्दी को आधार मानकर इसे महर्षि का सिद्धान्त घोषित करते हैं। ये दोनों ही सूक्ष्म शरीर के तत्त्व बुद्धि, मन, आदि को भी इसी सीने के हृदय में मानते हैं। मस्तिष्क में तो केवल उनके गोलक मानते हैं। लेकिन मन, बुद्धि, प्राण आदि के गोलक कहां और कैसे हैं, यह केवल उनकी कपोल कल्पना है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की हिन्दी पं० ज्वालादत्त की लिखी हुई है, महर्षि की नहीं। पं० ज्वालादत्त जी महर्षि के मन्तव्य के विरुद्ध भी लिख दिया करते थे। स्वामी जी ने कई स्थानों पर ऐसे कार्य के लिये पं० ज्वालादत्त को चेतावनी भी दी और भविष्य में उसका निष्कासन भी हुआ।

महर्षि के कुछ पत्र देखिये—मि०वै० शुदि ३ सं० १९४० को मुंशी समर्थदान जी को लिखे पत्र में महर्षि लिखते हैं—"ऋग्वेद के पन्ने १९७८ से लेके १९९० तक पं० ज्वालादत्त को भाषा बनाने के लिये दे देना और उसने १९ मन्त्र की भाषा प्रतिदिन स्वीकार किया है सो बराबर बनाया करे।

इस प्रमाण से सिद्ध है कि ऋग्वेद तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका हिन्दी पं० ज्वालादत्त लिखा करते थे। स्वामी जी संस्कृत भाष्य किया करते थे तथा हिन्दी स्वयं नहीं लिखते थे। पं० ज्वालादत्त से यह कार्य कराया करते थे। "यदिदम्" इस कण्डिका पर महर्षि ने संस्कृत भाष्य भी नहीं किया। उसकी हिन्दी स्वयं पं० ज्वालादत्त ने लिखी है—जिस हिन्दी को ये महानुभाव महर्षि का सिद्धान्त मानते हैं।

एक पत्र महर्षि ने सं० १९४० में जोधपुर से लिखा है। उसमें स्वामी जी लिखते हैं—"समर्थदान ने लिखा है कि कुछ ज्वालादत्त नई भाषा बनाता है। यदि वह हमारे संस्कृत और अभिप्राय के अनुकूल हो तो ठीक है। नहीं तो जो पोपलीला की भाषा बनाकर वहां ही छपवा दे और हमको मालूम न हो पश्चात् प्रसिद्ध होवे से कोलाहल होगा। तो क्या होगा। परन्तु सम्भव है कि कुछ गड़बड़ करे।'

इससे सिद्ध है कि हिन्दी भाषा लिखने में पं० ज्वालादत्त गड़बड़ करते थे।

गड़बड़ कहां और कैसे हुई इस विषय को स्पष्ट करना आवश्यक है। योग दर्शन का एक सूत्र है—

हृदये चित्त संवित्।

इस सूत्र का सीधा शब्दार्थ है—

"हृदय में चित्त का ज्ञान होता है।"

व्यास ने इस सूत्र पर जो भाष्य किया है वह इस प्रकार है—"जो यह ब्रह्मपुर में सूक्ष्म-सा कमल के समान गृह है उसमें विज्ञान है। उसमें संयम करने से चित्त का ज्ञान होता है।"

अब इस सूत्र पर पौराणिक अद्वैतवादी भाष्यकार विज्ञानभिक्षु की टीका देखिये। वे लिखते हैं "उदरोरसयोर्मध्ये पद्म तिष्ठति अर्थात् पेट और छाती के बीच में जो हृदय कमल ठहरा हुआ है।"

यहां पाठकों को व्यास भाष्य में और विज्ञानभिक्षु की टीका में अन्तर स्पष्ट प्रतीत हो गया होगा।

ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका की हिन्दी व्यास भाष्य के विपरीत विज्ञानभिक्षु की टीका है, जब कि महर्षि दयानन्द ने केवल व्यास-भाष्य को ही प्रामाणिक माना है। निश्चय से कहा जा सकता है कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की हिन्दी पं० ज्वालादत्त ने पौराणिक भाष्यकार के आधार पर लिख दी है, जिस हिन्दी को महर्षि का सिद्धान्त मानकर उक्त विद्वान् चल रहे हैं। यह महर्षि के साथ न्याय नहीं है। मिलाइये—

१ पेट और छाती के बीच में वाचस्पति मिश्र तथा विज्ञानभिक्षु

२—कण्ठ के नीचे दोनों स्तनों के बीच में। ऋग्वेदादि भा० भू०

इसलिये यही सही है कि पौराणिक पं० ज्वालादत्त ने पौराणिक पं० वाचस्पति मिश्र और विज्ञानभिक्षु के अनुसार यह हिन्दी लिख दी है। इसके लेखक महर्षि दयानन्द नहीं हैं। न महर्षि का सिद्धान्त है और न ही यह हिन्दी उस कण्डिका की हिन्दी ही है। ये शब्द उस "यदिदम्" कंडिका में हैं ही नहीं।

कण्डिका के विरुद्ध स्वेच्छा से लिखित वाक्यों को प्रमाणरूप मानकर जीवात्मा की स्थिति सीने में मानने वाले श्री राजवीर शास्त्री और श्री वैद्यनाथ शास्त्री स्वयं को विद्वान् और तत्त्ववेत्ता मानते हैं तथा श्री युधिष्ठिर मीमांसक, श्री उदयवीर शास्त्री तथा मुझे महाभ्रान्ति में पड़ा हुआ मानते हैं तो वैदिक साहित्य के प्रमाणों का सहारा लेकर सप्रमाण बात लिखें जिसका कोई वास्तविक महत्त्व हो।

अब हम इन दोनों विद्वानों की मान्यता का खण्डन करते हैं। सुविज्ञ विद्वान् इसे पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय करें।

श्री राजवीर शास्त्री का लेख दयानन्द सन्देश (अंक मई १९८०) में निकला है, जिसमें उन्होंने—

हृदि एष आत्मा (प्रश्नोपनि०)
स वा एष आत्मा हृदि (छान्दोग्य)
सोम रारन्धि नो हृदि (ऋक्०)

ये प्रमाण देकर (यदिदम्) कण्डिका लिखी है। श्रीमान् जी, आपने ये प्रमाण तो लिख दिये, परन्तु यह हृदय शब्द सीने में रक्त प्रक्षेप करने वाले हृदय के लिये ही आया है, ऐसा आपने किस शास्त्रीय प्रमाण से माना है? इसका उत्तर तो आप ही दे सकते हैं। हां यह कण्डिका (यदिदम्) छान्दोग्योपनिषद् की है और छान्दोग्योपनिषद् से ही हम सिद्ध करते हैं कि छान्दोग्य में हृदय शब्द मस्तिष्क के लिये आया है, देखिये—"तस्य ह वा एतस्य हृदयस्य पंचदेव सुषयः इत्यादि का हिन्दी अर्थ—इस हृदय के पांच देवद्वार हैं। इसका पूर्व देवद्वार चक्षु नामक प्राण है, वह आदित्य है। इसका दक्षिण देवद्वार व्यान है, वह श्रोत्र है। इसे चन्द्रमा भी कह सकते हैं। पश्चिम द्वार अपान या वाक् है। उसे अग्नि भी कहते हैं।

उसका उत्तर द्वार समान या मन है। वह मेघ है। उसका ऊर्ध्व-द्वार उदान या वायु है उसे आकाश भी कहते हैं। ये ऊपर कहे पांच ब्रह्मपुरुष स्वर्ग लोक के द्वारपाल हैं।"

छान्दोग्य के इस प्रकरण में हृदय के पांच देवद्वार या द्वारपाल बतलाये गये हैं। और वे पांच हैं—"चक्षु, श्रोत्र, वाणी, मन और वायु या प्राण लेने के साधन नाक। ये सभी गले से ऊपर मस्तिष्क में ही रहते हैं अतः यहां हृदय शब्द मस्तिष्क के लिये ही प्रयुक्त है। साथ ही मन की स्थिति भी इसी मस्तिष्क हृदय में मानी है। इसलिये यजुर्वेद में भी मन को जो (हृत्प्रतिष्ठम्) कहा है वह यही मस्तिष्क हृदय ही है। (क्रमशः)

संन्यासाश्रम प्रवेश पर शुभकामना सन्देश

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को उनके संन्यासाश्रम प्रवेश पर शुभकामना के अनेक सन्देश प्राप्त हुए हैं।

मुख्य-मुख्य सन्देश संक्षिप्त रूप में नीचे दिए जा रहे हैं—

कोरबा से स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती—

शतशः अभिवादन। आपका सन्यासाश्रम में प्रवेश आपके लिए ही नहीं, हम सबके लिए भी मंगलमय हो। हम संन्यासाश्रमवासी आपके आश्रम प्रवेश पर गौरवान्वित हो रहे हैं। पुनश्च भूरि-भूरि अभिवादन।

—ऊधमपुर से स्वामी सत्यानन्द सरस्वती—वीर सेनानी, आप दृढ़ निश्चय के साथ संन्यास आश्रम में प्रवेश करें। मेरा हार्दिक आशीर्वाद।

—गुरुकुल घरौंडा (जिला करनाल) से भूतपूर्व संसद्सदस्य स्वामी रामेश्वरानन्द—आपने ठीक समय पर संन्यास की दीक्षा प्राप्त की। एतदर्थ धन्यवाद सहित मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

—अजमेर से श्री दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य—हमें यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आपने संन्यास ग्रहण किया है। हार्दिक बधाई और शुभ-कामनाएं।

—अखिल भारत हिन्दू महासभा की ओर से श्री इन्द्रसेन शर्मा—परमात्मा आपको सफलता दे और आपका यश बढ़े।

—गोरेगांव, मुम्बई से श्री प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास—सप्रेम शुभ कामनाए।

—चण्डीगढ़ से श्री रूपचन्द एडवोकेट—संन्यास समारोह के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

—श्री गौरीशंकर कौशल भूतपूर्व विधायक (मध्य प्रदेश), भोपाल से—आपने संन्यास आश्रम मे प्रवेश कर वर्णाश्रम का वर्तमान समय में (जबकि वर्णाश्रम व्यवस्था से आस्था उठ रही है) एक अनुपम आदर्श उपस्थित किया है। इससे समाज प्रेरणा लेगा। परमपिता आपकी सशक्त छत्रछाया हमारे सिरों पर लम्बे समय तक रखे। आर्य-हिन्दू जाति आशा भरी दृष्टि से आपकी ओर देख रही है। प्रभु आपको आर्य-हिन्दू जाति की शिथिल रगों मे गरम रक्त संचार करने की शक्ति दे।

—नैरोबी से स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान श्री डी. डी. सूद—आर्य-समाज को आप जैसे कर्मठ, सत्यनिष्ठ, पवित्रात्मा और देव दयानन्द को अपने शरीर के रोम-रोम व आत्मा में व्याप्त अनुभव करने वाले संन्यासियों की परमावश्यकता है। परमात्मा आपको चिरायु करें।

—नई दिल्ली से अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् के अध्यक्ष श्री बालेश्वर अग्रवाल (पत्रकार)—आपने सन्यास लेकर सभी को एक नई प्रेरणा दी है। हमारा सभी प्रकार का सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा।

हमारे देश का नाम क्या है ?

—श्री कृष्णदत्त, १-८ ७००/६ पद्मानगर, नल्लाकुंडा

एक दिन एक नवयुवक ने मुझसे प्रश्न पूछा, 'हमारे देश का नाम क्या है' ? मैंने कहा, 'हमारे देश का नाम भारत है। हमारे देश के संविधान ने भारत नाम ही स्वीकार किया है।' नवयुवक ने मुस्कराते हुए जो कुछ कहा उसका आशय था कि संविधान ने तो दो नाम स्वीकार किये हैं, भारत और इंडिया। अंग्रेजी में तो इंडिया ही लिखते और बोलते हैं, पर हिन्दी में भारत का प्रयोग कम और 'हिन्दुस्तान' का प्रयोग अधिक होता है। और हिन्दी में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने वाले शौकीन महानुभाव 'इंडिया' और 'इंडियन' शब्दों के प्रयोग बड़े तपाक से करते हैं। यही नहीं, हमारे देश के विधायक, संसद्-सदस्य और मन्त्री, जो पद ग्रहण करते समय संविधान का पालन करने की शपथ लेते हैं, वे भी भाषणों, वक्तव्यों और चर्चाओं में 'हिन्दुस्तान' शब्द का प्रयोग करते हैं। २६ जनवरी के लिए कार्यक्रमों के आयोजन के लिए "हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा" की पंक्ति का कई दिनों तक अभ्यास करवाया गया जिसका दिल्ली में टी. वी. पर नियमित रूप से प्रदर्शन होता रहा। आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन. टी. रामराव हिन्दी बोलने का उत्साह दर्शाने के लिए इस पंक्ति का बड़े जोश के साथ उच्चारण करते हैं। संविधान में जब देश का नाम 'भारत' मान्य हो गया है, तो 'हिन्दुस्तान' नाम का प्रयोग क्या संविधान की अवहेलना नहीं है ? क्या संसार में ऐसा भी कोई देश है जिसके तीन-तीन नाम हैं और उस देश के निवासी उन तीन नामो का प्रयोग करते हैं ? यह विलक्षणता हमारे देश मे ही है। सच तो यह है कि संविधान में आवश्यक परिवर्तन करके देश का नाम केवल 'भारत' ही रखा जाए, 'इंडिया' नाम से भी छुटकारा पाया जाए। जिस दिन देश का बटवारा हुआ और हमारे संविधान ने 'भारत' नाम को मान्य किया, हमारा देश 'भारत' ही रह गया 'हिन्दुस्तान' नाम समाप्त हो गया। जनता में इस विचार का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए।

इस सन्दर्भ मे एक बात का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा कि 'हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा' 'सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा'। ये पंक्तियां सर मुहम्मद इकबाल की हैं, जो १९१९ मे लिखी गई थीं। १९३० मे सबसे पहले पाकिस्तान की मांग करने वाले ये सर मुहम्मद इकबाल हैं, जिन्होने लिखा है 'कौम मजहब से है, मजहब जो नही तो हम भी नही। और 'मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहां हमारा।' देश से गद्दारी करने वाले व्यक्ति के इस गीत को जो संविधान के विपरीत है, हम झूम-झूमकर गाते हैं। इसे हम क्या कहें ?

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

दक्षिण भारत में मीनाक्षीपुरम् को केन्द्र बनाकर आर्यसमाज का प्रचार कार्य प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ रहा है। इस सारे कार्य का नेतृत्व आर्य समाज मदुरै के कर्मठ कार्यकर्ता श्री एम० नारायण-स्वामी जी कर रहे हैं। उनके द्वारा अनेक क्षेत्रों में आर्यसमाज की गतिविधियां बढ़ाई जा रही हैं। पाठकों को यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि पहले तो हम मुसलमान बन गये हिन्दुओं को ही अपने धर्म में वापिस लाने का अभियान चलाते थे, किन्तु अब स्थिति यह है कि बहुत-से जन्मजात मुसलमान भी हिन्दू धर्म स्वीकार करना चाहते हैं। अभी गत जून मास में तिरुनेलवेल्ली शहर में २१ ईसाई परिवारों ने तथा मदुरै में १ ईसाई और १ मुसलमान परिवारों ने शुद्ध होकर वैदिक धर्म अंगीकार किया। तिरुनेलवेल्ली में आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास भी किया जा रहा है और बारुवाई नामक स्थान पर "वैदिक गुरुकुल आर्यसमाज" की स्थापना हो चुकी है। [illegible] में श्री [illegible], श्री ए०एस० मूर्ति तथा श्रीमती रुक्मिणी-देवी का सहयोग सराहनीय है। श्री एम० नारायणस्वामी उच्च वर्ग के हिन्दुओं तथा स्थानीय सरकारीय अधिकारियों से मिलकर आर्य-समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। मीनाक्षीपुरम् में आर्यसमाज मन्दिर की भव्य यज्ञशाला बनकर तैयार हो चुकी है और वहाँ सत्संग का कार्यक्रम प्रति सप्ताह श्री एम० नारायण स्वामी जी की देखरेख में चल रहा है। श्री अनन्तराम शेषन् से मिलकर आर्यसमाज के कार्य को और आगे बढ़ाने का प्रयास जारी है। आर्यसमाज द्वारा वहां गुरुकुल की स्थापना करने का प्रस्ताव विचाराधीन है, जिसके लिये भूमि प्राप्त की जा चुकी है।

भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन विद्यालय

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में भारतीय मनोविज्ञान पर ग्रीष्मकालीन विद्यालय का आयोजन २१ जून से १ जुलाई तक किया गया, जिसमें विश्वविद्यालयों से आये शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। इसके डायरेक्टर प्रोफेसर हरगोपालसिंह ने बताया कि भारतीय विश्वविद्यालयों में वेदों के समय से आरम्भ भारतीय मनोविज्ञान का पठन-पाठन बिल्कुल नगण्य है और केवल पाश्चात्य मनोविज्ञान ही पढ़ाया जाता है, जो भारतीय जनमानस की व्याख्या में अपूर्ण है। भारतीय मनोविज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता काफी समय से अनुभव की जा रही थी किन्तु क्रियात्मक कदम कोई भी संस्था नहीं उठा रही थी जिसे भारतीय संस्कृति की संस्था गुरुकुल कांगड़ी ने प्रारम्भ किया है।

शुद्धि समाचार

दो मुस्लिम युवक हिन्दू बने

कानपुर। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने दो शिक्षित युवकों को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में दीक्षित किया।

२५-वर्षीय असद अली का नाम अजयकुमार रखा गया। दूसरे युवक आयाज आलम का, जो स्नातक तक शिक्षा प्राप्त है, नाम विजयकुमार रखा गया।

श्री आर्य ने शुद्धि संस्कार के बाद विजयकुमार का विवाह कु० रेखा से वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। समारोह में उपस्थित लोगों ने इन पर फूल बरसा कर आशीर्वाद दिया।

दो ईसाई हिन्दू बने

भोपाल। श्री हरबर्ट मसीह ग्रैंड सन (२७ वर्ष) एवं कु० राजेश्वरी सिल्वे (२० वर्ष) ने ईसाई मत का परित्याग कर हिन्दू (आर्य) धर्म स्वीकार किया। श्री हरबर्ट मसीह ग्रैंड सन ने अपना नाम राजकुमार आर्य तथा राजेश्वरी सिल्वे ने राजेश्वरी आर्य रखा।

लास एंजलिस से स्वामी जी के नाम एक पत्र

आपने आर्यसमाज में जान डाल दी है

पूज्य स्वामी जी,

सादर चरण स्पर्श।

आप संकल्प के धनी हैं, कर्मठ हैं, तपस्वी हैं। आपकी कर्मठता और ओजस्विता ने आर्यसमाज में जान डाल दी है। आप तो पहले से ही संन्यासी थे। सारा जीवन—कर्मयोग। अब आपने संन्यासाश्रम में दीक्षा लेकर सार्वदेशिक सभा को और अधिक प्रतिष्ठित बना दिया है। आपको बहुत-बहुत बधाई। परमात्मा आपको दीर्घायु तथा शक्ति प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

मैं भी इस पश्चिम क्षेत्र में आर्यसमाज के आन्दोलन को तीव्र करने और दृढ़ बनाने के लिए आर्य जनों के साथ मिलकर कुछ योजना बना रहा हूं। यहां आर्य जनता बहुत प्यार, आदर और सहयोग दे रही है।

मैं नवम्बर में कैलिफोर्निया के सब आर्यों को एक साथ लाने के लिए आर्य सम्मेलन कर रहा हूं। बहुत अच्छा सहयोग मिल रहा है।

कृपया आर्य सम्मेलन के लिए अपना सन्देश भिजवाएं, ताकि आपके आशीर्वादों के साथ इस पौधे को लगाया जाये। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूंगा।

सदा आपका ही
(प्रो०) एस०पी० शर्मा, लास एंजलिस

छात्रवृत्तियां और पुरस्कार

श्री बजीरचन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट ने एक योजना बनाई है, जिसके अधीन साधारण और व्यवसायात्मक शिक्षणालयों (कालेजों और गुरुकुलों) के छात्र/छात्राओं और स्नातकोत्तर उच्च परीक्षाओं के प्रत्याशियों को छात्रवृत्तियां और युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की पुष्टि तथा वैदिक संस्कृति के प्रसार के लिये लिखे गये ग्रन्थों के लेखकों, लेखिकाओं को पुरस्कार दिये जाया करेंगे। इस योजना से लाभ उठाने के इच्छुक आवेदकों को ट्रस्ट से निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करना चाहिये।

सत्यदेव, आनरी सचिव
श्री बजीरचन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट
१२-सी अमर कालोनी, नई दिल्ली-११००२४

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्यसमाजों के चुनाव

—आर्यसमाज गुरुकुल विभाग, फीरोजपुर शहर—प्रधान-श्री हुकमलाल महता, मन्त्री श्री मोहनलाल और कोषाध्यक्ष-श्री ओम्प्रकाश भाटिया।

—आर्यसमाज बठिंडा-प्रधान-श्री वजीरचन्द, मन्त्री-श्री जितेन्द्र कुमार वकील और कोषाध्यक्ष-श्री बाबूराम।

—आर्यसमाज तीमारपुर (दिल्ली)—प्रधान-श्री भीमसिंह, मन्त्री-श्री कृष्णदेव और कोषाध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश।

—आर्यसमाज महावीर नगर (भोपाल)—प्रधान-श्री बी. एस. भंडारी, मन्त्री-श्री कैलाशचन्द्र गौड़ और कोषाध्यक्ष-श्री वेदराज शर्मा।

—आर्यसमाज नरकटियागंज (प० चम्पारन)—प्रधान-श्री विद्याभास्कर आर्य, मन्त्री-श्री शम्भुशरण आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री ओम्प्रकाश आर्य।

"देहात में व्यायाम शालाएं आवश्यक"

महर्षि दयानन्द व्यायामशाला, नजफगढ़ देहात क्षेत्र में श्री बृहस्पतिदेव पाठक (डी०सी०एम०) की अध्यक्षता में "शिक्षा में नैतिकता' गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री पाठक ने डी०ए०वी० आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा कि यह संस्था तपस्वी एवं त्यागी व्यक्तियों द्वारा संचालित है। देहात क्षेत्र में कुछ इस प्रकार की व्यायामशालाएं हों, जहां नवयुवकों को शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाये। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जगवीरसिंह ने कहा कि देहात क्षेत्रों में अधिक से अधिक युवक शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे जनता में जागृति लाई जा सके। गोष्ठी के संयोजक श्री धीरेन्द्र शास्त्री ने गोष्ठी में पधारने वाले सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया।

आर्य युवक दल हरयाणा का सम्मेलन अक्तूबर में

करनाल। आर्य युवक दल हरयाणा की एक बैठक १३ जुलाई को दोपहर के समय आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में हुई। उसी दिन दूसरी बैठक सायंकाल आर्यसमाज प्रधाना महल्ला, रोहतक में हुई। आर्य युवक दल की दैनिक शाखा लगाने का निश्चय हुआ।

आर्य युवक दल हरयाणा का प्रथम महासम्मेलन पानीपत में चार और पांच अक्तूबर को होगा।

स्त्री समाज की स्थापना

श्रीमती सरला गोयल तथा श्रीमती कृष्णा नेहरू के अपने अथक परिश्रम से नये बने आर्य समाज रामनगर में स्त्री समाज की स्थापना की है। यह स्त्री समाज सप्ताह में एक बार लगती है।

श्री गुलाबसिंह राघव का नया पता

मधुर गीत गायक, आर्यसमाज के निष्ठावान् प्रचारक, संगीताचार्य श्री गुलाबसिंह राघव के नये निवास स्थान का पता है—एफ २७१-सी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-३२

हा! ओम्प्रकाश जी त्यागी

जीवन-भर करते रहे, वैदिक धर्म प्रचार।
वही आज त्यागी चले, त्याग सकल संसार॥

त्याग सकल संसार, आर्य जन हैं सब रोते।
कर मन्त्री की याद, आंसुओं से मुंह धोते॥

कहे ब्रह्मानन्द आर्य, वेद हित अपना तन-मन।
कर दीन्हा सर्वस्व, निछावर सारा जीवन॥

—ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक
आर्य प्रतिनिधि सभा, (उ०प्र०) लखनऊ

आर्य प्रचारक की माता जी की जन्मशती

इन्दौर। आर्य प्रचारक श्री अजय कुमार (मांगल्या—इन्दौर के स्टेशन सुपरिटेंडेंट एवं आधुनिक अर्जुन के नाम से विख्यात) की एक सौ एक वर्षीया माता चम्पादेवी जी का जन्म शती समारोह जून के प्रथम सप्ताह में धूम-धाम से मनाया गया। समारोह इन्दौर के समीप राऊ में आयोजित हुआ। माता जी की हाथी पर शोभायात्रा निकाली गई।

प्रिं० ओम्प्रकाश तलवाड़ के पिता दिवंगत

नई दिल्ली। आर्य केन्द्रीय सभा के भूतपूर्व महामन्त्री प्रिं० ओम्प्रकाश तलवाड़ के पिता श्री रखाराम जी तलवाड़ की स्मृति में १७ जुलाई को आर्यसमाज, पंजाबी बाग के खचाखच भरे हाल में श्रद्धाञ्जलि सभा हुई। उनका देहावसान १ जुलाई को ९० वर्ष की आयु में हो गया था।

आर्यसमाज पंजाबी बाग के प्रधान श्री सत्यानन्द जी शास्त्री ने, जो उनके चचेरे भाई भी हैं, भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कर्त्तव्य निष्ठा की ऊंची भावना का सन्देश देकर प्रभु की गोद में विलीन हो गये।

दीक्षान्त समारोह

आर्य युवक दल गुड़गांव का दीक्षान्त समारोह २१ मई (रविवार) प्रातः ८ से ११।। बजे तक डी०ए०वी० उच्च विद्यालय गुड़गांव के प्रांगण में श्री लक्ष्मणदास गुलयानी की अध्यक्षता में हुआ। इसमें ब्र० रामस्वरूप आर्य का व्यक्ति प्रदर्शन हुआ।

मेवात क्षेत्र के लिए प्रचारक चाहिए

गुड़गांव जिले के मेवात क्षेत्र के ग्रामों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ साइकल पर घूम-घूम कर सन्ध्या, भजन, यज्ञादि का प्रचार करने हेतु २ प्रचारकों एवं स्वामी शान्तानन्द आश्रम अरोड़ा, नजदीक पिनगवां (गुड़गांव) में एक विद्वान्, संन्यासी, शास्त्री या सामान्य ज्ञान वाले, सन्ध्या, यज्ञादि कार्य करा सकने वाले महानुभाव की सेवाओं की आवश्यकता है।

भोजन, आवास के अतिरिक्त योग्यतानुसार मासिक दक्षिणा भी दी जायेगी।

—पद्मचन्द आर्य
मन्त्री, आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात
नगीना (गुड़गांव) हरयाणा राज्य

आर्यसमाज फोर्ट के संस्थापक, शिल्पी एवं सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता

स्वर्गीय श्री एम० के० अमीन जी

-कैप्टन देवरत्न आर्य-

संसार मे कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो स्वयं के लिए जीते हैं। उनके जीवन का लक्ष्य-उद्देश्य सिर्फ स्वार्थ होता है। समाज, राष्ट्र, सभ्यता और संस्कृति उनके लिए कोई महत्त्व नही रखते। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित होता है। ऐसे ही महापुरुषो के लिए किसी शायर ने कहा है—

हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बहुत मुश्किल से होता है आदमी जगत् में पैदा ॥

स्वर्गीय श्री एम० के० अमीन का जन्म सन् १९२१ में दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य के मुल्की शहर में हुआ था। बचपन से ही उनकी रुचि सामाजिक सेवा के कार्यो मे रही।

१३ वर्ष की अल्पायु से ही उन्होंने आर्य समाज की गतिविधियों मे सक्रिय भाग लेना शुरु कर दिया था। बचपन से ही उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र "कर्नाटक भ्रातृ मण्डल" से प्रारम्भ किया, जो बाद में "आर्य भ्रातृ मण्डल" नाम से परिवर्तित हुआ। कालान्तर में इसी सस्था को अपने आर्य बन्धुओं के सहयोग से "आर्य समाज फोर्ट बम्बई" के नाम से परिवर्तित कर दिया।

मनीषी प्रकृति के तपस्वी श्री अमीन जी ने जीवन के बहुमूल्य ४५ वर्षों को इस सस्था के उत्थान एवं विकास को समर्पित कर बोरा बाजार स्थित एक कमरे से इस आर्यसमाज की गतिविधियो को प्रारम्भ करके आर्यसमाज फोर्ट का भव्य भवन बाजार गेट स्ट्रीट मे खड़ा कर दिया।

अपने जीवन काल में आर्यसमाज के माध्यम से श्री अमीन जी ने अनेक जन हितकारी गतिविधियों को प्रारम्भ किया। श्री अमीन जी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने बम्बई महानगरी में सर्वप्रथम आर्यसमाज की रुग्णवाहिका चलाने का श्रेय प्राप्त किया। अपनी युवावस्था में उन्होने उन अबोध बालिकाओं की मुक्ति का बीड़ा उठाया जिन्हें धन के लोभी दलाल केवल मात्र कुछ सिक्को को प्राप्त करने के लिए विभिन्न गावो से भगा कर यहा वेश्यावृत्ति के लिए बेच जाते थे। उन दिनों ऐसी लड़कियों की रक्षा के लिए अमीन जी मसीहा के रूप में अवतरित हुए। अपनी जान की बाजी लगाकर एक सेनानी के रूप मे उन्हें किसी भी प्रकार के अन्याय की सूचना मिलती थी तो वे उस ओर दौड पड़ते थे। ऐसा लगता था कि उनका जन्म इन जनहित कार्यों के लिए ही हुआ हो। उनके इस साहसी एवं निर्भीक व्यक्तित्व का ही कारण था कि उनकी बातों पर एव समस्या पर बम्बई महानगरी के पुलिस आयुक्त, महापौर, महाराष्ट्र राज्य के मन्त्री, राज्यपाल आदि सभी गम्भीरतापूर्वक विचार करते थे और मानते थे। इन कार्यों के कारण बम्बई महानगरी मे आर्यसमाज के नाम को चमकाने का श्रेय श्री अमीन जी को ही मिला। उन्होने युवाओं एवं प्रौढ़ व्यक्तियों के दल तैयार करके आर्यसमाज फोर्ट के विजयी रथ को गतिशील रखा एवं उसके नाम को देश-विदेश मे गौरवान्वित किया।

आर्यसमाज फोर्ट की सर्वांगीण उन्नति के लिए महर्षि दयानन्द के ऐसे भक्त दीवाने श्री अमीन जी के बारे में ही शायद किसी शायर ने ये सुन्दर शब्द लिखे होंगे —

हम दीवानों की क्या हस्ती, है आज यहा कल वहा चले।
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उडाते जहां चले ॥

इस मस्ती का ही तो परिणाम था कि कुछ ही वर्षों के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप श्री अमीन जी ने बाजार गेट स्ट्रीट मे आर्यसमाज का इतना सुन्दर भव्य भवन बनाकर खड़ा कर दिया। अपने जीवन के ४५ वर्षों के योगदान से यह संस्था भारत की सुप्रसिद्ध आर्यसमाजों की पंक्ति मे आ खड़ी हुई। श्री अमीन जी के प्रयासस्वरूप आर्यसमाज फोर्ट निम्नलिखित गतिविधियों का केन्द्र बना—

१. आर्य वीर दल फोर्ट
२. आर्य वैभव व्यायामशाला
३. आर्यसमाज रुग्णवाहिका (जो अब श्री एम० के० अमीन रुग्णवाहिका के नाम से कार्यरत है)
४ आर्य वीरांगना दल
५. आयुर्वेदिक आर्य औषधालय
६. आर्य विजय पत्रिका मासिक
७. आर्य साहित्य विक्रय केन्द्र

आर्यसमाज फोर्ट के कार्यकर्ता होने के साथ-साथ श्री अमीन जी ने वर्षों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित आर्यवीर दल गुजरात एवं महाराष्ट्र राज्य के मनोनीत प्रधान सेनापति पद पर रहकर उसे अपना नेतृत्व प्रदान किया। इन राज्यो मे आर्य वीर दल की स्थापना का सम्पूर्ण श्रेय आपको ही था। अनेक ऐतिहासिक शिविरों का भी आपने सोत्साह आयोजन किया जिनमे महर्षि की जन्मस्थली टकारा तथा बम्बई महानगरीय उपनगर मुलुण्ड मे आयोजित शिविर की स्मृति आज भी अविस्मरणीय है।

अपने अथक प्रयत्नो से जीवन के अन्तिम वर्ष मे भी सक्रिय रहकर आपने फोर्ट मार्किट का नाम "महर्षि दयानन्द चौक" में परिवर्तित करा कर दयानन्द को अपनी सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित की। फोर्ट आर्यसमाज की अनेकविध प्रवृत्तियो के शिल्पी एवं देश-विदेशों में आर्य नेता के रूप में विख्यात श्री अमीन जी बम्बई के सामाजिक क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे।

आर्यसमाज के माध्यम से ऐसोशिएशन फार सोशल हेल्थ इन इण्डिया की नारी रक्षा समिति के आप प्रधान रहे। उन्होंने अनेक ऐसी संकटग्रस्त लड़कियों का उद्धार किया जो जबरन वेश्यावृत्ति के व्यापार में संलग्न थीं। उनका उद्धार कर उन्हें आर्यसमाज मे शरण देना उनके जीवन का एक अंग बन गया था।

भारतीय प्रवासी जनो की सुविधार्थ बम्बई महानगरी मे सस्थापित बृहद् भारतीय समाज के संस्थापक वे ही थे एव अनेक वर्षों तक सक्रिय सदस्य के रूप मे कार्य करते रहे।

प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट के निर्देशन मे सचालित "नारी रक्षा समिति" के भी आप सदस्य रहे।

दीर्घकाल तक वे बम्बई महानगर पालिका के वी वार्ड के अन्तर्गत सेवारत होमगार्ड के परामर्शदाता सदस्य रहे।

सेन्ट जार्ज अस्पताल, बम्बई की परामर्शदात्री समिति के भी वर्षों सदस्य रहे।

अपनी समर्पित सामाजिक सेवाओ के फलस्वरूप आप महाराष्ट्र सरकार द्वारा जे पी (जस्टिस आफ पीस) एवं तत्पश्चात् एम० ई० एम० (स्पेशल एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट) आदि पदों पर विभूषित होते रहे।

आर्य नेता एव समाज उत्थान हेतु समर्पित व्यक्तित्व के धनी श्री एम० के० अमीन जी १८ जून १९८९ को ६० वर्ष की आयु मे इस नश्वर शरीर का परित्याग कर इस मृत्यु लोक से विदा हो गये।

मनीषी प्रकृति के तपस्वी, समर्पित जन सेवक एव आर्य नेता स्वर्गीय श्री अमीन जी द्वारा की गई जन सेवाओं की चिर स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए बम्बई महानगर पालिका ने बोरा बाजार एवं मोला लेन को जोड़ने वाले मार्ग "किंग लेन" का नाम बदलकर "एम० के० अमीन मार्ग" रखकर श्री अमीन जी को बम्बई के नागरिकों की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित की।

आज श्री अमीन जी भौतिक शरीर में हमारे मध्य विद्यमान नहीं हैं किन्तु यश रूपी शरीर में तो वे सदैव हमारे बीच मौजूद हैं। उन्होंने अपने जीवन का एक-एक क्षण आर्यसमाज के सिद्धातो को साकार करने में लगा दिया था। आओ, हम उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर आपस का वैर-द्वेष भूलकर एकचित्त हों, दृढ़ सिद्धांतनिष्ठ हो आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्य में लग जाएं। उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सभी श्री अमीन जी द्वारा बताये गये कार्यों को आगे बढ़ाएं।

पंजाब के पीड़ित हिन्दुओं के लिए दान दाताओं की सूची

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने पंजाब के पीड़ित हिन्दुओं की सहायता के लिए धन की जो अपील की थी, उस पर २१ जुलाई तक मिली सहायता राशि भेजने वालों के नाम प्रकाशित किये जा रहे हैं।

दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद ।

आर्यसमाज महावीर नगर, नई दिल्ली	२०१)
उषा बुक एजेन्सी, जयपुर	५१)
आर्यसमाज आर्यपुर, खामपुर	१०००)
श्री इन्द्रमोहन मेहता, वैभव नगर, आगरा	२००)
श्री लालचन्द्र जी, नई दिल्ली	४००)
आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, शाहदरा, दिल्ली	५०)
श्रीमती सरस्वती देवी, दिल्ली	१०५)
श्रीमती शान्ता जी, दिल्ली	१००)
श्रीमती सुमति बेरी जी, दिल्ली	१००)
श्री पवन कुमार चड्डा, दिल्ली	२२)
श्रीमती सरला कपिला जी, दिल्ली	१२५)
श्रीमती नलिनी नय्यर जी, दिल्ली	५०)
श्री रामनाथ जी ग्रोवर, बम्बई	५००)
आर्यसमाज पूरनपुर, पीलीभीत	५०१)
श्री ध्यानसिंह, आर्यसमाज कोसली	२५)
श्री राजेश्वर सिंह आर्य, पुराना बाजार, हरिहरगंज	१०)
नगर आर्यसमाज प्रेम नगर, बुलन्दशहर	५०)
आर्यसमाज रमेश नगर, नई दिल्ली	५०१)
आर्यसमाज वसन्त विहार, नई दिल्ली	२५)
डा० नन्दलाल जी पुरी, नई दिल्ली	१)

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

संसद् के दोनों सदनों, लोक सभा, और राज्य सभा का वर्षा-कालीन सत्र १७ जुलाई को प्रारम्भ हुआ। दोनों सदनों में दिवगत भूतपूर्व सदस्यो और वर्तमान सदनों के सदस्यो को श्रद्धांजलि दी गई। लोक सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिवगत मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी को भी श्रद्धांजलि भेंट की गई।

जय साईं टैण्ट सर्विस, नई दिल्ली	१००)
श्री रामचरण दास जी आर्य, रतलाम	११)
श्री बनकम सुनबन तेलगू पंडित	१०)
श्री रामचरण बाली जी, रीवा	१००)
आर्यसमाज बीसलपुर, पीलीभीत	१०१)
श्री कृष्णगोपाल गोयल, आर्यसमाज चन्दोसी	२१०)
श्री परमानन्द क्षेमचन्द जी, सफीदों शहर	१००)
श्री प्रेमदास जी, पहाड़गंज, नई दिल्ली	१००)
डा० गणेदास जी, सफीदों शहर	५०)
श्री एस० सी० सक्सेना, अहमदाबाद	१०००)
श्री शिवराज जी गुप्त, अम्बाला शहर	१००)
सर्वयोग	६७१)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ३४] श्रावण शु० ५ सं० २०४३ रविवार १० अगस्त १९८६

देश की अखण्डता और सुरक्षा के लिए विपक्षी दल सरकार को सहयोग दें

सीमा सुरक्षा विधेयक के विरोध से राष्ट्रहित को आघात

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की सामयिक चेतावनी

दिल्ली, ४ अगस्त। सीमा-सुरक्षा सम्बन्धी विधेयक पर विपक्षी दलों की भूमिका के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि लोकतन्त्र में विपक्षी दलों की सार्थकता इसी में है कि वे सरकार को शासक दल के हितों से ऊपर उठकर सदा राष्ट्रहित के लिए प्रेरित करते रहें। जब विपक्षी दल सरकार के किसी राष्ट्र हितकारी कदम का भी विरोध करने लगें तो वह संकीर्ण राजनीति है, जो न लोकतन्त्र के हित में है और न राष्ट्रहित में।

सभी राष्ट्रवादी संस्थाओं ने देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय सरकार से आग्रह किया था कि वह पंजाब, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान और गुजरात की पाकिस्तान से लगने वाली सीमा [illegible] रक्षा के लिए स्थायी रूप से सेना की नियुक्ति करे। [illegible] सुझाव के महत्व को स्वीकार करके प्रधान मन्त्री ने संविधान में उचित संशोधन के लिए विपक्षी दलों से बात की। विपक्षी दलों ने [illegible] नया सीमा-सुरक्षा सुझाव दिया कि संविधान में संशोधन [illegible] २४९वें अनुच्छेद के अन्तर्गत [illegible] पास करने से पहले ही [illegible] सरकार को यह अधिकार प्राप्त है, इसलिए नये विधेयक की आवश्यकता नहीं। परन्तु विपक्षी दल यह भूल गये कि २४९वां अनुच्छेद केवल एक वर्ष के लिए लागू हो सकता है। इसके अलावा [illegible]मीर पर कश्मीर पर लागू नहीं होता। उस अनुच्छेद को [illegible]नुसार वहां की लागू करने के लिए सन् १९५४ के राष्ट्रपति के [illegible] विधान सभा से अनुमति लेना आवश्यक [illegible] विपक्षी दलों का सुझाव मान लेने पर सरकार की उल[illegible] बढ़ जायेगी।

श्री स्वामी जी ने यह भी क[illegible] जिस प्रकार पंजाब में वहां की सरकार [illegible] अकाली दल ने अपने सीमावर्ती क्षेत्र में सेना की तैनाती का विरोध किया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे पाकिस्तान [illegible] आतंकवादियों को मिलने वाली सहायता का रास्ता [illegible]न्द नहीं होने देना चाहते और आतंकवाद को [illegible] तैयार नहीं। [illegible] करने के लिए केन्द्रीय सरकार [illegible] यही है कि अब विपक्षी दल भी इस इसलिए सरकार को सहयोग देकर राज्यसभा में दो तिहाई बहुमत से सीमा-सुरक्षा विधेयक को पारित करवाने में सहायक हों। जो लोग अब तक पंजाब के सीमावर्ती जिलों में सेना तैनात करने के लिए प्रबल आन्दोलन करते रहे हैं, वे भी सरकार के उक्त कदम का विरोध करें, तो यह उनकी अदूरदर्शिता ही है।

श्री स्वामी जी ने कहा कि हमें हर स्थिति में राष्ट्रहित को ही प्रमुखता देनी चाहिए। उक्त विधेयक के पास होने से कम से कम सीमावर्ती इलाकों में विघटनकारी प्रवृत्तियों और आतंकवाद को समाप्त करने में सहायता मिल जाती है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा आभार प्रदर्शन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के संन्यास ग्रहण पर देश विदेश से बधाई और शुभकामना के अनेक सन्देश प्राप्त हुए हैं। इन सन्देशों की संख्या इतनी अधिक है कि स्वामी जी चाहते हुए भी व्यक्तिशः सबका आभार प्रकट नहीं कर सकते। इसलिए वे 'सार्वदेशिक' के माध्यम से सामूहिक तौर पर सबके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

शुभ कामना

प्रगति पथ की पग डण्डी पर चलते-चलते चले चलो तुम,
व्यवधानों की चुनौतियों को दलते-दलते चले चलो तुम,
रहे संकटों की घड़ियों में अटल आत्म विश्वास तुम्हारा,
श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी, जलते-जलते चले चलो तुम,

सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त [illegible]

सम्पादक सच्चिदानन्द शास्त्री

आवश्यक परिपत्र

१५ अगस्त को पंजाब बचाओ, देश बचाओ दिवस मनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अपील

श्रीमन्नमस्ते।

जैसा आप जानते हैं, हमारे देश का सीमावर्ती राज्य पंजाब विगत पांच वर्षों से आतंकवादियों की हिंसक गतिविधियों का अखाड़ा बना हुआ है। खालिस्तान समर्थक उग्रवादी वहां के बेकसूर अल्पसंख्यक नागरिकों को अपनी गोलियों का निशाना बना रहे हैं और हमारी सरकार कोरे आश्वासन देने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पा रही है। जितनी बार सरकार अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आश्वासन देती है, उग्रवादी उतनी ही बार उनकी सामूहिक हत्या कर देते हैं। ऐसी भयानक अवस्था में पंजाब के हिन्दू अपने घर बार, व्यापार आदि छोड़कर वहां से पलायन करके दिल्ली, हरयाणा और उत्तर प्रदेश में आ रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा देश के समस्त राष्ट्रवादी संगठन इस घोर चिन्ताजनक स्थिति में पंजाब को बचाने के लिए प्रयत्नशील हैं। अतः आपसे निवेदन है कि आगामी १५ अगस्त को अखिल भारतीय स्तर पर पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस के रूप में मनाकर देश की अखण्डता और स्वतन्त्रता की रक्षा करें। उस दिन सायंकाल ४ बजे अपने-अपने नगरों, कस्बों और गांवों में पंजाब बचाओ जलूस निकालें। जलूस की समाप्ति पर एक सार्वजनिक सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करके उसकी एक-एक प्रति प्रधान मन्त्री भारत सरकार, राज्य के मुख्यमन्त्री, स्थानीय जिलाधीश तथा समाचार पत्रों को भेजें। प्रस्ताव की प्रति सार्वदेशिक सभा को भी भेज दें।

प्रस्ताव

१—यह सभा विगत ५ वर्षों से पंजाब में हो रही हिंसक गतिविधियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी मांग है कि पंजाब के सीमावर्ती तीन जिले सेना के हवाले किये जायें।

२—यह सभा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के प्रस्ताव का समर्थन करती है जो पाकिस्तान से लगे राजस्थान, पंजाब तथा जम्मू-कश्मीर की पट्टी पर सीमा सुरक्षा विधेयक द्वारा संविधान में संशोधन करके आतंकवाद तथा पाकिस्तानी घुसपैठ को खतम करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

३—यह सभा विपक्षी दलों से अपील करती है कि देश-हित के कार्यों में सरकार को सहयोग दें।

भवदीय
सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

उसने गुरद्वारे में आग लगा दी

वाशिंगटन। कनाडा के वेंकूवर शहरके गुरद्वारे को आग से काफी नुकसान हुआ है। बताया जाता है कि जिस व्यक्ति ने यह आग लगाई वह उग्रवादियों द्वारा इस जगह का दुरुपयोग किए जाने से नाराज था।

पुलिस के मुताबिक अमरजीत सिंह भुखियाना नाम के इस व्यक्ति ने २९ जुलाई को गुरद्वारे में आग लगा दी जिससे उसके मुख्य हाल को भारी नुकसान हुआ है। आग की वजह से गुरद्वारा कुछ समय के लिए बन्द कर दिया गया है।

अधिकारियों के मुताबिक आग से दो लाख डालर का नुकसान हुआ है।

कनाडा में आतंकवादी गतिविधियों के जानकारों का कहना है कि रोस स्ट्रीट का यह गुरद्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सिख यूथ फेडरेशन और बब्बर खालसा के आतंकवादियों का गढ़ है।

वेंकूवर के जानकार सूत्रों के मुताबिक आतंकवादी कोई भी उग्रवादी योजना तैयार करने के लिए इसी गुरद्वारे में बैठक करते हैं।

पुलिस ने खुद इस बात को माना है कि रोस स्ट्रीट का गुरद्वारा कट्टरपन्थी उग्रवादी गतिविधियों का अड्डा बना हुआ है।

सूत्रों ने बताया कि अमरजीत सिंह अक्सर इस गुरद्वारे में जाता रहता था और गुरद्वारे में चल रही गतिविधियों से बहुत नाखुश था समझा जाता है कि उसने अन्तर्राष्ट्रीय सिख यूथ फेडरेशन के उग्रवादियों को संरक्षण देने पर कई बार आपत्ति भी की।

सूत्रों के मुताबिक अन्त में निराश होकर उसने गुरद्वारे को ही आग लगाने का फैसला किया।

गुरद्वारे के सूत्रों ने आरोप लगाया है कि अमरजीतसिंह मानसिक रूप से असन्तुलित है और उसने गुरद्वारे की गतिविधियों से नाराज होकर उसमें आग नहीं लगाई।

लेकिन इस घटना से कनाडा के कट्टरपन्थी और नरमपन्थी सिखों के बीच संघर्ष उभर कर सामने आ गया है।

पंजाब से हिन्दुओं के पलायन पर चिन्ता

आर्यसमाज अजमेर के साप्ताहिक सत्संग में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान प्रो० वेदव्यास और महामन्त्री रामनाथ सहगल का आर्यसमाज अजमेर की ओर से भावभीना स्वागत किया गया। दिल्ली और पंजाब के इन आर्य नेताओं ने पंजाब से (आतंकवादियों की हिंसा के कारण होने वाले) हिन्दुओंके पलायन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए दिल्ली के विभिन्न समाज मन्दिरों में ठहरे शरणार्थियों की दशा का करुणाजनक विवरण प्रस्तुत किया और केन्द्र एवं पंजाब सरकार से हिन्दुओं के पलायन को रोकने, आतंकवाद को दृढ़ता से कुचलने एवं भागकर आये अल्पसंख्यक हिन्दुओं को पुनः पंजाब में लौटाने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने और राष्ट्रपति शासन लागू करने की माग की।

सम्पादक के नाम पत्र

हमारे देश का नाम क्या है ?

महोदय,

'सार्वदेशिक साप्ताहिक' के २७ जुलाई के अंक में श्री कृष्णदत्त जी का लघु लेख "हमारे देश का नाम क्या है ?" पढ़ा। लेखक ने बहुत ही मार्मिक विचार व्यक्त किये हैं। उन्हे हार्दिक साधुवाद। शासन और समाज को इस ओर बहुत पहले ही ध्यान देना चाहिए था। जब देश के कई प्रान्तों का नवीन नामकरण किया गया जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, विदर्भ, कर्नाटक, तमिलनाडु, सौराष्ट्र, हिमाचल आदि, तभी डा० इकबाल की रचना "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" में "हिन्दोस्तां" और "हिन्दी हैं हम" को उपयुक्त ढंग से बदल देना चाहिए था। अच्छा हो, अभी भी यह चिर अपेक्षित परिवर्तन कर दिया जाये अर्थात् "सारे जहां से अच्छा भारत देश हमारा," और "भारतीय हैं, वतन है भारत वर्ष हमारा"।

—सत्यदेव आर्य, जयपुर

मैथिलीशरण की जन्म शती

श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म श्रावण मास की हरियाली तीज संवत् १९४३ तदनुसार ३ अगस्त १८८६ को बुन्देलखंड जनपद के झांसी जिले के चिरगांव नामक स्थान पर हुआ था। इन दिनों उनकी जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। मैथिलीशरण जी ने भारत भारती लिख कर इतनी कीर्ति पाई कि यदि उन्होंने अन्य कोई रचना न भी की होती तो भी उनकी कीर्ति कुछ कम न होती।

३ अगस्त को राजधानी के राष्ट्रीय संग्रहालय के सभागार में आयोजित जन्मशताब्दी समारोह में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि वे देवत्व और मानवता के बीच की एक कड़ी थे।

इस समारोह मे केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंहराव ने गुप्त जी की इन पंक्तियों का उल्लेख किया—मानव भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती, भगवान् भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।

उपराष्ट्रपति श्री वेंकटरामन् और शिक्षा व संस्कृति राज्यमन्त्री श्रीमती कृष्णा साही ने भी श्रद्धांजलि भेंट की।

गुप्त जी की इन पंक्तियों को भी स्मरण किया गया—राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाये सहज सम्भाव्य है।

अकेली भारतभारती ने मैथिलीशरण गुप्तजी को राष्ट्रकवि का दर्जा दिलाया। उसके कुछ पद्य तो जन-जन की वाणी बन गये थे। बानगी देखिये—

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है।
गाते नहीं उनके हमीं गुण गा रहा संसार है॥
वे धर्म पर करते निछावर तृणसमान शरीर थे।
उनसे वही गम्भीर थे, वर वीर थे, ध्रुव धीर थे॥

❀ ❀ ❀

वे मोह बन्धन मुक्त थे, स्वच्छन्द थे, स्वाधीन थे।
सम्पूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शान्ति शिखरासीन थे॥

❀ ❀ ❀

संसार के उपकारहित जब जन्म लेते थे सभी।
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी॥

❀ ❀ ❀

जिस लेखनी ने है लिखा उत्कर्ष भारतवर्ष का।
लिखने चली है हाय वह उसके अमित अपकर्ष का॥
जो कोकिला नन्दन विपिन में प्रेम से गाती रही।
दावाग्नि दग्धारण्य में रोने चली है अब वही॥

❀ ❀ ❀

भारत कहो तो आज तुम क्या हो वही भारत अहो।
हे पुण्यभूमि! कहां गई है वह तुम्हारी श्री कहो॥
अब कमल क्या जल तक नहीं, सरमध्य केवल पंक है।
वह राज-राज कुबेर अब हा! रंक का भी रंक है॥

❀ ❀ ❀

आओ मिलें सब देश बान्धव हार बनकर देश के।
साधक बनें सब प्रेम से सुख शान्तिमय उद्देश्य के॥

स्वर्गस्थ मैथिलीशरण जी को हमारी नम्र श्रद्धाञ्जलि।

तिलक और टंडनजी

पिछले दिनों दो अन्य महापुरुषों को भी याद किया गया—लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन।

दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेशचन्द्र ने तिलक जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए कहा कि उन्होंने होमरूल लीग की स्थापना कर स्वराज्य की नींव रखी। उनका जीवन त्याग और कष्ट-सहिष्णुता की कहानी है।

उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री पकमेश्वरीलाल नटवरलाल भगवती ने कहा कि तिलक ने जैसे स्वराज्य की कल्पना की थी, स्वाधीनता के इतने वर्षों बाद भी वह स्थापित नहीं हो पाया।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने टंडन जी को श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए कहा कि वे सादा जीवन और उच्च विचार की प्रतिमूर्ति थे। आज की युवा पीढ़ी उनसे बहुत कुछ सीख सकती है।

वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनायें

देश की वर्तमान स्थिति में प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह बाहरी शक्तियों से जूझने की सामर्थ्य प्राप्त करे—अपने में शक्ति का सञ्चार करे।

श्रावणी पर्व

(१) आर्यकुमार सभाओं, आर्यवीर दलों की स्थापना, हरिजनों के घरों में हवन-यज्ञ, बुद्धिवाद और मानवतावाद के शुद्ध वातावरण में महान् दयानन्द के व्यक्तित्व को समझकर चेतना देना इस पर्व का उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

(२) देश की संकटकालीन स्थिति में वेद प्रचार निधि स्थापित करें। प्रत्येक आर्यसमाज आज की ज्वलन्त समस्या (पंजाब जल रहा है) के समाधान के लिए धन संग्रह कर सार्वदेशिक सभा के कोष को समृद्ध बनायें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

इस महापुरुष के नाम पर जो पाखण्ड चल रहा है उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही है। योगिराज श्रीकृष्ण की महत्ता, उनका राजनैतिक महत्त्व, योग विद्या विशारद के जन्मदिवस पर शिक्षा-संस्थानों में बच्चे-बच्चे को सही विवेचन समझाया जाय।

कार्यक्रम

आर्यसमाजों में प्रातः यज्ञ दिन में विचार गोष्ठी, रात्रि में कथा-व्याख्यान हों। हरिजनों से भी सम्पर्क करके छुआछूत के भेद को मिटाने का प्रयत्न करें। बच्चों के खेल-कूद-भाषण प्रतियोगिता के आयोजन भी करें।

मन्दिरों पर नया ध्वज फहरायें

रक्षा बन्धन का महत्त्व समझा कर भगवान कृष्ण का वास्तविक चरित्र चित्रण करें।

दोनों पर्वों को आर्यजन उत्साहपूर्वक मनायें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह राष्ट्र में नव जागरण पैदा करे

वेद प्रचार सप्ताह के शुभ अवसर पर समस्त आर्यजन अधिक सक्रिय होकर राष्ट्र को नयी प्रेरणा प्रदान करें।

राष्ट्र में आतंक, अविश्वास, नैतिक ह्रास, शोक, दुःख तथा निराशा का वातावरण व्याप्त है।

राष्ट्रीयता खतरे में है। अराष्ट्रीय तत्वों का बोलबाला है। राजनैतिक दल मूक बनकर देख रहे हैं। पंजाब जल रहा है, देश में स्थान-२ पर दंगों, विनाश और हत्याओं का बोलबाला है।

भगवान् की वाणी वेद का स्मरण करके आर्यसमाज द्वारा ही राष्ट्र की रक्षा की जा सकेगी।

वेद भगवान् की वाणी ही अन्तिम समाधान है। प्रभु हमारी रक्षा करें और हम उन्नति की ओर अग्रसर हों।

—सम्पादक

वैदिक ज्ञान-गंगा विश्व के लिए हितकारक-२

—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—

इस पुस्तक के कारण वह अमर हो गया। सदियों बाद एक मुसलमान, जिसका नाम शेख सोती जेनार था उसी पहाड़ी पर चढ़ा जहाँ उसने युधिष्ठिर को बैठे देखा। दोनों आपस में बड़े प्रेम से मिले। शेख ने युधिष्ठिर से पूछा, तुम क्या पढ़ रहे हो? युधिष्ठिर ने कहा, मेरे पास जीवन की पुस्तक है। इसके प्रभाव से मैं अब तक जीवित हूँ, मरा नहीं। शेख ने युधिष्ठिर से पुस्तक मांगी, और देख कर चिल्ला पड़ा—अरे यह तो कुरान है, लाओ, यह पुस्तक मुझे दे दो। युधिष्ठिर ने वह पुस्तक शेख को दे दी और मर गया। इधर शेख ने जावा में कुरान का प्रचार किया। जावा के इस कथानक में वृक्ष की जड़ से पुस्तक बन जाने, उससे युधिष्ठिर के अमर हो जाने, और जड़ से बनी उस पुस्तक के कुरान होने का अलिफलैला का किस्सा सिर्फ किस्साही नहीं है। अथर्ववेद, ४, ३५, ६ में एक मन्त्र है—

'यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः तेनौदनेन अतितराणि मृत्युम्।'

इसका अर्थ है—एक ओदन है, ओदन अर्थात् भात—भात बनता है चावल से, चावल अर्थात् एक तरह का पौधा। उससे **'मृत्युम् अतितराणि'** मृत्यु को तर जाता हूँ। ब्रह्म को यहां एक पौधा कहा गया है जिसमें वेद निहित हैं। जैसे शारीरिक उन्नति के लिए वनस्पति की आवश्यकता है, वैसे ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए वेद के ज्ञान की आवश्यकता है—इसी से मृत्यु को तरा जाता है। वेद का यह आध्यात्मिक भाव जावा में एक कथानक बन गया। नहीं तो युधिष्ठिर के हाथ में वृक्ष की एक जड़ थी, वह पुस्तक बन गई, उससे वह अमर हो गया—इन सब बातों की कोई तुक नहीं बैठती।

पारसियों की धर्म-पुस्तक 'जिन्दावस्था' में परमात्मा कहता है कि मेरा नाम 'अह्मि' तथा 'अह्मि'-'यदह्मि' है।

'अह्मि'-शब्द संस्कृत के 'अस्मि' का अपभ्रंश है। पारसी भाषा में 'स' को 'ह' हो जाता है। इस समय भी पारसियों के सम्पर्क में रहने वाले गुजराती लोग 'स' को 'ह' बोलते हैं। वे 'तुम्हारा साथी कहां है' को 'तमारो हाथी क्यां छे' बोलते हैं। **'अस्मि'** का अर्थ है—'मैं हूँ' **'अस्मि यदस्मि'** का अर्थ है—'मैं हूँ वह मैं हूँ।' जिन्दावस्था में ही नहीं, यहूदियों तथा ईसाइयों के मान्य धर्म-ग्रन्थ ओल्ड टेस्टामेंट की 'एक्सोडस'-पुस्तक में भी परमात्मा मूसा को कहता है—मेरा नाम 'I am' तथा 'I am that I am' है। यहूदियों ने परमात्मा के लिए ये दोनों नाम पारसियों से लिये हैं। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय में एक स्थान पर **'योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि'** आता है। **'सोऽहमस्मि'** का ही जिन्दावस्था में 'अह्मि' एवं बाइबल में 'I am' बना है। यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के २८वें मन्त्र **'इदमहं य एवास्मि सोऽस्मि'**—यह आता है इसका वही अर्थ है जो पारसियों के 'अह्मि यदह्मि' अथवा यहूदियों एवं ईसाइयों के 'I am that I am' का है। उपनिषदों में जगह-जगह **'सोऽहमस्मि'** का उल्लेख है। इन सब वाक्यों का तात्पर्य यह है कि मैं अपने शरीर को 'मैं' माने बैठा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ। इन वाक्यों में वैदिक विचारधारा की आत्मा निहित थी, इसलिये इन वाक्यों का वेदों में, उपनिषदों में सर्वतोमहान् महत्त्व है, इसी महत्त्व के कारण यह बीज-मन्त्र पारसियों, यहूदियों तथा ईसाइयों में भी पहुंचा, यद्यपि इसके मूलार्थ को वे भूल गये।

परमात्मा के उक्त नाम के अलावा यहूदियों में परमात्मा का नाम 'जिहोवा' है। वेद में अग्नि को सम्बोधित करते हुए 'यह्व'-शब्द का प्रयोग किया गया है। ऋग्वेद, १० मण्डल, ११० सूक्त का तीसरा मन्त्र है—

'आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चायाह्यग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान्॥'

लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक 'Vedic Chronology and Vedang Jyotish' में इस तथा अन्य मन्त्रों के आधार पर सिद्ध किया है कि यहूदियों का 'जिहोवा' वैदिक मन्त्रों का **'यह्व'** ही है। यहूदी अग्नि के उपासक थे, वैदिक आर्य भी अग्निहोत्र करते थे। यही कारण है कि अग्नि को सम्बोधन किया जाने वाला 'यह्व'-शब्द यहूदियों में 'जिहोवा' बन गया। इसके अतिरिक्त **'जुहु'** धातु से 'जुहोति' आदि शब्द बनते हैं जिनसे विकृत रूप 'जिहोवा' बन गया। यहूदी लोग अग्नि के उपासक थे, क्योंकि बाइबल के अनुसार जब मूसा उन्हें मिस्र से निकाल कर कैनान ले जा रहा था, तब जिहोवा अग्नि का रूप धारण कर उनका मार्गदर्शन कर रहा था।

जिन्दावस्था का एक अध्याय 'होम यश्ट' है। वहां करेशानी नाम के एक राजा का उल्लेख है। वहां लिखा है कि 'होम' ने करेशानी राजा को इसलिये राज्य-च्युत कर दिया क्योंकि उसने अपने राज्य में **'अपां अविष्टिश'** का पाठ करना बन्द कर दिया था। पारसी-धर्म के विद्वान् डा० हाग का कथन है कि 'अपां अविष्टिश' वेदों के **'शन्नोदेवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये'** का सूचक है। इस मन्त्र में 'अभिष्टये आपः' आता है, उसी को उलट 'अपां अभिष्टये' कर दिया गया है। इस प्रकार शब्दों का पलट जाना कोई नई बात नहीं है। संस्कृत के 'वक्र'-शब्द के पलट जाने से अंग्रेजी का 'कर्व'-शब्द 'भूगोल'-शब्द के पलट जाने से अंग्रेजी का 'ग्लोब'-शब्द बना है। हिन्दी में भी कई लोग चाकू को काचू बोल देते हैं। किसी समय ईरान के राजा करेशानी के राज्य में अथर्ववेद का पाठ होता था। महाभाष्य में पतंजलि मुनि ने जहां चारों वेदों को सूचित करने के लिये 'शन्नोदेवी'-मन्त्र का उल्लेख किया है जिसमें 'अभिष्टये आपः' आता है, जिन्दावस्था का कहना है कि करेशानी राजा को इसलिये पदच्युत कर दिया गया क्योंकि उसने अपने राज्य में 'आपः अभिष्टये'—अर्थात् अथर्ववेद का पाठ करना बन्द कर दिया था।

पारसियों के 'नामाह जरदुश्त' में लिखा है कि भारत से बड़ा भारी विद्वान् आयेगा जिसका नाम व्यास होगा। वह जरदुश्त के साथ वाद-विवाद करेगा। इसके आगे वे प्रश्न दिये गये हैं जिन पर विवाद होगा। इससे स्पष्ट है कि पारसी धर्म तथा वैदिक धर्म का आपस में काफी सम्बन्ध रहा है। यह सम्बन्ध इतना गहरा रहा है कि पारसियों में भी इन्द्र, मित्र, अर्यमा, वरुण, नासत्यौ, भग, नाराशंस, वायु, वृत्रघ्न आदि सब वैदिक देवता पाये जाते हैं। इनकी देवमाला को देखने से यह भी ज्ञात होता है कि किसी समय वैदिक धर्म की इन दोनों शाखाओं में—पारसियों तथा दूसरे आर्यों में—इतना मतभेद हो गया था कि जहां 'इन्द्र' को वेद में एक बड़ा भारी देवता कहा गया है, वहां जिन्दावस्था में 'इन्द्र' को बड़ा भारी राक्षस माना गया है। यह मतभेद इतना बढ़ा कि **'देव'**-शब्द का प्रयोग पारसियों में शैतान के लिये किया जाने लगा। अंग्रेजी का **'डेविल'**-शब्द भी **'देव'** से निकला है जिसका देव से उल्टा अर्थ है। वैदिक शब्दों के ये विरोधी प्रयोग सिद्ध करते हैं कि गंगोत्री से निकली गंगा यहां कलकत्ते में जाकर कीचड़ बन गई है। (क्रमशः)

पाकिस्तान के नापाक इरादे : एक तीर से दो निशाने

–राकेश कोहरवाल–

नई दिल्ली । "पंजाब के आतंकवादियों को प्रशिक्षण देकर पाकिस्तान एक तीर से दो शिकार कर रहा है । एक तो इससे सिखों को सजा मिलेगी जिन्होंने हरिसिंह नलवा के समय से भारत के बंटवारे तक मुसलमानों पर अत्याचार किए । दूसरे बांग्लादेश गंवाने का बदला भारत से लिया जायेगा ।'

पाकिस्तान में आतंकवादियों को प्रशिक्षण वगैरह की देखरेख करने वाले लेफ्टिनेंट-जनरल (रिटायर्ड) ए.आई. अकरम ने ऐसा कहा है । पाक खुफिया विभाग द्वारा संचालित इंस्टीट्यूट आफ रिजनल स्टडीज इस्लामाबाद में अपनी यह रणनीति वे पहले भी बता चुके हैं।

जनरल अकरम सैनिक रणनीति में माहिर माने जाते हैं । उन्होंने अपने एक भाषण में कहा—'भारत का पंजाब हिन्दुओं से मिले पाकिस्तान से बड़ा है । जो छोटा-सा पाकिस्तान मिला भी उसे बाद में दो हिस्सों में तोड़ दिया गया । भारत का पंजाब आज हमें बदला लेने का आखिरी मौका दे रहा है ।

उच्चस्तरीय सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान ने बड़े फौजी रणनीतिज्ञों, जनरलों, फौजी और गैर-फौजी खुफिया अफसरों और अमेरिका से प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक युद्ध के सलाहकारों को इस साजिश में लगाया है ।

इसकी पुष्टि हाल ही में पकड़े गए इनामी और दूसरे आतंकवादियों से की गई पूछताछ और बरामद दस्तावेजों से हुई है । सरकारी सूत्र मानते हैं कि पाकिस्तान इस रणनीति को योजनाबद्ध तरीके से अमल में देखना चाहता है ।

पाकिस्तान ऐसे आरोपों को लगातार गलत बताता रहा है । लेकिन हाल ही में भारत सरकार ने पाकिस्तान सरकार का ध्यान इंटरपोल के इन सही सबूतों की तरफ खींचा तो उसने चुप्पी साध ली । इंटरपोल ने भारत सरकार की इस आशंका को प्रमाणों में बदला कि अगस्त १९८४ को अपहृत भारतीय जहाज के आतंकवादी अपहरणकर्ता को पिस्तौल पाकिस्तानी अफसर ने दी थी ।

इंटरपोल ने खबर दी है कि इस पिस्तौल को पाकिस्तान सरकार ने २२ सितम्बर १९७५ को पश्चिमी जर्मनी की एक कम्पनी वाल्टर जी०एम०बी०एच० से खरीदा था । पिस्तौल किसी और ने नहीं जनरल जिया के विश्वस्त सलाहकार लेफ्टिनेंट-जनरल मुजीबुर्रहमान ने दी थी । रहमान के बारे में माना जाता है कि उन्हें अमेरिका में मनोवैज्ञानिक लड़ाई का खास तौर से प्रशिक्षण दिया गया है ।

सूत्रों का कहना है कि जनरल अकरम के विचार और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ही पाकिस्तान भारत से हिन्दुओं सिखों के बीच तनाव बढ़ा रहा है ।

पाकिस्तान से लौट रहे आतंकवादियों ने पूछताछ के दौरान चौंकाने वाले तथ्य उजागर किए हैं । पाकिस्तानी पंजाब के गांवों से आतंकवादी युवकों को छांटकर पांच से नौ तक के जत्थों में ले जाते हैं, जहां पाकिस्तानी सेना उन्हें दिखावे के तौर पर हिरासत में ले लेती है । फिर फैसलाबाद की जेल ले जाया जाता है । वहीं आतंकवादियों का प्रशिक्षण पाकिस्तान खुफियाविभाग के कर्नल मलिक और मेजर आई०एम० खान के निर्देशन में चल रहा है ।

प्रशिक्षण में उन्हें शस्त्र और बारूद का इस्तेमाल सिखाकर मानसिक तौर पर हिंसा के लिए तैयार किया जाता है । एक-एक आतंकवादी पर पाकिस्तान सरकार अन्दाजन एक हजार रुपए प्रतिमास खर्च कर रही है । इसी साल जून में धारीवाल के निशानसिंह का जत्था पाकिस्तान से लौटते हुए भारतीय फौज के हाथ लगा ।

पूछताछ में उसने प्रशिक्षण वगैरह की पुष्टि की । यह भी बताया कि तीन मास के प्रशिक्षण के बाद लौटते समय पाक खुफिया अफसर कर्नल मलिक ने नौ सिख जत्थों के सामने भाषण दिया—'शस्त्र और बारूद के इस प्रशिक्षण का उपयोग हिन्दुओं को चुन चुनकर मारने में करना । तोड़फोड़ की हरकतों और बमबाजी की वारदातों से दहशत फैलाओ ताकि दोनों समुदायों में भगदड़ मचे ।'

डेरा बाबा नानक के अमरीकसिंह, नंगल के सुरजीतसिंह शाहपुरा, गोराया के गुरदीपसिंह ने पूछताछ में बताया है कि मेजर खान ने उन लोगों से कहा है कि शस्त्रों और बारूद की कमी नहीं रहने दी जाएगी उन्हें ये दोनों चीजें उनके गांव तक पहुंचा दी जायेंगी। हत्याओं के मामले में उन्हें सलाह दी गई कि उनका निशाना अकाली नेता और हिन्दू होने चाहिए ।

आल इण्डिया सिख स्टूडेंट फेडरेशन का एक सक्रिय नेता अवतारसिंह खालसा भी गिरफ्तारी से पहले पाकिस्तान से प्रशिक्षण लेकर आया । उसने बताया कि पाकिस्तानी अफसरों की सलाह रही कि तोड़फोड़, हत्या और आतंक फैलाने की जितनी वारदातें होंगी उतनी ही जल्दी खालिस्तान बनेगा । नेताओं की हत्याओं से दंगे भड़केंगे, हड़तालें होंगी और अराजकता फैलेगी । इसके लिए जरूरी है कि हत्याओं का सिलसिला रुके नहीं । गुरुद्वारों पर कब्जा कर अकालियों को—सिखों को काटो ताकि सिखों में आतंकवादियों की दिलेरी पर विश्वास हो ।

ऐसे दिशा-निर्देश प्रशिक्षण पाए आतंकवादियों की डायरियों में भी दर्ज मिले हैं । एक दूसरे को डाली गई चिट्ठियों में भी ऐसे सन्देशों का आदान-प्रदान हुआ है । सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह प्रकाश में आई है कि उन युवकों के साथ पाक अफसरों ने घोर अमानवीय व्यवहार किया जो उनके बताये रास्ते पर चलने को तैयार नहीं थे ।

गिरफ्तार किये गये आतंकवादियों ने इस बात की पुष्टि की है कि २२ नवम्बर १९८५ को फैसलाबाद में पाक अफसरों को गोली चलानी पड़ी जब कुछ सिख युवकों ने 'समलैंगिक व्यवहार' करने को मजबूर किये जाने पर बगावत कर दी । चश्मदीद खेरा कोटली के १७-वर्षीय युवक बलविंदरसिंह ने जानकारी दी है—'जब ११ युवकों ने उस रात जेल से भागने की कोशिश की तो फौजी पुलिस ने गोली चलाई जिससे गुरदासपुर (सोहल) के जोगिन्दरसिंह की मौत हो गई।

बाद में ३३ सिख युवक रहस्यमय ढंग से जेल से गायब हो गए जिनके बारे में आज तक पता-ठिकाना नहीं मिला । इस जेल में बगावती युवकों को जबरन पेशाब पिलाये जाने से कई सिख युवकों ने खुदकशी भी की । इन घटनाओं को पाक अफसरों ने गुप्त रखा ।

एक दूसरी जेल सियालकोट की है जहां हाल ही में प्रशिक्षण शुरू हुआ है । वहां कुछ सिख युवकों ने निशान साहिब खड़ा करने की कोशिश की तो कट्टरपन्थी मुसलमान पुलिस अफसरों ने उसे जला कर राख कर दिया । इसके विरोध में अनशन भी जबरदस्ती तुड़वा दिया गया । कनाडा और अमेरिका में पकड़े गये सिख आतंकवादियों ने कबूल किया है कि उन्हें पाकिस्तान से नैतिक और आर्थिक सहयोग मिल रहा है । टोरंटो से छपने वाले साप्ताहिक अखबार 'परदेसी पंजाब' ने २२ नवम्बर १९८१ के अंक में छापा है कि पंजाब से पाकिस्तान जाने वाले हर सिख को सरकार एक हजार रुपए महीने की सहायता करती है । वहां बड़ी संख्या में फौजी प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।

इसी अखबार ने तीन जनवरी १९८६ के अंक में छापा कि पाकिस्तान ने दो नए प्रशिक्षण कैंप रनकीरा (हाजीपीर के निकट) और चीराट में बनाये हैं जहां दो-दो सौ सिख आतंकवादियों को प्रशिक्षण

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह : कुछ यादें

-अवद्य स्नातक-

कुल मिलाकर मैं पांच मास तेरह दिन गुलबर्गा, चंचलगुड़ा (हैदराबाद) निजामाबाद और संगारेड्डी की जेलों में रहा। (बाद में स्व० इन्दिरा गांधी ने संगारेड्डी से लोकसभा का चुनाव जीता था) कारावास की कुछ घटनाएं याद आ रही हैं जिनका उल्लेख पाठकों के लिए रोचक होगा। ५ मार्च को होली के दिन शोलापुर कैंप में हलवा-पूरी खाकर हम चले थे। शाम को गुलबर्गा जेल में पहुंचने पर हाथ पर ज्वार की कच्ची-पक्की रोटियां और लोहे के तसले में मिर्ची की रसेदार तेल में छुंकी लहसन भरी तरकारी खाने को मिली। पानी पीने के लिए लोहे का गोल डिब्बा (जिसे वहां चम्बू कहते हैं), जमीन पर सोने के लिए ६×३ फुट का टाट और ओढ़ने के लिए (गर्मियों में) काला कम्बल मिल गया।'

अगले दिन से हवन के लिए अनुमति और घी-सामग्री मिलने लगी। तीसरे दिन जेल के भीतर अदालत लगा कर सजा सुनाने के बाद बाहर से साथ लाये गये कपड़े, चप्पल आदि जमा कर लिये गये और धारीदार दोसूती कपड़े की एक जोड़ी टोपी, पाजामे, कुर्ते व गले में लटकाने के लिए तार में पिरोई काठ की एक टिकटिकी मिली। उसके ऊपर कैदी का नम्बर, सजा की दफा, शुरू व खत्म होने की तारीखें व सजा की अवधि खुदी रहती थीं। कुर्ते की छाती पर कैदी का नम्बर लिखा रहता था।

जेल में एक दिन अपने अमले के साथ हैदराबाद के मोहतमिम (कमिश्नर) नवाब साहब मुआयना करने आए। हम लोग वहां की चिलचिलाती धूप में नगे पैर टोकरियों में सिर पर भारी पत्थर तोड़ने के लिए ले जा रहे थे। कुछ साथियों को उन पत्थरों को छोटे लोहे के छल्ले में से पार होने लायक पत्थर तोड़ने का का काम मिला था। मैंने आगे बढ़कर अभिवादन करके कमिश्नर से मारुजा (आवेदन) करने की अनुमति मांगी, और कहा कि हमारी सजा बामशक्कत (सपरिश्रम) जरूर है परन्तु हमें यहां धूप में और वह भी नगे सिर पर बोझ उठवाकर दुगुनी मशक्कत दे दी गई है। मेरे यह कहने पर जेल से रबर टायर की चप्पलें धूप में काम करने वालों को मिल गईं। जब हम ६२ लोगों को सपरिश्रम सजा मिली थी, उनमें साठ साल से ऊपर के लोगों को सूत में बल देने के लिए चर्खे दे दियेगये और बहुत मजबूत लोगों को २० सेर प्रतिदिन अनाज हाथ चक्की से पीसने अथवा कोल्हू में बैल की जगह तेल पेरने का काम मिला था। मैं उन दिनों शारीरिक दृष्टि से औसत से भी ज्यादा कमजोर था, अतः मुझे यह काम नहीं मिला।

गुलबर्गा जेल में हमारा जेलर एक अधेड़ उम्र का मुसलमान था। अपना पौरुष दिखाने के लिए वह हाथ के पंजों के बल मोर की तरह चलकर दिखाता था और अपनी ४ बीवियों व १५ बच्चों का हाल सुनाता था।

निजाम की पुलिस और जेलों के यूरोपियन इंस्पेक्टर-जनरल हालिन्स के हैदराबाद जेल में मुआयने के लिये आने पर समस्त राजनैतिक कैदियों की एक परेड हुई। इस परेड में प्रत्येक कैदी को लोहे का तसला, चम्बू मांजकर अपने टाट-कम्बल और कपड़ों के साथ गले में तौक और पैर में बेड़ी डालकर लाइन में खड़ा होना होता था। हालिन्स पहले यू०पी० पुलिस में था और कहते हैं कि काकोरी केस के अभियुक्तों को पकड़ने का श्रेय उसे मिल चुका था। सामने आने पर हालिन्स ने पूछा "कहां से आए हो ?" गुरुकुल वृन्दावन बताने पर वह बोला कि "इतनी सुन्दर जगह से यहां क्यों आ गये? वहां तो मोर बहुत नाचते हैं।" उर्दू में मेरा उत्तर था "जनाब के दीदार के लिए मैं यहां आया।" फिर मैंने एक मारुजा पेश करते हुए हालिन्स से कहा—मेरा वजन जेल में आने के बाद दस पौंड घट गया है अतः जेल के कायदे के हिसाब से मुझे स्पेशल डाइट दी जानी चाहिए। उसका उत्तर था कि यदि जेल का खाना पसन्द नहीं तो जेल से छूटकर (माफी मांगकर) घर चले जाओ।

बात आई गई हो गई। अगले दिन अस्पताल में एक सिपाही बैरक में आकर मेरा कैदी नम्बर पूछकर डाक्टर के पास ले गया। असल में बात यह हुई कि क्योंकि मैंने डाक्टर की शिकायत की थी, हालिन्स ने डाक्टर को निकाल देने की धमकी दी थी और कहा कि तुम नियमों पर क्यों नहीं चलते ? वस्तुतः यह डाक्टर सिर पर तुर्की टोपी लगाये, माथे पर एक सौ ग्यारह का तिलक लगाये और कानों में सोने का कुंडल पहने एक हिन्दू था। डाक्टर ने कहा कि तुम लोग यहां हिन्दुओं की रक्षा करने आए हो या हमें नौकरी से निकलवाने आए हो ? वस्तुतः मेरा कैदी नम्बर (कुर्ते पर छपा नम्बर) देखकर मुआयने के समय नोट कर लिया गया था। बाद में डाक्टर ने मेरे कहने पर बारी-बारी से चार साथियों की स्पेशल डाइट बांध दी। इससे हम लोग आपस में स्पेशल डाइट के आठ मोटे परांठे, उड़द की दाल तथा चार किलो दूध बांट कर खाने लगे।

पाकिस्तान के नापाक इरादे

(पृष्ठ १ का शेष)

किया जा रहा है। पाकिस्तान सरकार ने इन दोनों खबरों की तरफ ध्यान दिलाये जाने पर भी खण्डन नहीं किया।

भारत सरकार ने पाकिस्तान का ध्यान अलगाववादी सिख नेताओं जगजीतसिंह चौहान, गंगासिंह ढिल्लों और अजिन्दरपालसिंह से गाहे-बगाहे पाकिस्तानी राजनयिकों से होने वाली मुलाकातों की तरफ खींचा। यही लोग अमेरिका में 'वर्ल्ड सिख आर्गनाइजेशन' की पत्रिका 'सिख न्यूज' छापते हैं। इसमें पाकिस्तानी कम्पनियां—यहां तक कि पाकिस्तान सरकार के आर्डनेंस कारखाने तक अपने विज्ञापन छपवा कर आर्थिक मदद दे रहे हैं।

पाकिस्तान सरकार के अन्तरराष्ट्रीय प्रसारण में खालिस्तान की मांग को काफी प्रचारित किया जाता है। अमेरिका में सुने गए चैनल ४७ पर पाक सरकार ने २९ मार्च १९८६ को १२.१० बजे दिन को दूसरे कार्यक्रम रोक कर सिख कल्चरल सेंटर के सेक्रेटरी बलदेवसिंह का खालिस्तानी प्रचार कार्यक्रम प्रसारित किया। इसी तरह टोरंटो में सुने जाने वाले प्रसारणों में जगजीत सिंह चौहान को सन्देश सुनाये जाते हैं। पंजाब में देखे जाने वाले टी०वी० कार्यक्रमों में गाहे-बगाहे पाकिस्तान पंजाब की हिंसक वारदातों को तोड़ मरोड़ कर प्रसारित करता है।

सूत्रों का कहना है कि स्वर्ण मन्दिर में अप्रैल में पंथिक कमेटी द्वारा की गई खालिस्तानी घोषणा पाकिस्तानी खुफियाओं के दबाव का ही नतीजा थी। इसी तरह जब पंजाब से हाल में आतंकवादी खदेड़े जा रहे थे तो नए जत्थे भेजकर मुक्तसर कांड कराया गया।

ऐसा समझा जा रहा है कि सिख युवकों का संगठन आल इण्डिया सिख स्टूडेंट फेडरेशन पाकिस्तानी खुफिया विभाग के सबसे ज्यादा नजदीक है जो पंजाब में हड़तालें, नशीली चीजों के प्रसार और कृषि उद्योग को ठप्प करने की पाकिस्तानी साजिश में सक्रिय सहयोग दे रहा है। पाकिस्तानी रणनीतिकों का मानना है कि ऐसे कामों से पंजाब की आर्थिक मजबूती टूटेगी और वह अलगाववादी जाल में फंस जायेगा। दूसरे इससे भारत की अर्थ-व्यवस्था भी चौपट होगी।

यज्ञ लोक मंगल की सर्वोत्तम साधना है

—स्वामी प्रज्ञानन्द

मानसिक प्रदूषण जल एवं वायु के प्रदूषण से भी अधिक खतरनाक है।

इसलिये हृदय की वेदी पर, प्राणों की समिधा द्वारा ज्ञान की अग्नि को प्रज्वलितकर मनकी विकृतिकी आहुति देना वास्तविक यज्ञ है। मन के संस्कार, परिष्कार से ही मानव जाति का जातीय जीवन समुन्नत एवं श्रेयस्कर बन सकता है। यज्ञ का उद्गाता प्राण है, चक्षु अध्वर्यु है, वाणी होता है तथा मन ब्रह्मा है। वस्तुत: मानसिक दोषों, दुरितों से निजात पाने हेतु पशुता की बलि (पशुबलि नहीं) देने के लिए यज्ञ श्रेष्ठतम साधन है। यज्ञ लोक मंगल की सर्वोत्तम साधना है।" ये उद्गार "विश्व प्रज्ञा मिशन" तथा "प्रज्ञा मित्र परिवार" के संस्थापक तथा संरक्षक, अन्तर्राष्ट्रीय सन्त, स्वामी प्रज्ञानन्द ने राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष के उपलक्ष्य में विश्व शान्ति, नि:शस्त्रीकरण एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के उद्देश्य से गायत्री-प्रज्ञा परिवार के तत्त्वावधान में लक्ष्मीनारायण मन्दिर प्रांगण दारेसलाम (तंजानिया पूर्वी) में १०८-कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अभिव्यक्त किये। अपने सारगर्भित एव ज्ञानवर्धक प्रवचनों की शृंखला में उन्होंने कहा कि भारतीय सस्कृति यज्ञमूलक है तथा ज्ञान, कर्म एवं उपासना रूपी त्रिवेणी का संगम है। यज्ञ सार्वभौमिक ज्ञान-विज्ञान का सनातन आधार है। प्राचीन ऋषि "कर्म यज्ञ" द्वारा षोडश संस्कार, शिक्षा, आहार, वस्त्र, गृह, समाज, राज्य, कृषि, पशुपालन, संगीत, भूगोल, ज्योतिष वैद्यक, रसायन, भवन, यन्त्र शास्त्र, वाहन, युद्ध विद्या और पदार्थ-विज्ञान का शिक्षण करते थे। 'ज्ञान-यज्ञ' के माध्यम से ईश्वर-जीव, पुनर्जन्म, कर्मफल, सृष्टि, प्रलय, वर्ण, आश्रम और स्वाध्याय का तथा "उपासना-यज्ञ" द्वारा सदाचार, दया, प्रेम, दर्शन, भक्ति, वैराग्य एव समाधि की आध्यात्मिक शिक्षा से मानव मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना कर उत्कृष्टता का प्रचार-प्रसार करते थे। स्वामी जी ने यह भी कहा कि परमपिता परमेश्वर ने मानव एव यज्ञ को जुड़वां भाई के समान जन्म दिया है और यह व्यवस्था की है कि एक-दूसरे का अभिवर्धन करते हुए परस्पर फूलें और फलें।

उन्होंने कहा कि यज्ञ का प्रधान प्रयोजन यही है कि मनुष्य ईश्वर प्रदत्त विभूतियों, क्षमताओं, विद्या, बुद्धि, समृद्धि एवं प्रतिभा का उपयोग स्वयं के लिए न्यूनतम तथा लोक कल्याण के लिए अधिकतम करे। इसलिए यज्ञ "स्वान्त: सुखाय" की नहीं अपितु "बहुजन-हिताय" "बहुजन-सुखाय" की चिरन्तन आराधना है। यज्ञ आध्यात्मिक समाजवाद का जनक है। सामूहिकता, सहकारिता और एकता की भावना को विकसित करने का पवित्र एव श्रेष्ठ माध्यम है। स्वामी प्रज्ञानन्द ने कहा कि प्राचीन युग में यज्ञों का समग्र विश्व में प्रचलन था। यहूदी भाषा मे यज्ञ कुण्ड को "कैर" तथा चीनी भाषा में "थोम" कहते हैं। यूरोप, ग्रीस स्काटलैण्ड, अफ्रीका एवं अमेरिका महाद्वीपों में यज्ञों का प्रचलन था। नार्वे में पुरातत्त्वीय अनुसंधानों से पता चला है कि हर घर के मध्य में यज्ञ कुण्ड हुआ करता था।

स्वामी प्रज्ञानन्द ने अपने कथन की पुष्टि में यज्ञ की महत्ता एवं उपादेयता के प्रमाण देते हुए कहा कि प्राचीन काल में आयुर्वेद वेत्ता आरोग्य लाभ एवं लोक स्वास्थ्य हेतु 'भैषज यज्ञ", "वर्षा-नियन्त्रण" के लिए "अथर्वण-यज्ञ", सम्पत्ति-सम्पन्नता के लिए "गोमेधयज्ञ" राज्य विस्तार के लिए "अश्वमेध यज्ञ" करते थे। वाराणसी का दशाश्वमेधघाट दस अश्वमेध यज्ञों का स्मृति शेष है। राजतन्त्रीय व्यवस्था के लिए "राजसूय यज्ञ" तथा धर्मतन्त्रीय व्यवस्था के लिए "वाजपेय यज्ञ" किये जाते थे। भगवान् श्री राम का जन्म "पुत्रेष्टि-यज्ञ" से हुआ था तथा उन्होंने रावण पर विजय "विजयेष्टि-यज्ञ" के बाद पाई थी। नई फसल आने पर प्रतिवर्ष "नव सस्येष्टि-यज्ञ" होली रूप में आज भी लोकप्रिय है। प्रत्येक घर में अग्निहोत्र की परम्परा एक अनिवार्य प्रक्रिया थी। भारतीय संस्कृति के सोलह सस्कार यज्ञ-प्रधान थे। फलस्वरूप शरीर को अन्त मे अग्नि के अर्पित कर "अन्त्येष्टि-यज्ञ" आज भी करते हैं। 'यज्ञ' केवल सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में अर्पित करना नहीं है वरन् त्याग, सेवा एवं परोपकार है। इसलिए अध्यापन को ब्रह्मयज्ञ, त्रिकाल सन्ध्या को योगयज्ञ कहते हैं। वर्तमान युग के भूदान यज्ञ, नेत्रदान यज्ञ से सभी सुपरिचित हैं। सार्वजनिक हित के लिए किया गया प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ है।

अग्नि शिखा के ऊर्ध्वगामी होने का अर्थ है सकल्पों, सत्कार्यों एव विचारों को सदैव उन्नत रखना, अग्नि का वस्तुओं को वायुभूत करके बिखेरने का अभिप्राय है अपनी सामर्थ्यों को लोकोपयोगी बनाना, अग्नि का सभी पदार्थों को अग्निमय बनाना अर्थात् पतितों, पीड़ितो एवं सर्वहारा वर्ग को अपनाना, दुरदुराना नही। अग्नि से मिली सभी वस्तुओं की भस्म के रूप में परिणति का सन्देश है जीवन की नश्वरता अर्थात् मृत्यु को अविस्मरणीय रखना एवं प्रज्वलित अग्नि में उष्णता एव प्रकाश का निहित होना। यज्ञ जीवन में पुरुषार्थ एव कर्म निष्ठा को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रतीक है।

उल्लेखनीय है कि गायत्री महायज्ञ के समय दारेसलाम में लघु कुंभ का सा वातावरण बन गया था। त्रिदिवसीय भव्य एव दिव्य आयोजन मे हजारो श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यज्ञ का शुभारम्भ मगल कलश यात्रा से हुआ। अन्तिम दिवस सामूहिक यज्ञोपवीत एवं दीक्षा सस्कार आयोजित किया गया।

दक्षिण अफ्रिका में हिन्दी प्रचार : आर्यसमाज का योगदान-१

—नरदेव वेदालंकार, दरबन—

सन् १९६० से दक्षिण अफ्रिका में भारतीय बसने लगे थे। आजकल इनकी संख्या १० लाख के करीब है, जो सारे देश की बस्ती का २५ प्रतिशत ही है। इन भारतीयों में ५० प्रतिशत दक्षिण भारतीय हैं, जो तमिल और तेलगू भाषी हैं तथा ५० प्रतिशत उत्तर भारतीयों में हिन्दी और गुजराती भाषी हैं। गुजराती भाषियों की संख्या भारतीयों में बहुत कम है।

इसी सदी के प्रारम्भ तक यहां पर भारतीयों के परस्पर व्यवहार की भाषा हिन्दी रही। यहां तमिल भाषियों की संख्या अधिक है। फिर भी जब दो विभिन्न भाषी भारतीय मिलते थे तो हिन्दी में बात करते थे, चाहे वे तमिल-हिन्दी हों, तमिल-गुजराती या तमिल-तेलगू। इस तरह भारतीयों का राष्ट्रभाषा का प्रश्न स्वेच्छया हल हो गया था। इसके लिए न किसी को प्रचार करना पड़ा, न सभा-सोसायटियों में भाषण हुए और न कोई प्रस्ताव पास हुए। यही परिस्थिति भारत में भी थी, परन्तु लोकतन्त्र की घोषणा करने वाले अत्यल्पसंख्यक अंग्रेजदां राजनीतिज्ञों ने अपने स्वार्थ के लिए उसे बदल दिया।

हिन्दी की बागडोर आर्यसमाज के हाथों में

यहां के सभी वर्गों के भारतीयों ने अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के प्रयत्न किये हैं। यहां जो भारतीय आये थे उनमें पढ़े-लिखे बहुत लोग थे। उनकी पढ़ाई के लिए सरकारी या गैर-सरकारी कोई व्यवस्था न थी। जो थोड़ा-बहुत अपनी भाषा जानते थे, घर पर ही अपने बच्चों को कुछ प्रारम्भिक शिक्षा दे देते थे। हिन्दी भाषियों में उस समय तुलसी रामायण का प्रचलन अधिकथा। वे यही एक वस्तु विरासत मे भारत से लाए थे। दिन की मजदूरीके बाद वे सब रातको इकट्ठे होते और रामायणकी कथा सुनते। कथाकारों में गुजराती ब्राह्मण अंबाशंकर महाराज भारत के शिक्षित थे। उनकी कथा बहुत लोकप्रिय थी। सैकड़ों हिन्दी भाषी लोग रात को उनकी कथा सुनने जुट जाते थे।

सन् १९०८ में यहां आर्यसमाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी शंकरानन्द जी पधारे। स्वामी जी यहां जागृति के अग्रदूत माने गये हैं। उन्होंने हिन्दुओं में धर्मभाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम पैदा किया। स्वामी जी के आने से पूर्व ईसाइयत भारतीयों में अपने पांव जमा चुकी थी। पढ़े-लिखे हिन्दू भी ईसाई बन जाते थे। ऐसे लोगों को शीघ्र सरकारी नौकरी मिल जाती थी और उनकी तरक्की भी आसानी से हो जाती थी। इस कारण सैकड़ों लोग ईसाई बनने लगे थे। अनपढ़ भारतीय लोगों में इस्लाम जड़ जमा रहा था। ताजिया उनका मुख्य त्यौहार हो चुका था। ऐसे ही अवसर पर स्वामी शंकरानन्द आर्यसमाज का सन्देश लेकर आये। उनके आगमन से धर्म परिवर्तन की धारा पर रोक लग गई। यह एक तथ्य है कि विदेशों में बसे भारतीयों में जहां-जहां आर्यसमाज पहुंचा, वहां हिन्दू बच गये। जहां आर्यसमाज नहीं गया, वहां शतप्रतिशत भारतीय ईसाई बन गये। मौरिसस के पास का टापू रियूनियन है, जहां दो लाख भारतीय हैं। सभी ईसाई हैं। वैस्ट इन्डीज के जमैका, सेंट लूसिया, ग्रेनेडा आदि की भी यही दशा है। यहां के लोगों के पास न अपना धर्म है, न भाषा, न संस्कृति। सिर्फ उनकी चमड़ी भारतीय होने की चुगली कर देती है।

स्वामी शंकरानन्द जी के प्रचार के प्रभाव से नेटाल में स्थान-स्थान पर आर्यसमाज की संस्थाएं खुलने लगी। यहां हिन्दी पाठशालाएं भी चालू हो गई। स्वामी जी ५ वर्ष यहां रहे और उन्होंने हिन्दू जाति का स्वरूप ही बदल दिया।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजराती थे परन्तु वे प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया था। अतः भारत में और भारत के बाहर भी हिन्दी भाषा का प्रचार आर्यसमाज का एक विशेष कर्त्तव्य बन गया था। हिन्दी का प्रचार सिर्फ भाषा का प्रचार ही न था। वह स्वराज्य, स्वधर्म और स्वसंस्कृति की रक्षा का कार्य समझा जाता था। दक्षिण अफ्रिका में भी आर्य संस्थाओं ने हिन्दी प्रचार को अपना मुख्य कार्य माना था। २० वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इस देश में धार्मिक जागृति की सर्वप्रथम संस्था आर्यसमाज ही थी। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने यशस्वी कार्य किया है।

हिन्दी के उद्धारक स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

भवानीदयाल जी जन्म से दक्षिण अफ्रिकावासी थे। वे यहां के पहले भारतीय थे, जिनकी शिक्षा-दीक्षा भारत में हुई। शिक्षा पाकर वे यहां सन् १९१२ में वापस आये। उनके आगमन से हिन्दी को सहारा मिल गया। वे यहां आर्यसमाज और हिन्दी प्रचार का कार्य करने लगे। उन्होंने स्थान-स्थान पर मातृभाषा की शिक्षा के लिए व्याख्यान दिए, जिसके परिणाम-स्वरूप दरबन, पेंबुलम, ग्लेंको, लेडी स्मिथ, न्यूकासिल, मैरित्सबर्ग, चार्ल्सटाउन आदि नगरों में हिन्दी पाठशालाएं खुल गईं। इस तरह प्रथम बार हिन्दी बच्चों को अपनी मातृभाषा की शिक्षा मिलने लगी। पं० भवानीदयाल जी ने दरबन के क्लेयरएस्टेट उपनगर में हिन्दी आश्रम की स्थापना की और उसे केन्द्र बनाकर वे सारे नेटाल प्रान्त में हिन्दी का प्रचार करने लगे। उनके प्रयत्नों से सन् १९१६ में लेडी स्मिथ नगर में सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ जिसके प्रधान बाबू रघुनाथ सिंह और मन्त्री भवानी दयाल जी थे। दूसरे वर्ष नेटाल की राजधानी मैरित्सबर्ग में बाबू हरदेव सिंह के सभापतित्व में दूसरा अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस प्रकारसे नेटाल में हिन्दी की जड़ जम गई।

इस समय यहां पर श्री आर० जी० भल्ला ने हिन्दी का साप्ताहिक "धर्मवीर" प्रकाशित किया, जिसके सम्पादक पण्डित भवानीदयाल थे। बाद में उन्होंने अपना "हिन्दी" नामक साप्ताहिक पत्र निकाला, जिसके लिए उनकी पत्नी जगरानी जी ने भी बहुत परिश्रम किया। यह पत्र चार वर्ष तक चलता रहा। इससे भी पूर्व महात्मा गांधी "इण्डियन ओपिनियन" साप्ताहिक पत्र निकालने लगे थे, जो भारतीयों का प्रथम समाचारपत्र था। यह मुख्यतया राजनैतिक पत्र था। यह हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती तीन भाषाओं मे प्रकाशित होता था। यह पत्र यहां सबसे लम्बे अर्से तक चला। आगे चलकर इसने अपना हिन्दी संस्करण बन्द कर दिया।

सन् १९२५ मे नेटाल में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। अब तक १५-२० पाठशालाएं चलने लगी थी। इनमें से दो-तीन पाठशालाएं ही ऐसी थीं जिनका सचालन आर्य संस्थाओं के हाथ में न था। वे पाठशालाएं आर्य प्रतिनिधि सभा की निगरानी में कार्य करती थीं। स्वामी भवानीदयाल जी का कार्य क्षेत्र धीमे-धीमे राजनीति बन गया, जिससे हिन्दी प्रचार का काम कुछ पिछड़ गया।

इन वर्षों में यहां आर्यसमाज के कई प्रचारक आये। उन्होंने मातृभाषा की शिक्षा पर बल दिया। ये प्रचारक यहां तीन-चार मास तक ही रहते थे। अतः हिन्दी शिक्षा के क्षेत्र में कुछ ठोस कार्य नहीं कर सकते थे। सन् १९२७ में यहां ठाकुर प्रवीण सिंह जी भजनोपदेशक पधारे। उन्होंने ओपर पोर्ट में रामायण सभा की स्थापना की। वे यहां ३ वर्ष तक ठहरे और पाठशाला मे हिन्दी की शिक्षा देने लगे। प्रवीण सिंह जी संगीत के भी अच्छे ज्ञाता थे। उनकी प्रेरणा से भारतीय संगीत को अच्छा बल मिला। वे संगीत वर्ग भी चलाते थे। उन्होंने गुजराती समाज में 'सूरत आर्य भजन मण्डली" की स्थापना की थी। इससे प्रथम बार गुजरातियों में आर्यसमाज की शिक्षा का प्रचार हुआ। (क्रमशः)

राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्परा

—आदित्यपाल सिंह—

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रीय विचारों से आप सब परिचित हैं। इस विषय में उनका चिंतन उनके ग्रन्थों में यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है। यही नहीं, उन्होंने पहले तो १८५७ की जनक्रान्ति में देश में सर्वत्र घूम घूम कर जनजागरण का कार्य किया और जब यह क्रान्ति असफल हो गई तो उन्होंने अपने चिन्तन-मनन से उसके कारणों की समीक्षा करते हुए जो मार्ग निश्चित किया, उसका क्रियान्वयन ही उनके शेष जीवन में परिलक्षित होता है। वे मानते थे कि 'यथा राजा तथा प्रजा'। अतः अपनी जीवन-सन्ध्या के समय उन्होंने अनेक स्वदेशी राजाओं में राष्ट्रीय विचारों का बीज बोया। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना के उपरान्त उन्हें न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे का पूना से निमन्त्रण मिला, जहां वे २० जून १८७५ को पहुंचे और पूना नगर तथा कैम्प (छावनी) में १० व्याख्यान दिए, जिनमें से पूना नगर में दिये गये १६ व्याख्यानों को स्वयं श्री महादेव गोविन्द रानडे ने लिपिबद्ध कर प्रकाशित किया, जो आज भी मूल मराठी भाषा में (और उनके विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी) उपलब्ध हैं। इन १६ व्याख्यानों में से ५ व्याख्यान भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास और गौरव तथा वर्तमान दुर्दशा के सम्बन्ध में थे। इस प्रकार स्वामी दयानन्द के प्रगतिशील विचारों से न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन्हें अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

बाद में गोपालकृष्ण गोखले जब डेक्कन सोसाइटी में शामिल हुए तो वे महादेव गोविन्द रानडे के सम्पर्क में आए। रानडे की विद्वत्ता, बहुमुखी प्रतिभा, देशभक्ति और चारित्रिक विशेषताओं के कारण युवा समाज को उनके प्रति गहन श्रद्धा थी। गोखले ने उन्हें ही अपना गुरु माना और १९०१ में रानडे के निधन तक यह गुरु-शिष्य का आदर्श सम्बन्ध बना रहा।

१८९६ में गांधी जो भारत के अनेक प्रमुख देशभक्त नेताओं से मिले किन्तु 'प्रथम दर्शन में आसक्ति' उन्हें गोखले के प्रति ही हुई। गोखले को उन्होंने अपना राजनैतिक गुरु मान लिया और लिखा कि "राजनीतिक धर्मों में मैं जो-जो गुण चाहता था, उन सभी गुणों के निधान मुझे वही (गोखले) लगते थे। स्फटिक जैसे निर्मल, मेमने जैसे मृदुल, सिंह जैसे शूरमा और अतिशयता के कारण दोष बन जाने की सीमा तक पहुंची हुई अहेतुक उदारता के धनी। इसमें मेरा कुछ भी आता-जाता नहीं कि इनमें से वे कुछ भी न रहे हों। मेरे लिए तो इतना ही काफी था कि मैं उनमें किसी भी ऐसे दोष का पता नहीं पा सका, जिस पर मैं असार आपत्ति या कुतर्क करता। मेरे लिए तो वे राजनैतिक क्षेत्र के सर्वाधिक और सर्वथा पूर्ण पुरुष रहे हैं और रहेंगे।"

इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन की परम्परा में स्वामी दयानन्द आरम्भिक सिरे पर बैठे हुए महापुरुष सिद्ध होते हैं और दूसरे सिरे पर महात्मा गांधी जिनका अनुकरण आज सारा भारतवर्ष कर रहा है। वैसे यदि इस परम्परा को और पीछे की ओर बढ़ाया जाये तो हम पायेंगे कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी विरजानन्द (१७७९-१८६८) के भी ऐसे ही विचार थे। १८५७ के क्रान्तिकारियों की मथुरा के तीर्थगाह पर आयोजित सभा को भाद्रपद सं० १९१३ वि० (१८५६ ई०) में सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि 'आजादी जन्नत और गुलामी दोजख है। अपने मुल्क की हुकूमत गैर-मुल्की हुकूमत के मुकाबिले में हजार दर्जा बेहतर है। दूसरो की गुलामी हमेशा बेइज्जती और बेशर्मी का बायस है। हमें किसी कौम से और किसी मुल्क से कोई नफरत नहीं। हम तो खल्के खुदा की बहबूदी के लिए खुदा से दुआ मांगते हैं। मगर हुक्मरान कौम खासकर फिरंगी जिस मुल्क में हुकूमत करते हैं, उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ इन्सानियत का बर्ताव नहीं करते और अपनी अच्छाई की कितनी भी तारीफ करें मगर उस मुल्क के बाशिन्दों के साथ मवेशियों से गिरा हुआ बर्ताव करते हैं। खुदा की खलकत में सब इन्सान भाई-भाई हैं।

मगर गैर-मुल्की हुक्मरान कौम उन्हें भाई न समझकर गुलाम समझती है। किसी भी मजहबी किताब में ऐसा हुक्म नहीं है कि अशरफुल मखलूकात के साथ दगा की जाए—अल्लाह के हुक्म के खिलाफवर्जी की जाये। इस वास्ते मातहत लोगोंका न कोई ईमान है न उनकी शान है। फिरंगियों में बहुत-सी अच्छी बातें भी हैं। मगर सियासी मामले में आकर वे अपने कौल-फेल को न समझकर फौरन बदल जाते हैं और हमारी अच्छाई और नेक-सलूकी फौरन ठुकरा देते हैं। इसकी अमन वजह यह है कि वे हमारे मुल्क को अपना वतन नहीं समझते। हमारे मुल्क का बच्चा-बच्चा उनकी खैर-ख्वाही का दम भरे फिर भी वे अपने वतन के कुत्ते को हमारे इन्सानों से अच्छा समझते हैं। यही सब कमी का बायस है। उन्हें अपने ही वतन से मुहब्बत है। इसलिए हम सब बाशिन्दगाने हिन्द से इल्तिजा करते है कि जितना वे अपने मजहब से मुहब्बत करते हैं, उतना ही इस मुल्क के हर इन्सान का फर्ज है कि वह वतन-परस्त बने और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई-भाई जैसी मुहब्बत करे। तब तुम्हारे दिलों में वतन-परस्ती आ जाएगी। हिन्द के रहने वाले सब आपस में हिन्दी भाई हैं और बहादुरशाह शहनशाह हैं।"

इसी प्रकार स्वामी विरजानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी पूर्णानन्द ने ५ अक्तूबर १८५५ ई० को गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर मेले के क्षेत्र से कुछ दूरी पर आयोजित २५०० व्यक्तियों की एक सभा में प्रधान पद से बोलते हुए कहा था कि 'मुल्क को फिरंगी के भरोसे मत छोड़ो। वे बेदीन हैं। इनका कोई कौल-फेल नहीं है। ये राजा नहीं, बल्कि तिजारती लुटेरे और अरपस्त हैं। ये हमारे मुल्क की तमाम मखलूक के हर इन्सान की जिन्दगी के दुश्मन है और ये तुम्हारा खून और गोश्त खा जायेंगे। इनसे बचो। ये तुम्हारी नस्लों को नेस्तनाबूद कर देंगे और मुल्क में खुद आबाद होकर रहेंगे। इन्हें अपने मुल्क से निकालो।" स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी ओमानन्द सरस्वती के विचार हमें लिपिबद्ध रूप में उपलब्ध नहीं होते किन्तु १८५७ की जनक्रान्ति के प्रेरक वस्तुतः वे ही थे, ऐसा नवीन खोजों से पता चला है। इस क्रान्ति के समय उनकी आयु लगभग १६० वर्ष थी जो कोई असम्भव बात नहीं है, क्योंकि २ दिसम्बर १९८५ के अखबारों में छपा है कि 'पाकिस्तान के सर्वाधिक बूढ़े १६६ वर्षीय व्यक्ति पीर सैयद अब्दुल जिलानी का शनिवार को इस्लामाबाद में निधन हो गया। उनका जन्म १८१६ ई० में बगदाद में हुआ था।"

रांची का कैथोलिक चर्च आतंक फैला रहा है

—शिवकुमार गोयल

ईसाई मिसनरी एक ओर विदेशी धन के बल पर गरीब व असहाय हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन तथा उनमें अलगाववादी भावनायें पैदा करने के राष्ट्रद्रोही कार्यों में संलग्न हैं और दूसरी ओर अपने इस काम में बाधा मानकर आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद्, वनवासी कल्याण आश्रम आदि हिन्दू संगठनों के विरुद्ध निराधार दुष्प्रचार में लगे हुए हैं।

रांची क्षेत्र कैथोलिक चर्च द्वारा धर्मपरिवर्तन के षड्यन्त्र का प्रमुख केन्द्र रहा है। आर्यसमाज और अन्य संस्थायें इसकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का भण्डाफोड़ करती रही हैं। कैथोलिक चर्च बौखला कर अपनी मासिक पत्रिका में हिन्दू संगठनों के विरुद्ध निराधार व उत्तेजनात्मक बातें प्रकाशित कर वातावरण बिगाड़ रहा है। पत्रिका के सम्पादक फादर जौन लाकरा के विरुद्ध रांची के पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा २९५ के अधीन मामला दर्ज कराया गया और 'फादर' की गिरफ्तारी की गई।

जहर मिलाने का झूठा प्रचार

इस पत्रिका के जुलाई अंक में यहां तक लिख मारा गया कि ईसाई हिन्दुओं से दवाई, मिठाई या अन्य खाद्य सामग्री कदापि न लें, क्योंकि उसमें जहर मिला हो सकता है। पत्रिका ने हिन्दुओं का बहिष्कार किये जाने की भी सलाह दी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर ईसाइयों के उन्मूलन की योजना का निराधार आरोप लगाया गया है।

पत्रिका में जसपुर (मध्य प्रदेश) क्षेत्र में हिन्दू युवती द्वारा अपनी ईसाई सहेलियों को विषाक्त मिठाई दिये जाने जैसी बिल्कुल बेबुनियाद खबर छापकर दो सम्प्रदायों के बीच घृणा पैदा करने का प्रयास किया गया। म० प्र० सरकार ने जांच के बाद इसे भ्रामक पाया तो फादर लाकरा ने कह दिया—"मैंने इस तरह की अफवाह सुनी थी।"

कुटिलता की पराकाष्ठा

इस पत्रिका के मई अंक में यहां तक लिखा गया कि हिन्दू संगठनों के सदस्यों ने आदिवासी महिलाओं को फुसलाकर वेश्यालयों में पहुंचाने की योजना बनाई है। इसका उद्देश्य ईसाइयों का उन्मूलन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती समय-समय पर ईसाई मिशनरियों द्वारा छल-कपट और कुटिलता के बल पर हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन और उनमें अलगाव की भावना पनपाने की योजनाओं का भण्डाफोड़ करते रहे हैं। अब उनकी चेतावनी सबके सामने सच्ची सिद्ध हो रही है।

छोटा नागपुर मंडल के आयुक्त ने जब ईसाई मिशनरियों की राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को गम्भीरता से लिया और केन्द्रीय सरकार को उनकी संदिग्ध गतिविधियों की रिपोर्ट भेजी तो कैथोलिक चर्च ने उनके विरुद्ध भी आरोप लगाने शुरू कर दिये। चर्च अब "उलटा चोर कोतवाल को डांटे" वाली कहावत चरितार्थ कर रहा है।

ईसाई मिशनरियों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में वृद्धि

भारत कल्याण मंच के श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल के अनुसार हाल ही में बिहार विधानसभा के एक विधायक श्री ब्रजकिशोर नारायण सिंह ने राज्य के मुख्यमन्त्री श्री दुबे को ६ पृष्ठों का एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने मुख्यमन्त्री का ध्यान इस गम्भीर तथ्य की ओर आकृष्ट किया कि ईसाई मिशनरियों ने प० चम्पारण जिले का भारत-नेपाल सीमा से लगा एक विशाल भूखण्ड अपने कब्जे में कर लिया है, और वहां वे स्थानीय आदिवासी नवयुवतियों को "सांस्कृतिक कार्यक्रमों' के लिए प्रशिक्षित करने के बहाने अपने यहां रखते हैं, मगर वास्तव में उनके देह का शोषण कर उन्हें ईसाई बनाकर उन्हें ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए विवश करते हैं।

इन मिशनरियों का सरगना कोई फादर थामस चकालाकल बताया जाता है, जिसने अनेक आतंकवादियों को नौकर रख रखा है और वह उनके जरिये इलाके के जमींदारों और किसानों दोनों को आतंकित करता है। इलाके के नागरिकों को भारत सरकार के विरुद्ध भड़काने के उद्देश्य से वह उन्हें ऐसी फिल्में भी दिखाता है, जो बताती है कि आतंकवाद के जरिये सरकारों के कैसे तख्ते पलटे जा सकते हैं। उसने २० ग्राम पंचायतों में अनेकानेक प्रकल्प शुरू कर रखे हैं, जिनमें वह वजीफे देकर तरुणों को नौकरियों पर रखता है और उन्हें सरकारी ऋण दिलाकर उसके अहसान से उनसे धर्म प्रचार का कार्य कराता है। लोगों और सरकार दोनों को 'ब्लैकमेल' करने के उद्देश्य से उसने एक तथाकथित "बंधुआ मजदूरी उन्मूलन समिति" भी स्थापित कर रखी है। इसके जरिये वह इन मजदूरों से ईसाईधर्म का प्रचार भी कराता है। यह प्रसन्नता की बात है कि राज्य सरकार ने उसके कारनामों की तहकीकात करके उसकी अनेक शिक्षण-संस्थाओं को, जिनका इस्तेमाल वह शिक्षा देने से अधिक धर्मान्तरण करने और राष्ट्रविरोधी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के लिए करता था, बन्द कर दिया है। जरूरत इस बात की है कि उसके तमाम कारनामों की खुफिया पुलिस से जांच करवाकर उसे कानून के हवाले कर दिया जाना चाहिए।

पिछले दिनों थाईदेश मे विश्वभर के ईसाई मिशनरियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, जिसमें अविकसित और भारत जैसे अर्द्धविकसित देशों में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करने की अनेक नई और कारगर नीतियां निर्धारित की गई थीं। भारत मे सक्रिय ईसाई मिशनरियों ने इन नीतियों पर अमल करना शुरू कर दिया है और अब अपना पूरा ध्यान ग्रामीण इलाकों तथा हिन्दुओं के उन अरक्षित तथा वश में करने योग्य वर्गों पर लगा दिया है, जिनमें पढ़े लिखे बेरोजगार युवक-युवतियां, परित्यक्त विधवाएं, असहाय हरिजन आदिवासी और कैदी तक शामिल हैं।

आज लगभग ६,००० ईसाई मिशनरी संस्थाएं और उनके १,१३,००० कार्यकर्त्ता हिन्दुओं को ईसाई बनाने में लगे हैं। इन मिशनरियों द्वारा संचालित मिशनरी स्कूलों में पढ़ने वाली हिन्दुओं की नयी पीढ़ी अपने धर्म, समाज तथा रीति-रिवाजों को हीन दृष्टि से देखने लगती है। ईसाई संस्कृति के प्रसार को रोकने के लिए हर हिन्दू परिवार में धार्मिक व नैतिक शिक्षा, पूजा-प्रार्थना तथा त्योहारों और रीति-रिवाजों का निष्ठापूर्वक पालन आवश्यक है।

युग की दशा

परिस्थिति प्रतिकूल पन्थ पग पग परन्तु बढता जाता है।
मानचित्र सा कौन, कहाँ से मौन मन्त्र पढता जाता है।।
मानस मन मे, मान सरोवर, उच्छृखल जिसकी तरग है।
मकर भङ्गिमा, मकर मीन, तल्लीन लहर, उत्तुङ्ग भग है।।
चित्त कुरग, जटिल जडता मे, ज्वलित जाल जडता
जाता है।।१।। मान
प्रकृति का उपकार भुला कर दुर्लभ गुण बन गये अगारे।
करके मानव का विकास युग महानाश के खडा किनारे।।
अन्धकार छा रहा धरा पर, ज्यो-ज्यो दिन चढता जाता है।।२।।
मानचित्र
स्वर्णिम पट को, पलट तरुण-सी, उदित हुई चहु दिशि
अरुणाई।
किन्तु करुण क्रन्दन, स्पन्दन, जन मन मे है कैसा दुखदायी।
दावानल मे कूद, दोष औरो के सिर मढता जाता है।।३।।
स्वय लिपट जाये लपटो मे, छूटेगा जिस दिवस धमाका।
बम, राकेट, विमान, मिसाइल कील कील बन रूप धुए का।।
कितना 'व्याकुल' अन्ध कुए का, स्वय रूप चढता
जाता है।।४।।
मानचित्र सा मौन कही से कौन मन्त्र पढता जाता है।

प्रकाशवीर व्याकुल'

तपोवन मे राष्ट्र-भृत् यज्ञ २ से ५ अक्तूबर तक

देहरादून। वैदिक स धन आश्रम, तपोवन, देहरादून मे राष्ट्र भृत् यज्ञ २ अक्तूबर से ५ अक्तूबर तक आयोजित करने की तैयारिया आरम्भ हो गई है। इसमे चारो वेदो से चुने हुए राष्ट्र विषयक मन्त्रों से विशेष यज्ञ किया जायेगा। वेदपाठ करने वालों मे अन्य विद्वानो के अतिरिक्त गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारी भी होगे।

इस अवसर पर लगाये जाने वाले योगसाधना शिविर के सचालक योगधाम ज्वालापुर के स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती होगे।

यजमान बनने के इच्छुक सज्जन तथा देविया कुण्ड आरक्षित कराने के लिए महात्मा दयानन्द जी से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

घना में वैदिक मिशन की स्थापना

नई दिल्ली। श्री रेस्ट चार्लस अकोह समय रहते कुछ गोरों से मिले जिन्होंने उन्हे प्रेरणा दी कि वे हिन्दुत्व के सम्बन्ध मे अध्ययन कर।

श्री अकोह को पता चला कि किसी हिन्दू सम्प्रदाय का धर्मान्तरण मे विश्वास नही। कुछ समय बाद उन्हे आर्यसमाज के सम्बन्ध मे जानकारी मिली जिसकी शाखाए पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका मे काम कर रही है। वे दक्षिणी अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्पर्क मे आये। सभा सचालको ने उन्हे प्ररणा दी कि वे हिन्दू धर्म की मुख्य धारा मे सम्मिलित हो जायें। श्री अकोह ने यह जानकारी आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि श्री ब्रह्मदत्त स्नातक को हाल ही मे दी। स्नातक जी ने दो महाने तक अफ्रीका के अनेक देशो का दौरा किया था।

श्री अकोह घना के निवासी हैं। अब श्री अकोह ने घना की राजधानी अकरा मे आर्य वैदिक मिशन और कल्याणकारी होम सर्विस ट्रस्ट की स्थापना की है। सारा काम ब्रह्मचारी ओम् चेतन्य नामक एक सज्जन की देख रेख मे चल रहा है।

श्री अकाह हिन्दी और सस्कृत के गहन अध्ययन के लिए भारत आना चाहते हैं। हमारे (अफ्रीका मे हो रहा राष्ट्रमण्डलीय सम्मेलन सम्भवत उनके इस इरादे का पूरा करने मे सहायक हो सके।

आर्यसमाजो के चुनाव

—आर्यसमाज मालीपुरा, खेर (अलीगढ)—प्रधान श्री लोकमन लम्बरदार, मन्त्री श्री पाखीराम मत्सगी और कोषाध्यक्ष श्री छोटेलाल

—आर्यसमाज गाधी नगर, दिल्ली—प्रधान श्री यदुनन्दन अवस्थी, मन्त्री श्री शिवशकर गुप्त और कोषाध्यक्ष श्री रामपालसिंह।

आर्यसमाज आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी—प्रधान श्री यज्ञदत्त गोतम मन्त्री श्री शिवमित्र शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्रीमती रामदुलारी अग्रवाल।

—आर्यसमाज शाहपुरा जिला भीलवाडा—प्रधान श्री माधोसिंह न्याति मन्त्री श्री अम्बालाल सिद्धान्तभास्कर और कोषाध्यक्ष श्री रामस्वरूप बेनी।

—आर्यसमाज सीतापुर—प्रधान श्री ओम्प्रकाश अग्रवाल, मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य और कोषाध्यक्ष श्री कृष्णकुमार आर्य।

—आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर—प्रधान न्यायमूर्ति श्री भगवतप्रसाद बेरी और मन्त्री आचार्य कृष्णराव बाब्ले।

दानदाताओ की सूची

पंजाब के पीडितो की सहायता के लिए २१ जुलाई से ४ अगस्त तक प्राप्त राशियो की सूची नीचे दी जा रही है। सभी दानदाताओ का धन्यवाद। आप भी अपनी सहायता राशि शीघ्रातिशीघ्र भेजे।

श्री हसराज सोनी व श्रीमती धननदेवी सोनी ज्वालापुर	२००)
श्री परमानन्द जी, हौजखास नई दिल्ली	१०१)
श्री बसवराज छत्रप्पा, बसव कल्याण बीदर	१००)
श्री मोतीलाल जी, बरसा	१००)
आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली	१०४०)
आर्यसमाज ग्रीन पाक, नई दिल्ली	२५००)
श्री मूलचन्द जी बजाज, गुरुदासपुर	५०)
श्री मास्टर कर्णसिह जी, कादरपुर	१६०)
श्री डी० बी० देवस्थली बम्बई	१००)
श्री जुगुतराम जी आय छेरकापुर	१५१)
श्री आर्य प्रह्लादगिरि जी निगा	२१)
लाला धमदास जी सराफ विलासपुर	५१)
श्री गगाराम जी चौधरी विलासपुर	५१)
आयसमाज डाक पत्थर देहरादून	१०१)
आर्यसमाज भानकोटा महबूबाबाद	१०१)
श्री रामचन्द्र आर्य पुरोहित, आ स पुनवाडी	१००)
श्री जी० कृष्णप्पा, बीड	२५)
श्री वके सुबन्ना, तलगू पडित, कडप्पा	३५)
कु० हेमा आर्य जी० बी० रोड, दिल्ली	११)
श्री अनुपम आर्य , ,	११)
श्री खुशीराम गुप्त, जी० बी० रोड दिल्ली	२८)
श्री रामचन्द्र सक्सेना, जयगज, अलीगढ	५०)
श्री ओम्प्रकाश चित्रा विहिनगाव नासिक रोड	२१)
मन्त्री, आयसमाज पासे	०)
सवयोग	५१२८

....तो मुक्तसर कांड न होता

पुलिस ... अभ्यस्त अपराधी है, जिसने बाल ... पर पगडी पहन लेता ... जिनके नाम है ... आपको खालिस्ता ... किया बता ... गया था। उस पर एक ... आपको पुलिस अफसर बताता था। इस तरह उसने एक देहाती की राइफल छीन ली। इसने कई लोगो से सम्पक बना रखा था। फरीदकोट की सेशन जज श्रीमती हरीन्द्रकौर सन्धु क सामने इसने जमानत की दरखास्त दी तो फरीदकोट के सीनियर पुलिस सुपरिण्टेण्डण्ट ने स्वय अदालत मे जाकर जज से उसे जमानत पर रिहा न करने को कहा और बताया कि वरयामसिह के विरुद्ध उग्रवाद के अनेक मामले है। किन्तु अदालत ने पुलिस अफसर की बातो पर ध्यान न दिया और श्रीमती सन्धु ने उसे रिहा करने का आदेश दे दिया। पुलिस ने सोचा कि रिहाई पर उसे फिर गिरफ्तार कर लिया जाये अत उसने जेल के बाहर पहरा लगा दिया। किन्तु एक सप्ताह तक वरयामसिह बाहर नही आया। अफसरो की मिलीभगत से उसे रात को चुपचाप रिहा कर दिया गया। पुलिस का कहना है कि रात की रिहाई कानून के खिलाफ है।

इसके बाद इसका नाम तीन मामलो मे आया है—फरीदकोट के कांस्टेबल की हत्या औरमोड मे एक नम्बरदार पर हमला। इसके बाद एक और व्यक्ति की हत्या। पुलिस का कहना है कि जज हरबसलाल जुनेजा की हत्या भी इसी ने की है। उसका यह भी कहना है कि यदि अदालत ने उसे रिहा न किया होता तो मुक्तसर की घटना न होती। इसमे भी वरयामसिह और साथियो का हाथ है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख्य पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष . २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ३५] | श्रावण शु० १३ म० २०४३ | रविवार १७ अगस्त १९८६

फौलादी बनो या खत्म हो जाओ !

भारत में पहली बार एक भूतपूर्व सेनाध्यक्ष को मार डाला गया। दो मोटर साइकलों या स्कूटरों पर बैठ कर चार हत्यारे आए, और चलती हुई कार पर निशाना दाग कर आगे बढ गए। पीछे एक गार्ड बन्दूक लेकर बैठा था, पर वह कुछ नहीं कर सका, क्योंकि कोई गार्ड बन्दूक की गोली से तेज नहीं हो सकता, और महज शक में हर आते-जाते स्कूटर-सवार पर गोली नही चला सकता। हत्यारे निश्चय ही हजारों मील दूर से बन्दूकें और ट्रेनिंग लेकर आए थे और उन्हें तथा उनके आकाओं को पता था कि जनरल अरुण वैद्य की हत्या का क्या असर होगा। हो सकता है कि मौत की बजाय इस मौत के नतीजों में हत्यारों की ज्यादा दिलचस्पी हो।

जनरल वैद्य की हत्या इस बात को रेखांकित करती है कि मोटर साइकल सवारों और बन्दूकबाजों का खतरा पंजाब, दिल्ली और कनाडा तक सीमित नहीं। मौत पुणे मे भी हो सकती है। क्या यह एक क्रूर व्यंग्य नही है कि देशद्रोहियों को पीठ थपथपाने वाले प्रकाशसिंह बादल और गुरचरणसिंह तोहड़ा जिस समय त्रस्त लोगों के आंसू पोंछने या उन्हे भड़काने पश्चिम दिल्ली जाना चाह रहे थे, उसी समय कुछ लोग जनरल वैद्य के आवागमन का अध्ययन पूरा कर रहे थे और अपनी बन्दूके साफ कर रहे थे। अमृतसर के डायनामाइट को वे पुणे ले जा रहे थे और धुएं और खून के भौगोलिक दायरे का विस्तार कर रहे थे। पश्चिम दिल्ली तो छोड़िए, क्या उन्हें पश्चिम भारत की भी कोई फिक्र रही होगी।

हत्यारों और उनके संरक्षको को मालूम होगा कि इस मौत का असर सेना पर भी होगा। इसलिए हमें मानकर चलना चाहिए कि कोई बहुत शातिर ताकत है, जो न सिर्फ भारत के नागरिकों का साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण चाहती है, बल्कि जो भारत की सेना का भी साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण चाहती है। देशी या विदेशी संकट के समय ऐसा ध्रुवीकरण देश के दुश्मनों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

जो परिस्थिति बन रही है, उसमें एक बात साफ है। नरम दिल और संशयभरे हाथों से एक पिलपिले राष्ट्र-राज्य को चलाना अब ज्यादा दिन सम्भव नहीं होगा। भविष्य में विकल्प दो ही हैं। या तो हम एक सख्त और फौलादी देश बने या खत्म हो जाएं। नरम दिल और नरम हाथों वाली शैली जारी रही तो १९४७ जैसे नर-संहार से बचना असम्भव हो जाएगा।

पंजाब में पांच साल से जो चल रहा है, वह निश्चय ही बीसवीं सदी का सबसे अकारण, ऊलजलूल और पागल सिलसिला है। पांच साल के धैर्य के बाद अब उसके खिलाफ एक हिन्दू आंधी उठना चाहती है। यह आंधी सफल हुई, तो देश ईरान बन जाएगा, और असफल हुई तो देश सड़ते खून के अनगिनत पोखरों मे बंट जाएगा। आतंकवाद के साथ सख्ती से निपटने वाली और सख्ती से निपटती नजर आने वाली केन्द्रीय सरकार ही इस आंधी को रोक सकती है। अतः समझदार सिख और हिन्दू यदि साझा कयामत का दिन टालना चाहते हैं, तो सरकार की सख्ती का उन्हे हृदय से समर्थन करना चाहिए। अब वह दिन आ चुका है, जब सख्ती ही सबसे नरम विकल्प बचा है, क्योंकि नरमी हमे निश्चय ही ले डूबेगी।

अब तक बरनाला सरकार की मजबूरियों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र की नीति तय होती रही और यह एक हद तक गलत नही था। लेकिन अब समय आ गया है जब बरनाला की मजबूरियों के मुकाबले हमे उन भयावह मजबूरियो को तोलना चाहिए, जिनका सामना शीघ्र ही राजीव गांधी को करना पड़ सकता है। बरनाला की खातिर राजीव की सरकार आतंकवाद का खुला या दबा छिपा समर्थन करने वाली सिख राजनीति के प्रति इतनी नरम तो नहीं हो सकती कि पंजाब के हिन्दुओं की सुरक्षा का जिम्मा वह छोड़ दे, और शेष भारत मे वह एक प्रलयकर आंधी को निमन्त्रण दे दे।

सिर्फ जनरल वैद्य की हत्या के कारण या सिर्फ मुक्तसर हत्याकांड के कारण हम इतने स्याह नतीजे नही निकाल रहे। लेकिन

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्रावणी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर 'सार्वदेशिक' का विशेषांक

श्रावणी और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर 'सार्वदेशिक' का २४ और ३१ अगस्त का अंक विशेषांक के रूप मे प्रकाशित होगा। २४ पृष्ठ के इस अंक में दोनों पर्वों से सम्बन्धित उच्च कोटि की रचनाये प्रकाशित की जा रही हैं।

आज अंक लेना न भूलिये।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

बरनाला किसके प्रतिनिधि हैं--सरकार के या पन्थ के?

स्वामी आनन्दबोध का सीधा प्रश्न : देहरादून के संवाददाता सम्मेलन में वक्तव्य

देहरादून, १० अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने आज यहां पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में विघटनवादी और अलगाववादी प्रवृत्तियां पनप रही है। इनके पीछे विदेशी सत्ता का हाथ है। उन्होंने कहा कि पंजाब में अकाली आन्दोलन के माध्यम से भारत को कमजोर करने के वे सभी उपाय किये जा रहे हैं, जिनसे देश की अखण्डता और सुरक्षा को आघात लगे। स्वामी जी ने बरनाला सरकार से सीधा प्रश्न किया कि क्या यह सरकार भारत के संविधान के अनुरूप है। आपने कहा कि भारत के सविधान मे ऐसे किसी भी दल को चुनाव मे भाग लेने का अधिकार नही है, जो धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त को स्वीकार न करता हो। बरनाला सरकार एक साम्प्रदायिक पन्थिक सरकार है। सुरजीत सिंह बरनाला ने जबसे सत्ता हाथ में ली है, वे केवल सिख समुदाय के हित की ही बात करते है। ४८ प्रतिशत हिन्दू हैं किन्तु शासन में उनकी भागीदारी नही। अभी कल ही बरनाला साहब ने कहा है कि मेरी सरकार धर्मनिरपेक्ष है,क्योंकि मेरे मन्त्रिमडल में दो हिन्दू और एक मुसलमान मन्त्री हैं।

स्वामी आनन्दबोध ने पूछा कि बरनाला साहब यह बतायें कि जब हिन्दुओ की सख्या ४८ प्रतिशत है, उनके दो मन्त्री हैं किन्तु मुसलमानों की पंजाब मे कितनी सख्या है? वे तो केवल एक प्रतिशत हैं। पिछले दिनों बरनाला साहब ने पाच ग्रन्थियो के सामने उपस्थित होकर खुले आम अपने आपको सरकार का प्रतिनिधि नही बल्कि पन्थ का प्रतिनिधि स्वीकार कर गुरुद्वारों मे सात दिन तक जूते साफ किये। यह देश के साथ एक क्रूर मजाक है। श्री बरनाला ने चुनाव के तुरन्त बाद हजारों उग्रवादियों को रिहा करके उग्रवाद को नई हवा दी है। ऐसी स्थिति में हमारी मांग है कि बरनाला सरकार को अपदस्थ करके पंजाब मे राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये और संविधान मे सशोधन करके पंजाब और कश्मीर को सेना के सुपुर्द किया जाये।

स्वामी जी ने यह भी कहा कि जैसलमेर से राजस्थान, पंजाब और कश्मीर की पाकिस्तान से लगती सीमा पर सुरक्षा-पट्टी का निर्माण किया जाये और वहां भूतपूर्व सैनिक परिवारों को बसाया जाये। आपने देश के विपक्षी दलों से अपील की कि सीमा सुरक्षा अधिनियम का सर्वसम्मति से समर्थन करके अपनी देशभक्ति का प्रमाण दें। स्वामी जी ने कहा कि देश की एकता और सुरक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं।

स्वामी आनन्दबोध ने चेतावनी दी कि मुस्लिम अलगाववादियों को डालरों के रूप मे अरबों रुपयों की सहायता मिल रही है, जिससे वे उत्तर, पूर्व और पश्चिम भारत में प्रत्येक देहाती क्षेत्र में नई मस्जिदों का निर्माण कर रहे है। आपने कहा कि इस्लामी देश भारत के सेकुलरवाद को समाप्त करके अपने शहाबुद्दीन, बनातवाला और अन्य साम्प्रदायिक मुस्लिम नेताओं के माध्यम से भारत का इस्लामीकरण करना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश के १२ जिलो में भी यह हवा तेजी से चलाई जा रही है और बाबरी मस्जिद के नाम पर देश में दंगे भड़काने का कुत्सित षड्यन्त्र रचा जा रहा है। कश्मीर में पिछले दिनों हिन्दुओं के सेकड़ों मन्दिर तोड़कर, वहां के अल्पसख्यक हिंदुओं को लूटकर और उनकी सम्पत्ति को आग लगाकर जो घृणित कार्य किया गया, वह भी इसी षड्यन्त्र का भाग था।

स्वामी आनन्दबोध ने भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई के वक्तव्य का समर्थन करते हुए कहा कि पंजाब अथवा दक्षिण भारत में, जहां भी जो भी उग्रवादी या आतंकवादी अलगाववादी भावना पैदा करके देश को खण्डित करना चाहते हैं, ऐसे लोगों का एक ही इलाज है कि उन्हें गोली से उड़वा दिया जाये।

अन्त में स्वामी जी ने देश की राष्ट्रवादी जनता से अपील की कि वह संगठित होकर इस खतरे का मुकाबला करे और राजीव सरकार से कहा कि उन्होने संविधान की जो शपथ ली है, उसे दृढ़ता से पूरा करे।

पंजाब पीड़ित सहायता कोष : दानदाताओं की सूची

सोनाला की आर्यसमाज और ब्रह्माकुमारी केन्द्र ने पंजाब के पीड़ितो की सहायता के लिए ७०१ रुपये जमा करके भेजे हैं। विवरण इस प्रकार है—

नाम	राशि
श्रीयुत प्रकाश खानदेश	५०)
श्री फकीरचन्द विश्वकर्मा	५१)
,, प्रदीप बडोदे	२०)
,, ओम्प्रकाश खंडेलवाल	३१)
,, प्रदीप मुलज	११)
,, महादेव इंगले	५)
,, त्र्यम्बक मेहुनकर	५)
,, गजानन देशमुख	५)
,, समाधान मेहुनकार	५)
,, लक्ष्मण धर्मकार	१०)
,, हरिभाऊ भीवटे	५)
,, सत्यनारायण महाराज	११)
श्रीयुत श्रीराम लकेरकार	५)
श्री सोबाजी बाघोड़े	५)
,, फकीरा जी आर्य	५)
,, गजानन अमनकार	५)
,, दामोदर तिड़के	२१)
,, सत्यनारायण महाराज	२१)
,, अमोलकचन्द वर्मा	२१)
,, बालू ठोकणे	११)
,, विजय खडेलवाल	११)
स्टेट बैंक, सोनाला	४२)
मराठी शाखा	३१)
प्रशान्त मैडिकल स्टोर्स	२१)
श्री रामचन्द्र गांवडे	२१)
,, लक्ष्मण लखोकार	११)
डा० जैन	११)
डा० इन्दौरिया	११)
श्रीयुत श्रीकृष्ण कुकड़े	६)
श्री नरहरि कुकडे	७)
,, विजय जायसवाल	८)
मुलडा किराना शाप	५)
सतीश किराना	५)
श्री गोपालदास माली	५)
,, कृष्ण राहणे	५)
,, रामदास कोढे	५)
,, सरनम् खारोडे	५)
,, वसन्त राहने	५)
,, प्रहलाद खंडे	५)
गणेश किराना	५)
श्री सेवकराम खंडे	५)
,, सुधाकर सोनोड़े	५)
,, हरिदास बडोदे	५)
,, बेडखे साहब	५)
,, शिवनारायण जायसवाल	५)
,, वासुदेव इंगले	५)
एस० के० टेलर्स	५)
सुरेश स्टोर्स	५)
श्री धनराज व्यास	५)
सुरेश किराना	५)
श्री पांडव गुरुजी	५)
,, तायडे गुरु जी	५)
,, दीघे गुरु जी	५)
,, टेकाडे गुरु जी	५)
,, अब्हाले गुरु जी	५)
,, रमेश देशमुख	५)
रमेश पान सेंटर	५)
श्री शिवलाल जायसवाल	५)
श्री महादेव लखोकार	५)
सर्वयोग	७०१)

आजादी का जनगीत—झंडा ऊंचा रहे हमारा

—दीनानाथ दुबे—

यह एक अजीब विडम्बना है कि जिस गीत ने करोड़ों लोगों के मानस को झंकृत किया, उनकी सोती चेतना को जगाया और जो देश के कोटि-कोटि जनों के कंठों से एक साथ गूंजा, उस "झंडा ऊंचा रहे हमारा" गीत के रचयिता स्व० श्यामलाल गुप्त पार्षद के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। इस प्रसंग में स्व० आचार्य नरदेव शास्त्री ने वर्षों पहले "आर्यमित्र" में लिखा था कि "झंडा गीत" सारा राष्ट्र गा रहा है परन्तु उसके रचयिता कौन हैं, यही नहीं मालूम।

इसके उत्तर में प्रो० रामदास गौड़ ने दैनिक "आज" में लिखा था कि इस गीत के रचयिता श्री श्यामलाल गुप्त पार्षद हैं और वे कानपुर जिले के नरवल गांव के निवासी हैं। राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा कि था, पार्षद जी को कोई जानता हो या नहीं, उनके झंडा गीत को सारा देश जानता है।

इस गीत की रचना पार्षद जी ने कैसे की और कांग्रेस महासमिति ने इसे कैसे स्वीकार किया, इसकी भी अपनी कहानी है। यह गीत अमरशहीद गणेश-शंकर विद्यार्थी के आग्रह पर लिखा गया था।

चार मार्च, १९२४ की बात है पार्षद जी विद्यार्थी जी से मिलने उनके अखबार "प्रताप" के कार्यालय में आये थे। इससे पहले 'प्रताप' में उनकी कई ओजस्वी कविताएं प्रकाशित हो चुकी थीं, जिनकी भूरि-भूरि प्रशंसा लोगों ने की थी।

विद्यार्थी जी ने पार्षद जी से एक झंडा गीत लिखने का अनुरोध किया। उन दिनों लोगों को उत्साहित करने और राष्ट्रीय पताका लेकर साथ में गाते हुए चलने के लिए एक झंडा गीत की जरूरत महसूस की जा रही थी। विद्यार्थी जी ने कहा कि देशप्रेम की भावना से एक ऐसा गीत लिख दो, जिसे हम जुलूस में और सभा-सम्मेलनों में गा सकें।

काफी दिन बीत गये पर पार्षदजी विद्यार्थीजी के अनुरोध को पूरा न कर सके एक दिन विद्यार्थी जी ने मजबूरन गुस्से का इजहार करते हुए कहा, "तुम खाक कविता करते हो—एक झंडा गीत तो लिख नहीं सकते। मुझे हर कीमत पर गीत चाहिए। मैं सवेरे तुम्हारे पास आदमी भेज दूंगा।"

पार्षद जी चिंतित हो गए। विद्यार्थी जी उनका बहुत ही सम्मान करते थे पर उनका रौद्र रूप पार्षद जी के लिए चिन्ता का कारण बन गया। आखिर कैसे लिखें? वह भी कल सुबह तक।

पार्षद जी इसी उधेड़-बुन में घर लौटे और रात में गुनगुनाने लगे। काफी रात बीत गयी। फिर उन्होंने यह गीत लिखा—

राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो-नमो,
भारत जननी के गौरव की अविचल शाखा नमो-नमो
कर में लेकर सुरमा, कोटि-कोटि भारत सन्तान।
हंसते-हंसते मातृभूमि के, चरणों पर होंगे बलिदान।
हो घोषित निर्भीक विश्व में, तरल तिरंगा नवल निशान।
वीर हृदय हिल उठे, मार ले भारतीय क्षण में मैदान।
हो नस-नस में व्याप्त चरित्र, सूरमा शिवा का नमो-नमो।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो-नमो।
उच्च हिमालय की चोटी पर, जाकर इसे उड़ायेंगे।
विश्व विजयिनी राष्ट्र पताका, गौरव से फहरायेंगे।
समरांगण में लाल लाड़ले, लाखों बलि-बलि जायेंगे।
सबसे ऊंची रहे, न इसको नीचे कभी झुकायेंगे।
गूंजे स्वर संसार सिन्धु में, स्वतन्त्रता का नमो-नमो।
भारत जननी के गौरव की अविचल शाखा नमो-नमो।

पार्षद जी ने गीत तैयार तो कर लिया, परन्तु उन्हें सन्तोष नहीं था। इसी सोच-विचार में उन्हें नींद आ गई। रात को फिर जाग गये और मां सरस्वती की आराधना कर गुनगुनाने लगे। फिर उन्होंने यह गीत रचा—

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला मातृभूमि का तन-मन सारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

इस झंडे के नीचे निर्भय होवे महाशक्ति का संचय
बोलो भारत माता की जय सबल राष्ट्र है ध्येय हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

आओ प्यारे वीरो आओ देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ प्यारा भारत देश हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा

इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जावे
विश्व विजय करके दिखलावें तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

सुबह होते ही विद्यार्थी जी के आदमी पार्षद जी के पास पहुंचे तो पार्षद जी ने दोनों गीत देते हुए कहा, "दो गीत हैं। विद्यार्थी जी को जो पसन्द हो रख लें।"

गीतों को पढ़कर विद्यार्थी जी खुशी से उछल पड़े। उन दिनों राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन कानपुर में थे। विद्यार्थी जी उनसे मिले और पार्षद जी का झंडा गीत दिखाया। टण्डन जी ने दोनों गीतों की मुक्त कण्ठ से सराहना की।

शुरू में झंडा गीत में ६ पद थे। टण्डन जी ने पार्षद जी की सहमति से दो छन्द हटा दिये और इसी रूप में चार छन्दों का झंडा गीत प्रचलित हुआ। जिस समय इस गीत की रचना हुई थी, ९५ प्रतिशत भारतवासी अशिक्षित थे। कानपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन में, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती सरोजिनी नायडू ने की थी, यह गीत गाया गाया और पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इसे राष्ट्रीय गीत के रूप में घोषित किया। पार्षद जी ने जो झंडा गीत तैयार किया, वह कोटि-कोटि कंठों से गाया जाने लगा।

पार्षद जी का जन्म १८९६ में हुआ। हिन्दी मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद वे कानपुर में अध्यापक हो गये। फिर हिन्दी साहित्य सम्मेलन से विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे बाल्यकाल से ही रचनाएं करते थे।

१९२१ में गांधी जी के आह्वान पर वे राजनीति में आये और दर्जनों बार जेल गये तथा जुर्माने भरे। कई वर्ष तक फतेहपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे एवं जिला परिषद् कानपुर के सदस्य भी रहे। परन्तु राजनीति उन्हें रास नहीं आयी। वे राजनीति को धोखा-धड़ी का काम मानते थे।

आजादी के बाद पार्षद जी की आर्थिक हालत अच्छी नहीं थी। उन्हें देखकर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने अपने एक लेख में लिखा—"अगर आज पार्षद जी किसी दूसरे देश में पैदा हुए होते तो चांदी उनके आंगन में बरसती, सम्मान उनके पैरों पर लोटता होता लेकिन यह कृतघ्न देश पार्षद जी की याद तक नहीं करता।"

लेख की इतनी तीव्र प्रक्रिया हुई कि उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें पेन्शन देना शुरू कर दिया।

विद्यार्थी जी के आग्रह पर रचा पार्षद जी का गीत एक अमर कीर्ति बन गया है और हर वर्ष स्वतन्त्रता दिवस पर पता नहीं कितने स्थानों पर आज गूंजता है।

विदेशी धन पर रोक

सरकार ने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की मांग मानी

बात बहुत पुरानी भी है और नई भी है। पिछले अनेक वर्षों से बड़े पैमाने पर हरिजनों, गिरिजनों और अन्य पिछड़े वर्गों को शिक्षा, समाज कल्याण, अनाथों और महिलाओं की भलाई के नाम पर बड़े पैमाने पर इस देश में इस्लामी अरब और खाड़ी देशों से, अमेरिका, पश्चिम जर्मनी तथा अन्य ईसाई देशों से और कम्युनिज्म के नाम पर रूस, चीन आदि देशों से आने वाली विशाल धन राशि के उपयोग का आर्यसमाज तथा समस्त राष्ट्रवादी संगठन विरोध करते रहे हैं। गत अप्रैल में लोक सभा में आन्तरिक सुरक्षा राज्य मन्त्री अरुण नेहरू ने लगभग २ अरब रुपये की विदेशी सहायता की सरकार द्वारा जांच कराने की घोषणा की थी। मीनाक्षीपुरम्, रामनाथपुरम् एवं देश के अन्य भागों में सामूहिक धर्मपरिवर्तन की घटनाओं को तब काफी महत्त्वपूर्ण बताया गया था।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) ने ११ अप्रैल को दिये गये उस वक्तव्य के बाद पत्र भेजकर सरकार के इस निर्णय की सराहना की थी।

आर्यसमाज द्वारा लगभग पिछले तीस वर्षों से विदेशी मुद्रा के आयात से देश में हो रही अशान्ति और गम्भीर परिस्थितियों को लेकर सरकार को चेतावनी दी जाती रही है।

श्री शालवाले ने ११ अप्रैल के बाद आठ जून को मध्य प्रदेश के वनवासी क्षेत्रों में विदेशी मिशनरियों की गतिविधियां तेज होने का जिम्मेदार विदेश से आने वाली इस विशाल धन राशि को ही बताया था। ताजा समाचार के अनुसार आर्यसमाज एव राष्ट्रवादी संगठनों द्वारा इस सम्बन्ध में अनेक बार सरकार का ध्यान आकर्षित करने पर उन छत्तीस संस्थाओं को काली सूची में दर्ज कर दिया गया है। वे भविष्य में उक्त विदेशी धन का उपयोग देश में अस्थिरता, साम्प्रदायिक तनाव फैलाने, दगे, धर्मपरिवर्तन करने के लिए आर्थिक सहायता देना आदि कामों के लिए नहीं कर सकेंगी। स्मरण रहे कि १९८० में इस प्रकार का २०९ करोड़ रुपयों का विदेशी धन भारत में आयाथा और जो १९८२ में २१३ करोड़ रुपया तक जा पहुंचा और १९८३ और ८४ के आंकड़े जमा किये जा रहे हैं और उनकी मात्रा निश्चय ही अधिक होगी।

सन् १९८५ में ग्यारह ईसाई संगठन आन्ध्र प्रदेश, दिल्ली और महाराष्ट्र में इस प्रकार की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में लगे हुए थे। इसके अतिरिक्त इसी प्रकार की १५ संस्थाओं को सरकार ने रजिस्टर्ड करने से इनकार कर दिया, जो धार्मिक, शैक्षणिक और जनकल्याण के नाम पर काम कर रही थीं। राजनैतिक कार्रवाइयां करने वाली ऐसी संस्थाओं को विदेशी धन लेने की अनुमति नहीं दी गई।

विदेशी सहायता पाने वाली इन छत्तीस संस्थाओं में जमाअतेइस्लामिया (उ० प्र०), दलित कल्याण एसोसिएशन (तमिलनाडु) शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, (अमृतसर), जमाते इस्लामी-ए हिन्द (नई दिल्ली) और हैदराबाद की मजलिसे दामिरे मिल्लत जैसी संस्थाओं के अलावा मुसलमानों और सिखों के अनेक संगठन तथा चीन, नेपाल और रूस समर्थक अन्य संगठन हैं। यहां भी पक्षपात करके अनेक मामलों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को विदेशी धन प्राप्त करने की इजाजत दी जाती रही है।

—महाव्रत स्नातक

भारत देश महान् है

धरती इसकी सोने की, चांदी का आसमान है।
यहीं है पर्वतराज हिमालय, अमृत-तोया गंगा है,
नृत्य यहीं करता बसंत का मौसम रंग-बिरंगा है,
मंद-मंद मलयानिल बहता, यहीं कूकती है कोकिल,
यहीं मोर चितचोर, यहीं पर इन्द्र धनुष सतरंगा है।
है कश्मीर यहीं वो जिस पर जन्नत भी कुर्बान है।
भारत देश महान् है।

बुझा शान्ति का दीप, चली जब हिंसा की भीषण आंधी,
इसी देश में प्रकट हुए तब महावीर, गौतम, गांधी,
'अखिल विश्व परिवार एक है' यह उद्घोष इसी का है,
जहां प्रेम की डोरी टूटी वहां इसी ने फिर बांधी।
दिया इसी ने भयभीतों को सदा अभय का दान है।
भारत देश महान् है।

इसी देश में जन्मे अर्जुन, भीष्म, द्रोण-से सेनानी,
चन्द्रगुप्त, चाणक्य, कृष्ण, विक्रम-से चतुर स्वाभिमानी,
यहीं हुए सांगा, प्रताप-से योद्धा, वीर शिवाजी-से,
धर्म हेतु विष पीने वाले दयानन्द-से बलिदानी।
कौन है जिसे नहीं वीर सावरकर पर अभिमान है?
भारत देश महान् है।

ऐसा प्यारा आर्य देश यह, पावन परम मुक्ति का धाम,
सूरज, चांद, सितारों पर भी लिखा हुआ है इसका नाम,
अहोभाग्य, इसकी गोदी में हमें ईश ने जन्म दिया,
आओ मातृभूमि को हम सब मिलकर 'कामिल' करें प्रणाम
यही हमारा काशी-काबा, यही धर्म-ईमान है।
भारत देश महान् है।

—वल्लभ आर्य 'कामिल'
७२, चाणक्य मार्ग, विदिशा-४६४००१

वेला संकल्पों की आयी

अमर शहीदों की आशाएं,
आओ ! हम सब पूर्ण कराएं,
'भारत माता की जय' ध्वनि से—
स्वतन्त्रता का शुभ्र दिवस यह—
इसने जाग्रत ज्योति जगायी।
वेला संकल्पों की आयी॥

सुख-समृद्धि-सफलतापूरित,
देश बने ऐश्वर्यापूरित,
मां के अन्तस्तल पर अविरल
दूध दही की सरित् प्रवाहित,
भारत के फिर भाग्य-व्योम में—
शुभ्र ज्योत्स्ना है नव छायी।
वेला संकल्पों की आयी॥

प्रगति पथों पर बढ़े स्वदेश,
प्रखर उदित हो ज्ञान-विवेक,
वसुन्धरा पर सर्वोपरि हो—
दिव्य हमारा भारत देश,
जाग उठे, नव आलोकित हो,
पुनः भरत-भू की तरुणाई।
वेला संकल्पों की आयी॥

—राधे श्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

राष्ट्रवादी उपन्यासकार गुरुदत्त के विरुद्ध अनर्गल प्रचार क्यों ?

-शिवकुमार गोयल

श्री गुरुदत्त देश के लोकप्रिय उपन्यासकार ही नहीं अपितु एक बहुत चिन्तक तथा वैदिक दर्शन के अग्रणी अध्येता भी हैं। इतिहास, धर्म, समाज तथा राजनैतिक परिस्थितियों पर उन्होंने १०० उपन्यास लिखकर हिन्दी साहित्य के भण्डार में भारी वृद्धि की है। इन दिनों कुछ कथित वाम-पन्थी व स्वयंभू साहित्यकार उनके विरुद्ध विषैला व भ्रामक प्रचार करने में लगे हुए हैं। यह विवाद उनके ऐतिहासिक उपन्यास "महाकाल" को पंजाबी विश्वविद्यालय (पटियाला) के पाठ्यक्रम से हटाये जाने की मांग को लेकर खड़ा किया गया है।

वामपंथी खेमे के लेखक भीष्म साहनी और खुलकर सिखों के मसीहा बनने का प्रयास करने वाले डा० महीपसिंह जैसे लेखकों ने हस्ताक्षर अभियान चलाकर "महाकाल" को पाठ्यक्रम से हटाये जाने की मांग की है। सबसे मजेदार पहलू यह है कि स्वयं सिख साम्प्रदायिकता की कुंठा से ग्रस्त डा० महीपसिंह को गुरुदत्त हिन्दू साम्प्रदायिकता से ग्रस्त दिखाई दे रहे हैं। "महाकाल" को हटाने की मांग के पीछे केवल यह तर्क दिया गया है कि इसका लेखक कट्टर हिन्दू है। यदि इस उपन्यास मे कुछ आपत्तिजनक बातों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता या इसमें साम्प्रदायिकता को भड़काने वाले कुछ शब्द भी होते तो इस आधार पर विरोध किया जाना कुछ समझ में आ सकता था।

"महाकाल" ऐतिहासिक है

महाकाल की कथावस्तु कल्हण द्वारा रचित "राजतरंगिणी" पर आधारित महाकवि कालिदास की जीवनी है अतः इसमे हिन्दू या मुसलमान से सम्बन्धित कोई प्रश्न आ ही नहीं सकता। फिर भी लेखक को किसी विचार-धारा से सम्बन्धित बताकर उसकी कृति को पाठ्यक्रम से निकालने की मांग उसी प्रकार की है जैसे कोई श्री भीष्म साहनी की किसी अच्छी रचना का इस आधार पर विरोध करे कि वे कम्युनिज्म के अन्धसमर्थक हैं या कम्युनिस्ट देशों से आयातित विचारधारा के पृष्ठपोषक हैं। प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई विचारधारा तो होती ही है। कोई रूस या चीन द्वारा प्रतिपादित कम्युनिज्म का पोषक हो सकता है तो कोई विशुद्ध भारतीय राष्ट्रवाद का। श्री गुरुदत्त भारतीय राष्ट्रवाद के, जिसे वे "हिन्दुत्व" मानने मे गर्व अनुभव करते हैं, पोषक हैं तो इसमें बुरा क्या है ?

गुरुदत्त—एक राष्ट्रवादी व्यक्तित्व

९२-वर्षीय श्री गुरुदत्त एक राष्ट्रवादी व्यक्तित्व हैं। लाहौर में वे पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय और महान् क्रान्तिकारी भाई परमानन्द जी के सम्पर्क में आये तथा स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय हो गये। सन १९२० में वे लाहौर के गवर्नमेन्ट कालिज से त्यागपत्र देकर ला. लाजपतराय द्वारा संचालित नेशनल स्कूल के मुख्याध्यापक नियुक्त कर दिये गये। नेशनल स्कूल के छात्र भगतसिंह प्रख्यात क्रान्तिकारी और शहीद बने श्री गुरुदत्त, शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, बन्दा बैरागी तथा सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर के योद्धाओं की प्रेरक गाथाओं से इन छात्रों को राष्ट्रभक्ति के यज्ञ में सर्वस्व समर्पित करने की प्रेरणा देते थे।

गुरुदत्त जी स्वाधीनता आन्दोलन से किसी न किसी रूप में जुड़े रहे तथा उन्होंने गांधीवादी कांग्रेसियों की क्रान्तिकारियों के प्रति उदासीनता की नीति को निकट से देखा था। इसीलिए सन् १९४२ मे उन्होने "स्वाधीनता के पथ पर" जैसा लोकप्रिय उपन्यास लिखा। भारत विभाजन की विभीषिका को उनके मित्रों व निकट सम्बन्धियों ने भोगा था इसलिए देश के नेताओं द्वारा भारत विभाजन स्वीकार किये जाने के अमिट कलंक का उन्होंने "देश की हत्या" तथा "विश्वासघात" उपन्यासों में सजीव चित्रण किया। विश्वासघात में उन्होंने बंगाल के सुहरावर्दी मन्त्रिमंडल की साम्प्रदायिक नीति का वास्तविक चित्रण किया है।

'सार्वदेशिक' छप रहा था, जब यह समाचार मिला कि गुरुदत्त जी के विरुद्ध किया जा रहा कुटिलतापूर्ण षड्यन्त्र सफल हो गया है—उनकी कृति "महाकाल" पटियाला के पंजाबी विश्वविद्यालय के एम. ए. के पाठ्यक्रम में से हटा ली गई है।

इसे भारतीय प्रेमियों का दुर्भाग्य न कहें, तो और क्या कहें ?

भारतीयता के चतुर चितेरे

गुरुदत्त भारतीय संस्कृति के चतुर चितेरे हैं। आर्यसमाजी संस्कारों में पलने के कारण उन्हें वैदिक धर्म तथा हिन्दुत्व से अनन्य प्रेम होना स्वाभाविक है। देश की युवा पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करते देखकर वे उद्वेलित हो उठते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के कारण भारतीय संयुक्त परिवारों के टूटने से होने वाले घातक परिणामों का सफल व सजीव चित्रण किया है।

गुरुदत्त ने वोटों के लिए पृथकतावादी व शरारती तत्त्वों के प्रति सरकार द्वारा अपनाई गई तुष्टीकरण की घातक नीति के दुष्परिणामों को निकट से देखा है। अतः उन्होंने "स्वराज्यदान", "विश्वासघात" तथा "देश की हत्या" आदि उपन्यासों में इस घातक नीति के कुपरिणामों का सफल चित्रण किया है।

वे कम्युनिज्म को भारत तथा भारतीयता के लिए घातक मानते हैं। कम्युनिज्म की पदार्थवादी विचारधारा से वे तनिक भी सहमत नहीं। 'विलोमगति", "भावुकता का मूल्य", "उन्मुक्त प्रेम" आदि उपन्यासों में उन्होंने कम्युनिस्ट विचारधारा का असली चेहरा प्रस्तुत किया है।

वे कम्युनिज्म के विरोधी और भारतीय लोकतन्त्र के हामी रहे हैं। हिन्दुत्व को वे भारतीयता का पर्यायवाची मानते हैं। इसीलिए वामपंथी लेखक उनके विरोध में कोई न कोई शिगूफा छोड़ते रहे हैं।

कभी कहा जाता है कि श्री गुरुदत्त के उपन्यासों को साहित्य की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता। कभी कहा जाता है कि वे हिन्दुत्व के विचारों के प्रति प्रतिबद्ध हैं अतः उन्हें निष्पक्ष नहीं माना जा सकता। कभी उन्हें हिन्दुत्वनिष्ठ होने के कारण साम्प्रदायिक बताकर उनके तथा उनके साहित्य के विरुद्ध अनर्गल प्रचार शुरू कर दिया जाता है।

उनके जिस "महाकाल" उपन्यास को पाठ्यक्रम से हटाये जाने की मांग की जा रही है, उसका आकलन किया जाये कि क्या उसमें वास्तव में कुछ साम्प्रदायिक बातें हैं ? यदि वह विशुद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है तो उसे किसी गुट-विशेष की मांग पर पाठ्यक्रम से कदापि नहीं हटाया जाना चाहिए। यदि किसी गुट की मांग पर पुस्तकें पाठ्यक्रम में लगाई या हटाई जाने लगीं तो यह परम्परा शिक्षा के लिए घातक ही होगी।

वैदिक ज्ञान-गंगा विश्व के लिए हितकारक-२

—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—

ग्रीक लोगों का परमात्मा 'जीयस' कहलाता है। शब्द-शास्त्र के अनुसार 'जीयस' की व्युत्पत्ति 'डियोस' से हुई है। शब्द-शास्त्रियों ने इसे वैदिक शब्द 'द्यु:' से मिलाया है। संस्कृत में 'स्' के स्थान में विसर्ग हो सकता है, इसलिये 'द्यु:' असल में 'द्युस्'-शब्द है, जिससे ग्रीक लोगों का 'डियोस' या 'जीयस' शब्द बना है जो ग्रीक तथा वैदिक दोनों के यहां परमात्मा के लिये प्रयुक्त होता है।

रोमन लोगों के यहां परमात्मा का नाम 'जुपिटर' था, इसीलिये सिकन्दर को जुपिटर का पुत्र कहा जाता था। जुपिटर का शुद्ध वैदिक मूल शब्द 'द्यु. पितर' है—इसमें 'द्यु: और' पितर ये दोनों शब्द मिल गये हैं। 'द्यु:' का हम ऊपर उल्लेख कर आये हैं, उसी के साथ 'पितर' के मिल जाने से वैदिक 'द्यु: पितर' से रोमन भाषा का 'जुपिटर' शब्द बना है, जो परमात्मा का नाम है।

वेद की गंगा देश-देशान्तर मे कहां तक बही—इसे जानने के लिये भाषा-विज्ञान तथा शब्द-शास्त्र बहुत सहायक हैं। जब वेदों की गंगा दुनिया भर मे आप्लावित होने लगी तो उसके साथ बहुत-कुछ बहता चला गया। भारत के स्मृतिकार 'मनु' महाराज थे। यहूदियों के स्मृतिकार का नाम 'मोजेज' या 'मूसा' है। 'मनु:' की विसर्गों को 'स्' कर दिया जाये, तो 'मनुस्' (मोजेज) हो जाता है जो 'मनु' का अपभ्रंश है। ईजिप्ट का स्मृतिकार 'मेनस्' था, ग्रीक लोगों का स्मृतिकार 'माइनोज' था। ये सब शब्द भारत के 'मनु' के ही रूप हैं।

फिलो नाम के एक ऐतिहासिक हुए हैं। उन्होंने लिखा है कि ईजिप्ट में एक सम्प्रदाय था जिसका नाम 'थेराप्यूट' था। ये 'थेराप्यूट' कौन थे? पैलेस्टाइन में एक धर्म प्रचलित था जिसका नाम 'एसेनीज' था। इस धर्म का प्रवर्तक था हजरत मसीह का गुरु जान दि बैप्टिस्ट। 'ऐसेनीज' धर्म की शाखा ही 'थेराप्यूट' सम्प्रदाय था। थेराप्यूट शब्द बौद्धों के 'थेरपुत्त' का अपभ्रंश है, और प्राकृत भाषा का 'थेरपुत्त'-शब्द संस्कृतके 'ग्रस्थविर-पुत्र' का विकृत रूप है। बौद्ध धर्म की एक प्रसिद्ध शाखा अपने को 'थेरपुत्त' कहती थी। 'थेरपुत्त' जो बौद्ध थे, ईजिप्ट मे जाकर 'थेराप्यूट' कहलाये। उन्हीं से जान दी बैप्टिस्ट ने शिक्षा ग्रहण की, और जो-कुछ उन लोगों से उसने सीखा, उसकी अपनी शिष्य ईसामसीह को शिक्षा दी। तभी बौद्ध धर्म तथा ईसाइयत में अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि सिद्धान्तों की इतनी समानता पायी जाती है, जो मूलत: वैदिक विचारधारा के सिद्धान्त है।

वैदिक-भाषा के एक-एक शब्द में सदियो का इतिहास सिमटा पडा है। मध्य-एशिया में एक प्रजाति थी जिसका नाम कस्साइत था। इसने बैबीलोन को जीत कर उसे अपनी राजधानी बना लिया था। यह १६वी सदी ईसा पूर्व की बात है। इस प्रजापति के देवता 'सूर्य' तथा 'मरुत्' थे, जो वैदिक देवता हैं। इसी कस्साइत जाति के राज्य के उत्तर-पश्चिम में एक मित्तनी तथा दूसरी खतनी जातियां रहती थीं। मित्तनी तथा खतनी जातियां आपस मे झगडा करती थी। ईसा से १२८० वर्ष पूर्व इन दोनों जातियों की आपस मे सन्धि हो गई। यह सन्धि मिट्टी की तख्तियों पर उत्कीर्ण है। यह सन्धि मित्तनी जाति के राजा दशरथ के पुत्र मतियुत तथा खतनी के राजा सुबुलुलिस के बीच हुई थी। पट्टियों पर सन्धि के साक्षी के रूप मे 'मित्र, वरुण, इन्द्र तथा नासत्यौ' देवताओ का उल्लेख है। वेद में मित्र तथा वरुण एक-साथ आते हैं—'शन्नो मित्रः शं वरुणः' इन देवताओ को लिखा भी अपने विशेष ढंग से गया है। 'मित्र' को मि-इत्-रस्, 'वरुण' को व-अर-उ-स्न-उस् 'इन्द्र' को इन्-द-र, नासत्यो को ना-स-अति-इय—इस प्रकार लिखा गया है। वैदिक-काल मे वैदिक पदों को इस प्रकार लिखने और इसी प्रकार पढ़ने की प्रथा थी जो अब तक दक्षिण भारत में प्रचलित है। ये पट्टियां बोगजकाई नामक स्थान पर मिली हैं। इन पट्टियो से सिद्ध होता है कि मित्तनी तथा खतनी प्रजातियां आर्यों की शाखाएं थी, और मध्य-एशिया में वैदिक-धर्म की ध्वजा फहरा रही थी। तभी तो ऋग्वेद के देवताओं को साक्षी में रख कर इन्होने सन्धि की थी।

बोगजकाई में मिट्टी की तख्तियों पर उत्कीर्ण एक पुस्तक मिली है जिसका विषय रथ-संचालन है। इस पुस्तक में पहियों के घूमने के लिए 'आवर्तन्न'-शब्द का प्रयोग हुआ है जो संस्कृत का 'आवर्तन'-शब्द है। इसी प्रकार इस पट्टी पर एक चक्र के लिये 'एकवर्तन्न', तीन चक्रों के लिये 'तेरवर्तन्न', पांच चक्रों के लिये 'पंचवर्तन्न' तथा सात चक्रों के लिये 'सत्तवर्तन्न' शब्दो का प्रयोग हुआ है, जो सब संस्कृत के शब्द हैं।

वैदिक-विचारधारा शब्दो के माध्यम से ही नहीं, विचारों के माध्यम से भी देश-देशान्तर मे फैली है। विचारों के माध्यम से वैदिक विचारधारा जिस प्रकार फैली है, उसे देखते हुए आश्चर्य होता है कि एक ही स्रोत से जन्म लेने वाले विचार और धर्म क्योंकर एक-दूसरे के विरुद्ध रूप धारण कर गये हैं।

विद्वान् लोग संसार की भाषाओं को 'आर्य' तथा 'सेमेटिक'—इन दो भागों मे बांटते हैं। इसी प्रकार धर्म भी 'आर्य' तथा 'सेमेटिक'—इन दो भागों में बांटे गये हैं। आर्य-धर्म से भारतीय, पारसी, रोमन, यूनानी आदि धर्म आ जाते हैं, सेमेटिक में यहूदी, ईसाई, इस्लाम धर्म आ जाते हैं। अक्सर यह समझा जाता है कि आर्य तथा सेमेटिक का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु गहराई मे जाने से यह बात प्रतीत नहीं होती। आर्य तथा सेमेटिक धर्मों में—वैदिक, पारसी, यहूदी, ईसाई, मुस्लिम धर्मों में—कई ऐसी समानताएं पायी जाती हैं जो धर्म के विद्यार्थी को आश्चर्य में डाल देती हैं। समानताएं तभी समझ मे आ सकती हैं जब यह समझा जाय कि इनका मूल-स्रोत भी वेद ही हैं।

सेमेटिक-धर्मों मे सृष्टि उत्पत्ति के साथ-साथ खुदा और शैतान दोनो का जिक्र पाया जाता है। शैतान का जिक्र यहूदी, ईसाई तथा मुहम्मदी—तीनों धर्मों मे मौजूद है। ओल्ड टेस्टामेंट में लिखा है कि खुदा ने अदन के बगीचे में 'ट्री आफ नौलेज' को रोककर आदम से कह दिया कि इसके फल को मत खाना। शैतान ने जिसकी शक्ल साप की थी, आकर आदम को बहला कर उसे फल खाने को दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि खुदा में और शैतान में तू-तू मैं-मैं हो गई और खुदा ने शैतान को—साप को—शाप दिया कि तू जमीन पर जा गिरेगा और पेट के बल रेंगा करेगा। यह कहानी ज्यों की त्यों ईसाइयत तथा इस्लाम ने स्वीकार करके इसे अपने-अपने धर्मों में सम्मिलित कर लिया। मूल रूप में यह लड़ाई 'ट्री आफ नौलेज' के लिये हुई। खुदा यह चाहता था कि 'ट्री आफ नौलेज' उसी के पास रहे, शैतान ने—या सांप ने—उसे आदमी तक पहुंचा दिया, इसी से सांप को जमीन पर पटक दिया गया। वेदो में इन्द्र और वृत्र की लड़ाई का जिक्र आता है। इन्द्र लगातार असुरों से लड़ता रहता है, असुरों का मुखिया वृत्र है। वेद में 'वृत्र' के लिये 'अहि' शब्द भी आता है। ऋग्वेद, मण्डल १, सूक्त ३२, मन्त्र ३ मे 'इन्द्र' और 'अहि' की लड़ाई का जिक्र पाया जाता है। वहां लिखा है :—

वृषायमाणो अवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।
आ सायकं मघवा अदत्त वज्रं अहन्नेनं प्रथमजाम् अहीनाम्।

अर्थात् 'इन्द्र' ने 'सोम का पान किया और फिर उसने वज्र लेकर 'प्रथम अहि' को मार डाला। 'अहि' जब मरा तब उसका वेद में इस प्रकार वर्णन किया है :—

अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रम्। (ऋग्वेद, १, ३२, ७,)

हाथ-पैर तो हैं नहीं और इन्द्र पर आक्रमण करने चला! इसका नतीजा यह हुआ कि—

अहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः। (ऋग्वेद, १, ३२, ५,)

अर्थात् 'अहि' पृथिवी पर आ सोया, आ गिरा।

(क्रमशः)

दक्षिण अफ्रिका में हिन्दी प्रचार : आर्यसमाज का योगदान-२

हिन्दी भाषा का यह सौभाग्य रहा कि नवम्बर १९४७ मे दक्षिण अफ्रीका मे प० नरदेव वेदालकार का आगमन हुआ। यहा आने से पूर्व वे महात्मा गांधी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा म काम कर चुके थे तथा ८ वर्ष तक सूरत के हिन्दी शिक्षा मन्दिर के आचार्य पद पर रह चुके थे। पडित नरदेव जी का आगमन यहा दरबन की सूरत हिन्दू एजुकेशनल सोसायटी द्वारा गुजराती अध्यापक के रूप मे हुआ। वे इस देश म ३८ वर्ष से गुजराती अध्यापक का कार्य कर रहे हैं और इस समय दरबन वेस्टविल यूनिवर्सिटी मे गुजराती के प्राध्यापक हैं। इस देश मे पधारने के साथ ही उन्होने हिन्दी और आर्यसमाज के क्षेत्र मे नि स्वार्थ भाव से अपनी सेवाए देनी प्रारम्भ कर दी और वे आज तक निरन्तर इस क्षेत्र को अपनाए हुए हैं।

स्वामी भवानीदयाल जी ने इस देश मे हिन्दी की जड जमा दी। परन्तु उनका अधिकाश समय राजनैतिक क्षेत्र मे बीतता था। अत वे हिन्दी पाठशालाओ पर या उनकी शिक्षा पर विशेष ध्यान न दे सके। हर एक पाठशाला स्वतन्त्र थी। कोई विशेष पाठ विधि अपनाई नही गई थी। न परीक्षा प्रणाली चालू थी। न ही इनमे हिन्दी के योग्य अध्यापक थ। प० नरदेव जी ने यहा आते ही इस स्थिति को भाप लिया और उन्होन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक हिन्दी सम्मेलन अप्रैल १९४८ मे दरबन नगर मे बुलाया, जिसमें हिन्दी प्रचार करने वाली सभी सस्थाओ और पाठशालाओ के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। पण्डित जी ने इस सम्मेलन का समारम्भ किया। इस समय तक सनातन धर्म सभा नेटाल की भी स्थापना हो चुकी थी और उसकी तरफ से भी ३-४ पाठशालाए चलने लगी थी। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र मे उनका सहयोग लिया गया।

२५ अप्रैल १९४८ के दिन पडित नरदेव जी के प्रस्ताव से "हिन्दी शिक्षा सघ दक्षिण अफ्रीका" की स्थापना की गयी। पण्डित जी इसके प्रथम सभापति निर्वाचित हुए और आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री सुखराज छोटम तथा सनातन धर्म सभा के प्रतिनिधि श्री बृजभूषण महाराज सघ के सयुक्त मन्त्री चुने गये।

पडित नरदेव जी के नेतृत्व मे शीघ्र ही इस दिशा मे कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। सघ के पदाधिकारियो ने सारे नाताल प्रात का दौरा किया और मातृभाषा की शिक्षा के महत्त्व पर प्रवचन दिये जिसके परिणामस्वरूप नाताल की प्राय सभी सस्थायें सम्मिलित होकर एक नीति से कार्य करने लगी। सघ के कार्य को स्थिरता देने हेतु सन १९४८ म प्रथम नाताल प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन बुलाया गया। इसे बडी सफलता मिली और इस सघ मे सम्मिलित होकर हिन्दी पाठशालाए कार्य करन लगी।

हिन्दी अध्यापन मन्दिर की स्थापना

हिन्दी पाठशालाओ के सुचारु रूप से सचालन मे सबसे बडी कठिनाई थी हिन्दी अध्यापको की। स्वामी भवानीदयाल जी ने हिन्दी शिक्षा का प्रचार तो किया परन्तु हिन्दी के सुयोग्य अध्यापक मिल सकें इसकी कोई योजना अमल मे नही आ सकी थी। हिन्दी शिक्षा का कार्य कितना कठिन था, यह इस तथ्य से स्वय ही स्पष्ट हो जाता है। इतना ही नही, उस समय इस देश मे हिन्दी की पढाई करने वाली बीसियो सस्थाये हिन्दी पाठशालायें चला रही थी। परन्तु आर्थिक दृष्टि मे इनमे स एक भी पाठशाला इतनी समर्थ न थी कि वह एक ट्रेनिग पाये हुए सुयोग्य अध्यापक को भारत से बुला सके। सन् १९४८ मे इस देश की राजसत्ता नेशनलिस्ट पार्टी के हाथ म आई और उन्होने भारत से अध्यापक या प्रचारक बुलाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। नाताल प्रान्त मे प० नरदेव वेदालकार ऐसे अन्तिम व्यक्ति है, जो जनरल स्मट्स और महात्मा गांधी के बीच हुए समझौते के अनुसार अध्यापक बनकर आये हैं। अब तो यह और भी चिंता की बात हो गईहै कि भारतसरकार यहा किसी भी भारतीय भाषा के अध्यापक या धार्मिक प्रचारक का दीर्घ काल तक निवास के लिए स्वीकृति नही देती।

इस बडी कठिनाई को सलझाने का एक ही रास्ता था कि यहा के हिन्दी-भाषी लोगो को प्रशिक्षित किया जावे। इसके लिये सघ ने हिन्दी अध्यापन मन्दिर चालू किया। इसमे प० नरदेव जी वेदालकार की सेवाये ली गई। वे इसके आचार्य नियुक्त हुए। इस अध्यापन मन्दिर मे २२ नवयुवको का दल हिन्दी शिक्षा मे लगा और अक्तूबर १९८४ मे प्रथम बार यहा के युवकों ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की। युवको के प्रशिक्षण का यह कार्य निरन्तर ३५ वर्ष से चल रहा है। इसके द्वारा हिन्दी पाठशालाओ को योग्य अध्यापक मिलने लगे। सन् १९८६ मे इस अध्यापन मन्दिर के वर्ग को यहा के टेक्निकल कालेज से सयुक्त किया गया। यहा भी प० नरदेव जी अध्यापन कार्य करते रहे। उनके निवृत्त होने पर उनकी सुपुत्री उषा बहन देसाई की यहा पर नियुक्ति की गई।

इन सुशिक्षित भाई-बहिनों ने धीरे-धीरे अन्य नगरो मे हिन्दी शिक्षा के प्रौढ वर्ग चालू कर दिये और वर्धा समिति की परीक्षाओ का कार्य सारे देश मे फैल गया। आज देश मे ५० से अधिक व्यक्ति "राष्ट्रभाषा कोविद' परीक्षा मे उत्तीर्ण हो चुक हैं और ६ व्यक्तियो का "राष्ट्रभाषा रत्न' की उपाधि भी मिली है। आज तक वर्धा समिति की इन परीक्षाओ म ३,००० से अधिक व्यक्ति उत्तीर्ण हो चुके हैं। यह एक उल्लेखनीय बात है कि यहा इतने वर्षों के बाद भी गुजराती, तमिल, तेलगू और उर्दू मे कोविद या रत्न जैसी उच्च परीक्षाओ की पढाई की कोई व्यवस्था नही हा पाई।

नाताल प्रान्त की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग हिन्दी शिक्षा का बडा केन्द्र है। यहा प्रथम आर्य प्रचारक स्वामी शकरानन्द जी द्वारा सस्थापित वेद धर्म सभा की ८ हिन्दी पाठशालायें चल रही हैं। यहा हिन्दी के साथ वैदिक सिद्धातो की भी शिक्षा दी जाती है, जिसका श्रेय ब्राह्म महाविद्यालय, लाहौर मे शिक्षित प० जगमोहन सिह जी को है, जो वर्षों तक आचार्य पद पर नियुक्त रहकर नि स्वार्थ भाव से कार्य करते रहे हैं। (क्रमश ,

१५ अगस्त के पुण्य पर्व पर राष्ट्रीय चिन्तन

अब आवश्यकता है सामाजिक क्रान्ति की

-जितेन्द्रनाथ गुप्त-

इस पुण्य पर्व के शुभ अवसर पर हमें उन अमर शहीदों की याद आये बिना नहीं रहती, जिन्होंने अपने को बलिदान कर देश को स्वतन्त्र कराया है। हमें उन सभी शहीदों एवं त्यागी महापुरुषों को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए देश की वर्तमान परिस्थिति पर विचार करना है कि देश ने स्वतन्त्रता के बाद क्या पाया? क्या खोया? और भविष्य में करना है? इस विषय को इन चन्द लाइनों मे नहीं लिखा जा सकता, फिर भी मैं बहुत ही संक्षेप में अपने विचार लिख रहा हूँ।

इतने दिनों में जहां तक देश की प्रगति का सवाल है, देश ने चारों तरफ हर क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की है। यहां तक कि कई क्षेत्र तो आत्मनिर्भर होकर अपना माल निर्यात भी करने लगे हैं। बाकी क्षेत्र भी आत्मनिर्भरता की ओर तेजीसे बढ़ रहेहैं। आशा है कि अगर प्रगति इसी तरह से चलती रही तो देश का हर क्षेत्र आत्मनिर्भर होकर अपना माल निर्यात करने लगेगा जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जहां तक महगाई एवं बेरोजगारी और गरीबी हटाने का सवाल है उसके लिए सरकार को वैज्ञानिक उपायों द्वारा हर वस्तु का उत्पादन बढ़ाने मे पूरा सहयोग देना होगा, परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य बनाकर उन्हें सफल बनाना होगा और अपने पूरे प्रयत्नों द्वारा बड़े उद्योगों के साथ-साथ छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों को बढ़ावा देकर घर-घर मे उनका जाल बिछाना होगा। ऐसा करने से बेरोजगारी कम होगी और धीरे-धीरे गरीबी हटने मे भी मदद मिलेगी।

इस समय भारतवर्ष में अनुशासन एवं देशप्रेम का बड़ा अभाव हो गया है जिससे देश के कुछ क्षेत्रों में अलगाववाद की हवा बड़े जोरों से चल रही है जिससे राष्ट्रद्रोही एव आतंकवादी पनप कर देश में आतंक फैला रहे हैं जिससे देश की एकता को खतरा हो गया है। इन सन्दर्भ मे यह कहना गलत न होगा कि कुछ विदेशी ताकतें अपने षड्यन्त्र द्वारा भारत में अशांति फैलाकर इसे कमजोर करना चाहती हैं। इसलिये इन समस्याओं के समाधान हेतु देश को आधुनिक उपकरणों से सजाना होगा साथ ही देश तथा विदेश मे अपने गुप्तचरों को विशेष रूपसे प्रशिक्षित कर उन्हें आधुनिक यन्त्र एवं पूरे अधिकार देने होंगे जिससे अशान्ति फैलाने वाले लोग चाहे देश के हों चाहे विदेश के हों वे पकड़े जायें और उन्हें भारतीय व्यवस्थानुसार दण्ड दिया जाय जिससे देशी एवं विदेशी षड्यन्त्र की पोल खुलकर सामने आ जाय। इस कार्य में जनता को भी अनुशासित होकर सरकार को पूरा सहयोग देना होगा और ऐसे देशद्रोहियों एवं उग्रवादियों को किसी भी तरह की सहायता एवं आश्रय न देकर उनका सामाजिक बहिष्कार कर उन्हें कड़े नियन्त्रण में लाना होगा। सहायता एवं पनाह न मिलने से ऐसे लोग प्रायः समाप्त हो जायेंगे जिससे भारत की शान्ति और एकता को बल मिलेगा।

इन बातों के साथ हमें अपना भी आत्म-चिन्तन करना होगा। विचार करने से पता चलेगा कि आज देश को आजाद हुए ३४ वर्ष हो गये हैं परन्तु दुःख इस बात का है कि अभी भी हममें कुछ लोग ऐसे हैं जिनके दिलो से पाश्चात्य सभ्यता नहीं गई। क्योंकि लोग भारतीय संस्कृति एव राष्ट्रभाषा से प्रेम न कर अनावश्यक विदेशी भाषा बोलने मे अपनी शान समझते हैं और यहा तक कि अपने बच्चो को जिनसे राष्ट्रभाषा की उन्नति होकर भारत का भविष्य बनना है उन्हें इगलिश मीडियम वाली अंग्रेजी पद्धति में पढ़ाकर अपने को गौरवशाली समझना आजकल समाज में आम रिवाज-सा हो गया है। साथ ही समाज के कुछ लोग अभी भी गरीबो का शोषण कर रहे हैं। भ्रष्टाचार और अफसरशाही का इतना बोलबाला है कि सरकार द्वारा गरीबों को दी हुई सहायता उन तक पूरी नहीं पहुँच पाती जिससे गरीबों की कठिनाइयां सुचारु रूप से कम नहीं हो रही हैं। अमीरों और अफसरों के दिल इतने कठोर हो गये हैं कि उनके दिलो में गरीबों और मध्यम श्रेणी के लोगों के प्रति दया के भाव उत्पन्न ही नही होते क्योंकि समाज का वातावरण इतना दूषित हो गया है कि मनुष्य अपनी मनुष्यता को खोता जा रहा है। लोगों में नैतिकता का अभाव, स्वार्थपरायणता, अंग्रेजियत, भ्रष्टाचार, जातिवाद सम्प्रदायवाद और अलगाववाद जैसी अनेक बीमारियां फैल चुकी हैं जो देश और समाज को कमजोर करती जा रही हैं।

मेरे विचार से ये सभी बुराइयां भारतीय संस्कृति जिसके अन्दर सुधार के सभी तरीके मौजूद हैं उसे भुला देने से आई हैं, क्योंकि इसी भारतीय संस्कृति में पलकर मनुष्य अपने सुकर्मों द्वारा देवता कहलाये जो आज भी पूजे जाते हैं। इसी संस्कृति ने ऐसी महान् विभूतियों को जन्म दिया है जिन्होंने विदेशो मे जाकर भारतीय संस्कृति का डंका बजाया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि एक समय ऐसा था जब भारतीय संस्कृति दुनिया में सम्मानित थी और विदेशी लोग इसे जानने के लिए भारत आते थे। यह संस्कृति गुलामी के दिनों में अनेक कठिनाइयों को झेलने के बाद आज भी अपने पुराने अस्तित्व को कायम रखे हुए है जिससे विदेशी लोग आजभी इसके प्रति आकर्षित हैं और उसकी अच्छाइयों को जानने के लिए उत्सुक हैं। मगर अभी तक अंग्रेजियत के चक्कर में पड़कर उन महान् ग्रन्थों को जिसमें संसार के प्राणिमात्र के कल्याण के उपाय बताने वाली भारतीय संस्कृति का विशद वर्णन है, हम भारतवासी धीरे-धीरे भुलाते जा रहे हैं। इसीलिए आजकल उपरोक्त बीमारियां सारे राष्ट्र को घेरे हुए हैं।

अतः उपरोक्त बुराइयों और लोगों के दिलों से अंग्रेजियत को दूर करने के लिए इस समय विचारों द्वारा सामाजिक क्रांति लाने की नितांत आवश्यकता है।

यह सामाजिक क्रान्ति तभी आ सकती है जब लोगों की विचारधारा में परिवर्तन हो और विचारधाराओं मे परिवर्तन तभी आ सकता है जब शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन होकर भारतीय पद्धति से छात्रों में चारित्रिक सुधार, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीयता और देश के प्रति प्रेम एवं त्याग की शिक्षा दी जाये। साथ में सरकार का भी पूरा सहयोग अंग्रेजी पद्धति से शिक्षा को समाप्त करने में मिले तथा रेडियो एवं टी० वी० द्वारा समाज को बदलने का पूरा प्रचार किया जाए और बुद्धिजीवी लेखकों एवं समाचारपत्रों द्वारा समर्थन करते हुए सामाजिक क्रान्ति के लिए पूरा प्रचार किया जाए। इसके अलावा राष्ट्रीय धार्मिक एव सामाजिक संस्थाएं अपना पूरा दायित्व समझकर कार्य करें। जिस तरह से विदेशियों को हटाकर स्वराज्य लाने मे सभी ने मिलकर कार्य किया था और सफलता प्राप्त की थी, उसी तरह से सभी को मिलकर अटल विश्वास, परिश्रम, निःस्वार्थभाव, त्याग और लगन से सामाजिक बुराइयो को दूर करने का पूरा प्रयत्न करना होगा। तभी लोगों के जीवन से विदेशी पद्धति दूर होकर भारतीय संस्कृति पनपेगी; सामाजिक क्रान्ति सफल होगी एव उपरोक्त बुराइयां दूर होंगी।

अतः इस १५ अगस्त के राष्ट्रीय पर्व पर हम सब मिलकर यह संकल्प करें कि अमर शहीदों के स्वप्नो को साकार करने एवं समाज की बुराइयों को दूर करने और देश की एकता को मजबूत करने को अपना परम कर्त्तव्य समझकर सामाजिक क्रान्ति लाने मे पूरा सहयोग देंगे जिससे स्वस्थ समाज बने और समाज की बुराइयां दूर होकर देश प्रगति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ता रहे।

बरनाला को आतंकवादियों को शह देने वाले बड़े नेताओं के विरुद्ध कार्रवाई से इनकार

नई दिल्ली। जानकार सूत्रों के अनुसार पंजाब की बरनाला सरकार ने केन्द्रीय सरकार का यह आदेश मानने से साफ इनकार कर दिया है कि आतंकवादियों को कथित संरक्षण देने वाले राज्य के पांच मन्त्रियों को हटाया जाये और आतंकवादियों का समर्थन करने वाले विभिन्न गुटों के राजनैतिक व छात्र नेताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत नजरबन्द किया जाये।

इस बात को लेकर केन्द्र और पंजाब की बरनाला सरकार में ठन गई है, क्योंकि केन्द्र ने पंजाब की स्थिति में सुधार के लिए जो भी सुझाव दिये थे, पंजाब सरकार ने उन्हें मानने से साफ इनकार कर दिया है।

बताया जाता है कि नजरबन्दी आदेश जारी किये जाने वाले नेताओं की सूची में ५० नाम शामिल थे, जो संयुक्त अकाली दल, बादल गुट और सिख स्टूडेंट्स फेडरेशन से सम्बन्धित हैं, परन्तु पंजाब सरकार इन संदिग्ध नेताओं के खिलाफ कदम उठाने से हिचकिचा रही है।

यह भी पता चला है कि केन्द्र ने मुख्यमन्त्री श्री बरनाला के पांच सहयोगी मन्त्रियों को हटा देने की राय दी थी। इन मन्त्रियों के आतंकवादियों के साथ सम्बन्धों के बारे में केन्द्र के पास ठोस सबूत हैं। परन्तु मुख्यमन्त्री अकाली दल में विद्रोह के खतरे के कारण इन देशद्रोही मन्त्रियों को गले से लगाये हुए हैं।

बताया जाता है कि गृह मन्त्रालय ने ३० ऐसे उच्चाधिकारियों की एक सूची भी राज्य सरकार को भेजी थी जिनके आतंकवादियों से गहरे रिश्ते बताये जाते हैं। परन्तु राज्य सरकार इन अधिकारियों के खिलाफ भी कोई कार्रवाई करने के पक्ष में नहीं।

बताया जाता है कि बरनाला सरकार ने गावों मे भूतपूर्व सैनिकों को शस्त्रों से लैस करने की जो योजना बनाई है उसका भी गृहमन्त्रालय मे जबरदस्त विरोध हो रहा है, क्योंकि अधिकारियो की यह राय है कि दस हजार सशस्त्र प्रशिक्षित व्यक्तियों की यह फौज कभी भी प्रशासन के लिये सिरदर्द बन सकती है।

गृहमन्त्रालय के अधिकारियो का एक वर्ग पंजाब सरकार द्वारा एकविशेष समुदाय के लोगों को सरकारी नौकरियां, परमिट, प्लाट आदि देने के निर्णय को भी उचित नहीं ठहराता। उनका कथन है कि राज्य सरकार द्वारा बहुसंख्यकों के अन्धाधुन्ध तुष्टीकरण की नीति से अल्पसंख्यकों में सरकार के प्रति शंका और अविश्वास का जो वातावरण बन रहा है, उससे इस वर्ग मे असुरक्षा की भावना बढ़ रही है।

कहा जाता है कि इन अधिकारियों ने अपने आकलन से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को भी अवगत करवा दिया है।

बताया जाता है कि बाबा आम्टे ने पंजाब का दौरा करने के बाद प्रधानमन्त्री को जो रिपोर्ट दी है उसमे इस आरोप की पुष्टि की गई है कि पुलिस प्रशासन के साथ भेदभाव की नीति बरत रही है। वह उन्हें राज्य से भगाने के लिए आतंकवादियों के साथ गठजोड़ करके उनमें असुरक्षा की भावना पैदा कर रही है। हिन्दुओं के प्रति प्रशासन का रवैया घोर पक्षपात पूर्ण है।

स्वतन्त्रता-संगीत

जगे जगे देश यह हमारा

स्वतन्त्रता-स्वर्ग में पिता हे जगे जगे देश यह हमारा।
अशंक मन हो, उठा हुआ सिर, स्वतन्त्र हो पूर्ण ज्ञान जिसमें,
जहां घरों की न भित्तियां ये करें जगत् खण्ड खण्ड न्यारा।
सदैव ही सत्य की तुला से जहां निकलें शब्द शब्द निकले,
छुए सदा हाथ पूर्णता को जहां परिश्रम प्रबल हमारा।
[illegible] सुबुद्धि-धारा न रूढ़ियों के दुरन्त मरु में,
[illegible] विस्तृत विचार-कृति में लगे जहां चित्त का सहारा।
स्वतन्त्रता-स्वर्ग में पिता हे जगे जगे देश यह हमारा॥

—विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बंगला गीत का हिन्दी अनुवाद

सिख जत्थेदार रछपाल सिंह से सतर्क रहें —दलेर

नई दिल्ली। अखिल भारतीय शिरोमणि अकाली दल (मास्टर) के अध्यक्ष जत्थेदार अजबसिंह दलेर ने जत्थेदार रछपाल सिंह की गतिविधियों की न्यायिक जांच कराने की माग की है।

यहां जारी एक वक्तव्य में जत्थेदार दलेर ने रहस्योद्घाटन किया कि जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी द्वारा बैठक में भाग लेने का उन्हें भी फोन पर निमन्त्रण मिला था मगर उन्होंने एक सच्चा सिख होने के नाते उस निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया और गुप्त बैठक में भाग लिये नहीं गये।

उन्होंने कहा कि जत्थेदार रछपाल सिंह को बैठक में नहीं जाना चाहिए था। ऐसी बैठकें व समर्थन राष्ट्र हित व कौम के हित में नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि जत्थेदार रछपाल सिंह ने इमाम की बैठक में जाकर सिखों से धोखा किया है जिसकी जितनी भी निन्दा की जाये कम ही होगी। उन्होंने कहा कि जत्थेदार रछपाल सिंह को दल से इन्हीं विरोधी गतिविधियों के कारण छह साल के लिये निकाला गया है।

जत्थेदार दलेर ने राजधानी के सभी सिखों से अपील की है कि वे जत्थेदार रछपाल सिंह के किसी भी भ्रामक प्रचार से सावधान रहें और किसी भी मुस्लिम प्रदर्शन को अपना समर्थन न दें।

स्वामी जी के नाम राजर्षि राजा रणंजयसिंह का पत्र

आपका संन्यासाश्रम में प्रवेश गौरवपूर्ण और आदर्श कार्य

परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज,

सादर नमस्ते।

आपने परमश्रद्धेय वीतराग यतीन्द्र श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से सन्यास की दीक्षा ले ली, यह आर्य संसार के लिए गौरवपूर्ण और आदर्श कार्य हुआ है। इसके लिए मुहुर्मुहुः हार्दिक बधाइयां हैं।

आप तो सदा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए तन, मन, धन से तत्पर रहते ही रहे हैं। यदि इसी प्रकार चारों आश्रमों तथा सभी वैदिक संस्कारों का नियमित रूप से पालन होता रहे तो भारत पुनः जगद्गुरु माना जाने लगे।

संन्यास-दीक्षा समारोह का शुभ निमन्त्रणपत्र मुझे देर से प्राप्त हुआ। न भी मिला होता, तब भी ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर पहुंचना मेरा कर्तव्य था। इधर कुछ समय से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा, अतः दूर की यात्रा सम्प्रति वर्जित है।

अस्वस्थता के कारण ही मैं गत वर्ष से दिल्ली के अनेक समारोहों में निमन्त्रण पाने पर भी सम्मिलित होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त कर रहा हूँ।

आप आर्यसमाज की शिरोमणि सभा के प्रधान हैं, हम सब के कर्णधार हैं। ईश्वर की दया से सदा आनन्दित रहें, सुदीर्घजीवी हों और वैदिक धर्म की धवल ध्वजा संसार भर में फहरायें, यही हम सब की परमपिता प्रभु से प्रार्थना है।

—रणञ्जयसिंह

अमेठी (जिला सुलतानपुर)

स्वामी आनन्दबोध को बधाई

आर्यसमाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, अलीगढ़ की सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले को संन्यास आश्रम ग्रहण कर और स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के रूप में दीक्षित होकर समाज सेवा में सर्वस्व समर्पित करने के लिये हार्दिक बधाई दी गई तथा संकल्प किया गया कि आर्यसमाज उनके द्वारा निर्दिष्ट राष्ट्र निर्माण के सभी कार्यक्रमों में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करने में प्रयत्नशील रहेगी।

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के बढ़ते कदम

मीनाक्षीपुरम् में दिसम्बर १९८२, जनवरी १९८१ में हुए आर्य महासम्मेलन के पश्चात् इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में वहां दिन प्रतिदिन प्रगति हो रहीहै। इसका मुख्य श्रेय आर्यसमाज मदुरै के कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता श्री एम० नारायण स्वामी को है। आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उनके सतत प्रयत्नों से मदुरै शहर में आर्यसमाज के भवन निर्माण हेतु जमीन मिलने की आशा है।

श्री नारायण स्वामी मुख्य रूप से शुद्धि के कार्य में व्यस्त हैं। गत जुलाई में उन्होंने २ मुस्लिम महिलाओं और ३१ ईसाइयों को शुद्ध करके वैदिकधर्म में दीक्षित किया। शुद्धि कार्य के साथ वे स्थान-स्थान पर जाकर अपने भाषणों द्वारा जनता को वैदिक धर्म की विशेषताओं से परिचित कराते हैं। उनके भाषणों से प्रभावित होकर कुछ अन्य-जात मुसलमान और ईसाई भी वैदिक धर्म में प्रविष्ट हो रहे हैं। यह एक शुभ संकेत है। श्री नारायण स्वामी और अन्य आर्य बन्धुओं के प्रयत्नों से जुलाई मास में ही दक्षिण भारत के प्रसिद्ध नगर तिरुनेल-वल्ली में आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना हो चुकी है। अन्य नगरों और कस्बों में भी आर्यसमाज की स्थापना के प्रयत्न किये जा रहे हैं। वहां के कार्यकर्ता हरिजन-बहुल बस्तियों में जाकर वैदिक(हिन्दू) धर्म की विशेषतायें बताते हैं और हरिजनों को धर्म-परिवर्तन से रोकने का प्रयत्न करते हैं। हमें आशा है कि दक्षिण भारत में आर्य-समाज के ये बढ़ते हुए कदम दूर-दूर तक जायेंगे।

उतारो आरती उनकी

विजय को बाहु बल से जो स्वबल से खींच लाते हैं,
प्रलय में प्राण-संकट में मधुर जो मुस्कराते हैं।
उतारो आरती उनकी···

निबल को कड़ियों की जो सहज ही तोड़ देते हैं,
सभी के सामने पाखण्ड का सिर फोड़ देते हैं।
उतारो आरती उनकी···

स्वरों में भर हृदय-मार्दव सरित् रस की बहाते जो,
पिपासित चित्त को पीयूष गोलों का पिलाते जो।
उतारो आरती उनकी···

जला जो ज्ञान का दीपक अंधेरा विश्व का हरते,
नई उपलब्धियों से नित्य जीवन को सुखद करते।
उतारो आरती उनकी···

उतारो आरती उनकी कि वे ही प्राण हैं जग के,
उन्हें सम्मान दो उनसे सफल जय-गान हैं जग के,
खिलाते फूल वे ही उर जुड़ाते चांदनी बन कर,
उन्हीं को श्रेय इसका है कि पग गतिमान् हैं जग के।
उतारो आरती उनकी···

—धर्मवीर शास्त्री
नई दिल्ली

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत

एक पुरुष शास्त्री की आवश्यकता है। अनुभवी एवं आर्यसमाजी व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक व्यक्ति प्रार्थनापत्र भेजें और साक्षात्कार हेतु अपने खर्चे पर २०-८-८६ को सायं ३ बजे पधारें।

—प्रबन्धक

आर्य जगत् के समाचार

पलवल में जिला स्तरीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

पलवल। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पलवल उपमण्डल के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति वर्ष एव स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक जिला-स्तरीय खुली निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन १७ अगस्त को पलवल के डी. जी. खान हिन्दू सीनियर सैकण्डरी स्कूल में किया जा रहा है। प्रतियोगिता निम्नलिखित विषयों पर होगी।

१. इक्कीसवी सदी का आर्यसमाज, २. राष्ट्रीय एकता क्यो और कैसे ? ३. दहेज—एक सामाजिक कलक, ४. महर्षि दयानन्द का महान् व्यक्तित्व, ५. आधुनिक शिक्षा प्रणाली, ६. झगडा हिन्दी और अंग्रेजी का है—हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा का नही, ७. राष्ट्रीय चरित्र निर्माण मे युवकों का योगदान, ८. स्वतन्त्रता के बाद नारी की स्थिति, ९. परमाणु बम और विश्व शान्ति, १०. मेरे जीवन की स्मरणीय घटना।

प्रतियोगिता के लिए श्री सजीव मगला 'मीनू' को संयोजक एव श्री रमेश अग्रवाल को सहसंयोजक नियुक्त किया गया है। प्रविष्टियां प्रतियोगिता संयोजक, दयानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, सोहना रोड, पलवल के नाम भेजें।

आर्य वीर दल के लिये सुझाव चाहिये

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा ने एक उपसमिति बना कर मुझे यह कार्य सौंपा है कि आर्य जनता से समाचारपत्रो द्वारा सुझाव लिये जायें कि आर्य वीर दल को आगे किस प्रकार बढाया जाये। नवयुवको को कौन-सा रचनात्मक कार्य दिया जाये। कृपया निम्नलिखित विषयो पर सुझाव भेजें।

१. कोई राष्ट्रीय समस्या, २. कोई ग्रामीण समस्या, ३ आर्यसमाजो को शक्तिशाली कैसे बनाया जाये ? ४. दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिये सरकार को सहयोग दिया जाये—लिया जाये, ५ आर्य जनता से प्रार्थना है कि अपने सुझाव ३० अगस्त तक नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

जिनके सुझाव सर्वश्रेष्ठ होंगे उन्हें आर्य वीर दल पुरस्कृत करेगा।

—सीताराम आर्य
आर्य पब्लिक स्कूल,
बालसमन्द रोड, हिसार।
टेलीफोन नम्बर ५०५३

स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक यज्ञशाला का उद्घाटन

भुवनेश्वर। उड़ीसा के राज्यपाल श्री विश्वम्भरनाथ पाण्डे ने भुवनेश्वर से १५० किलोमीटर दूरवर्ती पोलसरा आर्यसमाज के प्रागण मे २४ मई को प्रात.काल स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक यज्ञशाला का उद्घाटन किया। इस समारोह मे उड़ीसा के वरिष्ठ पत्रकार डा० राधानाथ रथ, श्री प्रियव्रतदास तथा श्रीमती शन्नोदेवी ने योगदान दिया। स्वामी विश्वमित्रानन्द जी ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ का संचालन किया। पण्डित वेदव्रत शास्त्री के निरीक्षण में आर्य कन्या गुरुकुल, तनरड़ा की कन्याओं ने सगीत प्रस्तुत किया तथा आमसेना गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यौगिक किया का प्रदर्शन किया।

आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर, हिसार मे एक ऐसे वैद्य की आवश्यकता है, जो सेवा मुक्त हों और आश्रम में रहकर शान्तिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हों। ऐसे वैद्य को उचित सुविधा तथा उचित दक्षिणा दी जायेगी। इसके अतिरिक्त शास्त्री अथवा आचार्य उत्तीर्ण एक ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है, जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी एव शास्त्री कक्षाओं को संस्कृत व्याकरण तथा सस्कृत साहित्य पढ़ाने में पूर्णतः समर्थ हों। वेतन योग्यतानुसार सन्तोषजनक दिया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्नलिखित पते पर पत्रव्यवहार करें अथवा मिलें। —आचार्य

गुरुकुल आर्यनगर, पो० आर्यनगर
जि० हिसार, पिन १२५००१, हरयाणा

एक शाम 'मनीषी' के नाम

सहारनपुर। १६ जुलाई को आर्यसमाज नकुड़ के खचाखच भरे प्रांगण में रात्रि ९-३० बजे 'मनीषी' रात्रि का शुभारम्भ हुआ। अक्षर, आधा कफन और बूंद-बूद वेदना के रचयिता तथा आर्यसमाज के लाडले कवि एव गीतकार डी० ए० वी० कालेज अबोहर के प्राध्यापक सारस्वत मोहन 'मनीषी' ने अपना काव्य पाठ महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धाजलि व्यक्त करते हुए निम्नलिखित पक्तियो से प्रारम्भ किया—

एक जगल मे नई बस्ती बसा दी तूने।
वक्त पत्थर पे सफल जोक लगा दी तूने।
लोग मानें या न मानें है करिश्मा यह तो।
अर्थिया जितनी चली डोली बना दी तूने।

रात गहराती गयी और मनीषी जी अपनी ओजपूर्ण वाणी मे काव्य-प्रेमियो को देश के दर्द से परिचित कराते रहे। उन्होंने देश की समस्या का अपनी कविता द्वारा एक ही समाधान बताया—

ऊट की तो नाक मे नकेल चाहिए।
देशद्रोहियो के लिए जेल चाहिए।
भारत को फिर से पटेल चाहिए।

दहेज प्रथा के विरुद्ध बोलते हुए उन्होने युवकों का आह्वान किया—

बेटी ना किसी की सतानी चाहिए।
टी० वी० फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
लडकी ना लकडी बनानी चाहिए॥
डोलिया ना अर्थिया बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो॥

गीत, गजल, मुक्तक और छन्दोबद्ध कविताओं का यह दौर लगातार १२-३० बजे तक चलता रहा। अभी लोग और सुनना चाहते थे पर आयोजको की सहमति पर मनीषी जी ने इस काव्यगोष्ठी का समापन किया।

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पजाब जल रहा है। उत्पीडित आर्य-हिन्दू जनता पजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर सुरक्षा हेतु पहुँच रही है। आर्यसमाजों व सनातन धर्म सभाओं से निवेदन है कि पजाब से आई पीडित हिन्दू जनता को मन्दिरों, स्कूलों में ठहराकर उन्हें पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस संकटकालीन स्थिति में तन, मन, धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता— भवदीय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा — **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान — सभा प्रधान
नई दिल्ली-२

फौलादी बनो .....

(पृष्ठ १ का शेष)

जनवरी के बाद से पंजाब ने जो राह पकड़ी है, उससे वह इंच भर भी लौटता कहां प्रतीत हो रहा है।

पंजाब में केन्द्रीय सरकार सिख सम्वेदना का ख्याल रख रही है, और मिजोरम में मिजो सम्वेदना का। ठीक है। इसके बिना भारत सचमुच चल भी नहीं सकता। लेकिन क्या दिल्ली में ऐसी कोई सरकार चल सकती है, जिसके साये मे भारत के हिन्दू अपने को पराया और कटा हुआ महसूस करें ? इस देश के अल्पसंख्यकों की ओर से निश्चिन्त और उन्हें आश्वस्त रख पाने वाली सरकार ही अन्ततः अल्पसंख्यकों की रक्षा संकल्प के साथ कर सकती है।

—राजेन्द्र माथुर

मुक्तसर कांड के विरोध में धरना व उपवास

गोरखपुर। नगर आर्यसमाज साहबगज के तत्त्वावधान मे पंजाब के मुक्तसर नामक स्थान मे उग्रवादियों द्वारा निरीह व्यक्तियो की निर्मम हत्या के विरोध में एक जन-सभा हुई। गोरखपुर जिलाधिकारी के कार्यालय पर प्रात: १० बजे से सायं ४ बजे तक धरना एवं उपवास का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रात: १० बजे से राष्ट्र की एकता और अखण्डता हेतु राष्ट्ररक्षा यज्ञ किया गया। इस अवसर पर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० द्विजराज शर्मा ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज राष्ट्र पर गहरा सकट छाया हुआ है। हिन्दुओं की पंजाब में वैसी ही स्थिति हो गई है जैसी देश के बटवारे के समय थी। नगर आर्य-समाज के मन्त्री श्री रमेशप्रसाद गुप्त ने कहा कि आतंकवादी पुलिस व सरकार पर हावी हैं। हिन्दुओ की गुहार सुनने वाला कोई नही। भारत साधु समाज के मन्त्री ब्रह्मचारी रामदास जी ने भी नृशंस हत्याओ के विरोध मे उपवास रखा और धरने में सम्मिलित हुए।

इसी अवसर पर प्रधान मन्त्री राजीव गाधी को भेजे जाने के लिए एक ज्ञापन जिलाधिकारी श्री दिनेश राय को आर्ययुवक परिषद् के मन्त्री श्री अशोक लोहिया ने दिया। ज्ञापन मे कहा गया है कि अपने ही देश मे हिन्दू अपने को उपेक्षित अनुभव कर रहा है।

मुक्तसर हत्याकांड पर देशव्यापी क्षोभ

२५ जुलाई को मुक्तसर (जिला फरीदकोट) मे हुए हत्याकांड पर, जिसमे १५ व्यक्तियों की हत्या कर दी गई थी, देश-भर मे क्षोभ प्रकट किया गया है और मृतकों की आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई है। इस आशय के प्रस्ताव निम्नलिखित आर्यसमाजों ने स्वीकृत किये हैं —

आर्यसमाज शाहपुरा (जिला भीलवाड़ा), आर्यसमाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, अलीगढ, आर्यसमाज सम्भल (जिला मुरादाबाद), आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी, आर्यसमाज धुरी (...), वैदिक ... आर्य सत्संग, वेदमन्दिर, सहारनपुर, आर्यसमाज पूरनपुर (जिला पीलीभीत), आर्यसमाज हलद्वानी (जिला नैनीताल), आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला), कानपुर, आर्यसमाज माडल टाउन, पानीपत, आर्यसमाज डाकपत्थर, देहरादून।

...ष्टमी

...वकोत्सव के अव-सर ... (बुधवार) प्रात: ८-३० से ११ बजे तक मनाया जा रहा है, जिसमे युवक-युवतियों का सांस्कृतिक कार्यक्रम व विद्वानो के उपदेश भी होंगे।

गुरुकुल कण्वाश्रम में प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम, डाकखाना कलालघाटी, कोटद्वार, पौड़ी गढवाल में प्रवेश आरम्भ हो गया है।

गुरुकुल के प्रबन्ध मे सहयोग के लिये तीन सेवाभावी वानप्रस्थियों की आवश्यकता है। भोजन और आवास नि:शुल्क। शीघ्र सम्पर्क करें।

—ब्र० विश्वपाल जयन्त, व्यवस्थापक

सत्यार्थ-प्रकाश परीक्षाएं

आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा सचालित सत्यार्थ-प्रकाश की सत्यार्थ रत्न, सत्यार्थ भूषण, सत्यार्थ विशारद तथा सत्यार्थ शास्त्री की परीक्षाएं इस वर्ष २१ सितम्बर १९८६ को सारे भारत में होंगी। सभी आवश्यक जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री श्री चमनलाल एच ६४ अशोक विहार फेज-१ दिल्ली-५२ के पते पर पत्रव्यवहार करें: —मन्त्री

वेद रहस्य

श्रावणी पर्व के उपलक्ष मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उपहार ग्रन्थ। विशेष छूट के साथ केवल १५ रुपये मे उपलब्ध है। स्वाध्यायशील सज्जन अवसर का लाभ उठायें।

रामसिंह आर्य, लेखक एवं प्रकाशक
१७, गाधी नगर, आगरा-३

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

वेदामृतम्

परिवार में सौमनस्य हो

सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि,
एकश्नुष्टीन् संवननेन सर्वान्
देवा इवामृतं रक्षमाणाः,
सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु।
अथर्व० ३ ३०

हिन्दी अर्थ—मिलकर साथ चलने वाले तुम लोगों को मैं हार्दिक एकता से युक्त करता हूँ। सौमनस्य के द्वारा तुम सबको एक मुखिया के अनुयायी करता हूँ। अमृत की रक्षा करने वाले देवों की जिस प्रकार सौमनस्य है उसी प्रकार सायं और प्रातः (दिन रात) तुममें सौमनस्य हो।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक ३६ | भाद्रपद कृ० ५ स० २०४३ रविवार २४ अगस्त १९८६ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

देश के कोने-कोने में पंजाब बचाओ--देश बचाओ दिवस मनाया गया

सीमा सुरक्षा बिल का प्रबल समर्थन

आतंकवादियों को गोली से उड़ा दो : देसाई के कथन का अनुमोदन

दिल्ली, १५ अगस्त।

आर्यसमाज दीवान हाल मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सभापतित्व मे पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस पर एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गई। सभा मे केन्द्रीय सरकार से मांग की गई कि वह पंजाब की बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करे, क्योंकि यह पंथिक सरकार अल्पसंख्यक हिन्दुओं की रक्षा करने मे सर्वथा असमर्थ रही है। यह सरकार कानून और व्यवस्था बनाये रखने मे भी असफल रही है। अतः पंजाब को सेना के हवाले किया जाये।

सभा मे स्वीकृत एक प्रस्ताव में कहा गया कि यह सभा भारत सरकार के प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का जोरदार समर्थन करती है। "राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए गुजरात से पंजाब तथा जम्मू कश्मीर तक की सीमा पट्टी की सुरक्षा के लिए यह विधेयक आवश्यक है।" यह सभा इस सन्दर्भ मे इस सीमा पट्टी के साथ साथ भूतपूर्व सैनिक परिवारों को बसाने और उन्हे हथियारबन्द करके पूर्ण सुविधा देने की भी सिफारिश करती है। बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे उग्रवादी तत्त्वों को शह देकर खालिस्तान का मार्ग प्रशस्त कर रही है। इसलिए अकाली दल एवं बरनाला सरकार ने प्रस्तावित सीमा सुरक्षा बिल का विरोध किया है। यह सभा भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई के इस कथन का समर्थन करती है कि उग्रवादी देशद्रोहियों को गोली से उड़ा देने के आदेश जारी किये जायें। गिरफ्तार किये गये देशद्रोहियों को पंजाब से बाहर की जेलों मे भेज कर विशेष अदालते गठित करके उन्हे सख्त सजायें दी जाय। पंजाब के विस्थापित हिन्दुओं को भारत सरकार आवास भोजन और पुनर्वास की वही सुविधाएं प्रदान करे जो १९८४ के काण्ड में प्रभावित सिक्खों को दी गई थी। यह सभा सीमा सुरक्षा बिल लाने के लिए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को बधाई देती है।

प्रो० बलराज मधोक, प्रो० शेरसिंह श्री मदनमोहन चोपड़ा आदि प्रमुख नेताओं ने उपरोक्त प्रस्ताव का समर्थन किया।

देश-भर के विभिन्न स्थानों से प्राप्त समाचारों के अनुसार इस सम्बन्ध मे स्थान-स्थान पर सभायें आयोजित की गईं।

बिड़ला आर्य गर्ल्स स्कूल में स्वाधीनता दिवस

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने झण्डा लहराया

दिल्ली। बिड़ला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल मे १४ अगस्त को प्रातः स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाया गया जिसकी अध्यक्षता एवं ध्वजारोहण स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा हुआ। विद्यालय की प्रधान श्रीमती ईश्वर देवी जी ने श्रद्धेय स्वामी जी को अभिनन्दनपत्र भेंट किया तथा आतंकवाद से पीड़ित लोगों की सहायता के लिये दस हजार तीन सौ दस रुपये की धनराशि भेंट की।

विद्यालय की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

स्वामी आनन्दबोध जी ने अपने भाषण मे राष्ट्रीय ध्वज के रंगों की भ्रान्तियों को दूर करते हुए रंगों के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा पंजाब के ज्वलन्त प्रश्न को उठाते हुए कहा कि हमारी सरकार ने धारा २४९ के अन्तर्गत जो सीमा सुरक्षा विधेयक अब प्रस्तावित किया है यदि वह पहले कर दिया जाता तो कश्मीर तथा पंजाब की समस्या का समाधान हो जाता।

क्षमायाचना

अनिवार्य परिस्थितियों के कारण हम 'सार्वदेशिक' का २४ और ३१ अगस्त का संयुक्तांक विशेषांक के रूप मे प्रकाशित नहीं कर पाये। विशेषांक के लिए श्रावणी, वेद प्रचार सप्ताह और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से सम्बन्धित अनेक रचनायें हमें प्राप्त हुई थी, जिनमे से कुछ प्रस्तुत अंक मे प्रकाशित की जा रही हैं और शेष अगले अंक मे प्रकाशित की जायेंगी। इस असमर्थता के कारण पाठकों को हुई असुविधा के लिए हम हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं। —सम्पादक

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक सच्चिदानन्द शास्त्री

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष मे प्राप्त दान-राशियां

१६ अगस्त तक पंजाब हिन्दू पीडित सहायता कोष के लिए निम्नलिखित दान-राशिया प्राप्त हुई हैं। सब दान-दाताओ का धन्यवाद।

आप भी अपना सहयोग शीघ्र दीजिये।

मापा विकामल सर्राफ, अहमदाबाद	१५,०००)
श्री ई वेंकटेश्वर रेड्डी	२०)
,, एम चडी रेड्डी	२०)
, सी बी ओ. रेड्डी	२०)
,, श्री वी बी रविकुमार	२०)
डा० अवधेश देहरी ओनसोन	५१)
महाशय तेजपाल जी	१०)
श्री एम सी. धीगरा	२००)
श्रीमती शीलवती भल्ला	१००)
कैप्टन ओम्प्रकाश शर्मा झोटवाडा रोड, जयपुर	१००)
आर्यसमाज राणाप्रताप बाग, दिल्ली	१०००)
बिडला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल, दिल्ली	१०११२)
श्रीमती लाजवन्ती धर्मपत्नी श्री सोहनलाल गुप्त पंजाबी बाग, नई दिल्ली	१०००)
श्री महेन्द्रसिंह, बुलन्दशहर	२००)
मन्त्री, आर्यसमाज ब्यावरा (जिला राजगढ)	२५०)
श्री हरिश्चन्द्र आर्य, अगोसी (जिला भीलवाडा)	५००)
प्रधान, आर्यसमाज प्रेम नगर, करनाल	१००)
श्री रामनरेश शर्मा, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली	१००)
श्रीमती सुहागवती, प्रेमनगर, करनाल	१००)
नेशनल प्लाईवुड सेन्टर, गोरखपुर	४२५)
सर्वयोग	२१३२३)

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, विवाह जन्म दिन आदि शुभ अवसरोंपर इष्टमित्रो को भेंट देने तथा स्वयं भी संगीतमय आनन्द प्राप्त करते हेतु, श्रेष्ठ गायकों द्वारा गाये मधुर सगीतमय भजनो तथा सध्या हवन आदि के उत्कृष्ट कैसेट आज ही मगाइये।

डाक तथा पैकिंग खर्च अलग

छूट - 5 या उससे अधिक कैसेटों का पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजनेपर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री। वी पी पी से मगाने के लिये कृपया 15 00 रु आदेश के साथ भेजिये।

भेंट - दस कैसेट मगाने वालोंको एक कैसेट मुफ्त।

कैसेट न

1–17 [illegible]

महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द

डा० भवानीलाल भारतीय की अनुपम कृति

प्रस्तुत पुस्तक मे महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के मन्तव्यो का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

विद्वान् लेखक ने दोनो महापुरुषों के अनेक लेखों, भाषणो और ग्रन्थो के आधार पर प्रमाणित सामग्री का सकलन किया है।

मूल्य केवल १२ रुपये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मदान, नई दिल्ली-२

वैद्य निरंजनलाल गौतम दिवंगत

आर्यसमाज अनाजमडी, शाहदरा के प्रधान और बैजनाथ आर्य हायर सैकडरी स्कूल के प्रबन्धक वैद्य निरजनलाल गौतम का १० अगस्त को प्रात आठ बजे दिल की बीमारी के दौरे से निधन हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने वैद्य जी के निधन पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इनके निधन से आर्यसमाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। शाहदरा क्षेत्र मे और सार्वदेशिक सभा के सदस्य के नाते उन्होने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के मिशन के लिए पूरी तन्मयता से कार्य किया। मैं उनकी आत्मा की सद्गति और उनके शोकसन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।

पं० समरसिंह वेदालंकार का निधन

हरयाणा के शिरोमणि आर्य उपदेशक प० समरसिंह जी वेदालकार का २९ जुलाई को निधन हो गया। उनकी आयु ८० वर्ष के लगभग थी। आपका जन्म ग्राम सीक (जि० करनाल) के एक किसान परिवार मे हुआ था। उन्होने गुरुकुल कागडी मे शिक्षा ग्रहण की और वहा से वेदालकार की उपाधि प्राप्त करके अपना मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार बना लिया।

वेदप्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य में विश्वव्यापी वेदप्रचार का अभूतपूर्व अभियान

विश्व के मानव समाज को धर्मवीर ग्रन्थमाला का अनुपम उपहार

ओ३म् नाम की महिमा प्लास्टिक कवर मे	१०)
आजीवन स्वस्थ रहने की कला	१०)
धर्मसूत्र	१०)
ईसाइयत के सर्वनाश से बचो	२)
विद्यार्थी जीवन का चार्ट (आर्ट पेपर पर—६ रगो मे)	४)
सकल्प सुधा सार चार्ट (आर्ट पेपर पर)	२)

थोक आर्डर पर ५० प्रतिशत छूट दे रहे हैं।

आर्य हवन सामग्री

नित्य सुगन्धित पौष्टिक रोगनाशक हवन सामग्री से ही यज्ञ करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सुखो को प्राप्त करें।

(१) स्पेशल आर्य हवन सामग्री २५) किलो
(२) आर्य हवन सामग्री १०) किलो
(३) हवन सामग्री ६) किलो

वेदपथिक धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी व्याख्यानभूषण
अध्यक्ष – धर्मवीर ग्रन्थमाला १८५७ अहाता ठाकुरदास, सराय रुहेला, नई दिल्ली-५ फोन ५८६५४५

श्रावणी पर्व का महत्त्व

—सत्यव्रत शास्त्री, धामपुर

> मासि प्रोष्ठपदे ब्रह्म ब्राह्मणानां विवक्षताम् ।
> अयमध्यायसमयः सामगानामुपस्थितः ॥
>
> वा०रा०कि०का० सर्ग २८१ श्लोक १३ ॥

वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय करने की इच्छा वाले सामगान के विशेषज्ञ सामवेदी ब्राह्मणों के लिए भाद्रमास से अध्ययन काल प्रारम्भ हो गया है।

इस श्लोक में श्रावणी उपाकर्म का स्पष्ट संकेत मिल रहा है। यह चातुर्मास्येष्टि नाम से वेदाध्ययन का समय है।

पारस्कर गृह्यसूत्र का प्रमाण—अथातोऽध्यायोपाकर्म ॥

२ का० क० १० सू० १ ॥

पंच महायज्ञादि के पश्चात् अब अध्याय—अध्ययन का उपाकर्म—उपक्रम आरम्भ होता है। श्रवण नक्षत्र की पूर्णिमा को श्रावणी नाम से सम्बोधित किया गया है। यह पर्व उतना ही प्राचीन है, जितना वेद ज्ञान है। इस पर्व का संकेत वेद में निम्नलिखित मन्त्र से स्पष्ट मिल रहा है—

> सम्वत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
> वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्रमण्डूका अवादिषुः ॥
>
> ऋग्० ७ । १०३ । १ ॥

ब्राह्मण—वेदज्ञ विद्वान्—ब्रह्म अर्थात् वेद के साथ सम्बन्ध रखने वाले व्रती—व्रत का आचरण करने वाले वर्ष-भर अर्थात् सम्वत्सर पर्यन्त निरन्तर यज्ञ-याग और वेद प्रवचन, कथा, वेद-प्रचार आदि कार्य में निरन्तर प्रवाह रूप से सर्वात्मना सलग्न रहते थे अतः सोए हुए के समान निज अध्ययन-मनन-चिन्तन-कार्य से पृथक् रहते थे। उन्हें अपने स्वाध्याय के लिए समय नहीं मिलता था। एक वर्ष के अनन्तर "पर्जन्यजिन्वितां वाचम्" सृष्टिकारक परमात्मा के साथ सम्बन्ध रखने वाली वेदवाणी का प्र+अवादिषुः—अच्छी प्रकार प्रचार करें। वेद का स्वाध्याय करें। जिस समय आकाश मे मेघ मण्डल छाया रहता है, आकाश मेघों से घिरा रहता है उस समय इस कठोर व्रत का आचरण करने वाले व्रतचारी व्रती ब्राह्मणों के जीवन में भी नव ज्योति नवीन चेतना का नव स्फूर्ति का प्रेरणा का संचार हो जाता है और अपनी स्वाध्याय की न्यूनता को पूर्ण करने के लिए इस वेद स्वाध्याय रूपी वर्षाकालीन "चातुर्मास्येष्टि" का संकल्प ग्रहण करते थे और आगामी वर्ष के लिए अपने को अधिक उपयोगी और योग्य बनाते थे। प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक तैयारी तथा साधना करनी पड़ती है।

इन उपर्युक्त उद्धरणों से इस पर्व की प्राचीनता व महत्त्व स्पष्ट है। वर्षाकाल में यात्राएं, प्रचार आदि कर्म स्थगित हो जाते हैं। अतः स्वाध्याय के लिए अच्छा अवसर प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार वर्षा काल में मेढक प्रसन्न होते हैं और खूब जोर से बोलते हैं, इसी प्रकार "मण्डूका वेदानां मण्डयितारः—मडि भूषणे धातु—अलङ्कुर्वन्ति इति मण्डूकाः विद्वांसः" इस प्रकार विद्वान् मननशील ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण भी प्रसन्न होते हैं। इस वर्षा ऋतु में प्रचार कार्य से निवृत्त होकर वेदवाणी का विशेष रूप से स्वाध्याय करते थे।

मनु का प्रमाण—उपाकर्म और उत्सर्जन प्रारम्भ और समाप्ति का समय—

> श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि।
> युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान् ॥
> पुष्ये तु छन्दसां कुर्यात् बहिरुत्सर्जनं द्विजः।
> माघ शुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्णे प्रथमेऽहनि ॥९६॥

इससे भी स्पष्ट है कि श्रावणी से लेकर साढ़े चार मास तत्पर होकर वेदाध्ययन करें। उपाकर्म का अर्थ है वेद का उपक्रम—अध्ययन और पुष्य नक्षत्र से युक्त पौषी पूर्णिमा को वेद का अध्ययन उत्सर्जन अर्थात् समाप्त कर दे। यह कार्य ग्राम से बाहर किसी नदी के पास होना चाहिए अथवा माघ शुक्ला प्रतिपदा को प्रातःकाल उत्सर्जन कार्य करे। यह पर्व विशेषतः—गृहस्थाश्रम में निवास करने वाले व्यक्तियों का है। इसी दिन नवीन यज्ञोपवीत भी बदलते हैं। इसी का नाम ऋषि तर्पण है। यज्ञ में या किसी विशेष संस्कार में सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों के हाथ में रक्षा सूत्र (राखी) भी बांधी जाती है। अन्य सब विधि-विधान व्यापक हैं। सब मिलकर बृहद्-यज्ञ करें, प्रवचन करें। वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। पौराणिक काल में यह सब वैदिक विधिविधान अशिक्षा के कारण अत्यन्त विकृत हो गया। उसका स्वरूप ही नष्ट हो गया।

स्मार्त गृह्यसूत्रों मे—अध्यायोपाकर्म—अध्यायो वेदः। वेदाध्ययन का उपाकर्म—उपक्रम आरम्भ श्रावणी से—श्रावण मास की पूर्णिमा से प्रारम्भ किया जाता था।

वेदोपाकर्म—अध्यायोपाकर्म, वेदोपाकरण, अध्यायोपाकरण इन नामों से भी इसका व्यवहार किया गया है।

यह पर्व गुरु-शिष्य और स्नातक-ब्रह्मचारी का सम्मिलित पर्व है। सब मिलकर यथाविधि अग्निहोत्र करें। पुनः इस यज्ञ की समाप्ति पर गुरु शिष्य और स्नातक-ब्रह्मचारी—

> सहनोऽस्तु सहनोऽवतु सह न इदं वीर्यवदस्तु ब्रह्म।
> इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहै ॥
> सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।
> तेजस्वि नावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॥

इन मन्त्रों का पाठ करें।

इसी प्रकार गृहस्थाश्रमी दम्पती—पति-पत्नी और समस्त पारिवारिक सदस्य मिलकर अग्निहोत्र करें और उत्साहपूर्वक प्रसन्नता से इस पर्व को मनायें। आजकल उपाकर्म के स्थान पर रक्षाबन्धन (राखी बांधना) प्रचलित हो गया है। बहनें भाइयों के हाथ में रक्षा सूत्र बांधती हैं और उनसे कुछ दक्षिणा-भेंट चाहती हैं। पुरोहित भी यत्र तत्र यजमानों के हाथों में राखी बांधते फिरते हैं और दक्षिणा प्राप्त करते हैं और उस समय यह अप्रासंगिक श्लोक बोलते हैं—

> येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
> तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

इस कार्य मे प्रायः चारों वर्ण और अन्य हीन जातियां भी सम्मिलित होती हैं। अब उपाकर्म वेद और स्वाध्याय के पठन-पाठन के स्थान पर यही रक्षाबन्धन—राखी बांधना रह गया। इस पर्व पर कम से कम चार साढ़े चार मास तक वेदाध्ययन करना आवश्यक है। आज हम सब व्रत लें और वेद पढ़ने का दृढ़ संकल्प करें।

वेद प्रचार सप्ताह और स्वाध्याय

—प्रकाशचन्द्र वेदालङ्कार, एम० ए०—

प्रति वर्ष आर्यसमाज मन्दिरों में श्रावणी से जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जाता है। इस अवसर पर किसी विद्वान् और भजनोपदेशक को बुलाया जाता है जो वैदिक मन्तव्यों पर व्याख्यान करते हैं और भजनोप देशक भजनों द्वारा लोगों को प्रेरित करते हैं। यह एक अच्छी परम्परा है और इसे हमें जारी रखना चाहिए। मैं वेद प्रचार सप्ताह के बारे कुछ सुझाव आर्य जनता के साभार्थ देना चाहता हू।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों मे प्रात प्राय किसी वेद के पारायण द्वारा यज्ञ का आयोजन होता है जिसमे प्रतिदिन नये यजमान बनते हैं और अन्तिम दिन पूर्णाहुति पर सभी यजमानों को पुरोहित महोदय आशीर्वाद देते हैं। इस सम्बन्ध मे हम एक-दो बातो को यदि महत्त्व दें तो कुछ प्रचार और हमारी श्रद्धा मे बढ़ोत्तरी हो सकती है। प्रात यज्ञ के समय सभी आर्यजन यज्ञ की मर्यादा के अनुसार धोती-कुर्ता पहने हाथ मे घी, सामग्री आदि लेकर श्रद्धापूर्वक समय पर यज्ञ में उपस्थित हो तथा जिनके घरों मे वेद हों, वे वेद लेकर आयें। समाज मे तो वेद होते ही हैं, किन्तु हमारे घरों में भी चारों वेद अवश्य होने चाहियें। जहा तक हो सके परिवार सहित यज्ञ मे सम्मिलित हों। इसी तरह सायकालीन कथा के समय भी परिवार के सभी सदस्य आयें। सभी को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये, न केवल यज्ञ के समय अपितु सदा ही। यह वैदिक धर्म और हिन्दू सस्कृति का परम पवित्र चिह्न है। यज्ञोपवीत ग्रहण करते समय शुद्ध पवित्र जीवन बिताने का व्रत लेना चाहिये।

वेद प्रचार सप्ताह स्वाध्याय पर्व है अत इन दिनो विशेष स्वाध्याय के लिये समय निकालना चाहिये। वेद ईश्वर, आत्मा, सत्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि के सच्चे स्वरूप को जो ग्रन्थ हमे बताते हैं, उन्ही का स्वाध्याय करना चाहिये। वेद, उपनिषद् आदि वैदिक पुस्तको का सग्रह करके प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा स्वाध्याय करना चाहिये।

वेद प्रचार सप्ताह हमारी परीक्षा की घडी है। इन दिनों हमे विशेष सजग रहना चाहिये। यदि हमने वर्ष भर स्वाध्याय किया होगा तो विद्वान् द्वारा बताई जाने वाली बातें हमें अधिक अच्छी तरह समझ मे आती जायेंगी और यदि वर्ष में कभी स्वाध्याय किया ही न हो तो फिर इन दिनों मे भी कुछ विशेष पल्ले नही पडने वाला। वेद प्रचार सप्ताह मे आये विद्वान् को पूरा अधिकार है कि वह श्रोताओं की परीक्षा ले, उनसे प्रश्न पूछे। यदि हमने स्वाध्याय किया होगा तो हम ठीक उत्तर दे पायेंगे। अन्यथा हम परीक्षा मे अनुत्तीर्ण रह जायेंगे।

वर्ष-भर हम प्रत्येक रविवार नये नये विद्वानों के विचार सुनते हैं। हमे उन विचारों का सग्रह करना चाहिये और घर जाकर स्कूल के होम वर्क की तरह उसे हृदयगम करना चाहिये अर्थात् स्वाध्याय और मनन चिन्तन करना चाहिये। तभी हमे वेद प्रचार सप्ताह का पूरा आनन्द लाभ होगा।

आर्य सदस्य स्वाध्याय करेंगे तो विद्वान् उपदेष्टा भी अधिक स्वाध्याय करेंगे, क्योंकि उन्हें श्रोताओं की जिज्ञासा और शकाओं का निवारण करने के लिये विशेष योग्यता प्राप्त करनी होगी। यदि हम स्वाध्याय नही करेंगे तो हमारे मन मे किसी जिज्ञासा, शंका या प्रश्न का उदय ही नही होगा और हम किसीसे कुछ पूछेंगे भी नहीं, जो कुछ उपदेशक बता जायगे वही सत्य वचन महाराज हो जायेगा। अत हमे स्वय अपने जीवन के उत्थान के लिये तथा वेद और आर्य-समाज के सिद्धान्तों के प्रचार के लिये स्वाध्याय और गहन चिन्तन करना चाहिये और अपने परिवार के लोगों को भी प्रेरित करना चाहिये।

आज सैकडो प्रकार की पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं, जिनमें उपलब्धि कम और समय की बर्बादी अधिक होती है, जबकि इसके विपरीत वैदिक साहित्य से थोडे समय में ही अधिक लाभ की प्राप्ति सम्भव है। अत हमें व्यर्थ के बाजारू साहित्य से बचकर उपयोगी साहित्य को ही अधिक समय देना चाहिये।

आइये, हम आज से ही सत्साहित्य के स्वाध्याय का व्रत लें और वेद प्रचार सप्ताह को अधिक उपयोगी और सफल बनायें।

श्रावणी का सन्देश

यह श्रावण पर्व वैदिक ज्ञान का सदेश लाया है।
बनाओ श्रेष्ठ सब जग को प्रभु आदेश लाया है॥

प्रभु की वेद वाणी से नही कोई रहे वचित।
सदा सत्कर्म की पूजी सभी निशिदिन करो सचित।
यह मानव मात्र को पावन सुखद उपदेश लाया है॥

सुरक्षित मान मर्यादा रहे अब मातृशक्ति की।
शपथ लेनी है तुमको आज फिर से पितृभक्ति की।
नहीं जो टूटने वाले वही परिवेश लाया है॥

नया जीवन नई राहे नया निर्माण भारत का।
चमक जाये कठिन श्रम से हमारे भाल भारत का।
उसी प्राचीन गौरव के बचे अवशेष लाया है॥

—जगदीश शरण "शीतल"

वेद केवल चार हैं

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—

शतपथवाच्य ग्रन्थों के विषय में बहुत काल से विवाद रहा है। वेद की महत्ता के कारण लोगों ने मनमाने साहित्य को वेद नाम से अभिहित किया है। अधिकतर लोग मन्त्र संहिताओं (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद) को ही वेद मानते हैं। किन्तु कुछ लोग वेदों के व्याख्यानरूप ब्राह्मणग्रन्थों का भी वेदों में समावेश करते हैं। कुछ अन्य आरण्यकों और उपनिषद् ग्रन्थो को भी वेद के अन्तर्गत मानते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो कल्पसूत्र, मीमांसासूत्र और वेदांगों का भी वेदत्व स्वीकार करते हैं। आरण्यकों और उपनिषदों का ब्राह्मण ग्रन्थों में अन्तर्भाव माने जाने तथा कल्पसूत्रों और मीमांसा आदि के पारस्कर गृह्यसूत्र के कतिपय व्याख्याताओं द्वारा ही मानने से ब्राह्मण ग्रन्थों का ही वेद पदवाच्य होना विवादास्पद रह जाता है। जब हम यह जानना चाहते हैं कि यह कौन-सा वाक्यसमूह है जो आदिकाल से आज तक ईश्वर प्रदत्त अथवा अपौरुषेय नाम से प्रसिद्ध रहा है तो समस्त वैदिक साहित्य एक स्वर से कहता है—

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥
ऋग्वेद १०-९०-९, यजु० ३१-७ ॥

वैदिक साहित्य परम्परा में ऋग्वेद आदि नाम से प्रसिद्ध चार मन्त्रसंहिताओं को ही वेद माना गया है, अन्य किसी ग्रन्थ को नहीं।

यत्परः शब्द. स मुख्यार्थः—इस न्याय से शब्द का जो स्वाभाविक अर्थ होता है वह किसी को बताना नहीं पड़ता। अपरिभाषित होने से वह मुख्य होता है। जो, किसी वचन-विशेष द्वारा परिभाषित अथवा न्यायदर्शन (२-२-६१) में निर्दिष्ट साहचर्यादि निमित्तो से प्राप्त विशेषार्थ होता है, वह गौण होता है। परिभाषित अर्थ कभी मुख्य या स्वाभाविक होने पर परिभाषा की आवश्यकता नहीं होती। ऋग्-यजु-साम-अथर्व संहिताओं के वेदत्व प्रतिपादनार्थ आज तक किसी ने प्रयास नहीं किया। इन संहिताओं का श्रोता अनायास ही कहता है—मैं ऋग्वेद या यजुर्वेद आदि का अध्ययन कर रहा हूँ। परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थो व उपनिषदादि का अध्येता साधारणतया ब्राह्मण या उपनिषद् के अध्ययन की बात कहता है अथवा नामनिर्देशपुरःसर ऐतरेय ब्राह्मण वा कठोपनिषद् के अध्ययन की बात कहता है। वेद के व्याख्यान ग्रन्थ होते हुए भी शतपथ अथवा ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता कभी नहीं कहता है कि वह शतपथ वेद वा ऐतरेय वेद का अध्ययन कर रहा है। अतः वेद पद का स्वाभाविक एवं अपरिभाषित वाच्यार्थ मन्त्रसंहिता ही है, ब्राह्मणादि ग्रन्थ नहीं।

ब्राह्मण ग्रन्थों की वेदसंज्ञा विधायक कोई वचन ब्राह्मणग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होता। इसके विपरीत स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेकत्र उपलब्ध वचनों से वेद शब्द का मन्त्रों का वाचक होना सिद्ध होता है। ऐतरेय ब्राह्मण (५-५-७) का वचन है—

तानि ज्योतींष्यभ्यतपन् तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्त ऋग्वेद एवाग्नेरजायत यजुर्वेदो वायोः सामवेद आदित्यात्।

उपक्रम और उपसंहार में एकवाक्यता आवश्यक है। यहां उपक्रम में वेद शब्द का प्रयोग है और उपसंहार में ऋक्, यजुः और साम शब्दों का। ऋक्, यजुः, साम मन्त्रों के ही वाचक हैं। अतः उपक्रम में प्रयुक्त वेद शब्द मन्त्रों का ही वाचक हो सकता है।

शतपथ ब्राह्मण (१४-५-४) में याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद में कहा है—

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरसः।

बृहदारण्यकोपनिषद् में उद्धृत वचन की व्याख्या करते हुए आचार्य शंकर लिखते हैं—ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरसश्चतुर्विधं मन्त्रजातम्। इस प्रकार आचार्य शंकर ने वेदपद घटित ऋग्वेदादि का अर्थ चतुर्विधं मन्त्रजातम् लिख कर स्पष्ट कर दिया कि ब्राह्मणगत वेद पद का अर्थ मन्त्रसंहिताओं से अतिरिक्त कुछ नहीं।

इसी शतपथ ब्राह्मण (११-५-८-३) में आगे अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः कह कर वेद को केवल संहिताओं तक सीमित कर दिया।

गोपथ ब्राह्मण (१-३४) मे कहा गया है—चत्वारो वा इमे वेदाः ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदो ब्रह्मवेद।

इस प्रकार स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थ केवल मन्त्रसंहिता के ही वेदत्व का प्रतिपादन करते हैं। तब ब्राह्मण ग्रन्थ क्या हैं?

इस बात को प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि वेदों का अर्थ स्पष्ट करने तथा उनके अभिप्राय विस्तृत करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों के व्याख्यानरूप हैं।

बृहत्पाराशरी स्मृति (३-४४) में भी ब्राह्मण का लक्षण करते हुए कहा गया है—

अस्य मन्त्रस्यार्थोऽयमयं मन्त्रोऽत्र वर्तते।
तत्तस्य ब्राह्मणं ज्ञेयं मन्त्रस्येति श्रुतिक्रमः ॥

अर्थात् इस मन्त्र का यह अर्थ है अथवा यह मन्त्र इस कार्य में नियुक्त है—यह बताने वाले मन्त्रसहिता (वेद) का ब्राह्मण समझना चाहिये।

छान्दोग्योपनिषद् (८-१४-१) के भाष्य मे शंकराचार्य कहते हैं—ऋगादीन् मन्त्रानधीतेऽधीत्वा च तदर्थं ब्राह्मणेभ्यो विधींश्च श्रुत्वा कर्माणि कुरुते—अर्थात् ऋग्वेदादि के मन्त्रों को पढ़कर और उनके अर्थों तथा विधियों को ब्राह्मण ग्रन्थो से जान कर कार्य करते हैं।

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे (वै० द० ६-१-१) कहने के बाद महर्षि कणाद यह बतलाने के लिये कि इन वाक्यों अर्थात् वेदमन्त्रों के अर्थ ब्राह्मण-ग्रन्थों से स्पष्ट होते हैं, कहते—**ब्राह्मणे संज्ञाकर्म सिद्धिलिङ्गम्** अर्थात् ब्राह्मणो मे शब्दों की परिभाषा और उनकी सिद्धि के लिङ्ग पाये जाते हैं। इसी प्रकार मीमांसा दर्शन के विधिशब्दाच्च सूत्र पर शबर स्वामी कहते हैं—मन्त्रव्याख्यानरूपो ब्राह्मणगतः शब्दो विधिशब्दवत् इत्युच्यते' ब्राह्मणों के शब्द मन्त्रों के व्याख्यानरूप होने से विधि शब्दों की ही भांति हैं।

तैत्तिरीय संहिता की भाष्यभूमिका में सायणाचार्य के शब्द द्रष्टव्य हैं—

'उत्र शतपथब्राह्मणस्य मन्त्रव्याख्यानरूपत्वाद् व्याख्येयमन्त्रप्रतिपादकः संहिताग्रन्थः पूर्वभाविस्वात् प्रथमो भवति।'

अर्थात् शतपथ ब्राह्मण मन्त्रों के व्याख्यारूप है। इसलिए जिन मन्त्रों की व्याख्या करनी है उनका प्रतिपादक संहिताग्रन्थ तो पूर्व भावी होने से प्रथम होता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदों के व्याख्यानरूप होने में सबसे बड़ी साक्षी वे स्वयं हैं। शतपथ ब्राह्मण (४-१-५-१५) स्वय घोषणा करता है—

'तददस्तद् दिवाकीर्त्यानाम् ब्राह्मणे व्याख्यायते यथा तद् यज्ञस्य शिरः प्रतिदधतुः।' मन्त्रों की व्याख्या करते हुए अनेकत्र यह कहकर छोड़ दिया है—'नात्र तिरोहितमिवास्ति' अर्थात् मन्त्र का जितना भाग जटिल था उसे हमने स्पष्ट कर दिया—शेष स्पष्ट है। यह आधुनिक टीकाकारों के 'स्पष्टमेतत्' का स्मरण दिलाता है। अनेक स्थानों पर आए 'तदुहैके' 'तद्धैके' 'तद्धैकेषाम्' 'अत्र हैके' 'इमामु हैके' 'पार्श्वे उहैके' 'नात्र तिरोहितम्' 'व्याख्यायते' आदि पदो का प्रयोग ब्राह्मण ग्रन्थों का व्याख्यानरूप होना स्पष्ट सिद्ध करता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में इस **'इषे त्वोर्जे त्वेति'** इस प्रकार वेदमन्त्रों के प्रतीक रखकर उनकी व्याख्या की गई है। इससे स्पष्ट है कि वेदमन्त्र व्याख्येय हैं और ब्राह्मणग्रन्थ उनके व्याख्यान हैं।

पतंजलि मुनि ने महाभाष्य में यह विचार उठाया है कि व्याकरण किसे कहना चाहिये—केवल सूत्रों को या व्याख्यासहित सूत्रों को? वहां इसका यही निर्णय किया गया कि व्याख्या सहित सूत्रों का नाम व्याकरण है। इस न्याय से व्याख्यान (ब्राह्मण) सहित व्याख्येय (मन्त्रो) का नाम वेद मान लेने पर आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

साधन और साध्य एक नहीं हो सकते। साध्य एक होने पर भी साधन अनेक हो सकते हैं। फिर साधन की आवश्यकता तभी तक रहती है जब तक साध्य की उपलब्धि नही होती। मूल के समझ लेने पर उसकी टीका अनावश्यक हो जाती है। ब्राह्मणग्रन्थ तथा अन्य वेदांगादि वेदार्थ को जानने के साधन हैं जिनकी आवश्यकता कालान्तर में असाक्षात्कृतधर्मा मनुष्यों को पड़ी। वे वेद नहीं माने जा सकते। व्याख्यासहित सूत्रों को व्याकरण तो कहेंगे किन्तु महाभाष्य, सिद्धान्तकौमुदी आदि को अष्टाध्यायी नाम से अभिहित नहीं किया जा सकता। अष्टाध्यायी तो पाणिनिमुनिकृत अष्टाध्यायी ही है। इसी प्रकार व्याख्यानरूप ब्राह्मणादि को शास्त्र तो कहा जा सकता है किन्तु वेद अपौरुषेय मन्त्रसंहिताओं का ही नाम है।

व्याकरण महाभाष्य (१-१-१) में वैदिक शब्दों के उदाहरणरूप **'शन्नो देवीरभिष्टये', 'इष त्वोर्जे त्वा', 'अग्निमीळे', 'अग्न आयाहि'** आदि उद्धृत किये हैं जबकि लौकिक शब्दों के उदाहरण रूप **'गौरश्वः'**, 'शकुनिर्मृगः' आदि को उद्धृत किया है। इस प्रकार वैदिक शब्दों के रूप मे मन्त्रसंहिताओं से तथा लौकिक शब्दो के रूप में ब्राह्मण ग्रन्थों से उदाहरण प्रस्तुत करके महाभाष्यकार ने वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों का भेद स्पष्ट कर दिया है।

वेद अपौरुषेय हैं, किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थ मनुष्यों द्वारा

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महान् भारत के स्वप्नद्रष्टा--श्रीकृष्ण

। वेदालंकार--

श्रीकृष्ण ने पूर्व से पश्चिम तक--द्वारिका से मणिपुर तक--समग्र भारत को एक सूत्र में बांध कर दृढ़ केन्द्र वाला महान् भारत बनाने का जो स्वप्न लिया था, वह स्वप्न अपने जीवनकाल में ही पूरा कर दिखाया। ऐसे राष्ट्र पुरुष को शतशः प्रणाम।

योगेश्वर श्रीकृष्ण से लेकर 'चोर-जार शिखामणि' तक श्रीकृष्ण के इतने रूपों का चलन है कि हरेक रूप पर ग्रन्थों की भरमार है। परन्तु आश्चर्य है कि श्रीकृष्ण के जिस रूप की सबसे अधिक चर्चा होनी चाहिए, वही रूप सबसे अधिक उपेक्षित है। शायद इसका कारण यह है कि भारतीय जनता ने श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर मनुष्य की कोटि से बाहर कर दिया और अपने मन मे यह समझ लिया कि उनकी सारी लीलाएं अलौकिक थीं। इसलिए इस लोक मे किसी भी मनुष्य के लिए उनका अनुकरण करना संभव नही। परन्तु महाभारत में श्रीकृष्ण का जैसा चरित्र कीर्तन किया गया है, उससे यह स्पष्ट हो जो जाता है कि वे कोई अलौकिक शक्ति-सम्पन्न देवता या ईश्वर नही, बल्कि मनुष्य ही थे। स्वयं श्रीकृष्ण कहते है--

अहं हि तत् करिष्यामि परं पुरुषकारतः।
दैवं तु न मया शक्यं कर्म कर्तुं कथंचन ॥

'मनुष्योचित जो भी प्रयत्न है वह सब यथासाध्य मैं कर सकता हूँ, परन्तु दैव के कार्यों में मेरा कुछ भी वश नहीं है।' महाभारत से और ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिनसे श्रीकृष्ण की मानवीयता सिद्ध की जा सकती है। रामायण और महाभारत जैसे आर्ष महाकाव्यो के प्रणेता अपने चरित्र नायकों को 'नर' संज्ञा से अभिहित करते हैं। परन्तु परवर्ती पुराणकर्ता इन नरो को 'नारायण' बनाकर उन्हें अपार्थिव धरातल पर प्रतिष्ठित करने से बाज नहीं आते।

महाभारत के समय इस देश में धन-जन सब कुछ था, शक्ति और साहस भी था, परन्तु जन-सामान्य में अकर्मण्यता थी। समाज के कथित उच्च वर्ग मे महत्वाकांक्षाओ का आपसी टकराव इस सीमा तक पहुँच गया था कि संभवतः देश टूटने के कगार पर होता, यदि श्रीकृष्ण न आते। ठीक है कि आर्य जीवन का सर्वांगीण विकास जैसा कृष्ण चरित्र में दिखाई देता है, वैसा अन्य कहीं नही। और यह भी सही है, स्व० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के शब्दों में कि 'इतिहास की रंगभूमि पर ऐसे व्यक्ति जब अवतरित होते हैं तब दूसरे तत्त्व पुरुषार्थ-विहीन हो जाते हैं। इतिहास-क्रम रुक जाता है। सम-शक्तियों का मान भूलकर दर्शकों का मोह उसके आसपास लिपट जाता है।' उस समय गान्धार से लेकर सह्याद्रि पर्वत-माला तक क्षत्रिय राजाओं के छोटे-छोटे किन्तु निरंकुश राज्यों की भरमार थी। उन्हें एकता के सूत्र में पिरो कर समग्र राष्ट्र को एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने वाला कोई नही था। उस समय की स्थिति का आभास महाभारत के इस श्लोक से भली-भांति हो सकता है--

देशे-देशे हि राजानः स्वस्य-स्वस्य प्रियंकराः।
न तु साम्राज्यमाप्तास्ते सम्राट् शब्दो हि कृच्छ्रभाक् ॥

'छोटे-छोटे प्रदेशों पर अपनी-अपनी सत्ता जमा कर राजा कहाने वाले तो अनेक थे पर सब अपने-अपने स्वार्थों में लिप्त थे। साम्राज्य की कल्पना नहीं थी और सम्राट् शब्द से सम्बोधित किया जा सकने योग्य कोई व्यक्ति नहीं था।'

उस समय सबसे अधिक प्रतापी राजा मगध का जरासन्ध था और वह समग्र भारतका सम्राट् बनने का स्वप्न देख रहा था। राजगृह से लेकर मथुरा तक उसका प्रभाव क्षेत्र था। मथुरा-नरेश कंस उसका सगा दामाद था। चेदि देश का शिशुपाल, सिन्धु देश का जयद्रथ और हस्तिनापुर का दुर्योधन ये सभी जरासन्ध के मित्र और वशंवद थे और उसके सम्राट् बनने में बाधक बनने की बजाय अशक्ति के कारण साधक ही अधिक थे। पूर्व की मगधपुरी और हस्तिनापुर की कुरुधुरी ये दोनों तत्कालीन राजनीति की मुख्य धुरियां थीं।

इस मगध कुरुधुरी की एक विशेषता तत्कालीन राजनीति की प्रचलित विचारधारा भी थी, जिसके कारण राजा को वंशानुगत और दैवी गुणों से युक्त समझा जाता था। 'राजा परं दैवतम्' उस समय की बद्धमूल मान्यता थी और यह समझा जाता था कि एक बार अगर किसी व्यक्ति ने किसी तरह राज्य हस्तगत कर लिया तो उसके विरोध मे आवाज उठाना अनुचित है। प्रजा को हर हालत में राजा का अनुगत होना ही चाहिए। यह विचारधारा इतनी रूढ़ थी कि भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे मनीषी और बुजुर्ग भी दुर्योधन के किसी अनुचित काम के विरुद्ध कुछ कहने की हिम्मत नही करते थे। उस समय इन बुजुर्गों का यही शिष्टजनानुमोदित आचार था। इस विचारधारा के चलते राजा को निरंकुश और अत्याचारी होने की पूरी छूट थी। इसी विचार-धारा के कारण जरासन्ध अन्य अनेक मांडलिक राजाओं को परास्त करके गिरफ्तार कर चुका था और उनके राज्यों को अपने राज्यों में मिला चुका था। इस प्रकार दुर्योधन आदि अन्य मित्रों की सहायता से एक दिन वह भारत का चक्रवर्ती सम्राट् बनने का स्वप्न देखता था।

जहां जरासन्ध साम्राज्यवादी विचारधारा का पोषक था वहां श्रीकृष्ण गणतन्त्रीय प्रणाली के पोषक थे, क्योंकि उनके यादव और वृष्णिकुल मे गणराज्य की पुरानी परम्परा चली आ रही थी। जब से मथुरा में कंस राजा बना, उसने गणतन्त्रीय प्रणाली समाप्त करके तानाशाही स्थापित कर दी और प्रजा पर साम्राज्यवादी पंजा पक्का कर दिया। उसने अपने से पूर्ववर्ती गण-प्रमुख महाराज उग्रसेन को बन्दी बना लिया। इससे सारी प्रजा अन्दर ही अन्दर घुटन महसूस कर रही थी और विद्रोह के अवसर की प्रतीक्षा मे थी। श्रीकृष्ण ने कंस को मारकर जनता के विद्रोह का नेतृत्व किया और एक तरह से मगध-धुरी के सूत्रधार जरासन्ध को अपनी ओर से पहली चुनौती दी। निश्चय ही जरासन्ध इस अपमान को अमृत के घूंट की तरह नहीं पी सकता था। इसलिए उसने बारम्बार मथुरा पर आक्रमण कि । पर हर बार श्रीकृष्ण जनता के सहयोग से छापामार युद्ध द्वारा उसे अकृतकार्य करते रहे। अन्त में जब जरासन्ध ने एक विदेशी राजा कालयवन को लेकर मथुरा पर चढ़ाई की, तब कृष्ण ने उतनी बड़ी सेना के सामने किसी भी तरह सफलता की आशा न देख मथुरा छोड़ भारत के ठेठ पश्चिम में स्थित समुद्र तटवर्ती द्वारिका को राजधानी बनाया। मगध-धुरी को समाप्त कर भारत को पश्चिम से पूर्व तक एक सूत्र में बांधने के स्वप्न की पूर्ति का ही यह अंग रहा होगा।

इधर कुरुवंश में न्याय और अन्याय के आधार पर दो टुकड़े हो गये थे और दुर्योधन का अन्यायी पक्ष मगध-धुरी के साथ जुड़ा हुआ था। तब स्वभावतः ही श्रीकृष्ण ने अन्याय से पीड़ित और अभावग्रस्त पाण्डवों को अपने उस विराट् स्वप्न को चरितार्थ करने का माध्यम बनाया।

उसके बाद जिस प्रकार बिना सैन्य बल के प्रयोग के भीम के साथ मल्लयुद्ध द्वारा जरासन्ध को समाप्त करवाया, वह कृष्ण की कंस वध के पश्चात् दूसरी सबसे बड़ी विजय थी। इस प्रकार मगध-धुरी की कमर टूट जाने के पश्चात् श्रीकृष्ण ने मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा से अर्जुन का, नगा प्रदेश की राजकुमारी हिडिम्बा से भीम का और अरुणाचल की राजकुमारी रुक्मिणी से अपना विवाह करके पूर्वी सीमान्त के इन प्रदेशों के साथ, जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हमेशा डावांडोल रहने को बाध्य रहते हैं, अपने रक्त सम्बन्ध जोड़े और उत्तर-पश्चिम धुरी के साथ उन्हें एकाकार कर दिया।

परन्तु अभी हस्तिनापुर के अन्दर आपसी विवाद को समाप्त करवाने के लिए महाभारत होना शेष था, अनिवार्य भी। क्योंकि उसके बिना दुर्योधन सुई की नोक के बराबर भी जमीन देने को तैयार नहीं था। परन्तु इस महाभारत से पहले श्रीकृष्ण ने पांचाली (द्रौपदी) के साथ अर्जुन का विवाह करवा कर पांडवों के साथ पांचाल नरेश द्रुपद का गठबन्धन करा दिया और इस प्रकार पांडवों को कौरवों से लोहा लेने में समर्थ बना दिया। पाण्डवों की विजय का मुख्य आधार जहां यह कुरु पांचाल की वज्रसन्धि थी, वहां कृष्ण की अपनी रणचातुरी भी थी। यदि कृष्ण की नीतिमत्ता न होती तो पांडव किसी भी हालत मे महाभारत में विजय प्राप्त नहीं कर सकते थे।

महाभारत की विजय का सारा श्रेय श्रीकृष्ण को है। महाभारत के असली सूत्रधार वही हैं। पर इतने बड़े महायुद्ध के बिना जो उनका विराट् स्वप्न था, पूर्व से लेकर पश्चिम तक--मणिपुर से लेकर द्वारिका तक--समस्त भारत को एक दृढ़ केन्द्र के अधीन करना, वह पूरा नहीं हो सकता था। संभवतः श्रीकृष्ण ने भविष्य में होने वाले शकों और हूणों आदि विदेशियों के आक्रमणों की कल्पना करके इस महान् भारत देश को एक दृढ़ केन्द्र के अधीन करने की योजना बनाई थी। उसी का यह परिणाम था कि आगे लगभग ४ हजार साल तक, जब तक यह देश दृढ़ केन्द्र के अधीन रहा, कभी विदेशी आक्रमणकारी सफल नहीं हो सके। जब केन्द्र कमजोर हो गया तो उसे चारोंओर से नोचने वाले गिद्ध भी सफल होते दिखाई देने लगे।

महाभारत का अर्थ केवल महायुद्ध ही नहीं, बल्कि महान् भारत और बृहत्तर भारत भी है। भारत के इस विराट् रूप को चरितार्थ करने वाले दिव्य पुरुष श्रीकृष्ण की इस राजनैतिक दिव्य महिमा को समझने वाले कितने लोग हैं?

जीव का स्वरूप : एक विवेचन--१

—धर्मवीर शास्त्री, एम. ए., साहित्याचार्य

आर्य जगत् की दृष्टि में न्याय-दर्शन और ऋषि दयानन्द दर्शन समानतन्त्र जैसे हैं। किन्तु कई बातें ऐसी हैं जिनमें ऋषि न्याय की मान्यताओं से भिन्न विचार रखते प्रतीत होते हैं। यहां मुख्य रूप से जीवात्मा के स्वरूप, गुण तथा मुक्तावस्था मे उसकी स्थिति पर दोनों के दृष्टिकोण प्रस्तुत किये जायेंगे।

न्याय-दर्शन का प्रमेय सूत्र है—आत्म शरीरेन्द्रियार्थ बुद्धि मनः प्रवृत्ति दोष प्रेत्यभाव फल दुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्। इसके तुरन्त बाद के सूत्र में इच्छा-द्वेषादि आत्मा के लिंग बताये गये हैं। प्रमेय सूत्र के भाष्य में भी आत्मा की विशेषताएं बताकर द्वितीय प्रमेय शरीर के प्रसंग में लिखा है—तस्य भोगायतनं शरीरम्। इससे यह स्पष्ट होता है कि यहां आत्मा से जीवात्मा ही अभिप्रेत है। किन्तु क्या जीवात्मा सर्वज्ञता आदि गुणों से भी युक्त है। भाष्यकार ने लिखा है—तत्रात्मा सर्वस्य द्रष्टा, सर्वस्य भोक्ता, सर्वज्ञः, सर्वानुभावी। यदि ये समस्त गुण जीवात्मा के हैं तो परमात्मा के लिए क्या शेष रहता है। अपनी दृष्टि से देखने पर यह बात अनोखी अवश्य लगती है, परन्तु न्याय-परम्परा में जीवात्मा को भी विभु कहा गया है। फिर जहां विभुता सम्भव है वहां सर्वज्ञता तो रह ही सकती है। तर्कभाषा में लिखा है - आत्मत्व-सामान्यवान् आत्मा। स च देहेन्द्रियादि व्यतिरिक्तः प्रतिशरीरं भिन्नो नित्यो विभुश्च।

जीवात्मा के विभुत्व का हेतु यह है कि उसे दिग्-देश की सीमाएं नहीं बांधतीं। उत्पत्ति एवं नाश से रहित होने के कारण वह नित्य है। यह बात उभयत्र सामान्य है। विचारणीय है उसका विभुत्व। साथ ही यह भी कि जीवात्मा के नित्यत्व का हेतु भी उसका विभु होना है। तर्क भाषा में जीवात्मा के विभुत्व के समर्थन में लिखा है—

स च सर्वत्र कार्योपलम्भाद् विभुः परम महत् परिमाणवान् इत्यर्थः। विभुत्वाच्च नित्योऽसौ व्योमवत्। सुखादीनां वैचित्र्याद् प्रतिशरीर भिन्नः।

यहां जीवात्मा को विभु मानने का मुख्य आधार दिया है—सर्वत्र अर्थात् दिग्देश की सीमाओं से रहित कार्य अर्थात् भोग की प्राप्ति। इस बात को समझने के लिए वस्तु की उत्पादक सामग्री के विषय में न्याय-सिद्धांत को समझना आवश्यक है।

किसी भी वस्तु की उत्पादक सामग्री तीन सर्व-सम्मत कारणों में विभक्त मानी जाती है—(१) उपादान कारण (घड़े के सन्दर्भ में मिट्टी) (२) निमित्त कारण (कुम्भकार)(३)साधारण कारण (दण्ड, चक्रादि,। न्याय के मत में इन तीन के अतिरिक्त एक चौथा कारण भी माना जाता है—भोक्ता का अदृष्ट। इसी अदृष्ट की भिन्नता के कारण एक ही परिवेश के जीवों को भी पृथक्-पृथक् शरीरादि की उपलब्धि होती है। अपनी नियत कारण सामग्री से उत्पन्न कार्य भोक्ता के अदृष्ट से जुड़कर भोग बन जाता है। कौन भोग कब कहां प्राप्त होगा अथवा यों कहें कि भोक्ता कब कहां जायेगा और उसे उसको भोग किस रूप में प्राप्त होगा, कहना असम्भव है। वह किसी भी प्रकार पूर्वतो ज्ञात सीमा से आबद्ध नहीं हो सकता, अतः न्याय कहता है कि जीवात्मा, जो अदृष्ट का अधिष्ठान है, विभु एवं परम महत् परिमाणवान् है। इसके अतिरिक्त विभु-वादियों का यह भी कहना है कि जीवात्मा को यदि अणु परिमाण वाला मानें तो उसके लिए स्वशरीर की चेष्टाओं पर नियन्त्रण रखना भी असम्भव है। मध्यम परिमाण अनित्य अथवा जन्य वस्तुओं का होता है। जीवात्मा नित्य है, अत उसे महत् परिमाण वाला ही मानना ठीक है। ऐसा न्याय का मत है।

नैयायिकों के अनुसार दुःख से अत्यन्त विमोक्ष को अपवर्ग कहते हैं—तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्गः। इनके मत में सुख भी दुःख रूप है—अविनाभाव सम्बन्ध से सहचारी है—सुखं तु दुःखमेव, दुःखानुषक्तित्वात्। 'भारतीय दर्शन' नामक ग्रन्थ मे स्पष्ट लिखा है—'शरीर से मुक्त होने पर आत्मा के दुःखों का ही केवल अन्त नहीं होता है, प्रत्युत उसके सुखों का भी अन्त हो जाता है। क्योंकि उसमें किसी भी प्रकार की अनुभूति अवशिष्ट नहीं रहती, अतः मोक्ष की अवस्था में आत्मा शरीर से पूर्ण-तया मुक्त होकर सुख-दुःख से परे हो जाता है और बिल्कुल अचेतन हो जाता है।'

चलिए, सुख तो दुःख का अनुषंगी है, अतः न सही सुख, आनन्दानुभूति अथवा आनन्दमय स्थिति में जीव का मुक्तावस्था में रहना नैयायिक कदाचित् मानते हों, परन्तु ऐसा भी नहीं। वे तो मुक्तावस्था में जीव को सर्वथा अचेतन मानते हैं—एकदम जड़-तुल्य मूर्च्छितप्राय तथा पूर्णतया सर्वविध सवेदनाओं से शून्य।

आइये, देखें, महर्षि की इन सबके विषय में क्या मान्यताएं हैं। ऋषि दयानन्द जीवात्मा को अल्पज्ञ तथा परिच्छिन्न मानते हैं। ऋषि की सम्मति जानने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास द्रष्टव्य है जीव का परिमाण विषय। विरजानन्द वैदिक संस्थान के स्थूलाक्षर सटिप्पण सत्यार्थप्रकाश की टिप्पणी में इस विषय को पूर्णतया स्पष्ट किया गया है। टिप्पणी-कार ने मन्त्र उद्धृत किया है—

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमप कर्माणि कृण्महे॥ अथर्व०

अर्थात् अव्यापक परिच्छिन्न जीवात्मा तथा व्यापक परमात्मा के भेद को मैं बुद्धि द्वारा खोलता हूं।''' सायणाचार्य ने इस मन्त्र के भाष्य में 'अव्यस —अव्यापकस्य परिच्छिन्नस्य जीवात्मन' ऐसा अर्थ किया है।

आगे इसी अर्थ के प्रतिपादन मे मन्त्र संगृहीत है--

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया॥

(एक अर्थात् जीवात्मा बाल से भी सूक्ष्म है इत्यादि)।

पुनः श्वेताश्वतर उपनिषद् का कथन उद्धृत किया गया है—

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः स चाऽऽनन्त्याय कल्पते॥

(बाल के अग्रभाग के दस हजारवें भाग के बराबर जीव का परिमाण है।)

इसी प्रसंग मे सांख्यसूत्र उद्धृत किया गया है—

अणु परिमाणं तत्कृति श्रुतेः। सांख्यदर्शन ३/१४

अर्थात् जीव का परिमाण अणु सम्मित है।

(प्रसंगतः यहां यह स्पष्ट कर देना अनुपयुक्त होगा कि उदयवीर जी शास्त्री ने सांख्यदर्शन के अ विद्योदय भाष्य में इस सूत्र की जो व्याख्या की उसमें इस सूत्र में प्रदत्त अणु परिमाण मन का लि है, जीवात्मा के परिमाण को बताने वाला यह (नहीं है।)

'स्वाध्याय-सन्दोह' नामक अपने ग्रन्थ में स्वर्ग स्वामी वेदानन्द जी ने अव्यसश्च० मन्त्र की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द जी का कथन उद्धृत कि है, जिससे जीव के महर्षि अभिमत स्वरूप पर प्रका पड़ता है—

"जीव एक सूक्ष्म पदार्थ है, जो एक परमाणु । भी रह सकता है। उसकी शक्तियां शरीर में प्राण बिजली और नाड़ी आदि के साथ सयुक्त हो रहती हैं उनसे सब शरीर का वर्तमान जानता है।"

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास के मुक्ति साधन प्रसंग में जीवात्मा के कारण शरीर को 'विभु' और 'एक' बताया है—'तीसरा कारण जिसमें सुषुप्ति और गाढ़ निद्रा होती है, वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है।'

(क्रमशः)

(पृष्ठ ५ का शेष)

रचित हैं। अतः दोनों एक नही हो सकते। अर्थात् मनुष्योक्त ब्राह्मण ग्रन्थों की संज्ञा वेद नही हो सकती। ब्राह्मण ग्रन्थ मनुष्योक्त हैं—यह निर्विवाद है। शतपथ ब्राह्मण की समाप्ति पर उपदेश की परम्परा देते हुए अन्त में लिखा है—

तानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते।

अर्थात् उन शुक्ल यजुर्वाक्यो का वाजसनेय याज्ञवल्क्य आख्यान करते हैं।

शतपथ ब्राह्मण के उपज्ञाता याज्ञवल्क्य हैं और और उपनिबन्धक उनका कोई अज्ञातनामा शिष्य। अर्थात् विचार याज्ञवल्क्य के हैं और उनको ग्रन्थरूप देने वाला उनका कोई शिष्य है। ग्रन्थ मे स्थान-स्थान पर याज्ञवल्क्य के वाक्यो को प्रमाणरूपेण उपन्यस्त किया गया है। अनेकत्र उपलब्ध तदु होवाच याज्ञवल्क्य. इत्यादि वाक्यो मे प्रथम पुरुष और परोक्षभूतवाचक लिट् लकार के प्रयोग से स्पष्ट है कि याज्ञवल्क्य और उनका कोई परम्परागत शिष्य ही शतपथ ब्राह्मण के वर्तमान मे उपलब्ध रूप के रचयिता हैं। कहीं-कहीं पुरा और एतर्हि तथा तदु हैके कह-कह कर प्राचीन एव आत्मसमकालीन कतिपय विचारों एव पद्धतियों का भेद भी दर्शाया गया है। एक स्थान पर तो आरुणि का नाम लेकर स्पष्ट कहा गया है—

सम्वदैतदारुणिना प्रशुनोपज्ञातं यद् गोतम ब्रुवन्ति। स यदि कामयेत ब्रूयादेतत् यद्य कामयेत अपि नाद्रियेत।

इन सब प्रमाणों की उपस्थिति मे इस ग्रन्थ को मनुष्योक्त न मानकर वेदों के समान अपौरुषेय अथवा ईश्वरोक्त कौन कह सकता है? यही स्थिति अन्यान्य ब्राह्मणों की है। महाभाष्यकार पतंजलि ने तो स्पष्ट शब्दों में घोषणा की—'ब्राह्मणैर्महर्षिभिः प्रोक्तानि वेदव्याख्यानानि ब्राह्मणानि।' अर्थात् ब्राह्मण महर्षियो वेद व्याख्यानरूप ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना की।

देर से ही होता अन्धेर

कहां है आज सुदर्शन चक्र, काट दे शिशुपालों के शीश।
कहां हल लिये छिपे बलराम, जो बने कहां द्वारिकाधीश ॥
कहां है परशुराम का परशु, काट दे सहस्रबाहु के हाथ।
घूमते क्यों रावण निश्शंक, अकेली सीता हुई अनाथ ॥
बीजते भू में विष के बीज, जनक क्यों जनक नहीं हैं आज।
मयूरों को मिलती क्यों मौत, भुजंगों के सिर पर क्यों ताज।
बादलों से विष की बरसात, घुसी है झोंपड़ियों में कीच।
हवाएं हुईं आज बेशर्म, वासवत् खींचे देह को खीच।
कहां है अर्जुन का गांडीव, बींध दे फिर चिड़िया की आंख ॥
बढ़ा क्यों हत्याओं का जोर, कौन काटे गिद्धों की पांख।
अन्धेरा छाया है हर ओर, झूठ का अश्व बड़ा मुंहजोर।
लूटते हैं घर को मेहमान, छाह को बांट रहा है चोर।
कहां है चणक पुत्र चाणक्य, नीति के नयन मुंदे क्यों मित्र।
कहां है चन्द्रगुप्त बल धाम, हुई क्यों तक्षशिला अपवित्र।
कातिलों के बढ़ते परिवार, हो रहे सम्मानित गद्दार।
सत्य को निर्वासित कर दिया, झूठ के सजते हैं दरबार।
दुःख के दावानल का जोर, उठा है त्राहि त्राहि का शोर।
भर रही है पानी दिन रात, अन्धेरों के घर में क्यों भोर।
रश्मियों का रथ है अवरुद्ध, अहिंसा मरती देखे बुद्ध।
हृदय के भाव नहीं हैं शुद्ध, चल रही दुनिया वेद विरुद्ध।
द्रोपदी लुटतीं आज असस्थ, कृष्ण क्यों होता कभी न क्रुद्ध।
हुआ है अर्जुन को फिर मोह, धर्म का कौन लड़ेगा युद्ध।
सुयोधन कर में ले पाखंड, अहम् से है पागल उद्दण्ड।
युधिष्ठिर हुए जुए में मग्न, रहेगा कैसे राष्ट्र अखण्ड।
नकुल के डाली हुई नकेल, शकुनियों के हैं घातक खेल।
इमलियों के पत्तों पर नित्य, भीम अब दण्ड रहे हैं पेल।
हृदय का गोकुल हुआ उजाड़, सिंह पर गीदड़ रहे दहाड़।
वेदना तन पर बना पहाड़, भावनाओं के बन्द किवाड़।
कुन्तियों ने काटे हैं केश, हृदय में ममता रही न शेष।
भाड़ में जाये अपना राष्ट्र, पड़े चूल्हे में अपना देश।
कह रहे बेटे ऐसी बात, डोलियों को लूटे बारात।
डरे यमुना गोवर्द्धन खूब, आ रही प्रालेयी बरसात।
शोक में डूबा आज अशोक, वक्ष पर संगीनों की नोक।
अहिंसा को हिंसा ने टोक, पाप ने लिया पुण्य रथ रोक।
हर तरफ है बस हा-हाकार, रक्त का गरजे पारावार।
दीखती कहीं नहीं पतवार, सिरों पर लटकी हैं तलवार ॥
बना है भस्मासुर विज्ञान, ज्ञान पर हावी है अज्ञान।
मशीनों ने मारा इन्सान, शाप से डरा-डरा वरदान।
देश के भीतर उठा उफान, रुका है सीमा पर तूफान।
राम से लड़ न पड़ें दशमेश, भारती से भिड़ गई अजान।
कहां है ऋषि-मुनियों का देश, शेष हैं थोड़े से अवशेष।
त्याग का होता है अपमान, भोग को दर्जा मिला विशेष।
हजारों हाथ हजारों पांव, जल रहे धू धू करके गांव।
कैक्टसों का होता अभिषेक, उपेक्षित है पीपल की छांव।
बढ़ा है रोग नहीं उपचार, आज हैं बाधातित कुविचार।
सादगी भूल गये हैं लोग, चढ़ा है डिस्को रूप बुखार।
कहां हो कृष्ण कन्हैया आज, धरा की कौन रखेगा लाज।
यशोदा की आंखों में पीर, देवकी के पग में जंजीर।
कंस और जरासंध का जोर, नन्द के नयन लुटी जागीर।
बहुत ही दुखी दिखे वसुदेव, हवाएं करने लगीं कुटेव।
देव भी नहीं रहे अब देव, निराशाग्रस्त आज सहदेव।
तुम्हें आना ही होगा नाथ, नहीं तो छूट जायेगा साथ।
तुम्हारी गौएं कटतीं नित्य नाथ के होते हुए अनाथ।
दिखाएं देती हैं धिक्कार, बधिर को सुनती नहीं पुकार।
जीत कर हारे हैं हर बार, हमारा कुछ न रहा अधिकार।
जन्म लो करो न किंचित्, देर देर से ही होता अन्धेर।
प्रतीक्षारत हैं सब नर-नार, रात को कर दो पुनः सबेर।

—प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी'
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
डी० ए०-वी० कालेज, अबोहर।

राष्ट्र पुरुष की झोली

दे कर के सर्वस्व भरो अब राष्ट्र पुरुष की झोली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

कर अगणित बलिदान खून से सींचत जिसकी झांकी,
स्वतन्त्रता में घटती जाती भारत मां की झांकी,
काट रहे वट वृक्ष देश का मुसलमान ईसाई,
छल-प्रपञ्च से अलग हो रहे दलित हमारे भाई।

पद लिप्सा में फंसी आज सरकार हमारी भोली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

बने धर्मनिरपेक्ष राजनेता कुछ अश्वत्थामा।
मुसलमान बनते जाते कितने कंगाल सुदामा ॥
छुआछूत का भूत भस्म अब मन्त्रों से करना है।
संगच्छध्वं बोल विषमताओं का विष हरना है ॥

फटा हुआ वर वक्ष सिवेंगे भारत मां की चोली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

ममतामयी आर्य मां का यह दुश्चरित्र विज्ञापन।
राम कृष्ण के इस भारत में होता गर्भसमापन ॥
खुले आम बूचड़खानों में कटती मैया मैया।
संसद के मांझी चुप बैठे छोड़ धर्म की नैया ॥

आओ अब समाज कर जागृत रोकें खूनी होली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

चीर आज विदुषी बहनों के दुर्जन खींच रहे हैं।
शिक्षा बोध करने वाले खुद आंखें मींच रहे हैं ॥
अट्टहास करता दहेज का दामन खोल रहा है।
बुद्धिजीवियों के भी सिर पर चढ़ कर बोल रहा है ॥

लटक अधर में रही राष्ट्रभाषा हिन्दी की डोली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

ठौर-ठौर बांटती वारुणी दूकानें सरकारी।
पी-पीकर उन्मत्त हो रहे घर-घर में नर-नारी ॥
सदियों से भारतीय संस्कृति पर जो मरते आये।
दीवारों में चिनकर इसकी रक्षा करते आये ॥
भूल रहे पथ सिक्ख शिष्य अब बलिदानों की रोली।
युग निर्माण करेगी अब आनन्दबोध की टोली ॥

— सत्यव्रत चौहान सिद्धान्तशास्त्री

साध्य और साधन की पवित्रता

—आचार्य रामानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार (पटना)

यजुर्वेद के पुरुष सूक्त के १६वें मन्त्र में वेद उपदेश देते हैं कि—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः ॥

अर्थात् यज्ञ से यज्ञ सम्पन्न हुआ । उस पवित्र प्रथम कृत्य में देवता प्रथम थे । उन्होंने निश्चय ही पूर्व में सुख की महिमा का विस्तार किया । यह उपरोक्त मन्त्र का शाब्दिक अर्थ हुआ । भावार्थ यह है कि वेद भगवान् कहते हैं कि हमारा साध्य (लक्ष्य) और साधन (विधि) भी पवित्र होनी चाहिये । उदाहरणार्थ यदि हमें कोई धर्मशाला बनवानी हो, जिससे सार्वजनिक लाभ होगा, किन्तु रुपया लोगों से लेने में जोर-जुल्म किया अथवा डकैती डलवा कर रुपया प्राप्त किया, उन रुपयों से धर्मशाला का निर्माण कराया तो वह धर्मशाला न होकर अधर्मशाला होगी ।

महाभारत के अश्वमेध पर्व मे वेदव्यास ने एक दृष्टान्त से इस विषय को अच्छी तरह समझाया है । वह कथानक यों है—

महाराजाधिराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ सम्पन्न कराया, जिसमें सम्पूर्ण देश के याजक, पण्डित, विद्वान् और मनीषी आमन्त्रित थे । वह यज्ञ कई दिनों तक चलता रहा । लोगों ने धन्य-धन्य कहा । जिसने जो मांगा उसे वह वस्तु प्राप्त हुई । सबने कहा कि ऐसा यज्ञ आज तक किसी ने नही किया था । वेदव्यास कहते हैं कि उसी समय एक नकुल (नेवला) आया । यज्ञ के पश्चात् युधिष्ठिर अवभृथ स्नान कर चुके थे । नेवले ने कहा कि महाराज, आपका यह यज्ञ एक सेर सत्तू के समान भी नहीं हुआ—

सक्तुप्रस्थेन वो नायं यज्ञः तुल्यः कदाचन ।

सब आश्चर्य चकित हो गए । नेवले ने कहा कि महाराज, कुछ वर्ष पूर्व हस्तिनापुर में अकाल पड़ा । अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष हो गया । लोग आहार बिना मरने लगे, सब अपनी जीविका की चिन्ता में थे । एक ब्राह्मण था, परिवार जिसके घर ४ आदमी थे—ब्राह्मण, उसकी पत्नी, एक लड़का तथा उसकी भी पत्नी । दुर्भिक्ष के कारण कोई अग्निहोत्रादि भी न कराता था कि दक्षिणा प्राप्त हो, जिससे ब्राह्मण परिवार अपना निर्वाह करे । जब परिवार भूख से तड़पने लगा तो ब्राह्मण ने कहा कि यों मरना अच्छा नहीं । भीख की याचना भी कलुषित है । चलो, खेत में चलें, जहाँ की उपज काटकर किसान ले गया है । खाली खेत में जो अन्न गिर गया है उसे तो पक्षी या कीड़े खायेंगे अथवा वह सड़ जायेगा । चलो, उसे चुनकर खायें । शास्त्रों में इसे उञ्छवृत्ति कहा गया है ।

अन्ततः सारे परिवार ने खेत में जाकर गिरे हुए अन्न के दानों को चुनकर इकट्ठा किया एवं घर में लाये तथा भूनकर सत्तू बनाकर बलिवैश्व देवयज्ञ सम्पन्न कर ज्यों ही खाना चाहते थे, त्योंही एक विद्वान् किन्तु निर्धन ब्राह्मण द्वार पर आये ।

ब्राह्मण ने कहा कि यजमान, मैं भूख से मर रहा हूँ । मुझे बिना खाये कई दिन हुए, मुझे कुछ भोजन खिलाओ । ब्राह्मण ने अपना हिस्सा दे दिया । सोचा कि शेष से हम चारों खा लेंगे । किन्तु उतने से उस भिक्षुक ब्राह्मण की तृप्ति नहीं हुई । अन्ततः सबका हिस्सा भिक्षुक ब्राह्मण ने चट कर लिया । किन्तु उस भूखे परिवार ने कोई कटु शब्द न बोला—न बुरा अनुभव किया ।

नेवला कहता है कि खाकर जहां उस भिक्षुक ब्राह्मण ने हाथ धोये, वहां की मिट्टी गीली हो गई थी । मैं अपने विवर से निकलकर उधर दौड़ा जा रहा था कि मेरा पैर फिसल गया । मैं गिर पड़ा । मेरे अर्ध शरीर में पंक लिप्त हो गया । पश्चात् जब मिट्टी सूखी तो आधा शरीर स्वर्णमय हो गया । किन्तु आपके इस यज्ञ में मैं सात दिनों से लोट रहा हूँ । स्वर्णमय होने की तो कौन कहे यह और गन्दा हो रहा है ।

इसका कारण क्या है ? आपके यज्ञ का लक्ष्य पवित्र था किन्तु प्रजा से चन्दा जबरदस्ती वसूल किया गया था ।

साधन अपवित्र था । आज लोग कहते हैं कि धनियो को लूटो तथा गरीबों में बांटो—इससे कल्याण होगा । यह विधि अपवित्र है । राजा ऐसा विधान बनाये कि कोई इकट्ठा न करने पाये । यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का प्रथम मन्त्र है—

'ईशा वास्यमिदं सर्वम्' अर्थात् सर्वस्व पर सरकार का नियन्त्रण है । उसके नियमानुसार जो प्राप्त हो उसे भोगो, दूसरे के अधिकार का लोभ न करो ।

यजुर्वेद का आदेश है—

राजा विशि प्रतिष्ठितः राजा का सम्पूर्ण अधिकार प्रजा मे प्रतिष्ठित है । राजा प्रजा द्वारा निर्वाचित हो ।

बहुत अधिक इकट्ठा करने वाले के लिए ऋग्वेद का आदेश है—

मोघमन्नं विन्दतेऽप्रचेताः सत्य ब्रवीमि वध इत्स तस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं, केवलाघो भवति केवलादी ॥

अर्थात् मूर्ख व्यर्थ इकट्ठा करते हैं । जो न विद्वानों अथवा मित्रों का पोषण करते हैं उनकी मौत निश्चित है ।

क्या हम इस वैदिक आदेश से शिक्षा लेंगे ? हम किसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए दुष्ट विधि न अपनायें । अवैध विधि मे इकट्ठा द्रव्य लाभप्रद नही होता । अन्त में उसका परिणाम बुरा होता है ।

हमारी ये शस्यश्यामला धरा
विशाल जनशक्ति
कालजयी इतिहास
कल-कल बहती संस्कृति की धारा—
जननी जन्मभूमि का वह गौरव
ब्रिटिश साम्राज्यवाद भी जिससे हारा
और चमका हमारी स्वाधीनता का तारा।

वह ज्योति जली रहे

वही गौरव जिसके बल पर
आज छाया है भारत
औद्योगिक जगत के नभ पर।
और वही गौरव निरंतर,
हमें एक सूत्र मे जोड़ता रहेगा,
अलगाववादी ताकतों से
भारत की रक्षा करता रहेगा।

स्वाधीनता
भावना
बनी रहे

दिल्ली

धर्मनिरपेक्ष भारत की गौरवशाली राजधानी है।

यहां विभिन्न सम्प्रदायों, मतों एवं धर्मों के लोग शान्तिपूर्वक रहते आये हैं।

आइये इस परम्परा को बनाये रखें।

हमें देश के दुश्मनों के हाथों नहीं खेलना चाहिए। वे एक प्रगतिशील, आधुनिक, संगठित तथा समृद्ध भारत को नहीं देख सकते। उनका एक-मात्र उद्देश्य शान्ति भंग करना तथा भारत की अखण्डता को नष्ट करना है।

हम उनके नापाक इरादों को संगठित रहकर ही विफल बना सकते हैं।

हमें अफवाहें नहीं फैलानी चाहिएं
हमें अफवाहें नहीं सुननी चाहिएं

दिल्ली प्रशासन

शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भावना बनाये रखने के लिए आप सबका सहयोग चाहता है।

सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन द्वारा प्रचारित

R N. 626/57 Licensed to post without prepay

No.U 93 Post in D.P.S.O. on 22-8-86

आर्यसमाजो के चुनाव

आर्यसमाज सुगरूर—प्रधान श्री सोमीराम, मन्त्री श्री अशोक कुमार और कोषाध्यक्ष श्री शिवराम महाजन।

आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला—प्रधान श्री रोशनलाल बहल, मन्त्री श्री सुदर्शन कुमार कपूर और कोषाध्यक्ष श्री सुधीर आर्य।

भारतीय सिद्धांत परिषद्, नजीबाबाद—प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश आर्य, मन्त्री श्री विद्यारत्न आर्य और कोषाध्यक्ष श्री चानन सिंह।

आर्य केन्द्रीय सभा, आगरा—प्रधान श्री रीशमलाल गुप्त, मन्त्री श्री अमरनाथ वानप्रस्थ और कोषाध्यक्ष श्री शिवनाथ।

आर्यसमाज शक्तिनगर (जिला मिर्जापुर)—प्रधान श्री अखिलेश्वर द्र मन्त्री श्री शिवकरण दुबे और कोषाध्यक्ष श्री अजयकुमार श्रीवास्तव।

आर्यसमाज बहजोई (जिला मुरादाबाद)—प्रधान डा० लवकुमार आर्य मन्त्री श्री नित्यमूर्ति आर्य और कोषाध्यक्ष श्री दीपेन्द्रकुमार आर्य।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर—प्रधान श्री रामप्रसाद याज्ञिक मन्त्री श्री रामप्रसाद वैदिक और कोषाध्यक्ष श्री राधश्याम शर्मा।

आर्यवीर दल चन्दैना (जिला सहारनपुर)—प्रधान श्री दिवाकर आर्यवीर मन्त्री श्री राजेशकुमार आर्य और कोषाध्यक्ष—श्री अखिलकुमार आर्य।

आर्यसमाज आर्यनगर लालागुडा सिकन्दराबाद—प्रधान श्री एम [illegible]य्या, मन्त्री श्री टी वी येल्लय्या और कोषाध्यक्ष श्री के भिक्षापति।

आर्यसमाज बोरदा (जिला [illegible]) —प्रधान श्री [illegible] चौबे, मन्त्री श्री पुरालाल शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री प्रमुलाल पाटीदार। आर्यसमाज [illegible]—प्रधान श्री सुभाषचन्द्र पाहूजा मन्त्री श्री बैजनाथ दुग्गल और कोषाध्यक्ष श्री देशपाल अरोड़ा। आर्यसमाज टूण्डला (आगरा)—प्रधान श्री पृथ्वीराजसिंह परमार, मन्त्री श्री राहुलकुमारसिंह और कोषाध्यक्ष श्री इन्द्रजीतसिंह आर्य।

—आर्यसमाज लश्कर, ग्वालियर—प्रधान श्री भारतभूषण त्यागी मन्त्री श्री मदनमुरारी सक्सेना और कोषाध्यक्ष श्री [illegible]।

—आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक, बंगलूर—प्रधान श्री [illegible] मन्त्री श्री गोपालदेव और कोषाध्यक्ष श्री नारायण राव।

दक्षिण [illegible] मंडल का चुनाव

नई दिल्ली। [illegible] मंडल के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री हरबंस लाल कोहली, उप प्रधान—श्री रामसरनदास जी आर्य (वरिष्ठ), श्री [illegible] कटारिया और श्रीमती सरला [illegible]पाल, महामन्त्री—श्री पुरुषोत्तम शास्त्री, मन्त्री—श्री भूपसिंह गुप्त और श्री हरीश मित्र अग्रवाल कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] और लेखानिरीक्षक—श्री नरेन्द्रलाल हमीजा।

आर्य प्रतिनिधि सभा असम का चुनाव

गोहाटी। आर्य प्रतिनिधि सभा असम के चुनाव मे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान डा० [illegible], उपप्रधान श्री [illegible] प्रसाद सराफ, मन्त्री श्री ओम्प्रकाश आनन्द उपमन्त्री प० कमलाकान्त आत्रेय, प्रचारमन्त्री श्री अरुण शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री हमर[illegible] आर्य।

[illegible] आवश्यकता है

एक पुरोहित की जो वैदिक संस्कार अच्छी तरह करा सके और आर्य सिद्धान्तों पर व्याख्यान दे सके। पारिश्रमिक मिलने पर तय किया जा सकता है। [illegible] आर्यसमाज पञ्जाबी बाग (वैस्ट) दयानन्द मार्ग नई दिल्ली-२६ के नाम भेजें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष . २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ३७ | भाद्रपद कृ० १२ सं० २०४३ | रविवार ३१ अगस्त १९८६

भिंडरांवाले के पिता बाबा जोगिन्दरसिंह का दौरा और बरनाला की बेबसी

पंजाब का शासक कौन है : बरनाला या जोगिन्दरसिंह ?

पंजाब में श्री सुरजीतसिंह बरनाला का प्रभुत्व चंडीगढ़ में आपके सेक्रेटरियट की चहारदीवारी तक सीमित है, क्योंकि पंजाब के देहात और बड़े नगरों से जो समाचार आ रहे हैं उनसे तो यह दिखाई देता है कि आपके विरोधी जो चाहते हैं वह हो जाता है और आप इसे केवल देखते रह जाते हैं।

इसका नवीनतम प्रमाण जरनैलसिंह भिंडरांवाले के पिता बाबा जोगिंदर सिंह के अभी हुए दौरे से मिल जाता है। बाबा जी महाराज यूनाइटिड अकाली दल के प्रधान हैं और आपने पिछले पांच दिनों में पंजाब के कई नगरों का दौरा किया और वहां आपने जो भाषण दिये उनसे यह दिखाई देता है कि आप राज्य के बादशाह हैं चाहे बेताज के ही हों। जहां-जहां आपने भाषण दिये, वहां-वहां आपने संकेत कर दिया कि आप पंजाब मे सिख शासन चाहते है। १५ अगस्त को आप पटियाला से चले। आपके साथ एक ट्रक, एक जीप और सात कारें थीं। इनमें आपके सौ के करीब समर्थक बैठे थे। एक दर्जन के करीब उग्रवादी नंगी तलवारे घुमा रहे थे। एक के बाद दूसरे के बाद तीसरे गांव मे जाते थे और वहां अपने भाषण मे कह रहे थे कि "आपका दौरा गिरफ्तार सिख नवयुकों और सेना से भागे हुए नवयुवकों को कैद से रिहा कराने के सन्दर्भ मे है और कि यह सब दिल्ली की हिन्दू सरकार से छुटकारा पाने के संघर्ष का एक भाग है।" आपके साथ आपका कप्तान (रिटायर्ड) बेटा हरचरणसिंह और दल का सेक्रेटरी बलदेवसिंह बरार थे। आप जहां भी गये वहां आपने केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध काफी विषैले भाषण दिये। जब भी आपका काफिला किसी नगर या गांवसे गुजरता तो आपके साथी खालिस्तान और भिंडरांवाले के पक्ष मे नारे लगाते थे। कई जगह तो इनसे भी अधिक भड़काने वाले नारे लगते। कई स्थानों पर भिंडरांवाले के समर्थकों से कहा जाता कि आगे धर्मयुद्ध की तैयारी के लिए वे मोटर साइकलें और शस्त्र खरीदे। जो जलसे होते उनमें भी लोगों को यही कहा जाता कई स्थानो पर जेलों में बन्द भगोड़े सैनिकों की पत्नियां और दूसरे रिश्तेदारो का सम्मान किया जाता और इन्हें सरोपा भेट किया जाता। प्रायः देहात के लोगों को यह भिंडरांवाले के समान विचारों के बनाने का एक प्रयास था।

जरनैलसिंह भिंडरांवाले और इसके पिता मे अगर कोई अन्तर है तो यह कि जरनैलसिंह गुरुद्वारों के अन्दर ही विषैले भाषण दिया करता था किन्तु बाबा जोगिन्दरसिंह स्पष्ट रूप से देहात मे दे रहा है। विषैले भाषण देने के अलावा बाबा जोगिन्दरसिंह स्वर्गीय सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल, श्री सुरजीतसिंह बरनाला और श्री बलवन्तसिंह को गद्दार कह रहा है जिन्होंने सिखों के हितों को दिल्ली दरबार के हाथों बेच दिया है। आप श्री प्रकाशसिंह बादल और जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहरा पर आरोप लगाते रहे कि वे भी पंथिक हितो से गद्दारी मे सन्त लोंगोवाल के साथ थे। अब वे बरनाला के विरुद्ध केवल इसलिए हैं कि इनसे शक्ति छीनना चाहते है। देहात मे जो सम्मेलनहुए इनमे आपने कई बडे लोगो के आचरण के विरुद्ध बहुत कुछ कहा। अपने दौरे के मध्य बाबा जोगिन्दरसिंह ने ६७ भाषण दिये और आपको २५ हजार रुपये की थैलिया भेट हुई। कई जगह आपका पब्लिक स्वागत हुआ। यह इसलिए था, क्योंकि लोग आपका जरनैलसिंह का पिता होने के नाते आदर करते हैं। दमदमी टकसाल और आल इण्डिया सिख स्टुडेन्ट्स फैडरेशन के कई लोग आपका समर्थन करते है। और इनमे से कई आपके साथ भी रहे। जत्थेदार गुरुचरण सिंह टोहरा के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

देश-भर में पंजाब बचाओ--देश बचाओ दिवस पर विविध आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश पर १७ अगस्त को देश-भर में पंजाब बचाओ--देश बचाओ दिवस मनाया गया। सभा ने इस अवसर पर पारित किये जाने के लिए जो प्रस्ताव भेजे थे, वे पारित किये गये। (ये प्रस्ताव सार्वदेशिक में प्रकाशित हो चुके हैं।) पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष के लिए धन संग्रह किया गया। भारत के भूतपूर्व स्थलसेनाध्यक्ष जनरल अरुणकुमार श्रीधर वैद्य की हत्या की कठोरतम शब्दों में निन्दा की गई।

अब तक निम्नलिखित आर्यसमाजों में हुई सभाओं आदि के समाचार प्राप्त हुए हैं—:

आर्यसमाज खड़गपुर (जिला मेदिनीपुर), आर्यसमाज नया नांगल (जिला रोपड़), आर्यसमाज खंडवा, आर्यसमाज सहतवार (जिला बलिया), आर्यसमाज असुरन, रेलवे कालोनी, वेदमन्दिर, गोरखपुर, आर्यसमाज नारायणपेठ (जिला महबूबनगर), आर्यसमाज मठपारा, दुर्ग, आर्यसमाज जवाहरनगर, पलवल, आर्यसमाज रेलवे कालोनी, बरौनी एवं गढहरा, आर्यसमाज बदायूं, आर्यसमाज लहेरिया सराय (जिला दरभंगा), आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार राज्य, पटना, आर्यसमाज मवाना (जिला मेरठ), आर्यसमाज चौक, प्रयाग, आर्यसमाज किंग्सवे कैम्प, दिल्ली, आर्यसमाज जालन्धर (अड्डा होशियारपुर), आर्यसमाज सैक्टर नम्बर सात, फरीदाबाद, आर्यसमाज आर्यनगर डाकखाना इस्लामपुर (जिला बदायूं), आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली, आर्यसमाज रिवाड़ी, आर्यसमाज उसंड (जिला सहारनपुर), आर्यसमाज पूंजला नयापुरा, जोधपुर, आर्यसमाज शाहजहांपुर, आर्यसमाज बीकानेर नगर, आर्यसमाज परमानन्द बस्ती, बीकानेर, आर्यसमाज माडल टाउन, रोहतक, आर्यसमाज बलदेवाश्रम खुर्जा, आर्यसमाज माडल टाउन, जालन्धर शहर, आर्यसमाज मोतीहारी, आर्यसमाज फीरोजपुर झिरका (गुड़गांव), आर्यसमाज शिवगंज (जिला सिरोही), आर्यसमाज सुमेरपुर (जिला सिरोही), आर्यसमाज हल्द्वानी (नैनीताल), आर्यसमाज हल्लीखेड़ (जिला बीदर), आर्यसमाज हरदोई, आर्यसमाज चडवरला (जिला महबूबनगर), आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ, आर्यसमाज सूरजनगर (जिला मुरादाबाद), आर्यसमाज पीपाड़ नगर (जिला जोधपुर), आर्यसमाज बहुराइच, आर्यसमाज डाकपत्थर (देहरादून), आर्यसमाज रामपुरा, कोटा, आर्यसमाज शहीद भगतसिंह नगर, जालन्धर, आर्यसमाज पुनपुन, पटना, आर्यसमाज नगीना (गुड़गांव), आर्यसमाज होशंगाबाद।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

बुधवर रामगोपाल जी, बने बोध आनन्द।
आर्य जगत् मे छा गया, सुन कर हर्षानन्द ॥
सुन कर हर्षानन्द आर्यों में आशा आई।
वैदिक धर्म प्रचार बढ़ेगो, देश विदेशन जाई ॥
कहे ब्रह्मानन्द आर्य, पूज्य स्वामीजी मुनिवर।
होवें प्राप्त शतायु, धर्मधुर, मुनिवर, बुधवर ॥

पं० सच्चिदानन्द शास्त्री

उच्च सभा के बन गये, मन्त्री सच्चिदानन्द।
नमन कर रहा प्रेम से पडित ब्रह्मानन्द ॥
पडित ब्रह्मानन्द, आपको बहुत बधाई।
चिरायु होकर धर्म दुंदुभि दें जग में बजवाई ॥
वेदो की वाणी जन तक देवे, आज सुनाई।
भारत-भर की जनता, रही हर्ष में छाई ॥

—ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

साहित्य समीक्षा

महर्षि दयानन्द तथा स्वामी विवेकानन्द : तुलनात्मक अध्ययन

लेखक : डा० भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान के समीप, नई दिल्ली-२, मूल्य १२ रु०

आर्यसमाज के विख्यात शोध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के सिद्धान्तों, विचारों तथा कार्यों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन कर इस ग्रन्थ को अत्यन्त परिश्रमपूर्वक लिखा है। स्वामी दयानन्द ने जहां समाज, धर्म तथा राष्ट्रीय चिन्तन के क्षेत्र में नवजागरण तथा नवक्रान्ति का सूत्रपात किया, वहां स्वामी विवेकानन्द युग-परिवर्तन के प्रभाव को बहुत कुछ समझ कर भी अनेक पुरातन धारणाओं से बधे रहे। लेखक ने दोनो महापुरुषो के जीवन एवं लेखन का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात् जो निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं, वे सचमुच चौंकाने वाले हैं। जिन स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका मे जाकर नवीन वेदान्त की दुंदुभि बजाई, वे ही इस दीन-हीन पराधीन भारत को किस दृष्टि से देखते थे, यह जान कर सचमुच दुःख और आश्चर्य होता है।

जिन स्वामी विवेकानन्द की प्रशंसा और श्लाघा करते हुए हमारे अनेक वर्गों के मित्र थकते नही, उन्ही के विचारों मे कितनी अस्तव्यस्तता, परस्पर-विरोध तथा अस्पष्टता है, इसका पता इस ग्रन्थ के अध्ययन से भली भांति लग सकता है। विद्वान् लेखक ने दोनो महापुरुषो के वेद के मूर्तिपूजा समाज सुधार, वर्णव्यवस्था आदि के सम्बन्ध मे व्यक्त किये गये। विचारों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत कर उनकी तुलनात्मक समीक्षा की है। इस प्रकार लेखक यह सिद्ध करने मे सफल हुआ है कि स्वामी दयानन्द के विचार पूर्णतः सुसगत, युक्तियों एवं प्रमाणों से पुष्ट, वैज्ञानिक तथा प्रगतिशील हैं तो स्वामी विवेकानन्द के विचार यत्र-तत्र अन्ध धारणाओं के समर्थक, सुधारवाद के विरोधी तथा गुरुडम प्रणाली को पुष्ट करने वाले हैं। ग्रन्थ लेखन की शैली पूर्णतया वैज्ञानिक, तर्कपूर्ण तथा तुलनात्मक है। लेखक ने अपने कथन की पुष्टि में स्थान-स्थान पर दोनों महापुरुषों के ग्रन्थों को उद्धृत किया है।

स्वामी विवेकानन्द के अवदान को पूर्णतया नकारा नहीं गया है। तुलनात्मक अध्ययन में रुचि लेने वालों के लिए तो इस पुस्तक का अध्ययन आवश्यक है ही, प्रत्येक आर्यसमाज के पुस्तकालय में भी इसकी एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए।

—डा० वेदपाल वर्मा

रंगनाथ मिश्र आयोग की रिपोर्ट

नवम्बर ८४ के दंगे आकस्मिक उत्तेजना के परिणाम थे, योजनाबद्ध नहीं

नई दिल्ली। पता चला है कि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद नवम्बर ८४ में दिल्ली में हुई हिंसात्मक घटनाओं से सम्बन्धित आरोपों की जांच करने वाला रंगनाथ मिश्र आयोग इस 'परिणाम पर पहुंचा है कि ये हिंसात्मक घटनायें योजनाबद्ध नही थी। (मतलब यह कि ये घटनायें आकस्मिक उत्तेजना का परिणाम थी।)

आयोग के सचिव आर एल. भाटिया ने आयोग का प्रतिवेदन विधिवत् गृहमन्त्री को पेश किया।

इस आयोग के अध्यक्ष श्री रंगनाथ मिश्र उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हैं। यह प्रतिवेदन दो जिल्दों मे है और इसमे २८९ पृष्ठ हैं। आयोग सन् १९८४ के दगों के शिकार अनेक पीड़ितो से मिला था। पंजाब समझौते पर हस्ताक्षर के बाद आयोग के विचारणीय विषयों मे परिवर्तन करके कानपुर और बोकारो मे हुई हिंसा को भी इसमे सम्मिलित कर लिया गया था।

यह आयोग तब गठित किया गया था, जब सार्वजनिक तौर पर संचार माध्यमों द्वारा आरोप लगाये गये कि राजधानी के कुछ प्रमुख व्यक्ति हिंसा की पीठ पर थे। एक अवसर ऐसा भी आया, जब बिना किसी नियमित आदेश के समाचारपत्रों और समाचार समितियो के प्रतिनिधियो को कारंवाई की रपट देने से रोक दिया गया।

आयोग को सौंपे गये विषयो मे एक विषय यह भी है कि इस प्रकार की पुनरावृत्ति कैसे रोकी जाये।

एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि प्रतिवेदन सरकार को मिल गया है और उस पर विचार किया जा रहा है।

सामयिक चर्चा

राष्ट्रगान और उच्चतम न्यायालय

बंगाल में 'वन्देमातरम्' गीत की शताब्दी मनाने की योजना बनाई गई। किन्तु तभी कुछ कठमुल्लाओं की ओर से यह मांग प्रस्तुत की गई कि इससे हमारी मजहबी भावनाओं को ठेस लगती है अतः इस गीत के गाने अथवा इसकी शताब्दी मनाने की कोई आवश्यकता नही। इन मतान्ध लोगों के कारण शताब्दी नही मनी। (विरोध करने वालों में कम्युनिस्ट भी शामिल थे)।

सन् १९२१ मे वन्देमातरम् गीत गाने पर अली बन्धुओ ने विरोध किया था। गीत गाने पर वे उठकर चले गये थे। उनकी मान्यता थी कि इस गीत से बुतपरस्ती की बू आती है। इसे नही गाया जाना चाहिए। यह भावना राष्ट्रीयता की द्योतक न होकर साम्प्रदायिकता की द्योतक है। ठीक इसी प्रकार की भावना भारत में आज भी उठ रही है कि राष्ट्रीय पर्व पर या समय-समय पर "जन-गण-मन" गीत गाये जाने पर कुछ लोगों की मजहबी भावनाओं को ठेस पहुंचती है। यह विषय उच्चतम न्यायालय मे उठाया गया और उसके निर्णय के सन्दर्भ मे संविधान में संशोधन करने का प्रस्ताव आया। इस फैसले में कहा गया है कि—

यदि किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो उसे राष्ट्रगान गाने के लिये मजबूर नही किया जा सकता।

इस निर्णय से सारा देश आशंकित और विक्षुब्ध हुआ कि उच्चतम न्यायालय के निर्णय से देश के अन्य लोगों की भावनाओं को ठेस लगी है। राज्यसभा मे श्री प्रमोद महाजन की मांग को सभी राजनैतिक पार्टियों ने जोरदार समर्थन दिया। उनका कहना है कि राष्ट्रहित किसी भी धर्म अथवा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से बड़ा है। आज जो बात राष्ट्रगान के विषय में कही गयी है कल को वह राष्ट्रध्वज के बारे मे भी कही जा सकती है।

सत्तापक्ष के श्री रामचन्द्र विकल और श्री दरबारा सिंह ने न्यायालय का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि संविधान के अनुच्छेद ५१ ए को नजरअन्दाज किया गया है, जिसमे राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान के बारे में व्यवस्था है।

इस बारे में सरकार को अपनी जिम्मेवारी और राष्ट्र व सदन की भावना को समझना चाहिये। अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम होंगे। साथ ही देश की सुरक्षा, एकता तथा अखण्डता खतरे मे पडेगी और साम्प्रदायिकता को बढावा मिलेगा। कल अगर कोई देश हम पर हमला करे तो क्या कोई यह नहीं कह सकता कि आक्रमण करने वाले देश का और मेरा मजहब एक है, इसलिये मैं उनके विरुद्ध नही लड़ूंगा।

कोई भी राष्ट्र अपने हित मे इस निर्णय को स्वीकार नही कर सकता। ऐसी साम्प्रदायिक भावनाओ को यदि समय रहते नहीं दबाया गया तो भारत के भविष्य और संविधान को भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है।

विध्वंसक सिखों की लघु सेना का भारत में प्रवेश

हिन्दू मंदिरों को उड़ाने का आदेश

नई दिल्ली। पाक-अधिकृत कश्मीर मे सक्रिय पाकिस्तानी आतंकवादी स्कूलो मे प्रशिक्षित तोड फोड करने वालो की एक लघु सेना भारत मे आतंकवादी गतिविधियों और विद्रोही गतिविधियो को तीव्र करने के लिए छोटे छोटे समूहो मे भारत मे प्रवेश कर रही है।

तोड फोड करने वाले ये सैकडो आतंकवादी वे हैं जो अमृतसर के हरमन्दिर में हुए 'आपरेशन ब्लू स्टार' के दौरान पाकिस्तान भाग गये थे। उल्लेखनीय है कि इनके बारे मे कुछ कट्टर सिख सगठनो ने दावा किया था कि वे उक्त सैनिक कारंवाई के दौरान मारे जा चुके हैं।

अब इन्ही (मृतक) लोगो को पाकिस्तान के सुरक्षा बल एव जासूस तोड-फोड और हत्या तकनीक मे प्रशिक्षण देकर रावी जल मार्ग से वापिस भारत भेज रहे हैं।

इन तोड फोड करने वालो को बडे-बडे प्रतिष्ठानो, पुलो, रेलवे स्टेशनो, डाकघरों, हिन्दू मन्दिरो और सिनेमाघरो को उडाने के आदेश दिये गए हैं। यही नही, इन आतंकवादी इकाइयो की हिन्दुओं का सामूहिक सहार करने की भी योजना है ताकि उनके इस कार्य से हिन्दू पजाब से भागने के लिए मजबूर हो जाए। ऐसा हो भी रहा है।

हिन्दुओ को पजाब से इस प्रकार भागने के लिए मजबूर करने के पीछे उद्देश्य दूसरे स्थानो से लाकर सिखों को पजाब मे बसाना है। इस तरह पजाब मे सिख जनसख्या बढ जायेगी और तब पजाब मे सिखो के जमावडे से खालिस्तान बनने मे आसानी हो जायेगी।

गुप्तचर एजेन्सियो का अनुमान है कि पाकिस्तान मे अब भी दो हजार से ज्यादा सिख आतंकवादी है। इनमे से लगभग ७०० फसलाबाद, बहावलपुर, ६०० इस्लामाबाद तथा ५०० लाहौर एव कश्मीर मे हैं। इन सभी को समूहों मे प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

बहावलपुर के आतंकवादी गगानगर सीमा (राजस्थान) तथा बठिन्डा जिले (पजाब) से और कसूर एव लाहौर के आतंकवादी अमृतसर एव फीरोजपुर सीमाओं से भारत मे प्रविष्ट हुए हैं।

भारत मे प्रविष्ट होने से पहले इन आतंकवादियो को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के आतंकवादी स्कूलो मे भेजा गया जहा उन्हे तोड फोड तथा स्वचालित हथियारो को चलाने का न केवल कठोर प्रशिक्षण ही दिया गया बल्कि इसके अभ्यास सत्र भी चलाये गये।

आतंकवादी प्रशिक्षण स्कूलों मे हथियार एव तोड फोड विशेषज्ञो द्वारा आतंकवादी रंगरूटों को आधुनिक प्रविधिकियो का भी पूरा पूरा ज्ञान कराया जाता है। इसके लिए आतंकवादियों को स्वचालित पिस्तौल कार्बाइन्स तथा स्टेनगन देकर उनसे लक्ष्य भेदन कराया जाता है।

आतंकवादी प्रशिक्षण स्कूलो के परिसर चारो तरफ से १५ १५ फुट ऊंची मोटी मोटी दीवारो से घिरे हैं। इन स्कूलो के आवास सपूर्ण आधुनिक सुविधाओ से युक्त हैं। प्रत्येक आवास मे रेडियो, रंगीन टेलीविजन तथा स्टीरियो एव वीडियो प्रणालिया लगी हुई हैं।

इन आतंकवादियो की धार्मिक भावनाओं को उभारने के लिए समय समय पर 'आपरेशन ब्लू स्टार' की फिल्म दिखाई जाती है। भिंडरावाले के भाषणों के टेप लगातार सुनाये जाते हैं। यही नही, इन आवासो मे लगे रेडियो-दूरदर्शन पर सिखो के धार्मिक व खालिस्तान के देशभक्तिपूर्ण गीत तथा शब्द कीर्तन भी प्रसारित होते रहते हैं।

इन प्रशिक्षण स्कूलों मे "खालिस्तान" के भावी नेता भारत विरोधी भाषण तथा पाकिस्तान एव खालिस्तान के पक्ष में उपदेश देते रहते हैं। प्रशिक्षण लेने वालों को बार-बार यह बताया जाता है कि पाकिस्तान उनका सच्चा दोस्त है। इन प्रशिक्षुओं के मनोरजनार्थ विशेष रूप से शराब पार्टिया आयोजित की जाती हैं।

गुप्तचर सूत्रो का कहना है कि वांछित आतंकवादी अजायब सिंह तथा भाई कुंवरसिंह पाकिस्तानी औरतो से शादी करके इस समय लायलपुर (पाकिस्तान) में बडी शानो-शौकत से रह रहे हैं। इन लोगों को वहां फार्म और ट्रैक्टर दिये गये हैं। अन्य जो सिख आतंकवादी पाकिस्तानी औरतों से शादी करने और पाकिस्तान मे ही बसने के इच्छुक होते है, उन्हें भी यही सुविधाए उपलब्ध कराई जाती हैं।

(स्वतन्त्र भारत, लखनऊ से साभार)

सरकार इस वर्ष दिल्ली पुलिस पर दस करोड़ रुपये खर्च करेगी

नई दिल्ली। दिल्ली में आतंकवादियों एव अपराधियों की बढ़ती हुई गतिविधियों का सामना करने के लिए चालू वर्ष मे पुलिस के आधुनिकीकरण पर खर्च की जाने वाली धनराशि पांच गुना बढ़ाई जा रही है। अब इस पर १० करोड रुपये खर्च होंगे।

गृह मन्त्रालय के सूत्रों के अनुसार दिल्ली पुलिस को और अधिक सक्षम बनाने के लिए हाल में ही १५ करोड रुपये खर्च किये गये। पुलिस बल की सख्या बढाने के लिए ६५०० अतिरिक्त भरती की मजूरी दी गयी है जिस पर १० करोड ६६ लाख रुपये खर्च किये गये हैं।

इसके अतिरिक्त पुलिस की गतिशीलता बढाने के लिए पुलिस को ४२६ नये वाहन प्रदान किये गये हैं। इनमे ४५ कारे, १९७ जीपें, ७३ पिकअप एव २११ मोटर साइकिलें शामिल हैं। इन पर ३ करोड रुपये की धनराशि खर्च की गई है।

गृह मन्त्रालय के अनुसार राजधानी की पुलिस को आधुनिक बनाने के लिए डढ करोड के ७१६ वायरलेस सेट एव स्वचालित शस्त्र दिये गये हैं।

सरकारी सूत्रों के अनुसार इस वर्ष दिल्ली पुलिस में छह हजार व्यक्तियों की नई भरती की जायेगी।

पुलिस थानों की सख्या बढा कर ८१ की जा रही है।

गुप्तचर शाखा का स्टाफ बढ़ाकर दुगुना किया जा रहा है।

सरकारी सूत्रों के अनुसार चू कि स्थिति से निपटने के लिए दिल्ली पुलिस अपर्याप्त है, इसलिए गत २ वर्षों के दौरान राजधानीमे औसतन ५० कम्पनिया अर्ध सैनिक सगठनों की तैनात रहीं। इसका खर्चा भी दिल्ली प्रशासन को देना पडता है। इसके अतिरिक्त अन्य राज्यों से भी राजधानी मे सशस्त्र पुलिस बुलवानी पड़ती है। इसलिए राजधानी मे पुलिस बल बढ़ाना जरूरी है।

गृह मन्त्रालय प्रदशनो आदि से निपटने के लिए यह कार्य दिल्ली सशस्त्र पुलिस की एक विशेष बटालियन को सौंपने पर विचार कर रहा है। इसके जवानों को भीड पर नियन्त्रण का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा।

यह भी पता चला है कि गृह मन्त्रालय ने दिल्ली प्रशासन को यह भी निर्देश दिया है कि उग्र भीड पर काबू पाने के लिए असली गोलियों का इस्तेमाल करने से पूर्व रबड और प्लास्टिक की विशेष गोलियों का इस्तेमाल किया जावे। ये गोलियां आम बन्दूको से चलाई जाती हैं। इनके चलाने से भारी आवाज तो होती है परन्तु ये केवल घायल करती हैं। ये घातक नही होतीं। गृह मन्त्रालय ने कहा कि कारतूसों का उपयोग बहुत ही मजबूरी की हालत मे किया जावे।

गीता के उपदेष्टा श्री कृष्ण

—आचार्य दिनेशचन्द्र पाराशर—

महाभारत के सर्वश्रेष्ठ कविद्वय में से वेदव्यास एक हैं। वे श्री कृष्णचन्द्र जी के सम्बन्ध में लिखते हैं—कृष्ण सच्चे वेद और प्रभु भक्त थे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञमें अपने जीवन के लक्ष्यकी पूर्ति देखकर भी उन्हें मद छू तक नहीं गया। उलटा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणों के चरण धुलाने का कार्य अपने हाथों में स्वयं लिया था। ऐसे प्रभुभक्त महापुरुष कहलाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में श्री कृष्ण के सम्बन्ध में लिखते हैं—"देखो, श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण-पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। जो यह भागवत न होता, तो श्री कृष्ण जी सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती?" श्री कृष्ण के समान प्रगल्भ, बुद्धिशाली, प्रज्ञावान्, व्यवहारकुशल कर्तृत्ववान्, पराक्रमी पुरुष, ज्ञानी आज तक संसार में नहीं हुआ। श्री कृष्ण जी गृहस्थ जीवन के साधक होने के साथ-साथ अत्यन्त सयमी और योगविद्या पारंगत योगेश्वर भी थे। वे राजधर्म के भी उपदेष्टा थे। महर्षि वेदव्यास सारे महाभारत में एकमात्र श्रीकृष्ण को ही ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित करते हैं, जो कभी नहीं टूटता, न झुकता है। श्री कृष्ण न पछताते हैं, न रोते हैं और न कभी जय-पराजय की चिन्ता करते हैं। परन्तु अपने पुरुषार्थ, कर्तृत्व और नीतिमत्ता में उन्हें इतना विश्वास है कि वे अर्जुन को गीता में यहां तक आश्वासन देते हैं कि मेरी योजना में और विश्वरूप की व्यापकता में भीष्म, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन आदि सब पहले से ही मरे पड़े हैं। हे अर्जुन, तुझे तो केवल निमित्तमात्र बनना है। इस तरह से सारा महाभारतकालीन समाज सामूहिक भय और सामाजिक त्रास से ग्रस्त है। परन्तु श्री कृष्ण सबसे ऊपर हैं। युधिष्ठिर से लेकर धृतराष्ट्र और भीष्म-पितामह तक सभी लोग टूटते हैं। परन्तु कृष्ण कभी नहीं टूटते। स्वयं श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—

योगः कर्मसु कौशलम्

श्री कृष्ण पौरुष को महत्त्व देते हैं। श्री कृष्ण स्वयं कौरवों की सभा में धृतराष्ट्र से कहते हैं—"इस समय भारत का भाग्य एक तरफ आपके अधीन है, और दूसरी तरफ मेरे। आप कौरवों को समझाइये, मैं पांडवों को समझा दूंगा। यदि आप अपनी न्याय परायणता से पाण्डवों को अपने पक्ष में कर लें तो संसार में आपको जीतने वाला कोई नहीं रहेगा।"

पांचों पांडव श्री कृष्ण के फुफेरे भाई थे। महाभारत की कथा पाण्डवों के संकटमय जन्म से आरम्भ होती है। श्री कृष्ण चाहते थे कि युद्ध न हो। श्री कृष्ण जैसे महापुरुष यज्ञ में अर्घ के पात्र माने गये थे। उन्हें अपने बल-बुद्धि का भरोसा था। कृष्ण राज-निर्माता थे। दुर्योधन के अत्याचार से पाण्डव बारह वर्ष के लिए वनवास और एक वर्ष के लिए अज्ञातवास में रहे। इससे पूर्व भी वनवास कर चुके थे। दुर्योधन को कृष्ण ने बहुत समझाया। वह नहीं समझा। लड़ाई हुई। सारा भारतवर्ष कुछ इस तरफ, कुछ उस तरफ, युद्ध में प्रवृत्त हो गया। बहुत खून-खराबा हुआ। सभी राजकुल तबाह हुए। शान्ति के लिए युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया। सञ्जय ने सच कहा था—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
महाभारत॥

जहां योगेश्वर कृष्ण हैं, जहां धनुर्धर अर्जुन हैं, वहां लक्ष्मी है, विजय है, अटूट नीति है। यह मेरी दृढ़ धारणा है। भीष्म शान्ति पर्व में कहते हैं—

सर्वे योगा राजधर्मेषु प्रोक्ताः

सभी योग राजधर्म में कहे गए हैं। श्रीकृष्ण के सर्वजनीन जीवन का वर्णन महाभारत में किया हुआ है। महाभारत श्री कृष्ण की सबसे पहली जीवनी है। श्रीकृष्ण ससार के सामने उस समय आते हैं, जब वे अपने कुल की आन्तरिक फूट मिटाकर महा अत्याचारी कंस का वध कर देते हैं। २१ वर्ष की आयु में श्रीकृष्ण व बलराम का यज्ञोपवीत सस्कार करके उन्हें उज्जयिनी में सान्दीपनि काश्य के गुरुकुल में नियमपूर्वक शास्त्र और शस्त्र विद्या के अभ्यास के लिए भेजा गया था। उन्होंने गुरुकुल जाने से पूर्व ही कस का वध कर दिया था। श्रीकृष्ण सध्या और हवन के प्रति निष्ठावान् थे। हस्तिनापुर में प्रातःकाल सभा में जाने से पहले संध्या तथा अग्निहोत्र से निवृत्त हुए हैं। महाभारत उद्योग पर्व में लिखा है—

अवतार्य रथात् तूर्णं कृत्वा शौच यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेशह॥

अभिमन्यु के वध के दिन सायंकाल अपने शिविर में जाने से पूर्व कृष्ण और अर्जुन दोनों ने संध्या की है। देश की चिन्ता में वे कुल के हित को भी हाथ से नहीं जाने देते। महाभारत का युद्ध ठन गया पाण्डवों के कर्णधार श्री कृष्ण थे। उधर यादवों की सहानुभूति दोनों पक्षों में बंट गई। श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी हो गये। अर्जुन युद्ध के धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र मे मोहयुक्त हो जाता है। श्री कृष्ण यह देख रहे हैं, अर्जुन के विचार सुन रहे हैं। गीता का उपदेश श्री कृष्ण के जीवन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। संसार के इतिहास मे कृष्ण के जीवन का उतना प्रभाव नही पड़ा, जितना उनकी गीता का। अर्जुन के सद् मित्र श्री कृष्ण जी थे। महाभारत एक बड़े जटिल समाज का वर्णन करता है। श्री कृष्ण और अर्जुन के सम्बन्ध में कहा है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

अर्थात् सब उपनिषदें गौ हैं, श्रीकृष्ण उनका दुहने वाला है, अर्जुन उसका बछड़ा है, बुद्धिमान् लोग उस दुग्ध का उपभोग करने वाले हैं और गीता रूप महा अमृत ही यह दुग्ध है। गीता के श्री कृष्ण ने कौरवों की राजसभा मे जाकर कहा था—

कुरूणां पाण्डवानां च शमः स्यादिति भारत।
अप्रणाशेन वीराणामेतद्याचितुमागतः॥

हे दुर्योधन! वीरों के नाश के बिना कौरवों और पाण्डवों की शान्ति हो जाये, मैं यह याचना करने आया हूं। किन्तु दुर्योधन ने इस पर कुछ भी ध्यान नही दिया और कहा—

सूच्यग्रं न प्रदास्यामि विना युद्धेन केशव।

हे केशव! बिना युद्ध के मैं सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूंगा। अन्त में श्री कृष्ण विवश होकर वापस चले आये। दोनों सेनाएं आमने-सामने कुरुक्षेत्र (वर्तमान थानेसर, जिला करनाल) के मैदान आ डटीं। श्री कृष्ण पाण्डवों के सहायक बने। युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व श्री कृष्ण ने एक बार फिर स्वयं कौरवों के पास आकर सन्धि कराने का उद्योग किया। लेकिन दुर्योधन नहीं माना। युद्ध से कौरवों का वंश सर्वथा नष्ट हो गया। पाण्डवों का भी कोई वंश जीता न रहा। श्री कृष्ण तत्त्वज्ञानी और योगिराज थे। श्री कृष्ण ने वीर योद्धा के रूप में संसार क्षेत्र में प्रवेश करके पूर्ण राजनीतिज्ञ, सुचतुर सेनापति और परम-तत्त्वदर्शी के उज्ज्वल रूप दिखलाये।

कंस को मारने के लिए रणभूमि में उतरे हुए श्री कृष्ण मल्लों को वज्र समान, नरों को नरश्रेष्ठ के समान थे। श्री कृष्ण ने उच्च तत्त्वज्ञान और असीम वैराग्य के साथ जो कर्मयोग का अनुपम उपदेश अर्जुन को दिया है, उससे उनका महत्त्व उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। उनके प्रति श्रद्धा का भाव अधिकाधिक दृढ़ होता जाता है। आर्य जाति को श्रीकृष्ण प्रभृति अपने महापुरुषों का ही अवलम्ब है। गीता को उपनिषदों का सार कहा है। श्री कृष्ण अपने आपको ईश्वर का उपासक कहते हैं, स्वयं को मनुष्य कहते हैं। गीता केवल अर्जुन के लिए नहीं, प्रत्येक जन के लिए है। गीता के कृष्ण कहते हैं—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

इस शरीर में रहने वाले जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग इसे जला नहीं सकती, वैसे ही पानी इसे गला नहीं सकता, न वायु सुखा सकता है। यह भी कहा है—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

जो जन्मता है उसकी मृत्यु निश्चित है। जो मरता है उसका जन्म निश्चित है।

श्री कृष्ण महान् आस्तिक थे।

गीता का सन्देश

—विश्वबन्धु शास्त्री, ज्वालापुर

महाराज कृष्णचन्द्र का जीवन पूर्णरूपेण वैदिक था। उन्होंने वैदिक मर्यादा का पूर्णरूपेण पालन किया। अन्याय को दूर करने और न्याय की प्रतिष्ठा को उन्होंने जीवन का लक्ष्य बनाया। उनका जीवनोद्देश्य था—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥ गीता॥

धर्म का आचरण मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः॥

शुभ कर्मों से धर्म का संग्रह ही कर्त्तव्य कर्म है। गीता के श्लोक के अनुसार—

यस्य नाहंकृतो भावो, बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते॥

जिनके हृदय में अहंकार नहीं और जो बुद्धि व कर्म में लिप्त नहीं है वह योगी इन लोगों को मारकर भी न मारने का दोषी होता है और न उसे कर्म बन्धन ही होता है। इसी बात को गीता के द्वितीय श्लोक में कहा है—

हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते॥

मारने वाला मरने वाली क्रिया का मानता है और मरने वाला अपनी मृत्यु को मानता है। ये दोनों नहीं जानते कि मृत्यु क्या है? न वह मारता है और न मरता है। आत्मा का शरीर से अलग होने का नाम ही मृत्यु है। इसी बात को योगदर्शन में भी एक सूत्र में योगी के कर्मों के प्रसंग में कहा गया है—

कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम्।

योगियों के कर्म न तो सात्त्विक होते हैं और न तामस। आदावन्ते च यन्नास्ति वर्त्तमानेऽपि तत्तथा। जो आदि में नहीं और जो अन्त में नहीं तो मध्य में भी नहीं।

जब सात्त्विक कर्म नहीं तामस कर्म नहीं तो मध्य में राजस भी नहीं अर्थात् योगी के तीनों प्रकार के कर्म नहीं होते, कर्माभाव में कर्म-बन्धन भी नहीं होता। 'इतरेषां त्रिविध कर्म'। जो योगी नहीं हैं उनके तीनों प्रकार के कर्म होते हैं और कर्मों के कारण सात्त्विक, राजस और तामस तीनों प्रकार के बन्धन के कारण होते हैं। इसी का स्वतः प्रमाणभूत वेदमन्त्र भी उपस्थित किया जाता है—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ यजुर्वेद

कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करो। इस प्रकार तुझ मनुष्य में कर्म बन्धन नहीं होगा "इतः अन्यथा न अस्ति" यदि मनुष्य ने कर्म न किये तो कर्म बन्धन होगा। कर्म का अर्थ महर्षि स्वामी दयानन्द जी की दृष्टि में कर्माणि—वेदोक्तानि धर्म्याणि निष्काम कृत्यानि।' वेदोक्त धर्मपूर्वक निष्काम कृत्य करने वालों के कर्म का बन्धन नहीं होता। इस प्रकार कृष्ण जी के समस्त कर्म वेदोक्त, धर्मपूर्वक और निष्काम थे। कर्म बन्धन का प्रश्न ही नहीं उठता।

नये प्रकाशन

योगिराज श्रीकृष्ण

कंस के दुष्कार्य से जब ही मथा जन-जन दुखी।
पाप अत्याचार का ही राज्य था यहां चहुंमुखी॥

उस समय इक दिव्य ज्योति कृष्ण बन नर रूप में।
धर्म तरु को फिर बचाया जल रहा जो धूप में॥

भार पृथ्वी का मिटाया कंस का संहार कर।
मार्ग ऋषियों का बताया धर्म का प्रचार कर॥

उपनिषद् का ज्ञान सारा एक गीता में दिया।
इस तरह गोपाल ने गागर में सागर भर दिया॥

है अमर यह नित्य आत्मा जो कभी मरता नहीं।
इस लिए जो आर्य है वह मौत से डरता नहीं॥

हाथ पर बस हाथ रखकर बैठना ही नेष्ट है।
शुद्ध बुद्धिपूर्वक ही कर्म करना श्रेष्ठ है॥

भाग्य तुम कहते जिसे पुरुषार्थ का परिणाम है।
इसलिए संसार में पुरुषार्थ ही प्रधान है॥

सार गीता का यही और कृष्ण की नीति यही।
प्राण तक जायें भले अन्याय को सहना नहीं॥

हीनता के भाव मन में तुम नहीं लाना कभी।
दुष्टता को दूर कर संसार को कर दो सुखी॥

है जहां जो भी कोई कर्त्तव्य का पालन करे।
आततायी से न डरकर दीन धर्मी से डरे॥

—जगदीश शरण "शीतल"

वैदिक ज्ञान-गंगा विश्व के लिए हितकारक-४

-प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

सेमेटिक धर्मों में खुदा और सांप का 'ट्री आफ नौलेज' के लिये झगड़ा होता है और सांप पृथिवी पर आ रेंगने लगता है, वैदिक-धर्म में इन्द्र और अहि का 'सोमरस' के लिये झगड़ा होता है और अहि पृथिवी पर सोता है वेद की जो जरा-भी जानकारी रखता है उसे मालूम है कि वेद में 'सोम' का प्रयोग 'जल' तथा 'ज्ञान'—इन दो अर्थों मे हुआ है। बाइबल में सोम के 'ज्ञान'—इस अर्थ को ले लिया गया है, अन्यथा बाइबल का 'ट्री आफ नौलेज' वेद का 'सोम-रस' ही है। इसके अलावा वैदिक भाषा से परिचय रखने वाले यह भी जानते हैं कि 'अहि' का अर्थ 'सांप' और 'बादल'—ये दो हैं। बोलचाल की सस्कृत मे 'अहि' का अर्थ 'साप' ही है। 'अहि' की सोम-रस के लिये इन्द्र से लड़ाई हुई, इसका सेमेटिक धर्मो ने यह अनुवाद किया है कि अहि, अर्थात् सांपकी, सोम-रसके लिये, अर्थात् 'ट्री आफ नौलेज' के लिये, इन्द्र से, अर्थात् खुदा से लड़ाई हुई। वेद मे लिखा है कि अहि के हाथ-पैर नहीं थे, साप के भी हाथ-पैर नहीं होते। वेद में लिखा है कि अहि जमीन पर आ पड़ा। 'बाइबल में लिखा है—'Upon the belly shalt thou go'। इससे स्पष्ट है कि बाइबल की खुदा और सांप की कहानी वेद के इन्द्र तथा अहि के सन्दर्भ को न समझकर घड़ ली गई है। जिन्दावस्था में भी शैतान का स्वरूप 'अहि' का ही है। उनकी भाषा में 'अहि' को 'अज्हि' कहा गया है। शायद आप इस बात पर आश्चर्य करें कि वेद में शैतान की कहानी कहां से आ गई। वस्तुतः ऋग्वेद के इस सूक्त को पढ़ जायें, तो स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि के आरम्भ में जो वाष्प उठते हैं, हर समय बादल मंडराते रहते हैं, धुंध छाया रहता है, सूर्य के दर्शन तक नहीं होते, यह उस समय का वर्णन है। तभी आगे चलकर कहा गया है –

अवासृज सर्तवे सप्तसिन्धून्।

अहि अर्थात् बादल, जब पृथिवी पर आ गिरा, तब नदियां बहने लगीं। अहि अर्थात् बादल जल को अपने पास रखना चाहता है, बरसाना नही चाहता, परन्तु इन्द्र अर्थात् सूर्य उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसे पृथिवी पर ला पटकता है। बादल अपादहस्त होता है—उसके हाथ-पैर नही होते। जब वह नीचे आ बरसता है तब उससे नदिया बहने लगती हैं। वेद के इस वर्णन से सेमेटिक धर्मों में सांप की—शैतान की—कहानी ने जन्म लिया है, और इसका कारण 'अहि' शब्द के अर्थ को न समझना है। 'अहि' का अर्थ साप भी है, बादल भी है। सांप के हाथ-पैर नही होते, बादल के भी नही होते। इस गलतफहमी से वेदों की आदि सृष्टि का एक सुन्दर वर्णन सेमेटिक धर्मों में जाकर कुछ का कुछ बन गया है, परन्तु इससे यह बात जरूर सिद्ध होती है कि शुद्ध पानी की धारा गंगोत्री से चली है, जो आगे चलकर कूड़ा-कर्कट लेकर गदला पानी बन गई है।

शतपथ ब्राह्मण मे 'मनुः' के तूफान का वर्णन है, जिन्दावस्था मे वैवस्वत यम के तूफान का वर्णन है। सृष्टिउत्पत्ति के बाद सेमेटिक धर्मों में 'नूह' के तूफान का वर्णन है। अगर 'मनुः' का 'म' उड़ा दिया जाय, 'नु' बन जाता है। 'नुः' की विसर्गों के 'स्' को 'ह्' बोलें तो 'नूह' का तूफान 'मनु' का तूफान बन जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि शतपथ ब्राह्मण का कथानक भिन्न-भिन्न धर्मों में पहुँचा, और उनकी धर्म पुस्तकों मे भिन्न-भिन्न रूप धारण कर गया।

आर्य तथा सेमेटिक धर्मों मे जिन उक्त दो कथानकों का हमने वर्णन किया, उनके अलावा एक और कथानक है जो आश्चर्यजनक तौर पर वैदिक साहित्य के माध्यम से होकर संसार के धर्मों में विकृत होकर पहुंचा है। इसका सम्बन्ध गौ से है।

इस्लाम से थोड़ा-सा भी परिचय रखने वाले जानते हैं कि 'बकरीद' के नाम पर गौ की कुर्बानी दी जाती है। वहां गाय का मारा जाना एक उत्सव का रूप धारण कर गया है। मुसलमानों ने गाय का इस प्रकार मारना यहूदियों की धर्म-पुस्तक 'डिट्रोनिमी' में लिखा है कि यदि कत्ल हो जाय, और उसका कातिल न मिले, तो एक नया ताजा बछड़ा लेकर मारा जाय, और उसके खून मे कत्ल हुए व्यक्ति के रिश्तेदार हाथ धोकर कहें कि हमने उक्त व्यक्ति को नहीं मारा, तो वे पाप के भागी नहीं होंगे। यहूदियों मे पाप से बचने के लिये गाय का मारा जाना पाया जाता है। मुसलमानों में भी यही बात है। भारत मे भी बहुत देर तक 'गोमेध'-यज्ञ होता रहा और इसके नाम पर यज्ञों मे गोवध होता रहा। पारसियों में गोमेध के लिये 'गमेज' शब्द पाया जाता है, परन्तु उनके धर्म में 'गोमेज' का अर्थ गोकुशी न करके खेती करना लिया गया है। पारसी धर्म के विद्वान् डा० हाग पारसियो की गोमेज विधि पर लिखते हैं—

"Getsh urva means the universal soul of the earth, the cause of all life and growth. The literal meaning of the word 'soul of the earth' implies a simile for the earth is compared to a cow. By its cutting, ploughing is to be understood."

रोमन साम्राज्य के अधःपतन से २-३ सौ वर्ष पहले वहां एक धर्म फैला हुआ था जिसका नाम 'मिस्र'-धर्म था। इस धर्म का विस्तार इतना अधिक था जितना पीछे ईसाइयत का हो गया। ब्रिटिश म्यूजियम में इस धर्म का एक संगमरमर का बुत रखा हुआ है। यह बुत क्या है, 'गोमेध'-यज्ञ की प्रतिमा है। उसमे गाय की एक मूर्ति बनी हुई है जिस पर 'मिस्र'-देवता बर्छा लेकर आक्रमण कर रहा है, परन्तु बर्छा खाकर गाय की बगल में से खून की धार बहने के स्थान में गेहूं, जौ और इसी प्रकार के दूसरे अनाज उपज रहे हैं। पारसी धर्म का गोमेध से मतलब सिर्फ कृषि समझा जाता था, इसके साथ गोकुशी का कोई सम्बन्ध नहीं था, मिस्र-धर्म का संगमरमर का बुत जिसमें गाय के पेट में बर्छा लगने पर धान पैदा हो रहे हैं, उस काल का है जब लोग गोमेध से मतलब गोकुशी समझने लगे थे, परन्तु 'गोमेध' का अर्थ खेती करना है—यह विचार भी मौजूद था, या इस बुत के बनाने वाले ने इस विचार को जीवित करने का प्रयत्न किया था। इसके आगे यहूदी तथा इस्लाम धर्म में 'गोमेध' का मूल अर्थ भुला दिया गया, और उसकी जगह भ्रमवश गौ का मारना हो गया। वैदिक संस्कृति में गो शब्द के दोनों अर्थ हैं—पृथ्वी भी, गौ भी। जैसे 'अहि' का अर्थ बादल न करके सांप कर लिया गया और इससे सेमेटिक धर्मों में एक गलत कथानक उत्पन्न हो गया, वैसे ही 'गो' का अर्थ पृथ्वी न करके सास्नादिमती प्राणी—गौ—कर लिया गया, और इससे यहूदी तथा मुहम्मदी मतो मे एक भारी गलती पैदा हो गई। कुरान मे भी ऐसे निर्देश हैं जिनसे प्रकट होता है कि गौ को मारने का विचार किसी-न-किसी गलतफहमी से पैदा हुआ है। सूरतुलबकर की ६३ से ६८ आयतो मे लिखा है—

"और मूसा ने जब अपने लोगों को कहा कि खुदा ने गाय को कुर्बानी को कहा है तो वे लोग कहने लगे, क्या हमसे मजाक करते हो? इसके बाद उन लोगो ने तीन बार मूसा पर विश्वास नहीं किया और उसे बार-बार खुदा के पास भेजा और पूछा कि गाय की कुर्बानी से तुम्हारा क्या मतलब है? जब हर बार मूसा ने गाय की कुर्बानी का ही जिक्र किया तब जाकर उन लोगों ने माना।"

इससे भी ध्वनित होता है कि हजरत मुहम्मद के दिल में यह भाव था कि गाय को मारने के ख्याल में कहीं-न-कहीं गलती है, लेकिन क्योंकि यहूदियों मे गोकुशी चल पड़ी थी, इसलिये हजरत मुहम्मद ने इसे ले लिया। असल मे, प्राचीन धर्मोंका अध्ययन करनेसे ज्ञात होता है कि बकरीद अथवा गोमेधका अर्थ कृषि था। गौ शब्द में गलती खाकर वैदिक धर्म का ऊंचा विचार अन्य धर्मों में पहुँचते-पहुंचते कुछ-का-कुछ बन गया। वैदिक साहित्य का अनुशीलन करने से ज्ञात होता है कि वैदिककाल मे गौ शब्द का मुख्य अर्थ पृथ्वी था। पृथ्वी के संस्कृत नामों की परिगणना करते हुए 'गौगमा क्ष्मा'—आदि शब्द कहे गये हैं जिनमें 'गो' शब्द को पहला स्थान दिया गया है। लेटिन आदि भाषाओं से बने अंग्रेजी शब्दोंमें भी ज्योमेट्री, जियोलोजी आदि शब्दोंमें 'ज्यो' गौ का ही दूसरा रूप है—'ग' को 'ज' हो जाता है। 'गोमेध'-यज्ञ' का वैदिक अर्थ कृषि था जो 'गौ' शब्द का अर्थ न समझने के कारण अनर्थ का कारण बन गया। (क्रमशः)

जीव का स्वरूप : एक विवेचन--२

—धर्मवीर शास्त्री, एम. ए., साहित्याचार्य

इस प्रकरण में प्रयुक्त विभु और एक की व्याख्या स्थूलाक्षर सटिप्पण सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भ में स्पष्टीकरण शीर्षक के अन्तर्गत उदयवीर जी शास्त्री ने की है। व्याख्या का सार यह है कि सूक्ष्म शरीर के दो भाग होते हैं—(१) अयोदशकरणक लिंग शरीर (२) पंचतन्मात्रात्मक कारण शरीर। पंचतन्मात्रात्मक कारण शरीर प्रकृतिरूप है, अतः लिंग शरीर का आधार है। यह जीवात्मा का नियत आवेष्टन है। अस्तु, जहां-जहां जीवात्मा रहेगी, वहां-वहां उसके साथ यह भी रहेगा। जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर से विच्छेद आत्म साक्षात्कार अथवा प्रलय के समय होता है। प्रकृति रूप होने से इसे विभु कहा गया है और इसे एक कहने का अर्थ है समान या सदृश—अर्थात् यह सूक्ष्म शरीर सभी प्राणियों में एक जैसा है।

उदयवीर जी के शब्दों में देखें—

'जहां आत्मा है वहां सूक्ष्म शरीर अवश्य है, क्योंकि सूक्ष्म शरीर में आधारभूत तत्त्व तन्मात्र हैं, इसी आशय से कारण शरीर रूप में उसे विभु कह दिया गया है। इसका यह अभिप्राय कदापि न समझना चाहिए कि वह शरीर व्यक्तिगत रूप से सर्वत्र व्यापक है। ऐसे शरीर की कल्पना किया जाना अशक्य है।"

यद्यपि यहां विभु शब्द का प्रयोग शरीर-विशेष के लिए किया गया है, जीवात्मा के लिए नहीं, तो भी अर्थापत्ति से यह मानकर कि शरीर—कारण या सूक्ष्म शरीर ही सही—यदि व्यापक है तो फिर जीवात्मा अव्यापक क्यों होगा, इस प्रसंग को यहां उठाया गया है।

अब दूसरे मुद्दे पर आइये। वह यह कि न्याय-मत में चैतन्य जीवात्मा का आगन्तुक गुण है, नित्य या शाश्वत गुण नहीं। न्यायानुसार जीवात्मा में ज्ञानोदय के लिये उसका मन और इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य पदार्थों से सम्पर्क आवश्यक है। यह प्रक्रिया बाह्य पदार्थों के ज्ञान में तो मानने योग्य है, किन्तु यह मानना कि आत्मा बाह्य पदार्थ के सम्पर्क काल में ही चैतन्य गुणयुक्त है, विचारणीय है।

देखिए सत्यार्थ प्रकाश—

पूर्वपक्ष—जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है? उत्तर—दोनों चेतन रूप हैं।

(स० प्र० सप्तम समु०)

स्पष्ट है कि महर्षि की दृष्टि में जीवात्मा परमात्मा की भांति नित्य चेतन है। आत्मा के लिंगों के ज्ञान और प्रयत्न को लिया गया है न्याय-सूत्र में भी। विचारणीय यह है कि ज्ञान सम्पर्कजन्य है अथवा शाश्वत। ऋषि-मत में जीवात्मा चेतन रूप होने से नित्य चेतन है, ऐसा मानना चाहिए।

मुक्त अवस्था में जीव

सम्प्रति मुक्त अवस्था में जीव की दशा का विवेचन करें। न्यायमत में चैतन्य को जीवात्मा का आगन्तुक या सम्पर्कजन्य गुण माना गया है। इसका फलितार्थ यह हुआ कि मुक्त अवस्था में शरीर त्रय के अभाव के कारण जीवात्मा में चैतन्य की आत्यन्तिक समाप्ति स्वतः हो जाती है। तब किसी प्रकार का भी अनुभव जीव किस प्रकार करेगा। न्याय की कल्पना का अपवर्ग सुख और दुःख दोनों से पूर्णतया छुटकारा है। निस्सन्देह सुख दुःख का अनुषंगी है। मुक्ति में सुख रहे भी तो दुःख की पुनः सम्भावना से व्यर्थ हो गया—जागतिक सुख के समान हो गया। किन्तु यदि सुख से भी दुःख के समान ही मुक्त होने की कामना से मोक्ष की इच्छा की जाये तो किस लिए? ऐसी मुक्ति तो सर्वथा अभावात्मक होगी। क्या अन्तिम लक्ष्य या परमपुरुषार्थ इसी में है कि जीवात्मा अन्तिम रूप से जड़वत् हो जाये? महर्षि इस अवस्था को स्वीकार नहीं करते। उनकी मुक्ति की कल्पना सकारात्मक है। ऋषि सुख के दुःखानुषंगित्व को दृष्टि में रखकर सुख के साथ सांसारिक विशेषण देकर उसकी व्यावृत्ति करते हुए लिखते हैं—

"……और जो शरीर रहित मुक्त जीवात्मा ब्रह्म में रहता है उसे सांसारिक सुख-दुःख का स्पर्श भी नहीं होता, अपितु वह सदा आनन्द में रहता है।"

(मुक्ति की स्थिति, नवम समु०)

मुक्ति में जीव लोकोत्तर सुख अथवा आनन्द का भोग किस प्रकार करेगा, इसका भी समाधान ऋषि ने प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं—"दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण-रूप हैं। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख भोगता है।" (सूक्ष्म शरीर, नवम समु०)

महर्षि शतपथ के हवाले से लिखते हैं कि इन्द्रियों के गोलकों के अभाव में मुक्त जीव अपने स्वाभाविक सामर्थ्य से तत्तद् इन्द्रिय रूप होकर आनन्द भोग लेता है—शृण्वन् श्रोत्रं भवति इत्यादि। उसमें बल, पराक्रम, ज्ञान आदि चौबीस प्रकार के सामर्थ्य रहते हैं। उनसे मुक्ति के सुख का जीव आस्वादन करता है।

न्याय के अपवर्ग-सूत्र में अत्यन्त पद का वात्स्यायन ने अत्यन्त ही अर्थ किया है। अत्यन्त विमोक्ष अर्थात् दुःख से सम्पूर्ण मुक्ति। वात्स्यायन कहते हैं—तेन दुःखेन जन्मना अत्यन्तं विमुक्तिरपवर्गः। कथम्? उपात्तस्य जन्मनो हानम् अन्यस्य चानुपादानम्। एतामवस्थामपर्यन्तामपवर्गं वेदयन्तेऽपवर्गविदः।

सुख-दुःख का अत्यन्ताभाव तभी संगत हो सकता है, जब जीव में ज्ञान या चैतन्य बाह्य सम्पर्कजन्य गुण माना जाये, न्याय-मत में जीवात्मा का चैतन्य गुण आगन्तुक गुण है। मुक्ति में शरीर नहीं रहा तो जीव का चैतन्य धर्म भी समाप्त। फिर वह अचेतन या ज्ञान-शून्य जड़तुल्य मूर्च्छित जैसा जीव मुक्ति में किसी लोकोत्तर सुख या आनन्द का अनुभव या भोग (न्याय-मत में) कर ही कैसे सकता है? साथ ही, अत्यन्त विमोक्ष अपर्यन्तावस्था अर्थात् मोक्ष का सदा-सर्वदा के लिए स्थायित्व 'न पुनरावर्तते' का द्योतक है। इसीलिए ऋषि ने 'अत्यन्त' का अत्यन्ताभाव अर्थ न करके बहुत या प्रचुर अर्थ किया है जो वात्स्यायन के अर्थ से भिन्न है। क्योंकि मुक्ति से पुनरावृत्ति तथा मुक्ति में जीव द्वारा आनन्द-भोग ऋषि को अभीष्ट हैं।

इस प्रकार न्यायमत तथा महर्षि दयानन्द का मत अनेक बातों में भिन्न हैं। ऋषि की दृष्टि समन्वय की थी, अतः उन्होंने वैदिक दर्शनों में एकसूत्रता की रक्षा करने का प्रयास किया। जहां तक त्रैतवाद की अवधारणा का प्रश्न है, दोनों के दर्शन एकमत हैं। गहराई से विचार करने पर प्रतीत होता है कि ऋषि की मान्यताएं अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक एवं तर्कसंगत हैं।

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष में प्राप्त दान राशियां

कानपुर की आर्यसमाज रतनलाल नगर को स्थापित हुए कुछ ही समय हुआ है। इस समाज का उत्साह अन्य आर्यसमाजों के लिए आदर्श है। समाज ने पंजाब के पीड़ितों के लिए पहले भी कुछ राशि भेजी थी। अब उसने पांच हजार रुपये जमा करके भेजे हैं। विवरण इस प्रकार है—

इन्द्रदेव कपूर	५०)	युगल किशोर गुप्त	१००)
भक्तराम शर्मा	१००)	इकबालसिंह	१००)
इन्द्र सेन कपूर	५०)	स० महेन्द्र सिंह, सदस्य विधान परिषद्	१०१)
गन्धर्व सेन शर्मा	१००)	सिरी चन्द बासानी	१००)
रामशाह लाम्बा	१००)	साहिबदास भाटिया	५०)
हरीश चन्द्र साहनी	५)	सतीश चन्द्र अरोड़ा	१००)
एस० आर० ग्रोवर	१००)	कस्तूरी लाल ग्रोवर	१००)
एन० के० तलवार	१००)	अलोक एन्टरप्राइजिज	१००)
पी० एन० कपूर	१००)	आर० एल० गुप्त	१०[illegible])
जे० एल० सहगल	५०)	डी० के० शर्मा	५१)
कश्मीरी लाल मल्होत्रा	१००)	बी० डी० विज	५०)
ईश्वर दास चौधरी	५०)	एम० पुरी	५०)
मदन लाल खन्ना	१००)	बी० एल० हांडा	५१)
सतपाल अरोड़ा	५१)	एस० एल० भाटिया	५१)
महेश चन्द्र मेहता	५०)	सोमनाथ खत्री	५०)
एस० के० पुरी	१००)	टीकम दास खन्ना	५०)
कृष्ण चन्द्र अहूजा	५०)	यशपाल भाटिया	५०)
बी० डी० सूद	५०)	जे० के० भगत	१०१)
आर० कुमार	५०)	ओं नारायण शर्मा	५०)
पंकज हार्डवेयर स्टोर्स	५०)	तेजेन्द्र कुमार पाल	५०)
रामदास नरूला	५०)	दीनानाथ भाटिया	५०)
बी० डी० मेहतानी	५०)	बी० के० मिश्र	५१)
जितेन्द्र नाथ चड्ढा	५०)	विलायतीराम सदस्य विधान सभा	५०)
वीरेन्द्र खन्ना	१०१)	गुप्त दान	१०२)
राम प्रकाश दल	१००)	सुभाष पुरी	१०१)
एम० एल० भाटिया	१००)	अशोक कुमार	५०)
आर० एस० नन्दा	५१)	आर० एम० मित्तल	५०)
बी० आर० कुन्द्रा	५०)	हरि दामले	१००)
आर० एस० बबवा	१००)	प्रणय कपूर	५०)
		दौलत राम	१००)

शतायु संतराम बी. ए. की बहुमुखी सेवा

—हरिदास 'ज्वाल'

प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री सन्तराम बी० ए० ने आर्य विचारधारा के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन समर्पित कर दिया है। उनका जन्म होशियारपुर के पास एक ग्राम में हुआ था। उन्होंने अपनी कर्मठता, सद्बुद्धि और प्रेरणा से उच्च शिक्षा प्राप्त कर बी० ए० की उपाधि ग्रहण की। उस समय मैट्रिक पास की भी प्रतिष्ठा की जाती थी—बी. ए. पास की तो बात ही क्या कही जाये ? उस समय हिन्दी संसार में लिखने वालों की संख्या सीमित थी। हिन्दी का क्षेत्र पंजाब और हिमाचल प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल तक माना जाता है। उसका केन्द्रीय वृत्त उत्तरप्रदेश है। पंजाब में उस समय उर्दू का बोलबाला था। हिन्दी का प्रचार नगण्य था। उस समय के अमर हिन्दी साहित्यकार श्रद्धाराम फिल्लौरी ने हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ाई थी। ऐसे समय मे ही सन्तराम जी ने अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति और जन्मजात संस्कार से हिन्दी माता की सेवा करने का दृढ़ संकल्प लिया था। उसी समय स्वामी दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्यसमाज की सस्थाओं ने अपने कार्य-कलापों द्वारा समस्त देश में हिन्दी प्रचार आन्दोलन की धारा बहा दी थी। उस समय हिन्दू जाति में ऊंच-नीच का भयंकर भेदभाव था।

संतराम जी ने प्रारम्भ से ही जातिवाद के विरोध में लिखना प्रारम्भ किया। वे जात-पात तोड़क मण्डल के संस्थापक बने। इसके माध्यम से वे आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। वे जातिवाद के कट्टर विरोधी हैं। इसके लिए उनकी लेखनी सतत जागरूक रहती है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे एकांगी प्रचारक और लेखक रहे। हिन्दी साहित्यकार के रूप में उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। वे विविध विषयों पर लेख लिखकर हिन्दी पाठकों का ज्ञान-वर्द्धन करते रहते थे। सरस्वती में भी उनके लेख प्रकाशित होते रहते थे। उन्होंने अनेकानेक लेखों द्वारा समय-समय पर हिन्दी पाठकों का मनोरंजन भी किया है। उनके बालोपयोगी लेखों को पढ़ने का मुझे अवसर मिला है। उनकी पुस्तकों की संख्या कम नहीं है। उनमें विषयों की विविधता भाषा का सौष्ठव और स्वाभाविक प्रवाह है। उनका जन्म सन् १८८६ में हुआ था। इस वर्ष वे शतायु हो रहे हैं। शतायु साहित्यकार और आर्यसमाज के सामाजिक क्रान्तिकारी कार्यों को उजागर करने वाले, दलबन्दी से दूर, श्री संतराम बी० ए० की सेवाओं, कार्यकलापों, कृतियों और रचनाओं का मूल्यांकन आर्य जगत की ओर से करना हमारा आपका-सबका कर्तव्य है। "सार्वदेशिक" साप्ताहिक के माध्यम से हम पाठकों और लेखकों से आग्रह करते हैं कि क्रान्तिकारी हिन्दी लेखक श्री सन्तराम बी० ए० की जन्मशती अवश्य मनावें।

जुलाई १३-१९ सन् १९८६ के "धर्मयुग" में वयोवृद्ध साहित्यकार श्रीनारायण चतुर्वेदी ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि देते हुए लिखा है—

"संतराम जी ने मौन रूप से, विशुद्ध सेवा की भावना से हिन्दी की इतने लम्बे समय सेवा की और यह सेवा भी उन्होंने पंजाब में रहकर की, जहां हिन्दी का विरोध था और जहां उर्दू का एकछत्र राज था। ऐसे लगातार प्रायः आठ दशक तक हिन्दी की सेवा करते रहना और वह भी हिन्दी संसार से बिना किसी विशेष प्रोत्साहन के उनकी एकाग्र और दृढ़ हिन्दी-निष्ठा का परिचायक है। मैं ऐसी परिस्थिति में इतने लम्बे समय तक हिन्दी की ऐसी बहुमुखी सेवा करने वाले दूसरे व्यक्ति को नहीं जानता। मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ कि हिन्दी के पहले शतायु साहित्यकार और अनन्य हिन्दी सेवक की जन्मशती पर मैं उन्हें अपनी विनम्र और हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर सका। ईश्वर उन्हें आर्य ऋषियों की १२० वर्ष की आयु दें।" हमारी वैदिक वाणी भी है—

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥

शुभ कामना

स्वामी श्री आनन्दबोध रामगोपाल श्री बने
मीत ये मानवता की भावना प्रसारी है।
आश्रम मर्यादा का पालन किया है पूर्ण
नंद सर्वानन्द के शिष्य बने सुखकारी है॥
दर्शन, उपनिषद्, वेद का स्वाध्याय कर
बोध वेद धर्म का सुपाया हितकारी है।
धर्मवीर, कर्मवीर हैं 'पीयूष' आर्यवीर
जीयें युग-युग शुभ कामना हमारी है॥

—पन्नालाल पीयूष, उदयपुर

पुनश्च—प्रथम अक्षरों से शुभ नाम बनता है।

भूल सुधार

१७ अगस्त १९८६ के सार्वदेशिक में प्रकाशित दानदाताओं की सूची में अंकित था कि सोनाला(जिला बुलढाना)की आर्यसमाज और ब्रह्माकुमारी केन्द्र ने मिलकर ७०१ रुपये भिजवाये हैं। ब्रह्माकुमारी केन्द्र के स्थान पर ब्रह्मचारी महाराज केन्द्र मुद्रित होना चाहिए था। कृपया भूल सुधार लें।

पुनश्च—उक्त राशियों के संग्रह में वहां के ग्रामवासियों का सहयोग उल्लेखनीय है।

इसी सूची में श्री अमोलकचन्द वर्मा के नाम से २१ रु० दान छपा है। २१ रु० के स्थान पर ५१ रु० पढ़ें।

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पंजाब जल रहा है। उत्पीड़ित आर्य-हिन्दू जनता पंजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर सुरक्षा हेतु पहुंच रही है। आर्यसमाजों व सनातन धर्म सभाओं से निवेदन है कि पंजाब से आई पीड़ित हिन्दू जनता को मन्दिरों, स्कूलों में ठहराकर उन्हें पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस संकटकालीन स्थिति में तन, मन, धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता— भवदीय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान सभा प्रधान
नई दिल्ली-२

होडल में स्वतन्त्रता दिवस सम्पन्न

होडल (फरीदाबाद)। पन्द्रह अगस्त को क्षेत्रीय विधायक श्री गिरिराज किशोर ने नगर पालिका प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। आर्य नेता श्री बालदिवाकर हंस ने स्वतन्त्रता संग्राम के अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में केवल कांग्रेस ने ही नहीं, जनसामान्य ने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्र्य संग्राम लड़ा। छोटे-छोटे बच्चे शहीद हुए। आपने कहा कि आजादी प्राण विसर्जन का मूल्य चुका कर प्राप्त हुई है। आज समय की मांग है कि भारत अपने सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो। अन्यथा हम सब विदेशियों की नकल में अपना अस्तित्व ही खो बैठेंगे।

कन्या हायर सैकण्डरी स्कूल, महाविद्यालय तथा अनेक स्कूलों के बालक-बालिकाओं ने अपने कार्यक्रमों से जनता को मुग्ध किया। अनेक धर्मानी व्यक्तियों ने पुरस्कार दिये और मण्डी की ओर से स्कूली बच्चों को लड्डू बांटे गये।

आर्यसमाज की गतिविधियां

सीमा सुरक्षा विधेयक का समर्थन : आर्यसमाज वसन्त विहार का प्रस्ताव

नई दिल्ली। आर्यसमाज वसन्त विहार की १० अगस्त की रविवारीय सत्सग सभा मे सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया—

यह सभा विगत ५ वर्षों से पजाब मे हो रही हिंसक गतिविधियों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हमारी माग है कि पजाब के सीमावर्ती ३ जिले सेना के हवाले किये जायें।

यह सभा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के उस प्रस्ताव का समर्थन करती है जिसके द्वारा वे पाकिस्तान से लगी पट्टी राजस्थान पजाब और जम्मू-कश्मीर पर सीमा सुरक्षा विधेयक द्वारा सविधान में सशोधन करके आतंकवाद तथा पाकिस्तानी घुसैठ को समाप्त करने के लिए कृतसकल्प हैं।

यह सभा विपक्षी दलों से अपील करती है कि वे देशहित के कार्यों में सरकार को सहयोग दें।

दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर का स्थापना दिवस

नई दिल्ली। दयानन्द वेद विद्यालय, ११९ गौतम नगर का ५२वा स्थापना दिवस २४ अगस्त को प्रात आठ बजे से बारह बजे तक मनाया गया। बृहद् यज्ञ हुआ, जिसके ब्रह्मा आचार्य सुदर्शनदेव थे।

इस अवसर पर नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियो के यज्ञोपवीत और वेदारम्भ सस्कार भी हुए। अन्त मे प्रतिभोज हुआ।

आर्यसमाज करौलबाग में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज करौलबाग, नई दिल्ली में वेदप्रचार सप्ताह, श्रावणी और जन्माष्टमी महोत्सव १९ अगस्त से २७ अगस्त तक धूमधाम से मनाये गये, जिनमे श्री मदनमोहन जी विद्यासागर हैदराबाद वालों के विचार सुनने को मिले। श्री चुन्नीलाल जी के भजनोपदेश हुए। आचार्य हरिदत्त शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया। यह कार्यक्रम प्रात ६॥ बजे से ८ बजे तक से चला। २७ अगस्त रात्रि मे श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया।

ओजस्वी भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र 'वीर' धनुर्धर

जो पिछले दिनों बहुत अस्वस्थ हो गये थे और अब स्वास्थ्यलाभ करके पुन कार्यक्षेत्र में आ गये हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हो और यथापूर्व जनता का मार्ग दर्शन करते रहें।

जवाहरनगर, दिल्ली मे चतुर्वेदपारायण यज्ञ

यज्ञ भवन, जवाहरनगर, दिल्ली म २० अगस्त से चतुर्वेदपारायण यज्ञ शुरू हुआ। यह ३१ अगस्त तक चलगा। यज्ञ प्रात काल आठ बजे से सायकाल पाच बजे तक चलता है। ३१ अगस्त को १० से १२ बजे तक पूर्णाहुति होगी।

उ०प्र० आर्य वीर दल के नये महामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल (पश्चिम उत्तरप्रदेश) के सभी अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि उत्तरप्रदेश आर्य वीर दल के नये महामन्त्री श्री वेदप्रकाश गुप्त वेद नम्बरदार) बजाजा गली, बिन्दकी, जिला फतेहपुर नियुक्त किये गये हैं। कृपया भविष्य में दल से सम्बन्धित कार्यों के लिए उन्ही से सम्पर्क स्थापित करें।

डा० बालकृष्ण आर्य "विकल"
सचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल
पश्चिम उत्तरप्रदेश, बिन्दकी, फतहपुर

२६३ ईसाई शुद्ध

हाथरस (अलीगढ़)। आर्यसमाज नयागज और आर्यसमाज मुरसान ने अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि महासभा, दिल्ली के तत्वावधान में २६१ ईसाइयों को शुद्ध किया।

इनके पूर्वज १५० वर्ष पूर्व लोभवश ईसाई हो गये थे। शुद्धि सस्कार श्री हरिमुनि और श्री सूरजभान आर्य ने कराया।

मुस्लिम परिवार के आठ सदस्यों की शुद्धि

तिजारा (अलवर) मे स्वामी भेद नन्द जी के सान्निध्य में एक मुस्लिम परिवार स्वेच्छा से अपने पुराने हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में लौटा। परिवार के मुखिया अख्तर खां का नाम अमरसिंह आर्य, पत्नी अमीना बेगम का नाम अम्बागानो आर्या पुत्र राजू का नाम सुन्दरसिंह पुत्री रौनक का नाम प्रेमलता आर्या पुत्र सुन्दर का नाम अर्जुनसिंह आर्य, पुत्री फज्जी का नाम रजनी आर्या, शीला का सुशीला आर्या और पुत्र अजु का राजेशकुमार आर्य रखा गया।

गुरुकुल घरौंडा के आचार्य का निधन

घरौंडा (करनाल)। वेद महाविद्यालय गुरुकुल घरौंडा (करनाल) के आचार्य श्री धर्मवीर शास्त्री का १२ अगस्त को निधन हो गया। २४ अगस्त को हुई शोक सभा मे उन्हें श्रद्धांजलियां भेंट की गई।

मूर्तिपूजा की वकालत

महोदय,

इस क्षेत्र के विख्यात सन्त श्री दण्डी स्वामी जी ने अपने एक प्रवचन में कहा कि "मूर्तिपूजा अनादि अविच्छिन्न है। ईसाई, मुसलमान आदि कोई भी ऐसा नहीं, जो मूर्तिपूजा न करता हो। मुसलमान हज करने को जाते हैं तो कसौटी के पत्थर को छूते हैं। बिना मूर्ति का स्पर्श किये उनकी मुक्ति हो नहीं हो सकती। यहां भी वे ताजियों के दिन हाय-हाय करके सीना पीटते हैं, यह उनकी मूर्ति-पूजा ही है। भले ही ये लोग अपने को अमूर्तिपूजक कहते रहे। ईसाई भी अपने नेता ईसा मसीह को मानते हैं। यदि कोई मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे ईसा कहकर जलायेगा तो वे लड़ पड़ेंगे। मैं कहता हूं कि कोई भी कह दे कि मैं मूर्ति नहीं पूजता तो मैं उसे शास्त्र एव लोक द्वारा सप्रमाण युक्तिपूर्वक सिद्ध कर दूंगा कि वह मूर्तिपूजक है। इसमें यदि कोई मुझे हरा दे तो मैं उसका उसी दिन से चेला बन जाऊंगा।"

यह उद्धरण 'श्री त्रिदंडी व्याख्यान माला' भाग तृतीय के पृष्ठ १७१ से लिया गया है, जो श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर, चरित्रवन (बक्सर) से प्रकाशित है। ध्यान रहे, इसी तरह के आक्षेप आर्य-समाजियों पर भी लगाये जाते हैं कि यदि स्वामी दयानन्द के चित्र को जूते से मारा जाये तो वे क्यों उत्तेजित हो जाते हैं?

आर्यसमाज के विद्वानों से निवेदन है कि उक्त त्रिदण्डी स्वामी को हराकर (काशी शास्त्रार्थ के बाद) आर्यसमाज का दूसरा ऐतिहासिक विजय गौरव प्राप्त करें।

—आर्य प्रह्लाद गिरि
शिव मन्दिर, निगा, आसनसोल

रोहतक में आर्यवीर दल का प्रान्तीय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा का दसवा प्रान्तीय महासम्मेलन २७, २८ सितम्बर (शनि और रविवार) को छोटूराम पार्क, रोहतक में आर्य-समाज के मूर्धन्य तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में समारोहपूर्वक हो रहा है। सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, पं० शिवकुमार जी शास्त्री, प्रो० शेरसिंह जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), प० बालदिवाकर हंस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल), प० क्षितीशकुमार जी वेदालंकार, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० वेदप्रताप वैदिक, डा० रामप्रकाश (अध्यक्ष रसायन विभाग, पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़) आदि विद्वान् पधार रहे हैं।

२७ सितम्बर को आर्य वीर दल के सहस्रों वीरों की रैली तथा आर्यों का जलूस, आर्य वीर सम्मेलन, रविवार को वेद सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे।

आर्य महिलाओं की जनहितकारी गतिविधियां

दिल्ली । ९ अगस्त को अशोक विहार स्थित पिकनिक हट मे बहन ईश्वर-देवी जी की अध्यक्षता मे यज्ञ, प्रार्थना, ओजस्वी भाषणो, गीतो से हरियाली तीज पर्व मनाया गया । सब बहनो ने राष्ट्र सेवा का सकल्प लिया । श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती सुशीला आनन्द, श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती प्रेमशील आदि बहनों ने राष्ट्ररक्षा की प्रेरणा दी । कतिपय बहनो ने भजन-गीत गाकर समा बाध दिया । अशोक विहार के नन्हे-मुन्हे बच्चो ने भी राष्ट्र भक्ति के गीत गाये ।

१६ अगस्त को करौलबाग आर्य महिला मण्डल की ओर से श्रीमती प्रकाश आया ने स्वामी आनन्दबोध (प्रधान, सार्वदेशिक सभा) को ग्यारह हजार रुपये की राशि न्याय कोष हेतु भेंट की ।

१७ अगस्त को प्रान्तीय महिला सभा की प्रधान श्रीमती सरला मेहता के सरक्षण मे ग्रेटर कैलाश भाग-१ तथा भाग-२ की बहनो ने पजाब के पीडित परिवारो के कैम्पो मे जाकर ५०० वस्त्र और बिस्कुटो के २०० पैकिट वितरित किये ।

नये प्रकाशन

रियायती मूल्य पर

१—वीर वैरागी लेखक—भाई परमानन्द
कीमत ८) सभा ने केवल ४) कर दी है ।

२—Bankim-Tilak-Dayanand by Aurobindo
कीमत ४) सभा ने केवल २)५० कर दी है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

(पृष्ठ १ का शेष)

साथी सब जगह आपका स्वागत करते रहे । कहा जाता है कि यह ... साहब की आज्ञा से किया गया । आप इस समय तिहाड जेल मे हैं । यह सब आप इस विचार से कर रहे थे कि उग्रवादियो को आपके विरुद्ध जो शिकायतें है उनकी तीव्रता कम हो जाये । आपरेशन ब्ल्यू स्टार से पहले आप कहा करते थे कि दरबार साहब म सेना आपकी लाश पर से ही होकर जायेगी किन्तु जब सेना प्रवेश कर गई तो आप उन लोगो मे सबसे अग्रणी थे जिन्होने अपने आप को सेना क सुपुर्द कर दिया । उग्रवादियो ने इसकी तीव्र निन्दा की । जब बाबा जोगिन्दर सिंह टोहरा गाव पहुचे तो आपने जत्थेदार को छोडा नही किन्तु इसके बावजूद जत्थेदार साहब की पत्नी ने आपको १५ सौ रुपया भेंट किया । अपने दौरे के पहले दिन आप इस गाव आये जहा शहीद करनैल सिंह के सम्मान म एक जलसा हो रहा था । करनैल सिंह गोवा ऐक्शन मे शहीद हो गये थे । जब बाबा जोगिन्दर सिंह ने अपनी सभा की तो इसमे तीन हजार के लगभग लोग थे, लेकिन करनैल सिंह की सभा मे कुछ ही लोग थे, जबकि इसे एक मन्त्री ने सम्बोधित करना था ।

इस दौरे स बाबा और फैडरेशन के लोगो का साहस बढा है, किन्तु यूनाइटिड दल को नीचा देखना पडा क्योंकि आपके पाच साथियो ने दल से यह कहकर त्यागपत्र दे दिया कि आप मनमानी कर रहे है और किसी से विचार विनिमय किये बिना अपनी मर्जी से चलते हैं ।

—के० नरेन्द्र

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित ।

वेदामृतम्

बालक का शरीर सुदृढ़ हो

अश्मानमा तिष्ठ अश्मा भवतु ते तनू
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम्

अथर्व० २. ४॥

हिन्दी अर्थ – हे बालक ... इस शिला पर ... तेरा शरीर पत्थर ... सारे देवता ... को आयु करें

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अङ्क २८] | भाद्रपद शु० ३ स० २०४३ रविवार ७ सितम्बर १९८६ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

कानपुर में स्वा. आनन्दबोध जी का भव्य स्वागत

राष्ट्र की समस्याओं से जूझने के लिए मार्मिक उद्बोधन : सार्वजनिक कार्यों के लिए २२ हजार रुपये की थैलियां भेंट

आर्यसमाज प्रत्येक संघर्ष में आगे रहेगा : पं० सच्चिदानन्द शास्त्री

जब से श्री रामगोपाल जी शालवाले ने सन्यास आश्रम मे प्रवेश करके स्वामी आनन्दबोध सरस्वती नाम ग्रहण किया है—भगवा वेश धारण किया है, सारे आर्य जगत् मे उत्साह की लहर दौड गई है। सर्वत्र उनके सत्साहस की प्रशसा की जा रही है और आशा व विश्वास के साथ कहा जा रहा है कि राष्ट्र की विचारधारा मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आयेगा—देश राष्ट्रवाद और बुद्धिवाद के मार्ग पर आगे बढेगा—प्रगति करेगा। इसी परिप्रेक्ष्य मे पढिये उनकी कानपुर यात्रा का विवरण —

२७ अगस्त का दिन—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ महामन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री कानपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो नगर की आर्य जनता ने पुष्पमालाओ से उनका स्वागत किया। स्टेशन जयघोषो से गु जायमान हो गया। सैंकडो कार्यकर्ता स्त्री-पुरुष स्वागत के लिए पहुचे हुए थे।

कुछ समय विश्राम के पश्चात् स्वामी जी ने सवाददाताओ को सम्बोधित किया।

श्री स्वामी जी श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री मनमोहन तिवारी (मन्त्री उ० प्र० सभा) के साथ आर्यसमाज मेस्टन रोड मे पधारे। जिले के सैकडो आर्य नर-नारियो ने महर्षि दयानन्द के जयघोष के साथ आप सभी का स्वागत किया। मच पर अधिष्ठित होने के उपरान्त श्री विजयपाल जी शास्त्री (प्रधान जिला सभा कानपुर) और जिले के आर्यसमाजो के प्रतिनिधियो द्वारा माल्यार्पण से स्वागत किया गया। तत्पश्चात् जिला उपसभा कानपुर के मन्त्री डा० हरिपाल सिह जी ने सभा प्रधान को मानपत्र अर्पित किया। फिर दस हजार रुपये की राशि प जाब से आये शरणार्थियो के लिए भेंट की गई। इसके उत्तर में प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने स्व० प० विद्याधर जी का स्मरण किया। आर्यसमाज की चर्चा करते हुए कहा कि आर्यसमाज रूपी गाडी कीचड मे फस गई है। उसे ऐसे निकालना है जैसे महर्षि दयानन्द ने कीचड मे फसी किसान की गाडी निकाली थी। आर्यसमाज प्रत्येक सघर्ष मे अग्रणी रहेगा—पजाब की समस्या हो या मीनाक्षीपुरम् की।

श्री मनमोहन तिवारी ने पजाब यात्रा की चर्चा करते हुए जनता को वहां की जानकारी दी। उत्तर प्रदेश सभा की शताब्दी मनाने हेतु सहयोग की भी अपील की।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्बोधन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने भाषण में भगवान् कृष्णचन्द्र जी के जीवन की चर्चा करते हुए कहा कि हमे उनके जीवन स शिक्षा लेनी चाहिए। देश की वर्तमान स्थिति की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने पजाब से आये शरणार्थी भाइयो के प्रति समवेदना प्रकट की और उनके प्रति आर्यसमाज द्वारा की गई सेवाओ की सराहना की। उन्होने कहा कि जिन हिन्दुओ और सिखो ने भारत के बटवारे के समय मिलकर सघर्ष किया था, आज वही पाकिस्तान की गन्दी राजनीति के शिकार होकर आपस म लड रहे हैं। कश्मीरी पडितो को लेकर प्रधान मन्त्री से भेंट की चर्चा करते हुए कहा कि जैसे गुरु तेगबहादुर जी से कश्मीरी पडितो ने रक्षा की माग की थी उसी प्रकार आज कश्मीर के पण्डितो ने रक्षा की अपील की है। कैसा नाजुक समय है – हिन्दू सिख आपस मे लड रहे हैं।

योगिराज कृष्ण का चरित्र उत्तम बताते हुए उन्होने कहा कि हमने उन्हे गोपिकावल्लभ तो कहा पर सुदामावल्लभ नही बताया। काश! आज देश भगवान कृष्ण की गीता के ज्ञान को हृदयगम कर ले, जिसने हारे हुए अर्जुन को मैदान मे खडे रहने की शिक्षा दी।

उन्होने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ से मिलजुल कर काय करन की अपील की जिससे ऋषि का मिशन आगे बढे और आर्यसमाज प्रगति पथ पर अग्रसर होकर देश को नई दिशा दे सके।

आर्यसमाज सीसामऊ में

आर्यसमाज सीसामऊ मे श्री स्वामी जी के पधारने पर आर्यजनो ने उनका मालाओ से स्वागत किया। साथ मे प० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री मनमोहन तिवारी और श्री देवीदास आर्य (उपप्रधान सभा) का भी स्वागत किया गया। प० लक्ष्मणकुमार जी शास्त्री ने श्री स्वामी जी के आर्यसमाज मे पधारने पर आभार व्यक्त किया।

श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री द्वारा १२७०२) रुपए की थैली भेंट की गई। स्वामी जी ने अपने भाषण मे कहा कि आज देश मे अराजकता व्याप्त है। प जाब जल रहा है। सैकडो व्यक्ति मारे जा चुके है। हजारो व्यक्ति घर छोडकर प जाब से बाहर दिल्ली, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश आदि मे सुरक्षा हेतु आ गये हैं। आर्यसमाज प्राणपण से उनकी रक्षा करेगा। जिन हिन्दू-सिखो ने मिलकर भारत विभाजन के समय मोर्चेबन्दी की थी, आज वे आपस मे लड रहे हैं यह दुख की बात है।

स्वामी जी ने सिखो से कहा कि अगर आपको लड़ना ही है तो गुरु नानक-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दान जगत् का प्रकृत धर्म है

किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?
गिरने से उसको संभाल क्यों रोक नहीं लेते हैं ?
ऋतु के बाद फलों का रुकना डालों का सड़ना है,
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है।
सरिता देती वारि कि पाकर उसे सुपूरित घन हो,
बरसे मेघ भरे फिर सरिता उदित नया जीवन हो।
आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है,
जो देता जितना बदले में उतना ही पाता है।
जहां कहीं है ज्योति जगत् में जहां कहीं उजियाला,
वहां खड़ा है कोई अंतिम मोल चुकाने वाला।
दान जगत् का प्रकृत धर्म है मनुज व्यर्थ डरता है,
एक रोज तो हमें स्वयं सब कुछ देना पड़ता है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पंजाब जल रहा है। उत्पीड़ित आर्य-हिन्दू जनता पंजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर सुरक्षा हेतु पहुँच रही है। आर्यसमाजों व सनातन धर्म सभाओं से निवेदन है कि पंजाब से आई पीड़ित हिन्दू जनता को मन्दिरों, स्कूलों में ठहराकर उन्हें पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस संकटकालीन स्थिति में तन, मन, धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता— भवदीय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान सभा प्रधान

नई दिल्ली-२

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष के लिए प्राप्त राशियां

आर्यसमाज ब्यावरा (जिला राजगढ़) ने पंजाब के पीड़ितों की सहायता के लिए २५० रुपये भेजे हैं। विवरण इस प्रकार है—

श्री शांतिचन्द्र जी सर्राफ	रु० ७१
श्री चन्द्रभान जी आर्य	रु० २१
श्री प्रेम नारायण जी	रु० ५
श्री बापूलाल जी सुमन	रु० २
श्री राजेन्द्र मिश्र	रु० २
श्री रामरतन जी	रु० ३
श्री प्रेमकुमार गुप्त	रु० १०
श्री सुरेन्द्रसिंह राघव	रु० १०
श्री मुन्शीलाल जी श्रीवास्तव	रु० ११
श्री रामचन्द्र जी गुप्त	रु० ११
श्री प्रमोदकुमार गुप्त	रु० ११
श्रीमती दुर्गाबाई नामदेव	रु० ११
सीताबाई	रु० ५
कु० मीना	रु० ५
कु० उषा	रु० २
श्रीमती सरजूबाई	रु० ५
आर्यसमाज ब्यावरा	रु० ६५
योग	रु० २५०

बरनावा संस्कृत महाविद्यालय पर पुलिस की ज्यादतियां

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा निन्दा

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक वक्तव्य में बताया कि गत २ अगस्त को बरनावा (मेरठ) में कुछ कावड़ी गंगाजल लेकर आ रहे थे तो कुछ मुसलमानों ने शरारत करके उन्हें एक थैला थमा दिया, जिसमें हड्डियां थीं। इस पर कावड़ी लोग क्रुद्ध हो गये और उन्होंने वहां यातायात रोक दिया और पुरातत्त्व विभाग को भी नुकसान पहुंचाया।

स्वामी जी ने कहा कि पुलिस ने कावड़ियों और शरारतपूर्ण हरकतें करने वालों की तो खोज नहीं की किन्तु देशद्रोही और विघटनकारी तत्त्वों के दबाव में आकर लाक्षागृह स्थित ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के अधिकारियों को धमकी दी और उपाचार्य को गिरफ्तार कर लिया। उस गुरुकुल मे छोटे-छोटे बच्चे पढ़ते हैं। गुरुकुलवासियों का इस झगड़े से कोई सम्बन्ध ही नहीं। किन्तु बरनावा जनपद के मुसलमान ब्रह्मचारी कृष्णदत्त और उनके गुरुकुल से चिढ़ते हैं और जानबूझकर इस प्रकार की शरारत करते रहते हैं।

स्वामी जी ने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त देश-भर में आध्यात्मिक सन्त के रूप मे जाने जाते हैं। पुलिस और प्रशासन द्वारा वस्तुस्थिति को जानते हुए भी गुरुकुल व इसके अधिकारियों के विरुद्ध मिथ्या दोषारोपण करने से सारे देश मे इस पर तीव्र प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

स्वामी जी ने मेरठ के जिलाधीश को ७ अगस्त को पत्र लिखकर गुप्तचर विभाग द्वारा इस काण्ड की जांच कराने की मांग की थी। किन्तु अभी तक इस बारे में कोई कार्रवाई न करने पर स्वामी जी ने इस काण्ड को केन्द्रीय नेताओं के समक्ष ले जाने का निश्चय किया है।

उन्होने जिला प्रशासन और पुलिस को आगाह किया कि मामले पर तत्काल उचित कार्रवाई की जाये, अन्यथा व्यापक प्रतिक्रियास्वरूप भयंकर विवाद छिड़ सकता है, जिसके लिए जिला प्रशासन और पुलिस दोषी होगी।

मान्य प्रधान जी के संन्यास ग्रहण करने पर

—उत्तमचन्द्र 'शरर' एम. ए.—

ऐ वतन की आबरू[1] बोमोवतन के जांनिसार,
आर्य वीरों की सदा तुझको नमस्ते बार-बार[2]
कर चुका पूरे फराइज,[3] आज तू दिलशाद है,[4]
सूरते बादे सबा[5] हर कैद से आजाद है।
आ गई तुझको दयानन्दे निको[6] सीरत की बान,
ले लिया सन्यास, तुझको मिल गई राहेनिजात[7]।
हो मुबारक, तू जहां का आज से परिव्राट् है,
क्या किसी राजा को झुकना, तू तो खुद सम्राट् है।
था पतंगा पहले, अब शम्मे सदाकत[8] बन गया,
बेदे अकदस[9] से उठा पैगामे उलफत बन गया।
उड़ चला तू मजहबोमिल्लत की हदें[10] फांदकर,
खुशनिवा[11] तायर, खुले अकाश में परवाज[12] कर।
क्या अजब, बिछुड़ा हुआ विश्वानन्द मिल जाये हमें,
हां मगर, तुझसे ही आनन्द मिल जाये हमें !

१. सम्मान २. जानिसारी ३. कर्तव्य ४. प्रसन्न ५. प्रातः की ठण्डी हवा ६. दैवी गुणों वाले ७. मोक्ष मार्ग ८. सत्य की मशाल ९. पवित्र १० सीमाएं ११. सुन्दर गीत गाने वाले पक्षी १२. उड़ान भर।

पंजाब की समस्या : नया सुझाव

–सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार–

(आवश्यक नहीं कि हम लेखक के सब विचारों से सहमत हों। पंजाब की समस्या पर आपके सुझाव आमन्त्रित हैं।—सम्पादक)

पंजाब का इतिहास विचित्र है। कभी दिल्ली से कराची तक सब कुछ पंजाब में ही जुड़ा था। सिन्ध कट गया—भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न रूप से अब पाकिस्तान का हिस्सा है। दिल्ली भी बहुत देर पूर्व पंजाब से अलग किया गया और भारत की राजधानी बनकर स्वतन्त्र रूप से केन्द्र द्वारा शासित क्षेत्र हो गया—कुछ विशिष्ट अधिकारों सहित।

इस संक्षिप्त इतिहास के साथ भारत की स्वतन्त्रता के समय पंजाब फिर बटा और पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान में चला गया और इधर पूर्व में पूर्वीय पंजाब बना, जिसे लाहौर न मिल सका। इसके बाद और कुछ स्थानीय समस्यायें पैदा हुईं और पंजाब को पंजाब हरयाणा और हिमाचल प्रदेश में बांट दिया गया। इस सब के होते हुए भी समस्याएं खड़ी रहीं। चण्डीगढ़ पंजाब और हरयाणा की साझी राजधानी अनिश्चित समय के लिए स्थिर की गई। यह इस समय स्वयं एक समस्या बन गई है।

पंजाब में सिखों की उपचेतना (sub conscious self) में दो सौ साल से पनपाई गई मनोवृत्ति 'राज करेगा खालसा आकी रहे न कोय" के जोर मारा और खालिस्तान या सिखराज्य का आन्दोलन उग्र रूप में प्रकट हुआ। यह दबाये जाने पर भी दबी आवाज में चल रहा है। इसके साथ आतंकवाद भी जुड़ गया दीखता है। आतंकवाद से ही पाकिस्तान की नींव पड़ी थी। उसी की नकल में खालिस्तान की कार्यविधि शुरू हुई। फौजी तथा पुलिस की ताकतों से यह दबाई गई है और दबाई जा रही है।

हमें समस्या का विश्लेषण करना है। चण्डीगढ़ किसे दिया जाये और जमीन का बटवारा कैसे हो, आदि विषय हैं। कई कमीशन बने, सलाह मशविरे हुए, परन्तु सफलता न मिल सकी। समझा यह गया है कि समस्या पंजाबी अकाली दल (पंजाब) और हरयाणा की है। परन्तु ऐसा नहीं है। वस्तुत पंजाबी सिख समुदाय, पंजाबी हिन्दू समुदाय तथा हरयाणवी समुदाय इन तीनों की है। जब समस्या को निपटाने का विषय किसी भी कमीशन के सामने आता है तो वह पंजाबी हिन्दू को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। 'पंजाबी हिन्दू' तथा 'हरयाणवी' में पर्याप्त विभिन्नतायें हैं। यदि पंजाब में हिन्दुओं को सिख बहुसंख्या के अधीन कर दिया गया तो आपसी वैमनस्य बढ़ता जायेगा। वर्तमान पंजाब में शायद ५२ प्रतिशतक सिख समुदाय के समझे जाते हैं और ४८ प्रतिशतक हिन्दू सम्प्रदायों के लोग हैं। आतंकवाद के कारण बहुत से पंजाबी हिन्दू पंजाब छोड़ रहे हैं। इससे समस्या और भी गम्भीर हो जायेगी। ७५ हजार एकड़ भूमि हरयाणा को दे दी जाये और चण्डीगढ़ पंजाब में हकूमत करने वाले अकाली दल को—पंजाब सरकार को दे दिया जाये—आदि आदि। इससे समस्या का हल न निकलेगा। क्यों न वर्तमान पंजाब की भूमि को ५२ प्रतिशत और ४८ प्रतिशत के अनुपात से सिख प्रधान पंजाब (मध्य पंजाब) तथा हिन्दू प्रधान पंजाब (पूर्वीय पंजाब) के रूप में बांट दिया जावे ? इससे भाषा समस्या भी दूर तक सुलझ जायेगी।

यदि लोग सहमत हो जावें तो मध्य पंजाब की राजधानी पटियाला जालन्धर या अमृतसर बन जावे और पूर्वी पंजाब को चण्डीगढ़ दे दिया जावे। वर्तमान समय में हरयाणा के पास पर्याप्त भूमि है। उसकी जल समस्या को आसानी से भाईचारे से निपटाया जा सकता है। जिस पक्ष को जहां कमी दिखाई देती हो उसकी पूर्ति केन्द्रीय भारत सरकार पूरा करने का प्रयत्न करे। संक्षेप में मुझे कहना है कि अपने अपने क्षेत्र में पर्याप्त स्वतन्त्रता के साथ उन्नति करने का अवसर सब को प्राप्त हो जायेगा। हिन्दू पंजाबी तथा सिख पंजाबी आपस में बहुत पास-पास हैं। दोनों में साझा भाईचारा था—पारस्परिक विवाह तथा सम्मिलित पूजास्थान भी थे। इन सब सम्बन्धों में शिथिलता आती जा रही है, जो दु:खप्रद है। दो भाई अगर एक ही मकान में न रह सकें तो साथ-साथ में दो मकान बनाकर रहने लग जावें। समय पाकर आपसी मुहब्बत खुद ही जावेगी।

यदि मुसलमान सम्पूर्ण पंजाब से अलग होकर 'पाकिस्तान' के नाम से स्वतन्त्र राष्ट्र बनाकर रह सकते हैं तो भारत राष्ट्र के अन्दर ही दो प्रादेशिक राज्यों के रूप में सिख प्रधान पंजाब (मध्य पंजाब) और हिन्दू प्रधान पंजाब (पूर्वीय पंजाब) क्यों नहीं पनपाये जा सकते।

यदि विशेष अधिकारों को लेकर मिजोरम जैसा छोटी सी जनसंख्या का प्रदेश भारत का एक स्वतन्त्र राज्य या स्टेट (दूसरे प्रादेशिक राज्यों की तरह विशेष अधिकार लेकर) स्वीकृत किया जा सकता है तो उपर्युक्त प्रदेश भी—पंजाब की समस्या निपटाने में—स्वीकृत किये जा सकते हैं। पंजाबी हिन्दू जनता को हरयाणा के अधीन करने से बहुत सी समस्यायें खड़ी हो जायेंगी जिस पर जनता का अभी ध्यान नहीं गया। इस समय इस चर्चा को छेड़ना उचित नहीं।

भारत में गोआ, पाण्डीचेरी, अरुणाचल, त्रिपुरा मणिपुर, बम्बई से अलग किया गया गुजरात प्रदेश—ये सब विशेष परिस्थितियों में और अवस्थाओं में स्वीकृत हुए हैं। क्या इसी तरह से उपर्युक्त सुझाव पर भी भारत के राजनैतिक मनीषी विचार न करेंगे ? ध्यान रहे कि पंजाबी हिन्दू को सर्वथा निरपेक्ष नहीं किया जाना चाहिए। यह कहना कि हिन्दू-सिख एक ही हैं—भाई भाई हैं–आदि आदि यह भावुकता या भावनात्मक दृष्टि से तो अच्छा लगता है परन्तु इसमें क्रियात्मक वास्तविकता पर्याप्त नहीं है। इसी से अलगाव पैदा हो रहा है। कांग्रेस के पिछले ४५ वर्षों में यह नारा सदा सुनने में आया है कांग्रेसी मंचों से भी—"हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सभी हैं भाई-भाई" इस नारे में सिख को सदा ही हिन्दू से अलग रखा गया है—मजहब की दृष्टि से। यद्यपि यह ठीक न था। भावुकता या भावनात्मकता में सभी भाई भाई कहे गये परन्तु क्रियात्मकता में सभी अलग-अलग रहे।

मुसलमानों ने पाकिस्तान बना लिया, ईसाई वर्ग ने गोआ, पाण्डीचेरी तथा पूर्वी भारत के मिजोरम आदि प्रदेश बनाये जो अब ईसाइयत के केन्द्र बनाये जा रहे हैं। पंजाब की समस्या को भी इन्हीं परिस्थितियों में रखना उचित है।

भविष्य का ध्यान रखते हुए मैं कहना चाहूंगा कि जब तक सौहार्द तथा [illegible] से पाकिस्तान और भारत पहले की तरह एक नहीं हो जाते भारत और पाकिस्तान में स्थायी शांति और समृद्धि पनप न सकेगी। इस बात को अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से समझना आवश्यक है। भारत को अपना रूप "यथापूर्वम-कल्पयत्" की दृष्टि से देखना चाहिए। रास्ता बहुत कठिन है परन्तु यदि मर्दानगी से चला जायेगा तो मंजिलें पार होती जायेंगी।

यदि पंजाब, हरयाणा और हिमाचल प्रदेश एक कर दिये जावें, जिसे भारत की सैनिक शक्ति की सहायता सदा मिलती रहे तब तो कहना ही क्या। इससे उत्तरी भारत शक्तिशाली बनकर उभरेगा। ऐसा होता दिखाई नहीं दे रहा। सामयिक दृष्टि से उपर्युक्त "पंजाब की समस्या" को सुलझाने का सुझाव अवश्य ही परिस्थितियों को अनुकूलता की ओर ले जायेगा।

दक्षिण अफ्रिका में हिन्दी प्रचार : आर्यसमाज का योगदान-३

पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन

हिन्दी की शिक्षा में दूसरी बड़ी कठिनाई पाठ्य पुस्तकों की थी। भारत से जो पाठ्य पुस्तकें आती थीं, वे न तो पाठ्य विषय की दृष्टि से और न भाषा की दृष्टि से यहां के बालकों के लिए उपयोगी थीं। इस कमी को पूर्ण करने के लिए संघ ने पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लिया। पं० नरदेव जी हिन्दी के सिद्धहस्त लेखक हैं—शिक्षाशास्त्री हैं। उन्होंने प्राथमिक कक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार कर दी। व्याकरण और भाषा रचना की दृष्टि से हिन्दी शिक्षकों के चार भाग प्रकाशित किये गये। हिन्दी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों को धर्म और संस्कृति का ज्ञान देना भी था। इसलिए हिन्दी शिक्षा संघ के पाठ्यक्रम में धर्म शिक्षा विषय रखा गया है। इसके लिए पण्डित जी ने धर्म शिक्षा पाठावली के तीन भाग तैयार किये। वे बहुत लोकप्रिय हुए। उनकी गुजराती पाठशालाओं में भी इनके द्वारा हिन्दू धर्म की शिक्षा दी जाने लगी। अब इन पुस्तकों के आधार पर पण्डित जी ने अंग्रेजी में तीन भाग तैयार करके वेद निकेतन, आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रिका द्वारा प्रकाशित करवाये हैं, जो बड़े लोकप्रिय हुए हैं। इंग्लैण्ड, ट्रीनीडाड आदि देशों में भी इनका प्रचलन हो गया है। इस तरह पण्डित जी द्वारा धर्म संरक्षण के क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुत गौरव पूर्ण कार्य किया है।

भारतीय संस्कृति की पुनः प्रतिष्ठा

धर्म और मातृभाषा के साथ ही भारतीय संस्कृति के तत्त्वों को हमारे लोग खो न बैठे, यह विदेशों में बसे भारतीयों की एक महती चिन्ता है। इस सदी के प्रारम्भ में भारतीय बालकों और युवकों का झुकाव पाश्चात्य संगीत, नृत्य आदि की तरफ काफी बढ़ गया था। अंग्रेजी पाठशालाओं में भी पाश्चात्य संगीत की शिक्षा दी जाने लगी थी। इस दिशा में भी पण्डित नरदेव जी वेदालंकार के नेतृत्व में हिन्दी शिक्षा संघ ने अपना कार्य चालू किया। सन् १९६० से प्रतिवर्ष हिन्दी विद्यार्थी और युवक विविध विषयों में प्रतियोगिता के लिए तैयार किये जाने लगे। वे भाषण, संगीत, वेद मन्त्र पाठ, गीता पाठ, रामायण पाठ, समूह गान, नृत्य (विशेषतः गरबा नृत्य), नाटक, अभिनय आदि में स्पर्धा करने लगे और उन्हें विजयोपहार दिये जाने लगे। ये सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय होने लगे। इन्होंने दो चार दिनों के लिये "हिन्दी मेला" का स्वरूप ले लिया है और डरबन के आस-पास का प्रदेश भारत बन गया है। हिन्दी शिक्षा संघ की इस प्रवृत्ति का प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं पर भी होने लगा। तमिल, तेलगू और गुजराती भाषाओं में भी ऐसी प्रतियोगिताओं ने प्रतिवर्ष जड़ पकड़ ली। इससे प्रेरित होकर कई युवक युवतियां संगीत और नृत्य की शिक्षा पाने के लिए भारत आने लगी।

हिन्दी नाटकों का प्रचलन तो यहाँ पर इस सदी के प्रारम्भ से ही हो गया था। हिन्दी पाठशालायें और मन्दिर बनवाने के लिए ये नाटक उत्तम साधन बन गये। इसका प्रारम्भ आर्य युवक सभा डरबन ने किया। १९१२ में स्थापित इस सभा ने हिन्दी नाटकों द्वारा चन्दा करके डरबन के प्रसिद्ध आर्य अनाथाश्रम की नींव डाली थी। आज यह आश्रम प्रतिवर्ष लाखों रुपयों का बजट बनाकर कार्य कर रहा है। विश्व-भर में आर्यसमाज के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु समस्त भारतीयों में यह आश्रम सर्वोत्तम माना जाता है। हिन्दी शिक्षा संघ ने भी सीता बनवास, राज त्याग, रक्षा-बन्धन आदि उच्च कोटि के नाटकों का अभिनय करके इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है।

इस तरह हम देखते हैं कि हिन्दी प्रचार और प्रसार के लिए इस देश में बहुत कार्य हुआ है, जिसके मूल में आर्यसमाज और स्वामी दयानन्दकी प्रेरणा रही है। इस क्षेत्र में यशस्वी कार्य करने वाले स्वामी शंकरानन्द, स्वामी भवानीदयाल सन्यासी और पण्डित नरदेव वेदालंकार आर्यसमाज के अग्रणी नेता रहे हैं।

आज यहां की डरबन वेस्टविल युनिवर्सिटी में भी हिन्दी की पढ़ाई चालू हो गयी है और यहां से हिन्दी के स्नातक बनने लगे हैं। इस यूनिवर्सिटी की विशेषता यह है कि यहां भारतीय भाषाओं के अध्ययन की पूर्ण सुविधा है। यही एक युनिवर्सिटी है, जहां संस्कृत, हिन्दी, तमिल, गुजराती, तेलगू और उर्दू भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था है।

उपसंहार

यह सब होते हुए भी आजकल यहां भारतीयों के व्यवहार की भाषा अंग्रेजी बन गई है। बाजार में, चौराहे पर, सभा मंच पर सब जगह अंग्रेजी चलती है—चाहे वहां भारत के एक ही भाषा-भाषी लोग विद्यमान क्यों न हो। आजकल के भारतीय युवक युवतियां सिर्फ अंग्रेजी भाषा जानते हैं। युवा माता-पिता की गोद में पलने वाला बच्चा अंग्रेजी से ही भाषा का प्रारम्भ करता है। इस तरह यहां के भारतीयों की मातृभाषा अंग्रेजी बन गयी है। आज किसी भारतीय भाषा में कोई साप्ताहिक या मासिक पत्र नहीं निकलता न निकल सकता है। साहित्यिक भाषा जानने वाले इने-गिने ही व्यक्ति मिलेंगे।

पहले हिन्दी आदि भाषायें जनता की भाषायें थी। उस समय पढ़े लिखे लोग कम थे। वे शुद्ध भाषा नहीं बोल सकते थे। आजकल शुद्ध भाषा बोलने वाले व्यक्ति मिल जायेंगे, परन्तु इन भाषाओं में घरेलू बातें करने वाले प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं। वातावरण का इतना प्रभाव है कि भविष्य में भारतीय भाषायें सिर्फ कुछ व्यक्तियों तक सीमित हो जायेंगी।

यही प्रक्रिया अन्यत्र, जहां भारतीय जा बसे हैं, चल रही है। इतना ही नहीं, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, यूरोप आदि देशों में जहां भारतीय अभी ३०-४० वर्ष पूर्व ही अधिक संख्या में जाकर बसे हैं, उनकी सन्तान अपनी दूसरी पीढ़ी में ही तेजी से भारतीय भाषाओं को खो रही है। आगे चलकर सिर्फ मोरिशस और फीजी के छोटे टापुओं में, जहां भारतीयों की बस्ती बहुमत में है और जहां हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषा और घरेलू भाषा बन चुकी है, हिन्दी बच सकेगी। यह तथ्य है कि इन स्थानों पर भी हिन्दी प्रचार करने का सर्वाधिक श्रेय आर्यसमाज को ही है। (समाप्त)

सम्पादक के नाम पत्र

राष्ट्र गान : उच्चतम न्यायालय इन प्रश्नों के उत्तर दे

महोदय,

मैंने "राष्ट्र गान के लिए किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता" (यदि सच्चा धार्मिक एतराज हो) शीर्षक से जेहोवाज विटनेसेस सम्प्रदाय के पक्ष में उच्चतम न्यायालय का निर्णय पढ़ा।

श्रीमन्, अब समय आ गया है जब सर्वोच्च न्यायालय निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर भी अपने निर्णय में सुनाने का सफल प्रयास करे, जिससे सदा-सदा के लिये धर्म सम्बन्धी विभिन्न मान्यतायें भारत में संघर्ष का कारण न बनें।

धर्म क्या है ? धर्म एक है या अनेक ? क्या धर्म में विश्व सत्य या सर्वमान्य सिद्धांत निहित हैं ? क्या अलग-अलग कौम का अलग-अलग धर्म होता है ? क्या अलग-अलग राष्ट्र का अलग-अलग धर्म होता है ? ईश्वर है या नहीं ? यदि है तो क्या वह सृष्टि का रचयिता है ? ज्ञान का दाता है ? क्या सत्य ही ईश्वर है ? क्या ईश्वर ने अलग-अलग कौम को, राष्ट्र को अलग-अलग ज्ञान दिया ? जब सूरज, चांद, पानी का उपयोग प्राणिमात्र के लिये समान है, जब मनुष्य मात्र का शारीरिक ढांचा एक-सा है और उसके कार्य एक-से हैं तो सर्वमान्य सिद्धांतों में भिन्नता क्यों और कैसे हो सकती है ? भाषाओं की अनेकता के बावजूद वैज्ञानिक, गणितीय, इंजीनियरिंग और मेडिकल साइन्स की शिक्षा और कार्यप्रणाली मे कोई अन्तर नहीं तो फिर धर्म में, ईश्वरीय ज्ञान में, सृष्टि की रचना में, ईश्वर में भेद और भिन्नता क्यों ?

धार्मिक पुस्तकें कौन-कौनसी हैं ? ऐतिहासिक और विवेक रहित पुस्तकें क्या धार्मिक पुस्तकों की श्रेणी में आ सकती हैं ?

सम्प्रदाय क्या है ? धर्म और सम्प्रदाय में अन्तर क्या है ? क्या सम्प्रदाय धर्म से श्रेष्ठ है ? क्या सम्प्रदाय और धर्म राष्ट्र से श्रेष्ठ हैं ? क्या धर्म राष्ट्रीयता से श्रेष्ठ नहीं ? क्या हठवाद और धर्म मे अन्तर नहीं किया जा सकता ? यदि मानव जाति व्यवस्था और वर्ण की दृष्टि से हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई आदि वर्गों में विभाजित हो सकती है, तो क्या सर्वमान्य मानवीय, धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित राष्ट्रीय कानून सख्ती से सभी पर लागू नहीं किये जा सकते ?

रास्ता एक, मंजिल एक, फिर क्यो अनेक रास्ते और मंजिल एक का नारा देकर लोगों को भ्रम में डाला जाता है ?

कौन-कौनसी संस्थायें धार्मिक श्रेणी और राष्ट्रीय श्रेणी के अन्तर्गत आती हैं और कौन-कौनसी साम्प्रदायिक श्रेणी मे और राष्ट्र के लिए अहितकर हैं ?

क्या धर्म की आड़ में नये-नये सम्प्रदायों को जन्म देना और नई-नई अवैज्ञानिक, आधार रहित काल्पनिक दिशायें प्रदान करना न्यायोचित है ? क्या सर्वमान्य, सर्वहितकारी धार्मिक नियमों मे किसी आचार्य या सन्त, मुल्ला-मौलवी या पादरी को परिवर्तन करने का अधिकार है ?

मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों और चर्चों का क्या उपयोग ? इसका सदुपयोग किस तरह किया जावे ?

भारतीय संविधान निर्माताओं को धर्मप्रधान देश भारत को किन परिस्थितियों में धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित करना पड़ा ? क्या धर्मनिरपेक्ष शब्द सही है ?

यदि उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर निर्णय के रूप मे उच्चतम न्यायालय ने दे दिये तो भारत का शिक्षित वर्ग हठवादियों को समझाने का प्रयास करता रहेगा और साम्प्रदायिक दंगों से मुक्ति प्राप्त कर देश शांति और अखण्डता की ओर बढ़ता रहेगा।

—अर्जुनलाल नरेला
नीमच-२,
(जिला मन्दसौर)

विद्यार्थियों से

—धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी

माता, पिता, आचार्य का सम्मान प्रतिपल कीजिये।
इससे अपरिमित शक्ति पाकर विश्व वैभव लीजिये ।।
श्रद्धावनत जो नित्यप्रति करते सदैव प्रणाम हैं।
वे ही चतुर्विध वैभवों से विश्ववंद्य महान् हैं ।।
अपनी अनूठी संस्कृति से निज स्वरूप संवारिये।
इस भव्य भारतवर्ष का प्राचीन रूप निखारिये ।।
भटकें नहीं पाश्चात्य कृत्रिम वैभवों की शान मे।
स्वर्गीय सुख तो है समाहित वेद-गीता ज्ञान में ।।
इस ज्ञान के आलोक से ही विश्व ज्योतिष्मान् हो।
फिर से गुरुपद पर अलंकृत देश गौरववान् हो ।।
मृदुता, सरलता, सौम्यता संबल मनुज उत्कर्ष के।
इस विश्व को अब भी उबारें छात्र भारतवर्ष के ।।
आकुल जगत् की ओर भारतवर्ष का ही ज्ञान है।
जिसको संजोये वेद हैं जो स्वर्ग विभव निधान है ।।
इस स्रोत से संसार को अब सींच-सींच उबार लो।
उत्कृष्टतम आदर्श जो निज में उन्हें ही उतार लो ।।
होवे सदा उत्थान नैतिक हो बड़ों में आस्था।
संसार में सर्वोच्च बनने का यही है रास्ता ।।
संकल्प बल से आत्मबल को और दृढ़तर कीजिये।
युग के नये निर्माण मे सन्देश नूतन दीजिये ।।

वैदिक ज्ञान गंगा...

(पृष्ठ ६ का शेष)

योगियों को प्राप्त होता है। इस योग रूप कुंडलिनी-शक्ति की वर्णन दृष्टि मे भी स्वर्ग का वर्णन अथर्ववेद (४। ३४) में पाया जाता है। भौतिक दृष्टि से स्वर्ग का वर्णन करते हुए कहा है—

घृतह्रदा मधुकूला सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना,
एतास्त्वा धारा उपयन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमानाः
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः।

इस मन्त्र में स्वर्ग का वर्णन करते हुए समाज की ऐसी अवस्था का वर्णन किया गया है, जिसमें घी, दूध, शहद की नदियां बहती हैं। इसी प्रकरण में लिखा है : स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम्' अर्थात् स्वर्ग लोक मे मनुष्य अनेक स्त्रियों के सम्पर्क में आता है। यह सारा वर्णन एक समृद्ध गृहस्थाश्रम का वर्णन है। जिस विचारधारा में कर्मानुसार बार-बार जन्म लेने की बात कही हो, इसी देह को स्वर्ग कहा हो, उसमें इस सृष्टि से बाहर किसी प्रकार के स्वर्ग-नरक की कल्पना कैसे हो सकती है? घी, दूध, शहद की नदियां बह रही हों, इनकी कमी न हो, घर धन-धान्य से भरपूर हो, कुनबे में नाना सम्बन्धों वाली स्त्रियां हों, बहनें हों, भावजें हों, लड़कियां हों—इस प्रकार का गृहस्थ भौतिक दृष्टि से स्वर्ग है—इसको 'बहुस्त्रैणमेषाम्' कहा है।

दूध, दही, शहद की नदियों के बहने का यह अर्थ नही है कि बाकायदा इसके दरिया बह रहे हों। इनकी नदियो के बहने का अर्थ इनकी बहुतायत से है। इस प्रकार का कवितामय वर्णन करना अस्वाभाविक नही है। बाइबल की 'नम्बर्स'-नामक पुस्तक के १३वें अध्याय की २७वीं आयत में मूसा के पास वे लोग, जिन्हें उसने कैनान यह देखने के लिये भेजा था कि यह प्रदेश समृद्धि की दृष्टि से कैसा है, लौटकर आकर कहते हैं।

'We came into the land whither thou sentest us, and surely it floweth with milk and honey'—हमें जिस प्रदेश को देखने के लिये भेजा गया था हम वहां गये। निस्सन्देह वहां दूध और शहद की नदियां बहती हैं।

वेदों के भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से वर्णन किये हुए स्वर्ग की क्या दुर्गति हुई यह सेमेटिक धर्मों की स्वर्ग की कल्पना को देखकर समझा जा सकता है। मुसलमानों का कहना है कि 'पुल-सिरात' नामकपुलपरसे गुजरकर मनुष्य बहिश्त मे पहुंचता है। वहां बाग-बगीचे हैं, दूध और शहद की नदियां हैं, और साथ ही हूरें हैं। वेदों मे वर्णित किये हुए समृद्ध गृहस्थाश्रम का यह विकृत रूप है। यहूदियो के स्वर्ग की भी यही कल्पना है। पारसी लोग स्वर्ग को 'बहिश्त' कहते हैं, और स्वर्ग की अप्सराओं को 'हूरे-बहिश्त' कहते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि 'हूर' शब्द संस्कृतके 'अप्सरा' का, तथा 'बहिश्त' शब्द संस्कृत के 'बहिष्ठ' का अपभ्रंश है। 'अप्सरा' का 'अप्' लुप्त हो गया है 'सरा' यह रह गया है, 'सरा' का 'हरा'—'हरा से 'हूर' बन गया है। शब्द शास्त्र के अनुसार 'स' को 'ह' हो जाता है जैसे 'सप्ताह' से 'हफ्ता' बन जाता है। वेद में 'प्सरा' शब्द रूप के अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे 'अप्सरा' का 'अप्' लुप्त हो जाने से 'हूर' बना है, वैसे 'प्सर' के 'स' के लुप्त हो जाने से 'परी'—'फेयरी' आदि शब्द घटित हुए हैं। 'बहिश्त' शब्द भी वेद के 'बहिष्ठ' शब्द से लिया हुआ है। अथर्ववेदके उक्त मन्त्रके सन्दर्भ मे 'एष यज्ञानां विततो बहिष्ठः' (अथर्व, ४, ३४, ५) आया है जिसके वैदिक 'बहिष्ठः' शब्द से अन्य धर्मों के 'बहिश्त' शब्द का निर्माण हुआ है।

वेदों में जो वर्णन है वह किसी स्वर्ग लोक का वर्णन नही, इस लोक का ही वर्णन है—यह बात कठोपनिषद् के नचिकेता के उपाख्यान से भी पुष्ट होती है। मृत्यु नचिकेता के सामने बड़े-बड़े प्रलोभन रखते हुए कहता है—

इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः।
आभिः मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः॥
(१, २५)

मृत्यु एक आचार्य का नाम है। उन्होंने अध्यात्म के जिज्ञासु नचिकेता की जिज्ञासा की तीव्रता को जानने के लिये कहा कि संसार का सुख लो, मौज-बहार करो, अध्यात्म मार्ग बड़ा कठिन है, उसको छोड़ो। यहां पर भी यमाचार्य ने इस लोक की सुख-सुविधा मौज-बहार को ही स्वर्ग माना है, यद्यपि अध्यात्म के पिपासु नचिकेता ने इसे ठुकरा दिया है।

ससार के मुख्य धर्मों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे स्वय इस बात को स्वीकार करते हैं कि उनका स्रोत उनसे कहीं बाहर है। कुरान मे सूरतुज्जखरूफ में लिखा है कि 'यह कुरान तो उस बड़ी किताब में से जो हमारेपासहै, नकल की गई है। यह किताब बहुत ऊंची है, बुद्धिमत्ता से भरी हुई है।' सूरतुल् वाकिया मे लिखा है कि यह वही कुरान है जो खुदा के पास मौजूद किताब में से ली गई। इसका सीधा अर्थ यह निकलता है कि कुरान ज्ञान के किसी अन्य भंडार की तरफ संकेत कर रहा है, वह ज्ञान का भंडार जो खुदा के पास है, जिसकी यह नकल है। यहूदी धर्म की पुस्तक 'एक्सोडस' के ३२वें अध्याय की १९वी आयत में लिखा है कि मूसा जिहोवा की आज्ञाएं लिखी हुई थीं, परन्तु अपने अनुयायियों को मूर्तिपूजा करते देखकर उसने गुस्से में आकर उन्हें पटक दिया और वे टूट गईं। इसके आगे लिखा है—

"And the Lord said unto Moses—Now these two tables of stone like unto the first; and I will write upon these tables the words that were in the first tables, which thou breakest

इस प्रकार यहूदी धर्म भी स्वीकार करता है कि पहले जो कुछ मिला था, वह लुप्त हो गया, उसे फिर दोहराना पड़ा, पहली पट्टियां टूट गईं, दुबारा लिखनी पड़ीं।

ईसा मसीह ने इस बात को कि ईश्वरीय ज्ञान पहले लुप्त हो गया था, अब फिर से उसे जीवित किया गया है, और अधिक स्पष्ट कर दिया है। तलाक होना चाहिए या नहीं—इस प्रश्न पर विचार करते हुए मसीह ने 'मैथ्यू' पुस्तक (१९-८) में कहा है—

"Moses, because of the hardness of your hearts, suffered you to put away your wives but from the beginning it was not so."—अर्थात् मूसा ने तुम्हारे हृदय की कठोरता को देखकर तलाक की आज्ञा दी थी, परन्तु शुरू से ऐसा नही था।

यहां 'शुरू से' का क्या मतलब है? 'शुरू से' का वही मतलब है जो अभी कहा गया, जिसकी तरफ कुरान ने सकेत करते हुए कहा कि असली किताब तो खुदा के पास है, जिसकी तरफ यहूदी धर्म ने इशारा करते हुए कहा कि असली पट्टियां तो जिन पर खुदा की हिदायतें दर्ज थीं, वही है जो इन सबका आदि स्रोत, जिनसे देश-देशान्तर में बहने वाली धाराएं आस पास का गन्द लेकर फूट निकली हैं।

धर्मों के क्षेत्र में देर से रूढ़िवाद का राज्य रहा है। पण्डित, मौलवी, मुल्ला, पादरी सब मक्खी पर मक्खी मारने में एक-दूसरे से बाजी लेते रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि वेदों के 'अहि' के वर्णन से शैतान की कहानी पैदा हो गई, 'गोमेध' के वर्णन से गोकुशी चल पड़ी, गृहस्थ रूपी 'स्वर्ग' के वर्णन से बहिश्त और जन्नत के किस्से चल पड़े। सायण और महीधर ने वेदों के शब्दों के रूढ़ अर्थ ही किये। अब तक पुराने धर्मों को यही रोग लगा रहा है। इस रोग को इस युग में यदि किसी ने दूर किया तो वे ऋषि दयानन्द थे। ऋषि ने वेदों के रूढ़ अर्थ करने को रोक दिया। उन्होंने वेदों के अर्थ यौगिक दृष्टि से किये। उन्होंने बतलाया कि वेद मे गौ का अर्थ पृथिवी है, जानवर नहीं, गोमेध का अर्थ कृषि है, गोमेध नहीं, अहि का अर्थ बादल है, सांप नही, स्वर्ग का अर्थ गृहस्थ का सुख है, आसमान में टंगा कोई बहिश्त नही। यह गलती सदियो से चली आ रही थी, तभी वेदों की पवित्र, निर्मल धारा में समय के बीतने के साथ-साथ कीचड़ मिलता चला गया और उदात्त विचारों की नासमझी के कारण उन्हीं से निकम्मे किस्से-कहानी आये। अगर यह गलती न हुई होती, तो आज विश्व-भर में एक धर्म होता, एक समाज होता और वह धर्म और समाज दूसरा कोई न होकर वैदिक धर्म होता, वैदिक समाज होता, क्योंकि सब धर्मों तथा संस्कृति का आदि स्रोत वेद है। (समाप्त)

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

महत्त्वपूर्ण कार्य व उपलब्धियां

साहित्यकार सम्मान (११ साहित्यकार सम्मानित), साहित्यिक कृति पुरस्कार (२५ कृतियां पुरस्कृत), साहित्यकार पेंशन व सहयोग (१५ साहित्यकारों व उनके आश्रितों को सहयोग), नवोदित लेखक पुरस्कार (२७ युवा लेखक पुरस्कृत), छात्र पुरस्कार (१४ छात्र पुरस्कृत), साहित्यिक गोष्ठियों परिचर्चाओं, सम्मेलनों आदि का आयोजन, (शिक्षा गोष्ठी, अनुवाद गोष्ठी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी संगोष्ठी, भारतेन्दु संगोष्ठी, डा० राजेन्द्रप्रसाद जन्म-शताब्दी समारोह हिन्दी शिक्षक सम्मेलन, सस्कृत सगोष्ठी, हिन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन, 'हिन्दी और राष्ट्रीय एकता' विचार गोष्ठी, स्वतन्त्रता सग्राम मे साहित्यकारों का योगदान 'विचार गोष्ठी, साहित्य और सौहार्द सगोष्ठी, प्रमुख), 'भाषा-भारती' योजना के अन्तर्गत भाषाई एवं भावात्मक एकता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द के पोषण एव विकास के लिए कार्यक्रमों का आयोजन, मासिक साहित्यिकी कार्यक्रम, हिन्दी दिवस और पखवाड़े का आयोजन, हिन्दी के २० वसन्त (१९६५ से १९८५ तक की अवधि के मध्य हिन्दी की स्थिति पर विश्लेषण के लिए दो-दिवसीय समारोह), हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए संयुक्त तथा सहयोगी कार्यक्रमों का आयोजन, स्थानीय एवं राष्ट्रीय कवि-सम्मेलनों का आयोजन (गणतन्त्र दिवस, कवि-सम्मेलन के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता व चेतना के सन्दर्भ मे 'एकता के स्वर,' 'चेतना के स्वर' और 'वन्दना के स्वर' कवि-सम्मेलन महत्त्वपूर्ण), नये और युवा कवियों के लिए 'उभरते स्वर' (युवा कवि मच, भेटवार्ता तथा विषयक परिचर्चा, छोटे व लघु समाचार पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहन, शोध छात्र वृत्ति (दिल्ली के साहित्य/लोक साहित्य पर (१०,०००/- रु० प्रतिवर्ष), उत्कृष्ट बाल-साहित्य को प्रोत्साहन, युवा-प्रतिभाओं की खोज प्रकाशन सहयोग (५ कृतियों के लिए सहयोग) सन्दर्भ पुस्तकालय व वाचनालय की स्थापना, हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी प्रकाशन व सकलन (काव्य सकलन) 'ज्योति कलश', युवा लेखकों की पुरस्कृत रचना सकलन 'उगती किरणें', हजारीप्रसाद द्विवेदी संगोष्ठी संकलन आदि प्रमुख प्रकाशित तथा 'युवा वर्ग स्मृति सकलन, 'दिल्ली साहित्यकार निर्देशिका, हिन्दी मैनुअल' आदि अन्य प्रमुख) ।

—डा० नारायणदत्त पालीवाल

सचिव, हिन्दी अकादमी ए-२६/२७ सनलाइट इन्श्योरेन्स बिल्डिंग, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२.

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (७।९।१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P.S.O. on 4-9-86

आर्य वीर दल : एक स्पष्टीकरण

अनेक आर्यसमाजों और आर्य महानुभावों ने पूछा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य वीरों के किस संगठन को मान्यता दे रखी है। इस विज्ञप्ति द्वारा आर्य जनता को सूचना दी जाती है कि सार्वदेशिक सभा ने केवल उस संगठन को मान्यता दी हुई है, जिसके केन्द्रीय संगठन का नाम सार्वदेशिक आर्य वीर दल है। सब आर्य बन्धुओं का कर्त्तव्य है कि वे इसी संगठन को सुदृढ़ बनायें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

ऋषि मेले का आयोजन

अजमेर। ऋषि मेला दीवाली के अवसर पर ऋषि उद्यान में ७-८-९ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, प० उदयवीर जी शास्त्री, महात्मा आर्यभिक्षु जी, प्रो० शेरसिंह जी, डा० भवानीलाल जी भारतीय, पं० आनन्दप्रिय जी (बडौदा) आदि सन्यासी, विद्वान् और धार्मिक नेता समारोह में भाग लेंगे और ओजस्वी विचारों से जनता का मार्गदर्शन करेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है।

इस वर्ष अनासागर के तट पर ऋषि उद्यान के मनोरम वातावरण मे वानप्रस्थ आश्रम प्रारम्भ किया गया है। जो महानुभाव वानप्रस्थ एव सन्यास की दीक्षा लेकर अपने जीवन का शेष समय आत्मोन्नति व देशोपकार में लगाना चाहें उनके लिए यह आदर्श अवसर है।

वैदिक यतिमंडल का सम्मेलन

वैदिक यतिमंडल दीनानगर (गुरुदासपुर) का सम्मेलन २७, २८ सितम्बर (शनि, रवि) को दयानन्द मठ, रोहतक में किया जाना निश्चित हुआ है। निवास-भोजन की व्यवस्था वहीं पर रहेगी।

मार्मिक उद्बोधन......

(पृष्ठ १ का शेष)

देव जी के ननकाना साहब को लेने के लिए हमला क्यों नहीं करते ? हम आपके साथ हैं। महाराजा रणजीत सिंह के लाहौर को राजधानी बनाने हेतु उस पर कब्जा क्यों नहीं करते ? आज कश्मीर के पण्डित हमारे पास आ रहे हैं। वहां के ५० मन्दिरों को तोड़ा गया है। एक समय था, जब कश्मीर के पण्डित गुरु तेगबहादुर के पास रक्षा के लिये आये थे। धर्म बलिदान मांगता है। इतिहास में अनोखी मिसाल है कि गुरु गोविन्दराय ने पिता से कहा था कि आपसे बढ़कर और बलिदान देने वाला कौन होगा ? पुत्र पिता को मार्ग-दर्शन कर रहा है।

आज भगवान् योगिराज कृष्ण का जन्म दिन है। उन्होंने मोह को प्राप्त हुए अर्जुन को कार्यक्षेत्र में लाकर खड़ा कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि लडाई में भी गीता जैसी ज्ञान की पुस्तक मिली।

लेकिन एक वेद मन्त्र से हजारों गीताएं पैदा हो सकती हैं पर पूरी गीता से एक वेद मन्त्र पैदा नहीं किया जा सकता।

अन्त में स्वामी जी ने सभी आर्य भाई-बहनों को धन्यवाद दिया और मिलकर काम करने का अनुरोध किया।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कृष्ण के राष्ट्रवाद की चर्चा की तथा श्री मनमोहन तिवारी जी ने आर्यों को अपने कर्तव्य का बोध कराया और आने वाले [illegible] को सफल बनाने की अपील की।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ३१] भाद्रपद शु० ११ स० २०४३ रविवार १४ सितम्बर १९८६

विदेशी धन हमारी अखंडता का दुश्मन नम्बर १

सरकार विदेशी धन के बारे में सारे तथ्य देश के सामने रखे

२० अरब रु० का विदेशी धन प्रतिवर्ष भारत में आ रहा है

भारत की अखंडता को नष्ट करने की असल जड़ विदेशी धन है। हर वर्ष हमारे देश में करोड़ों और अरबों रुपयों की गिनती मे लुकछिप कर या गलत तरीको से विदेशी धन आता है। वैसे तो हमारे देश को विदेशी मुद्रा की सख्त जरूरत है। अगर प्रत्यक्ष एवं ठीक ढग से यही करोड़ो रुपया हमारे देश में आये और विकास कार्यों में लगाया जाये तो हमारी अर्थव्यवस्था मे सुधार हो सकता है। लेकिन यह विदेशी धन तो चोर-बाजारी, भ्रष्टाचार और धर्मपरिवर्तन आदि के उलटे कामो के लिये भेजा जाता है।

भारत की आखें स्वतन्त्रता के पश्चात् अब (पूरे ४० वर्ष बाद) खुली हैं। अब भारत सरकार ने ३६ संगठनों पर विदेशों से धन लेने पर प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा की है क्योंकि उसे इस बात के सबून मिले हैं कि वे उसका उपयोग घोषित उद्देश्यो के स्थान पर देश मे अशाति, सामाजिक असतोष व साम्प्रदायिक शिक्षण के लिये कर रहे हैं। इन सगठनो मे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति, अमृतसर, जमायते इस्लामी हिन्द, नई दिल्ली, आल इंडिया मजलिसे तामीरे मिल्लत, हैदराबाद, सरस्वती विद्यामदिर, बगलोर व अखिल भारत नेपाली भाषा समिति सम्मिलित हैं।

सरकार ने इससे पूर्व अप्रैल मे १४३ सगठनो को मिलने वाले २०० करोड वार्षिक से ऊपर विदेशी धन की जाच की घोषणा की, क्योंकि सरकार ने उन्हें राजनैतिक प्रकार का पाया। इन सगठनो मे उक्त सगठनो के अलावा चण्डीगढ़ का दल खालसा, श्रीनगर की जमायते इस्लामी, भारत-चीन मैत्री संघ, भारत-रूस मैत्री सघ, आनन्द मार्ग, पीपुल्स यूनियन फार सिविल लिबर्टीज व पीपुल्स यूनियन फार डैमोक्रैटिक राइट्स भी थे। १५ ईसाई सस्थाओ का भी विदेशी धन पाने के लिये रजिस्ट्रेशन रद्द किया गया।

यह सर्वविदित है कि पजाब के खालिस्तान, गोरखालैंड के नवोदित आंदोलन, अयोध्या की बाबरी मस्जिद, अहमदाबाद के दगो व देश मे धर्म-परिवर्तन के पीछे विदेशी धन की अहम भूमिका है। अत. सरकार के इन कदमो की जरूरत से कोई इनकार नही कर सकता, पर ये देर से आये हैं और अभी भी आधे-अधूरे रहे हैं। जैसे सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के कुछ विदेशी फडो पर प्रतिबन्ध लगाया है तो कुछ को छूट भी जारी रखी है। फिर मिजोरम मे वह ललर्देगा को वापिस सत्ता मे लाई है जिसे अतीत में स्पष्टतः इंग्लैंड के चर्चो व पाक-चीन से धन मिलता रहा है और अभी भी इंग्लैंड के चर्चों से जिनके सम्बन्ध हैं व लदन मे जिनका अपना मकान भी है।

इन कदमों का अधूरापन इससे प्रकट है कि व्यापारिक सौदों की मार्फत जो संगठन विदेशी धन पा रहे हैं, उन्हे हाथ नही लगाया गया है। फिर अभी रामस्वरूप व कुमारनारायण के कांडों को भी जनता के सामने नही रखा गया, जिन्होंने विदेशी सौदों के माध्यम से सारे देश को जासूसी के जाल में जकड़ रखा था। उनके सारे स्वरूप व दायरे पूर्ण ब्यौरे के साथ जनता के सामने रखे जाने चाहिए थे।

सरकार का यह दायित्व है कि विदेशी फड के बारे मे सम्पूर्ण तथ्य देश के सामने रखे। उसने अब जिन सगठनो पर प्रतिबन्ध लगाये हैं उनके बारे मे भी कोई तथ्य सामने नही रखे हैं। उसे ये तथ्य स्पष्ट बताने चाहिए थे कि ये सगठन ये विदेशी फड किन स्रोतों व देशों से पा रहे थे और इनका किस तरह उपयोग कर रहे थे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति को कौन-से विदेशी फंड अनुमति योग्य समझे गये और कौन से नही, और क्यो नहीं—यह भी पूरी तरह भविष्य की सुरक्षा की दृष्टि से सामने आना जरूरी है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

स्वामी आनन्दबोध की सुरक्षा के लिए खतरे का संकेत

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को एक पत्र मिला है, जिसमें संकेत किया गया है कि स्वामी जी की सुरक्षा के लिए दिल्लीवासी कुछ युवकों से खतरा है। पत्र में इन युवकों के नाम और निवासस्थान का भी उल्लेख है। दो सितम्बर को यह पत्र मिला और उसी दिन स्वामी जी के संन्यासपूर्व निवासस्थान कृष्णनगर पर एक टेलीफोन आया, जिसमें धमकी दी गई कि "रामगोपाल जी चाहे अपने कितने भी नाम बदल लें, उन्हें छोड़ा नहीं जायेगा।"

उक्त पत्र की फोटोस्टैट प्रतिलिपि दिल्ली पुलिस, गृहमन्त्री और प्रधानमन्त्री को भेज दी गई है।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक — सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेशी धन

(पृष्ठ १ का शेष)

यह सर्वविदित है कि अभी भी विदेशी व्यापार के अलावा डिप्लोमैटिक बैग से आने वाले विदेशी फंड अबाध रूप से आ रहे हैं। चूंकि डिप्लोमैटिक बैग की जांच नहीं की जा सकती, अतः उनका पूरी तरह से दुरुपयोग हो रहा है। एक तरीका यह है कि विदेशी सरकार भारत में पत्रिकायें व पुस्तकें निकालती है। उनकी छपाई पर खर्चा बहुत करती है हालांकि वे बहुत कम मात्रा में निकलते हैं, पर उससे सैंकड़ो गुना धन उन पर खर्च बताकर उसे कुछ दलों व संस्थाओ के निहित लक्ष्यों के लिये दे दिया जाता है। रूस ने एक अंग्रेजी दैनिक को ५ करोड़ की बुकलेट छापने के आर्डर दिये जो कभी नही छपी पर वह धन मिल गया। इन माध्यमों के अलावा स्विस बंकों में प्रमुख नेताओ व व्यक्तियों के गुप्त खाते चल रहे हैं, जिनका राजनैतिक उपयोग हो रहा है, पर उन पर कोई रोक नही है।

इस तरह विदेशी धन बदस्तूर आ रहा है। चूकि वह चैक से नहीं आता, अतः किसी न किसी माध्यम से जारी है। अमरीकी कांग्रेस ने कुछ समय पूर्व तृतीय विश्व में जनतांत्रिक शक्तियों की मदद के लिए ६८० लाख डालर वार्षिक मंजूर किये थे। वह धन भारत व अन्य तृतीय विश्व देशों में आ रहा होगा, यह असंदिग्ध है पर उसके बारे मे हम कुछ नहीं जानते। इसी तरह सभी फंड हैं। फिर अरब फंड है। पाक फंड है। अमरीका, कनाडा आदि के निजी संगठनों के नाम से आने वाले फंड हैं। चर्चों के फंड हैं।

भारत में आने वाला विदेशी धन किस तरह बढ़ रहा है यह इससे प्रकट है कि १९६८ में २४ करोड़ विदेशी फंड आया तो १९७२ मे ३१५ करोड़ आया। १९७७ में यह एकदम बढ़कर १८० करोड़ हो गया। ८४ देशो से प्राप्त इस धन में प० जर्मनी का ४४ करोड़, अमरीका का २८ करोड़, इटली का १५ करोड़ व ब्रिटेन का १० करोड़ से ऊपर धन आया। १९७८ में १७७ करोड़ विदेशी धन आया जिसमें सबसे अधिक ५० करोड़ प० जर्मनी से था। इसके बाद मुस्लिम देशों का भाग सबसे बड़ा था। १९८० में २०६ करोड़ विदेशी फंड आया। १९८१ में वैद रूप से ३०० करोड़ विदेशी फंड आया जिसमें २० प्रतिशत मुस्लिम देशों से था। इसमें २६ करोड़ धर्म परिवर्तन के लिए ३ खाड़ी देशों से आया था। १९८२ में २३३ करोड़ वैध विदेशी फंड आया। १९८३ व १९८४ के आंकड़े अभी तैयार किये जा रहे हैं। समझा जाता है कि ४०० करोड़ विदेशी धन वैध रूप से आ रहा है तो इससे चौगुना अवैध रूप से आ रहा है।

फिर निजी विदेशी पूंजी रिजर्व बैंक के अनुसार १९४२ व १९७८ के मध्य ८ गुना हो गई है अर्थात् २१ बिलियन डालर हो गई है। १९७८-७९ में विदेशी कार्यालियों का भारत में मुनाफा रिजर्व बैंक के अनुसार २५ बिलियन डालर था।

१९८७ में चुनाव की शिकायतों पर तत्कालीन गृहमन्त्री यशवन्तराव ने इंटेलीजेंस ब्यूरो से राजनीति में विदेशी फंड की जांच कराई थी पर यह इतनी सनसनीखेज थी कि इसे संसद् के सामने रखने से इनकार कर दिया गया। इसी दौरान न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा था कि भारत में हर दल को विदेशों से चुनाव फंड मिला था। मास्को के लिटरेरी गजट ने १९६७ में स्वतन्त्र पार्टी को विदेशी फंड की विस्तृत रिपोर्ट छापी थी। अमरीकी राजदूत मोयनिहान ने 'ए डेंजरस प्लेस' पुस्तक में बताया था कि अमरीकी दूतावास ने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में श्रीमती इन्दिरा गांधी को केरल की कम्युनिस्ट सरकार को गिराने के लिए १० करोड़ रुपया धन दिया था। तिमोती ग्रीन ने 'द वर्ल्ड ग्राफ डायमंड' में लिखा है कि १९८० के चुनावों में रूस से इनका को हीरों के माध्यम से धन दिया।

भारत में आजादी के बाद से ही पी० एल० ४८० के अन्तर्गत अमरीकी खाद्य सहायता के रूप में विदेशी फंड का नियन्त्रण रहा। वह बन्द हुई तो यह अन्य माध्यमों से आया। विदेशी धन पर रोक लगाने के लिए फौरन कन्ट्रीब्यूशन (रेग्यूलेशन) एक्ट मे १९८४ में संशोधन किया गया था जिसमे सभी राजनैतिक दलों पर विदेशों से सीधे या संगठनों के माध्यम से धन लेना प्रतिबन्धित कर दिया गया व नियम बनाया गया कि सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक या धार्मिक गतिविधियों वाली संस्थाओं को विदेशी फंड के लिए गृह मन्त्रालय से अपने को रजिस्टर्ड कराना होगा। यह भी पाबन्दी लगाई गई कि यह धन बैंक के जरिये ही प्राप्त हो सकेगा। केवल राजनैतिक दलों और संस्थाओं पर ही नहीं, जजों पर भी विदेशों से धन लेने पर पाबन्दी लगाई गई। सरकार को इस तरह की रिपोर्ट प्राप्त हुई थी कि भारतीय न्यायाधीश भी विदेशी अदालत से प्रभावित होने लगे हैं।

अब भारत सरकार ने विदेशी धन प्राप्त करने वाले सभी प्रमुख संगठनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है लेकिन इस प्रतिबन्ध के बावजूद अभी तक छिपे रूप से राजनैतिक दलों, स्वयंसेवी संगठनों, अनाथ बच्चों, ग्राम शिक्षा, मजदूर कल्याण आदि के नाम पर विदेशी धन आ रहा है। जब तक भारत सरकार देश में लुक-छिप कर आने वाले इस अप्रत्यक्ष विदेशी धन को आने से नहीं रोकेगी, तब तक इस नये प्रतिबन्ध का कोई फायदा नहीं होगा। —अश्विनी

(पंजाब केसरी से साभार)

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर नम्बर तीन एवं डी० डी० ए० फ्लैट्स मुनीरका, नई दिल्ली, प्रधान-श्री सुदर्शन सहगल, मन्त्री-श्री वेदप्रकाश कपिल और कोषाध्यक्ष-श्री कुलभूषण बत्रा।

—आर्यसमाज शक्तिनगर, अमृतसर—प्रधान-श्री दर्शनकुमार मेहरा, मन्त्री-मास्टर रामरक्खामल और कोषाध्यक्ष-श्री धर्मवीर।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, इटावा—श्री रूपबसन्त गोयल, मन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री रामबाबू आर्य।

—आर्यसमाज दुलद्दी गेट, नाभा—प्रधान-श्री साधुराम, मन्त्री-डा० रघुवरलाल और कोषाध्यक्ष-श्री कृष्णकुमार।

—आर्यसमाज हावड़ा—प्रधान-श्री पुष्करलाल आर्य, मन्त्री-श्री आनन्ददेव आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री राधेश्याम सराफ।

—आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली—प्रधान-श्री राजाराम शास्त्री, मन्त्री-श्री बाबूराम आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री नरेन्द्रनाथ गुप्त।

—आर्यसमाज कोटद्वार (गढ़वाल)—प्रधान-श्री कृष्णचन्द्र, उप-प्रधान-श्री रामशरणदास, मन्त्री-श्री आनन्दप्रकाश और कोषाध्यक्ष-श्री विष्णुकुमार।

अंग्रेजी की दासता से मुक्त हों

-डा० कृष्णलाल, आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

हम थोड़ा रुक कर यह सोचें कि ३९ वर्ष की लम्बी स्वतन्त्रता यात्रा के पश्चात् हम कहां पहुंचे हैं ? जिस बिन्दु से हमें यह यात्रा करने का अवसर मिला, वहां तक हमें पहुंचाने वाले योद्धाओं ने उससे पहले के कठिन बाधाओं वाले मार्ग में संघर्ष करते हुए हमारे सुखद मार्ग के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। क्या हम उन्हें भूल गये हैं ? अथवा औपचारिकता-वश उन्हें कभी-कभी स्मरण कर लेते हैं ? क्या हमें वे आदर्श स्मरण हैं जिनके लिये उन्होंने त्याग किया।

क्या हम संसार में भारत की प्रतिष्ठा बना पाये हैं ? हमारे ऋषियों ने जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श रखा, क्या हम उसे पहले अपने जीवन में, अपने समाज में उतार सके हैं या अन्दर से खोखले हम संसार को पाठ पढ़ाने चले हैं ? क्या कारण है कि इतना समय बीतने पर भी हमारे दुर्बल वर्गों को अभी तक आरक्षण की बैसाखी का आश्रय लेना पड़ रहा है।

क्या न्यायालयों मे सबको समान न्याय मिल पाता है ? क्या वहां व्यक्ति अपनी भाषा के प्रयोग के अभाव में सारी कार्रवाई समझ पाता है ? क्या उसे पता रहता है कि उसका वकील क्या बोल रहा है और न्यायाधीश क्या निर्णय दे रहा है ? क्या लोकतन्त्रीय स्वतन्त्र देश मे यह स्थिति सह्य है ? क्या यह सह्य है कि चाहे बच्चा कितना ही मेधावी क्यो न हो, अंग्रेजी (दासता की भाषा) का रट्टा लगाये बिना वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर ही नहीं सकता ? कुछ सम्पन्न वर्गों के गिने-चुने पब्लिक स्कूलों में विदेशी विचारधारा में पले-पढ़े, अपने देश और भाषा से घृणा करने वाले लोगों का आज भी शासन-तन्त्र और अर्थतन्त्र में दबदबा है। क्यों ऐसा लगता है कि मैकाले मर कर भी जीवित है ?

बहुभाषा-भाषी चीन और रूस में यदि एक राष्ट्र-भाषा हो सकती है तो भारत में क्यों नहीं हो सकती ? है कोई ऐसा स्वतन्त्र राष्ट्र, जहां अपनी ही भाषा का अपमान किया जाता हो ?

संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा और उसके अद्वितीय साहित्य पर भारत को गर्व होना चाहिए, परन्तु नई शिक्षा-नीति में उसकी आवश्यकता ही नहीं समझी जा रही ? यह बात बहुत स्पष्ट है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। उसके उदात्त साहित्य पर भारत को गर्व है। परन्तु उसकी उपेक्षा क्यों हो रही है ? आगे-आगे अच्छे सुयोग्य पुरोहितों तथा उपदेशकों का अभाव होता चला जा रहा है। क्या स्वत्व को छोड़कर पराई बैसाखियों पर चलने से हम उन्नति के शिखर तक पहुंचेंगे ? एकमात्र संस्कृत हमारी सभी भाषाओं को अपरिमित आवश्यक शब्दावली देकर सब में एकता स्थापित करती है। उसे ही निष्कासित करके दासता की विदेशी भाषा का आकाशवाणी--दूरदर्शन द्वारा दिन प्रतिदिन प्रचार बढ़ाया जा रहा है। हमारे नेता देश-विदेश में अपने देश के लोगो तथा [illegible] अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं—यह दिखाने के लिए कि हम [illegible] रूप से दास हैं। क्यों [illegible] लोकभाषा और लोककल्याण की बलवती भावना हो। भाषा हृदय की वस्तु है और हृदय से अपनी ही भाषा प्रस्फुटित होती है, जिसे पदे-पदे कुचला जाता है। अपनी भाषा का अपमान मां के अपमान जैसा होता है। वस्तुतः हम इतने गिर गये हैं कि हमें अपनी मां भी घृणा की वस्तु लगती है।

इस स्थिति को समाप्त करना होगा। मैं अपने युवकों का आह्वान करता हूं कि वे अन्य क्षुद्र सुविधाओं की मांग करना छोड़कर राष्ट्रीय प्रश्न के लिए, सच्चे लोकतन्त्र के लिए क्रान्ति का आह्वान करें। अपनी भाषा में कार्य करने का संकल्प लें और उच्च शिक्षा तथा परीक्षाओं में सभी विषयों में—बैंकों में, रेलों में कृषि में, इंजीनियरी में, चिकित्सा में, वाणिज्य में, व्यापार-प्रबन्ध में, उद्योगों में—सर्वत्र हिन्दी माध्यम के लिए आन्दोलन करें, हिन्दी में कार्य करने को बाध्य करें। अंग्रेजी की अनिवार्यता इन उच्च परीक्षाओं से समाप्त होनी ही चाहिये। हिन्दी में साहित्य की कमी का बहाना थोथा है। वैसे तो प्रचुर मात्रा में साहित्य है ही। फिर जिस भाषा के पीछे संस्कृत जैसी सशक्त भाषा हो, उसमें रातों-रात साहित्य रचा जा सकता है। मानसिक दासता से मुक्ति अत्यावश्यक है।

हिन्दी वाले हिन्दी से दूर क्यों ?

—रघुनन्दनप्रसाद शर्मा

—प्रधान मन्त्री के संवाददाता सम्मेलन में हिन्दी समाचार समिति के प्रतिनिधि द्वारा अंग्रेजी में प्रश्न पूछने पर श्री राजीव गांधी का यह कहना कि आपको तो प्रश्न हिन्दी में पूछना चाहिए······

—राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा इससे पूर्व कई अवसरों पर केन्द्र के ऐसे मन्त्रियों को, जिन्हें हिन्दी अच्छी तरह आती है, यह कहकर टोकना कि जब आप जैसे हिन्दी के माहिर ही अंग्रेजी बोलेंगे तो और कौन···?

—पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपस्थित गुरुओं के माध्यम से देश के सभी गुरुओं से हिन्दी में पुस्तक लेखन और शिक्षण करने का राष्ट्रपति का अनुरोध······

—नित्यप्रति अनेक कार्यक्रमों में हिन्दी वालों द्वारा ही अंग्रेजी का पोषण करना क्या संकेत दे रहे हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि उनमे हीनता की भावना घर करती जा रही हो। यदि ऐसा है तो विचारणीय है।

—ठीक है कि हिन्दी ने आज की स्थिति तक आने के लिये लम्बी यात्रा तय की है और अभी न जाने कितनी यात्रा और करनी पड़ेगी। यात्रा का अन्त दूर तक दिखाई नही देता। अनन्त यात्रा में थक जाना, निराश हो जाना या मन में हीनता की भावना आ जाना अस्वाभाविक नहीं।

- मझधार मे ही थक जाने से यात्रा पूर्ण कैसे होगी ? आशा-निराशा, उत्थान-पतन, आरोह-अवरोह तो जीवन के अभिन्न अंग हैं। इनसे घबराना क्या ?

—हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश जब किसी के हाथ में ही नहीं है तो निराशा या हीनता क्यो ?

—हमारे हाथ में है प्रयास करना, दृढ़ता से करते जाइए, करते जाइए। दृढ़ता के आगे संसार झुकता है।

—हमे दृढ़ता से किन्तु नम्रता से अपनी बात कहते रहना है। आखिर पतझड़ के बाद वसन्त आता ही है।

आर्यसमाज और हिन्दी

–डा० धनपति पाण्डेय–

उन्नीसवीं सदी में भारत में प्रादुर्भूत होने वाले धार्मिक आन्दोलनों को केवल धर्म, आत्मा और परमात्मा के क्षेत्रो तक सीमित समझना एक भ्रान्ति है। इन आन्दोलनों ने न केवल हमारे देश का सामाजिक परिष्कार किया अपितु उसमें राजनैतिक पुनर्जागरण करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्ही आन्दोलनों में से एक आर्यसमाज आन्दोलन भी था जिसने उत्कट राष्ट्रवाद, स्वराज्य और स्वदेशी का सिद्धांत देकर भारतीयों में देश-भक्ति की भावना की आग प्रज्वलित की। आर्यसमाज के संस्थापक क्रान्ति-दूत स्वामी दयानन्द सरस्वती यह जानते थे कि "भारत एक राष्ट्र है जिसकी निजी राष्ट्रीय आत्मा है और निजी राष्ट्रीय चेतना है। इससे सतत जीवन-प्रवाह की स्पन्दनशीलता को स्वीकार किया जाना चाहिए। इससे राष्ट्र की जीवन-शक्ति अक्षुण्ण है।" इसलिए इस स्पन्दनशीलता और जीवन-शक्ति को संजीवनी देने के लिए उन्होंने जीवन्त राष्ट्रीय विचारों की उद्घोषणा की। इन्हीं में एक विचार भारत की आर्य भाषा हिन्दी से सम्बद्ध है।

दयानन्द सरस्वती देश के राजनैतिक पुनर्जागरण में हिन्दी को एक महत्त्वपूर्ण कड़ी मानते थे। वे प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था और इसे देश की एकता का एक अन्यतम साधन माना था। उनका कहना था कि हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या भारत में अधिक है और इस भाषा के शब्दों में वैज्ञानिकता है, इसलिए इसे अन्य भाषाओ से अधिक महत्ता मिलनी चाहिए। दयानन्द सरस्वती मूलतः संस्कृत भाषा के उद्भट एवं प्रकाण्ड विद्वान् थे और मदाम ब्लावत्सकी के शब्दों में 'शंकराचार्य के बाद दयानन्द ही इस भाषा के निष्णात विद्वान् सिद्ध हुए।' फिर भी उन्होंने हिन्दी मे ही लिखने एव भाषण देने का निर्णय किया। ब्राह्म समाज के एक प्रबल स्तम्भ केशवचन्द्र सेन से मिलने के बाद दयानन्द ने हिन्दी के प्रति और भी अगाध प्रेम दिखलाना प्रारम्भ किया। १८७२ ई० में उन्होने हिन्दी को ग्रहण कर लिया। अब उन्होने इसी भाषा में पुस्तको का प्रणयन करना और जनसभाओं को सम्बोधित करना प्रारम्भ किया। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की और वेद पर हिन्दी मे ही भाष्य लिखना प्रारम्भ किया। भारत के बौद्धिक इतिहास में स्वामी जी ने हिन्दी को अखिलत्व के कवच मे कसकर एक निर्माण-मोड़ का सृजन किया। हिन्दी के प्रचार से दोहरे लाभ होने वाले थे—गैर-ब्राह्मण वर्ग के लोग ज्ञान-विज्ञान के भण्डार वेदों का अध्ययन कर सकते थे और दयानन्द के विचारों से जन मानस मथा जा सकता था। स्वामी जी, जो मूलतः संस्कृत भाषा की उपज थे, पश्चिमी भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे। फिर भी वे अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीयों को अनुप्राणित करने में समर्थ हुए। हिन्दी के माध्यम से वे आम लोगों के निकट आ गये थे। अब वे जन-नेता थे।

हिन्दी के प्रति उनके उद्गार एव कार्य हमारे लिए धरोहर हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मर्यादित करने के लिए उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि "विदेशी भाषा में मौलिक चिन्तन करना कठिन तो है ही, वह देश की गुलामी का भी प्रतीक होता है।" स्मरण रहे कि स्वामी जी ने यह विचार उन दिनों व्यक्त किया था, जिन दिनों ब्रितानिया का भाग्य सूर्य चमक रहा था। एक तरफ स्वामी जी की निष्कपट देशभक्ति और दूसरी तरफ कभी न टूटने वाली साहसिकता और निर्भीकता द्रष्टव्य है जो भारत की सन्तानों में लिए अनुकरणीय है। स्वाभी जी ने देश की शमित छात्रों से अपील की कि वे विदेशी भाषा से अधिक लगाव न रखकर अपनी आर्य भाषा को धनी बन यें। वे चाहते थे कि भारत के छात्र बेकन तथा मिल से कम कपिल तथा पतञ्जलि बारे में न जानें। इन विचारों ने भारत में हिन्दी आन्दोलन का सूत्रपात किया और भारत के राजनैतिक आन्दोलन की अग्नि में एक चम्मच घी और डाल दिया।

दयानन्द के निधनोपरान्त उनके अनुयायियों तथा आर्यसमाजियों ने हिन्दी आन्दोलन को आगे ले चलने का यत्न किया और ऐसा करके उन्होने राष्ट्रवाद की धारा को और भी प्रखरता प्रदान की। २० अगस्त १९०६ को आर्यसमाज के एक अनुयायी सुन्दरलाल ने कलकत्ता में आयोजित एक स्वदेशी सभा में हिन्दी अंगीकार करने के कारण ऋषि की अतिशय प्रशंसा की और स्वदेशीय सभा में अंग्रेजी में भाषण देना पाप बतलाकर हिन्दी में भाषण दिया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने 'हिन्दू एलीमेंटरी एजुकेशन लीग' का संगठन किया और इस बात की घोषणा की कि छात्रों को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दी जायेगी। तब समाचारपत्रों ने वाद-विवाद खड़ा कर दिया। किन्तु लाला जी को इससे तनिक भी घबड़ाहट नहीं हुई, बल्कि वे हिन्दी के और भी कट्टर समर्थक बन गये। उन्होंने सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में काम करने का परामर्श दिया ताकि सही रूप में महर्षि का स्वप्न पूरा किया जा सके। 'आब्जर्वर' ने लाला जी का समर्थन किया और अगस्त के अंक में छापा कि हिन्दी के जरिये वे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता लाना सोच रहे थे और इसीलिए वे व्यापक रूप से हिन्दी का प्रचार करना चाहते थे। लाजपतराय के इन विचारों से लाला दुर्गाप्रसाद अत्यन्त असन्तुष्ट हुए और उन्होंने पत्र लिखकर 'ट्रिब्यून' के माध्यम से उनकी भर्त्सना की। उन्होंने हिन्दी को विदेशी भाषा तथा पजाबी को मातृभाषा कहा! किन्तु लाजपतराय प्रान्तीयता के सीमित दायरे में बंधना नहीं चाहते थे। आर्यसमाज के लिए समर्पित उनका व्यक्तित्व विशाल था और उनकी दृष्टि में भारत माता थी, न कि उसकी बेटी पंजाब की भूमि। उन्होंने 'ट्रिब्यून' में ही 'द आर्यसमाज एण्ड हिन्दी 'लेंग्वेज' शीर्षक निबन्ध लिखकर हिन्दी का जोरदार समर्थन किया और इस बात पर बल दिया कि बहुसंख्यकों की भाषा हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने के योग्य है। उन्होंने आर्य बन्धुओं से अपील की कि वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से लग जायें। आर्यसमाज के विविध प्रान्तों के कार्यकर्त्ताओं ने लाजपतराय की अपील पर तदनुसार कार्य करना प्रारम्भ किया। स्वामी माधवानन्द ने मद्रास महानगर में एक हिन्दू विद्यालय खोलकर हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने का काम जारी किया। इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले 'अभ्युदय' ने हिन्दू वकीलों से आग्रह किया कि वे अदालतों में हिन्दी में ही काम करें। आगरा से निकलने वाले 'आर्यमित्र' ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया।

स्पष्ट है कि आजादी से बहुत पहले ही आर्यसमाज ने हिन्दी आन्दोलन चलाकर इस भाषा को राष्ट्र की भाषा की गरिमा प्रदान की थी। स्वामी दयानन्द द्वारा जनित और आर्यसमाज द्वारा संचालित हिन्दी आन्दोलन ने आजादी के बाद भारत सरकार को भी प्रभावित किया। किन्तु दुःख है कि आजादी के तकरीबन उनतालीस वर्ष बाद भी हिन्दीको वह मर्यादा नही मिल पाई है, जो मिलनी चाहिए थी। अंग्रेजी शासन काल मे, जब अंग्रेजी का बोलबाला था, दयानन्द ने प्रूफ संशोधन के सिलसिले में आये लिफाफे को वापस लौटा दिया था, क्योंकि उसपर अंग्रेजी में पता लिखा था। क्या हमारी सरकार अपने स्वतन्त्र भारत में हिन्दी को उचित स्थान देने के लिए कोई कदम उठायेगी? क्या आशा की जाये कि आधुनिक हिन्दी के प्रथम निर्माता स्वामी दयानन्द का स्वप्न, जो परतन्त्र भारत में पूरा नही हुआ था, स्वतन्त्र भारत में पूरा होगा?

पी० ब०

आई.आई.टी. में प्रवेश के लिए अंग्रेजीदां होना जरूरी क्यों ?

—श्री श्यामरुद्र पाठक—

आई. आई. टी. दिल्ली के छात्रों की ओर से कई बार अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है कि पांचों आई. आई. टी. और आई. टी. बी.एच.यू. के लिए जो संयुक्त प्रवेश परीक्षा होती है उसमें अंग्रेजी माध्यम की अनिवार्यता को समाप्त किया जाये एवं वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिन्दी तो हो ही, अगर सम्भव हो तो अन्य भारतीय भाषाओं को लाया जाये। परन्तु आई. आई. टी. के अधिकारी इस मुद्दे को विचाराधीन कहकर वर्षों से टालते रहे हैं।

आई. आई. टी. दिल्ली की सर्वोच्च छात्र प्रतिनिधि संस्था छात्र कार्य परिषद की ओर से औपचारिक रूप से चार अप्रैल, १९८५ की बैठक में छात्र प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया था कि आई. आई. टी. की प्रवेश परीक्षा से अंग्रेजी माध्यम की अनिवार्यता समाप्त हो। छात्र कार्य परिषद की इस बैठक में डायरेक्टर एवं संस्थान के महत्त्वपूर्ण अधिकारी विद्यमान थे। बाद में इस प्रस्ताव की जानकारी तत्कालीन शिक्षा-मन्त्री के साथ-साथ आई. आई. टी. के अन्य निदेशकों के पास भी भेजी गई। फिर आई. आई. टी. के पांचों छात्र प्रतिनिधि संस्थाओं के नेताओं ने भी सम्मिलित रूप में इस आशय के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किये, जिसकी जानकारी अधिकारियों तक भेजी गई। उसके बाद आई. आई. टी. दिल्ली के ५७० छात्र-छात्राओं ने इस प्रस्ताव के समर्थन में अपने हस्ताक्षर सम्बन्धित अधिकारियों के पास शीघ्र कार्यान्वयन की मांग करते हुए भेजे।

एन. सी. ई. आर. टी. के तृतीय अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार हायर सैकण्डरी स्तर पर अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की संख्या ७.४६ प्रतिशत है। यानी भारतीय भाषाओं के माध्यम के विद्यालयों की संख्या ९२.५४ प्रतिशत है। केवल हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की संख्या ५६.५५ प्रतिशत है। इस सर्वेक्षण में किन्हीं कारणों से बिहार एवं गुजरात के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं। इन राज्यों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की संख्या ७.४६ प्रतिशत से भी कम होगी और बिहार के आंकड़े सम्मिलित करने पर केवल हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की संख्या ५६.५५ प्रतिशत से ज्यादा हो जाएगी।

दूसरी ओर आई.आई.टी. दिल्ली में १९८५ में प्रवेश पाए विद्यार्थियों के औपचारिक सर्वेक्षण के आधार पर पाया गया है कि ९३ प्रतिशत छात्र अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से आये हैं।

उपर्युक्त दो विश्वसनीय आंकड़ों से स्पष्ट है कि आई. आई. टी. की प्रवेश परीक्षा का तरीका भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ने वाले ९२ प्रतिशत छात्रों की प्रतिभा का ठीक मूल्यांकन करने में सक्षम नहीं।

आई० आई० टी० की प्रवेश परीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की वैज्ञानिक प्रतिभा की जांच होनी चाहिए। परन्तु इसमें अंग्रेजी को आधार बनाकर छात्रों की वैज्ञानिक मेधा को तिरस्कृत किया जा रहा है। जिस स्तर पर पढ़ाई का माध्यम हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएं हैं उस स्तर की प्रतियोगिता परीक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी रखना उस स्थिति की याद दिलाता है, जब भारतीय प्रशासनिक सेवा में भर्ती के लिए होने वाली परीक्षा भारत में न होकर इंग्लैंड में आयोजित होती थी।

अनेक लोग यह तर्क देते हैं कि आई० आई० टी० के अन्दर अध्ययन-अध्यापन का माध्यम अंग्रेजी है, अतः प्रवेश परीक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी होना चाहिए। पर ऐसा तर्क देना चोरी करते हुए सीनाजोरी करने जैसा है। एक ओर तो यह मान लेना कि आई० आई० टी० में भारतीय भाषाओं का कोई स्थान नहीं, एक अनुचित बात है। उस पर यह कह देना कि भारतीय भाषा के माध्यम से स्कूलों में पढ़ने वालों को आई० आई० टी० में आने ही नहीं देंगे, और भी अनुचित बात है। वैसे ध्यान देने की बात यह है कि जब भारत या किसी अन्य देश से कोई व्यक्ति रूस, जर्मनी, फ्रांस, नार्वे जाकर पढ़ना चाहता है तो उसे थोड़े समय में वहां की भाषा सिखा दी जाती है। फिर उसे वहां की भाषा में पढ़ाया जाता है। फिर

(देश के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित उच्च तकनीकी शिक्षण संस्थानों में से आई. आई. टी. दिल्ली भी एक है। इस लेख के लेखक श्री श्यामरुद्र पाठक इसी संस्थान के छात्र हैं। उन्होंने एम. टैक. की परीक्षा में पहली बार अपना शोध निबन्ध (प्रोजैक्ट रिपोर्ट) हिन्दी में लिखकर एक आदर्श उपस्थित किया था। हिन्दी में अपने शोध प्रबन्ध को स्वीकार कराये जाने के लिए और उससे सम्बन्धित मौखिक परीक्षा भी हिन्दी में दिये जाने की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ा था। यहां तक कि देश के लगभग १०० सांसदों, बुद्धिजीवियों और समाचारपत्रों ने उनके पक्ष में संयुक्त आवाज उठाई थी। इनमें आई. आई. टी. के ३१० छात्र पदाधिकारी भी थे, जिन्होंने अपने संयुक्त हस्ताक्षरों से एक ज्ञापन निदेशक मण्डल को दिया था। उसमें सफलता प्राप्त करके पाठक जी ने आई. आई. टी. की प्रवेश परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के प्रयोग की अनुमति दिये जाने के लिए आन्दोलन छेड़ दिया है। आशा है इसमें भी उन्हें सब राष्ट्र प्रेमियों का सक्रिय सहयोग प्राप्त होगा—सम्पादक)

बारह-बारह, चौदह-चौदह करोड़ वार्षिक बजट वाले आई० आई० टी० जैसे संस्थानों में भाषा को बहाना बनाकर उचित प्रतिभा को उचित अवसर देने में इतनी घेराबन्दी क्यों ?

केवल पांचों आई० आई० टी० पर ही सरकार का वार्षिक खर्चा आठ करोड़ रु. के लगभग है। अंग्रेजी की कृपा से ही देश की जनता के इतने अधिक पैसे का देश का उच्च वर्ग बड़े मजे से उपभोग कर रहा है। हमारी सरकार दक्षिण अफ्रीका के जाति-भेद का विरोध करते हुए ऊबती नहीं। परन्तु अपने ही देश में अंग्रेजी की ओट में यह भेदभावपूर्ण रवैया क्यों ?

जो लोग इस स्थिति में परिवर्तन लाना चाहते हैं उन सबको यह सोचना चाहिए कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ रहे विद्यार्थियों पर हो रहे इस अत्याचार को कैसे बन्द कराया जाए ?

सभी स्वाभिमानी देश अपनी-अपनी भाषा में अध्ययन-अध्यापन कर रहे हैं। आधुनिक विज्ञान के विकास में उन देशों का विशेष योगदान है, जिन्होंने अपनी-अपनी जनभाषा में विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन एवं शोध कार्य किया है। भारत में अगर कभी भी जनभाषा में विज्ञान को लाना है तो जनभाषा के माध्यम से स्कूलों में शिक्षा पाए विद्यार्थियों को विकास के अवसरों से वंचित क्यों किया जा रहा है ?

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित सिविल सेवा परीक्षा का माध्यम १९७९ से वैकल्पिक है। यह परीक्षा बी०ए०, बी० एससी० के छात्रों के लिए होती है। ध्यान देने की बात है कि आई० आई० टी० की प्रवेश परीक्षा में, जिसमें बारहवीं कक्षा के स्कूल के विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं, यह परिवर्तन और भी आवश्यक है।

एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा आयोजित होने वाली दसवीं, ग्यारहवीं एवं बारहवीं स्तर की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से हो रही है।

वैसे ही रुड़की इंजीनियरिंग कालेज की प्रवेश परीक्षा एवं मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज की प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम भी वैकल्पिक हैं।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि परीक्षा का माध्यम वैकल्पिक किया जाना कोई असम्भव कार्य नहीं। परन्तु अगर आई० आई० टी० को यह कार्य असंभव लग रहा है तो क्यों न आई० आई० टी० की प्रवेश परीक्षा को आयोजित कराने का कार्य संघ लोक सेवा आयोग, एन० सी० ई० आर० टी०, रुड़की इंजीनियरिंग कालेज और मोतीलाल नेहरू इंजीनियरिंग कालेज जैसी किसी संस्था को सौंप दिया जाए।

हिन्दी को बढ़ावा दें : छात्र नेताओं से अपील

— स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

लखनऊ के कालिवन ताल्लुकेदार कालिज के ८५-वर्षीय वृद्ध आचार्य हबीबुल्लाह ने अभी पिछले दिनों कालिज की प्रवेश परीक्षा में भाग लेने आये छात्रों से कहा कि "कालिज के परिसर में हिन्दी मे बातचीत न करें।" छात्रों ने उनके ऐसा कहने पर आपत्ति की तो हबीबुल्लाह मियां और भी भड़क उठे और उन्होंने हिन्दी के विरुद्ध विष-वमन करना प्रारम्भ कर दिया। विद्यार्थी लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रसंघ के नेताओं से मिले और उन्हें सारी स्थिति बताई। छात्रसंघ के नेता मियां हबीबुल्लाह से जाकर मिले तो वह ८५-वर्षीय बूढ़ा और भी अशिष्टता पर उतर आया। उसने कहा "इस कालिज के परिसर में कुत्तों और सूअरों की भाषा नही चलाई जायेगी।" इस पर छात्र मियां हबीबुल्लाह पर टूट पड़े और मारपीट के पश्चात् उन्होंने पत्रकार सम्मेलन में सरकार से मांग की कि "राष्ट्रभाषा का अपमान करने के अपराध में आचार्य हबीबुल्लाह को गिरफ्तार किया जाये।" छात्रसंघ ने यह घोषणा भी की कि "सभी छात्रसंघ ध्यान रखें कि शिक्षण संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों और निजी प्रतिष्ठानों में कहां-कहां हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी मे काम किया जाता है ?" छात्रसंघ ने इंगलिश स्कूलों में ताले डाले जाने की घोषणा भी की और कहा कि "जब तक हिन्दी माध्यम नहीं होगा, तब तक ताले नहीं खोले जायेंगे।"

लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रसंघ का राष्ट्रभाषा को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए उठाया गया यह पग और उपर्युक्त निर्णय अत्यन्त सराहनीय है। परन्तु उत्तर प्रदेश में ही स्थित पाकिस्तान के जन्मदाता अलीगढ़ विश्वविद्यालय की ओर भी छात्रसंघ को ध्यान देना चाहिए। इस विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ए० एच० बिलग्रामी ने "भारत में भाषा की समस्या" विषय पर एम. फिल. करने के इच्छुक शाहिद हुसैन को स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि "न तो प्रश्नपत्र ही हिन्दी मे तैयार किये जायेंगे और न शोध-प्रबन्ध ही हिन्दी मे प्रस्तुत करने की अनुमति दी जायेगी।"

ऐसी बात नही कि शाहिद हुसैन अंग्रेजी के शोध प्रबन्ध लिख नही सकते। उन्होने बी० ए० और एम० ए० अंग्रेजी माध्यम से ही किया है। मार्च ८५ में उन्होने अलीगढ़ विश्वविद्यालय मे शोध के लिये पञ्जीकरण कराया। विषय था "भारत में क्षेत्रवाद : अकाली दल का अध्ययन।" एम. फिल. के लिए उन्होंने भाषा समस्या को चुना। जब प्रोफेसर बिलग्रामी नहीं माने तो शाहिद हुसैन ने विश्वविद्यालय के एक प्रसिद्ध प्रगतिशील प्रोफेसर से सहायता मांगी। यह महोदय मध्ययुगीन इतिहास के जाने-माने विद्वान् कहे जाते हैं। पता चला है कि इन तथाकथित प्रगतिशील इतिहासज्ञ ने शाहिद हुसैन के विभागाध्यक्ष से कहा है कि "कि आप भी कैसे-कैसे गंवार लोगों को पकड़ कर शोध कराने के लिए लाते हैं, जो हिन्दी में शोध करना चाहते हैं।"

शाहिद हुसैन ने उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री पी० एन० भगवती को लिखकर सहायता की अपील की। वहां से उत्तर मिला कि "उच्चतम न्यायालय इस कार्य में कोई सहायता नही कर सकता, उत्तर प्रदेश के कानूनी सहायता और सलाहकार परिषद् के सदस्य सचिव श्री वासुदेव सिंह से इस विषय मे मिलना चाहिये।" श्री वासुदेवसिंह की ओर से उत्तर मिला कि "हम कुछ नहीं कर सकते।" शाहिद हुसैन ने लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ को पत्र लिखा, जिसका कोई उत्तर नही मिला। उन्होने अन्तिम बार जनता पार्टी के नेता मधु दण्डवते से सम्पर्क किया। श्री दण्डवते ने मानव संसाधन मन्त्री श्री नरसिम्ह राव से एक पत्र में सम्बन्धित अधिकारियों को भाषा समस्या पर कठोर रवैया अपनाने के स्थान पर शाहिद हुसैन को हिन्दी में शोध प्रस्तुत करने देने के निर्देश का अनुरोध किया। श्री मधु दण्डवते के पत्र को तीन मास से अधिक समय बीत गया किन्तु अभी तक कोई सरकारी कार्रवाई नहीं हुई।

शाहिद हुसैन के पास अब दो ही रास्ते बचे हैं। या तो वह हिन्दी में शोध करने की बात पर अड़े रहकर अपना भविष्य नष्ट कर लें या फिर प्रो० बिलग्रामी की बात मानकर अंग्रेजी की भेड़चाल मे सम्मिलित हो जायें।

इस लेख द्वारा मैं छात्रसघों के स्वाभिमान और स्व-राष्ट्राभिमान को ललकार रहा हूं। यदि छात्रसघ इस प्रश्न को हाथ मे लेलें तो भविष्य में कोई भी राष्ट्रभाषा का अपमान करने का दुस्साहस न कर सकेगा।

विदेशो में भी हिन्दी बोलें

नई दिल्ली। राजभाषा विभाग ने विदेशो मे नियुक्त भारतीय राजनयिकों, अधिकारियों और विदेश जाने वाले भारतीय शिष्टमडलो को बातचीत मे हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करने का सुझाव दिया है।

राजभाषा विभाग ने सभी मन्त्रालयों और विभागों को भेजे एक परिपत्र में इस सम्बन्ध मे निर्देश जारी करने का अनुरोध करते हुए कहा है कि यदि ऐसा किया गया तो इससे विदेशों में भारत का गौरव बढ़ेगा।

परिपत्र के अनुसार विदेश मन्त्रालय ने इस सम्बन्ध मे सूचित किया है कि जब हमारे राष्ट्रीय नेता विदेशों की यात्रा पर जाते हैं तो वे उस देश में अपने सहयोगियों के साथ अपनी बातचीत मे हिन्दी का उपयोग करने के लिये स्वतन्त्र होते हैं, और उसके लिये वहां भारतीय मिशनों द्वारा दुभाषियों की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकती है।

राजभाषा विभाग के एक प्रवक्ता ने यहां बताया कि प्रधान मन्त्री राजीव गांधी की अध्यक्षता में पिछले वर्ष १८ सितम्बर को केन्द्रीय हिन्दी सलाहकार समिति की जो बैठक हुई थी, उसमे कुछ सदस्यों ने सुझाव दिया था कि भारत से बाहर विदेशो में हमारे राजनयिक और अधिकारी विदेशो के राजनेताओ से जहां तक संभव हो सके, बातचीत में हिन्दी का उपयोग करे।

प्रवक्ता ने बताया कि इसके अलावा ससदीय कार्य और पर्यटन मन्त्रालय (ससदीय कार्य विभाग) की एक बैठक मे भी कुछ सदस्यो ने सुझाव दिया था कि जब भी हमारे देश के शिष्टमडल विदेशों की यात्रा पर जायें तो अपने साथियों और सहयोगियो के साथ हिन्दी मे बातचीत करें।

१६ सितम्बर को जिनकी प्रथम पुण्य तिथि है

स्वर्गीय पंडित देवव्रत धर्मेन्दु की स्मृति

एक वर्ष बीत गया - पंडित देवव्रत धर्मेन्दु को हमसे बिछुड़े। वे एक ध्येयनिष्ठ आर्य थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा (अन्य विद्यालयों के अतिरिक्त) लाहौर के दयानन्द उपदेशक विद्यालय मे भी हुई। उनके नाम के साथ धर्मेन्दु की उपाधि उसी विद्यालय की देन थी।

धर्मेन्दु जी एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण थे। सादा जीवन और उच्च विचार की उक्ति उन पर पूर्णतः चरितार्थ होती थी। उम्र-भर उन्होंने न केवल जनता को (विशेषतः विद्यार्थियों को) धर्म की शिक्षा दी, अपितु उन्होंने अपने जीवन में भी धर्म को उतार लिया था। आर्य युवक परिषद् और सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाओं की व्यवस्था उनकी स्मृति को अमर रखेंगी। सरस्वती और लक्ष्मी की उन पर समान रूप से कृपा थी। संसार से विदा होने से पूर्व वे पर्याप्त धन-राशि और अपना विशाल पुस्तकालय आर्य संस्थाओं को दान कर गये। उन्होंने आर्यसमाज के माध्यम से जनता की जो सेवा की, उस के लिए उनके प्रति कृतज्ञता और आभार प्रकट करने के लिए उनके साथियों ने उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया, जिसमें उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

उनकी दिवंगत आत्मा को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

—सम्पादक

शाकाहारी भोजन : सस्ता, स्वच्छ, स्वास्थ्यवर्द्धक

—सत सोनी, उप-समाचारसम्पादक, नवभारतटाइम्स, नई दिल्ली—

पश्चिम जर्मनी से, पिछले महीने, समाचार आया है कि शाकाहारी लम्बी उम्र पाते हैं और मांसाहारियों की तुलना में उन्हें दिल की बीमारियां कहीं कम होती हैं। यही नहीं, शाकाहारियों को कैंसर होने की संभावना कम होती है।

जर्मन कैंसर रिसर्च सेंटर ने पांच वर्ष में १९०४ शाकाहारियों का सर्वेक्षण किया।

सर्वेक्षण से पता चला कि जो शाकाहारी दूध, मक्खन और पनीर भी खाते हैं उनका भोजन पूर्ण होता है और उन्हें कुपोषण की किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। जो लोग केवल अनाज, सब्जी और फल खाते हैं उनमें भी आहार सम्बन्धी कोई गंभीर विकार नहीं था।

अपने प्रकार का यह पहला सर्वे नहीं है। ऐसे अध्ययन यूरोप और अमेरिका में कई बार हो चुके हैं। हर बार डाक्टर और आहार-विशेषज्ञ एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे कि शाकाहार से व्यक्ति अधिक स्वस्थ रहता है, शाकाहारी की आयु लम्बी होती है। परिणाम यह हुआ है कि पश्चिम देशों के लोग मांस खाना छोड़ रहे हैं। उन्हें फलों और सब्जियों का महत्त्व पता चल गया है।

भारत के वैद्य और विद्वान् जो बात हजारों वर्ष से कहते आये हैं, यूरोप और अमेरिका वाले उसे अब कह रहे हैं। हमारे ऋषि-मुनि और अन्य महात्मा फल और सब्जी खाकर शतायु को प्राप्त हुए। इसी भारत देश मे मांसभक्षियों को राक्षस कहा जाता था। इसी देश के विद्वानों ने सबसे पहले दुनिया को बताया : 'जैसा खाओगे, वैसा बनोगे।' आज अपराध बढ़ने का एक बड़ा कारण लोगों का भोजन है। यदि अपराधियों का सर्वेक्षण किया जाये तो पता चलेगा कि उनमें अधिसंख्य या तो मांसाहारी हैं या फिर सब्जी और फलों के अभाव में, उन्हें दैनिक भोजन में, तन-मन को स्वस्थ रखने वाले आवश्यक पोषक तत्त्व नहीं मिलते।

तो अब यूरोप और अमेरिका वाले भी मानने लगे है कि मांस खाने से दिल की बीमारियां और कैंसर तक हो जाता है। यह भी मालूम हो गया कि मांस कब्ज का सबसे बड़ा कारण है और कब्ज अनेक बीमारियों की जड़ है। इसलिए उन्होंने फल और सब्जियां खाना शुरू कर दिया है। अमेरिका और यूरोप में आपको जगह-जगह 'सैलड बार' मिल जायेंगे। इन दुकानों पर केवल कच्ची सब्जी और फलों की चाट मिलती है।

मांस महंगा है और नुकसान करता है। महंगा क्यों है? एक पशु को मांस के लिये तीन साल पालिए। उसके भोजन और रख-रखाव का खर्चा जोड़िये—हजारों रुपये का खर्चा। कहने वालों का कहना है कि मांस का प्रोटीन सबसे उमदा और सुपाच्य है। यह बात भी गलत साबित हो चुकी है। दही में जो प्रोटीन है, वह सबसे अधिक सुपाच्य है। दूध को पूर्ण भोजन कहा गया है। मनुष्य और अधिसंख्य पशुओं के बच्चे दूध पीकर ही फलते-फूलते हैं। हाथी को सबसे बलवान् जीव कहा गया है। वह मांस के नजदीक नहीं जाता। भारत के जिन पहलवानों ने अपने कारनामों से दुनिया में अपना सिक्का जमाया है, उनमें ९९ प्रतिशत शाकाहारी थे या हैं।

मुर्दा बहुत जल्द सड़ने लगता है। पशु को काटते ही उसके मांस में सड़न शुरू हो जाती है, कई तरह के कीटाणु पनपने लगते हैं। यदि यह भी मान लिया जाये कि किसी पशु को काटने के फौरन बाद उसे पका कर खा लिया जायेगा तो भी खाने वाले हानिकारक तत्त्वों से बच नहीं सकते। मांस हमारे शरीर में लेक्टिक एसिड पैदा करता है। यह एसिड कई रोगों को जन्म दे सकता है। और फिर क्या पता उस पशु को क्या रोग था।

फलों और सब्जियों में, विशेषतः ताजा अनपकी सब्जियों में, मांस से कहीं अधिक पोषक तत्त्व होते हैं। फल-सब्जियां न केवल मांस से अधिक शक्ति शरीर को देते हैं, बल्कि शरीर की सफाई भी करते रहते हैं।

पशु-पक्षियों का मांस हमारे रक्त में नाना प्रकार के विकार उत्पन्न करता है। अधिक उष्णता से पेट और त्वचा के कई रोग उत्पन्न हो सकते हैं। मांस केवल तन को ही नहीं मन को भी दूषित करता है। मांस और शराब का चोली-दामन का साथ है। प्रायः मांसभक्षी मदिरा-पान भी करते हैं और मदिरा मनुष्य को पशु बनाने में अधिक देर नहीं करती।

शाकाहारी दो तरह के हैं। एक तो वे जो केवल फल-सब्जियां और रोटी-दाल खाते हैं। ये लोग दूध और दही से भी परहेज करते हैं। दूसरी तरह के लोग दूध और पनीर का भी सेवन करते हैं। पहली तरह के शाकाहारियों को अंकुरित अनाज नियमित रूप से खाना चाहिए। अंकुर-फूटे अनाज मे बहुत बढ़िया सुपाच्य प्रोटीन, खनिज, विटामिन और अन्य पोषक तत्त्वों की भरमार होती है, जो किसी भी पशु के मांस मे नहीं होते। अंकुरित अनाज कई रोगों को दूर रखता है। दालें, सोयाबीन आदि प्रोटीन का भण्डार है। महंगाई के इस जमाने मे भी ये चीजें मांस से अधिक सस्ती और पौष्टिक हैं।

एक उदाहरण : १०० ग्राम अंकुरित गेहूं (मूल्य ३० पैसे) गुणों का भंडार है। उसमें प्रोटीन, खनिज और अन्य कई तत्व हैं। दूसरी तरफ १०० ग्राम मांस (मूल्य ३ रु०+पकाने का खर्च=१५ रु०) मे केवल प्रोटीन है, और हानिकारक चिकनाई भी। अंकुरित अनाज के सामने मांस कहीं ठहरता नहीं।

इसलिए यदि बीमारियों से बचना चाहें, नीरोग रहना चाहें, शक्ति चाहें तो शाकाहारी रहिए।

वेदाध्ययन करने का काल

——सावित्रीदेवी शर्मा, एम० ए०, वेदाचार्या——

वर्षाकालीन चातुर्मास्यके मनोरम वातावरण में वैदिक स्वाध्याय को प्रारम्भ कर पौष मास में इसके समापन का विधान है। श्रवण नक्षत्र वाली पूर्णिमा को वेदाध्ययन का व्रत धारण करने से इसे श्रावणी कर्म कहा गया। स्वाध्याय हमारे जीवन का मुख्य कर्म है। शतपथ ब्राह्मण में इसका माहात्म्य वर्णन करते हुए ऋषिवर लिखते हैं—

अथातः स्वाध्याय प्रशंसा। प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवतः। युक्तमना भवति। अपराधीनो अहरहरर्थान् साधयते। सुखं स्वपिति। परमचिकित्सक आत्मनो भवति। इन्द्रिय संयमश्च। एकारामता च। प्रज्ञावृद्धिः। यशोलोकपक्तिः। प्रज्ञा वर्धमाना चतुरो धर्मान् ब्राह्मणमभिनिष्पादयति। ब्राह्मण्यं प्रतिरूपचर्यां यशोलोकपंक्तिम्। लोकः पच्यमानश्चतुर्भिः धर्मैः ब्राह्मणं भुनक्ति अर्चया च दानेन चाज्येयतया चावध्यतया च। (शतपथ ब्राह्मण ११।५।७।१)

अर्थात् स्वाध्यायशील ब्राह्मण युक्तमना होता है। अपराधीन होकर प्रतिदिन विविध पदार्थों की सिद्धि करता है। रात्रि में सुखपूर्वक सोता है। अपनी आत्मा का परम चिकित्सक होता है। उसे इन्द्रिय संयम, एकाग्रता और प्रज्ञावृद्धि का लाभ होता है। संसार में उसका यश निरन्तर बढ़ता है। उसकी ऋतम्भरा प्रज्ञा चार प्रकार के ब्राह्मण भाव को उत्पन्न करती है। अध्ययन, अध्यापन तथा यजन, याजन। यही मुख्य ब्राह्मण धर्म है।

यह लोक भी उस ब्राह्मण धर्म से समन्वित होकर चार प्रकार से उसकी आराधना करता है—पूजा, इष्ट वस्तु का समर्पण, उसकी हानि न करना तथा अवध्यता।

स्वाध्याय का अर्थ है—"स्वस्याध्ययनम्" अर्थात् आत्म-गुण दोष निरीक्षण। अपने गुणों का तो प्रायः सभी को ज्ञान होता है किन्तु स्वछिद्रान्वेषण में सजग रहना जितेन्द्रिय वीर पुरुषों का काम है। यह स्वदोषदर्शन वस्तुतः सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय तथा साधुजनों के उपदेश श्रवण करते समय मनुष्य स्वाभाविक रूप से करने लगता है। दुराचारी के दोषों का दुस्साध्य सुधार वैज्ञानिक स्वाध्याय प्रक्रिया से सहज-सा प्रतीत होने लगता है।

अतः शतपथकार ने लिखा—

यन्ति वा आपः, एत्यादित्यः, एति चन्द्रमा, यन्ति नक्षत्राणि। यथा ह वा एता देवता नेयुर्न कुर्युः एवं हैव तदहर्ब्राह्मणो भवति यदहः स्वाध्यायो नाधीते। तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्यः (शतपथ ब्राह्मण ११।५।७।१०)

अर्थात् सम्पूर्ण चराचर जगत् गतिशील है। जलधारायें निरन्तर प्रवाहित हो रही हैं। सूर्य अविराम गति से प्रतिदिन अपार नभ का एक चक्र पूरा कर लेता है। चन्द्रमा अपने नियमानुसार चल रहा है। गगन के नक्षत्र भी अपनी गतिविधियों में संलग्न हैं। यदि ये भौतिक देवता गतिशीलता छोड़कर स्वकर्म में प्रवृत्त न हों तो जो दुर्दशा इस संसार की होगी वही अधोगति उस ब्राह्मण की होगी, जिस दिन वह स्वाध्याय के पुण्य लाभ से वंचित रहेगा।

स्वाध्याय के व्रत को अव्यवच्छिन्न रखने के लिए ही आचार्यगण गुरुकुलीय शिक्षा के अनन्तर सामाजिक क्षेत्र में समावर्तन करने वाले अपने शिष्यों को विशेष आदेश देते हैं—"स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" अर्थात् स्वाध्याय तथा प्रवचन में कभी प्रमाद मत करना। ये दैनिक जीवन के अनिवार्य अंग हैं। धन वैभव पूर्ण सकल पृथ्वी का दान करके जो विशेष पुण्य प्राप्त होता है उससे भी तिगुना लाभ स्वाध्याय से होता है। त्रिलोक विजयी कुबेर भी जिस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते वह दिव्यानन्द एकान्त सेवी स्वाध्यायशील जनों को सुलभ है। इस स्वाध्याय में कभी अनध्याय नहीं होना चाहिये। भले ही ऋग्०, यजु०, साम० और अथर्ववेद की एक ऋचा का पाठमात्र ही करें। विध्यर्थं वादात्मक ब्राह्मण वाक्य का ही उच्चारण करें, किन्तु असमर्थ अवस्था में भी इस कर्म में व्यवच्छेद न करें। वैदिक वाङमय का अध्ययन ही यहां स्वाध्याय का वास्तविक प्रयोजन है। यद्यपि अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन भी जीवनोपयोगी है, किन्तु वेदवाणी ईश्वरीय ज्ञान होने से स्वतः प्रमाण एवं पूर्णतः निर्भ्रान्त है संसार के सर्वांगीण विकास के लिए वैदिक आलोक का प्रसार अनिवार्य है। अतः युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदाध्ययन को आर्यसमाज के तृतीय नियम में आर्यों का परम धर्म बताया है।

इसी पावस काल में प्रत्येक वर्ण के जनों को निरन्तर वर्षा के कारण मार्गों के अवरुद्ध हो जाने से अपने दैनिक कार्यों से कुछ अवकाश मिल जाता है और निश्चिन्त होकर वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सुगमता से चल सकता है।

श्रावणी उपाकर्म का दिन भारतीय हिन्दू समाज में रक्षा-बन्धन के रूप में भी मनाया जाता है। प्राचीन काल में ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण वेद की रक्षार्थ क्षत्रिय तथा वैश्यों की कलाइयों में रक्षा-सूत्र बांधकर उन्हें वेद रक्षा का व्रत दिलाते थे। मध्य युग में विदेशी आक्रान्ताओं के भय से भारतीय देवियां अपने सतीत्व की रक्षा के लिये भाइयों की बलिष्ठ कलाइयों में स्नेहमय रक्षा-बन्धन बांधकर यह पवित्र पर्व मनाने लगीं, जो भाई-बहन के सच्चे स्नेह का प्रतीक तथा नारी रक्षा के पावन व्रत का स्मारक रूप सिद्ध हुआ।

वैदिक संस्कृति में यज्ञोपवीत और कर्मकांड का विशेष सम्बन्ध है। यजमान यज्ञ करने से पूर्व नवीन यज्ञोपवीत अवश्य धारण करता है। व्रत-बन्ध सूत्र मनुष्यों के तीन विशेष कर्तव्यों (ऋणों—पितृ ऋण, देव ऋण ऋषि ऋण) की याद दिलाता है। अतः ऋणत्रय का प्रतीक यह यज्ञोपवीत इस ब्रह्म यज्ञ के आरम्भ से पूर्व अवश्य पहनना चाहिये।

सम्पूर्ण विश्व में शाश्वत ज्ञान यज्ञ का यह पावन पर्व प्रत्येक परिवार, संस्था एवं आर्यसमाज मन्दिर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के रूप में अवश्य मनाया जाना चाहिये। वेदप्रेमी ब्रह्मज्ञानियों का ब्रह्म घोष जन मानव को आलोकित करने के लिए निरन्तर गूंजता रहे। अज्ञान तिमिरावृत वसुन्धरा के सन्ताप को ज्योतिर्मय वेदभास्कर के अतिरिक्त और कौन गिरा सकता है सत्य ही है—

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्।
ज्योतिर्वेदविधानोक्तया आससाराद्म दीप्यते॥

तराई के सिखों को भी आतंकवाद की छूत लगी

बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, नैनीताल जिलों में आतंकवादविरोधी कानून लागू

नैनीताल। तराई इलाके में हथियारबन्द युवकों के हाथों छिटपुट लूटपाट की घटनाओं से यहां बसे सिखों और स्थानीय आबादी के बीच शक का माहौल बनता जा रहा है।

२२ अप्रैल को रुद्रपुर-बदरपुर सड़क पर एक टैम्पो को रोककर कुछ सिख युवकों ने सभी गैर-सिख सवारियों को लूट लिया। इससे लोगों में काफी रोष फैला। लोगों का मानना था कि इस तरह की घटनाओं से सिखों और हिंदुओं के बीच मनमुटाव बढ़ेगा।

सिखों के तराई में आने के बाद यहां के मूल निवासियों और उनके बीच पहला तनाव इसलिए पैदा हुआ क्योंकि वैध या अवैध तरीके से जमीनें सिखों के हाथ में चली गईं। धीरे-धीरे इलाके में सिख और गैर-सिखों के नेता भी अलग-अलग हो गये।

पंजाब में उग्रवादियों की हरकतों का तराई में असर पड़ना लाजिमी था। एक जुलाई १९८४ (ईद के दिन) बदरपुर मस्जिद में नमाज के वक्त घुसकर 'भिंडरांवाले जिंदाबाद, खालिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए पुलिस ने रामपुर जिले के मिलक थाने के नवाबगंज गांव में रहने वाले सरदार इन्द्रजीत सिंह को गिरफ्तार किया और धारा १५३ ए/१८८ के तहत मुकदमा कायम हुआ। ३० अगस्त को इन्द्रजीत सिंह की गिरफ्तारी रासुका में बदल दी गई।

६ दिसम्बर, ८४ को बाजपुर में पशुधन विकास कार्यालय पर फहराये गये राष्ट्रीय झंडे को फाड़कर जमीन पर फेंक देने और भिंडरांवाले के समर्थन में नारे लगाये जाने पर सरदार गुरुचरन सिंह के विरुद्ध धारा १२४ (क) का मुकद्दमा दर्ज किया गया। यह मुकद्दमा अभी भी चल रहा है।

५ जनवरी, ८५ को किच्छा स्थित नैनीताल बैंक को सिख आतंकवादियों ने लूट लिया। पुलिस ने १२ जनवरी को स्वर्ण सिंह, गुरुवंत सिंह और हरभजन सिंह को गिरफ्तार कर उनके पास से १,१२,७५३ रुपये बरामद कर लिये।

३० जुलाई, ८५ को खटीमा पुलिस ने अमीर सिंह मस्त को धारा २५ हथियार एक्ट के तहत राइफल के साथ गिरफ्तार किया। इसी तरह थाना रामनगर के भगतपुर तड़ियल गांव के गुरुदयाल सिंह, अमरजीत सिंह और बख्शी सिंह को आतंकवादियों को संरक्षण देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। इनके घर तलाशी लेने पर २ स्टेनगनें, ५६ कारतूस, ४ मैगजीन, २५१ कारतूस, ९ एम. एम. की २ फैक्टरी मेड दुनाली बन्दूकें, ६६ कारतूस, १२ बोर और ४ खोखा १२ बोर, ५ खोखा ३०१ बोर, १० कारतूस और १२ बोर का एक तमंचा खोखा समेत बरामद किया गया। इन तीनों के सहयोगी निर्मलसिंह को २८ अक्तूबर को बाजपुर पुलिस ने हथियार और कारतूसों के साथ गिरफ्तार किया।

२८ अप्रैल, ८६ को सितारगज थाने की पुलिस ने अमृतसर के पास लहरका कस्तूनगला गांव के निवासी सुखदेवसिंह और जालंधर जिले के शाहकोट गांव के निवासी रणधीर सिंह को गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से दो स्टेनगनें, एक विदेशी पिस्तौल, राइफलें, कारतूस और विदेशी मैगजीन। १ मई को इन्हें निरोधात्मक विरोधी कानून के तहत गिरफ्तार किया गया।

पिछली २१ जुलाई को इसी तरह कुछ सिख युवकों ने काशीपुर में रामनगर रोड पर नैनीताल बैंक की कृषि विकास शाखा को लूटने की असफल कोशिश की थी और एक बैंक गार्ड सहित दो लोगों की हत्या कर दी थी। यही नहीं, इन्होंने बैंक लूटने के लिए धोखे से किराये पर ली गई टैक्सी के चालक विपिन कुमार और उसके दोस्त प्रेमप्रकाश को भी रास्ते में मारकर फेंक दिया था। इस सिलसिले में बाजपुर के एक फार्म के मालिक प्यारासिंह और लुधियाना निवासी बलराज को पकड़ा गया जबकि शेष लापता हो गये। इनकी सूचना पर पुलिस ने प्यारा सिंह के मकान के पास जमीन में दबी ९ एमएम की एक स्टेनगन, मशीन कार्बाइन, ६३ राउण्ड स्टेनगन के ४ मैगजीन, एक वेबले स्काट रिवाल्वर ४५५ बोर, २ बेल्जियम मेड पिस्तौलें ९ एमएम, ३७ कारतूस ९ एमएम, ११ कारतूस ३२ बोर और ४५५ बोर के ५ राउंड कारतूस बरामद किये।

इसी तरह १७ अगस्त को हल्द्वानी से १०० कि.मी. दूर हरिद्वार रोड पर जंगलों में चौकसी करते हुए दो पुलिस वालों की हत्या कर दी गई। शक है कि यह उग्रवादियों का काम है। हालांकि नैनीताल के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विक्रमसिंह के अनुसार यह हत्या शराब के नशे में दो गुटों के बीच हुए झगड़े का नतीजा थी।

मुमकिन है कि इनमें से कुछ हत्याएं या लूटपाट अपराधियों का काम हो पर अब आतंकवादियों और अपराधियों के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं रह गई है। सेवासिंह, जिसके सिर पर एक लाख रुपये का इनाम है, अभी भी पुलिस की पकड़ से बाहर है। कालागढ़ के पास घने जंगलों में इसने उग्रवादियों को प्रशिक्षण देने का काम शुरू किया था। इन्हीं में से एक को बिजनौर जिले के धामपुर में पुलिस ने गिरफ्तार किया जिससे यह रहस्य खुला और आपरेशन शिवालिक शुरू किया गया। बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर और नैनीताल जिलों में आतंकवाद विरोधी कानून लागू किया गया है। (जनसत्ता, ३१ अगस्त, ८६ से साभार)

पंजाब बचाओ--देश बचाओ दिवस--स्थान-स्थान पर आयोजन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश पर १५ अगस्त को देश-भर मे पजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस मनाया गया। स्थान-स्थान पर सभायें हुई और जुलूस निकाले गये। सभाओ मे सार्वदेशिक सभा द्वारा भेजे गये प्रस्ताव स्वीकृत करके सरकार को भेजे गये। (ये प्रस्ताव 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित हो चुके हैं।) दिवस मनाने वाली कुछ आर्यसमाजों और सस्थाओ के नाम पिछले अक मे प्रकाशित किये जा चुके हैं। शेष नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

आर्यसमाज डोमचोंच, श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, आगरा, आर्य युवा क्रान्ति दल, किरठल, आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल, सद्व्यवहार समिति डोमचोंच, गुरुकुल आश्रम आमसेना, आर्यसमाज चनाश्री (जिला मेदक), आर्यसमाज नाथनगर-चम्पानगर (जिला भागलपुर), आर्यसमाज खामगाव (जिला बुलढाना), सम्मुदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, गाजियाबाद, आर्यसमाज सोनाला (जिला बुलढाना), आर्यसमाज मसौढ़ी (जिला पटना), आर्यसमाज पीरो (शाहाबाद), आर्यसमाज नगर उटारी (जिला पलामू) आर्यसमाज बेगूसराय (बिहार), केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर, आर्यसमाज बरबीघा (मुगेर), आर्यसमाज प्रधाना महल्ला, रोहतक, आर्यसमाज कुम्हड़ी गेट, नाभा, आर्यसमाज मन्दिर सिविल लाइन्स, अलीगढ़, आर्यसमाज महाराजपुर (जिला छतरपुर), आर्यसमाज आकोट (जिला अकोला), आर्यसमाज घाटकोपर—पश्चिम (बम्बई), आर्यसमाज गुलावठी (बुलन्दशहर), आर्यसमाज केराकत (जिला जौनपुर), आर्य वीर दल केराकत, आर्यसमाज नीमदा गेट, भरतपुर, आर्यसमाज अमरोहा (जिला मुरादाबाद), आर्यसमाज खरकडा (रोहतक) आर्यसमाज हसुआ (नवादा), आर्यसमाज फीरोजाबाद, आर्यसमाज अलमोड़ा, आर्य समाज कुमार नगर (धूलिया), आर्यसमाज रावतभाट, आर्यसमाज रजौली (जिला नवादा), आर्यसमाज अजमेर आर्यसमाज चेतारी (जिला रोहतास), आर्यसमाज देहा अफगान (सहारनपुर) आर्यसमाज माडल टाउन, पठानकोट, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली, श्रीमद्दयानन्द वैदिक मिशन रायगढ़, आर्यसमाज फलावदा, मवाना (मेरठ), आर्यसमाज महाराजपुर (छतरपुर) आर्य केन्द्रीय सभा, पानीपत, आर्यसमाज गान्धीनगर, बस्ती, आर्यसमाज नयाशहर, इटावा, आर्यसमाज जमालपुर (मुगेर), आर्यसमाज देहरादून, वैदिक सत्सग सभा, रोहतक, आर्यसमाज नामनेर, आगरा, आर्यसमाज बेबवा (मथुरापुर), आर्यसमाज चौक बाजार, बुलन्दशहर।

श्री प्रकाशचन्द्र आर्य, जो आर्य-समाज के माध्यम से धर्म प्रचार और राष्ट्र की सेवा मे लगे हैं। आर्य समाज को आपसे बड़ी बड़ी आशायें हैं। ६१-वर्षीय प्रकाशचन्द्र जी सराय-तरीन (जिला मुरादाबाद) में रहते हैं। आपका ध्येय वाक्य है दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे। आपमें अनेक गुण हैं। आपका सबसे बड़ा गुण है दानशीलता।

श्री भगवानदास जी गुमलानी का वानप्रस्थाश्रम दीक्षा समारोह

श्री भगवानदास जी गुमलानी (पानीपत निवासी) १४-९-८६ को अपने निवास स्थान आर-५७६ माडल टाउन, पानीपत मे म० दयानन्द जी तपोवन आश्रम, देहरादून से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ग्रहण करेंगे।

श्री गुमलानी जी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता है। आपने अपने जीवन काल में ऋषि मिशन और आर्यसमाज की महती सेवा की है। अजमेर तथा टकारा मे भी विशेष कार्य करते रहे हैं।

वानप्रस्थ दीक्षा के बाद आपने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ, नई दिल्ली को अपनी सेवायें देने की इच्छा प्रकट की है।

भगवान् से प्रार्थना है कि वह अपने सकल्प मे सफल होकर दीर्घायु को प्राप्त हों।

—पृथ्वीराज शास्त्री, महामन्त्री
अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम सघ नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर सभा

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द की १६३वीं जन्म तिथि पर शुक्रवार १२ सितम्बर को वेद सस्थान (२२सी राजौरी गार्डन) में प्रसिद्ध वेदज्ञ डा. फतहसिंह का भाषण "दयानन्द : जैसा मैंने उन्हें समझा" विषय पर हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती थे और अध्यक्षता प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार ने की।

१४ अगस्त को बिडला आर्य गर्ल्स सीनियर सकडरी स्कूल मे स्वाधीनता दिवस मनाया गया। चित्र मे स्कूल की प्रधाना श्रीमती ईश्वरी देवी स्वामी आनन्दबोध जी को दिया गया अभिनन्दन पत्र पढ रही हैं। स्वामी जी को १० हजार रुपये से अधिक की थली भी भेंट की गई।

बिडला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकडरी स्कूल मे स्वाधीनता दिवस पर स्वामी आनन्दबोध जी राष्ट्रीय झडा लहरा रहे हैं।

स्कूल के उपप्रधान श्री राधाकृष्ण गाधी स्वमी आनन्दबोध जी का स्वागत करते हुए।

मझाट क्लब जोधपुर के कुछ सदस्य मोटरसाइकिलो मे भारत भ्रमण करते हुए दिल्ली पहुचे। यहा वे स्वामी आनन्दबोध जी मे आशीर्वाद लने साथ आर्य प्रसन के कार्यालय मे आये। स्वामी जी ने उन्हे वैदिक साहित्य भेंट किया।

आवश्यक सूचना

कुवर सुखलाल आर्य मुसाफिर व्याख्यानमाला प्रकाशित हो रही हैं। जिन महानुभावो के पास उनके टेप (भाषण) हो वे सूचित करें। टेप व्याख्यान माला सहित ससम्मान लौटा दिये जायगे।

—आचार्य विक्रम
१३४ ममलापुरी (महरोली)
नई दिल्ली ११००१०

तपोवन आश्रम में राष्ट्रभृत् यज्ञ

१ अक्तूबर से ५ अक्तूबर तक तपोवन आश्रम देहरादून में २१ कुण्डीय राष्ट्रभृत् यज्ञ होगा जिसके अध्यक्ष महात्मा दयानन्द जी और ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी होगे। यज्ञ का समय प्रात ६।। से ९ बजे और साय ४।। से ६ बजे तक होगा।

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् मे वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज रामकृष्णपुरम सैक्टर नम्बर तीन एव डी० डी० ए० फ्लटस मुनीरका मे श्रावणी से जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन सायकाल यज्ञ होता रहा जिसमें पूरे के पूरे यजुर्वेद के मन्त्रो से आहुतियाँ दी गई। अन्तिम दिन कृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया। श्री मनुदेव शास्त्री और श्री सर्वेश्वर शर्मा ने भगवान श्री कृष्ण के जीवनदर्शन और गीता के सन्देश पर प्रकाश डाला।

हैदराबाद सत्याग्रह सम्बन्धी साहित्य भेजिए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकालय मे हैदराबाद सत्या १९३८-३९ विषयक निम्नलिखित पुस्तकें हैं—

(१) निजाम हैदराबाद के धर्म युद्ध का इतिहास—लेखक गोविन्दराम तथा त्रिलोकचन्द विशारद। (२) हैदराबाद और आर्यसमाज—प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द। (३) निजाम राज्य और आर्यसमाज—लेखक सदानन्द परिव्राजक। (४) हैदराबाद आर्य सत्याग्रह साम्प्रदायिक नही है (गुजरानी, लेखक ज्ञानेन्द्र)। (६) निजामकी जेल मे-क्षितीश वेदालकार। इनके अतिरिक्त आर्य साहित्य मण्डल, गोविन्दराम हासानन्द, पण्डित नरेन्द्र जी द्वारा लिखित तथा हिन्दी, अग्रेजी एव अन्य भाषाओ मे अनेक प्रकाशन उस समय या बाद मे निकले है। इस सम्बन्ध का समस्त साहित्य सरकार के स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान प्रभाग को प्रमाणीकरण के लिय प्रस्तुत करना है। अत जिन समाजो अथवा व्यक्तियो के पास इस सम्बन्ध की पुस्तकें, रिपोर्टें और पत्र-पत्रिकाए किसी भी भाषा मे हो उन्हे इस सभा मे रजिस्ट्री द्वारा भिजवा दे। काम हो जाने पर वे चाहेगे तो उन्हे लौटा दिया जावगा अथवा मूल्य से खरीदा भी जा सकता है। या कि पुस्तकालय म दाता की इच्छानुसार सुरक्षित रखा जा सकता है। वर्ष १९३९ के सार्वदेशिक मासिक के समस्त अक भी बहुत आवश्यक हैं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवैतनिक प्रेस एव जनसम्पर्क सलाहकार,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
रामलीला मैदान के समीप, नई दिल्ली-२

श्रीमती चन्द्रकान्ता मल्ल का निधन

काठमाडौ। नेपाल आर्यसमाज के सस्थापक श्री प० माधवराज जोशी की सुपुत्री तथा नेपाल के अमरशहीद शुकराज शास्त्री की बहिन श्रीमती चन्द्रकान्ता मल्ल का १५ जुलाई को ९३ वष की उम्र मे काठमाण्डौ पशुपति आर्य घाट मे निधन हो गया।

डी० ए०-वी० नैतिक **नई दिल्ली**
(अन्तर्गत डी० ए०-वी० कालेज प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली)

पद	: धर्म शिक्षक
प्रवेश योग्यता	एम० ए० (सस्कृत आचार्य) हिन्दी, अग्रेजी और वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान आवश्यक
पाठ्यक्रम की अवधि	एक वर्ष

पाठयक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यर्थियो को डी० ए०-वी० शिक्षण सस्थाओ मे धर्म शिक्षक पद पर टी० जी० टी० वेतन क्रम मे नियुक्त किया जायेगा।

केवल निष्ठावान आर्यसमाजी ही पूर्ण विवरण सहित प्रार्थनापत्र १७ सितम्बर, १९८६ तक निम्नलिखित पते पर भेजे।

—दरबारीलाल, सगठन सचिव
डी०ए०-वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति
चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली-११००५५

पण्डित रामस्वरूप का निधन

राची। आर्यसमाज नेमदारगज (नावादा) के पथप्रदर्शक एव परामर्शदाता पण्डित रामस्वरूप नारायण वैद्य (आर्य) का २७ जुलाई को प्रात साढे चार बजे अपने निवासस्थान पर देहान्त हो गया। उनका जन्म विक्रम सम्वत् १९५८ भाद्रपद शुक्ल तृतीया को नेमदारगज ग्राम मे हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा अकबरपुर प्रखण्ड म हुई थी

सर्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वेदामृतम्

पुरुषार्थ से सर्वत्र विजयश्री

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित् ।

अथर्व० ७।५०।८॥

हिन्दी अर्थ— मेरे दाएं हाथ में पुरुषार्थ है और मेरे बाएं हाथ में सफलता है। मैं गाय, अश्व, धन और सुवर्ण को जीतने वाला हूं अर्थात् पुरुषार्थ के द्वारा सभी प्रकार की श्री मुझे प्राप्त हो।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक ४०] आश्विन कृ० ३ सं० २०४३ रविवार २१ सितम्बर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

बरनाला सरकार को अपदस्थ किया जाये :

सुरक्षा पट्टी योजना पर तुरन्त अमल हो

भारत सरकार पाकिस्तान से राजनयिक सम्बन्ध तोड़े

संवाददाता सम्मेलन में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का वक्तव्य

(हमारे कार्यालय सम्वाददाता से)

नई दिल्ली, १० सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि पाकिस्तान हमारे देश के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयां करने से बाज नहीं आता तो भारत सरकार को उससे राजनयिक सम्बन्ध विच्छेद करने से भी संकोच नहीं करना चाहिए।

स्वामी जी ने मांग की कि भारत सरकार गुजरात से कश्मीर तक सीमावर्ती क्षेत्र को सुरक्षित पट्टी घोषित करे। यदि इसके लिए तुरन्त संसद् की बैठक बुलाना सम्भव न हो तो सरकार अध्यादेश जारी करके यह कार्य कर सकती है।

प्रेस क्लब के खचाखच भरे संवाददाता सम्मेलन को स्वामी जी ने बताया कि गुजरात और राजस्थान की सरकारें और कश्मीर के राज्यपाल सुरक्षित पट्टी निर्धारित किये जाने के पक्ष में हैं। केवल पंजाब की बरनाला सरकार ऐसा किये जाने के विरुद्ध है। स्वामी जी ने श्री सुरजीतसिंह बरनाला से सीधा प्रश्न किया कि आखिर आपको सुरक्षित पट्टी बनाये जाने पर आपत्ति क्या है? सुरक्षित पट्टी बनाये जाने पर पाकिस्तान से आने वाले घुसपैठिये रोके जायेंगे। इसमें पंजाब सरकार के अधिकारों अथवा किसी पंजाबवासी के नागरिक अधिकारों के हनन जैसी कोई बात नहीं

संवाददाता सम्मेलन में सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव भी उपस्थित थे।

संवाददाता सम्मेलन में प्रसारित विज्ञप्ति का पूर्ण पाठ इस प्रकार है—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह निश्चित मत है कि पंजाब में उग्रवादियों की गतिविधियों को समाप्त करना रिबेरो और उनके पुलिस दलों की शक्ति से बाहर की बात है। जिन उग्रवादियों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है, उनकी रणनीति का निर्धारण और संचालन पाक जनरल कर रहे हैं। सरकार को चाहिए कि पंजाब समस्या के इस पहलू को नजरअन्दाज न करे।

बरनाला की पंथिक सरकार उग्रवादियों की गतिविधियों को पूर्ण रूप से मिटाने को अपना मन नहीं बना पा रही और उसकी हरकतों से ऐसा प्रतीत होने लगा है कि वह चाहती है कि स्थिति ऐसी ही बनी रहे ताकि जनता तंग आकर खालिस्तान की मांग स्वीकार कर ले। पंजाब में सुरक्षा पट्टी के निर्माण सम्बन्धी केन्द्र के निश्चय का विरोध करना बरनाला सरकार के इसी विचार का सबूत है।

बादल और टोहरा ग्रुप के अकाली उन उग्रवादियों के "भोग" कार्यक्रमों में भाग लेने जाते हैं जो पुलिस कार्रवाई में मारे जाते हैं। इससे न सिर्फ इन उग्रवादियों को शहीदों का दर्जा मिलता है अपितु खालिस्तान की मांग को भी खुला समर्थन मिलता है।

हमारी दृष्टि में बरनाला और बादल दोनों के ग्रुप एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और वे अपने-अपने ढंग से उग्रवादियों की मांग को साकार रूप देने में सक्रिय हैं।

इन परिस्थितियों में सुरक्षा पट्टी के निर्माण में केन्द्र द्वारा की जा रही देरी देश को संकट की ओर ले जा रही है। हम बिना संकोच कह सकते हैं कि प्रधान मन्त्री निजी ढंग से देशहित में ही सोचते हैं परन्तु इनके सलाहकार उन विचारों के कार्यान्वयन में बाधा प्रस्तुत करते हैं। लोगों का अभिमत इसी प्रकार का बनता जा रहा है। उग्रवादियों की गतिविधियों को यदि तत्काल नहीं रोका गया तो स्थिति और बिगड़ जायेगी। इस दिशा में विलम्ब देश के लिए बहुत घातक होगा।

सभा को इस आशय की सूचनायें प्राप्त हो रही हैं कि तमाम उग्रवादी, चाहे उनका राजनैतिक लक्ष्य कुछ भी हो, एक हो रहे हैं और वे अपने आपको सुसंगठित करके कोई न कोई देशव्यापी विद्रोह खड़ा कर देंगे। आन्ध्र प्रदेश में कुछ ऐसे स्थान हैं जहां नक्सली उग्रवादी सक्रिय हैं। वे सिख उग्रवादियों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

केन्द्र सीमा सुरक्षा को कमजोर करने वाली पंजाब सरकार की कार्रवाई से निपटेगा

आतंकवादियों से मुठभेड़ की जांच पर राजीव गान्धी की तीव्र प्रतिक्रिया

नई दिल्ली। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने कहा है कि पंजाब सरकार अगर कोई ऐसी कार्रवाई करती है, जिससे देश की सीमा की सुरक्षा व्यवस्था कमजोर होती है तो केन्द्रीय सरकार ऐसी कार्रवाई के विरुद्ध कदम उठाने में संकोच नहीं करेगी।

श्री गांधी इन खबरों के बारे में पूछे गये सवालों के जवाब दे रहे थे कि पंजाब सरकार गत तीस अगस्त को सीमा सुरक्षा बल के साथ मुठभेड़ में मारे गये दस आतंकवादियों की मृत्यु की जांच करा रही है।

इस घटना की पंजाब सरकार द्वारा जांच कराये जाने को नापसन्द करते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि सीमा पर हुई मुठभेड़ राज्य सरकार का आंतरिक मामला नहीं है और इसका सीधा सम्बन्ध देश की सुरक्षा व्यवस्था से है। उन्होंने कहा कि देश की सीमाओं पर होने वाली घटना में दखल देना राज्य सरकार का काम नहीं है। राज्य सरकार को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे देश की सुरक्षा व्यवस्था कमजोर होती हो या उसे कोई खतरा पैदा होता हो।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि अगर राज्य सरकार ऐसा कोई काम करती है जिससे सुरक्षाको खतरा पैदा हो तो केन्द्रीय सरकार को उसके खिलाफ कार्रवाई करनी ही होगी। उन्होंने कहा कि देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कानून बनाने के लिए राज्यसभा ने केन्द्रीय सरकार को अधिकार दे दिये हैं और अवसर आने पर हम उन अधिकारों का उपयोग करने से चूकेंगे नहीं।

श्री गांधी ने कहा कि सीमाओं की सुरक्षा और राज्य में आंतरिक कानून व्यवस्था अलग-अलग मामले हैं और सीमा सुरक्षा बल के साथ मुठभेड़ में मारे गये आतंकवादियों का मामला केवल कानून-व्यवस्था का सवाल नहीं है। इसलिए राज्य सरकार को इस मामले की जांच कराने का भी औचित्य या अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार की इस कार्रवाई से देश की सुरक्षा को कमजोर नहीं होने दिया जायेगा।

गुरुकुल अयोध्या की सहायता करें

स्वामी आनन्दबोध जी की अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोधजी सरस्वती ने गुरुकुल अयोध्या (फैजाबाद) की आर्थिक सहायता करने की अपील की है।

स्वामी जी ने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की है कि गुरुकुल अयोध्या वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार की ओर अग्रसर है।

इस समय गुरुकुल में १६० ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। धन निम्नलिखित पते पर भेजें—

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या,
जिला फैजाबाद

आर्य वीर गणवेश में ही कार्यक्रमों में भाग लें

समस्त प्रान्तीय संचालकों, मण्डलपतियों एवं नगरनायकों को चाहिए कि वे किसी भी प्रकार के समारोह में चाहे वे दलाधिकारियों अथवा आर्यसमाज द्वारा आयोजित किया गया हो, आर्य वीरों सहित गणवेश पहन कर ही प्रांगण अथवा मंच पर आयें।

इससे उनके कार्यक्रमों में स्वाभाविक उभार के साथ भावात्मक एकता सम्भव हो सकेगी। हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन रोहतक (जो २७-२८ सितम्बर १९८६ को हो रहा है) में सभी अधिकारी एवं आर्य वीर इस आदेश का पालन करेंगे, ऐसी आशा है।

—बालदिवाकर हंस
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

राष्ट्रीय चेतना में आर्यसमाज एवं सत्यार्थ-प्रकाश का अभूतपूर्व योगदान है

—संध्या अग्रवाल

खंडवा। ३० अगस्त, ८६ को म.द. शिक्षण समिति के अन्तर्गत संचालित शिक्षण संस्थाओं की ओर से क्रिकेट के क्षेत्र में भारत का नाम रोशन करने वाली कु० संध्या अग्रवाल का अभिनन्दन श्री रमेशचन्द्र चाचोंदिया (कार्यपालन मन्त्री सिंचाई) की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर युगप्रभात के प्रधान संपादक श्री जीवन साहू ने कहा कि आर्यसमाज की कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। आर्यसमाज ने पंजाब समस्या पर न केवल समाचारपत्रों में वक्तव्य प्रसारित किया अपितु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी के नेतृत्व में अनेक आर्यसमाजी पंजाब में शांति स्थापित करने और भाईचारे को सुदृढ़ बनाने के लिये जा रहे हैं। सुश्री संध्या अग्रवाल ने कहा कि आर्यसमाज के अन्तर्गत देश-भर में शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं, जहां संस्कारित बच्चों का निर्माण होता है। मुझे विदेशों में भी आर्यसमाज की गतिविधियां देखने को मिलीं। अब मैं चाहूँगी कि आप शिक्षा के साथ-साथ खिलाड़ियों का भी निर्माण करें ताकि खेल क्षेत्र के अच्छे खिलाड़ियों की जो कमी महसूस की जा रही है, वह दूर हो सके। इस अवसर पर श्री कैलाशचन्द्र जी पालीवाल और रामचन्द्रजी आर्य ने भी उपस्थित जनसमुदायको सम्बोधित किया। अतिथियों का स्वागत श्री वीरेन्द्र सोहनी एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त कुमारी सत्यवती नायडू ने किया।

आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविरों की धूम

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा अक्टूबर मास में निम्नलिखित स्थानों पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा रहे हैं—

१ से ६ अक्टूबर कुरुक्षेत्र
२ से ११ अक्टूबर दिवाल हेड़ी, जि० सहारनपुर
८ से १७ अक्टूबर रवापुरी सेठड़ी खतौली
१५ से २० अक्टूबर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह के अवसर पर लखनऊ के डी० ए०-वी० कालेज में
२१ से ३० अक्टूबर बोकाजान (असम)
२ से १० नवम्बर डोके मुकम (असम)
५ से १४ नवम्बर ध्रागध्र (गुजरात)
१६ से २५ नवम्बर धारुर, जि० बीड (महाराष्ट्र)
२६ नवम्बर से १३ दिसम्बर उदगीर (महाराष्ट्र)

—कार्यालय मन्त्री

कानपुर में पांच मुसलमानों का हिन्दू धर्म में प्रवेश

कानपुर। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज के प्रधान तथा प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने पांच मुसलमानों की इच्छानुसार उन्हें हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया।

इनमें दो पिता-पुत्र थे। पिता सलीम खां (६५) का नाम सुन्दरलाल तथा पुत्र मोहरम (२६) का नाम मोहनलाल रखा गया। इसी प्रकार तलाक-शुदा श्रीमती आलिया बेगम (२६) रामप्यारी व उनके पुत्र मुहम्मद अली का शुद्धि संस्कार के पश्चात् श्री रामआसरे से विवाह कराया गया। जैमिनि सर्कस के कलाकार का हिन्दू धर्म की दीक्षा के बाद कुछ प्रेमी कलाकार से वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न कराया गया। इस समारोह में उपस्थित स्त्री-पुरुषों ने शुद्ध होने वाले लोगों का फूल मालाओं से स्वागत किया।

सुरक्षापट्टी का मूल प्रस्ताव तुरन्त अमल में लाया जाये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का प्रधानमन्त्री के नाम पत्र

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को एक पत्र लिखकर उनसे निवेदन किया है कि देशहित में सुरक्षित पट्टी के मूल प्रस्ताव को राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा तुरन्त लागू करें और संसद् के अगले सत्र में प्रस्तुत करके अपने कर्त्तव्य का पालन करें, जिससे इस देश की राष्ट्रवादी जनता को सन्तोष हो।

पूरा पत्र प्रकार है—

मान्यवर श्री राजीव गांधी जी

सादर नमस्ते।

आपसे दिनांक १७ जुलाई, १९८६ को कश्मीर तथा पंजाब की स्थिति पर मेरी बातचीत हुई थी। आपने सीमावर्ती क्षेत्रों—जैसलमेर, गुजरात, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा पट्टी बनाने, वहां भूतपूर्व सैनिकों को बसाने तथा उन्हें मताधिकार देने के प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त की थी। इसी के अनुरूप आपने राज्य सभा में विधेयक भी प्रस्तुत किया तथा राज्य सभा में पूर्ण बहुमत न होने के कारण संविधान के अनुच्छेद २४९ का उपयोग करके विरोधी दलों के सहयोग से सुरक्षा पट्टी बनाने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

इस सुरक्षा पट्टी को राजस्थान, गुजरात के मुख्यमन्त्रियों तथा जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल की सहमति भी प्राप्त हो चुकी है, क्योंकि इससे भारत अनेक कठिनाइयों से मुक्ति पा सकता है तथा यह राष्ट्रहित में भी है। परन्तु पंजाब के मुख्यमन्त्री इसका विरोध कर रहे हैं। यह सर्वविदित है कि पंजाब सरकार उग्रवादियों तथा राष्ट्र विरोधी तत्त्वों से सख्ती से निबटने में असमर्थ रही है। श्रीमती इन्दिरा गांधी और जनरल वैद्य की हत्या से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि इन तत्त्वों के विरुद्ध सख्ती होनी चाहिए न कि इनसे सहानुभूति। आतंकवाद सख्ती से ही समाप्त किया सकेगा। किन्तु यह खेद का विषय है कि आज भी पंजाब सरकार में ऐसे तत्त्व हैं जिनकी इन लोगों से सहानुभूति है। बरनाला सरकार अपरोक्ष रूप मे आतंकवादियों की मदद ही कर रही है। हजारों अपराधियों को पंथ के नाम पर रिहा करने का परिणाम आज हमारे समक्ष है। अभी भी जोधपुर जेल में बन्द कुख्यात देशद्रोहियों तथा सेना के भगोड़ों को विस्थापित घोषित करने की मांग की जा रही है ताकि रिहा होने पर वे पुनः अपनी कार्रवाइयां शुरू कर सकें। डॉ० फारूख अब्दुल्ला आज भी मक्का में पाकिस्तानी अधिकारियों से मिलकर वहां भारत के विरुद्ध गुप्त योजनायें बनाने में संलग्न हैं।

अतः भावी भारत को संकटों से बचाने के लिए आपको गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। सुरक्षा पट्टी का श्री बरनाला, डा० फारूख अब्दुल्ला या कुछ राष्ट्रविरोधी तत्त्वों द्वारा विरोध किसी भी प्रकार राष्ट्रहित में नहीं। सरकार द्वारा लोक सभा में स्पष्ट बहुमत होने पर भी इस विधेयक को प्रस्तुत न करने से लोगों में यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि भारत सरकार राष्ट्रविरोधी तत्त्वों के दबाव में आकर इस पर पुनर्विचार कर रही है। इसका लाभ निश्चित रूप से विरोधी दलों को मिलेगा। आपके चरित्र तथा निरपेक्ष रूप से सोचने के अपूर्व गुण पर देशवासियों को अभिमान है। अतः मेरा निवेदन है कि देश हित में सुरक्षा पट्टी के मूल प्रस्ताव को राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा तुरन्त लागू कर संसद् के अगले सत्र में प्रस्तुत करके अपने कर्त्तव्य का पालन करें जिससे इस देश की राष्ट्रवादी जनता को संतोष हो।

मुझे आशा है कि आप उपरोक्त बातों पर अवश्य विचार करेंगे।

—आनन्दबोध सरस्वती

(पूर्व नाम रामगोपाल शालवाले)

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

बरनाला का पुत्र आतंकवादियों के साथ

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा जांच की मांग

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने एक वक्तव्य में मांग की है कि पंजाब के मुख्यमन्त्री के पुत्र के आतंकवादियों से सम्बन्धों की जांच कराई जावे।

वे लिखते हैं कि पंजाब की पंथिक सरकार के मुख्यमन्त्री सुरजीतसिंह बरनाला ने अपने पुत्र गगनदीपसिंह के आतंकवादियों से किसी भी प्रकार के सम्बन्ध से इनकार करते हुए कहा है कि वे इस बात की जांच कराने के लिए तैयार हैं कि सरबतसिंह सेखों एक आतंकवादी है या नहीं?

श्री बरनाला इस बात को तो स्वीकार करते हैं कि उनका सेखों के साथ लगभग एक वर्ष से अधिक समय से सम्पर्क रहा है। लेकिन उसकी मारुति कार को वी० बी० आई० पी० नम्बर प्लेट देने के बारे में उनका कहना है कि इस प्रकार की छोटी-छोटी कृपा तो वे बहुत-से व्यक्तियों पर कर चुके हैं। क्या हम पूछ सकते हैं कि एक मुख्यमन्त्री का वर्तमान संकट के समय इस प्रकार का व्यवहार कहां तक उचित है?

अब श्री बरनाला एक नया वक्तव्य लेकर सामने आये हैं कि यह सब उनकी तथा उनके पुत्र की जिन्दगी समाप्त करने की एक चाल है।

हमारी मांग है कि केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा इस मामले की छानबीन कराई जावे, क्योंकि हमारी राय में श्री बरनाला इस प्रकार की कार्रवाई अपनी गलतियों पर पर्दा डालकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए कर रहे हैं।

श्री बरनाला ने पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाये जाने का विरोध करके केन्द्रीय सरकार की आज्ञा का सरासर उल्लंघन किया है। डेरा बाबा नानक कांड के सम्बन्ध में भी उन्होंने अग्नि-स्तर की जांच के आदेश दिये हैं। अब वे अपनी और अपने पुत्र की जिन्दगी के लिये खतरा बताकर जनता की सहानुभूति प्राप्त करना चाहते हैं और केन्द्रीय सरकार को बेवकूफ बनाना चाहते हैं। यह उनकी एक नई चाल है।

हमारी मांग है कि बरनाला सरकार को तुरन्त बर्खास्त करके पंजाब की रक्षा की जावे।

सम्पादक के नाम पत्र

तीन प्रश्न

श्रीमान् जी, सादर नमस्ते।

मेरे निम्नलिखित तीन प्रश्न हैं। विद्वान् पाठक अपने मतानुसार इनके उत्तर मुझे भेजें। उत्तरों का सारांश मैं सार्वदेशिक में प्रकाशनार्थ भेजूंगा।

प्रश्न नं० १—जड़ तत्त्व का धर्म परिणामी है। परिणाम क्रिया द्वारा होता है। इस प्रकार जड़ तत्त्व की सक्रियता स्वधर्मरूप है। तो फिर यह कैसे कहा जावे कि जड़ तत्त्व की सक्रियता चेतन तत्त्व की सन्निधि से है?

प्रश्न नं० २—सम्प्रज्ञात समाधि में स्वस्थिति होने पर आत्मा की प्रवृत्ति परमात्मस्थिति की ओर होने की क्यों होती है?

प्रश्न नं० ३—प्रलय काल में महत्तत्व नहीं होता, क्योंकि प्रकृति साम्यावस्था में होती है। फिर प्रलय काल में बद्ध जीवों के साथ सूक्ष्म व कारण की कल्पना किस प्रकार सिद्ध होती है?

मेरे अपने विचार उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर में हैं। मैं अपने विचारों की पुष्टि विद्वज्जनों के विचारों से करना चाहता हूं।

भवदीय
धर्मजित् जिज्ञासु
४३-४१, स्मार्ट स्ट्रीट
फ्लोशिंग, एन० वाई०-११३५५
(यू० एस० ए०)

शंका समाधान

श्रीमान् जी, कृपया स्पष्टीकरण दें कि (१) साप्ताहिक सत्संगों या यज्ञादि कर्मों में प्रत्येक मन्त्र के साथ 'ओ३म्' लगाया जाये या उन्हीं मन्त्रों के साथ जिनमें ऋषि दयानन्द ने लगाया है (संस्कार विधि मे)। यह विवादास्पद प्रश्न है। कृपया धर्मार्य सभा से निर्णय करायें।

(२) अन्तरिक्ष आदि स्थलों पर क्षं का उच्चारण किया जाये या 'अन्तरिक्षम्' का (३) सूर्यास्त के उपरांत रात्रि प्रारम्भ हो जाने के बाद क्या हवन नहीं करना चाहिए या कर सकते हैं?

—राममूर्ति शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज रामगंज भाटा, बरास्ता कोटा (राज०)

दक्षिण भारत में वैदिक धर्म का प्रचार

कुछ समय पूर्व तक दक्षिण भारत मे आर्यसमाज द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार बहुत ही सीमित क्षेत्र में था। प्रसन्नता की बात है कि अब धीरे धीरे इस कार्य में अच्छी प्रगति हो रही है। इसका श्रेय दक्षिण भारत में आर्यसमाज के संयोजक महात्मा नारायणस्वामी क्रान्तिकारी को है, जो बहुत उत्साह और लगन के साथ वहां के हरिजन-बहुल गांवों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। वे जगह-जगह हवन-यज्ञ का आयोजन करके जनता को वैदिक धर्म की विशेषताओं से अवगत कराते हैं। उनके प्रवचनो से प्रभावित होकर अनेक ईसाई और मुसलमान वैदिक धर्म को अंगीकार कर रहे हैं। अगस्त १९८९ में १७ ईसाई और ११ मुसलमान शुद्ध होकर वैदिक धर्म के अनुयायी बने।

[illegible]

मौरिशस यात्रा

पंडित चन्द्रसेन विश्वप्रेमी पिछले २०१ जून से मौरिशस की प्रचारयात्रा पर हैं। आप एक अच्छे भजनोपदेशक हैं।

मौरिशस में अब तक आप हिन्दू परिषद्, भोजपुरी संस्थान, आर्य सभा, ग्रांबे आर्यसमाज, डार्विन वैदिक स्कूल, दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कालेज आदि स्थानों पर अपने भजनोपदेशों के माध्यम से वैदिक धर्म का सन्देश सुना चुके हैं।

अतीत में आप ट्रिनीडाड, गुयाना, हालैंड, सूरीनाम आदि में वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके हैं। आप विश्व हिन्दू परिषद् के भी सदस्य हैं।

मौरिशस में आर्यसभा की मारफत उनसे सम्पर्क किया जा सकता है।

फरीदाबाद जिला आर्य महासम्मेलन

आर्यसमाज पलवल नगर के तत्त्वावधान में फरीदाबाद जिला-स्तरीय विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन २६, २७, २८ सितम्बर (शुक्रवार, शनिवार, रविवार) को किया जा रहा है।

सम्मेलन में आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान्, संन्यासीगण, राष्ट्रनेता और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस विशाल आर्य महासम्मेलन के मुख्य आकर्षण वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन और विशाल शोभा यात्रा होंगे।

२१ ईसाई परिवार पुनः वैदिकधर्मी बने

मथुरा। समीपवर्ती ग्राम भीमनगर में २१ ईसाई परिवार शुद्ध करके वैदिकधर्मी बनाये गये। उन्हें यज्ञवेदी पर बिठाकर उनसे वेदमन्त्र बुलवाये गये। आचार्य प्रेमभिक्षु ने आशीर्वाद दिया।

वैदिक शिक्षा का महत्त्व और उसकी रक्षा के उपाय

-आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री-

वैदिक शिक्षा के महत्त्व के बारे में ऋषियों की मान्यता—

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम् । (मनुस्मृति १२ ९४)

अर्थात् पितृ यानी वैज्ञानिक, देव यानी विद्वान् तथा साधारण मनुष्यों के लिये भी वेद नेत्र समान है। वेदज्ञान के बिना मनुष्यों की वही दशा हो जाती है जो किसी नेत्रहीन व्यक्ति की होती है, तात्पर्य यह है कि वेद शिक्षा से शून्य मनुष्य स्वयं अपना मार्ग को प्रशस्त नहीं कर सकते, वे परावलम्बी हो जाते हैं और पग पग पर ठोकरें खाते हैं। जब मार्ग बताने वाला स्वयं ही अन्धा होता है फिर इनकी स्थिति और भी दयनीय होती है। आजकल के वैज्ञानिक वेदज्ञान से शून्य हैं, इसी कारण इनके चाहते हुए या नहीं चाहते हुए भी इनसे टैक्नालोजी-रूपी भस्मासुर उत्पन्न हुआ है। इकालाजिकल डिजास्टर और न्यूक्लियर होलोकास्ट इनकी ही देन हैं। यदि ये वैज्ञानिक वैदिक शिक्षा पाते तो परमपिता परमेश्वर की प्रजा की रक्षा के उपाय सोचते, दानव शक्ति को जन्म नहीं देते।

विद्वानों की भी यही स्थिति है। वेदरूपी सूर्य की ज्योति को छोड़कर ये छोटे-मोटे अल्पज्ञ और सम्भ्रान्त पण्डितों के पुस्तकरूपी सितारों के प्रकाश में चलते हैं संसाररूपी इस घनघोर जंगल में इनका कोई लाभ नहीं होता। दुनिया में नाना मत मतान्तर और सम्प्रदायवाद बढ़ने का यही कारण है। फिर साधारण मनुष्य बस अन्धों के पीछे चलने वाले बन जाते हैं। इसका फल—

> या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः ।
> सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः ॥
>
> (मनुस्मृति)

अर्थात् जो धर्मग्रन्थ, संविधान, कानून-कायदे आदि की पुस्तकें वेदानुकूल नहीं हैं और धूर्त, स्वार्थी, नास्तिकादि लोगों से लिखी गई हैं, उन्हें मानकर चलने से किसी का भी कल्याण नहीं। उलटा ये सब मनुष्य जाति को अन्धकार में ले जाने वाले हैं दुःखसागर में डुबाने वाले हैं।

हम लोगों ने वेदानुकूल स्मृति ग्रन्थ मनुधर्म शास्त्रादि को छोड़ दिया है। स्वार्थी, नास्तिक और अल्पबुद्धि लोगों द्वारा बनाये गये संविधान और उनकी कानून एवं न्याय-व्यवस्था को स्वीकार किया है, इसके फलस्वरूप आज देश में न कोई राष्ट्रीय धर्म है न कोई राष्ट्रीय नीति है। धूर्त, चोर, डाकू, अत्याचारी, दुराचारी कानून-कायदों से डरते ही नहीं, इस लिये हिंसा, अत्याचार, दुराचार आदि बढ़ते जा रहे हैं और देश का भविष्य कोई आशाजनक नहीं है, क्योंकि—

> सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च ।
> सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति ॥
>
> (मनुस्मृति १२-१००)

अर्थात् देश की सुरक्षा, शासन, न्याय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध उन्हीं लोगों के हाथों में रहने चाहिये जो वेदशास्त्रों के ज्ञाता हों। यह वचन बहुत प्राचीन है, लेकिन कुछ साल पूर्व [illegible] के एक सभा में कहा था कि हमारे सैनिक [illegible] हो [illegible]", क्योंकि अब युद्ध करने के तौर तरीके बदल गये हैं। अब जो युद्ध हो रहे हैं वे साइकोलाजिकल हैं। इसलिये सेना के लोगों को ज्यादा समझदार होने की आवश्यकता है [illegible] इलेक्ट्रानिक और परमाणु अस्त्रों का युग है, यदि सेना के लोग धार्मिक और नीतिमान् न हों, तो ये प्रजा के रक्षक नहीं, भक्षक बन सकते हैं।

वैदिक राष्ट्रधर्म की जानकारी के अभाव में ही आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत तनाव है। [illegible] की बैठक में कोई किसी की [illegible] कोई किसी पर [illegible] दूसरे को मारने का अवसर देख रहे हैं, राष्ट्रीय स्तर पर,

(आर्यसमाज बम्बई द्वारा वेद सप्ताह के अवसर पर रविवार २४ अगस्त १९८६ को प्रस्तुत लेख के लेखक की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर विट्ठलभाई पटेल रोड, गिरगांव में, सम्पन्न वेद सम्मेलन की प्रस्तावना)।

पंजाब की समस्या, नागालैंड की समस्या आदि का कारण भी यही है कि सरकार चलाने वाले लोगों को वैदिक शिक्षा नहीं मिली।

सन् १९०६ में अमेरिका के फेडरल कोर्ट में एक फैसला दिया था ऋग्वेद के आधार पर। लन्दन में कुछ वर्ष पूर्व वहीं के कुछ दार्शनिक लोगों ने मिलकर वैदिक दर्शन को सर्वश्रेष्ठ माना और उसके प्रचारार्थ सेंट जेम्स संस्कृत माध्यम पाठशाला की स्थापना की। दो वर्ष पूर्व निर्गुट राष्ट्रों के सम्मेलन का उपसंहार करते हुए [illegible] के प्रतिनिधि ने "संगच्छध्वं संवदध्वम्" इस ऋग्वेदीय सूक्त का बहुत गौरव के साथ पाठ किया था।

भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश चन्द्रचूड़ जी ने कुछ वर्ष पूर्व पूने में एक भाषण में कहा था कि हमारे देश की बिगड़ती हुई स्थिति का यही कारण है कि हम लोग वेद मार्ग से हट रहे हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि वैदिक शिक्षा के महत्त्व को मानने वाले केवल रूढ़िवादी हिन्दू या आर्यसमाजी ही नहीं हैं, अपितु विश्व के बड़े मनीषी लोग भी इस बात को स्वीकार करते हैं। लेकिन दुःख की बात यह है कि आम तौर पर सत्ता में बैठे हुए लोग वेद-शास्त्रों की बातें करने में लज्जा अनुभव करते हैं, जो हमारे राजदूत बनकर या प्रतिनिधि बनकर विदेशों में जाते हैं, उन्हें भारतीय अध्यात्म और सांस्कृतिक परम्परा के मूल आधार वेद-शास्त्रों का कोई ज्ञान नहीं होता। मैं अंग्रेजों के अपने बनाये गये दस्तावेजों के आधार पर कह रहा हूं कि १९वीं सदी के मध्यकाल में अंग्रेजों ने हमारे देश में अपने देश की शिक्षा पद्धति का बीज बोया और देशभर में स्कूलों और कालेजों की स्थापना हुई। उसका उद्देश्य था अंग्रेजों के कोर्ट-कचहरियों में काम करने वाले चपरासियों और क्लर्कों को पैदा करना भारतीय भाषा, भारतीय सांस्कृतिक आध्यात्मिक परम्परा को नष्ट करना, देशभक्ति को समाप्त करना, अंग्रेजों की स्तुति करने वालों और देशद्रोहियों को पैदा करना तथा भारत को सदा के लिये गुलामी में रखना इसी के परिणामस्वरूप हमारी देशी शिक्षा-प्रणाली समाप्त हो गई, अंग्रेजों के यहां आने से पूर्व हमारी अपनी सुन्दर शिक्षा प्रणाली यहां जारी थी। गांव गांव में पाठशालायें थीं, शिक्षा स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी, निःशुल्क थी, न कोई जाति भेद, न कोई प्रान्त भेद था। इस सुन्दर व्यवस्था के कारण ही हमारे देश में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात होने से पूर्व साक्षरता का प्रमाण आज की अपेक्षा बहुत अधिक था, लोग अधिक सभ्य और सुशील थे। (क्रमशः)

सावधानी की आवश्यकता

—राजर्षि राजा रणंजय सिंह, अमेठी, भूतपूर्व प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित और उनकी उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र होने से परोपकारी पत्र का महत्व वास्तविक है। उसमें प्राय विद्वत्तापूर्ण लेखों का समावेश रहता है परन्तु अब जनवरी मास से उसके आवरण पृष्ठ पर परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' दृष्टिगोचर नहीं हो रहा। ऐसा क्यों? यह समझ में नहीं आ रहा।

आर्यसमाज के स्थापना काल से आर्यसमाज के सभी ग्रन्थों, पत्रों आदि में परमेश्वर का यह परमपावन नाम अवश्य हुआ करता था और इसी ओ३म् से यह प्रमाणित हो जाता था कि यह आर्यसामाजिक साहित्य है। दुर्भाग्य की बात है कि नवजीवन के संचार करने वाले आर्यसमाज में भी अब घुन घुसता जा रहा है। आर्यसमाज के इस प्रथम नियम का परोक्ष रूप से विरोध होना आरम्भ हो गया है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

जिस प्रकार आजकल के शिक्षित युवकों के सिरों से शिखा का लोप हो रहा है उसी प्रकार परमेश्वर के इस पवित्र नाम 'ओ३म्' का भी लोप होने लगा है।

दिल्ली का सुप्रसिद्ध आर्य पत्र 'सम्राट्' है। यह गवेषणापूर्ण उत्तमोत्तम लेखों से सुसज्जित रहता है परन्तु उसमें भी प्रारम्भ में 'ओ३म्' की आवश्यकता स्यात् नहीं समझी जाती। उसके संस्थापक आर्यसमाज के धुरन्धर विद्वान् स्वनामधन्य श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती थे, जो सेना में रहते हुए भी निर्भीकता से वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे और जब लोक सभा की सदस्यता के लिए खड़े हुए तब हाथ में 'ओ३म्' की ध्वजा लिए हुए चलते थे जिस पर चुनाव याचिका होने पर भी डट रहे और विजयी हुए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मुखपत्र है 'आर्यजगत्'। उस पर सदैव 'ओ३म्' रहा करता था। एक बार थोड़े समय के लिए वह ओ३म् से शून्य दृष्टिगोचर हुआ, तब सुयोग्य सम्पादक जी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि ओ३म् का ब्लाक घिस गया था, अत दूसरा बनवाया जा रहा है और ब्लाक के ठीक हो जाने पर उस पर पूर्ववत् आदि में 'ओ३म्' अंकित रहने लगा है।

इस प्रकार के आलस्य अथवा प्रमाद के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। नित्य कर्मों पर ही विचार किया जाये तो प्रत्यक्ष है कि उनका समुचित पालन नहीं हो रहा। पंच महायज्ञों में सर्वप्रथम है ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सन्ध्या। आज कितने ही आर्य बन्धु ऐसे हैं जो सन्ध्योपासन करते ही नहीं। कितने ही ऐसे हैं जो करते तो हैं परन्तु मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण नहीं करते। इसके अतिरिक्त यह भी खेद का विषय है कि सन्ध्योपासनादि के जो ग्रन्थ अथवा गुटके छपते हैं उनमें प्राय मुद्रण त्रुटियां रहती हैं। कई ऐसे हैं जो सुस्पष्ट तथा सुन्दर छपे हैं परन्तु महर्षि दयानन्द द्वारा वैदिक सन्ध्या से भिन्न रूप में दृष्टिगत होते हैं। सन्ध्योपासन के उपस्थान के तीसरे मन्त्र में से अन्तिम शब्द स्वाहा निकाल दिया गया है। ऐसा यदि किसी साधारण पुस्तक में छपा हो तब चाहे उसे नगण्य माना जाये परन्तु यदि दिल्ली के सुविख्यात आर्यसाहित्य के प्रकाशक के यहां से मुद्रित आर्य सत्संग गुटका में उक्त मन्त्र 'स्वाहा' से रहित हो और सार्वदेशिक धर्मार्य सभा से स्वीकृत आधार पर हो, साथ ही मन्त्र की संख्या यजु० ७।४२ छपी हो, तो आश्चर्य होता है। यजुर्वेद के ७वें अध्याय के बयालीसवें मन्त्र में तो अन्त में स्वाहा है। हां, यजुर्वेद के तेरहवें अध्याय में जो चित्रं देवानामुदगादनीकम् मन्त्र है उसका ऋषि भिन्न है और उसके अन्त में 'स्वाहा' शब्द नहीं है। क्या सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की विद्वन्मण्डली ने उसे रखकर स्वाहा शब्द का परित्याग उचित समझा है?

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा को मन्त्र बदलने की अनधिकार चेष्टा करनी ही थी तो मन्त्र की संख्या क्यों नहीं रहने दी? क्या इतना भी ध्यान में नहीं आया? कहां तक लिखा जाये? आर्यसमाज के उन नियमों में जहां प्रत्येक आर्य के लिए संस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) का जानना अनिवार्य लिखा है, अब वही छपने लगा है—संस्कृत अथवा आर्य भाषा। बाल-वृद्ध और अध्ययन में कोई भेद न हो। जहां संस्कृत और आर्य भाषा दोनों भाषाओं का ज्ञान आवश्यक था अब संस्कृत अथवा आर्य भाषा लिखकर दोनों भाषाओं में से किसी एक भाषा का ज्ञान आवश्यक निरूपित कर दिया गया। स्वामी दयानन्द जहां दोनों भाषाओं का ज्ञान परमावश्यक समझते थे, वहीं उनके अनुयायी जब ऐसा करने लगे तो क्या इसे मान्य जा सकता है? क्या यह खेद जनक नहीं? संस्कृत तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी में से किसी एक के ज्ञान का अभाव और उसका अनादर नहीं है?

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में देश-विदेश के सुयोग्य आर्य विद्वान सम्मिलित हुए थे और अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ था। समझा जाता था कि अब आर्यसमाज में पुनः नई चेतना जागृत होगी। आर्यसमाज अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ेगा किन्तु खेद की बात यह हुई कि अजमेर से ही कतिपय मतभेद प्रकट होने लगे। खचाखच भरे हुए विशाल पण्डाल में वेद सम्मेलन के शुभावसर पर बहुत-से वैदिक विद्वान् अपने-अपने विचार प्रकट करने के निमित्त मंच पर विराजमान थे। उसी समय एक महान् वैदिक विद्वान् माने जाने वाले आचार्य जी द्वारा ऐसी बाधा डाली गई कि वेद सम्मेलन वहीं ठप्प हो गया और मुख्य विषय वेद न रहकर झगड़ा हो गया। निर्वाण शताब्दी समारोह में निर्वाण शब्द पर ही आक्षेपयुक्त विवाद खड़ा हो गया। अनेक स्थानों पर निर्वाण शब्द के स्थान पर बलिदान शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। इतना ही नहीं, यहां शोभायात्रा में सम्मिलित जन-समूह की संख्या पांच लाख छप रही थी, उसकी आलोचना करते हुए यह कहा जाने लगा कि उपर्युक्त संख्या पच्चीस सहस्र से अधिक नहीं थी। कहीं-कहीं और भी कम बताई गई। वस्तु यह भी व्यर्थ ही एक विवादास्पद विषय बन गया। समूह की गणना तो किसी ने की भी नहीं थी। लगभग दस लाख आर्य बन्धुओं को देखते हुए तथा पन्द्रह किलोमीटर की लम्बाई में शोभायात्रा को देखते हुए यही अनुमान लगाया गया कि संख्या पांच लाख से कम न रही होगी।

अभिप्राय यह है कि हम आर्यजन भ्रान्ति के चक्र में कहां से कहां चले जा रहे हैं। छोटी छोटी बातों पर विवाद प्रारम्भ हो रहे हैं। यदि यही क्रम रहा तो हम अपने उच्च उद्देश्य में कैसे सफल होंगे? स्वामी जी ने कितने बड़े, क्रान्तिकारी, देश हितकारी और परोपकारी संगठन का निर्माण किया था, जो इस युग में अद्वितीय था। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य ही संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। नम्र निवेदन है कि उपर्युक्त प्रश्नों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके कर्तव्य पथ पर आरूढ़ रहें और तन मन-धन से सत्य सनातन वैदिक धर्म का विश्व में प्रचार और प्रसार करके वास्तविक शांति की स्थापना करें।

पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस स्थान-स्थान पर आयोजन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश पर १५ अगस्त को देशभर में पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस मनाया गया। स्थान स्थान पर सभायें हुईं और जुलूस निकाले गये। सभाओं में सार्वदेशिक सभा द्वारा भेजे गये प्रस्ताव स्वीकृत करके सरकार को भेजे गये। (ये प्रस्ताव 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित हो चुके हैं।) दिवस मनाने वाली कुछ आर्य समाजों और संस्थाओं के नाम पिछले अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं। शेष नाम नीचे दिये जा रहे हैं—

आर्यसमाज विकासनगर, देहरादून, आर्यसमाज बड़ी एक्सेली, जहीराबाद, जिला मेदक, आर्यसमाज महात्मा गांधी मार्ग, आर्यनगर, सतना, आर्यसमाज पाचगांव जिला रायगढ़, आर्यसमाज सुभाषनगर, बरेली, आर्यसमाज अंडाल, आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर, आर्यसमाज पूने, आर्यसमाज सामाना (जिला पटियाला), आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ, आर्यसमाज सरवा, आर्यसमाज बक्सर, आर्यसमाज शाहापुर, आर्यसमाज देगलूर (जिला नान्देड़), आर्यसमाज, मेरठ शहर, आर्य स्त्री-समाज, मेरठ शहर, वैश्य कसोधन समाज, माटुंगा, बम्बई, आर्यसमाज आनन्दबाग, दुर्गाकुंड, वाराणसी, आर्यसमाज धार, आर्यसमाज अमरोहा, जिला मुरादाबाद, आर्यसमाज मीरजापुर, आर्यसमाज धमतरी (म० प्र०), आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बरेली, आर्यसमाज बेतिया, आर्यसमाज कलकत्ता, आर्यसमाज बोधी, आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली, आर्यसमाज आर्याबाद (हैदराबाद) आर्यसमाज मोहरतगढ़ (जिला बस्ती), आर्यसमाज फतहपुर पूठी, आर्यसमाज भागलपुर।

साहित्य समीक्षा

(१) भगवानों का देश

(२) अहा! यह कैसा स्वराज्य है?

(३) भगवती के चमत्कार

तीनों पुस्तकों के लेखक—वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति, प्रकाशक लाला रामचन्द्र अनाजवाले, धर्मार्थ ट्रस्ट ४०१८, नया बाजार, दिल्ली-११०००६; पृष्ठ संख्या क्रमशः ४८, ३२ और ३२; मूल्य क्रमशः तीन रुपये, एक रुपया और एक रुपया।

पुस्तकों के विषय नाम से ही स्पष्ट हैं। "भगवानों का देश" में नित नये जन्म ले रहे भगवानों की खबर ली गई है। रजनीश जैसे लोगों ने भगवान् की पदवी धारण करके भारत का ही नहीं, सारे संसार का जो अहित किया है, उसे देखते हुए पुस्तक सामयिक और उपयोगी बन पड़ी है।

"अहा! यह कैसा स्वराज्य है?" पुस्तक में बताया गया है कि स्वराज्य मिलने के बाद दुर्व्यसन तेजी से बढ़े हैं—कुरीतियां कम नहीं हुईं। पुस्तक युवकों के [illegible] है।

"भगवतियों के चमत्कार" में शेरांवाली माता और सन्तोषी माता के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास और पाखण्ड पर [illegible] उठाया गया है।

तीनों पुस्तकें प्रश्नोत्तर शैली में हैं।

ऐसी पुस्तकों का व्यापक तौर पर प्रचार होना चाहिए, ताकि अन्धकार में भटक रही और भोगविलास में फंसी जनता (विशेषतः युवा पीढ़ी) को मार्ग-दर्शन मिल सके।

—सत्यपाल शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

व्यायाम शिक्षक की आवश्यकता

आर्य वीर दल हिसार के लिये व्यायाम शिक्षक चाहिये, जो हिसार में स्थायी रूप से रहकर हिसार की शाखाओं को नियमित रूप से चला सके और बौद्धिक भी दे सके। उचित वेतन के साथ स्थान, बिजली और पानी मुफ्त होंगे। तुरन्त अपने खर्चे से मिलें या पत्रव्यवहार करें।

—सीताराम आर्य

बालसमन्द रोड, हिसार

आर्य नगर (हिसार) में आर्य वीर दल की स्थापना

२० अगस्त को आर्यनगर (जिला हिसार) में विधिवत् आर्य वीर दल की स्थापना के लिए एक समारोह श्री रामजीलाल शास्त्री के सभापतित्व में हुआ। यज्ञ के बाद १० युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया और प्रतिज्ञा की कि "हम आर्य श्रेष्ठ बनेंगे।" उसके बाद श्री रामजीलाल शास्त्री, प० रविदत्त शास्त्री और मुख्याध्यापक श्री चतरसिंह ने नवयुवकों को आशीर्वाद दिया। श्री सीताराम आर्य ने यज्ञोपवीत के बारे में समझाया और आर्यवीर दल की शाखा के लिए लड़कों को प्रेरित किया। इस समय इस शाखा में ६० नवयुवक हैं।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल ही शिरोमणि सभा का युवा संगठन

मुझे अनेक पत्रों और मौखिक समाचारों से ज्ञात हुआ है कि अनेक स्वयंभू नेता अलग नया संगठन बनाने की घोषणा कर रहे हैं। मेरा ऐसे बन्धुओं से अनुरोध है कि वे वर्तमान में उभरती समस्याओं से निबटने के लिये सार्वदेशिक सभा द्वारा मान्यताप्राप्त सार्वदेशिक आर्यवीर दल को ही अपना हार्दिक सहयोग दें और संगठन को मजबूत बनाकर अपने कर्तव्य का पालन करें। आर्यसमाज के समस्त पदाधिकारियों से मेरा निवेदन है कि आर्यसमाज मन्दिर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अतिरिक्त अन्य किसी स्वतन्त्र युवा संगठन की शाखा नहीं लगाई जा सकती। सभामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री साप्ताहिक सार्वदेशिक के एक पिछले अंक में इस आशय की स्पष्ट घोषणा कर चुके हैं कि आर्यवीर दल ही सभा का अपना संगठन है।

—बालदिवाकर हंस
प्रधान संचालक, सार्वदेशिक
आर्यवीर दल, नई दिल्ली

डी.ए.-वी. फार्मेसी, जालंधर की दवाइयों का दिल्ली में नया डिपो

दिल्ली की जनता की सुविधा के लिए डी० ए०-वी० फार्मेसी, जालन्धर ने जो एक सौ वर्ष पुराना आयुर्वेदिक दवाइयों का मशहूर संस्थान है, अपना एक नया डिपो डी० ए०-वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली में खोल दिया है, जिससे दिल्ली की जनता अब आयुर्वेदिक औषधियां यहां से प्राप्त कर सकेगी। इस डिपो में होलसेल दवाइयों की बिक्री भी होगी। दिल्ली के जो कैमिस्ट तथा आयुर्वेदिक दवा विक्रेता यहां से दवाइयां लेना चाहें, वे इस सम्बन्ध में उपर्युक्त पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। यहां के दूरभाष नं०—५२७८८७, ५२४३०४, ७३४६१४ हैं। हमने यह भी निश्चय किया है कि जो दवाई विक्रेता इस सबंध में फोन से सूचना देंगे, हमारा एजेंट उनसे सम्पर्क कर आर्डर ले लेगा।

मुझे पूरी आशा है कि दिल्ली की जनता इससे पूरा-पूरा लाभ उठायेगी।

—रामनाथ सहगल
सचिव, डी०ए०-वी० फार्मेसी डिपो, डी०ए०-वी०
कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली-११००५५

स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और भारत सरकार के स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना प्रभाग, गृह मन्त्रालय ने हैदराबाद में आर्यसमाज के सत्याग्रह १९३८-३९ के लिए आवेदनपत्रों के पहुँचने की अन्तिम तारीख ३० जून ८६ निश्चित की थी। इस सभा के कार्यालय में (सूचना नहीं मिलने के आधार पर) ३० जून के बाद भी अपने आवेदनपत्र कुछ सत्याग्रही भेज रहे हैं। ऐसे आवेदकों को भविष्य में अपने आवेदन निर्धारित फार्म की दो प्रतियों पर भारत सरकार के गृह मन्त्रालय (स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना प्रभाग), लोकनायक भवन, नई दिल्ली को भेजने चाहिए।

इस सभा द्वारा अतीत मे दिये गये बहुत-से भाइयों के प्रशस्तिपत्र पाकिस्तान, सिंध या पूर्वी बंगाल में रह गये या नष्ट हो गये अथवा कुछ के खो भी गये हैं। ऐसे आवेदकों को कारावास के प्रमाणपत्र पाने के लिए जेलों से गिरफ्तारी, तबादले और रिहाई की तारीख के साथ पिछले व वर्तमान पते और पिता के नाम के साथ जेलों के सुपरिटेंडेंटों को आवेदन करना चाहिए। इस प्रकार के बहुत-से प्रमाणपत्र ठीक सूचना भेजने वालों को डाक द्वारा भी मिल गये हैं। स्मरणपत्र भेजना भी उचित होगा ५-३-३९ से १७-८-३९ तक कारावास भुगतने वाले गुरुकुल वृन्दावन के एक सत्याग्रही नित्यानन्द का आवेदनपत्र भारत सरकार द्वारा संभवतः इसलिए खारिज कर दिया गया कि उन्होंने रिहाई का कारण (निजाम से समझौता) नहीं लिखा था।

मोटे अनुमान से ८० प्रतिशत और कहीं-कहीं के जत्थे के सत प्रतिशत सत्याग्रही दिवंगत हो चुके हैं। ऐसी दशा में उनकी पत्नियों को पेंशन दिलाने के लिए समाजों को सहायता करनी चाहिए। स्मरण रहे कि अधिकतर केन्द्र शासित क्षेत्रों (यथा दिल्ली) में केवल ५-६ मास कारावास वालों को पेंशन देने का प्रावधान है। भिन्न राज्यों में सजा की अवधि और पेंशन की मात्रा अलग-अलग हैं। उनके बारे में आवेदकों को सम्बन्धित राज्य सरकारों से जानकारी लेनी चाहिए।

जेलों का प्रमाणपत्र पाने के लिए स्वयं आवेदकों को ही प्रार्थनापत्र भेज कर प्रयत्न करना होगा। इस सभा में पेंशन की प्रगति जानने के बारे में बहुत-से पत्र आते हैं। सभा इस बारे में पूरा प्रयत्न कर रही है, परन्तु २३ जुलाई १९८६ को लोकसभा में बताया गया था कि वहां ७२००० से अधिक आवेदनपत्र निबटाने के लिए शेष थे, जिन्हें १५ अगस्त तक निबटाने के लिए लोकसभा को आश्वासन दिया गया। अभी उनकी स्थिति भी स्पष्ट नहीं है। हैदराबाद के आर्यसमाज के आन्दोलन (३८-३९) का मामला तो उसके बाद का है। इस विषय में जो भी प्रगति होगी, उसकी सूचना पत्रों में दे दी जायेगी। प्रत्येक को अलग-अलग उत्तर देना मुश्किल है।

ताजा सूचना के अनुसार विचाराधीन आवेदन पत्रों की संख्या ६१ हजार तक पहुंची। इनमें से केवल दो हजार के लिए पेंशन स्वीकृत हुई है अर्थात् स्वीकृत आवेदनों की संख्या तीन प्रतिशत से भी कम है। सरकार आर्य सत्याग्रहियों के लिए ६ महीने के कारावास की शर्त में ढील देने को तैयार नहीं, इसलिए आर्य सत्याग्रहियों के स्वीकृत आवेदनों का प्रतिशत भी कम होने की आशंका है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

खुर्जा में शुद्धि समारोह

खुर्जा १७ अगस्त को अग्रवाल धर्मशाला में जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में शुद्धि समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें ३ मुसलमानों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। यज्ञवेदी पर जिले भर के आर्यसमाजों के हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय के सामने जिलामन्त्री श्री धर्मेन्द्र शास्त्री ने गुरुमन्त्र की दीक्षा दी और यज्ञोपवीत धारण कराया। सभा के प्रधान श्री शिवनन्ददास आर्य ने यजुर्वेद भाष्य भेंट किया। "वैदिक धर्म की जय" के नारों से आकाश गूंज उठा।

वेद प्रचार सप्ताह

स्थान-स्थान पर आयोजन

१६ अगस्त को श्रावणी थी और २७ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी। प्रतिवर्ष देश-भर के ही नहीं, विश्वभर के आर्य बन्धु इन दोनों पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाते हैं। इन्हीं दिनों हैदराबाद सत्याग्रह विजय दिवस और वेदप्रचार सप्ताह मनाये जाते हैं। इस वर्ष भी ये सब आयोजन हुए। अबतक निम्नलिखित आर्यसमाजों और संस्थाओं द्वारा आयोजित समारोहों के समाचार प्राप्त हुए हैं—

आर्यसमाज भुवनेश्वर, आर्यसमाज त्रिवेणी (पटना), आर्यसमाज आजमगढ़, आर्यसमाज केराकत (जौनपुर), आर्य प्रतिनिधि सभा असम, गुवाहाटी, आर्यसमाज होशंगाबाद, आर्यसमाज भंडारा, आर्यसमाज चन्डीस (अलीगढ़), आर्यसमाज पंखा रोड, सी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली, आर्यसमाज काशी शास्त्रार्थ स्मृतिस्थल, आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, श्रीमद्दयानन्द वैदिक मिशन, रायगढ़ (म० प्र०), आर्यसमाज गरोठ (मन्दसौर), आर्यसमाज चेम्बूर (बम्बई), वैदिक महायज्ञ समिति, विश्रामपुर (पलामू), गुरुकुल होशंगाबाद, आर्यसमाज साबली आदि पंचपुरी (गढ़वाल), आर्यसमाज अजमेर, आर्यसमाज मेरठ, आर्यसमाज बीकानेर, आर्यसमाज अमेठी, आर्यसमाज एटा, आर्यसमाज शामली, आर्यसमाज कासगंज, बैतूल, आर्यसमाज बदायूं, आर्यसमाज गोसाईगंज (कानपुर), आर्यसमाज हर्षवर्धननगर (लाल बंगला), कानपुर और आर्यसमाज बहराइच।

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्यसमाज हरदोई—प्रधान-श्री स्वयंवरसिंह सोमवंशी, मंत्री-श्री रमेशचन्द्रलाल और कोषाध्यक्ष-डा० वंशगोपाल।

—आर्यसमाज अर्बन ऐस्टेट, गुड़गांव—प्रधान-श्री ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री-श्री सोमदत्त आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री डी०बी० आनन्द।

दान जगत् का प्रकृत धर्म है

किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?
गिरने से उसको सभाल क्यो रोक नही लेते हैं ?
ऋतु के बाद फलो का रुकना डालो का सड़ना है
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है।
सरिता देती वारि कि पाकर उसे सुपूरित घन हो
बरसे मेघ भरे फिर सरिता उदित नया जीवन हो।
आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है
जो देता जितना बदले मे उतना ही पाता है।
जहा कही है ज्योति जगत् मे जहा कहा उजियाला
वहा खड़ा है कोई अतिम मोल चुकाने वाला।
दान जगत् का प्रकृत धर्म है मनुज व्यर्थ डरता है
एक रोज तो हमे स्वय सब कुछ देना पडता है।
—रामधारीसिंह दिनकर

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पजाब जल रहा है। उत्पीडित आर्य हिन्दू जनता पजाब से निकल कर भिन्न भिन्न स्थानो पर सुरक्षा हेतु पहुँच रही है। आर्यसमाजो व सनातन धर्म सभाओ से निवेदन है कि पजाब से आई पीडित हिन्दू जनता को मन्दिरो स्कूलो मे ठहराकर उन्हे पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस सकटकालीन स्थिति मे तन मन धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता—　　　　भवदीय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा　　**स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**

३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान　　सभा प्रधान

नई दिल्ली २

पंजाब के पीड़ित हिन्दुओं की सहायता के लिए प्राप्त दान राशियां

आर्यसमाज रामगढवा जि० पूर्वी चम्पारण (बिहार)	११०)
आर्यसमाज कैराना मुजफ्फरनगर (उ० प्र)	५००)
आर्यसमाज एन० डी० ए० खडकवासला पुण-२३	२२२)
आर्यसमाज बगहा जि० मिर्जापुर (उ० प्र०)	१५०)
आर्यसमाज कटरा पो० मीरानपुर जि० शाहजहापुर (उ० प्र०)	१०१
श्री एस गुप्त मै० यू एस गुप्त एण्ड कम्पनी सोडा डीलर कुट्टगुडम जिला खम्माम (आ० प्र०)	१०१)
आर्यसमाज भजनगज अजमेर (राज)	१ १)
आर्यसमाज शक्तिनगर मिर्जापुर (उ० प्र०)	१०१
आर्यसमाज खडवा (म० प्र०)	१००
श्रीमती आशा सहाय द्वारा श्री डी० सहाय कलकत्ता	१००)
आर्यसमाज मोर्वी (सौराष्ट्र)	१००)
ब० क० सुव्वाराव तेलगू पडित होमसपेट पोचम्पूर कडवा आ प्र	५०)
उषा बुक एजेन्सी, जयपुर	५०)
जनकलाल गुप्त कलकत्ता	५०)
आर्यसमाज शाजापुर (म० प्र०)	५०)
आर्यसमाज कापारेटी	३५)
आई सी नारायण होलमपट (आ० प्र०)	३०)
शिव पारस आर्य जीतपुर (बिहार)	२५)
आर्यसमाज हस्तिनापुर (मेरठ)	२१)
रामचन्द्र आर्य, ग्राम केहरवाला श्रीगगानगर (राज०)	२१)
पुरुषोत्तम दीपचन्द दसरखड बुलडाणा (महा०)	२०)
डा० त्रिलोक नाथ गुप्त, लखनऊ	२०)
किशन राव पटेल नारायण, खेड	११)
प्रकाश आर्य, बारमल (आ० प्र०)	१०)
आर्यसमाज देगम मण्डी, गुलबर्गा	१०)
सर्वयोग	१०८६

सभी दानियों का धन्यवाद।

जयपुर में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

स्वामी आनन्दबोध समारम्भ करेंगे

कृष्णपोल बाजार जयपुर का १९ वा वार्षिकोत्सव जयपुर के सुप्रसिद्ध गोविन्द देव जी के मन्दिर के पास स्थित जय निवास बाग मे १३ सितम्बर से २० सितम्बर तक धूम धाम से मनाया जा रहा है। इस सम्मेलन के अवसर पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन भी आयोजित किया गया है जिसका समारम्भ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे। इसके अतिरिक्त तपोभूमि मथुरा के सम्पादक आचार्य प्रेमभिक्षु जी आचार्य आर्यभिक्षुजी तथा माता सावित्री देवी जी भी पधार रहे हैं।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के साथ साथ महिला सम्मेलन युवक सम्मेलन वेद सम्मेलन राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी आयोजित किये गये है।

बरनाला सरकार को अपदस्थ किया जाये

(पृष्ठ १ का शेष)

को आश्रय भी दे रहे है। यह भी समाचार मिला है कि केरल मे उग्रवादियो के लिए कुछ प्रशिक्षण केन्द्र खुले हैं जहा आधुनिक मारक यन्त्रो के उपयोग आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सभा इस सम्बन्ध मे एक समिति बना रही है जो सारा देश घूम और जनता के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करे।

सभा सरकार का ध्यान एक विशेष स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहती है। इस देश की राष्ट्रीय जाति हिन्दू यह समझने लगे हैं कि चन्द अल्पसख्यको को खुश करके उनके हितो को कुचला जा रहा है। ये अल्पसख्यक मजहब के नाम पर विशेष रूप से पनप रहे हैं। इनकी धमकियो के सामने सरकार भी झुकती जा रही है। देशहित की दृष्टि से यह ठीक नही। विदेशी जो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे हमारी स्पष्टोक्तियो को पसन्द नही करते प्रजातन्त्र के उसूलो की रक्षा के लिए हमारे अभियान को पसन्द नही करते और रगभेद नीति सम्बन्धी हमारे विरोध को सहन नही कर सकते परोक्ष रूप से इन अल्पसख्यको के हौसले बढा रहे है। इस कारण देश के सामने एक खतरनाक स्थिति पैदा हो चुकी है। सिख उग्रवादियो के साथ साथ मुस्लिम साम्प्रदायिकता कब व्यापक रूप से सिर उठायेगी कहा नही जा सकता हो सकता है कि देश की हालत इतनी बिगड जाये कि सरकार देश के कुछ भागो मे धारा ३५२ के तहत इमरजेंसी की घोषणा करने को बाध्य हो जाये।

सभा का यह सुझाव है कि देश जिन परिस्थितियो मे से गुजर रहा है उन्हे दृष्टि मे रखते हुए देश के विपक्षी दल तथा सत्तारूढ दल आपसी विवादो को भूल जाये। देशहित पर दृष्टि रखते हुए अब मान ले कुछ काल के लिये वोट की राजनीति छोडकर और एक होकर इस खतरे का मुकाबला करने के लिए डट जाये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सरकार से निम्नलिखित माग करती है—

(१) सरकार बरनाला की पथिक सरकार को तत्काल पदच्युत करे। एक मत निरपेक्ष (सैक्युलर) राज्य मे पथिक सरकार के लिए कोई स्थान नही। (बरनाला सरकार की गतिविधियो से इस बात का सकेत मिलता है कि वे पजाब मे जनता की तकलीफो को सदा बनाये रखना चाहते हैं)

(२) जैसलमेर से कश्मीर तक सुरक्षा पट्टी का निर्माण अविलम्ब करे। और जहा जहा इसकी जरूरत हो वहा वहा भी ऐसी सुरक्षा पट्टी बनाई जाये।

(३) उग्रवादी जो पजाब मे गिरफ्तार होते है उन्हे देश के अन्य स्थानो मे भेजा जाये। इन पर मुकद्दमे चलाने के लिए विशेष ट्रिब्यूनल बनाये जायें जो पजाब से बाहर ही काम करे।

जोधपुर जेल मे स्थित सैनिक भगोडो की रिहाई की माग देशद्रोह के समान ही है। ऐसी माग करने वालो पर कडी निगाह रखी जाये और देशद्रोह मे सहयोग देने वालों के साथ जिस ढग का बरताव होना चाहिए वैसा ही बरताव किया जाये।

१००० आर्य वीर शताब्दी समारोह में भाग लेंगे

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की अध्यक्षता मे आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश समिति की बैठक हुई। निश्चय हुआ कि १००० आर्य वीर गणवेश मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह में सम्मिलित हो। यह भी निश्चय हुआ कि १५ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक एक शिविर का आयोजन आचार्य देवव्रत (उपप्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) के सरक्षण मे किया जाये।

महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक बालदिवाकर हस की अध्यक्षता मे करने का फैसला किया गया।

सभा का शताब्दी समारोह १७ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक डी ए वी कालेज, लखनऊ के प्रागण मे होगा।

आर्यसमाजो के निर्वाचन

—आर्यसमाज पड्वाल (आर्यपुरा), जिला बुलन्दशहर—प्रधान-श्री रुस्तमसिंह आर्य, मन्त्री-श्री सजयकुमार आर्य और कोषाध्यक्ष श्री मनोहरलाल माहेश्वरी।

—आर्यसमाज नरकटियागज (प० चम्पारण)—प्रधान श्री विद्याभास्कर आर्य, मन्त्री-श्री शम्भुशरण आर्य और कोषाध्यक्ष-श्री ओम्प्रकाश आर्य।

—आर्यसमाज सागर—प्रधान श्री कृष्णदेव कोहली, मन्त्री-श्री बद्रीप्रसाद मुशी और कोषाध्यक्ष-श्री बद्रीनारायण नेमा।

—आर्यकुमार सभा, गुरुकुल आमसेना, कालाहांडी—प्रधान-श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, मन्त्री-श्री शान्तिप्रिय शास्त्री और कोषाध्यक्ष-श्री कुंजदेव आर्य।

—आर्यसमाज बिजनौर—प्रधान-श्री विधुशेखर, मन्त्री-श्री सुरेश चन्द्र गुप्त और कोषाध्यक्ष-श्री हेमराजकान्त दुबे।

—आर्यसमाज तेडा (मेरठ)—प्रधान-श्री रामवक्ष मोघा, मन्त्री-श्री वीरेन्द्रसिंह और कोषाध्यक्ष-श्री विश्वबन्धु पंवार।

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द स्मारक, कर्णवास (बुलन्दशहर)—प्रधान-श्री गेंदालाल वर्मा, मन्त्री-श्री रूपसिंह वर्मा और कोषाध्यक्ष-श्री राजवीरसिंह।

साप्ताहिक सार्वदेशिक के ग्राहकों से निवेदन

कुछ ग्राहको का दो तीन वर्ष का शुल्क बकाया है। उन्हे रिमाइडर द्वारा भी समय-समय पर सूचित किया जा चुका है। वे शीघ्रतिशीघ्र शुल्क भेज दे। शुल्क प्राप्त न होने पर हमे विवश होकर सार्वदेशिक भेजना बन्द करना पड़ेगा जो मैं नही चाहता। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक आर्यसमाज मे सार्वदेशिक पत्र जाये। सभी आर्य बन्धुओ को आर्यसमाज की गतिविधियो की जानकारी के लिए यह पत्र पढना चाहिए।

शुल्क भेजते समय मनीआर्डर कूपन पर अपनी ग्राहक सख्या और पूरा पता लिखें।

बार बार शुल्क भेजने की दुविधा से बचने के लिए आप एक बार ही २५० रुपये भेजकर पत्र के आजीवन सदस्य बन सकते है।

मुझे आशा है कि सभी ग्राहक शीघ्र सार्वदेशिक पत्र का शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करेगे।

नोट—चैक अथवा ड्राफ्ट "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से भेजे।

वार्षिक शुल्क २० रु०
आजीवन शुल्क २५० रु०

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ४१] | आश्विन कृ० ९ स० २०४३ | रविवार २८ सितम्बर १९८६

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को शीघ्र सम्मान पेन्शन दी जाये

स्वामी आनन्दबोध की राष्ट्रपति से मांग : ज्ञापन भेंट

"मैं आपकी मांग गृह मन्त्रालय तक पहुंचा दूंगा" : राष्ट्रपति का आश्वासन

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

नई दिल्ली, १९ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह (१९३८-३९) के सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना के अन्तर्गत पेन्शन दिलाने की मांग के सिलसिले में आज राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से मिले।

स्वामी जी ने राष्ट्रपति महोदय को बताया कि इस सत्याग्रह में लगभग २८ हजार सत्याग्रही जेल गये थे, जिनमें से कुछ ही सत्याग्रही बचे हैं—कुछ ही विधवायें जीवित हैं।

स्वामी जी ने अनुरोध किया कि सार्वदेशिक सभा ने पेन्शन की सिफारिश करने के लिए पांच सदस्यों की जो समिति गठित की है, सरकार उसे मान्यता प्रदान करे, ताकि ४७ वर्ष बाद मिल रही पेन्शन के लिए अपना दावा सिद्ध करने के लिए सत्याग्रहियों को भटकना न पड़े।

याद रहे कि सरकार ने पेन्शन के लिए आवेदनपत्र देने वाले सत्याग्रहियों से न्यायालय के फैसले की प्रति, जेल में रहने का प्रमाण-पत्र और जेल में साथ रहने वाले किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की साक्षी मांगी है।

स्वामी जी ने राष्ट्रपति महोदय को इस आशय का एक ज्ञापन भी दिया, जिसका पूर्ण पाठ नीचे दिया जा रहा है—

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी,

सेवा में सम्मानपूर्वक नमस्ते।

आपकी सेवा में आकर एक आवश्यक प्रश्न की ओर आपका ध्यान तुरन्त आकर्षित कर रहा हूं। संक्षेप में विवरण इस प्रकार है—

भू पू० हैदराबाद रियासत में १९३८-३९ में मौलिक एवं धार्मिक अधिकारों के प्रश्न पर इस सभा के तत्त्वावधान में मध्य प्रान्त विधान सभा के तत्कालीन स्पीकर स्व० श्री घनश्यामसिंह गुप्त के निर्देशन और प्रथम डिक्टेटर एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा नारायणस्वामी के नेतृत्व में सत्याग्रह चला था, जिसमें देश और विदेश के सभी भागों से सभी वर्गों के लगभग २८,००० सत्याग्रही कारावास में रहे। उनमें से बहुत-से जेल में और बाहर शहीद हो गये। अब उनमें से मुश्किल से १५ प्रतिशत जीवित हैं। कुछ की विधवायें और परिवार बाकी हैं।

इस सभा के लगातार प्रयत्नों और व्यापक जन समर्थन के फलस्वरूप ४७ साल बाद भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने इसमें भाग लेने वालों को अधिसूचना स० ८ ३२ ८४ एफ०एफ० (पी) दिनांक ३० सितम्बर १९८५ द्वारा स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान योजना के तहत स्वीकृति प्रदान की। बाद में एक घोषणा द्वारा ३० जून १९८६ तक निर्धारित फार्मों पर भारत सरकार ने केन्द्रीय और राज्य सरकारों को आवेदनपत्र भेजने की घोषणा की।

इस सभा ने गृह मन्त्रालय को निर्धारित तारीख ३० जून १९८६ तक १९१७ आवेदन पत्रों की सूचियां भेज दी। बाद में संयुक्त सचिव श्री अरुणकुमार के अनुरोध पर निम्नलिखित व्यक्तियोंकी एक कमेटी गठित करने के लिए इस सभा ने दिनांक १२।५-८६ को अपना प्रस्ताव भेजा—

१—श्री रामगोपाल शालवाले (प्रधान सार्वदेशिक सभा)
(वर्तमान नाम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)
२—श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (हैदराबाद)
३—प्रो० शेरसिंह (हरयाणा)
४—पं० शिवकुमार शास्त्री (उत्तरप्रदेश)
५—श्री सोमनाथ मरवाह (दिल्ली)

(शेष पृष्ठ २ पर)

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

दान जगत् का प्रकृत धर्म है

किस पर करते कृपा वृक्ष यदि अपना फल देते हैं ?
गिरने से उसको सभाल क्यो रोक नही लेते हैं ?
ऋतु के बाद फलो का रुकना डालो का सडना है,
मोह दिखाना देय वस्तु पर आत्मघात करना है।
सरिता देती वारि कि पाकर उसे सुपूरित घन हो,
बरसे मेघ भरे फिर सरिता उदित नया जीवन हो।
आत्मदान के साथ जगज्जीवन का ऋजु नाता है,
जो देता जितना बदले मे उतना ही पाता है।
जहा कही है ज्योति जगत् मे जहा कही उजियाला,
वहा खडा है कोई अतिम मोल चुकाने वाला।
दान जगत् का प्रकृत धर्म है मनुज व्यर्थ डरता है,
एक रोज तो हमे स्वय सब कुछ देना पडता है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

पंजाब हिन्दू सहायता कोष में दान दें : आर्य जनता से अपील

आज पजाब जल रहा है। उत्पीडित आर्य-हिन्दू जनता पजाब से निकल कर भिन्न-भिन्न स्थानो पर सुरक्षा हेतु पहुँच रही है। आर्यसमाजो व सनातन धर्म सभाओ से निवेदन है कि प जाब से आई पीडित हिन्दू जनता को मन्दिरो, स्कूलो मे ठहराकर उन्हे पूरी सुविधा दें।

हिन्दू जनता से अपील है कि वह इस सकटकालीन स्थिति मे तन, मन धन से सहयोग करे।

धन और सामान भेजने का पता—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-२

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

पजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष के लिए प्राप्त दान राशियां

दिनाक २७ अगस्त ८६ को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (प्रधान सार्व देशिक आ प्रति सभा) को आयसमाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर द्वारा पजाब हिन्दू सहायता कोष के लिए आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर के माध्यम से ७५१ रु० दिया गया जिसका विवरण इस प्रकार है—

सर्वश्री होशियार सिह	११४)	इन्द्रदेव नागरथ	५)
नानकचन्द आय	२१)	माता कृष्णादेवी वर्मा	५)
दुर्गेश चौधरी	२१)	मोतीलाल	५)
आर० के० गौड	२१)	अजय गुप्त	५)
हरवश लाल	११)	दिनेश कुमार	५)
हितेश आनन्द	११)	सुरेन्द्र कुमार शुक्ल	५)
रणवीर सिह	१)	शकर लाल	५)
रामेश्वरलाल स्वामी	११	आर० के० कपूर	५)
तेजनारायण शर्मा	११)	प्यारे लाल आर्य	५)
ओमप्रकाश तिवारी	११)	सीताराम आर्य	५)
बलवीर सिह	११)	रामजी आय	५)
भूषण महाजन	११)	हरिश्चन्द्र आय	५)
बाबूलाल	११)	शिवपूजन आर्य	५)
विश्वमित्र	११)	रणधीर सिह	५)
ओमप्रकाश दुग्गल	११)	मख्यार सिह	५)
ध्रुव कुमार	११)	पुरुषोत्तम शमा	५)
इन्द्रजीत गुप्त	१०)	सत्यपाल	५)
प्रकाश प्रिन्टस	१०)	प्रवीण कुमार	५)
रामरतन शमा	१०)	जे० के० सेठी	५)
पीताम्बर कुमार शमा	१०)	सत्यनारायण प्रसाद	५)
सियाराम	१०)	गिरधारी लाल	५)
रामवल्लभ	१०)	रामलाल वत्रा	५)
मुन्नीलाल सिह	५)	किशन लाल साहनी	२)
सजीवन लाल शमा	५)	आयसमाज हरजेन्द्र नगर	२५०)
बनारसी लाल गुप्त	५)	सर्वयोग	७५१)
राजकुमार सचदेव	५)		

सभी दानदाताओ का धन्यवाद।

खडवा मे शिक्षक दिवस

खडवा। ५ सितम्बर को महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति के अन्तर्गत चल रही विभिन्न शिक्षण सस्थाओ की ओर से शिक्षक दिवस मनाया गया। जिला पचायत परिषद् के अध्यक्ष डा० कालूराम गुर्जर ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि हम अपनी सस्कृति और सभ्यता को छोड रहे हैं, जबकि विदेशो मे हमारी सस्कृति को अपनाया जा रहा है। मुख्य अतिथि विधायक श्रीमती नन्दा मण्डलोई कि आर्यसमाज खडवा सभी क्षेत्रो मे कारगर कार्य कर रहा है -यह देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर श्री रामचन्द्र आर्य, कैलाशचन्द जी पालीवाल, कुमारी दीक्षा मण्डलोई कुमारी मनीषा जोशी कुमारी सुधा मण्डलोई और श्रीमती सुधा व्यास ने शिक्षक दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री मोहनचन्द जी मास्टर, हरप्रसाद जी सहगल (बुरहानपुर) डा० जगदीशचन्द चोरे, बृजकिशोर सकरगाय श्रीमती रमा चोर, और कुमारी के० सत्यवती नायडू को नारियल और शाल भेटकर उनका स्वागत किया गया।

सम्मान पेन्शन देन की मांग

(पृष्ठ १ का शेष)

उक्त कमेटी की सिफारिश पर इसमे भाग लेने वाले आवेदकों को पेंशन जारी करने का निणय हुआ था।

हमे खेद है कि इस मामले मे न तो इस सभा द्वारा सुझाई गई समिति के गठन को अभी तक गृह मन्त्रालय से स्वीकृति दी है और न ही ये मामले निबटाये गये हैं

सत्याग्रही व उनकी विधवाए तेजी से कम होती जा रही हैं।

मेरा आप से विनम्र अनुरोध है कि आप गृह मन्त्रालय से उक्त कमेटी को शीघ्र मान्यता देने का निर्देश दे ताकि जो लोग अब तक बचे हुए हैं, उन्हे वृद्धावस्था मे कुछ सहायता मिल सके।

आशा है कि आप तुरन्त उचित कारंवाई कर अनुगृहीत करगे।

भवदीय
आनन्दबोध सरस्वती

राष्ट्रपति ने स्वामी जी को आश्वासन दिया कि वे इस माग को शीघ्र ही गृह मन्त्रालय तक पहुचाकर इस मामले को निपटाने का प्रयत्न करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का शताब्दी समारोह : ठोस और आकर्षक कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का गठन सन् १८८६ में हुआ था। १७ अक्टूबर से २० अक्टूबर तक उसका शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। सभा का ध्येय वाक्य है उरु: ज्योतिः चक्रथुः आर्याय (आर्यों को विपुल प्रकाश दो)। सभा का सारा कार्य इसी ध्येय की पूर्ति के लिए है। इस सभा का इतिहास स्वर्णिम है। महात्मा नारायणस्वामी सदृश महापुरुष वर्षों इस सभा के साथ जुड़े रहे। इस सभा के भवन का नाम भी उन्हीं के नाम पर रखा गया है। समारोह लखनऊ के डी० ए०-वी० कालेज के प्रांगण में होगा। वहां स्वर्गीय प्रकाशवीर शास्त्री के नाम पर नगर बसा किया जा रहा है। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी करेंगे और स्वागताध्यक्ष होंगे सुप्रसिद्ध आर्य नेता राजर्षि रणंजयसिंह जी।

आजकल सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज हैं और मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी। वे अपनी पूरी टीमके साथ समारोह को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। समारोह की सूचनायें इस पत्र के माध्यम से आर्यजगत् को मिलती रहेंगी।

सभा के अधिकारियों ने इस अवसर पर कुछ ठोस कार्य करने का संकल्प लिया है। इनमें से कुछ की रूपरेखा नीचे दी जा रही है—

शताब्दी के आकर्षण

(१) सभा का सौ वर्ष का इतिहास और भव्य स्मारिका का प्रकाशन।

(२) योग साधना शिविर का आयोजन तथा आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का प्रशिक्षण।

(३) शिक्षणसंस्थाओं के बच्चों की वैदिक प्रश्नोत्तरी, सामूहिक गान, शुद्ध मन्त्रपाठ आदि की प्रतियोगिताओं द्वारा बच्चों मे वैदिक संस्कारों का भरना।

(४) आर्य वीर दलों एवं आर्य कुमार सभाओ के विविध कार्यक्रम।

(५) विशाल एवं भव्य शोभायात्रा।

(६) महर्षि लंगर (निःशुल्क भोजन के लिए)

(७) बृहद् यज्ञ का आयोजन।

(८) राज्य में हाई स्कूल और इन्टर मे प्रथम, द्वितीय और तृतीय आये छात्रों को पुरस्कृत करना।

(९) वृद्ध सम्मान समारोह (१०० वयोवृद्धों का सम्मान)।

(१०) वृद्ध आर्य विद्वानों का अभिनन्दन।

(११) गोरक्षा, मद्यनिषेध और राष्ट्र रक्षा सम्मेलन।

(१२) आर्यमित्र के विशेषांक का विमोचन एवं इतिहास प्रकाशन।

(१३) उच्च कोटि के सस्ते साहित्य के बिक्री केन्द्र की स्थापना।

(१४) एक ऐसी निधि की स्थापना जिसके ब्याज से वेद के प्रचार और प्रसार का कार्य सुचारु रूप से चल सके।

(१५) ग्रामीण क्षेत्रों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं एवं चिकित्सालयों अर्थात् दयानन्द सेवा आश्रमों की स्थापना।

(१६) नये भवन का शिलान्यास।

इन सब आयोजनों के लिए लगभग २० लाख रुपये की आवश्यकता है। आर्यजन धन संग्रह में जुट जायें तो यह धन तुरन्त एकत्रित हो सकता है।

ऊपर लिखे ध्येयों की पूर्ति के लिये हम आर्य जनो, आर्य वीरों और आर्य कुमारो का आह्वान करते हैं।

२, ५, १०, २०, ५० और १०० रु० के नोट और विवरण साहित्य प्रकाशित कर दिया गया है। आर्य बन्धु रसीदें लेकर धन और अन्न संग्रह की ओर विशेष रूप से लगें।

आइए, सब मिलकर वेद का प्रचार और प्रसार घर-घर और झोंपड़ी-झोंपड़ी तक पहुँचायें, ताकि भारत समृद्ध बने, संसार सुखी हो और मानवता की रक्षा हो।

आर्य वीर लखनऊ पहुंचने की तैयारी करें

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमोत्तर प्रदेश की समस्त शाखाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह १७ अक्तूबर से २० अक्तूबर तक डी० ए०-वी० कालेज, लखनऊ के विशाल प्रागण मे मनाया जा रहा है।

प्रान्त के सभी शाखा सचालकों से अनुरोध किया जाता है कि लखनऊ शताब्दी समारोह मे केवल १००० आर्य वीर गणवेश में भाग लेंगे अतः अपनी-अपनी शाखाओ के प्रशिक्षित आर्य वीरो की सूची तैयार कर अपने नगर नायको अथवा आर्यसमाज के प्रधानों या मन्त्रियों द्वारा श्री बालकृष्ण आर्य, संचालक, पश्चिमोत्तर प्रदेशीय उत्तर प्रदेश के आदेशानुसार श्री जयनारायण आर्य, जयगंज, अलीगढ को भेज दें, जिससे आवास, भोजन आदि की व्यवस्था जिलेवार की जा सके। विशेष जानकारी श्री जयनारायण आर्य, जयगंज, अलीगढ़ से प्राप्त करें।

खाकी निक्कर, सफेद कमीज, ब्राउन पसीट, सैण्डो बनियान, काला अण्डरवीयर, लाल लंगोट, बिस्तर, पहिनने के कपड़े आदि साथ लाना आवश्यक है। पीतल के बैज, टोपी, लाठी आदि समारोह स्थल पर उपलब्ध होंगे। शोभा यात्रा के लिये नगर व जिलों के बैनर साथ लायें।

शताब्दी शिविर में भाग लेनेवाले आर्य वीरों को प्रमाणपत्र दिये जायेंगे।

—वेदप्रकाश गुप्त, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, पश्चिमोत्तर प्रदेश

यह क्या मामला है ?

यह कोई रहस्य की बात नही कि कई अकाली नेताओ का खालिस्तानी आतकवादियो से सीधा सम्बन्ध और सम्पर्क है। वे लोग इन मन्त्रियो के घरो मे आकर ठहरते हैं और जब वे गिरफ्तार हो जाते हैं तो मन्त्री इन्हें रिहा कराने का सिरतोड प्रयास भी करते हैं।

इन्ही दिनो एक और समाचार चण्डीगढ से आया है जिससे सरकारी हल्को मे काफी परेशानी उत्पन्न हो गई है। कहा जाता है कि चडीगढ की पुलिस ने दो आतकवादियो को गिरफ्तार किया है और इनकी जाच से पता चला है कि ये लोग ऐसी कार मे घूमते फिरे हैं, जिस पर केवल वह नम्बर था जिसे केवल अति विशिष्ट व्यक्ति ही प्रयोग करते है। जिसका तात्पर्य यह हुआ कि यह कार जहा भी चाहे बडी आसानी से जा सकती थी। पुलिस वालो का कहना है कि एक बार यह कार मुख्यमन्त्री के घर मे भी देखी गई थी। जब मुख्यमन्त्री से इस बारे मे पूछा गया तो आपने कहा कि जिस आतकवादी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है वह किसी समय इनके बेटे का मित्र था और इसके कहने पर आपने इसको विशिष्ट व्यक्ति का कार नम्बर दिला दिया। बाद में पता चला कि ये आतकवादी मुख्यमन्त्री के बेटे का अपहरण करके इसे बधक बनाने का इरादा रखते थे। लेकिन इनकी समय पर गिरफ्तारी ने इन लोगो का प्लान असफल करके रख दिया।

इस सन्दर्भ मे एक और दिलचस्प किन्तु परेशान करने वाली खबर भी प्रकाशित हुई है। वह यह कि मुख्यमन्त्री के इस पुत्र ने पुलिस पर दबाव डाला कि वह एक आतकवादी को छोड दे। किसी प्रकार यह समाचार चडीगढ के एक पत्रकार को मिल गया, जिसने इसे अपने समाचारपत्र में प्रकाशित कर दिया। इस पर पुलिस ने प्रयास किया कि इस समाचारपत्र की सब कापियां जब्त कर ले। जब मुख्यमन्त्री से इसके बारे मे पूछा गया तो इन्होने उत्तर दे दिया कि आपको इसका कुछ पता नही और आपने आज्ञा दे दी कि जो समाचारपत्र जब्त किये गये इन्हे वापस कर दें।

मुख्यमन्त्री ने एक सवाददाता सम्मेलन मे इस बात का खण्डन किया कि आपके खानदान के किसी सदस्य का किसी आतकवादी से कोई सम्पर्क है। आपने कहा कि आपके विरोधी आपको बदनाम करने के लिए ऐसी कहानिया फैला रहे हैं। ये आतकवादी आपकी और आपके बेटे की हत्या करने के प्लान बना रहे थे। आपके विरोधियो ने इस समाचार का आपके विरुद्ध प्रयोग करना शुरू कर दिया है।

इस सारे समाचार मे कितनी सच्चाई है और कितना झूठ यह तो वे ही जान सकते हैं जो इस की जाच करेंगे। किन्तु एक बात तो स्पष्ट है कि उच्च घराने के कई सिखो का भी इन आतकवादियो से सम्पर्क है। फिर यह है कि इन आतकवादियो के भी तो अपने धडे हैं और एक दूसरे के सदस्यो से वे वही व्यवहार कर रहे हैं जो अपने शत्रुओ से करते हैं। क्या आश्चर्य कि मुख्यमन्त्री के बेटे गगनदीप सिंह का सम्बन्ध ऐसे ही धडे से हो जो मुख्यमन्त्री के बेटे द्वारा अपना उल्लू सीधा करना चाहता हो।

—के० नरेन्द्र

हिन्दू पुलिस--मुस्लिम पुलिस

अग्रेजो के समय रेलवे स्टेशनो पर प्राय हिन्दू पानी, मुस्लिम पानी, हिन्दू रोटी, मुस्लिम रोटी की आवाजें आया करती थीं। हमारे धर्मनिरपेक्ष कांग्रेसी अधिकारी भी अग्रेजो के इस प्लान का आदर करते दिखते हैं जो अभी तक इनमे यह नैतिक साहस नही हुआ। तो भी यह कहा जा सकता है कि वे इस मार्ग पर चल चुके हैं। कहावत है कि जहन्नुम का रास्ता नेक इरादों से भरा पडा है। हमारा धर्मनिरपेक्ष शासक भी पूरे नेक इरादों से इस देश की अखडता और एकता की जडें खोखली करने मे सलग्न है। भारतीय मुसलमान कब से यह माग कर रहे हैं कि मुसलमानो को इनकी आबादी के अनुसार प्रतिनिधित्व दिया जाये। मुसलमान भारत में दस-ग्यारह प्रतिशत के लगभग हैं और पिछले वर्षों मे इनकी भर्ती का परिणाम यह हुआ है कि आज इसका प्रतिशत ९ तक पहुच चुका है और सरकार इसे बढाकर ग्यारह प्रतिशत से भी अधिक करना चाहती है ताकि यह इन्हे कह सके कि वह इनसे खुले दिल से पेश आ रही है, इसलिये वे कांग्रेस का साथ न छोडें। इसे इस बात से सरोकार नही कि जो मुसलमान पुलिस मे भर्ती हैं वे इस दृष्टिकोण से किये गये हो कि इन्होने मुसलमानो की रक्षा करनी है तो वे कितनी निष्पक्षता से व्यवहार कर सकेंगे। मालूम हो कि आज तक मुसलमानों ने शिकायत जरूर की है कि पुलिस में चू कि मुसलमान नही, इसलिये इनसे अन्याय होता है लेकिन सरकार ने इस आरोप की निष्पक्षतापूर्वक जाच करने की आवश्यकता नही समझी और चू कि मुसलमानो को सात्वना देना इसका उद्देश्य था इसलिये इनकी शिकायत को ठीक मान लिया गया और इनकी अधिक भर्ती का आदेश दे दिया गया।

इस सन्दर्भ मे एक और बात का पता चला है कि यह भर्ती केन्द्रीय पुलिस फोर्स मे हुई है। राज्य सरकारें केन्द्र के इस आदेश पर अधिक ध्यान देने को तैयार नही क्योकि वे एक तो यह मानने को तैयार नही कि हिन्दू पुलिस वाले साम्प्रदायिक भावना से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं और दूसरा इसलिये भी कि सुयोग्य मुसलमान भर्ती होने के लिए आते ही नही। प्राय मुस्लिम बच्चे आठवी या नवी कक्षा के बाद अपनी पढाई छोड देते हैं, इसलिये सरकार इस सुझाव पर भी विचार कर रही है कि मुस्लिम उम्मीदवारो की स्थिति मे इस मापदण्ड को कम कर दिया जाये। राज्य सरकारें इस बात से भी परेशान हैं कि राज्यो की जनता इस नये परीक्षण के विरुद्ध है। केन्द्र को मुसलमानो के वोटो की आवश्यकता है इसलिये वह इस केन्द्रीय विभाग मे भी साम्प्रदायिक विष फैला रही है। इसका प्रमाण यह है कि महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री चव्हाण साहब ने घोषणा की है कि इनकी पुलिस के विरुद्ध आज तक साम्प्रदायिक भावना से प्रभावित होकर व्यवहार करने का कभी कोई प्रमाण नहीं मिला। फिर भी वे अल्पसख्यको को सन्तुष्ट करने के लिये अधिक मुसलमानों को पुलिस मे भर्ती करने का इरादा रखते हैं।

—के० नरेन्द्र

साहित्य समीक्षा

कल्पपुरुष दयानन्द, लेखक स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
प्रकाशक : वेदसंस्थान, सी २२, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-११००२७, पृष्ठ संख्या सोलह,
मूल्य एक रुपया पचास पैसे।

स्वर्गीय स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने विभिन्न प्रसगों मे स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे मे जो कुछ लिखा, उसमे से कुछ चुने हुए अश प्रस्तुत पुस्तिका मे सकलित हैं।

पुस्तिका मे प्रारम्भ से अन्त तक स्वामी जी की भक्तिभावपूर्ण शब्दों में प्रशसा है। 'विदेह' जी लिखते हैं—दयानन्द दयानन्द ही था। दयानन्द विशेषणातीत था। एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं—कृष्ण के बाद दयानन्द ही वह युग पुरुष है, जो कल्पपुरुष है।

ये दो नमूने हमने दिये हैं। 'विदेह' जी की भावनाओ का पूर्ण परिचय प्राप्त करने के लिए पुस्तिका पढ़िये। एक अच्छी पुस्तिका—आपके पुस्तकालय की शोभा।

—सत्यपाल शास्त्री

पितृयज्ञ और श्राद्ध

—आचार्य दिनेशचन्द्र पाराशर—

वेद और आर्ष ग्रन्थों तथा धर्मशास्त्रों में पितृयज्ञ और श्राद्धकी क्या विशेषताए' हैं,किनको किस प्रकार करना चाहिए,आदि का उपदेश कियाहै। महर्षि दयानन्द सरस्वती पितृयज्ञ और श्राद्ध का वर्णन करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं—"पितृ यज्ञ अर्थात् जिसमे देव जो विद्वान्, ऋषि जो पढ़ने-पढ़ाने हारे, पितर जो माता पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परम योगियों की सेवा करनो। पितृयज्ञ के दो भेद हैं—एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् श्रत् सत्य का नाम है, श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते तच्छ्राद्धम" जिस क्रिया से सत्य को ग्रहण किया जाये उसको 'श्रद्धा' और जो श्रद्धा से कर्म किया जाये उसका नाम श्राद्ध है। और 'तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्' जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें, उसका नाम 'तर्पण' है। परन्तु यह जीवितों के लिये है, मृतकों के लिये नहो।' यजुर्वेद के १९वें अध्याय में मन्त्र ६५ का भाष्य करते हुए महर्षि लिखते हैं—'ये ब्रह्मचर्येण पूर्णविद्याभवन्ति ते विद्वत्सु विद्वांस पितृषु पितरश्च गण्यन्ते' भावार्थ—जो पूर्ण ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या वाले होते हैं वे विद्वानों में विद्वान् और पितरों मे पितर गिने जाते हैं। आगे मन्त्र ६६ के भाष्य में कहा—ये जनकादयो विद्या प्रापय्याऽविद्यां निवर्त्तयन्ति तेऽत्रा सर्वैस्सत्कर्त्तव्याः सन्तु ॥ भावार्थ—इसमे उपमालकार है। जो पिता आदि विद्या को प्राप्त कराके अविद्या का निवारण करते हैं, वे इस संसार में सब लोगों से सत्कार करने योग्य हों।

पञ्चमहायज्ञविधि में महर्षि पितर किसे कहते हैं, इस सम्बन्ध में लिखते हैं—

जो विद्वान् लोग मनुष्यों को ज्ञान-चक्षु देकर उनके अविद्यारूपी अन्धकार के नाश करने वाले हैं, उन्हें पितर कहते हैं।

सन्ध्या के मन्त्रों में मनसा परिक्रमा के दूसरे मन्त्र मे—दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः इत्यादि में पितर शब्द का अर्थ 'ज्ञानी लोग' महर्षि करते हैं, जो प्राय. पौराणिक लोग समझते हैं कि जिन पिता आदि की मृत्यु हो गई वे पितर कहलाते हैं। पितर जीवित होते हैं। वैसे भी पितरः शब्द पितृ शब्द का बहुवचन है।

महाभारत अनुशासन पर्व अ० ९९ में भीष्म जी कहते हैं—

यश्चैनमुत्पादयते यश्चैनं त्रायते भयात्।
यश्चास्य कुरुते वृत्ति सर्वे ते पितरस्त्रयः॥

जो जन्म देता है, जो भय से बचाता है तथा जो जीविका देता है—ये तीनों पितर—पिता कहलाते हैं।

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन च।
पयो मूल फलैर्वापि पितृणां प्रीतिमाहरन्॥ अ० ९३॥

पितरों (जीवित माता-पिता) को प्रसन्नता के लिये प्रतिदिन अन्न, जल, दूध अथवा फल-मूल द्वारा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करनी चाहिये। शतपथ में "विद्वांसो हि देवाः" ज्ञानी लोगों को—विद्वानों को देव कहा है। पितर कितने हैं? चाणक्य नीति में कहा है—

जनिता चोपनेता च यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृताः॥ अ० ५॥

जन्म देने वाला, यज्ञोपवीत आदि संस्कार कराने वाला, अध्यापक, अन्न देने वाला तथा भय मे बचाने वाला—ये पांच 'पितर'पिता के समान गिने जाते हैं। जीवित पितरों का ही श्राद्ध होता है, मृतकों का नहीं। उपदेश मञ्जरी में कहा है 'वेद विहित पितरों की सेवा-शुश्रूषा छोड़कर समुद्र, पहाड़, नदी और वृक्ष का तर्पण करना और इसे श्राद्ध मानना चना, यह पाखण्ड नहीं तो और क्या है? मरे हुए पितरों का खाना और किया हुआ श्राद्ध पितरों को पहुंचना ही असम्भव, वेद और युक्ति विरुद्ध होने से मिथ्या है॥

स०प्र०पंचम समुल्लास

यजुर्वेद के १९वें अध्याय के मन्त्र ३० का ऋषिवर का भाष्य यह है—भावार्थ—कोई भी मनुष्य अच्छी शिक्षा और श्रद्धा के बिना सत्य व्यवहारों को प्राप्त होवे और दुष्ट व्यवहारों को छोड़वे को समर्थ नहीं होता। यहां श्रद्धा का उपदेश दिया है। सबको श्रद्धा धारण करना उचित है। वेद ने कहा है—श्रद्धया आप्नोति दक्षिणाम्। श्रद्धा द्वारा उत्तम दक्षिणा-दीक्षा शिक्षा को प्राप्त करता है। श्रद्धा पूत सर्वत्र पवित्र होता है, महाभारत में भीष्म जी कहते हैं—जीवित माता-पितादि पालक वृद्धजनों को प्रसन्नता के लिये प्रतिदिन अन्न, जल, दूध या फल मूल के द्वारा श्राद्ध श्रद्धा पूर्वक खिलाना-पिलाना करना उचित है॥ अनु० ९७।९॥ महर्षि संस्कार विधि के अन्त्येष्टि संस्कार में लिखते हैं—'भस्मान्त शरीरम्' यजुर्वेद के मन्त्र के प्रमाण से स्पष्ट हो चुका कि दाह कर्म और अस्थि सञ्चयन से पृथक् मृतक के लिये दूसरा कोई भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। हां, यदि वह सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरे पीछे उनके सम्बन्धी वेद विद्या वेदों का धर्म का प्रचार, अनाथ पालन वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिये चाहे जितना धन प्रदान करें, बहुत अच्छी बात है।" ध्यान रहे कि दिवंगत आत्मा का सम्बन्ध उस परिवार से कुछ नहीं रहा तथा परिवार का उस आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। जो उनके उत्तम गुण कर्म स्वभाव विचार जीवन में थे, उन्हें जरूर धारण करें।

यह शरीर इस जीवन तक ही काम देता है, जब तक यह शरीर है तभी तक सम्बन्धादि हैं देहांत के पश्चात् वह सम्बन्ध नहीं रहता। पुनः प्रश्न हुआ। पन्द्रह दिन वर्ष-भर में श्राद्ध के निश्चित है, कभी किसी पितर का श्राद्ध करते हैं, कभी किसी का करते हैं, पितर लोग सूक्ष्म शरीर को धारण करके श्राद्ध के दिनों में आ जाते हैं और ब्राह्मणों के साथ ही भोजन किया करते हैं। यदि कभी पितृ लोक से पितर न भी आ सकें तो ब्राह्मणों को खिलाया हुआ भोजन उन्हें मिल जाता है।

उत्तर यह है। सुनिए और विचारिये—पितर नाम आत्मा या शरीर का नहीं, आत्मा और शरीर के विशेष सम्बन्ध का नाम है। फिर यह कहना कि पितर सूक्ष्म शरीर धारण कर भोजन करने आते हैं, सरासर हठ और अविवेक का परिचय देना है। बताओ कि बिना स्थूल शरीर के वे भोजन कर कैसे लेते हैं? क्या सूक्ष्म शरीर से भोजन करना सम्भव है? जब ब्राह्मणों के साथ भोजन करते हैं तब-

पितर खाते हैं या पहले ब्राह्मण खाते हैं ? यदि पहले ब्राह्मण खाते हैं तो पितर जूठ खाते हैं। यदि दोनों मिलकर खाते हैं तो एक दूसरे की जूठ खाते हैं। जूठ खाना स्वास्थ्य और सिद्धान्त दोनो दृष्टियो से निन्दनीय है। फिर साल-भर में पन्द्रह दिन ही क्यों निश्चित हैं ? क्या साढे ग्यारह महीने उन्हें भूख नहीं लगती ? क्या पन्द्रह दिन के भोजन से ही साल भर तक तृप्त बने रहते हैं ? क्या ऐसा हो सकता है ? यदि हो सकता है तो किसी मनुष्य को पन्द्रह दिन भोजन खिला साल भर तक बिना भोजन के जीवित रखता हुआ दिखाओ। पन्द्रह दिन भी कहा ? श्राद्ध के पन्द्रह दिन निश्चित हैं। इनमे भी एक दिन पितरों के परिवार वाले निकालते हैं। दूसरे यदि ब्राह्मणों को खिलाने से मृतक पितरो को भोजन पहुच जाता है तो भोजन करने पर ब्राह्मणों का पेट क्या भर जाता है। ब्राह्मणो को तो भोजन करने पर भी भूखा ही रहना चाहिये। जब उन्होंने भोजन पितरो को पहुचा दिया तो फिर उनका पेट कहा भरा ? श्राद्ध खाने वाले ब्राह्मणों से जरा यह पूछ लिया करो कि जिन पितरो को भोजन पहुचाना है, वे हैं कहा ? साथ ही वे रोगी हैं या तन्दुरुस्त हैं ? यदि वे रोगी ही हों तो फिर उन्हें हलवा, पूडी और खीर से क्या प्रयोजन है ? उन्हे कडवी दवा और मूग की दाल का पानी चाहिए। भारी भोजन से वे और अधिक रोगी हो जायेंगे।

जब किसी को यह पता नहीं कि मृत्यु के पश्चात पितर आत्मा किस योनि में गया है और किस अवस्था मे है तो खीर-पूडी ब्राह्मणों द्वारा भेजने का मतलब ही क्या है ? यदि श्राद्ध के दिनो मे किसी का पितर किसी योनि में स्वय ही सूक्ष्म शरीर से भोजन करने आये भी तो जिस योनि से आयेगा, उसकी तो मृत्यु हो जानी चाहिए। थोडा और विचारो कि एक आत्मा तत्वज्ञान प्राप्त करके मुक्त हो गया, उसे ससार के भोजन की क्या चिन्ता ? एक आत्मा कर्म वश शेर या भेडिया बना हुआ है, दूसरा विष्ठा या नाली का कीडा बना हुआ है, इन प्राणियो का हलुआ पूडी से क्या काम चलेगा ? प्रत्येक प्राणी का अपना भिन्न-भिन्न प्रकार का स्वादिष्ट भोजन है। सबका मनुष्य जैसा तो भोजन नहीं होता। देखो, यदि कोई आदमी किसी आदमी के पास पत्र डाल रहा हो, परन्तु उसका पता न जानता हो, सारा विषय लिख कर बिना पते का पत्र लेटर बक्स में डाल दे तो क्या वह उसकी अक्लमन्दी होगी और क्या वह पत्र उस आदमी के पास पहुच जायेगा। ऐसा मानना कोरा अन्धविश्वास है। एक व्यक्ति को खिलाने से यदि दूसरे व्यक्ति के पास भोजन पहुच जाता तो परदेश जाने वाले को भोजन बाधकर ले जाने की आवश्यकता ही क्या थी ? घर पर ब्राह्मणो को खिला दिया जाता परदेश जाने वाले का पेट स्वत भर जाता। अतएव मृतक पितरो का श्राद्ध करना बिलकुल व्यर्थ और अपने आपको धोखा देना है। पितर शब्द का अर्थ रक्षा करने वाला भी है। रक्षा वही कर सकता है, जो जीवित हो। जीवित ही स्वसन्तानो की सर्व प्रकार से रक्षा कर सकते हैं। मरने पर तो पितर ही नहीं रहता, क्योंकि पितर न तो आत्मा है और न शरीर है। आत्मा और शरीर के सयोग विशेष का नाम पितर है। श्राद्ध के दिनों को लोग कनागत या कर्णागत भी कहते हैं। एक पौराणिक गाथा है—सुवर्ण दान करने वाले कर्ण को स्वर्ग मे स्वर्ण ही मिला। जब उसकी भूख दूर न हुई तो उसने पन्द्रह दिन की छुट्टी ली और मर्त्य लोक मे आकर ब्राह्मणो को भोजन कराया। तब स्वर्ग मे उसे अन्न मिला। कर्ण के लौट कर आने से ही कनागत या कर्णागत नाम पड़ा। यह कथा सृष्टि क्रम के विरुद्ध होने से मिथ्या है, अपने कर्म का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है। रही दान और पुण्य हो जाने की बात। वह पात्र और कुपात्र को देखकर करें। जो काम बहाने बनाकर किया जाता है, उसका परिणाम शुभ नहीं निकलता। क्योंकि हृदय में सचाई न होने के कारण दान करने वाले की आत्मा पर अच्छा संस्कार नहीं पडता। जो मन में हो, वही वाणी पर हो तथा वैसा ही कर्म किया जाये, तब वह पुण्य का काम कहलाता है। बहाने से किया दान न दान है, और न पुण्य पुण्य है। अतः जीवितों की सेवा करो।

संस्मरण

स्वामी दयानन्द की प्रतिभा का एक नमूना

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास

बरेली मे मेरे मकान के पास वाले मकान मे एक पौराणिक विद्वान देवदत्त द्विवेदी रहते थे। जब मैं बहुत छोटा था तब वे अपने लडके को और मुझे अमरकोश रटाया करते थे। जब हम कुछ बडे हुए तब उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने स्वामी दयानन्द को देखा हुआ था और उनके कई शास्त्रार्थ उन्होने सुने थे। वे कहते थे कि बरेली मे उस समय अगद शास्त्री नाम का बहुत बडा विद्वान रहता था। जब स्वामी दयानन्द बरेली आये, तब अगद शास्त्री ने स्वामी दयानन्द को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। उन दिनो बरेली मे टाउन हाल मे शास्त्रार्थ हुआ करते थे। शास्त्रार्थ स्थल पर जब जनसमूह इकटठा हो गया तब अगद शास्त्री और स्वामी दयानन्द से कहा कि आज आपका पाला अगद शास्त्री से पडा है। मैं ५० प्रश्न लिखकर लाया हूँ। आप उनमे से एक का भी उत्तर नही दे सकते। स्वामी दयानन्द ने कहा कि अगद शास्त्री तुम अपने पचासो प्रश्न एक साथ सुना दो। मैं एक साथ सबका जबाव दे दूगा। अगद शास्त्री ने अपना कागज उठाया और पचासो प्रश्न सुनाये। स्वामी दयानन्द ने हस कर कहा कि अगद शास्त्री ये प्रश्न तुम्हारे हैं या किसी से लिखवा कर लाये हो ? अगद शास्त्री ने क्रोध मे भरकर कहा कि मैं पडित हूँ और ये मेरे है।

स्वामी जी ने कहा कि अगर ये प्रश्न तुम्हारे हैं तो कागज को अलग रखो और अपने पचासो प्रश्न मौखिक बोलो। अगद शास्त्री ने कहा कि मैं अपने कागज को पढकर ही पचासो प्रश्न बोल सकता हूँ। स्वामी दयानन्द ने कहा कि इसीलिय मैं कहता हूँ कि ये प्रश्न तुम्हारे नही तुम लिखवाकर लाये हो स्वामी जी ने कहा कि तुम अपना कागज अपने हाथ मे उठाओ और मैं पहले तुम्हारे प्रश्न सुनता हूँ फिर इकटठे सबके जवाब दूगा। अगद शास्त्री ने अपना कागज अपने हाथ मे उठाया और स्वामी दयानन्द ने पचासो प्रश्न जिस क्रम से लिखे हुए थे उसी क्रम से बोल दिये। अगद शास्त्री चकित हो गये। अपना कागज रखकर स्वामी दयानन्द के चरणो पर झुक गये—प्रणाम करने—और कहा कि मैंने तुम्हे मनुष्य समझ कर शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। तुम अवश्य ही किसी देवता के अवतार हो। इसलिए मैं तुमसे शास्त्रार्थ नही कर सकता। सारी जनता आश्चर्यचकित हो रही थी और सभा स्वामी दयानन्द की जय के नारा के साथ विसर्जित हुई। प० देवदत्त द्विवेदी ने मुझसे कहा कि मैंने यह सब दृश्य अपनी आखो से देखा। प० देवदत्त द्विवेदी की सुनाई गई यह घटना मुझे बचपन से आज तक स्मरण है। स्वामी दयानन्द योग की विभूति थे अत जिसने भी उन्हे अपनी आखो से देखा, वह उन पर मोहित था। इसी प्रकार एक-दो व्यक्ति और थे, जिन्होने स्वामी दयानन्द को देखा था। जब वे लोग स्वामी दयानन्द का वर्णन करते थे, तब उनकी आखों में आसू आ जाते थे।

महर्षि गुरुवर विरजानन्द जी के पुण्य संस्मरण-१

—राजवीर शास्त्री—

आश्विन बदि त्रयोदशी (तदनुसार पहली अक्टूबर बुधवार) को ब्रह्मर्षि गुरुवर स्वामी विरजानन्द दंडी की पुण्य तिथि है। उनका निधन आज से ११८ वर्ष पूर्व इस दिन हुआ था। इस अवसर पर पढ़िये तीन किस्तों में प्रकाशित होने वाला यह खोजपूर्ण लेख।

पंजाब के करतारपुर नामक नगरके समीप बेई नामक नदी के तट पर बसे गंगापुर नामक ग्राम में गुरुवर विरजानन्द जी का जन्म सारस्वत ब्राह्मण भारद्वाज गोत्री श्री नारायणदत्त शर्मा के घर संवत् १८३५ वि० के उत्तरार्ध में (पौष मास के लगभग) हुआ। आपके घर पर पौरोहित्य का कार्य होता था। बालक विरजानन्द के जन्म* की खोज अभी तक प्रकाश मे नहीं आई है। बालक की आंखें शीतला रोग के कारण बचपन में ही समाप्त हो गई थीं। ५ वर्ष की अवस्था में नेत्र ज्योति के विदा होने से बालक की प्राथमिक शिक्षा माता-पिता के सरक्षण में ही होती रही। बालक ने अपने पिता के सान्निध्य में संस्कृत भाषा का ज्ञान और सारवत नामक व्याकरण का अध्ययन किया। अतः संस्कृत भाषा में बोलने का अभ्यास अच्छी प्रकार हो गया था। बालक अभी १२वें वर्ष में ही था कि काल की क्रूर मति ने कुछ समय के अन्तर से माता-पिता को अपना ग्रास बना लिया और अनाथ बालक भाई-भावज के आश्रित रहकर जीवन-यापन करने लगा।

कुछ काल पश्चात् भाई के परुष व्यवहार तथा भावज के कठोर व्यङ्ग्यपूर्ण वाणी के बाणों से इस चक्षु-विहीन बालक का हृदय विदीर्ण हो गया और आत्म-गौरव के भावों से पूर्ण, तेजस्वी एव उग्र स्वभाव के इस बालक ने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। सवत् १८४८ वि० में इस अनाथ बालक ने सबके नाथ परमेश्वर को ही अपना सच्चा नाथ मानकर १३ वर्ष की आयु में बिना किसी को कुछ कहे अपनी पितृभूमि का सदा के लिये परित्याग कर दिया।

जिस समय लम्बी यात्रा के लिये रेलादि साधनों का भी अभाव था, उस समय इस अकिंचन नेत्र-विहीन बालक ने एक लम्बी यात्रा का निर्णय कैसे ले लिया? इसका उत्तर यह है कि निराश्रित पुत्रों के सम्बल प्रभु ही बनते हैं, अतः प्रभु शरण ही इस बालक के हृदय में उत्साह व शक्ति का स्रोत बन गई और यह बालक साधुओं की संगति करता हुआ २-२॥ वर्ष तक घूमता-फिरता ऋषिकेश पहुंच गया और यहां गंगा के पावन तट पर अशरण-शरण परमात्मा की भक्ति में मन लगाकर परम शान्ति प्राप्त करने लगा। यहां इस बालक ने गंगा में खड़े होकर गायत्री मन्त्र का जप करते हुए घोर तपस्या की। अपने स्वभावानुरूप कभी किसी से भीख नहीं मांगी। जो कुछ फल-फूल मिल जाता, उसी से अपना जीवन निर्वाह किया करता था। इसके घोर तप से द्रवित होकर किसी भगवद् भक्त ने भोजन की व्यवस्था कर दी थी किन्तु उसके नाम का पता नहीं है। जंगली पशुओं से आक्रान्त यह स्थान उस समय निरापद नहीं था। रात्रि के समय तो और भी भयकर हो जाता था। किन्तु धुन के धनी बालक ने बड़ी निर्भयता से अपनी घोर तपस्या व साधना तीन वर्ष तक सतत बनाये रखी। एक दिन रात्रि मे बालक के हृदय में ऐसी अन्तः-प्रेरणा हुई—'तुम्हारा जो कुछ होना था, हो चुका। अब तुम यहां से चले जाओ।' भगवद् भक्त ने इसे दैवी वाणी समझकर ऋषि श को छोड़ दिया और हरिद्वार की ओर चल पड़ा। १८ वर्ष की आयु में हरिद्वार में इनकी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से भेंट हुई। वे व्याकरण आदि के अच्छे विद्वान् थे। उनसे संन्यास की दीक्षा लेकर कुछ समय तक उनसे ही अष्टाध्यायी तथा सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। फिर गुरु की प्रेरणा से महाभाष्य आदि पढ़ने के लिये गगा के किनारे-किनारे चलते हुए काशी पहुंच गये। काशी में ठहर कर व्याकरण, न्याय, वेदान्तादि का अध्ययन करते रहे और साथ ही छात्रों को भी पढ़ाते रहे। अपनी विद्वत्ता व मेधा बुद्धि के कारण काशी में आप प्रज्ञाचक्षु स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। काशी मे आपके गुरु का नाम पं० विद्याधर था। अलवर नरेश के पास रहकर लिखे शब्दबोध नामक ग्रन्थ में आपने अपने को प० गौरीशकर का शिष्य भी लिखा है। काशी में रहकर अपनी अद्भुत प्रतिभा तथा विद्या के बल से आपने काशीस्थ पण्डित सभा में सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। इस समय आपकी आयु लगभग ३० वर्ष थी।

विद्या के केन्द्र काशी नगरी से गया, कलकत्ता आदि स्थानों पर घूमकर गंगा की पूर्ण परिक्रमा करके आपने गंगा के किनारे सोरो नामक स्थान पर डेरा जमाया। यहा अलवर नरेश महाराजा विनयसिंह से भेंट हुई, और उनकी विद्या पढ़ने की हार्दिक इच्छा देखकर स्वामी विरजानन्द जी अलवर आ गये। स्वामी जी अपने नियमों के बहुत ही पक्के थे। उनका राजा को यह निर्देश था कि एक भी दिन विद्याध्ययन ने अनुपस्थिति होगी तो मैं आपके पास नहीं रहूंगा। लगभग तीन वर्षों के बाद एक दिन राजा स्वामी जी के पास पढ़ने के लिये किसी कारणवश नहीं आ सके अथवा अतीव विलम्ब से पहुंचे तो स्वामी जी ने अपनी नाराजगी यह कहकर प्रकट की कि तुमने अपने वचन को भग कर दिया है, किन्तु मैं अपने वचन को भग नहीं कर सकता और फिर वहां राजा के बहुत अनुनय-विनय करने पर भी नहीं रह सके। अलवर से चलकर भरतपुर आये और छह मास तक निवास किया। वहा से सोरो आये, जहां स्वामी जी बहुत रोगी हो गये। जीवन की भी आशा न रही थी। परन्तु ससार को किसी गुप्त कोष की अप्राप्य कुंजी स्वामी दयानन्द के माध्यम से दिलानी थी। सम्भव है इसीलिये ईश कृपया यह भयंकर रोग धीरे-धीरे विदा हो गया। तत्पश्चात् आप सोरों से मथुरा पधारे और एक नियमित पाठशाला बनाकर विद्यार्थियों को विद्याध्ययन कराने लगे। यह संवत् १९०२ वि० वर्ष था और स्वामी जी की आयु छियासठ वर्ष थी। मथुरा को स्वामी विरजानन्द जी ने २३ वर्ष के लगभग विद्यास्थल बनाये रखा। इसी विद्यास्थली पर १५ वर्ष बाद स्वामी दयानन्द सवत् १९१७ वि० में विद्याध्ययनार्थ आये और संवत् १९२५ मे आश्विन बदि त्रयोदशी के दिन गुरुवर विरजानन्द नब्बे वर्ष की आयु मे उदर शूल से पांचभौतिक शरीर को छोड़कर इस संसार से विदा हुए। (क्रमशः)

* श्री पं० निरञ्जन देव (आर्योपदेशक आ० प्र० सभा पंजाब) के दि० ९-८-१९६० के पत्रानुसार आपका जन्म नाम व्रजलाल तथा भाई का नाम धर्मचन्द था।

वैदिक शिक्षा का महत्त्व और उसकी रक्षा के उपाय-२

-आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री-

देश स्वतन्त्र होने के बाद हमारे नेताओं का यह कर्तव्य था कि देश में इस विदेशी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर देशी शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन देते, उसमें आवश्यक संशोधन या सुधार के लिये प्रयत्न करते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वे इस देशी शिक्षा प्रणाली की महिमा को जानते ही नहीं थे।

कोठारी कमीशन की रिपोर्ट कहती है कि भारत की शिक्षा नीति में नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा को अधिक महत्त्व देना चाहिये। विज्ञान और टेक्नालोजी के साथ-साथ हमारे प्राचीन धर्म के साथ जुड़े हुए नैतिक मूल्यों और दूरदृष्टिका समन्वय किया जाना चाहिये। हमारा संविधान इसका विरोध नहीं करता। धर्मनिरपेक्षवाद इसका विरोध नहीं करता। फिर भी सरकार १७.४ प्रतिशत अल्पसंख्यकों को खुश रखने के लिये ८२.६ प्रतिशत बहुसंख्यक लोगों के हित की धर्मनिरपेक्षता की आड़ में उपेक्षा कर रही है। यदि उन अल्पसंख्यकों को भी भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा की शिक्षा ठीक तरह से दी जाती तो आज यह साम्प्रदायिक कट्टरता और अलगाववाद की समस्या नहीं रहती।

साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽ
साक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुः।
उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं
ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदांगानि च॥

(निरुक्त अ० १, खं० १६)

आचार्य यास्क के इन वचनों में शिक्षा का प्रारम्भिक इतिहास है। इस प्रमाण के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य वेद पढ़ना था और वेद पढ़ने का मुख्य उद्देश्य सब क्लेशों से मुक्त होकर आनन्द की प्राप्ति थी। "सा विद्या या विमुक्तये", "विद्यया अमृतमश्नुते" इत्यादि आप्त वाक्य इस बात के प्रमाण हैं। वेदों की शाखायें, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषत्, छः वेदांग, छः दर्शन, चार उपवेद। ये हैं आर्ष प्रणाली में विद्याग्रन्थ अथवा पाठ्य पुस्तकें। इन पुस्तकों के पढ़ने का उद्देश्य वेदों को समझना है।

"जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं" यह महर्षि दयानन्द का शिक्षा सम्बन्धी विचार था। शिक्षा के प्रयोजन को शायद ही और किसी ने इतना स्पष्ट बताया हो और शिक्षा का यह प्रयोजन केवल वैदिक शिक्षा से ही सिद्ध हो सकता है। वर्तमान समय में प्रचलित शिक्षा में इनमें से एक भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। उलटा जितना अधिक इस शिक्षा का प्रचार होता गया, उतना अधिक अविद्यादि का प्रचार, अधर्म, दुर्व्यसन, विषयासक्ति की वृद्धि देखी गई है। उदाहरण के लिये वकीलों को लीजिये। आम जनता की राय यही है कि ये लायर (वकील) वास्तव में लयर यानी झूठ बोलने वाले होते हैं। डाक्टरों को यमराज के बड़े भाई मानते हैं, क्योंकि यमराज केवल प्राण लेता है, लेकिन डाक्टर या वैद्यराज प्राण भी लेता है, धन भी लेता है।

वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराजसहोदर।
यमस्तु हरति प्राणान्वैद्यः प्राणान्धनानि च।

लेकिन वैदिक शिक्षा वैद्य को यह उपदेश देती है—

मातरं पितरं पुत्रान् बान्धवान् चतुरः
एतानपि अभिशङ्केत्। वैद्ये विश्वासमेति च बिसृजति
आत्मना आत्मानं। न चैनं परिशंकयेत् तस्मात्
पुत्रवदेनं पालयेदातुरं भिषक्॥

अर्थात् एक बीमार आदमी मां-बाप, बेटे और सगे भाइयों इनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं करता केवल डाक्टर पर विश्वास करता है और उसके हाथों में अपने आपको समर्पित करता है, इसलिये डाक्टर का यह धर्म है कि वह अपने पास आये हुए मरीज को अपने पुत्र के समान देखे।

वैदिक शिक्षा की एक विशेषता यह है कि यह किसी सम्प्रदाय विशेष को नहीं मानती अर्थात सही अर्थ में यह धर्म-निरपेक्ष है। एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वैदिक शिक्षा सचमुच वैज्ञानिक मनोभाव (साइंटिफिक टेम्पर) की पोषक है। केवल वैदिक परम्परा में ही तर्क (रीजनिंग) को ऋषि माना गया है। सत्यासत्य की परीक्षा करने का तरीका देखिये—कितना पुराना और कितना सुन्दर—

क्या यह वेद और ईश्वर के अनुकूल है?
क्या यह सृष्टि नियम के अनुसार है?
क्या आप्त पुरुषों ने इसे स्वीकारा है?
क्या यह आपकी अपने आत्मा के अनुकूल है?

और क्या यह प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, इतिहास, अर्थापत्ति, सम्भव तथा अभाव इन आठ प्रमाणों से ठीक सिद्ध हो सकता है? यह है सत्य को समझने की वैदिक शिक्षा। इसलिये जो लोग यह कहते हैं कि वेदशास्त्र विज्ञान के अनुकूल नहीं, वे अज्ञानी हैं। वैदिक शिक्षा विज्ञान की विरोधी नहीं है। इसलिये विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत के लोगों ने यूरोप से पहले ही पर्याप्त उन्नति की थी।

फिर भी तथाकथित विचारवादी लोग वेदशास्त्रों की निन्दा करते हैं, उनका विरोध करते हैं, क्योंकि उन्हें गलत शिक्षा मिली है और आज देश की सत्ता उन्हीं लोगों के हाथों में है जिन्हें गलत शिक्षा मिली है। एक ओर ये राष्ट्रीयता को सुदृढ़ बनाने की बात करते हैं, दूसरी ओर हमारी राष्ट्रीयता के मूल स्रोत की उपेक्षा करते हैं। एक ओर ये वैज्ञानिक मनोभाव की बातें करते हैं, दूसरी ओर पश्चिमी देशों का अन्धानुकरण करते हैं।

आज देशभर में मुश्किल से १४०० वेदपाठी ब्राह्मण हैं। उनमें भी ८०० के करीब ६० वर्ष की उम्र को पार कर चुके हैं। नये बच्चे इस शिक्षा की ओर आकर्षित नहीं होते, क्योंकि इस भारत विरोधी पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने वेदों के विद्वानों को बुरी हालत करके रख दी है। सरकार आज पेड़-पौधों की रक्षा की बात सोच रही है, जङ्गली जानवरों की रक्षा की बात सोच रही है, लेकिन भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्परा की मूल स्रोत वैदिक शिक्षा नष्टप्राय होती जा रही है, उसकी रक्षा के उपाय सोचने के लिये सरकार के पास समय नहीं, पैसे नहीं। यह कितनी शर्म की बात है कि कुछ वर्ष पूर्व जब राजभवन में वैदिक विद्वानों का सम्मान हो रहा था, कुछ तथाकथित समाजवादी लोगों ने धर्मनिरपेक्षवाद की आड़ में उसका विरोध करने की मूर्खता की और उससे भी अधिक शर्म की बात यह है कि बिना पूर्वापर विचार किये ही महाराष्ट्र सरकार ने इस परम्परा को बन्द करने का आदेश दे दिया। इस सबसे अधिक दुख की बात यह है कि तब ये सारे हिन्दू इस प्रकार चुप बैठे रहे जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

हम गत तीन-चार वर्ष से महाराष्ट्र सरकार से आग्रह कर रहे हैं कि वह उस परम्परा को फिर से प्रारम्भ करे, लेकिन कुछ असर पड़ता दिखाई नहीं दे रहा। लेकिन हमने प्रयत्न नहीं छोड़ा। हम आशावादी हैं। स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी का कहना था कि जब कोई अपनी संस्कृति को अच्छी तरह से समझ लेता है, तभी वह दूसरी संस्कृति से यथोचित लाभ उठा सकता है। २१ जनवरी १९८६ को लोकसभा में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने भी कहा था कि हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के आधार पर भविष्य का निर्माण करना है। इसलिये यदि हमारा प्रयत्न आगे बढ़ा, यदि सब वेद-विद्वानों का और वेद-भक्तों का सहयोग मिला तो हम अवश्य सफल होंगे।

(समाप्त)

पाकिस्तान में सिखों के विरुद्ध विषवमन

"सिख दरिन्दे हैं : मुसलमानों के हत्यारे हैं"

गाजियाबाद के एक हाजी पाकिस्तान गये तो वहां से "जब अमृतसर जल रहा था—१९४७" पुस्तक साथ लाये। पुस्तक उर्दू में थी अत: उसे समझने में मुझे उर्दू के जानकार पत्रकार श्री राधेश्याम शर्मा का सहयोग लेना पड़ा। शर्मा जी ने उसे पढ़ा तथा उसके कुछ अंश मुझे सुनाये तो मैं चकित रह गया।

पाकिस्तान एक ओर तो सिखों से हमदर्दी जतलाने की कोशिश करता है, कुछ पथभ्रष्ट उग्रवादी युवकों को पाकिस्तान के कैम्पों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। दूसरी ओर वहां की पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं में सिखों को दरिन्दा, नर-पिशाच, रिश्वतखोर, बलात्कारी, खूंख्वार और धोखेबाज कहकर बदनाम किया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि भारत विभाजन के दौरान लाहौर, मुलतान, झंग, कराची आदि में धर्मान्ध लोगों ने सर्वाधिक हत्याएं सिखों की ही की थीं, जब कि पाकिस्तान की पुस्तकों में केवल अमृतसर या दिल्ली में घटित घटनाओं को ही उछाला जा रहा है। अमृतसर, लुधियाना और गुरदासपुर के मुस्लिमबहुल इलाकों में भी क्या उस समय हिन्दू-सिखों की हत्याएं नहीं की गई थीं? किन्तु पाकिस्तान तो केवल सिखों को ही हत्यारा सिद्ध करना चाहता है।

जब अमृतसर जल रहा था

'जब अमृतसर जल रहा था' पुस्तक ख्वाजा इफ्तखार की लिखी हुई है। इसमें भारत विभाजन के दौरान अमृतसर में घटित घटनाओं को एकपक्षीय रूप में बढ़ा चढ़ाकर दिया गया है। पुस्तक के पृष्ठ ११० पर लिखा है—"रात आधी से ज्यादा गुजर चुकी थी और गुरु रामदास की सराय हत्यारे सिखों की नापाक साजिश का अड्डा बनी हुई थी। अमृतसर से बाहर से आये खूंख्वार अपराधी सिखों तथा भूतपूर्व सिख सैनिकों को विभिन्न टोलियों में बांटकर मुसलमानों की हत्या करने, मस्जिदों को गुरुद्वारों में बदलने तथा उनकी महिलाओं को 'अगवा' करने के आदेश सफेद दाढ़ी वाले सन्तों के वेश में भेड़िये दे रहे थे हिन्दू और सिख भेड़िये रामदास सराय से आदेश पाकर हत्या व खून खराबे का बाजार गर्म कर रहे थे।

इससे आगे पृष्ठ ११७ पर लिखा गया है—"हाथों में तलवारें और बर्छे लिये हुए सिखों की भीड़ 'जो बोले सो निहाल सत श्री अकाल' के नारे लगाती हुई बहशियाना ढंग से चुन-चुन कर मुसलमानों की हत्याएं कर रही थी। बरछों की नोकों पर मुसलमानों के सिर टंगे हुए थे। चारों ओर बेबस मुसलमानों की चीखें और फरियादें गूंज रही थीं।"

लेखक ने घटनाओं को अतिरंजित रूप देते हुए पृष्ठ १२७ पर लिखा है—"दस-दस सिख दरिन्दों ने एक-एक लाचार लड़की को बेआबरू किया। मासूम और निरीह बच्चों को कृपाणों की नोंक पर उठा-उठाकर मार डाला गया। औरतों की छातियां यह कहकर काटीं कि यह तुम्हारा पाकिस्तान है।"

सरदार पटेल पर झूठे आरोप

पुस्तक में कल्पना की उड़ान भरते हुए लिखा गया है—"सरदार पटेल ने आर०एस०एस० के वालन्टियरों को हथियार देकर पंजाब भेजा तथा उन्हें आदेश दिया कि पंजाब की एक भी मस्जिद न बचे तथा पंजाब के मुसलमानों को काट काट कर ढेरों के रूप में जला डाला जाये। हिन्दू सेना व पुलिस से मिलकर अमृतसर व अन्य शहरों में मुसलमानों पर कहर बरपा किया गया।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत विभाजन के दौरान केवल हिन्दू व सिख ही धर्मान्धता में अन्धे नहीं हुए थे अपितु मुसलमानों ने भी पंजाब में, जहां वे बहुमत में थे, खुलकर हत्याओं व आगजनी का दौरदौरा चलाया था। किन्तु पाकिस्तान की इस पुस्तक में केवल एक घटना की चर्चा करते हुए हत्यारों को गाजी बताते हुए लिखा है—"अमृतसर के 'शेर दिल' ग्रुप के दो सदस्यों ने यह कसम खाई थी कि वे एक दर्जन काफिरों (हिन्दुओं सिखों) का खून पीकर ही पानी पियेंगे। वे दोनों बहादुर मुसलमान तब तक अपने घरों को न लौटते थे जब तक उनकी तलवारें दर्जन-भर काफिरों का खून न पी लेती थीं।

पुस्तक में मास्टर तारासिंह को कातिले आजम कहकर लिखा है कि वह मुसलमानों का सबसे बड़ा हत्यारा था।

यह निराधार आरोप भी लगाया गया है कि गुरुद्वारों से आदेश जारी किये जाते थे कि जो मुसलमानों के सिर काट कर लायेगा उसे सरोपा भेंट किया जायेगा।

इस तरह पाकिस्तान में सिखों, हिन्दुओं व सिख गुरुओं के प्रति निराधार घटनाएं छाप कर युवा पीढ़ी के हृदय में घृणा के भाव पैदा किये जा रहे हैं।

सिख राज अत्याचारी था

इस पुस्तक के अलावा पाकिस्तान के समाचारपत्र भी सिखों व उनके गुरुओं के प्रति विषैले प्रचार में पीछे नहीं हैं।

५ अगस्त के 'नवाए वक्त' दैनिक में मौलवी पीरजादा मुहम्मद अनवर चिश्ती ने महाराजा रणजीतसिंह के राज्य को "लुटेरों का राज" करार देते हुए लिखा है—"रणजीतसिंह ने लाहौर की बादशाही मस्जिद को घोड़ों के अस्तबल में बदलवा दिया था। लुटेरे सिखों ने सुनहरी मस्जिद से सोना लूट लिया था।

मौलवी ने पाकिस्तान सरकार को चेतावनी दी है कि यदि खालिस्तान बन गया तो खूंख्वार सिख पाकिस्तान पर हमला करके ननकाना साहिब पर कब्जा करने की कोशिश करेंगे। मौलवी ने यहां तक लिखा है "सिखों ने पार्टीशन के समय मुसलमानों पर जो जुल्म किये थे, उनकी सजा अब अल्लाह उन्हें दे रहा है।"

रावलपिन्डी से प्रकाशित एक उर्दू दैनिक ने दो सितम्बर के अंक में डा० इसरार अहमद का लेख छापा है, जिसमें उसने लिखा है—"लाहौर के सिख राज्य में शाही मस्जिद की सीढ़ियों पर कुरान मजीद इस तरह रख दिये जाते थे कि खालसा उन पर पांव जमाकर ऊपर चढ़ सकें। सिखशाही में अजान तक देने पर पाबन्दी लगा दी गई थी। इसीलिये पंजाब के मुसलमानों ने सिख राज के खात्मे के लिये ब्रिटेन के राज का स्वागत किया, क्योंकि अंग्रेजों ने पंजाब के मुसलमानों को बहुत बुरी सिख गुलामी से छुटकारा दिलाया था।

—शिवकुमार गोयल

सान्ताक्रुज में आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर

बम्बई। आर्य वीर दल महाराष्ट्र का एक-दिवसीय शिविर आर्य समाज सान्ताक्रुज में १० अगस्त को दल के संचालक श्री गुलजारीलाल आर्य की अध्यक्षता में लगा, जिसमें ८५ आर्य वीरों ने भाग लिया।

आर्य वीरोंको शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण दिया गया। राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत की गई। प्रो० एम० वेंकटराव, श्री त्रिभुवनसिंह आर्य और श्री रामसिंह वर्मा ने शारीरिक शिक्षण की जिम्मेदारी संभाली, जबकि श्री ओ३म्प्रकाश आर्य, पं० धर्मधर शास्त्री और श्री प्रदीप शास्त्री ने बौद्धिक प्रशिक्षण दिया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य ने अपने उत्साहवर्धक भाषण में आर्य वीरों को संगठित होकर समर्पित भावना से कार्य करने की प्रेरणा दी। प्रादेशिक मन्त्री अम्बालाल पटेल ने सभी का हार्दिक स्वागत करते हुए आभार प्रदर्शित किया।

पंजाब सेना को सौंपा जाये

पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस पर मांग

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस आर्यसमाज मन्दिर सान्ताक्रूज, बम्बई में "पंजाब बचाओ देश-बचाओ दिवस" के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित हिन्दू राष्ट्रीय संगठन पंजाब के अध्यक्ष और लुधियाना टाइम्स के सम्पादक श्री सुरेन्द्र कुमार बिल्ला ने पंजाब में हो रहे हिन्दुओं के हत्या कांड तथा उनके पलायन के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि पंजाब की समस्या आज की नहीं है। इसका जन्म भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही हुआ है। पाकिस्तान बन गया तो अंग्रेजों के उकसाने पर मास्टर तारासिंह ने सिख राज्य की मांग की। आगे चलकर शनैः-शनैः अकालियों का आन्दोलन बढ़ता गया। भिण्डरांवाले का इतिहास आपसे छिपा नहीं है। ट्रकों में भर-भर कर हथियार स्वर्ण मन्दिर में पहुंचाये गये, परन्तु किसी ने रोका नहीं, पुलिस और पंजाब के सभी अधिकारी उनके साथ मिले हुए थे। दुकानों में, राह चलते, घरों में सर्वत्र उसने हिन्दुओं की हत्या का चक्र चलाया। बसों और कारों से हिन्दू यात्रियों को निकाल-निकाल कर उनकी हत्या होने लगी। आज पंजाब में अकाली राज्य है और पहले से अधिक हिन्दुओं पर संकट आ गया है। हिन्दू प्रतिदिन मारे जा रहे हैं। बरनाला सरकार हिन्दुओं की रक्षा नहीं करना चाहती। यदि चाहती तो बीस हजार परिवार पंजाब से बाहर क्यों चले जाते? बरनाला सरकार को पंजाब में ही उनके रखने की व्यवस्था करनी चाहिए थी।

पंजाब में कोई सिख आये तो जाते ही उसे पहले १०००) दिया जाता है। फिर तत्काल उसके पुनर्वास की व्यवस्था की जाती है। हिन्दू पलायन कर अन्य राज्यों में जाते हैं तो वहां की सरकार उन्हें वहां रहने नहीं देती। उनकी भयंकर दुर्दशा हो रही है।

उन्होंने पूछा कि दिल्ली में उपद्रव हुआ तो सेना पहुंच गई—पंजाब में जहां हिन्दुओं की सामूहिक हत्या हो रही है, वहां सेना क्यों नहीं भेजी जाती?

उन्होंने मांग की कि पंजाब में हिन्दुओं का विनाश रोकने के लिए बरनाला सरकार को तत्काल बरखास्त किया जाये, पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये और पंजाब को अविलम्ब सेना के हवाले कर दिया जाये।

इस अवसर पर प्रिंसिपल के. एल. तलरेजा ने कहा कि हम हिन्दू सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया के मानने वाले हैं। पंजाब में हिन्दुओं की सामूहिक हत्या रोकने के लिये बरनाला को बरखास्त किया जाये और विशेष न्यायालयों की स्थापना कर अपराधियों को तत्काल दण्ड दिया जाये। हिन्दुस्तानी आन्दोलन के प्रणेता श्री मधु मेहता ने कहा कि अब हमें हिन्दू रक्षा के लिये क्रियात्मक कदम उठाना चाहिये। आतंकवादियों को विदेशों से पैसा मिलता है। सरकार को चाहिए कि तुरन्त उनकी आर्थिक नाकेबन्दी करे।

इस अवसर पर श्री प्रदीप शास्त्री, श्री ओंकारनाथ आर्य, डा० सोमदेव शास्त्री और पं० दयाशंकर जी ने भी अपने विचार रखे।

अन्त में आर्यसमाज सान्ताक्रूज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने सभा का समापन करते हुए कहा कि प्रत्येक राष्ट्रवादी नागरिक को प्रधानमन्त्री से प्रार्थना करनी चाहिए कि पंजाब में हिन्दुओं की हत्या रोकने के लिए वहां तत्काल राष्ट्रपति शासन लागू हो। उन्होंने आगे कहा कि जनरल वैद्य की हत्या ने देश को दहला दिया है। जिसने सारा जीवन देश की सेवा में अर्पित किया उसके जीवन की रक्षा हम नहीं कर सके। इसका प्रभाव सेना के अनुशासन पर पड़ सकता है।

पंजाब बचाओ—देश बचाओ दिवस निम्नलिखित स्थानों पर भी मनाया गया—

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर मार्ग, जालना, आर्यसमाज शाहपुरा (जिला भीलवाड़ा), आर्यसमाज मलाही (पूर्वी चम्पारण), आर्यसमाज बोहूरतक (बस्ती), आर्यसमाज जंगीगंज (वाराणसी), आर्यसमाज सम्भलपुर (उड़ीसा), आर्यसमाज सरदारपुरा (जोधपुर), आर्यसमाज मानुकोटा (महबूबाबाद—आंध्र-प्रदेश), आर्यसमाज देवलाली कैम्प, आर्यसमाज हनका, आर्यसमाज रुड़की, आर्यसमाज बगपटिया (प० चम्पारण), आर्यसमाज बुक्सर (बिहार), आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची, आर्यसमाज शाह बाजार, लुधियाना, आर्यसमाज बीना (जिला सागर), आर्यसमाज रिजवा (जिला सागर), आर्यसमाज अमेठी (मीरजापुर), आर्यसमाज लाजपतनगर, धर्मशाला मार्ग, भोजपुर, आर्यसमाज सदर नागपुर, अखिल भारतीय महिला आश्रम, देहरादून और आर्यसमाज जैनपुर (पंजाब)।

सम्पादक के नाम पत्र

पंजाब सेना के हवाले किया जाये

महोदय,

जनरल अरुणकुमार श्रीधर वैद्य की हत्या इस तथ्य का प्रतीक है कि आतंकवाद अब पंजाब और दिल्ली की सीमाओं से बाहर निकल कर महाराष्ट्र और देश के अन्य भागों में भी अराजकता एवं साम्प्रदायिक वैमनस्य पैदा करने पर उतारू हो गया है। हिन्दू जाति के रक्षक वीर शिवाजी की भूमि पर यदि देश की सेना के सर्वोच्च अधिकारी की इसलिए हत्या कर दी जाये कि उसने राष्ट्र की अखण्डता हेतु आतंकवादियों के विरुद्ध लोहा लिया था तो यह घटना प्रत्येक राष्ट्रभक्त भारतीय के लिए चुनौती होगी। स्वयं को वीर शिवा जी का सैनिक कहने वालों को गम्भीरता से विचार करना होगा कि उनकी भूमि पर यदि देश का सेनापति भी सुरक्षित नहीं जी सका तो जनता किस स्थिति से गुजर रही होगी। देश के शासक इस पर चिन्तन कर उचित कदम नहीं उठायेंगे तो देश खण्डित हो जायेगा। बम्बई महानगरी की आर्यसमाजें जनरल वैद्य की हत्या पर गहरा रोष व्यक्त करती हैं और भारत सरकार से अनुरोध करती हैं कि अभी भी समय है कि पंजाब सेना के हवाले कर दिया जाये, अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

—देवरत्न आर्य

महामन्त्री, आर्यसमाज सान्ताक्रूज (बम्बई)

शिक्षा नीति में संस्कृत का बहिष्कार क्यों?

महोदय,

संस्कृत भारत की एकता और भारतीय संस्कृति का मूल है। भारत के संविधान में भी सम्पूर्ण भारत में संस्कृत-शिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। समस्त भारतीय और अनेक अभारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही है। वैज्ञानिक व्याकरण, अध्यात्म, योगविद्या, ज्ञान-विज्ञान, आयुर्वेद, राजनीति, संगीत, अर्थशास्त्र, शिक्षा, भाषा, शिल्प, गणित, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, समस्त भारतीय संस्कार और सृष्टि से लेकर अब तक के भारतीय इतिहास का ज्ञान संस्कृत में निहित है। महर्षि दयानन्द, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, डा० राधाकृष्णन्, लालबहादुर शास्त्री आदि देश के शिरोमणि नेताओं और विद्वानों ने सम्पूर्ण भारत में अनिवार्य संस्कृत-शिक्षा पर बल क्यों दिया? वे देश की उन्नति के मूल को जानते थे, अतः उन्होंने संस्कृत शिक्षण अनिवार्य करने पर बल दिया। नई शिक्षा नीति में संस्कृत शिक्षण अनिवार्य होना चाहिए। लेकिन दुःख और आश्चर्य है कि नई शिक्षा-नीति में भारतीयता के मूल संस्कृत को ही काट दिया गया है। देश को २१वीं सदी में ले जाने के नाम पर उसे गहरे अन्धकूप में डाला जा रहा है। इससे मानव और मानवता की हानि होगी।

—सत्यवीरसिंह 'सत्यप्रेमी'

सपनावत (गाजियाबाद)

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार पुरस्कृत

हिण्डौन सिटी। स्थानीय नगर आर्यसमाज हाल में ११ अगस्त से २० अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री आर्यमुनि जी वानप्रस्थ ने संन्यास की दीक्षा ली।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पिता जी की स्मृति में स्थापित श्री मूलचन्द आर्य पुरस्कार पण्डित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार को उनकी पुस्तक "वैदिक संस्कृति के मूल तत्व" पर दिया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें अभिनन्दनपत्र, एक शाल व ११११ रुपये की राशि समर्पित की गई।

आर्यसमाज बागपत (मेरठ) द्वारा ग्राम बाघू सन्तोषपुर मे ५२ ईसाई परिवारों के ३१५ व्यक्तियो को पुनः वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। २७ अगस्त को सम्पन्न शुद्धि समारोह का चित्र।
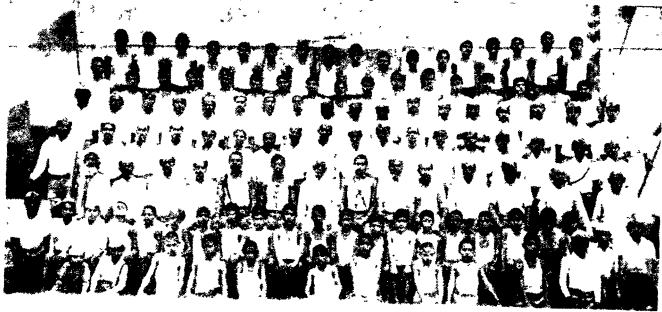
खैर (अलीगढ़) के आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर में श्री जयनारायण आर्य अपने साथियो के साथ दिखाई दे रहे हैं। शिविर का आयोजन सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा किया गया।

आर्य वीरों के बढ़ते कदम : बिलासपुर मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर।

आर्य वीर सज्ज अवस्था मे आदेश की प्रतीक्षा मे खड़े हैं।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८ ९-१९८६)
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence
बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ११
Post in D P.S.O. on 25-9-86
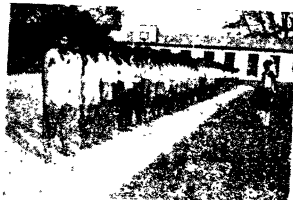
पाकिस्तान की मजहबी संकीर्णता

सरगोधा। सरगोधा के सिटी मजिस्ट्रेट जाहिर खां ने तीन अहमदियो को सीने पर कलमे के बैज लगाने पर कुल मिलाकर ६ वर्ष कैद का दंड दिया। एक अन्य अहमदी को कचहरी के अहाते मे कलमे का बैज लगाने पर गिरफ्तार कर लिया गया।

आर्यसमाजो के चुनाव

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर—प्रधान श्री आर्यमुनि वानप्रस्थ, मन्त्री श्री विश्वेश्वरनाथ आर्य और कोषाध्यक्ष श्री नारायणदत्त।

आर्यसमाज गया श्री प्रयागनारायण आर्य मन्त्री श्री जगदम्बाप्रसाद और कोषाध्यक्ष श्री मुंशीप्रसाद आर्य।

आर्यसमाज उमड (जिला सहारनपुर)—प्रधान श्री जगदीश प्रसाद मन्त्री श्री श्यामलाल और कोषाध्यक्ष श्री मेघपाल सिंह।

आर्यसमाज मसूरी—प्रधान श्री सुशीलकुमार, मन्त्री श्री वीरेन्द्र साहनी और कोषाध्यक्ष श्री भारतभूषण।

आर्यवीर दल नरकटियागंज—नगरनायक श्री बृजकिशोर 'अश्क', मुख्य शिक्षक श्री बृजकिशोर सिंह और कोषाध्यक्ष श्री मनोजकुमार आर्य।

आर्यसमाज मोतीहारी—प्रधान डा० शंकर प्रसाद सिंह मन्त्री श्री राम लखनराम और कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रदीप प्रसाद।

आर्यकुमार सभा गुरुकुल कृष्णपुर (जिला फर्रुखाबाद)—प्रधान श्री वेदानन्द आर्य, मन्त्री श्री मनुदेव आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र आर्य।

आर्यकुमार सभा गुरुकुल आमसेना (कालाहांडी)—श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, मन्त्री श्री शान्तिप्रिय शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्री कुंजदेव आर्य।

आर्यसमाज मस्जिद मोठ, नई दिल्ली—प्रधान श्री फकीरचन्द, मन्त्री श्री रोशनलाल प्रजापति।

आर्यसमाज करौंदा (मीरजापुर)—प्रधान डा० गुलाबसिंह मन्त्री श्री कैलाशनाथ सिंह और कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानी सिंह आर्य।

आर्यसमाज चम्बूर (बम्बई)—प्रधा मन्त्री श्री ईश्वरमित्र शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर।

आर्यसमाज नौरोजीनगर नई दिल्ली—प्रधान श्री वेदप्र. श खन्ना, मन्त्री श्री ओम्प्रकाश शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश सैनी।

आर्यसमाज हौजखास, नई दिल्ली—प्रधान श्रीमती सीतादेवी, मन्त्री श्रीमती शशि गुप्ता और कोषाध्यक्ष श्री बनवारी लाल गुप्त।

आर्यसमाज जोगबनी (पूर्णिया)—प्रधान श्री सीताराम अग्रवाल, मन्त्री श्री विश्वम्भरसिंह और कोषाध्यक्ष श्री मुरलीधर दास।

आर्यसमाज क यनगज—प्रधान श्री जवाहर लाल आर्य, मन्त्री श्री राम-रक्षपाल और कोषाध्यक्ष श्री रामानन्द।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७]
वष २१ अङ्क ४२]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
आश्विन श० २ स० २०४३ रविवार ५ अक्तूबर १९८६

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

साउदी अरब में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर जेल

सार्वदेशिक सभा का विदेश मन्त्रालय से प्रोटैस्ट

मुस्लिम राष्ट्रों के कानून ही ऐसे है : विदेश मन्त्रालय का कोरा जवाब

भारत सरकार बार बार यह घोषणा करती रही है कि हमारा देश एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और हम सर्वधर्म समभाव की भावना में अटूट विश्वास रखते है। हमारे यहा हर धर्म सम्प्रदाय, वर्ण और जाति के लोगो को अपने अपने ढग से रहने की पूण स्वतन्त्रता है। राजनैतिक आदर्शवाद का इससे अच्छा उदाहरण शायद दुनिया के किसी भी अन्य देशमे देखने को नही मिलेगा। हमारी सरकार मुस्लिम राष्ट्रो को मित्र राष्ट्र समझती है। लेकिन विडम्बना यह है कि इन्ही तथाकथित मित्र राष्ट्रो मे हमारे देश के नागरिको के साथ गुलामो से भी बदतर व्यवहार किया जाता है। हमारी सरकार को इसकी ज्यादा चिन्ता नही होती।

कुछ दिन हुए, हमे साउदी अरब से श्री राजकुमार भारद्वाज का पत्र प्राप्त हुआ था जो अपनी नौकरी के सिलसिले मे वहा गये थे। वे आजकल जेल मे बन्दहैं। उनका कसूर सिफ इतना था कि वे अपने साथ सत्याथ प्रकाश की एक प्रति ले गये थे—अपने खाली समय मे पढने के लिए। उनके ही एक मुस्लिम साथी ने इसकी शिकायत ऊपर के अधिकारियों स कर दी। अब श्री भारद्वाज जेल मे बन्द कर दिये गये, क्योंकि साउदी अरब तथा अन्य अरब (मुस्लिम) देशों में इस्लाम के अतिरिक्त किसी भी अन्य धम का प्रचार करना तो दूर रहा, अन्य धर्म की पुस्तक का रखना और पढ़ना भी कानूनन अपराध है।

इस विषय मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो पत्र भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय को लिखा था और उसका जो उत्तर प्राप्त हुआ है वह हम अपने प ठको की सूचनाथ अक्षरश नीचे छाप रहे हैं—

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

विदेश मन्त्रालय को सभा के प्रधान का पत्र

To

The Joint Secretary
(Wana Division)
Ministry of External Affairs
New Delhi 110011

Dear Sir

I am sending you herewith a photo copy of a letter dated 30th April 1986 received from Shri Ram Kumar Bharadwaj (an Indian national) who is presentl working with a Construction Company at Daharan in Saudi Arabia Although the contents of his letter are self explanatory I recapitulate the same as under

1 Shri Ram Kumar Bharadwaj joined the K K M C Five Thousand Area Dallah Company at Daharan on being recruited by them from India He reached there on 2nd February 1986

2 He had carried with him a copy of Satyarth Prakash a book on Vedic religion, written by Swami Dayananda Sarasvati founder of the Arya Samaj

3 One day while he was reading this book in his leisure time one of his colleagues Muslim by faith saw it and reported the matter to the local authorities who taking the reading of Hindu scriptures as an offence gave him corporal punishment and sent him to jail

This sort of treatment given to an Indian national just for reading his own religious book is certainly atrocious to say the least I would request the Ministry of External Affairs to take up this case with the Saudi Arabian Govt through our Embassy and arrange for the release of Shri Ram Kumar as early as possible

Thanking you,

Yours sincerely,
Ramgopal Shalwale

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

८४वें जन्मदिवस पर प्रो० वेदव्यास का अभिनन्दन :

३१ लाख रु० की थैली भेंट

नई दिल्ली। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में पहली सितम्बर को आर्यसमाज अनारकली के समागार में भव्य समारोह हुआ, जिसमें "प्रो० वेदव्यास जी शतायु हों," की ध्वनि से वातावरण गूंज उठा।

समारोह से पूर्व जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ८४ छात्र छात्राओं ने एक समान वेश-भूषा में तथा केसरिया टोपी पहने हुए यज्ञ करके जन्मदिवस की ८४ संख्या को मनमोहक और रमणीय ढग से सार्थक किया।

विभिन्न संस्थाओं और आर्यसमाजों के अधिकारियों द्वारा तथा विशिष्ट विद्वानों द्वारा प्रोफेसर साहब का स्वागत किया गया, जिनमें विभिन्न राज्यों से पधारे डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं के प्रिन्सिपल एवं आर्य नेता प्रमुख रूप से शामिल थे। समागार में उपस्थित सभी नर-नारियों ने पुष्प वृष्टि से उनका स्वागत करते हुए उनके चिरायु होने की कामना की। कुमारी हंसराज माडल स्कूल, अशोक विहार एवं हंसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग के छात्र-छात्राओं ने जन्म-दिवस सम्बन्धी शुभ कामना और दीर्घायु के गीत गाये।

संसद् सदस्य श्री रामचन्द्र विकल ने अपनी शुभ कामनाएं प्रकट करते हुए कहा कि प्रोफेसर साहब के जीवन में विद्वत्ता के साथ-साथ जनकल्याण की भावनाएं कूट-कूट कर भरी हैं और इसका लाभ डी० ए० वी० संस्थाओं को मिला है। डी० ए० वी० आन्दोलन को जो मोड़ इन्होंने दिया है वह कोई अन्य नहीं दे सका। श्री दरबारी लाल ने डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में प्रोफेसर साहब को दी जाने वाली ३१ लाख ५० हजार रुपये की थैली का विवरण देते हुए उन संस्थाओं और आर्य जनों का उल्लेख किया, जिनके परिश्रम से यह राशि एकत्रित हुई है। इसके बाद समारोह के अध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार ने वेदव्यास जी को थैली भेंट की। वेदव्यास जी ने वह थैली डी० ए० वी० आन्दोलन को सुचारु रूप से चलाने के लिए श्री दरबारी लाल जी को सौंप दी।

प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने प्रोफेसर साहब का अभिनन्दन करते हुए कहा कि उनकी विद्या विवाद के लिए न होकर ज्ञान-प्रसार के लिए है, उनकी शक्ति पर पीड़न के लिए न होकर परोपकार के लिए और दुर्बलों के संरक्षण के लिए है। आर्य प्रादेशिक सभा और डी०ए०वी०कालेज कमेटी का यह सौभाग्य है कि उन्हें ऐसा प्रधान प्राप्त हुआ है। इसीलिए वे दिन-दुगुनी रात-चौगुनी उन्नति कर रहे हैं।

समारोह के अध्यक्ष पद से श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास से वर्तमान प्रो० वेदव्यास जी की तुलना करते हुए उनकी बहुमुखी प्रतिभा के सम्बन्ध में कहा कि वे प्राध्यापक भी हैं, वकील भी हैं, पत्रकार भी हैं, लेखक भी हैं, संगठन-कर्त्ता भी हैं और भारतीय संस्कृति की सभी विशेषताओं से अनुप्राणित भी हैं। ऐसा बहु-आयामी व्यक्तित्व किसके अभिनन्दन का पात्र नहीं होगा।

प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने सभा के कार्यों मे प्रोफेसर साहब के सहयोग और नेतृत्व की चर्चा करते हुए इन शब्दों के साथ उनकी दीर्घायु की कामना की—"तुम सलामत रहो हजार बरस, हर बरस के हों दिन पचास हजार।"

डी० ए० वी० कालेज कमेटी के महामन्त्री डा० धर्मपाल सेठ ने प्रोफेसर साहब के प्रेरणामय जीवन पर आधारित स्वरचित एक कविता सुनाई। तदनन्तर धन्यवाद और शान्तिपाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष : दान की अपील

पंजाब की आर्य-हिन्दू जनता अभी भी संकट में है। आतंकवादी हत्यारों के भय से अभी भी लोग पंजाब छोड़कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र जा रहे हैं। ये लोग आर्यसमाज मन्दिरों और सनातन धर्म मन्दिरों में डेरा डाले पड़े हैं। आपसे अपील है कि संकट के इस समय में इन लोगों की तन-मन-धन से सहायता करें।

धन और सामान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

भूल सुधार

प्रस्तुत अंक में पृष्ठ आठ पर श्री इन्द्रराज के नाम के साथ गलती से मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश छप गया है। वे सभा के मन्त्री नहीं, प्रधान हैं।

—सम्पादक

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विदेश मन्त्रालय का उत्तर

Shri Ramgopal Shalwale
President
Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha
Ramlila Ground,
New Delhi-110002.

Dear Sir,

Please refer to your letter dated 28-5-86 regarding the arrest in Saudi Arabia of Shri Ram Kumar Bharadwaj.

Our Mission in Riyadh has taken up with the Ministry of Foreign Affairs of Saudi Arabia through a written note requesting for the intercession of the Saudi Government for the early release of Shri Bharadwaj.

In this connection, you may be aware that Saudi Arabia does not permit profession practice or preaching of any religion in the kingdom besides Islam. Bringing of any religious literature or articles of worship are totally prohibited.

You may bring to the notice of the Members of your sabha, for their information, that the laws of the Kingdom Saudi Arabia prohibit the practice of any religion other than Islam and bringing into the kingdom of any religious literature or articles of worship are illegal.

Yours faithfully,
SHASHANK
JOINT SECRETARY (GOV)

यह ठीक है कि प्रत्येक देश को अपने-अपने कानून बनाने का पूरा अधिकार है। लेकिन ऐसे राष्ट्रों को, जिनमें हमारी भाषा, धर्म और संस्कृति के प्रति इतनी घृणा और विद्वेष है, हमारी सरकार कब तक गले लगाती रहेगी। यह दुःख और चिन्ता की स्थिति है। भारत से बाहर हमारे देश का प्रत्येक नागरिक हमारा सांस्कृतिक राजदूत समझा जाता है। उसका अपमान न केवल हमारे देश और जाति का अपमान है अपितु हमारी सरकार का भी अपमान है। हमारे राजनेता इस तथ्य को कब स्वीकार करेंगे, ईश्वर ही जाने।

सम्पादकीय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश : भव्य अतीत और उज्ज्वल भविष्य

आओ, हम याद करें उस अतीत को, जिसमें मानव मन सकुचित केन्द्र बिन्दु पर घूम रहे थे। अन्धकारपूर्ण अतीत पर मथुरा में बैठे प्रज्ञाचक्षु प्रकाश की उज्ज्वल किरणों को अन्तश्चक्षुओं से देख रहे थे। पर दृष्टिपात कर रहे थे उस व्यक्तित्व की ओर जिसकी उन्हें प्रतीक्षा थी। उस प्रकाश पुञ्ज ने जिसके मूल में ही शंकर था, दयानन्द बनकर गुरु के चरणों में स्वयं उपस्थित होकर भविष्य को प्रकाश देने का आदेश पाया और तथास्तु कहकर उत्तरप्रदेश से वैदिक शंखनाद किया। उनके उद्घोष को मानवों और महामानवों ने सुना। निराशा के बादल छटे और आशा की किरणें फूटीं।

हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक दिग्-दिगन्त आलोकित हो उठे और मथुरा का प्रकाश उत्तरप्रदेश के निकटवर्ती आंगन में त्वरित गति से फैला।

क्रान्ति की चिनगारी राष्ट्रीयता का रूप लेकर ज्वाला बनकर धधकी, और आर्यसमाज का स्वरूप उभारा।

सारा उत्तरप्रदेश ऋषि की हुंकार पर अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया।

सामाजिक क्षेत्र में फैली विषमता को ध्वस्त करने के लिए ऋषि ने डाक्टर बनकर मरीज को समझने में काफी समय लगाया, पर मर्ज को जानकर दवा देने में जरा भी विलम्ब नहीं किया।

धार्मिक अन्धविश्वास की जड़ पर तीव्र कुठार का प्रहार किया। घर की चारदीवारी में—

अन्तः शाक्ता बहिः शैवाः सभा मध्ये च वैष्णवाः।
नानारूपधराः कौला विचरन्ति महीतले ॥

धर्म के ढोंगी ठेकेदारों के गढ़ों को तर्क के तीरों से छिन्न-भिन्न कर दिया, विधर्मियों के हमलों को वैदिक प्रहारों से ढहा दिया और सत्य सनातन वैदिक धर्म का शंखनाद किया।

ऐसे समय में ऋषि ने आर्यसमाज की पौध उत्तरप्रदेश में लगाई थी, जो धीरे-धीरे अमर बेल बनकर धर्म के वृक्ष का आश्रय पाकर आकाश में फैल गई। लाभ तो मिला लेकिन बिना छाया के।

समय बीता, महर्षि के बाद नये युग का दौर आया। स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी दर्शनानन्द के वाग्बाणों ने धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक क्रान्ति का जो निनाद किया, उससे सांस्कृतिक चेतना जगी। शिक्षा के क्षेत्र मे उत्तरप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में गुरुकुलों, कन्या विद्यालयों और डी० ए०-वी० स्कूलों का जाल बिछने लगा। उनसे क्रान्ति के शोले अंगार बनकर निकले। स्वतन्त्रता का स्वर्ण विहान आया और आर्यसमाज अपने पूर्ण यौवन में अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया।

१९०७ में अंग्रेजी हुकूमत ने उत्तरप्रदेश आर्यसमाज की एक-एक इकाई पर आंच बैठाई और आर्यसमाज को एक खतरनाक संस्था घोषित किया। इसी समय आर्यसमाज की एक-एक इकाई को संगठित रूप देने की योजना बनी।

सन् १८८६ में आर्यसमाज की इकाइयों को जोड़ने का संकल्प लिया गया और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का विधिवत् गठन किया गया।

किन्तु सभा का स्थायी केन्द्र न होने के कारण सभा का कार्यालय प्रधान व मन्त्री जहां के बनते, उन्हीं के साथ रहा करता। काफी समय तक यही स्थिति रही। फिर विचार-विमर्श के बाद लखनऊ में ५, मीराबाई मार्ग पर यह भवन पं० शिवचन्द्र जी ने अपने पास से धन देकर क्रय किया, जो बाद में धीरे-धीरे एकत्र कर वापस कर दिया गया।

सभा के सौ वर्ष के कठिन समय का अवलोकन करें तो वे व्यक्तित्व जो आर्यसमाज की बुनियाद को भरने में नींव के पत्थर बने जिन पर आज आर्यसमाज का विशाल महल बनकर खड़ा है आज हम उन्हें याद कर लें—

पूज्यपाद महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज, पं० घासीराम जी एम. ए., पं० गंगाप्रसाद जी मिश्र आदि में और मध्य पंक्ति में ठा मशाल-सिंह जी, पं० रासबिहारी तिवारी, पं० धुरेन्द्र शास्त्री, रामदत्त जी शुक्ल, सेठ मदनमोहन, बाबू पीतमलाल जी, पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, बा. उमाशंकर जी, पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, बृहस्पति जी, राजा रणञ्जयसिंह और आज की पंक्ति में पं. विद्याधर शर्मा, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, प० वाचस्पति शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, प० प्रेमचन्द्र शर्मा आदि हैं। साथ ही हम उन्हेंभी नहीं भूल सकते, जिनकी वाणीसे आग बरसती थी—आचार्य नरदेव शास्त्री, पं० गणपति शर्मा, पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० भोजदत्त जी, कु० सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, ठा अमरसिंह जी, प० बिहारीलाल जी शास्त्री, पं० शिवशर्मा जी, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० भीमसेन शर्मा, पं० हरिदत्त शास्त्री, स्वामी त्यागानन्द जी आदि।

किसी ने बुनियाद भरी, किसी ने महल चुना और किन्हीं जनों ने लाख-लाख दुःखी मानवों को संरक्षण देने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा का विशाल रूप बनाकर यह संस्था खड़ी की।

आज सभा का विशाल भवन व स्थान है। इसके अन्तर्गत डेढ़ हजार आर्यसमाजें कार्यरत हैं। ५०० से ऊपर स्कूल, कालिज, बाल विद्यालय, अनाथालय और विधवाश्रम शिक्षा व संरक्षण में रत हैं। सैकड़ों उपदेशक और प्रचारक ऋषि मिशन में लगे हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए ८० प्रतिशत आर्यसमाजी अंग्रेजों की कारा के बन्दी बने।

आज ऋषि दयानन्द द्वारा प्राणों का संचार पाकर जिन नाना महानुभावों ने उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा को प्राणवान् बनाया है, उन्हें स्मरण करते हुए हम सभा के सौ वर्षों की उपलब्धियां देख रहे हैं। आओ, चिन्तन करें कि अतीत कितना महान् था, वर्तमान के दौर में हम कहां हैं और हमारा भविष्य के प्रति क्या कर्तव्य है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

शुचि वैदिक धर्मानुरक्त ऋषिराज भक्त ने,
श्वेत वस्त्र त्याग बाना भगवा अपनाया है।
जन गण मन के क्लेश मिटाने के लिये,
आज मोह-माया से मन को हटाया है॥
संतप्त लोक कल्याण हेतु व्रत धार,
वेद धर्म प्रचारार्थ बीड़ा उठाया है।
कहते जिन्हें लाला रामगोपाल शालवाले;
स्वामी आनन्दबोध शुभ नाम पाया है॥

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री

रहें सदा मुस्काते, रहें स्वस्थ सानन्द।
सार्वदेशिक के सम्पादक, बने सच्चिदानन्द॥
बने सच्चिदानन्द शास्त्री ऋषि-भक्त हैं।
अनवरत कार्यरत लगनशील आर्य सशक्त हैं॥
मिथ्या मत पाखण्ड ढोंग का नाश करेंगे।
देश-विदेश में जाकर के प्रकाश करेंगे॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता, वेदप्रचार विभाग, आ. प्र. सभा दिल्ली

आनन्दबोध : सफल साधना होवे

धर्म धुरीण भक्त ऋषि पथ के, त्याग-तपस्या-कामी।
मोह-पाश को त्याग सनातन वैदिक पथ अनुगामी॥
सुखद गृहस्थी जीवन को तज लिया भागवी बाना।
अनुशासित आनन्दबोध ने जीवन पथ पहचाना॥
गोपालक गोपाल राम की पूर्ण कामना होवे।
अन्तर्द्वन्द्व मिटे अब जग से सफल साधना होवे॥

—दिनेशचन्द्र त्रिपाठी, दरियागंज, दिल्ली

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

हिन्दू छात्राओं की अस्मत लूटने का घिनौना अड्डा

— शिवकुमार गोयल —

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कभी साम्प्रदायिकता तथा पाकिस्तान समर्थक गतिविधियों के कारण चर्चित था, किन्तु इन दिनों छात्राओं के यौन शोषण, हिन्दू छात्राओं को प्रलोभन में फंसा कर उनका धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम छात्रों व शिक्षकों के साथ निकाह करा देने जैसी शर्मनाक घटनाओं के कारण विवाद व चर्चा का विषय बना हुआ है।

हिन्दी दैनिक "अमर उजाला" के दो अंकों में छात्राओं के यौन शोषण व उत्पीड़न की तथ्यात्मक रपट छपते ही शिक्षा क्षेत्र में हड़कम्प-सा मच गया है। आगरा मंडल के अनेक कालेजों के छात्रों और सामाजिक व धार्मिक संगठनों ने इस घृणित कार्य में लिप्त शिक्षकों व छात्रों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई किये जाने तथा इस संस्था के साम्प्रदायिक व 'राष्ट्र-विरोधी' स्वरूप की जांच किये जाने की भी मांग की है।

इस विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर जहां डा० जाकिरहुसैन जैसे प्रख्यात शिक्षाविद् रहे, वहीं वर्तमान कुलपति सैयद हाशिम अली पर तरह-तरह के आरोप लगाये जाने से यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि इस विश्वविद्यालय का स्तर दिनोंदिन गिरता जा रहा है। कुलपति पर सार्वजनिक रूप से यह आरोप लगाया जा रहा है कि वे कभी भूतपूर्व रियासत हैदराबाद के भारत विरोधी व पाकिस्तान समर्थक संगठन "रजाकार" से सम्बद्ध थे तथा इस आरोप में उन्हें जेल की हवा भी खानी पड़ी थी।

हिन्दू छात्राएं ही शिकार

इस विश्वविद्यालय में छात्राओं, विशेषकर हिन्दू छात्राओं के साथ बलात्कार किये जाने, उन्हें प्रलोभन व दबाव में फंसाकर धर्म-परिवर्तन कर मुस्लिम शिक्षकों अथवा छात्रों के साथ उनका 'निकाह' करा दिये जाने की शर्मनाक घटनाएं तो समय-समय पर प्रकाश में आती ही रही हैं, किन्तु असली विस्फोट १७ मई १९८९ को कुलपति सैयद हाशिम अली द्वारा मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० एम० ए० बेग को छात्राओं के यौन शोषण के आरोप में निलम्बित कर दिये जाने से हुआ। मनोविज्ञान विभाग की कुछ छात्राओं ने कुलपति को पत्र लिखकर प्रो० बेग तथा उनके मित्र रीडर डा० बी० डी० गुप्त पर यौन सम्बन्ध स्थापित करने के लिये विवश करने के आरोप लगाये थे। कुलपति ने जांच के बाद पहले प्रो० बेग को निलम्बित किया तथा बाद में डा० गुप्त को। निलम्बित किये जाने के बाद इन दोनों ने उपकुलपति तथा उनके समर्थक शिक्षकों व कुछ छात्रों पर हिन्दू छात्राओं का उत्पीड़न कराये जाने के प्रत्यारोप लगाकर मामले को और अधिक गम्भीर बना दिया।

बहरहाल यौन शोषण कोई भी करता हो, यह तो उजागर हो ही गया है कि कभी देश-विदेश में अग्रणी समझी जाने वाली यह शिक्षण संस्था आज पतन की पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी है।

एक छात्रा सुनीता टंडन ने लिखित शिकायत में आरोप लगाया था कि मैरिस रोड स्थित भव्य कोठी 'निगार विला' शिक्षकों की अय्याशी का अड्डा बनी हुई है। छात्राओं को किसी बहाने से वहां बुलाया जाता है तथा वासना का शिकार बनाया जाता है।

कु० सुमन टंडन ने कुलपति को दिये ज्ञापन में आरोप लगाया कि वह पितृविहीन है अतः अकेली मां के साथ रहती है। वह मनोविज्ञान विषय में शोध कर रही है। विभागाध्यक्ष प्रो० बेग ने उसे टाइप कराने तथा रुपये पैसे से सहायता करने का लालच देकर यौन सम्बन्ध बनाने पर दबाव डाला। जब उसने इस घिनौने कृत्य से इनकार कर दिया तो उसे तरह-तरह की धमकियां दी गई। "मुझे साजिश रचकर बदनाम किया गया कि मैं एक मुस्लिम छात्र के साथ विदेश भागने वाली हूं।" कु० टण्डन ने स्पष्ट आरोप लगाया कि प्रो० बेग ने उसके सामने कहा—"तुझ पर मेरा दिल आ गया है अतः मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं।"

छात्रा ने निर्भीकता से कहा—"यदि मेरे साथ न्याय नहीं हुआ तो मैं न्यायपालिका के दरवाजे भी खटखटाऊंगी और इन गुण्डों का पर्दाफाश करके रहूंगी, जिससे वे अन्य लड़कियों के साथ खिलवाड़ न कर सकें।"

कम्प्यूटर विज्ञान के शिक्षक हामिद हुसैन द्वारा एक हिन्दू छात्रा को भगा ले जाने का मामला भी हाल ही में प्रकाश में आया है। कुलपति ने उसकी सेवायें समाप्त कर दी हैं।"

दोनों गुट घिनौने कृत्य में संलग्न

मुस्लिम यूनिवर्सिटी में शिक्षकों व छात्रों के दो गुट बने हुए हैं। एक गुट में प्रो० बेग तथा डा० गुप्त हैं तथा दूसरे में ख्वाजा शमीम अहमद, डा० कमर हसन, डा० वमीक कादरी आदि हैं। प्रो० बेग तथा उनके साथी दूसरे गुट पर संकीर्ण व साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाते हैं, जबकि अपने को 'राष्ट्रवादी' व 'धर्मनिरपेक्ष' घोषित करते हैं। वे कहते हैं कि क्योंकि वे (प्रो० बेग तथा डा० गुप्त) अल्पसंख्यक हिन्दू छात्राओं को गुण्डों के चंगुल से बचाने का प्रयास करते रहे हैं, इसलिये सुनियोजित रूप से इनका चरित्र हनन करने के लिये एक बदनाम छात्रा से इन पर निराधार आरोप लगवाये गये हैं। डा० गुप्त का स्पष्टीकरण है कि साम्प्रदायिक व शरारती मुस्लिम छात्र व शिक्षक हिन्दू छात्राओं का यौन शोषण तथा धर्म-परिवर्तन करते रहे हैं। मैं उनका कड़ा विरोध करता हूं, इसलिये बौखलाकर उन्होंने मेरे तथा प्रो० बेग के चरित्र हनन की साजिश की है।

छात्रा को फंसाया—मजहब के नाम पर

मजेदार पहलू यह है कि प्रो० बेग एक ओर दूसरों पर छात्राओं के यौन शोषण का आरोप लगाते हुए अपने को 'पाक-साफ' बताते हैं किन्तु बातचीत में वे यह स्वीकार करते हैं कि "उन्होंने अपना चौथा विवाह करने के बाद भी १९७८ में सिटी स्कूल के एक शिक्षक की बेटी से जो उनकी छात्रा रह चुकी है, अलिखित विवाह किया था। जनवरी १९८४ में उस लड़की के पिता ने उसे उनसे अलग कर दिया।"

वे कहते हैं—'मैं पक्का नमाजी मुसलमान हूं तथा मैंने चार विवाह तथा पांचवां अलिखित विवाह अपने मजहब के अनुरूप ही किया था।"

अलीगढ़ की प्रायः सभी संस्थाओं के नेता व शिक्षाविद् विश्वविद्यालय की इन शर्मनाक घटनाओं से चिन्तित व क्षुब्ध हैं। प्रमुख शिक्षाविद् डा० वेदराम शर्मा, भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री महेशचन्द्र वार्ष्णेय और श्री जयपालसिंह चौहान, शिक्षाविद् तथा जनसंघी नेता डा० गंगाराम सभी इन शर्मनाक घटनाओं की उच्चस्तरीय जांच कराकर चरित्रहीन शिक्षकों को दंडित करने व हिन्दू छात्राओं की इज्जत की सुरक्षा की व्यवस्था को आवश्यक मानते हैं।

गीता व रानी से बलात्कार

डा० गंगाराम बताते हैं—"इस यूनिवर्सिटी की एक दर्जन से अधिक हिन्दू छात्राओं को जाल में फंसाकर धर्म परिवर्तन कराया गया तथा मुस्लिम शिक्षकों व छात्रों से उनका निकाह करा दिया

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महत्त्व आक्रोश का नहीं, निष्ठा का है

–क्षितीश वेदालंकार–

हमारे संविधान के ३४३वें अनुच्छेद में भारतीय संघ की राजभाषा के सम्बन्ध में कहा गया है –"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।" इसी अनुच्छेद के दूसरे खण्ड में कहा गया है कि "१५ वर्ष की अवधि तक संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा और उक्त अवधि के दौरान राष्ट्रपति शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेंगे। ५ वर्ष की समाप्ति पर राष्ट्रपति एक आयोग का गठन करेंगे, जिसमें अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग की व्यवस्था पर निर्णय किया जायेगा।"

इसके अतिरिक्त संविधान के ३५१वें अनुच्छेद में कहा गया है— "संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाये, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और जहां आवश्यक हो, वहां उसके शब्द-भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

संविधान के इस आदेश के अनुसार सन् १९४९ में १४ सितम्बर के दिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया था। उसके बाद १५ वर्ष की अवधि कभी की बीत चुकी, आयोग भी बना और वह अपनी रिपोर्ट भी दे चुका, परन्तु अभी तक हिन्दी राजभाषा के आसन को प्राप्त नहीं कर सकी। वहां अभी तक सिंहासन पर अंग्रेजी आसीन है और उसके हटने के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। बारम्बार नेता गण यह घोषणा करते भी गर्व अनुभव करते हैं कि हिन्दी किसी पर लादी नहीं जायेगी और यदि किसी एक छोटे-से राज्य ने भी विरोध किया तो हिन्दी को लागू नहीं किया जायेगा।

अगर कुछ लाख संख्या वाले एक छोटे-से क्षेत्र की सहमति की प्रतीक्षा में समस्त भारतीय राष्ट्र को उसकी इच्छा के आगे झुकने के लिए बाध्य किया जा सकता है तो संविधान में हिन्दी को राजभाषा बनाने की व्यवस्था करने की आवश्यकता ही क्या थी? संविधान को अगर लागू नहीं करना है तो संविधान का कोई अर्थ नहीं। संविधान इसलिए बनाया जाता है कि उसे लागू किया जाये और वह राष्ट्र के सब नागरिकों पर समान रूप से लागू हो। आखिर प्रत्येक राष्ट्र की राष्ट्रीयता के कुछ तकाजे होते हैं। वे तकाजे संविधान द्वारा अनुमोदित हों तो उन्हें लागू न करना एक तरह की अपराध की कोटि में आता है। जो शासक संविधान की रक्षा की शपथ लेकर कुर्सी पर आसीन होते हैं, वे स्वयं संविधान के निर्देशों का उल्लंघन करें तो बात कैसे बनेगी। सन् पचास से लेकर, जब संविधान लागू हुआ, अब तक इन ३५ वर्षों में हिन्दी की स्थिति में कोई सुधार आया हो या वह कहीं भी अंग्रेजी को अपदस्थ कर सकी हो, ऐसा दिखाई नहीं देता। बल्कि इसके विपरीत दिखाई यह देता है कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने से पूर्व अंग्रेजी का जितना बोलबाला था, स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद वह उससे कई गुना अधिक बढ़ गया। पहले हम अंग्रेजों को दोष देते थे, अब हम किसको दोष देंगे, सिवाय अपने वर्तमान शासकों के?

यह ठीक है कि "राजा कालस्य कारणम्" के अनुसार किसी भी राष्ट्र में विद्यमान काल का कारण राजा होता है। राजाओं की इच्छाओं के अनुसार ही प्रजा व्यवहार करती है और जब किसी चीज के प्रति राजा के मन में ही संकल्प और निष्ठा का अभाव हो तो प्रजा में उस चीज के प्रति निष्ठा कैसे पैदा होगी। कभी-कभी जनतन्त्र की आड़ में शासक लोग यह बहाना बनाते हैं कि हम जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि हैं, इसलिए हम जो कुछ कहते या करते हैं वही जनता की आवाज है और हमारी इच्छा के विरुद्ध चलना जनतन्त्र की भावना के विरुद्ध है। यह तर्क कितना कमजोर है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि सत्ता प्राप्त करने के बाद आदमी प्रायः वही नहीं रहता जो सत्ता प्राप्त करने से पूर्व होता है। इसीलिए जनता के सामने वोट की भिक्षा मांगने वाले उम्मीदवार की विनम्र याचक छवि की तुलना सत्ता के मद से उन्मत्त समस्त कायदे-कानूनों का उल्लंघन करके जनता पर अपनी इच्छा थोपने वाले, निरंकुशता की ओर अग्रसर शासक से नहीं की जा सकती। वह जनता का प्रतिनिधि नहीं, वह जनता के अधिकारों को अपने स्वार्थों के नीचे कुचलने वाला अधिनायक है।

पर जरा ठहरिये! शासक के प्रति इस आक्रोश से क्या बनने वाला है। यह ठीक है कि शासक को रास्ते पर लाने की कुंजी जनता के हाथ में है। परन्तु जनता स्वयं इस तथ्य को समझे तो सही। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् हमारे जातीय स्वभाव में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया है। सहस्राब्दिक वर्षों की राजनैतिक और मानसिक दासता ने हमारे जीवन में निराशा, पलायन और कर्म-विमुखता भर दी। स्वतन्त्र संघर्ष के दिनों में हमने उस स्वभाव को तिलांजलि देकर स्वभाषा, स्वसाहित्य, स्वसंस्कृति और स्वराज्य के प्रति नव चेतना से अनुप्राणित होकर अपनी निष्ठा, अपने त्याग और अपने बलिदान का अद्भुत उदाहरण संसार के सामने प्रस्तुत किया था। तब हम परमुखापेक्षी नहीं थे और किसी भी बात के लिए विदेशी शासन के प्रति उन्मुख होने में हमें अपमान और आत्मग्लानि अनुभव होती थी। हम प्रत्येक कार्य का उपक्रम और तदर्थ पराक्रम अपने हाथ में रखना चाहते थे।

स्वाधीनता की चेतना का यही तो सबसे आवश्यक गुण था। उसी के द्वारा हमने स्वतन्त्रता भी प्राप्त की थी। पर स्वतन्त्रता प्राप्त करते ही वह चेतना कहां लुप्त हो गई? अब हम हरेक काम में शासकों का मुंह देखते हैं और यह चाहते हैं कि अमुक काम शासन ही करे और हम कुछ न करें। हम नाम जनतन्त्र का लेते हैं पर यह कैसा जनतन्त्र है जिसमें जन के ऊपर तन्त्र हावी है। तन्त्र को बदलने वाला स्वाधीनता से पूर्व का वह जन आज कहां चला गया? बहुत हुआ तो शासकों के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करके हम समझ लेते है कि हमने बहुत बड़ा तीर मार लिया और हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री हो गई। यह पलायनवाद नहीं तो और क्या है?

कभी ऋषि दयानन्द ने कहा था—"मेरी आंखें तो उस दिन को देखने को तरस रही हैं, जब कश्मीर से कन्या कुमारी तक प्रत्येक भारतवासी हिन्दी का व्यवहार करेगा।" ऋषि के ही स्वर में स्वर मिलाकर महात्मा गांधी ने कहा था—'हिन्दी के बिना मुझे स्वराज्य की कल्पना ही अधूरी लगती है।" परन्तु स्वराज्य आने के बाद हिन्दी की दशा और दयनीय हो गई है। हम यह मान बैठे हैं कि हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाना सरकार का काम है। परन्तु यह याद रहे कि अपनी भाषा के जगन्नाथ के रथ को राजा के घोड़े नहीं खींच सकते। इस पावन रथ को तो युगों से जनता के हाथ ही खींचते आये हैं। हिन्दी राजा की टकसाल में नहीं गढ़ी जा सकती। उसका फैसला कानूनों से नहीं होगा। हमारा अपना व्यवहार ही हिन्दी को उसका उचित स्थान दिला सकता है।

राजनैतिक दासता से मुक्त होने के पश्चात् विदेशी संस्कृति, विदेशी भाषा विदेशी साहित्य, विदेशी मतवाद, विदेशी पूंजी, विदेशी चमक-दमक से हम इस तरह जकड़ लिये गये हैं कि हमारे अपने "स्व" की गति और मति मन्द पड़ गई है और सर्वत्र "पर" का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज न्यूयार्क का शुभ उद्घाटन समारोह

न्यूयार्क (अमरीका) के भव्य आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के तीन मुख्य अंग थे—

(१) सम्पूर्ण यजुर्वेद पारायण यज्ञ—यज्ञ का प्रारम्भ शनिवार १७ मई को प्रातः १० बजे हुआ व पूर्णाहुति रविवार २५ मई को मध्याह्न में हुई। १७ व १८ मई को यज्ञ की अवधि पांच-पांच घण्टे रही तथा अन्य सात दिन यज्ञ की अवधि दो घण्टे होती थी। इस प्रकार पूर्ण यज्ञ में २४ घण्टे लगे। यज्ञ में सम्पूर्ण यजुर्वेद पाठ के अतिरिक्त यह प्रयत्न किया जाता था कि प्रत्येक पाठ का सारांश तथा कुछ मन्त्रों का विश्लेषण समेत अर्थ कहा जाये ताकि उपस्थित भाइयों व बहिनों को भक्तिभाव के अतिरिक्त ज्ञानवर्षा का लाभ हो।

सम्पूर्ण यजुर्वेद का पारायण हुआ तथा प्रत्येक मन्त्र के अन्त में यज्ञाहुतियां दी जाती थी। ६ दिन का यज्ञ स्वामी सत्यप्रकाश जी के सान्निध्य में हुआ। उत्तरकालीन ६ दिन आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का निदर्शन हमें प्राप्त रहा। उससे हमें अति लाभ हुआ।

मन्त्रों के उद्गाता रूप में गुरुकुल कांगड़ी से शिक्षाप्राप्त डा० सतीश जी का मुख्य योगदान था। सतीश जी ब्रह्मचारी हैं। गायना के मूल निवासी तथा विद्वान् व धार्मिक व्यक्ति हैं।

पूरे ९ दिन यज्ञ में जनता बड़ी संख्या में उपस्थित रही, यही हमारे लिये बड़ी प्रसन्नता की बात थी। प्रत्येक दिन यज्ञान्त में स्वामी जी का प्रवचन लाभ हमें प्राप्त होता था।

दिसम्बर १९८४ में हम लोगो ने यहां सम्पूर्ण सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न किया था। आगे शुभ अवसरों पर अथर्ववेद व ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करने का विचार है। सम्पूर्ण वेदपारायण यज्ञ अमरीका के इतिहास में एक अति उच्च स्तर की घटना है।

(२) वेद सम्मेलन—शनिवार २४ मई को वेद सम्मेलन का आयोजन था। वेद पारायण यज्ञ व वेद सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन ज्ञानधारा व अनासक्त कर्म धारा का पवित्र संगम था।

वेदपारायण यज्ञ व वेद सम्मेलन तो वास्तव में प्रारम्भ हैं एक योजना का जिसके द्वारा हम वेद को अमरीका के हृदय मे बिठाना चाहते हैं। वैसे तो संसार की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान वेद ही है। अमरीका की कुछ ऐसी गम्भीर समस्यायें हैं जिन्हे सबने असमाधेय समझ कर छोड़ रक्खा है। उन समस्याओ का भी समाधान वेद के पास है और वे समस्यायें हम वेद अनुयायियों का आह्वान कर रही हैं।

(३) आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन—उद्घाटन समारोह का आयोजन रविवार २५ मई को सायंकाल २ बजे से ५ बजे तक था। प्रथम समाज मन्दिर पर ओ३म् ध्वज स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा फहराया गया। इस अवसर पर मन्दिर के सामने की बहुत चौड़ी सड़क हिल साइड एवेन्यू पर बड़ी संख्या में एकत्रित आर्य जन भावविभोर होकर निम्नलिखित ध्वज गीत गा रहे थे—

यह ओ३म् का झण्डा आता है, ऐ सोने वालो जाग चलो········· ··

इस अवसर के आनन्द का वर्णन वाणी से नही किया जा सकता। उसके पश्चात् उद्घाटन समारोह प्रारम्भ हुआ। प्रथम मैंने विनम्र भाव से स्वागत भाषण पढ़ा। स्वागत भाषण में यह दर्शाया गया कि अमरीका के आदि निवासी 'American Indians' (अमरीकन इण्डियन्स) अनेक इतिहासज्ञों के मतानुसार भारत से ही अमरीका आये थे। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ तथा अन्य विद्वान् भारत से यहां आये। अब समय आया है कि आर्यसमाज अमरीका का वैदिकीकरण करे। इस समय न्यूयार्क के समीपस्थ स्थानों में ६ आर्यसमाजें कार्यरत हैं। अमरीका के पश्चिमी तट पर लौस एन्जेलस में भी आर्यसमाज के अपने दो भवन हैं।

उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित होकर भारत के कौंसल-जनरल (न्यूयार्क) के प्रतिनिधि ने आर्यसमाज के कार्य की सराहना की। ट्रिनीडाड तथा गायनाके न्यूयार्क स्थित कौंसल जनरल स्वय पधारे, महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा आर्यसमाज के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके अतिरिक्त अनेक आर्यसमाजी तथा अन्य विद्वानो ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अमेरिका में आर्यसमाज की परमावश्यकता है। उन्होने आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज आगे बढ़े और यहां के कार्यों में सर्वांगीणरूपेण भाग ले।

यहां हम अब की आशायें आर्यसमाज न्यूयार्क की ओर लगी हैं। अब हमारा उत्तरदायित्व हो जाता है कि सबकी आशाओं की पूर्ति के लिये आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र को गहन व विस्तृत करें। उसके लिए कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा है। तात्कालिक उपाय यह है कि नवीन भारत तथा गायना से पधारे हुए आर्यसमाज भाई अपनी शक्ति का एकीकरण करें। स्वामी सत्यप्रकाश जी तथा आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने इस विचार से अपनी पूर्ण सहमति प्रकट की है। परमात्मा हमें शक्ति प्रदान करे कि हम ऋषि के सन्देश पर चलते हुए अग्रसर हों।

इस समय यहां एक गुरुकुल की स्थापना की योजना को अन्तिम रूप दिया जा रहा है। यह गुरुकुल न्यूयार्क से ४० मील दूर मनरो नामक स्थान पर स्थापित किया जाये, यह विचार है।

आर्यसमाज मन्दिर न्यूयार्क का पता इस प्रकार है—आर्यसमाज मन्दिर ११०-२२, हिल साइड एवेन्यू, जमाइका, न्यूयार्क-११४३२। ध्यान रहे कि इस समय मन्दिर में अतिथिशाला का प्रबन्ध नहीं। इस कार्य में अभी समय लगेगा। —धर्मजित् जिज्ञासु

फतेहगढ़ साहिब में सिखों का धार्मिक ट्रेनिंग कैम्प

मुसलमानों को पटाने की कोशिश : नामधारियों और राधास्वामियों के विरुद्ध झूठा प्रचार

सितम्बर मास के प्रथम सप्ताह मे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने ७ दिन के एक धार्मिक ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन सरहिंद के फतेहगढ़ साहिब गुरुद्वारे में किया था। इस कैम्प मे सभी प्रमुख सिख बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों और धार्मिक नेताओं ने भाग लिया और अपने विचार रखे। हालांकि इस ट्रेनिंग कैम्प के सम्बन्ध मे और यहां विचार रखने वाले सिख नेताओं के बारे में समाचारपत्रों मे ज्यादा नही छपा है, लेकिन राजधानी दिल्ली से छपने वाले एक प्रमुख अंग्रेजी दैनिक में इस ट्रेनिंग कैम्प के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट विस्तारपूर्वक छपी है। रिपोर्ट लिखने वाले पत्रकार का मत है कि इस ट्रेनिंग कैम्प में सभी नेताओं ने शब्दों के हेरफेर से भिंडरावाला के विचारों को अपने भाषणो मे उभारा है। यहां तक कि नर्म और उग्रवाद के विरोधी समझे जाने वाले कई नेताओं ने तो खुल कर साम्प्रदायिकता भड़काने वाले भाषण दिये हैं। कई नेताओं ने केन्द्रीय सरकार की भर्त्सना भी की है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि इस ट्रेनिंग कैम्प के दौरान एक भी आवाज आतंकवाद और पंजाब मे रोजाना निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं के विरोध में नहीं उठाई गई।

इस रिपोर्ट के अनुसार इस कैम्प मे भाग लेने वालों मे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के ९५ रागी 'ढाडी जत्थों' के सदस्यों, संयुक्त अकाली दल के नेता श्री उजागर सिंह सेखवां और भूतपूर्व अकाली दल अध्यक्ष श्री जगदेव सिंह तलवंडी ने भाग लिया था। श्री सेखवां और श्री तलवंडी प्रबन्धक कमेटी की धर्मप्रचार कमेटी के सदस्य भी हैं। इसी कमेटी के अधीन यह कैम्प आयोजित किया गया था। हालांकि इस कैम्प का मुख्य लक्ष्य 'रागियों' को सिख इतिहास, सिख परम्पराओं और सिख धर्म के प्रति जागरूक करना था लेकिन इसकी बजाय सभी सिख नेताओं ने इस मौके का पूरा फायदा उठाते हुए केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध जी-भर कर जहर उगला।

कई सिख बुद्धिजीवियों ने भिंडरांवाला और उनके विचारों की सराहना की। हरयाणा के यमुनानगर से आये एक सिख बुद्धिजीवी प्रो. सतबीर सिंह ने अपने भाषण में कहा कि अपनी मृत्यु से पहले सन्त भिंडरांवाला ने सिख कौम के नाम अपना एक सन्देश अमरीका से आये अपने एक समर्थक के टेप-रिकार्डर में टेप करवाया था। बाद मे इस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया गया था। प्रो. सतबीर सिंह के मुताबिक अब यह व्यक्ति रिहा हो गया है, लेकिन वह टेप-रिकार्डिड संदेश अभी तक सुरक्षित है और सिख पंथ के समक्ष यह संदेश ठीक समय पर पहुंचा दिया जायेगा।

इस ट्रेनिंग कैम्प में कई वक्ताओं ने अन्य धर्मों की भी आलोचना की। एक वक्ता के अनुसार हिन्दू और इस्लाम दोनों ही धर्म पुराने और दकियानूसी हो चुके हैं। एक जगह पर तो अपने भाषण के दौरान जब ज्ञानी करतार सिंह शेरगिल ने इस्लाम धर्म के संस्थापक के विरोध में कुछ शब्द कहे तो वातावरण काफी तनावपूर्ण हो गया। ज्ञानी करतार सिंह की उपरोक्त टिप्पणी की काफी प्रतिक्रिया हुई। प्रो० हरभजन सिंह ने खड़े होकर इसका विरोध किया और कहा कि ज्ञानी जी असल मुद्दे से दूर हट रहे हैं।

अगले दिन अमृतसर के सिख मिशनरी कालेज के प्रो० लाभसिंह ने श्री शेरगिल द्वारा इस्लाम धर्म के विरोध मे बोले गये शब्दों के जवाब में यह कहा कि जो आलोचना उन्होंने की है वह सिखो के हित मे नही है। प्रो० लाभसिंह के मुताबिक सिख और मुसलमान दो अल्पसंख्यक सम्प्रदाय हैं और दोनों के हित एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने की बजाय जरूरत इस बात की है कि इस समय ये दोनों सम्प्रदाय एक-दूसरे के सहयोग से मिल-जुल कर चलें। इसी कैम्प में भाषणों के दौर में ज्ञानी मेवा सिंह ने नामधारियों और राधास्वामियों के विरोध में भी काफी कुछ कहा। ज्ञानी मेवा सिंह के मुताबिक राधास्वामी और नामधारी ब्रिटिश राज की देन हैं, जो सिखों की एकता को खत्म करके इसे बांटने में विश्वास रखता था।

इस कैम्प के दौरान वर्तमान अकाली दल और अकाली सरकार की भी आलोचना की गई। श्री जगदेव सिंह तलवंडी ने गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की कार्यशैली तथा वर्तमान अकाली लीडरशिप की भर्त्सना करते हुए कहा कि वर्तमान अकाली लीडरशिप असफल सिद्ध हो चुकी है। श्री तलवंडी के मुताबिक गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल के प्रमुख तथा 'टाप' व्यक्तियों की 'स्क्रीनिंग' इस समय जरूर की जानी चाहिए। श्री तलवंडी का कहना था कि वे प्रबन्धक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के एक लम्बे समय से सदस्य चले आ रहे हैं। लेकिन इसके असल लक्ष्यों के बारे मे उन्हें आज तक कुछ भी मालूम नहीं! इनके मुताबिक यह कमेटी प्रबन्धक कमेटी के हाथों में एक ऐसा खिलौना है, जिसकी मदद से प्रबन्धक कमेटी के नेता पैसा इकट्ठा करते हैं और अपने रिश्तेदारोंकी नौकरियां लगवाते हैं।

यहां गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों द्वारा नशेबाजी की आदतो पर भी रोशनी डाली गई। हालांकि प्रबन्धक कमेटी के सभी सदस्यों तथा कर्मचारियो के लिए नशाबन्दी के निर्देश दिये गये हैं लेकिन इन निर्देशो का ठीक ढंग से पालन नही किया जाता। परिणामस्वरूप गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी में भ्रष्टाचार बढता ही जा रहा है और जो चढ़ावा गुरुद्वारो में आता है, सत्ताधारी नेता उसका गलत इस्तेमाल करते हैं। जबकि यह पैसा धर्मप्रचार के काम आना चाहिए, कमेटी के नेता इस पैसे का इस्तेमाल गलत कार्यों के लिए करते हैं।

हैरानी की बात यह है कि इन ७ दिनों मे यहां एक भी आवाज आतंकवाद और निर्दोष लोगों की हत्या के विरोध मे न उठाई गई, जबकि ज्यादातर लोगों ने पंजाब पुलिस के हाथों सिख नवयुवको के झूठे मुकाबलों मे मारे जाने की कड़ी निन्दा की और स. सुरजीत सिंह बरनाला द्वारा इसे न रोके जाने पर इसे उनकी सरकार की असफलता करार दिया। श्री बरनाला के ही एक अकाली मन्त्री श्री कुन्दन सिंह पतम ने इस कैम्प में श्री बरनाला द्वारा मुख्यमन्त्री पद और अकाली दल की अध्यक्षता का पद संभाले रखने की आलोचना की और उन्हें एक पद त्यागने की सलाह दी। जब स. बरनाला के अपने ही साथी खुले आम उनकी आलोचना कर सकते हैं तो फिर अन्य लोगो को कौन रोक सकता है?

उपरोक्त कैम्प मे जहां संत भिंडरांवाला के गुणगान किये गये, दूसरे धर्मों को कोसा गया, राधास्वामियो और नामधारियो को अंग्रेजो का पिट्ठू कहा गया, केन्द्र तथा बरनाला सरकार की आलोचना की गई और पंजाब पुलिस पर निर्दोष सिख युवको की झूठे मुकाबलों मे हत्या करने के आरोप लगाये गये, वहां किसी भी नेता ने श्री बरनाला और केन्द्रीय सरकार द्वारा पंजाब मे फैले आतंकवाद के खिलाफ एक शब्द तक नही कहा। किसी सिख बुद्धिजीवी या नेता ने यह नही बताया कि आज पंजाब मे जो आतंकवाद का दौर चल रहा है, उसकी पृष्ठभूमि क्या है? पंजाब के वर्तमान आतंकपूर्ण हालात के लिये असल दोषी कौन है? कितने दुःख की बातहै कि इस पूरे कैम्प में एक भी बुद्धिजीवी या नेता ऐसा न था जो यह बता सकता कि पंजाब के वर्तमान बिगड़े हालात किस तरह से बदले जा सकते हैं? किस तरह एक बार फिर पंजाब की जनता शांति, एकता और भाईचारे से दोबारा रह सकती है?

मुझे पूरी आशा है कि इस कैम्प में दिये गये भाषणों और सिख बुद्धिजीवियों तथा नेताओं के विचारों की रिपोर्ट राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार को पहुंच चुकी होगी। अगर अब भी हमारे शासकों की आंखें न खुलें तो फिर पंजाब का खुदा ही हाफिज है।

—अश्विनी

(पंजाब केसरी से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की शताब्दी

हमारा उत्तरदायित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लगभग दो हजार आर्यसमाजों, सैकड़ों शिक्षण संस्थाओं और अनेकों अनाथालयों और विधवा आश्रमों को लेकर अपने १०० वर्ष समाप्त कर रहा है। इन १०० वर्षों में सभा ने बहुत काम किया है। हमारा प्रदेश संसार के कई देशों तक से बड़ा है। इस दृष्टि से सभा के ऊपर बड़ा दायित्व है। मुझसे पूर्व बहुत बड़े-बड़े मनीषियों ने प्रधान और मन्त्री रह कर अपने तप-त्याग-योग्यता-क्षमता और प्रभाव से इसके कार्य को आगे बढ़ाया है। आज यह उत्तरदायित्व हम सबके कन्धों पर है।

आज संसार का मानव समाज २१वीं शताब्दी में प्रवेश करने को है। भारत में ही नहीं अपितु सारे संसार में कम्प्यूटर सिस्टम फैल रहा है। इस भौतिकवादी नई तकनीक को भी एक ऐसे धर्म की आवश्यकता है जिस पर भौतिकवादी सिद्धान्त भी खरे उतरते हों, जो आधुनिक विज्ञान के अनुकूल हो और मानव जाति की सुरक्षा के सच्चे अध्यात्म की ओर ले जाने वाला हो। कम्प्यूटर के इस युग में वैज्ञानिकों ने मिल-बैठकर ऐसे धर्म की चर्चा की है और आर्य जनों का यह सौभाग्य है कि उन वैज्ञानिकों ने वैदिक धर्म को ही इस योग्य समझा है, जिसे साथ लेकर संसार की सम्यक् उन्नति हो सकती है।

हमने २१वीं शताब्दी में प्रवेश करना है। आगे आने वाले ११ वर्षों में हम सब एकजुट होकर छोटे-मोटे मतभेदों को भुलाकर मानव-निर्माण का कार्य करें। इस समय अपने देश में परिस्थिति विकटतम है—इसका सामना भी आर्यसमाज ही करेगा।

आइये, हम शताब्दी के अवसर पर हम अपने संगठन को मजबूत बनायें और चुनौतियों का सामना करने का संकल्प लें। वैदिक धर्मके साथ २१वीं शताब्दी में अच्छे मनुष्य को भेजें, जो वहां भी वेद के शब्दों में 'मनुर्भव' के स्वर को गुंजायें और प्रकृति माता के विज्ञान द्वारा दिये हुए समस्त वरदानों को अध्यात्म द्वारा स्वीकार कर इस धरती को स्वर्ग बना दें।

—इन्द्रराज, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० (लखनऊ)

महत्त्व आक्रोश का नहीं

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रवेश हो गया है। भाषा को कुछ लोग अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं। कहते हैं कि वह साधन है, साध्य नहीं। इसलिए हिन्दी हो या अंग्रेजी हो, क्या फर्क पड़ता है। मतलब तो अभिव्यक्ति से है। परन्तु क्या अंग्रेजी भाषा की अभिव्यक्ति और साध्य वही हैं जो हिन्दी के हैं ? नहीं। अंग्रेजी, रूसी, अरबी, फ्रेंच, जर्मन और हिब्रू आदि भाषाओं के साध्य अलग हैं और अभिव्यक्ति के प्रकार भी पृथक् हैं। हिन्दी मानवीय प्रेम और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भाषा है। वह उदात्त मानवीय संस्कृति का स्वर है। भारतीय आधुनिक भाषाओं में हिन्दी ही सच्चे अर्थ में सदैव राष्ट्रीयता की वाहक रही है क्योंकि वह निरन्तर भारत की समग्र चेतना को वाणी देने का प्रयास करती रही है। अन्य सभी भाषाओं में प्रदेश बोला है बोलता है, और कभी-कभी तो बड़े प्रभावशाली ढंग से बोलता है। परन्तु हिन्दी में शुरू से ही सदा देश बोलता रहा है। उसने कभी प्रदेश की उपेक्षा नहीं की—उसे कभी हीन स्थान भी नहीं दिया, परन्तु उसके सामने हमेशा एक बृहत्तर आदर्श रहा है, जिसे वह निरन्तर मूर्त करती रही है।

किसी समय इस बृहत्तर सांस्कृतिक इकाई की प्राण-भाषा संस्कृत थी। परन्तु कालान्तर में वह पूरी तरह सत्ता संस्थान से जुड़ गई। हिन्दी के साथ ऐसा कभी नहीं हो पाया। वह संस्थान की नहीं, संस्थान के विद्रोह की भाषा रही है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि जहां-जहां हिन्दी का विरोध होता रहा, वहां वहां भारत का भी विरोध होता रहा। जिन प्रदेशों में एक खण्ड अस्मिता को समग्र राष्ट्रीयता और एक भारतीय अस्मिता के ऊपर स्थान दिया जाता है, वहीं हिन्दी का भी विरोध होता है। अगर ऐसी एक राष्ट्रीय अस्मिता इस देश में नहीं पनप पाई तो वह आधुनिक और एक राष्ट्र तो क्या बनेगा, विघटन की प्रवृत्तियों का क्रीड़ागार बनकर रह जायेगा। प्रश्न अंग्रेजी का या किसी क्षेत्र विशेष का या क्षेत्रीय भाषा का नहीं है। प्रश्न उस दृष्टि का है, जिसकी आधार भूमि पर भविष्य में देश को खड़ा होना है। अंग्रेजी में सत्ता की गन्ध है, शोषण का विष है और उसमें भारत की सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने का वह सामर्थ्य नहीं, जो हिन्दी में है। इसलिए आवश्यकता सरकार के प्रति या अन्यों के प्रति आक्रोश की नहीं, निष्ठा की है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी का हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्य पहचानना है। हम अपने कर्त्तव्य की अवहेलना का दोष औरों को कैसे दे सकते हैं? हिन्दी की दुर्दशा के लिए हिन्दी वाले ही दोषी हैं।

'सार्वदेशिक' का प्रचार-प्रसार करें

आपने महसूस किया होगा कि 'सार्वदेशिक' अब पहले से भी अच्छे रूप में प्रकाशित हो रहा है। अभी भी हम पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं और इसे प्रत्येक दृष्टि से अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। आप इसे अपने तक सीमित न रखें, अपने बन्धु-बान्धवों और परिचितों-मित्रों तक पहुंचाएं। अपने नगर के वाचनालय में मंगवायें। इसके आजीवन सदस्य बनें—बनायें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है। —सम्पादक

आन्ध्रप्रदेश के बाढ़ पीड़ितों की सहायता

आन्ध्रप्रदेश के कुछ जिलों में आई भयंकर बाढ़ के प्रकोप से प्रभावित लोगों के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तन-मन-धन से सहायता कार्य में संलग्न है। सभा ने आर्यसमाज तथा डी०ए०-वी० पब्लिक स्कूल, बेगम पेठ, हैदराबाद में सहायता शिविर खोल दिया है। इस महाविपत्ति का सामना करने का और बाढ़ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता का जो नैतिक दायित्व देशवासियों पर आ पड़ा है, उसके लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने समस्त आर्य जनों से निवेदन किया है कि वे इस दैवी विपत्ति में सहायता कार्य में अग्रसर होने और यथासामर्थ्य खुले हृदय से नवीन तथा पुराने अच्छे वस्त्र एवं अधिक से अधिक धन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली १ के पते पर अथवा सीधे ही "फ्लड रिलीफ कैम्प" डी०ए०-वी०पब्लिक स्कूल, बेगम पेठ, हैदराबाद (आं०प्र०) के पते पर तुरन्त ही भेजने का आह्वान किया है।

पंजाब के विस्थापितों की सहायता

पंजाब से काफी लोग आर्यसमाज अनारकली में आ रहे हैं। यहां से उन्हें विभिन्न आर्यसमाजों और सनातन धर्म मन्दिरों में भेजा गया है। इन विस्थापितों की सहायता के लिए हमें जिन कुछ आर्यसमाजों ने आर्थिक सहयोग दिया है, वे हैं आर्यसमाज वसन्त विहार-३१ सौ रुपये, आर्यसमाज ग्रीन पार्क २५ सौ रुपये, आर्यसमाज नयाबांस ग्यारह सौ रुपये, आर्य समाज साउथ एक्सटेंशन-१, ५ सौ रुपये आर्यसमाज, निजामुद्दीन (ईस्ट) ५ सौ रुपये और आर्य समाज राजेन्द्रनगर ११ सौ रुपये प्रान्तीय आर्य महिला सभा ने काफी खाद्य सामग्री दी है। इसी तरह अन्य आर्य समाजों ने भी कुछ-कुछ राशि एवं खाद्य सामग्री दी है। —रामनाथ सहगल

मन्त्री, आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

(पृष्ठ ४ का शेष)

गया। गीता और रानी के साथ खुल्लमखुल्ला बलात्कार किया गया। वहां समय-समय पर 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे लगाये जाते हैं। खेलों में पाकिस्तान के जीतने पर जश्न तथा भारत के जीतने पर मातम मनाया जाता है। इन सब बातों को गम्भीरता से लिया जाना चाहिये।"

एक अन्य शिक्षा-सेवी ने उदाहरण देकर बताया कि जमाते इस्लामी व मुस्लिम मुशावरात जैसी संस्थाएं पेट्रो-डालर के बल पर विश्वविद्यालय को राष्ट्र-विरोधी केन्द्र बनाये हुए हैं। असामाजिक तत्वों, हत्यारों, व जनूनी टाइप के गुण्डों का होस्टलों में बोलबाला होता जा रहा है।

उपकुलपति ने इन सब आरोपों की जांच का काम केन्द्रीय इन्टेलीजेंस सेवा-निवृत्त डायरेक्टर श्री वासुदेवन् को सौंप दिया है। दोनों गुटों के आरोपों की जांच होनी चाहिये। इस आरोप की भी जांच की जानी चाहिए कि क्या उपकुलपति वास्तव में 'रखाकार' रहे हैं?

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की इन घटनाओं के फलस्वरूप हिन्दू माता-पिता अपनी पुत्रियों को इस 'वध्यागृह' में भेजने से डरने लगे हैं।

सरदारपुरा (जोधपुर) में शुद्धि

आर्यसमाज सरदार पुरा (जोधपुर) में २४ अगस्त को एक ईसाई युवती ट्राइफिन अंजना मैसी (पुत्री श्री गुडविन जेंमैसी) पाली निवासी को शुद्ध कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। सुश्री ट्राइफिन अंजना मैसी का नया नाम अंजना आर्या रखा गया। उन का विवाह श्री महेन्द्र पुरोहित (पुत्र श्री मोहन लाल जी) के साथ सम्पन्न हुआ।

४९ ईसाई परिवारों की शुद्धि

मेरठ। २७ अगस्त को बागपत के निकटवर्ती गाव सन्तोष पुर बाघू मे ३०-४० वर्षों से ईसाइयो ने ५०-६० हरिजन परिवारों को बहला-फुसलाकर व धन का लालच देकर ईसाई बना लिया था। आर्यसमाज बागपत (मेरठ) के तत्वावधान में ४९ परिवारों के ११५ व्यक्तियों को उनकी प्रार्थना पर एक भव्य एव आकर्षक समारोह मे शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। समारोह के आयोजन में आर्य सभा तहसील बागपत व आर्यसमाज व आर्य वीर दल अग्रवाल मण्डी, टटीरी (मेरठ) के पदाधिकारियों व सदस्यों ने सहयोग दिया। क्षेत्रीय जनता द्वारा शुद्ध हुए व्यक्तियों का पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास भी किया गया।

मुस्लिम युवती की शुद्धि

साहबगंज (गोरखपुर) लाल डिग्गी स्थान स्थित पंडित रामप्रसाद बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला में आशिया नाम की एक मुस्लिम युवती को वैदिक धर्म में दीक्षित करके उसका नाम गीता देवी रखागया। उसका विवाह भोला-प्रसाद यादव नामक एक सज्जन से कर दिया गया।

आर्य देवी का सत्साहस

बीकानेर। नगर आर्यसमाज की कार्यकर्त्री लक्ष्मीदेवी सत्साहस वाली देवी हैं। इन्होंने दर्जनो अपहृत लड़कियों को गुण्डों के चगुल से छुड़ाया है।

सुधा नाम की एक छात्रा का गुण्डो ने अपहरण कर लिया था। लक्ष्मी देवी जी ने भिखारी का वेश बनाकर अपने सूत्रो से उक्त छात्रा को खोज निकाला। पुरस्कारस्वरूप उन्हें ग्यारह रुपये और एक शाल भेंट किया गया। सुधा के पिता ने उन्हें डेढ़ हजार रुपये भेंट किये, जो उन्होंने आर्यसमाज को दान कर दिये।

मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की रजत जयन्ती

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह २४, २५, २६ अक्तूबर को समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी, महात्मा, विद्वान् और आर्य नेता पधार रहे हैं। आर्य परिवारो को बनारस ले जाने के लिए २२ अक्तूबर शाम को ६ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली, मन्दिर मार्ग, ग्रेटर कैलाश तथा अशोक विहार, दिल्ली से स्पेशल चलेगी जो २८ अक्तूबर को वापिस आयेगी। यात्री लखनऊ, प्रयाग, अयोध्या, वाराणसी तथा कानपुर के ऐतिहासिक स्थान भी देख सकेंगे।

बापू जी का धर्म

"मेरे धर्म की कोई भौगोलिक सीमा नहीं है।
मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है।
मेरा धर्म मुझे किसी से भी घृणा करने से रोकता है।
धर्म लोगों को एक दूसरे से अलग नहीं करता
बल्कि प्रेम के सूत्र में बांधता है।"

यही था महात्मा जी का धर्म

प्रेम और सहिष्णुता पर आधारित सच्चा धर्म

शरणार्थियों के लिए धन सीधे सभा को भेजें

आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि पंजाब के शरणार्थियों की सहायतार्थ जो आर्य जन तथा आर्यसमाजें धन दें, वे सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर चैक, बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से भेजें, क्योंकि कई समाजों में इस आशय की शिकायतें आ रही हैं कि कुछ व्यक्ति पंजाब के शरणार्थियों के नाम पर झूठ बोलकर धन मांग रहे हैं। उनसे सावधान रहकर सभा के नाम पर ऐसे तत्वों को धन न दें और सभा को सूचित करें।

(स्वामी) आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-२

सियोल में भारतीय नक्शा गलत ढंग से पेश किया गया

सियोल। भारत ने एशियाई खेलों में भारत का मानचित्र गलत ढंग से दिखाये जाने का कड़ा विरोध किया है। भारत ने कहा है कि अगर मानचित्र में संशोधन न किया गया तो वह समापन समारोह में भाग नहीं लेगा।

खेलमन्त्री श्रीमती मार्गरेट अल्वा ने दक्षिण कोरिया के खेलमन्त्री श्री ली से को के साथ बातचीत के दौरान भारतीय मानचित्र गलत दिखाये जाने पर विरोध प्रकट किया।

एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह और दैनिक 'एशियाड बिलेजर' में भारत को बिना जम्मू और कश्मीर के चित्रित किया गया है।

श्रीमती अल्वा ने यहां बताया कि उन्होंने कोरियाई मन्त्री से साफ कहा है कि अगर भारतीय मानचित्र को सही रूप में नहीं दिखाया गया तो भारत खेलों के समापन समारोह में भाग नहीं लेगा। बाद का समाचार है कि एशियाड के अधिकारियों ने अपनी गलती सुधार ली है।

आ. प्र. स. राजस्थान का प्रस्तावित भवन

जयपुर। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का तीन मंजिला भवन बनाने के लिये सभा के प्रधान श्री छोटूसिंह ने २५ लाख रुपये दान की अपील की है।

प्रस्तावित भवन का शिलान्यास सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे। अभी शिलान्यास की तिथि निर्धारित नहीं हुई।

सम्पादक के नाम पत्र

संन्यास लेने के बाद......

महोदय,

श्री रामगोपाल शालवाले के संन्यास आश्रम की दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती बन जाने पर जब मैं सर्वप्रथम १५ सितम्बर को उनसे मिला तो मैंने उनमें पहले से ज्यादा उत्साह व जोश पाया—काम करने की दुनी शक्ति मुझे दिखाई दी। इस वृद्धावस्था में उनमें ये विशेष गुण एवं अलौकिक शक्ति विद्यमान हैं।

मैं कामना करता हूं कि वे दीर्घायु हों और उनके प्रकाश से हमें प्रकाश मिलता रहे।

—सत्यनारायण लाहोटी, मैनेजिंग ट्रस्टी
आर्यसमाज सुजानगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट
सुजानगढ़ (राजस्थान)

आर्यसमाज, आदर्श नगर द्वारा स्थापित वैदिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी (मध्य में)। बायें श्री छोटूसिंह (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान) एवं श्री सत्यव्रत सामवेदी (प्रधान, आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर)।

२४ अगस्त को ग्राम दुजार मे होम्योपैथिक औषधालय के उद्घाटन का चित्र

आर्यसमाज अशोक विहार में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-१, दिल्ली की ओर से २१ अगस्त से २७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक मनाया गया।

आर्ष गुरुकुल एटा के प्रधानाचार्य श्री वागीश जी द्वारा लगातार ७ दिन तक बहुत ही सुलझे हुए तथा सैद्धान्तिक विचार आर्य जनता को सुनने को मिले।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर रात्रि को विशेष कार्यक्रम रखा गया, जिसमें कुलाची हंसराज माडल स्कूल फेज-३ के बच्चों ने सुन्दर गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा दो बच्चों ने श्री कृष्ण जी के वास्तविक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समुदाय को बताया कि श्री कृष्ण महान् योगी थे। उन्होंने अपने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई पाप नहीं किया और न ही उनमें चरित्रसम्बन्धी कोई दोष था।

आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने श्री कृष्ण के सम्बन्ध में विस्तार से बताते हुए कहा कि श्री कृष्ण उस समय के राष्ट्रनायक थे, जिन्होंने राष्ट्र के विघटनकारी तत्वों को समाप्त करके राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का महान् कार्य किया।

आर्यसमाज लोहगढ़ अमृतसर का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लोहगढ़ (अमृतसर) का वार्षिकोत्सव १९ अक्तूबर से २६ अक्तूबर तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् महोपदेशक तथा भजनोपदेशक अपने विचार आर्य जनता के समक्ष रखेंगे।

.॰ नं० डी० (सी०) १०८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५-१०-१९८६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P.S.O on 3-10-86

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सण्डीला मे भव्य स्वागत

आर्यसमाज सण्डीला म वेदकथा आयोजन ७ सितम्बर से १४ सितम्बर तक सम्पन्न हुआ, जिसमे वेद मन्त्रो की सुन्दर व्याख्या वेदो के प्रसिद्ध विद्वान् श्री हरवंशलाल जी मेहता वद मनीषी द्वारा की गई। श्री वीरेन्द्र जी आर्य ने अपने मधुर भजनो द्वारा वेदो का प्रचार किया। मुख्य अतिथि श्री सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने देशकी बिगडती हुई स्थिति मे आर्यसमाज की भूमिका और आवश्यकता पर बहुत ही सुन्दर विवेचन किया। १३ सितम्बर को प्रात काल सण्डीला रेलवे स्टेशन पर आर्यसमाज एव आर्य वीर दल के सदस्यो ने माननीय शास्त्री जी का भव्य स्वागत किया। पूर्णाहुति १४ सितम्बर को प्रात काल सम्पन्न हुई।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे वेदप्रचार सप्ताह

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुज मे वेदप्रचार श्रावणी उपाकर्म एव राष्ट्रीय एकता तथा श्री कृष्ण जन्माष्टी समारोह उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुए।

आर्यसमाज मन्दिर मे १९ अगस्त से २७ अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया।

२७ अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और उसके साथ ही राष्ट्रभृत् यज्ञ सम्पन्न हुआ।

१० बजे से १ बजे तक राष्ट्रीय एकता एव श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया।

समारोह के संयोजक कैप्टिन देवरत्न आर्य ने आह्वान किया कि हम अलगाववाद का डटकर मुकाबला करना है। आपने कहा कि आज हमारे देश की सीमाए सुरक्षित नही है और न ही नागरिक अपने को सुरक्षित मानता है। ऐसी स्थिति मे समस्त आर्य हिन्दू जाति को एकता के सूत्र म बधकर आगे आना है। तभी हम देश की एकता और स्वतन्त्रता सुरक्षित रह सकती है

अब ... { १७ से २० (डी० ए० वी० कालेज) लखनऊ म ...

आर्य बन्धु अधिक से अधिक सख्या ... र अपना आर्थिक सहयोग चैक ड्राफ्ट तथा धनादेश द्वारा भेजने की कृपा करे।

—मनमोहन तिवारी, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा (उ० प्र०), लखनऊ

पिथौरागढ़ मे आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिए अपील

मैने आर्यसमाज पिथौरागढ के मन्दिर निर्माण का सकल्प लिया है। यहा के लोग शुद्धि, विवाह सस्कार आदि हेतु ७ से ११ घण्टे की पर्वतीय बसयात्रा करके आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत, अल्मोडा व नैनीताल पहुंच पाते हैं। जिला चिकित्सालय निकट लक्ष्मीनारायण मन्दिर मार्ग पर २ लाख से अधिक रुपये की लागत से बनने वाले समाज मन्दिर हेतु भूखण्ड मिल गया है।

शिवरात्रि १९८७ तक प्रत्येक दान पर ५ प्रतिशत का अशदान मेरी ओर से रहेगा। कृपया निर्माण कार्य मे पुण्य सहयोग दीजिये।

धनादेश निम्न पते पर भेजिये—

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी)
कच्चाहारी आश्रम
(जिला कुष्ठ अधिकारी कार्यालय के पास)
पिथौरागढ़

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

". सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ४३] | आश्विन शु० १० स० २०४३ | रविवार १२ अक्तूबर १९८६

देश की एकता और अखण्डता के लिए अपील

सरकार को जनमत की उपेक्षा न करने की सलाह

सिख बन्धु ननकाना साहब को मुक्त करायें : जम्मू के संवाददाता सम्मेलन में स्वामी आनन्दबोध का वक्तव्य

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

जम्मू, ३ अक्तूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान और लोकसभा के भूतपूर्व सदस्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती कल यहां पधारे। वे आज भी यहां रुके। आज उन्होंने एक सवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित किया।

संवाददाताओं से बातचीत में उन्होंने भारत की एकता और अखण्डता पर जोर दिया। स्वामी जी ने कहा कि विषम परिस्थितियो मे भी हमे भारत का भविष्य उज्ज्वल बनाना है, इसलिए हमे छोटी-मोटी कठिनाइयो की चिन्ता तो करनी ही नही चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा शासन लोकतन्त्रीय और धर्मनिरपेक्ष है, इसलिए उसे जनमत का आदर करना चाहिए, अन्यथा वह असफल रहेगा।

पंजाब की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि पजाब सरकार ने न केवल राष्ट्रद्रोही, सेना के भगोड़ो और सविधान जलाने वालो को रिहा कर दिया है, अपितु वह उनका पोषण भी कर रही है। इसलिये हमारी मांग है कि पजाब का शासन कम से कम पाच वर्ष के लिये सेना के हवाले कर दिया जाये और इसके लिए सविधान में सशोधन किया जाये। आखिर सरकार ने शाहबानो केस में न्यायालय के फंसले को लागू न होने देने के लिए संविधान में संशोधन किया ही है।

स्वामी जी ने कहा कि जब केन्द्र ने पजाब, कश्मीर और राजस्थान की सीमा पर सुरक्षित पट्टी बनानी चाही, तब पंजाब की बरनाला सरकार ने इसका विरोध किया—शेष ने समर्थन किया। स्वामी जी का कहना था कि हमारी माग सुरक्षित पट्टी की है। इससे केन्द्र को राष्ट्रविरोधी कार्रवाइया रोकने मे सहायता मिलेगी। अब भारत जान गया है कि उसका शत्रु कौन है और आतकवादियों की सहायता कौन कर रहा है?

संगठित होने की अपील

स्वामी जी ने सब हिन्दुओं का आह्वान किया कि वे अपने अन्तिम लक्ष्य अर्थात् भारत की अखण्डता के लिए सगठित हो जायें।

उन्होने जैनों, बौद्धों, मूर्तिपूजको और निराकारवादियो—मतलब यह कि सभी हिन्दुओं से अपील की कि वे सगठित हो जायें और भारत की एकता के लिए प्रयत्नशील हो। उन्होने कहा कि आर्यसमाज कभी इस बात पर राजी न होगा कि हमारे भाइयो के मन्दिर तोड़े जायें। इसके विपरीत आर्यसमाज की तो माग ही यह है कि सुदूर क्षेत्रों मे रहने वाले और अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा की व्यवस्था की जाये। उन्होने प्रबल शब्दो मे माग की कि सरकार पेट्रो-डालर के जोर पर किये जा रहे धर्मपरिवर्तन के विरुद्ध पग उठाये। उन्होने इस बात की ओर ध्यान खींचा कि पजाब मे हिन्दुओ को योजनाबद्ध ढंग से कुचला जा रहा है और एक विशेष सम्प्रदाय के बाहरी लोगो को वहा बसाया जा रहा है। उन्होने कहा कि हमारे देश का राष्ट्रपति सिख है, गृह-मन्त्री सिख है, कृषिमन्त्री सिख है और पजाब मे सिखों की सरकार है। सरकारी कार्यालयो मे सिख ऊंचे पदों पर हैं। दिल्ली का मेयर सिख है। सिख इससे अधिक और क्या चाहते हैं?

उन्होने सिखों से अपील की कि वे अपने हिन्दू भाइयों से न लड़ें, क्योंकि हिन्दू अहिंसा के उपासक हैं। यदि उन्होंने लड़ना ही है, तो ननकाना साहब की मुक्ति के लिए लड़ें। इस लड़ाई में सब हिन्दू उनका साथ देंगे।

प्रधान मन्त्री की हत्या का षड्यन्त्र दुर्भाग्यपूर्ण घटना : स्वामी आनन्दबोध

दिल्ली, ३ अक्तूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने राजघाट (दिल्ली) में कल महात्मा गांधी की समाधि पर प्रार्थना सभा मे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी की हत्या के षड्यन्त्र की कड़ी निन्दा करते हुए कहा कि इस घटना से हमारा यह विश्वास और दृढ होता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा, एकता और अखण्डता को समाप्त करने के लिए यहा राष्ट्र-विरोधी शक्तिया सक्रिय हैं।

उन्होने प्रधान मन्त्री व अन्य विशिष्ट लोगो की सुरक्षा व्यवस्था के खोखलेपन पर आश्चर्य प्रकट किया।

स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी के सुरक्षित बच जाने पर सतोष प्रकट करते हुए समूचे आर्यजगत् की हार्दिक शुभकामनाए उन

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक — [illegible] शास्त्री

देश की वर्तमान दुरवस्था और हमारा युवा वर्ग

—बिशनस्वरूप गोयल—

हम सभी के लिए यह चिन्ता का विषय है कि देश का युवा वर्ग कुमार्गगामी हो रहा है। लेकिन किया क्या जाये? उत्तर प्रस्तुत लेख में पढ़िए।

लेखक एक सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं-आर्यसमाज करौलबाग, नई दिल्ली के उपप्रधान हैं।

आज हमारे युवा वर्ग को शिक्षा, रेडियो, दूरदर्शन, अश्लील साहित्य तथा अश्लील और अपराधपूर्ण फिल्मों द्वारा पथभ्रष्ट कर उसे वास्तविकता से पूरी तरह काट दिया गया है। हमारी युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट करने के लिये हमारे सभी प्रचार साधन सक्रिय हैं। इन सब माध्यमों से देश की जो दुर्दशा हो रही है उससे कौन परिचित नहीं। किन्तु हममें सच कहने का साहस ही नहीं। यह सब कुछ हमारी सरकार तथा राजनेता केवल इसलिए कर रहे हैं ताकि हमारी युवा शक्ति सत्ता की गलत नीतियों की ओर ध्यान न दे और इन्हें सत्ता अपने मनमाने ढंग से चलाने में सुविधा रहे, भले ही उनकी नीतियों से देश या समाज की हानि ही क्यों न होती रहे—उनकी सत्ता और कुर्सी बनी रहनी चाहिए।

हमारी युवा शक्ति को देश तथा समाज की ओर ध्यान देना होगा अन्यथा यह देश और समाज पूरी तरह नष्ट होने में अब अधिक समय नहीं लगेगा, क्योंकि सरकार की विघटनकारी, असमाजवादी तथा भ्रष्टाचारियों के प्रति अपनाई गई तुष्टीकरण और घुटने-टेक नीति के कारण ये सभी शक्तियां पूरी तरह से सक्रिय हो चुकी हैं और देश के विघटन और बिखराव की पूरी तैयारी कर रही हैं। अब हमारी युवा पीढ़ी को अश्लीलता, सैक्स, अपराधी मनोवृत्ति और नशीले पदार्थों के उपयोग को त्याग कर अपने सही दायित्व की ओर ध्यान देना होगा। देश की एकता, अखण्डता और शान्ति को बचाने के लिये उसे अपनी पैनी दृष्टि इस पर रखनी होगी। वैसे तो यदि हमारी सरकार चाहती तो स्वतन्त्रता के इन ३९ सालों के इतिहास में प्रचार माध्यमों द्वारा हमारे देश और समाज के चरित्र को ऊंचा उठा सकती थी किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। वह तो चाहती है कि इस देश के लोग चुपचाप सब-कुछ सहन करते रहें। दूसरी ओर इस देश का राष्ट्रवादी बहुसंख्यक हिन्दू समाज बलहीन है। उसका मनोबल तोड़ा जा रहा है। उसे विभिन्न समुदायों, दलों, जातियों, उपजातियों और संगठनों में बांटा जा रहा है ताकि वह अपने देश की अखण्डता और एकता की रक्षा के लिये संगठित होकर प्रयास ही न कर सके। इस देश का हिन्दू समाज ही इस देश को अपनी पुण्यभूमि, मातृभूमि, जन्मभूमि तथा पितृभूमि मानता है। वही इसकी अखण्डता और शान्ति के लिए चिन्तनशील है। इसलिये धर्मनिरपेक्षता की आड़ लेकर उसे बहुमत की बजाय अल्पमत में बदलने का सुनियोजित घिनौना षड्यन्त्र चल रहा है। आज हमारे पास प्रचार के इतने सुलभ और अच्छे साधन हैं कि यदि सरकार चाहे तो समस्त देश के घरों में रहने वाले लोगों में देशप्रेम की भावना जगाने और चरित्र निर्माण का कार्य सरलता से हो सकता है। उसके लिये हमारे पास रेडियो जैसा प्रचार माध्यम है।

जब कभी देश पर युद्ध थोपा जाता है या अन्य इसी प्रकार का कोई संकट आता है तो हमारे आकाशवाणी केन्द्रों से विशुद्ध राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गानों, नाटकों, कहानियों अथवा वार्ताओं का प्रसारण होता है। जैसे ही वह स्थिति समाप्त होती है और देश साधारण अवस्था मे आ जाता है, पुनः वही अश्लीलतापूर्ण कार्यक्रम आरम्भ कर दिये जाते हैं, जैसे "यह दिल तेरा दीवाना है सनम" आदि। यदि इस प्रकार के अश्लील गानों का बहिष्कार कर देशभक्ति और चरित्रनिर्माण सम्बन्धी गाने, नाटक, कहानी तथा हमारे प्राचीन इतिहास की गौरव गाथा तथा आजादी के लिये शहीद होने वाले अनेकों लोगों के जीवन की झलक प्रस्तुत की जाये तो हमारे देश के लोगों (विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी) में एक नये राष्ट्रीय जीवन का संचार हो, जिससे राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा करने के लिए प्रेरणा मिले। किन्तु ऐसा नही किया जा रहा। आज हमारे युवकों को देश के प्राचीन गौरवमय जीवन की जानकारी ही नहीं। वे नहीं जानते कि महाराणा प्रताप को आखिर क्यों भटकना पडा। यदि रेडियो के माध्यम से हमारे प्राचीन इतिहास की झलकियां और देश तथा समाज भक्ति के कार्यक्रमों का नियमित और अधिकतर प्रसारण हो तो कोई कारण नहीं कि देश की युवा पीढ़ी मे जागृति न आये और वह एकजुट होकर देश की अखण्डता और एकता के लिये संघर्ष करने को तैयार न हो। ऐसी स्थिति मे हमारे देश का नक्शा बदलने में अधिक समय नहीं लगेगा और सभी विघटनकारी, असमाजवादी तथा आतंकवादी तत्त्व पूरी तरह से समाप्त हो जायेंगे। इस समय देश की राजनीति में जो संघर्ष है वह सत्ता का है न कि देश या समाज हित का। देश की अपनी भाषा हिन्दी को (संविधान में प्रावधान होते हुए भी) राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं मिल पाया और देश में आज भी अंग्रेजों के युग से भी अधिक अंग्रेजी का बोल बाला है।

फिल्मों की भूमिका

आज सिनेमा घरों में हमें जो फिल्में दिखाई जाती हैं, उनसे जहां युवा-वर्ग में सैक्स के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर इनसे अपराधी मनोवृत्ति, जैसे डाका डालने, बैंक लूटने, रेल गाड़ियां लूटने, हत्यायें करने, हवाई जहाजों का अपहरण करने तथा तस्करी जैसे अपराधों में भी उनकी रुचि बढ़ रही है जो देश के लिये घातक सिद्ध हो रही है। युवा वर्ग ये सभी अपराध फिल्मों से देखकर ही करता है और इनमें निरन्तर वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त हमारी युवा पीढ़ी में नशीले पदार्थों जैसे तम्बाकू खाना, चरस, अफीम, गांजा, स्मैक आदि की बुरी आदतों को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। शराब का प्रयोग तो बहुत ही बढ़ गया है। इन सबके कारण अपराध भी बढ़ रहे हैं। यदि हमारे देश की फिल्में चरित्र निर्माण और हमारे प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति के आधार पर बनाई जायें तो कोई कारण नहीं कि इन अपराधों को समाप्त न किया जा सके। इस प्रकार की सभी फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए, जिनके कारण हमारी युवा पीढ़ी का चरित्र बिगड़ रहा है—अपराधी और नशा करने की मनोवृत्ति बढ़ती जा रही है।

हमारे फिल्म निर्माताओं का भी देश और समाज के प्रति बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है और उन्हें इसे निभाना चाहिए। उन्हें उसी प्रकार की फिल्मों का निर्माण करना चाहिये जो देशभक्तिपूर्ण हों तथा सामाजिक हों। फिल्म निर्माताओं को भी देश की एकता, अखण्डता और युवा वर्ग के चरित्र निर्माण के लिये उपयोगी फिल्में बनाकर अपना योगदान देना चाहिए। किन्तु वे भी अपने अर्थलाभ के लिये ऐसा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें करना चाहिये।

अश्लील साहित्य की बिक्री तथा प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाया जाये

आज देश में अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यासों की भरमार है। हमारी युवा पीढ़ी इन्हें बड़े शौक से पढ़ती है। इस साहित्य द्वारा और

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष : दान की अपील

पंजाब की आर्य-हिन्दू जनता अभी भी संकट में है। आतंकवादी हत्यारों के भय से अभी भी लोग पंजाब छोड़कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र जा रहे हैं। ये लोग आर्यसमाज मन्दिरों और सनातन धर्म मन्दिरों में डेरा डाले पड़े हैं। आपसे अपील है कि संकट के इस समय में इन लोगों की तन-मन-धन से सहायता करें।

धन और सामान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

भारत सरकार बहुसंख्यकों की भावनाओं को समझे

रोहतक के संवाददाता सम्मेलन में आर्य नेताओं का वक्तव्य

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

रोहतक, २८ सितम्बर। आज यहां एक संवाददाता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने कहा कि सार्वदेशिक सभा चाहती है कि अब भारत सरकार बहुसंख्यकों की भावनाओं को भी समझने का प्रयत्न करे।

संवाददाता सम्मेलन में दोनों नेताओं द्वारा प्रसारित संयुक्त वक्तव्य का पूर्ण पाठ नीचे दिया जा रहा है—

कुछ समय से सरकारी क्षेत्र में तथा कुछ बुद्धिजीवियों में यह धारणा जड़ पकड़ती जा रही है कि हमारे देश में आतंकवाद एक चिरस्थायी व्याधि के रूप में हमारे बीच बस चुका है और हमें ऐसा लगता है कि हमें सदा ही इसकी काली छाया में जीवित रहना होगा। यह भावना दुर्भाग्यपूर्ण है और हमारी दृष्टि में आत्मघाती भी है।

वास्तव में जो व्याधि हमें परेशान किये हुए है, वह आतंकवाद नहीं है। परोक्ष रूप से यह पाकिस्तान का हमारे ऊपर आक्रमण है। कुछ विचारहीन सिख नौजवानों का हमारे विरुद्ध उपयोग किया जा रहा है। सार्वदेशिक सभा यह नहीं मानती कि सरकार को इसकी सूचना नहीं। लेकिन हमें चिन्ता इस बात की है कि जानते हुए भी सरकार क्यों ऐसा कदम नहीं उठाती जो हमारे पड़ोसी के आक्रमण से हमारे देश की रक्षा कर सके? यदि सरकार समझती है कि देश की आन्तरिक परिस्थितियां ऐसा कोई कदम उठाने में बाधक हैं, तो हम समझते हैं कि आन्तरिक सुरक्षा के लिए जो प्रयत्न सरकार कर रही है, वह उस खतरे के अनुरूप नहीं है जो सीमा के उस पार से हमारे सामने खड़ा है। हमारी आन्तरिक सुरक्षा उस समय तक दृढ़ नहीं हो सकती जब तक पंजाब में उस सरकार का शासन है जो खुले आम देशद्रोह को प्रोत्साहन दे रही है।

स्वाधीनता से पहले पुरानी हैदराबाद रियासत का कासिम रिजवी जो अपने आपको रजाकारों की सेना का "फील्ड मार्शल" कहा करता था, उसका नारा था—दिल्ली के लालकिले पर चलो, जल्दी ही हम वहां आसफिया झण्डा फहरायेंगे।

आज सिख आतंकवादी इसी प्रकार का नारा लगा रहे हैं और हिन्दुओं को हर तरह से सताने का प्रयत्न कर रहे हैं। उस समय भारत सरकार ने रजाकारों का दमन करके उनका नामोनिशान मिटा दिया था और वहां का आसफिया राज्य आज भारत का अभिन्न अंग बन चुका है। पंजाब की स्थिति भी उसी प्रकार की कार्रवाई की मांग कर रही है। इसमें देर करने से केवल हमारे देश के शत्रुओं को ही लाभ होगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित एक समिति पंजाब तथा देश के अन्य भागों की स्थिति को देखने के लिए वहां का दौरा कर रही है। सभा "पंजाब बचाओ दिवस" का भी देशव्यापी स्तर पर आयोजन करेगी जिससे जनता में विघटनवादी तत्त्वों से टक्कर लेने की भावना पैदा हो सके।

सार्वदेशिक सभा सरकार को इन विघटनवादी तत्त्वों से लड़ने में हर सम्भव सहायता प्रदान करेगी, जिससे देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा की जा सके। संविधान के जो भी अनुच्छेद व धारायें देश को भाषा, संस्कृति और धर्म के आधार पर विभाजित करती हों या किसी प्रदेश विशेष को विशिष्ट दर्जा प्रदान करती हों उन सबको रद्द कर देना चाहिये। श्री राजीव गांधी धर्म निरपेक्षता के भारतीय स्वरूप की चर्चा करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं होना चाहिये कि बहुसंख्यक समुदाय की रोटी छीनकर अल्पसंख्यकों को बांट दी जाये।

सार्वदेशिक सभा चाहती है कि भारत सरकार अब बहुसंख्यक समुदाय की भावनाओं को भी समझने का प्रयत्न करे।

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के लिए प्राप्त धन राशियां

नई दिल्ली। गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या की सहायता के लिए सार्वदेशिक' में प्रकाशित अपील पढ़कर निम्नलिखित सज्जनों और संस्थाओं ने उनके नामों के सामने उल्लिखित दान राशियां भेजी हैं। सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

श्री मनोहर लाल जी त्रिपालवाले २०) (४ सत्यार्थप्रकाश), श्री स्वामी आनन्द बोध जी २००), सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा १०००), श्री गोविन्दराम हासानन्द जी २००), श्री गोवर्धनसिंह जी आर्य ५), आर्यसमाज मन्दिर, हनुमान् रोड, २५०), आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल २०००), मन्त्री सत्यार्थ ट्रस्ट १०००)—कुल राशि ४६७५)।

धर्म परिवर्तन करवा कर सिखों को पाकिस्तान में नागरिकता

अमृतसर। सीमा पार कर पाकिस्तान चले गये गुरदासपुर और अमृतसर जिले के सिख युवकों को वहां इस शर्त पर नागरिकता प्रदान की जाती है कि वे धर्मपरिवर्तन कर हमेशा के लिए पाकिस्तान में रह जायेंगे। उन्हें प्रलोभन के तौर पर मकान और भूमि भी उपलब्ध कराई जाती है। १९८४ में हुए आपरेशन ब्ल्यू स्टार के बाद बड़ी संख्या में सिख युवक सीमा पार कर पाकिस्तान चले गये थे।

गुरदासपुर के पुलिस अधीक्षक श्री जे० पी० विरदी ने श्री हरगोविन्दपुर आये पत्रकारों के दल को यह जानकारी दी। हाल ही में पाकिस्तान से लौटकर गुरदासपुर पुलिस के यहां आत्मसमर्पण करने वाले उन्हें कुछ युवकों ने यह जानकारी दी थी। जोड़ा गांव के एक सिख युवक ने बताया कि उसे फैसलाबाद की एक जेल में दो वर्ष तक सिर्फ इसलिए कैद रखा गया कि उसने एक मुस्लिम महिला से शादी करने से इन्कार कर दिया था। यह युवक अब अपने गांव में सामान्य जिन्दगी जी रहा है।

श्री विरदी ने बताया कि पुलिस द्वारा पूछताछ के दौरान उस युवक ने बताया कि अभी भी लगभग ५०-६० सिख युवक फैसलाबाद की जेलों में कैद हैं। जिन युवकों ने भारतीय क्षेत्रों में तोड़-फोड़ करने के लिए प्रशिक्षण लेना स्वीकार कर लिया है, उन्हें पेशावर और ऐबटाबाद जैसे दूर दराज के क्षेत्रों में ले जाया गया है।

श्री विरदी ने बताया कि भारत-पाक सीमा के निकट पाकिस्तानी क्षेत्र में गुरुद्वारा करतारपुर से शकर गढ़ तक कुछ आवास भी दिखाई पड़े हैं, जबकि पहले इन क्षेत्रों के लोगों को अन्यत्र ले जाकर बसाया गया था। यह जनविहीन क्षेत्र था।

उन्होंने बताया कि गुरदासपुर पुलिस के यहां आत्मसमर्पण कर चुके ऐसे १०५ युवकों को उनके गांव लौट आने की अनुमति दे दी गई है। इनमें से २२ को रोजगार भी उपलब्ध कराया गया है। इनमें से सेना से भागा हुआ कोई जवान शामिल नहीं है।

कश्मीर घाटी में भारत विरोधी साहित्य बरामद

पाक अधिकृत कश्मीर, पाकिस्तान, साउदी अरब, लीबिया आदि देशों से श्रीनगर घाटी के पृथकतावादी तत्त्वों को भारी मात्रा में भारत विरोधी साहित्य, पैम्फ्लेट व गुप्त निर्देश भेजे जा रहे हैं। केन्द्रीय गुप्तचर संगठन ने हाल ही में श्रीनगर घाटी के विभिन्न स्थानों पर छापे मारकर भारी मात्रा में आपत्तिजनक सामग्री बरामद करने में सफलता प्राप्त की है।

जम्मू-कश्मीर के कुछ डाकघरों में जब पार्सलों व पत्रों को चैक किया गया तो ऐसे अनेक केन्द्रों का पता चला जो राज्य में पाकिस्तान समर्थक तथा भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे हैं। श्रीनगर बारामूला, शेरपुर व अनन्तनाग के डाकखानों पर ये छापे मारे गये। इससे पहले प्रशासन के अधिकारियों को डाक चैक करने का अधिकार नहीं था। अब भारतीय डाक सेवा कानून की धारा २९ को जम्मू-कश्मीर में लागू कर दिया गया है।

भारत विरोधी साहित्य बरामद

श्रीनगर के एक कालेज के केन्द्र पर मारे गये छापे में पाक अधिग्रहीत कश्मीर के जमाते-इस्लामी के अध्यक्ष मुहम्मद रशीद अब्बास द्वारा भेजे गये उकसाने वाले पत्र भी बरामद हुए हैं। इन पत्रों में कश्मीर घाटी से हिन्दुओं को आतंकित कर निकालने तथा भारत सरकार के खिलाफ बगावत तेज करने का निर्देश दिया गया है।

डाक में पकड़े गये पत्र से सनसनीखेज रहस्योद्घाटन हुआ है कि श्रीनगर घाटी में "जंगजू इस्लाम" नामक एक खतरनाक संगठन गुप्त रूप से सक्रिय है, जिसे साउदी अरब व पाकिस्तान से हिन्दुओं की हत्याएं करने, उनकी जवान बेटियों का अपहरण करने और धर्म परिवर्तन करने के लिए भारी मात्रा में धन मिल रहा है।

गुप्तचर संगठन के उच्चाधिकारियों ने छापे में एक पोस्टर पकड़ा है, जिस पर अंकित है—"मेरी इज्जत, मेरी जान, पाकिस्तान पर हो कुरबान।' एक अन्य उर्दू पोस्टर में अंकित है—भारत ने कश्मीर पर जबरन कब्जा कर रखा है।

साउदी अरब के कट्टरपंथी संगठन द्वारा भेजे गये साहित्य मे लिखा है—"कश्मीरी मुसलमान भारत सरकार की साजिश से होशियार रहें तथा परिवार नियोजन न अपनायें। भारत के हिन्दू शासक मुसलमानों की संख्या कम करने के लिए ही यह साजिश चला रहे हैं।"

पाकिस्तान जमाते इस्लामी के महासचिव काजी हुसैन अहमद का फतवा भी कश्मीर घाटी में बंटवाया जा रहा है जिसमें कहा गया है कि मुसलमानों को चार बीवियां रखकर दो-दो दर्जन बच्चे पैदा कर अपनी आबादी बढ़ानी चाहिए। तभी भारत इस्लामी झण्डे के नीचे आ पायेगा।"

ब्रिटेन, अमेरिका व पाकिस्तान से छपवाकर भेजी गई खालिस्तान समर्थक पुस्तकें व पैम्फ्लेट भी बरामद किये गये हैं। कश्मीर घाटी में सक्रिय पाकिस्तानी एजेंट इस साहित्य को गुप्तरूप से पंजाब भेजते रहे हैं। इन तत्त्वों की पंजाब के आतंकवादियों से भी तालमेल बताई जाती है।

पाक समर्थक रीडर

कश्मीर में पाक समर्थक तत्त्वों की घुसपैठ ऊपर तक होती जा रही है, इसका ज्वलन्त उदाहरण काहिरा में पाकिस्तानी दूतावास में नौकरी कर चुके असलम इलाही को कश्मीर विश्वविद्यालय में अरबी भाषा विभाग का प्रवक्ता तथा बाद में रीडर के रूप में नियुक्त किया जाना है।

मुरादाबाद निवासी जमाते इस्लामी जैसे साम्प्रदायिक संगठनों से सम्बद्ध मियां असलम इलाही स्टडी लीव पर काहिरा गए। वहां उन्होंने पाक दूतावास में नौकरी की। बाद में इस बात की शिकायत मिलने पर जांच कराई गई तो काहिरा स्थित भारतीय दूतावास ने भी इसकी पुष्टि की। इसके बावजूद राष्ट्रवादी मुसलमान जमाल अब्दुल वाजिद की उपेक्षा कर असलम इलाही को रीडर जैसे पद पर नियुक्त कर दिया गया है।

केन्द्रीय गुप्तचर विभाग से इस नियुक्ति की जांच करने को कहा गया है। श्री नगर के विभिन्न सरकारी संस्थानों में नियुक्त सन्दिग्ध व्यक्तियों की भी जांच की जा रही है कि उनमें से कौन कौन पाकिस्तान के एजेन्ट के रूप में कार्यरत हैं?

—शिवकुमार गोयल

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर सत्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्त्वों से युक्त है। यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ५) प्रति किलो।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वे सब ताजी बूटी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं। यह सब सेवा मात्र है।

विशिष्ट हवन सामग्री १०) प्रति किलो

योगी फार्मेसी, लक्सर रोड

डाकघर गुरुकुल कांगड़ी-२४९४०४, हरिद्वार (उ० प्र०)

कोटा क्षेत्र के बाढ़पीड़ितों की सहायता

इस वर्ष कोटा के आस-पास के गांवों में भयंकर बाढ़ आई थी जिससे जान-माल व पशुओं की अपार क्षति हुई। इस क्षेत्र की कई आर्यसमाजों ने लगभग ६१००) नकद व वस्त्र एकत्रित करके दिये। नकद राशि से १० क्विंटल गेहूं व १०० सेट स्टील के बर्तन व ओढ़ने की चादरें क्रय करके ११ बोरा वस्त्रों के साथ बाढ़ग्रस्त गांवों में वितरित की गई।

जिन-जिन आर्यसमाजों व व्यक्तियों ने जो-जो सहायता दी है उसका विवरण निम्न प्रकार है।

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

आर्यसमाज रामपुरा कोटा	१०००)
आर्यसमाज भीमगंज मन्डी कोटा	१०००)
आर्यसमाज गुमानपुरा कोटा	५००)
आर्यसमाज रेलवे कालोनी कोटा	१०१)
आर्यसमाज रावत भाटा	(१३१)
आर्यसमाज बारां	११०१)
आर्यसमाज छीपा बड़ोद	१२३२)
आर्यसमाज सुवेल	५०१)
श्रीकृष्ण साधक	२००)
श्रीकृष्ण कुमार जी रस्तोगी	१००)
श्री ब्रजकिशोर जी मित्तल	१००)
और श्री सेवक जी प्रधानाचार्य डी० ए०वी० पब्लिक स्कूल कोटा	२१)
कुल राशि	६१८६)

नये प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द)	४)
१— माता (भगवती जागरण) (श्री बच्चानन्द)	१०) सै०
१— बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	५)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सा्म्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं ?

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता

–प्रो० बलराज मधोक–

साम्प्रदायिक दंगों से जन-धन की हानि तो होती ही है, हमारा देश संसार-भर में बदनाम होता है। प्रश्न यह है कि साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं और कैसे रोके जा सकते हैं ? विद्वान् लेखक द्वारा प्रस्तुत समाधान लेख में पढ़िये।

कुछ समय से देश के विभिन्न भागों में—विशेष रूप से जम्मू, कश्मीर घाटी, उत्तर प्रदेश, गुजरात और हैदराबाद में—साम्प्रदायिक दंगे होने लगे हैं। ऐसा लगता है कि १९४७ के हालात फिर पैदा हो रहे हैं। उग्रवादी अकाली भी मुस्लिम लीग का रास्ता अपना रहे हैं। इसके कारण स्थिति और भी भयानक हो गई है।

जब देश पर अंग्रेजों का शासन था, तब कहा जाता था कि साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिक दंगों का मूल कारण ब्रिटिश सरकार की 'फूट डालो और शासन करो की नीति है। बाद में यह भी कहा जाने लगा कि मुसलमानों की पाकिस्तान सम्बन्धी मांग न माना जाना उन्हें साम्प्रदायिक दंगे करने के लिए बाध्य करता है।

१९४७ में अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये और मुसलमानों को पाकिस्तान भी दे दिया गया। उस समय देश में मुसलमानों की जनसंख्या २३ प्रतिशत से कुछ कम थी। परन्तु उन्हें देश की धरती का २० प्रतिशत भाग काट कर अलग 'दार-उल-इस्लाम' या इस्लामी राष्ट्र के रूप में दे दिया गया। यदि वह कारण मीमांसा सही होती तो अंग्रेजों के चले जाने और मुसलमानों को पाकिस्तान मिल जाने के बाद खंडित भारत मे साम्प्रदायिक दगे नहीं होने चाहिए थे।

इसलिए यह आवश्यक है कि देश के राजनेता और नीति निर्धारक इस समस्या के सम्बन्ध में पूर्वाग्रह छोड़ें और १९४७ के पहले के घिसे-पिटे तर्क और उपदेश देना बन्द करें। समस्या पर नये सिरे से इतिहास के परिप्रेक्ष्य में और तथ्यों के आधार पर विचार करने की आवश्यकता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार मे जहा भी कहीं मुसलमान हैं (परन्तु सत्ता उनके पास नहीं), साम्प्रदायिक दगे होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। लेबनान, साइप्रस, नाइजीरिया, मारीटानिया, और फिलीपीन्स जैसे देशों का अनुभव वही है, जो भारत का है। पाकिस्तान और बंगलादेश में अब दगे नहीं होते, वहां अब केवल अमुस्लिमों नर-संहार होता है। वे दोनों अब इस्लामी राष्ट्र हैं। उनमे अल्पसंख्यकों की स्थिति भेड़-बकरी जैसी है। इसलिए उनके द्वारा दंगे करने या अत्याचार का विरोध करने का प्रश्न ही नहीं रहा।

परन्तु खण्डित भारत मे आज भी दगे होते हैं। तथ्यो से यह भी स्पष्ट हो चुका है कि दंगे वहीं होते हैं, जहां मुसलमान बहुसख्या में हैं या प्रचुर संख्या में हैं। उदाहरणार्थ दिल्ली में दगे जामा मस्जिद क्षेत्र में ही होते हैं। हिन्दूबहुल क्षेत्र में कभी भी साम्प्रदायिक दगा नही होता। यही स्थिति अलीगढ़ के अपर कोट भाग, हैदराबाद के चार कमान भाग और सम्भल जैसे नगरो की है, जहां मुसलमान बहुसंख्या में हैं। दूसरा तथ्य यह है कि हर दंगा मुसलमान शुरू करते हैं और दगे तब तक जारी रहते हैं, जब तक मुसलमानों का हाथ ऊंचा रहता है। अहमदाबाद के हाल के दगे से यह बात और अधिक स्पष्ट हो गई है।

कुछ लोग यह कह कर कि दंगों में अधिक हानि मुसलमानों की होती है, मूल प्रश्न से ध्यान हटाना चाहते हैं। महत्त्व इस बात का है कि दंगा कहां होता है और इसे कौन शुरू करते हैं, न कि अधिक हानि किस की होती है। पाकिस्तान द्वारा भारत पर १९६५ और १९७१ में थोपे गये युद्धों में अधिक हानि पाकिस्तान की हुई। क्या इस कारण इन युद्धों के लिए भारत को दोष देना उचित और न्यायसंगत होगा ?

संसार-भर में साम्प्रदायिक दंगों का मूल कारण कुरान और हदीस हैं। हदीसों में इस्लाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब के किरदार का वर्णन है, जो मुसलमानों के लिए आदर्श व्यवहार है। दुर्भाग्य से हिन्दुस्तान के बुद्धिजीवियों, राजनेताओं और लेखकों ने इस दिशा में कभी नही सोचा। वे अभी तक कुरान को पवित्र पुस्तक कह कर इसकी तुलना वेदों और गीता से करते आ रहे हैं। परन्तु जब से श्री चांदमल चोपड़ा ने कलकत्ता हाई कोर्ट में कुरान पर साम्प्रदायिक विद्वेष और अमुस्लिमों की मारकाट का सन्देश देने के कारण इस पर प्रतिबन्ध लगाने की याचिका पेश की और हाई कोर्ट ने इस पर विचार करना स्वीकार कर लिया, तब से श्री अरुण शौरी, श्री रामस्वरूप, और श्री सीताराम गोयल जैसे कुछ बुद्धिजीवियो ने इन पुस्तकों का गहराई से अध्ययन और विश्लेषण करना शुरू किया है। इस अध्ययन और विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया है कि ये पुस्तकें ऐसे उपदेशों और उदाहरणों से भरी पड़ी हैं, जो इनसे प्रेरणा पाने वाले लोगों को उस प्रकार का व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जिसका अनुभव संसार को गत १४०० वर्ष से व भारत को गत एक हजार वर्ष से हो रहा है।

कुरान और हदीसों के उदाहरण प्रस्तुत करने का इस लेख में स्थान नहीं। परन्तु उनका निचोड़ इस्लाम की 'मिल्लत' और 'कुफ्र'—'दार-उल-इस्लाम' और 'दार-उल हरब' तथा जिहाद की अवधारणाओं से परिलक्षित होता है। इस्लाम मानव जाति को एक नहीं मानता। यह उसे दो भागों में बांटता है। जो लोग मुहम्मद साहब और कुरान पर ईमान लायें वे मुसलमान, मिल्लत के अंग व भाई हैं। जो ऐसा नहीं करते, वे काफिर हैं और उन्हें मुसलमान बनाना या खत्म करना सब से बड़ा पुण्य है। किसी काफिर को मारने वाला व्यक्ति गाजी कहलाता है। जब अकबर राज सिंहासन पर बैठा; तब उसकी आयु केवल तेरह वर्ष की थी। उसके अभिभावक बैराम खां ने उसे अपने हाथ से बन्दी बनाये गये हिन्दू सेनापति हेमू का गला काटने के लिए बाध्य किया, ताकि वह गाजी कहला सके। ज्यों ही अकबर ने अपनी तलवार से हेमू का गला काटा, सभी एकत्रित मुस्लिम सरदारों और मौलवियों ने उसे गाजी की उपाधि से सुशोभित कर दिया।

इस्लाम धरती को दो भागों में बांटता है। जहां मुसलमानों का वर्चस्व अथवा राज्य है वह इलाका 'दार-उल-इस्लाम' अथवा इस्लामी राज्य कहलाता है। जहा सत्ता मुसलमानों के हाथ में न हो, उसे 'दार-उल-हरब' कहा जाता है और उसे 'दार-उल इस्लाम' मे बदलना हर मुसलमान और इस्लामी राज्य का मजहबी कर्तव्य माना जाता है।

इस्लाम के प्रसार और 'दार-उल-हरब' को 'दार-उल-इस्लाम' में बदलने के लिए जो युद्ध किया जाता है, वह जिहाद अथवा पवित्र युद्ध है। इसीलिए जब जभी पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करता है, पाकिस्तान के मुसलमान इसे जिहाद कहते हैं और भारत के मुल्ला-मौलवी उसे जिहाद मानते हैं।

यह इस्लामी सिद्धान्त ही साम्प्रदायिक दंगों का मूल कारण है। इसी कारण मुसलमान इस देश के महान् सपूत श्रीराम (जो भारत के अधिकतर मुसलमानों के भी पुरखा हैं), पर विदेशी आक्रान्ता और राम जन्मभूमि पर बने मन्दिर को ध्वस्त करने वाले बाबर को वरीयता देने के लिए प्रेरणा देते हैं। उनके इस किरदार का प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता है, क्योंकि हर क्रिया की प्रतिक्रिया होना नैसर्गिक नियम है।

इसलिए यदि भारत को साम्प्रदायिक दंगों की लानत से बचाना है तो कुरान और हदीसों द्वारा पैदा की गई मानसिकता को बदलना होगा। जब तक मुसलमानों में यह भाव कायम रहेगा कि मन्दिर को नष्ट करना, देव-प्रतिमा को तोड़ना, व मूर्तिपूजकों को मारना पुण्य है और जब तक उनके मनों में यह आशा बनी रहेगी कि उनके मतों की खातिर शासन उनके सारे जुर्मों पर आंखें बन्द कर सकता है और वे खण्डित भारत को भी पाकिस्तान की तरह 'दार-उल-इस्लाम' बना सकते हैं, तब तक वे (कुछ अपवादों को छोड़कर) दगे और मारकाट करते रहेंगे और अन्य इस्लामी देशो के एजेंट के रूप में काम करते रहेंगे। साम्प्रदायिक सद्भाव के सभी उपदेश और एकात्मता के सभी नारे उनके लिए निरर्थक सिद्ध होंगे।

इसलिए यदि खण्डित हिन्दुस्तान मे साम्प्रदायिक सौहार्द पैदा करना है और साम्प्रदायिक दगों का अन्त करना है तो इस्लामवादियो को भी सर्वपंथ समभाव के भारतीय (हिन्दू) आदर्श को मानना होगा और 'मिल्लत और कुफ्र' की अवधारणाओं से मुंह मोड़ना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि इस्लाम और कुरान का भारतीयकरण किया जाये और मुसलमानों के मनों में इस्लाम से इतर अन्य पंथों और उनके पूजास्थानों के प्रति भी समान आदर का भाव पैदा किया जाये।

ब्रह्मर्षि गुरुवर विरजानन्द जी के पुण्य संस्मरण-२

-राजवीर शास्त्री-

तीन किश्तों के इस लेख की पहली किश्त २८ सितम्बर के अंक में प्रकाशित हुई थी। अब पढ़िये दूसरी किश्त।

(१) **आर्ष ज्ञान के अनन्य भक्त**—यद्यपि सन्यास की दीक्षा देने वाले गुरु स्वामी पूर्णानन्द जी ने ही स्वामी विरजानन्द जी के हृदय में आर्ष ज्ञान का बीज प्रत्यारोपित कर दिया था, किन्तु अन्य गुरुजनों के सान्निध्य में रहकर आपने आर्ष-अनार्ष सभी प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन किया था। मथुरा वास के समय विद्वानों के साथ जैसे-जैसे शास्त्रार्थ के रूप मे सान्निध्य हुआ, वैसे-वैसे ही अनार्ष ज्ञान के प्रति गुरु विरजानन्द के मन में घृणा उत्पन्न होने लगी और आर्ष ज्ञान का आरोपित बीज सिंचित होकर धीरे-धीरे पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होने लगा। उन्होंने जीवन का लक्ष्य यही बना लिया कि देश में फैली समस्त अविद्या व भ्रान्तियों का कारण, अनार्ष शिक्षा ही है, जब तक इसे दूर नही किया जायेगा, तब-तक निभ्रान्त ज्ञान का सत्य प्रकाश ओझल ही रहेगा। अपनी चिरकालीन आशाओं को यथार्थ रूप में पूर्ण करने योग्य स्वामी दयानन्द जैसे सुयोग्य शिष्य को पाकर गुरु जी की मुरझाई आशा-लतरी फिर से हरी-भरी हो गई। फलतः गुरुवर ने अपने शिष्य से दक्षिणा रूप में उसी कार्य को पूर्ण कराने की प्रतिज्ञा कराई। गुरुवर विरजानन्द जी का यह प्रबल निश्चय था कि भारत की सर्वोच्च निधि ईश्वर का निभ्रान्त ज्ञान वेद है और वेद ज्ञान की प्राप्ति का साधन एकमात्र आर्ष शिक्षा ही है। एतदर्थ उन्होंने जहां आर्ष-भक्त स्वामी दयानन्द जैसे शिष्य को तैयार किया, वहां अन्य भी अनेक प्रयास किये। जैसे (१) सं० १९१८ के प्रारम्भ में भारतीय राजाओं का दरबार हुआ था, जिसमें जयपुर नरेश महाराज रामसिंह जी भी पधारे थे। महाराज श्री दण्डी जी की विद्या से सुपरिचित थे। उन्होंने सेवकों द्वारा दण्डी जी को बुलाया और उनका हार्दिक सत्कार करके उन्हें अपनी गद्दी पर आसीन किया और स्वयं हाथ जोड़कर नीचे बैठ गये। नरेश ने वेदार्थ का ज्ञान करने के लिये व्याकरण विद्या पढ़ने की इच्छा प्रकट की। दण्डी जी ने यह कहकर मना कर दिया कि आप राजकीय कार्य करते हुए व्याकरण नही पढ़ सकते। नरेश ने फिर आग्रह किया कि मैं समय के अभाव में अष्टाध्यायी आदि ग्रन्थ तो नही पढ़ सकता, अतः आप इनके स्थान पर कोई अन्य ग्रन्थ हमे पढ़ा दीजिये। दण्डी ने सहसैव उत्तर दिया—राजन्! जैसे सूर्य बिम्ब को तोड़कर कोई मनुष्य बना नहीं सकता, वैसे ही अष्टाध्यायी और महाभाष्य का स्थान लेने वाला कोई अन्य ग्रन्थ नही।

तदनन्तर नरेश ने प्रार्थना की कि आप ऐसा कोई उपाय बतायें, जिससे मेरा यश सर्वत्र फैल जाये। दण्डी जी ने यह समय अपनी हृदयस्थ भावना को प्रकट करने का उपयुक्त समझकर कहा—राजन्! आपकी कीर्ति का एक ही सर्वोत्तम उपाय है। आप समस्त देश के विद्वानों की एक सार्वभौम सभा का आयोजन करें। इस महान् कार्य में आपका तीन लाख रुपया व्यय होगा। विद्वानों को उचित भेंट देकर उनका सत्कार करें और उस सभा में यह विषय रखा जाये कि व्याकरण में ऋषिकृत ग्रन्थ सत्य हैं या कौमुदी, मनोरमा आदि अनार्ष ग्रन्थ। हम समस्त विद्वानों के समक्ष दो घण्टे में ही निश्चय करा देंगे कि आर्ष ज्ञान ही सत्य है और आपको विजयपत्र दिला देंगे। आपके नाम का संवत् विक्रमादित्य की भांति प्रारम्भ करवा देंगे। दण्डी जी का बताया कीर्ति का उपाय सुनकर राजा ने अन्यमनस्क होकर प्रतिज्ञा कर ली, किन्तु अपनी प्रतिज्ञा का पालन न कर सके।

नरेश के शिथिलता के भाव समझकर ही दण्डी जी ने नरेश द्वारा भेंट किया हुआ दो सौ रुपया, दो अशरफी तथा दुशाला भी स्वीकार नहीं किया। इस घटना से पाठक समझ सकते हैं कि इस महातपस्वी साधु की आर्ष शिक्षा के प्रति कितनी अगाध आस्था थी।

(२) एक अन्य घटना देखिये। एक बार मथुरा में मिस्टर प्रीस्टली कलक्टर बनकर आये। वे एक दिन कुछ साथियों के साथ गुरुवर दण्डी जी के

सेवा हो तो बतायें। एक चक्षुविहीन आर्थिक दृष्टि से अकिंचन साधु कलक्टर से आर्थिक सहयोग या बढ़िया मकान अथवा कोई ऊंचा पद भी मांग सकता था, किन्तु उसे तो लेशमात्र भी अपनी चिन्ता नहीं थी। वे तो अहर्निश परोपकार की बात सोचकर आर्ष ज्ञान का प्रचार ही चाहते थे। अतः कहने लगे—कलक्टर महोदय! यदि आप हमारी सेवा करना ही चाहते हो, तो भट्टोजि-दीक्षित के बनाये कौमुदी आदि समस्त अनार्ष ग्रन्थों को यमुना में प्रवाहित करवा दो अथवा अग्नि मे फूंक दो। किन्तु आर्ष ज्ञान का मूल्यांकन न समझने वाला कलक्टर कुछ उत्तर न देकर मौनभाव से ही चला गया।

(१) **गुरुवर के हृदयमें आर्ष ज्ञान के प्रति श्रद्धा कैसे जागृत हुई?** एक बार दण्डी जी के शिष्य गयादत्त चौबे तथा रंगादत्त से सेठ राधाकृष्ण के गुरु श्री कृष्ण शास्त्री के दो शिष्यों का 'अजाद्यक्तिः' पद पर शास्त्रार्थ हो गया कि इस पद में क्या समास है? एक षष्ठीतत्पुरुष समास बताता था तो दूसरा सप्तमीतत्पुरुष। विवाद का विषय बढ़ता गुरुजनों के पास भी पहुंचा। शास्त्रार्थ का निर्णय हुआ। सेठ राधाकृष्ण मध्यस्थ बने। दोनों पक्षों ने दो-दो सौ रुपये जमा किये। समस्त मथुरा नगरी में शास्त्रार्थ का समाचार दावानल की भांति फैल गया। निश्चित तिथि पर शास्त्रार्थ का आयोजन हुआ। दण्डी जी का पक्ष था 'अजाद्यक्तिः' पद में षष्ठीतत्पुरुष समास है और श्री कृष्ण शास्त्री जी का पक्ष था सप्तमी तत्पुरुष। दण्डी जी ने नियत समय पर अपने शिष्यों को शास्त्रार्थ के स्थान पर भेज दिया और कहा कि यदि शास्त्री जी आजायें तो हमें बुला लेना। शास्त्री जी अपने पक्ष की हीनता समझकर शास्त्रार्थ में नहीं आये। सेठ राधाकृष्ण भी निष्पक्ष नहीं थे। अतः दोनो तरफ के शिष्यों का ही शास्त्रार्थ कराकर निर्णय दे दिया गया कि दण्डीजी हार गये और पैसे से खरीदे हुए सभा में आये लट्ठमारों को पैसा बाट दिया गया। दण्डीजी को यह बात बहुत ही दुःखद लगी। उन्होंने मथुरा के पण्डितों के पास सत्यासत्य के निर्णयार्थ पत्र भेजे किन्तु सभी ने यही उत्तर दिया कि पक्ष तो आपका ही सत्य है, किन्तु हमने तो घूस लेकर पहले ही हस्ताक्षर कर दिये हैं। अतः हम आपके पक्ष मे निर्णय नही दे सकते। दण्डी जी इसके बाद आगरा गये, किन्तु वहां के पण्डितों को भी घूस देकर पहले ही चुप कर दिया गया था। दण्डी जी यह देखकर अत्यन्त क्षुब्ध हुए किन्तु विवश होकर अपने निवास स्थान पर आ गये और आत्मघाती पण्डितों की भर्त्सना करने लगे। कौन जानता था कि इस दुर्घटना का प्रभाव कितना व्यापक होगा? दण्डी जी को अपने पक्ष पर प्रबल विश्वास था, अतः वे अपने पक्ष में किसी ऋषिकृत ग्रन्थ की साक्षी की खोज करने में लग गये।

एक दिन एक दक्षिणी ब्राह्मण सम्पूर्ण अष्टाध्यायी का पाठ कर रहा था। दण्डी जी ने उसे बहुत ध्यान से सुना और उस पर मनन किया। अष्टाध्यायी के 'कर्तृकर्मणोः कृतिः' सूत्र को सुनकर अपने पक्ष में परम प्रमाण समझकर बहुत ही प्रसन्न हुए। क्योंकि इस सूत्र के अनुसार 'अजाद्यक्तिः' पद में षष्ठी विभक्ति होने से षष्ठी समास ही हो सकता है। उनके मन में यह निश्चय हो गया कि अष्टाध्यायी सूत्रार्थ में ऋषिकृत ग्रन्थ है और पांच हजार वर्षों से संस्कृत विद्या का अनमोल कोष इसी में छिपा हुआ है। अष्टाध्यायी के मिलने पर महर्षि पतञ्जलि का महाभाष्य भी दण्डी जी के हाथ लग गया। इनके सम्बन्ध मे दण्डी जी का यह सकल्प देखिये—

> अष्टाध्यायी-महाभाष्ये, द्वे व्याकरण पुस्तके।
> ततोऽन्यत् पुस्तकं यत् तु, तत्सर्वं धूर्तचेष्टितम्॥

शास्त्रार्थ में दण्डी जी के प्रति किये गये अन्याय से सेठ राधाकृष्ण स्वयं भी दुःखी थे, क्योंकि उन्होंने यह सारा नाटक अपने गुरु राधाकृष्ण शास्त्री के बहकाने पर ही किया था। शास्त्रार्थ के ६ मास पश्चात् ही श्री कृष्ण शास्त्री का एक शिष्य अत्यधिक बीमार हो गया। तब तो इसे दण्डी जी द्वारा प्रयुक्त मारणमोहन का मन्त्र समझ कर उनका ही पाप उन्हें भयभीत करने लगा। सेठ जी विवश होकर दण्डी जी से क्षमा मांगने को भी उद्यत हो गये और किसी व्यक्ति को दण्डीजी के पास एक हजार रुपये देने का सन्देश लेकर भिज-

...कारप्रिय साधु का परम आदर्श ही था।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द की दार्शनिक सूझ

—आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री —

वेद ज्ञान के लिये वेदांग व्याकरण, ज्योतिष आदि के अध्ययन की अनिवार्यता है, जिससे वेदों की अपरा विद्या अर्थात् पद-पदान्त, तद्धत छंद, निर्वचनार्थ आदि का ज्ञान हो सके; परन्तु उपांग अर्थात् दर्शनों के माध्यम से महर्षियों ने जगत् के जटिल प्रश्नों के समाधान का साक्षात्कार करके प्राणियों की कल्याण कामना से सत्यासत्य की कसौटी के रूप में सिद्धान्तों का प्रस्फुटन तथा प्रस्तुवन किया है। वस्तुतः "दृश्यते अनेन इति दर्शनम्" अर्थात् जिनके द्वारा प्रपञ्च के निगूढ़तम रहस्यो के समझने का मार्गदर्शन किया जा सके उन्हें दर्शन कहते हैं।

ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त आई हुई ऋषि परम्परा के पुनरुज्जीवक, इस युगके महान् दार्शनिक ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं। आर्ष प्रतिभा अर्जित तथा पूर्वजन्मोपात्त भी होती है। महर्षि दयानन्द इसके उभयथा ही पात्र थे।

वेद तथा दर्शन विद्या के जानने के लिये निम्न दर्शित विशिष्ट गुणों का होना उस पात्र में अपरिहार्य है। यथा—

सम्नता संयमो योगः प्रज्ञोहः शास्त्रदर्शने
एकैकं शस्यते लोके किमु यत्र च पञ्चकम्।
सम्नता चात्मनो निष्ठा संयमश्च परं तपः
योगश्चैवात्मनो व्यक्ता प्रज्ञा सूक्ष्मार्थगाहिनी।
ऊहस्तर्क-समाध्युत्थ सर्वकल्याणकामिनः
स्वभावात् पञ्चकं चैतत्, दयानन्दस्य योगिनः

समन (आत्मा की गवेषणनिष्ठा), सयम अर्थात् परन्तप ब्रह्मचर्य, योग अर्थात् आत्मसाक्षात्करण, सूक्ष्मार्थावगाहिनी बुद्धि, तर्क तथा समाधि जनित ऊह—इन पांच विशेषताओं में से एक भी बहुत है। फिर ऋषि दयानन्द में तो उक्त पांचों लक्षण घटित होते हैं।

आचार्य यास्क ने ऊह अर्थात् तर्क को भी ऋषि कहा है। इस तार्किक प्रतिभा का पूर्ण उदात्त विकास जिसमें भी होगा वह सर्वथा निर्भ्रान्त हो जाता है। यही कारण था कि नवीन भाष्यकारो के मस्तिष्कों पर शताब्दियों से चढ़ी हुई धूलि को अपनी अप्रतिम ऊहा शक्ति के झाड़न से ऋषि दयानन्द ने शोधित किया। ऋग्वेद के दशम मण्डल के निम्नलिखित मन्त्र में इस ऊह को वेदार्थ दर्शन में प्रधान साधन माना गया है—

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो विचरन्त्युत्वे ॥ १०।७१।८

अर्थात् हृदय द्वारा सुदृढ़ किये गये मन के वेगों में समान इन्द्रिय मति वाले, वेद तथा ब्रह्म को जानने वाले जिस तरह का मिलकर विचार करते हैं, और इस विचार में अतथ्य शैलियों या कर्ताओं द्वारा उसे त्याग देते हैं पर कुछ लोग ऊह ब्रह्माणा. अर्थात् तर्क द्वारा वेद और ब्रह्म को समझने वाले बिना चरम निष्कर्ष पर पहुंचे नहीं छोड़ते और निरन्तर उपदेश करते रहते हैं। महर्षि दयानन्द इसी ऊह शक्ति के धनी हैं। इसी के माध्यम से उन्होंने वैदिक एवं जागतिक सिद्धांतों व पदार्थों को जाना और प्रस्तुत किया। पूर्ववर्ती दर्शनकारों के सिद्धान्तो को इसी तार्किक प्रतिभा द्वारा नवीनता प्रदान की और उन्हें अधिक स्पष्ट कर दिया। कदाचित् महर्षि दयानन्द को अधिक दीर्घ जीवन मिला होता तो न जाने दर्शनशास्त्र की कितनी और गुत्थियां सुलझती जैसे आयु की निश्चयात्मकता, स्थावर में जीव सत्ता तथा शरीर में हृदय का स्थान एवं अन्यान्य विचारें। उन्होने कई स्थानों पर स्वय भी पूर्व पक्षों की उद्भावना करके अपूर्व समाधान प्रस्तुत किये हैं। जिस प्रकार कोई भाष्यकार दर्शनसूत्रगत भावों का व्याख्यान करता है, उसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने भी सूत्र तथा आर्ष भाष्यो में निहित रहस्यों का आविष्करण व प्रादुर्भावन किया है। ऋषि की इसी मौलिक ऊहात्मक प्रतिभा के कतिपय निदर्शन प्रस्तुत हैं यथा नव्य न्याय वालो ने महर्षि गौतम के "इन्द्रियार्थ-सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्" इस लक्षण को अपूर्ण करार दे दिया और इसके स्थान पर "ज्ञानाकरणकं ज्ञानं प्रत्यक्षम्" यह लक्षण बना दिया। गौतम के लक्षण में दोष दर्शाया कि वह ईश्वर के प्रत्यक्ष करने में 'इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष से उत्पन्न, अशाब्द, भ्रमभिन्न निश्चयात्मक ज्ञान वाला प्रत्यक्ष लक्षण अपर्याप्त है; क्योंकि ईश्वर का इन्द्रिय प्रत्यक्ष नही है और प्रत्यक्षाभाव मे अनुमान भी नहीं हो सकता। अत ईश्वरसिद्धि नही हो सकती।"

ऋषि दयानन्द ने ईश्वर की अस्तित्वसिद्धि मे प्रत्यक्ष को ही प्रमाण माना है। वे इसका मानस प्रत्यक्ष मानते हैं, जबकि अन्य विद्वान् ईश्वरसिद्धि में शब्द और अनुमान को प्रमाण मानते हैं।

वे कहते हैं—

(क) "प्रश्न—ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तर—"इन्द्रियार्थसन्निकर्ष"—इस गौतम सूत्र मे इन्द्रिय और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नही, जैसे चारों त्वगादि इन्द्रियो से स्पर्शादि का ज्ञान होने से गुणी पृथ्वी का आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे ही इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष, ज्ञानादि गुणों के विशेष प्रत्यक्ष होने सेपरमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। (विशेष अध्ययन के लिये मेरे रचित वेदार्थ कल्पद्रुम के पृ० ३३६ से देखिये)

(ख) ईश्वर विषय पर विचार करते हुए लिखते हैं—

"प्रश्न—सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्"—छान्दोग्य।

यहां ऋषि ने स्वयं प्रश्न उद्भावित किया है कि जब जीव ब्रह्म या ब्रह्म जीव नहीं हो सकता तो उक्त छान्दोग्य उक्ति से ब्रह्म की अद्वैतता कैसे सिद्ध होगी?

इसका ऋषि समाधान करते हैं कि इस अद्वितीय पद की सगति न हो सकेगी ऐसा भ्रम न करें—"विशेष्य और विशेषण विद्या का ज्ञान करो कि उसका क्या फल है। जो कहो कि "व्यावर्तक विशेषणं भवतीति"। विशेषण भेदकारक होता है, तो इतना और भी मानो प्रवर्तकं प्रकाशकमपि विशेषणं भवतीति विशेषण प्रवर्तक और प्रकाशक भी होता है। तो समझो कि अद्वैत (अद्वितीय) विशेषण ब्रह्म का है, इसमें व्यावर्तक अर्थ यह है कि अद्वैत वस्तु अर्थात् जो अनेक जीव और तत्त्व हैं उनसे ब्रह्म को पृथक् करता है और विशेषण का प्रकाशक धर्म यह है कि एक होने की प्रवृत्ति करता है। जैसे "अस्मिन्नगरेऽद्वितीयो धनाढ्यो देवदत्तः। अस्यां सेनायामद्वितीयो शूरवीरो विक्रमसिंहः" किसी ने किसी से कहा, इस नगर में अद्वितीय धनाढ्य देवदत्त और इस सेना मे अद्वितीय शूरवीर विक्रमसिंह है। इससे क्या सिद्ध हुआ कि देवदत्त के सदृश इस नगर में दूसरा धनाढ्य और इस सेना मे विक्रमसिंह के समान दूसरा शूरवीर नहीं है और पृथ्वी आदि जड़ पदार्थ, पश्वादि प्राणी और वृक्षादि जीव भी हैं उनका निषेध नहीं हो सकता। इसी प्रकार ब्रह्म के सदृश जीव व प्रकृति नही हैं किन्तु न्यून तो हैं।

इससे यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्म सदा एक है और प्रकृतिस्थ तत्त्व अनेक हैं। उससे भिन्न कर ब्रह्म के एकत्व सिद्ध करने वाले अद्वैत व अद्वितीय

विशेषण हैं। इससे जीव व प्रकृति का और कार्यरूप जगत् का अभाव और निषेध नहीं हो सकता। वे सत्र हैं; किन्तु ब्रह्म के तुल्य नहीं, इससे न द्वैत सिद्धि व अद्वैत सिद्धि और न द्वैतसिद्धि की हानि होती है। उस प्रसंग में विशेषण को प्रवर्तक मानकर नवीन दृष्टि प्रस्तुत की गई है।

(ग) सभी आस्तिक दर्शन अत्यन्त प्राचीन हैं (प्राचीनता जिज्ञासु पढ़ेव आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री का दर्शन तत्त्व विवेक" देखें)। फिर भी लोगों का भ्रम है कि शून्यवाद के आदि कल्पनाकार बौद्ध थे। उन्हें ज्ञात होना चाहिये कि इस प्रकार की शंकायें पूर्व में भी सांख्य के प्रणेता परमर्षि कपिल ने अपनी सूत्ररचना शैली में अन्य पूर्वपक्षों के उद्भावन के साथ-साथ की सृष्टि है रचना मे "शून्यवाद" को भी एक पूर्वपक्ष के रूप में स्थापित किया है। यथा—

शून्य तत्त्वं, भावो विनश्यति वस्तुधर्मत्वात् विनाशस्य।

सांख्य १।४४

अर्थात् जितने पदार्थ हैं वे सब शून्य हैं और भाव नश्वर हैं; अतः सभी वस्तुओं का आदि और अन्त अभाव रूप में सिद्ध है, मध्य भाग भी यथार्थ नहीं है। इस पूर्वपक्ष का महर्षि कपिल समाधान करते हैं।

"अपवादमात्रमबुद्धानाम्" अर्थात् उक्त कथन मूर्खों का है, नाशमात्र वस्तु का स्वभाव नहीं हो सकता; क्योंकि जब वह मध्य काल में वस्तुसत्ता शून्य अर्थात् अभाव से बनी है तो निरवयव हुई, अतः विनश्वर नहीं हो सकती।

इसी प्रकार 'नासदुत्पादो नृशृङ्गवत्।' 'उपादान नियमात्।' सर्वत्र सर्वदा सर्वासम्भवात्।' 'शक्तस्य शक्यकरणात्।' सांख्य १। ११ से आगे भी अनेक समाधान सांख्य ने दिये हैं कि शून्य अर्थात् असत् किसी वस्तु का कारण नहीं हो सकता।

बाद मे बौद्धो ने भी (माध्यामिक तथा वैभाषिक) शून्य को सृष्टि का कारण माना है। सेन्ट टामस परमात्मा को तो सृष्टिकर्ता मानता है, पर वह कहता है कि उसने शून्य से सृष्टि रची। परन्तु इस प्रसंग में महर्षि दयानन्द के विलक्षण ऊह ने महर्षि कपिल के उत्तरों में निम्न तर्कयुक्त व्याख्यान से चार चाद लगा दिये। ऐसी अद्भुत विशेषता दयानन्द की आर्ष प्रतिभा की है। वे द्वादश समुल्लास में लिखते हैं कि—

"जो सब शून्य हो तो शून्य का जानने वाला शून्य नही हो सकता। इसलिये शून्य का ज्ञाता और (ज्ञेय) शून्य दो पदार्थ सिद्ध होते हैं। और जो योगाचार बाह्य शून्यत्व मानता है तो पर्वत इसके भीतर होना चाहिये जो कहे कि पर्वत भीतर है तो इस (योगाचारी) के हृदय मे पर्वत के समान अवकाश कहा है ? इसलिये पर्वत बाहर है और पर्वतज्ञान आत्मा मे रहता है।"

इसी प्रकरण मे अष्टम समुल्लास में सांख्य के उद्भावित पूर्वपक्ष 'शून्य तत्त्वम्" इस सूत्र पर महर्षि दयानन्द अद्भुत तर्क प्रहार करते हैं कि —

'शून्य आकाश, अदृश्य अवकाश और बिन्दु को भी कहते हैं। इस शून्य (आकाश, अवकाश) मे सब अदृश्य हैं जैसे एक बिन्दु में रेखा, रेखाओं के वर्तुलाकार होने से भूमि, पर्वतादि ईश्वर की रचना से बनते हैं।"

यहा ऋषि दयानन्द शून्य विचार का अर्थ प्रस्तुत करते हैं। वस्तुत आसमन्तात् काशन्ते सूर्यादयो यत्र तथा बिन्दु की भी एक सत्ता है। आकाश शून्य इसलिये भी है 'शुने हितम् श्वयति, गच्छति, वर्धते वा श्वा, गमन करने वाला (यौगिक अर्थ कोई भी) जिसमे चल सके। श्वा का रूढ्यर्थ लेने मे कुत्ते को खाली स्थान या एकान्त हितकर होना है, अतः शून्य शब्द अभावार्थपरक न होकर सत्तात्मक है। यदि अभावपरक है तो उस शून्य का ज्ञाता कैसे ? यदि नही तो ज्ञेय (शून्य) कैसे हुआ ? दूसरे अभाव भी किसी भावमय पदार्थ की स्थिति का ध्वनक भी अवश्य है; क्योकि जो वस्तु है, उसकी कभी सर्वथा 'नही' नही हो सकती।

पर यह भी निर्विवाद है कि अभाव पदार्थ है। वह भी भावात्मक आकाश की सत्ता का द्योतक है यथा "सम्प्रति भूतले घटो नास्ति" इस समय भूतल पर घड़ा नही है। इससे यही द्योतित होता है कि या तो घड़ा पूर्वकाल मे यहा था अब नही है, या 'घट' पश्चात् यहा होगा। फलत. शून्यवाद का सिद्धान्त कोरी बकवास है।

प्यारा भारत देश है

सबका प्यारा मन मतवारा, प्यारा भारत देश है,
अपनी भाषा अपनी संस्कृति नवनूतन परिवेश है।

रंग-बिरंगे फूल सुनहरे, सबके मन को भाते हैं,
गुन-गुन गुंजन करते भंवरे गीत सुनाते जाते हैं,
नयनों के दरिया में बहना प्यार का यह संदेश है।
सबका प्यारा······

यौवन की उत्ताल तरंगें, साथ बधाया करती हैं,
फौजें अपनी मैया का विश्वास दिलाया करती हैं,
श्रद्धा और विश्वास यहां का करता मन मदहोश है।
सबका प्यारा······

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस मे हैं भाई-भाई,
लड़ते, मरते और झगड़ते फिर भी हममे नही जुदाई,
भारत मां के लाल ये प्यारे करते नया किलोल हैं।
सबका प्यारा······

ऊंचा सदा रहा है तिरंगा छवि इसकी लहराई,
हरा रंग है हरी हमारी धरती की अंगड़ाई,
कदम बढ़ाते जाओ वीरो, यह इसका संदेश है।

सबका प्यारा मन मतवारा, प्यारा भारत देश है,
अपनी भाषा, अपनी संस्कृति नवनूतन परिवेश है।

—क्षेमपाल शर्मा

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्यसमाज आदर्श नगर (जयपुर) में वैदिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन

जयपुर, २७ अगस्त। मुख्यमन्त्री हरिदेव जोशी ने कहा है कि भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता को सही ढंग से समझने के लिए वेदों का अध्ययन जरूरी है। जोशी जी यहां आदर्शनगर में आर्यसमाज की ओर से स्थापित वैदिक साहित्य केन्द्र का उद्घाटन कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि वेद किसी धर्म से जुड़े हुए नहीं है, वरन् वे तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए है। उन्होंने कहा कि जो अनादि है उसे संकीर्णता के दायरे में नहीं बांधा जा सकता। जब वेद लिखे गये थे, तब आज की तरह विभिन्न धर्म या विचार थे ही नहीं। ये तो हम लोग ही हैं, जिन्होंने कालान्तर में अपने को सीमा में बांध लिया। उन्होंने कहा कि वेद राष्ट्र या राष्ट्रीयता की नहीं, वरन् मानव में विश्वबन्धुत्व की भावना को बढ़ाते है।

जोशी जी ने कहा कि आज भी भारत में वेदों को जितना महत्त्व दिया जाना चाहिए, उतना नहीं दिया जा रहा।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि वैदिक साहित्य केन्द्र वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

सम्मेलन को राजस्थान के गृह राज्य मन्त्री श्री सुजान सिंह यादव, राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री दिनकर लाल मेहता एवं राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटू सिंह ने भी सम्बोधित किया और उसे एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति बताया।

सिन्धी आर्य सम्मेलन : स्वामी आनन्दबोध निमन्त्रितों में

नागपुर। अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सभा के तत्त्वावधान में चतुर्थ सिन्धी आर्य सम्मेलन, जरीपटका, नागपुर में २१, २२, व २३ नवम्बर को हो रहा है।

इस सम्मेलन में अनेक आर्य विद्वान्, लेखक, साहित्यकार, कवि तथा समाज सुधारक पधारेंगे। निम्नलिखित आर्य महानुभावों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है—

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पंडित सत्यप्रिय शास्त्री, श्री देवीदास आर्य, श्री गंगाराम सम्राट्, प्राचार्य कन्हैयालाल तलरेजा, श्री ओमप्रकाश वर्मा, माता मीरा यति, पंडित प्रकाशचन्द्र वेदालंकार, ब्रह्मचारी आर्य नरेश और श्री भगवान्देव शर्मा।

इस महासम्मेलन में राष्ट्रीय एकता, समाज सुधार, वेद प्रचार तथा आर्य युवा शक्ति निर्माणादि महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श होगा और भावी कार्यक्रम निर्धारित किया जायेगा।

आर्यसमाज मन्दिर सरदारपुरा में शुद्धियां

सरदारपुरा (जोधपुर)। आर्यसमाज मन्दिर में एम० ए० हमीद के पुत्र जावेद अख्तर (उम्र २७ वर्ष) की शुद्धि करके उनका नया नाम जयदेव आर्य रखा गया। उनका विवाह श्री बंसीलाल गांधी की पुत्री प्रवीण गांधी के साथ कर दिया गया।

इसी प्रकार ए० एच० टामस के पुत्र सुशील टामस (आयु २५ वर्ष) और मोहनलाल पीटर की पुत्री रोमिला पीटर की शुद्धि करके उनके नाम क्रमश सुशील कुमार आर्य और रोमिला आर्या रखा गया। दोनों का विवाह करा दिया गया।

आर्यसमाज मैस्टन रोड, कानपुर के पुरोहित का निधन

कानपुर। इलाहाबाद कमिश्नरी आर्य वीर दल के उपसंचालक और आर्यसमाज मैस्टन रोड के पुरोहित मास्टर नवलकिशोर का १९ अगस्त को देहान्त हो गया। वे अविवाहित थे और उन्होंने अपना जीवन आर्य वीर दल के माध्यम से समाज की सेवा में लगाया।

उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल की एक सभा में परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य

गोविन्दराम हासानन्द प्रकाशन के संचालक विजयकुमार जी के सुपुत्र अनिल कुमार आर्य वैदिक साहित्य के प्रचार के लिए ३८वें अन्तर्राष्ट्रीय फ्रांकफुर्त पुस्तक मेले में भाग लेने २९ सितम्बर को जर्मनी रवाना हो गये।

फ्राकफुर्त में प्रतिवर्ष पुस्तक मेला लगता है। इस वर्ष के पुस्तक मेले का विषय ही "भारत—बदलाव में निरन्तरता" है। फ्राकफुर्त पुस्तक मेले में यह भी पहली बार ही हुआ है कि किसी देश को विषय बनाकर साहित्य, कला आदि पर विशेष परिचर्चाएं होंगी। भारत का प्रतिनिधित्व करने भारत के एक सौ प्रकाशक इसमें भाग लेने गये है। इस अन्तर्राष्ट्रीय मेले में दुनियाभर से सात हजार प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता भाग ले रहे हैं।

शान्तिप्रिय जी को पत्नी शोक

श्री शान्तिप्रिय विद्यालंकार, बम्बई की धर्मपत्नी श्रीमती सुलभादेवी का ६० वर्ष की आयु में ८ सितम्बर को बम्बई में उनके निवासस्थान पर देहावसान हो गया। वे कैंसर से पीड़ित थीं।

श्रीमती सुलभादेवी प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० बुद्धदेव उपाध्याय धार निवासी की ज्येष्ठ पुत्री थी। स्वर्गीय मुनि मेधाव्रताचार्य जी श्री शान्तिप्रियजी के मौसा थे। श्रीमती सुलभादेवी राजस्थान आयुर्वेद विभाग जयपुर के वरिष्ठ चिकित्सक वैद्य मुनिदेव जी उपाध्याय की बड़ी बहिन थी।

आर्य बन्धु को मातृ शोक

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर (लाल बंगला) कानपुर के कर्मठ सदस्य श्री वंशबहादुरसिंह की माता जी का २५ अगस्त को निधन हो गया। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में भगवान् से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और एक मिनट का मौन रखा गया।

साहित्य समीक्षा

निर्णय के तट पर ... मूल्य १२५ रुपये
लेखक अमरस्वामी सरस्वती

अमरस्वामी प्रकाशन, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद

पुस्तक मे है धर्म और दर्शन का मनन और मूल्याकन लेखक ने धर्म-दर्शन की गहराई को नापने का पैमाना वेद को माना है।

विभिन्न वेद शास्त्रो के उद्धरणो से परिपुष्ट विशद व्याख्या इस ग्रन्थ मे की गई है। ऐसी कही अन्यत्र नही देखी गई।

महात्मा अमरस्वामी जी महाराज वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध हैं। उन्होने आर्यसमाज के मच पर शास्त्रार्थ करके अपने जीवन मे जहा अन्य मतावलम्बियो का मानमर्दन किया, वहा प्रबुद्ध जनमानस का ज्ञान-सम्वर्धन भी किया है। शास्त्रार्थों द्वारा कितनी धार्मिक चेतना उत्पन्न होती है, यह श्रोताओ से जाना जा सकता है।

'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ मे प्रमाण कोटि को विषय-वार निर्दिष्ट किया गया है। इस प्रकार यह आज की पीढी के लिये स्वाध्याययुक्त ग्रन्थ बन पड़ा है।

समय समय पर आप तथा अन्य विद्वानो द्वारा किये गये शास्त्रार्थों का विवरण भी इसमे है—जैसे सनातनधर्मावलम्बियो, जैनो, मुसलमानों, ईसाइयो आदि से। भूतकाल के शास्त्रार्थोंकी चर्चा मे विवरण को सजीव व सशक्त बना कर रख दिया गया है। बीते युगो के स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, प० गणपति शर्मा आदिकी चर्चा करके अपने निर्णयको और भी अच्छा बना दिया गया है।

अमर स्वामी जी महाराज ने वार्धक्य मे भावी पीढी का सरल सुबोध प्रमाणो से युक्त नियमो को प्रस्तुत करके एक सराहनीय कार्य किया है।

प्रत्येक उपदेशक इसे लेकर अपने को पूर्णत तैयार करे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज आदर्श नगर कृष्ण जन्माष्टमी समारोह

आर्यसमाज आदर्शनगर (जयपुर) मे कृष्ण जन्माष्टमी समारोह के अवसर पर आयोजित बृहत् सम्मेलन को राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री हरिदेव जोशी, गृह राज्य मन्त्री श्री सुजानसिंह यादव, और राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री दिनकरलाल मेहता ने सम्बोधित किया।

गृह राज्य मन्त्री श्री सुजानसिंह यादव ने कहा कि कृष्ण आप्त पुरुष थे और विश्व के क्रान्तिकारी नायक थे। भारत मे कृष्ण के नकली उपासक तो बहुत हैं, परन्तु वास्तविक उपासना तो हमे महर्षि दयानन्द जी ने ही सिखाई है। यदि आज भारतवर्ष ही नही समस्त विश्व कृष्ण के उपदेशो का अनुकरण करने लग जाता यह विश्व स्वर्ग हो सकता है। आज भौतिकवाद मे लिप्त विश्व को अनासक्ति योग या निष्काम कर्मयोग के सन्देश की आवश्यकता है।

आर्यसमाज आदर्श नगर के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि तथाकथित कृष्णभक्तो ने कृष्ण को सबसे अधिक कलकित किया है। इन भक्तो ने कृष्ण को लपट, आवारा, व्यभिचारी चोर जार शिखामणि आदि उपाधियो से विभूषित किया। भारतवर्ष मे ईसाई मिशनरियो ने ईसाई कृष्ण के इस दूषित स्वरूप को प्रस्तुत कर हिन्दुओ को ईसाई बनाने मे सफलता प्राप्त की और हिन्दुओ को विश्वधर्मके कटघरे मे अपराधी की भाति खडा कर दिया। जिस एक पत्नीव्रत कृष्णने विवाह के बाद १२वर्ष ब्रह्मचर्य रखकर अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुरूप एक सन्तान उत्पन्न की थी, उसे १६१०८ रानियों का पति बना दिया और उसकी एक लाख अस्सी हजार सन्तानें बताई। आर्यसमाज द्वारा योगिराज कृष्ण के वास्तविक स्वरूप को चित्रित कर हम भारत को योगिराज कृष्ण के स्वप्नो का भारत बना सकते हैं।

हिन्दी की धार्मिक परीक्षायें

भारतीय जीवन को धार्मिक और उन्नत बनाने हेतु तथा आधुनिक सन्तति मे चरित्र निर्माण करने के लिये भारतीय सिद्धात परिषद नजीबाबाद निम्न लिखित परीक्षायें प्रतिवर्ष आयोजित करती है। १ सिद्धान्त प्रवेश २ सिद्धान्त कोविद ३ सिद्धान्त शास्त्री और ४ सिद्धान्त वाचस्पति। शीघ्र ही नियमावली मगाकर अपने यहा केन्द्र स्थापित कीजिये।

चन्द्रप्रकाश आर्य   विद्यारत्न आर्य
प्रधान   मन्त्री

श्री आशुराम आर्य की विदेश यात्रा : धर्म प्रचार की धूम

प्रसिद्ध आर्य विद्वान् और उर्दू मे वेदो के भाष्यकार श्री आशुराम आर्य इन दिनो विदेशयात्रा पर हैं। वे २८ जून को अपनी धर्मपत्नी के साथ कुवैत एयरवेज से लन्दन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उतरे। ६ जुलाई (रविवार) को वैस्ट ईलिंग मार्गायल रोड की आर्यसमाज में उनका प्रवचन हुआ। आर्य बन्धुओ ने उर्दू वेदभाष्य लिए और उनकी प्रशसा की। विदेशो मे सत्सग के बाद जलपान अथवा सहभोज अवश्य होता है। यहा भी हुआ। हवन यज्ञ और प्रीतिभोज का खर्चा यजमान उठाते हैं। उपस्थिति अच्छी होती है—डेढ सौ के आस पास। दान भी खूब मिलता है। १३ जुलाई को लैस्टर मे उनका कार्यक्रम था। वे दो दिन वहा रहे और सत्सग आदि आयोजित करते रहे। २० जुलाई को उनका प्रवचन साउथम्पटन मे था। सभा स्थल था वैदिक सोसायटी मंदिर। २७ जुलाई को उनका प्रवचन वेल्स मे था। तीन अगस्त को उन्होने ११ ग्राफटन टैरिस हिन्दू सेंटर मे धर्म प्रचार किया। वहा उनके प्रवचन के समय मौरिशस के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री डा० शिवसागर रामगुलाम की पुत्री भी उपस्थित थी।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त उन्होने अपने भारतीय मित्रो के परिवारो मे भी कार्यक्रम आयोजित किये।

१० अगस्त को वे अमरीका की यात्रा के लिए रवाना हो गये।

ग्राम बोरोल मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

बोरोल (उदगीर)। सार्वदेशिक आर्य वीर दल महाराष्ट्र के तत्त्वावधान मे आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री गरुड जी के नेतृत्व मे ग्राम बोरोल, तहसील उदगीर (महाराष्ट्र) मे आर्य वीर दल चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर पहली सितम्बर से १५ सितम्बर तक सानन्द सम्पन्न हुआ। इसकी समस्त व्यवस्था एव आर्थिक उत्तरदायित्व श्री गरुड जी ने सभाला था। इस शिविर मे ४० युवको ने भाग लिया। व्यायाम प्रशिक्षण का कार्य श्री रामचन्द्र राव व बूराव नेत्रते (शिक्षक आर्य वीर दल) ने किया। बौद्धिक अनेक विद्वानो द्वारा हुआ।

वेदगोष्ठी का एक दृश्य। बाईं ओर से प० युधिष्ठिर मीमासक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (माइक पर), डा० प्रज्ञादेवी, डा० कृष्णलाल और डा० वेदव्रत।

वेद के सभी शब्द यौगिक है

डा० प्रज्ञादेवी का निबन्ध : वेदगोष्ठी मे विचार

दिल्ली, ५ सितम्बर। वेद रामगोपाल जी शास्त्री स्मारक समिति द्वारा यहा इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय मे पन्द्रहवी वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया। वाराणसी के पाणिनि कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डा० प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्य ने प्रतिपादित किया कि 'वेद के सभी शब्द यौगिक हैं'—यहा तक कि उनमें ऋषियो व देवताओ के नाम भी रूढ नही हैं। यौगिक प्रक्रिया मे निरुक्तकार यास्क के निर्वचन सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य से वास्तविक दिग्दर्शन उपलब्ध होता है। इसी की सहायता से वेद के व्यापक सूक्ष्म और विविध (आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक) अर्थों का ज्ञान सभव है। आलकारिक वर्णनो का स्पष्टीकरण, अतीन्द्रिय व परोक्ष अर्थों का उद्घाटन, साथ साथ प्रयुक्त पर्यायवाची शब्दो की सार्थकता, ऐतिहासिक प्रतीत होने वाले आख्यानो व सवादो की सही सगति तथा निन्दनीय अशुद्ध अर्थों से बचकर श्रद्धायोग्य विश्वसनीय भावो की अनुभूति का माध्यम यौगिक प्रक्रिया ही है। वेदो के मूल रहस्य तक पहुचने का यही एकमात्र मार्ग है।

इस गोष्ठी की एक उल्लेखनीय उपलब्धि यह भी रही कि दिल्ली विश्वविद्यालय से सस्कृत एम० ए० मे विशेष पत्र के रूप मे वेद पढने वाले चार छात्रो के लिए एक वर्ष तक १००) मासिक की छात्र वृत्ति देने का उत्तरदायित्व चार दानी श्रोताओं ने सभाला।

दूसरे दिन ६ सितम्बर, शनिवार को आर्यसमाज करौलबाग में इसी विषय पर आर्य विद्वानो का शका-समाधान आयोजित किया गया। सर्वप्रथम आचार्य युधिष्ठिर जी ने पूछा कि 'क्या चारो वेदो मे कहीं भी वेद शब्द का प्रयोग केवल चार वेदो के रूढ अर्थ मे हुआ है। इस आधार पर वेद' का अर्थ 'साक्षात्कृत ज्ञान ही स्वीकरणीय है।'

डा० कृष्णलाल का मत था कि "तुलनात्मक भाषा विज्ञान के आधार पर शब्दार्थ खोजने वाले आधुनिक विद्वानो को भी निर्वचन पद्धति अपनानी पड़ती है।" उन्होंने जिज्ञासा की कि' महर्षि यास्क ने वेदों मे इतिहास का स्पष्ट निषेध न करके कौत्स आदि का भिन्न मत उद्धृत भर कर दिया है। ऐसे मे वे वेदो मे इतिहास का अस्तित्व मानते हैं या नही ?

प० युधिष्ठिर मीमासक का सुझाव था—"भारतीय प्राचीन इतिहास की जो झलक ब्राह्मण ग्रन्थो, उपनिषदो, पुराणो आदि मे मिलती है उसका समग्र तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है। उसे तैयार करने के बाद यदि वेदो का तथाकथित इतिहास भी वैसा ही सिद्ध हो तो आर्यसमाज भी उसे स्वीकार कर ले।

श्री वीरेन्द्र सिंह पवार की जिज्ञासा थी—' वेद के प्रत्येक मन्त्र मे किसी एक ही अर्थ या रहस्य का उद्घाटन होना चाहिए। साथ ही किसी सूक्त मे पुन-पुन प्रयुक्त शब्द को भी किसी एक ही अर्थ मे लेना चाहिए। महर्षि दयानन्द इस एकरूपता का पालन क्यो नही करते ? प० युधिष्ठिर मीमासक जी का समाधान था—"मन्त्र का अर्थ तो एक ही होना चाहिए किन्तु वही शब्द अनेक अर्थों मे प्रयुक्त हो तो आपत्ति नहीं की जा सकती। ऋषियों-मुनियो के वचनो को हमे विवेकपूर्वक प्रमाण मानना चाहिए, आप्तों की तरह नहीं।"

रामलीला की शोभा यात्रा के मार्ग में परिवर्तन : सरकार ने मांग मानी

दिल्ली ४ अक्टूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिल्ली प्रशासन द्वारा रामलीला की शोभा यात्रा के मार्ग को बदलने के प्रस्ताव की निन्दा करते हुए इसे दुर्भाग्य पूर्ण बताया है।

स्वामी जी ने बताया कि राजधानी दिल्ली मे रामलीला का जुलूस सैकड़ों वर्षो से जिस परम्परागत मार्ग से निकाला जाता है उसमे किसी प्रकार का परिवर्तन करना करोड़ो देशवासियो की धार्मिक भावनाओं को आहत करना है।

उन्होंने सरकार से माग की है कि जिस मार्ग से रामलीला निकाली जाती रही है उसी रास्ते से निकलने दे। सरकार को चाहिए कि कड़े सुरक्षा प्रबन्ध करके जनता का विश्वास प्राप्त करे।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दू समाज के धार्मिक अधिकारों की अवहेलना करके सरकार देश भर के बहुमत की नाराजगी मोल ले रही है। उन्होंने प्रधान मन्त्री से इस मामले मे हस्तक्षेप करने की अपील की है।

बाद का समाचार है कि सरकार ने पुराने रास्ते से ही जलूस ले जाने की माग मान ली है।

आर्य स्त्री समाज हनुमान् रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। आर्य स्त्री समाज हनुमान रोड का ६४वा वार्षिकोत्सव २६ सितम्बर को सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे यज्ञ, कविता, भजन, गीत बच्चो के शिक्षाप्रद कार्यक्रम वेदोपदेश आदि हुए और आधुनिक युग मे नारी के कर्तव्य पर चिन्तन किया गया।

श्रीमती आशा बहन के सरक्षण मे यज्ञ किया गया और श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा ने ओ३म की व्याख्या की। रघुमल आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओ ने नैतिक शिक्षा पर अत्यन्त मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिससे प्रभावित होकर बहनो ने बच्चो को भरपूर धनराशि भेंट की। डा० चन्द्रप्रभा, सरला पाल कृष्णा चड्ढा विद्यावती मरवाह आशा वर्मा और कृष्णा रसवन्त की भजन मण्डली ने मधुर भजनो द्वारा समा बाध दिया।

महिला सम्मेलन में प्रभावोत्पादक रूप में आधुनिक युग में नारी के कर्तव्यों की चर्चा की गई जिसमे सरला मेहता, सुशीला आनन्द डा० शशि प्रभा और उषा शास्त्री के विचार प्रभावशाली रहे। सब का मत था कि "हमे अपने अतीत के गौरव को समझकर तत्कालीन परिस्थितियों का सामना नई दिशाओ द्वारा करना होगा। तभी हम वर्तमान से सुन्दर भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नारी निर्मात्री है, उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्माण करना होगा।' पुष्पा जी मोहिनी ने वैदिक साहित्य द्वारा सभी अतिथियो का सम्मान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह के लिए १६ अक्तूबर की शाम तक लखनऊ पहुंचिये।

रजि० नं० डो० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक १२-१०-८६
R N: 626/57 Licensed to post without prepayment Lic

बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६६
O. on 9-10-86

देश की वर्तमान दुरवस्था ......

(पृष्ठ २ का शेष)

जासूसी उपन्यासों द्वारा जहां सैक्सुअल वृत्ति बढ़ती है, वहीं जासूसी उपन्यासो द्वारा भी अपराधी वृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। आज स्थान-स्थान पर हमें अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यासो के ढेर के ढेर दिखाई पड़ते हैं। कई बार सरकार को इस सम्बन्ध में कई सांसदो और राजनेताओ ने लिखा भी है और आये दिन समाचारपत्रों में इसके विरुद्ध छपता है किन्तु सरकार के कानो पर जूं तक नहीं रेंगती। जितना भी अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यास हैं, उन्हें हमारा युवावर्ग ही अधिक पढ़ता है, जिसके कारण उनके चरित्र का पतन हो रहा है और सरकार का ध्यान आकृष्ट करने पर वही कहावत चरितार्थ होती है 'पंचों की बात सिर माथे पर परनाला वहीं रहेगा।' इसलिये देश में अश्लील साहित्य और अपराधी वृत्ति को बढ़ावा देने वाले जासूसी उपन्यासों के प्रकाशन और बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिये। जो साहित्य प्रकाशित हो चुका है, उसे सरकार जब्त कर उसमें आग लगा दे।

समाचारपत्रों की भूमिका

हमारे देश मे अनेक समाचारपत्र अश्लीलता से परिपूर्ण होते हैं। उन पर प्रतिबन्ध लगना चाहिये। सभी समाचारपत्रों को अपने लेखों व समाचारों के प्रकाशन पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, जिससे देश के चरित्र का पतन न हो—अपराधी वृत्ति को बढ़ावा न मिले। सरकार को चाहिये कि समाचार-पत्रों तथा अन्य सभी प्रकार माध्यमो को स्वतन्त्र रूप से अपना पक्ष प्रस्तुत करने दे ताकि जनता और सरकार के सामने देश का सही चित्र प्रस्तुत हो सके। किन्तु क्योंकि सरकार स्वय इस मामले में ईमानदार नहीं है, इस कारण ऐसा नहीं हो पा रहा।

हमारे देश की सरकार की कथनी और करनी मे पृथ्वी और आकाश का अन्तर है। वह कहती कुछ है और करती कुछ है। राजनेता बड़े-बड़े भाषण देकर देश की एकता की बात करते हैं किन्तु उनकी करनी देश की एकता को तोड़ने की है। अंग्रेजो ने तो हमे केवल दो वर्गों (हिन्दू और मुसलमान) मे ही बांटा था किन्तु अपनो ने तो हिन्दू को हिन्दू से, मुसलमान को मुसलमान से, ईसाई को ईसाई से और हिन्दुओं ... जनजाति आदि सभी को कुछ न कुछ अलग सुविधायें देकर हिन्दुओं ... र उन्हें अल्प मत में बदलने का एक घिनौना षड्यन्त्र चला रखा है।

मैं अन्त में अपने देश की युवाशक्ति का आह्वान करता हूं कि अभी भी समय है, जब हमारा युवा वर्ग इस देश की अखण्डता, एकता और शान्ति को बनाये रखने के लिये कुछकर सकता है। हमें यह आजादी ऐसे ही नही मिली। हमारी इस आजादी के पीछे हमारे देश के शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, ऊधमसिंह, अशफाकुल्ला जैसे अनेकों नवयुवको के बलिदान की कहानी है, जिसमें हजारों के नाम तो आज हम जानते भी नहीं। युवा अब सभी बातों को छोड़ कर अपने शहीदों की भान्ति इस देश के लिए बलिदान देने और देश मे एक नई क्रान्ति लाने के लिये आगे आयें, ताकि देश की एकता, अखण्डता, हमारी प्राचीन संस्कृति, मानबिन्दु आदि सभी की रक्षा हो सके और देश अपने गौरवशाली भविष्य की ओर अग्रसर हो सके।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता मानो।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सारे संसार को आर्य बनाओ।

सत्य का विजय

सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ निश्चय के आलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थप्रकाश करने से नहीं हटते।

— महर्षि दयानन्द सरस्वती

(सत्यार्थप्रकाश पृ० ५)

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१

वर्ष -१ अङ्क ४५] कार्तिक कृ० ९ स० २०४३ रविवार २६ अक्तूबर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

हिन्दू भीतरी और बाहरी खतरों से सावधान रहें

सिख पाकिस्तानी अहमदियों की दुर्दशा से शिक्षा लें

बम्बई के संवाददाता सम्मेलन में स्वामी आनन्दबोध की सामयिक चेतावनी

बम्बई, १५ अक्तूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज यहां संवाददाताओं को सम्बोधित करते हुए देश में बढ़ रहे आतंकवाद की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि इसके पीछे राष्ट्रविरोधी शक्तियों का हाथ है।

पंजाब की बरनाला सरकार की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्ष देशमें पंथिक सरकार का गठन हमारे संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन है। बरनाला देशद्रोहियो और उग्रवादियों के साथ सदा नरम रहे हैं। जिन लोगों ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या को और पंजाब में बेगुनाह हिन्दुओं के कत्ल किये और कराये, ऐसे देशद्रोहियों की मौत को उन्होंने शहादत की उपाधि दी। भारत सरकार द्वारा सीमा सुरक्षा पट्टी के निर्माण पर जब गुजरात, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर सरकारों ने सहमति व्यक्त कर दी तो पंजाब की बरनाला सरकार ने इसका विरोध किया। इसका सीधा मतलब यही हुआ कि पाकिस्तान से प्रशिक्षण प्राप्त आतंकवादियों के प्रवेश के लिए बरनाला की पंथिक सरकार सीमा को सील नहीं होने देना चाहती। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह खालिस्तान समर्थकों का रास्ता ही साफ नहीं कर रही अपितु उन्हें सहायता भी पहुंचा रही है।

पिछले दिनों जनरल वैद्य की हत्या और प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी व पंजाब के पुलिस कमिश्नर श्री रिबैरो की हत्या के प्रयत्न

शेष पृष्ठ २ पर)

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह

लखनऊ। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह यहा प्रकाशवीर शास्त्री नगर मे उत्साहपूर्ण वातावरण मे प्रारम्भ हुआ।

१७ अक्तूबर को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह मे बायें से दायें बैठे हुए इन्दिरा कांग्रेस के उपाध्यक्ष श्री अर्जुन सिंह, श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री स्वामीजी के पीछे) और उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुरसिंह।

समारोह के अध्यक्ष और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती १७ अक्तूबर को दिल्ली से सदलबल यहा पहुंचे। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सप्ताह भर पहले ही यहा आ गये थे।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्यसमाज सदैव हिन्दुओ की रक्षा, राष्ट्रीय एकता और देश की अखण्डता के लिए बड़े से बडा बलिदान करने को तैयार है। उन्होने हिन्दू समाज को देश के विरुद्ध आन्तरिक और बाह्य षड्यन्त्रो से सावधान रहने का आह्वान किया।

स्वामी जी ने जोर देकर कहा कि आर्य समाज हिन्दू-सिख भाईचारे को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए कृतसंकल्प है, लेकिन हम देश की सुरक्षा और अखण्डता की कीमत पर किसी से समझौता नही कर सकते।

समारोह के अवसर पर एक भव्य प्रदर्शनी भी लगाई गई है।

(समारोह के विस्तृत विवरण के लिए अगले अंक की प्रतीक्षा करें।)

सम्पादक — सच्चिदानन्द शास्त्री

हिन्दू सावधान रहें

(पृष्ठ १ का शेष)

से यह सिद्ध होता है कि देश में अराजकता, आतंकवाद और अस्थिरता पैदा करने के षड्यन्त्र में विदेशी शक्तियां लिप्त हैं।

स्वामी जी ने पंजाब में अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को बरनाला सरकार का अक्षम्य अपराध बताते हुए मांग की कि भारत सरकार तुरन्त पंजाब की पंथिक सरकार को भंग करके वहां राष्ट्रपति शासन लागू करे और राष्ट्रहित में सीमा सुरक्षा पट्टी के निर्माण के लिए अध्यादेश जारी करे।

राष्ट्रविरोधी शक्तियों से सरकार को सावधान करते हुए श्री स्वामी जी ने कहा कि जहां देश में राजनैतिक षड्यन्त्र चल रहे हैं, वहीं सेवा-सहायता के नाम पर विदेशों से आ रहे डालरों और पैट्रोडालरों से भारत के आदिवासियों, वनजातियों और हरिजनों के धर्मान्तिरण की योजनाएं पिछले कई दशकों से चल रही हैं। उत्तर-पूर्वी भारत ईसाइयों के जाल में फंस चुका है। उड़ीसा, बिहार, राजस्थान, छोटा नागपुर, महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश में ईसाई मिशनरी बराबर धर्मान्तिरण के कार्य में लगे हुए हैं। उधर अरब राष्ट्रों के पैट्रोडालरों से भारत के हरिजनों और अनुसूचित जन-जातियों का इस्लामीकरण किया जा रहा है।

स्वामी जी ने महाराष्ट्र और अन्य राज्य सरकारों से भी मांग की कि जिन हिन्दुओं ने अपना धर्मान्तिरण कर लिया है, उन्हें धर्मान्तरण के पश्चात् अनुसूचित व जनजातियों के नाम पर मिलने वाली सुविधायें तुरन्त बन्द कर दी जायें। धर्मान्तिरण के बाद वे इस सुविधा के अधिकारी नहीं रहते।

स्वामी जी ने घोषणा की कि आर्यसमाज हिन्दू जाति की रक्षा, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान करने के लिए सदैव तैयार रहेगा। उन्होंने हिन्दू समाज को देश के भीतरी और बाहरी षड्यन्त्रों से सावधान रहने का आह्वान किया।

इस्लामी बम

पाकिस्तान के इस्लामी बम की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि पाकिस्तान के परमाणु बम बनाने में अरब राष्ट्र और मुस्लिम देश आर्थिक सहायता कर रहे हैं। पाकिस्तान का इस्लामी बम केवल भारत और इस्राईल के विरुद्ध तैयार हो रहा है, जिससे इस देश में भय और आतंक का वातावरण बनना स्वाभाविक है। इन विषम परिस्थितियों में भारत सरकार से बम बनाने की जोरदार मांग करते हुए उन्होंने बताया कि इस्राईल के पास भी इस समय लगभग १०० परमाणु बम हैं। स्वामी जी ने यह भी सुझाव दिया कि भारत सरकार को इस्राईल के साथ मित्रता करनी चाहिए।

अहमदी मुसलमानों पर अत्याचार

पाकिस्तान में अहमदी जमात के मुसलमानों पर पाक सरकार के अत्याचारों की भर्त्सना करते हुए स्वामीजी ने कहा कि पाक में अहमदी जमात के ४१ लाख मुसलमानों को उनके संवैधानिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया है। पाक सरकार ने कुरान पाक का कलमा पढ़ने के अपराध में दो अहमदी मिर्जाई मुसलमानों को फांसी पर लटका दिया है।

स्वामी जी ने खालिस्तान समर्थक उग्रवादी सिक्खों से कहा कि वे अहमदी मुसलमानों पर किये जा रहे अत्याचारों से सबक लेकर पाकिस्तान की चालों से सावधान रहें।

अन्त में स्वामी जी ने दृढ़ता से कहा कि आर्यसमाज सिख-हिन्दू भाईचारे के पुराने सम्बन्धों को बनाये रखने के लिए कृत-संकल्प है किन्तु देश की सुरक्षा और अखण्डता को बाधा पहुंचाने वाले किसी भी प्रमाद को सहन नहीं किया जायेगा।

अगला अंक

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर अगला अंक ऋषि अंक होगा। १६ पृष्ठों के इस अंक में स्वामीजी के जीवन और कार्यों पर पठनीय और मननीय लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं।

इस अंक में पढ़िये

वेद संस्थान में महर्षि दयानन्द जन्मदिवस समारोह

स्वामी आनन्दबोध का उद्बोधन

नई दिल्ली। १२ सितम्बर को वेद संस्थान में महर्षि दयानन्द का जन्म-दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह के अध्यक्ष थे आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार। मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती थे। मुख्य वक्ता थे विश्व प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा० फतहसिंह। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वेद संस्थान के अध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा ने संस्थान का परिचय दिया।

डा० अभयदेव के वक्तव्य के पश्चात् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' कृत एक लघु पुस्तिका 'कल्पपुरुष दयानन्द' का विमोचन किया। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपने वक्तव्य में कहा कि दयानन्द और वेद पर्यायवाची हैं। दयानन्द—वेद=०। उन्होंने कहा कि दयानन्द के प्रति श्रद्धा रखते हैं तो अपने घरों में कम से कम एक वेद तो भाष्य सहित रखें ही।

इनके पश्चात् स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि 'आज पहली बार मुझे ऐसी सभा में सम्मिलित होने का अवसर मिला, जहां महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस मनाया जा रहा हो। उन्होंने डा० फतहसिंह जी को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द का जन्मदिवस के निश्चित करने में जो भी अनुसंधान किया गया है, उसको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजें, जिससे हम धर्मार्थ सभा को देकर समूचे आर्यजगत् में देश और विदेश में आज के दिन महर्षि का जन्मदिवस मना सकें। उन्होंने वेदसंस्थान के अधिकारियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि महर्षि के जन्मदिवस को मनाकर आप लोगों ने आर्यजगत् के एक अभाव को पूरा किया है। स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' कृत 'कल्पपुरुष दयानन्द' नामक लघु पुस्तिका को प्रकाशित करके वेदसंस्थान ने आर्यजगत् को एक सच्चा उपहार और प्रसाद दिया है।

आर्यसमाज बीकानेर में वेद प्रचार सप्ताह

बीकानेर। आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग का वेद प्रचार सप्ताह २८ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक स्वर्णकार पंचायत भवन में सम्पन्न हुआ। दिल्ली से स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती और जयपुर से आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी सरल पधारे।

आर्यसमाज राणा प्रताप बाग का रजत जयन्ती महोत्सव

दिल्ली। आर्यसमाज राणाप्रताप बाग का रजत जयन्ती महोत्सव २० से २६ अक्तूबर तक मनाया जा रहा है। २५ अक्तूबर को आर्य महिला सम्मेलन व २६ अक्तूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद आर्य युवक सम्मेलन होगा।

सम्पादकीय

रजनीश--यह कैसा भगवान् ?

लगभग पांच महीने हुए, इलाहाबाद की एक अंग्रेजी मासिक पत्रिका और एक हिन्दी पाक्षिक पत्रिका ने स्वयम्भू भगवान् और तथाकथित आचार्य रजनीश के भूतपूर्व अंगरक्षक डाक्टर ह्यू मिल्ने की पुस्तक 'दी गाड दैट फेल्ड' (भगवान्, जो असफल रहा) के कुछ अंश प्रकाशित किये थे। अब राजधानी के एक राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक में यह पुस्तक प्रति रविवार क्रमशः धारावाहिक रूप में प्रकाशित हो रही है।

इस पुस्तक को पढ़कर हमारे मन-मस्तिष्क में यह विचार आया कि वेद ठीक कहता है कि

> अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
> ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायांरताः॥

अर्थात् जो अविद्या की उपासना करते हैं, वे अन्धकारमय लोकों में जाते हैं और जो केवल विद्या की उपासना करते हैं, वे उससे भी अधिक अन्धकारमय लोकों मे गिरते हैं।

हमारे एक आर्यसमाजी विद्वान् मित्र ने इस मन्त्र का भावार्थ यह बताया कि जो अत्यधिक पढ़ा-लिखा हो, यदि वह कुमार्ग पर चलने लगे तो उसका पतन अधिक गहरा होता है, क्योंकि वह किताबें पढ़कर अति चतुर बन चुका होता है।

यह बात रजनीश पर अक्षरशः लागू होती है। निस्सन्देह रजनीश पढ़ाकू हैं—किताबी कीड़ा हैं। रजनीश ने हजारों किताबें पढ़ी हैं। उनके प्रवचनों की चार सौ पुस्तकें अठारह भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। अपने प्रवचनों के रूप में वे दस करोड़ से अधिक शब्द बोल चुके हैं। बातें तो उनकी उच्च धरातल की हैं,लेकिन जिन मान्यताओं पर वे जनता को पहुंचाना चाहते हैं, वे निकृष्टतम हैं। साहित्य अकादमी के भूतपूर्व सचिव डाक्टर प्रभाकर माचवे के शब्दों में वे कामाध्यात्म के उपासक हैं। वे प्राचीन शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिकता में सैक्स उंडेलकर लोकप्रिय घोल तैयार करते हैं, जिसे भारतीय तो अधिक पसन्द नहीं करते, लेकिन विदेशी अवश्य जिस पर लट्टू हैं।

ऊपर हमने जिस पुस्तक की चर्चा की है, उसमें स्थान-स्थान पर इस बात की चर्चा है कि किस प्रकार रजनीश ने अपने आश्रम (जिसे चकला कहना ठीक होगा) में रहने वाले युवक-युवतियों के प्रेम प्रसंगों में गहरी रुचि ली—इस दिशा मे उनका मार्गदर्शन किया। (कहना चाहिए कि उन्हें पथभ्रष्ट किया) वे व्यभिचार को खुला प्रोत्साहन देते रहे। किसी न किसी बहाने युवतियों को लगातार अपने चरणों में बैठने को कहते रहे।

रजनीश चाहते तो वे देशवासियों का सही मार्गदर्शन कर सकते थे, लेकिन वे तो अर्थ, काम और मान के पीछे दीवाने हैं।

रजनीश के प्रवचनों में परस्पर विरोध की कोई सीमा नहीं। आज कुछ कह रहे हैं, कल उसके विपरीत कह रहे हैं और अगले दिन दोनों परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं।

पुरानी बातों को छोड़िये। पिछले दिनों ही उन्होंने जो मोती बिखेरे हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि वे चौंकाने वाली बातें कहकर दुनिया वालों का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहते हैं।

संसार-भर से तिरस्कृत होकर बम्बई लौटने के दो-तीन बाद ही उन्होंने कहा कि "हमारी संसद् के सदस्यों की औसत बौद्धिक उम्र चौदह वर्ष से अधिक नहीं।" हमारे देश का कदाचित् ही कोई महापुरुष होगा, जिस पर रजनीश ने अपने प्रवचनों में कीचड़ न उछाला हो—स्वामी दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, शहीद भगतसिंह, आचार्य विनोबा भावे, महर्षि अरविन्द, डाक्टर राधाकृष्णन्, किस-किसका नाम लिया जाये। स्वयं को छोड़कर कदाचित् ही कोई व्यक्ति होगा, जिसे रजनीश बुद्ध पुरुष मानते हों। भारत की भोली-भाली जनता को रजनीश ने खूब ठगा है। अपने ताजा फरमान में रजनीश ने तीन बातें कहीं हैं—सिखों को पृथक् सिख राज्य मिलना चाहिए, पार्वती के पति शिव शराबी थे और सब धर्मग्रन्थों ने जनता को धोखा दिया है। पाठक इन तीन बातों से ही समझ लें कि रजनीश कैसी-कैसी वाहियात बातें करते हैं।

रजनीश ज्ञानी नहीं, मिथ्याज्ञानी हैं। उनके प्रवचनों में जो अच्छी बातें होती हैं, वे प्राचीन ऋषि-मुनियों और सन्तों-महात्माओं से ली गई होती हैं और उनमें वे अपनी ओर से जो मिलावट करते हैं, वह कूड़ा-कचरा होता है।

रजनीश कहते हैं कि सब संस्कार जंजीरें हैं। असल में रजनीश अत्यन्त धूर्ततापूर्ण हथकण्डे अपनाकर जनता को अपने जाल में फंसा रहे हैं। उनके विचारों को अपनाना सर्वनाश को निमन्त्रण देना है। झूठ, मक्कारी और जालसाजी में रजनीश परमप्रवीण हैं। रजनीश के विचारों का खोखलापन दिखाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने "रजनीश बनाम धर्म और योग" शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की थी—लेखक थे स्वर्गीय श्री देवप्रकाश। रजनीश की भोगलीला के सम्बन्ध में इसी प्रकार की एक पुस्तक ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने लिखी है। शीर्षक है "वाममार्ग या कामयोग"। दोनों पुस्तकें पढ़ने से पता चलता है कि रजनीश तन्त्रविद्या के उपासक हैं। उनके विचारों के अनुसार बुरा कुछ भी नहीं। पश्चिम के भोगविलास प्रिय लोगों को तो ऐसा ही गुरु चाहिए, जो उन्हें सब प्रकार के कुकर्म करने की छूट दे।

रजनीश का निजी जीवन कितना भ्रष्ट और पतित है, इसका विस्तृत चित्रण रजनीश के बचपन के साथी श्री गोविन्दसिंह ने अपनी पुस्तक "भगवान् रजनीश बेनकाब" मे किया है।

रजनीश वक्तृत्वकला में निपुण हैं। उनकी शैली चित्ताकर्षक है। अपनी इस कला का वे अधिकतम अनुचित लाभ उठा रहे हैं। रजनीश अपना धन्धा चलाने के लिए हिप्नाटिज्म (सम्मोहन विद्या) का भी सहारा लेते हैं। उनका आचरण उनके अपने ही उपदेशों के सर्वथा विपरीत है। ठगी मे उनके मुकाबले में कोई नहीं ठहर सकता। मानव मन में सोई पड़ी पशुता को उभारने में रजनीश का कोई सानी नहीं।

संसार का कोई भी देश उन्हें अपने यहां ठहराने को तैयार नहीं। हमारी बात रजनीश तक पहुंचे तो हम उनसे कहना चाहेंगे कि आप एक बार भारत की जनता को मूर्ख बना चुके हैं। अब भारत की जनता आपका असली चेहरा पहचान चुकी है। आप इन्सान बनकर रहें, नहीं तो भारत सरकार को एक बार फिर आपको भारत से निष्कासित करने पर विवश होना पड़ेगा। —सत्यपाल शास्त्री

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष : दान की अपील

पंजाब की आर्य-हिन्दू जनता अभी भी संकट मे है। आतंकवादी हत्यारों के भय से अभी भी लोग पंजाब छोड़कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र जा रहे हैं। ये लोग आर्यसमाज मन्दिरों और सनातन धर्म मन्दिरों में डेरा डाले पड़े हैं। आपसे अपील है कि संकट के इस समय में इन लोगों की तन-मन-धन से सहायता करें।

धन और सामान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

एक रोचक प्रसंग

स्वामी दयानन्द भी तो हमारे ही थे : पंडित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने कहा

—स्वामी आनन्दबोध जी की लेखनी से—

प्रस्तुत प्रसंग सन् १९३२ का है। दिल्ली के प्रसिद्ध ईसाई पादरी अहमद मसीह ने सनातन धर्म सभा को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। सनातन धर्म सभा के तत्कालीन प्रधान स्वर्गीय लाला रामप्रसाद सराफ ने इस चुनौती को स्वीकृत कर लिया। उन्होंने स्वर्गीय महामहोपाध्याय पंडित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी को जयपुर से दिल्ली पधारने का निमन्त्रण दिया। चतुर्वेदी जी दिल्ली पहुँच गये। शास्त्रार्थ का विषय तय हुआ— वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ बनारसी कृष्ण थियेटर (जो आजकल मोती सिनेमा है) मे हुआ। ईसाइयों की ओर से पादरी अहमद मसीह और सनातन धर्म सभा की ओर से पं० गिरिधर शर्मा आमने-सामने खड़े किये गये। पादरी साहब ने वेदों पर अनेक आक्षेप किये, जिनका उत्तर पं० गिरिधर शर्मा ने दिया। पादरी साहब ने गणानां त्वा गणपतिं हवामहे मन्त्र पर आचार्य महीधर का भाष्य पढ़ कर उस पर आक्षेप किये, उन्होंने महीधर भाष्य पर अश्लीलता का आरोप लगाया। प० गिरिधर शर्मा घबरा गये और उन्होंने लाला रामप्रसाद सराफ को बुलाकर पूछा कि "क्या कोई आर्यसमाजी विद्वान् भी इस शास्त्रार्थ में आया है। लाला रामप्रसाद ने आर्यसमाज चावड़ी बाजार के पुरोहित पंडित रामचन्द्र जिज्ञासु को बुलाया और चतुर्वेदी जी को बताया कि "आप आर्यसमाज के पुरोहित हैं।" (तब तक आर्यसमाज दीवानहाल की स्थापना न हुई थी।)

पं० गिरिधर शर्मा ने पं० रामचन्द्र को कहा कि "शीघ्र ही स्वामी दयानन्दकृत वेदभाष्य ले आइये। पं० रामचन्द्र तत्काल ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ले आये। पादरी साहब बार-बार महीधर भाष्य प्रस्तुत करके उस पर आक्षेप किये जा रहे थे। उनका कहना था कि मन्त्र का वास्तविक अर्थ यही है।

इस पर गिरिधर शर्मा ने स्वामी दयानन्द का मन्त्रार्थ पढ़कर सुनाया। इस पर पादरी साहब बहुत जोर से हसे और कहने लगे कि "अरे, सनातनधर्मी पंडित जी, यह तो स्वामी दयानन्द का भाष्य है। मैं तो सनातनधर्मियों द्वारा मान्यता प्रदत्त वेदभाष्य पर प्रश्न कर रहा हूं।"

इस पर प० गिरिधर शर्मा ने जोर देकर और आवेश के साथ कहा कि "मैं भी प्रमाणस्वरूप स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य प्रस्तुत कर सकता हूं। वे भी तो हमारे ही थे।"

जवाब में पादरी साहब ने कहा कि "कल तक तो आप स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को गालिया दे रहे थे। आज मुसीबत पड़ने पर स्वामी दयानन्द भी आपके हो गये। यदि पंडित गिरिधर शर्मा भरी सभा में स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य को अपना मानते हैं, तो मुझे कुछ नहीं कहना।"

अध्यात्म चर्चा

सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण

—स्वामी आनन्दबोध जी की लेखनी से—

बुद्धितत्व का उपादान त्रिगुणात्मक होता है—सात्त्विक, राजसिक और तामसिक। तीनों गुणों का प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है, इसलिए कर्मों में विभिन्नता होना स्वाभाविक है।

नीचे तीनों प्रकार की बुद्धि पर प्रकाश डाला जा रहा है—

(१) सात्त्विकी बुद्धि—जो बुद्धि प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग को भली प्रकार जानती है और जिसमें कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक है, जिसमें भय और अभय पद का ज्ञान है और जो बन्ध और मोक्ष के सभी कारणो को समझती है, वह सात्त्विकी बुद्धि है।

(२) राजसी बुद्धि—जो बुद्धि धर्म और अधर्म-कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का निर्णय न कर सके, यह करू तो क्या होगा, वह करू तो क्या होगा—ऐसी निजी स्वार्थ के कारण निर्णय करने मे असमर्थ बुद्धि राजसी बुद्धि है।

(३) तामसी बुद्धि—जो बुद्धि अज्ञानरूपी अन्धकार से ढकी हो, अधर्म को धर्म मानकर व्यवहार मे प्रवृत्त होती हो और सभी पदार्थों को विपरीत दशा में ही देखती हो, जो हिंसा, असत्य और अन्याय को ही कर्त्तव्य बुद्धि से स्वीकार करती हो, वह तामसी बुद्धि है। ऐसे तामसी लोग ही अज्ञानान्धकार के गहरे कूप में गिरकर जन्मजन्मान्तरो तक मनुष्य योनि मे अनेक प्रकार के दुःख भोगते हैं।

अज्ञान, अन्याय और अभाव दूर करो : सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली, २ अक्टूबर। अखिल भारतीय समाजोत्थान समिति द्वारा गांधी जयन्ती पर आयोजित राष्ट्रीय एकता समारोह में मुख्य अतिथि श्री कालीचरण (अतिरिक्त शिक्षा निदेशक दिल्ली प्रशासन) ने कहा कि हमें देश में फैली हुई सामाजिक बुराइयों को जड़-मूल से समाप्त करना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि जब तक देश में अज्ञान, अन्याय और अभाव समूल नष्ट नहीं होंगे, तब तक राष्ट्र की एकता सुदृढ़ नहीं हो सकेगी। आर्य नेता चिन्तामणि ने कहा कि देश में नैतिक मूल्यों की स्थापना करनी होगी। कुछ पथभ्रष्ट लोग राष्ट्र की एकता को खंडित करना चाहते हैं। हमें ऐसे तत्त्वों के साथ निरन्तर सघर्ष करना होगा। तभी हम राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकते हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री आर. एस. एस. सिसौदिया (उप शिक्षा निदेशक) ने अपने भाषण में कहा हमे इतिहास से शिक्षा लेनी होगी कि थोड़ी-सी भूल के कारण हमारा देश शताब्दियों तक गुलाम रहा। आज भी वही तत्त्व देश की एकता को खंडित करने में लगे हुए हैं। हमें ऐसे तत्त्वों से सावधान रहना है, जो धर्म और जाति के नाम पर समाज में घृणा फैलाते हैं और समाज के वातावरण को दूषित करते हैं। इस अवसर पर छात्राओं ने राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

समारोह के अन्त में समिति के सचिव श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने कहा कि हम देश में विघटनकारी तत्त्वों तथा पनप रही कुरीतियों के खिलाफ निरन्तर संघर्ष जारी रखेंगे।

भारत को तोड़ने वाले और जोड़ने वाले

—ब्रह्मदत्त स्नातक—

पिछले दिनों दिल्ली के टाइम्स आफ इण्डिया में मथुरा में कृष्ण जन्मस्थान पर मुस्लिम शासकों द्वारा बनाई गई ईदगाह का चित्र मुखपृष्ठ पर प्रकाशित हुआ था। संवाददाता रवि भाटिया ने ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर विस्तार से लिखा कि मुस्लिम शासकों और विदेशियों ने एकाधिक बार कृष्ण जन्मस्थान का विध्वंस किया और उन विजेताओं के चले जाने के बाद भारतवासियों विशेषतः हिन्दुओं ने उसी स्थान पर मन्दिर का पुनर्निर्माण किया। इस प्रकार भारतीय आत्मा ने भौतिक पराजय का जुआ बारम्बार गले से उतार फेंका।

मथुरा, अयोध्या, वाराणसी, सोमनाथ और अन्य अनेक स्थानों पर भारतीय आत्मा को पराजित करने के लिए सातवीं शताब्दी से प्रयत्न किये जाते रहे। भारत की जनता ने उनका प्रबल प्रतिरोध किया। यह एक तर्कसंगत बात है और इसीलिए पुनर्जागरण के साथ इन महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थानों को प्रारम्भिक स्वरूप में पुनः प्रतिष्ठापित करने के लिए आवाज उठ रही है। कृष्ण जन्मस्थान सम्बन्धी उस लेख पर अनेक व्यक्तियों ने अपने मत उक्त समाचारपत्र में भेजे और वे प्रकाशित हुए हैं। इनमें कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी हिन्दुओं ने इस प्रकार की मांग को साम्प्रदायिक विद्वेष का परिणाम बताया है। कुछेक ने इस मांग को बेहूदा तक कहा। इनमें मुसलमान और हिन्दू दोनों शामिल हैं। सागर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० कृष्णदत्त वाजपेयी और दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री एम०एम० शंखधर सदृश इतिहासवेत्ताओं ने इस मांग को प्रामाणिक और उचित बताया है। कुछ मुसलमानों ने इसे इतिहास का एक दुःखद अध्याय बताकर इस प्रश्न के उठाने को अनुचित बताया है।

हमारे एक संसद सदस्य मित्र सय्यद शहाबुद्दीन भारतीय विदेश सेवा से मुक्त होकर बचे हुए भारत में से एक और मुस्लिम भारत (पाकिस्तान के अतिरिक्त) बनाने के प्रयत्नों में लगातार लगे रहते हैं।

उन्होंने भारत में विभाजन की उत्तरदायी मुस्लिम लीग और उसके कर्णधार स्वर्गीय मुहम्मद अली जिन्ना का मिशन पकड़ा हुआ है। कहने को वे जनता पार्टी के नेता और भूतपूर्व महासचिव हैं और इस प्रकार धर्मनिरपेक्षता का दम भरते हैं, परन्तु पिछले दिनों उन्होंने भारत के विरुद्ध जिस प्रकार के द्वेषपूर्ण वक्तव्य विदेशी रेडियो और समाचारपत्रों में दिये हैं, उनसे उनका वास्तविक साम्प्रदायिक रूप प्रकट हो जाता है। वे विदेशी आर्थिक सहायता के बल पर प्रकाशित हो रहे मुस्लिम इण्डिया के प्रधान सम्पादक हैं। उस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के कुछ अंशों को पढ़कर हमें सहसा विभाजन से पूर्व की मुस्लिम लीग की उस पीरपुर कमेटी की रिपोर्ट का स्मरण हो आता है, जिसे आधार बनाकर जिन्ना ने पाकिस्तान बनाया। हाल ही में मथुरा के कृष्ण जन्मस्थान सम्बन्धी ऐतिहासिक प्रमाणों से क्षुब्ध होकर उन्होंने प्रो० शंखधर के विचारों का खण्डन इस आधार पर किया है कि यदि विजेताओं के विजयसूचक चिह्नों को भारत से मिटाया जाना है, तो सबसे पहले आर्यों और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को इस देश से हटा दिया जाना चाहिए, क्योंकि भारत में वे भी उसी प्रकार विदेशी हैं जिस प्रकार मुसलमान। इस प्रकार की शरारतपूर्ण तुलना यूरोपियन लेखकों के मन्तव्यों पर आधारित है, जब कि स्वयं मुस्लिम शासकों ने शुरू से ही इस देश को हिन्दुस्तान नाम से याद किया है। सबसे अधिक आपत्तिजनक बात यह है कि सय्यद शहाबुद्दीन आज भी अपने आपको विदेशी विजेता शासकों का वंशधर मानते हैं, जब कि इतिहास से यह प्रमाणित हो चुका है कि भारत उपमहाद्वीप में रहने वाले नब्बे प्रतिशत मुसलमान विदेश से नहीं आये, अपितु मुस्लिम शासकों द्वारा धर्मान्तरित किये गये हैं। कश्मीर के स्व० शेख अब्दुल्ला ने हाल ही में प्रकाशित अपनी आत्मकथा में बताया है कि उनकी पिछली चौथी पीढ़ी में राघोराम दत्तात्रेय कोल ने इस्लाम स्वीकार किया था। मुस्लिम शासन काल में शहाबुद्दीन सदृश मुसलमानों की इसी दूषित, विदेशी एवं विजातीय मनोवृत्ति के कारण पाकिस्तान बना और अब फिर नये सिरे से भारत के मजहबी विभाजन की तैयारी की जा रही है।

टाइम्स आफ इण्डिया के आठ अक्तूबर के अंक में मथुरा के कृष्ण जन्मस्थान के सम्बन्ध में जहां अनर्गल प्रश्न उठाये गये हैं, वहां सर्वाधिक आपत्तिजनक अंश वह है जिसमें देश की स्वाधीनता के लिए जीवन होम देने वाले बैरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर को हिन्दू साम्प्रदायिकता और बैरिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना को मुस्लिम साम्प्रदायिकता का प्रतीक लिखा गया है। सावरकर देश की अखण्डता के प्रतीक थे और जिन्ना व उनके प्रशंसक भारत का विभाजन करने वालों में अग्रणी थे और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता की पीठ में छुरा घोंपा। जिन्ना राष्ट्रसेवा के मामले में और देश की अखण्डता के प्रसंग में सावरकर के चरणों की धूल भी नहीं हैं। शहाबुद्दीन ने ऐसा लिखकर निश्चित रूप से भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का अपमान किया है। इसका तुरन्त उचित प्रतिकार राष्ट्रवादी ताकतों द्वारा किया जाना आवश्यक है।

तमिलनाडु में हिन्दी का विरोध दुर्भाग्यपूर्ण

— काशीनाथ शास्त्री —

तमिलनाडु में हिन्दी का विरोध फिर से आरम्भ हो गया है, जिसकी शुरुआत पत्र सूचना कार्यालय के उस परिपत्र से हुई है, जिसमें कर्मचारियों को सरकारी फाइलों पर हस्ताक्षर और टिप्पणी हिन्दी में लिखने की सलाह दी गई। सलाह देने पर ही तमिलनाडु के कतिपय नेताओं ने हिन्दी विरोधी भावना को यहां तक उभारा है कि अभी हाल में ही हिन्दी सप्ताह के दौरान वहां के छात्रों ने रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे इत्यादि पर हिन्दी में लिखे गये नामपट्टों को मिटाकर अपनी हिन्दी विरोधी भावना का प्रदर्शन किया। ला कालेज के छात्रों ने तो विरोध में प्रधानमन्त्री राजीव गांधी का पुतला जलाना चाहा, परन्तु पुलिस के समय पर किये गये हस्तक्षेप से वे ऐसा न कर सके।

वास्तव में असन्तुष्ट नेता, मन्त्री इत्यादि अपने वक्तव्यो और भाषणों द्वारा किसी बात के विरोध में लोगों को इस सीमा तक भड़काते हैं कि जनसाधारण और विद्यार्थी तोड़-फोड़ और हिंसात्मक आन्दोलन पर उतारू हो जाते हैं। उदाहरणार्थ पत्र सूचना कार्यालय के उक्त परिपत्र का सर्व-प्रथम विरोध तमिलनाडु के इंकाध्यक्ष एम० पालनियाडी ने किया। उन्होंने प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को एक तार भेजकर कहा है कि यह परिपत्र केन्द्र की भाषा नीति और अहिन्दी भाषी लोगों को दिये गये जवाहरलाल नेहरू के आश्वासनों के विपरीत है। इसी प्रकार भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री सी० सुब्रह्मण्यम् ने कहा है कि यदि समस्या का तत्काल समाधान न निकला गया तो देश टूट जायेगा और कठिन सघर्ष से प्राप्त आजादी की सुरक्षा मुश्किल हो जायेगी। और अब तो द्रमुक अध्यक्ष एम. करुणानिधि ने यहां तक घोषणा कर दी है कि गैर-हिन्दी राज्यों पर हिन्दी थोपी जाने के विरोध मे आगामी १७ नवम्बर को पूरे तमिलनाडु में सार्वजनिक सभाओं में भारतीय सविधान के उस अनुच्छेद की प्रतियां जलाई जायेंगी, जिसमें हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया है। इससे अधिक विरोध और क्षोभ की दुर्भाग्यपूर्ण बात और क्या हो सकती है? पता नही, हिन्दी-विरोधियो को अंग्रेजी से इतना मोह क्यों है कि वे उसे हमेशा के लिए बनाये रखना चाहते है। अंग्रेजी उनके बाप-दादाओं (पुरखो) की भाषा तो है नही कि जिसे छोड़ने मे उनकी जान पर आती है।

कहना न होगा कि तमिलनाडु के लोग भी आर्यों (हिन्दुओं) के वंशज हैं और उनका आर्य (हिन्दू) संस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। संस्कृत और हिन्दी उसी हिन्दू सस्कृति की पोषिका हैं। आज भी पूरे देश में परस्पर वार्त्तालाप और लेन-देन के लिये आम सम्पर्क की भाषा हिन्दी ही है। यदि तमिलनाडु के लोग ऐसा नहीं मानते और उन्हें हिन्दी से इतनी चिढ़ है तो उन्हें चाहिये कि हिन्दी में लिखे गये नामपट्टों को न मिटाकर सबसे पहले हिन्दू पूर्वजों पर रखे गये राममूर्ति, रामस्वामी, रामकृष्ण, कृष्णकुमार इत्यादि अपने नाम बदल डालें। दरअसल उनके पूर्वजों ने इन अलगाववादी वृत्तियों को कभी सोचा तक न था। वास्तव में ये झगड़े और पृथक्तावादी ये समस्त बातें राज-नीति से अपनी रोटियां सेंकने वाले स्वार्थी लोगों के मस्तिष्क की उपज हैं। केन्द्रीय सरकार की ढिल-मिल या अत्यधिक उदार अथवा तुष्टीकरण की नीति भी भाषाई विवाद जैसी समस्याओं को बहुत अंशो मे बढ़ावा देने वाली है। केन्द्रिय सरकार सविधान के उस अनुच्छेद को, जिसमें हिन्दी को देश की राजभाषा घोषित किया गया है, दृढ़ता से पालन करने का आदेश क्यों नही देती? इसके विपरीत हिन्दी विरोधियों को संतुष्ट करने के लिये बार-बार यही आश्वासन दिया जाता है कि हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी। किन्तु सबको सन्तुष्ट या खुश करना असम्भव है और इस प्रकार प्रजातन्त्रीय शासन कभी सफल न हो सकेगा। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री एम. जी. रामचन्द्रन् को दिया गया यह आश्वासन तो और भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण है कि गैर-हिन्दी भाषी राज्यों में अंग्रेजी तब तक जारी रहेगी, जब तक उन्हें जरूरी लगता है। इस तरह तो संविधान द्वारा प्रदत्त हिन्दी अपना राजभाषा का स्थान कभी भी न पा सकेगी, क्योंकि वे लोग तो कभी न चाहेंगे कि अंग्रेजी हटाई जाये।

अस्तु, वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस या सप्ताह मना लेने और किसी परिपत्र द्वारा हिन्दी के प्रयोग की सलाह दे देने मात्र से काम न चलेगा, जब तक कि सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग दृढ़तापूर्वक न किया-कराया जायेगा।

केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों, मन्त्रियों इत्यादि को भी चाहिये कि वे समस्त अन्तर्देशीय मामलो मे हिन्दी में काम-काज करें। देश के भीतर होने वाले कार्यक्रमों और आयोजनों मे हिन्दी में ही भाषण दें और तत्सम्बन्धी सूचनायें, निमन्त्रणपत्र इत्यादि भी हिन्दी में ही वितरित किये जायें। तभी केन्द्रीय सरकार दूसरों से भी अधिक से अधिक हिन्दी के प्रयोग की अपेक्षा रख सकती है।

एक हत्यारा सैनिक वर्दी में आता है तो दूसरा पुलिस वर्दी में : इंटेलिजेंस ब्यूरो की नींद कब टूटेगी ?

—जमनादास अख्तर—

दिल्ली में राजघाट पर प्रधानमन्त्री पर हमला हुआ और जालंधर में पुलिस महानिदेशक श्री रिबेरो को गोलियों का निशाना बनाने की कोशिश की गई। परमात्मा की कृपा से दोनों बाल-बाल बच गये परन्तु यह बात स्पष्ट हो गई कि सुरक्षा अधिकारियों ने लापरवाही से काम लिया। प्रधानमन्त्री पर हमला करने वाला कर्मजीत सिंह एक सैनिक की वर्दी में आया और जालंधर में श्री रिबेरो पर हमला करने वाले पुलिस अधिकारियों की वर्दी में पुलिस का जाली लेबल जीप पर लगाकर उसी तरह सशस्त्र पुलिस के मुख्य कार्यालय में घुसे, जिस तरह कराची में अमेरिकन विमान का अपहरण करने वाले सुरक्षा अधिकारियों के वेश में हवाई अड्डे के परिसर में सरकारी रंग वाली वैन में सवार होकर घुस गये थे। दोनों हालतों में पहरेदारों ने सलामी दी। लगता है कि जालंधर में हमला करने वालों ने कराची के नाटकीय हमले से ही प्रभावित हो कर पुलिस अधिकारियों के वेश में आकर हमला किया था।

कहना मुश्किल है कि कर्मजीत अकेला ही था या उसके साथ कोई और व्यक्ति भी था। सम्भव है कि इस हमले में किसी विदेशी ताकत का हाथ हो। कुछ भी क्यों न हो, यह बात हैरानी पैदा करने वाली है कि हमले के बाद लंदन के साउथ हाल क्षेत्र में बहुत-से लोग कह रहे थे कि हमला करने वाला हिन्दू नहीं बल्कि केश कटवाकर आया हुआ एक सिख युवक है। मैं नहीं मानता कि इन्टेलिजेंस एजेंसियों को पहले ही मालूम हो गया था कि प्रधानमन्त्री पर राजघाट पर हमला होगा। यदि किसी अधिकारी ने ऐसी कोई रिपोर्ट दी थी तो यह केवल उसका अनुमान हो सकता है। सुरक्षा अधिकारियों ने पूरी सावधानी और जिम्मेदारी से काम नहीं लिया। कई बार त्रुटियां रह ही जाती हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति कैनेडी पर तमाम सावधानियों के बावजूद हमला हो गया था। ब्रिटेन की प्रधानमन्त्री श्रीमती थैचर के निवास-स्थान वाले स्काटलैंड के एक होटल पर आतंकवादी बम फेंकने में कामयाब हो गये थे।

हालात बहुत बदल चुके हैं। आतंकवादी अब मामूली या साधारण लोग नहीं जो केवल भावुकता के आवेश में मरने-मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। उनमें अवकाश-प्राप्त सैनिक और पुलिस अधिकारी शामिल हैं। वे गोली चलाना जानते हैं और जो नहीं जानते थे, उन्होंने पाकिस्तान से प्रशिक्षण ले लिया है। उनके लिए पुलिस के वायरलैस कोड का पता लगाना असम्भव नहीं। गुरदासपुर से मिलने वाले एक समाचार के अनुसार आतंकवादी आधुनिक यन्त्रों का प्रयोग करके पुलिस की संचार व्यवस्था को जाम करने में कामयाब रहे। उनके लिए यह मालूम करना मुश्किल नहीं रहा कि पुलिस अधिकारी अपने वायरलैस सैटों पर एक दूसरे को क्या जानकारी दे रहे हैं। इस बात में कोई सन्देह नहीं रहा कि प्रशासन में भी ऐसे लोग हैं, जो आतंकवादियों से किसी न किसी तरीके से सहयोग कर रहे हैं। ऐसे लोग वरिष्ठ अकाली नेताओं में भी हैं।

दोनों संत एक ही रास्ते पर

कुछ लोगों को शायद यह बात बुरी लगे परन्तु यह सच्चाई है कि स्वर्ण-मन्दिर परिसर में दोनों संत – संत जरनैलसिंह भिंडरावाले और संत लोंगोवाल अपने-अपने आतंकवादी जत्थों को गठित कर रहे थे। बब्बर खालसा का जत्था तलविन्दर सिंह और सुखदेव सिंह के नेतृत्व में निरंकारियों और अन्य विरोधियों की हत्या कर रहा था। सुखदेव सिंह ने स्वर्ण मन्दिर परिसर में एक बयान में कहा था कि उसके जत्थे ने तलवंडी साबो में हथियारों की एक दुकान को लूटा था। इस जत्थे में अमृतसर का एक युवक मनमोहन सिंह शामिल था। यह वही व्यक्ति है जिसने दिल्ली में ट्रांजिस्टर बमों के धमाकों के प्लान पर अमल किया था। बब्बर खालसा के एक नेता ने कनाडा के एक साप्ताहिक में लिखा है कि इसका नाम बदलकर मोहनसिंह और काहन सिंह रखा गया था। यह युवक पहाड़गंज में गिरफ्तार कर लिया गया था और इसने आत्महत्या कर ली थी। इसी ग्रुप में दो और मनमोहन सिंह शामिल हैं – एक कनाडा में है और दूसरा पाकिस्तान में। सुखदेव सिंह पाकिस्तान में लाहौर के निकट छांगामांगा के कैम्प में है। तलविन्दर सिंह कनाडा में जाली पासपोर्ट पर भाग गया था। अब वह जेल में है। उसने जालंधर के कुछ युवकों को, जिनमें एक पत्रकार भी शामिल है, संगठित करके संसद भवन को बमों से उड़ा देने और वरिष्ठ नेताओं की हत्या करने का प्लान तैयार किया था। बब्बर खालसा का एक और नेता गुरमेज सिंह गिल लन्दन में तथाकथित खालिस्तान सरकार के स्वयम्भू राष्ट्रपति जगजीत सिंह चौहान के साथ विदेश-मन्त्री का लेबल लगाकर विदेशों में घूमता रहता है। यह व्यक्ति कई बार पाकिस्तान का दौरा कर चुका है।

जत्थेदार सुखदेव सिंह ने संत लोंगोवाल का पक्ष लेकर जरनैलसिंह भिंडरांवाले को पिस्तौल दिखाकर हत्या की धमकी दी थी। इस पर भिंडरावाला अकाल तख्त की इमारत में दाखिल हो गया था। उसने लोंगोवाल के सचिव गुरचरण सिंह पर आरोप लगाया था कि उसने उनके भगत सुरेन्द्रसिंह उर्फ छिन्दा की हत्या कराई थी और इसके लिये हत्यारे को कई हजार रुपये दिये थे। गुरचरण सिंह को बाद में गोलियों का निशाना बना दिया गया था।

दोनों संतों में दुश्मनी चरम सीमा तक पहुंच गई थी। लंदन में एक खालिस्तानी पत्रकार सरदार तरसेम सिंह ने दोनों से मुलाकात की और लिखा कि संत लोंगोवाल बहुत दुःखी हैं और उन्होंने भिंडरावाले के लिये 'डाकू' का शब्द इस्तेमाल करते हुए कहा कि मैं कभी सोचता हूं कि यहां से भाग कर अपने गांव में जाकर खामोशी से जीवन व्यतीत करूं।

ऐसा होते हुए भी यह स्पष्ट है कि आतंकवादी जत्थे बब्बर खालसा को लोंगोवाल का आशीर्वाद प्राप्त था। जब तलविन्दर सिंह जर्मनी में गिरफ्तार हुआ तो लोंगोवाल ने जर्मन सरकार को तार भेज कर दरखास्त की कि उसे भारत सरकार के हवाले न किया जाये। तलविंदर सिंह ने लोंगोवाल के फंड के लिये २० हजार रुपये भेजे, जिन्हें सरकार ने अदा करने से इनकार कर दिया था।

लोंगोवाल ने ब्लू स्टार आपरेशन से कुछ दिन ही पहले अकाली कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया था कि यदि पुलिस "निर्दोष लोगों को" गिरफ्तार करने के लिए किसी गांव में आये तो उसका मुकाबला किया जाये। पंजाब में उन दिनों जब निर्दोष लोगों की हत्या होती थी तो संत लोंगोवाल तुरन्त बयान देकर आरोप लगा देते थे कि हत्यारे कांग्रेस के एजेंट हैं। परन्तु आपरेशन ब्लू स्टार और इसके बाद की घटनाओं ने उनके विचार बदल दिये। इसके बावजूद उन्होंने उन अकाली नेताओं की भर्त्सना नहीं की, जो इन्दिरा जी के हत्यारों की प्रशंसा कर रहे थे।

अन्य खूनी जत्थे

भाई अमरीक सिंह के नेतृत्व में सिख छात्र महासंघ ने गांव-गांव में खूनी जत्थों को गठित करना शुरू कर दिया था। धर्मप्रचार की ओट में कैम्प लगाये जा रहे थे। इनमें विरोधियों के खिलाफ घृणात्मक प्रचार किया जाता और इस बात पर जोर दिया जाता कि गांव-गांव में सशस्त्र जत्थों को गठित किया जाये। प्रत्येक जत्थे के पास रिवाल्वर और एक-एक स्कूटर हो, संघ के सम्मेलनों में रिवाल्वर लिये स्कूटर सवार युवकों की तसवीरें बैनर्ज पर दर्शाई जाती थीं। हिट लिस्टें तैयार की जाती और खूनखराबा किया जाता। भिंडरावाले के भक्तों में पुलिस अधिकारी शामिल थे। वही सरकारी बातों की जानकारी देते और आतंकवादियों से सहयोग करते। ब्लू स्टार आपरेशन के बाद बब्बर खालसा और सिख छात्र महासंघ में समझौता हो गया। विदेशों में भी ये मिलकर काम कर रहे हैं। अब इन्हें दमदमी टकसाल गठित कर रहा है। टकसाल के नेता खुल कर खालिस्तान की बातें करते हैं। स्वर्णमंदिर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का नाममात्र का ही नियन्त्रण है। असली नियन्त्रण दमदमी टकसाल का है।

दल खालसा का नेता जत्थेदार बलबीर सिंह पाकिस्तान में है। यह जत्था

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ईसाई मिशनरी स्कूलों में यौनाचार

भारत के अनेक ईसाई मिशनरी स्कूलों में नन्हे-मुन्ने छात्र-छात्राओं के साथ अध्यापक पादरियों द्वारा अप्राकृतिक यौनाचार करने का समाचार मिला है। इस सन्दर्भ में ब्यावर, राजस्थान के ईसाई मिशनरी स्कूल सन्त पाल के दो अध्यापक पादरियों लियो वाल्स और बेजन दयाल को छात्र-छात्राओं के अभिभावकों द्वारा ब्यावर के सिटी थाने में दर्ज कराई गई प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या २०/८६ और संख्या ४८/८६ के आधार पर भारतीय दण्ड संहिता की धाराओं ३५४, ५०६ एवं ३७७ के अन्तर्गत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार ये अध्यापक मुफ्त ट्यूशन पढ़ाने के बहाने छात्र-छात्राओं को अपने क्वार्टर में बुलाकर पहले उन्हें भयाक्रांत करतेथे और उनके साथ मुख मैथुन आदि बीभत्स अप्राकृतिक तरीकों से यौनाचार करते हैं।

विगत दो वर्षों से हो रहे इस कुत्सित कार्य की खबर मिलते ही पूरे ब्यावर की जनता और विशेष कर वे अभिभावक परिवार जिनके बच्चे सन्तपाल स्कूल में पढ़ते थे, सभी ने एक आन्दोलनात्मक स्थिति पैदा कर दी। तब भी वहां के थाना प्रभारी ने मुकद्दमा दर्ज नहीं किया। बाद में राजस्थान राज्य विधान सभा में ब्यावर के विधायक श्री सोहनसिंह ने हंगामा किया और उक्त दोनों अध्यापकों को तुरन्त गिरफ्तार करने की मांग की। तब पुलिस हरकत में आई और उसने दोनों अध्यापक पादरियों को गिरफ्तार किया। इस समय दोनों अध्यापक १४ दिन के पुलिस रिमांड पर हैं। वहां के जिलाधिकारी ने सन्त पाल स्कूल को बन्द कर सील कर दिया है।

एक अन्य न्यूज ब्यूरो के अनुसार बिहार के रांची, केरल, गुजरात और दिल्ली के ईसाई मिशनरी स्कूलों में भी ऐसे कुत्सित कार्य होते हैं।

इस सूचना से पूर्व अमेरिका के केलिफोर्निया के स्कूल के अध्यापकों द्वारा ४५० बालक-बालिकाओं के साथ ऐसे ही अप्राकृतिक यौनाचार करने की घटना पर वहां की जनता की प्रतिक्रिया से न्यायालय की दीवारें हिल चुकी हैं।

भारत में नराधम पादरियों की यह हरकत गत दस वर्षों से चल रही है, जिसकी सूचना अभी-अभी मिल पाने के कारण सनसनी फैल गई है। इस सन्दर्भ में कई संस्थाओं के ईसाई मिशनरी स्कूलों को सरकार द्वारा बन्द कराने की मांग को लेकर आन्दोलन चलाने की तैयारी शुरू कर दी गई है।

—विशनस्वरूप गोयल

गोहत्या पूर्णतः बन्द करवायें

श्री राधाकृष्ण बजाज की अपील

दिल्ली। गोसेवा महाभियान समिति के संयोजक श्री राधाकृष्ण बजाज ने अपील की है कि यह विचार घर-घर में पहुंचाया जाये कि गोदुग्ध अमृत है—मानव के लिए बल-बुद्धि और स्फूर्ति देने वाला है।

अपनी अपील में उन्होंने सुझाव दिया है कि तीन नवम्बर को भय्यादूज के दिन बहनें संसद्‌सदस्यों और विधायकों को टीका लगाकर उनसे अनुरोध करें कि वे अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके भारत-भर में गोहत्या पूर्ण रूप से बन्द करवायें।

११ जनवरी को गोहत्या का विरोध करने के लिए चूल्हा बन्द रखें—उपवास करें। मार्च के अन्तिम दिनों में भी इसी प्रयोजन से तीन दिन का उपवास करें। इस सिलसिले में राजघाट समाधि पर उपवास का आयोजन होगा।

नींद कब टूटेगी ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

टोहरा का भक्त था। इस समय पंजाब में इसका नेतृत्व सरदार अमृतराज सिंह और गुरचरण सिंह कर रहे हैं। ब्रिटेन में इसका मुखिया ठेकेदार जसवंत सिंह है और इसका एक नेता अमरीक सिंह खूनखराबे के लिये धन भेज रहा है। पटियाला इसका गढ़ है।

अखंड कीर्तनी जत्थे ने बबर खालसा और चौहान से गठजोड़ कर रखा है। इसके नेता फौजा सिंह की पत्नी जोधपुर जेल में नजरबन्द है।

अकाली फैडरेशन का मुखिया कुंवर सिंह पाकिस्तान में है और एक ट्रेनिंग कैम्प का इनचार्ज है।

बबर खालसा का एक नेता अतीन्दर सिंह, जो भोपाल से भाग कर पाकिस्तान चला गया था, एक और कैम्प चला रहा है। इसने श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का प्रयास किया था। वह भोपाल के एक कांग्रेसी दैनिक समाचारपत्र में काम किया करता था।

एक अनुमान के अनुसार आतंकवादियों को गत पांच वर्षों में विदेशों से कई करोड़ की सहायता मिल चुकी है। अप्रैल १९८४ में भिंडरांवाले को एक व्यक्ति ब्रिटेन से मिलने आया। उसे बताया गया कि भिंडरांवाले के पास एक करोड़ से अधिक रुपया जमा हो चुका है और उसे हथियारों की कोई कमी नहीं। इस व्यक्ति ने बताया कि चौहान ने विदेशी एजेंसी द्वारा भिंडरांवाले को काफी हथियार पहुंचा दिये हैं। अमरीका का अरबपति सरदार दीदार सिंह बैंस आतंकवादियों की भरपूर सहायता करता है। आतंकवादी आज जो कुछ कर रहे हैं, उसके लिए उन्होंने कई वर्ष तैयारियां कीं। हमारी सरकार की इन्टेलीजेंस एजेंसियां सोई ही रहीं। आज भी हालत यह है कि खुले आम हिंसा का प्रचार हो रहा है और कोई कार्रवाई नहीं की जा रही।

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष के लिए प्राप्त दान राशियां

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए ५ अगस्त से १० अक्तूबर तक निम्नलिखित दान राशियां प्राप्त हुई हैं—

श्री राज कृष्ण जी नागर हिसार १५५)
उषा बुक एजेन्सी चौड़ा रास्ता जयपुर ५१)
श्रीमती कृष्णा मोती बाजार नई दिल्ली १०१)
रवि प्रकाश गुप्त सदरुद्दीन नगर बिजनौर ५०
श्री शंकरलाल आर्य, राजेन्द्र मलिक स्ट्रीट कलकत्ता १००
आर्यसमाज भोईवाड़ा, परेल चाल बम्बई १०१
आर्यसमाज पूंजला, मंडोर जोधपुर १५०
मन्त्री जी आर्यसमाज शाहपुरा, भीलवाड़ा २००
श्री हरिवंश कुमार आर्य दयानन्द नगर बस्ती १०१
श्री डा० टी. आर. खन्ना टोरन्टो (कनाडा) ५००)
श्री राजेश जी ,, ,, २५०)
श्री इन्द्रराज जी ,, ,, २५०)
श्री पम्मी सिंगल ,, ,, २५०)
श्री सुरेश चौधरी ,, ,, २५०)
श्री कान्ति मेहता ,, ,, २५०)
श्री सुदर्शन कपूर ,, ,, २५०)
श्रीमती कलावतीदेवी ,, ,, २५०)
श्री राजू पप्पू ,, ,, २५०)
श्री देवी चौधरी ,, ,, १००)
श्री विक्की व अनिता मेहता ,, ,, १००)
श्री प्रधान जी आर्यसमाज जगतपुर मैनपुरी २५)
नेशनल प्लाई वुड सेन्टर गोरखपुर ४८५)
श्री मदनलाल १८० ई विला पसडेना (अमेरिका) ११०)
श्री जयन्तीलाल प्रहलाद भाई पांड्या २५)
आर्यसमाज वीसलपुर ५१)
श्रीमती सुशीला भाटिया महेश नगर अम्बाला छावनी २००)
आर्यसमाज पिलानी १००)
श्री प्रधान आर्यसमाज सांवली आदि (गढ़वाल) १११)
श्री मन्त्री जी आर्यसमाज टूंडला आगरा १२०)
श्री सतीश कुमार व रविदास जी बिलासपुर (हि० प्र०) २०)
श्री चननलाल पटेल नगर, नई दिल्ली १०१)
श्रीमती राजरानी पटेल नगर, नई दिल्ली १०१)
श्री बलजीतसिंह, बलजीत नगर, नई दिल्ली ५१)
श्रीमती मूर्तिदेवी टी० एस० ४५ बलजीत नगर नई दिल्ली ११)
श्री हितेन्द्र कुमार दीवान, होशंगाबाद १०)
आर्यसमाज नागसंराय नई दिल्ली १०१)
आर्यसमाज देहरादून २००१)
स्त्री आर्यसमाज धमावाला देहरादून २५१)
श्री जगदीशराय जी द्वारा आर्यसमाज देहरादून ५१)
श्री के० सी० लाल शिवाजी मार्ग देहरादून १०१)
आर्यसमाज देहरादून १८४५)
श्री एल० सी० अग्रवाल द्वारा आर्यसमाज देहरादून १०१)
श्री जयन्त बल्लभदास कोटेचा पोरबन्दर ३०)
श्री हरिनारायण वैद्य मोला बाजार समस्तीपुर ११)
श्री माधव जी भट्ट मंगलोर ५१)
श्री कृष्णचन्द नागर आंग कोटा ११)
श्री ठाकरलाल आंग कोटा ११)
श्री मन्त्री जी आर्यसमाज बेरछागांव शाजापुर २५)
श्री ई० वेंकटेश्वर रेड्डी कुडप्पा ८०)
श्री मन्त्री जी, आर्यसमाज हरदोई ५०१)
श्री चन्द्र जी बगवाना शोलापुर १००)
श्री मन्त्री आर्यसमाज बालकेश्वर आगरा २००)
श्री मन्त्री आर्यसमाज उन्नाव २५१)
श्री गोपाल प्रसाद आर्य आ० स० पिपराढी सीतामढ़ी १०)
श्री पासूलाल निषाद कैपगंज इलाहाबाद १०)
श्री लक्ष्मणदेव वैदिक समिति लखनऊ २५०)
श्री शिवदत्त शर्मा शास्त्री अमौली फतेहपुर ११)
मन्त्राणी महिला आर्यसमाज स्याना बुलन्दशहर १५१)
मन्त्री आर्यसमाज सुरजनगढ़ मुरादाबाद १००)
विभुदेव प्रसाद पैंजावा बाढ़ पटना २०)
श्री रामलाल जी भाटिया, भाटिया टी स्टाल, नई दिल्ली १००)
मन्त्री जी आर्यसमाज हल्द्वानी नैनीताल १५३९)
आर्यसमाज दरियागंज नई दिल्ली ५००)
आर्यसमाज तीमारपुर दिल्ली १५०)
महिला आर्यसमाज मो० साहुआन चादपुर बिजनौर ५०)
भागीरथ ठाकुर आर्य मंगल बाजार मुंगेर ११)
आर्यसमाज नकुड़ सहारनपुर १०१)
राजरानी ३६१ रामनगर गाजियाबाद १०१)
ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी, दुर्ग २५)
आर्यसमाज रामनगर बाराबंकी १०६)
आर्यसमाज लोहरदगा (बिहार)) १००)
प्रधान आर्यसमाज गोहावर बिजनौर १००)
श्री हरिनारायणलाल कुकरा टाउन लखीमपुर खीरी ५५)
रामचन्द्र पाहूजा ४/४८ शिवाजी नगर गुड़गाव ३०)
वीर नारायण आर्य अमीनगर चन्देरु बुलन्दशहर १०)
आशा सचदेव कलकत्ता १००)
वैद्य रामसिंह गोहिल विदिशा १००)
आर्यसमाज सिंदरी धनबाद ५००)
आर्यसमाज देगलूर जिला नान्देड़ ५०१)
आर्यसमाज रेलवे कालोनी बादीकुई ५००)
योगेश कुमार प्रमोद कुमार व इन्दु सिविल लाइन्स दिल्ली १००१)
मन्त्री जी आर्यसमाज रेलवे कालोनी रतलाम ११७)
आर्यसमाज दयानन्द नगर गाजियाबाद २००)
सरला शम्भूनाथ जनकपुरी नई दिल्ली १०)
पापविनाशायं मिरमाजी पेठ वारंगल १०)
भारतीय योग संस्थान कृष्ण नगर दिल्ली ५३१)
प्रधान आर्यसमाज कानपुर जिला कटक ११७)
हरिहारसिंह आर्य बेलना बाबू गोरखपुर ११)
मन्त्री जी आर्यसमाज मलाही पूर्वी चम्पारण १२५)
मन्त्री जी, आर्यसमाज खेड़ा अफगान सहारनपुर २१)
श्रीमती कृष्णा गोयल नगर अखनूर (जम्मू) १०)
प्रेम कुमार वोहरा डी ५/२३ कृष्ण नगर दिल्ली ५०)
श्री कविराज रतनलाल आनन्द घुमन बटाला (पंजाब) २०)
श्री चन्द्रकान्त भारद्वाज बाबरकी बाबरपुर इटावा १०)
श्री सोहनलाल कन्हैयालाल कल्लनगंज खंडवा ५०)
श्री आर्य समाज बोकरा जिला खेड़ा १०१)
श्री रामजीभाई चनुभाई पटेल जिला खेड़ा २५)
श्री कुलदीप आर्य सांसला पम्प जोधपुर १०)
श्री इन्द्रमोहन मेहता सैक्टर-३ विभव नगर आगरा १०००)
आर्य वीर दल मोडुष और बाम्बे औक्सीजन कं० मुलुण्ड बम्बई १६५०)

(क्रमशः)

वैष्णव देवी मन्दिर का अधिग्रहण : एक अनुत्तरित प्रश्न

–क्षितीश वेदालंकार–

हिन्दू जनता के श्रद्धाकेन्द्र तीर्थों और मन्दिरों का ही सरकारी अधिग्रहण क्यों ? ईसाइयों, मुसलमानों और सिखों के गिरजाघरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और अन्य तीर्थ स्थानों का अधिग्रहण क्यों नहीं ? क्या वहां धन का दुरुपयोग नहीं होता ? सरकार को इस अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर देना है ।

आजादी के बाद जिन दो मंदिरों की सबसे अधिक लोकप्रियता बढ़ी है, उनमें शायद दक्षिण भारत में तिरुपति और उत्तर भारत मे वैष्णव देवी का मन्दिर मुख्य है । लाखों लोग इन दोनों स्थानों की यात्रा के लिए जाते हैं और इन दोनों स्थानों पर करोड़ों रुपये का चढ़ावा चढ़ता है । जब से तिरुपति मे भक्तों द्वारा चढ़ाये गये चढ़ावे पर नियन्त्रण हुआ है, तब से उसकी ओर से पर्यटकों की सुविधा के लिए अनेक योजनायें कार्यान्वित की गई हैं । धर्मशालायें बनी हैं, गैस्ट हाउस बने हैं, सड़कें बनी हैं और बस सर्विस भी शुरू की गई है । इन सब सुविधाओं से भक्तों-यात्रियों की सुविधा और अधिक बढ़ी है । तिरुपति ट्रस्ट की ओर से शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया है और प्राचीन शास्त्रीय साहित्य के प्रकाशन में भी उसका सहयोग सुलभ है ।

इसके मुकाबले में वैष्णव देवी की यात्रा करने वाले जानते हैं कि वहां इस मन्दिर के बारीदारों की ओर से यात्रियों की सुविधा के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं किया जाता । डा० कर्णसिंह द्वारा स्थापित धर्मार्थ ट्रस्ट ने ही इस दिशा में काफी सराहनीय काम किया है । उस श्रेय में बारीदारों का कोई हिस्सा नहीं है । कहा जाता है कि वैष्णव देवी में हर साल लगभग १० लाख यात्री आते हैं और लगभग १५ करोड़ रुपया चढ़ावा चढ़ता है और उस सब को अपने पास रखने वाले केवल तीन बारीदार परिवार हैं । इन तीनों परिवारों की बारी-बारी से वैष्णव देवी की मूर्ति पर ८-८ घण्टे की ड्यूटी लगती है । यात्रियों का तांता चौबीस घण्टे लगा रहता है और जिस परिवार वाले की ड्यूटी में जितना पैसा आता है, वह सब उस परिवार वाले की मल्कियत होता है । यह भी कहा जाता है कि उन तीन परिवारों का विस्तार होते-होते उनकी सदस्य संख्या अब १०-१२ हजार तक पहुंच गई है और चढ़ावे के इस पैसे से ही उन सब लोगों का पालन-पोषण होता है ।

डा० कर्णसिंह द्वारा स्थापित धर्मार्थ ट्रस्ट का बोर्ड मन्दिर के पास लगा रहता है । दान-दाताओं की राशि ज्मा करने के लिये बहीखाता लिये मुंशी जी भी बैठे रहते हैं । परन्तु वहां के पंडित-पुरोहित आने वाले सब भक्तों को केवल मन्दिर की मूर्ति पर ही चढ़ावा चढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं । कुछ विरले समझदार सम्पन्न लोग ट्रस्ट वालों को भी दान देते हैं । परन्तु उनकी संख्या बहुत कम होती है । एक तरह से स्थिति यह है कि खर्च करने का सारा काम धर्मार्थ ट्रस्ट के जिम्मे और चढ़ावे को अपनी जेब में डालने का काम उन बारीदारों के जिम्मे है । इस मन्दिर को पूरी तरह ट्रस्ट के नियन्त्रण में लेने के लिये डा० कर्णसिंह ने अदालत में मुकदमा भी लड़ा, पर वे उसमें हार गये । अदालत ने फैसला दिया कि डा० कर्णसिंह के पूर्वजों ने यह मन्दिर और उसकी भूमि जिन बारीदारों को दान में दे दी, अब वह धर्मार्थ ट्रस्ट को वापस नहीं मिल सकती ।

परन्तु धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा खर्च करने की भी एक सीमा है । इस ट्रस्ट ने एक ही सकरे रास्ते में गुफा में जाने वाले यात्रियों की कठिनाई को दूर करने के लिए काफी पैसा खर्च करके दूसरा रास्ता भी बनाया, जिससे यह सुविधा हो गई कि भक्तगण एक रास्ते से अन्दर जाते हैं और दूसरे रास्ते से बाहर निकलते हैं । अन्दर जाने वाला रास्ता इतना संकीर्ण है कि यात्री खड़ा नहीं हो सकता । उसे झुक कर और टेढ़े होकर अन्दर घुसना पड़ता है, जबकि बाहर निकलने वाला रास्ता कम से कम इतना चौड़ा अवश्य है कि उसमे आदमी आराम से खड़ा होकर निकल सकता है ।

धर्मार्थ ट्रस्ट ने अपनी ओर से वैष्णव देवी के पास और अधकुंवारी मे धर्मशालाओं की व्यवस्था की है । रात को वहां ठहरने वाले यात्रियों के लिए कम्बलों की व्यवस्था भी है । चढ़ने के दुर्गम मार्ग पर जहां-जहां खतरा है, वहां लोहे की रेलिंग लगाई गई है और उस रेलिंग पर प्रति १० फुट के बाद रेलिंग के लिए दान देने वालों के नाम की पट्टिका लगी है । परन्तु आम यात्रियों का रास्ता न केवल ऊबड़-खाबड़ है; बल्कि जगह-जगह नुकीले पत्थर निकले हुए हैं । दस मील के इस लम्बे रास्ते पर लगातार मिट्टी डालकर यात्रियों के लिए उसे सुविधाजनक बनाये रखना भी कोई कम खर्चीला काम नहीं । यह काम कौन करे ? इसके अलावा जहां लाखों यात्री आते हों, वहां सफाई की समुचित व्यवस्था करना भी आसान काम नहीं । वह भी कौन करे ? बारीदार तो कुछ करेंगे नहीं, वे तो केवल चढ़ावे के पैसे खाने और ऐश करने के लिए हैं और धर्मार्थ ट्रस्ट के पास जम्मू-कश्मीर राज्य के जितने अन्य मंदिर हैं, उनकी देखभाल के बाद इतना पैसा नहीं बचता कि वैष्णव देवी के यात्रियों के लिए सुविधाओं का विस्तार किया जा सके ।

तिरुपति के उदाहरण से प्रेरणा लेकर जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन ने जहां इस राज्य में अनेक ऐसे साहसिक कदम उठाये हैं, जिनकी प्रशंसा उनके विरोधी भी करते हैं, उसी तरह का कदम उन्होंने इस मन्दिर के अधिग्रहण के सम्बन्ध में भी उठाया है । बिना सरकारी कानून के यह समस्या सुलझ नहीं सकती थी । डा० कर्णसिंह मुकद्मा हार गये । फिर सरकारी कानून के द्वारा ही उस पर नियन्त्रण स्थापित हो सकता था । वह साहसिक कदम श्री जगमोहन ने उठा डाला । पिछले ३१ अगस्त को उन्होंने वहां पुलिस भेजकर उसका अधिग्रहण कर लिया और इस सारे क्षेत्र को विकसित करने की लम्बी-चौड़ी योजना घोषित कर दी गई । अब इस तीर्थ को साफ-सुथरा बनाने के लिए युद्ध स्तर पर काम चल रहा है और एक महीने के भीतर ४० लाख रुपये से अधिक खर्च किया जा चुका है । प्रशासन की योजना यह है कि इस पूरे इलाके को मर्करी ट्यूब लाइट से शोभित कर दिया जाये । इलाके की सड़कों की व्यवस्था बढ़िया हो जाये । सीवर की व्यवस्था सुधारी जाये और एक लाख गैलन पानी को स्टोर करने वाली एक बड़ी टंकी बनाई जाये । जम्मू से वैष्णव देवी तक आने वाले और पैसा खर्च कर सकने वाले लोगों के लिए हैलीकाप्टर की व्यवस्था की जाये । कटरे से वैष्णव देवी के मन्दिर तक एक रज्जु-मार्ग बनाया जाये और इस पूरे क्षेत्र को एक पर्यटन-स्थल के रूप मे विकसित किया जाये ।

श्रद्धालु जनों मे श्री जगमोहन के इस साहसिक कदम की आलोचना भी कम नहीं हुई । परन्तु हम समझते हैं कि वर्तमान युग की आवश्यकताओं को देखते हुए यह कदम अत्यन्त आवश्यक था । मूर्तिपूजा और मन्दिर की संस्कृति के साथ शुरू से ही दुकानदारी की भावना जुड़ी रही है । इसलिए पंडे-पुरोहित भोले भाले यात्रियों को तरह-तरह के हथकण्डों से ठगने में ही अपनी चरितार्थता मानते हैं । यह ठीक है कि किसी जमाने में जब आवागमन के साधन नहीं थे, तब दुर्गम तीर्थों की यात्रा करने वाले भक्त-गणों की सहायता करने और उनकी सेवा शुश्रूषा को अपना कर्तव्य मानने वाले इन पण्डे-पुरोहितों के पूर्वजों ने ऐसी व्यवस्था जुटाई थी जो पर्यटनस्थलों के होटल नहीं जुटा सकते । परन्तु अब वह बात समाप्त हो चुकी है । अब तो तीर्थों मे गरीब यात्रियों के लिए सुलभ धर्मशालायें भी तरह-तरह से पैसा वसूल करती हैं और अब कहीं भी (सिवाय खुले आसमान के नीचे रात बिताने के) निःशुल्क आवास-व्यवस्था दिखाई नहीं देती ।

जहां बड़ी मात्रा में जन-समुदाय एकत्रित होता हो, वहां लोगों की सुख-सुविधा का ध्यान रखना और अधिक भीड़ के कारण संक्रामक रोगों को फैलने से रोकने के लिये समुचित कारवाई करना सरकार का कर्तव्य है । इस दृष्टि से देखा जाये तो श्री जगमोहन के इस साहसपूर्ण कदम की आलोचना करने की बजाय इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए । अपने आपको समाजवादी कहने वाली सरकार समाज की निरन्तर उपेक्षा करके अन्धाधुन्ध लोगों के अन्ध-विश्वास का फायदा उठाकर केवल अपना पेट भरने वाली प्रवृत्ति को कैसे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य जगत् के समाचार

ध्यान योग शिविर

पातञ्जल योगधाम आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार मे ४ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमे अष्टाग योग का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

आर्यसमाज बीमलपुर का उत्सव

आर्य समाज बीमलपुर का वार्षिकोत्सव १ नवम्बर से ४ नवम्बर तक होगा। उत्सव मे आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान पधार रहे हैं।

गुरुकुल शुक्रताल का उत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल जिला मुजफ्फर नगर का वार्षिकोत्सव १३, १४ १५ व १६ नवम्बर को मनाया जा रहा है।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ भी हो रहा है जिसकी पूर्णाहुति १६ नवम्बर को होगी। योग साधना का प्रशिक्षण दिया जायेगा। भोजनालय व्यवस्था चलेगा।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया जायेगा।

आर्यसमाज डी० डी० ए० फ्लैट्स कालकाजी का उत्सव

आर्यसमाज डी०डी०ए० फ्लैटस कालकाजी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २० अक्तूबर से २६ अक्तूबर तक होगा। प्रात ६ से ८ बजे तक राष्ट्रभृत् यज्ञ और रात्रि ७ ३० से ८ ३० तक सगीत का कार्यक्रम होगा।

२६ अक्तूबर का प्रात १० बजे से मुख्य समारोह के अन्तर्गत आर्यसमाज विद्वानो कार्यकर्ताओ और पुरोहितो का अभिनन्दन होगा। डा० स्वरूपसिंह भूतपूर्व कुलपति दिल्ली विश्वविद्यालय) के सभापतित्व मे मनाये जा रहे इस समारोह के मुख्य अतिथि डा० बलराम जाखड) अध्यक्ष लोकसभा) होगे।

आर्यसमाज कुन्दा (जिला प्रतापगढ) का उत्सव

आर्यसमाज कुन्दा जिला प्रतापगढ का २७वा वार्षिकोत्सव ६ से ९ नवम्बर तक मनाया जायेगा, जिसमे स्वामी वेदमुनि परिव्राजक (बिजनौर) श्री ज्वलत कुमार शास्त्री सुलतानपुर) श्री ओ३म प्रकाश वर्मा अम्बाला) श्री वेगराज (गाजियाबाद) और श्री वीरेन्द्र आर्य (गाजीपुर) पधारेगे।

आर्यसमाज रामनगर (गुडगांव) का उत्सव

आर्यसमाज रामनगर (गुडगाव) का वार्षिकोत्सव २४ २५ २६ अक्तूबर (शुक्र, शनि व रविवार) को होगा। २० अक्तूबर से प्रात सामवेद पारायण यज्ञ एव रात्रि को वेदकथा प्रारम्भ हुई।

वेदो के प्रकाण्ड विद्वान्, उपदेशक और भजनोपदेशक पधारेंगे।

एक अनुत्तरित प्रश्न

(पृष्ठ १० का शेष)

सहन कर सकती है इसलिये इन तीर्थस्थानो मे केवल पण्डे पुरोहितो की दया पर भक्तो को उल्टे उस्तरे से मूडने के लिए छोड देना किसी भी अवस्था मे उचित नही कहा जा सकता।

परन्तु हमारी शिकायत और है। और वह शिकायत यह है कि इस प्रकार हिन्दू जनता के श्रद्धाकेन्द्र तीर्थों और मन्दिरो का ही सरकारी अधिग्रहण क्यो? ईसाइयो, मुसलमानो और सिखो के गिरजाघरो मस्जिदो गुरुद्वारो और अन्य तीर्थ स्थानो का अधिग्रहण क्यो नही? क्या वहा धन का दुरुपयोग नही होता? प्रतिवर्ष स्वर्ण मन्दिर मे चढावे के रूप मे आने वाला १० करोड रुपया ही क्या अकालियो की देशद्रोही राजनीति का मूल नही है? इसी प्रकार की बात अजमेर की दरगाह तथा मसलमानो और ईसाइयो के धार्मिक स्थानो के बारे मे भी कही जा सकती है। एक राष्ट्र के विभिन्न वर्गों मे इस प्रकार भेदभाव करना राष्ट्रीयता की दृष्टि से घातक है। एक और समान नागरिकता की सहिता बनाने पर चर्चा चल रही है और दूसरी ओर तथा-कथित अल्पसख्यको को सब तरह की छूट दी जा रही है और बहुसख्यको की भावनाओ को कुचला जा रहा है। हम श्री जगमोहन के कदम की प्रशसा करते हैं और अन्य राज्य सरकारों से और खास तौर से भारत सरकार से यह आशा करते हैं कि वह अल्पसख्यको के धर्मस्थानो पर होने वाले धन के दुरुपयोग पर भी नियन्त्रण करेगी।

'सार्वदेशिक' के ग्राहक बनाने का अभियान

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक और अखिल भारतीय सार्वभौम गोरक्षा एव जीव दया प्रचारक सघ बुलन्दशहर के प्रचारमन्त्री श्री घनानन्द शर्मा कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत भर मे घूम घूमकर साप्ताहिक सार्वदेशिक के ग्राहक बनाने का काम कर रहे है। आपने पिछले दो महीनो मे सवा सौ से अधिक ग्राहक बनाये। आर्यसमाजो और आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि वे जिनसे भी सम्पर्क करे वे ग्राहक बनाने मे इन्हे सहयोग दे।

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों में भेदभाव न किया जाये : देवरस

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के सर सघचालक बाला साहब देवरस ने कहा है कि सविधान की धारा ३० को हटा दना चाहिए। इस धारा के तहत अल्पसख्यकों को शैक्षणिक सस्थाओं की स्थापना और उनके सचालन का अधिकार है। देवरस दशहरे पर यहा राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की एक विशाल रैली को सबोधित कर रहे थे।

उन्होने कहा कि बहुसख्यको और अल्पसख्यको के बीच भदभाव से छुटकारा पाने के लिए सविधान पर नये सिरे से विचार करना अब बहुत जरूरी हो गया है। बार बार अल्पसख्यकों के हको की हिफाजत की दुहाई देने का केवल यही मतलब है कि हम भारत को एक ओर अखण्ड रूप म मजूर नही करते।

श्री देवरस ने कहा कि सविधान की धारा ३० और कश्मीर को खास दर्जा देने वाले अनुच्छेद ३७० को रद्द करने समान नागरिक सहिता अपनाने और गोहत्या पर रोक लगाने से अलग अलग वर्गों म एकता कायम करने मे काफी मदद मिलेगी।

उन्होने कहा कि वे हरिजनो आदिवासियो, महिलाओ और समाज के खास हको को सुरक्षित रखने के तरफदार हैं, लेकिन कुछ समुदायो को अल्पसख्यक होने के नाम पर विशेष सुविधाये देना गलत है।

हिन्दुओ के धार्मिक जुलूसो पर रोक की आलोचना करते हुए उन्होने कहा कि सरकार को अपनी तदर्थवाद की नीति छोड देनी चाहिए।

फ़ैजबाग में आर्य महासम्मेलन

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद) के तत्वावधान मे ८, ९, १० नवम्बर को फैजबाग म आय महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान सन्यासी और महोपदेशक पधार रहे हैं।

प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के पुराने स्नातक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता और मेरठ कालेज के भूतपूर्व प्रोफेसर धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री का ग्यारह अक्तूबर का निधन हो गया।

१५ अक्तूबर को आर्यसमाज जोडबाग नई दिल्ली मे उनकी स्मृति मे शान्तियज्ञ और श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा दु ख प्रकट किया है।

श्री राधाकृष्ण वर्मा का देहान्त
स्वामी आनन्दबोध का शोक सन्देश

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता और वर्मा ज्वैलरी हाउस, चावडी चौक के मालिक श्री राधाकृष्ण वर्मा (गोगवा) के निधन पर शोक प्रकट किया है।

स्वामी जी ने अपने शोक सन्देश मे लिखा है कि हमे यह जानकर बडा दु ख हुआ कि श्री राधाकृष्ण जी वर्मा का ५ अक्तूबर को देहान्त हो गया है। श्री राधाकृष्ण जी आर्यसमाज क कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनके प्रचार के लिए वे अपनी ओर से सत्यार्थप्रकाश वितरित करते थे। वे आर्यसमाज दीवानहाल के प्रत्येक कार्यक्रम व साप्ताहिक सत्सग मे उपस्थित होते थे। उनके निधन से आर्यसमाज का एक सच्चा व निष्ठावान सैनिक उठ गया है। हम दिवगत आत्मा की सद्गति क लिए प्रभु से प्रार्थना करते है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली मे मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७ | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

वर्ष २१ अङ्क ४६] | कार्तिक कृ० १५ सं० २०४३ | रविवार २ नवम्बर १९८६

ऋषि निर्वाण अंक

महात्मा नारायण स्वामी जी

स्वामी श्रद्धानन्द जी

कोटि-कोटि जनों के वन्दनीय
महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी ध्रुवानन्द जी

स्वामी अभेदानन्द जी

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

राजनेताओं और आर्य नेताओं के उद्बोधक भाषण : भव्य और विशाल शोभा यात्रा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के विचार विशाल जनसमुदाय पर छा गये

लखनऊ, १७ अक्तूबर । यहां कड़े सुरक्षा प्रबन्धों के बीच इन्दिरा कांग्रेस के निवर्तमान उपाध्यक्ष श्री अर्जुनसिंह ने जनता को प्रेरणा दी कि वह आन्तरिक अव्यवस्था पैदा करने वाली शक्तियों को पहचाने । उन्होंने कहा कि आन्तरिक शान्ति की अक्षुण्णता उतनी ही आवश्यक है, जितनी सीमाओं की रक्षा ।

उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह का शुभारम्भ करते हुए उन्होंने आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे मानवसमाज के कल्याण के लिए कार्य करें ।

श्री अर्जुनसिंह ने कहा कि साम्प्रदायिकता से राष्ट्रीय एकता कमजोर होती है । हम सब का कर्त्तव्य है कि राष्ट्रीय एकता और सद्भाव बनाये रखें ।

"उदात्त मानवता में आस्था रखने वाला ही हिन्दू हो सकता है ।"

उन्होंने कहा कि लोग आतंकवाद तथा साम्प्रदायिकता के विरुद्ध साहसपूर्वक आवाज उठायें । बाहरी तथा अन्दरूनी खतरों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बाहरी खतरों को पहचानना तो सरल है परन्तु आतंकवाद और साम्प्रदायिकता जैसे भीतरी खतरों को पहचानने में गलतफहमी हो सकती है । अतः उन्हें पहचानने व उनसे सतर्क रहने की अत्यावश्यकता है ।

उन्होंने कहा कि आज धर्म के नाम पर जनता को भ्रमित किया जा रहा है । भगवान् बुद्ध का कथानक सुनाते हुए कहा कि धर्म को बोझ समझ कर न ढोयें बल्कि उसके माध्यम से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने में योगदान करें । आर्यसमाज की भूतकाल की भांति भविष्य में भी देश में आवश्यकता है । उन्होंने महर्षि दयानन्द के महान् कार्य को महत्त्वपूर्ण बताया ।

हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुए श्री अर्जुनसिंह ने कहा कि उदात्त मानवता में आस्था रखने वाला ही हिन्दू हो सकता है । जो राष्ट्र कल्याण को अपने धर्म का उद्देश्य नहीं समझता वह हिन्दू नहीं हो सकता । उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म के विशाल पाट में हजारों संस्कृतियां घुली मिली हैं । इसमें मानवता के प्रति गहरी आस्था के साथ ही हर व्यक्ति को अपनी राह चुनने की छूट है । जो व्यक्ति इन उद्देश्यों को नहीं समझता, वह कैसा हिन्दू है ?

भारतीय परिवेश में स्वामी जी के प्रयासों से ही हिन्दुओं में व्याप्त संकीर्ण मनोवृत्तियां दूर हो सकीं । हिन्दू धर्म में आत्मशुद्धि की परम्परा रही है । इसी कारण अनेक संकटों के बावजूद हिन्दू और उसका धर्म आज भी धरती पर कायम हैं । उन्होंने भारतीय सन्तों का आह्वान किया कि वे धर्म की गठरी सिर पर ढोना छोड़कर देश व समाज की बुराइयों को दूर करने में हाथ बटायें ।

इससे पूर्व मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुरसिंह ने कहा कि आन्तरिक और बाह्य खतरों के कारण देश कठिन समय में से गुजर रहा है । कुछ शक्तियां मजहब, जात-पात और भाषा के नाम पर जनता में फूट डालने का प्रयत्न करके राष्ट्रीय एकता को कमजोर करना चाहतीहैं ।

उन्होंने जनता से अपील की कि वह दहेज सदृश सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन का प्रयत्न करे ।

उन्होंने कहा कि समाज की तमाम बुराइयों से लड़ने के लिए महर्षि दयानन्द के पथ का अनुसरण करना होगा । हमें ऊंच-नीच, छुआछूत, जाति, मजहब, भाषा आदि के नाम पर विध्वंस में लगी ताकतों से संघर्षरत होना होगा । मानवीय हितों के विरुद्ध होने वाले हर काम का मुकाबला करना होगा । तभी हम विकास की ओर तेजी से बढ़ सकेंगे । आपने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि जिस देश में दयानन्द जैसे महापुरुषों का जन्म हुआ हो वहां आज भी दहेज और बालविवाह जैसी बुराइयां मौजूद हैं । आर्यसमाज को अपने अतीत की भांति भविष्य में भी संघर्षरत रहना होगा ।

समारोह के अध्यक्ष और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पंजाब की वर्तमान स्थिति की चर्चा की और कहा कि आतंकवादियों को पाकिस्तान से सहायता मिल रही है ।

उन्होंने इस बात के लिए पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला की आलोचना की कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रस्तावित सुरक्षा पट्टी का विरोध कर रहे हैं ।

स्वामी जी ने जनता से अपील की कि वह सर्वात्मना आतंकवाद की समाप्ति में लगे ।

यहां डी०ए०-वी० कालेज के प्रांगण में निर्मित प्रकाशवीर शास्त्री नगर में आयोजित समारोह में प्रथम उद्बोधन स्वामी जी की ओर से ही हुआ ।

खुले अधिवेशन में अभ्यागतों का स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष राजर्षि राजा रणञ्जयसिंह ने भी जनता से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने की अपील की । उन्होंने कहा कि पंजाब में मुट्ठीभर पथभ्रष्ट आतंकवादियों ने हत्याओं का दौर चला रखा है ।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय

सत्यनिष्ठ संन्यासी दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक के पाठक जानते हैं कि सुप्रसिद्ध बंगला विद्वान् श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवनवृत्त की खोज में लगा दिया था। उन्होंने एक पुस्तिका लिखी है—आदर्श सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती। पुस्तिका के प्रारम्भ मे ही वे लिखते हैं—रोगी को वैद्य अथवा चिकित्सक की आवश्यकता होती है। जो विकृत होता है, उसे ही सुधारक की आवश्यकता होती है और जो मार्ग-भ्रष्ट होता है, उसे ही मार्गोपदेशक की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य की भांति समाज भी रोगी हो जाता है—मनुष्य के समान मनुष्य समाज भी बिगड़ जाता है। ···भारतीय हिन्दू समाज को एक सुधारक की आवश्यकता है।···प्रश्न उठता है कि हिन्दुओ के सुधार का भार कौन लेगा ? इसके उत्तर में मैं कहूँगा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती।

लेखक ने अपनी पुस्तिका की समाप्ति इन शब्दो से की है—रोगी हिन्दुओ, निराश मत होना। मार्ग भूले हुए हिन्दुओ, अश्रुपात न करना। विकृत हिन्दुओ, अब अधिक शोक न करना। देखो, अनावस्या की रात्रि का अन्त निकट आ रहा है। देखो, अन्धकारावृत आकाश के पूर्वीय भाग में आर्ष ज्ञान के प्रकाश की रेखा सचारित हो रही है। देखो, इस प्रकाश के सचार से भारतवर्ष में अब इधर-उधर की वस्तुएं दिखाई देने लगी हैं। यह भी देखो कि इसी प्रकाशमयी रेखा के साथ काठियावाड़ का रहने वाला एक ब्राह्मण हाथ में ध्वजा लिये आता दिखाई दे रहा है। इसलिए अब तुम उठो, खड़े हो जाओ। उस पुरातन परब्रह्म का नाम लो और इस प्रकाश की सहायता से अपने घर की ओर प्रस्थान करो।

सारी पुस्तिका इसी प्रकार के भावनापूर्ण उद्‌गारों से भरी हुई है। प्रसगवश एक बात की चर्चा करके हम अपने असली विषय पर आयेंगे। श्री मुखोपाध्याय ने अपनी पुस्तिका में स्थान-स्थान पर स्वामी जी को हिन्दुओं का आदर्श सुधारक लिखा है। यह बात पुस्तिका के अनुवादक को स्वीकार नही हुई, इसलिए अनुवादक ने नोट चढ़ाया है कि 'यतः मूल निबन्ध लेखक स्वयं हिन्दू है और वह स्वामी दयानन्द को भी आदर्श सुधारक सिद्ध कर रहा है, इसलिए वह स्वामी दयानन्द के हृदय मे केवल आर्यावर्त्त को स्थान दे रहा है अन्यथा आर्यसमाज का छठा नियम बता रहा है कि स्वामी जी के विशाल और उदार हृदय मे केवल आर्यावर्त्त नही, अपितु ससार के हित-चिन्तन ने अपना विस्तृत भवन बनाया था।"

श्री मुखोपाध्याय का विचार है कि हिन्दुओ का आदर्श सुधारक वही हो सकता है, जो सत्यनिष्ठ हो—साथ ही सन्यासी भी हो। (वैसे लेखक का मत है कि सत्यनिष्ठा और सन्यास पर्यायवाची हैं।) स्वामी जी के लिए सत्य सर्वोपरि था और उनका संन्यास सर्वस्वसमर्पण वाला सन्यास था।

स्वामीजी की सत्यनिष्ठा कितनी पूर्ण थी और उनका संन्यास कितनी उच्च कोटि का था, यह हम लेखक के ही शब्दों में बतायेंगे, क्योंकि स्वामीजी के सही स्वरूप का चित्रण करने वाले इतने प्राणवान् शब्द हमें अन्यत्र कम पुस्तकों में ही देखने को मिले।

स्वामी जी की सत्यनिष्ठा के बारे में श्री मुखोपाध्याय लिखते हैं—सत्यनिष्ठा के गुण में दयानन्द अद्वितीय थे। नवम्बर सन् १८६९ मे जब दयानन्द काशी के आनन्दबाग में रहते थे, उनके व्याख्यानों से काशी में घोर आन्दोलन हो रहा था। उन्हें पराजित करने के लिए काशी में चारों ओर तैयारियां हो रही थीं और इसके लिए काशी नरेश के भवन में बार-बार पंडितों की सभायें एकत्र होती थी। उस समय काशी के कितने ही नामी पंडितों ने उनके पास जाकर एकान्त में कहा कि "स्वामी जी, आप जो कुछ कहते हैं, वह सभी सत्य है, किन्तु हमारा निवेदन है कि आप मूर्तिपूजा की बात छोड़ दें, फिर हम आपको शंकराचार्य का अवतार स्वीकृत कर लेंगे।" यह सुनते ही दयानन्द ने कहा कि "मैं यहां अवतार बनने नही आया। मैं केवल सत्य का पूजन करने वाला हूँ। समस्त भारतवर्ष में सत्य की प्रतिष्ठा हो, यही मेरी अभिलाषा है।" इसी प्रकार सन् १८७७ के प्रारम्भ में जब दयानन्द दिल्ली दरबार से लाहौर पहुंचे, तब वहां के प्रतिष्ठित पुरुषों ने स्वामी जी से कहा कि "यदि आप मूर्तिपूजा की बात छोड़ दें तो जम्मू-कश्मीर का महाराजा आप पर प्रसन्न होगा और आपके कार्य मे विशेष सहायता करेगा।" स्वामी जी ने क्षणमात्र भी विलम्ब न किया और स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया कि "मैं जम्मू-कश्मीर के महाराजा को प्रसन्न करूं या वेद प्रतिपादित ब्रह्म को। आप इस प्रकार की बात मुझसे फिर न कहना।"··· यह हो नहीं सकता था कि दयानन्द मूर्तिपूजा के विरोधी न रहें; क्योंकि मूर्तिपूजा सत्य के विरुद्ध थी और दयानन्द सत्य से विचलित नही हो सकते थे।···सुधारक सत्यनिष्ठ होता है। उसमें सत्य का अजेय और अमित बल होता है।···संसार में सत्य के सिवा ऐसा मुकुट नहीं, ऐसा रत्न नही, ऐसा राजदण्ड नहीं, ऐसा राजछत्र नहीं, जिसके धारण अथवा ग्रहण करने से मनुष्य सर्वत्र और सबके सम्मुख शका और संकोचरहित होकर जा सके। यही कारण है कि सुधारक किसी से विचलित नही होता। स्तुति और प्रशसा की बासुरी की तान सुनकर भी उमगाता नही और महाप्रतापी राजा के विरोधी होने पर भी उसकी गति क्षण भर के लिए भी नही रुकती।

सत्य मे निष्ठा रखने का ही दूसरा नाम सन्यास है। सन्यास के बिना मानव जीवन सत्य का साक्षी स्थल नही हो सकता और जब जीवन सत्य का साक्षी स्थल न होगा, तब उसके द्वारा सत्य की स्थापना भी न हो सकेगी।··· सचाई ही ससार-सागर का सेतु है, मानव समाज को एक रखने वाला सूत्र है। मानव जीवन के विकास और उन्नति का एकमात्र आधार है। सत्य में पूर्ण निष्ठा ही सन्यास है।···सन्यासी को मनुष्यमात्र को भाई समझकर गले लगाना होगा।···सन्यासी को प्रत्येक सत्य मे निष्ठा रखनी होगी—चाहे वह सत्य मौलिक हो अथवा अवान्तरिक।

आज उस सत्यनिष्ठ संन्यासी का निर्वाणदिवस है। स्वर्गीय डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया ने एक बार आर्यसमाज की एक सभा मे कहा था कि "आज जो फल हम चख रहे हैं, उनके बीज दयानन्द ने ही बोये थे।" हमारी कृतज्ञता की भावना हमें प्रेरित करती है कि आज के दिन हम उन बालब्रह्मचारी को शत-शत प्रणाम करें और दयानन्द का जीवन पढ़कर-लिखकर ही सन्तुष्ट न हो जायें, अपितु अपना जीवन भी उनकी अवधारणाओं के अनुरूप ढालकर सही अर्थों में उनका जीवन चरित्र लिखें—प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, महात्मा नारायणस्वामी और साधु टी. एल. वास्वानी की तरह।

—सत्यपाल शास्त्री

शताब्दी समारोह में मैंने क्या देखा ?

–सच्चिदानन्द शास्त्री–

आर्यसमाज का भव्य और विशाल रूप किसी विशेष समारोह के अवसर पर ही परिलक्षित होता है। समस्त उत्तर प्रदेश के आर्य नर-नारी जिस उत्साह के साथ सम्मेलन में भाग लेने लखनऊ आये थे, वह देखते ही बनता था। सीने पर ऋषि के चित्र के बिल्ले लगाये आर्य बन्धु नगर में अलग ही अपना परिचय दे रहे थे।

राष्ट्रभृत् यज्ञ के प्रारम्भ होते ही सारा वातावरण यज्ञमय हो गया। सारा डी० ए०-वी० कालिज प्रागण केसरिया ओ३म् ध्वजों से सजा हुआ था।

यज्ञ के बाद ध्वजारोहण समारोह आर्य वीर दल विद्यालयों के बच्चो की आकर्षक क्रीड़ा प्रतियोगिता के साथ हुआ।

शोभायात्रा का दृश्य अवर्णनीय था। सभी के मुख से ये शब्द सुनने को मिलते थे कि ऐसी भव्य शोभायात्रा लखनऊ मे कभी नहीं निकली। शोभायात्रा सगठन की शक्ति की परिचायक होती है। एक हजार आर्य वीर अपने गणवेश मे पंक्तिबद्ध होकर चल रहे थे।

आर्य प्रतिनिधि अपनी संस्थाओं के नामपटों के साथ ओ३म् ध्वज लेकर पंक्तिबद्ध चल रहे थे।

हाथियों पर बैठे सन्यासी सब का ध्यान अपनी ओर हो। खींच रहे थे। नंगी तलवारें लेकर अश्वारूढ़ आर्य वीर अपना अस्तित्व पृथक् ही दिखा रहे थे।

मार्ग में विभिन्न स्थानों से पुष्प वर्षा की जा रही थी।

शोभायात्रा का संचालन सभा के प्रधान श्री इन्द्रराजजी, मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी व कार्यकर्त्ता प्रधान श्री सच्चिदानन्द शास्त्री कर रहे थे।

बिना ऊपरी निगरानी के व्यवस्थित शोभायात्रा पथ सचलन कर रही थी एक सौ वर्ष का शक्ति प्रदर्शन आर्यों को आत्मबोध करा रहा था। सभी के चेहरो पर उत्साह और उमग की लहर थी। मधुर मुस्कान लिये आर्यजन वैदिक नाद गु जाते हुए जयघोष कर रहे थे। सारा वातावरण आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द से ओतप्रोत था।

शोभायात्रा को देखने वाला व्यक्ति एक स्थान पर खड़े होकर देखता तो पूरा जलूस चार घण्टे से कम मे देखने को नही मिलता। आठ किलोमीटर लम्बा और एक लाख के लगभग आर्यों का यह इकट्ठे देखने योग्य था।

आर्यसमाज सदस्यो की सख्या थोड़ी है पर किसी काम को करने की एक प्रक्रिया है, जिसके आधार पर इसका सगठन जब जीवनी शक्ति बनकर उभरता है, तब मानव के मन मे एक प्रश्न खड़ा कर देता है कि आखिर वह कौन-सी शक्ति है, जो आर्यों को राष्ट्रीय धारा में जोड़ने का काम करती है। अन्य मतों मे ऐक्य है पर वह जीवनी धारा नही है, जिसे महर्षि दयानन्द ने वेद का अनुशीलन करके दिया है। आर्यों ने अपनी मर्यादा को अक्षुण्ण रखा है। जब भी कोई राष्ट्रीय व धार्मिक जन जागृति का आन्दोलन चलता है, आर्यसमाज एक शक्ति बनकर सामने खड़ा दिखाई देता है।

अभी इस शक्ति को उभरे एक शताब्दी से कुछ ही अधिक समय हुआ है—आर्यसमाज ने इस अल्प समय में प्राचीन आदर्शों को जिस क्षमता से उजागर किया है वह प्रशसनीय है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक ने जो कहा है, उसी का प्रचार-प्रसार ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायियों का उद्देश्य है।

शताब्दी समारोह तो अभिव्यक्ति है—समय समय के कार्य ही आर्यसमाज की शक्ति के परिचायक हैं।

आर्यों, हमें ध्यान रखना है कि ऋषि के मिशन की सफलता मे कहीं कमी न आने पाये।

दे दीजिये ऋषिवर प्रवर

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति

विश्व के लोगो, यदि दयानन्द यति को जान लो।
वह कौन था ? क्या कर गया ? इस बात को पहचान लो॥
कल्याण होगा शीघ्र ही इसमें तो कुछ संशय नहीं।
मुक्ति मिलेगी शीघ्र ही बंधन का कोई भय नहीं॥
सृष्टि के आरम्भ से आया जो वैदिक धर्म था।
नर भुजङ्गों ने उसे डसना किया प्रारम्भ था॥
शुद्धि सुदर्शन चक्र से फण काट कर ठंडा किया।
वेद मन्त्रों की ध्वनि दी, ओ३म् का झंडा दिया॥
वैधव्य रोता था यहां, बलिभुक् बनी थी षोडशी।
आबाल वृद्धों की बरातें, जगमगाती दिशि-दिशि॥
अधिकार विधवा को दिया जीवन सुखी उसका किया।
बालायें विदुषी हो रहीं, पांडित्य फिर से ले लिया॥
शूद्र कुल में जन्म लेना ही महा अभिशाप था।
द्विज सुत निरक्षर भट्ट हों फिर भी बड़ा सम्मान था॥
ऋषिदेव के संदेश से अब शूद्र भी हैं पढ़ रहे।
बन वेद विद्या के धनी द्विजपद सुशोभित कर रहे॥
गोधन के क्रन्दन करुण से भारत धरा थी रो रही।
उस दिव्य ऋषि की आज है सर्वत्र चर्चा रही॥
जन्म से कांग्रेस के दस वर्ष पहले कह दिया।
परदेशियों के राज्य में सुख है नहीं वर दे दिया॥
जीवन पढो ऋषिराज का सत्यार्थ भी पढते चलो।
आर्य जीवन को बना फिर वेद पथ बढ़ते चलो॥
यदि त्याग दें ऋषिराज को इतिहास ही वीरान है।
उस युग पुरुष सदृश न अब तक हो सका इंसान है॥
संघर्ष मे जूझा निरन्तर विषपान करता ही रहा।
सब यन्त्रणायें थीं सही, अमृत पिलाता ही रहा॥
आज यदि यह विश्व सारा वेदपथगामी बने।
भ्रान्तियां सब दूर भागें शांति का मग फिर मिले॥
भगवान् भारतवर्ष को दयानन्द ऋषि फिर दीजिए।
है बढ़ रहा फिर से अंधेरा आलोक फिर भर दीजिए॥
भगवान भारतवर्ष को आनन्द-घन ऋषि दीजिए।
मनु पुत्र के उद्धार हित वेदार्थ चिन्तन दीजिए॥

आर्य बन्धुओ, एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करो

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

संसार के इतिहास में देखा जाता है कि समय-समय पर मानव जाति को उठाने के लिए कुछ विशिष्ट आत्मायें इस धरती पर अवतरित होती हैं। सृष्टि एक अरब सत्तानवे करोड़ वर्ष पुरानी हो चुकी है। महापुरुषों की लम्बी सूची में अनेक पराक्रमी व चक्रवर्ती राजा-महाराजा, ऋषि-मुनि, बड़े-बड़े योद्धा और उच्च कोटि के महामानव इस धरती पर पैदा हुए और अपना-अपना काम करके उसकी छाप संसार पर छोड़ गये।

संसार के इतिहास में प्रथम सम्राट् वैवस्वत मनु हुए थे। उन्होंने राज्य प्रणाली का प्रवर्तन किया और वेद के आधार पर उस समय की जनता को अपने-अपने कर्तव्य के पालन की ओर अग्रसर किया। इसी प्रकार सदियां बीतती गईं और बड़े बड़े महापुरुष अपना-अपना काम करके चलते रहे। इतिहास में उनकी अमर गाथायें आज भी हमारे सामने हैं। जनमानस इनसे हर समय प्रेरणा ले सकता है।

आर्य भूमि भारत में लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व महाभारत के युद्ध के पश्चात् बड़े-बड़े राजाओं और महाराजाओं का पतन हुआ और वैदिक धर्म का लोप होने लगा। महाभारत के पश्चात् भारत में धर्म का जो ह्रास हुआ, उसका दिग्दर्शन इतिहास के पृष्ठों में किया जा सकता है। राजनैतिक गिरावट के साथ-साथ धार्मिक गिरावट भी देश में आई और वैदिक धर्म अनेक मार्गों में बट गया। वाम मार्ग का उदय हुआ और वाममार्ग के कारण जैन और बौद्ध मत ने जन्म लिया। हिन्दू समाज वैष्णव, शाक्त आदि अनेक सम्प्रदायों में विभाजित हो गया, जिसके परिणामस्वरूप अनीश्वरवाद का प्रादुर्भाव हुआ।

जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार का सामना करने के लिए शंकराचार्य ने जन्म लिया और इन नास्तिक मतों का मुकाबला करने के लिए उन्होंने अद्वैतवाद का प्रतिपादन किया। जहां नास्तिक लोग प्रकृति की उपासना करते थे और ईश्वर की सत्ता से इनकार करते थे, वहां आचार्य शंकर ने प्रकृति का खण्डन कर केवल ईश्वर का प्रचार किया। इसके बाद महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने ईश्वर, जीव और प्रकृति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया और धर्म के नाम पर मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, छूत-छात आदि का घोर विरोध किया। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि धर्म के ह्रास के कारण राज्य का भी ह्रास हो गया है। इसलिए उन्होंने देश की राजनैतिक परिस्थितियों को सुधारने का काम किया, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दुओं में राजनैतिक और धार्मिक चेतना पैदा हुई।

सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में अपने देश में अपने राज्य का समर्थन किया और विदेशी राज्य की बुराइयों पर खुले रूप में अपने विचार जनता के सामने रखे।

सन् १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक अंग्रेज मि० ह्यूम ने की। उस समय कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता का कोई लक्ष्य नहीं था बल्कि डिप्टी कमिश्नर पुलिस अफसर आदि भारतीय हों, यही नारा था। इसी आधार पर मि० ह्यूम ने समझौता-वार्ता चलाई। महर्षि दयानन्द ने इससे १० वर्ष पूर्व आर्यसमाज की स्थापना करके पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग कर दी थी, जिसे सन् १९३० में कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में स्वीकार किया।

स्वामी दयानन्द ने सन् १८७२ में कलकत्ता के प्रवास काल में तत्कालीन वाइसराय के साथ जो भेंट की, उसमें वाइसराय ने महर्षि दयानन्द से कहा—स्वामी जी, आप ईसाई, मुसलमान, पौराणिक, जैन आदि मजहबों का खण्डन करते हैं, आपकी जान को कोई खतरा तो नहीं? यदि हो तो सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया जायेगा। महर्षि दयानन्द ने जवाब दिया—नहीं महोदय, आपके शासन में धर्मप्रचार में मुझे किसी प्रकार का खतरा नहीं। मुझे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पर विश्वास है। वही मेरा संरक्षक है। इस पर वाइसराय ने बहुत गंभीर भाव से कहा—महाराज, यदि हमारा शासन इतना अच्छा है तो जब आप उपदेश करते हैं, तो परमात्मा से प्रार्थना कर दिया करें कि अंग्रेजों का शासन बहुत दिनों तक चलता रहे। वाइसराय की यह बात सुनकर महर्षि दयानन्द का चेहरा तांबे की तरह लाल हो गया। उन्होंने कहा—अंग्रेज सरकार बहुत दिन तक चले, ऐसी प्रार्थना मैं नहीं कर सकता। मैं तो भगवान् से यही प्रार्थना करता हूँ कि अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायें। इस मुलाकात के बाद स्वामी दयानन्द के प्रति अंग्रेज सरकार का रवैया बहुत कठोर हो गया और उनके पीछे सी० आई० डी० लगा दी गई। उन्हें मरवाने के षड्यन्त्र किये जाने लगे।

जोधपुर में डा० अलीमर्दान खां, जिसने अन्तिम समय में महर्षि का इलाज किया था, वह भी अंग्रेजों का पिट्ठू था? राष्ट्रीय और धार्मिक चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द ने अजमेर में आज से ठीक १०३ वर्ष पूर्व दीपावलि के दिन इस संसार को त्याग दिया।

हम दो नवम्बर को युगपुरुष दयानन्द का निर्वाण दिवस मना रहे हैं। लोग कहते हैं कि आर्यसमाज को जनता को नया प्रोग्राम देना चाहिए। मेरा कहना है कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम बनाकर धर्म का जो स्वरूप हमारे सामने रखा है, वह इतना पूर्ण है कि उससे बाहर चिन्तन की कोई चीज नहीं रही।

मैं आर्य बन्धुओं से इतना ही कहना चाहता हूँ कि वे आपसी झगड़ों और मनमुटाव को दूर करें। यही दुर्भावनायें आर्यसमाज की प्रगति में रोड़ा हैं। हमें एक-दूसरे पर विश्वास करके एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। हम यज्ञों के माध्यम से धार्मिक वृत्ति का प्रचार करें। घर-घर में वैदिक ज्योति जलायें—धर्म का प्रचार-प्रसार करें।

३६ वर्ष की स्वतन्त्रता का सिंहावलोकन करते हुए मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि इस समय राजनैतिक पार्टियां धर्मनिरपेक्षता की आड़ में भारत के बहुमत की पग-पग पर उपेक्षा कर रही हैं। इन सबका मुकाबला करने के लिए आर्यसमाज को हिन्दुओं का एक प्रबल संगठन खड़ा करके ईसाइयों, मुसलमानों और सिखों के अलगाववाद के नारे का देश भर में सक्रिय विरोध करने के लिए जन आन्दोलन चलाना चाहिए। आज चुपचाप काम करने का युग नहीं—प्रोपेगण्डे की भी बहुत आवश्यकता है। आर्य बन्धु इस दिशा में भी जागरूक रहें।

निर्वाण दिवस पर युगद्रष्टा स्वामी दयानन्द के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को अपने कार्यक्रम का अंग बनायें।

दयानन्द युगपुरुष नहीं, कल्पपुरुष थे

–स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'–

दयानन्द विशेषणातीत है। वह इतना महान् है कि किसी भी भाषा का कोई भी विशेषण उसकी महत्ता को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता। दयानन्द दयानन्द ही था। दयानन्द के जीवन में पतन एक बार भी नहीं हुआ था। वह जन्म-जन्म का कोई सिद्ध आत्मा था अथवा मोक्ष से आया हुआ कोई मुक्त आत्मा। अतः उसके पतन की कोई संभावना ही न थी। वह जन्म से अन्त तक निरन्तर उठता चला गया और ऊर्ध्व स्थिति में ही उसकी अमर आत्मा ने उसके नश्वर शरीर का त्याग किया।

दयानन्द को मैं युगपुरुष नहीं, कल्पपुरुष मानता हूं। उसका एक-एक स्वप्न सिद्ध-सार्थक हो कर रहेगा। कृष्ण के बाद दयानन्द ही वह युगपुरुष है, जो कल्पपुरुष था। जब भी मुझे दयानन्द का ख्याल आता है, मेरी आंखों के सामने दयानन्द के रूप में सर्वबलसम्पन्न, एक अदम्य और निर्भय ज्योतिष्पुञ्ज खड़ा दिखाई पड़ता है, जो न केवल इस पृथिवी के प्रवाह को निम्नतम से उच्चतम की ओर प्रेर रहा है, वेद और सृष्टि के गुह्यतम रहस्यों का भी उद्घाटन पर उद्घाटन करता चला जा रहा है, जो न केवल असत्य की जड़ों पर कुठाराघात कर रहा है, सत्य पर छाये आवरणों को भी छिन्न-भिन्न कर रहा है। जो न केवल खण्डहरों को ढा रहा है, सदा नवीन आधारों पर नये निर्माणों में भी जुटा हुआ है। दयानन्द देव था। वह अन्त तक अदम्यता के साथ अकेला चला और अकेला बोला। उसने स्पष्टता के साथ सत्य का प्रकाश किया। उसने गहनता और सतर्कता के साथ वेदार्थ के विकास का पथ प्रशस्त किया। उसने निर्भयता के साथ स्वराज्य और स्वतन्त्रता का उद्घोष किया। महान् साधना ने ही उसे देव बनाया।

सत्य ही संन्यास का लक्ष्य है और सत्य ही संन्यासी की परम सम्पदा है। धर्म की ही नहीं, जीवनसर्वस्व की रक्षा सत्याश्रित है। सचमुच सत्य दयानन्द का अन्यतम नियम और अवलम्ब था। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग दयानन्द का अन्यतम नियम था। यह दयानन्द की चरम प्रशस्ति है।

यह गलत है कि दयानन्द वैराग्य से पीड़ित होकर संन्यासी बना था। वह तो शिव की प्राप्ति और मृत्यु पर विजय के राग से अनुरक्त होकर घर से निकला था।

महर्षि दयानन्द जन्म से ही चारित्रिक और नैतिक वृत्ति के धर्मात्मा व्यक्ति थे। गुप्त क्रांति, विप्लव अथवा षड्यन्त्र का उनके स्वभाव में सर्वथा अभाव था। उनके सम्पूर्ण जीवन, कार्य अथवा साहित्य मे ऐसी वृत्तियों का कोई चिह्न या लक्षण दृष्टिगोचर नही होता। वे जो कुछ कहते या करते थे, सब स्पष्ट और प्रत्यक्ष होता था। गोपनीयता उनमें थी ही नहीं।

आदि से अन्त तक दयानन्द का जीवन और दयानन्द की कृतियां व्याख्या की अपेक्षा रखती हैं। वेद-शास्त्रों की व्याख्याएं दयानन्द के जीवन से ऐसी गुंथ गई हैं कि दयानन्द के जीवन की व्याख्या के बिना दयानन्द के ग्रन्थों की व्याख्याएं की ही नहीं जा सकतीं।

संसार में अद्यावधि जितने महापुरुष हुए हैं, वे प्रायः एकांगी थे। दयानन्द का व्यक्तित्व और जीवन इतना सर्वांगी था कि उसके एक-एक अंग पर यथावत् प्रकाश डालने के लिए अनेक अर्पित और सुविज्ञान्, इतिहासज्ञ जीवनवृत्त-लेखकों की आवश्यकता होगी। दयानन्द के जीवन की कहानी-मात्र लिखने से संसार को दयानन्द के आलोकित स्वरूप की झांकी मिलना सर्वथा असम्भव है। दयानन्दकृत सम्पूर्ण साहित्य का जिसने योगस्थ होकर अध्ययन नही किया, दयानन्द के सम्पूर्ण पत्रव्यवहार का जिसने तात्त्विक दृष्टि से अनुशीलन नहीं किया, दयानन्द-युगीन भारत और विश्व का जिसने इतिवृत्त नही जाना, भारत मे अंग्रेजी राज के दयानन्द-सम्बन्धी सरकारी रिकार्ड को जिसने नही पढ़ा, किन परिस्थितियों में दयानन्द ने क्या-क्या, कितना-कितना किया और किस प्रकार किया, इस तथ्य का जिसने विश्लेषण नहीं किया, और साथ ही दयानन्द की अध्यात्मसाधना तथा विद्योपार्जन की प्रक्रियाओ और परिक्रियाओ का जिसे ज्ञान नहीं, दयानन्द की आहों और वाहों की जिसे अनुभूति नही है, वह दयानन्द की जीवनी को विश्व के सामने प्रस्तुत करने में पूर्णतया सफल न हो सकेगा। दयानन्द की भारतीयता तथा सार्वभौमिकता को अभिन्नता के साथ प्रस्तुत कर सकना कोई सरल काम नहीं।

महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' में राजनीति पर एक स्वतन्त्र समुल्लास लिखा है और धर्मार्यसभा तथा विद्यार्यसभा के अतिरिक्त राजार्यसभा की स्थापना का भी विधान किया है। महर्षि दयानन्द ने ही देश में राजनैतिक चेतना तथा राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न की थी।

'आर्याभिविनय' में महर्षि दयानन्द ने जिस 'अखण्ड चक्रवर्ती सार्वभौम आर्य साम्राज्य' का संकेत किया है, वह शस्त्रास्त्र से सम्पादन किया जाने वाला साम्राज्य नही है। विश्व के आर्यकरण तथा वैदिकीकरण द्वारा निष्पादन किया जाने वाला साम्राज्य है। वेदों की साक्षार विश्वव्याप्ति और संस्कृत के साभ्यास विश्व-प्रसार से विश्व के मानव-मानव का आर्यकरण करके जिस विश्व-कौटुम्ब्य की स्थापना होगी, वही दयानन्द की कल्पना का वास्तविक 'अखण्ड चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य' होगा।

वेद और दयानन्द दोनों ही साम्राज्यवादी हैं। 'आर्याभिविनय' में महर्षि दयानन्द ने स्थान-स्थान पर प्रार्थना की है कि प्रभो, हम आर्यों का इस समस्त भूमण्डल पर सार्वभौम अखण्ड चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य हो। सार्वभौम अखण्ड चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य की ध्वनि तो 'सत्यार्थप्रकाश' में भी ध्वनित हो रही है।

शंकराचार्य के बाद एक पुरुष प्रकट हुआ था, जिसका नाम दयानन्द था। उसने भी भारत के राजाओं को अपने साथ लेना चाहा था पर अंग्रेजी साम्राज्य के अंकुश के कारण वह अपने मिशन में सफल न हो सका। दयानन्द आया। उसने भी शंकर-वत् ब्रह्मचर्य, योग पाण्डित्य के आश्रय से भागीरथ प्रयत्न किया। सारे देश में वह ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, डगर-डगर घूमा। उसने डेरे डेरे और कुटीर-कुटीर में सहायता के लिए झांका। उसने यतियों और विद्वानो का आह्वान किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आपके लिए विरासत मे जितनी प्रशस्त और प्रचुर सम्पदा छोड़ी है, उतनी अन्य किसी आचार्य ने नही छोड़ी। उन्होंने आपके हाथो में वेदभाष्य दिया है, सत्यार्थयुक्त गहन और सघन साहित्य दिया है, जिसके आश्रय से आप प्रत्येक दिशा और पार्श्व मे बहुत आगे बढ़ सकते थे।

काश, हमने दयानन्द के आदेश का पालन करके वास्तविक रूप से वेदों को अपनाया होता तो अब तक हम उस छोर तक विश्व का आर्यकरण कर चुके होते।

ऋषे, काश, तेरे अनुयायियो ने वेदों को सच्चे हृदय से अपना कर ठीक ढंग से वेदप्रचार किया होता तो आज सारा संसार वेदमाता के सामने नतमस्तक हो रहा होता।

दयानन्द ने कहा था कि 'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् भी हो तथापि उसका नाश और अप्रियाचरण सदा किया करे, अर्थात् जहां तक हो वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।' (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश)

दयानन्द की यह आवाज वह तराजू है जिस पर हर इन्सान चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, अपने आपको तोल कर यह जान सकता है कि वह मनुष्य है या पशु। दयानन्द की इस आवाज में मत, सम्प्रदाय, धर्म, देश या राष्ट्र का भेद नहीं है। यह तो मानवता की वह कसौटी है, जिस पर हर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने आपको कस कर देख सकता है कि वह खरा है या खोटा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दयानन्द : 'विद्रोही फकीर'

पिछले कुछ वर्षों से आर्यसमाजी क्षेत्रों में इस बात की चर्चा रही है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में महर्षि दयानन्द क्या कर रहे थे। इस बात में तो सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। नीचे लिखी घटना से उनकी तीव्र देशभक्ति की भावना पर प्रकाश पड़ता है।

ऋषि दयानन्द ने कलकत्ता में कुछ दिन भाषण दिये थे। कभी-कभी कलकत्ता के प्रमुख पादरी विशाल सभा का सभापतित्व करते थे। वे ऋषि दयानन्द के इस्लाम और ईसाइयत के सम्बन्ध में अगाध ज्ञान को देखकर विस्मित हो जाते थे। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता था कि अरबी और अंग्रेजी न जानते हुए भी उन धर्मों की इन्हें कितनी गहरी जानकारी है।

कलकत्ता के उस पादरी से तत्कालीन वाइसराय लार्ड नार्थब्रुक ने स्वामी जी की विलक्षण प्रतिभा की बात सुनकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने उनसे दुभाषिये के जरिये बातचीत की। इस बातचीत से ऋषि दयानन्द के हृदय की देशभक्तिपूर्ण भावना प्रकट होती है। लार्ड नार्थब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इण्डिया आफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को इस 'विद्रोही फकीर' पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। इण्डिया आफिस को भेजे गये विवरण के अनुसार यह बातचीत निम्न प्रकार हुई थी—

वाइसराय—मुझे बताया गया है कि आप अन्य धर्मों पर जो कटु प्रहार करते हैं उनसे हिन्दुओं और मुसलमानों में आप के प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको यह भय है कि आप के विरोधी आप पर कोई आक्रमण करेंगे? विशेष रूप से मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता है?

ऋषि दयानन्द—मुझे इस राज्य में अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने की पूरी स्वाधीनता है। मुझे अपने ऊपर किसी के द्वारा आक्रमण का किसी प्रकार का भय नहीं है।

वाइसराय—पण्डित दयानन्द, यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिये गये शान्ति और सुख के वरदान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा के कुछ उद्‌गार प्रकट करेंगे और अपने उपदेशों के साथ की जाने वाली प्रार्थनाओं के समय भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थिरता बने रहने की चर्चा करेंगे?

दयानन्द—मैं किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों के विकास और संसार के राष्ट्रों में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए भारतवर्ष शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे।

"मैं प्रतिदिन प्रातः-सायं भगवान् से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हूं कि वह दयालु भगवान् मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करें।"

लार्ड नार्थब्रुक ने तो इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने एकदम बातचीत समाप्त कर दी। इस ने वाइसराय के हृदय में ऋषि दयानन्द के उद्‌देश्यों और कार्य के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न कर दिया। तभी उन्होंने सरकार को इस 'विद्रोही फकीर' से सावधान रहने की सलाह दे दी।

प्रेषक—कृष्णदत्त एम०ए०, बी०एड०, हैदराबाद

दीवाली

जग से अज्ञान अंधेरे को मिटाना होगा।
प्रेम की दीप हर इक दिल में जलाना होगा॥
वेद के ज्ञान की घर-घर में जगा दो ज्योति।
पर्व इस भांति दीवाली का मनाना होगा॥

देव दयानन्द

(१)

सारे संसार के मानव को जगाया तुमने।
फिर से पतझड़ को मधु मास बनाया तुमने॥
दीप अपना तो स्वयं तुमने बुझा कर 'शीतल'।
अपने इक दीप से हर दीप जलाया तुमने॥

(२)

तेरे ऋण से न उऋण कोई ऋषिवर होगा।
जग में मानव का कोई तुमसा न हितकर होगा॥
सत्य तो यह है कोई मुझसे जो पूछे 'शीतल'।
तुम-सा मानव न हुआ और न कोई होगा॥

—जगदीशशरण 'शीतल', चांदपुर

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष : दान की अपील

पंजाब की आर्य-हिन्दू जनता अभी भी संकट में है। आतंकवादी हत्यारों के भय से अभी भी लोग पंजाब छोड़कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र आ रहे हैं। ये लोग आर्यसमाज मन्दिरों और सनातन धर्म मन्दिरों में डेरा डाले पड़े हैं। आपसे अपील है कि संकट के इस समय में इन लोगों की तन-मन-धन से सहायता करें।

धन और सामान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

ऋषि दयानन्द के आने से पहले

–क्षितीश वेदालंकार–

ऋषि दयानन्द के आने से पहले भारत की स्थिति क्या थी, इस पर विचार करते समय हम इतिहास को दो खण्डों में बांट सकते हैं। एक खण्ड वैदिक काल का और दूसरा खण्ड अवैदिक काल का। सामान्य दृष्टि से महाभारत से पूर्व के समय को हम वैदिक काल और उसके परवर्ती समय को अवैदिक काल कह सकते हैं। अवैदिक काल में किस प्रकार तन्त्र, वाम मार्ग, शैव, शाक्त, चार्वाक, आभाणक, बौद्ध, जैन आदि मतों की स्थापना हुई, इसका लम्बा इतिहास है।

वेद से विहीन होने के पश्चात् ही तंत्र आदि मतो का प्रचलन हुआ। उसके बाद चार्वाक ने जिस प्रकार वेद विरोधी मत का प्रचार किया उसके मूल मे मुख्य कारण था ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रक्षिप्त वचन और महीधर आदि की वेदों का दूषित अर्थ करने की परम्परा। जब वेद के नाम पर यज्ञों में पशु हिंसा के बीभत्स दृश्य उपस्थित होने लगे, तब इस उग्र हिंसा की प्रतिक्रिया बौद्ध और जैन मतों की अतिवादी अहिंसा के रूप में प्रकट होनी स्वाभाविक ही थी।

धीरे-धीरे बौद्ध धर्म और हिन्दू धर्म के मिश्रण से नई शाखा चल पड़ी, जिसका नाम महायान पड़ा। नालन्दा, विक्रमशिला आदि विख्यात विद्यापीठ इसके गढ़ बने। इसी उदारता का परिणाम था कि विचार-भेद होते हुए भी धर्म के नाम पर अत्याचार इस देश में नहीं हुए। परन्तु साथ ही यह भी कहना पड़ेगा कि इसी उदारता ने भारतवर्ष के धर्म को खिचड़ी धर्म बना दिया। जो उदारता एक गुण थी, वही एक दोष भी बन गई। विशुद्ध वैदिक धर्म इधर-उधर की मिलावट के कारण एक खासा अजायबघर बन गया।

इसके बाद इस खिचड़ी धर्म को शुद्ध करने का प्रयत्न शंकराचार्य ने किया। उनके दार्शनिक सिद्धांतों ने बौद्धों के नास्तिक रूप को उजागर करके एकेश्वरवाद की स्थापना तो की, परन्तु आचार्य शंकर के अद्वैतवाद ने दुनिया की व्यावहारिकता को भुला दिया। परिणामस्वरूप उनका विशुद्ध धर्म पण्डित-मण्डली के लिए ही रह गया और आम जनता के व्यवहार में नही उतर पाया।

इसके बाद रामानुजाचार्य ने अद्वैत या वेदान्त की इस एकांगिता को दूर करके उसे कुछ अधिक व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया और उससे भिन्न-भिन्न जातियो को परस्पर मिलने में बहुत-कुछ सहायता भी मिली, परन्तु तब तक पश्चिमोत्तर से आये हुए इस्लाम के तूफान ने भारतवर्ष को घेर लिया, जिससे वैदिक धर्म की प्रगति रुक गई। जैसे बाज को देखकर चिड़िया अपने पंख सिकोड़ कर बैठ जाती है, वैसे ही इस्लाम के बवण्डर ने भारतवासियो को सिवाय आत्मरक्षा के और कुछ सोचने का अवसर नही छोड़ा।

सन् १००० ईसवी से लेकर अब तक आर्य जाति को आत्मरक्षा के लिए संघर्ष से गुजरना पड़ा। उसे इस्लाम और ईसाइयत के मुकाबले में अपनी आत्मरक्षा के लिए तरह-तरह के उपाय अपनाने पड़े। इस युग में व्याकरण, न्याय और काव्य के धुरंधर विद्वान् इस देश मे पैदा हुए। परन्तु जाति के धार्मिक और सामाजिक संगठन पर उसका कोई व्यापक असर दिखाई नही देता। जाति ऐसे संकट में फंस गई थी, जिससे व्याकरण की फक्किकायें और नव्य न्याय की कंदलिकायें उद्धार नहीं कर सकती थी।

इस्लाम के आगमन के बाद

११वीं शताब्दी के प्रारम्भ मे भारत पर मुसलमानों का पूरा आक्रमण प्रारम्भ होता है। यह आक्रमण केवल राजनैतिक नहीं था, मुख्य रूप में धार्मिक था। राजनीति उसका केवल एक माध्यम थी। 'तेगों के साये में पल कर बड़े' होने वाले अपनी तेग के जोर से ही भारत को मुसलमान बनाने आये थे। इस्लाम के रूप में जो नई शक्ति उदय हुई थी वह मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया को रौंदती हुई जब भारतवर्ष पहुंची तब उस समय का छिन्न-भिन्न भारत जिस स्वल्प प्रयत्न से राजनैतिक पराधीनता में आ गया, इससे शायद आक्रमणकारियों को भी आश्चर्य हुआ हो। परन्तु यह निश्चय से कहा जा सकता है कि संसार के अन्य देशों में इस्लाम को जितनी सफलता मिली उतनी सफलता भारत में नहीं मिली।

कई सदियों तक पराधीन रह कर भी भारत मुसलमानों की राजनैतिक शक्ति के मुकाबले भले ही अपनी संगठित राजनैतिक शक्ति खड़ी न कर सका हो, किन्तु उसने अपने धार्मिक संगठन में समयानुकूल परिवर्तन करके आत्म-रक्षा के लिए अपने आपको अवश्य सन्नद्ध कर लिया।

इस काल मे भारतीय धर्म में हमें जो उतार-चढ़ाव दिखाई देते हैं वे दो प्रकार के हैं। एक ओर बाहरी आक्रमण को रोकने के लिए खाइयां खोदी जा रही थी, तो दूसरी ओर धर्म का विश्वव्यापी रूप उपस्थित करके इस्लाम को आत्मसात् करने का प्रयत्न किया जा रहा था। इन दोनों ही प्रयत्नों में बाहरी असर था। सती प्रथा, पर्दा, खानपान के बंधन, जात-पात के कड़े विभाग तथा छूत-छात—ये ऐसी बाड़ें थीं जिनका उद्देश्य इस्लाम से भारतीय धर्म की रक्षा करना था।

परन्तु जो बाध इस्लाम की गति को रोकने के लिए बनाये गये थे, वे पूरी तरह लाभदायक सिद्ध नही हुए। उन्होने शुद्ध हवा का प्रवेश रोक दिया और उन्नति के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ी। धर्म की प्रगतिशीलता के प्रवाह को किनारों से घेर कर काई, मच्छर और कीचड़ का घर बना दिया। किले के अन्दर घुसे रहकर शत्रु को नष्ट नहीं किया जा सकता। उसके लिए तो किले से निकल कर टूट पड़ना ही एकमात्र उपाय है। दुर्भाग्य से उस समय के हिन्दू धर्म में यह माद्दा नहीं आ पाया। १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक हम भारत को इन्हीं जंजीरों से बंधा हुआ पाते हैं।

सम्प्रदायों का बाहुल्य

धीरे-धीरे आत्मरक्षा के लिए किले के अन्दर बैठे हुए हिन्दू मतावलम्बियों में भी आपस में फूट पड़ने लगी और अनगिनत सम्प्रदाय पैदा हो गये। इन सम्प्रदायों की संख्या का कुछ अनुमान इस बात से लग सकता है कि ऋषि दयानन्द के आने से पहले वहां वैष्णवों के २० सम्प्रदाय थे, वहां शैवों के ७ और शाक्तों के १४ सम्प्रदाय थे। आश्चर्य की बात यह है कि एक ही मत के होने पर भी ये एक-दूसरे का विरोध करते थे और अपने को सच्चा तथा दूसरे को झूठा कहते थे।

विदेशी तूफान

भारत इस दौर से गुजर ही रहा था कि १९वी सदी में एक नया विदेशी तूफान शुरू हो गया। उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी आकांक्षाओं से ओतप्रोत यूरोपियन जातियां अपनी आखेट भूमि की टोह लगाती हुई भारत के समुद्री सीमान्तों पर आ उतरीं। यूरोपियन जातिया अपने साथ दो चीजें लाईं—एक ईसाइयत और दूसरी पाश्चात्य सभ्यता। इस्लाम तलवार के साथ आया था, इसलिए जिस वेग से वह फैला, उसी वेग से उसका प्रतिरोध भी हुआ। परन्तु ईसाइयत का प्रवेश दूसरे ढंग से हुआ। ईसाइयत के प्रचार में शिक्षणालय, प्रचार का संगठन और प्रलोभन—ये तीन साधन प्रधान थे। ईसाइयों ने अपने स्कूल-कालेज खोलकर भारतीयों के मस्तिष्क को अपने विचारों से प्रभावित करने का प्रयत्न किया और उसमें उन्हें सफलता भी कम नही मिली। उनका प्रचार-सम्बन्धी संगठन पहले ही बहुत बढ़िया था। भारत में आकर जब उन्हें राज्य का प्रश्रय मिला तो मिशनरियों को भारत के सुदूरवर्ती जंगलों तक पहुंचने में कोई बाधा नहीं हुई। इसके अतिरिक्त जितने भारतवासी ईसाई बने, उनका सामाजिक दर्जा चाहे कुछ भी क्यों न रहा हो, किन्तु उनके ईसाई बनाने में तरह-तरह के प्रलोभनों का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है। भारतवासियों ने अपने सहज विश्वासी मन से बिना किसी आशंका के ईसाइयों का और उनके द्वारा लाई गई पाश्चात्य सभ्यता का हृदय से स्वागत किया। कई प्रतिष्ठित भारतवासी, जो शायद तलवार का डर दिखाने पर अपना धर्म छोड़ने की बजाय तलवार के घाट उतर जाना ज्यादा पसन्द करते, वे भी ईसाइयत के इस मन्द विष (स्लो पायजन) के शिकार होकर स्वेच्छा से ईसाई बन गये। जिस पेचदार ढंग से ईसाइयत भारत के दुर्ग में प्रवेश कर रही थी उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि ईसाइयत और हिन्दूपन के भेद को समाप्त कर देने वाले आन्दोलन भी इस देश में प्रारम्भ हुए। यदि ब्राह्म समाज के इतिहास को विस्तार से पढ़ा जाये तो प्रतीत होगा कि उनके नेताओं का उद्योग ईसाइयत और हिन्दू धर्म के

मध्यम रूप को मिलाकर दोनों को साथ-साथ दीर्घजीवी बनाना था।

ईसाइयों ने किस प्रकार धीरे-धीरे इस देश के जीवन पर प्रभाव डाला, उसके कुछ थोड़े-से उदाहरण हम यहां देते हैं। सन् १८०० में लार्ड वैल्जली ने फोर्ट विलियम में जो कालेज खोला था उसमें यह शर्त रखी थी कि वहां कोई ऐसा व्यक्ति प्राध्यापक नहीं बन सकता, जो ब्रिटिश सम्राट् के प्रति वफादारी की शपथ न ले और ईसाइयत के विरोध में निजी या सार्वजनिक रूप में कभी कोई वाक्य अपने मुख से निकाले। इस कालेज के सब से बड़े पद पर एक पादरी को रखा गया था, जिसका काम यह था कि भारत सरकार की सेवा मे जाने के लिए फोर्ट विलियम मे आने वाले लोगों को ईसाइयत की नैतिकता सिखाये। इतना ही नहीं, ६ फरवरी, १८०० को भारत का गवर्नर-जनरल, मुख्य न्यायाधीश और कमाण्डर-इन चीफ तथा अन्य उच्च पदाधिकारी पैदल कलकत्ते के नये चर्च में गये थे और उन्होंने मैसूर पर अंग्रेजों की विजय के लिए परमात्मा को धन्यवाद दिया था और सारे राष्ट्र को धन्यवाद दिवस के रूप में वह दिवस मनाने का आदेश दिया था। लार्ड वैल्जली ने ही सबसे पहले सरकार की ओर से बाइबल का बंगला, हिन्दुस्तानी, मराठी, तमिल, रूसी और चीनी भाषा में अनुवाद करने के लिए सरकारी सहायता दी थी। श्रीरामपुर में १८१८ मे जो कालेज खोला गया था, उसका उद्देश्य ही लोगों को ईसाई बनाना था। १८१८ में मिशन प्रेस ने ७०,००० ट्रैक्ट और पैम्फ्लिट छाप कर बांटे थे। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप मिशनरियों के आन्दोलन के उत्तर में उस समय के कुछ ब्राह्मणों ने मिलकर एक 'ब्राह्मणिकल मैगजीन' भी निकाली थी।

ब्रिटिश सरकार ने लार्ड केनिंग को गवर्नर-जनरल बनाकर हिन्दुस्तान भेजते समय साफ-साफ कह दिया था कि ब्रिटिश सरकार तुरन्त न सही; लेकिन अन्तिम रूप में ऐसा विश्वास करती है कि भारतवासियों का धर्मान्तरण हो जायेगा। १८२७ मे एक एक्ट बनाया गया था, जिसमें यह व्यवस्था की गई थी कि जो हिन्दू ईसाई धर्म ग्रहण कर लेगा, उसके किसी केस का फैसला हिन्दू या मुसलमान न्यायाधीश नही कर सकता।

सामाजिक स्थिति

जहां तक सामाजिक अवस्था का सम्बन्ध है उसके लिए हम राजा राममोहन राय का उद्धरण उपस्थित करते हैं —

"बंगाल और तिरहुत के ब्राह्मणों मे यह आम प्रथा है कि शादी के बहाने कन्याओं का विक्रय किया जाता है और उनमें से कई ३०-४० तक लड़कियों से विवाह कर लेते हैं जिनका उद्देश्य केवल पैसा और वासना-पूर्ति होता है। आश्चर्य की बात यह है कि इस प्रकार के कामो को ब्रिटिश राज्य का समर्थन प्राप्त है।"

वर्णव्यवस्था जिस विकृत रूप मे प्रचलित थी उसमे भी गुण और कर्म की बजाय केवल जन्म का ही महत्त्व था। छोटी जाति का कोई व्यक्ति कभी किसी ऊंची जाति वाले के समकक्ष व्यवहार की आशा नहीं कर सकता था। कोई बड़े से बड़ा राजा भी चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, किसी ब्राह्मण को अब्राह्मण नहीं बना सकता था और किसी अब्राह्मण हिन्दू को चाहे वह कितना ही प्रतिभाशाली, सुशिक्षित और अन्य गुणों से सम्पन्न क्यों न हो, उसे ब्राह्मणत्व का दर्जा नही दे सकता था। एक जाति के लोग दूसरी जाति में विवाह करने को पाप समझते थे। नीची जातियों का जीवन इतना दयनीय था कि वे अपनी लड़कियों को छोटी उम्र में ही धनी मुसलमानों को बेच दिया करते थे।

विधवाओं की जैसी बुरी दशा थी उसका वर्णन करने की आवश्यकता ही नहीं। यद्यपि हिन्दू विधवा ऐक्ट बना हुआ था किन्तु उस पर कभी अमल नहीं होता था। ऋषि दयानन्द को दुःखी होकर यहा तक कहना पड़ा था कि भारतवर्ष को जो दुर्दिन देखने पड़े हैं उसका कारण विधवाओं का अभिशाप ही है।

राजपूतों और क्षत्रियों मे कन्याओं के जन्म लेते ही उन्हें मार देने की प्रथा थी। अकाल के दिनों मे बंजारे और आदिवासी लोग अपने बच्चों को बेच दिया करते थे। किसी पशु या व्यक्तियों के बीमार पड़ जाने पर यह समझा जाता था कि अमुक जादूगरनी के कारण यह बीमार हुआ है, इसलिए जिस महिला पर काले जादू का शक होता था उसे मार दिया जाता था। उड़ीसा की जंगली जातियों में नरबलि तक की प्रथा थी।

सांस्कृतिक अवस्था

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने १७६१ में राजनैतिक सत्ता हथियाने के बाद भारतीयों को शिक्षित करने के लिए कलकत्ता, मद्रास और बनारस में स्कूल खोले। कम्पनी शुरू-शुरू में केवल संस्कृत और अरबी ही पढ़ाना चाहती थी। भारतीयों को पाश्चात्य पद्धति से शिक्षा देने का उसका कोई इरादा नहीं था। परन्तु श्री चार्ल्स ग्राण्ट का यह विचार था कि भारतीयों को पश्चिम का ज्ञान सिखाये बिना वे अपने अन्धविश्वासों और कुरीतियों से नही निकल सकते। इसलिए धीरे धीरे अंग्रेजी साहित्य के माध्यम से भारतीयों को शिक्षित करने के लिए ईसाई अध्यापकों की व्यवस्था की गई। इस शिक्षा का प्रारम्भ बंगाल से हुआ। शुरू-शुरू में बंगाली फिरंगियों को अपना माई-बाप समझते थे और हर चीज में उनकी नकल करने की कोशिश करते थे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने अपने अंग्रेज प्रभुओं की तरह ही सोचना भी प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेजी के अखबार पढ़ना, क्लब में जाना और अंग्रेजी ड्रेस पहनना तथा सिगरेट और चुरुट पीना फैशन बन गया था। हर एक हिन्दुस्तानी चीज से घृणा प्रकट करना भी फैशन का हिस्सा बन गया। परन्तु बहुत जल्दी बंगाली बाबू ने जान लिया कि वे देश की सरकार में अंग्रेजों के समान दर्जा प्राप्त नहीं कर सकते। उनमें से कई लोगों ने इंग्लैण्ड जाकर आई० सी० एस० की परीक्षा पास की, परन्तु वहां भी उनकी महत्त्वाकांक्षा के पर कट कर रह गये।

भारतीय लोग स्वयं अपने दर्शन और तत्त्वज्ञान का उपहास करने लगे और भौतिकवाद तथा यथार्थवाद की विचारधारा जन्म लेने लगी। बर्कले और काण्ट के सामने भारतीय षड्दर्शनों को ठुकरा दिया गया और कालिदास के स्थान पर शेक्सपीयर और मिल्टन आ बैठे।

यहां यह उल्लेख करना मनोरंजक होगा कि उस युग में जहां भारतीय लोग अपने धर्म और अपने दर्शन को तिलांजलि दे रहे थे, वहां यूरोपियन लोग संस्कृत की महिमा को समझने लगे थे और संस्कृत के कई ग्रन्थों का अंग्रेजी मे अनुवाद करने लगे थे। संक्षेप मे कहना चाहिए कि वे हमी को हमारे प्राचीन वाङ्मय की महिमा से परिचित कराने लगे थे। कैरे ने १८०१ के तीन खण्डों में वाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया था। बम्बई सरकार ने ऐतरेय ब्राह्मण की २०० प्रतियां वितरित की थी और बंगाल के स्कूलों-कालेजों मे 'शकुन्तला' का अंग्रेजी अनुवाद प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कार के रूप मे दिया गया था। रौथ ने १८४६ में 'हिस्ट्री आफ दि वेद' नामक अपना निबन्ध प्रकाशित किया था। मैक्समूलर ने ३० साल तक लगातार वेदों का अध्ययन करके उन पर अपना भाष्य प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया था और कनिंघम ने भारतीय कला और पुरातत्त्व की नींव डाल दी थी। इस सिलसिले मे विलियम जोन्स का योगदान तो स्मरणीय है।

सन् १८५७ मे कार्ल मार्क्स ने लिखा था, "हिन्दुस्तान मे जितने भी गृह-युद्ध, आक्रमण, क्रांति या विजय अभियान हुए हैं, वे सब धरातल को ही छू कर रह गये हैं। इंग्लैण्ड ने भारतीय समाज के सारे ढांचे को तोड कर रख दिया है और उसके पुनर्निर्माण के कोई संकेत नजर नहीं आते। उसकी पुरानी दुनिया खत्म हो चुकी है और नई दुनिया आई नहीं। इस स्थिति ने हिन्दुओं के मन में एक विचित्र तरह की उदासी और उदासीनता पैदा कर दी है और ब्रिटेन द्वारा शासित हिन्दुस्तान अपनी समस्त प्राचीन परम्पराओं और अपने प्राचीन इतिहास से कट कर रह गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

विभिन्न क्षेत्रों में ऋषि दयानन्द से पूर्व भारत की स्थिति का उल्लेख करने के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का भी उल्लेख कर देना आवश्यक है। १८वीं सदी के अन्त से पहले फ्रांस में क्रान्ति हो चुकी थी और उससे सारे पश्चिमी जगत् मे समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुता के नारे गूंजने लगे थे। सन् १७८३ में अमेरिका की नई ब्रिटिश आबादी ने ब्रिटेन से लड़कर आजादी हासिल की और यूनाइटिड स्टेट्स के नाम से एक नये राज्य की स्थापना की। जब नेपोलियन से अंग्रेजों की लड़ाई हुई, तब इंग्लैण्ड को अमरीका के साथ एक बार और उलझना पड़ा। सन् १८१२ मे दोनों की लड़ाई हुई, जो दस साल तक जारी रही। नेपोलियन की हार के बाद ही इंग्लैण्ड और अमेरिका में पूरी तरह सुलह हो सकी। दक्षिणी अमेरिका के स्पेनिश उपनिवेशों ने जब

(शेष पृष्ठ १० पर)

जनसत्ता का मत

राजीव अपनी सुरक्षा अपने हाथ में लेकर उसे कमजोर कर देंगे

नहीं, प्रधानमन्त्री को यह कभी नहीं करना चाहिए। वे सुरक्षा व्यवस्था के बड़े विशेषज्ञ हों, तब भी नहीं करना चाहिए। कोई भी प्रधानमन्त्री अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी खुद नहीं ले सकता। वह मध्य युग का योद्धा नहीं है, जो अपनी तलवार से अपनी रक्षा करता रहे। फिर मध्य युग के सम्राटों को बड़े योद्धा होते हुए भी अपनी सुरक्षा के लिए अंगरक्षक रखने पड़ते थे। आज की राज्य-व्यवस्था और आतंकवाद के खिलाफ सुरक्षा ऐसी जटिल चीजें हैं, जो एक अच्छे-भले जानकार के लिए भी चौबीसों घंटे का काम हैं। राजीव गांधी पायलट रहे हैं और शायद आधुनिक प्रबंध भी थोड़ा-बहुत समझते हैं। लेकिन अपनी सुरक्षा अपने हाथ में लेकर वे उसे निहायत कमजोर कर देंगे। प्रधानमन्त्री का काम सरकार और देश की राजनीति चलाना है, अपनी शारीरिक सुरक्षा में लगना नहीं। सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही दृष्टियों से यह सुझाव बेहूदा है कि अपनी सुरक्षा के लिए बने विशेष सुरक्षा दल का जिम्मा वे खुद संभालें। राजघाट पर गांधी जयन्ती के दिन करमजीत सिंह के हमले में वे इसलिये नहीं आ गये कि सुरक्षा व्यवस्था उनके जिम्मे नहीं है। वैसे भी विशेष सुरक्षा दल की जिम्मेदारी राजीव गांधी की जान बचाना है और उन पर हमला हो तो उसका तत्काल जवाब देना है। राजघाट पर विशेष सुरक्षा दल फेल नहीं हुआ। फेल हुई पूरी सुरक्षा व्यवस्था और उसकी सीधी जिम्मेदारी लेकर राजीव गांधी उसे ठीक नहीं कर सकते। यह अनिवार्य है कि प्रधानमन्त्री सुरक्षा व्यवस्था को कड़ी और सचमुच असरदार बनायें, लेकिन यह काम उन्हें सुरक्षा विशेषज्ञों को सौंपना चाहिए। इस व्यवस्था में जो भी परिवर्तन जरूरी हों, करवाने चाहिए। लेकिन अपनी सुरक्षा में कोई दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए। सब जानते हैं कि इन्दिरा गांधी की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार लोग सतवंतसिंह को उसमें रखना नहीं चाहते थे और बेअन्तसिंह को बाहर करना चाहते थे। लेकिन इन्दिरा गांधी ने उनकी नहीं सुनी बल्कि विदेशी संवाददाताओं से कहा कि बेअन्तसिंह जैसे अंगरक्षक के होते हुए उन्हें कोई खतरा नहीं है। नतीजा दुनिया जानती है। ऐसे में सुरक्षा के लिए जिम्मेदार लोगों को कोसना भी ज्यादा मतलब नहीं रखता। अगर उन्हें अपना काम ठीक से करने नहीं दिया जाये और उनकी सुनी नहीं जाये तो फिर वे सुरक्षा कैसे कर पायेंगे?

हम चाहते हैं कि अपने विशेष सुरक्षा दल की जिम्मेदारी लेने की राजीव गांधी की इच्छा वाली खबर गलत हो, क्योंकि इसमें सिर्फ इन्दिरा गांधी जैसा आत्मविश्वास तो नहीं दिखता, कुछ हताशा भी लगती है। इन्दिरागांधी अगर चेतावनियों के बावजूद बेअन्तसिंह और सतवंतसिंह पर विश्वास करना चाहती थीं तो अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी आप लेने से लगेगा कि राजीव गांधी को अब किसी पर भरोसा नहीं रहा। यह हालत वैसी ही गफलत पैदा करेगी, जैसी इन्दिरा गांधी के मामले में हुई। इतने भारी बहुमत से चुना गया प्रधानमन्त्री अगर अपनी सुरक्षा के लिए किसी पर विश्वास न कर सके तो यह हमारी व्यवस्था पर बहुत निंदनीय टिप्पणी होगी। वैसे भी प्रधानमन्त्री के आसपास ऐसे लोग नहीं हैं, जो उन्हें अप्रिय और खराब लगने वाली लेकिन सच्ची बात कह सकें। वफादारी का कुछ ऐसा जोर पन्द्रह-सोलह साल से चलता रहा है कि सत्ता के आसपास रहने वाले सिर्फ जी-हुजूरिये हो गये हैं। खुद सत्ताधारी भी उसी को जिम्मेदारी देना पसन्द करते हैं, जो वफादार हो। अगर योग्यता और क्षमता पर जोर नहीं होगा और सारा दारोमदार वफादारी पर होगा तो लोग सलाम बजाते रहेंगे, काम नहीं करेंगे। सुरक्षा के मामले में यह वफादारी घातक साबित हुई है। पहले प्रधानमन्त्री की सुरक्षा की जिम्मेदारी रामनाथ काव के पास थी और राजघाट की घटना से पहले गौतम कौल के पास। ये दोनों ही अपने काम में माहिर होंगे लेकिन सब जानते हैं कि ये दोनों प्रधानमन्त्रियों के रिश्तेदार भी थे। माना जाता है कि वही वफादार होते हैं जो रिश्तेदार हों और ऐसे ही लोग सुरक्षा में अपनी जान लड़ा सकते हैं। हमने पाया है कि ऐसी वफादारियां और रिश्तेदारियां काम नहीं करतीं। इसलिए अपनी सुरक्षा अपने हाथ में लेने की बजाय प्रधानमन्त्री पहले वफादारी के अटल सिद्धांत की छुट्टी करें—प्रशासन से भी और राजनीति से भी। वे खुद अगर योग्यता और क्षमता पर जोर देंगे तो धीरे-धीरे नीचे के स्तरों पर भी निजी वफादारी का ज्यादा मोल नहीं बचेगा। तब हो सकता है कि ऐसे योग्य लोग आगे आयें, जो भले ही सलाम न बजाते हों लेकिन अपना काम ठीक करते हों और अपने कर्तव्य के प्रति जिनके समर्पण में कोई शंका न हो। राजीव गांधी क्षमता और योग्यता की बात जरूर कहते रहे हैं लेकिन वफादारियां फिर भी नम्बर मार ले गई हैं। अब अपनी सुरक्षा व्यवस्था और राजघाट की घटना की जांच के लिए उन्होंने एक समिति बैठाई है तो उसकी रपट आने दें और फिर उस पर पूरी तरह अमल करें। सही सुरक्षा का यही एक तरीका है।

ऋषि दयानन्द के आने से पहले

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्पेन से बगावत करके अपने देश को स्वतन्त्र कर लिया, तब ब्रिटेन ने अमेरिका से हमदर्दी दिखाई। उसके परिणामस्वरूप भविष्य में उनमें आपसी मेल हो गया।

सन् १८६१ में उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका की रियासतों में गुलामी प्रथा को लेकर संघर्ष छिड़ा—दक्षिणी अमेरिका गुलामी की प्रथा को हटाने के लिए तैयार नहीं था, परन्तु अमेरिका ने हिम्मत से काम लिया और अन्त में विजय प्राप्त की। धीरे-धीरे दक्षिणी अमेरिका के राज्यों को भी गुलामी की प्रथा हटाने के लिए मजबूर होना पड़ा और सन् १८६५ में जब यह लड़ाई बन्द हुई तो अमेरिका के ये राज्य फिर आपस में मिलकर एक हो गये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उस समय सारे पाश्चात्य जगत् पर फ्रांस की और अमेरिका की इन राज्य क्रान्तियों से उत्पन्न विचारों का असर पड़ता जा रहा था। साथ ही कैथोलिक ईसाइयत के विरोध में स्वयं इंग्लैण्ड और जर्मनी में लूथर के नेतृत्व में जो धार्मिक क्रांति चल रही थी उसका भी असर कम नहीं था। उधर रूस में कार्ल मार्क्स की विचारधारा धीरे-धीरे अपने पांव जमा रही थी। इस प्रकार एक तरह से सारा यूरोप जहां नये विचारों से आन्दोलित था, वहां अंग्रेज इस बात के लिए बहुत प्रयत्नशील थे कि किसी भी तरह फ्रांस की राज्य क्रांति या अमेरिका के गृह-युद्ध और रूस की बोलशेविक क्रांति की हवा भारत तक न पहुंचने पाये। इसीलिए वे सब तरह से उसे जकड़ने में लगे हुए थे। परन्तु भारत की आत्मा अन्दर ही अन्दर उबल रही थी और किसी ऐसे व्यक्तित्व की प्रतीक्षा में थी, जो उसे अन्धकार और दुविधाओं से भरे दासता के वातावरण में आकर नई रोशनी दे सके।

ऋषि दयानन्द के कार्यक्षेत्र में आने से पहले राष्ट्रहित में कई संस्थायें बनीं परन्तु वे यह आशा करती थीं कि धीरे-धीरे नरमी से ही सब बुराइयां दूर हो जायेंगी। परन्तु ऋषि दयानन्द का यह विश्वास था कि यदि कुरीतियों, अन्धविश्वासों और पाखण्डों के विरुद्ध कुठार वाले घन का उपयोग करके राष्ट्र को नहीं जगाया जायेगा तो एक दिन आर्य जाति समाप्तप्राय हो जायेगी। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द एक ऐसी विचारधारा को लेकर आये, जो उनके समकालीन सब सुधारकों के विचारों से भिन्न थी। अन्य सुधारकों से ऋषि दयानन्द की तुलना करते हुए योगिराज अरविन्द ने लिखा है—

"दयानन्द की कार्य करने की पद्धति बहुत भिन्न थी। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो निश्चित रूप से और साफ-साफ जानता था कि मुझे किस काम के लिए भेजा गया है। उसने अपनी अचूक पारदर्शी आत्मा से परिस्थितियों का आकलन किया, अपनी सामग्री स्वयं चुनी और एक अज्ञात कुशल कारीगर की-सी दक्षता से अपने विचारों को कार्यान्वित किया।"

बच्चों के लिए सरल और संक्षिप्त वृत्त

महान् कर्मयोगी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

—लोकनाथ चौधरी—

अंधेरा था, निराशा थी। रूढ़ियों का बोलबाला था। मानवता त्रस्त थी। भारतीयों की आर्य संस्कृति रूढ़िवाद से पीड़ित थी। उद्धार का कोई रास्ता नजर न आता था। उसी घोरतम वेला में १९वीं सदी का महान् कर्मयोगी गुजरात प्रान्त के मोरवी राज्य स्थित टंकारा ग्राम में १२ फरवरी १८२५ ई० को श्री करषणलाल जी त्रिवेदी के यहां अवतरित हुआ। स्मरण शक्ति तीव्र होने के फलस्वरूप १४ वर्ष की आयु में ही उन्हें यजुर्वेद कंठस्थ हो गया।

शिवरात्रि का दिन था। १८९४ विक्रमी की माघ बदि १४ को रात्रि के घोर अन्धकार में जब शिवरात्रि व्रत के उपलक्ष्य में सभी सो रहे थे, उस समय विश्व का महान् द्रष्टा टकटकी लगाये शिवलिंग से साक्षात् शिव-दर्शन की कामना लिये बैठा था। अचानक कुछ चूहों ने बिलोंसे निकलकर शिवलिंग पर रखे भोगोंको चट किया और मलमूत्र का त्याग कर आगे बढ़ गये। मूलशंकर के मन में सच्चे ईश्वर के खोज की भावना बलवती होती गई। संवत् १९०२ की एक रात्रि में जब सारी दुनिया सो रही थी उस समय मूलशंकर घर छोड़कर अज्ञात स्थान की ओर अमरता की खोज में चल दिये। विद्याध्ययन और सच्चा ज्ञान पाना ही उनका उद्देश्य था। लगभग साढ़े चौबीस वर्ष की अवस्था में मूलशंकर स्वामी पूर्णानन्द से दीक्षा लेकर स्वामी दयानन्द बन गये।

बर्षों गंगा के किनारे ज्ञान की खोज में जंगलों, पर्वतीय कन्दराओं और हिमालय के बर्फीले क्षेत्रों में भटकते रहे, पर सच्चा ज्ञान प्राप्त न हो सका। कंटकमय और बर्फीले क्षेत्रों पर चलने से पैर लहूलुहान हो जाते, छाले पड़ जाते पर वे इन सबकी परवाह किये बिना अनवरत अपने मार्ग पर बढ़ते गये।

सम्वत् १९१७ में स्वामी दयानन्द परम ज्ञान की खोज में मथुरा में स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचे और वहां विद्याध्ययन कर स्वामी दयानन्द स्वामी विरजानन्द के आदेशानुसार अज्ञान के अन्धकार को मिटाने में लग गये। सन् १८७५ ई० में उन्होंने विश्व के त्रस्त मानव के कल्याणार्थ आर्यसमाज की स्थापना की और अनेकों क्रान्तिकारी ग्रन्थों को लिखकर सोये हुए देश को जगाया। उन्होंने वेदों के भाष्य किए। अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, गोकरुणानिधि आदि ग्रन्थों की रचना की।

देश के अन्दर व्याप्त बुराइयों पर गहरी चोट की। बाल-विवाह, वृद्ध विवाह, मूर्तिपूजा (जड़ पूजा), विदेश गमन पर लगे प्रतिबन्ध, गोहत्या, विदेशी रहन-सहन, जाति प्रथा, छुआछूत, गुरुडम, पुरोहितवाद, अवतारवाद, नशाखोरी आदि सारी बुराइयों का घोर विरोध किया और उन्हें जड़मूल से उखाड़ने में लग गए। वेद का उद्धार किया, नारियों को सम्मान दिया तथा गिरी और सोई हुई जाति को फिर से जगाया। पर दुर्भाग्य इस भारतभूमि का आर्यावर्त का कि स्वामीजी अधिक दिन न जी सके। षड्यन्त्रकारियों के शिकार हुए।

सन् १८८३ ई० में जोधपुर में स्वामी जी को एक पातकी द्वारा दूध में जहर मिलाकर देने के कारण स्वामी जी कुछ दिनों तक ही जीवित रहे और दीपावलि के दिन विश्व को मानवता का—अमरता का पाठ पढ़ाने वाले ऋषि स्वयं अमर हो गए।

कल्पपुरुष दयानन्द

(पृष्ठ ६ का शेष)

अङ्गिरसो भवेमाद्रिं रुजेम, ऋ० ४। २। १५

हम अंगारे बनें और पर्वत को खण्ड-खण्ड कर दें। अंगारो की तरह धधकते हुए हम मानवजाति और मानवता को त्रस्त करने वाले पर्वतों को धराशायी कर दें, अन्यायियों और अत्याचारियो को सदा के लिए नामशेष कर दें। सांसारिक उपलब्धियों और भौतिक लाभों के लिए उनके गुणगान करके मतलब-बरारी करना मानवता नहीं, पामरता है। वैसा करना अन्याय और अत्याचार को बढ़ावा देना है।

ऐ अजीजाने जहां, फिकरा यह जाए गौर है।
कद्रदानी और है, मतलब-बरारी और है।

सुनिये, दुनिया आपके लिए क्या कह रही है।

आज संसार को फिर दयानन्द की आवश्यकता है, उसी दयानन्द की, प्रलोभनों को जो ठुकरा कर सत्य को कस कर थाम सके, जो सत्य का पूरा मूल्य चुका सके, जो निर्भीकता के साथ धौ के नीचे घूमती हुई पृथ्वी पर अकम्प और अडिग रह सके, जो अनाचार और दानवता के छक्के छुड़ा सके, जो मशाल-बरदार बन कर मानव मानव को मानवता का दर्शन करा सके, जो वेद और योग के प्रसाद से सबको सुधन्य कर सके, जो फिर से सार्वभौम आर्य साम्राज्य के सोये अरमानों को जगा सके।

महर्षि दयानन्द और उनकी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश

— कृष्णदत्त एम. ए., बी. एड., भूतपूर्व प्रिन्सिपल, हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द की अमरकृति है। इसने हजारों लोगों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। देश को अनेक देशभक्त और क्रान्तिकारी दिये, जिनमें से अनेकों को अंग्रेजो ने फासी पर लटका दिया। प० लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपतराय और श्यामजी कृष्णवर्मा जैसे शहीदों और देशभक्तो को प्रेरणा दी। सत्यार्थ प्रकाश प्रभात के तारे के समान है जो प्रकाशपुंज सूर्य के आगमन का सूचक होता है। महर्षि ने लगभग ३०० विभिन्न धार्मिक और अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करके सत्यार्थ-प्रकाश लिखा है। इसमें उद्धृत प्रमाणों की संख्या १८८६ है।

सत्यार्थ प्रकाश के लिखने का तात्पर्य स्वयं महर्षि ने इस प्रकार लिखा है, "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना है।" अन्धभक्ति, अन्धश्रद्धा और मिथ्या विश्वास को सत्य मान लेने और सत्य को भूल जाने से भारत में अनेक मतमतान्तर और जन्म के आधार पर असंख्य जातियां और उपजातियां अस्तित्व में आ गई थी। फलस्वरूप देश का पतन होता गया, फूट बढ़ती गई, शताब्दियों से देश गुलामी में फंसता गया और शोषण का शिकार बनता गया। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भरत खण्ड तन ढकने के लिए दूसरों का मुंह तकने लगा। यहां के अन्न से दूसरे देशवासी अपना पेट भरने लगे। स्वामीजी देश मे समाज, धर्म, परिवार, राष्ट्र, शिक्षा, उद्योग और आजादी की दुर्दशा देखकर दुःखी हुए और उन्होंने बहुमुखी उन्नति करने के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना की और आर्य-समाज की स्थापना की।

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्वामी जी ने ग्रन्थ लिखने का उद्देश्य इन शब्दों में स्पष्ट किया है, "मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।······क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।"

स्वामी जी ने लिखा है, "जो मिथ्या बात न रोकी जाए तो ससार में बहुत-से अनर्थ प्रवृत हो जाएं।" पुन. वे लिखते हैं, "जब तक मनुष्य जाति मे परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्यान्य को आनन्द न होगा।" इस दिशा में स्वामी जी ने एक और मार्मिक बात लिखी है—"विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।"

सत्यार्थ प्रकाश का स्वरूप

सत्यार्थ प्रकाश के निर्माण का प्रयोजन स्पष्ट करने के बाद हम सक्षेप में इस ग्रन्थ के स्वरूप पर प्रकाश डालेंगे। सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए जो उचित है उसे उचित और जो अनुचित है उसे अनुचित कहना पड़ता है। इसी को मंडन और खण्डन कहा जाता है। प्रत्येक सुधारक के लेखन और भाषण में मंडन और खंडन अवश्य होता है। विचार विनिमय मे भी सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है और संसार के कल्याण की दृष्टि से विचार-विनिमय आवश्यक है। टामस हार्डी के शब्दों में "अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार विनिमय के द्वारा ही हम संसार को दु.खों से मुक्त कर सकते हैं।"

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया है पूर्वार्द्ध में दस समुल्लास और उत्तरार्द्ध में चार समुल्लास हैं। सामान्य रूप से पूर्वार्द्ध में वेदो के आधार पर व्याख्यात्मक और मंडनात्मक स्पष्टीकरण है और उत्तरार्द्ध के चार समुल्लासों में खंडनात्मक विवरण है। भारत के समस्त छोटे-बड़े धर्मों और उनके विश्वासों को लेकर वैदिक कसोटी और तर्क के आधार पर खंडनात्मक या आलोचनात्मक विचार किया गया है। मुख्य रूप से ग्यारहवें और बारहवें समुल्लासों में भारतीय धर्मों के सम्बन्धमें विचार प्रकट किये गये हैं ताकि उनमें फैले हुए अन्धविश्वासों का निराकरण हो सके। तेरहवें में ईसाई धर्म और चौदहवें में इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में चर्चा की गई है। हिन्दुओं और मुसलमानों की ओर से स्वामी जी का विरोध हुआ, शास्त्रार्थ हुए, स्वामी जी की घोर निंदा की गई। स्वयं स्वामी जी ने अपने एक भाषण में कहा है—"मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निंदा, कुवचन, ईंट-पत्थर और विष ही स्थान-स्थान पर मिलता है। परन्तु बन्धुवात्सल्य क भावना मुझे विपत्तियों के विकट और जटिल जाल में भी समाज सुधार के लिए प्रोत्साहित करती है।"

स्वामी दयानन्द के आतिथेय जोशी अमरलाल

–डा० भवानीलाल भारतीय–

दण्डी विरजानन्द की पाठशाला मे अध्ययन हेतु जब स्वामी दयानन्द मथुरा आये तो उनके समक्ष भोजन और निवास की समस्या उपस्थित हुई। स्वामी विरजानन्द का यह नियम था कि वे अपनी पाठशाला में उसी छात्र को अध्ययन करने की अनुमति देते थे जो निवास और भोजन की चिन्ता से मुक्त हो। दयानन्द का मथुरा आगमन पहली बार ही हुआ था। वे वहां की स्थिति से नितान्त अपरिचित तो थे ही, सन्यासी होने के नाते उनका रहने का कोई निश्चित ठिकाना भी नही था। ऐसी स्थिति में उन्हें भोजन की समस्या से उबारने का दायित्व मथुरा के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी अमरलाल ने लिया, जो स्वामी दयानन्द के सजातीय औदीच्य ब्राह्मण होने के साथ-साथ उदारमना और दानशील प्रकृति के भी थे।

मथुरा निवासकाल मे भोजनादि की चिन्ता से मुक्त करने के प्रसग को लेकर स्वामी दयानन्द ने पुणे नगर में प्रदत्त अपने आत्मकथात्मक प्रवचन मे जोशी अमरलाल के प्रति निम्नलिखित उद्गार व्यक्त किये थे—"मथुरा में एक भद्र पुरुष अमरलाल नामक थे। उन्होने मेरे पढ़ने के समय मे जो-जो उपकार मेरे साथ किये, मैं उन्हें भूल नहीं सकता। पुस्तकों और खाने-पीने का प्रबन्ध उन्होंने उत्तमता से कर दिया। जिस दिन उन्हें कही बाहर खाने के लिए जाना होता, तो वे पहले मेरे लिए भोजन बनवाकर और मुझे खिला कर बाहर जाते थे। सौभाग्य से ये उदारचेता महाशय मुझे मिल गए थे।"

स्वामी दयानन्द के प्रख्यात जीवनी लेखक श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने शास्त्राध्ययन में तत्पर इस अकिंचन संन्यासी के प्रति ऐसी अहैतुकी कृपा करने वाले जोशी अमरलाल को अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए लिखा है—"अमरलाल ने इस निस्सहाय सन्यासी की सहायता करके अपने को अमर कर लिया। कौन जानता था कि वह संन्यासी एक दिन वैदिक धर्म का पुनरुद्धारक और उन्नायक होगा। अमरलाल को क्या खबर थी कि वह उक्त अपरिचित सन्यासी का पालन-पोषण करके भारत के ही नही, प्रत्युत सारी पृथ्वी के धर्मबुभुक्षुओं को अन्न दे रहा है। अमरलाल, तू धन्य है। दयानन्द दिवाकर में जो तेज पुंज था, उसके संचय में तेरा भी भाग है और जिन्होंने इस दिवाकर के प्रकाश से अपने हृदयाविष्ट तिमिर राशि को छिन्न-भिन्न किया है, तू भी उनकी श्रद्धांजलि का अधिकारी है।

जोशी अमरलाल के पूर्वज किसी समय गुजरात के सिद्धपुर नगर से चल कर राजस्थान में आकर बस गये थे। इनमे से एक कृपाशकर जोशी का जन्म १८०० विक्रमी में हुआ था। अपनी युवावस्था में ज्योतिष विद्या का ज्ञान उपार्जित कर जोशी कृपाशकर पेशवा, होल्कर और सिंधिया जैसे मराठा सरदारों द्वारा सम्मानित हुए। अपने जीवन के उत्तरकाल मे वे ब्रजवास करने की दृष्टि से मथुरा आ गये और स्वामी घाट के निकट भूमि लेकर उन्होंने एक विशाल हवेली बनवाई, जो 'जोशी बाबा की हवेली' के नाम से प्रसिद्ध है। उनका नियम था कि वे प्रतिदिन अनेक औदीच्य ब्राह्मणों और दण्डी सन्यासियों को भोजन कराने के पश्चात् ही अन्न ग्रहण करते थे। उनका यह नियम उनके वंशज भी निभाते रहे। कृपाशंकर जोशी का देहान्त १८५१ वि० में हुआ। उनके पुत्र गोविन्दलाल (१८२३-१८८५ वि०) और पौत्र कुंजलाल (१७६२-१९०६ वि०) भी अपनी पारिवारिक परम्परा के अनुसार विद्या, वैभव और उदारता के लिए विख्यात रहे।

जोशी कुंजलाल के पुत्र जोशी अमरलाल का जन्म १८९७ वि० में हुआ। जिस समय स्वामी दयानन्द का मथुरा मे आगमन हुआ उस समय अमरलाल की आयु लगभग २० वर्ष की थी। धीरे-धीरे जोशी जी और स्वामी जी में स्नेह का सूत्र बढ़ता गया। स्वामी जी के प्रति जोशी जी का आदर-भाव इतना अधिक था कि जब तक स्वामी जी भोजन नही कर लेते थे, तब तक जोशी जी भी अन्न ग्रहण नहीं करते थे। भोजन में प्राय. ही विलम्ब हो जाता क्योंकि स्वामी जी को दण्डी जी की सेवा मे २-३ बज जाते। भोजन से निवृत्त होकर स्वामी जी अमरलाल के साथ उनके निवास के दीवान खाने में बैठ कर शास्त्रचर्चा करते अथवा विश्राम करते। जोशी जी उदारमना और विचारों की दृष्टि से अत्यन्त सहिष्णु थे। वे स्वामी जी के मूर्तिपूजा और मृतक श्राद्धविषयक आलोचनात्मक विचारों को जानते हुए भी अध्ययनरत इस संन्यासी के प्रति प्रेम एवं सौहार्द का भाव रखते थे।

कालान्तर मे जोशी जी के ६ पुत्र और ४ कन्यायें हुई। पुत्रों के नाम इस प्रकार थे—केशवलाल, माधवलाल, विभाकरलाल, चन्द्र शेखर, शिव-प्रकाश और कान्तिचन्द्र। इनमें से केशवलाल, चन्द्रशेखर तथा कान्तिचन्द्र का निधन बाल्यकाल मे ही हो गया। जोशी माधवलाल के पुत्र राधेश्याम द्विवेदी आज भी विद्यमान हैं और मथुरा में निवास करते हैं।

न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र द्वारा सम्पादित देवनागर मासिक पत्र में प्रकाशित स्वामी दयानन्द की बंगला जीवनी के लेखक श्री सत्यबन्धुदास ने जोशी अमरलाल के प्रसग मे लिखा था—"धैर्य एव निष्ठा की विजय सर्वैव होती रही है। देर से हो चाहे अबेर से, पुण्य का पुरस्कार अवश्य मिलता है। इसी समय मथुरा के पण्डित अमरलाल नामक एक धर्मशील, गुणज्ञ एवं वदान्य ब्राह्मण इस नवागत संन्यासी दयानन्द के आचरण से आकर्षित हुए। उन्होने देखा कि यह नवीन सन्यासी साधारण सन्यासी अथवा विद्यार्थी नही है। उन्होंने दयानन्द के महत्त्व को तुरन्त समझ लिया। "गुणी गुण वेत्ति" इसी अयाचित भाव से वे दयानन्द की सहायता के लिए अग्रसर हुए। वे प्रतिदिन दोनों समय दयानन्द को अपने घर आमन्त्रित कर भोजन कराने लगे। यदि किसी दिन किसी स्थान पर उनका अपना निमन्त्रण होता अथवा कार्य-वश कहीं जाना होता तो वे इस विद्यार्थी अतिथि को भोजन कराये बिना घर से बाहर नहीं जाते थे। यही दयालु व्यक्ति दयानन्द के भोजन व्यय के अति-रिक्त उनकी पुस्तकी आदि का समस्त भार भी वहन करते थे। जो भी हो, हमारे चरितनायक दयानन्द इन्हीं पं० अमरलाल के आजीवन अपरिशोधनीय ऋण से आबद्ध रहे।" जोशी अमरलाल की मृत्यु ४४ वर्ष की आयु मे आषाढ शुक्ला ३ सवत् १९४१ वि० को हुई।

अर्पित युग का कोटि नमन

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

वैदिक संस्कृति का जिसने, फिर वसुधा पर उद्धार किया,
कष्ट अनेकानेक सहे, पर जगती का उपकार किया,
नव्य चेतना, नव जागृति का, कण-कण में भरकर स्पन्दन
मध्य चक्र में फसी तरणि, मानवता को फिर पार किया,
कालजयी ऋषि दयानन्द की, ऋणी धरा है तथा गगन।
व्रती-तपस्वी के चरणो मे, अर्पित युग का कोटि नमन॥

मानवता का मन्त्र दिया, वेदों की अलख जगाई,
अमा निशा की गहन तमिस्रा, तुमने यति भगाई,
जीवन की ले शक्ति अपरिमित, जगे यहा पर जन-जन,
जागो, जागो, आर्य जनो हे, ऋषि ने किरण दिखाई,
ज्योतिर्मान् हुआ जग सारा, जाग उठा भू कण-कण।
व्रती-तपस्वी के चरणों में, अर्पित युग का कोटि नमन॥

दिया तुम्ही ने भारत को ऋषि, स्वतन्त्रता सदेश,
सद्यत्नों से दिव्य तुम्हारे, गौरव अन्वित हुआ स्वदेश,
त्याग तथा बलिदानों का पथ, तुमने सहज दिखाया—
हुआ अग्रसर अन्धजाल को तोड़ मधुरमय देश,
दया-धर्म के, सत्य अहिंसा के खिल उठे सुमन।
व्रती-तपस्वी के चरणों मे, अर्पित युग का कोटि नमन॥

प्राची से फूटी जागृति की, नई उषा अरुणाई,
तिमिर-ज्योति की, सत्य-असत्य की भीषण हुई लड़ाई,
हुआ जयी आलोक, सत्य-शुचि धर्म दिव्य वेदों का—
हंसने लगी अभय हो भारत-पुत्रो की तरुणाई,
देती नवसंदेश सत्य का, निकली स्वर्णिम सूर्य किरण।
व्रती-तपस्वी के चरणों मे, अर्पित युग का कोटि नमन॥

पावन पथ वेदो का भू पर, हुआ प्रकाम्य प्रशस्त,
तिमिराच्छादित परम्पराएं, हुईं अनय की अस्त,
नव आशा, अभिलाषाओं की, लहरी नई तरंगें—
सत्य-शिवम् सुन्दरता पूरित, बही वायु अलमस्त,
परहित मे अर्पित कर डाला, जिसने तन-मन-धन।
व्रती-तपस्वी के चरणों में, अर्पित युग का कोटि नमन॥

आर्यसमाज खंडवा का वेद प्रचार अभियान

खण्डवा। स्थानीय आर्यसमाज विगत तीन वर्षो से वेद प्रचार सप्ताह को मास के रूप में मना रहा है। इस वर्ष १६ अगस्त से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। २८ सितम्बर को खण्डवा से ५० कि. मी. दूर खेलपुरा ग्राम मे आदिवासी बन्धुओं के बीच यज्ञ और सार्वजनिक सभा को प्रधान श्री रामचन्द्र जी आर्य श्री कैलाशचन्द्र जी पालीवाल, श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव, श्री नारायण-सहाय खण्डेलवाल, श्री मागेलाल सोनी और श्री हीरालाल कोरकू ने सम्बो-धित करते हुए कहा कि जब से हम लोगों ने यज्ञ करना बन्द कर दिया है और वृक्षों की अवैध कटाई चालू कर दी है, तब से पानी समयानुकूल नहीं बरस रहा। आप अपने बच्चो को पाठशाला पढ़ने भेजिये, आप लोग प्रौढ़ कक्षाओं में पढ़िये, व्यसनों से बचिये।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक दौरे पर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस असम के भ्रमण के लिए दिल्ली से प्रस्थान कर रहे हैं। आप २ नवम्बर को डोके मुकम (असम) शिविर का उद्घाटन और सचालन करेंगे। आपके साथ आर्य वीर दल के योग्य शिक्षक ब्र० सत्यव्रत शास्त्री भी जा रहे हैं। श्री गंगा कश्यप असम में पूर्व नियुक्त आर्य वीर दल के शिक्षक हैं, जो शिविर में सक्रिय सहयोग देंगे। स्मरण रहे कि डा० नारायणदास जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा असम) वनवासी बन्धुओं के हितार्थ सर्वेव सक्रिय रहकर असम में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करा रहे हैं। यह कार्यक्रम भी उनके पुरुषार्थ का ही फल है।

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्यसमाज नेमदारगंज (नवाद—बिहार)—श्री नन्दलाल साहु प्रधान, श्री वीरेन्द्र प्रसाद निर्मम मन्त्री, श्री सत्यदेव प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज गुरुकुल महाविद्यालय खेड़ा खुर्द दिल्ली के छात्रा संघ का चुनाव—श्री अशोक कुमारशास्त्री प्रधान, ठा० नरेशपाल मन्त्री, श्री लालबहादुर शास्त्री कोषाध्यक्ष चुने गये।

बरदेला (जि० पूर्णिया) श्री मुंशीलाल आर्य प्रधान, श्री सरयुग प्रसाद आर्य मन्त्री, श्री मोतीलाल कोषाध्यक्ष आर्य चुने गये।

आर्यसमाज लुधियाना रोड, फीरोजपुर छावनी—श्री अर्जुनसिंह चावला प्रधान, श्री देवराज दत्त मन्त्री, श्री नरेन्द्र कुमार जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

पुराना गोदाम, गया पं० लखनलाल आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र बिहारीलाल मन्त्री, श्री वरिष्ठ नारायण केसरी कोषाध्यक्ष चुने गये।

दानापुर छावनी पटना—श्री रामप्यारेलाल आर्य प्रधान, श्री वेदप्रकाश मन्त्री, श्री परमेश्वर प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

हुल्ली खेडा (कर्नाटक)—श्री शत्रुघ्न प्रसाद दुबे प्रधान, श्री गंगाराम आर्य मन्त्री, श्री मारुतिराव आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

केन्द्रीय आर्य समिति—श्री मानसिंह वर्मा प्रधान, श्री इन्द्रराज जी मन्त्री, श्री शान्ति प्रकाश जी मलिक कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य वीर दल के शिविर

—आर्यसमाज मन्दिर ज्वरीपटका (नागपुर) में सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया गया, जिसमें आसन, प्राणायाम, लाठी, नियुद्धम् (कराटे) एवं बौद्धिक प्रशिक्षण दिया गया। शिविर एक महीने तक चला।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल शाखा ग्राम सलखिया (रायगढ़) का गठन किया गया। ६ दिन तक आर्य वीरों को प्रशिक्षण दिया गया। ३० आर्य वीरों ने प्रशिक्षण लिया। श्री अभिमन्यु को संचालक और श्री जगबन्धु को शाखा नायक नियुक्त किया गया।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल शाला ग्राम गुड़ा गाव (रायगढ़) का गठन हुआ। चार दिन तक प्रशिक्षण दिया गया। इन्द्रजीत आर्य संचालक और निरंजन कुमार साहू शाखा नायक नियुक्त हुए। २० आर्य वीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

"राधावल्लभ नहीं, रुक्मिणीवल्लभ"

नई दिल्ली। पिछले दिनों स्वामी अखंडानन्द लक्ष्मीनारायण मन्दिर में प्रवचन करते रहे।

एक दिन एक प्रश्नकर्त्ता ने पूछा कि राधाकृष्ण क्यों कहा जाता है, रुक्मिणीकृष्ण क्यो नही कहा जाता? उत्तर मे स्वामी जी ने कहा कि प्रश्नकर्त्ता शायद कभी पंढरपुर या द्वारका नहीं गये। वहां रुक्मिणीकृष्ण ही भजा जाता है। सनत्कुमार संहिता के ३५ श्लोकों में रुक्मिणीवल्लभाय ही आया है, राधावल्लभाय नही।

कुरान की कुछ आयतें खतरनाक : न्यायालय का फैसला

नई दिल्ली। न्यायालय ने हिन्दू हितो के लिए संघर्ष करने वाले दो कार्यकर्त्ताओं पर दायर मुकदमे खारिज कर दिये हैं।

यह जानकारी हिन्दुत्वनिष्ठ नेता श्री राजेश्वर ने एक संवाददाता सम्मेलन मे दी। विवरण इस प्रकार है कि सन् १९८३ मे हौजकाजी पुलिस थाने में एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दाखिल की गई और उनके बाद सन् १९८४ मे दिल्ली प्रशासन ने सर्वश्री इन्द्रसेन शर्मा और राजकुमार आर्य के विरुद्ध "कुरान मजीद" की २४ आपत्तिजनक आयतें प्रकाशित करने के आरोप मे मैट्रोपोलिटिन मजिस्ट्रेट की अदालत मे मुकद्दमा दायर किया। श्री इन्द्रसेन शर्मा अदालत मे उपस्थित थे और श्री राजकुमार आर्य कानपुर मे रहते हैं। मैट्रोपोलिटिन मजिस्ट्रेट श्री जैड. एस लोहाट ने तीन जुलाई के आदेश द्वारा निम्नलिखित टिप्पणी के साथ उन्हें मुक्त कर दिया--"कुरान मजीद" की पवित्र पुस्तक के प्रति आदर करते हुए उपरोक्त आयतो का सूक्ष्म अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि ये बहुत खतरनाक है और मुसलमानों तथा गैर-मुस्लिम समुदायो मे घृणा और भेदभाव को बढ़ाती हैं।

श्री लोहाट ने लिखा कि "कुरान मजीद" मे ऐसी अनेक आयतें हैं किन्तु उन सब पर समयाभाव के कारण अधिक चर्चा की आवश्यकता नही।

फिजी से श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के नाम एक पत्र

पूज्य स्नातक जी,

नमस्ते।

यहां वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य निरन्तर चल रहा है। संजीवनी आनन्द यति दो वर्ष के लिए यहां पधारी हैं। वे फिजी के सब जिलो का भ्रमण कर रही हैं। हमने प्रचारक का प्रशिक्षण दिलवाने के लिए श्री नरेन्द्र शर्मा को हिसार के ब्राह्म महाविद्यालय मे भेजा है। श्री गुरुदत्त को भी इसी कार्य के लिए भारत भेजने का प्रयत्न चल रहा है।

आर्यसमाज के काम में शिथिलता नही आनी चाहिए। यहां साप्ताहिक सत्संग निरन्तर चल रहे हैं।

आपका शुभचिन्तक
भुवनदत्त
सूवा (फीजी)

आर्यसमाजों के चुनाव

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन आर्य समाज सुल्तानपुर में सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री राजेन्द्रप्रसाद, मन्त्री श्री श्रीचन्द, और कोषाध्यक्ष ओम्प्रकाश जी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

—आर्य वीर दल नरकटियागंज का चुनाव श्री जवाहरलाल शास्त्री एवं रामाज्ञा वैरागी जी की देखरेख मे निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ—अधिष्ठाता श्री महाराज प्रसाद आर्य, नगर संचालक श्री सुरेशचन्द्र आर्य, नगर नायक श्री ब्रजकिशोर अश्क और उपनगर नायक श्री ओमप्रकाश चुने गये।

—आर्यसमाज दानापुर छावनी का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—प्रधान श्री रामप्यारे लाल आर्य, मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी और कोषाध्यक्ष श्री परमेश्वर प्रसाद चुने गए।

—आर्यसमाज नसीराबाद (राजस्थान) के चुनाव मे प्रधान श्री बालूराम यादव, मन्त्री श्री नन्दकिशोर आर्य और कोषाध्यक्ष श्री चांदमल गोयल निर्वाचित हुए।

—आर्यसमाज, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली के चुनाव मे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—प्रधान श्री लच्छीराम, उपप्रधान श्री जयप्रकाश और श्री ब्रह्मानन्द, मन्त्री श्री श्रद्धानन्द, उपमन्त्री श्री ज्ञानप्रकाश, कोषाध्यक्ष श्री हरपाल सिंह और पुस्तकाध्यक्ष श्री दौलतराम चुने गये।

श्री सदानन्द आर्य नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकालय के भूतपूर्व प्रबन्धक श्री सदानन्द जी सिन्धी (आर्य) का लम्बी बीमारी के बाद ७ अक्टूबर को दिल्ली मे निधन हो गया। उनके निधन पर परिजनो के प्रति सभा की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकट की गई और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है।

निर्वाणोत्सव पहली नवम्बर को

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०१वां निर्वाणोत्सव दीपावलि के दिन पहली नवम्बर को प्रात. ८ से १२ बजे तक रामलीला मैदान में समारोह-पूर्वक मनाया जायेगा।

पंजाब पीड़ित कोष : धोखेबाजों से बचें

पंजाब की विकट स्थिति के फलस्वरूप सैंकड़ों हिन्दू परिवार पंजाब से पलायन कर दिल्ली और अन्य स्थानो पर सुरक्षा हेतु आ रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उन निराश्रय हिन्दुओं की सेवा करने मे तत्पर है।

कुछ व्यक्ति पंजाब के पीड़ितों के नाम पर धन एकत्रित कर रहे हैं। ऐसे व्यक्तियों को धन न देकर आप अपनी धन राशि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम भेजकर इस कार्य मे सहयोग दें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा मन्त्री

होम्योपैथिक औषधालय की स्थापना

वर्ष प्रतिपदा के दिन १० अप्रैल को आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर आर्यसमाज सुजानगढ़ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा ग्राम भासीना (सुजानगढ़) मे होम्योपैथिक औषधालय स्थापित किया गया। औषधालय का उद्घाटन ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री सत्यनारायण लाहोटी द्वारा सम्पन्न हुआ। उद्घाटन से पूर्व सत्संग मे यज्ञ, भजनोपदेश, प्रवचन आदि हुए। आस-पास के अनेक गण्यमान्य सज्जन समारोह मे सम्मिलित हुए। भासीना के भूतपूर्व सरपंच श्री मानाराम चौधरी औषधालय के व्यवस्थापक नियुक्त किये गये।

श्री सत्यनारायण लाहोटी

वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

दिल्ली के विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आठ नवम्बर को प्रात. ८॥ बजे से सायं ४ बजे तक होगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पुरस्कार वितरित करेंगे।

इस प्रतियोगिता का आयोजन महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट के वेद-प्रचार विभाग द्वारा किया जा रहा है।

ट्रस्ट का कार्यालय ९/४४ इंडस्ट्रियल एरिया, कीर्तिनगर, नई दिल्ली मे है।

आर्यसमाज देहरादून वृद्धों का अभिनन्दन करेगा

देहरादून। आर्यसमाज देहरादून के ७, ८ और ९ नवम्बर को हो रहे १०७वें वार्षिक उत्सव मे ८० वर्ष से अधिक अवस्था के सदस्यों का अभिनन्दन किया जायेगा। साथ ही जनपद के उन आर्यसमाजियो का भी, जिन्होने देश के स्वाधीनता संग्राम मे या हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे जेल यातनाएं भोगी हैं, सम्मान किया जायेगा। अभिनन्दन कार्यक्रम के संयोजक अवकाश-प्राप्त प्रधानाध्यापक और स्वाधीनता संग्राम के योद्धा मास्टर दलीप सिंह होंगे। उत्सव मे राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन और संस्कृति सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है।

सरोजिनी नगर में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

वैदिक अनुसंधान समिति और आर्यसमाज सरोजिनी नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान मे राष्ट्र कल्याण चतुर्वेद पारायण महायज्ञ ५ अक्टूबर से १२ अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। यज्ञ प्रात. व सायं दोनो समय चलता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा राजवीर जी शास्त्री थे। वेदपाठी दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर और महानन्द संस्कृत महाविद्यालय बरनावा के ब्रह्मचारी थे।

५ अक्टूबर को प्रातः यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक सभा) द्वारा सम्पन्न हुआ और उन्होने रजत जयन्ती समारोह का शुभारम्भ किया। ५ से १२ अक्टूबर तक ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी के वैदिक प्रवचन होते रहे।

पंजि० नं० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२-११-१९८६)
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P.S.O. on 30-10-86

शताब्दी समारोह......

(पृष्ठ २ का शेष)

भव्य और विशाल शोभा यात्रा

१८ अक्तूबर को दोपहर बाद भव्य और विशाल शोभायात्रा निकाली गई। इसमें हजारों आर्य गगनभेदी जयघोष करते चल रहे थे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को एक सुसज्जित जीप में बिठाया गया। उनके दायें-बायें शस्त्रधारी आर्य वीर चल रहे थे। शोभायात्रा में हाथियों, घोड़ों और साइकलों पर ओम् ध्वज लहराते हुए आर्यों की सेना देखते ही बनती थी। शोभायात्रा में चल रहे आर्य बन्धुओं के स्वागत के लिए नगर में लगभग एक सो तोरण-द्वार बनाए गए थे। स्थान-स्थान पर शोभायात्रियों का सौंफ, इलायची और मिश्री से सत्कार किया गया। शोभायात्रा रात के आठ बजे समाप्त हुई।

लखनऊवासियों का कहना है कि यह शोभायात्रा लखनऊ के इतिहास में 'न भूतो न भविष्यति' थी।

आर्य बन्धुओं ने लखनऊ नगर को वैदिक धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो सदृश जयघोषों से गुंजा दिया।

शोभायात्रा आठ किलोमीटर लम्बी थी। इसमें एक लाख से अधिक आर्य बन्धु सम्मिलित हुए।

रात्रि में राजा रणञ्जयसिंह के सभापतित्व में भक्तिसंगीत और कवि सम्मेलन हुआ। रात देर तक श्रोता इस कार्यक्रम से भाव-विभोर होते रहे।

ध्वजारोहण

शताब्दी समारोह १७ अक्तूबर को प्रातः ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण के अवसर पर स्वामी आनन्दबोध जी ने विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में बढ़ते आतंकवाद को समाप्त करने का समय आ गया है साथ ही आर्य वीरों के संचालन मे आधुनिक पथियारों का एक ट्रेनिग सेन्टर चलना चाहिए।

पाक को चनौती देते हुए स्वामी जी ने कहा कि खालिस्तान तो कभी बनेगा नहीं। हां, गड़बड़ करने पर पाकिस्तान का नाम जरूर दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा। आर्य वीरों को एक शक्ति बनकर दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाना है।

स्वामी जी ने कहा कि आज आतंकवादी शक्तियां भारत पर हमले के लिए तैयार हैं। भीतर राष्ट्रघाती योजना द्वारा सिक्खों को भड़काया जा रहा है। आज पंजाब जल रहा है।

आपने याद दिलाया कि आजादी की लड़ाई में भाग लेने वालों में ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे। अब स्वतन्त्र भारत में हम आतंकवाद का मुकाबला करके राष्ट्र को खण्डित नहीं होने देंगे। आर्यसमाज ऋषि के मिशन को फैलाने तथा राष्ट्रहित में किए गए कार्यों में सदा ही सहयोग देता रहेगा।

आर्यस०.
१० से १६ नवम्बर त...
का उत्सव होगा।

उत्सव मे १० से १४ नवम्बर तक रात्रि ...
कथा करेंगे। प्रात. अथर्ववेदीय महायज्ञ हुआ करेगा।

१६ नवम्बर को प्रातः ९॥ से १० बजे तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का स्वागत और अभिनन्दन होगा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्र देवो भव ओ३म्

राष्ट्र को देवता बनाओ। सारे संसार को आर्य बनाओ।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २१ अंक ४७] कार्तिक शु० १४ स० २०४३ रविवार ९ नवम्बर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

निर्वाण उत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न

स्वामी आनन्दबोध की देश और जाति की सेवा करने की अपील

साउदी अरब के दूतावास पर प्रचंड प्रदर्शन की घोषणा

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

नई दिल्ली। यहां पहली नवम्बर को रामलीला मैदान में महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण उत्सव उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। यह समारोह आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में हुआ। सभापति का आसन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ग्रहण किया।

कार्रवाई प्रातः हवन-यज्ञ से प्रारम्भ हुई। यज्ञ वेदी पर ही महात्मा अमरस्वामी सरस्वती ने आर्यसमाज के प्रसिद्ध वेद प्रचारक पंडित रामकिशोर वैद्य को वानप्रस्थ की दीक्षा दी। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव ने जयति ओ३म् ध्वज व्योमविहारी गीत के गायन के साथ ध्वजारोहण किया।

श्रद्धांजलि सभा

ध्वजारोहण के बाद आर्य जनता पंडाल में जमा हुई, जहां श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। सभा का प्रारम्भ आर्यसमाज के वयोवृद्ध भजनोपदेशक महाशय आशानन्द के गीत से हुआ। उनके बाद विरजानन्द राष्ट्रीय अन्ध कन्या विद्यालय की छात्राओं ने अपना गीत—'दयानन्द ऋषि जग में जन्मे करने नवनिर्माण, कितना दयावान् भगवान्'—प्रस्तुत किया।

गीतों के कार्यक्रम के बाद सब से पहले इन्दौर के वैदिक विद्वान् पंडित वीरसेन वेदश्रमी माइक पर आये। उन्होंने यज्ञ के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

वीरसेन जी के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री और 'सार्वदेशिक' के सम्पादक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धासुमन भेंट किये। शास्त्री जी ने बोधकथा और अलंकार के माध्यम से भावपूर्ण मुद्रा, संयत स्वर, ओजस्वी वाणी और प्रभावशाली शैली में बताया कि राष्ट्र के उत्थान में महर्षि दयानन्द का कितना अधिक योगदान है। शास्त्री जी के बाद स्वाधीनता सेनानी डा० मदनमोहन चोपड़ा ने महर्षि को श्रद्धाप्रसून भेंट किये। तत्पश्चात् पूर्व संसद् सदस्य श्री हरदयाल देवगुण ने, जो वर्षों राजनीति और पत्रकारिता में रहे हैं, महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की। देवगुण जी के बाद वैद्य रामकिशोर ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। कुछ ही मिनट पूर्व वानप्रस्थ लेकर वे प्रथम बार पीली धोती और पीला कुरता पहने बोल रहे थे, इसलिए पंडाल में उपस्थित विशाल जनसमूह ने उनकी बातों को पहले से भी अधिक श्रद्धापूर्वक सुना। युवा और प्रखर वक्ता डा० वाचस्पति उपाध्याय ने अपने भाषण में श्री सूर्यदेव द्वारा प्रस्तुत उस प्रस्ताव का समर्थन किया, जिसमें सरकार से संस्कृत भाषा की उपेक्षा न करने का अनुरोध किया गया था

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का उद्बोधन

अन्त में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जो काषाय वस्त्रों मे पहली बार ऋषि निर्वाण दिवस की सभा को सम्बोधित कर रहे थे, अपने विचार प्रकट किये। स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वक्तृता मे अनेक ऐसे प्रश्नो को छुआ, जो पिछले दिनो जनमानस को आन्दोलित करते रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज का दिन आत्मनिरीक्षण का दिन है। हमे निराश होने की आवश्यकता नही। हम काफी आगे बढ़े हैं। एक समय वह था, जब पंडित दीनदयाल शर्मा जैसे धार्मिक नेता आर्यसमाज के विद्वानो को शुद्धि के पक्ष मे शास्त्रों के प्रमाण प्रस्तुत करने की चुनौती देते थे और अब वह समय आ गया है, जब सनातनधर्मियो के नेता शंकराचार्य शुद्धि का समर्थन करते हैं।

स्वामी जी ने मर्मस्पर्शी शब्दों मे साउदी अरब मे घटी एक घटना की चर्चा की, जिसमे श्री रामकुमार भारद्वाज नामक एक सज्जन को केवल इसलिए जेल मे डाल दिया गया कि वे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ रहे थे। (यह सारी घटना विस्तारपूर्वक 'सार्वदेशिक' और अन्य पत्रपत्रिकाओं मे प्रकाशित हो चुकी है।) स्वामी जी ने कहा कि मैं विदेशमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी से मिलकर श्री भारद्वाज की रिहाई के लिए पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन यदि सरकार उन्हें रिहा न करवा सकी तो फिर आर्यसमाज साउदी अरब के दूतावास के सामने प्रचंड प्रदर्शन करेगा।

पंजाब की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यदि सरकार ने पंजाब में हो रही हत्याओ को न रोका तो इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होगी और यह आग सारे देश को अपनी लपेट मे ले लेगी। हम लगातार यह मांग करते आ रहे हैं कि बरनाला सरकार को अपदस्थ किया जाये और जैसलमेर से कश्मीर तक सुरक्षित पट्टी बनाई जाये। सुरक्षित पट्टी के प्रस्ताव का समर्थन सब सम्बन्धित सरकारों ने किया—केवल बरनाला सरकार ने इसका विरोध किया।

अन्त मे स्वामी जी ने अपील की कि जनता आज के दिन आर्यसमाज के माध्यम से देश और जाति की सेवा का व्रत ले।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

बम्बई में विशाल एकता सम्मेलन

स्वामी आनन्दबोध का समस्त हिन्दू संगठनों को एक सूत्र में बंधने का आह्वान

१४ अक्तूबर को बम्बई के क्रास मैदान में ऐतिहासिक हिन्दू एकता सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसका आयोजन बम्बई की सभी रामलीला कमेटियों और हिन्दू महासभा, भारतीय जनसंघ और आर्य प्रतिनिधि सभा समेत सभी हिन्दुत्ववादी संगठनो की ओर से कैप्टिन देवरत्न आर्य के संचालकत्व में किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की और सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रो० बलराज मधोक थे। इन दोनो के अतिरिक्त सम्मेलन को श्री विक्रम सावरकर, श्री मधु मेहता, श्री जयन्त पटेल, कैप्टिन देवरत्न, स्वामी रामस्वरूप और श्री सियाराम निर्भय ने भी सम्बोधित किया।

स्वामी आनन्दबोध ने सभी हिन्दू नेताओं और संगठनों को पूर्वाग्रह छोड़ कर एक मच पर इकट्ठे होने और मिलकर देश की एकता और हिन्दू पहचान की रक्षा के लिए काम करने का आह्वान किया। उन्होने बरनाला सरकार को भंग करने, इस्राईल के साथ मैत्री सम्बन्ध कायम करने और अणु बम बनाने की भी मांग की। प्रो० बलराज मधोक ने देश की समस्याओं का प्रभावपूर्ण हल हिन्दुस्तान को आर्य-हिन्दू राज्य घोषित करना बताया। उन्होंने कहा कि हिन्दू राज्य ही मानवतावादी और सही अर्थो मे सफल राज्य हो सकता है।

उन्होंने सभी हिन्दू सगठनो से अपील की कि वे मिल कर प्रयत्न करें कि हिन्दुस्तान का अगला राष्ट्रपति कोई हिन्दू राष्ट्रवादी व्यक्ति हो। (आठ महीने के बाद राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है।) श्री विक्रम सावरकर ने कहा कि हिन्दू महासभा सभी हिन्दू सगठनो के साथ मिल कर काम करने को तैयार है। श्री मधु मेहता ने कहा कि भारत पर पाकिस्तान द्वारा सांस्कृतिक और आर्थिक आक्रमण हो रहा है। पाकिस्तान तस्करी को योजनाबद्ध ढग से प्रोत्साहन दे रहा है और उसकी आय से वह भारत में अपने एजेन्टों का जाल बिछा रहा है।

कैप्टिन देवरत्न आर्य ने सभी नेताओं और सम्मेलन में आये नेताओ को हिन्दू सगठन समन्वय समिति के संयोजक के नाते धन्यवाद दिया।

सम्मेलन के बाद हिन्दू नेताओं ने समन्वय समिति को स्थायी रूप देने का फैसला किया। यह भी फैसला किया गया कि इसी प्रकार के हिन्दू एकता सम्मेलन अन्य महानगरो मे भी किये जायें। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा सभी हिन्दू सगठनो की एकता के लिए आह्वान किया गया, जिससे भारत पर होने वाले सभी प्रकार के आक्रमणो का निराकरण तथा आन्तरिक समस्याओ का समाधान किया जा सके। इस प्रस्ताव मे कहा गया है कि इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दुस्तान की एकता हिन्दुओ के साथ जुडी है। हिन्दू समाज ही इस देश का राष्ट्रीय समाज है। जहा कही हिन्दू दुर्बल या अल्पमत मे हो गये, वह क्षेत्र हिन्दुस्तान से कट गया। गाधार, सिन्ध, पश्चिमी पजाब और पूर्वी बगाल इसी कारण हिन्दुस्तान से कट गये। खण्डित हिन्दुस्तान मे भी अलगाववादी तत्त्व कश्मीर घाटी जैसे उन्हीं क्षत्रो मे कार्यरत हैं जहां हिन्दू कम हैं। पंजाब में वही केशधारी बन्धु अलगाव की बात करने लगे हैं, जो हिन्दू कहलाने को तैयार नहीं। इसलिए हिन्दुस्तान की रक्षा और एकता के लिए हिन्दुओं का संगठित होना अनिवार्य है।

महात्मा अमरस्वामी पुरस्कृत

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह के अवसर पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (सन्यास पूर्व नाम प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित) द्वारा अपने पिता श्री केदारनाथ दीक्षित के नाम पर स्थापित निधि से महात्मा अमरस्वामी सरस्वती को वैदिक साहित्य के प्रणयन में उनके योगदान के लिए ग्यारह सौ रुपये का पुरस्कार भेंट किया गया पुरस्कार की राशि का चैक स्वामी आनन्दबोध जी ने अमरस्वामी जी को अर्पित किया। स्वामी आनन्दबोध जी और आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने अमरस्वामी जी को पुष्पमाला पहनाकर उनका स्वागत किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती बम्बई के विशाल हिन्दू एकता सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए। पीछे पंजाब के हिन्दू नेता श्री सुरेन्द्र कुमार बिल्ला बैठे हैं, जो इन दिनो राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अधीन नजरबन्द हैं।

आंधियों में दीपक जलाओ, साथियो

दिल से अंधेरों को भगाओ साथियो।
आंधियो मे दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो।
बातियों को खून में डुबाओ साथियो।

वायदा करो तो पूरा होना चाहिए। मांग भरदी तो नही रोना चाहिए।
यदि आग लगी आपके पडोस मे। चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए। टी. वी.-फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
इतनी समझ हमें आनी चाहिए। लडकी न लकडी बनानी चाहिए।
डोलिया न अर्थिया बनाओ साथियो।
उतना ही खाओ जो कमाओ साथियो।

प्यास न बुझा सके वो पानी नही है। विश्व भूल जाये वो कहानी नही है।
रुकने का नाम तो रवानी नही है। हार मान बैठे वो जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड दीजिये। टूटी हुई माला फिर जोड दीजिये।
बादलो से अमृत निचोड लीजिये। कमो की कलाइया मरोड़ दीजिये।
गिरे हुए दीन को उठाओ साथियो।
एकता के बीज को बचाओ साथियो।

लक्ष्य पै न पहुंचे जो वो तीर नही है। खून पीता हो जो वो अमीर नही है।
सत्य बेचता हो वो फकीर नही है। झूठ बोलता हो वो कबीर नहीं है।
प्यार के बिना तो जिन्दगी अनाथ है। साथ छूट जाये वो भी कोई साथ है।
व्यर्थ मे झुका रहे वो कैसा माथ है। उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।
प्रेम की फुहार में नहाओ साथियो।
वेदना को वन्दना बनाओ साथियो।

जनता को लूटे वो सिपाही नही है। लिखने से मुकरे वो स्याही नहीं है।
रास्ते को दोष दे वो राही नही है। प्यास को बढाये वो सुराही नहीं है।
सांच को यहां कभी भी आंच नहीं है। आंच में जले वो कोई सांच नही है।
पत्थर तो पत्थर है कांच नही है। पक्षपाती जांच कोई जांच नहीं है।
फैशन की पुरिया न खाओ साथियो।
पुरखों के पुण्य को बचाओ साथियो।

दिल से अंधेरों को भगाओ साथियो। आंधियों मे दीपक जलाओ साथियो।
तेल की तलाश में न जाओ साथियो। बातियों को खून में डुबाओ साथियो।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

आज गोपाष्टमी है

आज (१ नवम्बर को) गोपाष्टमी है। आज का दिन गौओं के पालन के बारे में सोचने का दिन है। ऋग्वेद का मन्त्र है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

अर्थात् गौ रुद्रों की माता है, वसुओं की पुत्री है, आदित्यों की बहन और अमृत का केन्द्र है। मैंने विचारशील लोगों से कहा है कि गौ निरपराध है—उसकी हत्या न करो। इस वेदमन्त्र मे गौ की तुलना माता, पुत्री और बहन से की गई है।

यजुर्वेद का पहला ही मन्त्र है—**यजमानस्य पशून् पाहि** अर्थात् यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

महाभारत मे गौ को अत्यन्त हितकारी और उपयोगी बताया गया है। भारत के संविधान की अड़तालीसवीं धारा मे गोहत्या पर पूर्ण रोक राज्य का कर्तव्य बताया गया है। सरकार इस दिशा मे पर्याप्त कदम नही उठा रही—उलटा ऐसे बूचड़खाने चलने दे रही है, जिनमे गौओं की गर्दनें मशीनों से काटी जाती हैं। सरकार स्वयं बम्बई के समीप देवनार और कलकत्ता के समीप दानकुली में ऐसे कारखाने चला रही है।

सन् १९२५ में बेलगाव मे आयोजित गोरक्षा परिषद् में सभापति पद से बोलते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि "मेरे विचार मे गोरक्षा का प्रश्न स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नही। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा मानता हूँ। मैं मानता हूँ कि जिस तरह अस्पृश्यता के दोष से मुक्त हुए बिना और खादीधारी हुए बिना हम स्वराज्य नहीं ले सकते, उसी तरह मुझे कहना चाहिए कि जब तक हम यह न जान लें कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिए, तब तक स्वराज्य जैसी कोई चीज नही, क्योंकि यह हिन्दू धर्म की कसौटी है।" मनुस्मृति (५/५१) कहती है—

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः॥

अर्थात् अनुमति देने वाला, अंगों को काटने वाला, मारने वाला, खरीदने वाला, बेचने वाला, पकाने वाला, परोसने वाला और खाने वाला - ये सब हत्यारे हैं। इन सबको पाप लगता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।

स्वामी जी ने गौ इत्यादि उपयोगी पशुओं की रक्षा के लिए गोकरुणानिधि लिखी। उन्होंने पशुओं के प्रति दया प्रदर्शित करते हुए लिखा कि "देखिये जो पशु निस्सार घास, तृण, फूल, पत्ते खायें और दूध, मार आदि अमृत रूपी रत्न देवें, हल, गाड़ी में चलके अनेकविध अन्नादि उत्पन्न कर सबके बुद्धि बल पराक्रम को बढ़ाकर नीरोगता करे। पुत्र, पुत्री, मित्र आदि के समान पुरुषों के साथ विश्वास, प्रेम करें। जहां बांधें वहीं बंधे रहें। जिधर चलावें उधर चलें। जहां से हटायें, वहां से हट जायें। जब कभी व्याघ्रादि मारने वाले पशु को देखें तो अपनी रक्षा के लिए पालन करने वाले के समीप दौड़ जावें कि वह हमारी रक्षा करेगा। जिसके मरने पर भी चमड़े के जूते कंटक आदि से रक्षा करें।"

अखिल भारतीय कृषि गोसेवा संघ (गोपुरी, वर्धा) हमारे धन्यवाद का पात्र है कि वह आर्यसमाज सहित अनेक संगठनो के सहयोग से गोहत्या पर पूर्ण रोक लगवाने के लिए अभियान चला रहा है। यह अभियान रचनात्मक और आन्दोलनात्मक दोनों आधारों—दोनो धरातलों—पर चलाया जा रहा है।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिदिन चालीस हजार गौएं कटती हैं। गोपाष्टमी के दिन हम व्रत लें कि हम गौओं की रक्षा और पालन के लिए यथासम्भव अधिकाधिक करेंगे। भूलकर भी मांस भक्षण नही करेंगे। इसी में इस दिन की सफलता है।

—सत्यपाल शास्त्री

विली वान डे केरकोव का निष्कासन

बेल्जियन पादरी फादर विली वान डे केरकोव के निष्कासन आदेश को उसके साथियों, सहयोगियों और अनुयायियों ने चुपचाप स्वीकार नहीं कर लिया। निष्कासन का आदेश प्राप्त होते ही पूर्व नियोजित कार्यक्रम की निश्चित कड़ी के रूप में सामूहिक विरोध की घोषणा हो गई। भारतीय गुप्तचर सेवा की महत्वपूर्ण सूचनाओं तथा चेतावनियों के पश्चात् भारत सरकार ने अनेक भारतद्रोही विदेशी मिशनरियों में से केवल एक विली वान डे केरकोव को देश से निकालने का निश्चय किया और सरकार के इस सीमित अनुशासन को भी वर्च सहज ही नहीं पचा पाया। आदेश प्राप्त होते ही बिहार के छोटा नागपुर अंचल (रांची कमिश्नरी) में सक्रिय समस्त क्रिश्चियन संस्थाओं और स्कूलों की अनिश्चितकालीन हड़ताल की घोषणा की गई। प्रसन्नता की बात है कि सरकार के कठोर रुख के कारण यह योजना सफल नहीं हो पाई। पहले भी जब-जब ऐसे आदेश दिये गये, तब-तब मिशन संस्थाओं ने उनका विरोध किया है। अपनी देश विरोधी, अराष्ट्रीय तथा अनैतिक गतिविधियों के प्रमाणित होने के अनन्तर भारत के मिशनरी भारत सरकार की दण्ड और अनुशासन व्यवस्था को चुपचाप स्वीकार नहीं करते। वे उसका संगठित प्रतिरोध करते हैं। जनता शासनकाल में संसद् में धर्म परिवर्तन विरोधी विधेयक के प्रस्तुत होने पर मिशनरी अपने अनुयायियों सहित सड़क पर निकल आये थे—यहां तक कि सेवा और प्रेम की देवी के रूप में विख्यात 'मदर' विशेषण-धारिणी टेरेसा महोदया भी अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गई थीं। उस प्रतिरोध का स्पष्ट अभिप्राय यह था कि मिशन को सेवा के नाम पर धर्मान्तरण की दुकानें चलाते रहने की स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए और अब विरोध का भी प्रकट अर्थ यही है कि मिशन चाहे जो करे, अफवाहें फैलाये, गृहयुद्ध की तैयारी करे, भारत पुत्रों को भारतद्रोह के लिये भड़काये, भले ही कुछ भी करे, उसे सब कुछ करने की छूट मिलनी चाहिए। ऐसी छूट में तनिक भी बाधा पड़ने पर आज मिशन के भेड़िये गुर्राने की स्थिति में आ गये हैं। यह स्थिति हमारी ही आत्मघातिनी मूढ़ता का दुष्परिणाम है। भारत सरकार को इस गुर्राहट के दूरवर्ती परिणामों को समझ लेना चाहिए। उसे यह जान लेना चाहिए कि मानवरक्त का स्वाद चख चुके ये भेड़िये यदि आज गुर्रा रहे हैं तो कल निश्चित रूप में काटेंगे भी। गुर्राने वाले भेड़ियों के कटखना बन जाने से पूर्व ही उनका उचित प्रबन्ध नहीं हुआ तो भारत की अखण्डता और अस्मिता को उधेड़ डालने से उन्हें कोई नहीं रोक पायेगा।

—आचार्य धर्मेन्द्र
विराट्नगर, राजस्थान

जब इन्दिरा जी ने प्रकाशचन्द्र सेठी का मद्यपान छुड़वाया

भूतपूर्व गृहमन्त्री और इन्दिरा कांग्रेस के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र सेठी ने बम्बई के अंग्रेजी साप्ताहिक "इलस्ट्रेटिड वीकली आफ इण्डिया" के सम्पादक श्री प्रीतीश नन्दी से हुई अपनी भेंट-वार्ता में अनेक चौंकाने वाली बातें कही थीं। एक प्रसंग था—इन्दिरा जी ने सेठी जी का मद्यपान कैसे छुड़वाया। इसका संक्षिप्त विवरण तो आप पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ चुके हैं, विस्तृत विवरण नीचे पढ़िये—

प्र० : वह कसम क्या थी. जो आपके कहने के अनुसार श्रीमती गांधी के सामने आपने खाई थी।

उ० : देखिए, मेरे कुछ मित्र साथी और मैं महीने में एक-आध बार बैठ जाते थे और पी लेते थे कोई आयातित व्हिस्की या जिन, कोई कुछ और जो जिसे पसन्द हो।

एक बार उनमे से एक—अगर आप नाम जानना चाहें, तो शिवशंकर श्रीमती गांधी के पास गये और उनसे कहा—सेठी जी हमें बिगाड़ रहे हैं। मैडम ने पूछा कैसे? उन्होंने कहा—वे पीनेके लिए हमसे जबरदस्ती करते हैं।

मैडम ने जबाब दिया—आप बच्चे तो नहीं हैं, जो कोई आपको जबरदस्ती पिला देगा। आप इनकार कर सकते हैं। वे बोले, नहीं अम्मा, उन्हें समझा दीजिए। वे बोलीं, ठीक है, मैं देखूंगी।

प्र० : अम्मा?

उ० : हां, उन्हें अम्मा कहते थे। आंध्र के सभी लोग उन्हें अम्मा ही कहा करते थे।

अगली सुबह ८ बजे आर० के० धवन का फोन आया। उन्होंने कहा—मैडम आपको और श्रीमती सेठी को यहां बुला रही हैं।

प्र० : श्रीमती सेठी को?

उ० हां, श्रीमती सेठी को भी।

अतः मैंने उनसे पूछाकि मामला क्या है, आज श्रीमती सेठीको क्यो बुलाया जा रहा है? उन्होने कहा कि आप दोनो आ जाइए, किसी खास मामले पर आपसे बात करनी है। हम दोनों ९ बजे पहुंचे। धवन हमें मैडम से मिलवाने अन्दर ले गये।

थोड़ी-सी हल्की-फुल्की बातचीत के बाद वे बोली, सेठी जी, आजकल आप बहुत पार्टियां कर रहे हैं। मैंने कहा, नही मैडम, पार्टियां तो कोई नही कर रहे हैं। कभी-कभार कुछ लोग इकट्ठे मिलकर खाना खा लेते हैं।

उन्होंने पूछा—आप मुझे कभी क्यो नहीं बुलाते?

मैडम, अगर मैं आपको बुलाऊं तो मुझे कम से कम पांच हजार रुपये खर्च करना पड़ेगा। मैंने कहा, आप तो तभी आ सकती हैं जब मैं पांच सो या सात सो आदमियों को बुलाऊं। ऐसे छोटे-मोटे सम्मेलन में थोड़े ही।

नही, नही, नहीं। उन्होंने कहाकि मैं ऐसे छोटे-से इकट्ठे में भी आ सकती हूं। फिर हंसते हुए वे बोली—अगर मैं आ जाऊंगी तो आपकी पार्टी में एक चीज कम होजायेगी न। मैंने पूछा क्या? वे बोली – तब तुम पी नही सकोगे।

इसके बाद वे और गम्भीर हो गईं और बोली—देखिये सेठी जी, हम पर काफी नजर रखी जा रही है। मैं अढ़ाई साल के बनवास के बाद फिर सत्ता में आई हूं। वे मेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हुए हैं। आपकी पार्टियो में मन्त्री आते हैं, उनके पी० ए० आते हैं, ड्राइवर, गनमैंन और अर्दली आते हैं। यह सब बिकाऊ माल है। कोई उन्हे खरीद लेगा और फिर अखबारों की सुर्खी होगी कि श्रीमती गांधी की वजारत पियक्कड़ों की है।

मैंने कहा, मुझे आपकी इस बात का कोई कारण नजर नही आया। फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि हम शराबी नही। हम शायद पी लेते हैं, लेकिन पियक्कड़ नहीं हैं। मुझ पर विश्वास कीजिये।

वे बोलीं—भगवान् के वास्ते यह बन्द कर दीजिये। यह आपके लिए ठीक नही है न आपकी डायबिटीज के लिए, न आपकी राजनीति के लिए। आप अपनी पत्नी की उपस्थिति मे मेरे सामने कसम खाइए कि आप अब नहीं पियेंगे—खास तौर पर व्हिस्की।

प्र० : खास तौर पर व्हिस्की क्यों?

उ० : उनके कहने के मुताबिक व्हिस्की डायबिटीज के लिए खास तौर पर खराब है।

उ० : जी हां, मगर आजकल कन्ट्रोल में है। मैं काफी कसरत वगैरा करता हूं।

चुनाचे मैंने कहा कि ठीक है मैडम, मैं नहीं पियूंगा।

तब उन्होने मेरी पत्नी से कहा, अगर ये कोई गड़बड़ करें तो मुझे आकर बताना। मुझे हर १५वें दिन मालूम होना चाहिए कि ये क्या कर रहे हैं।

मैंने कहा—नहीं मैडम, मैं कसम खाता हूं कि मैं व्हिस्की कभी नही पीऊंगा।

लेकिन बाकी ड्रिक्स के बारे में? वे बोली, बैठ जाइए और मेरी बात सुनिए। व्हिस्की आपका गुर्दा खराब कर देगी, क्योंकि आपको डायबिटीज है। इसके अलावा आपको पार्टियां नही करनी चाहिए। अलबत्ता, अगर सर्दी बहुत ही ज्यादा हो तो आप 'कोगनेक' का आधा पैग दूध में मिलाकर खाने से पहले या बाद मे ले सकते हैं।

तब से मेरा पीना बन्द।

प्र० : लेकिन क्या कभी पीने के मामले में आपको कोई गम्भीर समस्या पेश आई है या जैसी जोरदार अफवाह है, आप कभी शराबी थे?

उ० : कभी नही, मैंने कभी अकेले नहीं पी। महीने में एकाध बार पार्टियों में पी लेता था।

दक्षिण भारत में हिन्दी की स्थिति

–सच्चिदानन्द शास्त्री–

आन्ध्र प्रदेश से आये सर्वश्री राजवीर आर्य (संयुक्त मन्त्री, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद), डा० नन्दन सत्यम् (संगठन मन्त्री, आन्ध्र प्रदेश भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, हैदराबाद) तथा वीर कुमार (संचालक, खादी प्रतिष्ठान, वारंगल) ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से हुई एक भेंट में बताया कि दक्षिण भारत में--विशेषकर तमिलनाडु में—चलने वाला हिन्दी विरोधी आन्दोलन केवल एक राजनैतिक षड्यन्त्र है। सरकार के इशारे पर चलने वाला वर्तमान आन्दोलन वहां के राजनेताओं द्वारा अधिकतर अशिक्षित जनता की क्षुद्र क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर वोट बटोरने की एक चाल है। अपने निहित स्वार्थों के कारण वहां की अफसरशाही भी इस आन्दोलन को हवा दे रही है। लेकिन आम जनता में हिन्दी का कोई विरोध नहीं, ऐसा वहा के हिन्दी विद्वान् स्वयं स्वीकार करते हैं।

असलियत तो यह है कि तमिलनाडु के राजनेता स्वयं तो हिन्दी के महत्त्व को अच्छी तरह समझते हैं लेकिन जनता को अपने खेमे में हांकने के लिए एक अस्त्र के रूप में हिन्दी विरोध का प्रयोग करते रहे हैं और अब भी कर रहे हैं। बहुत कम लोग जानते होंगे कि द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम के सस्थापक अन्नादुरै ने अपने समय में एक ओर तो हिन्दी का तीव्र विरोध किया और दूसरी ओर स्वयं अपने बच्चों को तमिलनाडु से दूर काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ने के लिए भेजा, जहां से उन्होंने हिन्दी में एम. ए. परीक्षा पास की और आज वे स्वयं हिन्दी के शिक्षक हैं। राजनैतिक स्वार्थों के लिए जन-हित की बलि चढ़ाने का इससे अधिक स्पष्ट उदाहरण और क्या होगा? समय की मांग और स्वयं तमिलनाडु की जनता के भावी हितों को देखते हुए वहां के राजनेता हिन्दी के इस असंगत विरोध को जल्दी समाप्त कर दें, इसी में उनका और जनता का भला है।

आर्यसमाज ने सदा से ही हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार का प्रयत्न किया है। उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता हर स्थान पर हिन्दी की सेवा में लगे हुए हैं। इस विषय में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद जिसके कार्यक्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र आते हैं, सराहनीय कार्य कर रही है। आन्ध्र प्रदेश में यद्यपि हिन्दी का सरकारी स्तर पर इतना विरोध तो नहीं, जितना तमिलनाडु में हो रहा है, लेकिन धीरे-धीरे इसकी प्रक्रिया आरम्भ हो गई है। वहां के स्कूलों में पहले हिन्दी को पांचवीं कक्षा से पढ़ाने का प्रावधान था, अब सरकार के आदेशानुसार इसे आठवीं कक्षा से कर दिया गया है। हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने इसका विरोध करते हुए मांग की है कि आन्ध्र प्रदेश के स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई पांचवीं कक्षा से ही आरम्भ की जाये। अन्य राज्यों की तरह यहां भी अफसरशाही हिन्दी के प्रचार में आड़े आ रही है। मुख्य मन्त्री श्री रामाराव को इन प्रकार की बाधाओं को हटाकर जन-हित में निर्णय लेना होगा।

सरकारी उपेक्षा और असहयोग के बावजूद आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी शिक्षा का कार्य तेजी से बढ़ रहा है। हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं में प्रति छमाही लगभग ४० हजार विद्यार्थी बैठते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षायें भी आयोजित की जाती हैं। इससे हिन्दी के प्रचार को काफी बढ़ावा मिला है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हिन्दी प्रचार सभा की ओर से जेलों में कैदियों को हिन्दी पढ़ाने का कार्यक्रम भी चल रहा है। जो कैदी हिन्दी की परीक्षा पास कर लेते हैं, उन्हें कैद से १० दिन की छूट मिल जाती है। इस प्रकार के कई कैदी, जिन्होंने जेल में रहकर हिन्दी सीखी थी, जेल से छूटने पर स्वयं हिन्दी शिक्षक का कार्य कर रहे हैं। आन्ध्रप्रदेश के आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं द्वारा हिन्दी के प्रचार के लिए यह एक अनुकरणीय कार्य है।

शुद्धि के कार्य में भी आन्ध्रप्रदेश पीछे नहीं। हिन्दू शुद्धि सभा के संगठन मन्त्री नन्दन सत्यम् ने बताया कि यद्यपि इस सभा की स्थापना हुए केवल १६ मास हुए हैं, अब तक ७५० व्यक्तियों को शुद्ध करके हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लिया गया है। अधिक संख्या ईसाइयों की थी। आगामी तीन महीनों में लगभग ३००० शुद्धियां करने का लक्ष्य है। शुद्धि सभा के कार्यकर्त्ता मुख्यतः गरीब लोगों की बस्तियों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं, जो अक्सर नक्सलवादियों (उग्रवादियों) से जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा उनका यह प्रभाव बहुत सीमा तक कम हो गया है। शुद्धि सभा अपने कार्य के लिए तीन लाख रुपया जमा करने की योजना बना रही है।

श्री वीर कुमार (खादी प्रतिष्ठान, वारंगल के संचालक) ने बताया कि उनके प्रतिष्ठान में केवल हिन्दी का प्रयोग होता है। पत्रव्यवहार, फार्म, रसीदें आदि सब हिन्दी में ही छापी जाती हैं। प्रकारान्तर से यह भी हिन्दी प्रचार का एक सशक्त माध्यम है। आन्ध्र प्रदेश के इन उत्साही कार्यकर्ताओं का प्रयत्न वास्तव में सराहनीय है। ●

महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश विश्व में फैलाना है

–डा० आनन्दप्रकाश–

(उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

महर्षि दयानन्द के उपदेशों का मूल मन्त्र विश्वप्रेम और मानव एकता है। उन्होंने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों की बुराइयों का खण्डन इसीलिए किया, क्योंकि ये मनुष्यों की एकता में बाधक हैं। महर्षि ने अपने जीवन में इस बात का भी प्रकाश किया कि विभिन्न सम्प्रदायों के लोग सर्वमान्य सिद्धान्तों और मान्यताओं पर एकमत होकर आपस में समीपता लावें परन्तु निहित स्वार्थों के कारण यह प्रयास सफल न हो सका। विश्व में व्याप्त सभी विभेदक दर्शनों को चाहे वे नस्ल के आधार पर हों, रंग अथवा अमीरी-गरीबी के कारण जड़ से समाप्त करने का सीधा रास्ता समस्त भूमि को माता और ईश्वर को पिता अर्थात् सारे जगत् का रचयिता स्वीकार करना है। वेद का यही आदेश है और महर्षि ने इसी सन्देश द्वारा समस्त मानवता को एक करने का कार्यक्रम आर्यसमाज को दिया। आर्यसमाज ने अपने नियमों में एक नियम—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य-उद्देश्य है—बताया। वास्तव में संसार का उपकार करने की भावना से ही अनेक देशों में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। परन्तु कालान्तर में वह भारतीय मूल के निवासियों में ही सीमित हो गया और उसने मुख्य रूप से अपना कार्यक्षेत्र विद्यालय चलाना और विवाह संस्कार कराना ही बना लिया। इस प्रकार साधन को साध्य बना दिया गया। महर्षि दयानन्द द्वारा दर्शाया गया मानव एकता का सच्चा मार्ग, जिसे हम ऋग्वेद के संगठन सूक्त के उच्चारण द्वारा प्रति सप्ताह अपने साप्ताहिक सत्संगों में दोहराते हैं, आज विश्व मंच पर स्थान पा चुका है। परन्तु अभी इसके उस भाव को समझने में देर है, जिसमें वैदिक संस्कृति के मार्ग का अवलम्बन कर मन, विचार और कर्म की एकता का आह्वान किया गया है। यह उत्तरदायित्व आर्यसमाज का है कि वह विश्व समुदाय के समक्ष महर्षि दयानन्द प्रतिपादित इस उदात्त विचार को रखे, जो विश्वजनीन और सर्वहितकारी है। महाभारत के पूर्व तक समस्त भूमण्डल पर आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य था, धर्म का शासन स्थापित था, वेद विरुद्ध कोई मत-सम्प्रदाय नहीं था और समस्त मानव समुदाय वैदिक संस्कृति का ही अनुयायी था। महर्षि का यही दिव्य सन्देश सम्पूर्ण विश्व को मैत्री, एकता और शान्ति के मार्ग पर ला सकता है।

आर्यसमाज के संगठन को अपने इस लक्ष्य को सामने रखते हुए अपनी शक्ति को समायोजित करने की आवश्यकता है। देशान्तर की आर्यसमाजों का सार्वदेशिक सभा से निकट का सम्बन्ध होना चाहिये।

महर्षि दयानन्द का सन्देश ही विश्व को विनाश से बचा सकता है। हमने पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, वनस्पतियों, ओषधियों, जल, विश्वदेव अर्थात् सर्वत्र शान्ति की कामना की है। विश्व में जहां-जहां भी अन्याय, अभाव और अत्याचार है, वहां-वहां आर्यसमाज की आवश्यकता है। धार्मिक उन्माद के कारण कई देशों में युद्ध छिड़े हुए हैं, देवियों पर अमानुषिक अत्याचार किये जाते हैं और मनुष्यों के बीच व्यवहार असमान है—विषम है। भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनेक दोष प्रवासी भारतीयों में भी घर करते जा रहे हैं। ऐसे सभी स्थानों पर आर्यसमाज के प्रचार की और दयानन्द के दिव्य सन्देश की आवश्यकता है। विश्व मंच पर जब महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुँचाया जायेगा, तभी वास्तविक विश्व शान्ति प्राप्त होगी। आर्यसमाज मानवता का आन्दोलन है। यह रास्ता लम्बा है, पर मानवता की लड़ाई में पराजय कभी नहीं होती। ●

रजनीश की वापसी, विश्व की मानसिकता और हम

–आचार्य धर्मेन्द्र, विराट्नगर, राजस्थान–

संसार के सभी सम्भावित आश्रय स्थलों से अवहेलना, अपमान और तिरस्कार से लथपथ होकर भोगियों का निर्लज्ज मसीहा रजनीश वापस अपनी जन्मभूमि की शरण में आ गया है। यह युग निर्लज्जता का युग है। प्रभूत दुर्गति और दुर्दशा के अनन्तर शठतापूर्वक मुस्कराते रहने वाले धूर्त भी इस युग में सफल हो जाते हैं। सम्भवत स्वाभिमानशून्यता इस युग में सफलता की एक शर्त है! इसलिए रजनीश के स्वास्थ्य पर उसकी दुर्गति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यौवन को तो विश्व के सभी देशों से मिले अपमान या अस्वीकृति ने नहीं, उसकी भोगान्धता ने ही वृद्धावस्था में परिणत किया है। ५५ वर्ष की अल्पायु में ही वह अनेक रोगों का केन्द्र बन गया है। बहुमूल्य औषधियां ही उसे जिलाये हुए हैं। विश्व मानवता को देने के लिए उसके पास जो कुछ था, वह दे चुका है। उन्मुक्त व्यभिचार के सिवा उसके पास कोई सन्देश न पहले था, न अब है। जिन त्यागी, संयमी और सदाचारी विभूतियों की उसने अब तक जी भर कर निन्दा की है, वे कल भी विश्व मानवता के लिए वंदनीय थीं और आज भी बनी हुई हैं, जब कि रजनीश को उसके जीवन में ही घूरे पर फेंक दिया गया है। भोगांध व्यभिचारियों की यही दुर्गति होती है। रजनीश के इस परिणाम पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं। आश्चर्य है तो केवल इस देश की मानसिकता पर, जहां तर्क, विवेक और व्यावहारिकता को ताक पर रखकर लोग निकृष्ट से निकृष्ट धूर्तों को अपना आराध्य बना लेते हैं और जहां किसी भी प्रकार के प्रपंच एवं पाखण्ड के विस्तार के मार्ग में कोई बाधा नहीं। हमारा देश प्रत्येक उस ढोंगी धूर्त के लिए स्वर्ग है जो अपने वेश, वाणी और व्यवहार से लोगों को सम्मोहित कर सकता हो। रजनीश के चंगुल में फंस कर आज तक किसी ने भी शुभ परिणाम प्राप्त नहीं किया, फिर भी उसे अपनी दुकान जमाने के लिए नये-नये मूर्ख यहां मिलते जा रहे हैं। ऐसे मूर्ख शासन में भी हैं और समर्थ नागरिक समुदाय में भी। इसीलिए सारे विश्व से तिरस्कृत और अपमानित इस विचित्र वेशधारी वाचाल और व्यभिचारी को बिना किसी कठिनाई के भारत में फिर शरण मिल गई है।

स्वच्छता और नैतिकता के लिए विख्यात प्रधानमन्त्री राजीव को रजनीश को भारत में निवास की अनुमति देने के विषय में गम्भीरता से विचार करना चाहिये। किसी भी कोण से पात्रता न रखने पर भी रजनीश भारतीय समाज, भारतीय संस्कृति, भारतीय न्याय व्यवस्था एवं भारतीय शासन व्यवस्था और राजनेताओं पर अशिष्ट, अभद्र और अनर्गल टिप्पणियां करता रहा है। अपने प्रति तनिक-सी अनुकूलता का संकेत मिलने पर वह किसी की भी प्रशंसा करने लगता है और प्रतिकूल प्रतिक्रिया मिलते ही निन्दा करने लगना उसके चरित्र की विशेषता है। उसकी स्थिति एक सन्निपातग्रस्त प्रमादी और प्रलापी जैसी है। उसने अब तक ऐसा कुछ भी नहीं कहा, जिसका स्वयं ही खण्डन न किया हो। वह एक अस्थिरबुद्धि प्रवंचक है। मानसिक और बौद्धिक अस्थिरता के अनन्तर यदि वह सफल समृद्ध हुआ तो उसका कारण केवल उसकी वाग्विलासिनी प्रतिभा है, जो प्रचुर पुस्तकीय अध्ययन से समृद्ध और सम्मोहक हो गई है। अस्थिर मानसिकता व्यभिचार का अनिवार्य दुष्परिणाम है, इसलिए उसकी यह स्थिति भी आश्चर्य का विषय नहीं है, किन्तु इस प्रकार के व्यक्ति यदि अपने से प्रभावित या सम्मोहित अपरिपक्व जनों को संगठित समुदाय का रूप देने लगें तो स्वस्थ मानव परिवार के स्वप्नदर्शियों को सतर्क होना चाहिये। विश्व में अपरिपक्व मन-मस्तिष्क वाले स्त्री पुरुषों की कमी नहीं है। कामुकता सृष्टि के जन्म से ही स्वस्थ मानवीय सम्बन्धों के लिए संकटपूर्ण समस्या रही है। उसे यदि कोई सिद्धान्तों और क्रान्तिकारी परिवर्तन के आवरण में मुक्त स्वीकृति देने लगे तो कामान्ध अनुगामियों की कभी कमी नहीं रहेगी, किन्तु ऐसे किसी भी स्वच्छन्द समूह को अपने समाज में दुश्चरित्रता का विष घोलने की अनुमति कौन विवेकी राष्ट्र दे सकता है? उन्मुक्त यौन-सम्बन्धों को स्वस्थ समाज की संरचना का आधार बनाने का प्रयोग स्वीडन जैसे देशों में विफल हो गया है। जीवन में सात्त्विकता और स्थायी स्नेह सम्बन्धों की वापसी के लिए भोगवादी स्वीडिश समाज पुनः संयम और सदाचार की ओर लौटने लगा है। ऐसी स्थिति में कोई भी शासन अपने देश में चारित्रिक उच्छृंखलता अथवा यौन अराजकता का प्रदूषण फैलाने की किसी भोग भ्रष्ट मसीहे को कैसे अनुमति दे सकता है, भले ही वह स्वयं को 'भगवान्' ही क्यों न कहता हो।

रजनीश बेरोकटोक भारत में कैसे घुस आता है?

रजनीश के पीछे भोगियों की भीड़ देखकर विश्व के विभिन्न देशों के विवेकी शासक प्रभावित नहीं हुए। अपने देश और समाज के व्यापक हितों के प्रति सजग, सचेत और सतर्क रहना किसी भी प्रभुसत्ता के लिए अनिवार्य है। यह एक विचारणीय तथ्य है कि खालिस्तानी भारतद्रोहियों को भी शरण देने वाले इक्वेडोर जैसे क्षुद्रबुद्धि देश विश्व में हैं, किन्तु रजनीश को अपनी समाज व्यवस्था में घुसपैठ करने की अनुमति देने वाला एक भी देश विश्व के मानचित्र में नहीं निकला। इस तथ्य के प्रकाश में इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की भी विवेचना अनिवार्य है कि जिस व्यक्ति को विश्व के एक भी देश ने अपनी सीमा में उपनिवेश स्थापित करने की अनुमति नहीं दी, वह भारत में किस आधार पर बेरोकटोक, चाहे जब घुस आता है और जब जी चाहे निकल भागता है। केवल राजनैतिक सीमाओं एवं विधिव्यवस्थाओं का उल्लंघन करने वाले शोभराज जैसे अपराधियों को ही प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए, सामाजिक और सांस्कृतिक मर्यादाओं के अराजक विद्रोही भी प्रतिबंधित किये जाने चाहिये। हमारे देश में आव्रजन सम्बन्धी सतर्कता हास्यास्पद स्थिति में है। इसीलिए करोड़ों शत्रुदेशीय घुसपैठिये हमारी सीमाओं में बसे निर्विघ्न गृहयुद्ध की तैयारी कर रहे हैं और अनेक चरित्रहीन ढोंगी, धूर्त और कृतघ्न कुपुत्र भी धर्माचार्यों के वेश में भारत को केन्द्र बनाकर हमारे सामाजिक परिवेश को प्रदूषित कर रहे हैं। रजनीश जैसे तथाकथित धर्मगुरुओं के अनुयायियों की गतिविधि और आचरण सर्वत्र संदिग्ध और संशयपूर्ण रहे हैं। इस विचित्र वेशधारी व्यभिचारी प्रवंचक के भारत में रहने से न केवल नैतिक अराजकता हमारे समाज में फैलेगी, प्रत्युत अवांछनीय गुप्तचरों का स्वच्छन्द आवागमन भी हमारी सुरक्षा व्यवस्था को निर्बल बनायेगा। प्रधानमन्त्री राजीव का कर्त्तव्य है कि वे अपने बाल-सखाओं की अपरिपक्व भावुक अनुशंसाओं पर नहीं, देश और समाज के व्यापक हितों पर ही ध्यान दें।

सैद्धान्तिक चर्चा

श्री धर्मजित् जिज्ञासु के प्रश्नों के उत्तर

–डा० जयदत्त उप्रेती, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुमाऊं विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा–

सार्वदेशिक के २१ सितम्बर, १९८६ के अंक में श्री धर्मजित् जिज्ञासु का पत्र प्रकाशित हुआ है, जिसमे उन्होने तीन प्रश्नों पर समाधान चाहा है। इन पंक्तियों का लेखक श्री धर्मजित् जिज्ञासु जी के प्रश्नों का उत्तर अथवा समाधान प्रस्तुत करने का यत्न करता है।

प्रश्न—जड़ तत्त्व की सक्रियता मे चेतन तत्त्व की आवश्यकता क्यों ?

उत्तर—इसमें कोई सन्देह नहीं कि जड़तत्त्व परिणामी या विकारशील होता है और परिणाम होना स्वयं एक क्रिया है। परन्तु इससे यह कैसे मान लिया जाये कि उसके भीतर परिणाम की क्रिया निजी शक्ति से ही होती है और चेतनातत्त्व की सन्निधि से नहीं। यहां यह विचारणीय है कि जड़ पदार्थों में नाना प्रकार के परिवर्त्तन मनुष्यादि प्राणी भी किया करते हैं। जैसे पत्थरों को तोड़कर मकान बनाना, लकड़ी को काटकर उससे विविध प्रकार के काष्ठोपकरण बनाना इत्यादि। मनुष्यादि सजीव कारणो के बिना जैसे ये परिवर्तन नहीं होते (अर्थात् स्वत. नहीं होते) उसी प्रकार समष्टि जगत् में भौतिक या जड़ पृथिव्यादि पदार्थों मे विकार और विविध परिणाम निश्चित और व्यवस्थित रूप में कालाधीन—ऋत्वधीन हुआ करते हैं। यदि सत्त्व-रजस्तमोमयी प्रकृति का या पृथिव्यादि परमाणुओं का यह परिवर्त्तन उनका स्वाभाविक धर्म होता तो दो बातें होती। पहली बात यह कि प्रलय काल जैसी स्थिति आती ही नहीं, क्योंकि स्वाभाविक क्रिया का प्रकृति या परमाणुओं में कभी लोप नही माना जा सकता और उस के सदा चलते रहने से प्रलय जैसी अवस्था कभी आ ही नही सकती। दूसरी, इन पृथिव्यादि तत्त्वों के निश्चित और व्यवस्थित प्रकार के परिवर्त्तन न होकर अनिश्चित और अव्यवस्थित परिवर्त्तन होते उत्पन्न प्रत्येक वस्तु निरन्तर बढती रहती और उसका क्षय या विनाश न हो पाता। परन्तु ये दोनों बातें भौतिक वस्तुओं में नहीं देखी जातीं। वहां तो सब कुछ नियमानुसार ही होता है, अनियमित नहीं। अतः यही माना जाना चाहिए कि सर्वगत, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की अचिन्त्य महिमा शक्ति से ही प्राकृत जगत् मे सब परिवर्त्तन हुआ करते हैं, जो स्वाभाविक से प्रतीत होते हुए भी स्वाभाविक नही होते, किन्तु उसी सर्वव्यापक चेतन परमेश्वर से नियन्त्रित होते हैं। दिन-रात का होना, शुक्लपक्ष-कृष्णपक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग का चक्रवत् परिवर्त्तन और वह भी विशेष नियम से नियमित होना और इसी प्रकार प्रत्येक उत्पन्न होने वाली वस्तु का उपचयापचय नियमित रूप से होना, यह सब नियन्ता के नियम की ओर ही संकेत करते हैं। इसी बात को वेद मन्त्रो में इस प्रकार कहा गया है—"उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।" (यजु० ३३-३१), "मम देवासो अनु केतमायन्" (ऋ० ४-२६-२), "बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगत. स्थातुरुभयस्य यो वशी।" (ऋ०४-५३-६), "यास्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।" (ऋ० ४-५८-११) इत्यादि।

उत्तर (ब्रह्म) मीमांसा सूत्र-"आत्मकृतेः परिणामात्" (१-४-२६) मे भी कहा गया है—"(आत्मकृतेः) आत्मा (परमात्मा-ब्रह्म) की कृति—प्रयत्न से (परिणामात्) परिणाम होने से। परमात्मा परब्रह्म के संकल्परूप प्रयत्न से प्रकृति में परिणाम द्वारा जगत्-सर्ग होता है, अतः ब्रह्म जगत् का निमित्त और प्रकृति उपादान कारण है।" (ब्रह्मसूत्रविद्योदयभाष्यम् १-४-२६, पृष्ठ ३३५)। इस बात को और स्पष्ट करते हुए आचार्य उदयवीर शास्त्री लिखते हैं—"वस्तुतः ब्रह्म जगत् का नियन्ता-निर्माता होता हुआ त्रिगुणात्मक प्रकृति उपादान से इस जगत् का स्रष्टा है। जड़ प्रकृति उसकी प्रेरणा के बिना कुछ नहीं कर सकती, इसलिए वही इस सबका आविर्भूत है। उसी ने इस नामरूपात्मक जगत् का प्रादुर्भाव किया है। (ब्रह्मसूत्र १-४-२७, विद्योदयभाष्यम्, पृ० ३३८-३३९)।

किंच, सांख्य सिद्धांत के अनुसार भी जड़ तत्त्व की सक्रियता में चेतनतत्त्व की ही प्रेरणा सन्निहित है। एतदर्थ द्रष्टव्य है.आचार्य उदयवीर शास्त्री कृत सांख्यसिद्धांत नामक ग्रन्थ का प्रथम अध्याय, पृष्ठ ३७-३८, जिसमें युक्ति-प्रमाणपूर्वक उन्होंने लिखा है कि "....कपिल के सांख्य में इस सिद्धांत को स्वीकृत किया गया है कि प्रकृति का अधिष्ठाता एक चेतन परमात्मा है।

प्रश्न (२) सम्प्रज्ञात समाधि में स्वस्थिति होने पर आत्मा की प्रवृत्ति परमात्मस्थिति की ओर होने की क्यों होती है ?

उत्तर – आत्मा की स्वरूप स्थिति सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था मे मानी जाती है। योगदर्शन का सूत्र "तदा द्रष्टु. स्वरूपेऽवस्थानम्" (१/३) असम्प्रज्ञात समाधि विषयक है, ऐसा भाष्यकारों का कथन है। कैवल्य की इस स्थिति में आत्मा परमात्मा के सान्निध्य से आनन्द प्राप्त करता है। अतः उसकी प्रवृत्ति परमात्मा की ओर होना स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में विशेष समाधान के लिए आचार्य उदयवीर शास्त्री के योगदर्शन--विद्योदयभाष्यभाष्य मे निम्नांकित पंक्तियां द्रष्टव्य हैं—

"आत्मा इस अवस्था को प्राप्त कर समाधिलब्ध शक्ति द्वारा परमात्मा के आनन्द रूप में निमग्न हो जाता है। उस आनन्द का वह अनुभव करने लगता है। यही आत्मा के मोक्ष अथवा अपवर्ग का स्वरूप है।

मध्यकालिक और तदनुवर्ती आधुनिक आचार्यों ने प्रस्तुत सूत्र के "द्रष्टृ" पद से द्रष्टा जीवात्मा का ग्रहण कर उसकी स्वरूप में अवस्थिति बताकर सूत्रार्थ पूरा कर दिया है, पर वस्तुतः सूत्रार्थ का पर्यवसान आत्मा के मोक्षानुभव की सूचना पर समझना चाहिए। इस भावना से महर्षि दयानन्द ने अपने अनुभव के आधार पर सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास के अन्तिम भाग में इन दो सूत्रों का विवरण इस प्रकार दिया है—

ये पातंजल योगशास्त्र के सूत्र हैं। मनुष्य रजोगुण तमोगुणयुक्त कर्मों से मन को रोक शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त कर्मों से भी मन को रोक शुद्ध सत्त्वगुणयुक्त हो पश्चात् उसका निरोध कर एकाग्र अर्थात् एक परमात्मा और धर्मयुक्त कर्म इनके अग्रभाग में चित्त को ठहरा रखना निरुद्ध होता है तब सबके द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति होती है। इत्यादि साधन मुक्ति के लिए करे।"

प्रस्तुत सूत्र के द्रष्टृ पद का अर्थ ऋषि दयानन्द ने यहा "जीवात्मा" न कर "ईश्वर" किया है। समाधिलाभ से मोक्षप्राप्ति को समस्त ऋषि-मुनियों और वैदिक आचार्यों ने स्वीकारा है। जीवात्मा जिस आनन्द का अभिलाषी रहता है, वह परमात्मा के सहयोग के बिना अप्राप्य है। ऋग्वेद की एक ऋचा (७/११/१) मे बताया गया है—"न ऋते त्वदमृता मादयन्ते" तेरे बिना मुक्त आत्मा आनन्दित नही होते। सूत्र के "द्रष्टृ" पद का अर्थ ईश्वर समझने पर सूत्रकार पतञ्जलि की यह भावना स्पष्ट अभिव्यक्त हो जाती है।"(योगदर्शन—विद्योदयभाष्य १-३)

प्रश्न (३) प्रलय काल में महत्तत्त्व के अभाव मे बद्ध जीवों के साथ सूक्ष्म और कारण शरीर की कल्पना किस प्रकार सिद्ध होती है ?

उत्तर—यह बात प्रसिद्ध है कि सर्ग काल में जिस प्रकार के स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर जीव के होते हैं, उस प्रकार महाप्रलय की अवस्था में नहीं रह सकते। प्रलय काल में जीवों का अस्तित्व रहता है। वह दो प्रकार की स्थिति में होते हैं। एक मुक्तकोटिक और दूसरे प्रसुप्तकोटिक। प्रसुप्तकोटिक जीव वे कहलाते हैं, जो सर्गकाल में मोक्ष प्राप्त नही कर सके। उनमें कारण-शरीर और सूक्ष्म शरीर का संयोग मानना सत्त्वरजस्तमोगुणों की साम्यावस्था रूप प्रकृति की मूल स्थिति से विरोध होना कहा जायेगा। हा, प्रलय से पूर्व अर्जित पुण्यापुण्य कर्मों के आशय, जो प्रलय के आरम्भ तक परिपक्व होकर फलोन्मुख न हुए हों, किसी न किसी अतिसूक्ष्म रूप में उनके साथ जुड़े रहते होंगे ऐसा कहा जा सकता है। अन्यथा पूर्व कर्मफलों के अभाव में महाप्रलय के अनन्तर होने वाले सर्ग में उन जीवात्माओं का तत्तत् शरीरसंयोग किस आधार पर हो सकेगा ? यह चिन्त्य है।

आशा है कि श्री धर्मजित् जिज्ञासु जी उपर्युक्त समाधानों को सन्तोषप्रद पायेंगे।

देवबन्द बम विस्फोट से सनसनीखेज रहस्योद्घाटन

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के बाद अब देवबन्द स्थित दारुल उलूम भी असामाजिक और अलगाववादी गतिविधियों का केन्द्र बनता जा रहा है।

यह सनसनीखेज रहस्योद्घाटन ११ अक्तूबर को देवबन्द स्थित दारुल उलूम के छात्रावास के कमरे में हुए भीषण बम विस्फोट के दौरान हुआ। पुलिस ने जब बम विस्फोट के बाद छात्रावास के कमरों की तलाशी ली तो वहां से भारी मात्रा में बम बनाने का सामान, रामपुरी चाकू, छुरे और राष्ट्रविरोधी साहित्य बरामद हुआ।

पुलिस ने इस बम कांड के सिलसिले में अब्दुल्ला कुरबान, कमालुद्दीन व मुहम्मद इलियास नामक छात्रों और दारुल उलूम जामा मस्जिद के हमीद उल्ला तथा सना उल्ला को गिरफ्तार कर लिया। बम बनाने के काम में बंगलादेश, बिहार, पाकिस्तान और हैदराबाद के छात्रों का गिरोह काफी दिनों से सक्रिय था।

बम विस्फोट मेराजुद्दीन के कमरे में उस समय हुआ, जब वह मुस्तफा कमाल और हैदराबाद के छात्र मुजीबुर्रहमान के साथ बम बना रहा था। बम विस्फोट से मुस्तफा कमाल के हाथ की अंगुलियां उड़ गईं। वह घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती है जब कि उसके दोनों साथी फरार हो गये हैं।

गृह मन्त्रालय ने उत्तर प्रदेश सरकार से इस बम कांड को गम्भीरता से लेकर व्यापक जांच कराने को कहा है। गृह मन्त्रालय इस बात से चिन्तित है कि कहीं यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त इस्लामिक शिक्षा केन्द्र असामाजिक और राष्ट्रविरोधीतत्त्वों का केन्द्र न बन जाये।

छात्रों को वरगलाया जा रहा है

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि राज्य के कुछ कट्टरपंथी तत्त्वों ने देवबन्द, अलीगढ़, रामपुर, बरेली, शाहजहांपुर आदि इलाकों में आदम सेना जैसे संगठन बनाकर मुस्लिम युवकों को बाबरी मस्जिद व उर्दू के नाम पर भड़काना शुरू कर दिया है। इन युवकों और छात्रों को मजहब के नाम पर वरगलाकर उन्हें "इस्लाम की रक्षा" व प्रसार के लिए बम बनाना सीखने तथा छुरेबाजी का प्रशिक्षण लेने को प्रेरित किया जा रहा है। कुछ कट्टरपन्थी तत्त्व दारुल उलूम के छात्रों को भी वरगलाने में सफल होते जा रहे हैं।

दारूल उलूम में रहने वाले कुछ विदेशी छात्र भी संकीर्णता तथा कठमुल्लेपन का परिचय देकर समय-समय पर भारत विरोधी गतिविधियों में सक्रिय देखे गये हैं।

उल्लेखनीय है कि दारुल उलूम में मुल्ला-मौलवियों व छात्रों के बीच आपसी गुटबाजी भी कम नहीं है। एक गुट मौलाना असद मदनी का है तथा दूसरा उनके विरोधियों का।

हाल ही में देवबन्द में बाबरी मस्जिद मुक्त किये जाने सम्बन्धी उत्तेजक पोस्टरों व उर्दू साहित्य की बाढ़ सी आ गई थी। ईरान और पाकिस्तान के कुछ छात्र भी इन गतिविधियों में विशेष रुचि लेते पाये जाते रहे हैं।

—शिवकुमार गोयल

नये प्रकाशन

हिन्दू धर्म ही सहिष्णु है : मोरार जी देसाई

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई का मत है कि सब धर्मों का समान आदर करना हिन्दू धर्म की ही विशेषता है, अन्य किसी धर्म की नहीं। आज जो नये-नये धर्म प्रचलित हो गये हैं, वे मानव धर्म नहीं हैं, सिर्फ सम्प्रदाय हैं, जो आपस में एक-दूसरे का विरोध करके लड़ते हैं।

हिन्दू ही सर्वाधिक सहिष्णु हैं। फिर भी हिन्दू समाज को आदर नहीं मिलता। इसका कारण है हिन्दू समाज की अन्दरूनी कमजोरी। जात-पांत व आपसी फूट के कारण हिन्दू समाज कमजोर है, अतः उसे तिरस्कार मिलता है। परन्तु मेरा विश्वास है कि यह बीमारी १५-२० साल में खत्म हो जायेगी और भारत में एकता और शक्ति आयेगी।

मोरारजी भाई ने एक भेंट में कहा कि यद्यपि उनका अहिंसा में पूर्ण विश्वास है, किन्तु राज अहिंसा का तो है नहीं, राज में हिंसा है ही। अतः दुष्ट लोगों को भय दिखाये बिना राज्य चल नहीं सकता।

दुष्ट लोगों का हृदय परिवर्तन करना राज्य का काम नहीं है, वह सन्तों का काम है। अहिंसा का उपयोग तब है जब प्रत्येक व्यक्ति अहिंसक बन जाये। परन्तु आज कितने लोग अहिंसक हैं? अतः राज्यों को तो भय का उपयोग करना ही पड़ेगा। राज्यों के लिए शक्ति व भय द्वारा देश में शान्ति रखना अनिवार्य हो जाता है। इसलिए रामायण में कहा गया है—"भय बिनु होइ न प्रीति"।

गांधी जी हर समस्या को अहिंसा द्वारा ही हल करते थे, पर राज्य ऐसा नहीं कर सकता—नहीं तो फौज की जरूरत ही क्या है? राज्य का कर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति से दुष्ट तत्त्वों का सफाया करे। आज यदि गांधीजी होते तो वे आतंकवादियों को समझने की कोशिश करते, पर वे भी शायद सफल नहीं होते।

नागरिकों को बचपन से ही सैनिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। क्योंकि सैनिक शिक्षा से ही जनता को शक्तिशाली व अनुशासित बनाया जा सकता है। यदि अहिंसा का उपयोग करना हो तो पहले शक्तिशाली बनकर फिर अहिंसा दिखानी चाहिए। दुर्बल की अहिंसा निरर्थक है।

- शिवकुमार गोयल

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष के लिए प्राप्त दान राशियां

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए ५ अगस्त से १० अक्तूबर तक निम्नलिखित दान राशियां प्राप्त हुई हैं। इस सूची का प्रथम भाग १६ अक्तूबर के अंक में प्रकाशित हुआ था।

श्री अमरनाथ नेहरू ग्राउन्ड फरीदाबाद	१२३)
श्री उमेशचन्द्र लड्ढा मेनरोड यवतमाल	११२)
श्रीमती सुशीला भाटिया महेश नगर अम्बाला कैन्ट	२००)
श्री कैलाश आर्य क्वार्टर नं० ई-४२ कलकत्ता मुर्शिदाबाद	११)
मन्त्री जी आर्यसमाज जरवल बहराइच	१०१)
श्री ज्ञानसिंह जी (स० ले०) गाजियाबाद	५०)
श्री देवमुनि वानप्रस्थी आर्यसमाज तुलजापुर उस्मानाबाद	६१)
श्री प्रकाशवीर भीमसेन आर्य परडा उस्मानाबाद	१०)
श्री विद्याभूषण किशनजी आर्य हिव खेड़ा अकोला	१०)
श्री सज्जनसिंह यादव नीरपुर नारनौल महेन्द्रगढ़	२०)
श्रीमती दमयन्तीदेवी द्वारा विमलप्रकाश नालन्दा मैडिकल कालेज पटना	७००)
श्री मुन्नीलाल शंकर डेराशेरी गोंडेल	२५)
श्री परमानन्द चौधरी तोप पटना	२५)
आर्यसमाज कुंवरपुर तेजपुर	१११)
श्री धर्मदास आनन्द प्रकाश अम्बहटा सहारनपुर	१००)
श्री मेघाराम जी हिवल खेड़ी देवबन्द सहारनपुर	५)
श्री गंगाराम आर्य गन्धेलड़ा जिला मुजफ्फरनगर	१०)
श्री रामकरनसिंह आर्यसमाज महाराजगंज रायबरेली	१०१)
श्री बी० जी० भोजवानी आर्य आन पिम्परी कालोनी	५००)
श्री राधेश्याम आर्य कादिरगंज नवादा	१०)
श्री रामनाथ वर्मा, भगवानसिंह रोड मुजफ्फरनगर	१००)
श्री तिलकराज कोहली हैदराबाद कालोनी लखनऊ	२५००)
श्री प्रेमदेव आर्य आर्यसमाज बसन्तपुर, पं. कुहरा चैनपुरपश्चिमी चम्पारण	५१)
श्री मन्त्री जी आर्यसमाज सिरोही	५०१)
श्री मन्त्री जी आर्यसमाज भिण्ड	२१)
श्री चमनलाल शर्मा कारे कलां गुरदासपुर	२०)
मेजर रामकुमार जी आर्य द्वारा ६६ ए० पी० ओ०	१०१)
श्री ओम्प्रकाश गुप्त नारायण विहार नई दिल्ली	१०१)
नगर महिला आर्यसमाज गाजियाबाद	५००)

श्रीमती सुशीला भाटिया, २१ महेशनगर, अम्बाला छावनी का नाम केवल एक बार छपा है। इनका धन तीन बार १००) रु०, २००)रु०, और २००) रु० आया है। सूची में केवल १००) रु० ही छपा है।

सभी दानदाताओं का धन्यवाद!

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

चार हजार वर्ष पूर्व अरब में वैदिक धर्म प्रचलित था

लगभग पचास वर्ष पूर्व पंडित ज्ञानेन्द्र सूफी (भूतपूर्व मौलाना हाजी अब्दुर्रहमान) ने एक पुस्तक प्रकाशित करवाई थी, जिसका नाम अहल अरब का कदीम मजहब (अरब वासियों का प्राचीन धर्म) है। यह पुस्तक अब भी मेरे पास है। पंडित जी ने कई बार अरब देशों की यात्रा की थी और काफी खोज के बाद उक्त पुस्तक लिखी थी।

इस पुस्तक में इसके योग्य लेखक ने सिद्ध किया है कि आज से चार हजार वर्ष पूर्व अरब में वैदिक धर्म प्रचलित था। अपने कथन की पुष्टि में पंडित जी ने अपनी पुस्तक में एक अरबी कसीदा दर्ज किया है। असल कसीदा यरूशलम के पुस्तकालय में विद्यमान है। यह सोने के पत्रों पर अंकित है। इसका काल हजरत मुहम्मद साहब से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व का है। मूल अरबी के साथ उर्दू अनुवाद भी दिया गया है। इसका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जा रहा है—

१. भारत की पवित्र भूमि, तू प्रशंसनीय है, क्योंकि ईश्वर ने अपनी वाणी को तुझ पर उतारा।

२. परमात्मा ने अपनी वाणी की चार पुस्तकें, जिनका प्रकाश प्रातःकालीन ज्योति के समान है, परमात्मा ने भारत में अपने ऋषियों पर उतारी हैं।

३ परमात्मा ने अपनी वाणी में संसार भर के मनुष्यों को आदेश दिया है कि वेदों की शिक्षाओं पर चलो, जो निश्चित रूप से मेरी ओर से प्रकट की गई हैं।

४. शिक्षा के इस कोष के नाम हैं यजुर्वेद और सामवेद। इन्हें परमात्मा ने प्रकट किया। बस, ऐ भाइयो, तुम इन्हीं की शिक्षाओं पर चलो। इनमें मुक्ति का प्रकाश मिलता है।

५. दो वेद—ऋग्वेद और अथर्ववेद भ्रातृभाव की शिक्षा देते हैं। यदि हम इन पर चलें तो ये हमारे लिए प्रकाशस्तम्भ का काम देते हैं।'

—बृजलाल गुप्त

फल पोषक ही नहीं, रोग निवारक भी हैं

प्रारम्भ में मनुष्य फलों पर ही निर्भर था। हमारे आर्ष ग्रन्थों में वृक्षों की महिमा वर्णित होने का यही कारण है। ज्यों-ज्यों मनुष्य प्रकृति से दूर हटाया गया, उसका जीवन कृत्रिम होने लगा और रोगों ने उस पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। मानव शरीर की रचना के अनुरूप यदि कोई भोजन है तो वह है फलाहार। फल सरस, सात्विक, सुपाच्य, बल, बुद्धि और ओज वर्धक होते हैं। फलाहार दीर्घ जीवन का आधार है।

आजकल फल महंगे हैं। आम लोगों को शिकायत है कि फल खरीदना उनकी बिसात से बाहर की बात है। यह ठीक है। लेकिन मौसम के फल प्राय: बहुत महंगे नहीं होते।

एक बात और भी है। यदि हम अपने बजट को सन्तुलित करें या अनावश्यक वस्तुओं पर पैसा नष्ट न करें तो फल खरीदे जा सकते हैं। जो लोग धूम्रपान करते हैं, मांस खाते हैं, शराब पीते हैं, उन्हें तो यह कहने का अधिकार है ही नहीं कि फल महंगे हैं।

फल मनुष्य को स्वस्थ रखकर उसकी आयु बढ़ाने में सहायक होते हैं, जब कि धूम्रपान, मांस और शराब न केवल मनुष्य को पशु बनाते हैं, बल्कि घातक सिद्ध हो सकते हैं।

मांस हमारा भोजन नहीं। मुर्दों को कब्र में दफनाया जाता है, पेट में नहीं। हमारा पेट कब्रिस्तान नहीं है। हमें दाल और शाक चाहिए।

रसदार फलों में विटामिन, खनिज, खासकर लोहा और चूना होता है जो प्रचुर शक्ति देता है तथा रोगों से बचाता है। कुछ फलों के गुण प्रस्तुत हैं—

टमाटर में कुछ खास तरह के फायदेमन्द एसिड होते हैं। नमक, पोटाश, चूना और लोहा भी होता है। यह लिवर को शक्ति देता है।

सन्तरा—रक्तशोधक है। यह सारे शरीरसंस्थान को जागृत करता है। क्षुधावर्धक है। इसमें विटामिन सी और ए प्रचुर मात्रा में हैं। जिन्हें दांतों से खून आता हो, उन्हें सन्तरा खाना चाहिए। सन्तरे और अंगूर का मिश्रित रस खून की कमी और हड्डियों की कमजोरी को दूर करता है।

केला—ए बी सी डी चार विटामिनों से पूर्ण है। केला और दूध एक साथ लिया जाये तो बहुत स्वास्थ्यवर्द्धक है।

अनन्नास—तिल्ली बढ़ जाने की औषधि है। पेट के कुछ रोगों की दवा है।

अनार—शक्तिदायक, शीतल और क्षुधावर्धक होता है। पेचिश में बहुत उपयोगी है।

पपीता—इसमें पेपिन नाम का एक तत्त्व होता है। यह भोजन पचाने में बड़ी सहायता करता है। आमाशय के विकार दूर करता है। प्रदर रोग के लिए बड़ा लाभदायक फल है।

जामुन—इससे मधुमेह दूर होता है। यह मूत्र के साथ शर्करा जाने से रोकता है।

—सेब—बहुत शक्तिदायक, सुपाच्य और रक्तवर्धक है। इससे ब्लड प्रेशर में लाभ होता है।

आंवले—इसमें जितना विटामिन सी है, अन्य किसी फल में नहीं। आंवला कई प्रकार के रोग दूर करता है। शाक-दाल में मसाले के रूप में व्यवहार करने पर मनुष्य रोगग्रस्त नहीं होता। च्यवनप्राश इसी से बनता है, जो उत्तम टानिक है। दूध के साथ हर ऋतु में लिया जा सकता है। आंवला पाचनक्रिया की अचूक-औषधि है।

चीकू—रक्तशोधक है।

अंगूर—क्षुधावर्धक और शक्तिदायक है। मंदाग्नि में अंगूर लाभकारी है।

—नन्दकिशोर शर्मा, [illegible]

आर्यसमाज की गतिविधियां

गुरुकुल शुकताल का उत्सव

गुरुकुल शुकताल (जिला मुजफ्फरनगर) का २२वां वार्षिक महोत्सव १३ से १६ नवम्बर तक मनाया जायेगा।

भारतीय सिद्धान्त परिषद् (नजीबाबाद) भंग

लगभग पांच वर्ष पूर्व परीक्षाओं के माध्यम से वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए "भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद" के नाम से एक योजना बनाई गई और उसका परीक्षा मन्त्री श्री विद्यारत्न आर्य को नियुक्त किया गया था। यह कोई स्वतन्त्र संस्था नहीं है अपितु वैदिक संस्थान नजीबाबाद का एक कार्यक्रम था। इसकी नियमावली केवल परीक्षाओं से सम्बद्ध है। उसमें कोई सदस्यता और दान आदि का प्रावधान नहीं है किन्तु विद्यारत्न जी ने स्वेच्छा से रसीद बहियां छपवालीं और धन एकत्र करने लगे। १२-५-८६ को एक पंजीकृत पत्र द्वारा उनकी इन अनैतिक और अवैध गतिविधियों को रोकने का प्रयत्न किया गया किन्तु वे "परिषद्" के नाम का दुरुपयोग करने में लगे रहे। अब इस परिषद् को भंग कर दिया गया है।

आर्यसमाज निर्माण विहार का उत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोमवार ३ नवम्बर से रविवार ९ नवम्बर तक सेन्ट्रल पार्क, निर्माण विहार में समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। प्रतिदिन प्रातः ७॥ से ८॥ बजे तक यजुर्वेदपारायण महायज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा प्रसिद्ध विद्वान् पं० यशपाल सुधांशु होंगे। प्रतिदिन रात्रि को ७॥ से ८॥ बजे तक श्री वेदव्यास जी के मनोहर भजन होंगे और ८॥ से ९॥ बजे तक श्री यशपाल सुधांशु के वेद प्रवचन होंगे।

९ नवम्बर प्रातः ८ बजे से दोपहर २ बजे तक अनेक विद्वान् और आर्य नेता पधार कर अपने विचार रखेंगे।

आर्यसमाज दरियागंज का उत्सव

नई दिल्ली। आर्यसमाज दरियागंज का वार्षिकोत्सव २४ नवम्बर से ३० नवम्बर तक नम्बर २ अन्सारी रोड के भव्य हाल में मनाया जा रहा है। २४ से २८ नवम्बर तक रात्रि में ७ बजे से ९ बजे तक पंडित वेदव्यास के मधुर भजन और पण्डित प्रेमचन्द श्रीधर के प्रवचन होंगे।

२९ नवम्बर को प्रातःकाल ९ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती समारोह का शुभारम्भ करेंगे।

इस समारोह के संयोजक डा० ओम्प्रकाश ढल्ला हैं।

विविध समाचार

पं० आशुराम आर्य द्वारा विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। इसमे विदेशो मे रहने वाले आर्य भाई-बहनों का प्रयत्न तो सराहनीय है ही, साथ ही अनेक वैदिक धर्म प्रचारकों का सहयोग भी प्रशंसनीय है, जो समय-समय पर भारत से वहां जाकर अपने प्रवचनों आदि द्वारा जनता की ज्ञान वृद्धि करते हैं।

पंडित आशुराम आर्य जुलाई-अगस्त १९८८ में इंग्लैंड-अमेरिका की यात्रा पर गये थे। वहां उन्होंने कई आर्यसमाजो मे अपने प्रवचनों और व्याख्यानों द्वारा जनता को लाभान्वित किया। लदन मे बी०बी०सी० तथा अमेरिका में "वायस आफ अमेरिका" द्वारा भी उनके कई कार्यक्रम रेडियो पर प्रसारित किये गये, जिससे वेद-वाणी उन देशो में घर-घर तक पहुँची। पंडित जी की इस यात्रा से वहां रहने वाले आर्य भाई-बहिनो को वेद-प्रचार तथा आर्यसमाज के सगठन मे काफी बल मिला है।

प्रो० हरिदत्त वेदालंकार दिवंगत

इतिहास, पुरातत्त्व समाज-विज्ञान और राजनीति-विज्ञान के विद्वान्, अनेक पुस्तकों पर पुरस्कार प्राप्तकर्ता, प्रसिद्ध लेखक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और पन्त विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्राध्यापक, इन दिनो डा. सत्यकेतु विद्यालंकार के साथ 'आर्यसमाज के इतिहास' में आठ खण्डो की वृहत् योजना की पूर्ति मे संलग्न प्रो० हरिदत्त वेदालंकार का २१ अक्तूबर का अकस्मात् दिल की बीमारी के दौरे से ७१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। इससे पहले अस्पताल मे उनकी पौरुष ग्रन्थि और पथरी का आपरेशन हुआ था। वे ठीक होकर अपने घर (एफ/२२० प्राची, पाण्डवनगर, दिल्ली) आ गये थे। वैदिक विधि से अन्त्येष्टि के बाद २४ अक्तूबर को उनके निवास स्थान पर शान्तियज्ञ और शोकसभा हुई, जिसमें गुरुकुल के अनेक स्नातको और स्थानीय गण्यमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

श्री पूर्णचन्द्र गुप्त दिवंगत

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में १५ अक्तूबर को श्री पूर्णचन्द्र गुप्त (सचालक दैनिक जागरण) की आत्मा की सद्गति और परिजनों के धैर्य हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

१५ सितम्बर को उनके दिवगत होने से आर्यसमाज ने एक मानवधर्म पोषक खो दिया।

आर्यसमाज आदर्शनगर, जयपुर में शहीद भगतसिंह का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा का एक दृश्य।

आर्यसमाज आदर्शनगर में भगतसिंह का जन्म दिवस

जयपुर, २८ सितम्बर। "शहीद भगतसिंह का चरित्र देश पर बलिदान होने वाले युवा का चरित्र था। आर्यसमाज ने ऐसे अनेक बलिदानी और तपस्वी वीर राष्ट्र को दिये हैं," ये शब्द राजस्थान के गृह राज्य मन्त्री श्री सुजानसिंह यादव ने आर्यसमाज आदर्शनगर द्वारा आयोजित शहीदे आजम भगतसिंह के जन्मदिवस पर कहे।

इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओ ने शहीद भगतसिंह के परिवार, जीवन और शहादत पर विस्तार से प्रकाश डाला।

समारोह के सभापति श्री दामोदर चानवी ने कहा कि प्रत्येक बच्चे मे जन्मजात विशेषता होती है और उसी के अनुरूप प्रवृत्तियों का विकास करना राष्ट्र सेवा है। भगतसिंह में शौर्य की प्रवृत्ति थी और उनके माता-पिता ने इसी प्रवृति को विकसित किया, जिससे वे शहीदे आजम कहलाये।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यव्रत सामवेदी ने आर्य-समाज और भगतसिंह के परिवार के घनिष्ठ सम्बन्धो का उल्लेख करते हुए कहा कि भगतसिंह २३ वर्ष ५ मास २६ दिन की अल्पायु में ही शहीद शिरोमणि बन गये आज राष्ट्र फिर विघटन की ओर अग्रसर है। यदि हम एकता, अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये धर्मयुद्ध की घोषणा नहीं करते तो भगतसिंह को श्रद्धांजलि देना व्यर्थ है।

पाब॰ न॰ डा॰ (सा॰) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-११-१९८६) बिना टिकट डाक में डालने का लाइसेंस नं॰ U ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No.U 93 Post in D.P.S.O. on 6-11-86

आर्यसमाजों के चुनाव

—आर्यसमाज जमो (सुलतानपुर)—प्रधान श्री किशोर कुमार आर्य, मन्त्री श्री समरजीतसिंह और कोषाध्यक्ष डा॰ शिक।

—जिला सीतमढ़ी आर्य सभा—प्रधान श्री रामावतार शर्मा, मन्त्री श्री त्रिभुवन पाठक और कोषाध्यक्ष श्री नन्दलाल राम।

—आर्यसमाज बम्बई के चुनाव में प्रधान श्री अमन प्रसाद गौतम, मन्त्री श्री करसमदास राणा और कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय।

—आर्यसमाज सिकन्दरपुर (जिला मुजफ्फरनगर) प्रधान श्री अमरसिंह आर्य, मन्त्री श्री ससारसिंह आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रहतूलाल आर्य।

—आर्य पुरोहित सभा दिल्ली—प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री, मन्त्री श्री मेघश्याम वेदालंकार और कोषाध्यक्ष श्री विद्याप्रसाद मिश्र।

—आर्यसमाज केकड़ा (जिला अजमेर)—प्रधान श्री दशरथसिंह, मन्त्री श्री छोटूलाल कुमावत और कोषाध्यक्ष श्री रामनिवास वर्मा।

—आर्य वीर दल पिलखुवा के चुनाव मे अध्यक्ष श्री शिवकुमार विद्यार्थी, मन्त्री श्री दिनेशकुमार गुप्त, कोषाध्यक्ष श्री रामकुमार आर्य और शाखा संचालक श्री महेन्द्रकुमार चुने गये।

—आर्यसमाज लोहरदगा (रांची) के चुनाव मे प्रधान श्री सुरजन ठाकुर, मन्त्री श्री नवल किशोर सिन्हा और कोषाध्यक्ष श्री चुन्नीराम चुने गये।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर का चुनाव

आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर का वार्षिक निर्वाचन २ अक्तूबर को आर्य समाज मेस्टन रोड में सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान डा॰ विजयपाल शास्त्री, उपप्रधान श्रीमती सरला चौधरी, श्री इन्द्रदेव कपूर और श्री पुत्तीलाल यादव एडवोकेट, मन्त्री डा॰ हरपालसिंह, श्रीमती डा॰ आशा रानी राय, श्री गोरखनाथ गुप्त और श्री ओम्प्रकाश विद्यार्थी, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, सहकोषाध्यक्ष श्री दुर्गेश चौधरी और लेखानिरीक्षक श्री प्यारेलाल आर्य।

श्रीमद् ... सिद्धान्त ... आरम्भ ... परीक्षा ... या आर्य ... के किसी अधिकारी द्वारा अनुमोदित ... तक भेजें। ... आचार्य श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय

वैदिक साधना आश्रम

डाकखाना शादीपुर, यमुनानगर, जिला अम्बाला
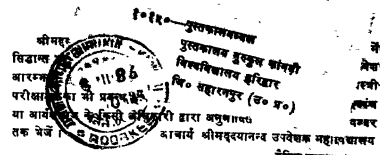
श्री कुन्दनलाल बाहरी दिवंगत

श्री ओम्प्रकाश बाहरी (ए-२१ विनोबा नगर, बिलासपुर, मध्य प्रदेश) के पिता श्री कुन्दनलाल बाहरी का १९ अक्तूबर को प्रातःकाल देहान्त हो गया। २६ अक्टूबर को उनकी आत्मा की सद्गति के लिए हवन-यज्ञ किया गया और पगड़ी की रस्म अदा की गई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री ओम्प्रकाश बाहरी को पत्र लिखकर उनके पिता के निधन पर दुःख प्रकट किया है।

गुरुकुल सिराथू की कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) की कार्यकारिणी का चुनाव एवं साधारण सभा का अधिवेशन २१ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान माता जानकीदेवी, उपप्रधान सर्वश्री रामदास खोजी, मोहनश्याम रस्तोगी और जवाहरलाल, प्रबन्धक श्री लखनलाल गुप्त, उपप्रबन्धक सर्वश्री रमाशंकर, लखनलाल आर्य और श्रीमती मुन्नीदेवी, कोषाध्यक्ष ऊधोश्याम (भू॰ पू॰ ब्लाक प्रमुख) और निरीक्षक श्री श्रीकृष्ण केसरी।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

वेदामृतम्

घर में कोई भूखा-प्यासा न रहे

भूरिधना, मम्नायः म्वादुमुद
अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मद् बिभीतन

हिन्दी अर्थ—सम्पन्न और स्वादिष्ट भोजन से प्रसन्न होने वाले मित्रगण आमन्त्रित किए गए हैं। हे परिवार वालो तुममें से कोई भी भूखा और प्यासा न रहे। तुम हमसे किसी प्रकार भयभीत न हो।

— डा० कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] वर्ष २१ अंक ४८]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र
कार्तिक शु० १५ सं० २०४३ रविवार १६ नवम्बर १९८६

दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सिख स्त्रियां भी आतंकवादियों की सहयोगी

नई दिल्ली। बताया गया है कि कीनिया में जन्मी ब्रिटिश नागरिक कुलदीप कौर ने कबूल किया है कि हाल ही में उसने दो कुख्यात आतंकवादियों से मिलकर भारत में आतंकवादी गतिविधियों को वित्तीय मदद देने के बारे में बातचीत की थी। चालीस-वर्षीय कुलदीप कौर को आतंकवाद विरोधी अधिनियम के तहत गिरफ्तार किया गया था।

गुप्तचर सूत्रों के अनुसार पूछताछ के दौरान इस महिला ने बताया कि उसने तिहाड़ जेल में बन्द हरदेव सिंह और जम्मू-कश्मीर केन्द्रीय जेल में बंद डा० परमजीत सिंह नाम के आतंकवादियों से मुलाकात की। मुख्य मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट सुभाष वासन ने सुनवाई के दौरान कुलदीप कौर को १२ नवम्बर तक पुलिस हिरासत में रखने का आदेश दिया।

कुलदीप कौर को इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हिरासत में लिया गया था, किन्तु उसके बाद उसकी गतिविधियों का पता लगाने के लिए उसे रिहा कर दिया गया। इस दौरान गुप्तचर अधिकारियों ने उसकी गतिविधियों पर नजर रखी और उसे आतंकवादी तोड़फोड़ निरोधक कानून (१९८५) के तहत पुन: गिरफ्तार कर लिया गया।

इसके बाद कुलदीप कौर को मुख्य मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट सुभाष वासन के निवासस्थान पर लाया गया, जहां उसने अपनी मदद के लिए अपने वकील को बुलाये जाने की मांग की।

श्री सुभाष वासन ने विशेष ब्रांच के इंस्पेक्टर जे एस शर्मा को आदेश दिया कि वे कुलदीप कौर को अपने वकील से सम्पर्क करने की अनुमति दें। ६ नवम्बर को रात साढ़े दस बजे कुलदीप कौर अपनी वकील सुश्री जयमाला के साथ श्री वासन के सामने पेश हुई।

श्री वासन ने आदेश दिया कि हिरासत के दौरान कुलदीप कौर के साथ कम से कम सब-इंस्पेक्टर पद की एक महिला रखी जाये। उन्होंने आदेश दिया कि अगर वह पूछताछ के दौरान अपने वकील की जरूरत महसूस करे तो उसे अपने वकील को साथ रखने की अनुमति दी जाये।

गुप्तचर सूत्रों का कहना है कि कुलदीप कौर को जब रिहा कर दिया गया तो वह जम्मू-कश्मीर गई, जहां उसके ठहरने का प्रबन्ध पेशे से वकील विधायक भीमसिंह ने किया था। पेशी के दौरान सुश्री कौर ने इस बात से इन्कार कर दिया कि वे डा० परमजीत सिंह से मिली थी।

हरमिन्दर कौर १५ दिन तक न्यायिक हिरासत में

पुणे। न्यायमूर्ति एन एम गोस्वामी ने पुणे कालेज की अध्यापिका डा० हरमिन्दर कौर को १५ दिन तक न्यायिक हिरासत में रखने का आदेश दिया।

डा० कौर को आतंकवादियों के मुखिया मेजर सतीश सिंह बग्गा से सम्पर्क के संदेह में २९ सितम्बर को गिरफ्तार किया गया था।

डा० कौर ने मेजर बग्गा से अपना सम्पर्क स्वीकार कर लिया है। उनसे प्राप्त डायरी और दस्तावेज से सूत्र पाकर पुलिस मेजर बग्गा तक पहुंच गई। बग्गा इस समय अमेरिका में है। डा० कौर का पुलिस हिरासत के ३६ दिन समाप्त होने पर न्यायालय में पेश किया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के मन्त्री मनोहर सुमेरा का निधन

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनोहर सुमेरा का पिछले दिनों मद्रास में निधन हो गया। वे पिछले महीने भारत आये थे और अपनी भारत यात्रा के अन्तिम चरण में थे जब मद्रास में उन्हें कुछ तकलीफ हो गई और उनका देहान्त हो गया।

वे नई दिल्ली भी आये थे और यहां आर्यसमाज के सन्देश के प्रसार के विषय में सार्वदेशिक सभा के सचार माध्यम अधिकारी श्री ब्रह्मदत्त स्नातक से मिले थे। स्नातक जी पिछले वर्ष दिसम्बर में डरबन में हुए अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन में भाग लेने डरबन गये थे। उक्त बृहत् समारोह के आयोजन में श्री सुमेरा ने प्रमुख भूमिका अदा की थी और वहां एक प्रस्ताव स्वीकृत कराया था, जिसमें दक्षिण अफ्रीका की वर्णभेद माननेवाली सरकार की पृथक्करण नीति की निन्दा की गई थी।

श्री सुमेरा पत्रकार थे। वे दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र वेद ज्योति के सम्पादक थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे और उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से दक्षिण अफ्रीका के भारतीय समुदाय को सगठित किया था।

उनके निधन का समाचार पिछले सप्ताह समुद्री तार से मिला। मद्रास आर्यसमाज को टेलीफोन पर निर्देश दिया गया है कि वे श्री सुमेरा की धर्मपत्नी को सब प्रकार का सहयोग दें। उनकी धर्मपत्नी भारत यात्रा में उनके साथ थी। श्री सुमेरा अपने पैतृक स्थान आवला (जिला बरेली) भी गये। उनका परिवार डरबन में है।

ताजा समाचार के अनुसार श्री सुमेरा का शव विमान पर मद्रास से सात नवम्बर को डरबन ले जाया गया, जहां सार्वजनिक सम्मान के साथ उनका अन्त्येष्टि सस्कार कर दिया गया। श्रीमती सुमेरा भी डरबन पहुंच गई हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री सुमेरा के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

विशेष लेख

हमारा पतन : वास्तविक रोग क्या है ?

—सच्चिदानन्द शास्त्री—

आर्य जाति विश्व पर चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित किये हुए थी। उसमें इतनी गिरावट क्यों और कैसे आ गई ? कमजोर को सभी दबाते हैं। समाज और राष्ट्र की स्थिति भी इसी प्रकार की है। हिन्दू इतना बलहीन हो गया है कि किसी हिन्दू से पूछो तो वह यही कहेगा कि हममें बल नहीं है—हम कुछ नहीं कर सकते। समाज में जो जातीय अभिमान पाया जाता है, वह पिटते-पिटते इतना नष्ट हो गया है कि पौरुष नाम का चिह्न भी नहीं मिलता।

चूमत चरण शृगाल के गज मद मर्दन शेर।
झूमत बाजन पैंजवा हाय दिनन के फेर॥

कोई हिन्दू-आर्य यह विचार नहीं करता कि हम एक उच्च और सम्मान-युक्त जाति व समाज के व्यक्ति हैं। हमारे मन में यह दुर्बलता क्यों ? दुर्बल समाज देश में घृणा व अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता है। सैकड़ों वर्षों से दीन-हीनता के भावों के कारण कुछ स्वभाव-सा बन गया है कि इन पर संकट के बादल मडराते हैं तो ये आंखें बन्द कर और सिर नीचा करके बैठ जाते हैं। मानो संसार में इन्हें पिटने हेतु ही बनाया गया है।

हीनता की यह भावना कब से प्रारम्भ हुई ? यह महाभारत के बाद से ही प्रारम्भ हुई है। इसमें शक नहीं कि महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े ज्ञानी-विज्ञानी विद्वान्-सूरमा मारे गये। विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार बन्द हो गया। ईर्ष्या, द्वेष, मनोमालिन्य का रास्ता खुल गया।

जब ब्राह्मण विद्याविहीन हो गये, क्षत्रिय वीरता से शून्य हो गये, तब समस्त देश खण्ड-खण्ड हो गया। धीरे-धीरे यह दशा हो गई कि आज नैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक किसी भी क्षेत्र में उन्नति होती दिखाई नहीं देती। इस प्रकार हम नित्य प्रति अधोगति की ओर जा रहे हैं।

बात क्या है ? कौन-सा रोग घुन की तरह हमें लग गया है ? आज भी समाज में बहुत-से लखपति व करोड़पति हैं—अनेक भाषाओं के विद्वान् भी हैं, शक्ति के पुञ्ज बलवान् भी हैं। विज्ञान वेत्ताओं की भी कमी नहीं। ऐसे बलिदानी वीरों की भी न्यूनता नहीं, जिन्होंने मुगल साम्राज्य तथा अंग्रेजी राज्य को भी चटाई की तरह लपेट कर एक किनारे रख दिया। राजपूतों, गोरखों, सिक्खों और जाटों की वीरता किसी से कम नहीं। फिर क्या कारण है कि हिन्दू जाति निर्बल कही जाती है और विभिन्न जातियों-धर्मों के लोग भी इसे जब मन आया पीट लेते हैं।

छोटे-छोटे पड़ोसी देश भी समय-असमय आंखें दिखाते हैं। भारत में स्थान-स्थान पर सिर-धड़ अलग हुए, सम्पत्ति नष्ट-भ्रष्ट होकर लुट-पिट गये। हिन्दुओं ने आंसू तक न बहाये। परकीयों की तरह सहायता की भीख मांगते रहते हैं। इस दुर्बलता के कारणों को देखना चाहिये।

भले ही हम विद्या, बुद्धि, धन-जन बल और वीरता में आगे हों, लेकिन एक तत्त्व ऐसा है, जिससे हम शून्य हैं। वह यह कि हमारी बिखरी जाति को एक सूत्र में पिरोने वाला कोई नहीं। फलस्वरूप बिखरे पड़े हैं।

इतिहास साक्षी है कि जब मुहम्मद गौरी ने हम पर आक्रमण किया, तब हिन्दू निर्बल न थे। पृथ्वीराज व जयचन्द दोनों शक्तिशाली थे, परन्तु कमी थी हिन्दू संगठन की। पृथ्वीराज और जयचन्द ने शत्रु की ओर ध्यान न देकर एक-दूसरे की शक्ति का नाश किया और अन्त में दोनों नष्ट हो गये।

जब शैवों का मन्दिर टूटा, तब वैष्णव प्रसन्न हुए और जब वैष्णव मारे गये, तब शिव पूजकों ने कहा कि अच्छा हुआ—ये वैष्णव इसी दण्ड के अधिकारी थे। जब जैनियों पर विपत्ति आई, तब शैवों-वैष्णवों ने नास्तिकों के नाश पर खुशियां मनाईं। इस प्रकार दायां हाथ बायें हाथ के कटने पर प्रसन्न हो रहा था। इस प्रकार दायां हाथ बायें हाथ को काट रहा था। इससे हिन्दू शक्तिशाली होते हुए भी एक-एक कर पिट रहे थे।

जब मालाबार में मोपलों ने उपद्रव किया तब शूद्रों पर आक्रमण होता देखकर नम्बूद्री ब्राह्मणों ने उन्हें अछूत समझ कर उन्हें नहीं बचाया। जब मोपलों ने ब्राह्मणों पर हमला किया, तब अछूतों को घर में घुसने की अनुमति न होने से वे कुछ न कर पाये। इस तरह क्या शूद्र, क्या ब्राह्मण, सभी तलवार के घाट उतारे गये। देश के हिन्दू को यह बुद्धि न आई कि किसी प्रकार सबको एक धागे में बांधा जाये।

जीवित समाज की दशा भिन्न है। यदि विश्व के किसी भी राष्ट्र में रहने वाले अंग्रेज पर विपत्ति आये या टर्की के मुसलमान को कष्ट हो तो विश्व के समस्त अंग्रेजों और मुसलमानों को कष्ट होता है और वे मिलकर उसके प्रतिकार का उपाय करते हैं। समाज सुधार में लगे महापुरुषों के नवजागरण ने झकझोरा तो सही, हमने गाढ़ निद्रा से उठकर परतन्त्रता की जंजीरें तोड़ी, अंगड़ाई लेकर खड़े तो हो गये पर हममें संगठन शक्ति के भाव नहीं हैं। सब अपनी-अपनी ढपली बजाने में लगे हैं।

आर्य-हिन्दू संगठन को वे लोग सफल नहीं बना सकते, जिनमें त्यागभाव और श्रद्धाभाव नहीं—जो लालच से या झूठ-दम्भ-फरेब में फंसे समाज को हानि पहुँचा रहे हैं।

हिन्दू संगठन को वे ही सफल बना सकते हैं, जो इस बात पर अभिमान करते हों कि हम उन परम्पराओं पर विश्वास करते हैं, जिन पर प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने अपना जीवन लगाकर हमारा मार्गदर्शन किया है।

आज उन बीमारियों से मुक्ति पानी होगी, जिनके कारण हमारी सांस्कृतिक धरोहर को हानि पहुँची है और जिन्होंने हमारे संगठन को पंगु बनाया है। हमें विचारना होगा कि हम क्या थे और क्या हो गये। हमारी गिरावट के अन्य कारण क्या हैं, इस पर हम अपने अगले लेख में विचार प्रकट करेंगे।

सम्पादकीय

आज की परिस्थितियों पर हमारा दृष्टिकोण

हमने उस हाल में जीने की कसम खाई है,
लोग जिस हाल में मरने की दुआ करते हैं।

उर्दू का यह शेर आर्यसमाज के एक युवा विद्वान् अक्सर अपने भाषण में सुनाया करते हैं। आज की परिस्थितियों को हम इसी दृष्टि से देखते हैं। हम मानते हैं कि सृष्टि (संसार) को बदलने वाले महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती सरश महापुरुष तो विरले ही होते हैं, हम जैसे सामान्य लोग सृष्टि को तो नहीं बदल सकते, अपनी दृष्टि को अवश्य बदल सकते हैं।

आज जिधर भी जाओ, शिकायत के स्वर सुनने को मिलते हैं। इस लेख में किसी एक या दो-चार शिकायतों का उल्लेख करना पर्याप्त न होगा, क्योंकि शिकायतों का कोई अन्त नहीं। संक्षेप में शिकायत करने वालों की बड़ी शिकायतें ये होती हैं कि पैसे का प्यार बढ़ रहा है, मूल्य बदल रहे हैं—इतनी तेजी से कि पहचाने भी नहीं जाते, चरित्र गिर रहा है, सद्भावना और सात्विक प्रेम कम हो रहा है इत्यादि। इन शिकायतों में काफी सच्चाई है। लेकिन शिकायत करने या सुन लेने से तो कुछ अधिक होने वाला नहीं। कहने से कुछ अधिक न होगा—होगा करने से। सबसे पहले तो हमें आत्म-निरीक्षण करके अपनी कमजोरियां दूर करनी हैं। यह मार्ग कठिन है। उपनिषद् के शब्दों में **क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया । दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ।** (यह मार्ग छुरे की धार के समान तेज और दुर्गम है—ऐसा मनीषी लोग कहते हैं।) हमने ऊपर लिखा कि यह मार्ग कठिन है, लेकिन संसार का ऐसा कौन-सा अच्छा और बड़ा काम है,जो कठिन न हो। इस मार्ग पर हमें स्वयं चलना है—इस काम को हमें स्वयं ही करना है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में "हम दूसरों का सहारा तो ले सकते हैं, लेकिन हमें भरोसा तो अपनी ही शक्ति और अपने ही श्रम पर करना है।" वेद भी तो कहता है—**स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व। महिमा ते अन्येन न सन्नशे।** (अमृतपुत्र, अपने शरीर को स्वयं पुष्ट करो, स्वयं हवन-यज्ञ करो, स्वयं काम में जुटो। कोई दूसरा तुम्हें बड़प्पन देने नहीं आवेगा।)

ये सब विचार हमारे मन में तब उठे, जब हमने पिछले सोमवार (दो नवम्बर) के टाइम्स आफ इण्डिया में प्रसिद्ध पत्रकार श्री एम० वी० कामत का एक लेख पढ़ा। इस लेख में वे लिखते हैं कि जिस प्रकार की शिकायतें हम आज सुन रहे हैं, वे अतीत में भी की जाती रही हैं। श्री कामत पूछते हैं कि ये शिकायतें किसके कारण पैदा हुई ? वे उत्तर देते हैं कि हमारे कारण। हमने ही ये परिस्थितियां पैदा कीं तो इनका समाधान भी हम ही करेंगे।

विषय से कुछ हटकर हम उनके लिखे एक प्रसंग की चर्चा कर रहे हैं। वे पूछते हैं कि जरनैलसिंह भिंडरावाले को किसने उछाला ? वे उत्तर देते हैं कि हमने। हममें सब शामिल हैं—राजनेता और अखबारों वाले भी। यदि भिंडरांवाले की इतनी अधिक चर्चा या पूछ न होती तो वह हमारे देश के लिए खतरा बनकर खड़ा न हो पाता।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमारा अपना आचरण ऐसा होना चाहिए कि दूसरों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़े। जनता हमारा आचरण देखकर हमारे उपदेशों की ग्राह्यता या अग्राह्यता के बारे में सोचेगी। भारत में ईसाइयत के प्रचार के जहां अन्य कारण हैं, वहां एक कारण यह भी है कि चर्च ने हमें प्रभावित करने के लिए सी० एफ० ऐंड्रूज और मदर टेरेसा सदृश व्यक्तियों को हमारे देश में भेजा। ईसाई मत के सिद्धांतों से अधिकतम मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी सी० एफ० ऐंड्रूज और मदर टेरेसा की दयालुता, सेवा भावना और साधु स्वभाव से प्रभावित होगा।

हमारे समाज में यह हो रहा है कि बुराइयां दूर करने के लिए अच्छे से अच्छे भाषण होते हैं, लेख लिखे जाते हैं, पुस्तकें छपती हैं, लेकिन बुराइयां जहां की तहां हैं। कारण यह कि बुराइयां दूर करने के लिए जिस साधना की आवश्यकता है, उसकी हममें कमी है। अच्छे लोगों की कमी नहीं लेकिन चर्चा बुराइयों की है। वातावरण दूषित है। हर बीमारी का इलाज है, लेकिन दूषित वातावरण का कोई इलाज नहीं जब तक वातावरण न बदले, तब तक उससे (वातावरण से) अप्रभावित रहना सरल नहीं। इसके लिए थोड़ी-बहुत कठोरता भी बरतनी पड़ सकती है।

ऊपर हमने राजनेताओं और अखबार वालों की चर्चा की। इन दोनों वर्गों के अतिरिक्त बुद्धिजीवी भी वातावरण को शुद्ध बनाने के लिए प्रभावशाली योगदान कर सकते हैं। यदि बुद्धिजीवी स्वेच्छाचारिता और भोगवादिता का मार्ग छोड़कर राष्ट्रनिर्माण के कार्य में जुटें तो देश का भाग्य बदला जा सकता है। आज तो रजनीश जैसे दुराचारियों को भी बुद्धिजीवी मान लिया गया है, जबकि वास्तविकता यह है—जैसा पिछले दिनों इलस्ट्रेटिड वीकली आफ इंडिया के सम्पादक प्रीतीश नन्दी ने लिखा कि "रजनीश कस्बाई स्तर का बेवकूफ दार्शनिक है"। ऐसे तथाकथित बुद्धिजीवियों के चंगुल में न फसकर हमें स्वयं अध्ययन,-मनन और चिन्तन करना है एवं अपने विवेक से निर्धारित मार्ग पर स्वयं चलकर अन्यों को भी चलने की प्रेरणा देनी है और इस प्रकार भंवर में फंसी इस देश की नाव को किनारे लगाना है।

—सत्यपाल शास्त्री

राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन

"राष्ट्र का उत्थान, समाज की सेवा, दलितों का उद्धार, स्त्री जाति का कल्याण और सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बांधना ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य रहा है", १० अक्तूबर को माता चन्ननदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय, नई दिल्ली में महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से आयोजित राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का शुभारम्भ करते हुए केन्द्रीय संचार मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने ये उद्गार प्रकट किये। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि यह बात प्रशंसनीय है कि आर्यसमाज राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन कर रहा है। मेरी परमपिता से प्रार्थना है कि हम सबको सद्बुद्धि मिले और हम सब मिलकर राष्ट्र की एकता के लिए कार्य करें।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने राष्ट्र की एकता के लिए आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख करते हुए इस संकल्प को दोहराया कि सभी आर्य समाजें प्राणपन से राष्ट्ररक्षा करेंगी। राष्ट्ररक्षा महायज्ञ १६ नवम्बर तक चलेगा। इसके ब्रह्मा पं० वीरसेन वेदश्रमी (इन्दौर) होंगे। इस अवसर पर वैदिक विद्वानों के प्रवचन भी आयोजित किये गये हैं।

तिथियां और राष्ट्रीयत्व

—मनोहर जगन्नाथसा येलखे, समतानगर, खामगांव (महाराष्ट्र)—

भगवान् श्रीराम, योगिराज श्रीकृष्ण, भगवान् महावीर, गौतम बुद्ध, गुरु नानक, चक्रधर स्वामी, छत्रपति शिवराम, महर्षि दयानन्द—इन जैसे अनेक महापुरुषों ने इस भारत भूमि पर महान् कार्य किये। उनके अलौकिक कार्य से यह भूमि अलंकृत और गौरवमय हो गई।

हम सभी महापुरुषों के जन्मदिन तिथि के अनुसार मनाते हैं। परन्तु हमने पिछले १०० वर्षों के भीतर राष्ट्र-पुरुषों के जन्मदिन तिथिवार मनाना छोड़ दिया है। हम उनके जन्मदिन अंग्रेजी दिनांकानुसार मनाने की पद्धति अपना रहे हैं। अंग्रेज अंग्रेजी दिनदर्शिका को हम पर लादकर चले गये।

कामगारो के काम के दिनो की क्रमशः गिनती के लिए बनाया गया एक यन्त्र है, जिसका नाम कलेंडर हो सकता है। पाश्चात्यों ने अनेक यंत्र बनाये। इसी प्रकार कलेंडर बनवाया। ईसाई धर्म गुरुओं ने दिनदर्शिका बनवाई। उसके अनुसार ईसा का जन्म दिन २५ दिसम्बर स्वेच्छा से ही मान लिया और वह एक विशिष्ट वर्ष से मनाने का निश्चय कर लिया गया किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है।

अंग्रेजी दिनदर्शिका में ३६५ दिन का योग १२ महीनों में विभाजित करके बताया गया है। *जनवरी महीने के ३१ दिन क्यों और फरवरी महीने के* २८ दिन क्यों? इसका शास्त्रीय उत्तर उनके पास नही। केवल एक नियम करके वह सबने मान लिया. बस लीप वर्ष में दिनदर्शिका के तीन सौ छियासठ दिन होते हैं। गत डेढ़ हजार वर्षों में अनेक बार इस दिनदर्शिका की पुनर्रचना करने के पश्चात् यह दिनदर्शिका आज वाले रूप में तैयार हुई। इस शतक में भी ११४४ साल में मोझेस बुईम्स कोटसवथ ने इसे पुनः तैयार करने का प्रयास किया। उसकी पुनर्रचित दिनदर्शिका मे महीने के २८ दिन आते थे और संपूर्ण वर्ष तेरह महीनों का बना दिया गया था। इसका कुछ लोगों ने धर्म के नाम पर विरोध किया था, जिसके कारण यह परिवर्तन ठुकरा दिया गया।

सन् १९५४ मे जिनेवा मे अन्तर्राष्ट्रीय कलेन्डर के सम्बन्ध मे एक परिषद् बुलवाई गई थी। इसमें भी प्रचलित कलेन्डर मे सुधार करने का विचार हुआ, किन्तु वह अमल में नही आया।

इस लेख में हमने ऊपर ही उल्लेख किया है कि कलेंडर एक यन्त्र है और इस यन्त्र में परिवर्तन संभव है। अभी तक गत २००० वर्षों में इस कलेंडर मे बार बार परिवर्तन किये गये। भविष्य मे इसमें परिवर्तन नही होगा यह कोई नही कह सकता। यह वास्तविकता है। इसलिए आप इस पर विचार करें।

पृथ्वी की परिक्रमा चन्द्रमा और सूर्य की परिक्रमा पृथ्वी करती है। सूर्य का ग्रह परिवार नक्षत्र चक्र में भ्रमण करता रहता है। सूर्य केवल अपनी ही जगह घूमता है।

चन्द्र की २७ दिन, ७ घटे, ४३ मिनट में एक प्रदक्षिणा होती है। पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा ३६५ दिन, ५ घंटे, ४८ मिनट और ४६ सेकण्ड में होती है और सूर्य का अपना सब ग्रह परिवार नक्षत्र चक्र में ३६५ दिन, ६ घटे, ९ मिनट, १० सेकण्ड मे भ्रमण पूर्ण करता है इसका अर्थ यह हुआ कि सायन वर्ष [कलेंडर वर्ष] २० मिनट, २४ सेकण्ड में घटता है। परिणाम स्वरूप ७२ वर्षों मे २४ घटे, २८ मिनट और ४८ सेकण्ड का अन्तर पड़ता है। इसलिए मृग नक्षत्र में होने वाला सूर्य का प्रवेश ७ जून को लाघता है और ७२ वर्षों मे ८ जून के दिन बरसात प्रारम्भ होती है। महाराष्ट्र में ७ जून वर्षा का प्रारम्भ मानते हैं। लगभग तीन सौ वर्षों मे ४ दिन का अन्तर पड़ता है। परिणामतः ११ जून को मृग नक्षत्र प्रारम्भ होगा और लगभग २२०० वर्षों में ७ जुलाई [एक मास आगे] के दिन सूर्य का प्रवेश मृग नक्षत्र में होगा इससे ऋतु चक्र में सब गड़बड़ी पैदा होगी।

पृथ्वी, चंद्र और सूर्य मालिका का नक्षत्र चक्र में भ्रमण होने से पृथ्वी पर कालगणना होती है। पृथ्वी पर विशिष्ट स्थान पर सूर्योदय-सूर्यास्त कब होगा? पृथ्वी के किस हिस्से में अमावस्या और पूर्णिमा होने का समय कौनसा है? सूर्य-चंद्र के ग्रहण कौन समय और कहां दिखाई देंगे—ये सारी बातें सुनिश्चित हैं। इसका एकमेव कारण यह है कि निसर्ग की समय सारिणी अचूक होती है। परन्तु अंग्रेजी कलेंडर में इन सबका विचार पूर्णरूप से नहीं आता। चन्द्र का विचार छोड़कर कुछ गणित से ईसाई शास्त्रज्ञों ने कलेंडर की निर्मिति करवाई है।

जगत् के इतिहास में भारतीय मानववंश अति प्राचीन हैं। भारत की परम्परायें अन्य राष्ट्रों के लिए अनुकरण की बात है। परन्तु आज हम राष्ट्रीयत्व की बात को विशेष प्राधान्य नहीं देते। यह आत्मघात का चिह्न है।

ऊपर उल्लिखित बातों पर विचार हो और राष्ट्रीय महापुरुषों के जयन्ती-जन्मदिनादि उनकी जन्मतिथिके अनुसार मनवाये जायें। अंग्रेजी कलेन्डरसे तो गड़बड़ घोटाला होगा। यह कल्पना मन में रह-रह कर आती है।

पराधीन राष्ट्र का स्वत्व समाप्त करने के लिए परकीय राज्यकर्ता अपने संस्कार और शिक्षण पद्धति उस पर लादता है। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में गौरांग लोगों का एक आयोग नियुक्त करके राष्ट्रीय भावना की हानि करने के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति पर अंग्रेजी नियन्त्रण प्रस्थापित किया। शालाओं में प्रविष्ट होने वाले बच्चों की जन्म तिथि न लिखकर उसके बदले अंग्रेजी तारीख लिखवाई। पहली कक्षा में प्रविष्ट किया हुआ यही बालक आगे पढ़-लिखकर शिक्षाप्राप्त विद्वान् हुआ और कर्तृत्व से इस देश का राष्ट्रपुरुष बन गया। इसमें कोई बैरिस्टर, कोई स्वातंत्र्यवीर तो कोई सेना के संस्थापक सुभाषबाबू जैसे बन गये। राष्ट्रपिता महात्माजी, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० आंबेडकर, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, स्वामी विवेकानन्द, इन्दिराजी इत्यादि नाम और ले सकते हैं। जब राष्ट्र को उनकी जयन्ती मनाने की जरूरत पड़ी, तब उनकी जन्मतिथि उपलब्ध नहीं थी। परन्तु शालांत प्रमाणपत्र पर और शिक्षण संस्था के प्रमाणपत्र पर लिखे अंग्रेजी दिनांक हैं। इनके आधार पर ही अंग्रेजी दिनांकानुसार उनके जन्मदिन मनवाये जा रहे हैं।

सुशिक्षित किंबहुना सुसंस्कारित कहे जाने वाले परिवारों में भी अपत्यों की वर्षगाठ शालेय प्रतिज्ञा पत्र पर लिखी अंग्रेजी तारीख अनुसार सम्पन्न की जाती है। यह भारतीयता के विपरीत है और राष्ट्रीय मानस इसे स्वीकार करने में हिचकिचाता है। इस पर आप भी विचार करें।

वस्तुतः जन्मदिन तिथि के अनुसार व भारतीय महीनों के उल्लेख से प्रविष्ट करना योग्य है तथा आवश्यक है। परन्तु जन्म और विवाह की नोंद भी अंग्रेजी तारीख से ही करने की पद्धति रूढ़ होती जा रही है। भारत को स्वतन्त्र हुए ३६ वर्ष बीत गये। अभी तक हम वैचारिक और मानसिक गुलामी से मुक्त नही हुए।

तिथि अनुसार और भारतीय महीने में वर्षगाठ मनाने से आगामी वर्ष और भविष्य के प्रत्येक वर्ष के इसी दिन वहीं चंद्र नक्षत्र आयेगा और चंद्र का वास्तव्य प्रतिवर्ष उस दिन उसी राशि और नक्षत्र में रहेगा। तब तो तिथि के अनुसार ही पर्व उचित और पूर्णता से सम्पन्न होगा।

इसकी पुष्ट्यर्थ उदाहरण देकर हम कह सकते हैं कि बैंक में खाता खोलना है। इसके लिए उसी बैंक के दो खातेदारों की साक्षी स्वय के खातेदार होने के लिए आवश्यक है। इसी न्याय से अनमोल मनुष्य जन्म लेकर हम पृथ्वी पर आ गये। इसका साक्षी उस तिथि का चन्द्र और उस दिन का सूर्य क्या इनकी साक्षी जरूरी नहीं?

जब तक चन्द्र-सूर्य और नक्षत्र रहेंगे तब तक नाम और कर्तृत्व का स्मरण करने की कामना हम करते हैं। यह कामना अपने कालगणना के आचरण मे अभिप्रेत है। हमे इसके अनुरूप होना जरूरी है।

हम श्रीरामचन्द्र का जन्मोत्सव प्रतिवर्ष मनाते हैं। चैत्र सुदि ९ के दिन श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ। इस समय चैत्र सुदि ९, मध्याह्न समय, पुष्य नक्षत्र था। चैत्र सुदि नवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र रहता है। ऐसा ही उदाहरण छत्रपति शिवाजी जयन्ती के दिन का है। उनका जन्म वैशाख सुदि २ के दिन हुआ। इस दिन चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में रहता है। प्रतिवर्ष वैशाख सुदि द्वितीया की नवचन्द्र कोर और चंद्र के समीप रोहिणी नक्षत्र की तारिका उपस्थित रहती है। यह स्थिति बहुधा प्रतिवर्ष आती है। यही भारतीय त्योहार की परम्परा है। राष्ट्रीयत्व और राष्ट्रीय एकात्मता का सूत्र भी यही है। ●

आर्यसमाज की विभूति आचार्य देवप्रकाश जी-१

प्रस्तुत अंक से हम धारावाहिक रूप में तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी का जीवनचरित्र प्रकाशित कर रहे हैं।

यह जीवनचरित्र आचार्य देवप्रकाश समिति, शक्तिनगर, अमृतसर ने प्रकाशित किया है। लेखक हैं अमृतसर की केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री भोलानाथ दिलावरी।

आर्य जगत् के अनमोल रत्न, परम त्यागी एवं तपस्वी आचार्य देवप्रकाश जी का जन्म धर्मकोट बग्गा, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर के एक सम्पन्न मौलाना सय्यद खानदान के मुन्शी मुहम्मदशफी, जो एक सरकारी स्कूल में मुख्याध्यापक थे, के घर १८८९ तदनुसार १९४६ ई० विक्रमी में हुआ था। आपका बचपन का नाम अब्दुल लतीफ था।

आपकी ननिहाल चितौड़गढ़ (फतेहगढ़ चूड़ियां) में थी। आपकी माता का नाम हुसैन बीबी और पत्नी का नाम शुफीना था। शुद्धि के बाद हिन्दू नाम सुशीलादेवी रखा गया था। आचार्य देवप्रकाश की ससुराल गांव जौड़ा छितरी में है, जो गुरदासपुर से करीब ७ किलोमीटर की दूरी पर है।

अब्दुल लतीफ (चरित नायक) का लालन-पालन अपनी ननिहाल में ही हुआ। आपके सगे मामा वहीं के एक कश्मीरी मुसलमान थे।

आचार्य देवप्रकाश जी की सन्तान केवल एक पुत्री है, जो उच्च शिक्षा एम० ए० तक प्राप्त है। उसका विवाह गुरुकुल कामड़ी के एक प्राध्यापक से हुआ। उसका बड़ा सुपुत्र सुधाकर, जो गुरुकुल का स्नातक है, इतना बलिष्ठ है कि आधुनिक भीम के नाम से प्रसिद्ध है। वह आश्चर्यजनक शारीरिक करतब प्रदर्शित करता है जैसे दो मोटरें एक साथ रोकना, सांकल तोड़ना, पीतल की थाली को कागज की तरह फाड़ना, हृदय गति रोकना इत्यादि।

आचार्य जी की प्राथमिक शिक्षा फतेहगढ़ चूड़ियां के मिडिल स्कूल में हुई। इसके साथ ही आप एक मौलवी से कुरान भी पढ़ते थे।

आर्य संस्कारों की जागृति

देवप्रकाश जी के एक सहपाठी ब्राह्मण युवक, जिनका नाम मुन्शीराम था, पर आर्यसमाज के संस्कार थे। अतः दोनों में प्रायः आर्य और इस्लामी सिद्धांतों पर वाद-विवाद चलता रहता था। एक बार मुन्शीराम ने प्रश्न किया कि "आपके मुसलमानी मत में सृष्टि कितने दिनों में बनी?" इन्होंने उत्तर दिया "सात दिन में।" मुन्शीराम ने फिर पूछा कि "सूर्य कितने दिन में बना?" इन्होंने कहा कि "चौथे दिन।" इस पर मुन्शीराम ने फिर प्रश्न किया कि "यदि सूर्य चौथे दिन बना तो पहले दिन का ज्ञान कैसे हुआ, क्योंकि दिन तो सूर्य के उदय होने से बनता है।" अब हमारे चरित नायक को, जो अब तक अब्दुल लतीफ थे, कोई उत्तर न आया। इस घटना से इनका मन बदल गया और इनमें आर्य धर्म तथा इस्लामी साहित्य के गहन अध्ययन की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इसी जिज्ञासा ने उन्हें उच्च कोटि का धर्म अन्वेषक एवं शास्त्रार्थी बना दिया। ऐसे समय में आपको स्वामी दर्शनानन्द जी के ग्रन्थ पढ़ने को मिले। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का भी सुअवसर मिला। बस, फिर क्या था, मानो इनका काया ही पलट गई। अतः आप सच्चे मन से पक्के ऋषि-भक्त हो गये। आपका हृदय संवेदनशील होने से आपको मांसभक्षणादि से भी घृणा हो गई।

सामाजिक बहिष्कार

आचार्य जी की मुस्लिम बिरादरी में मांसाहार की प्रथा थी। विवाहादि उत्सवों तथा त्यौहारों में यह प्रथा पूरी तरह व्याप्त थी। अतः ऐसे अवसरों पर सम्मिलित होने का आप त्याग कर दिया करते थे। इससे बिरादरी के लोग आपसे अत्यन्त रुष्ट हो गये। परिणामतः आपका पूर्ण सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया परन्तु आप पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

आपके पिता जी की मृत्यु आपकी १४-१५ वर्ष की आयु में ही हो गई थी। परिवार के निर्वाहार्थ आपने स्वर्णकार का व्यवसाय अपना लिया। साथ ही धार्मिक अनुसंधान का स्वभाव भी बना रहा।

विद्या वृद्धि

देवप्रकाश जी ने अपने पिता जी से उर्दू फारसी तो पढ़ी ही थी परन्तु विद्या प्राप्ति की धुन स्वभावगत थी, जो पिता जी के स्वर्गवास होने के पश्चात् भी निरन्तर बनी रही। आपने अमृतसर आकर कई मौलवियों से पढ़कर मुन्शी फाजिल पास किया तथा अरबीदर्शन, साहित्य आदि में दक्षता प्राप्त की। अब तक आप इतने योग्य हो गये थे कि मौलवी फाजिल पढ़ने वाले छात्रों को सफलतापूर्वक पढ़ा सकते थे। कुछ काल के बाद अमृतसर में श्रीमद्-दयानन्द अरबी संस्कृत विद्यालय खोलकर स्वयं आचार्य पद पर आसीन हो शिष्यों को निष्ठापूर्वक पढ़ाने लगे। आपके सुयोग्य शिष्यों में पं० साधुराम शास्त्री, प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री (महोपदेशक, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं वैदिक दफ्तर), और पं० गंगाराम जी ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर भी थे। (क्रमशः)

एक भारतीय धर्म की कल्पना

यदि धर्माचार्य अन्यथा न लें तो यह जानते हुए भी कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्रीय देश है और धर्मनिरपेक्षता एवं अनेकता में एकता साथ ही वसुधैव कुटुम्बकम्-की नीति उसकी विशेषता है, हम एक प्रस्ताव इस विचारक वेला में प्रस्तुत करने की अनुमति चाहते हैं कि राष्ट्रीयएकता, अखण्डता एवं सम्प्रभुता की अक्षुण्णता के लिए एक भारतीय संस्कृति, एक राष्ट्रीय भाषा, एक राष्ट्रीय ध्वज, एक राष्ट्रीय गीत, एक राष्ट्रीय प्रतीक, एक राष्ट्रीय वेश, एक राष्ट्रीय पशु और एक राष्ट्रीय धर्म, भारतीयधर्म के नाम से, हो। विचारशील धर्माचार्य चाहें तो यह संभव हो सकता है। धर्म, वर्ग सम्प्रदाय और भाषा से ऊपर उठकर समग्र राष्ट्र की आत्मा एक एवं राष्ट्र माता एक। भारत माता की गौरव गरिमा की रक्षार्थ एक राष्ट्रीय धर्मार्थ भारतीय धर्म नाम विचारार्थ प्रस्तावित है। यह आकस्मिक नहीं है कि कोई भी व्यक्ति, समाज, प्रदेश, सम्प्रदाय एवं धर्म राष्ट्र से बड़ा नहीं हो सकता। धर्म वस्तुतः राष्ट्र के लिए है किन्तु राष्ट्र धर्म के लिए नहीं है। भारत में जन्मे नागरिक की जाति भारतीय है और धर्म भारतीय धर्म है। किसी भी नागरिक का प्रथम धर्म उसकी नागरिकता होती है अर्थात् पहले हम भारतीय हैं और बाद में हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाई हैं।

जिस देश-जाति में हमने जन्म लिया है, उसकी अखण्डता की रक्षा करना हमारा परम धर्म है। "सबको सन्मति दे भगवान्।" हमारा प्यारा भारत केवल देश नहीं, संदेश भी है। —प्रज्ञानन्द

दिल्ली की आर्यसमाज : अतीत की कुछ घटनायें

—दयाराम पोद्दार, लेक रोड, रांची-८३४००१—

अगस्त सन् १९०० ईसवी मे दिल्ली मे सनातन धर्म महामण्डल के सम्मुख आर्यसमाज की असाधारण सफलता का ऐतिहासिक महत्त्व है। खेद है कि डा० सत्यकेतु विद्यालकार द्वारा प्रकाशित आर्यसमाज का इतिहास भाग-२ (१८८३-१९४७) मे इसकी चर्चा नही। सत्यकेतु जी ने पृष्ठ ९२ पर आर्यसमाज के आन्दोलन और कार्यकलाप के स्वरूप की चर्चा करते हुए सन् १८८५ मे स्थापित सनातन धर्म महामडल के तत्कालीन मत्री प० दीनदयाल शर्मा के सम्बन्ध मे लिखा है कि कलहप्रिय और झगडालू सनातनधर्मी प्रचारको की तुलना मे प० दीनदयाल जी शास्त्रार्थो को अधिक पसन्द नही करते थे और अपने मन्तव्यो के प्रतिपादन के लिए प्रभावोत्पादक मधुर वाणी मे अधिक विश्वास करते थे। स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने आर्य-समाज के इतिहास भाग १ के पृष्ठ २५५ पर प० दीनदयाल को चमत्कारी वाणी का पुरुष एव शास्त्रार्थ या वादविवाद से तटस्थ बताकर, जहा वे होते थे, वहा शास्त्रार्थ की नौबत ही नही आती थी, ऐसा लिखा है। आर्यसमाज राची द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक आर्यावर्त (१८८९-१९०५) के २९ सितम्बर, १३, २० और २७ अक्तूबर १९०० ई० के अक प० दीनदयाल के सम्बन्ध मे डा० सत्यकेतु और इन्द्र जी के कथन को असत्य ठहराते हैं। स्व० इन्द्र जी के लिखे अनुसार तत्कालीन दरभगा नरेश का नाम रामकृष्णदास था। दिल्ली मे यह आयोजन सितम्बर मे हुआ था और सनातनधर्म महामण्डल मे पारित प्रस्तावो पर आर्यसमाज का प्रभाव था। साप्ताहिक आर्यावर्त के अनुसार यह कार्यक्रम ५ अगस्त से प्रारम्भ हुआ था और उक्त महामडल के अधिवेशनो मे पारित प्रस्तावो पर आर्यसमाज का कोई प्रभाव नही था। आर्यसमाज के इतिहास मे अभिरुचि रखने वाले विद्वानो एव सर्वसाधारण की जानकारी के लिए मैं निम्नलिखित बातें लिख रहा हूँ—

वर्तमान समय मे आर्यसमाज की गतिविधियो का दिल्ली मुख्य केन्द्र है पर एक शताब्दी पूर्व प्रथम बार स्वामी दयानन्द जी द्वारा एक नवम्बर १८७८ ई० को दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। इसके निष्क्रिय होने पर १८८३-८४ मे रायसाहब लाला दामोदर प्रसाद के निवास-स्थान १८ न० अलीपुर रोड पर आर्यसमाज दिल्ली की पुन स्थापना की गई। १८९५-९६ ई० मे इसका भवन चावडी बाजार, दिल्ली के नाम से अभिहित किया गया। सन् १९०० ई० मे आर्यसमाज दिल्ली के प्रधान रायसाहब गिरधारीलाल गुप्त और मत्री श्री कुन्दनलाल थे।

२९ सितम्बर के आर्यावर्त (राची) के अनुसार पौराणिक लोगो ने ५ अगस्त १९०० ई० को दिल्ली मे भारत धर्म महामडल का अधिवेशन आयोजित किया। दरभगा और अयोध्या के महाराजाओ के अतिरिक्त प० मदन-मोहन मालवीय, काशी के तीन महामहोपाध्याय प० शिवकुमार शास्त्री, प० राम मिश्र शास्त्री और प० गोविन्द शास्त्री के साथ लगभग एक हजार पौराणिक विद्वान् इस अवसर पर उपस्थित थे। आर्यसमाज दिल्ली ने भी अपने समाज का उत्सव ८ अगस्त से १३ अगस्त १९०० ई० तक भारत धर्म महामडल के अधिवेशन के समय रखा। दिल्ली मे उस समय ३५० आर्य पुरुष व विद्वान उपस्थित थे। इनमे निम्नलिखित प्रमुख वक्ता थे—स्वामी विश्वे-श्वरानन्द सरस्वती, प०पूर्णानन्द जी, प० नन्दकिशोर शर्मा, प० भीमसेन शर्मा (अध्यापक, सिकन्दराबाद पाठशाला), प० रुद्रदेव शर्मा, प० तुलसीराम शर्मा, प० देवदत्त शास्त्री, प० ज्वालादत्त शास्त्री, प० गगादत्त शास्त्री, प० गणपति शर्मा, लाला मुशीराम जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर अवध के मत्री लाला नारायण प्रसाद, पजाब प्रतिनिधि सभा के मत्री लाला शिवदयाल एम० ए०, राय ठाकुरदत्त धवन (एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर), सेठ लक्ष्मीराम जी इत्यादि।

आर्यसमाज के पडाल मे रात्रि कार्यक्रम मे स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने बतलाया कि भारतीय और यूरोपियन वैज्ञानिको की तुलना मे आर्य धर्म कितना अधिक गौरवान्वित है। अजमेर के वैदिक यन्त्रालय के मैनेजर प० देवीशकर बी० ए० ने पौराणिक मडल और आर्यसमाज के उद्देश्यो की तुलना करके वैदिक धर्म के महत्त्व को दर्शाया। प० नन्दकिशोर देव ने वैदिक सिद्धान्तो को पुष्ट किया।

९ अगस्त का प्रात आर्यसमाज में हवन व भजन हुए। दोपहर मे पन्द्रह आर्य पुरुषो ने पौराणिको के पडाल मे प्रवेश के लिए टिकट लिया पर उन्हें प्रवेश नही करने दिया गया। किसी तरह एक-दो आर्यसमाजी पडाल मे प्रवेश करने मे सफल हो गये। उन्होने देखा कि अत्यधिक भीड के होने पर भी लगभग एक सौ व्यक्ति ही कार्यक्रम सुन रहे हैं।

साप्ताहिक आर्यावर्त के १३ अक्तूबर के अक के अनुसार दस अगस्त को यमुना तट पर प्रात कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् निश्चय किया गया कि अभी तक शास्त्रार्थ हेतु पूर्व प्रेषित पत्र का उत्तर नही आया अत: आर्य-समाज का एक शिष्टमडल (जिसमे दिल्ली आर्यसमाज के प्रधान, पजाब प्रतिनिधि सभा के मत्री शिवदयाल जी एव राय ठाकुरदत्त धवन शामिल थे), दरभगा नरेश से जाकर मिला और उनके पडाल मे आर्यसमाजियों के पास प्रवेशार्थ टिकट के रहने पर भी उन्हें प्रवेश न देने पर आपत्ति प्रकट की इस पर दरभगा नरेश ने खेद प्रकट किया। दरभगा नरेश को आर्य-समाज के वेद सम्बन्धी दृष्टिकोण से परिचित कराया गया। इस पर उन्हे प्रसन्नता हुई। आर्यसमाज द्वारा शास्त्रार्थ कराने के अनुरोध पर महाराजा शास्त्रार्थ हेतु उद्यत न हुए।

इस पर दिल्ली आर्यसमाज के प्रधान गिरधारीलाल गुप्त और राय ठाकुरदत्त पौराणिको के पडाल मे व्याख्यान सुनने गये पर उन्हें बैठने देने के स्थान पर उठाने का अभद्र व्यवहार किया गया। इसे प० मदनमोहन मालवीय और रायबहादुर श्रीकृष्णदास ने बहुत अधिक बुरा महसूस किया और दूसरे दिन उन्होने पत्र द्वारा आर्यसमाजियो को उत्सव देखने को आमन्त्रित किया। उत्सव मे उस दिन मूर्तिपूजा वेद प्रतिपादित है" यह प्रस्ताव प्रस्तुत नही किया गया। उत्सव मे आर्यसमाज को अपना पक्ष प्रकट करने का मौका नही दिया गया, जबकि आर्यसमाज द्वारा पौराणिक विद्वानो को उनके पडाल मे आने पर अपने विचार प्रकट करने को आमन्त्रित किया गया। पौराणिको ने कहा कि विवादास्पद विषयो पर आर्यसमाज के पडाल से कुछ न कहा जाये तो वे आ सकते हैं। आर्यसमाज की ओर से कहा गया कि सत्यासत्य के निर्णय के लिए ही उन्हे आमन्त्रित किया जा रहा है अत दोनो पक्षो की तुलना नही की गई तो लाभ क्या ? आर्यसमाज के पडाल मे विद्वानों के व्याख्यान के पश्चात् पौराणिक विद्वानो को प्रतिवाद करने का अवसर दिये जाने के बावजूद पौराणिक विद्वान् आने को तैयार नही हुए। परिणामस्वरूप आर्यसमाज के प्रति दर्शकों का अधिकाधिक झुकाव हुआ। रात्रि कार्यक्रम मे प० पूर्णानन्द जी के व्याख्यान के पश्चात् प० रुद्रदत्त जी ने पुराणों की दूषित शिक्षा का वर्णन करते हुए सिद्ध कर दिया कि आर्यसमाज सनातन धर्म महामडल से शास्त्रार्थ करने को उद्यत है परन्तु महामडल के पडितो मे शास्त्रार्थ का साहस नही।

साप्ताहिक आर्यावर्त (राची) के २० अक्तूबर के अक के अनुसार चौथे दिन (११-८-१९०० ई०) पौराणिको ने एक प्रस्ताव द्वारा ईश्वर के अवतार, तीर्थ माहात्म्य, मूर्तिपूजन और पितृश्राद्ध करने वालो को वैदिकधर्मी न मानने की घोषणा की। महामडल के मत्री प० दीनदयाल शर्मा ने अन्तरग सभा की बैठक मे आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण करने वालो को जाति से बहिष्कृत करने का प्रस्ताव पारित कराने का जीतोड प्रयत्न किया पर वे प० मदनमोहन मालवीय के विरोध के कारण सफल न हो सके। एक पौराणिक पडित ने आर्यसमाज की आलोचना से क्षुब्ध होकर एक पैम्फलेट मे महामडल के मत्री प० दीनदयाल को निष्कलक कलियुगी अवतार बतलाया।

१२ अगस्त को पाचवें दिन आर्यसमाज के पडाल में घोषणा की गई कि पौराणिको की ओर से शास्त्रार्थ के लिए किसी के भी उद्यत होने पर आर्य-समाज सदैव शास्त्रार्थ के लिए तैयार है।

१३ अगस्त को छठे दिन श्री धर्मदास मुखोपाध्याय ने अपनी सभा हरि भक्ति प्रदायिनी की ओर से आर्यसमाज को पत्र लिखा कि १४ अगस्त को आर्यसमाज दिल्ली के कश्मीरी दरवाजे के पास प्रस्तावित उत्सव में आने वाले बगाल के नैयायिक पचानन तर्करत्न से शास्त्रार्थ करे। आर्यसमाज की

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराब से सर्वनाश

आचार्य सत्यानन्द एम० ए०, रिवाड़ी रोड, नारनौल

मैं दुनिया मे सबसे बडी पापिनी हूँ, क्योंकि मैंने मनुष्यो को पशुओं मे बदल दिया है। मैंने ही करोडों इन्सानो के घरों को बर्बाद करके छोडा है। इस ससार मे अब तक हुए भीषण सग्रामो में जितने मनुष्य मरे, उनसे भी कहीं ज्यादा मनुष्यों को मैंने ही मौत के घाट उतारा है। मैंने बडी-बडी आशायें रखने वाले नौजवानो की आशाओ को मिट्टी मे मिलाकर उन्हे पृथ्वी का बोझ बना दिया है। मैंने लाखो मनुष्यो की बर्बादी का रास्ता साफ कर दिया है। मेरा यही काम है कि मैं कमजोरो का नाश करती हूँ और बलवानों को कमजोर बनाकर धीरे-धीरे मौत के मुह मे पहुचा देती हूँ। मैं बड़े-बडे बुद्धिमानों को बेवकूफ बनाती हूँ, बेवकूफो को अपने पैरो के नीचे कुचलती हूँ और बेकसूरों को अपने जाल मे फसाती हूँ। इस ससार की समस्त बीमारियो की जन्मदात्री मैं ही हूँ। शराबी पति की पत्नी तथा शराबी बाप के भूखे बच्चे मेरी करतूतों को अच्छी तरह जानते हैं। वे बूढे माता-पिता भी जिनके बाल पककर सफेद हो गये, और जो अपनी शराबी सन्तान के कारण रात व दिन रज व गम मे डूबे हुए हैं, मुझे भली प्रकार पहचानते हैं। नाश और भयकर नाश के अतिरिक्त इस दुनिया मे मेरा कोई अन्य काम नही है।

परमात्मा का दिया हुआ मनुष्य का कोई सबसे बडा तोहफा है तो वह बुद्धि है तथा मेरा जो सबसे पहला हमला होता है वह इस बुद्धि पर ही होता है। मैं मनुष्य की समझ को नष्ट कर देती हूँ और इस स्थिति मे पहुचा देती हूँ कि जब शराबी शराब के नशे मे होता है तो बहुत-से ऐसे उदाहरण देखने व सुनने मे आते हैं कि उस दशा मे किसी स्त्री के तथा आदमी के पेशाब को भी शराब समझकर पीता चला जाता है। इससे अधिक शर्म की बात और क्या हो सकती है ? फिर भी यह शराबी शराब की बोतलों पर बोतल पिये जा रहा है और अपने बहुमूल्य जीवन को नरक बना रहा है।

शराब की परिभाषा करते हुए विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है कि जिस प्रकार किसी राष्ट्र व जाति को उन्नत बनाने के लिए उत्तम साहित्य सजीवनी बूटी है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र, जाति और समाज को निस्सार, निस्तेज व निस्सत्व बनाना हो तो उस राष्ट्र व जाति मे शराब की आदत डाल देनी चाहिए। भारतवासियो, याद रखो—

जो डूबे हैं गिलासो मे न उभरे जिन्दगानी मे।
हजारो बह गये इन बोतलो के बन्द पानी मे॥
न कर बरबाद अपनी जिन्दगी बोतल के दीवाने।
वो काटेगा बुढापे में जो बोयेगा जवानी मे॥

जिस यादव कुल मे योगिराज श्रीकृष्ण ने जन्म लिया, वही कुल आज शराब के चगुल मे फसकर नष्ट हो रहा है। यदुकुलवशियो, चेतो! क्यों अपने पूर्वजों के नाम पर धब्बा लगाते हो ?

शराब की निन्दा करते हुए महात्मा बुद्ध न जो कुछ कहा, वह बहुत ही ध्यान देने योग्य है—

तुम सिह के सामने जाते समय भयभीत न होना, क्योकि वह पराक्रम की परीक्षा है। तुम तलवार के सामने सिर झुकाते समय भयभीत न होना, क्योकि वह बलिदान की कसौटी है। तुम पर्वत के शिखर से पाताल मे कूद पडना, क्योकि वह तप की साधना है। तुम धधकती हुई ज्वालाओ से विचलित न होना, क्योंकि वह स्वर्ण परीक्षा है। लेकिन शराब से सदा भयभीत रहना, क्योकि वह पाप और अनाचार की जननी है।

किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है—

ऐ शराब तूने अक्सर कौमों को खाके छोडा।
जिस घर के सिर उठाया उसको मिटाके छोडा॥
राजा के राज छीने शाहो के ताज छीने।
गर्दनकशो को अक्सर नीचा दिखाके छोडा॥
अफीम, गाजा, भाग, चरस मादक पोस्त शराब।
हे मित्रो, देखो ध्यान से, हैं सारे नशे खराब॥

एक शराबी एक महीने में कम से कम २०० रुपये की शराब पी जाता है। यदि इस शराबी को परमात्मा की दया से सद्बुद्धि आ जाये तो २०० रुपये अपने बच्चो की पढाई-लिखाई तथा पालन-पोषण पर खर्च कर सकता है। ऐसा करने से उसे दो लाभ होगे। एक तो शराबी सुरापान के महापाप से बचेगा और दूसरे बच्चे पढकर विद्वान् हो जायेंगे। इस प्रकार पूरा परिवार स्वर्गधाम बन जायेगा। अथवा २०० रुपये प्रतिमास बैंक मे डालता रहे तो एक वर्ष मे लगभग २५०० रुपये हो जाते हैं। इस प्रकार विचार करने से पता चलता है कि उसे कितना बडा आर्थिक घाटा होता है। आर्थिक घाटा ही नही, उसके साथ अमूल्य सम्पत्ति यह शरीर शराब से जर्जर होकर दु:खो एव रोगो का अड्डा बन जाता है और फिर रोगो का इलाज कराने हेतु कितना ही धन डाक्टरो के हवाले करना पडता है। प्राय करके जो शराब पीते हैं, वे बीडी, सिगरेट तथा अन्य कितने ही व्यसनो मे भी फसे रहते हैं। उनका भी यदि हम इसी प्रकार हिसाब लगायें तो पता चलेगा कि कम से कम ५० रुपये अन्य व्यसनो बीडी, सिगरेट, तम्बाकू आदि पर खर्च हो ही जाते हैं। इस प्रकार एक वर्ष में ६०० रुपये और दस वर्ष मे ६००० रुपये जुडते हैं। शराबी इन पैसो को अपने बच्चो के लालन-पालन और अपने घर की आर्थिक स्थिति सुधारने में लगाये तो दु:ख, क्लेश एव कष्ट का का नाम भी सुनने को न मिले।

कितने दुर्भाग्य की बात है कि शराब पीने वाले शराब के साथ-साथ पता नही क्या-क्या खाते हैं। मास, मछली, अण्डे, पकौडे, बीडी, सिगरेट इत्यादि खाते-पीते हैं। इन शराब एव बीडी सिगरेट पीने वालो ने शराब, बीडी एव सिगरेट को तो मुख्य समझ लिया है तथा जो बालक इनके बुढापे की लाठी का सहारा हैं उन बालको को इन शराबियो ने गौण समझ लिया है। वेद मे कहा है—

सप्तमर्यादा: कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरोऽगात्॥

अर्थात् हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्यभाषण और इन पापो के करने वाले दुष्टो के सहवास का नाम सप्तमर्यादा है। इनमे से एक भी मर्यादा का जो उल्लघन करता है अर्थात् एक भी पाप करता है वह पापी होता है और जो धैर्य से इन हिंसादि पापो को छोड देता है, नि:सन्देह उसका जीवन आदर्श होता है।

महर्षि दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे लिखते हैं कि 'मद्यपान, मासादि का ग्रहण कदापि न करें।'

शराब पीने से शारीरिक, मानसिक और नैतिक पतन होता है। समाज का सारा ढाचा बिगड जाता है। इस शराब ने बडे बडे राष्ट्रो और जातियो को मिट्टी मे मिलाकर छोडा है।

सम्पादक के नाम पत्र

सीमा चौकसी के लिए संविधान में संशोधन आवश्यक

महोदय,

पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बरनाला और उनके सहयोगियो ने देश की पश्चिमी सीमा के सवेदनशील जिलों में आतंकवादी गतिविधियों से निपटने के लिए प्रशासन के अधिकारों मे वृद्धि करने के उद्देश्य से संविधान की धारा २४६ की सहायता लेने और उसमें आवश्यक सशोधन करने के निश्चय का विरोध किया है। केन्द्र से हमारा जोरदार आग्रह है कि वह इस विरोध के बावजूद सिख आतंकवादियों का सफाया करने के लिए यह शक्तिशाली और सुनियोजित कदम जरूर उठाये—और बिना देरी किये उठाये।

चूंकि पाकिस्तान में प्रशिक्षित आतंकवादी और उन्हें आर्थिक तथा अन्य तरीकों से सहायता देने वाले पाकिस्तानी तस्कर और गुप्तचर पाकिस्तान से लगी जम्मू-कश्मीर, पजाब व राजस्थान की सीमा पार कर भारत में बेरोकटोक आते रहते हैं, और चूंकि वर्तमान सुरक्षा-व्यवस्था उनके आगमन पर पूरी तरह से रोक लगाने मे असफल रही है, इसलिए यह कदम उठाना बहुत जरूरी है, ताकि इस सीमा क्षत्र की सुरक्षा को मजबूत किया जा सके। इसमे विलम्ब करना देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने जैसा होगा।

हम इस सीमा-चौकसी व्यवस्था को और ज्यादा कारगर और अचूक बनाने के उद्देश्य से यह सुझाव केन्द्र के सम्बन्धित मन्त्रियों तथा अधिकारियों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं कि सीमा क्षेत्र से लगी पांच किलोमीटर की पट्टी पर जो अर्द्ध-सैनिक बल या फौज तैनात की जाये, वह इस पट्टी की लगातार गश्त लगाती रहे और गश्ती हैलिकाप्टरों की मदद से हर सीमा-अतिक्रमण पर नजर रखकर उसे निष्प्रभावी करती रहे। सीमा-क्षेत्र में घास को ज्यादा लम्बा न होने दिया जाये, ताकि पाकिस्तान की मदद से भारत मे घुसपैठ करने वाले तस्कर, आतकवादी और गुप्तचर उसमे छिपकर बचने न पायें। चौकसी करने वाली चौकियों की दूरी कम कर देनी चाहिये और सुरक्षा बल की संख्या बढ़ाकर उन्हें नवीनतम अस्त्र दिये जाने चाहियें।

आतकवादियों के खिलाफ हमारी लड़ाई किस्तों मे नही लड़ी जा सकती। इसलिए हम दोहराते हैं कि पाकिस्तान से लगी गुजरात, राजस्थान, पजाब और जम्मू-कश्मीर की सीमा की सुरक्षा को मजबूत और अचूक बनाने के लिए और इस क्षेत्र में सक्रिय आतकवादियो की खतरनाक गतिविधियो से निपटने के लिए केन्द्र सविधान मे अविलम्ब आवश्यक संशोधन करके सुरक्षित पट्टी बनाना बहुत जरूरी है।

—सदाजीवतलाल, बम्बई

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी को सहयोग देने की अपील

महोदय,

वाराणसी में तुलसीपुर स्थित पाणिनि कन्या महाविद्यालय के एकदम साथ लगा हुआ दक्षिण दिशा की ओर जो २२ बिस्वे का उद्यान है वह सरकारी तौर पर हमें शीघ्र उपलब्ध हो जायेगा। आज अपने शुद्ध एव उच्च सिद्धान्तो को लिये हुए यह कन्या विद्यालय जीवन के सोलह वर्ष पार कर चुका है। प्रारम्भ से ही हम इस उद्यान को अवाप्त करने की दबी इच्छा लिये चलते रहे और अनेकों बृहद् योजनाओं को क्रियान्वित करने मे सफल न हो पाये।

उपर्युक्त उद्यान का, जिसका अवाप्तिकरण होने जा रहा है, सरकारी तौर पर मूल्यांकन २॥ लाख रुपये हुआ है। यह मूल्य इस उद्यान के विस्तार को देखते हुए न्यून ही है। डेढ़ मास के अन्दर हमें यह राशि सरकार में जमा करके सरकारी आदेश से उद्यान पर कब्जा प्राप्त करना है। अतः विद्यालय के हितैषियों और संस्कृत प्रेमियों को चाहिये कि वे पूर्ण उत्साह के साथ इस राशि को पूरा करने में जुट जायें। आर्यों को पैसे के योगदान से पीछे नहीं हटना है। हमारा संगठन यही कहता है। कन्याओं के लिए महर्षि दयानन्द प्रवर्तित आर्ष पाठविधि का यह एकमात्र विद्यालय है। हमने अपने आदर्शों की रक्षा के लिए आज तक सरकारी अनुदान न लिया है और न लेंगे। जब-जब आवश्यकता पड़ी है, हमने जनता के समक्ष ही झोली फैलाई है और आज भी अपनी बात सबके समक्ष इसी रूप में रखी है।

इस विद्यालय में न केवल भारत अपितु देश-देशान्तर से आई कन्यायें छात्रावास में रहती हुई प्रमुख रूप से अष्टाध्यायी, महाभाष्य एवं वेद-वेदांगों का अध्ययन करती हैं तथा वैदिक सिद्धान्तों का गहरा ज्ञान भी प्राप्त करती हैं। इसके अतिरिक्त यहां कन्याओं के सर्वांगीण विकास हेतु भी सर्वविध प्रयास किये जाते हैं। व्यायाम-प्रशिक्षण, सगीत चित्रादि का अभ्यास, गृहकला, सिलाई, बुनाई आदि का भी प्रशिक्षण यहां दिया जाता है। विद्यालय (गुरुकुल) का प्रकाशन विभाग, वाचनालय, पुस्तकालय आदि सभी सुविधायें यहां उपलब्ध हैं।

उद्यान की अवाप्ति के अनन्तर (१) क्रीड़ाक्षेत्र, छात्रावास आदि सभी में वृद्धि हो सकती है तथा (२) एक पाणिनि मन्दिरम् (सत्संग हाल) एवं (३) अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास का निर्माण, जो हमारी योजना के अन्तर्गत हैं, हो सकेंगे।

उदार दानी महानुभाव उद्यान अवाप्ति के लिए सहयोग दें।

—प्रज्ञादेवी आचार्या
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
तुलसीपुर, वाराणसी-१०

अतीत की कुछ घटनायें

(पृष्ठ ७ का शेष)

ओर से कहा गया कि यदि आप महामण्डल के अन्तर्गत हैं तो उसके पंडाल में शास्त्रार्थ करायें और यदि महामण्डल के अन्तर्गत नहीं हैं तो अपने विद्वान् को आर्यसमाज के पंडाल मे भेजकर शास्त्रार्थ करावें। इसके लिए १४ अगस्त की प्रतीक्षा न करें। पर वे टालमटोल करते रहे।

आर्यसमाज के उत्सव के अन्तिम कार्यक्रम में पौराणिकों को शास्त्रार्थ हेतु पुनः आहूत किया गया। १८ नूतन सदस्यों ने आर्यसमाज में प्रवेश किया।

आर्यावर्त के २७ अक्तूबर के अंक के अनुसार आर्यसमाज दिल्ली के इस उत्सव पर एक हजार रुपये आतिथ्य सत्कार में व्यय किया गया। दस हजार ट्रैक्ट बांटे गये। आर्यों को प्रेरणा दी गई कि वे वेद प्रचार कोष मे अधिकाधिक दान देकर सर्वत्र समाज का काम करें।

उग्रवादियों ने पति के साथ घर तक छीन लिया

विस्थापित महिला उर्मिला की करुण कथा

पंजाब के गुरदासपुर जिले के कोटली सूरतमल्ली गांव से अपने तीन बच्चों सहित दिल्ली के गोविंदपुरी कैम्प में आई ३५-वर्षीय विस्थापित महिला श्रीमती उर्मिला नारंग, जिनके पति उग्रवादियों की गोलियों का निशाना बन गये, के जीवन संघर्ष की भी एक दु:खदायी कथा है।

इस गांव में २ जून, १९८४ को उग्रवादियों द्वारा की गई अंधाधुंध गोलीबारी में मनियारी की अपनी दुकान पर बैठे इनके पति बलदेव राज की मृत्यु हो गई थी और देवर विजयकुमार बुरी तरह घायल हो गये थे। सरकार ने श्रीमती नारंग की सहायतार्थ २० हजार रुपये दिये, जिसमें से अधिकांश देवर के इलाज और शेष घर के निर्वाह में खर्च हो गये।

इस समय श्रीमती नारंग के परिवार में बूढ़े सास-ससुर, २२-वर्षीय देवर तथा तीन बच्चे हैं, जिनमें से दो पुत्रियां और एक पुत्र है। लगभग दो वर्ष से अधिक समय तक दुकान बन्द रहने के पश्चात् कुछ समय पूर्व जब खोली तो स्थिति यह आ गई कि दुकान से घर का गुजारा तक चलना मुश्किल हो गया। अन्त में जब भूखे मरने तक की नौबत आ गई तो वे अपने बच्चों को लेकर गत सात सितम्बर को दिल्ली आ गईं।

श्रीमती उर्मिला नारंग, जिन्हें उनके पति की हत्या व गरीबी ने इतना तोड़ दिया है कि आंखों ने भी अपना दामन छोड़ना आरम्भ कर दिया है, ने अपने दिल्ली प्रवास के दिनों की दु:ख भरी दास्तान सुनाते हुए कहा कि पहली रात तो उन्होंने दिल्ली रेलवे स्टेशन पर और दूसरी रात एक मन्दिर में बिताई। इनके पास बच्चों द्वारा पहने कपड़ों के अतिरिक्त कुछ न था और ये दोनों रातें इन्हें अपने नन्हे बच्चो सहित नंगे फर्श पर केवल छत के नीचे बितानी पड़ीं। नौ सितम्बर को वे गोविन्दपुरी कैम्प में पहुंची तो भी वहां उनकी किसी ने सुध नहीं ली।

दिल्ली पलायन करने के सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि उनके गांव कोटली सूरतमल्ली में प्रतिदिन गुरुद्वारे से लाउडस्पीकर के माध्यम से धमकियां दी जाती हैं, जिनमें हिन्दुओं को यहां से निकल जाने और ऐसा न करने वालों को मार देने की धमकियां सरेआम दी जाती हैं। पुलिस व सुरक्षा बल ने इन घोषणाओं की ओर कभी कोई ध्यान नही दिया। जब लोगों के घरों में धमकियों के पत्र आने लगे तो भयभीत परिवार वालों ने उन्हें बच्चों सहित दिल्ली जाने की सलाह दी।

श्रीमती नारंग ने एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि यहां आने के बाद भी परिवार के प्रति डर हमेशा बना रहता है और साथ ही यहां अपना व बच्चों का पेट भरने की समस्या बनी हुई है। इनकी करुण कहानी सुनकर प्रविष्ठ और अर्जुन के मुख्य सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र ने बच्चों के लिए एक स्वैटर व कम्बल की तत्काल तथा भविष्य में आर्थिक व अन्य सहायता देने का वचन दिया।

महामहोपाध्याय बाल शास्त्री राणाडे की महर्षि दयानन्द पर दृढ़ आस्था

आर्य जगत् में स्व० श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ के नाम से प्राय: सभी परिचित हैं। गृहत्याग के पश्चात् आप घूमते-फिरते विद्या अध्ययन के लिए मुलतान नगर (वर्तमान में पाकिस्तान) में श्री गोस्वामी घनश्यामदास जी शर्मा के पास पहुँच गये। यद्यपि शर्मा जी पौराणिक विचारों के थे, किन्तु महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा का कारण था उनके गुरु श्री महामहोपाध्याय बालशास्त्री राणाडे का महर्षि-भक्त होना। शर्मा जी ने बालशास्त्री जी के मुख से विद्याध्ययन के समय अनेक बार यह वाक्य सुना था—

"सत्पथ पर चलना चाहो तो दयानन्द के बताये पथ पर चलो, क्योंकि वह पथ सत्य एवं निर्भ्रान्त है।"

एक दिन एक शिष्य ने अपने गुरु बालशास्त्री जी से यह पूछने का साहस कर ही लिया—'गुरुवर' यदि स्वामी दयानन्द का बताया मार्ग सत्य और निर्भ्रान्त है तो आप स्वयं क्यों नही उसका अनुसरण करते?' गुरु जी ने शिष्य की बात का जो उत्तर कुछ देर रुककर गम्भीरता के साथ दिया, वह विश्व के बुद्धिजीवियों के लिए तो प्रेरणाप्रद है ही, साथ ही गुरुवर के निष्पक्ष विमल मानस-पटल एवं सज्ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक भी है। गुरुजी बोले —

"वत्स! हम संसार का मान-अपमान त्यागने एवं लोभ भावना को छोड़ने में समर्थ नहीं हैं, किन्तु फिर भी इतना अवश्य मानते हैं कि दयानन्द का बताया मार्ग सर्वथा सत्य है।"

साहित्य समीक्षा

आर्यसमाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं

लेखक—प्रो. दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य), भूतपूर्व आचार्य, दयानन्द स्नातकोत्तर कालेज, अजमेर।

प्रकाशक—आर्यसमाज अजमेर, पृ० स० ४१५, मू० ४५ रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक प्रो. दत्तात्रेय वाब्ले से कौन आर्यजन परिचित नहीं होगा? आपने जहां २५ वर्ष पर्यन्त अजमेर स्नातकोत्तर कालेज के आचार्य पद को सुशोभित किया है, वहां दूसरे सामाजिक कार्यों में भी आपका सक्रिय योगदान रहा है। आप जहां एक सुयोग्य शिक्षाविद् हैं, वहां लेखन कला में भी अतीव निपुण हैं। प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य आर्यसमाज के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं उसकी वर्तमान में उपयोगिता को उजागर करना है। इसी दृष्टि से लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में आर्यसमाज को पुन: एक व्यापक एवं प्रभावशाली क्रान्तिकारी आन्दोलन बनाने के बहुत ही उपयोगी सुझाव दिये हैं। आर्यसमाज की सार्वभौम मान्यताओं का दिग्दर्शन कराते हुए लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वैदिक धर्म ही एक सार्वभौम धर्म है, क्योंकि यह मानव को मानव से जोड़ने वाला तथा विज्ञानसम्मत है। विश्व के प्रसिद्ध तथाकथित धर्मों का तुलनात्मक विवेचन करके इसमें यथार्थ धर्मका सत्य स्वरूप दिखाया गया है। अतीत काल में आर्यसमाजकी देश, धर्म व समाजके प्रति क्या देन रही है और वर्तमान में इसकी पहले से भी अधिक उपयोगिता इसमें दिखाई गई है। भारतीय पुनर्जागरण में दयानन्द और आर्यसमाज का क्या स्थान रहा है, इस विषय में विभिन्न सम्मतियां देकर हिन्दू तथा आर्य शब्दो की विभिन्न परिभाषायें भी दिखाई गई हैं। शिक्षा, धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में आर्यसमाज की सेवाओं का दिग्दर्शन एवं आर्यसमाज को एक क्रान्तिकारी आन्दोलन सिद्ध करते हुए उसके विषय में कतिपय न्यायालयों के गलत निर्णयों की अच्छी समीक्षा की गई है। आशा है कि आर्यजन तथा निष्पक्ष बुद्धिजीवी लोग इस उपयोगी पुस्तक को अपनाकर लेखक का उत्साह सम्वर्धन करेंगे

—राजवीर शास्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव

प्रो० शेरसिंह पुनः प्रधान निर्वाचित

रोहतक, २६ अक्तूबर। आज यहां दयानन्द मठ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में हरयाणा के आर्यसमाजों से ३०० के लगभग प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभा का वार्षिक बजट स्वीकार करने के पश्चात् १९८६-८७ के लिए निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान प्रो० शेरसिंह जी (पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री),
उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी (रोहतक),
बहन सुभाषिणीदेवी (आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर) और
ला० लछमनदास (वल्लभगढ़)
मन्त्री श्री वेदव्रत शास्त्री (रोहतक),
उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार (तिहाड़, जिला सोनीपत) और
आचार्य सुदर्शनदेव जी (रोहतक)
कोषाध्यक्ष मा० बद्रीप्रसाद जी आर्य (जींद शहर)
पुस्तकाध्यक्ष आचार्य ऋषिपाल (चरखी दादरी)

श्री जीवितरामसिंह दिवंगत

आर्यसमाज माटुंगा (बम्बई) के संस्थापक तथा वाराणसी व मिर्जापुर क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियों के स्तम्भ श्री जीवितरामसिंह का २१ अक्टूबर की रात्रि में ९२ वर्ष की आयु में वाराणसी में देहान्त हो गया। आप मस्तिष्क के रक्तस्राव के कारण पिछले एक मास से बेहोश पड़े थे। मृत्यु के समय उनके एक मात्र पुत्र श्री अमरनाथसिंह तथा पांचों पौत्र उनके समीप उपस्थित थे। उनका शव, उनके निवास स्थान से सर्वप्रथम आनन्द बाग स्थित महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल ले जाया गया। अन्त्येष्टि संस्कार हरिश्चन्द्र घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसरपर वाराणसी नगर एवं समीपवर्ती क्षेत्र के अनेक आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

श्री जीवितरामसिंह महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण निष्ठावान्, अत्यन्त मितभाषी एवं सेवाव्रती थे। आर्यसमाज माटुंगा और इसके द्वारा संचालित विद्यालयों में आपकी सेवायें सर्वविदित हैं। इसके अतिरिक्त श्रद्धानन्द महिला आश्रम बम्बई, गुरुकुल अयोध्या तथा काशी शास्त्रार्थ स्थल वाराणसी में भी अपका सहयोग उल्लेखनीय रहा। आपने अपने जन्म स्थल, ग्राम असालपुर मार्फी, चुनार, मिर्जापुर में भी एक बालिका विद्यालय खोला, जिसके आप आजीवन प्रधान रहे। अंग्रेजों के समय में तत्कालीन बम्बई प्रान्त में हिन्दी का पाठ्यक्रम सर्व प्रथम आपके ही प्रयास से लागू हुआ था। आपका जीवन चिरस्मरणीय एवं प्रेरणास्रोत रहेगा।

—आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज पुलबंगश (दिल्ली) का उत्सव

आर्यसमाज पुलबंगश, नया मुहल्ला, दिल्ली का चौबीसवां वार्षिकोत्सव २४ नवम्बर सोमवार से ३० नवम्बर रविवार तक धूमधाम से मनाया जायेगा। कार्यक्रम में वृहद् यज्ञ, वेद प्रवचन, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सम्मेलन आदि सम्मिलित हैं। सम्मेलनों का सभापतित्व धर्माचार्य, बुद्धिजीवी और राजनेता करेंगे।

आर्य वीर दल की ओर से प्रतियोगिता का आयोजन

११ दिसम्बर को प्रातः १० बजे से सायं ५-३० बजे तक अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस के उपलक्ष में भाषण, वादविवाद, समूह गान, एकांकी नाटक और योगासन प्रतियोगिता रखी गई है, जिसमें स्कूलों, गुरुकुलों, कालेजों और आर्य वीर दल की शाखाओं के विद्यार्थी भाग लेंगे। इस मुकाबले में विजेताओं को चल विजयोपहार और पुरस्कार दिये जायेंगे।

सत्यकाम आर्य, जिला संचालक, आर्य वीर दल
आर्य पब्लिक स्कूल, बालसमन्द रोड, हिसार

गुरुकुल सिराथू का उत्सव

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू, इलाहाबाद का २८वां वार्षिकोत्सव १४ नवम्बर से १६ नवम्बर तक हो रहा है, जिसमें वेद, राष्ट्रीय एकता, युवा, अभिभावक, आर्य, संस्कृत और शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी, भजनोपदेशक और नेता पधार रहे हैं।

उन्नाव में वैदिक ज्ञान मेला

उन्नाव। महिला आर्यसमाज उन्नाव के तत्वावधान में १६ से १९ नवम्बर तक वैदिक ज्ञान मेले का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में होगा, जिसमें देश के उच्चकोटि के महात्मा विद्वान् और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

गुरुकुल गौतमनगर का स्वर्णजयन्ती समारोह

दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती समारोह और चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ ९ नवम्बर रविवार से ७ दिसंबर रविवार तक होगा। इस अवसर पर वर्तमान समय के सन्दर्भ में अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया है अनेक संन्यासी मूर्धन्य विद्वान्, भजनोपदेशक, तथा सुलझे हुए विचारक पधारेंगे।

टंकारा में ऋषि मेला यात्रियों के लिए विशेष व्यवस्था

नई दिल्ली। शिवरात्रि के अवसर पर आगामी २५, २६ और २७ फरवरी को महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा मे ऋषि मेले का आयोजन किया गया है। यात्रियो को ले जाने के लिए विशेष रेलगाडी और बसों की व्यवस्था की गई है। रेलगाडी से प्रस्थान २३ फरवरी को और बसो से २० फरवरी को प्रात ६ बजे (आर्यसमाज करौलबाग से) होगा। रेलगाडी पहली मार्च को और बसे तीन मार्च को लौटेंगी।

सीटें बुक कराने के लिए टंकारा सहायक समिति, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग से सम्पर्क करें। सम्पर्क के लिए आखिरी तारीख पहली फरवरी है।

देहरादून की दयानन्द विकलांग सहायता समिति का सेवाकार्य

देहरादून। आर्यसमाज के मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने पत्रकारो को बताया कि तीन वर्ष पूर्व स्थापित की गई दयानन्द विकलाग सहायता समिति के माध्यम से कुष्ठरोग-पीडित बहिन-भाइयो की सेवा के क्षेत्र मे आर्यसमाज काफी कुछ कर पाया है। आपने कहा कि विदेशी मिशनो की सहायता से, सेवा के नाम पर स्थापित किये गये शिशु गृहो (चिल्ड्रन्स होम) मे इस जनपद मे सैकडो स्वस्थ बच्चे, जिनके माता पिता कुष्ठरोग से पीडित थे, धोखे से धर्मान्तरित कर दिये गये। अब आर्यसमाज के कार्य के प्रभाव से धर्मान्तरण की इस बाढ पर रोक लगने की आशा है।

श्री बाली ने बताया कि आर्यसमाज द्वारा की जा रही अन्य सेवाओ के अतिरिक्त अनाथ बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण और शिक्षण की दिशा मे लगभग दो लाख रुपये वार्षिक व्यय से श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के माध्यम से सेवा की जा रही है।

आपने इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि हिन्दू समाज की कमजोरी और युवा कन्याओ को देर तक अविवाहित बैठाये रखने के कारण अनेक देवियां विधर्मियो तथा असामाजिक तत्त्वो द्वारा भ्रमित करके अपहृत की जाती हैं। आपने बताया कि यह समाज गत तीन सालो मे लगभग दो दर्जन कन्याओ की रक्षा कर चुकी है।

आर्यसमाज चूनामंडी की अर्ध शताब्दी

नई दिल्ली। आर्यसमाज चूनामडी की अर्धशताब्दी २४ नवम्बर से ३० नवम्बर तक मनाई जायेगी। इस अवसर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ, वेदोपदेश, आर्य महिला सम्मेलन, आर्यवीर सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन है। २९ नवम्बर शनिवार को शोभायात्रा निकलेगी।

शोभायात्रा डी०ए०-वी० स्कूल,चित्रगुप्त रोड से प्रारम्भ होगी। २९ और ३० नवम्बर का कार्यक्रम भी स्कूल के प्रांगण मे होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती भी जनता को सम्बोधित करेगे।

आर्यसमाज जवाहर नगर (पलवल) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल का चौंतीसवा वार्षिकोत्सव १४, १५, १६ नवम्बर को धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य युवक सम्मेलन तथा राष्ट्र एकता सम्मेलन इस उत्सव के विशेष आकर्षण होगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, स्वामी धर्मानन्द जी, आचार्य सत्यप्रिय जी, आचार्य देवव्रत जी शास्त्री, डा० प्रशान्त वेदालकार, प्रो० ओमवीर जी, प० सुखदेव जी शास्त्री, श्री बेगराज जी भजनोपदेशक, प० मुरारि लाल जी भजनोपदेशक और प्रो० रूपरेखा जी पधार रहे हैं।

पण्डित आर्यमुनिकृत भाष्य चाहिये

पण्डित आर्यमुनि जी कृत (ऋग्वेद के सप्तम, अष्टम मण्डलो का) संस्कृत वाला भाष्य यदि किसी के पास हो तो कृपया निम्नांकित पते पर मुझे उपयोगार्थ प्रदान करें। कार्य निपटते ही धन्यवादपूर्वक वापस भेज दूंगा। पुस्तक भेजने से पहले पत्र द्वारा सूचना दे दें तो अधिक अच्छा रहेगा।

आशा है कि जिनके पास भाष्य होगा, वे यह अनुग्रह अवश्य करेंगे।

—स्वामी ओ३म् प्रेमी चतुर्थाश्रमी,
गुरुकुल परिसर, होशंगाबाद (म० प्र०)

बार कौंसिल का समान नागरिक संहिता पर बल

नई दिल्ली। भारतीय बार कौसिल ने कहा है कि जो भी समान नागरिक सहिता बने, वह सभी भारतीयो पर समान रूप से लागू होनी चाहिए।

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को पेश की गई अपनी कार्य योजना मे कौंसिल ने कहा कि किसी भी वर्ग की कठिनाई को कम करने के लिए उचित रणनीति अपनाई जा सकती है।

कौसिल के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन मे अक्तूबर के मध्य मे कार्य योजना और सहिता का मसविदा तैयार किया गया था। सम्मेलन मे देशभर के २५० से अधिक न्यायाधीशो, वकीलो, न्यायविदो, विधिमन्त्रियो, विधायकों, कानून अधिकारियो और कानून के शिक्षको ने भाग लिया था।

समान नागरिक सहिता मे विवाह, तलाक,गुजारा भत्ता, बच्चो की जिम्मेदारी, गोद लेना और उसकी वैधता, उत्तराधिकार तथा क्रियान्वयन तन्त्र एव प्रक्रिया शामिल करने का सुझाव दिया गया।

अंसारी को बर्खास्त करने की मांग

कौसिल ने स्वैच्छिक नागरिक सहिता पर आयोजित सम्मेलन की आलोचना के कारण वन एव पर्यावरण राज्य मन्त्री जियाउर्रहमान अंसारी को बर्खास्त करने की मांग की। रजत जयंती उद्घाटन समारोह मे कौंसिल के अध्यक्ष वी सी मिश्र ने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि श्री अंसारी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक मंत्रिमडल मे स्थान पाने लायक नहीं।'

उन्होने कहा कि 'मैं श्री अंसारी से दो टूक शब्दो मे कहना चाहता हूँ कि बार कौसिल ने इस मुद्दे पर सही रुख अपनाया है और वह समान नागरिक सहिता लागू करने के लिए संघर्ष करेगी।'

आर्यसमाज अशोक विहार का उत्सव

आर्यसमाज अशोक विहार, फेज १, दिल्ली का पन्द्रहवा वार्षिकोत्सव १७ नवम्बर सोमवार से २३ नवम्बर रविवार तक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी जनता को सम्बोधित करेंगे।

आर्यसमाज तिलहर का उत्सव

आर्यसमाज तिलहर (जिला शाहजहापुर)का ६६वा वार्षिकोत्सव ७,८ और ९ नवम्बर को धूमधाम से मनाया गया। स्वामी वरुणवेश, प्रो० उत्तमचन्द शरर, श्रीमती सावित्री देवी शर्मा श्री सोहनलाल पथिक, श्री घनश्याम प्रेमी आदि वक्ता और भजनोपदेशक पधारे।

शोभायात्रा निकली और महिला सम्मेलन हुआ।

आर्यसमाज समस्तीपुर का उत्सव

आर्यसमाज रतन कालोनी, समस्तीपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव १२ से १६ नवम्बर तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। दिल्ली से स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, वाराणसी से श्री श्री सत्यदेव शास्त्री पटना से डा० देवेन्द्र सत्यार्थी आदि विद्वान पधार रहे है।

आर्यसमाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-१ का उत्सव

आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश-१ का वार्षिकोत्सव १० नवम्बर से प्रारम्भ होकर १७ नवम्बर तक चलेगा।

१६ नवम्बर (रविवार) प्रात ९ से १०॥ बजे तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का स्वागत और अभिनन्दन होगा। मुख्य स्वागत भाषण श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार का होगा। १०॥ से एक बजे तक स्वामी जी के सभापतित्व मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा।

आर्यसमाज राजौरी गार्डन में यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन मे १७ नवम्बर से २० नवम्बर तक प्रतिदिन मध्याह्न दो बजे से पांच बजे तक, २१ और २२ नवम्बर को प्रातः ६ से ८ बजे तक एव दो से पांच बजे तक व २३ नवम्बर को प्रात ८ से १२ बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। महात्मा दयानन्द ब्रह्मा होगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह में सार्वदेशिक आर्य वीर दल का प्रशंसनीय कार्य

लखनऊ। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा १७ से २० अक्तूबर तक आयोजित शताब्दी समारोह मे सारे उत्तर प्रदेश से १००० आर्य वीरो ने गणवेश मे भाग लिया। ध्वजारोहण समारोह आर्य वीरो की देखरेख मे हुआ। १८ अक्तूबर को प्रधान सञ्चालक श्री बालदिवाकर हंस, उपप्रधान सञ्चालक डा देवव्रत आचार्य, श्री बालकृष्ण आय (सञ्चालक प उत्तरप्रदेश), श्री फूलसिंह आर्य (सञ्चालक मेरठ कमिश्नरी), श्री जयनारायण आर्य (सञ्चालक आगरा कमिश्नरी) आचार्य धर्मपाल (उपसञ्चालक प० उत्तर-प्रदेश), श्री अवध बिहारी, खन्ना (सञ्चालक पूर्वी उत्तर प्रदेश) श्री वेचन-सिंह आर्य (अधिष्ठाता) और अन्य अधिकारियो एव शिक्षको के मार्गदर्शन मे शोभायात्रा का नियन्त्रण एव भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया गया।

१९ अक्टूबर को सायकाल आर्य वीर सम्मेलन प० बालदिवाकर हंस की अध्यक्षता मे हुआ, जिसका सयोजन डा देवव्रत आचार्य एव डा धर्मपाल जी ने किया। आर्य वीरो द्वारा पद प्रयाण, दण्ड-बैठक, लाठी-भाला, जूडो-कराटे, स्तूप निर्माण और जिम्नास्टिक के विविध आकर्षक प्रदर्शन किये गये, जिन्हे जनता ने बहुत सराहा। इसके अतिरिक्त समस्त सभा स्थल एव आवास स्थानो की सुरक्षा तथा भोजन वितरण व्यवस्था का समस्त उत्तरदायित्व भी आर्य वीर दल ने ही सम्भाला। २० अक्तूबर को प्रभातफेरी निकाली गई और पुन प्रागण मे अधिकारी गण का परिचय, वीर निधि का कार्य और ध्वजावतरण के साथ शिविर समाप्ति की घोषणा की गई।

अभ्यागतो ने आर्य वीरो की सेवा भावना की भूरि भूरि प्रशसा की।

पंजाब को सेना के हवाले किया जाये

आर्यसमाज हनुमान् रोड का प्रस्ताव

नई दिल्ली। आर्यसमाज हनुमान रोड की रविवार २६ अक्तूबर को हुई बैठक मे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया गया—

२५ अक्तूबर १९८६ को पजाब मे अबोहर स्थान पर आतकवादियो द्वारा निर्दोष लोगो पर व्यस्त बाजार मे गोलिया चलाई गई, जिससे सात व्यक्ति मारे गये। इसी प्रकार कुछ अन्य स्थानो पर भी आम लोगो पर आक्रमण किया गया। सरकार के बार-बार आश्वासन दिलाने के बावजूद इस प्रकार की घटनायें प्रतिदिन हो रही हैं और लोगो का सामान्य जीवन व सम्पत्ति असुरक्षित है। पजाब मे कानून और व्यवस्था बिल्कुल बिगड चुकी है, इसलिए आर्यसमाज भारत सरकार एव पजाब सरकार से माग करती है कि वह अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए आतकवादियो की गतिविधियो को समाप्त करने के लिए कडे से कडे कदम उठाये। आर्यसमाज का अनुरोध है कि पजाब को सेना के हवाले कर दिया जाये ताकि इस राज्य को बरबादी से बचाया जा सके।

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण और सेवा शिविर

श्रीमद्दयानन्द वैदिक आश्रम, ऋषि पाठशाला, रफायतपुर (मुसाया), बदायू की ओर से राजघाट नरौरा मे (गगा के किनारे) आर्य वीर दल का प्रशिक्षण और सेवा शिविर १२ नवम्बर से प्रारम्भ है। यह १८ नवम्बर तक चलेगा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

माता पिता का कर्त्तव्य कर्म

वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण वैरी हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति नहीं कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते है जैसे हंसों के बीच में बगुला। यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन, विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष २१ अंक ४१] मार्गशीर्ष कृ० ८ सं० २०४३ रविवार २३ नवम्बर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

भारत को इस्राईल से मित्रता करनी चाहिये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की सामयिक सलाह

आर्यसमाज देहरादून द्वारा पांच हजार रुपये का चैक भेंट

देहरादून, १० नवम्बर। आर्यसमाज देहरादून के १०७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित पंजाब रक्षा सम्मेलन में सभापति पद से भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि कश्मीर तथा पंजाब को बचाने का एक ही उपाय है कि संविधान में संशोधन करके समूची पश्चिमी सीमा पर पांच मील चौड़ी स्थायी सुरक्षा पट्टी बना करके वहां देश के ४१ लाख अवकाशप्राप्त सैनिकों को बसा दिया जाये और दोनों राज्यों में पांच वर्ष के लिए राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाये।

पंजाब समस्या की विस्तार से चर्चा करते हुए स्वामी जी ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि उस राज्य की शत प्रतिशत जनता की भाषा हिन्दी को उसका संविधान-सम्मत अधिकार भी नहीं दिया जा रहा। आपने कहा कि भारत ही ऐसा विचित्र देश है, जहां अल्पमत को वे अधिकार दे दिये गये हैं, जो बहुमत को प्राप्त नहीं हैं। इन परिस्थितियों में बहुसंख्यकों को जागृत होने की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि श्री बरनाला ने सुरक्षा-पट्टी बनाने का विरोध करके यह सिद्ध कर दिया है कि वे उग्रवादियों के पक्षपाती हैं, क्योंकि सुरक्षा पट्टी बनने से उग्रवादियों पर रोक लग सकती है। आर्य नेता ने यह भी कहा कि भारत की एकता को नष्ट करने का अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र चल रहा है और उसका मुकाबिला करने के लिए भारत को इस्राईल से मित्रता करनी चाहिए। उस देश ने आज तक भारत के विरोध में कोई पग नहीं उठाया।

स्वदेश के भविष्य के बारे में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि निराशा की कोई बात नहीं। वह दिन आयेगा, जब भारत का ध्वज संसार में सर्वोपरि लहरायेगा, क्योंकि यह देश "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की प्रार्थना करने वालों का देश है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सबके साथ यथायोग्य व्यवहार करना सीख जायें।

पंजाब के विस्थापित परिवारों की सहायता के लिए आर्यसमाज देहरादून ने दूसरी किस्त के रूप में स्वामी जी को पांच हजार रुपये का चैक भेंट किया। प्रथम किस्त में ६००१ रुपये दिये गये थे।

मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में ही दंगे क्यों होते हैं ?

सम्मेलन में भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस बात पर खेद और आश्चर्य व्यक्त किया कि पंजाब से बाहर के सिख यह नहीं कहते कि पंजाब में जो हो रहा है, वह गलत है। आपने कहा कि वहां दरिन्दे पुलिस का वेश बनाकर घूमते हैं।

साम्प्रदायिक दंगों के बारे में शास्त्री जी ने कहा कि इस विषय पर विचार करते समय यह अवश्य देखना होगा कि मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में ही दंगे क्यों होते हैं ?

नागपुर में आर्य सम्मेलन

स्वामी आनन्दबोध सभापति होंगे

नागपुर। यहां २१ से २३ नवम्बर तक अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सभा के तत्त्वावधान में चतुर्थ आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलन आर्यसमाज जरीपटका में होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती २१ नवम्बर शुक्रवार को प्रातः ६॥ बजे ध्वजारोहण और सम्मेलन का शुभारम्भ करेंगे। उसी दिन रात आठ बजे स्वामी जी के सभापतित्व में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा।

पंजाब को पांच वर्ष के लिए सेना के हवाले किया जाये : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

छाता, १७ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा आनन्दबोध सरस्वती ने मांग की है कि पंजाब की वर्तमान स्थिति को देखते हुए बरनाला सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति राज लागू किया जाये तथा अगले पांच वर्ष के लिए पंजाब को सेना के हवाले किया जाये।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती कल रात्रि छाता आर्यसमाज के १८वें वार्षिकोत्सव में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जब तक गुरु ग्रन्थ साहब मौजूद है, तब तक हिन्दू-सिख को कोई ताकत अलग

[शेष पृष्ठ १२ पर]

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को पेन्शन

सलाहकार समिति का गठन

आर्य जगत् मे यह समाचार प्रसन्नता के साथ सुना जायेगा कि श्री नरदेव स्नातक (पूर्व संसद् सदस्य और चैयरमेन रेलवे सर्विस कमीशन, बम्बई) को १९३८-३९ में हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह मे भाग लेने के फलस्वरूप भारत सरकार ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना के तहत पेन्शन देना स्वीकार कर लिया है। श्री नरदेव भूतपूर्व निजाम रियासत मे पांच मास और तेरह दिन कारावास मे रहे थे। गुरुकुल वृन्दावन से छात्रावस्था में श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के नायकत्व में उन्होंने कारावास भुगता था। उनकी टोली को कुल एक वर्ष सपरिश्रम कारावास की सजा मिली थी। भूतपूर्व निजाम द्वारा आर्यसमाज की मांगें स्वीकार करने के बाद उसके जन्म दिन पर १७ अगस्त ३९ को सब सत्याग्रहियों को बिना शर्त छोड़ दिया गया था।

स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९७२ व १९८० बनने के बावजूद सैंतालीस साल बाद यह पहला अवसर है, जब किसी आर्य सत्याग्रही को पेन्शन स्वीकृत हुई। भूतपूर्व या वर्तमान संसद् सदस्यों में से केवल श्री नरदेव स्नातक तथा स्वामी रामेश्वरानन्द ने उक्त आन्दोलन में कारावास भुगता था और उनके जेल के सह-निवासी को जेल के प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं। कुल मिलाकर तब २८,००० व्यक्ति जेल गये थे, जिनमें से आज मुश्किल से दस प्रतिशत जीवित हैं।

प्राप्त सूचनाओं के अनुसार सरकारी लालफीताशाही और पर्याप्त प्रचार के न होने के कारण बहुत थोड़े जीवित सत्याग्रही अपना आवेदन भेज सके हैं। सार्वदेशिक सभा के, जिसके तहत यह आन्दोलन चलाया गया था, कार्यालय में इस आशय के पत्र आ रहे हैं कि आवेदन की अन्तिम तारीख ३० जून १९८६ से पूर्व जो आवेदनपत्र राज्य सरकार के कार्यालय में नियत अवधि मे पहुँच गये, उनकी प्रतिलिपियां भारत सरकार को देर से पहुंचने के आधार पर बड़ी संख्या मे आवेदनपत्र खारिज किये जा रहे हैं। स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग में सम्भवतः आवेदनों को जानबूझ कर देर में स्वीकार किया गया है और उसे आधार बनाकर आवेदन खारिज किये जा रहे हैं। यदि इसमे डाक विभाग की गलती होती तो वे आवेदनपत्र राज्य सरकार के कार्यालय मे नियत समय पर कैसे पहुँच जाते ?

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस सम्बन्ध में गृहमन्त्री बूटासिंह को पत्र भेजकर इन अनियमितताओं की ओर सरकार का ध्यान खींचा है। इसके अतिरिक्त स्वाधीनता सेनानी पेन्शन प्रभाग का ध्यान भी इस ओर खींचा गया है।

ज्ञातव्य है कि इस प्रकार के स्वाधीनता सेनानियों को सन् १९८२ से पेन्शन दी जाने की व्यवस्था है। पांच मास से कम कारावास भुगतने वालों को राज्य सरकारें अपने नियमानुसार पेन्शन देने की व्यवस्था करेंगी, जबकि केन्द्र से पेन्शन पाने वालों को राज्य सरकारें भी पेन्शन देंगी।

सलाहकार समिति का गठन

ताजा सूचना के अनुसार भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रस्तावित सलाहकार समिति के गठन को सिद्धान्ततः स्वीकृत कर लिया है और सभा कार्यालय से सम्बन्धित सदस्यों के पते मांगे गये हैं। प्रस्तावित समिति के सदस्यो के नाम ये हैं—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव (वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक सभा), श्री रामचन्द्रराव कल्याणी (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश) प्रो० शेरसिंह (उपप्रधान, सार्वदेशिक सभा), श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा), श्री शिवकुमार शास्त्री (भूतपूर्व संसद् सदस्य और श्री रणवीरसिंह (हरयाणा के भूतपूर्व संसद् सदस्य)। मनोनीत सदस्यों से अविलम्ब सम्पर्क स्थापित कर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को पेन्शन देने की कार्रवाई प्रारम्भ की जा रही है।

हरयाणा में भी मान्यता

हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौधरी बंसीलाल ने १६ नवम्बर को झज्जर (जिला रोहतक) मे एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए घोषणा की कि हैदराबाद निजाम के विरुद्ध सत्याग्रह करने वाले राज्य के नागरिकों को स्वतन्त्रता सेनानी माना जायेगा और उन्हें पेन्शन दी जायेगी।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध असह्य : आर्यसमाज बीकानेर का प्रस्ताव

बीकानेर। आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग की अन्तरंग सभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया है कि देश के संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया, किन्तु जब तक भारत में उसका प्रचार-प्रसार न हो जाये, तब तक अंग्रेजी चालू रखने का निर्णय लेकर इसे उपयुक्त स्थान और गरिमा प्रदान करने का अवसर दिया था पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के चालीस वर्षों की लम्बी अवधि मे उसे वह सुयोग तो मिला नहीं बल्कि उल्टा विरोध, अनादर और घृणा प्रस्फुटित हो रही है, जो देश को लज्जित करने वाली है। तमिलनाडु मे १७ नवम्बर से भारतीय संविधान के उस अनुच्छेद की प्रतियां जलाने और आन्दोलनको व्यापक बनाने की घोषणा की गई है, जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करता है। हिन्दी नाम पट्टों को मिटाने का अभियान जोरों पर है। ला कालेज के छात्र तो इसी बात के लिए प्रधानमन्त्री का पुतला जलाने और तोड़ फोड़ व भड़काने वाले भाषणों द्वारा वातावरण को गरमाने निकल पड़े। पुलिस हस्तक्षेप से वैसा हो नहीं पाया लेकिन उत्तेजना अवश्य है और कभी भी अपना करिश्मा दिखा सकती है।

आर्यसमाज इस दुर्भाग्यपूर्ण असन्तोष को शीघ्र मिटाने का आग्रहपूर्वक अनुरोध करता है।

स्वामी धर्मानन्द को सहयोग देने की अपील

परोपकारिणी सभा, अजमेर के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती, तपोवन देहरादून के महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी और वैदिक यतिमण्डल, दयानन्द मठ, दीनानगर के प्रधान स्वामी सर्वानन्द सरस्वती ने आर्य जनता से अपील की है कि वह गुरुकुल आमसेना के आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी की सहायता करके यश और पुण्य के भागी बनें।

आर्य जनता भली भांति जानती है कि स्वामी जी उड़ीसा में शुद्धि का कार्य कर रहे हैं। धन भेजने का पता यह है—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल आमसेना, जिला कालाहांडी, उड़ीसा। बैंक ड्राफ्ट के लिए पता है—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

स्टेट बैंक अथवा सेंट्रल बैंक, खरियार रोड आमसेना।

पुरोहित का सुपुत्र प्रथम आया

करंजा (जिला अकोला)। स्थानीय आर्यसमाज के पुरोहित ठाकुर रामसिंह आर्य के सुपुत्र शशिकान्त ठाकुर ने महाराष्ट्र सरकार के वन विभाग द्वारा वन्य जीव सप्ताह में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

ठाकुर रामसिंह आर्य पिछले ३५ वर्ष से आर्यसमाज के पुरोहित हैं।

धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी पुरस्कृत

प० धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी को राजौरी गार्डन, दिल्ली के गुलशनराय जी ने "यज्ञ और प्रार्थना से मानसिक रोगों का निवारण" नामक ग्रन्थ पर दस हजार रुपयों का पुरस्कार भेंट किया है।

सम्पादकीय

पशुबलि : धर्म के नाम पर अधार्मिक प्रथा

धर्म की आधार संहिता मनुष्य के मन में अपने-अपने मन्तव्यों के आधार पर निहित है। जिस हिन्दू धर्म का नारा है "अहिंसा परमो धर्मः" उसी धर्म के अनुयायियों का यह अन्धविश्वास है कि यदि देवी या देवता को प्रसन्न करने के लिए किसी पशु या पक्षी की बलि न दी तो देवता असन्तुष्ट हो जायेंगे।

महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी से कुछ काल पूर्व यज्ञ-पूजन के नाम पर पशुओं को मारकर उनके मांस की आहुति दी जाती थी, जिसका विरोध बुद्धिजीवी वर्ग ने किया है। धर्म के नाम पर प्रचलित प्रथाओं से आज भी मानव बधा हुआ है—लकीर का फकीर बना हुआ है। उसे विवेक से काम लेने की न इच्छा है और न विचारने की फ़ुरसत है। धर्म का स्थान कुप्रथाओं ने ले लिया है।

यदि मुसलमानों ने जानवर को हलाल करके उसका मांस न पकाया तो इनका धर्म खतरे में और सरदारों-सिक्खों ने यदि बकरे का झटका न किया तो इनका धर्म खतरे में पड़ गया। ठीक इसी प्रकार हिन्दुओं में भी विकृत मान्यतायें हैं, जो परम्परा से चली आ रही हैं। देवी-देवताओं के नाम पर बलि दी जाती है। ये प्रथायें सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी रूप में जीवित हैं और विधिवत् चल रही हैं।

भारतीय जन मानस गोरक्षा की मांग करके सम्पूर्ण गोवंश की हत्या रुकवाने के लिए कृतसंकल्प है। परन्तु गोमांस खाने वाले विकृत मान्यताओं के प्रमाण देकर उनकी हत्या करने का वैधानिक अधिकार मांग रहे हैं और इस प्रकार गोरक्षा का अंशतः विरोध करते हैं।

हमारी मान्यताओं पर एक प्रश्न चिह्न है, जिस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। यदि ऐसा न किया गया तो धर्म का विकृत स्वरूप हमारे धर्म और इसके मानने वालों को खा जायेगा।

हिन्दूबहुल भारतकी भांति नेपालभी एक हिन्दूराज्य है। वहां भी भगवान् व धर्म के नाम पर पशुबलि दी जाती है। अभी विगत समय में इस बलि को जो धार्मिक रूप पढ़ने को मिला वह बहुत घिनौना है। हिन्दू समाज के आचार्य, विद्वान्, सन्त और महात्मा जरा गम्भीरता से विचार करें कि क्या यही हिन्दू धर्म का सच्चा स्वरूप है।

नेपाल मे पशुबलि की प्रथा (भारत की भांति) अति प्राचीन है। वहां के हिन्दू में चाहे वह टैक्सी वाला, सैनिक, गृहिणी, किसान अथवा लुहार हो, यहां तक कि नेपाल एयरलाइन्स के लोगों में भी यह दृढ़ धारणा है कि पशुबलि के बाद घर व सामान पर पशु के रक्त का छिड़काव शुभ होता है।

नेपाल विश्व का एकमात्र हिन्दू राज्य है। वहां भी पशु बलि दी जाती है। वहा का निवासी पशु के रक्त से अपने घर व सामान को अभिषिक्त कर उसे पवित्र करता है, ताकि कोई अनिष्ट न हो जाये।

श्रद्धालु इस अवसर पर दुर्गा की पूजा करते हैं, जो शत्रु से भक्त की रक्षा करती है। विमान के पहियों पर रक्त इसलिए छिड़कते हैं कि कोई दुर्घटना न हो और यात्रियों का अहित होकर रक्त न बहे।

नेपाल एयरलाइन्स की स्थापना २७ वर्ष पूर्व हुई थी। तब से दुर्गा के समक्ष बकरे की बलि देकर उसके खून का छिड़काव विमान के पहियों पर किया जाता है। सैनिक अपने हथियारों वास्तुकार अपने औजारों गृहिणी अपने घर और ड्राइवर अपनी टैक्सी के लिए आशीर्वाद मांगते हैं। इनका यह दृढ़ विश्वास है कि ऐसा करने से वर्ष भर दुर्घटनाओं से रक्षा होगी।

पशुओ की यह बलि अंधेरी रात्रि विशेष कर मध्य रात्रि मे दी जाती है और इसके लिए अक्टूबर के महीने में अष्टमी का दिन शुभ माना जाता है।

जिन पांच प्रकार के पशुओं की बलि दी जाती है, वे मनुष्य के अवाञ्छनीय गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे—

भैंसा क्रोध का प्रतीक है, बकरा वासना का, भेड़ मूर्खता की, मुर्गा भीरुता का और बत्तख उदासीनता की प्रतीक है।

इस वर्ष ११ अक्टूबर को पांच हजार से अधिक पशुओं की बलि चढ़ाई गई। इनमे से कुछ पशु भारत व तिब्बत से मंगाये गये।

देश का मुख्य दशायन समारोह काठमण्डू के प्राचीन हनुमान् मन्दिर में मनाया जाता है। मन्त्रोच्चारण के साथ ये बलिया दी जाती है। श्रद्धालु जन यह सब देखते रहते हैं। वहा के सैनिकों मे भी यह विश्वास है कि—

नेपाली सेना की रक्षा इसी से हो सकती है। सैनिक प्रार्थना करते हैं कि दुर्गा हमे शक्ति दे कि हम शत्रुओं को परास्त कर सकें।

कुछ परिवार अपनी भलाई और बीमारियां दूर करने के लिए बलि देते है। पशु बलि पर लोगों की अटूट श्रद्धा है। इससे पशुबलि के अवसरों पर पशुओं के व्यापारी बहुत लाभ उठाते हैं।

मौत से कौन नही डरता ? चालाक पुजारी श्रद्धालु भक्त की ओर से श्लोक पढ़ते हुए पशु से पूछते हैं कि क्या तू इस जीवन से छुटकारा पाकर नया जीवन चाहता है ?

पशु पर गंगा का जल छिड़का जाता है। जल के पड़ते ही भीगने से वह पशु अपने शरीर को हिलाता है। उसके शरीर हिलाते ही पुजारी मान लेते हैं कि पशु ने अपने इस जीवन से छुटकारा पाने की हामी भर ली है और उसके बाद पशु का सिर खुखरी से अलग कर दिया जाता है।

भारत मे भी काली मन्दिर कलकत्ता और अन्य भारतीय क्षेत्रों में यह मान्यता प्राचीन काल से प्रचलित है। समय-समय पर महापुरुषों के आगमन से इसमे काफी सुधार हुआ है पर पुराण-पन्थियों की गलत धारणाओं के कारण धर्म के नाम पर ये सब विधि-विधान विद्यमान हैं।

इन्हें दूर न करके इन्हें बढ़ावा ही दिया जाता है। फिर सही धर्म की मान्यता और विकृत धर्म की मान्यता में क्या अन्तर है ? फिर अहिंसा परमो धर्मः का क्या अर्थ रहा ?

ऋषि दयानन्द के प्रशंसक प्रो० मोनियर विलियम्स

-डा० भवानीलाल भारतीय-

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में स्थापित संस्कृत की बोडेन पीठ के प्रोफेसर एम० मोनियर विलियम्स की स्वामी दयानन्द से बम्बई में भेंट हुई थी। उन्होंने इसका विवरण स्वलिखित पुस्तक Brahminism and Hinduicm [लन्दन से प्रकाशित चतुर्थ संस्करण १८९१ पृ० ५२९-३१] में विस्तार से दिया है। मोनियर विलियम्स ने तीन बार भारत की यात्रा की थी और स्वामी जी से उनकी यह भेंट उनकी प्रथम भारत यात्रा [१८७५-७६] के अवसर पर हुई थी। मैंने "नव जागरण के पुरोधा" में प्रो० विलियम्स और स्वामी जी की भेंट का उल्लेख इन शब्दों में किया है—"५ मार्च १८७६ को आर्य-समाज बम्बई के तत्वावधान में "वेदों की श्रेष्ठता तथा पवित्रता" विषय पर उनका [स्वामी जी का] एक व्याख्यान हुआ। इस व्याख्यान में संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० मोनियर विलियम्स तथा बम्बई के जिलाधीश श्री शेफर्ड को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। यद्यपि व्याख्यान हिन्दी में था, किन्तु इसमें संस्कृत शब्द-बहुल भाषा का प्रयोग होने के कारण प्रो० विलियम्स को समझने में कठिनाई नहीं हुई। व्याख्यान के पश्चात् प्रो० विलियम्स से स्वामी जी का देर तक संस्कृत सम्भाषण होता रहा। प्रोफेसर महोदय ने स्वामी जी के उद्देश्यों की प्रशंसा की। उन्हें आर्यसमाज के नियम तथा सद्यः— प्रकाशित अन्य साहित्य भी भेंट किया गया।" [पृ० २६१]इस भेंट के प्रसंग में प्रो० विलियम्स ने स्वामी जी से धर्म की परिभाषा पूछी थी। इसके उत्तर में स्वामी जी ने कहा था कि जो सत्य एवं न्याय से युक्त पक्षपात रहित तथा वेदाज्ञा के अनुकूल कर्त्तव्य कर्म है, वही उनके विचार से धर्म है। मोनियर विलियम्स ने धर्म की इस मौलिक परिभाषा को सुनकर प्रसन्नता प्रकट की थी।

प्रो० विलियम्स ने स्वामी दयानन्द के शिष्य प० श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनकी संस्कृत भाषा की योग्यता देखकर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में आकर उनके शोध सहायक के रूप में कार्य करने हेतु आमन्त्रित किया था। तदनुसार श्यामजी १८७९ में इंग्लैण्ड गये और उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में रहकर बेलाइल कालेज में प्रवेश लिया तथा संस्कृत का अध्यापन भी किया। स्वामी दयानन्द ने इंग्लैण्ड में अध्ययनरत श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को संस्कृत भाषा में एक पत्र आषाढ़ शुक्ला ६, सं० १९३७ विक्रमी को लिखा था, जिसमें उन्होने प्रो० विलियम्स को अपना नमस्ते निवेदन करते हुए उनके वेदादि शास्त्र विषयक अभिप्राय को जानने की जानने की इच्छा प्रकट की थी। पत्र में प्रो० विलियम्स के लिए प्रियवर विशेषण का प्रयोग दोनों के पारस्पारिक सौहार्द और स्नेह सम्बन्ध का सूचक है। जब श्यामजी ने यह पत्र विलियम्स को दिखाया तो वे स्वामीजी द्वारा पत्र में प्रयुक्त सरस, सुबोध और ललित संस्कृत को देखकर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने इसका अंग्रेजी अनुवाद एथिनियम नामक पत्र के अक्तूबर १८८० के अंक में प्रकाशित कराया। इसका उल्लेख स्वयं श्याम जी ने अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य विद्या परिषद् के बर्लिन अधिवेशन में पठित अपने एक शोध निबन्ध संस्कृत एक जीवित भाषा [Sanskrit A living languagc] में किया था।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की जिस बोडेन चेयर [प्रोफेसरशिप] पर प्रो० विलियम्स की १८६० में नियुक्ति हुई थी, उसकी स्थापना लेफ्टिनेंट-कर्नल बोडेन नामक एक अंग्रेज सेनाधिकारी ने की थी, जो बम्बई की हिन्दुस्तानी फौज में उच्च पद पर रह चुका था। इस पीठ का मुख्य प्रयोजन तो बाइबिल तथा अन्य ईसाई ग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद कराना ही था, जिससे भारतवासी ईसाइयत की ओर उन्मुख हो सकें। प्रो० मोनियर विलियम्स के पहले एच० एच० विल्सन इस पीठ के अध्यक्ष रह चुके थे।

प्रो० मोनियर विलियम्स द्वारा निर्मित संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी और इण्डियन विजडम प्रख्यात ग्रन्थ हैं। इनके अतिरिक्त उन्होने हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म पर विस्तृत ग्रन्थ लिखे। उनका निधन ११ अप्रैल १८९९ को दक्षिणी फ्रांस के केन्ने नामक स्थान पर हुआ।

"साईं बाबा के पास दैवी शक्ति नहीं : वे केवल जादूगर हैं"

जादूगर विलियम जबाबो के अनुसार, "विख्यात दिव्य पुरुष भगवान् साईं बाबा के पास कोई दैवी शक्ति नहीं है। वे लोगों को महान् जादू का करतब दिखाते हैं।"

'अपना उत्सव' में भाग लेने राजधानी आये ८६-वर्षीय जादूगर जबाबो ने एक विशेष भेंट में बताया कि "कोई पांच-छह साल पहले साईं बाबा से मिलने बंगलौर गया था। बहुत मुश्किल से उनसे मैं मिलने का समय मिला। मैं जादूगर बनकर नहीं, एक भक्त की तरह उनके सामने जा बैठा। उन्होंने मेरी ओर देखा और हवा में अपना हाथ घुमाकर भभूत मेरे हाथ में रख दी। मैंने भी भभूत वाला हाथ हवा में घुमाया और एक लड्डू उनके सामने कर दिया। वे चौंके, मगर उन्हें यह समझते देर न लगी कि मैं भी एक जादूगर हूँ।"

"इसके बाद मैंने उनसे कई सवाल पूछे और उन्होंने बताया कि उन्होंने खुद अपने नाम के आगे भगवान् नहीं जोड़ा है। उनके मां-बाप ने ही उनका नाम भगवान्दास रखा था और बेरोजगारी ने उन्हें साईं बाबा बना दिया।"

जबाबो उन जादूगरों में हैं, जिन्होंने पण्डित जवाहरलाल नेहरू और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सामने हाथ की सफाई दिखाई है। वे कहते हैं, "दिल्ली में नेहरू जी के सामने मैंने सफेद हाथी गायब कर दिया था।"

उन्होंने बताया कि मेरा जादू देखने के बाद नेहरूजी कूदकर मंच पर आ गये थे। उन्होंने मुझसे कहा—मुझे भी जादू सिखाओ। पण्डित जी को इतने नजदीक पाकर मैं डर गया। उन्होंने आते ही कहा कि "बहुत-से विदेशी मुझसे जादू सिखाने को कहते हैं। मुझे भी जादू सिखाओ। मैंने जादू के दो-चार करतब पण्डित जी को सिखाये भी।

सरस्वती के अनन्य उपासक प्रोफेसर हरिदत्त वेदालंकार

—विराज वेदालंकार—

२१ अक्तूबर १९८९ को रात साढ़े नौ बजे प्रोफेसर हरिदत्त वेदालंकार का देहावसान हो गया। इससे चार दिन पहले १७ अक्तूबर को उन्होंने अपना सत्तरवां जन्मदिन मनाया था। उस समय किसे मालूम था कि जीवन की सांझ इतनी निकट आ पहुंची है।

तीन सप्ताह पहले उनकी पौरुष ग्रन्थि (प्रोस्टेट ग्लैंड) का आपरेशन हुआ था। आपरेशन ठीक हो गया था। उसमें कोई उलझन खड़ी नहीं हुई। जब वे अस्पताल में ही थे, तब उन्हें दो बार दिल का दौरा पड़ा। परन्तु उससे किसी को विपत्ति की आशंका नहीं हुई। वे स्वयं उत्साह से सब मित्रों से कहते थे कि "मैं बिल्कुल स्वस्थ होकर दो-चार दिन में घर पहुंच रहा हूं। आपरेशन के कारण 'आर्यसमाज का इतिहास' लिखने के कार्य में जो विलम्ब होना था, वह हो गया, अब और विलम्ब नहीं होगा।" इन दिनों वे 'आर्यसमाज का इतिहास' लिखने में व्यस्त थे, जो आठ भागों में पूरा होना है; जिनमें से पांच भाग लिखे जा चुके और प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रो० हरिदत्त प्रकाण्ड विद्वान् और सिद्धहस्त लेखक थे। उनका अध्ययन विस्तृत था। किताबी कीड़ा कोई होता हो, तो वे थे। सुबह से शाम और शाम से सुबह, पढ़ते-पढ़ते वे थकते न थे। उनकी स्मृति विलक्षण थी। पढ़ी हुई चीजें उन्हें सदा उपस्थित रहती थीं। इससे भी बढ़कर थी उनकी विवेचन शैली। कठिन से कठिन विषय को स्वयं भली भांति समझ कर उसे वे सरल और सुबोध भाषा में श्रोता या पाठक के सम्मुख प्रस्तुत कर देते थे। इन विशेषताओं के कारण हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वानों और लेखकों में उनकी गणना होती थी।

प्रो० हरिदत्त जी का जन्म १७ अक्तूबर १९१६ को जम्मू में हुआ था। उनके पिता श्री नतरचन्द निष्ठावान् आर्यसमाजी थे। उन्होंने हरिदत्त जी को पढ़ने के लिए गुरुकुल मुल्तान भेज दिया गुरुकुल मुल्तान गुरुकुल कांगड़ी की ही एक शाखा था। सन् १९३८ में हरिदत्त जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करके वेदालंकार उपाधि प्राप्त की। वे अपनी कक्षा में सदा प्रथम रहते थे। उस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने स्वर्गीय श्री गोविन्दवल्लभ पन्त आये थे। श्री हरिदत्त जी को विभिन्न विषयों में सर्वप्रथम रहने के कारण छह स्वर्ण पदक मिले थे। पदक देते समय पन्त जी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा था— "क्या सारे पदक यह अकेला ही स्नातक ले जायेगा?"

बात आश्चर्य की होने पर भी आश्चर्य की नहीं थी, क्योंकि आगे चल कर प्रो० हरिदत्त जी ने अपने लिखे ग्रन्थों पर अनेक बड़े-बड़े पुरस्कार प्राप्त किये।

प्रो० हरिदत्त जी की यह सफलता उनके तपोमय जीवन का परिणाम थी। स्नातक होने के बाद वे सन् १९४० में गुरुकुल कांगड़ी में ही अध्यापन कार्य करने लगे थे। उन दिनों श्री देव शर्मा जी, जो बाद में स्वामी अभयदेव बने; गुरुकुल के आचार्य थे। उन्होंने श्री हरिदत्त जी को वर्धा शिक्षा योजना का प्रशिक्षण लेने भेजा और वापस आने पर उन्हें २५ रुपये मासिक पर अध्यापक नियुक्त कर लिया। उस सस्ते समय में भी स्नातक का उचित वेतन ४० रुपये माना जाता था। पर आदर्शवादी अभयदेव जी ने २५ रुपये का आग्रह किया और आदर्शवादी हरिदत्त जी ने उसे स्वीकार कर लिया। गुरुकुल के अध्यापकों में काफी चर्चा रही कि इस तरह कम वेतन स्वीकार करके स्नातकों का बाजार भाव गिराना उचित नहीं, परन्तु हरिदत्त जी ने अभयदेव जी की (कुलमाता का ऋण उतारने की) युक्ति मान ली।

वेतन की यह स्थिति देर तक नहीं रही। शीघ्र ही उन्हें महाविद्यालय (कालेज) की कक्षाओं को पढ़ाने का का काम मिल गया और वेतन भी बढ़ कर ७५ रुपये प्रतिमास हो गया। उसके बाद उन्होंने कभी वेतन के विषय में विचार नहीं किया।

सन् १९४० से १९६९ तक प्रो० हरिदत्त जी गुरुकुल में प्राध्यापक रहे। सन् १९४६ तक तुलनात्मक धर्मशास्त्र और उसके पश्चात् इतिहास पढ़ाते रहे। बाद में जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को बाकायदा विश्वविद्यालय मान लिया और आर्थिक सहायता देनी शुरू कर दी, तब वे इतिहास विभाग के अध्यक्ष बन गये। पुरातत्त्व में भी उनकी रुचि थी।

सौभाग्य से उनकी पत्नी श्रीमती सुधामयी भी उन्हीं के समान अध्यवसायी और विद्याव्यसनी थीं। अनेक ग्रन्थ तो इस प्रकार लिखे गये कि प्रो० हरिदत्त जी बोलते गये और सुधा जी लिखती गईं।

गुरुकुल संग्रहालय के वे प्रथम अध्यक्ष थे और इस पुरातत्त्व संग्रहालय के निर्माण का सर्वाधिक श्रेय उन्हीं को है। इस संग्रहालय की पुरातत्त्व के विद्वानों ने बहुत प्रशंसा की थी।

सन् १९४८ तक गुरुकुल कांगड़ी द्वारा दी गई वेदालंकार, विद्यालंकार आदि उपाधियों को सरकार मान्यता नहीं देती थी। सरकार की दृष्टि में स्नातक मैट्रिक पास भी नहीं माने जाते थे। परन्तु देश के स्वाधीन होने पर आगरा विश्वविद्यालय ने गुरुकुल की स्नातक परीक्षा को बी० ए० के समकक्ष माना और स्नातकों को सीधा एम० ए० परीक्षा में बैठने का अधिकार दिया। इस सुविधा का लाभ उठा कर जिन स्नातकों ने प्रथम श्रेणी में एम० ए० परीक्षा पास की, उनमें प्रो० हरिदत्त जी भी थे।

साधनामय जीवन

गुरुकुल कांगड़ी में बिताये गये ये २९ वर्ष उनके साधना और तपस्या के वर्ष थे। जेल-जीवन भी इससे क्या अधिक नियमित होता होगा? अपनी साधना के लिए उन्होंने अपनी दिनचर्या को कठोरतापूर्वक नियमित कर लिया था। पढ़ने-पढ़ाने और लिखने में उन्हें आनन्द आता था। इसके लिए वे रात में आठ बजे सो जाते, सवेरे तीन बजे उठ कर लिखना शुरू करते, छह बजे प्रातः भ्रमण के लिए निकल जाते और नहर के किनारे चार-पांच किलोमीटर का भ्रमण करके लौटते। उसके बाद अध्यापन, दोपहर को भोजन, कुछ देर विश्राम के बाद अध्ययन चलता। गर्मियों में सायंकाल चार बजे तैरने के लिए अवश्य जाते। सवेरे लिखना, सैर को जाना और शाम को तैरना उनके पक्के नियम थे। इस सैर और तैरने के कारण उनका स्वास्थ्य सदा ठीक रहा और कार्यशक्ति अक्षुण्ण बनी रही।

सन् १९६९ में जब पन्तनगर के गोविन्दवल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में अनुवाद एवं प्रकाशन निदेशालय खोला गया, तब आपको उसके निदेशक पद के लिए चुना गया। वहां आपने दस वर्ष तक कार्य किया। आपके निर्देशन में लगभग पचास पुस्तकों का अनुवाद हुआ। उल्लेखनीय बात यह है कि यहां जिन पुस्तकों का अनुवाद हुआ, वे विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित थीं, जिनका हरिदत्त जी को पहले कभी अध्ययन करने का अवसर नहीं मिला था। फिर भी उन्होंने इस कार्य को भली भांति निबाहा। सन् १९७६ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने उन्हें विद्यामार्तण्ड की मानद उपाधि प्रदान की।

सन् १९७९ में आप दिल्ली आ गये और पंचायत परिषद् में तीन वर्ष तक कार्यकारी सचिव के रूप में कार्य करते रहे।

सन् १९८१ में पत्नी सुधामयी जी के स्वर्गवास से उन्हें बहुत धक्का लगा। लेखन कार्य में भी कुछ शिथिलता आई। परन्तु उमा और उदिता, दो पुत्रियों और पुत्र उदयन के प्रयत्न से घर की व्यवस्था फिर सम्भल गई। तभी 'आर्यसमाज का इतिहास' लिखने की योजना सामने आई और वे नये उत्साह से भर उठे। जगह-जगह जाकर तथा पत्रव्यवहार द्वारा उन्होंने आवश्यक सामग्री एकत्र की और प्रामाणिक इतिहास तैयार किया। अब तक इस इतिहास के जो भाग छपे हैं, उनकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है।

सौम्य व्यक्तित्व

प्रो० हरिदत्त जी सौम्य, हंसमुख, सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। अपने निश्छल व्यवहार से वे लोगों को अपना बना लेते थे। वे दूसरों की सहायता करने को सदा उद्यत रहते थे, इसलिए आवश्यकता पड़ने पर उन्हें भी सहायकों की कमी नहीं रहती थी।

उनकी महत्त्वाकांक्षाएं केवल अध्ययन और लेखन के क्षेत्र तक ही सीमित थीं। इस दिशा में वे यथासम्भव अधिक से अधिक कार्य करना चाहते थे, परन्तु किसी अन्य क्षेत्र में प्रवेश करके वे अपनी प्रतिभा और शक्ति का अपव्यय करना नहीं चाहते थे। उनकी यह एकाग्रता उनकी सफलता का प्रमुख कारण बनी।

सरस्वती के उपासक और विद्वान् होते हुए भी वे दब्बू या भीरु नहीं थे। उनमें बहुत स्वाभिमान था। ऐसे भी समय आये, जब गुरुकुल का अधिकारी वर्ग उनके विरोधी गुट का बन गया। इन अधिकारियों ने कई बार उन पर अनुचित दबाव डालने की चेष्टा की, परन्तु प्रो० हरिदत्त उनसे कभी दबे नहीं। उन्होंने डट कर विरोध किया। आवश्यकता पड़ने पर न्यायालय में भी गये और उन्हें कभी पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ा।

ऐसे साधनामय, कर्मठ, यशस्वी और सार्थक जीवन से बढ़ कर व्यक्ति और किस वस्तु की कामना कर सकता है? ●

तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी-२

– भोलानाथ दिलावरी –

सर्वप्रथम आपने फतेहगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना की। तीन वर्ष में ही फतेहगढ़ के आसपास देहाती कस्बों जैसे रमदास, खाल, घनी के बाजार, डेरा बाबा नानक, धर्मकोट, रंधावा आदि में आर्यसमाज की धूम मचा दी।.

अमृतसर में स्थायी निवास

सन् १९०८ के पश्चात् आप अपनी पत्नी और पुत्री सहित फतेहगढ़ से अमृतसर आ गये। (अब तक आपका सम्बन्ध लाहौर के आर्य नेताओं से भी हो चुका था।) यहां आप आर्य युवक समाज के मन्त्री निर्वाचित हो गये। इसी निमित्त आपका उत्साही और ध्येयनिष्ठ युवकों से सम्बन्ध हो गया। इनमें विशेषतः उल्लेखनीय ज्ञानी पिण्डीदास, लाला किशनचन्द भाटिया, पं० रामनारायण शर्मा, चौधरी हंसराज दत्त, श्री मुन्नीलाल जी खन्ना, डा० मनोहरलाल जी चोपड़ा, श्री भक्त दुर्गादास जी, श्री लालचन्द गुप्त, पं० रुद्रदत्त (प्रधान आर्यसमाज लक्ष्मणसर), श्री धर्मपाल बी. ए. (भूतपूर्व प्रधान केन्द्रीय सभा, अमृतसर), लाला रामगोपाल जी शालवाले (जो वर्तमान में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि स॰ के प्रधान हैं), श्री लालचन्द, श्री रूपलाल मेहरा, पं० काहनचन्द शर्मा, श्री रोशनलाल बहल (महामन्त्री, धर्म प्रचार समिति, अमृतसर) पं० देवराज, पं० साधुराम एम०ए० आदि अनेक सज्जनों से सम्बन्ध हुआ।

अमृतसर में आर्यसमाज की धूम

आर्य युवक समाजों के एक सत्संगों के आवश्यक अंग के रूप में वाद-विवाद सभा बना दी गई, जिसमें विभिन्न मतमतान्तरों के प्रतिनिधि भाग लिया करते थे—जैसे ईसाई पादरी, मुसलमान मौलवी, पौराणिक पण्डित इत्यादि। वाद-विवाद के पश्चात् आचार्य देवप्रकाशजी का वाद-विवाद सम्बन्धी व्याख्यान हुआ करता था और विपक्ष के शेष बचे प्रश्नों का समाधान कर दिया जाता था। इन्ही दिनों अमृतसर मे शास्त्रार्थों की धूम मच गई। अहमदियों, ईसाइयों, पौराणिको तथा वाममार्गियों के साथ शास्त्रार्थ हुए, जिनमें विपक्षियों को सदा मात खानी पड़ती थी।

आर्य युवक समाज के वार्षिक उत्सवों पर भारत भर से उपदेशक, साधु, संन्यासी तथा शास्त्रार्थमहारथी पधारा करते थे। युवकों मे बहुत उत्साह (विशेष कर देवप्रकाश जी में) हुआ करता था। उत्सवो की समाप्ति पर भी अमृतसर के विभिन्न बाजारों और चौराहों पर प्रचार कार्य चलते रहते थे। इन उत्सवों की शोभा-यात्रा पर वाल्मीकि तथा अन्य पिछड़ी जाति के भाइयों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता था। ऋषि लंगर में उनके साथ खान-पान का भी सम्मिलित आयोजन होता था। इस प्रकार अमृतसर में आचार्य देवप्रकाश जी ने धूम मचा रखी थी। सारा वातावरण आर्यमय हो जाया करता था।

दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायता

प्रथम विश्व महायुद्ध की समाप्ति पर खाद्यान्न के मूल्यों में भारी वृद्धि हो चुकी थी, जिसके कारण साधारण गृहस्थी के परिवार पालन की समस्या काफी जटिल हो गई। आटा एक रुपये का तीन सेर बिकने लगा। चारों तरफ हाहाकार मच गया। उस समय आचार्य देवप्रकाश जी आर्य युवक समाज के मन्त्री थे। आपकी देखरेख में धनवानों से दान लेकर ६-६ सेर की थैलियां भर कर सायंकाल रेढ़ियों पर लाद कर अमृतसर के गली-कूचों में वितरण किया जाता। यह कार्य कई बार उत्साही आर्य युवकों को आधी रात तक करना पड़ता था। इस प्रकार हजारों मन आटा देवप्रकाश जी के परिश्रम से लोगों में बांटा जाता।

श्रीमद्दयानन्द निःशुल्क अस्पताल

सन् १९१८ में प्रथम विश्व महायुद्ध की समाप्ति पर जब संसार भर का वायुमण्डल विषाक्त गैसों से दूषित हो गया तथा सब जगह महामारी का भीषण प्रकोप होने लगा तब अमृतसर पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। ऐसे समय में निष्काम तपस्वी आचार्य देवप्रकाश जी के परिश्रम से "आर्य सर्वहितकारी सभा" की नींव रखी गई और इसी की ओर से कटड़ा सफेद में "श्रीमद्दयानन्द निःशुल्क अस्पताल" खोला गया। नित्यप्रति हजारों रोगियों का इलाज होने लगा। इसमें आर्ययुवक समाज के सदस्य आधी-आधी रात तक दवाओं की पुड़ियां बांधते रहते थे।

आचार्य जी का तपस्वी स्वभाव

इसी काल में नई फसल के दिनों में हमारे आचार्य जी और ज्ञानी पिण्डीदास जी, जो उन दिनों आर्य युवक समाज के प्रधान थे, प्रायः अमृतसर जिले के देहात से अन्न संग्रह करने आया करते थे। ये मई-जून के प्रचण्ड गरमी के दिन होते हैं। परम तपस्वी आचार्य जी द्वन्द्व-सहिष्णु थे। न उन्हें धूप सताती, न भूख, प्यास अथवा थकावट। आयु भर उन्होंने चाय कभी नहीं पी। विलायती घी का तो वे नाम भी सुनना पसन्द नहीं करते थे—भले ही उन्हें सूखी रोटी खानी पड़े अथवा उपवास ही करना पड़े।

मार्शल ला पीड़ितों की सहायता

१३ अप्रैल सन् १९१९ (बैसाखी) को अमृतसर में जलियांवाला बागमें गोली-कांड हुआ था, जिसमें जनरल डायर द्वारा की गई गोलियों की वर्षा से लगभग १५०० व्यक्ति मारे गये और ३-४ हजार से अधिक घायल हुए। पंजाब भर में मार्शल ला लगा दिया गया। इससे विशेष रूप से अमृतसर की जनता अत्यन्त भयभीत थी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने पं० मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में जांच कमेटी तो नियुक्त कर दी थी परन्तु डर के कारण कोई साक्षी देने तक को तैयार न था। देहात में आतंक और भी अधिक था। ऐसे भयानक समय में अपनी जान खतरे में डालकर हमारे वीर चरित नायक प्रतिदिन ३०-३० मील जून-जुलाई की कड़कती धूप में पैदल चलकर लोगों का उत्साह बढ़ाते और लोगों को उद्यत करते एवं जलियांवाला बाग में जख्मी लोगों की सूचियां तैयार कर कांग्रेस की जांच कमेटी को पहुंचाते।

कांग्रेस अधिवेशन पर वैदिक धर्म प्रचार

दिसम्बर सन् १९१९ मे अमृतसर के विशाल गोलबाग में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। इस अवसर पर अमृतसर की आर्यसमाजों को प्रेरित कर आचार्य जी ने वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई, जिसका सारा बोझ श्री देवप्रकाश जी और उनके साथियों पर आ पड़ा। इसमें विशेष उल्लेखनीय ज्ञानी पिण्डीदास, भगत दुर्गादास और लाला गरीबदास थे। इस प्रकार भारत भर से पधारने वाले हजारों प्रतिनिधियों तक वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचाया गया। (क्रमश)

हमारी आंखें कब खुलेंगी ?

आतंकवाद की छाया में जी रहा हमारा देश

—क्षितीश वेदालंकार—

इस बार तीन विशेष दिवस करीब-करीब एक साथ पड़े। ३१ अक्तूबर को सरदार पटेल की जयन्ती थी, ३१ अक्तूबर को ही श्रीमती इन्दिरा गांधी की पुण्य तिथि थी और एक नवम्बर को दीपमाला का महापर्व था। इन तीनों दिवसों को एक साथ गिनाने का तात्पर्य यह है कि इन तीनों के पीछे एक विशेष भावना है, जो उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाती है।

आजादी के पश्चात् गृहमन्त्री के रूप में लौह पुरुष सरदार पटेल ने जिस प्रकार ६०० देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय किया, वह उनकी प्रतिभा और पराक्रम का न केवल प्रतीक था, प्रत्युत उसके बिना यह देश कभी एक राष्ट्र के रूप में न उभर पाता। देश का विभाजन करके जहां अंग्रेजों ने भारत के लिए एक स्थायी सिर दर्द पैदा कर दिया था, वहां देशी रियासतों को भी यह अधिकार देकर कि वे चाहें तो पाकिस्तान में शामिल हो सकती हैं या भारत में, या उनकी इच्छा हो तो पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रह सकती हैं, राष्ट्रीय एकता की जड़ में मट्ठा डालने की पूरी व्यवस्था कर दी थी। परन्तु लौह पुरुष के लौह संकल्प के सामने अंग्रेजों का वह षड्यन्त्र सफल नहीं हुआ।

उससे अगले दिन इन्दिरा गांधी की पुण्य तिथि को भी हम इसलिए महत्त्व देते हैं कि राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने, पाकिस्तान को तोड़कर स्वतन्त्र बंगलादेश के निर्माण और "ब्लू स्टार आपरेशन" द्वारा खालिस्तान का स्वप्न विफल करने में उस दुर्गा भवानी ने जिस साहस और वीरता का परिचय दिया, वह भारत के इतिहास की दुर्लभ और गौरवपूर्ण गाथा है।

दीपमाला को भी सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से राष्ट्रीय एकता का ही पर्व कहना चाहिए। भले ही राजनीति से इस पर्व का कोई सरोकार न हो, किन्तु कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत की आत्मा में व्याप्त जिस सांस्कृतिक एकता को यह पर्व उजागर करता है, वह अद्भुत है। इस दिन पर्वत शिखरों से लेकर जंगलों, नगरों, गांवों, नदियों और सागर के वक्षःस्थल तथा बीहड़ तक आसेतु हिमाचल दीपकों की जैसी पंक्ति एक साथ जगमगाती है, वैसा दृश्य संसार के अन्य किसी स्थान पर सुलभ नहीं। उस दिन भारत के जन-जन का उत्साह और आनन्द जो पींगें भरता है, वह गैर-भारतीयों के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो सकता है।

इन तीनों पर्वों को राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानकर एक साथ देखने के पश्चात् जब हम देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करते हैं, तब लगता है कि जिस राष्ट्रीय एकता के लिए सरदार पटेल और इन्दिरा गांधी ने अपना जीवन उत्सर्ग किया, आज वह राष्ट्रीय एकता पुनः खतरे में है। पता नहीं, कौन-सा अभिशाप इस देश को छू गया है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, त्यों-त्यों विघटनकारी प्रवृत्तियां चारों ओर अपना सिर उठाती नजर आती हैं। जहां अमरीकी साम्राज्यवाद, जो देशों को तोड़ने में माहिर है, भारत को चारों ओर से घेरने का प्रबल कर रहा है, वहां भारत की अपनी चारों सीमायें भी बहुत सुरक्षित प्रतीत नहीं होतीं।

आंग्ल-अमरीकी गुट ने चीन का विभाजन करके दो चीन बनाये—एक कम्युनिस्ट चीन और दूसरा कुओमिन्तांग वाला चीन—ताइवान। कोरिया के दो टुकड़े किये—एक उत्तर कोरिया, दूसरा दक्षिण कोरिया। वियतनाम को दो भागों में विभक्त किया—एक उत्तरी वियतनाम, दूसरा दक्षिणी वियतनाम। जर्मनी के दो हिस्से किये, एक पूर्वी जर्मनी, दूसरा पश्चिमी जर्मनी। इसी प्रकार भारत के दो टुकड़े किये, एक भारत और दूसरा पाकिस्तान। आंग्ल-अमरीकी गुट ने तोड़ने की अपनी इस नीति का फल किसे नहीं चखाया? पूर्वी अफ्रीका को तोड़ा, पश्चिमी अफ्रीका को तोड़ा और दक्षिणी अफ्रीका को तोड़ा। शायद विश्व के सब देशों पर किसी न किसी रूप में अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए इस आंग्ल-अमरीकी साम्राज्यवाद को देशों का विभाजन करके उन्हें अपना वशंवद बनाये रखने में सुविधा प्रतीत होती हो।

इतना सब कुछ करने पर भी उसकी विभाजन की भूख शान्त नहीं हुई तो उसने अपने पिछलग्गू पाकिस्तान की मार्फत भारत में उन सिरफिरों को शह देना प्रारम्भ कर दिया जो अपनी खाम खयाली में खालिस्तान का ख्वाब देखते हैं।

हमने ऊपर भारत की सीमाओं के असुरक्षित होने की बात कही है। पूर्वांचल में नागालैण्ड के उग्रवादी पुनः चीन के साथ अपना सम्पर्क बढ़ा रहे हैं। इसीलिए वहां पुराने मुख्यमन्त्री को हटाकर नया मुख्यमन्त्री बनाया गया है। अरुणाचल में चीन की घुसपैठ जारी है ही। भारत सरकार उसे कितना ही कम करके दिखाये परन्तु वह निश्चित रूप से किसी गहरे भावी संकट का संकेत है। उधर बंगाल में गोरखालैण्ड का नया नारा उठा है, जिसे लेकर बंगाल का शासक दल और केन्द्रीय शासक दल दोनों अपने-अपने दलीय हितों की दृष्टि से उसे राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय कहने में लगे हुए हैं। सच तो यह है कि इन दोनों के ही मन में राष्ट्रहित की बजाय दलीय हित जोर मार रहा है और वे आसन्न चुनाव को लक्ष्य करके ही अपनी-अपनी पैंतरेबाजी में लगे हुए हैं।

उधर उत्तर में कश्मीर की ओर नजर दौड़ाइये तो वहां अब फारूक अब्दुल्ला के नेतृत्व में कांग्रेस और नेशनल कान्फ्रेंस की मिली जुली सरकार बन गई है। परन्तु उसके बाद फारूक अब्दुल्ला कश्मीर में बढ़ते पाकिस्तान समर्थक तत्त्वों और 'नये भिंडरांवाले' को कैसे अंकुश में रख पायेंगे, यह देखना बाकी है। आतंकवादियों को प्रशिक्षण देने के अधिकतर कैम्प आजाद कश्मीर के उन हिस्सों में ही हैं, जो स्वतन्त्र कश्मीर की सीमा से सटे हुए हैं। किसी भी बड़ी घटना के समय यह स्थिति क्या परिणाम पैदा कर सकती है, यह कल्पना का ही विषय है। सियाचिन ग्लेशियर का विवाद ज्यों का त्यों मौजूद है और पाकिस्तान वहां पूरी तरह शैतानी करने पर आमादा है। अगर इस सियाचिन ग्लेशियर पर कभी भारतीय सेना की पकड़ ढीली पड़ जाये और पाकिस्तानी सेना हावी हो जाये, तो कराकुरम का मार्ग और अक्साईचीन पर पहले से ही चीन का कब्जा लद्दाख के लिए भयंकर खतरा पैदा कर सकते हैं। कोई भी समझदार राष्ट्रभक्त इस स्थिति की उपेक्षा कैसे कर सकता है?

रहा पश्चिमी अंचल। वहां केरल में जिस प्रकार मुस्लिम लीग सिर उठा रही है और अरब देशों से आने वाले बेहिसाब पेट्रो-डालर के बल पर वहां अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों को उकसा रही है, वह कम चिन्ता का विषय नहीं। वहां मुस्लिम-बहुल इलाका बताकर अलग मल्लापुरम् जिला बना ही दिया गया है। खाड़ी देशों और अरब देशों में काम करने वाले मजदूर तथा अन्य कर्मचारी सबसे अधिक किसी प्रदेश से जाते हैं, तो केरल से ही। अपने सेवा-भाव के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध केरल की नर्सों की इन मुस्लिम देशों में जाकर जैसी दुर्गति होती है, और जिस प्रकार उनका जीवन बरबाद हो जाता है, वह किसी भी सहृदय व्यक्ति के रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी है। अभी-अभी सुना गया है कि बम्बई हाई से समुद्र गर्भ से तेल निकलना शुरू हुआ है और भूगर्भवेत्ता वैज्ञानिकों ने यह खोज की है कि अरब देशों में निकलने वाला तेल समुद्र के अन्दर ही अन्दर बह कर अरब सागर में भारतीय तट के समीप पहुंच गया है, तब से अरब देशों ने केरल के अनेक मुस्लिम पूंजीपतियों को पैसा देकर उन्हें अपनी ओर से तेल निकालने के लिए प्राइवेट कम्पनियां बनाने के लिए तैयार कर लिया है। इस षड्यन्त्र के सूत्र भारत के बाहर अन्य देशों तक जिस प्रकार पहुंचते हैं, उससे लगता है कि यह अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का हिस्सा है।

अब रही भारत की दक्षिणी सीमा। वहां श्रीलंका ने जिस प्रकार भारत विरोधी रुख अपनाया है, और (बौद्ध मत का अनुयायी होने के कारण) अहिंसा के पालन का दम भरते हुए भी वहां के हिन्दू तमिलों पर हिंसा का नग्न ताण्डव प्रारम्भ किया है, वह दक्षिण की सीमा को चाहे जब उग्र रूप में सुलगाने के लिए काफी है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी दयानन्द सरस्वती की छपरा-यात्रा-१

—डा० धनपति पाण्डेय—

क्रान्तिकारी संगठन आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत के विभिन्न भूभागों की जितनी अधिक यात्रा की उतनी सम्भवतः किसी भी समाज सुधारक एवं जननेता ने नहीं की। आर्यसमाज की स्थापना (१८७५ ई०) के पूर्व ही उन्होंने भारतवर्ष (विशेष कर उत्तरी भारत) के अनेकानेक नगरों की यात्रा की थी। उनकी इस बृहद् यात्रा के पीछे दो ही रहस्य थे। आर्यावर्त्त में वेद का प्रचार करना और भारतीयों को इस तथ्य की जानकारी देना कि "जिस प्रकार इंग्लैण्ड अंग्रेजों का है उसी प्रकार भारत भारतवासियों का है।" दयानन्द का जीवन-कर्म था वेद का सर्वत्र प्रचार करना जो सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान एवं राष्ट्रीय भावना के उत्सरण तथा उद्रेक का मूल स्रोत था। अतः अपने प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द से शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्होंने अपने जीवन को यात्रा में ही लगाया।

इस महापुरुष एवं प्रकाण्ड विद्वान् की चरण-धूलि बिहार भूमि पर भी पड़ी। बिहार के डुमरांव में उनका प्रथम कदम १६ अप्रैल, १८७२ को पड़ा था। उसके बाद वे वहां से आरा, आरा से पटना, पटना से मुंगेर, मुंगेर से भागलपुर और भागलपुर से कलकत्ता गये। बिहार में स्वामी जी की दूसरी यात्रा कलकत्ता से वापसी के समय हुई। दूसरी यात्रा में ही उन्होंने छपरा की यात्रा की। हुगली से वे पुनः भागलपुर लौटे और भागलपुर से दूसरी बार पटना गये। इस बार वे नाव से गंगा पार कर पटना से छपरा गये। छपरा में उनका शुभागमन २५ मई, १८७३ को हुआ था। उस दिन रविवार था। भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ बदि १४ सम्वत् १९३० को ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में वे छपरा आये।

विरोधियों का सामना

जैसे ही स्वामी दयानन्द ने छपरा में पग रखा, वैसे ही उन्हें अपने विरोधियों के विरोध का सामना करना पड़ा। इस समय तक स्वामी जी ने विभिन्न नगरों में आयोजित विद्वत् सभाओं में भाग लेकर प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी और अपनी पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहरा कर पाखण्डी एवं कर्मकाण्डी ब्राह्मण वर्ग को धत्ता बता दिया था। अतः जैसे ही उनके पैर छपरा में पड़े, यहां का ब्राह्मण वर्ग सतर्क हो गया और उनके पूर्व ही उनके पैर उखाड़ देने के काम में सक्रिय हो गया।

किन्तु सौभाग्यवश स्वामी दयानन्द को छपरा में एक धनवान् जमीदार मिल गया, जो शुभ कार्यों का संरक्षक एवं समाज-सुधार कार्य में अग्रगण्य रहा था। इसका नाम शिवगुलाम साह था जो स्वामी जी को अनेकानेक विरोधों के बाद भी संरक्षण देने को आगे आ गया। पण्डित लेखराम ने अपनी कृति में इस जमींदार को "बहादुर" के नाम से पुकारा है। इस व्यक्ति ने स्वामी जी की न केवल सेवा करने का संकल्प किया अपितु विरोधियों एवं अन्य असामाजिक तत्त्वों से उनकी रक्षा करने का भी निश्चय किया। विरोधियों ने ऐसा षड्यन्त्र रचा कि स्वामी जी को छपरा में ठहरने के लिए कोई मकान ही न मिले। किन्तु उनका प्रथम प्रयास ही विफल हो गया और श्री शिवगुलाम साह बहादुर ने नवागंतुक विद्वान् को ठहराने के लिए एक अत्यन्त सुन्दर और सुसज्जित भवन खोज डाला। स्वामी जी की विद्वत्ता एवं अमृत वाणी ने शिवगुलाम को उनका भक्त बना दिया था और विरोधियों से लड़ने के लिए बहादुर।

समस्त छपरा प्रभावित

जब दयानन्द जी को छपरा में जमींदार के संरक्षण में ठहरने के लिए एक निरापद मकान मिल गया तब कट्टर ब्राह्मणों को यह बात समझते देर न लगी कि अक्खड़ व्यक्तित्व वाले इस विद्यानुरागी महर्षि का तार्किक भाषण छपरा में उनके ब्राह्मणवाद की धज्जी-धज्जी उड़ा देगा और मूर्ति-पूजा के विरोध में शास्त्रार्थ करने के लिए उन्हें खुली चुनौती दे डालेगा। अतः उन्होंने इस वेद-निष्णात उद्भट विद्वान् को बदनाम करने का प्रयास करना प्रारम्भ किया। उन्होंने उनके सम्बन्ध में झूठी अफवाहें फैलाना प्रारम्भ किया। पण्डित लेखराम जी लिखते हैं कि ईर्ष्यालु ब्राह्मणों ने सारे नगर में यह बात फैला दी कि इस नगर (छपरा) पर एक बड़े नास्तिक ने आक्रमण किया है।" ऋषि के आगमन का, ईश्वर के [विषय] में वैदिक सिद्धान्त का और पौराणिक मत [वालों] से शास्त्रार्थ की इच्छा का विज्ञापन सर्वसाधारण को दिया गया। दयानन्द अपने निवास स्थान पर बैठे मुस्कुराते रहे कि उनका प्रचार उनके विरोधियों का दल ही कर रहा है।

दयानन्द के गम्भीर अध्ययन और हृदय की विशालता ने उन्हें यह पाठ पढ़ाया था कि विरोधियों का स्वागत करना चाहिए ताकि वे खुलकर ज्ञान से संघर्ष कर के अपने अज्ञान को परख सकें। जिस निर्भीक व्यक्ति ने भारत के गवर्नर-जनरल लार्ड नार्थब्रुक तक को यह जवाब दे डाला था कि वह भारत में ब्रिटिश राज्य के स्थायित्व के लिये नहीं, भारत की स्वतन्त्रता के लिये ईश्वर से प्रार्थना करेगा, वह भला एक नगर के मुट्ठी भर (और वह भी अज्ञानी) ब्राह्मणों के विरोध से क्यों डरने वाला था। दयानन्द की शहादत तो उसी दिन हो चुकी थी जिस दिन पहली बार उन्होंने मूर्तिपूजा के विरुद्ध शंखनाद कर देश के समस्त मूर्तिपूजकों को अपने विरोध की पंक्ति में खड़ा कर दिया था। उनके जीवन का मिशन ही था त्याग और बलिदान, वेद-प्रचार और राष्ट्रवाद के विकास में आत्माहुति, आर्य-भूमि लिये आत्म-बलिदान। छपरा के नागरिक इस विराट् व्यक्तित्व के दर्शनार्थ उमड़ने लगे और निकट आये लोगों को दयानन्द ने अपने कथोपकथन एवं संभाषण से प्रभावित करना प्रारम्भ किया। उन्होंने न केवल सर्वसाधारण नागरिकों का, अपितु विरोध करने वाले बहुत-से ब्राह्मणों का भी हृदय जीत लिया। जब ऊंचे मंच पर, चांदी की कुर्सी पर त्रिनेत्र के आसन की मुद्रा में बैठे स्वामी जी ने भाषण देना प्रारम्भ किया और वैदिक रीति से किये जाने वाले अनुष्ठानों की वैधता प्रतिष्ठापित की तो विज्ञजनों के मस्तक उनके समक्ष झुक गये और विरोधियों की लजीली आंखें मुंद गईं। लेखराम ने लिखा है कि "पण्डित लोग प्रकट में तो उनका (ऋषि का) सम्मान करते थे किन्तु घरों में जाकर डींग मारते थे। किसी को उनके सामने आने का साहस नहीं हुआ।" वाद-विवाद की बृहत् सभा का आयोजन होने से पूर्व ही छपरा के निवासियों ने ब्राह्मणों के अज्ञान तथा कायरता का अनुभव कर लिया। छपरा-निवास के तेरह दिनों में ही दयानन्द ने छपरा के सामाजिक तथा धार्मिक जीवन में हलचल मचा दी थी। उसी काल में छपरा में सामाजिक क्रान्ति की आधुनिक भावना का प्रस्फुटन हुआ और सन् १८७५ में बम्बई में मूल आर्यसमाज की स्थापना के उपरान्त वहां के नागरिकों ने आर्यसमाज की स्थापना कर डाली।

[क्रमशः]

आपका स्वास्थ्य

वज्रासन : अभ्यास और लाभ

—युधिष्ठिर पाल

देश-विदेश में लाखों-करोड़ों रुपया लगाकर ऐसी-ऐसी संस्थाएं खुली हुई हैं, जो केवल यह बात जानने में लगी हुई हैं कि योग की किन क्रियाओं से मनुष्य के शरीर में क्या प्रभाव होता है। इसका कारण स्पष्ट है कि जन-सामान्य में स्वास्थ्य के प्रति सुनियोजित चिंतन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। अतः स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य शिक्षा का एक सरल, प्रभावकारी और व्यावहारिक कार्यक्रम इस समय बहुत जरूरी हो गया है।

मनुष्य के स्वास्थ्य की सबसे पहली शर्त उसकी स्वस्थ पाचन प्रणाली है। बहुत-सी जीर्ण बीमारियां पाचन तन्त्र की गड़बड़ी के कारण पैदा होती हैं। पेट की कई समस्याओं का समाधान इसी में है कि पाचन तन्त्र की कार्यप्रणाली शक्तिशाली और संतुलित बनाई जाये। रक्त में घुलनशील ग्लूकोज पर मनुष्य के मस्तिष्क केन्द्र व हृदय की मांसपेशियां पूरी तरह निर्भर हैं और यह ग्लूकोज तभी संभव है, जब हमारा पेट ठीक हो। शरीर का सर्वाधिक कार्यशील यह स्थान हमारी प्राणशक्ति का कोष भी है। इसी प्राणशक्ति को योगी साधना द्वारा ऊर्ध्वगामी बनाते हैं और इसी प्राणशक्ति के बल पर मनुष्य कई चुनौतियों का सामना कर सकता है।

हमारे शरीर की तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाड़ियों में से वज्र नाम की एक नाड़ी है, जिसका सीधा सम्बन्ध हमारी पाचन शक्ति से है। यह नाड़ी लिंग और गुदा के बीच स्थित है। इस नाड़ी को प्रभावित करने वाले आसन का नाम वज्रासन है।

आमतौर पर देखा गया है कि भोजन करने के पश्चात् लोग टहलने के लिए जाते हैं। टहलने से शरीर के पैर, तलुवे अथवा जांघें गरम हो जाती हैं। इस प्रकार पैरों की गरम नाड़ियों द्वारा पेट हल्का हो जाता है, लेकिन ऐसा तीस मिनट तक लगातार टहलने पर ही होता है, इससे पहले नहीं। परन्तु यहीं पर [illegible] केवल [illegible] मिनट तक वज्रासन का अभ्यास करने से पाचन-शक्ति को पहुंचता है। कारण यह है कि इस स्थिति में [illegible] शरीर उत्तेजित हो जाता है, जिससे फलस्वरूप वज्रनाड़ी, पाचक नाड़ियों और ग्रन्थियों की कार्यक्षमता बढ़ जाती है और भोजन शीघ्र पचने लगता है। जिन व्यक्तियों की पाचन शक्ति कमजोर रहती है, उन्हें भोजन करने के पश्चात् १०-१५ मिनट वज्रासन में बैठना चाहिए। आइए, अभ्यास करके स्वयं भी लाभान्वित हों।

अभ्यास

[illegible] को मिलाकर घुटनों से मोड़ते हुए इस प्रकार बैठें कि पांवों के [illegible] जायें और एड़ियां दायें-बायें नितम्बों की ओर ढल जायें। [illegible] दोनों एड़ियों के बीच वाली स्थान (पैड) पर नितम्बों को स्थिर करें। कमर और पीठ बिलकुल सीधी रहे। दोनों हाथ घुटनों पर रख दें। श्वास की गति सहज भाव से रहेगी। अपना ध्यान मूलाधार क्षेत्र (गुदा और लिंग के [illegible]) पर केन्द्रित करें।

लाभ

[illegible] और [illegible] के प्रतीक हनुमान् जी को बजरंग (वज्र+अंग) बली इसीलिए कहा जाता है कि उनका सारा शरीर वज्र की भांति था। इस नाड़ी को [illegible] की नस भी कहा जाता है। व्यक्ति अपने को शक्तिशाली बना-कर [illegible] को नियमित कर सकता है। यह आसन [illegible] व [illegible] के [illegible] को ठीक करता है। आप दफ्तर से बहुत थके हुए आते हैं, [illegible] करते हैं, इस आसन में थोड़ी देर बैठने से लाभ मिलेगा। इससे [illegible] में धातुरोग, स्वप्न दोष, [illegible] रोग, पांवों में दर्द आदि दूर किये जा सकते हैं। पेट की गैस निकालकर हर्निया से बचाव करता है। यह आसन महिलाओं के लिए [illegible] भी लाभप्रद है। पेट के निचले भाग की [illegible] रोगियों के लिए यह ध्यान का उत्तम आसन

है। मुसलमान, तिब्बती व जापानी बौद्धों में यह प्रार्थना और ध्यान का आसन है।

नये अभ्यासियों को शुरू-शुरू में पांवों में दर्द या पांव सुन्न होने जैसी स्थिति आ सकती है परन्तु वे घबरायें नहीं, शक्ति के अनुसार अभ्यास जारी रखें और बाद में टखनों को पकड़ कर पांवों को हिलायें।

स्फूर्ति बढ़ाने और मानसिक निराशा दूर करने में भी यह आसन लाभकारी है। केवल यही आसन है, जो भोजन के बाद किया जा सकता है।

स्वामी आनन्दबोध द्वारा शराबबन्दी की मांग

आर्यसमाज अमरोहा के उत्सव पर भाषण

आर्यसमाज अमरोहा का ८५वां वार्षिकोत्सव २६, २७, २८ अक्तूबर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। २६ अक्तूबर को विशाल जलूस नगर के मुख्य मार्गों से निकला। जलूस में मुरादाबाद, सम्भल, ठाकुरद्वारा एवं अमरोहा की कितनी ही ग्रामीण आर्यसमाजों के पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया। दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा के नन्हे-मुन्ने बच्चों का बैंड जलूस का मुख्य आकर्षण था।

२७ अक्टूबर को रात्रि में पं० इन्द्रराज जी (प्रधान उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा) की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें पं० सत्यप्रिय जी, प्रो० रामप्रसाद जी, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, पं० जयप्रकाश जी आर्य (भूतपूर्व इमाम बेतिया, बिहार) ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ। स्वामी जी ने कहा कि इस समय देश के अनेक भागों में आतंकवाद तेजी से बढ़ रहा है। यदि इसे शीघ्र न रोका गया तो देश के सामने बहुत बड़े खतरे उत्पन्न हो जायेंगे। फिर इन पर काबू पाना कठिन हो जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि हमारे नौजवान विलासिता की ओर बढ़ रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण एशियाई खेल हैं, जहां पराजय का मुंह देखना पड़ा। पी० टी० उषा का जिक्र करते हुए कहा कि देश का सौभाग्य है कि यहां एक ऐसी बहादुर प्रतिभाशाली नवयुवती खेल के मैदान में आई, जिसने कई स्वर्ण पदक प्राप्त किये। सरकार का कर्तव्य है कि ऐसे बहादुरों का विशेष ध्यान रखे।

स्वामी जी ने कहा कि देश के नौजवानों में शराब का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इस पर प्रतिबन्ध लगाना जरूरी है। यदि इस पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो हमें सत्याग्रह करना होगा। इसके लिए आप लोग तैयार रहें। किसी भी राज्य में गोहत्या भारत देश पर बहुत बड़ा कलंक है। यदि सरकार ने इसे बन्द न किया तो आर्यसमाज को विवश होकर संघर्ष करना पड़ेगा।

श्री जयप्रकाश आर्य (भूतपूर्व इमाम जामा मस्जिद बेतिया) ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने मुस्लिम साम्राज्य के समय जो भूल की थी, उसे हमने महसूस किया और हम पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण कर चुके हैं। यदि महर्षि दयानन्द ने हम लोगों के लिए द्वार न खोला होता तो हम ३६००० लोग हिन्दू धर्म में नहीं आ पाते। जिस समय महर्षि ने आवाज उठाई थी, तो हिन्दुओं ने विरोध किया था। परन्तु अब हिन्दुओं के सभी धर्माचार्यों ने हम जैसे लोगों को हर प्रकार का सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया है।

अन्त में श्री जयप्रकाश आर्य ने कहा कि इस्लाम मुस्लिम महिलाओं को पर्दे में रहने की इजाजत देता है परन्तु आर्यसमाज के प्रभाव से मोहसिना किदवाई जैसी हजारों महिलायें हिन्दू स्त्रियों की तरह रहती हैं और उन्होंने पर्दे पर कम कर रखी हैं।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने ओजस्वी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया।

"दयानन्द सांस्कृतिक ऊर्जा के स्रोत हैं"

आर्यसमाज बुरहानपुर द्वारा चार नवम्बर को एक विशिष्ट यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश वीरेन्द्रदत्त जो ज्ञानी का सम्मान किया गया। आर्य-समाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तमदास पाटीदार ने आपका पुष्पमाला से स्वागत किया। माननीय न्यायाधीश महोदय यज्ञ में होता के रूप में सम्मलित हुए और उन्होने वेदमन्त्र पढे। ज्ञानी जी ने कहा कि आर्यसमाज मे वे अपने परिवार मे जाने के समान अनुभव करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत के एक महान् दूरद्रष्टा ऋषि थे। उन्होने अपने साहित्य और आर्यसमाज के माध्यम से भारतीय समाज की अनेक कुरीतियो और बुराइयो के विरुद्ध सघर्ष किया। आज उनके अनेको समाजोपयोगी सुधार कार्यों को भारत की जनता ने अपना लिया है। ज्ञानी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द भारत के लिए ही नही, अपितु विश्व की जनता के लिए आज भी सास्कृतिक ऊर्जास्रोत हैं। आज हम अपनी सास्कृतिक और उच्च मानवीय परपराओ से विमुख हो रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन मे कभी भी अपने सिद्धान्तो के विपरीत सत्य को त्यागकर असत्य से समझौता नही किया। वेदमत्रो और सास्कृत सुभाषितो द्वारा मानव जीवन मे ईश आस्था, आत्मविश्वास और कर्मण्यता की भावनाए आती हैं, जो सफल जीवन के लिए आवश्यक हैं।

श्री नरेन्द्रदेव शर्मा की माता जी का देहान्त

श्री नरेन्द्रदेव शर्मा विद्याभास्कर [गोलागोकर्णनाथ-खीरी] की पूज्या माता जी का २५ अक्तूबर को देहावसान हो गया। सात नवम्बर को गृह शुद्धि और माता जी की आत्मा की सद्गति के लिए हवन-यज्ञ किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट किया है।

हमारी आंखें कब खुलेंगी ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

चेतावनी पर चेतावनी

इस प्रकार हम देखते हैं कि न केवल भारत के चारो ओर विद्यमान बाहरी देशों से, बल्कि भारत की अपनी आतरिक् चतुर्दिक् सीमाओं से भी, राष्ट्रीय एकता के लिए निरन्तर चेतावनी पर चेतावनी मिलती चली जा रही है। राष्ट्र की आन्तरिक स्थिति यह है कि आतकवादी केवल प्रधानमन्त्री या पजाब पुलिस के महानिदेशक श्री रिबैरो पर ही अपना हत्या का मनसूबा पूरा करने की फिराक मे नही हैं, बल्कि देश का कोई भी स्वतन्त्रचेता पत्रकार, बुद्धिजीवी या राजनेता सुरक्षित नही है, आतकवाद के विरोध मे आवाज उठाने का मतलब है "हिट लिस्ट" मे अपना नाम दर्ज करवाना। हद हो गई—आज इस देश में देश की स्व॰ प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को अपना दुश्मन बताकर उसके हत्यारों को शहीद बनाकर पूजा जा रहा है। आज ऐसा कोई विशिष्ट व्यक्ति नहीं है, जो अपनी सुरक्षा के लिए अपने अगरक्षको से घिरा हुआ न हो और अपने घर से बाहर एक कदम भी रख सकता हो। जब देश के सब नेताओ का यह हाल है तो सामान्य लोगों का क्या हाल होगा? कोई पर्व, कोई समारोह, कोई जलसा-जलूस या कोई शोभायात्रा ऐसी नहीं निकल सकती, जिसके चारों ओर बन्दूकधारी सैनिकों और पुलिस का पहरा न हो। इन्दिरा गाधी की हत्या के बाद से केन्द्रीय प्रशासन ने आतकवाद से निपटने मे जिस साहसहीनता का परिचय दिया है, उसी का यह परिणाम है कि आज आतकवाद सुरसा की तरह अपना पूरा मुह खोलकर सारे देश को निगलने को तैयार है। इस आतकवाद में पाकिस्तान या अन्य देशों की कितनी शह है, उस पर बहस करना बेकार है। आखिर हर हालत में उससे निपटना तो है ही। आतंकवाद की छाया में घुट-घुट कर जीवित रहने का अभिशाप हम कब तक भोगते रहेंगे? राष्ट्र को अपने साहस का नया परिचय देना ही होगा।

श्री मनोहर सुमेरा : श्रद्धांजलि

सृजति तावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलंकरणं भुवः ।
तदपि तत्क्षणभंगि करोति चेदहह कष्टमपंडितता विधेः ।

अभी पिछले मास ही दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री मनोहर सुमेरा से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे उनके देश मे व्यापक वैदिक धर्म प्रचार करने के बारे मे हमारी चर्चा हुई थी। तब यह किसे पता था कि वे सपत्नीक भारत भ्रमण की समाप्ति से पूर्व ही अकस्मात् दिवंगत हो जायेंगे ? उनके निधन का हृदयद्रावक समाचार मुझे डरबन से प्राप्त हुआ। उनकी आयु ६० वर्ष के आसपास थी और वे सर्वथा स्वस्थ दिखाई पड़ते थे। उनके पूर्वज १०० वर्ष पूर्व आवला (जिला बरेली) से अनुबन्ध कुली प्रथा के अन्तर्गत वहा पहुचे थे। वे अपनी इस पितृभूमि को देखने के बाद ही मद्रास पहुँचे थे।

गत वर्ष इन्ही दिनो डरबन मे हुए सार्वभौम आर्य महासम्मेलन मे मुझे उनके दर्शन हुए थे। वे कर्मनिष्ठ और शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे। उक्त सम्मेलन मे रंगभेद की नीति के दक्षिण अफ्रीकी सरकार के कार्यकलाप पर विरोधसूचक प्रस्ताव का उन्होने ही अनुमोदन किया था, जबकि स्व० श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने वह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। आज दोनों ही दिवंगत हैं। श्री सुमेरो मे अद्भुत सगठन और कार्य शक्ति थी। वेद प्रचार के सम्बन्ध में वहा श्री नरदेव वेदालंकार जो कुछ लिखते कहते या प्रस्तुत करते थे, उसका वहा के अंग्रेजी भाषी भारतीयों तक अनुवाद करके पहुचाने का काम श्री सुमेरो ही करते थे। वे उनके साथ वैदिक ज्योति के सहसम्पादक भी थे। उनके निधन पर समुद्री तार द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने समस्त आर्यजगत् की ओर से उनके परिवार के प्रति समवेदना प्रकट की। श्री सुमेरो का शव विमान से डरबन ले जाया गया, जहा समस्त हिन्दू जगत् के गण्यमान्य व्यक्तियो ने उन्हे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वस्तुतः श्री सुमेरो के निधन से आर्यजगत् और विशेष कर दक्षिण अफ्रीका मे आर्यसमाज के प्रचार को गहरा धक्का लगा है। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति और परिवार को सान्त्वना प्रदान करे।

श्री सुमेरो के निधन पर ऊपर लिखी कवि की पंक्तियां सटीक बैठती हैं, जिसमें गुणी पुरुष के विधाता द्वारा अवसान पर प्रभु की निंदा तो नही परन्तु अपंडितता की उजागर किया गया है। —ब्रह्मदत्त स्नातक

११ अक्टूबर को बम्बई मे हिन्दू एकता सम्मेलन हुआ। चित्र में रामलीला कमेटी के एक अधिकारी सम्मेलन के संयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य का अभिनन्दन कर रहे हैं। (सम्मेलन का विवरण 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित हो चुका है।)

साप्ताहिक सार्वदेशिक के नये आजीवन सदस्य

(१) श्री जगदीश प्रसाद वैदिक वैदिक सदन नवर कुआ, इन्दौर
(२) श्री जगदीश जी चर्च रोड, दीमापुर
(३) वीरेन्द्र कुमार, ५१ दरियागंज दिल्ली २
(४) , मेजर रामकुमार आर्य सूरा नूसी जालन्धर
(५) सतीश चन्द्र सक्सेना न० ८ राजभवन फ्लैटस, नारायणपुरा, अहमदाबाद
(६) कैलाशप्रसाद अशोक कुमार आर्य, स्टेशन रोड पिपराइच गोरखपुर
(७) श्रीराम आर्य सुन्दरा देवी जन कल्याण ट्रस्ट किग्स रोड, हावड़ा
(८) मन्त्री जी आर्यसमाज मन्दिर ताजगंज आगरा
(९) आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार
(१०) श्री सीताराम अग्रवाल प्रधान आर्यसमाज जोगबनी पूर्णिया (बिहार)
(११) दयालदास मुरलीधर जमनालाल बजाज रोड, धूलिया
(१२) मन्त्री जी आर्यसमाज १७८८ करसेट रोड अहमदनगर
(१३) श्री शान्तिस्वरूप २० अग्र नगर, लुधियाना
(१४) श्रीमती दमयन्ती देवी द्वारा डा० विमल प्रकाश, प्रकाश होम, पटना
(१५) श्री अशोक आर्य मन्त्री, आर्यसमाज सगरूर पंजाब
(१६) महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा
(१७) श्री कृष्णपाल सिंह जी गोविंद गंज शाहजहांपुर (उ प्र)
(१८) , हरिराम सिंह सतीश कुमार, आसकी बाजार सोलन (हि प्र)
(१९) मन्त्री जी, नगर आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर
(२०) श्री शंकर सिंह नेगी ग्राम प्रधान बाड़ा डाडा जि० बाड़ा, पौड़ीगढ़वाल
(२१) ,, माहेश्वरी एजेन्सीज ४५ जवाहर मार्ग, इन्दौर
(२२) ,, मल्होत्रा ब्रदर्स, १५ हजरा रोड, कलकत्ता
(२३) मन्त्री जी, आर्यसमाज मद्रास
(२४) श्री श्रद्धानन्द जी, एम जी हाउस, आसफ अली रोड, नई दिल्ली
(२५) , आनन्द प्रकाश शर्मा, द्वारा अमित मोटर्स ,, रामप्रसाद लेन कश्मीरी गेट, दिल्ली
(२६) प्रो० शिवदत्त शर्मा, गुरु नानक नगर, दिल्ली रोड, मेरठ
(२७) श्री गुलाब राय, २६६६ बल्लीमारान, दिल्ली ६
(२८) श्री गुलाब राय, ई ३/१६ दरियागंज, नई दिल्ली-२
(२९) डा० नरेन्द्र एम चिल्लाल, ६१९ बुधवार पेठ, पुणे
(३०) श्री सीताराम आर्य, १००/३१ कोठा वाली चाल, जमालपुरा अहमदाबाद
(३१) श्री जगमोहन खन्ना, खन्ना टेस्ट हाउस, रिहाड़ी कालोनी, जम्मू

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२३-११-१९६६) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ११
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment Post in D.P.S.O. on 21-11-66

पंजाब को सेना के हवाले किया जावे

[पृष्ठ १ का शेष]

नहीं कर सकती। उन्होंने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि आज भी देश में गोवध जारी है, जब कि महात्मा गांधी गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग को लेकर निरन्तर संघर्ष करते रहे।

महात्मा जी ने चेतावनी दी कि जो मुट्ठीभर लोग भारत का बटवारा कराना चाहते हैं, उनके मनसूबे कभी पूरे नहीं होंगे।

उन्होंने कहा कि अब न खालिस्तान बनेगा और न ही बटवारा होगा। एक बार जो भारत बन गया, अब वही भारत रहेगा। पाकिस्तान द्वारा हमले की तैयारी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अगर अब की बार उसने हमला किया तो पाकिस्तान का नामो-निशान भी नहीं रहेगा।

स्वामी जी ने कहा कि देश की आर्थिक स्थिति सुधरी है तथा देश में ही बड़े से बड़ा हवाई जहाज बनाया जा रहा है। ऐसे भी लड़ाकू विमान हैं, जिनका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। महात्मा जी ने कहा कि अगर देश को खतरा है तो अन्दर से, जिस पर सबको नजर रखनी है।

झड़ौदाकलां सी०आर०पी०एफ० कैम्प में आर्यसमाज की स्थापना

सी०आर०पी०एफ० कैम्प, झड़ौदाकलाँ, नई दिल्लीमे आर्यसमाज की स्थापना की गई। निम्नलिखित अधिकारी चुने गये—

श्री आर०के० माथुर प्रधान, श्री अचलसिंह उपप्रधान, श्री विमल यश मन्त्री, श्री यशपाल शर्मा कोषाध्यक्ष श्री भूदत्त कौशिक पुस्तकाध्यक्ष और श्री रत्नलाल लेखानिरीक्षक।

आर्यसमाजों के चुनाव

—आर्यसमाज [illegible]—प्रधान श्री रमणी कुमार आर्य, मन्त्री श्री [illegible] और पुस्तकाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश।

—[illegible] स्कूल, मीरजापुर—प्रधान प्रो० सुधाकर उपाध्याय, उपप्रधान श्री [illegible], प्रबन्धक श्री मोहन, उपप्रबन्धक श्री सूर्यदेव [illegible] श्री [illegible] और लेखानिरीक्षक श्री सल्लनसिंह।

—[illegible] चौकी, डाकघर राजपुर, जिला भागलपुर—प्रधान श्री सूर्यदेव सिंह, मन्त्री श्री [illegible] शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री नवलकिशोर शर्मा।

—आर्यसमाज [illegible] (जिला नान्देड)—प्रधान श्री पोशट्टी उनग्रतवार, मन्त्री श्री [illegible] और कोषाध्यक्ष श्री सवमसेठ मुगमीलवार।

—आर्यसमाज [illegible]—प्रधान ठाकुर विजयपालसिंह, मन्त्री श्री शिवभूषण आर्य और कोषाध्यक्ष श्री [illegible] आर्य।

—आर्यसमाज रीवा—प्रधान श्री सदाशिव गुप्त आर्य, मन्त्री श्री सुशील कुमार वर्मा आर्य और कोषाध्यक्ष श्री सुदामालाल सचदेव।

—महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षा समिति, रीवा—प्रधान श्री सदाशिव आर्य, मन्त्री श्री सुशील कुमार वर्मा और कोषाध्यक्ष श्री सुदामालाल सचदेव।

गुरुकुल गौतम नगर की स्वर्ण जयन्ती

नई दिल्ली। गुरुकुल गौतम नगर का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव १ नवम्बर से ७ दिसम्बर तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भी आयोजन किया गया है।

२२ नवम्बर को शिक्षा सम्मेलन, २१ नवम्बर को वेद सम्मेलन और ६ दिसम्बर को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

सात दिसम्बर को पूर्णाहुति और आशीर्वाद का कार्यक्रम होगा।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

• सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २१ अंक ५०] [शीर्ष कृ० १५ स० २०४३ रविवार ३० नवम्बर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

आर्य सत्याग्रहियों को पेन्शन की घोषणा

सिफारिश के लिए गैर-सरकारी समिति गठित:

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अध्यक्ष होंगे

आगामी ३१ मार्च तक सब मामले निपटा दिये जायेंगे

नई दिल्ली, १९ नवम्बर। केन्द्रीय गृह मन्त्रालय ने सात सदस्यो की एक गैर-सरकारी जाच समिति का गठन किया है, जिसके अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती (पूर्वनाम श्री रामगोपाल शालवाले) नियुक्त किये गये हैं।

यह समिति उन प्रार्थना-पत्रो की जाच करेगी जो स्वाधीनता सैनानी सम्मान पेंशन योजना १९८० के अधीन हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ मे भाग लेने वाले सत्याग्रहियो अथवा उनकी विधवाओ की ओर से प्राप्त हुए हैं। हैदराबाद रियासत स्वतन्त्रता के बाद तीन भागो मे विभक्त हो चुकी है और उसके अन्तर्वर्ती क्षेत्रो का आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र राज्यो मे विलय हो चुका है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित इस सत्याग्रह में लगभग २८,००० सत्याग्रहियो ने भाग लिया था। अब ४७ वर्ष बाद उनमें से केवल १५ प्रतिशत के करीब ही जीवित हैं। सत्याग्रह का नेतृत्व तत्कालीन सभा-प्रधान स्वर्गीय महात्मा नारायणस्वामी जी ने किया था। इसमे देश के सभी क्षेत्रो और फीजी, बर्मा, स्याम आदि विदेशो मे रहने वाले भारतीयो ने भी भाग लिया था। इनमें सनातनधर्मी, जैन, सिख—सभी समुदायो के व्यक्तियो ने गिरफ्तारिया दी थी। यहा तक कि अजमेर के एक मुसलमान सज्जन सय्यद फैयाज अली ने भी इस सत्याग्रह मे भाग लिया था।

जाच समिति के अन्य सदस्यो के नाम इस प्रकार हैं—

१—श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
[वरिष्ठ उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

२—श्री रामचन्द्रराव कल्याणी
[प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद]

३—प्रो० शेरसिंह
[प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एव भूतपूर्व मन्त्री भारत सरकार]

४—श्री रणवीरसिह, भूतपूर्व ससद् सदस्य (हरयाणा से)

५—श्री सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट, नई दिल्ली

६—श्री शिवकुमार शास्त्री, भूतपूर्व ससद्सदस्य (उत्तर प्रदेश से)

याद रहे कि सार्वदेशिक सभा चिरकाल से इस प्रकार की समिति गठित करने की माग कर रही थी।

इस सम्बन्ध मे जारी सरकारी ज्ञापन मे कहा गया है कि स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन योजना, १९८० के अधीन पेंशन देने के उद्देश्य से आर्यसमाज के आन्दोलन को मान्यता देने के निश्चय के फलस्वरूप सरकार को अनेक राज्यो और संघीय क्षेत्रो से आर्यसमाज के आन्दोलन मे भाग लेने वालों से आवेदन पत्र मिले। बताया गया है कि इस कोटि मे आने वाले सब दावेदारों के लिए यह सम्भव न होगा कि वे जेल की सजा आदि के बारे मे सरकारी रिकार्डों पर आधारित साक्षी प्रस्तुत कर सकें। स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेन्शन योजना १९८० के प्रावधानो के अधीन यह साक्षी देनी होती है।

जब भी समिति की बैठक होगी, गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग के आर्यसमाज प्रकोष्ठ के इन्चार्ज सयोजक के रूप मे काम करगे।

समिति प्रयत्न करेगी कि अपना काम पूरा करके ३१ मार्च १९८७ तक अपनी सिफारिशें सरकार के पास भेज दे।

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

वेद का सन्देश

हम होंगे कामयाब एक दिन, हम को पूरा है विश्वास

—रामप्रताप शर्मा, पिलानी—

वेदों के बारे में एक गलत धारणा है कि वे आम जनता की पहुंच के बाहर पण्डितों के पठन, मनन और चिन्तन की वस्तु हैं। इस धारणा को दूर करने के लिए काफी कोशिश की गई हो, ऐसा नहीं लगता। कुछ भाष्यकारों ने भी वैदिक साहित्य को अध्यात्म के ऊंचे स्तर पर ले जाकर सर्वसाधारण के लिए दुरूह कर दिया है। व्याकरण के पण्डितों ने पदार्थों के चक्रव्यूह में उलझाकर वेदों को खण्डन-मण्डन का ही विषय बना दिया। किन्तु वैदिक साहित्य एक सशक्त जाति की सशक्त रचना-सम्पत्ति और जन-कल्याण का साधन है।

स्वाध्याय के दौरान मेरा ध्यान अथर्ववेद के काण्ड ९ सूक्त २ पर विशेष रूप से गया। उसके २५ मन्त्र सत्संकल्प द्वारा सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके सब प्रकार की प्रगति-उन्नति का अमर सन्देश हैं। यह सन्देश विशेषकर स्कूलों-कालिजों के स्तर पर नवयुवकों के सामने रखने का काम विद्वानों और शिक्षाशास्त्रियों को करना है। वेद का यह अंश किसी प्रकार की अस्पष्टता या संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना से रहित है। इसलिए पाठ्य-पुस्तकों में इसे रखने में भी कोई आपत्ति नहीं होगी। इस लेख में मैं केवल दस मन्त्रों का उनके सरलार्थ के साथ उल्लेख कर रहा हूँ—

१. नुदस्व काम प्रणुदस्व कामावर्तिं यन्तु मम ये सपत्नाः।
तेषां नुत्तानामधमा तमांस्यग्ने वास्तूनि निर्दह त्वम्॥४॥

हे मेरे सत्संकल्प, मैं अन्तःशत्रुओं को मिटाकर ज्ञानाग्नि की मदद से उन अधम अन्धकार वाले अन्तःशत्रुओं के अपने अन्दर निवासस्थान को भी भस्म कर डालूं।

२. इन्द्राग्नी काम सरथं हि भूत्वा नीचैः सपत्नान् ममपादयाथः।
तेषां पन्नानामधमा तमांस्यग्ने वास्तून्यनु निर्दह त्वम्॥६॥

हे मेरी आत्मिक शक्ति और ज्ञानशक्ति, हे सत्संकल्प, तुम तीनों मेरे शरीर रूपी रथ में रह कर मेरे अंतःशत्रुओं को हराओ और उनके तमोगुण रूपी निवास स्थानों को भी जला कर नष्ट कर दो।

३. जहि त्वं काम मम ये सपत्ना अन्धातमांस्यवपादयैनान्।
निरिन्द्रिया अरसाः सन्तु सर्वे मा ते जीविषुः कतमच्चनाहः॥१०

हे सत्संकल्प, जो मेरे अन्तः शत्रु हैं और जो अन्धा कर देने वाले तमोगुण के परिणाम हैं, वे सब नष्ट हो जायें और हमारी इन्द्रियों से दूर हो जायें। वे एक दिन भी जीवित न रहें।

४. अवधीत कामो मम ये सपत्ना उरुं लोकमकरन्मह्यमेधतुम्।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रो मह्यं षडुर्वी घृतया वहन्तु॥११

मेरे अन्तः शत्रुओं को मेरा प्रबल संकल्प मार डाले। वही सत्संकल्प इस विशाल संसार में मेरी प्रगति करे। मेरे चारों ओर ऊंची दिशायें भी झुक जायें और छहों दिशायें पुष्टिकारक पदार्थ दिलाने वाली हों।

५. असर्ववीरश्चरतु प्रणुत्तो द्वेष्यो मित्राणां परिवर्ग्यः स्वानाम्।
उत पृथिव्यामवस्यन्ति विद्युत उग्रो वो देवः प्रमृणत् सपत्नाम्॥१४

मेरा अन्तःशत्रु शक्तिरहित होकर मुझ से दूर हो जायें। जो लोग अब तक उसे मित्र समझते थे और उनके सम्बन्धी भी उससे घृणा करें। सत्संकल्प और आत्मिक शक्ति की बिजली जैसी चमक अन्तः शत्रुओं को नष्ट कर दे।

६. च्युताचेयं बृहत्यच्युता च विद्युत् बिभर्ति स्तनयित्नूंश्च सर्वान्।
उद्यन्नादित्यो द्रविणेन तेजसा नीचैः सपत्नान् नुदतां मे सहस्वान्।

बिजली गिरी हो या बादलों में रुकी; उसकी शक्ति विशाल है। ऐसे ही मेरे सत्संकल्प प्रभावशाली हों। उगता हुआ सूर्य अपने तेज से तम का नाश करता है। वैसे ही मेरे हृदयाकाश से उदय होता हुआ सत्संकल्प अन्तः-शत्रुओं को पराजित करे।

७. यत्ते काम शर्म त्रिवरूथमुद्भु ब्रह्म वर्म विततमनतिव्याध्यं कृतम्। तेन सपत्नान् परिवृङ्धि ये मम पर्येनान् प्राणः पशवो जीवनं वृणक्तु॥१६॥

हे सत्संकल्प, तूने मेरे शरीर, मन और आत्मा को अपना घर बनाया है, और व्यापक ब्रह्मज्ञान को कवच। इन दोनों साधनों से मेरे अन्तःशत्रुओं का विनाश कर।

८. येन देवा असुरान् प्राणुदन्त येनेन्द्रो दस्यूनधमं तमो निनाय। तेन त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात् प्रणुदस्व दूरम्॥१७॥

उक्त साधनों से विद्वान् आसुरी भावों को मिटाते हैं। हे सत्संकल्प, उन्हीं साधनों से मेरे अन्तःशत्रुओं को मेरे शरीर और लोक से हटा दे।

९. यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावदापः सिष्यदुर्यावदग्निः। ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि॥२०॥

आकाश, भूमि, जल, परमाणु और तेजोमय पदार्थ दूर-दूर तक विस्तृत हैं। सत्संकल्प उन सब से बड़ा है। मैं उसे नमस्कार करता हूँ।

१०. यास्ते शिवास्तन्वः काम भद्रा याभिः सत्यं भवति यद् वृणीषे। ताभिष्ट्वमस्माँ अभि संविशस्वान्यत्र पापीरप वेशया धियः॥२५॥

हे सत्संकल्प, तेरी कल्याणकारी और सुखकारी शक्तियों से जगत् की रचना होती है। स्वयं तू जगत् की रक्षा करता है। हमें उन्हीं शक्तियों से भर दो और बुरी वृत्तियां हम से दूर कर।

इन मन्त्रों में हमने देखा कि सत्संकल्प से सृष्टि की रचना और रक्षा होती है। सत्संकल्प आकाश, भूमि आदि सब पदार्थों से बड़ा है। वह हमारे अन्दर है। अज्ञान और निराशा घोर अंधेरे के समान हमारे अन्तःशत्रु हैं। अन्तः-शत्रुओं पर सत्संकल्प से विजय प्राप्त करके आगे बढ़ना युवकों का काम है।

हम होंगे कामयाब एक दिन, हमको पूरा है विश्वास।

यह युवकों का गीत होना चाहिये।

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष : दान की अपील

पंजाब की आर्य-हिन्दू जनता अभी भी संकट में है। आतंकवादी हत्यारों के भय से अभी भी लोग पंजाब छोड़कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र जा रहे हैं। ये लोग आर्यसमाज मन्दिरों और सनातन धर्म मन्दिरों में डेरा डाले पड़े हैं। आपसे अपील है कि संकट के इस समय में इन लोगों की तन-मन-धन से सहायता करें।

धन और सामान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ के पते पर भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

सम्पादकीय

नमस्ते : अभिवादन का प्रतीक

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने आर्य जाति को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से बांधने के लिए वेद और वेदांगों का सहारा लिया। उन्होंने निर्देश किया कि आपस में मिलने पर हम एक-दूसरे को नमस्ते कहें। अभिवादन का यही ढंग आदिकाल में सर्वत्र चलता था। सभी लोग इसे अपनाने में गौरव मानते थे। वेद-शास्त्रों में सर्वत्र इसी का प्रयोग है। महर्षि ब्रह्मा से लेकर महर्षि जैमिनि पर्यन्त अभिवादन में सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग होता था।

नमस्ते संस्कृत भाषा का शब्द है। इसी लिए एक-दूसरे का सम्मान करने की दृष्टि से इसी का प्रयोग होता था। इस पर आपत्ति करने का किसी ने साहस ही नहीं किया। इसके जन्म काल से आज तक इसके विरुद्ध किसी ने कोई शब्द नहीं कहा। छोटा अपने से बड़ों का आदर इसी शब्दसे करता आया है। इसी शब्द को महर्षि दयानन्द ने अपनाने की अपील की।

नमस्कार या नमस्कारम् का शब्द भी प्रयोग होता था, परन्तु इन शब्दों का लोग भगवान् के पूजन में प्रयोग करते थे—आपस में इसका प्रयोग नहीं करते थे।

नमस्ते शब्द का प्रयोग करने का आदेश महर्षि दयानन्द जी ने क्यों दिया? क्योंकि उस समय राम-राम, जय सीताराम, जय कृष्ण आदि अनेकों प्रकार से आर्य लोग अभिवादन करते थे। ये शब्द हमारे पतनकाल की देन थे, जिन्हें दयानन्द जी ने अवैदिक समझकर छोड़ दिया। महर्षि का एकमात्र लक्ष्य आर्य जाति को इसके प्राचीन धर्म तथा सामाजिक परम्पराओं पर ले जाना था।

नमस्ते शब्द के दो भाग हैं—नमः ते। संस्कृत के विद्वान् जानते हैं कि 'ते' शब्द का अर्थ है 'तुम्हारे लिए' या आदर में आप के लिए। इस प्रकार नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम आप के लिए नमः करते हैं। नमः सत्कार, श्रद्धा के साथ किसी के सम्मुख झुकना आदि के अर्थ में आता है। नमस्ते का अर्थ हुआ कि हम एक-दूसरे का आदर करने के लिए झुकते हैं।

आर्य लोग अपने अभिवादन के समय अपने दोनों हाथ जोड़कर अपने हृदय के पास लाते हैं और अपना सिर झुकाकर नमस्ते शब्द का उच्चारण करते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति अपने हृदय, मस्तिष्क तथा हाथों की शक्ति से आगन्तुक का आदर करता है। कहने का तात्पर्य यह कि नमस्ते कहने वाला अपनी सम्पूर्ण शक्ति से आपके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता है।

सन् १८९३ में जब शिकागो (अमरीका) में सर्वधर्म सम्मेलन हुआ तो उसमें सबसे पहले यही निर्णय किया गया कि सम्मेलन में भाग लेने वाले आपस में अभिवादन के लिए किस शब्द का प्रयोग करें। आर्यसमाज की ओर से वेदों के विद्वान् पं० अयोध्याप्रसाद जी ने नमस्ते को प्रस्तुत किया। उनकी बात सुनकर सभी लोगों ने इसे स्वीकार किया।

मुरादाबाद में महर्षि जी से नमस्ते शब्द पर श्री इन्द्रमन जी की बातें हुई। महर्षि ने उन्हें कहा कि—'इन्द्रमन जी, अभिमानी पुरुष बड़ा नहीं होता। बड़ा वही है, जिसने अपने अहंकार को जीता। जो वास्तव में बड़े हैं वे अपने बड़प्पन को आप प्रकट नहीं करते। हमारे पूर्व जनों में जितने भी ऋषि-महर्षि और राजा-महाराजा हुए हैं, उनमें से एक ने भी अपने मुख से अपनी बड़ाई नहीं की।

नमस्ते का अर्थ पैर पकड़ना नहीं है। इसका अर्थ है सम्मान-सत्कार करना। सभी ऊंचे-नीचे और छोटे-बड़े मेल मिलाप में समान सत्कार के भागी हैं। सर्वत्र होता भी ऐसा ही है। अच्छा, आप ही अपने अन्तःकरण में कहें कि जब कोई मनुष्य आपके आवास पर आता है तो उस समय आप के हृदय में क्या भाव उत्पन्न होता है। श्री इन्द्रमन जी मौन रहे। तब स्वामी जी ने फिर कहा कि महाशय इस बात को सभी जानते हैं कि जब कोई पूज्य और प्रतिष्ठित मनुष्य घर पर आता है तो उसे देखकर अभ्युत्थान और झुक-कर सम्मान देने को मन करता है। पुत्र से प्यार करने का भाव उत्पन्न होता है, नौकर चाकरों को अन्न जल और आइये-बैठिये आदि शब्दों से सत्कृत करने की प्रेरणा होती है। ऊपर कहे सारे भावों का प्रकाश नमस्ते से हो जाता है, परन्तु उस समय परमेश्वर का नाम लेना असगत है। आत्मगत भावों के विपरीत है। जो भाव भीतर हो, उसी को प्रकट करना शोभा देता है। पुरातन काल में आर्य लोग नमस्ते ही कहा करते थे। यह शब्द वेदों में भी अनेक बार आया है। आर्य जनो में इसी का प्रचार होना चाहिए।

इसीलिए आपस में मिलने पर हमे नमस्ते कहकर ही अभिवादन करना चाहिए। नमस्ते शब्द वेद और शास्त्रों द्वारा मान्यताप्राप्त है। संक्षिप्त, सार्थक तथा कानों को अच्छा लगने वाला अभिवादन है। नमस्कार या नमस्कारम् नहीं। ●

....वर्ना खाली कर दो फौरन दिल्ली के सिंहासन को

सूरज करता नहीं दोस्ती तारों से अन्धियारों से।
मेल नहीं होता है जल का शोलों से अंगारों से॥
हाथ मिलाते नहीं सिंह जीवन में कभी सियारों से।
राष्ट्रभक्त समझौता करते नहीं कभी गद्दारों से॥
बुलेट प्रूफ केबिन के भाषण भाषण हैं, ललकार नहीं।
बुलेट प्रूफ जाकिट भी सुनलो मर्दों का हथियार नहीं॥
समझौतों की मेजों पर कोई उपचार नहीं होगा।
आत्मसमर्पण से गद्दारों का संहार नहीं होगा॥
या तो बनकर 'राम' मिटादो इस आतंकी 'रावण' को।
वर्ना खाली कर दो फौरन दिल्ली के सिंहासन को॥

—राजवीरसिंह 'क्रान्तिकारी'
अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग,
जे०एस० हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा

आर्यसमाज अनारकली का उत्सव : वैदिक सिद्धान्तों के अनुसरण पर बल

नई दिल्ली, १६ नवम्बर। आर्यसमाज अनारकली का गत एक सप्ताह से चल रहा वार्षिकोत्सव आज सम्पन्न हुआ। आज समारोह का अन्तिम दिवस था। अनारकली हाल प्रातःकाल से ही खचाखच भर गया।

समारोह के अन्तिम दिन आज प्रातःकाल यज्ञ की पूर्णाहुति हुई, जिसमें कई नर-नारियों ने आहुतियां डालीं। तत्पश्चात् ख्यातिप्राप्त एवं वेदविज्ञ विद्वानों के वेद पर आधारित प्रवचन हुए। प्रवचन देने वालों में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता आचार्य पुरुषोत्तम, "आर्य जगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार, डी० ए०-वी० कालेज कमेटी के नैतिक शिक्षा परामर्शदाता प्रो० रत्नसिंह, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य एवं उपकुलपति प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार आदि मुख्य थे। प्रवचनों में वेद की महत्ता तथा वर्तमान परिस्थितियों में वेद के सिद्धान्तों एवं उनके बताये गये मार्ग का अनुसरण करने पर बल दिया गया।

आर्यसमाज के प्रचारकों ने अपने मधुर भजन सुनाकर जनता को भाव विह्वल कर दिया। समारोह में आर्यसमाज एवं डी० ए०-वी० आन्दोलन की गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला गया।

तदनन्तर आर्यसमाज के प्रांगण में चल रहे ऋषिलंगर में सब नर-नारियों ने सम्मिलित प्रीतिभोज किया।

१८ आर्य प्रचारक सम्मानित

नई दिल्ली। आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग के तत्त्वावधान में उसके वार्षिकोत्सव पर १८ वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशकों और प्रचारकों को सम्मानित किया गया।

समारोह का सभापतित्व स्वामी सत्यप्रकाश जी ने और कार्यक्रम का संयोजन प्रो० रत्नसिंह ने किया। प्रारम्भ में आर्यसमाज "अनारकली" के प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी व मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने सभी भजनोपदेशकों का मालाओं द्वारा स्वागत किया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने प्रत्येक भजनोपदेशक को एक शाल व एक सहस्र रुपया भेंट किया। एक श्रद्धालु सज्जन श्री राधेश्याम अग्रवाल ने, (जो इससे पहले कभी आर्यसमाज में नहीं आये थे) प्रत्येक भजनोपदेशक को १५०-१५० रु० भेंट किये।

इस दृश्य से भाव-विभोर होकर पटेल नगर की एक आर्य महिला श्रीमती चेतनदेवी ने प्रत्येक भजनोपदेशक को अपनी ओर से ५०-५० रु० भेंट किये।

इस समारोह के लिए और भजनोपदेशकों के सम्मान के लिए पुराने भजनोपदेशक ८४-वर्षीय श्री आशानन्द जी ने बीस हजार रु० खर्च किये। उन्होंने आगामी ५ वर्ष तक इसी प्रकार बीस-बीस हजार रु० देने का संकल्प प्रकट किया। श्री सूरी और श्री सहगल ने उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री शिवकुमार शास्त्री, श्री क्षितीश वेदालंकार और श्री शान्तिलाल सूरी ने अपने विचार प्रकट किये। अन्त में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने सुझाव दिया कि दिल्ली की आर्यसमाजें मिलकर दो लाख रुपये की स्थिर निधि स्थापित करें, जिसके ब्याज से प्रतिवर्ष बीस आर्य विद्वानों, प्रचारकों और लेखकों को सम्मानित किया जा सके।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को २१०० रु० की थैली भेंट

फरीदाबाद। १६ नवम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दयानन्द कालेज फार वीमैन के प्रांगण में राष्ट्रीय एकता सप्ताह का शुभारम्भ करते हुए सरकार से मांग की कि उसने जनता को जो वचन दिये हुए हैं, उन्हें शीघ्र पूरा किया जाये। पंजाब में बढ़ती हुई हिंसा पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा—सरकार को उग्रवाद, आतंकवाद और विघटनकारी शक्तियों को दृढ़ता से काबू करना चाहिये और सुरक्षा पट्टी बनाने के कार्य को तेजी से पूरा करना चाहिये।

स्वामी जी ने अपनी इस मांग को दोहराया कि पंजाब की बरनाला सरकार को तत्काल बर्खास्त कर दिया जाये, क्योंकि वह पूर्णतः असफल हो चुकी है। पंजाब पुलिस आतंकवादियों और उग्रवादियों से मिलीभगत के कारण वहां की अल्पसंख्यक जनता का विश्वास खो चुकी है, अतः उसे वहां से तुरन्त अन्यत्र स्थानान्तरित किया जाये।

स्वामी जी ने महाविद्यालय की कन्याओं को प्रेरणा दी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव समाज को जो प्रेरणाप्रद शिक्षायें दी हैं, हमें उनपर आचरण करना चाहिए। तभी राष्ट्रीय एकता सप्ताह का महत्त्व है।

इस अवसर पर स्वामी जी को २१०० रुपयों की थैली भेंट की गई।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री भी सभा में उपस्थित थे।

पाकिस्तान में कादियानियों पर अत्याचार

सन् १९८४ में पाकिस्तान के राष्ट्रपति जियाउलहक ने कादियानियों (जिन्हें मिर्जाई अथवा अहमदी भी कहा जाता है) के विरुद्ध एक नया अध्यादेश जारी किया।

इस अध्यादेश के बाद जो कुछ हुआ, उसका संक्षिप्त विवरण पाठकों ने पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ा होगा। अहमदियों की अजान बन्द हो गई, उनकी मस्जिदें ध्वस्त कर दी गईं, मस्जिदों में लिखा हुआ तौहीद का कलमा मिटा दिया गया, नमाजियों को नमाज पढ़ते समय गिरफ्तार करके जेल में डाला गया और यदि अहमदियों के सीने पर कलमे के बैज लगे देखे गये, तो उन्हें कैद कर लिया गया। कई अहमदियों पर तबलीग (धर्म परिवर्तन) का आरोप लगाकर उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया अथवा उनपर झूठे मुकद्दमे चलाये गये। जो लोग जेल में रखे गये, उनपर तरह-तरह के अत्याचार किये गये।

अहमदियों ने इस अध्यादेश के औचित्य को चुनौती देते हुए दावा दायर किया। इस मुकद्दमे को सिविल कोर्ट से हटाकर सैनिक न्यायालय में स्थानान्तरित किया गया और इस विशेष मुकद्दमे के लिए इस अदालत को शरई अदालत का नाम दिया गया। अहमदियों के एक वकील मुजीबुर्रहमान एडवोकेट ने कई दिन तक प्रतिदिन ५-५ घण्टे खड़े होकर कुरान, हदीसों और उलेमाओं के प्रमाणों के साथ युक्तियुक्त और तर्कपूर्ण बहस करके यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि यह अध्यादेश इस्लामी शिक्षाओं के सर्वथा विरुद्ध है, लेकिन यह सारी बहस अनसुनी कर दी गई। अदालती कार्रवाई बन्द कमरे में हुई थी और उसे अत्यन्त गुप्त रखा गया था। यदि अदालती कार्रवाई प्रकाशित कर दी जाती तो आम जनता के मन-मस्तिष्क में अहमदियों के लिए सहानुभूति पैदा हो जाती। बस, फैसला अहमदियों के विरुद्ध ही हुआ।

यह बर्बरता है। जहां मजहब के नाम पर किसी वर्ग पर अत्याचार होता हो, वहां की सरकार धर्मनिरपेक्ष नहीं कहला सकती। भारत में सब को मजहबी आजादी है। कानून एक दूसरे के विरुद्ध आवाज उठाने अथवा एक-दूसरे से घृणा करने की अनुमति नहीं देता। इसके विपरीत अपने ही समानधर्मा और स्वदेशवासी भाइयों को काफिर घोषित करके उनपर तरह-तरह के अत्याचार करना धर्म तो क्या मानवता के भी विरुद्ध है। यदि इस्लाम की यही शिक्षा है, तो ऐसे मजहब को दूर से ही सलाम।

—सादिक (अहमदी जमाअत)
अब्दुल्लापुर (आन्ध्र प्रदेश)

हवन-यज्ञ की महिमा

—आर० सी० गोयल बी० ए०, वेदमार्तण्ड

स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को मुख्य बताकर त्रैतवाद के सिद्धांत का, जो वेदों द्वारा प्रतिपादित है, प्रचार एवं प्रसार किया। आज विश्व में अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद आदि अनेक वाद चल रहे हैं, जो सिद्धान्ततः वेद विरुद्ध हैं। आर्य-समाज केवल वैदिक सिद्धांत त्रैतवाद को मानता है, जैसा ऋग्वेद के १/१६४/२० में स्पष्ट प्रतिपादित है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

अर्थात् सुन्दर पंखों वाले समान आयु वाले दो मित्र समान रूप से वृक्ष का आलिंगन कर रहे हैं। उनमें से एक स्वादिष्ट पिप्पल का आस्वादन कर रहा है। दूसरा भोग न करता हुआ भी आनन्द प्राप्त करता है। इसमें वृक्ष प्रकृति है और पिप्पल उसके भोग्य पदार्थ हैं। आस्वादन करने वाला पक्षी जीव है तथा भोग न करने वाला दूसरा पक्षी ईश्वर है। इस प्रकार ईश्वर, जीव व प्रकृति तीनों अनादि हैं।

संसार में ईश्वर एवं जीव के साथ-साथ प्रकृति भी बहुत महत्त्वपूर्ण है, जिसका यज्ञ से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रकृति में पांच तत्त्व होते हैं, जिन्हें महाभूत कहते हैं। ये पंचतत्त्व इस प्रकार हैं—

(१) अग्नि (२) वायु (३) आकाश (४) जल और (५) पृथ्वी।

ये पंचतत्त्व अपने-अपने स्वरूप के अनुसार तीन गुणों में विभक्त हैं। गुणत्रय निम्नलिखित हैं—

(१) सात्त्विक (२) राजसिक और (३) तामसिक

अब हम उपरोक्त पांच महाभूतों को उनके गुणों के अनुसार जानेंगे। अग्नि सात्त्विक पदार्थ है। इसमें राजसिक और तामसिक तत्त्व बिल्कुल नहीं हैं। अग्नि सदैव ऊर्ध्वगामी है। इसकी लपटें कभी भी नीचे नहीं जातीं। वायु राजसिक तत्त्व है। वायु कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी अगल, कभी बगल चलता है, इसलिए वह पूर्णतः राजसिक है।

पानी सदैव अधोगामी है, इसलिए गुण के अनुसार वह पूर्णतः तामसिक है पृथ्वी भी घोर तामसिक है। एक ढेला ऊपर फेंकिये तो वह तुरन्त नीचे गिरता है। इसलिए पृथ्वी को घोर तामसिक कहा है।

अब यह सिद्धान्त प्रतिपादित हुआ कि सात्त्विक वस्तु की उपासना करने से मनुष्य में सात्त्विक तत्त्वों का उदय होता है और तामसिक तत्त्वों की पूजा करने से तामसिक वृत्तियों का उदय होता है।

मूर्तिपूजा पृथ्वी तत्त्व की पूजा है, इसलिए इसमे सात्त्विक भावनाओं का उदय होना कदापि सम्भव नहीं। इस प्रकार अग्नि की उपासना करना यानी यज्ञ करना एक सात्त्विक कार्य है और इससे मनुष्य में सात्त्विक भावनाओं का उदय होता है। यह एक वैदिक तथ्य है।

यज्ञ की क्रिया मुख्य रूप से अग्नि से सम्पादित होती है। अग्नि को वेद में एक देवता कहा है, जो देखने में तो हरेक वस्तु को जला देता है, लेकिन वास्तव में वह वस्तु नष्ट नहीं होती। अग्नि एक सात्त्विक तत्त्व है और सात्त्विक तत्त्व ऊर्ध्वगामी और सदैव परोपकार करने वाला होता है। अग्नि में यह खास गुण है कि वह वस्तु को परमाणु में बिखरा देता है। उदाहरणार्थ एक चावल जला तो वास्तव में वह चावल नष्ट नहीं हुआ। बल्कि वह परमाणुओं में विभक्त हो गया। यदि हम एक चावल के अग्नि द्वारा बिखरा दिये गये परमाणुओं को किसी विधि से जमा करें, तो वे एक चावल के रूप में आ जायेंगे। हमारे वेद ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान के भी भण्डार हैं, जिनमें करोड़ों मोती भरे पड़े हैं। जैसे-जैसे वैज्ञानिक परीक्षण करते हैं, वैसे-वैसे उन्हें एक-एक मोती मिलता जाता है, जैसे आइन्स्टाइन को सापेक्षवाद का मोती मिला। इसी प्रकार वैज्ञानिक लाखों-करोड़ों वर्ष तक खोजते रहेंगे और एक-एक करके मोती पाते रहेंगे।

अतः जैसा ऊपर के पैराग्राफ से ज्ञात हुआ कि अग्नि में जो भी डाली जायेगी, वह नष्ट नहीं होगी, सिर्फ उसका स्वरूप बदल जायेगा। जैसे लकड़ी, कोयला, तेल, पेट्रोल, कपास, गेहूं, चना, जौ, इत्यादि जो भी वस्तुएं जलती हैं, वे सूक्ष्म रूप से वायुमण्डल में व्याप्त रहती हैं। ये सूक्ष्म परमाणु वर्षा के साथ पृथ्वी पर बरस जाते हैं। जहां-जहां उनका आकर्षण क्षेत्र होता है, वे वहां वहां चले जाते हैं। जैसे मिट्टी का तेल तेल के परमाणुओं को आकर्षित कर लेता है। गेहूं के परमाणु जब मिट्टी पर बरस जाते हैं तो गेहूं का बीज उन्हें आकर्षित करके फिर गेहूं की शक्ल में बदल देता है। इसी प्रकार दूसरे अन्न; तिलहन, दलहन, फल, शाक और सब्जी के बारे में समझ लीजिए। आजकल जो भौतिकवादी कहते हैं कि विश्व में एक दिन कोयला समाप्त हो जायेगा या पेट्रोल समाप्त हो जायेगा, वे बिल्कुल गलत कहते हैं। ऐसा न तो ब्रह्माण्ड में आज तक हुआ है और न होगा। न कभी कोयला खत्म होगा और न पेट्रोल खत्म होगा। यदि आज सारे संसार के व्यक्ति सोच लें कि हमें गेहूं का बीज समाप्त करना है और फलस्वरूप सभी जगह गेहूं को जला दिया जाता है तो भी गेहूं अवश्य पैदा होगा, क्योंकि गेहूं के परमाणु वायुमण्डल में विद्यमान हैं। अतः सिद्ध हुआ कि अग्नि द्वारा कोई वस्तु नष्ट नहीं होती।

अग्नि किसी वस्तु को नष्ट तो करती ही नहीं, उलटे वह उसकी शक्ति को सैकड़ों गुणा बढ़ा देती है। इसे समझने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेंगे। जैसे एक सूखी लाल मिर्च है। उसे एक व्यक्ति रोटी के साथ खाता है तो उसकी चरपराहट उसी को अनुभव होती है। उसके पास यदि कोई दूसरा व्यक्ति बैठा है तो उसे इसका कोई स्वाद नहीं आयेगा। लेकिन यदि हम उसी मिर्च को अग्नि में डाल दें तो वहां यदि १०० व्यक्ति भी बैठे होंगे तो उन सबको उस एक मिर्च की चरपराहट का स्वाद आ जायेगा। बल्कि यह चरपराहट इतनी तीव्र होगी कि वहां से सबको भागना पड़ेगा। इस प्रकार एक मिर्च की शक्ति अग्नि मे डालने से सैकड़ों गुणा बढ़ गई। यज्ञ में डाला हुआ पदार्थ दस-बीस गुणा नहीं, हजारों गुणा बढ़ जाता है। इसलिए वेदों में स्थल-स्थल पर निर्देश है कि हे मनुष्य, तू यज्ञ कर, जिससे तुझे अन्न, वनस्पति, पशु, प्रजा, धन, श्री और समृद्धि की प्राप्ति हो।

यज्ञ का आध्यात्मिक लाभ ही नहीं बल्कि यज्ञ से भौतिक लाभ भी है। यज्ञ से अन्न, औषधि, पशु, स्वर्ण, रत्न, पुत्र इत्यादि संसार के सब भौतिक सुख प्राप्त होते हैं। हमारे सामने उदाहरण है कि महाराजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया, तब उन्हें चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। पिछले जमाने में ऋषि, मुनि एवं राक्षस तक यज्ञों द्वारा मनचाही वस्तु या ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त कर लेते थे। सतयुग में कोई व्यक्ति बगैर यज्ञ या हवन किये भोजन नहीं करता था बल्कि हमारे वेद ने तो यहां तक कहा है कि जो व्यक्ति बगैर यज्ञ किये अन्न ग्रहण करता है वह पाप ही खाता है। इससे ज्यादा यज्ञ की महिमा कोई क्या बता सकता है, जो हमें वेद भगवान् ने बताई है।

आजकल नास्तिक व्यक्ति कुछ पाश्चात्य व्यक्तियों के बहकावे में आकर यदा-कदा अखबारों में निकलवाते हैं कि मनुष्य को तो घी या अन्न खाने को नहीं है, जबकि यज्ञों में इतने हजार या लाख का घी या सामग्री फूंकी गई। यह पढ़कर मुझे बहुत दुःख होता है और उन भारतीय भाइयों की बुद्धि पर तरस आता है, जो वेद विरुद्ध बातें करते हैं।

आर्यसमाज अग्नि की ... ज्ञानिक महत्त्व को सारे
संसार को बताना चाहता
समय कोई बुरी बात म
में उपस्थित हो और वह
कर्मों का, बुरी बातों क
अन्तरात्मा तुरन्त यह
ऊपर है—उसकी ग
जब मनुष्य अग्नि
तामसिक कार्य नहीं
"कृण्वन्तो विश्वमार्यं
घर यज्ञ होने लगेंग

स्वामी दयानन्द सरस्वती की छपरा-यात्रा-२

—डा० धनपति पाण्डेय—

ऋषि दयानन्द के प्रभावशाली सम्भाषणों ने ही नहीं, उनके शरीर-सौष्ठव ने भी छपरा के लोगों को आकर्षित किया। इस महापुरुष के व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण था। उनका आगे की ओर झुका सिर असाधारण मानसिक शक्ति का भान देता था, उनकी वशीकरण दृष्टि जिससे तेज टपकता था, उनके ओजस्वी और तर्कपूर्ण भाषण के ऊंचे स्वर, जो छपरा के मकानों की पुरानी मेहराबों मे गूंजता था, उनका भगवे रंग का चोला, जो सतयुग के प्राचीन ऋषियों का स्मरण कराता था और चमड़े की चप्पल की जगह पैरों मे पड़ी चन्दन की खड़ाऊ, जो चरित्र की पवित्रता की सुगन्ध फैलाती थी—ये सभी के सभी छपरा के नागरिकों के हृदय और मस्तिष्क को झकझोर डालने वाले थे। वे आर्य वाणी के श्रवण के लिए पागल होने लगे। ऋषि के मुख की गम्भीरता ने विरोधियों के हृदय मे भय और निराशा उत्पन्न कर दी और उनका मनोबल टूटने लगा।

अज्ञान पर ज्ञान की विजय

दयानन्द ने जब छपरा के नागरिकों को अपना समर्थक बना लिया, तब उन्होंने पण्डितों को वाद-विवाद के लिए ललकारा। अपना मिशन पूरा किये बिना वे छपरा छोड़ने वाले नहीं थे। स्थानीय पण्डितों ने अपनी सामाजिक और धार्मिक मर्यादा की रक्षा के लिए महर्षि से शास्त्रार्थ न करने मे ही बुद्धिमत्ता समझी। उन्होंने नगर के "महापण्डित" जगन्नाथ से आग्रह किया कि वह ऋषि से शास्त्रों पर वाद-विवाद करे। पण्डित जगन्नाथ अपने को ज्ञानी और महापण्डित मानता था। किन्तु वह मन ही मन दयानन्द के ज्ञान और आर्य विचारों से भयभीत हो चुका था। उसने शास्त्रार्थ मे अगुआई करने से इन्कार किया और अपने निकट आये ब्राह्मणों से कहा कि "यदि मैं (सभा में) जाऊंगा तो मुझे एक नास्तिक (दयानन्द) से बात करनी पड़ेगी और मेरा धर्म मुझे उसका मुख देखने की आज्ञा नहीं देता। इतना ही नहीं, प्रत्युत निषेध करता है। यदि मैं ऐसा करूंगा तो मुझे प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।" ब्राह्मणों मे अन्य कोई 'महापण्डित' न था, जो ऋषि से वेद अथवा धर्म के सत्यार्थ पर वाद-विवाद कर सके। अतः ब्राह्मणों का दल बिखर गया।

दयानन्द को उदासी हुई। छपरा मे बिना शास्त्रार्थ किये वे नगर का त्याग करने वाले नहीं थे। उन्होंने ब्राह्मणों को अपनी ओर से वाद विवाद की सभा का आयोजन करने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने उन्हे एक "शुभ सम्मति" दी। उन्होंने कहा कि "मेरे उस मुख के सामने पर्दा डाल दो, जिसे देखने से अभिमानी पण्डितों को पाप लगता है।" दयानन्द ने अपने अल्पकाल के छपरा प्रवास मे यह जान लिया था कि नगर और ब्राह्मणवाद का मोह जाल उन पर बिछा हुआ है। अतः उन्होंने झूठे धर्म के प्रति वहां के निवासियों का मोह भंग करना और उन्हें ज्ञान की सच्चाई से परिचित कराना आर्य धर्म माना। यही कारण था कि उन्होंने पर्दा डालने की बात चला कर ब्राह्मणों को वाद-विवाद से पलायन करने से रोका। पण्डित जगन्नाथ को अब बहाना बनाने का मौका भी नहीं मिला। वाद-विवाद मे सम्मिलित होने के सिवा अब दूसरा कोई विकल्प नहीं था। पण्डित को विवश होकर अपने शिष्यों के साथ दयानन्द की सभा मे शास्त्रार्थ करने के लिए आना पड़ा। दयानन्द और जगन्नाथ के बीच वास्तव में एक पर्दा डाल दिया गया।

छपरा मे आयोजित सभाओं मे यह सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण सभा थी, जो २५ मई, १८७३ को प्रारम्भ हुई और चार दिन तक निरन्तर दयानन्द के भाषण के साथ चल कर समाप्त हुई। सभा मे आई पण्डित मण्डली को देखकर स्वामी जी हर्षोल्लास से झूम उठे। आखिर वह दिन आ ही गया, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे। ऋषि के जीवन मे ऐसे अनेक दिन आये थे, लेकिन छपरा के इतिहास मे यह पहला ऐतिहासिक दिवस बना और नागरिकों के जीवन में मोड़ का एक महान् प्रबल बिन्दु दिवस। दयानन्द ने जगन्नाथ [illegible] से कुछ प्रश्न पूछे, जिनका जवाब "महापण्डित" न दे सके और प्रत्युत्तर में वे जो कुछ बोल पाये, उनमें भी व्याकरण-सम्बन्धी अनेक अशुद्धियों को एक-एक कर के दर्शकों और श्रोताओं के समक्ष शुद्ध किया और वाद-विवाद में [illegible] ज्ञान के खोखलेपन को दर्पण की तरह झलका दिया।

अन्ततोगत्वा पण्डित को निरुत्तर हो जाना पड़ा और आवाज उनके कण्ठ मे फंस गई। स्वामी जी ने न केवल पण्डित की पण्डिताई की धाक समाप्त की बल्कि समस्त सभा को यह विश्वास दिला दिया कि "वह नितान्त अज्ञानी और मिथ्या घमण्डी है।"

छपरा की विद्वत् मण्डली मे यह पण्डित जगन्नाथ की पराजय नहीं थी, अपितु अज्ञान पर ज्ञान की विजय थी, मिथ्या धर्म पर आर्य धर्म की विजय थी, असत्य पर सत्य की विजय थी। अज्ञान, पाखण्डवाद, अधार्मिक कर्मकाण्ड आदि सबने अपने घुटने टेक दिये थे। ज्ञान की ज्योति ने समस्त छपरा मे प्रकाश फैला दिया था। प्रचण्ड मार्तण्ड ने जन-जीवन मे उष्णता एवं ऊर्जा का समावेश कर दिया था।

सभा विसर्जन के बाद पण्डित जगन्नाथ सहित कुछ उपद्रवी ब्राह्मणों ने पुनः उपद्रव करने का विचार किया और स्वामी जी को जान से मार देने की धमकी दी। किन्तु ब्राह्मणों की बौद्धिक मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी, उनका मान-मर्दन हो चुका था, उनका तेज और मनोबल श्रीहीन हो चुका था। उनकी धमकी सिर्फ धमकी तक सीमित रही। दहाड़ते केसरी के समक्ष आने की उन्होंने पुनः हिम्मत न की।

दयानन्द का मिशन सफल हो चुका था। अतः उन्होंने छपरा का त्याग करने का निश्चय किया। जब तक वे छपरा मे रहे तब तक शिवगुलाम साहू बहादुर ने उनकी पूर्ण सेवा की और असामाजिक तत्त्वों से रक्षा भी की। ६ जून, १८७३ को स्वामी जी ने दानापुर प्रस्थान करने के लिए छपरा से यात्रा प्रारम्भ की। बहादुर ने यात्रा मे भी उनका साथ दिया और वह अपने संरक्षण मे उन्हे दूर तक छोड़ आया।

अपने छपरा-वास मे दयानन्द सरस्वती ने जिन कठिनाइयों तथा आपदाओं का सामना किया, व उनके लिए नई नहीं थी। ऐसी कठिनाइयों का सामना करने मे वे प्रसन्नता का अनुभव करते थे। वे तो उन लोगों से घृणा करते थे, जो डरपोक चरित्र वाले थे। आज भी छपरा के नागरिक इस महर्षि के ऋणी हैं, जिनके कारण उन्हें सद्ज्ञान मिला था। स्वामी जी के सन्देशों का प्रचार करने का उन्होंने उनके प्रस्थान के बाद व्रत ले लिया था। लेकिन उन्हे मार्ग नहीं मिल रहा था। १८७५ मे जैसे ही स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना की वैसे ही एक दशक के अन्दर उन्होंने भी १८८५ में छपरा में आर्यसमाज की स्थापना कर डाली। इसी वर्ष भारत के राजनैतिक जीवन में मोड़ लाने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भी स्थापना की गई थी।

जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश लिखने की प्रेरणा दी

राजा जयकृष्णदास सी० एस० आई०

—डा० भवानीलाल भारतीय—

महर्षि दयानन्द के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना के पीछे मुरादाबाद निवासी राजा जयकृष्णदास सी०एस०आई० की प्रेरणा थी। स्वामी जी से उनकी प्रथम भेंट १८७४ ई० में काशी में हुई। उस समय राजा साहब वहां डिप्टी कलक्टर के पद पर कार्यरत थे। वे स्वामी जी के विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए और उन्होंने उनसे निवेदन किया कि यदि वे अपने मन्तव्यों और उपदेशों को किसी ग्रन्थ के रूप में निबद्ध कर दें तो उससे अधिकाधिक लोगों को लाभ पहुंचेगा। स्वामी जी के व्याख्यानों और प्रवचनों का लाभ तो उन्हीं व्यक्तियों को मिल सकता है, जो उनके उपदेश सुनने का अवसर प्राप्त करते हैं। स्वामी जी को राजा साहब का यह सुझाव अत्यन्त उचित मालूम हुआ। उन्होंने स्वामी जी को यह भी आश्वासन दिया कि यदि ऐसा ग्रन्थ लिख दिया जाता है तो उसके मुद्रण व उसे प्रकाशित करने का सारा आर्थिक भार वे स्वयं वहन करेंगे।

तदनुकूल स्वामी जी ने काशी में ही १२ जून १८७४ को सत्यार्थप्रकाश लेखन का कार्य आरम्भ किया। उस समय तक स्वामी जी का हिन्दी भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सका था। तथापि उन्होंने ग्रन्थ रचना के महत्त्व को देखते हुए इस कार्य को प्राथमिकता दी। राजा महोदय ने सत्यार्थप्रकाश लिखने के लिए एक महाराष्ट्रीय पण्डित चन्द्रशेखर को नियुक्त कर दिया। स्वामी जी बोलते और पं० चन्द्रशेखर उसे लिपिबद्ध कर देते। यह सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण था, जो सन् १८७५ में प्रकाशित हुआ। इसके मुख पृष्ठ पर निम्न लेख मिलता है—

अथ सत्यार्थप्रकाश
श्री स्वामी दयानन्द रचित
श्री राजा जयकृष्णदास बहादुर सी०एस० आई० की आज्ञानुसार
मुन्शी हरिवंशलाल के अधिकार से इस्टार प्रेस मुहल्लः रामापूर में छापी गई। सन् १८७५, बनारस।

पुस्तक का मूल्य ३ रुपये था और प्रथमावृत्ति में १००० प्रतियां छपी थीं।

इस ग्रन्थ का हस्तलेख राजा साहब के परिवार में आज भी सुरक्षित है। परोपकारिणी सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री हरविलास सारदा ने प्रयत्नपूर्वक इस हस्तलेख की फोटो प्रति राजा साहब के पौत्र कुंवर जगदीशप्रसाद से प्राप्त की थी, जो इस सभा के ग्रन्थ संग्रह में विद्यमान है।

छपाने में शीघ्रता होने अथवा किसी अन्य कारण से सत्यार्थप्रकाश के इस संस्करण में ग्रन्थ के अन्तिम (१३वां और १४वां) समुल्लास नहीं छप सके, जिनमें क्रमशः इस्लाम और ईसाई मत की समीक्षा थी। इसी प्रकार ग्रन्थ के लिपिकर्ता पण्डित के पूर्वाग्रह के कारण इस संस्करण में मृतक श्राद्ध और मांसाहार के प्रकरण भी प्रवेश पा गये। जब ग्रन्थ छप गया और पाठकों तक पहुंच भी गया, तब स्वामी जी को इस काण्ड का ज्ञान हुआ और उन्होंने अपना लिखित वक्तव्य प्रकाशित कर यह स्पष्ट कर दिया कि वे न तो मृत व्यक्ति के लिए श्राद्ध या तर्पण के विधान को शास्त्रीय मानते हैं और न यज्ञों में पशु हिंसा को ही शास्त्रविहित मानते हैं। जब इस प्रसंग में स्वामी दयानन्द के जीवनी लेखक पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने राजा जयकृष्णदास से जानकारी चाही, तो उत्तर में स्वयं राजा साहब ने लिखा—"सत्यार्थप्रकाश में जो मत स्वामी जी का लिखा था जो कुछ पीछे परिवर्तित हुआ, उसके लिए स्वामी जी इतने उत्तरदाता नहीं हैं। स्वामी जी को उस समय प्रूफ देखने का अवकाश ही नहीं था। पहले-पहल स्वामी जी सभी लोगों को अच्छा समझकर उनका विश्वास कर लेते थे। हो सकता है कि लेखक वा मुद्रक द्वारा यह सब मत सत्यार्थप्रकाश में छप गया हो और यह भी हो सकता है कि उनका मत पीछे से परिवर्तित हो गया हो।" राजा साहब के उक्त कथन में इतना तो सत्य है कि ग्रन्थ के लिपिकर्ता अथवा मुद्रक ने मृतक श्राद्ध समर्थन और मांसाहार विधान के वाक्य इस ग्रन्थ में मिला दिये होंगे, किन्तु उनका यह कथन सत्य से कोसों दूर है कि स्वामी जी का यह मत पहले रहा होगा, जो कालान्तर में बदल गया। हमारी धारणा का प्रबल कारण यह है कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन से पहले भी स्वामी जी उपर्युक्त दोनों विषयों के सम्बन्ध में अपना निर्णायक मत स्थिर कर चुके थे। वे मृतकों के श्राद्ध-तर्पण और यज्ञों में पशुहिंसा के प्रारम्भ से ही घोर विरोधी थे और आजीवन रहे।

जब-जब मुरादाबाद में स्वामी जी का पदार्पण होता था, वे राजा जयकृष्णदास की कोठी पर ही ठहरते थे। १८७६ ई० के नवम्बर मास में मुरादाबाद आने पर इसी कोठी में उनके ५-६ व्याख्यान हुए थे। ३ जुलाई १८७९ को वे पुनः इस नगर में आये और राजासाहब के ही अतिथि बने। यहीं मुरादाबाद आर्यसमाज की प्रथम स्थापना हुई, जब २० जुलाई १८७९ को राजा साहब की कोठी के उद्यान के एक भाग में हवन कुण्ड खोदा गया और वहां यज्ञ करने के साथ आर्यसमाज की स्थापना का समारोह आयोजित किया गया। उसी समय भयंकर वर्षा हो जाने के कारण बाग के खुले स्थान पर यज्ञ करना तो सम्भव नहीं हुआ, किन्तु नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मुरादाबाद आर्यसमाज की स्थापना हो गई।

राजा साहब के प्रति अपने प्रीतिभाव और विश्वास के कारण स्वामी दयानन्द ने उन्हें अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का सभासद् मनोनीत किया। उन्होंने सभा के अधिवेशनों में तीन बार भाग लिया था। ●

तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी-२

– भोलानाथ दिलावरी –

भारत विभाजन से पूर्व अमृतसर में मुसलमानों की बड़ी संख्या थी। मुस्लिम गुण्डे प्रायः काफी करतूतें करते ही रहते थे। वे प्रायः हिन्दू नारियों पर बुरी दृष्टि रखते तथा उनका बलात् अपहरण भी करते ही रहते थे। श्री देवप्रकाश जी के नेतृत्व में आर्य युवक निर्भय होकर मुसलमानों के मोर्चों और उनके बहुसंख्यक गली-कूचों एवं मस्जिदों में जा घुसते और जीवन का मोह छोड़ अपहृत देवियों को जब तक प्राप्त न कर लेते, वहीं डटे रहते थे। इस प्रसंग में एक घटना उल्लेखनीय है।

एक दिन हमारे आचार्य देवप्रकाश जी और ज्ञानी पिण्डीदास जी बाजार कर्मों ड्योढ़ी से गुजर रहे थे तो उन्हें सूचना मिली कि आज जुम्मे की नमाज के बाद "खैरदीन की मस्जिद" में एक हिन्दू युवती को मुसलमान बनाया जायेगा। बस फिर क्या था। वे दोनों अपना काम भूलकर मस्जिद की ओर बढ़े। यह जानकर एक मुसलमान लड़का उनके आगे दौड़ा गया ताकि मस्जिद में समाचार पहुंचा दे। मस्जिद में उस समय १० हजार से ऊपर ही उपस्थिति थी परन्तु आर्यसमाज का इतना आतंक था कि मुसलमानों का सारा प्रोग्राम स्थगित हो गया। उस लड़की को वहां से निकाल कर दो मुसलमान टांगे में बैठा कर कहीं और ले जाने लगे। उसी समय निर्भीक आचार्य देवप्रकाश जी और ज्ञानी पिण्डीदास जी तांगे के पीछे दौड़ते चले गये। अन्ततः कोतवाली से खोती अहाते की ओर तांगा फेर लिया गया। इससे हमारे दोनों वीरों की आंखों से तांगा ओझल हो गया। निराश तो हुए, मगर हताश नहीं। दोनों जब अरोड़ियों वाली बस्ती से लांघ रहे थे तो देखा कि एक छोटे-से टूटे-फूटे पुराने मकान के दरवाजे पर लगा ताला हिल रहा था। उन्होंने अनुमान लगा लिया कि हो न हो लड़की इसी मकान में बन्द होगी।

आचार्य देवप्रकाश जी तो बाहर खड़े रहे और ज्ञानी जी ने साथ वाले मकान पर से नीचे झांक कर देखा तो कोई देवी अन्दर बैठी है। ज्ञानी जी ने आकर आचार्य जी को बताया। तब उन्होंने ताला तोड़कर उस देवी को अपने साथ लेकर मुन्शीराम सराफ, कटड़ा कन्हैया की दुकान पर बैठाया तथा उसे हर प्रकार से सान्त्वना और सहायता देने का वचन दिया। पूछने पर पता चला कि यह लड़की पटियाला के एक प्रतिष्ठित सरदार साहब की पुत्री है। तब उन्होंने पिता को तार देकर बुलाया और लड़की उनके हवाले कर दी। ऐसी बीसियों घटनाओं में हमारे इन वीर निर्भय युवकों ने सफलतापूर्वक काम किया और आर्यसमाज का मुसलमानों पर आतंक बनाये रखा।

साम्प्रदायिक दंगे

मुलतान के मतान्ध मुसलमानों ने जब मुहर्रम के दिनों में ताजिये निकाले तो एक ताजिये की चोटी पीपल के वृक्ष से टकरा गई। बस फिर क्या था, मुसलमानों ने फिसाद किया और लूटमार शुरू कर दी। हिन्दुओं और सिखों के मकानों तथा दुकानों को भी लूटा गया, मन्दिरों-गुरुद्वारों को तोड़ा गया तथा ग्रन्थ साहिब एवं अन्य धार्मिक पुस्तकों को जलाया गया। मूर्तियों का विध्वंस किया गया और कितने ही हिन्दू-सिखों की हत्या भी की गई। कांग्रेसियों की निद्रा भंग हुई तो एक जांच कमेटी वहां भेजी गई, जिसने दुर्भाग्य से मुसलमानों को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया। इससे आर्य-हिन्दुओं की तसल्ली न हुई। तब वीर साहसी आचार्य जी को मुलतान भेजा गया। उन्होंने कर्फ्यू में भी हर प्रकार का भय मोल लेकर जांच की। तीन-चार दर्जन फोटो भी लिये, जो समाचारपत्रों को प्रकाशनार्थ भेजे गये। इस प्रकार कांग्रेस की पक्षपाती रिपोर्ट का भण्डा फोड़ हो गया। यह सन् १९२१ की घटना है।

इसी प्रकार मालाबार में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अपना क्रोध निकाला। हजारों हत्यायें, अग्निकांड, अपहरण, बलात्कार और धर्मान्तरण हुए। सरकार ने इन समाचारों पर प्रतिबन्ध लगा दिया ताकि हिन्दुओं को इन अत्याचारों का पता ही न चले। ये दुर्घटनायें अगस्त १९२१ में घटित हुईं परन्तु ६-७ मास तक भी इनका पता न चल सका। जब ये समाचार महात्मा हंसराज जी को मिले तो वे बहुत बेचैन हुए। तब उन्होंने महाशय खुशहालचन्द जी (महात्मा आनन्दस्वामी) से सम्पर्क किया और आर्य जनों की एक टोली को वहां भेजा, जिन्होंने बलात् धर्मच्युत भाई-बहनों को (जिनकी संख्या २५०० से ३००० तक थी) पुनः स्वधर्म में दीक्षित किया। मन्दिरों की मरम्मत की गई और मूर्तियों को पुनः स्थापित किया गया इधर अमृतसर में आचार्य जी ने आर्य युवक समाज के वीरों का एक कैम्प लगाकर प्रचार आरम्भ किया। जलूस शहर के बाजारों तथा गलियों से निकाले जाते और शहर के हिन्दुओं को मालाबार के हिन्दुओं पर मुसलमानों के जुल्म ढाने की सूचनायें दी जातीं तथा फण्ड के लिए अपील भी की जाती। इसी उपलक्ष्य में रात को आर्यसमाज लोहगढ़ (अमृतसर) में व्याख्यान रखे जाते।

हिन्दू शुद्धि सभा

अमृतसर में मुसलमानों का एक जलसा सन् १९२३ में हुआ। उसमें गांधी और कांग्रेस पर आरोप लगाया गया कि वे मुसलमानों से धोखा कर रहे हैं और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों मुसलमानों को काफिर बना रहे हैं। आगरा, मथुरा और भरतपुर में धोखे से मुसलमानों को हिन्दू बनाया जा रहा है। ये समाचार जब आचार्य जी को मालूम हुए तो वे तत्काल इस समाचार की सच्चाई जानने के लिए आगरा चल पड़े। वहां जाकर छानबीन की गई तो पता चला कि शाहपुराधीश महाराजा नाहरसिंह जी की अध्यक्षता में क्षत्रिय महासभा का एक सम्मेलन ३१ दिसम्बर, १९२२ को हुआ, जिसमें निश्चय हुआ कि इस्लामी शासन में जो राजपूत मुसलमान बना लिये गये थे, वे यदि शुद्ध हो जायें तो राजपूत उन्हें प्रसन्नता पूर्वक अपने-अपने गोत्र में मिला, रोटी-बेटी का व्यवहार भी करने लगेंगे। बस, इतनी सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर मुसलमान शोर मचाने लग पड़े। इस अवसर से लाभ उठाने के विचार से आगरा में आर्यसमाज की एक बैठक आचार्य जी ने आयोजित की, जिसमें निर्णय किया गया कि भारत भर के आर्य नेताओं को बुलाकर उनके सहयोग और परामर्श से एक संगठन द्वारा विशाल शुद्धि अभियान आरम्भ कर दिया जाये। १७ फरवरी सन् १९२३ को चुने हुए आर्य नेता आगरा पहुंचे, जिनमें उल्लेखनीय स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा खुशहालचन्द जी थे। सबकी सम्मति से इस नये संगठन का नाम भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा रखा गया। इसके प्रधान श्रद्धानन्द जी और हंसराज जी नियुक्त हुए। आचार्य देवप्रकाश जी महामन्त्री नियुक्त हुए। उसकी पहली बैठक में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इच्छा प्रकट की कि तीन दिन में तीन हजार रुपया इकट्ठा कर नियमित रूप से कार्यालय का उद्घाटन होना चाहिए। इसी में आर्यसमाज का गौरव और सम्मान होगा। सब चुप थे, किन्तु आचार्य जी ने साहसपूर्वक घोषणा की, "मुझे अमृतसर जाने की अनुमति दी जाये। मैं तीन दिन में ही यह राशि लेकर उपस्थित हो जाऊंगा।" अमृतसर पहुंचते ही आप डा० सन्तराम जी अरोड़ा एवं अन्य साथियों से मिले। अरोड़ा जी के प्रयत्नों से एक दिन में ही तीन हजार रुपये एकत्रित करके घर वालों को बिना बताये वापस आगरा पहुंच गये। वहां शुद्धि सभा का कार्यालय खुल गया और शुद्धि का कार्य आरम्भ कर दिया गया। अब श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु अमृतसर से विद्यार्थियों सहित वहां पहुंच गये। महात्मा हंसराज जी भी वहां गये। आचार्य जी का परिवार भी वहां बुला लिया गया। पं० विश्वबन्धु ब्राह्म महाविद्यालय के अपने छात्रों सहित; डी. ए.-वी. कालेज की ओर से पं० मस्तान चन्द जी बी. ए., पं० सरस्वतीनाथ, पं० रामगोपाल शास्त्री, पं० भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर, डा० आशानन्द आदि ने भी आगरा डेरे डाल दिये। शुद्धि का कार्य जोरों से चलने लगा। अजमेर से कुंवर चांदकरण शारदा एवं पं० रामसहाय जी भी आ गये। पंजाब के प्रायः सभी स्थानों से एक-एक दो-दो सज्जन सहयोगार्थ पहुंच गये। श्री अजीत सिंह जी अरोड़ा भी साथ देने के लिए आ गये।

(शेष पृष्ठ १० पर)

मूर्त्तिपूजा क्यों न करें ?

श्रीमद्भागवत में मूर्तिपूजा का खण्डन

परमेश्वर की उपासना के स्थान पर जड़ मूर्त्ति की पूजा करने वाले श्रीमद्भागवत पुराण को परम प्रमाण मानते हैं, किन्तु उसमें मूर्तिपूजा करने वालों को मूढ़ बताते हुए लिखा है—

मृच्छिला-धातु-दार्वादिमूर्तावीश्वरबुद्धयः।
क्लिश्यन्ति तपसा मूढाः परां शान्तिं न यान्ति ते ॥

अर्थात् जो व्यक्ति मिट्टी, पत्थर, धातु, लकड़ी आदि की बनी मूर्त्तियों में ईश्वर बुद्धि करते हैं अर्थात् ईश्वर मानकर उनकी पूजा करते हैं, वे सदा ही कष्ट पाते रहते हैं और उन्हें कदापि शान्ति प्राप्त नहीं होती।

शतपथ ब्राह्मण में मूर्तिपूजक को साक्षात् पशु बताया है

वेदों के पश्चात् वेदों के व्याख्या-ग्रन्थों में ब्राह्मण ग्रन्थों का विशेष स्थान है। शतपथ ब्राह्मण कां० १४ में लिखा है—

'योऽन्यां देवतामुपास्ते न स वेद। यथा पशुरेव स देवानाम्।'

समस्त मनुष्यों को एक सर्वान्तर्यामी परमेश्वर की ही उपासना का विधान किया गया है। जो उस परमेश्वर से भिन्न किसी अन्य एकदेशी देवी या देवता की उपासना करता है, वह अपने उपास्य देव को नही जानता और वह मनुष्यों में पशु के समान ही है।

यजुर्वेद मे मूर्त्तिपूजा का खण्डन

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते ॥

जो उपासक लोग प्रकृति से बने जड पदार्थों की पूजा करते हैं, वे घोर अन्धकारमय लोकों में जन्म लेते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में मूर्त्तिपूजा का खण्डन

अवजानन्ति मां मूढा मानुषी तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ (गीता ९।११)

परमेश्वर के समस्त भूतों में व्यापक स्वरूप को न जानने के कारण मूढ़ मनुष्य मुझे राम, कृष्ण आदि मनुष्य शरीरबद्ध मानकर मेरा महान् अपमान करते हैं।

स्वामी शंकराचार्य द्वारा मूर्त्तिपूजा का खण्डन

तीर्थेषु पशु-यज्ञेषु काष्ठ-पाषाण-मृण्मये।
प्रतिमायां मनो येषां ते नरा मूढचेतस ॥

('परापूजा' से उद्धृत)

वे लोग महामूर्ख और अज्ञानी हैं, जो तीर्थों में, पशु-यज्ञों में और लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की बनी मूर्त्तियों में भगवान् की भावना करके उसकी पूजा करते हैं। ●

मधुर आर्य डायरी १९८७

मधुर आर्य डायरी अत्यन्त आकर्षक बन पड़ी है। यह गत १५ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित होती चली आ रही है।

इस डायरी में विक्रमी सम्वत्, ईसवी सन् और दयानन्दाब्द के अतिरिक्त चान्द्र तिथियां भी हैं। इसके साथ ही साथ नक्षत्र, आर्य पर्व सूची और डायरी का महत्त्व प्रकाशित है। इस बार दिवंगत महापुरुषों के १६ चित्र भी दिये गये हैं, जिससे डायरी का आकर्षण और बढ़ गया है।

डायरी २०×३०/१६ साइज में छपी है। कागज बढ़िया है। प्रत्येक पृष्ठ पर वेद की सूक्तियां दी गई हैं। सजिल्द डायरी का मूल्य १० रुपये—अजिल्द का मूल्य ८ रुपये।

प्रत्येक आर्य को आत्मनिरीक्षण के लिए डायरी लिखनी चाहिये।

मिलने का पता—

"मधुर लोक" २८०४, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

— सत्यपाल शास्त्री

मानव-मानव एक समान

मानव-मानव एक समान, ऋषिवर जी का मन्त्र महान्।
गोरे-काले रंग अनेक, लहू लाल है धार विवेक ॥
अवधूतों की बात न मानो, पहले निज आत्मा पहचानो ॥
जात-पात का रोग भयंकर, क्यों फैला है आज धरा पर ॥
आर्य वीर बढ़ इसे दुराओ, भ्रम-भ्रान्ति के भूत भगाओ।
कच्चा चिट्ठा करो तैयार, अग-जग में हो वेद प्रचार ॥
मन का मैल धुले हो पावन, वेद ऋचा में कर अवगाहन।
घर-घर होम करें नर-नारी, पुष्पित हो वन-उपवन झाड़ी ॥

—इन्द्रमोहन मिश्र 'मोहन'
कवि कुटीर बाजितपुर-८४३११०
जिला वैशाली (बिहार)

वेद भाष्य के लिए दान की अपील

प्रो० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड ९६ वर्ष की उम्र मे भी वेदभाष्य करने में लगे हैं। उनका किया वेदभाष्य रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है। ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण वेदभाष्य के प्रकाशन में विलम्ब हो रहा है। इस समय अथर्ववेद भाष्य के प्रकाशन का कार्य चल रहा है।

दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस कार्य के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहायता दें। प्रो० विश्वनाथ जी वेदप्रचार के लिए वर्षीय ऋषि की भांति अपना जीवन दे रहे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस तपस्वी के कार्य का पूरा मूल्यांकन करें।

दानराशि रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, करनाल हरयाणा) के पते पर भेजें।

—विद्यानन्द सरस्वती
डी १४।१६ माडल टाउन, दिल्ली

आर्यसमाज की गतिविधियां

उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक विद्वानों का अभिनन्दन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध की अध्यक्षता में केन्द्रीय इस्पात और खान मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने विद्वानों को पुष्पहार एवं धन भेंट किया।

कुछ प्रमुख अभिनन्दित वैदिक विद्वानों के नाम निम्न प्रकार हैं—

अमर स्वामी जी, गाजियाबाद,

पं० शान्तिप्रकाश जी, गुड़गांव,

पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री, बरहलगंज, गोरखपुर,

महात्मा दयानन्द जी तपोवन, देहरादून,

पं० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, कन्या गुरुकुल हाथरस,

पं० नारायणप्रिय जी, लखनऊ,

पं० शिवनारायण जी वेदपाठी, बढ़नी (बस्ती),

महाराणा रणंजयसिंह जी, अमेठी,

स्वामी सत्यप्रकाश जी, प्रयाग,

पं० रुद्रदेव जी शास्त्री, देहरादून और

वेदपथिक पं० धर्मवीर जी ब्रह्मचारी, दिल्ली।

यह समारोह २० अक्तूबर को सम्पन्न हुआ।

पन्त जी ने भाषण प्रतियोगिता और खेल प्रतियोगिता में विजयी बच्चों को भी पुरस्कार दिये।

चीनी स्कूलों में योग का अभ्यास

चीन के स्कूलों और कालेजों में प्राणायाम और पद्मासन जैसी प्राचीन यौगिक क्रियाओं के नियमित अभ्यास कराये जाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण परिषद् के संयुक्त सचिव प्रो. ए. के. जलालुद्दीन के अनुसार हाल के एशियाई खेलों में चीन को मिली सफलता के पीछे इन प्राचीन भारतीय यौगिक क्रियाओं का नियमित अभ्यास भी एक मुख्य कारण हो सकता है।

प्रो. जलालुद्दीन ने चीन की यात्रा से लौटने के बाद नई दिल्ली में चीन और भारत की शिक्षा की तुलनात्मक स्थिति पर एक व्याख्यान दिया।

चीन की यात्रा पर गये भारतीय प्रतिनिधिमण्डल की राय में चीन में प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा में खेल-कूद और व्यायाम पर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्कूलों में खेल के मैदान में हर समय चहल-पहल नजर आती है।

प्रो. जलालुद्दीन ने बताया कि चीन में स्कूल के समय का एक चौथाई हिस्सा पाठ्येतर गतिविधियों के लिए होता है, जिसमें प्रत्येक शिक्षक बढ़-चढ़ कर और दिलचस्पी से हिस्सा लेता है।

उन्होंने बताया कि चीन में मई १९८५ से लागू शिक्षा नीति के तहत द्विभाषी फार्मूला लागू किया गया है।

प्रो. जलाल ने बताया कि चीन के स्कूलों में चीनी भाषा ही शिक्षा का माध्यम है। फिर भी तीसरी कक्षा से अंग्रेजी की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है।

आर्यसमाज नैरोबी का उत्सव : यजुर्वेद पारायण यज्ञ

नैरोबी। आर्यसमाज नैरोबी का ८३वां वार्षिक उत्सव १२ अक्तूबर से १९ अक्तूबर तक उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ, १२ से १५ अक्तूबर तक डा० वेदीराम शर्मा के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। १६ से १९ अक्तूबर तक आर्यसमाज का कार्यक्रम चला और २० अक्तूबर को आर्य स्त्री समाज का उत्सव मनाया गया। वाग्वर्धिनी सभा की ओर से प्रतियोगिताओं और संगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया। १८ अक्तूबर को आर्य सम्मेलन हुआ। विषय था—आर्यसमाज में अधिकाधिक युवकों को कैसे लाया जाये? आर्यसमाज नैरोबी के प्रधान श्री डी० डी० सूद ने आश्वासन दिया कि धर्मार्य सभा और अन्तरंग सभा सम्मेलन में प्रस्तुत प्रत्येक सुझाव पर विचार करेगी और उपयोगी सुझावों को कार्यान्वित किया जायेगा। आर्य स्त्री समाज के उत्सव में शिशु स्वास्थ्य प्रदर्शनी हुई। अन्य अनेक कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

आचार्य देवप्रकाश

(पृष्ठ ८ का शेष)

दो लाख मलकानों की शुद्धि

राजा-महाराजाओं का भी काफी सहयोग मिलने लगा। इनमें उल्लेखनीय शाहपुराधीश महाराजा नाहर सिंह, और अमेठी के राजा रणंजय सिंह जी थे महाराजा एटा, महाराजा मैनपुरी एवं अनेक छोटे राजा, ठाकुर और चौधरी भी वहां मलकाना राजपूतों के शुद्धि समारोह में उपस्थित हुए और उन्होंने शुद्ध हुए मलकानों के साथ बैठकर भोजन किया और हुक्के गुड़गुड़ाते रहे। इस प्रकार यह शुद्धि आन्दोलन अत्यन्त सफल रहा। इसी के साथ वृन्दावन में भी एक विशाल शुद्धि सम्मेलन किया गया, जिसमें अनेक आर्य नेता और राजा-महाराजा सम्मिलित हुए। इस हिन्दू शुद्धि सभा द्वारा आगरा, मथुरा, वृन्दावन, भरतपुर, बयाना, अलीगढ़, बुलन्दशहर, पलवल, कोसी, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, मेरठ, एटा, इटावा, मैनपुरी, कासगंज, फर्रुखाबाद, बलिया, गोरखपुर, बहराइच, ब्यावर, बदायूं, सुल्तानपुर, अमेठी, अवध के ठिकाने, कुर्री सिधौली, शिवगढ़ आदि स्थानों से दो लाख से अधिक मलकाना राजपूतों की शुद्धि की गई। सन् १९२५ में मथुरा में महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाई गई। इस अवसर पर भी आचार्य देवप्रकाश जी ने हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से प्रचारार्थ एक बड़ा कैम्प लगाया और दिन-रात एक करके इस कार्य को सफल बनाया। आप जब मलकाना राजपूतों की शुद्धि के कार्य में लगे हुए थे, तब जहां कहीं भी आपको मलकानों का पता चलता तो आप उन्हें ढूंढ कर शुद्धि सभा के कार्यालय में ले आते और उन्हें भोजनादि कराकर ही वापस जाने देते। आचार्य जी जितने वर्ष भी आगरा में रहे उन्हें कभी भी तीन घण्टे से अधिक सोने का समय नहीं मिला। इस विशाल आन्दोलन में ३०० से अधिक कार्यकर्ता लगे थे, जो आचार्य देवप्रकाश जी की देख-रेख में कार्य करते थे।

राजद्रोह का अभियोग

ज्ञानी पिण्डीदास जी ने जो उन दिनों आर्य युवक सभा के प्रधान थे; १९२२ में आर्य प्रेस नाम का एक छापाखाना अमृतसर में खोला। यह अमृतसर में हिन्दी छपाई का पहला प्रेस था। इसमें आचार्य देवप्रकाश जी को प्रिण्टर नियुक्त कर लिया गया। उन्हीं दिनों भिवानी (हिसार) के एक पुस्तक विक्रेता ने एक छोटी-सी पुस्तक छपवाई। प्रकाशन की दुकान बन्द हो गई और लेखक भाग गया। इस पुस्तक का विषय "मजलूम पंजाब" था, विषय अंग्रेज शासकों के विरुद्ध युद्ध करने की धारा १२४ ए के अन्तर्गत आता था। इस कारण उन के विरुद्ध एक अभियोग चला, जिसके कारण आचार्य देवप्रकाशजी के प्रिण्टर होनेके नाते उनकी गिरफ्तारी के वारण्ट जारी हो गये। इन दिनों वे शुद्धि के कार्य से आगरा में व्यस्त थे। उन्हें अभियोग का पता चल गया और वे लाहौर चले आये। यह अभियोग पं० श्रीकृष्ण मजिस्ट्रेट की अदालत में चलता रहा। उन्होंने ५०० रु० जुर्माना किया, जो आर्यसमाज के सदस्यों ने मिलकर दे दिया और आचार्य जी पहले की भांति शुद्धि का कार्य बड़े जोर-शोर से करते रहे। (क्रमशः)

सम्पादक के नाम पत्र

गोरक्षा अभियान का कार्यक्रम

महोदय,

देवनार-मुम्बई बूचड़खाने पर चल रहे सत्याग्रह को ११ जनवरी १९८७ (रविवार) को पांच साल पूरे हो रहे हैं। यह दिन सारे भारत में गोरक्षा दिन के रूप में मनाया जाये। गांव-गांव में सभा हों, बडे-बड़े शहरों के मोहल्ले-मोहल्ले में सभा हो। दिनभर का उपवास रखा जाये। जिन बूचड़खानों में गाय-बैलों की हत्या होती है, उनके सामने सत्याग्रह किया जाये। गाय-बैलों या उनके फलकों के साथ जुलूस निकाला जाये। शाम को प्रार्थना सभा हो। उसमें गोरक्षार्थ प्रस्ताव पारित किया जाये।

प्रस्ताव प्रधान मन्त्री जी को भेजा जाये। प्रस्ताव की प्रतिलिपि गोसेवा महाभियान समिति, नई दिल्ली और गोरक्षा सत्याग्रह संचालन समिति, घाटकोपर-मुम्बई को भेजी जाये।

महात्मा गांधी की समाधि राजघाट पर दिल्ली में त्रिदिवसीय उपवास प्रार्थना का कार्यक्रम रहेगा। यह कार्यक्रम २५-२६-२७ मार्च (बुध-गुरु-शुक्र) को होगा। इस कार्यक्रम का मार्गदर्शन स्वामी अखंडानन्द सरस्वती करेंगे।

गोरक्षार्थ मुनि ज्ञानचन्द्र जी महाराज पिछले ५साल से अखण्ड रूप में प्रयत्नशील हैं। दो साल तक दिल्ली में दो-दो दिन के उपवासों की शृंखला चलाई, अनिश्चितकालीन अनशन किया। जनवरी १९८६ से अपने साणंद आश्रम में सात-सात दिन के उपवासों की शृंखला चला रहे हैं। यह शृंखला ३० जनवरी १९८७ तक चलेगी।

उन्होंने निश्चय किया है कि गोरक्षार्थ अधिक तप की आवश्यकता है, इसलिए अप्रैल ७ (रामनवमी) से २७ अप्रैल तक २१ दिन के सामूहिक उपवास किये जायें। ये उपवास उनके साणंद (जिला अहमदाबाद) आश्रम में चलेंगे।

—राधाकृष्ण बजाज
संयोजक, गोरक्षा महाभियान समिति
४४१७/अ सारी रोड, नई दिल्ली-२

दयानन्द पब्लिक स्कूल मीरजापुर का चुनाव : प्रतिवाद

महोदय,

निवेदन है कि सार्वदेशिक पत्र में मीरजापुर आर्यसमाज से निष्कासित व्यक्तियों श्री सूर्यदेव शर्मा, श्री मोहन सिंह और श्री कपूरचन्द आजाद ने मीरजापुर के दयानन्द पब्लिक स्कूल का फर्जी चुनाव कराकर सूचना छपवा दी है। इस फर्जी चुनाव पर उच्चतम न्यायालय ने भी उनकी प्रताड़ना की और उसका चुनाव सम्बन्धित अधिकारी को ३१ दिसम्बर तक कराने का आदेश दिया है।

—सन्तोषकुमारी कपूर
सदस्य, उत्तर प्रदेश विधान परिषद्
सदस्य, आर्यसमाज मीरजापुर

पोप के पुस्तक संग्रह में आर्याभिविनय

नई दिल्ली। पोप जान पाल द्वितीय के पुस्तक संग्रह में एक नई चीज जुड़ गई है। यह भारत की एक पुस्तक है—आर्याभिवियन।

वैटिकन में प्रथम बार सम्पन्न सर्व धर्म शान्ति सभा में पोप को यह आध्यात्मिक उपहार भेंट किया गया। प्रस्तुकर्त्ता थे श्री हंसराज खन्ना, जो भारतीय उच्चतम न्यायालय के आध्यात्मिक विधि परामर्शदाता हैं।

श्री खन्ना चार-सदस्यीय हिन्दू प्रतिनिधिमण्डल के नेता के रूप में इस सम्मेलन में शामिल हुए। २७ अक्तूबर को हुए इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वयं पोप ने की।

पोप द्वारा विश्व शान्ति की अपील के बाद श्री खन्ना ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि स्थायी शान्ति तभी कायम हो सकती है, जब वह न्याय पर आधारित हो। "मानव मन को अन्याय से जितना कष्ट पहुंचता है, उतना दूसरी किसी चीज से नहीं।"

श्री खन्ना ने कहा कि विश्वशान्ति की परिकल्पना हिन्दू तत्त्वज्ञान का अनिवार्य अंग है।

आर्यसमाज दीवान हाल (दिल्ली) का चुनाव

दिल्ली। आर्यसमाज दीवानहाल के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती
कार्यकर्त्ता प्रधान—श्री सूर्यदेव जी
उपप्रधान—श्री बटेश्वर दयाल जी, श्री रामावतार जी और श्री धर्मचन्द जी गुप्त
मन्त्री—श्री मूलचन्द जी गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री उद्धवदास जी आर्य और
पुस्तकाध्यक्ष—श्री जगदीश मिश्र।

१८-दिवसीय राष्ट्ररक्षा महायज्ञ सम्पन्न

नई दिल्ली। ३० अक्तूबर से आरम्भ राष्ट्र रक्षा महायज्ञ १६ नवम्बर को श्री कृष्णचन्द्र पन्त, इस्पात और खानमन्त्री, श्री कमल चौधरी, संसत् सदस्य, श्रीमती सुन्दरवती नवल प्रभाकर, संसत् सदस्य, श्री रामचन्द्र विकल, ससत् सदस्य और श्री धर्मदास शास्त्री, भू०पू० ससत् सदस्य द्वारा पूर्णाहुति दिये जाने के साथ सम्पन्न हो गया। समापन समारोह में बोलते हुए श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने कहा कि आज कुछ शक्तियां भारत को अन्दर और बाहर से खण्ड-खण्ड करना चाहती हैं। हम उनके मनसूबे कभी पूरे नहीं होने देंगे। भारत की एकता और अखण्डता के लिए देशवासियों को हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए।

आर्यसमाज जोगबनी का उत्सव

सिलीगुडी। भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित जोगबनी के उग्रसेन भवन के प्रांगण में आर्यसमाज जोगबनी का २४वां वार्षिकोत्सव १८ अक्तूबर से २१ अक्तूबर तक सम्पन्न हुआ। पं० जयप्रकाश आर्य, ब्र० अखिलेश्वर जी, ब्र० व्यासनन्दन जी और पण्डित पुण्यप्रसाद उप्रेती ने समारोह को साफल्य मण्डित किया। समारोह के सभी सम्मेलनों की अध्यक्षता श्री सर्वेश्वर झा (संरक्षक आर्यसमाज जोगबनी एवं मन्त्री आर्यसमाज सिलीगुड़ी) ने की। सम्मेलनों के मुख्य अतिथि नेपाल सरकार के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल थे।

पं० शान्तिप्रकाश शास्त्रार्थ महारथी का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०३वें निर्वाण दिवस पर परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर ७ नवम्बर को आर्यसमाज फुलेरा की ओर से महोपदेशक [illegible] को ११०१ रुपये का महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार उत्तरीय और प्रशस्तिपत्र स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा प्रदान किया गया। फुलेरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री भंवरलाल शर्मा ने अभिनन्दनपत्र समर्पित किया।

पाक बालक का राजीव के नाम हिन्दी में पत्र

नई दिल्ली। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के पास प्रतिदिन पच्चीसो पत्र हिन्दी मे आते हैं और वे सुविधानुसार इन पत्रो का उत्तर भी देते हैं, लेकिन पाकिस्तान के एक ११-वर्षीय किशोर का हिन्दी मे भेजा गया पत्र और उसका उत्तर भारत और पाकिस्तान की जनता के बीच पाये जाने वाले अपनत्व का नमूना है।

कराची से इस किशोर ने श्री राजीव गांधी को हिन्दी में पत्र और शुभकामनायें भेजते हुए आशा व्यक्त की कि आप भारत की सेवा करने के साथ पाक-भारत मित्रता के लिए भी काम करेंगे मुझे आपसे अच्छी आशायें हैं। अगर आपको राष्ट्रीय कामो से समय मिले, तो मुझे भी अपनी तस्वीर आटोग्राफ के साथ भिजवाये। पत्र एक मुस्लिम बच्चे का है, फिर भी लगता है कि पाकिस्तान मे रहने के बावजूद उसे हिन्दी लिखने-पढ़ने मे अच्छी दिलचस्पी है।

इस पत्र के साथ बधाई और शुभकामनाओ का हाथ से बनाया गया एक कार्ड भी है, जिसमे लिखा है—"खुदा करे, आप पाक-भारत मित्रता मे कामयाब हों। नेक आशाओं के साथ—एक पाकिस्तानी बालक।"

श्री राजीव गांधी को यह पत्र पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। पिछले [illegible] अपना उत्तर भेजा, जिसमे हिन्दी मे पत्र लिखे जाने पर खुशी जाहिर की।

श्री गांधी ने अपने उत्तर में लिखा है—"आपके पत्र और बधाई कार्ड के लिए [illegible] मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने मुझे हिन्दी में पत्र लिखा।"

[illegible] सम्बन्धो पर श्री गांधी ने लिखा है—"मैं भारत पाक दोस्ती [illegible] हूं और दोस्ती के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता हूं। मुझे आशा है कि दोनों देशो मे मित्रता बढ़ेगी। हमारे दोनो देशो की एक जैसी भाषा और संस्कृति है तथा लोगो का रहन-सहन भी समान है। हमारा इतिहास आपसी मित्रता और सहयोग की बुनियाद है।"

श्री गांधी ने अपने पत्र के अन्त में लिखा—"मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं और आपके अनुरोध पर अपना हस्ताक्षरित चित्र भेज रहा हूं।"

द्वितीय आर्य महासम्मेलन काठमाण्डू

विराट्नगर (नेपाल)। २३, २४ और २५ जनवरी १९८७ को काठमाण्डू मे द्वितीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसके लिए नेपाल के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री नगेन्द्रप्रसाद रिजाल के संरक्षकत्व मे एक बैठक बुलाई गई है। सम्मेलन का शुभारम्भ नेपाल के महाराजाधिराज करेंगे।

सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे होगा।

आर्यसमाज दरियागंज, दिल्ली का उत्सव

आर्यसमाज दरियागंज, २ अंसारी रोड, दिल्ली का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से प्रारम्भ है। यह ३० नवम्बर तक चलेगा। २९ और ३० नवम्बर को कार्यक्रम प्रातः नौ बजे से एक बजे तक, दोपहर बाद दो से पांच बजे तक और रात्रि साढ़े सात से साढ़े नौ बजे तक होगा। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि का आयोजन है। उत्सव में स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती, श्री के० नरेन्द्र, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री क्षितीश वेदालंकार, प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, श्री वीरेन्द्र-प्रताप चौधरी आदि मनीषी और सुवक्ता पधार रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का चुनाव

जम्मू। आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—प्रधान-डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री, उपप्रधान-सर्वश्री जयदेव, कृष्णलाल, मोहनलाल मोतियाल, लालचन्द, राजकुमार और श्रीमती रामप्यारी, महामन्त्री—श्री राजेन्द्रकुमार, संगठन मन्त्री और निरीक्षक—प० हरिश्चन्द्र, उपमन्त्री—सर्वश्री लाहोरीमल और देवेन्द्रकुमार व कोषाध्यक्ष—श्री देवराज सेठी।

[illegible] में छपवाकर श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible]

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

वेदामृतम्

घर में पवित्र लक्ष्मी का वास हो

एता एना व्याकरं, खिले गा विष्ठिता इव ।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः, या पापीस्ता अनीनशम् ॥

अथर्व० ७ ११५-४ ॥

हिन्दी अर्थ—चारागाह म बैठी हुई गाया की तरह मैं इन पूर्वोक्त रश्मियो को पृथक पृथक करना हूँ । पवित्र लक्ष्मी मेरे यहा निवास कर । जो अपवित्र लक्ष्मी है उनको मैं नष्ट करता हूँ ।

—डा कपिलदेव द्विवेदी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र | दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २१ अंक ५१] | मार्गशीर्ष शु ७ स० २०४३ रविवार ७ दिसम्बर १९८६ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

नागपुर में चतुर्थ अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सम्मेलन : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा शुभारम्भ

नागपुर से पथरोट तक स्वामी जी का तूफानी दौरा : आर्य जनता में भारी उत्साह

नागपुर । अखिल भारतीय सिंधी आय सभा द्वारा आयोजित आय सम्मेलन २१ २२ और २३ नवम्बर को आय कन्या महाविद्यालय जरीपटका के मैदान मे उत्साहपुवक सम्पन्न हुआ । इसम देश भर के सिंधी आय नेताओ वैदिक विद्वानो और आय जनता ने बडी सख्या म भाग लिया ।

१ नवम्बर को प्रात ५ बजे नागपुर रलव स्टेशन पर वैदिक धम की जय के गगनभेदी नारो से सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भव्य स्वागत किया गया । प्रात ९ बजे आय कन्या महाविद्यालय जरीपटका के मैदान मे स्वामी जी न ओ३म ध्वज का उत्तोलन करते हुए चतुथ अखिल भारतीय सिंधी आय सम्मेलन का शुभारम्भ किया । इस अवसर पर स्वामी जी ने वैदिक धम आ म ध्वज और आयसमाज क विशाल सगठन के महत्त्व पर आजस्वी भाषण दिया और विधमियो द्वारा किये जा रहे षड्यन्त्रो के प्रति आय जनता और सिंधी समाज को सावधान रहने का आह्वान किया । श्री देवीदास आय डा० आय नारग और प्रा कन्हैयालाल नलरेजा न भी इस अवसर पर भाषण दिये

सम्मेलन का प्रबन्ध सिंधी समाज के कायकर्ता श्री मगनराम जी ने बडी योग्यता से किया था ।

२२ नवम्बर को प्रात ६ बजे आय प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश की प्रधाना माता कौशल्यादेवी जी से विदा लेकर स्वामी जी ने सभा के यशस्वी मन्त्री श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव तथा आय युवक श्री जमनादास के साथ कार द्वारा नागपुर से पथरोट के लिए प्रस्थान किया । माग मे अमरावती आय समाज के अधिकारियो ने स्वामी जी का भव्य स्वागत किया । आयन इलैक्ट्रिकल्स के सचालक श्री देवदत्त शर्मा भी पथरोट तक स्वामी जी के साथ रहे । इस पूरे माग मे हर ग्राम के चौराहो पर सकडो आय युवको तथा ग्रामवासियो द्वारा स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया । पथरोट से १५ किलोमीटर पहले से ही सडको पर हजारो की सख्या म उपस्थित नर नारियो ने वैदिक धम की जय जयकार के साथ उनका अभिनन्दन किया गया । इस अवसर पर आय जनो और समग्र सिंधी का उ त्साह देखते ही बनता था । स्वामी जी ने विशेष रूप से शराबबन्दी और चरित्र निमाण पर बल दिया ।

पथरोट पहुचने पर स्वामी जी ने ... नगर म प्रवेश किया । ... रात्रि मे एक सावजनिक सभा म ... स्वामी जी ने आयसमाज के सगठन को मजबूत बनाने ... ।

वाराणसी के शास्त्राथ स्थल पर पिछले दिनो वैदिक वाचनालय तथा पुस्तकालय का आधार शिला का अनावरण किया गया । इस अवसर पर राजर्षि रणञ्जयसिंह और स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का स्वागत किया गया । चित्र म ... का एक दृश्य है

वाराणसी मे वैदिक वाचनालय तथा पुस्तकालय की स्थापना

वाराणसी मे ऋषि दयानन्द के काशी शास्त्राथ की ११७वी स्मृति दिवस समारोह ऐतिहासिक शास्त्राथ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड म १३ व १४ नवम्बर को समारोह पूवक मनाया गया

इस अवसर पर आयसमाज की ओर से बनाये जाने वाले

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अन्दर के पृष्ठो पर पढ़िये

पंजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पंजाब से २६ हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बड़ी मात्रा मे धन की आवश्यकता है। सर्दी का मौसम प्रारम्भ हो चुका है। विस्थापितो के लिए गरम कपड़ो की तुरन्त आवश्यकता है। जिस-जिस सज्जन तक मेरी अपील पहुंचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप मे अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष

२६ सितम्बर १९८६ तक प्राप्त दान राशियां

दि उषा बुक एजेन्सी, चौड़ा रास्ता, जयपुर	५०)
श्री रामबाबू आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज चौडेरा	१००)
श्री देवराज गुप्त, लश्कर ग्वालियर	२१)
प्रवीण आयुर्वेद भवन, गुरुद्वारा रोड, भागलपुर	११)
आर्य स्त्री समाज (शहर), मुजफ्फरनगर	५००)
मन्त्री आर्यसमाज सेन्ट्रल मद्रास	२५०)
श्री ए० जी० चोपडा ७११ वुडगेट, आगस्ता जार्जिया	५००)
श्रीराम जी गामी मैमोदा, मानपुर, मदसौर	५)
श्री भवानीशकर गुप्त, दाल एण्ड आयल मिल छबड़ा, कोटा	२५)
श्री स्वामी विज्ञानभिक्षु जी आर्यसमाज मगलूर	११८०)
श्री मन्त्री जी आर्यसमाज दीपनगर भागलपुर	३११)
श्री बृजलाल भुटियानी, डी०डी०ए० फ्लैट्स, हरिनगर, दिल्ली	२१)
श्री मन्त्री, आर्यसमाज अटवा अलीमर्दान पुर, हरदोई	३१)
आर्यसमाज कुमार नगर धुलिया	२१५०)
श्री रघमणि आर्य भरसुजा जिला बालगिरि	२१)
श्री मन्त्री, आर्यसमाज चौरी, राजपुर, भागलपुर	५१)
श्री मन्त्री जी, आर्यसमाज परली वैद्यनाथ जि० बीड	५००)
श्री ईश्वरदास आर्य, पहाड़गज नई दिल्ली	२५)
आर्यसमाज सीमामऊ लेनिन पार्क कानपुर	११००)
मा० मगनदास बनवारी आर्य, विज्ञान नगर, कोटा	५०)
आर्यसमाज लाडनू, जिला नागौर	१०१)
मन्त्री जी, आर्यसमाज देहरादून	५०००)
मन्त्री जी, आर्यसमाज नसीराबाद	१४१)
श्री विक्रम शाह आर्य, माल्दा, गिरिडीह	५)
श्रीमती सुशीला जी भाटिया, महेश नगर, अम्बाला छावनी	२००)
श्री पुष्कर देव, चित्रगुप्त मार्ग, शाजापुर	२५)
श्री राजबहादुर एण्ड सस, किनारी बाजार, आगरा	५१)
श्री विश्वम्भरदयाल गोयल, लखनऊ	५)
आर्यसमाज गरोठ, जि० मदसौर	१०१)
चौ० हरनाम सिंह, होशंगाबाद	५००)
मन्त्री जी आर्यसमाज, हिन्डौन सिटी	१४०)
आर्यसमाज नेहरू ग्राउन्ड, न्यू टाउन, फरीदाबाद	२१००)
आचार्य दयानन्द वैदिक विद्यालय बालिछि नगर, प० चम्पारण	२५)
मन्त्री जी, आर्यसमाज पटियाली गंगा, एटा	३०)
मुरलीधर शरद कुमार वर्मा, भवानी मण्डी आश्रम रोड (राज०)	५०)
श्री सुरेशचन्द्र आर्य, सुभाष चौक, बयाना, भरतपुर	१७५)

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

हैदराबाद सत्याग्रह : पेंशन सम्बन्धी सूचना

भारत सरकार के गृहमन्त्रालय से सार्वदेशिक सभा द्वारा निरन्तर पत्रव्यवहार और सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री से अनेक वार्ताएं होने के बाद अन्ततः सरकार ने सभा द्वारा सुझाई गई उपसमिति का गठन करने की मांग को स्वीकृत कर लिया। (इस उपसमिति के गठन का विस्तृत समाचार पिछले अक में प्रकाशित हो चुका है।) पूरी आशा है कि इससे हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह मे भाग लेने वालो और उनके आश्रितो को पेन्शन पाने में सुविधा होगी। आर्य बन्धुओ और उनके साथ ही आर्यसमाजो व आर्य प्रतिनिधि सभाओं का यह कर्तव्य है कि वे इस सम्बन्ध मे आवेदको का मार्गदर्शन और उनकी सहायता करें।

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जिन आवेदको ने केन्द्र अथवा राज्य तन्त्रता सेनानी प्रमाणों को निर्धारित फार्म न मिलने के कारण आवेदन की अन्तिम तारीख (३० जून १९८६) तक अपने आवेदनपत्र नहीं भेजे थे, वे अपने कारावास के प्रमाणपत्रो के साथ अब भी निर्धारित फार्म पर पेन्शन के लिए आवेदन कर सकते हैं।

यह सूचना भारत सरकार के गृहमन्त्रालय के स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेन्शन योजना के कार्यालय से मैमोरेंडम सख्या 135/VII/Misc 3/86 AS Cell मे दिनाक १६ अक्तूबर १९८६ को श्री ओमप्रकाश उपाध्याय, आर्य सस्थान, खेड़ा जट्टू, डाकखाना खेड़ा जट्टू को प्राप्त पत्र से मिली है।

उपसमिति के सदस्यों के पते

कुछ बन्धु हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रहियो के लिए पेन्शन की सिफारिश करने वाली गैर-सरकारी उपसमिति के सदस्यो के पूरे पते जानना चाहते हैं। उनकी जानकारी के लिए सातो सदस्यो के पते नीचे दिये जा रहे हैं। इन सदस्यो से इन पतो पर सम्पर्क किया जा सकता है—

(१) स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (अध्यक्ष), ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, आसफअली रोड (रामलीला मैदान के समीप), नई दिल्ली-२

(२) श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, १४ ३-१७८, गोशा महल, हैदराबाद

(३) श्री रामचन्द्रराव कल्याणी, बी ३२/२ आर टी बहादुरपुरा हाउसिंग बोर्ड कालोनी हैदराबाद २

(४) प्रो० शेरसिंह एम १४ साकेत, नई दिल्ली

(५) श्री शिवकुमार शास्त्री, एम-३२ साकेत, नई दिल्ली

(६) चौधरी रणधीर सिंह, भूतपूर्व ससद सदस्य, रोहतक

(७) श्री सोमनाथ मरवाह, ७१३ ४ ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली १६

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी का उत्सव

वाराणसी। आर्यसमाज लल्लापुरा का ५१वा वार्षिकोत्सव १८ दिसम्बर स २१ दिसम्बर तक त्रिकी कर कार्यालय प्रागण चेतगज मे होगा।

इसमे आर्य जगत् के विख्यात महोपदेशक, प्राध्यापक, भजनोपदेशक आदि पधारेंगे।

पुस्तकालय की स्थापना

(पृष्ठ १ का शेष)

स्मारक के अन्तर्गत वैदिक अनुसधानकर्त्ताओ और शोध छात्रो हेतु एक विशाल पुस्तकालय एव वाचनालय की आधार शिला का अनावरण उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान राजर्षि रणञ्जयसिंह ने वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ किया। समारोह मे स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती और राजर्षि रणञ्जयसिंह का जिले की विभिन्न आर्यसमाजो की ओर से भव्य अभिनन्दन किया गया।

समारोह स्थल पर प्रात हवन-यज्ञ व दिन मे आर्य सम्मेलन, गो रक्षा सम्मेलन आदि आयोजित हुए। एक प्रस्ताव पारित कर सत्यार्थ प्रकाश रखने व पाठ करने के अभियोग में अरब सरकार द्वारा श्री राजकुमार भारद्वाज की गिरफ्तारी पर क्षोभ व्यक्त किया गया और भारत सरकार से अविलम्ब उन्हें मुक्त कराने की मांग की गई।

गोहत्याबन्दी पर बिनोवाजी को दिया गया वादा पूरा करो

राष्ट्रपति जैलसिंह की सरकार से अपील

वाराणसी। राष्ट्रपति श्री जैलसिंह ने कहा है कि देश में ऐसी कोई मजबूरी नहीं, जो गोवध के लिए बाध्य करे। सरकार ने आचार्य विनोबा भावे को गोवध पर पाबन्दी का आश्वासन दिया था। उसे अब तक पूरा नहीं किया गया।

राष्ट्रपति यहां से करीब १५ किलोमीटर दूर बावनबीघा क्षेत्र में काशी गोशाला के शताब्दी समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति में गाय को सर्वोपरि दर्जा हासिल है। अपनी विरासत में हमें यह सीख मिली कि अन्तिम बलिदान करके भी गाय की रक्षा करनी चाहिये। राष्ट्रपति ने कहा कि जिन लोगों को गाय की महत्ता धार्मिक दृष्टि से समझ में नहीं आती उन्हें गोवंश की आर्थिक उपादेयता को समझना चाहिये, क्योंकि भारत जैसे कृषिप्रधान देश में गांवों की उन्नति का आधार पशुपालन ही बन सकता है।

ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि गोवंश की समृद्धि के लिए समाज के साथ-साथ सरकार को भी कदम उठाने चाहिये। केवल गाय की पूजा करना ही पर्याप्त नहीं। सभी असहाय और वृद्ध गायों के रख-रखाव के लिए भी स्वैच्छिक संस्थाओं को आगे आना चाहिये। सरकार को इन संस्थाओं की मदद करनी चाहिये। उन्होंने कहा कि गोहत्या के सवाल पर जब सन्त विनोबा भावे ने अनशन किया था, तब सरकार ने इसे रोकने का आश्वासन दिया था। यह आश्वासन अभी पूर्णरूपेण पूरा नहीं किया जा सका।

राष्ट्रपति ने जानना चाहा कि क्या गोवध के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाध्यता जैसी कोई बात जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि गोवंश के वैज्ञानिक तरीके से सम्वर्धन के उपाय करके हम देश में श्वेत क्रान्ति को जन्म दे सकते हैं। डेन्मार्क जैसा देश हमारे सामने यह आदर्श पेश करता है कि पशुपालन के जरिये किसी देश की अर्थ व्यवस्था को किस प्रकार मजबूत किया जा सकता है।

राष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश की सरकार पर गोशाला से सम्बन्धित समारोह की महत्ता व गरिमा को न समझने के लिए तीव्र कटाक्ष किया। राष्ट्रपति ने शताब्दी समारोह में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और मुख्यमन्त्री की अनुपस्थिति पर भी परोक्ष रूप से अपनी अप्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि राज्य सरकार इस समारोह को महत्त्वहीन और छोटा समझती हो, लेकिन मेरे लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण अवसर है।

सम्पूर्ण गोवंशहत्याबन्दी की मांग : प्रतिनिधिमण्डल कृषि मन्त्री से मिला

नई दिल्ली। अ० भा० कृषि गोसेवा संघ का प्रतिनिधिमंडल १२ नवम्बर को कृषि मन्त्री श्री गुरदयाल सिंह ढिल्लों से मिला। इस प्रतिनिधिमण्डल में संघ के कार्याध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और हरयाणा सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री मांगेराम शीतल शामिल थे। प्रतिनिधिमण्डल के नेता स्वामी आनन्दबोध थे।

बजाज जी ने कहा कि भारत में गोहत्या के कानून लगड़े हैं। वे सब बेकार हो रहे हैं। उन पर कोई अमल नहीं हो पाता। इस देश में गोरक्षा करनी है तो सम्पूर्ण गोवंशहत्याबन्दी का केन्द्रीय कानून बनना चाहिये। बूढ़े बैलों के कत्ल की जो छूट रखी गई है, उसे समाप्त किये बिना कानून पर अमल हो ही नहीं सकता।

भारत में गोमांस निर्यात के सम्बन्ध में कृषिमन्त्री जी का ध्यान दिलाया गया कि इस कानून में बूढ़ी भैंस-भैंसों के मांस के निर्यात की छूट है। इस कारण जवान भैंस-भैंसा, गाय-बैल-बछड़े का मांस धड़ल्ले से जाता है। १९७३ में दो हजार टन मांस निर्यात हुआ था, आज एक लाख टन जाता है। विदेश वालों को जवान मांस चाहिये। यह जो कानून में छिद्र है उसे बन्द किये बिना गोमांस का जाना नहीं रुक सकता।

कृषि मन्त्री जी का ध्यान इस ओर दिलाया गया कि भैंस के दूध के मुकाबले गौ का दूध मानव के लिए अधिक स्वास्थ्यप्रद है। गौ में बुद्धि, स्फूर्ति, प्रेम भावना आदि सूक्ष्म शक्तियां हैं, जो मानव के लिए हितकारी हैं। चाहिये तो यह कि गौ के दूध को ५० पैसे लीटर अधिक भाव दिया जाये—किसी प्रकार भी कम भाव न दिया जाये।

यह भी सुझाया गया कि दिल्ली में रोजाना दो लाख लीटर गाय का उत्तम दूध बीकानेर से आता है। जो लोग चाहें, उनके लिए अलग से गौ का दूध पिलाने की व्यवस्था होनी चाहिये। इस पर कहा गया कि गौ के दूध की मांग कम है। उन्हें बताया गया कि महाराष्ट्र सरकार ने विज्ञापनों द्वारा गौ के दूध की मांग बढाई। आज वहां ८० हजार लीटर गौ का दूध बिकता है। दिल्ली में भी गौ के दूध की विशेषता के विज्ञापन दिये जाने चाहियें।

कृषि मन्त्री जी ने आश्वासन दिया कि गोवंश की हत्या पूर्णतः बन्द हो, मांस का निर्यात बन्द हो, गौ के दूध को बढावा मिले, दिल्ली वालों को गौ का दूध मिले—इस बारे में सम्बन्धित लोगों से सलाह करके हम ये सब मांगें पूरी करने की कोशिश करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि गौ का दूध उत्तम है, इसका मुझे निजी अनुभव है। भैंस के दूध का परिणाम पंजाब भुगत रहा है।

११ जनवरी को गोरक्षा दिवस मनायें : स्वामी आनन्दबोध की अपील

प्रिय महोदय,

आर्यसमाज की गोरक्षार्थ अपने स्तर की सेवायें आप पर प्रकट हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप ११ जनवरी १९८७ को गो रक्षा दिवस के रूप में मनायें और इस दिन निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर भारत के प्रधान मन्त्री को भेजें और उसकी प्रतिलिपि सभा कार्यालय को भेज दें—

कृषि प्रधान भारत में किसी भी उम्र के गाय बैलों का कत्ल न हो, इसलिए गो-वंश हत्या बन्दी का केन्द्रीय कानून अविलम्ब बनाया जाये और जीवित पशु या मांस का निर्यात पूर्णतः बन्द किया जाये।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

पंजाब से पलायन : स्थिति अत्यन्त गम्भीर है

पंजाब सरकार ने एक पुस्तिका छापी है—"Facts about the situation in Punjab." १६ पृष्ठों का यह दस्तावेज कीमती आर्ट पेपर पर छापा गया है। इसमें पंजाब में आतंकवाद से मुकाबला, गांवों में ग्रामीणों को आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए दी जा रही ट्रेनिंग, पलायन इत्यादि के बारे में कुछ आंकड़े दिये गये हैं। इस में यह भी दिखाया गया है कि अन्य राज्यों के मुकाबले पंजाब मे कितने खून होते हैं। कत्ल की श्रेणी में बताया गया है कि १ जनवरी ८६ से अब तक उत्तर प्रदेश में २८६६, मध्य-प्रदेश मे ११०४, महाराष्ट्र में ७०१, राजस्थान में ५३७, हरयाणा में १८१, गुजरात में ७०, कर्नाटक में ५४८, आंध्र प्रदेश में ३०५; केरल में २३७, तमिलनाडु में ४४८, असम में २४१, सिक्किम में १ और दिल्ली मे १३१। इनके मुकाबले पंजाब मे १ जनवरी १९८६ से अब तक केवल ४१० कत्ल हुए हैं। इसी पन्ने पर डकैतियो, चोरियों, बलात्कार इत्यादि के आंकड़े भी दिये गये हैं।

दूसरे पृष्ठ पर बताया गया है कि १-१०-८५ से ३१-१०-८६ तक कुल ४०९ व्यक्ति आतकवाद के सीधे शिकार हुए। इनमें २६१ हिन्दू थे और १४४ सिख। ४अन्य भी मारे गये। मरने वालों में ३४ पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। मई ८६ से अक्तूबर ८६ तक ४८ आतंकवादी गोली से उड़ाये गये और १०२६ गिरफ्तार किये गये। गिरफ्तार होने वालों में कुख्यात गुरसेवक सिंह (बबला गेंग), मनबीरसिंह चहेड़ू, तरसेमसिंह कोहर, सुखदेवसिंह सखीरा, रंबीतसिंह बर्बा, गुरजीतसिंह (फीरोजपुर) शामिल थे। इनमें सुखदेवसिंह व रंजीतसिंह गिरफ्तारी के समय पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारे गये थे। पंजाब सरकार ने हथियार भी काफी पकड़े। १-१०-८६ से ३१-१०-८६ तक २ लाइट मशीनगनें, २६ स्टेनगनें, ६२ हथगोले, २०९ रिवाल्वर, १२११ पिस्तौलें, १४७ गनें, ५४ राइफलें व १२९७ गोलिया आतकवादियों से बरामद कीगई।

पुस्तिका के पांचवे पृष्ठ पर पलायन का अध्याय लिया गया है। इसमें ३१-१०-८६ तक के आकडे पेश किये गये हैं। पजाब सरकार के अनुसार अब तक १२५३ परिवार पजाब से पलायन करके भारत के अन्य भागो में गये हैं। हरयाणा में ९१४, उत्तर प्रदेश में ८३, मध्य प्रदेश में ५, हिमाचल में ३८, दिल्ली मे १११, राजस्थान ५१, जम्मू कश्मीर १०, चंडीगढ़ ६, महाराष्ट्र ३, आंध्र ६, बिहार ३, पजाब में ही १५९ परिवारो ने एक स्थान से दूसरा स्थान बदला। कुल मिलाकर १२५३ परिवारों ने (पंजाब सरकार के अनुसार) पलायन किया है। पजाब सरकार यह भी दावाकर रही है कि इनमें १३२ परिवार वापस पंजाब लौट गये हैं। बाकी राज्यों के बारे में तो मैं जानता नहीं पर दिल्ली में पंजाब से पलायन करके आये परिवारों की अच्छी जानकारी रखता हूं। इस समय मेरे हिसाब के अनुसार केवल दिल्ली में ८९४ परिवार गोविन्दपुरी, ज्वालापुरी, मंगोलपुरी. मोरी गेट, खजूरी खास और गीता कालोनी में रह रहे हैं। इनके अलावा सैकड़ों परिवार अपने रिश्तेदारों के साथ दिल्ली मे रह रहे हैं, जिनकी सख्या की हमारे पास कोई जानकारी नही। मुझे मालूम नहीं कि बरनाला साहब ने अपने आंकड़े कहां से इकट्ठे किये हैं, क्योंकि जो मैं कह रहा हूं इसे तो बड़ी आसानी से साबित किया जा सकता है। बरनाला साहब मेरे साथ कैम्पों में चलें, मैं उन्हें एक-एक परिवार गिनवा सिकता हूं। जहां तक १३२ परिवारों के वापस पंजाब जाने का प्रश्न है, दिल्ली से केवल ३ या ५ परिवार वापस गये हैं। हमें इसलिए पता है कि वापस जाने के लिए किराया हमने दिया था। यह भी इसलिए वापस गये कि ८-१० दिन भटकने के बाद इन्होंने महसूस किया कि यहा इन्हें वे सहूलतें नहीं मिलेंगी, जो इनके अन्य रिश्तेदारों को कैम्पों में मिल रही है।

पजाब से पलायन करने वालों की सख्या से कही ज्यादा पजाब को पलायन करने वाले परिवारों की संख्या है। १-८-८६ तक जो परिवार भारत के अन्य भागों से या तो पजाब आ बसे या जिनके प्रार्थनापत्र पंजाब सरकार के पास आये, उनकी सख्या चौंका देने वाली है। १४-२-८६ से ३१-७-८६ तक ५७० परिवारों के आवेदनपत्र सरकार के विचाराधीन हैं। इसके अलावा १-८-८६ तक २१५ और परिवार पंजाब में आ बसे। इस तरह २६,९७२ परिवारों ने या तो पंजाब सरकार को पलायन के लिए आवेदनपत्र दिये या वे पलायन करके आ गये हैं। यह स्थिति अत्यन्त गम्भीर है।

केन्द्रीय और पजाब सरकार को इस पर तुरन्त रोक लगानी चाहिए। पजाब से हिन्दू आते रहे और सिख पजाब जाते रहे, तो खालिस्तान तो अपने आप ही बन जायेगा।

—अनिल नरेन्द्र

न्यूयार्क के इस समारोह में क्या हुआ ?

-अश्विनी कुमार, स्थानीय सम्पादक, पंजाब केसरी, दिल्ली-

पाठकों को याद होगा कि कुछ समय पूर्व अमेरिका के महानगर न्यूयार्क में एक भोज के अवसर पर कुछ खालिस्तान समर्थक लोगों ने विश्व के अन्य देशों के झण्डों के साथ अपने तथा कथित खालिस्तान का झण्डा भी फहरा दिया था। इस पर उस भोज में काफी विवाद उठा था और कई देश-भक्त भारतीय मूल के लोगों ने इस भोज का बहिष्कार कर दिया था। वे लोग भारत के झण्डे के इस अपमान पर उठ कर इस भोज से बाहर आ गये थे।

उपरोक्त भोज में एक देशभक्त भारतीय भी शामिल था, जिसके साथ मेरी मुलाकात पिछले दिनों हुई। ये व्यक्ति हैं पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री, कांग्रेसी नेता स्वर्गीय श्री प्रबोधचन्द्र के सुपुत्र श्री अश्विनी कुमार। ३४-वर्षीय श्री अश्विनी कुमार उच्चतम न्यायालय के सबसे कम उम्र के वकील हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के ४१वें सत्र में शामिल होने वाले भारतीय प्रतिनिधि-मंडल के भी ये सबसे कम उम्र के सदस्य हैं। विश्व की कई प्रख्यात कम्प-नियों के ये कानूनी सलाहकार हैं। पंजाब प्रदेश कांग्रेस के आर्गेनाइजिंग सैक्रेटरी और आल इंडिया कांग्रेस कमेटी (इं.) के कानूनी सैल के कन्वीनर हैं। जिन दिनों न्यूयार्क में उपरोक्त भोज का आयोजन हुआ, उस समय श्री अश्विनी कुमार को उनके एक मित्र ने इस भोज में शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया था।

श्री अश्विनी कुमार ने मुझे बताया कि अमेरिका के रहने वाले विश्व भर के विदेशी मूल के लोगों का एक ट्रस्ट है, जो प्रतिवर्ष न्यूयार्क में इस तरह का आयोजन करता है। इस भोज मे शामिल होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को १०० डालर की रकम देनी पड़ती है। श्री अश्विनी कुमार को जब इस भोज में शामिल होने को कहा गया तो उन्हें खुशी हुई कि इस बहाने उन्हें अमेरिका में रहने वाले भारतीयों से मिलने का मौका मिलेगा। हाल के अन्दर पहुंचने पर जब कार्रवाई शुरू हुई तो श्री अश्विनी कुमार ने देखा कि स्टेज पर इस भोज में शामिल होने वाले सभी देशों के झण्डे लगे थे। इस समारोह में ५० के लगभग सिख औरतें, मर्द और बच्चे भी शामिल हुए थे। शुरू में श्री अश्विनी कुमार को इस बात पर कुछ ताज्जुब जरूर हुआ, जब उन्होंने देखा कि इन सिख परिवारों का झुण्ड भारतीय मूल के बाकी लोगों से, जिनमें पंजाबी, बंगाली, तमिल और गुजराती भी शामिल थे, अलग बैठा था, जबकि विश्व के अन्य सभी देशों के लोग अपने-अपने गुटों मे बैठे थे। ऐसे में भारतीय मूल के लोगों के दो गुट क्यों ? यह प्रश्न तो श्री कुमार के मन मे जरूर उठा, लेकिन थोड़ी देर बाद जब कुछ सिख मर्दों ने, जिनमे अमरीका के कई प्रमुख डाक्टर और व्यावसायी शामिल थे, एक खास झंडे के आगे अपने फोटो खिंचवाने शुरू कर दिये तो श्री अश्विनी कुमार को दाल मे कुछ काला नजर आने लगा। मर्दों के बाद सिख औरतों ने, फिर बच्चों अन्त में सब के सब परिवारों ने फोटो खिंचवाने का दौर शुरू कर दिया तो श्री अश्विनी कुमार और उनके साथी उठकर खड़े हो गये और उन्होंने उस झण्डे को करीब से जाकर देखा। पीले रंग के झण्डे के ऊपर निशान साहिब की छाप बनी थी।

जब भारतीय मूल के अन्य लोगों ने यह मामला अमरीकी आयोजकों के समक्ष उठाया तो उन्होंने इससे अनभिज्ञता प्रकट कर दी। जब उन्हें समझाया गया कि यह भारत का झण्डा नहीं है तो उन्होंने बताया कि उन्हें यह नहीं मालूम था कि सिख भारतवासी हैं ! उन्हें तो कुछ सिखों ने यह कहा था कि यह उनके सम्प्रदाय का झण्डा है और उनकी बातों पर विश्वास करके यह झण्डा यहां लगवा दिया गया। आयोजकों ने अपनी गलती को समझा और भारतीय मूल के अन्य लोगों को यह आश्वासन दिया कि अभी इस झण्डे को उतार दिया जायेगा।

अगर आयोजक ऐसा करते तो शायद बात खत्म हो जाती। लेकिन जब इस तथाकथित खालिस्तान के झण्डे को उतारा जाने लगा तो पाकिस्तानी मूल के लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि अगर सिखों के इस झण्डे को उतारा गया तो वह इस समारोह से वाक आउट कर जायेंगे। इस तरह पाकिस्तानी मूल के लोगों ने खालिस्तान समर्थक लोगों का खुलकर समर्थन किया और विवाद बढ़ता जाने लगा। जब आयोजक पाकिस्तानी मूल के लोगों के दबाव से दबते नजर आये तो अश्विनी कुमार समेत भारतीय मूल के अन्य सभी व्यक्ति अपने परिवारों सहित इस समारोह से वाक आउट कर गये। अगले दिन न्यूयार्क में अमेरिका में प्रवास करने वाले विदेशी मूल के लोगों का जलूस निकाला गया। हालांकि आयोजकों ने भारतीय मूल के लोगों को पूर्ण आश्वासन दे रखा था, लेकिन इसके बावजूद कुछ शरारती तत्व इस जुलूस मे खालिस्तानी नारे लगाते शामिल हुए।

मुझे यह बात तो समझ में आ सकती है कि इस समारोह के आयोजकों से झण्डों को समझने मे भूल हुई होगी। लेकिन यह बात मेरी समझ से बाहर है कि पाकिस्तानी मूल के लोगों को इस समारोह में शामिल होने वाले खालिस्तान समर्थकों से क्यों हमदर्दी थी ? मेरी व्यक्तिगत राय में न्यूयार्क के उपरोक्त समारोह मे जो कुछ भी हुआ, भारत को नीचा दिखाने के लिए पाकिस्तान और खालिस्तान समर्थकों ने एक सोची समझी साजिश के अधीन किया। श्री अश्विनी कुमार और अन्य भारतीय मूल के लोगों ने इस समा-रोह से वाकआउट करके एक उचित और सराहनीय पग उठाया।

ऋषिराज कैलण्डर १९८७

कैलण्डर में देशी तिथियां तथा अंग्रेजी तारीखें दी हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर महर्षि की जीवनी के चित्र हैं। इसके अतिरिक्त पर्वों के ४० चित्र, स्थान-स्थान पर गायत्री मन्त्र और आर्यसमाज के नियम दिये गये हैं। एक कैलण्डर ८० पैसे, ४ कैलण्डर ३ रुपये, १० कैलण्डर ७ रुपये, १०० का मूल्य ४० रुपये। धन पहले भेजें।

वेद प्रचारक मण्डल, ९०/१३ रामजस रोड, दिल्ली-५

तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी-४

– भोलानाथ दिलावरी –

एक दिन एक मुसलमान डिप्टी सुपरिटेंडेंट पुलिस मकान पर आये। उनके पास ४०-५० तोले सोना था। उन्होंने उसे आचार्य जी के सामने डाल कर कहा "महाशय जी, मेरी पुत्री का विवाह होने वाला है। आप इसे रख लें और इसके आभूषण बना दीजिए।" आचार्य जी बोले "मैं तो बाहर जा रहा हूँ अतः मैं यह सेवा नहीं कर सकूंगा।" डी. एस. पी. साहब ने कहा "कोई बात नहीं, जब आयेंगे, तभी बना देना। आपके अतिरिक्त अन्य किसी पर हमें विश्वास नहीं।" यह कह कर पुलिस अधिकारी सोने की पोटली छोड़ कर चला गया। यह एक ऐसा उदाहरण है, जो आचार्य जी की ईमानदारी की धाक अपने तो अपने पराये के प्रति भी दर्शाता है।

मीरपुर और कोटली में हिन्दुओं पर अत्याचार

जब रियासत जम्मू-कश्मीर में मीरपुर और कोटली नाम के दो नगरों के मुसलमानों ने वहां के हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार किये, तब नरनाहर आचार्य जी महात्मा हंसराज जी की आज्ञा से वहां पहुँचे और पीड़ितों की सहायतार्थ अन्न तथा धन बांटा और उनके कष्ट-कलेशों का निवारण किया।

बिहार का विनाशकारी भूकम्प

सन् १९३४ में बिहार के कई क्षेत्रों में भूचाल ने प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया। वहां भी महात्मा हंसराज जी के आदेशानुसार आचार्य जी सेवार्थ गये। उन्होंने सीतामढ़ी नगर को केन्द्र बनाकर जिस उत्तम रीति से वहां पीड़ितों की सेवा की, उसे बिहार का बच्चा-बच्चा जानता है। आप प्रतिदिन बीसियों मील चलकर कहीं कमर तक गहरे पानी में घुसकर, कहीं रेतीले क्षेत्रों को पार कर दूर-दूर तक बिखरे पीड़ितों की जरूरतें पूरी करते फिरते थे। इनके साथ डी. ए.-वी. कालेज लाहौर के कई विद्यार्थी भी होते थे आपने वहां ५०६ कुंएं भी साफ करवाये ताकि जल संकट दूर हो सके ४२१ ग्रामों में ४०-५० हजार रुपये के नवीन वस्त्र आदि भी वितरित किये जिनके मकान गिर गये थे, उनके लिए नये निवासस्थान निर्मित करवा दिये इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर अपना आभार प्रदर्शित करने के लिए जनता ने सार्वजनिक रूप से आचार्य जी का सम्मान किया और अभिनन्दनपत्र भेंट किया।

अभी यह कार्य समाप्त ही हुआ था कि महात्मा हंसराज जी ने इन्हें सूचित किया कि उसी सीतामढ़ी क्षेत्र में बाढ़ ने पुनः प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया है। अतः आप पुनः वहां चले आयें। बाढ़ से इस क्षेत्र में सड़कें और रेल की पटरियां अस्तव्यस्त हो गई थी। अतः आचार्य जी को नाव द्वारा वहां जाना पड़ा। चारों ओर पानी ही पानी था। कई स्थानों पर पैदल भी चलना पड़ा। इस प्रकार वे बहुत कठिनाईसे सीतामढ़ी पहुंचे। जब तक उन लोगों को पूरी तरह राहत नहीं मिली, तब तक वहां डटे रहे।

भीलों में शुद्धि कार्य

आगरा में ही आपको महात्मा हंसराज जी द्वारा सेठ जुगलकिशोर बिड़ला का पत्र मिला, जिसमें सूचित किया गया था कि अकाल पीड़ित पांच हजार भील हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई होगये हैं और अगणित संख्या में निकट भविष्य में उनके पतित होने की पूरी आशंका है। अतः आप तुरन्त पहुंचिये। आदेश पाते ही आचार्य महोदय सीधे रतलाम पहुंचे। वहां से रावटी गये। वहां पहुंच कर आचार्य जी ने नगर निवासियों एवं राज्य कर्मचारियों से भेंट की। वहां जाते ही उनसे पता चला कि दो वर्ष से अनावृष्टि के कारण भीलों के पास खाद्य वस्तुओं का नितान्त अभाव है। यदि इनकी उदरपूर्ति का प्रबन्ध हो सकता है तो काम आरम्भ कर दीजिये। हम भी आपकी यथासंभव सहायता करेंगे। आप इस कार्य को करने के लिए राजकीय मन्दिर में बैठ गये और गंगाजल मंगवा लिया। बृहद् यज्ञ का अनुष्ठान किया और कार्य आरम्भ करने के विचार से जल में तुलसी पत्र डाल लिये। जिन भीलों की शुद्धि करनी होती उन्हें तीन-तीन आचमन कराते, नाम-पते लिखकर और यज्ञ कराने के बाद एक-एक भील को एक-एक मन अन्न दे देते। आपने महात्मा हंसराज जी को तार दिया कि शुद्धि का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। लोग धड़ाधड़ शुद्ध हो रहे हैं। मक्की उधार ले ली गई। पांच हजार रुपये तार द्वारा भेज दीजिए। आपने शुद्धि के कार्य में रात-दिन एक कर दिया। सेठ जुगलकिशर बिड़ला जी ने भी अपना आदमी रावटी भेज दिया, जो आचार्य देवप्रकाश जी के कथनानुसार अनाज खरीद कर उन्हें देता रहा। इस प्रकार एक हजार परिवारों को निरन्तर मक्की की सहायता दी जाती रही। इन भीलों ने ईसाइयों से अनाज लेना बन्द कर दिया। चार मास में भील परिवारो को ४० हजार रुपये की मक्की वितरित की गई। आचार्य जी द्वारा मक्की वितरण का यह प्रभाव दूर-दूर तक भील प्रदेशों में फैल गया। कुशलगढ़ और बांसवाड़ा रियासतों में भी हजारों भील शुद्ध हो गये। इस प्रकार कोई भी भील ईसाई नहीं बन पाया। सारा क्षेत्र शुद्ध हो गया। परन्तु झाबुआ के हिन्दू राजा दलीपसिंह ने अपनी रियासत में भीलों की शुद्धि की अनुमति नहीं दी और आचार्य जी को अपने राज्य से निकाल दिया।

आचार्य जी ने रावटी, कलजरा और बामबाड़ा में भी छात्रावास एवं स्कूल खोले।

(क्रमशः)

ईसाई मिशनरियों के काले कारनामे

-विशनस्वरूप गोयल-

हमारे देश में आज अंग्रेजों के शासनकाल को समाप्त हो जाने के ४० साल बाद भी ईसाई मिशनरी अंग्रेजी शासनकाल से अधिक सक्रिय रूप से हमारे हिन्दू समाज के धर्मान्तिरण के कार्य में सर्वात्मना जुटे हुए हैं। ये मिशनरी दूरस्थ स्थानों पर बसे हमारे हिन्दू समाज के अभिन्न अंग गिरिवासी, वनवासी, आदिवासी, अनुसूचित जाति तथा हरिजन बन्धुओं की गरीबी, पिछड़ेपन और उनके अनपढ़ होने के नाते प्रलोभन के बल पर उनका धर्मान्तरण कर उन्हें ईसाई मत में मिला लेते है। इस काम के लिए इन मिशनरियों को ईसाई देशों से प्रति वर्ष लगभग ४० करोड रुपये आते हैं, जिनकी हमारी सरकार को पूरी जानकारी है और वह यह भी जानती है कि यह सारा धन हिन्दुओं को ईसाई बनाने पर व्यय किया जा रहा है। हमारी सरकार इस प्रकार के विदेशी धन के आने पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर उन्हें और सहयोग प्रदान कर रही है।

इसका एक स्पष्ट उदाहरण इस वर्ष शायद पहली बार देखने को मिला। आज तक संसार के किसी भी देश की सरकार ने किसी मजहब, मत या सम्प्रदाय के मजहबी आचार्य को सरकारी निमन्त्रण पर नहीं बुलाया और न ही कभी उसका राजकीय तौर पर सम्मान किया गया। किन्तु हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने वैटिकन सिटी के ईसाई मत के मजहबी आचार्य जान पोप पाल को सरकारी निमन्त्रण पर बुलाकर उसका राजकीय सम्मान कर शायद पहली बार इतिहास में ये नये पन्ने जोड़े हैं।

इसी प्रकार हमारी सरकार ने जिस प्रकार मदर टैरेसा को यहां मानवता की सेवा की प्रतीक मानकर उन्हें हर प्रकार की सुविधायें, अनुदान तथा उपाधियों से विभूषित किया है वह भी यहां एक प्रकार से ईसाई मत के प्रचार और प्रसार में सहयोग देना ही कहा जा सकता है। क्या कभी हमारे राजनेताओं ने मदर टैरेसा द्वारा चलाये जा रहे यहां के अनाथ आश्रमों को इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया है कि इन आश्रमो में कहीं ईसाइयत का प्रचार तो नहीं हो रहा। वे लोग तो वहां गये, स्वागत कराया, हार पहने और चलेआये। इन्होंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीदिया। मुझे मदर टैरेसा द्वारा संचालित कई अनाथ आश्रमों को देखने का अवसर मिला है और मैंने उन्हें इसी दृष्टि से देखा है कि इन आश्रमों में कोई देश-विरोधी गतिविधियां तो नहीं चलाई जा रही। इन्हें देखने के बाद मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इन आश्रमों में पलने वाले और रहने वाले लोगों को पूरी तरह ईसाइयत की ही शिक्षा दी जा रही है और बड़े होकर जब ये यहां से निकलेंगे तो न केवल ईसाई होंगे, अपितु ईसाई मत के कट्टरपन्थी प्रचारक बनेंगे।

जहां तक ईसाई पादरियों और मिशनरियों की बात है वैसे तो उन्हें "फादर" कहा जाता है और वे भी हमारे यहां मानवीय सेवा के प्रतीक माने जाते हैं, किन्तु इन दिनों इनके कुछ काले और शर्मनाक कारनामे हमारे सामने आये हैं, जो आंखे चौंका देने वाले हैं। अब ये ईसाई मिशनरी यह भी समझ गये हैं कि हमारी सरकार डण्डे की भाषा ही समझती है। सिखो ने डण्डा उठाया तो उनसे डर गई और उनकी बातें मान ली। मुसलमानों ने डण्डा उठाया तो उनकी बातें मान ली गई। हिन्दू डण्डा नहीं उठाता, इसलिए उसकी बात नहीं मानी जाती। इस कारण अब ईसाई मिशनरी भी मुसलमानों की तरह आक्रामक व्यवहार अपना रहे हैं।

विवेकानन्द शिला स्मारक पर ईसाइयों की गिद्ध दृष्टि

कन्याकुमारी, जहां स्वामी विवेकानन्द को ज्ञान प्राप्त हुआ था, वहां ईसाई मिशनरियों ने सक्रिय रूप से धर्मान्तरण का काय चलाया हुआ है। वहां के रहने वाले मछेरों को धन का प्रलोभन तथा अन्य सुविधायें प्रदान कर ईसाई बना लिया गया है। इन मछेरो से यहां तक कहा गया है कि जो तीर्थयात्री शिला स्मारक देखने जाते हैं, उन्हें जो मल्लाह नाव में बैठाकर ले जाते हैं, उन्हें मारो, धमकाओ और इस बात के लिए मजबूर कर दो कि वे उन नावों को चलाना छोड़ कर ईसाई बन जायें। वहां ऐसा ही किया जा रहा है, जो एक प्रकार से हमारे इस महान् तीर्थ स्थान पर एक भयंकर आक्रमण ही है। यही नहीं, वहां के मन्दिर के पुजारी का जो एक अनुष्ठान करने की योजना बना रहा था, तथा उसके दो साथियों का ईसाइयों ने अपहरण करा लिया और आज तक उनका पता नहीं। ऐसी आशंका है कि उनकी हत्या कर उनके शवों को समुद्र में फेक दिया गया है। अब यह खोज तमिलनाडु सरकार को करनी चाहिये कि इन तीनों लोगों को कहां ले जाया गया।

श्रीरामेश्वरम् टापू को ईसाई होमलैण्ड बनाने की योजना

श्रीरामेश्वरम् टापू वह स्थान है, जहां भगवान् राम ने लंका विजय से पूर्व शिव लिंग की स्थापना कर वहां शिव की पूजा की थी। यह श्रीरामेश्वरम् टापू दक्षिण में मुख्य भूमि से दूर सागर में तैरता हुआ १२ मील लम्बा और पाच मील चौडा एक टापू है। यह स्थान भगवान् राम द्वारा यहां शिवलिंग की पूजा किये जाने के कारण हिन्दू समाज का तीर्थस्थल माना जाता है और हिन्दुओं की श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। यहां रामेश्वरम् का मन्दिर भी बना हुआ है। किन्तु ईसाई मिशनरी इस स्थान को पूरी तरह ईसाई होमलैण्ड बनाने के लिए जी जान से जुटे हुए हैं और अब इसके अस्तित्व को ही समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। श्रीरामेश्वरम् टापू के ३७ गांव हैं, जिनकी कुल जनसख्या एक लाख के लगभग है। इन ३७ गावों में से १० गांव पूरी तरह से ईसाई बना लिये गये हैं। श्रीरामेश्वरम् टापू पर इस समय ईसाइयो की सख्या लगभग ३,५०,००० है, जो वहां की कुल आबादी का ३५ प्रतिशत है। मुस्लिम आबादी तो वहां एक हजार के लगभग ही है। यहां की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर ईसाई मिशनरियों का पूरा आधिपत्य है।

क्योंकि यहां के सभी मछेरे ईसाई बन चुके हैं, इस लिए वे अधिकतर ईसाई मिशनों द्वारा प्राप्त सहायता और धन से सम्पन्न हैं। अब वे तस्करी जैसे अवैध धन्धों मे भी संलग्न होते जा रहे हैं। ईसाई मिशनरियों की सहायता से ही अब इन मछेरों के पास ८०० नौकायें हैं, जिनका उपयोग वे तस्करी के काम के लिए करते हैं। इन मछेरों ने समुद्र के किनारे को वहां नावें खड़ी करके इस प्रकार घेर लियाहै कि श्रीरामेश्वरम् मन्दिर के दर्शन करनेजाने वाले लोगों को कठिनाई हो और उन्हें स्नान आदि करने में काफी परेशानी पैदा हो। तमिलनाडु सरकार को हमारे इस तीर्थस्थल को ईसाई होमलैण्ड बनने से रोकने तथा हमारे तीर्थयात्रियों को सभी सुविधायें उपलब्ध हो इसके लिए इन मछेरो के विरुद्ध कारंवाई करनी चाहिये। इसके लिए हिन्दू समाज को भी तमिलनाडु सरकार को लिखना चाहिये।

रूस में शराबबन्दी : क्या अब भी हमारी आंखें न खुलेंगी ?

रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के महामन्त्री श्री मिखाइल गोर्बाचोफ पिछले सप्ताह भारत के दौरे पर थे।

२७ नवम्बर के पंजाब केसरी में पत्र के दिल्ली सस्करण के सम्पादक श्री अश्विनी मिन्ना ने एक लेख लिखा है। शीर्षक है—गोर्बाचोफ के खुली हवा के झोंके। यह लेख हम भारतीयों की आंखें खोलने वाला है।

इसके मुख्य-मुख्य अश नीचे दिये जा रहे हैं—सम्पादक।

श्री गोर्बाचोफ शराब नहीं पीते और उन्होंने शराब के विरुद्ध एक जोरदार अभियान भी अपने देश में चला रखा है, क्योंकि सत्ता में आने के बाद उन्होंने यह महसूस किया कि शराब के बढ़ते हुए प्रयोग के कारण रूस के लोगों की उम्र कम होती जा रही है, बच्चों में जन्मजात रोग बढ़ रहे हैं और लोगों में लापरवाही और अनुशासनहीनता भी बढ़ रही है। २५ नवम्बर को जो स्वागत समारोह दिल्ली के हैदराबाद हाउस में श्री गोर्बाचोफ के सम्मान में आयोजित किया गया, उसमें भी वोदका नहीं, शैम्पेन नहीं, बल्कि फ्रूट जूस का गिलास उठा कर ही श्री गोर्बाचोफ के स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि की कामना की गई है।

जो अभियान शराब के विरुद्ध श्री गोर्बाचोफ ने चला रखा है, उसके अन्तर्गत—

- शराब की बिक्री कम कर दी गई है।
- आम सरकारी भोजों में शराब का इस्तेमाल बन्द कर दिया गया है।
- शराब पी कर सड़कों पर गिरने वालों की सजायें सख्त की गई हैं।
- पार्टी के १८० लाख कार्यकर्त्ताओं को शराब के विरुद्ध प्रचार करने के काम पर लगाया गया है और यह चेतावनी दी गई है कि जो लोग अधिक शराब पीते हैं उन्हें पार्टी से निकाल दिया जायेगा।
- वोदका (रूसी शराब) की कीमतें बढ़ा दी गई हैं ताकि लोग कम शराब खरीदें।
- शराब की दुकानें अब केवल शाम को दो बजे से सात बजे तक खुलती हैं और सप्ताह के अन्तिम दो दिन बन्द रहती हैं।
- यह प्रचार बहुत जोर से किया जा रहा है कि अमरीका में शराब पीने के कारण ४० हजार लोग हर साल सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं अतः इस अभिशाप से रूसी समाज को मुक्त किया जाना चाहिये।

रूस के लोगों में अब एक आम धारणा यह बनती जा रही है कि यदि श्री गोर्बाचोफ का अभियान इसी तरह जारी रहा तो एक दिन वह भी आ जायेगा, जब रूस में शराब का नामोनिशान तक नजर आयेगा।

सारांश यह कि नशाबन्दी की दिशा में श्री गोर्बाचोफ वही काम कर रहे हैं जिसका सपना सबसे पहले भारत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था और जिसे पूरा करने की कोशिश पहले मुख्यमन्त्री के रूप में बम्बई में और फिर प्रधानमन्त्री के रूप में भारत में श्री मोरारजी देसाई ने की थी। मगर दुर्भाग्यवश उस पर पर पानी फिर कर रह गया और अब इस देश में शराब का प्रयोग बढ़ गया है।

लोगों को पीने के लिए पानी मिले न मिले, शराब हर जगह मिल जाती है।

श्री मनोहर सुमेरा : मेरी विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के उपमन्त्री श्री मनोहर सुमेरा अपनी भारत यात्रा के मध्य ही दिल की बीमारी के दौरे से महाप्रयाण कर गये, इस पर सहसा विश्वास नहीं होता। अभी १८ अक्टूबर की ही बात है, जब उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की शताब्दी के अवसर पर निकाली गई ऐतिहासिक, विशाल और भव्य शोभायात्रा को कई घण्टे देखा और वे अत्यन्त उत्साहपूर्वक घूम घूम कर उसके चित्र लेते रहे। उस दिन मैं और डा० शिवपूजाम (वरिष्ठ उपप्रधान आर्य सभा मारीशस) पूरे समय सुमेरा दम्पती के साथ रहे। बाद में वे हमारे होटल में भी आये और कई घण्टे तक हम लोग अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार विशेषकर मारीशस में प्रस्तावित प्रचार केन्द्र के सम्बन्ध में चर्चा करते रहे। तब किसे पता था कि मौत उन्हें इतनी जल्दी हमसे छीनने वाली है। सुमेरा जी के विषय में मैं जानता तो था परन्तु उनसे प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार उसी दिन हुआ। वे महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित और पत्रकार होने के नाते इन सिद्धांतों के प्रभावशाली व्याख्याकार थे। उनकी योजना थी कि मानव समाज की मूलभूत समस्याओं का समाधान वैदिक धर्म की शिक्षाओं के अन्तर्गत प्रस्तुत करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जायें। श्री सुमेरा के आकस्मिक निधन से दक्षिण अफ्रीका की आर्यसमाज के साथ ही सम्पूर्ण आर्य जगत् की भी क्षति हुई है। हम सब की प्रार्थना है कि परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। श्रीमती सुमेरा अपने पति की यात्रा में उनके साथ थी। उन्हें बहुत बड़ा मानसिक आघात लगा है। हम सब की सहानुभूति उनके साथ है। श्री सुमेरा का निधन वैदिक धर्म के प्रचार हेतु एक बलिदान ही माना जायेगा।

—डा० सच्चिदानन्द
उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

युवाओं में दिशाहीनता : उत्तरदायी कौन ?

—सुश्री अंशु वाजपेयी, ओल्ड पाली रोड, जोधपुर

प्रायः युवाओं पर आरोप लगाया जाता है कि वे दिशाहीन होते जा रहे हैं और राष्ट्र, समाज तथा परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भूल रहे हैं। युवकों को उपदेश मिलते हैं, बड़े-बड़े उदाहरण दिये जाते हैं उन क्रान्तिकारी युवकों के, जिन्होंने भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने में अपनी जान तक की परवाह न की। मतलब यह कि आज बीसवीं सदी के युवकों में खोजा जाता है चन्द्रशेखर आजाद को, भगतसिंह को, बिस्मिल को और ऐसे अनेक युवकों को, जो इतिहास के पृष्ठों पर सदा के लिए अंकित हो गये हैं। पर जब ये खोजी निगाहें निराश होकर लौटती हैं कि आज इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर रहे युवकों में किसी की भी छवि उन आदर्श युवकों से मेल नहीं खाती तो हताशा मे इन हालात के लिए युवा ही दोषी ठहराये जाते हैं। ठहरिये, अंधकारमय भविष्य की ओर अग्रसर होती युवा पीढ़ी को लताड़ने से पहले एक दृष्टि परिस्थितियों पर भी डाली जाये।

सर्वप्रथम यह विचारिये कि स्वाधीनता संग्राम के उस काल में ही ऐसे अनेक महान् व्यक्ति हुए, जिन्हें क्रांतिकारी नवयुवकों ने अपने आदर्श के रूप में स्वीकार किया। उदाहरणार्थ लाला लाजपतराय, महात्मा गांधी बाल-गंगाधर तिलक, गणेशशंकर विद्यार्थी आदि कुछ नाम हैं, जो क्रांतिकारी युवाओं के लिए आदर्श बने और जिनके निर्देशों का पालन करते हुए वे देश-हित में लगे रहे। महात्मा गांधी जहां नरमपंथी युवकों के आदर्श बने, वहां लाजपतराय, तिलक, गणेशशंकर विद्यार्थी आदि के नेतृत्व में गरम दल के युवकों ने मोर्चा सभाला।

वर्तमान में ऐसे तथाकथित युवा नेताओं की भीड़ तो मिलेगी, जो युवावर्ग का मसीहा बनने का दम भरती है। पर ये युवा नेता अपने आचरण में कितने शुद्ध हैं, यह बताने की आवश्यकता नहीं। ऐसे स्वार्थरत नेता कितने युवकों के आदर्श बन सकेंगे? कहां है ऐसा व्यक्ति, जो आदर्श बन कर उभरे? आज तो हालत यह है कि स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे तक अपने देश के नेताओं के नामलेते समय शिष्टाचारवश भी उनके नाम के साथ 'श्री' लगानेका कष्ट नहीं करते। पर इन परिस्थितियों के लिए क्या स्वयं नेता लोग जिम्मेदार नहीं?

दिशाहीनता का दूसरा प्रमुख कारण है पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण। टिड्डी दल की तरह फैलते नवधनाढ्यों ने जितनी तेजी से पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया है, अगर उतना ध्यान भारतीयता के साथ एकाकार होने में लगाया जाता तो शायद वर्तमान परिस्थितियां उत्पन्न न होतीं। समृद्ध वर्ग आज भारतीय कहलाने में भी झिझकता है। उनकी संतानें पाश्चात्य रंग में रंगे कान्वेन्टों में शिक्षा ग्रहण करती हैं। डिस्को, नशीली दवायें, उत्तेजक अंग्रेजी साहित्य, पाश्चात्य पोशाकें तो इस वर्ग के युवाओं के फैशन में शामिल हैं। उन्हें अपने देश से क्या लेना-देना? जब वे सम्पन्न हैं तो उन्हें देश के गरीबों के दुःख-दर्द से क्या मतलब? यह तो है पश्चिमी सांचे में ढले समाज की बात। प्रशासन में भी अंग्रेजी को हिन्दी की अपेक्षा ऊंचा दर्जा मिला है। यों कहने को तो समय-समय पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में याद कर लिया जाता है—हिन्दी सम्मेलन आदि आयोजित करके। पर अभी तक तो यही देखने में आया है कि हिन्दी गंवारों-जाहिलों की भाषा है। भला हिन्दी के बल पर भी कोई ऊंचा उठ सका है! तो बन्धुओ, यह है इस देश की मानसिकता।

अब ऐसी रुग्ण मानसिकता में विकसित होते युवा भला कहां से पायेंगे स्वच्छ विचारधारा, जिसकी उनसे अपेक्षा की जाती है।

आज आवश्यकता है उस आदर्श की, जो दिशाहीन हो रहे युवा वर्ग को सही दिशा प्रदान कर सके और उसके लिए प्रेरक सिद्ध हो। यदि आज एक भी ऐसा आदर्श सामने आ जाये तो क्या मजाल कि युवा वर्ग उच्छृंखल हो। यह सारी भटकन तो आदर्श के अभाव में ही है। बकौल एक शायर के—

> मांगा चमन ने लहू जब भी, हमने दिया,
> अब अस्मते चमन में भी कोई सर कलम तो हो।
> हम खुद चलेंगे राह पर, तेरे ही साथ-साथ,
> राहेजमीन पर तेरा, कोई कदम तो हो।

अपराधियों का अड्डा रजनीशपुरम् अब वीरान है

ओरेगान की ६४,००० एकड़ भूमि मे बसा आचार्य रजनीश के स्वप्नों का नगर रजनीशपुरम् आज वीरान और उजाड़ पड़ा है।

रजनीश के धनी शिष्यों की चहल-पहल से रंगीन बने रहने वाले इस नगर में अब घुटनों तक घास उग आई है। इन दिनो रजनीश के १०-१२ शिष्य ही वहां रह कर नगर की देखभाल तब तक कर रहे हैं, जब तक रजनीशपुरम् को खरीदार नहीं मिल जाता।

धनी शिष्यों के गुरु कहे जाने वाले रजनीश के इस शहर पर उस समय कहर टूट पड़ा था, जब उनकी निजी सचिव मा आनन्द शीला कुछ दूसरे शिष्यो के साथ भाग कर यूरोप चली गई थी। रजनीश ने मा शीला पर हत्या, जहर देने, आगजनी जैसे अनेक आरोपो के साथ ही लाखों डालर की चोरी करके भागने का आरोप भी लगाया था।

मा शीला और कई संन्यासियों पर लगे आरोपों की छानबीन के सिलसिले में रजनीश भी कानून की चपेट में आने से नहीं बचे। प्रवासी कानूनों का उल्लंघन करने के अपराध मे उन्होने ४,००,००० डालर का जुर्माना तो भरा ही, नवम्बर १९८५ में उन्हें अमेरिका भी छोड़ देना पड़ा।

अमेरिका छोड़ने के बाद नेपाल, यूनान, आयरलैंड, उरुगवे, जमैका आदि में भटकते रहने के बाद हाल ही में रजनीश फिर भारत पहुच गये हैं।

उधर रजनीश की इमारतें और हवाई पट्टी बिकने का इन्तजार कर रही हैं। रजनीश की लगभग सौ राल्स रायल कारों का कारवां टैक्सास का कार विक्रेता खरीद चुका है।

नगर की दूसरी इमारतें शापिंग, माल, होटल, दर्जनों मकान और वह विशाल सभागार, जहां कभी वे अपने शिष्यों को प्रवचन दिया करते थे, सुनसान पड़े हैं।

इस बजर क्षेत्र को आबाद करने में दिन-रात मेहनत करने वाले रजनीश के हजारो शिष्य आज इधर-उधर भटक रहे हैं और रजनीश की अन्तरंग और निजी सचिव मां शीला कैलीफोर्निया की एक जेल में हैं।

ओरेगान के अधिकारी दो बार इस क्षेत्र का निरीक्षण कर चुके हैं। उनकी रजनीशपुरम् को सरकारी बन्दीगृह में परिवर्तित करने की योजना है। लेकिन स्थानीय लोग इसका विरोध कर रहे हैं। एक किसान का कहना है कि जब अपराधियों का एक अड्डा समाप्त हो गया है, तो अब कुछ और अपराधियों को यहां नहीं बसाना चाहिए।

महिला जगत्

उत्साहवर्धक पत्नी

भगवान् ने स्त्री-पुरुष का जोड़ा इसीलिए बनाया है कि एक तो वे मानव जाति के वंश को बनाये रखें और दूसरे एक-दूसरे की सहायता सेवा तथा सहयोग द्वारा अपने जीवन को सुखी बनायें। एक-दूसरे में जो त्रुटि है उसे पूरा करें या दैवयोग से यदि एक पर सकट आ जाए तो उसके मन को गिरने न दें। बल्कि एक-दूसरे का सहारा बन कर अपने साथी का साहस स्थिर रखें।

अमृतसर के सेठ खेमचन्द कपड़े का व्यापार करते थे। उन का थोक बेचने का काम था। लाखों के सौदे दिन-प्रतिदिन होते थे। एक समय एकाएक कपड़े में मन्दा आ गया। जिन व्यापारियों ने उनसे कपड़ा लिया हुआ था, उन्होंने दीवाले निकाल दिए। खेमचन्द व्याकुल होकर घर आता और पलंग पर लेट कर ठंडी सांसें लेने लगता। उसकी धर्म-पत्नी कमल धर्मभाव वाली और प्रभु पर विश्वास रखने वाली देवी थी और इसी कारण उसके मन में पूरी दृढ़ता थी। जब उसने पति को इस कारण निराश देखा तो कारण पूछा। तब वह बोला कि सर्वनाश हो गया। मेरा तो मन बैठा जा रहा है। यह सुन कर पत्नी ने कहा कि क्या हमारे इस सुन्दर घर का भी नाश हो गया? क्या दुकान भी कोई उठा कर ले गया? उसने कहा कि नही इनका तो नाश नहीं हुआ। फिर उसने पूछा कि क्या मैं भी मर गई? और हमारा पुत्र भी यमलोक चला गया? यह सुन कर खेमचन्द मुस्कराया और बोला प्रिय! ऐसी बातें मत कहो। फिर उसने पूछा कि क्या मेरे लाखों के आभूषण भी चले गए? तब खेमचन्द ने कहा कि तुम्हारे आभूषणों को कौन छेड़ सकता है? इस पर कमला ने कहा कि घर, दुकान, पत्नी, पुत्र, आभूषण सब आपके पास हैं, फिर आप सर्वनाश क्यों कहते हैं? उठो मेरे आभूषण बेच कर अपना काम चलाओ। घर का खर्च चलाने के लिए मेरे पास रुपया है। ये सारी बातें सुन कर वह उठ बैठा और बोला देवी! तूने तो मुझ में नई जान डाल दी। मैं तो मर चला था। दिल का दौरा पड़ने वाला था, क्योंकि दिल धड़क रहा था।

बस दूसरे दिन उसने फिर काम आरम्भ कर दिया। ऐसी होती हैं सच्ची धर्मपत्नियां।

वीर राजपूत देवी

बुन्देलखण्ड के एक राजपूत सरदार की पत्नी का देहान्त हो गया। उसकी छोटी-सी लड़की थी जिसका नाम चिन्तामणि था। वह सरदार अपनी छोटी-सी बेटी को अकेला नहीं छोड़ता था। युद्ध पर जाते हुए भी उसको अपने साथ ही रखता था और वह युद्ध के दृश्य देखती थी। धीरे-धीरे वह युवा हो गई और उसने भी तलवार पकड़ ली। कई स्थानों पर उसने अपने पिता का साथ दिया। उसका पिता बड़ा प्रसन्न था और युद्ध में उसे पूरा भाग लेने के लिए उत्साहित करता था। भगवान् ने उसे रूप भी विशेष दिया था। एक युद्ध में उसका पिता मारा गया। तब उसने पूर्ण-रूप से उसका स्थान ले लिया और सेना की नायका बनकर अपनी वीरता के रंग दिखाये। वह बहुत सुन्दर थी इसलिए कई सरदार उसके सन्मुख अपनी बड़ाई की डींग मारते ताकि वह उनसे विवाह करना स्वीकार कर ले। रत्नसिंह नामक एक सरदार कोई डींग नहीं मारता था। किन्तु चुपके से और धैर्यपूर्वक काम की बात करता था और साथ ही रात को जाग कर चिन्तामणि की रक्षा के लिए पहरा देता था। इसी कारण चिन्तामणि के मन में भी उसके लिए आदर और प्रेम की भावना बन गई थी। एक रात डाकुओं ने चिन्तामणि पर हमला बोला। रत्नसिंह जाग रहा था। उसने उनका सामना करके उनको भगा दिया। किन्तु डाकू उस घायल कर गए। चिन्तामणि उसके इस कृत्य से बड़ी प्रभावित हुई और उसने रत्नसिंह का सिर अपनी जांघ पर रख कर उसके घावों को धोकर पट्टी की। जब वह ठीक हो गया तो उसके साथ विवाह कर लिया। दूसरे ही दिन रत्नसिंह को एक युद्ध में जाना पड़ा। किन्तु वह इधर-उधर छिप गया। यह सुनकर चिन्तामणि परितप्त हो उठी और बोली मैं एक कायर की पत्नी नहीं कहला सकती। इसीलिए उसने भस्म होने के लिए चिता चिनवाई। रत्नसिंह आ गया और उसने क्षमा मांग कर उसे चिता में जलने से रोकने का प्रयास किया। किन्तु वह नहीं मानी और उसे धिक्कारा। फिर चिता जलवा कर उसमें छलांग लगा दी।

तब रत्नसिंह भी उसी चिता में कूद कर उसके साथ ही जल गया। ऐसी हुआ करती थीं हमारी राजपूत वीरांगनायें।

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्रनगर, का ११वां वार्षिकोत्सव श्रीमती प्रभात शोभा पंडिता जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें राजधानी की प्रमुख आर्यसमाजों की प्रतिनिधि बहनों ने भाग लेकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

अथर्ववेद यज्ञ, प्रार्थना, गीत और आशीर्वाद श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री और आशा ने दिया। ध्वजारोहण श्रीमती रानी दत्ता ने किया और गुरुकुल को १,००० रुपये दान दिया। गुरुकुल की छात्राओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यन्त रोचक तथा प्रभावोत्पादक रहा, जिससे प्रभावित होकर बहनो ने भरपूर धनराशि गुरुकुल को भेट की। आचार्य शान्तिदेवी जी ने वैदिक साहित्य और चन्दन की माला द्वारा अतिथियों का सत्कार किया। सभा प्रधाना श्रीमती सरला मेहता ने स्वागत भाषण पढ़ा। मुख्य अतिथि श्रीमती कौशल्या जी मलिक (उपप्रधाना समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड) ने अपने भाषण में बलपूर्वक कहा कि गुरुकुल पद्धति से ही राष्ट्र की उन्नति और चरित्र का निर्माण हो सकता है—युवा पीढ़ी में राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया जा सकता है, इसलिए हमें तन, मन, धन से गुरुकुलों को अपना सहयोग देना चाहिए।

बहन विद्यावती जी और ईश्वर देवी जी ने गुरुकुल पद्धति अपनाने पर बल दिया, जिसका समर्थन प्रेमशील ने भी किया। रामलाल जी मलिक ने गुरुकुल की प्रशंसा करते हुए तन, मन, धन से योगदान देने का आश्वासन दिया।

करौलबाग (दिल्ली) में वेदप्रचार दिवस धूमधाम से संपन्न

दिल्ली। करौलबाग आर्य महिला मण्डल के तत्त्वावधान में स्त्री आर्यसमाज करौलबाग के सौजन्य से वेदप्रचार दिवस बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से ७ नवम्बर शुक्रवार को सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का संचालन आशा बहन ने किया। झण्डारोहण श्रीमती शान्ति देवी मलिक के करकमलों द्वारा हुआ। ध्वजगीत पहाड़गंज मण्डली ने गाया तथा ओ३म् की व्याख्या सुशीला जी ने की।

वेद-महिमा के गीत मण्डल की बहनों ने गाये। वेदगान डा० चन्द्रप्रभा ने किया। स्वागत गीत द्वारा विद्यावती मरवाह ने अतिथियों का स्वागत किया। अभ्यागत अतिथियों तथा वेदविदुषी बहनों का स्वागत वैदिक साहित्य द्वारा विमला बत्रा ने किया।

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती सरला जी महता (प्रधाना प्रान्तीय महिला सभा) ने की। वेद की महत्ता पर उषा शर्मा, प्रेमशील तथा सत्या अग्रवाल ने अपने विचार प्रकट किये। विद्यावती बत्रा ने सभी को सत्कुशल देकर अपना आशीर्वाद दिया।

सम्पादक के नाम पत्र

सेवाभावी व्यक्ति की आवश्यकता है

महोदय,

भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे आर्यसमाज और वैदिक सस्कृति के प्रचार और प्रसार की महती आवश्यकता है। वहा एक ओर ईसाइयो का चक्र चल रहा है और दूसरी ओर सत्ता के बल पर मार्क्सवादी विचारधारा फैलाई जा रही है। पृथकतावादी ताकतें अपना सिर उठा रही हैं। इस क्षेत्र मे आर्यसमाज सिलीगुडी अच्छा कार्य कर रही है। वहा कुछ प्रबुद्ध कर्मठ कार्यकर्ता भी हैं। हमने उनके परामर्श से वहा एक शिक्षा सस्था स्थापित करने का निश्चय किया है, जहा उस क्षेत्र के लोग भली प्रकार शिक्षा प्राप्त कर सकें।

हमे उस शिक्षा सस्था के सचालन के लिए एक अत्यन्त मेधावी, स्वस्थ, धार्मिक और क्रियाशील व्यक्ति की आवश्यकता है। यद्यपि हमारी योजना योग्यतानुसार वेतन देने की है तो भी वह व्यक्ति धर्म और सस्कृति के प्रचार मे अपनी आहुति देने की भावना वाला होना चाहिए। ५० वर्ष से ऊपर अथवा सेवानिवृत्त व्यक्ति इस कार्य मे आगे आ सकते हैं। कोई ऐसा व्यक्ति हो तो मुझे लिखने की कृपा करे। प्रशान्त वेदालकार

७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

एक नया इतिहास

महोदय,

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वृद्ध भजनीक श्री आशानन्द जी ने आर्यसमाज मन्दिर मार्ग के उत्सव पर पुराने प्रचारको का जो सम्मान किया है (अर्थात् १०००) नकद तथा शाल भेंट किया है) उसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। उन्होने सचमुच एक नया इतिहास स्थापित किया है। जिस वक्त स्वामी सत्यप्रकाश जी मुझे एक हजार रुपये का लिफाफा दकर गले मे शाल डाल रहे थे, खुशी के मारे मेरी आखो मे अविरल आसू बह रहे थे। अगहीन नेत्रहीन, विकलाग और वृद्ध प्रचारको का हार्दिक अभिनन्दन हुआ। मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि और लोग भी श्री आशानन्द भजनीक से प्रेरित होकर ऐसा प्रोग्राम बनायें ताकि हम भी लोगो की दृष्टि मे आ सके।

—नरपत सिंह, प्रचारक उम्र १०३ वर्ष, फीना (उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज मन्दिरों मे सस्कृत की पाठशालाओं को प्रोत्साहन दिया जाये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अपील

भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्रस्तावित त्रिभाषा फार्मूले मे सस्कृत की उपेक्षा की है। सस्कृत भाषा मे भारत की आत्मा और गौरव का वास है। प्राचीन भारतीय परम्परा और सस्कृति से प्रेम रखने वाला सस्कृत के अपमान को सहन नही कर सकता। सरकार अपनी शिक्षा नीति मे सस्कृत को उचित स्थान दे, इसके लिए हम प्रयत्नशील हैं।

अपने पक्ष को प्रबल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने विद्यालयो, गुरुकुलो आदि मे सस्कृत के पठन-पाठन को अनिवार्य रूप से लागू करें। सभी आर्यसमाजो को अपने समाज मन्दिरो मे भी सस्कृत पाठशालाओ की स्थापना करनी चाहिए और इस कार्य के लिए सस्कृत के सुयोग्य विद्वानों को नियुक्त किया जाना चाहिए। आशा है कि सभी आर्यसमाजें व प्रतिनिधि सभायें मेरी इस प्रार्थना पर उचित कार्रवाई करेंगी ताकि हम अपने प्रयत्नो मे सफल हो सकें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

गुरुकुल को आर्थिक सहायतार्थ निवेदन

महाराष्ट्र के धाराशिव जिले के येडशी गाव मे सुरम्य पहाडियो के बीच विगत दो वर्षो से एक आदर्श गुरुकुल चल रहा है। इस वर्ष अनावृष्टि के कारण कुलवासी कष्ट उठा रहे हैं—कई निमाण कार्य भी अधूरे पडे हैं। यह एक आदर्श गुरुकुल है। इसके आचार्य श्री सुभाषचन्द्र शास्त्री सुयोग्य विद्वान हैं। मैंने स्वय इस गुरुकुल की व्यवस्था देखी है। विश्वास है कि आर्य जगत् के दानी महानुभव इस आदर्श गुरुकुल को यथाशक्ति दान देकर पुण्य अर्जित करेंगे।

राजगुरु शर्मा, उपमन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भगवती आर्य कन्या गुरुकुल जमालपुर (गुडगांव) में प्रवेश आरम्भ

कन्याओ की आर्ष शिक्षा दीक्षा के लिए हरयाणा के गुडगाव जनपद मे एक गुरुकुल का शुभारम्भ हुआ है जिसकी स्थापना के लिए यतिमण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी का आशीर्वाद प्राप्त है।

इस विद्यालय मे प्रथमा से आचार्य पर्यन्त परीक्षाओ का प्रबन्ध है, जिन्हे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से दिलाने की व्यवस्था है। गुरुकुल श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ झज्जर मे सम्बद्ध है।

दुग्ध और भोजन शुल्क केवल सौ रुपये मासिक है। सौ रुपये ही प्रवेश शुल्क है। म म न अ वामान्न परीक्षाओ के आवेदनपत्र पूरित किये जा रहे हैं।

पहुचने का मार्ग रिवाडी झज्जर बस मार्ग से पाल्हावास, नूरगढ मोड रेल मार्ग से—दिल्ली/रिवाडी से इन्द्रापुरी स्टेशन।

आर्यसमाज रांची का उत्सव

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द पथ, राची का ६३वा वार्षिकोत्सव २६ ३० और ३१ दिसम्बर को धूमधाम से मनाया जा रहा है। आचार्य प्रज्ञादेवी, वाराणसी, प्रो० रत्नसिंह, गाजियाबाद और महात्मा आर्यभिक्षु ज्वालापुर के पधारने की पूरी आशा है।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८७] मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र दयानन्दाब्द १६२ दूरभाष : २७४७७१
वर्ष २१ अक ५२] मार्गशीर्ष शु० १४ स० २०४३ रविवार १४ दिसम्बर १९८६ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

टांडा हत्याकांड के शिकार २४ बस यात्रियों के अस्थि कलश राजधानी में

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के प्रतिनिधियों की गिरफ्तारी

पीड़ितों की सहायता के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अनथक प्रयत्न

(हमारे कार्यालय सवाददाता से)

दिल्ली। ३० नवम्बर को टाडा (जिला होशियारपुर) के समीप मारे गये २४ बस यात्रियो के अस्थि कलश लेकर हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रतिनिधि के तौर पर १०५ पुरुष और कुछ महिलाये दिल्ली आ रहे थे। उन्हे अलीपुर (दिल्ली) थाने के समीप रोक लिया गया और गिरफ्तार करके तिहाड जेल भेज दिया गया।

ज्यो ही यह समाचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को मिला, वे अलीपुर गये और पुलिस अधिकारियो से मिले। वहा से स्वामी जी इन लोगो की रिहाई की माग लेकर उपराज्यपाल श्री हरकिशनलाल कपूर से मिले। फिर तिहाड जेल लौटे और तिहाड जेल मे बन्दी हिन्दुओ से मिले। उन्हे खाने-पीने का सामान दिया। इन बन्दियो ने अपनी कष्ट-कथा स्वामी जी को सुनाई। स्वामी जी एक बार फिर उपराज्यपाल से मिले और उनसे अनुरोध करके स्वामी जी ने इन बन्दियो को रिहा करवाया।

हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रतिनिधि श्री जुगलकिशोर, श्री जयकृष्ण शर्मा और डा० मोहनलाल स्वामी जी मिलने सभा कार्यालय मे आये। स्वामी जी ने उनसे विचार-विमर्श करके हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रतिनिधिमडल को प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी और गृहमन्त्री श्री बूटासिह से मिलाने के लिए अधिकारियो से सम्पर्क किया।

स्वामी जी ने मृत व्यक्तियो के अस्थिकलशो को ब्रजघाट (गढ़-मुक्तेश्वर) भिजवाने की व्यवस्था की।

स्वामी जी तीसरी बार फिर उपराज्यपाल से मिले और उन्होने इन्तजाम करवाकर समिति के ४०० प्रतिनिधियो को प्रधानमन्त्री और गहमन्त्री से मिलने भिजवाया। भारतीय जनता पार्टी के नेता डा० बलदेव प्रकाश इस प्रतिनिधिमडल के नेता थे।

उपराज्यपाल से हुई मुलाकातो मे स्वामी जी ने उपराज्यपाल से कहा कि पाच दिसम्बर को गुरु तेगबहादुर के शहीदी दिवस पर दिल्ली मे हुई गडबड के कारण स्थिति विस्फोटक है। यदि बन्दी हिन्दू प्रतिनिधि रिहा न किये गये तो स्थिति और बिगडेगी। राजधानी के हिन्दू इस अन्याय को कभी सहन न करेगे।

इस सिलसिले मे स्वामी जी दो बार प्रधानमन्त्री-निवास गये और उन्होने उच्च अधिकारियो को स्थिति से परिचित कराया।

विस्थापितों में रजाइयों का वितरण

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा प्रसारित एक सूचना के अनुसार दिल्ली के मगोलपुरी विस्थापित केन्द्र मे आयोजित एक समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ एडवोकेट द्वारा सभा की ओर से पजाब के विस्थापितो मे सैकडो रजाइया वितरित की गई। इस अवसर पर सामूहिक यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

पजाब के विस्थापित हिन्दुओ ने आर्यसमाज तथा विशेषकर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी जी ने उनकी कठिनाइयो को दूर कराने के लिए अब तक जो सहयोग दिया है, उसके लिए वे उनके अत्यधिक कृतज्ञ है। उन्होने कहा कि इस ठण्ड मे अपने बचाव के लिए रजाइया प्राप्त करके हमे बहुत राहत मिली है। बन्दियों को रिहा कराने मे भी जो सहयोग स्वामी जी ने दिया है, उसके लिए हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते है।

स्वामी आनन्दबोध जी ने विस्थापितो के प्रति हार्दिक सहानु-

(शेष पृष्ठ २ पर)

अन्दर के पृष्ठों पर पढ़िये

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

पजाब के हिन्दू पीड़ितों के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पजाब से २६ हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता है। सर्दी का मौसम प्रारम्भ हो चुका है। विस्थापितो के लिए गरम कपडो की तुरन्त आवश्यकताहै। जिस-जिस सज्जन तक मेरी अपील पहुचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप मे अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

पंजाब हिन्दू पीड़ित सहायता कोष

प्रधान, आर्यसमाज मदनसूरी, ताल्लुका निलंगा, जिला लातूर द्वारा भेजी गई दान राशियां

सौ० रुक्मिणीदेवी मारुतिराव हुपले	१०१)
निवृत्तिराव बाजीराव माने	२०)
मनोहर केशवराव माने	२१)
नामदेव गोपाळा माने	२१)
शिवाजी राव सतराम धानुरे	१०)
भानुदास राव लक्ष्मण माने	५)
विभीषण हणमता विहीरे	२०)
श्रीरव रामराव सूर्यवंशी	२०)
बापूराव लिबानी माने	२१)
सीताबाई राम माने	२१)
सीताराम नरसोबा माने	५)
शेषराव नामदेवराव माने	११)
शिवाजीराव चेंडकापूरे	१५)
सुधाकर यशवतराव माने	५)
लक्ष्मण तुकाराम सूर्यवंशी	१०)
जगन्नाथ विश्वनाथ सोनपणे	१)
डा० दलीप रामकृष्णराव तादके	११)
रावसाहब यशवतराव माने	१०)
बाबूराव सतराम जाधव	५)
कु० निर्मलाबाई मनोहर माने	५)
किशनराव एकू डे	५)
बाबूलाल जी सेठ जी	५)
विश्वनाथ राजाराम माने	५)
शाहूराव पाटील	५)
गोपालराव ताभाले	५)
बाबूराव आरदवाडे	५)
बाबूराव भाऊराव माने	५)
अजब दिनकरराव पाटील	५)
सौ० सुरेखा प्रतापराव आर्य	५१)
काशीनाथ लोंडे	११)
विश्वनाथराव सखाराम पाटील	५)
ओमप्रकाश रामचन्द्र जी वाजरवाडे	२५)
सतीश गणपतराव माने	५)
पद्मच द माणिकचद बेलकिरे	१०)

अन्य दानदाता

श्री बलराज जी, मोहल्ला कालियान, बिजनौर	२०)
श्री सामप्रकाश गुप्त, साहेब गज, छपरा	१०)
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, ब्रह्मपुरी, मेरठ	१०१)

स्वतन्त्रता सेनानियों को पेन्शन : अनेक रियायतों की घोषणा

केन्द्रीय सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानियो को पेंशन स्वीकार करने मे अनेक प्रकार की छूट दी है। एक सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार सरकार अब उन दो प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानियो से एक साथ जेल काटने का प्रमाणपत्र स्वीकार कर लेगी, जो स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान कम से कम एक वर्ष की सजा काट चुके हैं और जिन्हें ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है और जो केन्द्रीय राजस्व से पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। अब तक ऐसे एक साथ जेल काटने के लिए वर्तमान या भूतपूर्व विधान सभा सदस्यो अथवा ससद् सदस्यो द्वारा जारी प्रमाणपत्र ही मान्य थे। केन्द्रीय सरकार १९५१-५२ तक विभिन्न सरकारी अन्य अर्द्ध-सरकारी सबन्धित पुस्तको या सूचियो को दस्तावेजी साक्षी के रूप मे स्वीकार करेगी। अदालत द्वारा कोडे और बेंत मारने की सजा को भी पेन्शन स्वीकार करने योग्य माना गया है। दस कोडो को ६ मास की जेल के बराबर माना जायेगा। होल वेल मोन्युमेंट रिमूवल मूवमेंट १९४० को अगस्त १९८० से पेंशन स्वीकार करने के लिए राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम का अ ग मान लिया गया है। यह आन्दोलन नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने होल वेल मोन्युमेट को हटाने के लिए प्रारम्भ किया था। यह अ ग्रेजो द्वारा ब्लैक होल हत्याकाण्ड की यादगार के तौर पर बनाया गया था। भूतपूर्व आजाद हिन्द फौज से सम्बद्ध लोग, जिन्हे न्यूगिनी या आसपास के द्वीपो मे भेजा गया और जिन्हें कठोर यातनायें दी गई थी और भूखा प्यासा रखा गया था, उन्हें भी एक अगस्त १९८० से पेंशन स्वीकार की जायेगी – चाहे ऐसे लोगो ने जेल की सजा प्राप्त न की हो।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

महात्मा हसराज दिवस समारोह रविवार, १९ अप्रैल १९८७ को समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। मेरी समस्त आर्यसमाजो, स्त्री आर्यसमाजो डी० ए०-वी० सस्थाओ और अन्य आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि वे अभी से उक्त तिथि अ कित कर लें और उस दिन कोई अन्य कार्यक्रम न रखकर इस समारोह मे अधिक से अधिक सख्या मे सम्मिलित होने की कृपा करे।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज लक्ष्मीनगर विस्तार का उत्सव

आर्यसमाज लक्ष्मीनगर विस्तार, एफ० १६१ (ई) पुलिस स्टेशन के समीप, फ्रेंड्स कमर्शल कालेज के सामने, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-११००९२ का चौथा वार्षिकोत्सव १४ दिसम्बर को प्रात ९ बजे से मनाया जायेगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का अभिनन्दन किया जायेगा प्रवचना और मधुर भजनो का कार्यक्रम है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
अनेक भारतीय भाषाओं में

सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन

१	सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी)	१०)
२	सत्यार्थप्रकाश (उर्दू)	१२)
३	सत्यार्थप्रकाश (बगला)	२०)
४	सत्यार्थप्रकाश (सस्कृत)	५०)
५	सत्यार्थप्रकाश (उड़िया)	२०)
६	सत्यार्थप्रकाश (अ ग्रेजी)	४०)
७	सत्यार्थप्रकाश (असमी)	२०)
८	सत्यार्थप्रकाश (कन्नड)	१८)
९	सत्यार्थप्रकाश (तमिल)	२०)
१०	सत्यार्थप्रकाश (चीनी)	१०)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान के समीप, नई दिल्ली-११०००२

प्राचीन भारत में नारियों को सैनिक शिक्षा

-डा० शिवनन्दन कपूर-

भारत में प्राचीन काल से ही सैनिक शिक्षा की व्यवस्था रही। नारियों को भी सैनिक शिक्षा दी जाती थी। वैदिक युग में कन्याओं को धनुर्विद्या सिखाने के संकेत मिलते हैं। (ऋग्वेद, १।११२।१०—१०-१०२-२)। उस युग में नारियां न केवल सैनिक शिक्षा पाती थीं, अपितु युद्ध में भी जाती थीं। खेल राजा की पुत्री विश्पला अत्यन्त वीरांगना थी। वह पिता के साथ रण-क्षेत्र में भी पराक्रम दिखाती थी। एक बार समर भूमि में उसका एक चरण बुरी तरह टूट-फूट गया। इस पर अश्वि देवों ने उसकी टांग काटकर लगा दी थी।

रामायण काल

वाल्मीकि रामायण के एक संस्करण में श्वेत द्वीप की चर्चा आती है। वहां सुन्दरियों का ही शासन था। नारियों के उस द्वीप में कोई पुरुष न था। रूपसियां ही वहां शासक, अधिकारिणी तथा सैनिकायें थीं। नारद ने एक बार रावण को वहां की रूपसियों के रूप और धन की चर्चा कर उसे आक्रमण के लिए उकसाया। रावण ने श्वेत द्वीप पर चढ़ाई की किन्तु उसे न केवल मुंह की खानी पड़ी अपितु जीवन में सबसे अधिक अपमानित होना पड़ा। कैकेयी ने भी विधिवत् सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी। राजा दशरथ के साथ वे भी युद्धों में जाया करती थीं। एक बार रथ का पहिया क्षति ग्रस्त हो जाने पर उन्होंने धुरी की जगह पर अपना हाथ लगा दिया था। इस प्रकार राजा की प्राण रक्षा कर उन्होंने दो वरदान प्राप्त किये थे। देवी दुर्गा के वीर रूप की आज तक पूजा होती है। उन्होंने भी नारियों की सेना का संगठन किया था।

पतंजलि ने भाला चलाने वाली वीरांगनाओं का वर्णन किया है। हर्ष के काल में नारियां न केवल शिक्षा प्राप्त कर युद्ध में जाती थीं, अपितु आहतों की सेवा-सुश्रूषा भी करती थीं। स्कन्धावार (सेना का शिविर, पड़ाव) के पीछे के भाग में चिकित्सकों का शिविर रहता था। महिला स्वयंसेविकाओं के रूप में उनके साथ रहती थीं। वे समय पर चिकित्सकों को आवश्यक शस्त्र-औषधियां आदि पहुंचाया करती थीं। घायलों की परिचर्या किया करती थीं। साथ ही सबके लिए अन्न, पानी आदि की व्यवस्था और भोजन कराना भी उनका काम था। अर्थशास्त्र में भी ऐसी व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है (अर्थशास्त्र १०।३।६२)। स्कन्धावार के पीछे आधे भाग में राजा का अन्त:पुर रहा करता था। उसके पीछे ही अन्त:पुर की ये रक्षिकायें भी उपस्थित रहती थीं (अर्थशास्त्र १०।१।३) नारी सेना की ये रक्षिकायें निरन्तर सजग रहा करती थीं। सेना की रण-यात्रा के समय सैनिकों को उठाने के लिए महिला सैनिकायें हुआ करती थीं। उन्हें 'याम चेटियां' कहा जाता था। (हर्षचरित, अ० ४)। भरहुत की मूर्तियों में सुदृढ अश्वारोहिणी वीरांगनाओं की प्रतिमायें भारत की वीर जननियों की गाथा गाती हैं। कौटल्य ने महिला धनुर्धरों का भी उल्लेख किया है। (धर्म और समाज, डा० राधाकृष्णन् पृ० १६४)।

सिकन्दर का आक्रमण

जब-जब भारत-भूमि पर किसी विदेशी ने अपनी कुदृष्टि उठाई, इस देश की स्त्रियों ने भी तलवार संभाली। जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया तो उसे अनेक स्थानों पर लोहे के चने चबाने पड़े। कठ जाति पर आक्रमण के समय नारियों ने भी शस्त्र संभाले। पुरुषों के साथ वे भी युद्ध क्षेत्र में व्यूहरचना में संलग्न हुईं। उनकी वीरता से यूनानी सैनिक स्तम्भित रह गये। नारियों की युद्ध-शिक्षा तथा कठ जाति की वीरांगनाओं का वर्णन यूनानी इतिहासकारों ने भी किया है। (दी सिविलिजेशन आफ एनशियेण्ट इण्डिया, लुई रेनू, पृ०-७१)। मैकक्रिडल ने भी मशाकावती की रानी द्वारा आवश्यकतानुसार महिलाओं की सेना बनाकर सिकन्दर का सामना करने की बात लिखी है। (उपर्युक्त पृ० १६४)।

गुप्त काल

स्ट्रैबो तथा मेगस्थनीज ने राजा की अंग रक्षिकाओं का संकेत किया है। स्ट्रैबो के अनुसार राजा की अंग रक्षक नारी-सेना हुआ करती थी। शिकार के लिए जाते समय भी यह नारी-सेना अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर साथ चला करती थी। वे रथों पर ही नहीं, घोड़ों और हाथियों पर सवार होकर राजा के साथ-साथ चलती थीं। उनमें यवन देश से आई हुई सुन्दरियां भी रहती थीं। महिला रक्षिकाओं को अस्त्र-चालन के अतिरिक्त रथ, हाथी, घोड़े आदि का संचालन भी सिखाया जाता था। (अर्थशास्त्र, १५-१-५६) कौटल्य ने भी 'स्त्रीगणैर्धन्विभि:' कह कर इसकी पुष्टि की है (अर्थशास्त्र; १-२१)। प्रात: शय्या-त्याग करने पर ये धनुर्धारिणी सैनिकायें ही राजा का अभिनन्दन किया करती थी। कभी-कभी नरपति की शोभा यात्रायें निकला करती थीं। उस समय नारी रक्षिकायें भी साथ चलती थीं। वे दोनों ओर रस्सियां तान कर सामान्य जनों का आना-जाना एक विशेष सीमा में निषिद्ध कर देती थीं। यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति रस्सी लांघ कर निषिद्ध सीमा में चला आता, तो राजा की रक्षा के लिए वे रक्षिकायें उसे बन्दी बना लेतीं या मार डालती थीं।

अलाउद्दीन का आक्रमण

राजपूताना की महिलायें तो शस्त्र चलाने तथा आत्मरक्षा में सदा कुशल रहीं। वे तलवार, भाला, धनुष आदि चलाना तथा घुड़सवारी अच्छी तरह जानती थीं। अलाउद्दीन ने देवगिरि पर आक्रमण कर दिया। किले में उस समय सेना न थी। उसके लिए अच्छा अवसर था पर दुर्ग के वीर निराश न हुए। सामन्त कान्ह्रा ने लोगों को संगठित कर युद्ध के लिए प्रेरित किया। मुस्लिम इतिहासकार एसामी ने लिखा है कि पहले धावे में उन्होंने अलाउद्दीन की समुद्र की लहरों से उमड़ती-चढ़ती विशाल सेना को रोका ही नहीं, पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। इस युद्ध में न केवल पुरुषों ने हथियार उठाये थे, अपितु महिलायें भी देश-रक्षा के लिए आगे बढ़ी थी। सेना के एक अंग का संचालन दो वीरांगनाओं ने ही किया था। शस्त्र-चालन में कुशलता पाये बिना तथा रणनीति जाने बिना ऐसा संभव नहीं था। अलाउद्दीन निराश हो चला था। अन्त में उसने एक उपाय अपनाया। अपनी सेना में उसने प्रचार करा दिया कि "जब यहां की औरतें इतनी बहादुर हैं, तब मर्दों का सामना करने की ताब हमारे सिपाहियों मे कहा है। इसलिए बेहतर होगा कि सिपाही चूड़ियां पहन लें और लौट चलें।" इससे उनके सिपाहियों में एक नई उत्तेजना आ गई। वे प्राणों की बाजी लगाकर लड़े और विजयी हुए। पद्मिनी की युद्ध-योजना और साहस से ही (छल से) बन्दी बना लिये गये चित्तौड़-पति को अलाउद्दीन की कैद से छुटकारा मिल सका था। चांद बीबी और रजिया ही नहीं, नूरजहां ने भी अपने जौहर दिखाये थे। दुर्गावती ने अकबर की सेना को नाकों चने चबवाये। गढ़मण्डल की अधीश्वरी दोनों हाथों से तलवार चलाती थी। ताराबाई ने अपने पराक्रम से पिता का प्रतिशोध लिया। इसमें साथ देने वाले वीर से ही उसने विवाह किया था। सोलंकी विक्रमादित्य की पत्नी अक्का देवी ने गोकाक बेलगांव के गढ़ पर घेरा डाला था। वह चतुर वीरांगना और राजनीति की पण्डिता थी। उसका शासन चार प्रदेशों पर था।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी ने देश की रक्षा के लिए पुरुषों का ही आह्वान नहीं किया था, नारियों को भी शस्त्र शिक्षा देकर गठित किया था। उन्होंने स्वयं भी हथियार चलाना सीखा था। महिला सेना की सेनानियां उसकी सहेलियां थीं। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज मे नारियों की लक्ष्मी ब्रिगेड भी थी। सन् ४२ की क्रांति में भी नारियों का योगदान रहा। आज भी महिलायें स्वेच्छा से सैनिक शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। देश की प्रधान मन्त्री के रूप में एक महिला ने ही शत्रुओं की ललकार के बीच निर्भय रहकर दुर्गा के समान उन्हें सरलता से परास्त किया था। ●

आर्य सत्याग्रहियों को पेन्शन

सलाहकार समिति की बैठक १२ दिसम्बर को

आनन्दबोध सरस्वती अध्यक्षता करेंगे

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह सम्बन्धी पेन्शन की सिफारिश के लिए गठित सलाहकार समिति की बैठक १२ दिसम्बर को हो रही है। इसमे विचाराधीन मामले निपटाने और कार्यविधि तय करने के सम्बन्ध मे कुछ फैसले किये जायेगे। बैठक की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करगे।

गृहमन्त्रालय मे उपसचिव और आर्यसमाज सैल की निदेशक श्रीमती सुरेन्द्र कौर समिति की सयोजक नियुक्त की गई है।

इस सम्बन्ध मे निदेशक के साथ एक अनौपचारिक बातचीत आठ दिसम्बर को हुई। इसमे अध्यक्ष के साथ प्रो० शेरसिंह और मैं उपस्थित थे।

जब से पत्र-पत्रिकाओ मे समिति के गठन की सूचना प्रकाशित हुई है, हमारे पास देशभर से पत्रो की बाढ आ गई है। इनमें से कुछ मे केवल आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ द्वारा दिये गये प्रमाणपत्रो के आधार पर पेन्शन स्वीकृत किये जाने का सुझाव दिया गया है। कई मित्रो ने जेल की अवधि केन्द्र—राज्य की पेन्शन स्वीकृत किये जाने की शर्त्त न रखने की माग की है। कुछ ने आर्यसमाज के उन कार्यकर्त्ताओ को पेन्शन देने की माग की है, जिन्होने सन् १९३८-३९ के सत्याग्रह मे कारावास की यातनाये तो न भोगी, लेकिन सक्रिय तौर पर कार्य किया था। एक सुझाव यह भी है कि दिवगत सत्याग्रही की पत्नी के अतिरिक्त अन्य आश्रितो को भी आर्थिक सहायता दी जाये। पाच या छह मास से कम समय तक जेल मे रहे जीवित सत्याग्रहियो को राज्य सरकारे किस प्रकार और कितनी पेन्शन देगी, इस सम्बन्ध मे भी जानकारी मागी गई है। तत्कालीन निजाम रियासत मे भूमिगत रहकर अथवा अन्य रूप मे कष्ट सहकर जिन्होने उक्त आन्दोलन मे काय किया, ऐसे व्यक्तियो के आवेदनपत्र भी हमारी सभा और गृह मन्त्रालय को मिले है। आर्यसमाजी जन्मकाल से ही राजनैतिक स्वाधीनता के सघर्ष मे अग्रगामी रहे हैं। बहुतो ने १९४८ के निजाम रियासत के भारत-विलय आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया।

सक्षेप मे इस ओर ऐसी अनेक प्रकार की समस्याओ का समाधान सरकारी आदेश की परिधि के भीतर ढूढा जाना है। कार्य कठिन है, लेकिन आशा है कि इन सब मामलो मे नियमानुसार निर्णय लिया जा सकेगा।

इस बीच हमे ऐसे प्रमाण भी मिले है कि गृहमन्त्रालय की ओर से आवेदनपत्रो की प्राप्ति सरकारी मुहर या तारीख के बिना दी गई है और इसी आधार पर आवेदन पत्र देर से मिलने का बहाना बनाकर अस्वीकृत किये गये हैं।

हमारी सभा ने इस अडगेबाजी का कडा विरोध किया है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवैतनिक प्रेस सलाहकार
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

डा० धर्मपाल आर्य को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा०धर्मपाल आर्य की माता बलवीरी देवी जी का बृहस्पतिवार २७ नवम्बर को उनके बढौत स्थित पैतृक निवास स्थान पर अकस्मात् देहावसान हो गया।

थाई भाषा के सत्यार्थप्रकाश का विमोचन

—आर्यसमाज बैंकाक के मन्त्री श्री संग्रामसिंह की लेखनी से—

बैंकाक (थाई देश) गत २६ अक्तूबर को स्थानीय आर्यसमाज मे दो विशेष समारोह—सत्यार्थ प्रकाश के थाई भाषा अनुवाद का विमोचन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का द्वितीय वार्षिक उपाधि वितरण मनाया गया।

सर्वप्रथम हवन-यज्ञ किया गया। यजमान श्री मनोज कुमार सिंह थे। स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेय जी ने कार्यक्रम का सचालन किया। थाई राष्ट्र गान और फिर भारत का राष्ट्र गान सुनाया गया। आर्यसमाज के उपाध्यक्ष श्री प्रसिद्धनारायण तिवारी जी की अध्यक्षता मे कार्य आरम्भ किया गया। आज के मुख्य अतिथि थे स्वामी अग्निवेश जी (भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री हरयाणा)। स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेय जी ने स्वामी जी तथा आचार्य सनान छैयानुकूल जी (जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश का थाई अनुवाद किया है) का सक्षिप्त परिचय दिया।

आचार्य करुणा कुसलासय जी ने (जो थाई विद्वान् होते हुए हिन्दी का भी सम्यक् ज्ञान रखते हैं) हिन्दी मे आचार्य सनान छैयानुकूल जी का जीवन परिचय दिया तथा उनकी उपलब्धियो के बारे मे बताया। आचार्य सनान जी ने सत्यार्थ प्रकाश के थाई अनुवाद तथा उसमे वर्णित विभिन्न धर्मो की समालोचना के बारे मे थाई भाषा मे वक्तव्य दिया, जिसका अनुवाद आचार्य करुणा जी ने प्रस्तुत किया। आचार्य करुणा जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध मे भी विचार व्यक्त किये।

प्रोफेसर चमलोग सर्वदानुकूल जी ने (जो सिल्पाकोन विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक हैं) भी हिन्दी मे तैयार किया हुआ अपना एक लेख इन दोनो समारोहो के बारे मे पढकर सुनाया।

इसके पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी ने पुस्तक का विमोचन किया। जिस प्रति का विमोचन हुआ, वह प्रति स्वामी जी ने आचार्य सनान छैयानुकूल जी को भेंट की। साथ ही एक प्रति आचार्य करुणा जी को भेंट की गई। स्वामी जी के हाथो से कुल ५५ पुस्तकें प्रमुख लोगो को दी गई।

इसके बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के बैंकाक केन्द्र के व्यवस्थापक श्री रघुनाथ दुबे जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सक्षिप्त इतिहास बताया तथा बैंकाक केन्द्र से सम्पन्न दो परीक्षाओ के सम्बन्ध मे जानकारी दी। इसके पश्चात् स्वामी जी द्वारा प्रथमा व मध्यमा के उत्तीर्ण परीक्षार्थियो को प्रमाण पत्र वितरित किये गये और उत्तमा प्रथम वर्ष के परीक्षार्थियो को पुष्पमालायें दी गई तथा उत्तमा फाइनल के परीक्षार्थियों को उपाधि दी गई। सबसे अधिक अक पाने वाले विद्यार्थियो को केन्द्र की ओर से विशेष पुरस्कार भी दिये गये।

इसके उपरान्त श्री प्रेमशरण सिंह ने सत्यार्थ प्रकाश के थाई अनुवाद की उपयोगिता के बारे मे विचार व्यक्त किया तथा हिन्दी के परीक्षार्थियो को आशीर्वाद दिया।

इतिहास से आंखें मूंदकर सद्भाव नहीं आयेगा

—सीताराम गोयल—

पिछले दिनों दिल्ली के एक अंग्रेजी दैनिक ने दो खबरें छापी थीं। एक कुतुब मीनार की मरम्मत के दौरान उसकी दीवार से निकले कुछ पत्थरों के बारे में थी। इन पत्थरों पर हिन्दू देवताओं की मूर्तियां बनी थी। उससे साफ था कि मीनार बनाते समय किसी ध्वस्त हिंदू मन्दिर के पत्थरों को पलट कर दीवार में चिन दिया गया होगा। दूसरी खबर मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि विवाद से सम्बन्धित थी। इस खबर में विवाद का इतिहास लिखा गया था और जानकारी दी गई थी कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि को मुक्त करवाने के लिए गण्यमान्य लोगों की एक समिति गठित की गई है। खबर के साथ उस मस्जिद का चित्र भी छपा था, जिसे १६७० में मुगल सम्राट् औरंगजेब ने वहां बने केशवदेव के मन्दिर को तुड़वाकर बनवाया था।

इन खबरों के छपने से हिन्दुओं की भावनायें भड़कने की आशंका हो सकती थी। उसकी तो कोई झलक दिखाई नहीं दी, लेकिन एक दूसरे वर्ग की भावनायें जरूर भड़कीं। अपने आपको बौद्धिक और सैक्युलर मानने वाले एक वर्ग ने इन खबरों पर तीखी प्रतिक्रिया की। यह वर्ग अपने आपको विचारों की स्वतन्त्रता का हामी और समाचारों के अबाध प्रकाशन का समर्थक बताता है। लेकिन इन तथ्यपूर्ण और निर्दोष खबरों के छपने पर उसे घोर आपत्ति थी। उनका ऐतराज था कि इन खबरों को साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से देखा गया है। अगर इस तरह की खबरें छापने की छूट दी जाये तो देश रसातल को चला जायेगा।

यह तीखी प्रतिक्रिया करने वालों में सबसे बड़ी तादाद विश्वविद्यालय के इतिहास और राजनीति के प्रोफेसरों की थी। ध्यान देने की बात है कि इस वर्ष की इतिहास कांग्रेस में भी एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें इतिहास की साम्प्रदायिक व्याख्या के खिलाफ कड़ी चेतावनी दी गई। इतिहास और राजनीति के पंडितों का काम तथ्यों को दबाना नहीं होना चाहिये। यह सही है कि कोई भी इतिहास केवल तथ्यात्मक नहीं होता। उसमें तथ्यों की व्याख्या करने वाले का अपना दृष्टिकोण हमेशा महत्त्व रखता है। इन सभी पंडितों की भी इतिहास की अपनी एक व्याख्या है। उस व्याख्या के लिए वे स्वतन्त्र हैं। लेकिन यह कहने के लिए तो कोई स्वतन्त्र नहीं कि केवल उसी की व्याख्या देशहित में है—बाकी सब व्याख्याओं पर रोक लगा देनी चाहिये।

इन विद्वानों को डर है कि ऐसे तथ्यों के सामने आने से बहुसंख्यकों की धार्मिक भावनायें भड़क उठेंगी। यह सोचना नादानी नहीं तो और क्या है? साम्प्रदायिक भावनायें भड़कने का डर तथ्यों के सामने आने से ज्यादा उनके छिपाये जाने की स्थिति में होना चाहिये। देश के बहुसंख्यक लोगों में मध्यकाल की घटनाओं को लेकर बहुत-सी मान्यतायें बनी हुई हैं। जब तक इस दौर की घटनाओं का खुलासा नहीं होता और उन पर कोई सार्वजनिक बहस नहीं होती, लोगों के मन में पूर्वाग्रह बने रहेंगे और ग्रन्थियां पड़ी रहेंगी। इन घटनाओं पर खुली बहस होने लगे तो हिन्दुओं को अपने पूर्वाग्रह समझने और उन्हें ठीक करने का मौका मिल सकता है। दूसरी तरफ मुस्लिम नेता और इतिहासकार अपनी स्थिति साफ कर सकते हैं। हो सकता है कि उनमें से जो लोग आज मध्यकाल की गलतियों में अपना ऐतिहासिक गौरव देखते रहते हैं, वे आसानी से इस बात को समझ जायें और अपनी भूल सुधार लें।

इन तथ्यों को छिपाने और तोड़ने-मरोड़ने का नतीजा यही होगा कि हिन्दुओं और मुसलमानों की दूरी बनी रहेगी। वे एक-दूसरे के बारे में पूर्वाग्रह बनाये रखेंगे। उनके मन में एक-दूसरे को लेकर पड़ी आशंकायें और भी पक्की होती रहेंगी। वे एक-दूसरे को सन्देह की नजर से देखते रहेंगे। उनमें वह कटुता और अलगाव बना रहेगा, जो कभी-कभी दोनों में दंगे करवा देता है। इस सीधी-सी बात को न समझने वाले लोगों ने दोनों में अब तक दूरी बढ़ाने का ही कार्य किया है। दोनों वर्गों की कट्टरता में जितना योगदान इन तथाकथित सैक्युलर लोगों का रहा है, किसी और का नहीं रहा। उनकी उल्टी-सीधी व्याख्याओं के कारण हिन्दुओं में प्रतिक्रिया पैदा होती रही है और मुसलमानों में एक काल्पनिक भय बढ़ता रहा है, जिसके कारण वे और ज्यादा कट्टर हो जाते हैं।

इन घटनाओं को सामने न आने देने के लिए सैक्युलर प्रोफेसर मध्यकाल की विचित्र और अविश्वसनीय व्याख्यायें करते रहते हैं। वे लोगों को यह घुट्टी पिलाना चाहते हैं कि मध्यकाल में मन्दिरों के तोड़े जाने की वजह शुद्ध राजनैतिक थी। उन्ही इलाकों में मन्दिर तोड़े गये, जहां के हिन्दू राजाओं को मुस्लिम शासक कोई सबक सिखाना चाहते थे। इन घटनाओं के ब्यौरे उस समय के मुस्लिम इतिहासकारों ने लिखे हैं, उन्हें वे अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन बताकर रद्द कर देते हैं। उनका कहना है कि इन इतिहासकारों ने ये सब बातें राजाओं को प्रसन्न करने के लिए लिखी थीं। उनका ख्याल है कि जहां राजनैतिक कारणों से मन्दिर नही तोड़े गये, वहां उनका धन लूटने के ख्याल से तोड़े गये। हो सकता है कि मन्दिर तोड़े जाने के पीछे अंशतः ये कारण भी रहे हों। लेकिन उन्हें बताने के लिए यह कहना जरूरी नहीं कि मुस्लिम शासकों का कोई मजहबी उद्देश्य था ही नहीं।

इन सभी सवालों पर एक खुली बहस के जरिये सफाई हो जानी चाहिये। मन्दिर इनमें से किसी कारण से तोड़े गये हों, मुस्लिम शासकों का यह काम उचित नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए उन सब चिह्नों को पोंछ दिया जाना चाहिये, जो इस अन्याय की याद दिलाते हैं।

इसी तरह की सफाई मुस्लिम धर्मग्रन्थों के बारे में भी हो जानी चाहिये। हजरत मूसा से लेकर हजरत मुहम्मद तक एकेश्वरवाद के जो मजहब बने, उनकी संहिताओं तथा परम्पराओं में अन्य धर्मावलम्बियों के धर्मस्थानों को भ्रष्ट तथा ध्वस्त करने का विधान बहुत स्पष्ट शब्दों में मिलता है। दूसरों के धर्मस्थल तोड़कर अपने पूजागृह बनाने को पुण्य कर्म माना गया है। इस बहस से इस समय सरोकार नही कि यह विधान सम्यक् है अथवा नहीं। प्रस्तुत प्रसंग में यह जान लेना ही पर्याप्त है कि एकेश्वरवाद के अनुयायियों ने बहुत दिनों तक इस विधान का पालन करने में कोई कसर नहीं रखी। ईसाइयत तथा इस्लाम के इतिहास दूसरों के धर्मस्थान तोड़ने की कहानियों से पटे पड़े हैं। इतिहासकारों ने विस्तार से लिखा है कि यहूदी अथवा अल्लाह के आदेश का पालन किस-किस वीर नायक ने कब-कब और कहां-कहां किया। उन इतिहासकारों ने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि एक समय ऐसा आयेगा, जब इस विधान तथा इससे विकसित होने वाले कार्य-कलाप को एक अन्य कसौटी पर कसा जायेगा।

मुसलमान आक्रमणकारियों ने इस देश में पदार्पण करते ही यहां के मन्दिरों को तोड़ना शुरू कर दिया था। बल्ख-बुखारा से लेकर तमिलनाडु तक इस ताण्डव के प्रमाण मिलते हैं। मोमिनों के इस काम पर किसी को आश्चर्य नही होना चाहिये। वे तो अनन्य श्रद्धा के साथ अपने पैगम्बर का पदानुसरण कर रहे थे। हजरत मुहम्मद की किसी भी कट्टरपंथी जीवनी को देखिये। पूरा वर्णन मिलता है कि उन्होंने किस प्रकार काबे के देवी-देवताओं की आंखें अपने धनुष की कोर से फोड़ी, किस प्रकार उन देवी-देवताओं को जलवाया अथवा उनमें से कुछ को तोड़कर मस्जिद की दीवार में चिनवाया और किस प्रकार अली इत्यादि अपने अनुयायियों को पुराने मन्दिर तोड़ने के लिए अरब के अन्य अंचलों में भेजा।

समय पाकर इस्लाम की सेनायें जब अन्य देशों में पहुँचीं तो उन्होंने वही सब किया, जिसकी पक्की परम्परा पैगम्बर ने प्रवर्तित की थी। ईरान में अनेक आतिशकदे तोड़े गये। खुरासान, अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया में उस समय बौद्ध मत का व्यापक प्रचार था। बौद्धों के सभी धर्मस्थानों को तोड़कर मोमिनों ने बुतशिकन कहलाने में गहरे गर्व का अनुभव किया। 'बुत' शब्द 'बुद्ध' का अपभ्रंश है। यह अपभ्रंश जब मुसलमान भारत में आये, उससे पूर्व ही सम्पन्न हो चुका था यहां पहुँचकर मुसलमानों ने सनातन धर्म के सभी सम्प्रदायों के देवी-देवताओं को बुत की संज्ञा दी। बौद्ध मन्दिरों पर उनका विशेष कोप रहा। कारण, बौद्ध तो सहज ही 'बुतपरस्त' के नाम से पहचाने जाते थे।

भारतवर्ष के मुसलमानों को इस विषय में विचार करना पड़ेगा कि उनके मजहब में शामिल कई-एक विधान सम्यक् हैं अथवा नहीं। साथ ही उन्हें मध्य युग के सुलतानों के विषय में भी पुनर्विचार करना पड़ेगा। कारण कुछ भी रहा हो, मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाने वाले सुलतानों को जब तक वे अपने पीरो-मुरशिद मानते रहेंगे, तब तक हिन्दुओं के साथ सद्भाव की संभावना कम ही रहेगी।

तपोमूर्ति आचार्य देवप्रकाश जी-५

– भोलानाथ दिलावरी –

मध्य प्रदेश मे अन्य मतमतान्तरो के प्रभाव एव प्रचार-प्रसार को समाप्त करने के लिए आचार्य जी ने रतलाम मे एक दयानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना की, जिसमे प्राय सब मतो के—विशेष रूप से ईसाई, बौद्ध तथा इस्लाम दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् उपदेशक तैयार किये जाते थे, ताकि वह इन भोलीभाली पिछडी जातियो को ईसाइयत, इस्लाम एव अन्य मजहबो से बचाकर उनमे आर्य धर्म की पवित्र भावना, जाति की रक्षा और देशभक्ति की ज्योति को जगायें। इस उपदेश विद्यालय के प्रथम कुलपति शास्त्रार्थ-महारथी प० कालीचरण जी नियुक्त किये गये। इस प्रकार मध्य प्रदेश के सारे क्षेत्र को अन्य मत-मतान्तरो से सुरक्षित कर इसे दुर्ग-सा बना दिया गया।

गन्धर्वों की शुद्धि

मध्य प्रदेश मे गन्धर्व रहते हैं, जो मुसलमान हो चुके थे। ये लोग व्यवसाय से गाने-बजाने का कार्य करते थे। जब आचार्य जी को इनके सम्बन्ध मे सूचना मिली तो वे भोपाल, नरसिंहगढ आदि गये। उन दिनों भोपाल मे एक कट्टर मुसलमान नवाब की हकूमत थी। ऐसे समय मे शुद्धि का कार्य करना भय से खाली नहीं था। वहा पहुच कर आचार्य जी आर्य वीर दल के कुछ सैनिको को लेकर गन्धर्व लोगो से मिले और उन्होंने उन्हें शुद्ध होने के लिए तैयार किया। अन्तत भोपाल मे एक बडा हवन-यज्ञ करके इनके करीब १०० व्यक्तियो को शुद्ध किया गया। तत्पश्चात् वे इर्द-गिर्द के ग्रामों मे रहने वाले गन्धर्वों के नाम और पते लिखकर आर्य वीर दल के एक कर्मठ उपदेशक को साथ लेकर स्वय भी उन ग्रामो में गये। कई स्थानो के गन्धर्वों को पहले ही सूचना मिल गई थी कि सब गन्धर्व शुद्ध हो रहे हैं। इस प्रकार वे लोग बडी संख्या मे प्रसन्नतापूर्वक शुद्ध होने लगे। इस प्रकार १,००० से भी अधिक गन्धर्वों की शुद्धि की गई। मध्य प्रदेश मे इन्होने कई छात्रावास एव स्कूल बनाये। रावटी मे छात्रावास बना, जिसमे ४०-५० भील लडके रहते थे। दूसरा छात्रावास सैलाना मे बना, उसमे ३० छात्र थे। तीसरा कालजरा बासवाडा मे, इसमे २९-३० छात्र रहते थे। आचार्य जी के कार्य से प्रभावित होकर कांग्रेस के श्री गोखले और डा० देवी सिंह मे अभिलाषा उत्पन्न हुई कि वे भी भीलो के उत्थान के इस कार्य मे सहायक हों। इस प्रकार उन्होने एक वनवासी सेवामडल नाम की सस्था का गठन किया। इसके अन्तर्गत लडको का छात्रावास सरवन मे और कन्याओ का सैलाना मे खोला गया। यह सन् १९५८ की बात है।

बहाइयों की शुद्धि

इन दिनों मध्य प्रदेश मे बहाई अपने प्रचार द्वारा सैकडो हिन्दुओ को मुसलमान बना रहे थे। पता लगते ही आचार्य जी उज्जैन पहुचे। इस क्षेत्र मे बहाई दो-तीन वर्ष से अपना कार्य कर रहे थे। आचार्य जी ने कालेज के कुछ आर्यवीरो को साथ लिया और बहाइयो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। आर्यसमाज उज्जैन के प्रागण मे शास्त्रार्थ हुआ। बहाई मौलवी आचार्य जी के सामने एक डेढ घण्टे मे ही दम तोड गये। इस अवसर पर विशाल जनसमुदाय उपस्थित था। जो लोग बहाई बन चुके थे, वे पुन हिन्दू धर्म मे वापिस आ गये। इस पर बहाई मुसलमान बोरिया-बिस्तर गोल कर उज्जैन छोड गये। आचार्य जी ने बहाइयो के सिद्धान्तो पर "यथार्थ दर्शन" नाम की एक पुस्तक लिखी, जिससे बहाई हलको मे तहलका मच गया। आचार्य जी के प्रयत्न से करीब एक लाख व्यक्ति शुद्ध होकर वापस अपने धर्म मे आ गये। इस कार्य के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आचार्य जी को दो सन्यासी अपने खर्चे पर दिये। बहाइयो की शुद्धि के लिए आचार्य जी को उज्जैन मे करीब ५-६ वर्ष खूब परिश्रम करना पडा।

अकाली उपदेशकों की पराजय

इधर झाबुआ मे ईसाई लोग नया नगालैण्ड बनाने मे लगे हुए थे। उधर अमृतसर से कुछ अकाली ज्ञानी उपदेशक उज्जैन मे सिख धर्म का प्रचार करने आ धमके और बहाइयो में प्रचार करने लगे कि देखो, हिन्दू तो तुम्हें समान अधिकार नही देते, आओ गुरु जी की शरण मे आओ, हम तुम्हें समान अधिकार देंगे। इसका कुछ लोगो पर प्रभाव पडा। उन्होने एक बडे सम्मेलन की योजना बनाई, जिसमे १० २० हजार लोगो को इकटठा सिख बनाने की योजना थी। इसके लिए उन्होने सन्त चरणदास जी को फसाया। इस सन्त के हजारो श्रद्धालु शिष्य थे, जो अपने गुरु का आदेश मानकर सम्मेलन मे उपस्थित होने लगे। वहा सन्त जी के बिठाने के लिए एक सुन्दर ऊचा मच बनाया गया और एक हाथी भी उनके जलूस के लिए लाया गया। इस बात का पता चलते ही आचार्य जी ने सकल्प किया कि जैसे भी हो सन्त चरणदास जी से अवश्य भेंट कर अकालियो की इस योजना को विफल बनाया जाये। किसी प्रकार सन्त जी को आचार्य जी के पास लाया गया। आपका अकालियो के डेरे के समीप अन्धेरे मे ही एक पुल पर मेल हुआ। आचार्य जी ने सन्त जी का आदर सत्कार करके निवेदन किया कि महाराज, इतनी आयु तक तो आप मद्यपान तथा मासाहार का बलपूर्वक निषेध करते रहे और हजारो को आपने इन घृणित पापो से बचाया भी, परन्तु सिख बनने के बाद कल से आप मद्य मास के सेवन का प्रचार कैसे करेंगे? सिखो को इन दोनो पापो से भी घृणा नही। मास और शराब के सेवन की कोई बन्दिश नही। यह तथ्य आचार्य जी ने ऐसे ढग से प्रस्तुत किया कि सन्त जी के सुसस्कृत मस्तिष्क पर तुरन्त प्रभाव पडा। सन्त जी तुरन्त बोले—क्या करू? फस गया हूँ। इस पर आचार्य जी ने सुझाव दिया कि सामने रेलवे स्टेशन है, गाडी छूटने का समय निकट है। आप बिना विलम्ब उस गाडी पर चढ जाइये। पुन. कभी अकालियों को मुह न लगाइये। सन्त जी को यह सुझाव जच गया और वे चुपके से रेलगाडी द्वारा अपने आश्रम में जा पहुचे। रात आई, चली गई। सन्त जी का कही पता न मिला। इस प्रकार हमारे आचार्य जी ने अकालियो की योजना विफल कर दी।

आचार्य जी की उपरिलिखित उपलब्धियां सन् १९५४ से १९६१ के मध्य की हैं। आचार्य जी की सफलताओं और कार्य को देखकर सार्वदेशिक सभा ने झाबुआ मे शुद्धि कार्य के लिए सहायता देना स्वीकार कर लिया। आचार्य जी ने थांदला मे भील लडको के लिए एक छात्रावास खोल दिया और जोर-शोर से काम आरम्भ कर दिया। झाबुआ में ५ तहसीलें हैं। इनमें ८०-८५ वर्षों से ईसाइयों का काम चालू है। प्रत्येक तहसील मे अस्पताल, छात्रावास एव कई प्रचारक है। इतना होते हुए भी आचार्य जी के प्रयत्न से ३ ४ हजार भीलो की शुद्धि कर ली गई। जनजागरण के लिए बडे-बडे सम्मेलन हुए, जिन मे एक थांदला तथा दूसरा झाबुआ में हुआ। ऐसा प्रबन्ध भी किया गया कि प्रतिवर्ष ये सम्मेलन होते रहें और स्कूलों की संख्या में भी वृद्धि की जाती रहे। अब तक आचार्य जी की कीर्ति सुगन्धि सर्वत्र फैल चुकी थी। इनके प्रति श्रद्धा का पर्याप्त वातावरण बन चुका था। आदि

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्य जगत्

वागीश्वर विद्यालंकार और उनकी अमर रचना

-क्षितीश वेदालंकार-

श्री वागीश्वर विद्यालकार इस समय ससार मे नही। परन्तु उनके स्वर्गवास के पश्चात् उनकी पुस्तक वैदिक साहित्य सौदामिनी* उनके साहित्यिक वैदुष्यकी चिर प्रतिनिधि बनकर उनके नाम को उज्ज्वल करती रहेगी। श्री वागीश्वर विद्यालकार न केवल सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे और विशेष रूप से कालिदास के काव्य के मर्मज्ञ थे प्रत्युत इस पुस्तक मे उन्होने वेदो के अन्दर जिस साहित्य-रस की खोज की है, वह अद्भुत है। शायद उनके सिवाय किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह सम्भव भी नही था। पुस्तक मे पग-पग पर उनकी विद्वत्ता की छाप है और उनके गहन अध्ययन के साथ उनका मौलिक चिन्तन भी मुखर हो उठा है। सारी पुस्तक सस्कृत मे होने के कारण सामान्य पाठको के लिए भले ही बोधगम्य न हो, किन्तु सस्कृत और वेद मे रुचि और गति रखने वाले अध्येताओ के लिए यह दुर्लभ रचना है।

स्वय भूमिका मे ही, जो श्लोकबद्ध है, लेखक ने पहले ही श्लोक मे लिखा है—"कुछ ऐसे वेदपाठी पण्डित हैं, जिन्हे दिन-रात वेदो को कण्ठस्थ करने की लगन लगी रहती है, परन्तु साहित्य से उनका परिचय नही होता। दूसरी ओर ऐसे सहृदय साहित्यिक हैं, जिनकी वेदो मे गति नही। इन दोनो के होने पर भी वेदो के मर्म को पहचानने वाले न होने के कारण स्वय वेद-माता दु खी होती है। यदि कोई ऐसा मर्मज्ञ पुरुष मिल जाये, जिसमे ऊपर की दोनो बाते घटित होती हो तो यह मणि-काचन सयोग ही कहा जायेगा।" इसके बाद लेखक ने मनुस्मृति आदि ग्रन्थो के आधार पर वेदो की महिमा का वर्णन किया है और साथ ही महर्षि जैमिनि के पश्चात् वेदो के पठन-पाठन की परम्परा के लुप्त होने के परिणामस्वरूप वेदो के दुरूह होने की परम्परा (जो लोक मानस मे चल पडी) का उल्लेख करते हुए वेदमन्त्रो के सही अर्थों का प्रकाश करने वाली ऋषि दयानन्द की मेधा को इस बात का श्रेय दिया है कि उनके कारण मेरे जैसा (लेखक जैसा) व्यक्ति भी वेद के साहित्यिक मर्म को उद्घाटित करने का प्रयास कर रहा है। लेखक ने भूमिका मे ही ऋषि दयानन्द की स्तुति मे जो श्लोक लिखे है, वे काव्यकला के साथ-साथ लेखक की ऋषिभक्ति के भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

इसके बाद लेखक ने महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) प० शालिग्राम साहित्याचार्य, प० भीमसेन शर्मा और व्याकरण के उद्भट विद्वान् प० सूर्यदेव जैसे गुरुओ को श्रद्धा सहित स्मरण किया है। गुरुकुल कागडी की स्थापना के लिए अपनी भूमि और सर्वस्व दान करके अन्त मे गुरुकुल मे ही कुटिया बनाकर वानप्रस्थी का सा जीवन बिताने वाले श्री अमनसिंह जी ने पितृविहीन बालक वागीश्वर को अपने पुत्र की तरह पाला था। जिस भावना से उन्होंने इस बालक को गुरुकुल में शिक्षा दिलवाई थी उस भावना को इस बालक ने बड होकर अपनी विद्वता से पूरी तरह कृतार्थ करके दिखा दिया। लेखक ने उन्हे और अपनी पुण्यमयी माता को भी ललित श्लोको मे श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। उनकी माता जी ने अपने जीवन भर की सारी कमाई ५ हजार रुपये कन्या गुरुकुल देहरादून को दान दे दी थी, जिससे एक कन्या की शिक्षा के लिए वह राशि छात्रवृत्ति के काम आ सके।

श्री वागीश्वर विद्यालकर गुरुकुल कांगडी मे ११ वर्ष तक हिन्दी और सस्कृत के प्राध्यापक रहे। दोनो विभागो के अध्यक्ष रहे। फिर पुस्तकालयाध्यक्ष बने, विश्वविद्यालय के कुल सचिव बने। कला महाविद्यालय के आचार्य बने। विज्ञान महाविद्यालय के भी अध्यक्ष बने। उनके कठिन परिश्रम से ही गुरुकुल की उपाधियो को सरकारी मान्यता दिलवाने मे सफलता मिल पाई। उन्होने गुरुकुल मे महाविद्यालय के छात्रो को पढाने के लिए दो भागो मे साहित्य सुधा सग्रह तैयार किया। कई सस्कृत एकाकी नाटक लिखे। महाकवि कालिदास के 'अभिज्ञानशकुन्तलम्', विक्रमोर्वशीयम्" और "मालविकाग्निमित्रम्" जैसे काव्यो के गद्य-पद्य मे हिन्दी अनुवाद किये और 'कालिदास की काव्य कला" नाम से समालोचना साहित्य का एक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ लिखा। "नीराजना' नाम से उनका हिन्दी कविताओ का सग्रह भी प्रकाशित हुआ।

इस ग्रन्थ को ५ उन्मेषो मे विभक्त किया गया है। प्रथम उन्मेष मे वेदो का काव्यत्व सिद्ध किया गया है। द्वितीय उन्मेष मे पण्डित-प्रवर जगन्नाथ और मम्मट जैसे पडितो के काव्य लक्षणो का निराकरण करके अपना स्वतन्त्र मत स्थापित किया गया है, जिसमें काव्य के लिए शब्द और अर्थ दोनो को समान रूप से महत्त्व दिया गया है। तृतीय उन्मेष मे भाषाविज्ञान के आधार पर भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विविध वादो का उल्लेख करते हुए वर्ण, पद वाक्य और महावाक्य आदि के स्वरूप पर समीचीन रूप से प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ उन्मेष मे शब्दा के अर्थों पर विचार करते हुए काव्य की अभिधा, लक्षणा और व्यजनावृत्ति का सार उद्घाटित किया गया है। पचम उन्मेष मे ध्वनि काव्य को उत्तम काव्य का उदाहरण बताते हुए मध्यम काव्य के उपपादक गुणीभूत व्यग्य के भेदो और उपभेदो का उदाहरण सहित वर्णन किया गया है। अधिकतर स्थानो पर लेखक ने अपने ही बनाये हुए श्लोको को उदाहरण के रूप मे प्रस्तुत किया है।

लौकिक अलकार शास्त्र के प्रमाणभूत ग्रन्थ 'काव्य प्रकाश' मे मम्मट ने, साहित्य दर्पण मे विश्वनाथ ने और रस गगाधर' मे पडित राज जगन्नाथ ने अपनी जैसी प्रतिभा का परिचय दिया है वैसी ही प्रतिभा का परिचय अपने नाम को सार्थक करने वाले श्री वागीश्वर विद्यालकार ने वैदिक अलकारो पर प्रकाश डालने वाले इस ग्रन्थ मे दिया है। वेदो के विषय मे और साहित्य के सम्बन्ध मे ऐसी विद्वत्तापूर्ण मर्मज्ञ दृष्टि दुर्लभ है। जो लोग वेदो को शुष्क और नीरस बताते है, वे इस विवेचन को देखकर चकित रह जायगे और उनके मुह से अनायास निकलेगा कि वेद सचमुच ही परमात्मा का ऐसा अद्भुत काव्य है, जो न कभी मरता है, और न कभी जीर्ण होता है— 'पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति।"

लेखक केवल ५ ही उन्मेष लिख पाये थे कि ३० मई १९७८ को काल ने उन्हे हमसे छीन लिया। अगले उन्मेषो मे उन्हे क्या कुछ लिखना था, वह सब उनके साथ ही चला गया। काश भविष्य मे कोई उन जैसा और विद्वान् पैदा हो, जो इस कार्य को पूर्ण करे।

* वैदिक साहित्य सौदामिनी

लेखक वागीश्वर विद्यालकार, प्रकाशक ,युधिष्ठिर मीमासक, प्राप्ति स्थान रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ-१३१०२१,(सोनीपत), हरयाणा, पृष्ठ सख्या ३००, मूल्य ४५ रुपये।

काशी शास्त्रार्थ के प्रत्यक्षदर्शी पं० सत्यव्रत सामश्रमी

—डा० भवानीलाल भारतीय—

स्वामी दयानन्द का १६ नवम्बर १८६९ को काशी में पौराणिक विद्वानों से मूर्तिपूजा पर प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। इस शास्त्रार्थ में पं० सत्यव्रत सामश्रमी उभय पक्ष सम्मत लेखक के रूप में उपस्थित थे। इस तथ्य का संकेत स्वयं सामश्रमी जी ने अपने ऐतरेयालोचनम् नामक ग्रन्थ के १२७वें पृष्ठ पर इस प्रकार किया है—"परमहो काश्यानन्दोद्यानविचारे यत्र वयमस्य मध्यस्थाः विशेषतो वादिप्रतिवादिवचसामनुलेखनेऽहमेक एवोभय-पक्षतो नियुक्तः"। पं० लेखराम रचित स्वामी दयानन्द के जीवन-चरित्र में इस सम्बन्ध में लिखा मिलता है—"जिस समय यह शास्त्रार्थ हुआ, तो उक्त पत्रिका के सम्पादक पं० सत्यव्रत सामश्रमी वहां उपस्थित थे और अपनी नोटबुक में अपनी आंखों से देखा हुआ सारा वृत्तान्त लिखते जाते थे। १६ नवम्बर सन् १८६९ को शास्त्रार्थ हुआ और प्रत्नकम्रनन्दिनी पत्रिका के दिसम्बर १८६९ के अंक में उसे प्रकाशित कर दिया गया।" आगे पं० सामश्रमी के सम्बन्ध में पं० लेखराम लिखते हैं—"अब उन्होंने एक संस्कृत पत्रिका उषा नामक चालू की हुई है और एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता के पास सबसे योग्य पंडित यही हैं।"

पं० ज्वलन्तकुमार शास्त्री इस बात में शंका प्रकट करते हैं कि काशी शास्त्रार्थ में सामश्रमीजी को उभय पक्ष सम्मत लेखक के रूप में नियुक्त किया गया था। उनका तर्क है कि ऐतरेयालोचन के अतिरिक्त इस बात का कहीं भी उल्लेख नहीं है कि उन्हें काशी शास्त्रार्थ का विवरण लिखने के लिए दोनो पक्षों द्वारा चुना गया था। वे यह भी कहते हैं कि सामश्रमी जी ने उपर्युक्त उल्लेख १९०६ ई० में प्रकाशित ऐतरेयालोचन में तो किया, किन्तु दिसम्बर १८६९ के प्रत्नकम्रनन्दिनी के लेख में नहीं किया, ऐसा क्यों? उनका यह भी कहना है कि यदि ऐसा होता तो स्वामी जी के जीवनी लेखक भी इस तथ्य का उल्लेख अवश्य करते। हम ऊपर पं० लेखराम रचित स्वामी दयानन्द के उर्दू जीवन चरित्र का एक उद्धरण तो दे ही चुके हैं कि सामश्रमी जी उक्त शास्त्रार्थ में उपस्थित थे और उन्होने अपनी नोटबुक में शास्त्रार्थ का विवरण अंकित किया था। अब बात रह जाती है उनके वादि-प्रतिवादि-सम्मत लेखक नियुक्त किये जाने की। इस सम्बन्ध में पं० लेखराम ने संस्कृत का एक उद्धरण अपनी पुस्तक में दिया है, जो इस प्रकार है—"सत्यव्रत सामश्रमिणं प्रति लिख्यतां तावत् यथार्थतो वादि-प्रतिवादि वच—इत्याज्ञापयन्तल्लेख्य कार्ये नियुक्तः सामश्रमी यथावृत्तं शास्त्रार्थं लिखति तथा हि"। इसके भावार्थ में वे लिखते हैं—"स्वयं पौराणिक पण्डितों की पुस्तक से भी प्रकट है (पृष्ठ ३,४) कि पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी लेखक थे।" सम्भवतः यहां पौराणिक पण्डितों की जिस पुस्तक का संकेत पं० लेखराम ने दिया है, वह काशी के पौराणिकों द्वारा प्रकाशित संस्कृत पुस्तक "दयानन्द-पराभूति" होगी, जो शास्त्रार्थ के तत्काल बाद काशिराज यन्त्रालय, रामनगर (बनारस) से प्रकाशित हुई थी। जिस समय स्वामी दयानन्द कलकत्ता गये, उस समय उन्हें सामश्रमी जी से भेंट करने का एक और अवसर मिला था। उस समय सामश्रमी जी कलकत्ता स्थित बंगाल एशियाटिक सोसायटी में कार्यरत थे। स्वामी जी भी ९ जनवरी १८७३ को एशियाटिक सोसायटी के कार्यालय में गये और वहां से उन्होंने कुछ ग्रन्थ क्रय किये। सम्भवतः सामश्रमी जी से उनकी भेंट इसी समय हुई होगी।

सामश्रमी जी स्वामी दयानन्द के इस विचार से सहमत थे कि वेद के पठन-पाठन का अधिकार मनुष्यमात्र को है। उन्होंने स्व-रचित ऐतरेयालोचन नामक ग्रन्थ में इस प्रसंग को उठाते हुए लिखा है—शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामी दयानन्देन 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य' इति।

पं० सत्यव्रत सामश्रमी का जन्म १८४६ ई० में हुआ था। उनके पिता का नाम पं० श्रीराम भट्टाचार्य था, जो पटना में अंग्रेजी राज्य की सेवा में रहे। १८५७ ई० के विद्रोह में उन्होंने अंग्रेजों की सहायता की थी, जिस कारण उन्हें विद्रोहियों ने अनेक कष्ट दिये। कालान्तर में उन्होंने राज्य सेवा ले ली और काशीवास करने लगे। सामश्रमी का बचपन का नाम कालिदास था, किन्तु उनके पिता एक बार उनके सत्य-भाषण से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने इस बालक का नाम सत्यव्रत रख दिया। काशी में रह कर सत्यव्रत को शास्त्रों का विस्तृत अध्ययन करने का अवसर मिला। काशी के प्रसिद्ध पं० गौडस्वामी के शिष्य पं० विश्वरूप से उन्होंने भाष्यान्त व्याकरण पढ़ा। मीमांसा का अध्ययन भी इन्हीं से किया। पं० नन्दराम गुजराती से गानपूर्वक सामवेद का अध्ययन किया। काशी शास्त्रार्थ के समय सामश्रमी जी की उम्र २३ वर्ष की थी और वे अन्नपूर्णा मन्दिर के पिछवाड़े एक अंधेरे मकान में रहकर छात्रों को वेद और व्याकरण पढ़ाते थे। काशी नरेश के दरबार में भी उन्हें सम्मान प्राप्त था और राजा की ओर से उन्हें समुचित दक्षिणा, भेंट आदि मिलती थी। इसी समय इन्होंने प्रत्नकम्रनन्दिनी पत्रिका निकाली, जिसका अंग्रेजी नाम 'दि हिन्दू कमेन्टेटर' था।

कालान्तर में वे कलकत्ता चले गये और उन्होंने साम विद्यालय खोल कर अध्यापन कार्य आरम्भ किया। उन्होंने ऊषा नामक एक संस्कृत मासिक पत्रिका भी निकाली। राजा राजेन्द्रलाल मित्र के कारण उन्हें एशियाटिक सोसायटी बंगाल में कार्य करने का अवसर मिल गया। यहां रहते हुए उन्होंने चार जिल्दों में सभाष्य सामवेद का गानयुक्त संस्करण सम्पादित किया। ऐतरेयालोचन, निरुक्ता-लोचन और त्रयी चतुष्टय उनके अन्य ग्रन्थ हैं। एक जून १९११ को सामश्रमी जी का निधन हो गया। आर्यसमाज के प्रख्यात विद्वान् पं० नरदेव शास्त्री सामश्रमी जी के ही शिष्य थे।

विद्वानों को सम्मानित करने के लिए स्थिर निधि की स्थापना

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपने पिता स्व० श्री केदारनाथ दीक्षित की स्मृति में १०,००० रुपये की धनराशि स्थिर निधि के रूप में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी को भेंट की। इस राशि के वार्षिक ब्याज से प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान् को सम्मानित किया जायेगा।

श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार की स्थापना की परिकल्पना स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने प्रस्तुत की।

उन्होंने कहा कि यदि आर्यसमाज को जीवित रहना है और वेद का प्रचार करना है तो उसे अपने विद्वानो का सम्मान करना होगा। दिल्ली में यह परम्परा डालने की दृष्टि से ही ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष एक वैदिक विद्वान् को सम्मानित करने के लिए "श्री केदारनाथ दीक्षित पुरस्कार" की स्थापना की गई है।

उन्होंने कहा कि प्रथम बार इस पुस्कार से सम्मानित किये जाने के लिए श्रद्धेय महात्मा अमरस्वामी जी के नाम पर मेरा आग्रह था। भविष्य में सम्मानित किये जाने वाले विद्वान् के नाम का निश्चय ५ विद्वानों की समिति किया करेगी। पं० शिवकुमार शास्त्री काव्यतीर्थ, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित शास्त्री काव्यतीर्थ, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, डाक्टर कृष्णलाल और श्री मनोहर विद्यालंकार इस समिति के सदस्य होंगे।

"नमस्ते अभिनन्दन करने का बहुत ही अच्छा ढंग है"

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव श्री मिखाइल गोर्बाचोफ की धर्मपत्नी श्रीमती राइसा को नमस्ते कहना बहुत पसन्द है। श्रीमती राइसा का कहना है कि "किसी का स्वागत करने अथवा उसका अभिनन्दन करने का यह बहुत ही अच्छा ढंग है।"

श्रीमती राइसा ने यह बात मास्को लौटकर वहां के भारतीय दूतावास के एक वरिष्ठ अधिकारी की धर्मपत्नी श्रीमती भारती भटनागर से कही।

"मुझे सर्वशक्तिमान् ईश्वर पर गहरा विश्वास है"

आमतौर पर समझ लिया जाता है कि फिल्म अभिनेता और अभिनेत्रियां सब समस्याओं पर विशुद्ध भौतिक दृष्टि से विचार करते हैं—नास्तिक होते हैं। लेकिन यह धारणा गलत है।

प्रसिद्ध अभिनेत्री रेखा ने शब्द सिंडीकेट के प्रतिनिधि एस०एन० खोसला को दिये गये एक इंटरव्यू में कहा कि "मेरा सर्वशक्तिमान् ईश्वर पर गहरा विश्वास है।"

उनसे पूछा गया था कि "क्या आपको ईश्वर पर विश्वास है?"

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य स्त्री समाज अशोक विहार-१ का १२वां वार्षिकोत्सव श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डा० श्रीमती शान्ति देववाला (प्राचार्या लखनऊ विश्वविद्यालय) ने वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं व पूर्वांचल में आदिवासी क्षेत्रों की दयनीय अवस्था का दिग्दर्शन कराते हुए उनसे निपटने के उपायों पर प्रकाश डाला। डा० सुषमा मल्होत्रा ने हमारे व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दायित्व क्या हैं व उन्हें कैसे निभाया जाये, इस विषय पर सुलझे विचार दिये। श्रीमती उषा शास्त्री ने स्वामी विरजानन्द व महर्षि दयानन्द के जीवनो का दिग्दर्शन कराते हुए भारतीय आदर्श गुरु-शिष्य परम्परा को फिर से अपनाने पर बल दिया। १४-वर्षीय नीरू शर्मा ने वेदों व स्वामी दयानन्द पर हृदयग्राही विचार देकर उपस्थित जनता को आश्चर्यचकित कर दिया। ६-७ बच्चों ने भी मन्त्रपाठ, कविता व भजनादि से सभी को आह्लादित किया।

दक्षिण भारतीयों में हिन्दी प्रेमी भी हैं

पिछले दिनों तमिलनाडु में हिन्दी के प्रयोग के विरुद्ध प्रदर्शन हुए—जलूस निकाले गये। महिलायें भी हिन्दी विरोधी जलूसों में शामिल हुईं। लेकिन यह तसवीर का एक रुख है। तमिलनाडु में बड़ी संख्या में हिन्दी प्रेमी भी रहते हैं। ऐसे ही सज्जनों का एक शिष्टमडल पिछले दिनों राजधानी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से मिला।

दक्षिण भारतीयों के हिन्दी प्रेम की बात इसी शिष्टमडल ने स्वामी जी को बताई।

कनाडा में दो एकड़ भूमि में आर्यसमाज

अमेरिका के न्यूयार्क और वाशिंगटन नगरों में आर्यसमाज का प्रचार कार्य काफी तेज गति से चल रहा है। शिकागो नगर में भी शीघ्र ही आर्यसमाज की स्थापना हो रही है। इसी प्रकार कनाडा के टोरन्टो नगर के भारतीय निवासियों ने आर्यसमाज की स्थापना के लिए दो एकड भूमि ३५ लाख रुपये की लागत से खरीद ली है, जिस पर शीघ्र ही मन्दिर की स्थापना होने वाली है। मिसीसागा की आर्यसमाज का प्रथम वार्षिक अधिवेशन वहां की महिला महापौर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के कार्य की प्रशंसा की। लन्दन की आर्यसमाज भी वेद के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। मैं इन सभी स्थानों पर लगभग तीन मास तक वैदिक धर्म का प्रचार करके लौटा हूं।

—आशुराम आर्य, १५६४/७ सी, चण्डीगढ

अमीना बेगम मीनादेवी बनी

खुर्जा। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर के तत्त्वावधान में डिबाई क्षेत्र दानपुर में एक मुस्लिम महिला अमीना वेगम को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी गई। प्रथम यज्ञवेदी पर शुद्धि सस्कार हुआ। श्रीमती मीनादेवी नाम रखा गया। पश्चात् उनकाचौ०घनश्यामसिंह के साथ वैदिक रीतिसे विवाह सस्कार सम्पन्न हुआ।

यह कार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री (मन्त्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा) के पौरोहित्य मे हुआ। जिले के अनेक सम्भ्रान्त आर्यजन इस अवसर पर उपस्थित थे।

आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य संन्यासी का मुस्लिम मानसिकता पर प्रधानमन्त्री को पत्र

वैदिक सस्थान, नजीबाबाद, जिला बिजनौर के अध्यक्ष स्वामी वेदमुनि परिव्राजक ने प्रधानमन्त्री राजवी गाधी को भेजे एक पत्र मे लिखा है कि उन्होने (स्वामी जी ने) **मुसलमान बन्धुओ, विचार करो (अयोध्या में रामजन्म मन्दिर या मस्जिद)** नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की थी। सारी पुस्तिका का साराश यह है कि अयोध्या का रामजन्म मन्दिर बाबरी मस्जिद के रूप मे परिवर्तित किया गया। वह मन्दिर ही है, मस्जिद नही। इस पर नजीबाबाद के एक मुसलमान ने "बाबरी मस्जिद का एक सिपाही" नाम से एक पत्र मुझे लिखा, जिसकी भाषा शिष्टजनोचित नही।

अपने पत्र मे स्वामी जी ने लिखा है कि "रिआयतो के अभ्यस्त होकर मुसलमान न्याय नैतिकता और तथ्यात्मक बात सुनने को भी तैयार नही। स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री से निवेदन किया है कि "इन लोगो के सम्बन्ध मे आप स्वय निर्णय ले और तदनुसार उचित पग उठाये।"

आर्यसमाज काकड़वाडी (बम्बई) में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

बम्बई। २ नवम्बर रविवार को आर्यसमाज काकडवाडी के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता आर्ष गुरुकुल एटा के उपाचार्य आचार्य रामदत्त जी शर्मा ने की। श्री नरेन्द्र कुमार आर्य ने अपने भजन के माध्यम से स्वामी जी को श्रद्धाजलि भेट करते हुए आयोजन का शुभारम्भ किया। अमरावती (विदर्भांचल) आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवदत्त जी शर्मा ने मराठी भाषा के माध्यम से अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। आर्यसमाज बम्बई के परामर्शदाता प० दयाशकर शर्मा ने भी स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धाजलि अर्पित की। अन्त मे आचार्य रामदत्त जी शर्मा ने वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाजियो के कर्त्तव्य बताते हुए अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

गजानन्दजी आर्य परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री निर्वाचित

ऋषि मेला अजमेर के शुभावसर पर नौ नवम्बर को परोपकारिणी सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। २३ सदस्यो मे से २१ उपस्थित थे। दिवगत सभामन्त्री श्री श्रीकरण जी शारदा के स्थान पर सर्वसम्मति से स्व॰लालमन जी आर्य के सुपुत्र कलकत्ता निवासी श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री निर्वाचित हुए।

इस निर्णय का उपस्थित सदस्य महानुभावो और ऋषि मेले के अवसर पर समागत विशाल जनसमूह ने हार्दिक स्वागत किया।

कन्या गुरुकुल सासनी का उत्सव

कन्या गुरुकुल (सासनी) हाथरस का वार्षिक महोत्सव ३१ जनवरी और १,२,३ फरवरी १९८७ को होगा।

आर्यसमाज मीरजापुर का उत्सव

आर्यसमाज मीरजापुर का वार्षिकोत्सव १६ से १९ दिसम्बर तक धूमधाम से मनाया जायेगा।

उत्सव का सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की उपप्रधान श्रीमती सन्तोष कपूर करेगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री पधार रहे हैं।

आचार्य देवप्रकाश जी

(पृष्ठ ६ का शेष)

पिण्डीदास जी भी आर्य जगत् एव हिन्दू जगत् की एक विभूति बन चुके थे। उनकी सेवायें भी स्वर्णाक्षरों मे लिखने योग्य हैं। आचार्य जी और ज्ञानी पिण्डीदास जी इकट्ठे हर सकट मे समस्त आर्य जगत् की दिलोजान से सेवा करते आ रहे थे।

ज्ञानी पिण्डीदास जी एव समाज के अन्य प्रमुख गण्यमान्य बन्धुओं ने आचार्य जी को अभिनन्दित करने का निश्चय किया ताकि इनकी सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया जा सके।

आचार्य जी को अमृतसर बुलाकर महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती के सभापतित्व मे २९ अक्तूबर, १९७२ को आर्यसमाज लोहगढ़, अमृतसर मे एक विशाल समारोह मे सम्मानित किया गया। इस अवसर पर एक थैली और अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया गया। इस उपलक्ष्य मे आर्यसमाजी एव हिन्दू नेता अमृतसर आये और उन्होने अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये। आचार्य जी इस समय अपनी आयु के ८३ वर्ष पार कर चुके थे। अभिनन्दन के पश्चात् आचार्य जी फिर रतलाम (मध्य प्रदेश) चले गये और वहा आदिवासी और भील जातियो मे पूर्ववत् कार्य करने मे जुट गये।

इधर हमारी केन्द्रीय आर्य सभा, जो अमृतसर जिले की आर्यसमाजो का सगठन है, बराबर धर्मप्रचार एव आर्य हिन्दुओ की सेवा मे पूर्ववत् व्यस्त थी। उन दिनो हमारे एक कर्मठ और तपस्वी कार्यकर्ता स्वर्गीय हरिदेव जी हाण्डा, जो पुतलीघर आर्यसमाज के मन्त्री थे, बडी लगन से बाहर के देहात की आर्यसमाजो की विशेष रूप से देखभाल किया करते थे। वह घरबार की चिन्ता छोडकर आर्यसमाज के कार्य को प्रमुखता दिया करते थे। प्राय बाहर से समाचार लाते रहते कि ईसाई बडी द्रुत गति से हरिजन, वाल्मीकि आदि पिछडी जाति के बन्धुओ को आर्य धर्म से च्युत कर रहे हैं। ऐसे समाचारो से आर्य जगत् में खलबली मचना स्वाभाविक था। हमारी केन्द्रीय आर्य सभा की बैठकों मे विचार-विमर्श होने लगा कि कैसे इस स्थिति से निपटा जाये और ईसाई धर्म को ग्रहण करने वाले बन्धुओं को पुन हिन्दू धर्म मे वापस लाया जाये। (क्रमश.)

मानव कर्त्तव्य : भीष्म पितामह का अंतिम उपदेश

कुरुक्षेत्र मे महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था। आदित्य ब्रह्मचारी भीष्म पितामह सूर्य उत्तरायण होने की प्रतीक्षा मे शरशय्या पर पड़े हुए मृत्यु को भगा रहे थे। उस समय धर्मराज युधिष्ठिर ने वहा पहुचकर उनसे धर्मोपदेश का निवेदन किया और मनुष्य अपने कल्याण के लिए क्या करे, यह जानना चाहा।

भीष्म पितामह ने आगे निर्दिष्ट आचरण करने का निर्देश दिया, जिससे मनुष्य का कल्याण सभव है—

प्राणातिपात स्तैन्य च परदारास्तथापिच ।
त्रीणि पापानि कायेन सर्वत परिवर्जयेत् ॥

दूसरो के प्राण का नाश करना, चोरी करना और परस्त्री से ससर्ग रखना ये तीन प्रकार के शारीरिक पाप हैं, इनसे बचे।

असत्यलाप पारुष्य पैशुन्यमनृत तथा ।
चत्वारि वाचा राजेन्द्र न जल्पेन्नानुचिन्तयेत् ॥

मुख से बुरी बाते कहना, कठोर बोलना, चुगली खाना और झूठ बोलना—ये चार प्रकार के वाणी के पाप हैं। इन्हे कभी जिह्वा पर नही लाना चाहिये।

अनभिध्या परस्वेषु सर्वसत्वेषु सौहृदम् ।
कर्मणा फल मस्तीति त्रिविध न समाचरेत् ॥

दूसरे के धन को लेने का उपाय न सोचना, समस्त प्राणियो के प्रति मैत्री भाव रखना और कर्मों का फल अवश्य मिलना है, यह भाव रखता तथा इन तीनो का मन से आचरण करना चाहिये।

तस्माद् वाक्काय मनसा नाचरेदशुम नर ।
शुभाशुभान्याचरन् हि तस्य तस्याश्नुते फलम् ॥

इसलिए मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह मन, वाणी और शरीर से कभी अशुभ कर्म न करे, क्योकि वह जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसका वैसा फल भोगना पड़ेगा।

इन श्लोको मे कल्याण के लिए मानव के कर्त्तव्य का सुन्दर निर्देश किया गया है, जो आचरणीय है।

भटक रहा है देश हमारा भगवतियों के गढ़ में

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्या वाचस्पति

भटक रहा है देश हमारा भगवतियो के गढ मे।
एक ईश को छोड़ गिरे है नर-नारी मत्र खड मे॥
वेद शास्त्रो का सब शिक्षा धूल हो गई जग मे।
पड ढोगी और पाखण्डी शूल बने है मग मे॥
ईशावास्यमिद सर्वम् की शिक्षा नही है घर मे।
इसीलिए पाषाणा को भगवान् समझते मन मे॥
सृष्टि के आदि से वैदिक धर्म चला आया है।
महाभारत तक मतो का कोई जाल न बिछपाया है॥
वेद ईश की वाणी को ही नर-नारी पढते थे।
इसीलिए तो प्राणिमात्र से प्रेम सदा करते थे॥
जितने भी महापुरुष हुए हैं, पथ उनका अपनालो।
नवप्रकाश और नई चेतना जीवन मे तुम ढालो॥
स्वय आर्य बनो-बनाओ वैदिक मत फैलाओ।
छुआछूत का भूत भगाकर सबको गले लगाओ॥
विनती यही 'ब्रह्म' की सबसे प्रभु में ध्यान लगाओ।
कलुष-कालिमाय सब धोकर निर्मल मन बन जाओ॥

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में योग प्रशिक्षण शिविर

बहादुरगढ। आत्मशुद्धि आश्रम मे महर्षि पतजलि के योगदर्शन के आधार पर अष्टाग योग एव हठ योग की क्रियाओ सहित मौन अभ्यास आदि प्रशिक्षण के लिए २१ दिसम्बर (रविवार) से ३१ दिसम्बर (बुधवार) तक योग साधना प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थ योगधाम आश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार के सचालक स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती और स्वामी प्रेमानन्द जी (आचार्य सन्यासाश्रम गाजियाबाद, पधार रहे हैं। साथ ही प्रशिक्षण मे स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी सहयोगी रहेग।

प्रो० सारस्वतमोहन 'मनीषी' पुरस्कृत

हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली पुस्तक प्रतियोगिता मे वर्ष १९८५-८६ के लिए प्रोफेसर सारस्वत मोहन 'मनीषी' के सकलन 'बूद बूद वेदना' को पन्द्रह सौ रुपये का प्रथम पुरस्कार दिया गया है। उनके प्रथम काव्य सकलन 'आग के अक्षर' को हरयाणा प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सन् ८२-८३ का प्रथम पुरस्कार दिया था।

श्री सारस्वत मोहन 'मनीषी' डी ए-वी कालेज, अबोहर मे प्राध्यापक हैं।

युवा शक्ति राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए कार्य करे : रामचन्द्र विकल

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान मे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग के सभागार मे आयोजित प्रान्तीय आर्य युवा महासम्मेलन रविवार १६ नवम्बर को श्री हीरालाल चावला के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। सासद श्री रामचन्द्र विकल ने युवको से अपना स्वास्थ्य सुन्दर बनाने हेतु योग सनो पर बल दिया। उन्होने कहा कि युवा शक्ति ही राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए सही अर्थो मे काम कर सकती है। इसके लिए सच्चरित्र व देशभक्त युवको का गठन आर्यसमाज को करना है। श्री विकल ने श्रीराम व स्वामी श्रद्धानन्द नामक सचित्र ट्रैक्टो का भी विमोचन किया तथा श्री चन्द्रमोहन आर्य को उनके पुरुषार्थ के लिए बधाई दी।

श्री चावला ने युवको के सर्वागीण विकास के लिए आह्वान किया। उन्होने परिषद को बधाई देते हुए हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया। श्री चावला ने ५०० रु० का सहयोग पुरस्कार हेतु दिया। ध्वजारोहण करते हुए डी० ए०-वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने कहा कि युवा शक्ति ही राष्ट्र की कर्णधार है। आज देश विषम परिस्थितियो से गुजर रहा है। राष्ट्र के नवनिर्माण मे युवकों को अपना कर्त्तव्य निभाना है।

कन्या गुरुकुल वाराणसी का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का रजत जयन्ती महोत्सव चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के साथ सोल्लास सम्पन्न हुआ। इसकी भव्य शोभा यात्रा ऐतिहासिक थी।

इस कन्या गुरुकुल के २५वें विशाल समारोह की अध्यक्षता डा० रघुनाथ सिंह भूतपूर्व सासद ने की और इसमें स्वागताध्यक्ष वाराणसी के प्रतिष्ठित कांग्रेसी (इ०) नेता श्री मदनगोपाल वर्मा थे। महोत्सव की विराट् सभाओं में शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन क्रमशः डा० रघुनाथ सिंह, कौशल्या जी (प्रधान म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा), स्वा० सत्यप्रकाश सरस्वती तथा चन्द्रशेखर भू० पू० एम० एल० सी० की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए, जिनका संयोजन श्री रवीन्द्र कुमार बेरी, प्रो० कैलाशनाथ सिंह आदि ने किया।

इन सम्मेलनों में म प्रेमप्रकाश, श्री आशुराम आर्य, श्री श्यामलाल यादव सांसद, श्री कृष्ण चन्द्र बेरी (अध्यक्ष हिन्दी प्रचारक सस्थान), श्री रमेश चन्द्र (मन्त्री म० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा), प्रि० ओ३म्प्रकाश तलवाड़, श्री सत्यदेव शास्त्री, सुश्री डा० सुधा राजपाली आदि ने ओजस्वी विचार व्यक्त किये। दिल्ली की उत्साही देवियों ने भजन सुधा की वर्षा की।

इन सम्मेलनों में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए—

(१) बच्चों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्राइमरी कक्षा से ही सस्कृत को समाविष्ट किया जाये।

(२) महिलायें दहेज की मांग करना छोड दें।

(३) साउदी अरब मे सत्यार्थ प्रकाश पर से पाबन्दी तुरन्त हटाई जाये और गिरफ्तार श्री राजकुमार भारद्वाज को रिहा किया जाये।

(४) राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा के लिए हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया जाये तथा उग्रवाद का समूल विनाश किया जाये।

२६ नवम्बर को रात्रि में अभिनन्दन समिति के अध्यक्ष राजर्षि रणंजय सिंह जी अमेठी ... का अभिनन्दन किया गया।

२२, २३ अक्तूबर को श्री कृष्णमोहन ... राजकरव में विद्वद्-गोष्ठियां हुई, जिनमें डा० भवानीलाल भारतीय, स्वा० विवेकानन्द व अन्य प्रतिष्ठित विद्वानो ने गम्भीर विचार दिये। श्री यशदत्त गौतम ने एक सप्ताह का योग शिविर लगाया।

लखनऊ के प्रसिद्ध आर्य नेता का निधन

नगर आर्यसमाज लखनऊ के प्रधान श्री गिरिराज शरण जी का ८० वर्ष की आयु मे दीर्घ अस्वस्थता के पश्चात् निधन हो गया। भैसा कुंड श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार उनका दाहसस्कार हुआ।

स्वर्गीय गिरिराज शरण जी कई वर्ष लखनऊ के मेयर रहे।

अस्थि कलश राजधानी में

(पृष्ठ १ का शेष)

भूति प्रकट करते हुए कहा कि सारा आर्य जगत् इस दुःख की घड़ी में आपके साथ है और आप लोगों की जो मदद हमसे हो सकेगी, वह हम बराबर करते रहेगे!

इस अवसर पर दिल्ली के अनेक आर्य बन्धु, आर्यसमाज दीवान हाल के कार्यकर्त्ता प्रधान सूर्यदेव जी, पदाधिकारी और कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

श्री सोपनाथ एडवोकेट ने भी उन्हे धैर्य दिलाया और उन्हें प्रभु पर विश्वास करके जीवन यापन करने का सत्परामर्श दिया।

दैनिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा सच्चिदानन्द शास्त्री मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।